प्रबन्ध सम्पादक :
श्रीचन्द रामपुरिया,
निदेशक
आगम और साहित्य प्रकाशन
(जैन विश्व भारती)

आर्थिक सहायक
श्री रामलाल हंसराज गोलछा
विराटनगर (नेपाल)

प्रकाशन तिथि :
विक्रम संवत् २०३१
कार्तिक कृष्णा १३
(२५०० वां निर्वाण दिवस)

पृष्ठांक । ९२५

मूल्य ८०/

मुद्रक :—
एस. नारायण एण्ड संस (प्रिंटिंग प्रेस)
७११७/१८, पहाड़ी धीरज, दिल्ली-६

ANGA SUTTĀNI

III

NAYĀDHAMMAKAHĀO. UWĀSAGADASĀO.
ANTAGADADASĀO. ANUTTAROWAWĀIYADASAO.
PANHAWAGARANAIN. VIVĀGASUYAM.

(Original text Critically edited)

Vāćanā PRAMUKHA
ĀCĀRYA TULASI

EDITOR
MUNI NATHAMAL

Publisher
JAIN VISWA BHĀRATI
LADNUN (Rajasthan)

Managing Editor
Shreechand Rampuria
Director :
Āgama and Sahitya Publication Dept.
JAIN VISHWA BHARATI, LADNUN

Financial Assistance
Sri Ramlal Hansraj Golchha
Biratnagar (Nepal)

V S. 2031
Kārtic Kṛishnā 13
2500th Nirvana Day

Pages 925

Rs. 80/-

Printers :
S Narayan & Sons (Printing Press)
7117/18, Pahari Dhiraj,
Delhi-6

समर्पण

पुट्ठो वि पण्णा-पुरिसो सुदक्खो,
आणा-पहाणो जणि जस्स निच्चं ।
सच्चप्पओगे पवरासयस्स,
भिक्खुस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं ॥

जिसका प्रज्ञा-पुरुष पुष्ट पटु,
होकर भी आगम-प्रधान था ।
सत्य-योग मे प्रवर चित्त था,
, उसी भिक्षु को विमल भाव से ।

विलोडियं आगमदुद्धमेव,
लद्धं सुलद्धं णवणीयमच्छं ।
सज्झाय - सज्झाण - रयस्स निच्चं,
जयस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं ॥

जिसने आगम-दोहन कर कर,
पाया प्रवर प्रचुर नवनीत ।
श्रुत-सद्ध्यान लीन चिर चिन्तन,
जयाचार्य को विमल भाव से ।

पवाहिया जेण सुयस्स धारा,
गणे समत्थे मम माणसे वि ।
जो हेउभूओ स्स पवायणस्स,
कालुस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं ॥

जिसने श्रुत की धार बहाई,
सकल सघ मे मेरे मन मे ।
हेतुभूत श्रुत - सम्पादन मे,
कालुगणी को विमल भाव से ।

•

अन्तस्तोष

अन्तस्तोष अनिर्वचनीय होता है उस माली का जो अपने हाथो से उप्त और सिंचित द्रुम-निकुज को पल्लवित, पुष्पित और फलित हुआ देखता है, उस कलाकार का जो अपनी तूलिका से निराकार को साकार हुआ देखता है और उस कल्पनाकार का जो अपनी कल्पना को अपने प्रयत्नो से प्राणवान् वना देखता है। चिरकाल से मेरा मन इस कल्पना से भरा था कि जैन आगमो का शोध-पूर्ण सम्पादन हो और मेरे जीवन के बहुश्रमी क्षण उसमे लगे। सकल्प फलवान् वना और वैसा ही हुआ। मुझे केन्द्र मान मेरा धर्म-परिवार उस कार्य मे सलग्न हो गया। अत मेरे इस अन्तस्तोष मे मैं उन सवको समभागी वनाना चाहता हूं, जो इस प्रवृत्ति मे सविभागी रहे हैं। सक्षेप मे वह सविभाग इस प्रकार है—

संपादक :		**मुनि नथमल**
	सहयोगी .	मुनि दुलहराज
पाठ-संशोधन :	,,	मुनि सुदर्शन
	,,	मुनि मधुकर
	,,	मुनि हीरालाल

सविभाग हमारा धर्म है। जिन-जिनने इस गुरुतर प्रवृत्ति मे उन्मुक्त भाव से अपना सविभाग समर्पित किया है, उन सवको मैं आशीर्वाद देता हू और कामना करता हूँ कि उनका भविष्य इस महान् कार्य का भविष्य वने।

आचार्य तुलसी

ग्रन्थानुक्रम

परिशिष्ट

प्रकाशकीय

सन् १९६७ की वात है। आचार्यश्री वम्वई मे विराज रहे थे। मैंने कलकत्ता से पहुचकर उनके दर्शन किए। उस समय श्री ऋषभदासजी राका, श्रीमती इन्दु जैन, मोहनलालजी कठौतिया आदि आचार्यश्री की सेवा मे उपस्थित थे और 'जैन विश्व भारती' को वम्वई के आस-पास किसी स्थान पर स्थापित करने पर चिन्तन चल रहा था। मैंने सुझाव रखा कि सरदारशहर मे 'गाधी विद्या-मन्दिर' जैसा विशाल और उत्तम सस्थान है। 'जैन विश्व भारती' उसी के समीप सरदारशहर मे ही क्यो न स्थापित की जाये? दोनो सस्थान एक दूसरे के पूरक होंगे। सुझाव पर विचार हुआ। श्री कन्हैयालालजी दूगड (सरदारशहर) को वम्वई वुलाया गया। सारी वातें उनके सामने रखी गई और निर्णय हुआ कि उनके साथ जाकर एक वार इसी दृष्टि से 'गाधी विद्या-मन्दिर' सस्थान को देखा जाए। निश्चित तिथि पर पहुचने के लिए कलकत्ता से श्री गोपीचन्दजी चोपडा और मैं तथा दिल्ली से श्रीमती इन्दु जैन, लादूलालजी आछा सरदारशहर के लिए रवाना हुए। श्री कन्हैयालालजी दूगड दिल्ली से हम लोगो के साथ हुए। श्री राकाजी वम्वई से पहुचे। सरदारशहर मे भावभीना स्वागत हुआ। श्री दूगडजी ने 'गाधी विद्या-मन्दिर' की प्रवन्ध समिति के सदस्यो को भी आमन्त्रित किया। 'जैन विश्व भारती' सरदारशहर मे स्थापित करने के विचार का उनकी ओर से भी हार्दिक स्वागत किया गया। सरदारशहर 'जैन विश्व-भारती' के लिए उपयुक्त स्थान लगा। आगे के कदम इसी ओर वढे।

आचार्यश्री सतगण व साध्वियो के वृन्द सहित कर्नाटक मे नदी पहाड़ी पर आरोहण कर रहे थे। आचार्यश्री ने वीच मे पैर थामे और मुझ से कहा "जैन विश्वभारती के लिए प्रकृति की ऐसी सुन्दर गोद उपयुक्त स्थान है। देखो, कैसा सुन्दर शान्त वातावरण है।"

'जैन विश्व भारती' की योजना को कार्य-रूप मे आगे वढाने की दृष्टि से समाज के कुछ और विचारशील व्यक्ति भी नदी पहाड़ी पर आए थे। श्री कन्हैयालालजी दूगड़ भी थे। (सरदार-शहर) प्रतिक्रमण के वाद का समय था। पहाडी की तलहटी मे दीपक और आकाश में तारे जगमगा रहे थे। आचार्यश्री गिरि-शिखर पर काँच महल में पूर्वाभिमुख होकर विराजित थे। मैं उनके सामने वैठा था। वचनवद्ध हुआ कि यदि 'जैन विश्व भारती' सरदारशहर में स्थापित होती है, तो उसके लिए मैं अपना जीवन लगाऊगा। उस समय 'जैन विश्व भारती' की जैन श्वेताम्वर तेरापथी महासभा के एक विभाग के रूप में परिकल्पना की गई थी। महासभा ने स्वीकार किया और

मैं उसका सयोजक चुना गया। सरदारशहर में स्थान के लिए श्री कन्हैयालालजी दूगड और मैं प्रयत्नशील हुए। आचार्यश्री ऊटी (उटकमण्ड) पधारे। वहा महासभा के सभापति श्री हनुमानमलजी बैंगाणी तथा अन्य पदाधिकारी भी उपस्थित थे। जैन विश्व भारती की स्थापना प्राकृतिक दृष्टि से साधना के अनुकूल रम्य और शान्त स्थान मे होने की बात ठहरी। इस तरह नदी गिरि की मेरी प्रतिज्ञा से मैं मुक्त हुआ, पर मन ने मुझे कभी मुक्त नही किया। आखिर 'जैन विश्व भारती' की मातृ-भूमि बनने का सौभाग्य सरदारशहर से ६६ मील दूर लाडनूं (राजस्थान) को प्राप्त हुआ, जो सयोग से आचार्यश्री का जन्म-स्थान भी है।

आचार्यश्री ने आगम-सशोधन का कार्य स० २०११ की चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को हाथ मे लिया। कुछ समय बाद उज्जैन मे दर्शन किए। स० २०१३ मे लाडनूं मे आचार्य श्री के दर्शन प्राप्त हुए। कुछ ही दिनो बाद सुजानगढ मे दशवैकालिक सूत्र के अपने अनुवाद के दो फार्म अपने ढग से मुद्रित कराकर सामने रखे। आचार्यश्री मुग्ध हुए। मुनिश्री नथमलजी ने फरमाया—"ऐसा ही प्रकाशन ईप्सित है।" आचार्यश्री की वाचना मे प्रस्तुत आगम वैशाली से प्रकाशित हो, इस दिशा मे कदम आगे बढे। पर अन्त मे प्रकाशन कार्य महासभा से प्रारम्भ हुआ। आगम-सम्पादन की रूपरेखा इस प्रकार रही—

१ आगम-सुत्त ग्रन्थमाला मूलपाठ, पाठान्तर, शब्दानुक्रम आदि सहित आगमो का प्रस्तुतीकरण।

२. आगम-अनुसन्धान ग्रन्थमाला मूलपाठ, सस्कृत छाया, अनुवाद, पद्यानुक्रम, सूत्रानुक्रम तथा मौलिक टिप्पणियो सहित आगमो का प्रस्तुतीकरण।

३ आगम-अनुशीलन ग्रन्थमाला आगमो के समीक्षात्मक अध्ययनो का प्रस्तुतीकरण।

४ आगम-कथा ग्रन्थमाला . आगमो से सम्बन्धित कथाओ का सकलन और अनुवाद।

५. वर्गीकृत-आगम ग्रन्थमाला · आगमो का सक्षिप्त वर्गीकृत रूप मे प्रस्तुतीकरण।

महासभा की ओर से प्रथम ग्रथमाला मे—(१) दसवेआलिय तह उत्तरज्झयणाणि, (२) आयारो तह आयारचूला, (३) निसीहज्झयण, (४) उववाइय और (५) समवाओ प्रकाशित हुए। रायपसेणइय एव सूयगडो (प्रथम श्रुतस्कन्ध) का मुद्रण-कार्य तो प्राय समाप्त हुआ पर वे प्रकाशित नही हो पाए।

दूसरी ग्रन्थमाला मे—(१) दसवेआलिय एव (२) उत्तरज्झयणाणि (भाग १ और भाग २) प्रकाशित हुए। समवायाग का मुद्रण-कार्य प्राय समाप्त हुआ पर प्रकाशित नही हो पाया।

तीसरी ग्रथमाला मे दो ग्रथ निकल चुके हैं: (१) दशवैकालिक . एक समीक्षात्मक अध्ययन और (२) उत्तराध्ययन : एक समीक्षात्मक अध्ययन।

चौथी ग्रथमाला मे कोई ग्रथ प्रकाशित नही हुआ ।

पाँचवी ग्रथमाला मे दो ग्रथ निकल चुके हैं (१) दशवैकालिक वर्गीकृत (धर्म-प्रज्ञप्ति ख. १) और (२) उत्तराध्ययन वर्गीकृत (धर्म-प्रज्ञप्ति ख. २) ।

उक्त प्रकाशन-कार्य मे सरावगी चेरिटेवल फण्ड, कलकत्ता (ट्रस्टी रामकुमारजी सरावगी, गोविंदलालजी सरावगी एव कमलनयनजी सरावगी) का वहुत वडा अनुदान महासभा को रहा। अनुदान स्वर्गीय महादेवलालजी सरावगी एव उनके पुत्र पन्नालालजी सरावगी की स्मृति मे प्राप्त हुआ था। भाई पन्नालालजी के प्रेरणात्मक शब्द तो आज भी कानो मे ज्यो-के-त्यो गूंज रहे हैं—"धन देने वाले तो मिल सकते है, पर जो इस प्रकाशन-कार्य मे जीवन लगाने का उत्तरदायित्व लेने को तैयार हैं, उनकी वरावरी कौन कर सकेगा ?" उन्ही तथा समाज के अन्य उत्साहवर्धक सदस्यों के स्नेह-प्रदान से कार्य-दीपक जलता रहा ।

कार्य के द्वितीय चरण मे श्री रामलालजी हसराजजी गोलछा (विराटनगर) ने अपना उदार हाथ प्रसारित किया ।

आचार्यश्री की वाचना मे सम्पादित आगमो के सग्रह और मुद्रण का कार्य अव 'जैन विश्व भारती' के अचल से हो रहा है। प्रथम प्रकाशन के रूप मे ११ अगो को तीन खण्डो मे 'अगसुत्ताणि' के नाम से प्रकाशित किया जा रहा है :

प्रथम खण्ड मे आचार, सूत्रकृत्, स्थान, समवाय—ये प्रथम चार अग है ।
दूसरे खण्ड में भगवती—पाँचवाँ अग है ।

तीसरे खण्ड मे ज्ञाताधर्मकथा, उपासकदशा, अन्तकृतदशा, अनुत्तरोपपातिकदशा, प्रश्न-व्याकरण और विपाक—ये ६ अग है ।

इस तरह ग्यारह अगो का तीन खण्डो मे प्रकाशन 'आगम-सुत्त ग्रथमाला' की योजना को वहुत आगे वढा देता है ।

ठाणाग सानुवाद सस्करण का मुद्रण-कार्य भी द्रुतगति से हो रहा है और वह आगम-अनुसन्धान ग्रथमाला के तीसरे ग्रथ के रूप मे प्रस्तुत होगा ।

केवल हिन्दी अनुवाद के सस्करण के रूप मे 'दशवैकालिक और उत्तराध्ययन' का प्रकाशन हुआ है, जो एक नई योजना के रूप मे है । इसमे सभी आगमो का केवल हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करने का निर्णय है ।

दशवैकालिक एव उत्तराध्ययन मूल पाठ मात्र को गुटको के रूप मे दिया जा रहा है ।

'जैन विश्व भारती' की इस अग एव अन्य आगम प्रकाशन योजना को पूर्ण करने मे जिन महानुभावो के उदार अनुदान का हाथ रहा है, उन्हे संस्थान की ओर से हार्दिक धन्यवाद है ।

मुद्रण-कार्य मे एस० नारायण एण्ड सस प्रिंटिंग प्रेस के मालिक श्री नारायणसिंह जी का विनय, श्रद्धा, प्रेम और सौजन्य से भरा जो योग रहा उसके लिए हम कृतज्ञता प्रगट किए विना नही रह सकते। मुद्रण-कार्य को द्रुतगति देने मे श्री देवीप्रसाद जायसवाल (कलकत्ता) ने रात-दिन सेवा देकर जो सहयोग दिया, उसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं। इस सम्वन्ध मे श्री मन्नालाल जी जैन (भूतपूर्व मुनि) की समर्पित सेवा भी स्मरणीय है।

इस अवसर पर मैं आदर्श साहित्य सघ के सचालको तथा कार्यकर्त्ताओ को भी नही भूल सकता। उन्होने प्रारम्भ से ही इस कार्य के लिए सामग्री जुटाने, धारने तथा अन्यान्य व्यवस्थाओ को क्रियान्वित करने मे सहयोग दिया है। आदर्श साहित्य सघ के प्रवन्धक श्री कमलेश जी चतुर्वेदी सहयोग मे सदा तत्पर रहे हैं, तदर्थ उन्हे धन्यवाद है।

'जैन विश्व भारती' के अध्यक्ष श्री खेमचन्दजी सेठिया, मत्री श्री सम्पत्तरायजी भूतोडिया तथा कार्य समिति के अन्यान्य समस्त वन्धुओ को भी इस अवसर पर धन्यवाद दिये विना नही रह सकता, जिनका सतत सहयोग और प्रेम हर कदम पर मुझे वल देता रहा।

इस खण्ड के प्रकाशन के लिए विराटनगर (नेपाल) निवासी श्री रामलालजी हसराजजी गोलछा मे उदार आर्थिक अनुदान प्राप्त हुआ है, इसके लिए सस्थान उनके प्रति कृतज्ञ है।

सन् १९७३ मे मैं जैन विश्व-भारती के आगम और साहित्य प्रकाशन विभाग का निदेशक चुना गया। तभी से मैं इस कार्य की व्यवस्था मे लगा। आचार्यश्री यात्रा मे थे। दिल्ली मे मुद्रण की व्यवस्था वैठाई गई। कार्यारभ हुआ, पर टाइप आदि की व्यवस्था मे विलव होने से कार्य मे द्रुतगति नही आई। आचार्यश्री का दिल्ली पधारना हुआ तभी यह कार्य द्रुतगति से आगे वढा। स्वल्प समय मे इतना आगमिक साहित्य सामने आ सका उसका सारा श्रेय आगम सपादन के वाचनाप्रमुख आचार्यश्री तुलसी तथा सपादक-विवेचक मुनि श्री नथमलजी को है। उनके सहकर्मी मुनि श्री सुदर्शनजी, मधुकरजी, हीरालालजी तथा दुलहराजजी भी उस कार्य के श्रेयोभागी हैं।

ब्रह्मचर्य आश्रम मे ब्रह्मचारी का एक कर्त्तव्य समिधा एकत्रित करना होता है। मैंने इससे अधिक कुछ और नही किया। मेरी आत्मा हर्षित है कि आगम के ऐसे सुन्दर सस्करण 'जैन विश्व भारती' के प्रारभिक उपहार के रूप मे उस समय जनता के कर-कमलो में आ रहे है, जवकि जगत्वद्य श्रमण भगवान् महावीर की २५००वी निर्वाण तिथि मनाने के लिए सारा विश्व पुलकित है।

४६९४, असारी रोड़
२१, दरियागज
दिल्ली-६

श्रीचन्द रामपुरिया
निदेशक
आगम और साहित्य प्रकाशन
जैन विश्व-भारती

सम्पादकीय

ग्रन्थ-बोध—

आगम सूत्रो के मौलिक विभाग दो हैं—अग-प्रविष्ट और अग-वाह्य। अग-प्रविष्ट सूत्र महावीर के मुख्य शिष्य गणधर द्वारा रचित होने के कारण सर्वाधिक मौलिक और प्रामाणिक माने जाते हैं। उनकी संख्या वारह है—१. आचाराग २. सूत्रकृताग ३. स्थानाग ४ समवायाग ५ व्याख्याप्रज्ञप्ति ६ ज्ञाताधर्मकथा ७. उपासकदशा ८. अतकृतदशा ९ अनुत्तरोपपातिकदशा १० प्रश्नव्याकरण ११ विपाकश्रुत १२ दृष्टिवाद। वारहवा अग अभी प्राप्त नही है। शेष ग्यारह अग तीन भागो मे प्रकाशित हो रहे हैं। प्रथम भाग मे चार अग हैं—१ आचाराग २ सूत्रकृताग ३ स्थानाग और ४ समवायाग, दूसरे भाग में केवल व्याख्याप्रज्ञप्ति और तीसरे भाग मे शेष छह अग।

प्रस्तुत भाग अग साहित्य का तीसरा भाग है। इसमे नायाधम्मकहाओ, उवासगदसाओ, अतगडदसाओ, अणुत्तरोववाइयदसाओ, पण्हावागरणाइ और विवागसुय—इन ६ अगो का पाठान्तर सहित मूल पाठ है। प्रारम्भ मे सक्षिप्त भूमिका है। विस्तृत भूमिका और शब्द-सूची इसके साथ सम्बद्ध नही है। उनके लिए दो स्वतन्त्र भागो की परिकल्पना है। उसके अनुसार चौथे भाग मे ग्यारह अगो की भूमिका और पाचवे भाग मे उनकी शब्द-सूची होगी।

प्रस्तुत पाठ और सम्पादन-पद्धति

हम पाठ-सशोधन की स्वीकृत पद्धति के अनुसार किसी एक ही प्रति को मुख्य मानकर नही चलते, किन्तु अर्थ-मीमासा, पूर्वापरप्रसग, पूर्ववर्ती पाठ और अन्य आगम-सूत्रो के पाठ तथा वृत्तिगत व्याख्या को ध्यान मे रखकर मूलपाठ का निर्धारण करते है। लेखनकार्य मे कुछ त्रुटिया हुई हैं। कुछ त्रुटिया मौलिक सिद्धान्त से सम्बद्ध है। वे कब हुई यह निश्चय-पूर्वक नही कहा जा सकता। पाठ के सक्षेप या विस्तार करने मे हुई हैं, यह सभावना की जा सकती है। 'नायाधम्मकहाओ' १।५।५९ मे वारह व्रत और पाच महाव्रतो का उल्लेख है। स्थानाग ४।१३६, उत्तराध्ययन २३।२३-२८ के अनुसार यह पाठ शुद्ध नही है। वाईस तीर्थंकरो के युग मे चातुर्याम धर्म होता है, पाच महाव्रत और द्वादशव्रत रूप धर्म नही होता। ऐसा प्रतीत होता है कि अगार-विनय और अनगार-विनय का पाठ ओवाइय सूत्र के अगारधर्म और अनगारधर्म के आधार पर पूरा किया गया है। इसलिए जो वर्णन वहा था वह यहा आ गया। हमने इस पाठ की पूर्ति रायपसेणइय सूत्र के आधार

पर की है, देखें—नायाधम्मकहाओ पृष्ठ १२२ का सातवा पाद-टिप्पण। इस प्रकार के आलोच्य पाठ नायाधम्मकहाओ १।१२।३६, १।१६।२१, १।१६।४६ मे भी मिलता है। प्रश्नव्याकरण सूत्र १०।४ मे 'कायवर' पाठ मिलता है। वृत्तिकार ने इसका अर्थ 'काचवर'—प्रधान काच किया है, किन्तु यह पाठ शुद्ध नही है। लिपि-दोष के कारण मूलपाठ विकृत हो गया। निशीथाध्ययनके ग्यारहवें उद्देशक (सूत्र १) मे 'कायपायाणिवा और वइरपायाणिवा' दो स्वतन्त्र पाठ हैं। वहा भी पात्र का प्रकरण है और यहा भी पात्र का प्रकरण है। कांचपात्र और वज्रपात्र—दोनो मुनि के लिए निषिद्ध हैं। इस आधार पर यहा भी 'वर' के स्थान पर 'वइर' पाठ का स्वीकार औचित्यपूर्ण है। लिपिकाल मे इस प्रकार का वर्ण-विपर्यय अन्यत्र भी हुआ है। 'जात' के स्थान पर 'जाव' तथा 'पचकमण' के स्थान पर 'एवकमण' पाठ मिलता है। पाठ-सशोधन मे इस प्रकार के अनेक विचित्र पाठ मिलते है। उनका निर्धारण विभिन्न स्रोतो से किया जाता है।

प्रतिपरिचय

१. नायाधम्मकहाओ—

क ताडपत्रीय (फोटोप्रिंट) मूलपाठ—

यह प्रति जेसलमेर भडार से प्राप्त है। यह अनुमानत बारहवी शताब्दी की है।

ख नायाधम्मकहाओ (पचपाठी) मूल पाठ वृत्ति सहित—

यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर की है। पत्र के चारो ओर हासियो (Margin) में वृत्ति लिखी हुई है। इसके पत्र १८६ तथा पृष्ठ ३७२ हैं। प्रत्येक पत्र १०$\frac{3}{8}$ इच लम्बा तथा ४$\frac{1}{8}$ इच चौडा है। पत्र मे मूलपाठ की १ से १३ तक पक्तियां हैं। प्रत्येक पक्ति मे ३२ से ३८ तक अक्षर हैं। प्रति स्पष्ट और कलात्मक है। बीच मे तथा इधर-उधर वापिकाए हैं। यह अनुमानत १४-१५ शताब्दी की होनी चाहिए। प्रति के अत मे टीकाकार द्वारा उद्धृत प्रशस्ति के ११ श्लोक हैं। उनमे अन्तिम श्लोक यह है—

एकादशसु गतेष्वथ विंशत्यधिकेषु विक्रमसमाना।
अणहिलपाटकनगरे भाद्रवद्वितीया पज्जुसणसिद्धय ॥१॥
समाप्तेय ज्ञाताधर्मप्रदेशटीकेति ॥छ॥ ४२५५ ग्रथाग्र ॥ वृत्ति। एव सूत्र वृत्ति ६७५५ ग्रथाग्र ॥१॥छ॥

ग. नायाधम्मकहाओ (मूलपाठ)

यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर की है। इसके पत्र ११० तथा पृष्ठ २२० हैं। प्रत्येक पत्र १०$\frac{1}{2}$ इच लम्बा तथा ४$\frac{1}{2}$ इच चौडा है। प्रत्येक पत्र मे १५ पक्तिया हैं और प्रत्येक पक्ति मे ४८ से ५३ तक अक्षर हैं। प्रति जीर्ण-सी है। बीच मे बावड़ी है।

लिपि सवत् १५५४ है। अंतिम प्रशस्ति मे लिखा है—सवत् १५५४ वर्षे प्रथम श्रावण वदि २ रवौ। श्री श्री श्री शीरोही नगरे। राया राउ श्रीजगमालराज्ये ॥ श्रीत पागच्छे गच्छनायकश्रीसुमतिसाधसूरि। तत्पट्टे श्रीहेमविमलसूरिराज्ये। महोपाध्याय श्रीअनत-हसगणीना उपदेशेन ॥ साह श्री सूरा लिखापित ॥ जोसी पोपा लिखित ॥ भ्राति उज्जल सजुक्त धीआ लिखापित ॥छ॥छ॥१ ॥ इसके आगे १२ श्लोक लिखे हुए हैं।

घ टब्बा

यह प्रति १२वे अध्ययन से आगे काम मे ली गई है।

२. उवासगदसाओ—

क उवासगदसाओ—मूल पाठ (ताडपत्रीय फोटो प्रिंट)—

इसकी पत्र सख्या २० व पृष्ठ ४० है। पत्र क्रमाक सख्या १८२ से २०२ तक है। फोटो प्रिंट पत्र संख्या ६ है व एक पत्र मे ८ पृष्ठो का फोटो है। इसकी लम्बाई १४ इच, चौडाई $\frac{3}{4}$ इच है। प्रत्येक पत्र मे ४ से ६ तक पक्तिया व प्रत्येक पक्ति मे ४५ के करीब अक्षर हैं।

प्रति के अन्त मे 'ग्रन्थ ८१२' इतना ही लिखा हुआ है। सवत् वगैरह नही है पर विपाक सूत्र पत्र सख्या २८५ मे लिपि सवत् ११८६ है। अत उसके आधार पर यह ११८६ मे पहले की ही मालूम पडती है।

ख. उवासगदसाओ—टब्बेयुक्त पाठ (हस्तलिखित)—

यह प्रति गधैया पुस्तकालय सरदारशहर की है। इसके पत्र ३६ तथा पृष्ठ ७२ हैं। प्रत्येक पत्र मे पाठ की आठ पक्तिया व प्रत्येक पक्ति मे करीब ५२ अक्षर हैं। पाठ के नीचे राजस्थानी मे अर्थ लिखा हुआ है। प्रत्येक पृष्ठ १० इच लम्बा व $4\frac{1}{4}$ इच चौडा है। प्रति के अन्त मे लेखक की निम्न प्रशस्ति है—

सवत् १७७८ वर्षे मिति माघमासे कृष्णपक्षे पचमीतिथौ बुधवारे मुनिना सिवेना-लेखि स्ववाचनाय श्रीमत्फतेपुरमध्ये श्रीरस्तु कल्याणमस्तु लेखकपाठकयो. श्री.।

३. अंतगडदसाओ—

क ताडपत्रीय (फोटो प्रिंट)। पत्र सख्या २०३ से २२२ तक। विपाक सूत्र के अत मे (पत्र सख्या २८५ मे) लिपि सवत् ११८६ आश्विन सुदि ३ है। अत क्रमानुसार पत्रो से यह प्रति भी ११८६ से पहले की होनी चाहिए।

ख हस्तलिखित—गधैया पुस्तकालय, सरदाशहर से प्राप्त तीन सूत्रो की सयुक्त प्रति (उवासगदशा, अतगड, अणुत्तरोववाइय) परिचय—देखें अणुत्तरोववाइय 'ख' प्रति—लेखन सवत् १४६५ है।

ग हस्तलिखित—गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त ।

यह प्रति पचपाठी है। इसके पत्र २६ तथा पृष्ठ ५२ हैं। प्रत्येक पृष्ठ मे १३ पक्तिया तथा प्रत्येक पक्ति मे ४२ मे ४५ तक अक्षर हैं। प्रति की लम्वाई १०$\frac{1}{4}$ इच तथा चौडाई ४$\frac{1}{4}$ इच है। अक्षर वडे तथा स्पष्ट हैं। प्रति 'तकार' प्रधान तथा अपठित होने के कारण कही-कही अशुद्धिया भी हैं। प्रति के अत मे लेखन सवत् नही है। केवल इतना लिखा है—।।छ।। ग्रथाग्र ८६० ।।०।। ।।०।। पुण्यरत्नसूरीणा ।।

घ यह प्रति गधैया पुस्तकालय सरदारशहर से प्राप्त है। इसके पत्र २० हैं। प्रत्येक पत्र मे पाठ की पाच पक्तिया हैं। प्रत्येक पक्ति के बीच मे टब्बा लिखा हुआ है। प्रति सुन्दर लिखी हुई है। पत्र की लम्वाई १० इच व चो० ४$\frac{1}{2}$ इच है। प्रति के अत मे तीन दोहे लिखे हुए हैं।

थली हमारो देश है, रिणी हमारो ग्राम।
गोत्र वश है माहातमा, गणेश हमारो नाम ।।१।।

गणेश हमारा है पिता, मैं सुत मुन्नीलाल।
वडो गच्छ है खरत्तरो, उजियागर पोसाल ।।२।।

वीकानेर व्रतमान है, राजपुताना नाम।
जगलधर वादस्या, गगासिहजी नाम ।।३।।
श्रीरस्तु ।।छ।। कल्याणमस्तु ।।छ।।

४. अणुत्तरोववाइयदसाओ—

क ताडपत्रीय (फोटो प्रिंट)। पत्र सख्या २२३ से २२८ तक। विपाक सूत्र पत्र सख्या २८५ मे लिपि सवत् ११८६ आश्विन सुदि ३ है। अत क्रमानुसार यह प्रति ११८६ से पहले की है।

ख गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त तीन सूत्रो की (उपासकदशा, अन्तकृत और अनुत्तरोपपातिक) सयुक्त प्रति है। इसके पत्र १५ तथा पृष्ठ ३० है। प्रत्येक पत्र १३$\frac{1}{2}$ इच लम्वा तथा ५$\frac{1}{4}$ इच करीव चौडा है। प्रत्येक पत्र मे २३ पक्तिया तथा प्रत्येक पक्ति मे करीव ८२ अक्षर है। प्रति पठित तथा स्पष्ट लिखी हुई है। प्रति के अन्त मे लेखक की निम्नोक्त प्रशस्ति है। उसके अनुसार यह प्रति १४९५ की लिखी हुई है :—

ऊकेशवशो जयति प्रशसापद सुपर्वा वलिदत्तशोभ.।
डागाभिधा तत्र समस्ति शाखा पात्रावली वारितलोकतापा ।।१।।

मुक्ताफलतुला विभ्रत् सद्वृत्त. सुगुणास्पदं।
तस्या श्रीशालभद्राख्य. सम्यग्रुचिरजायत ।।२।।

तदन्वयस्याभरण वभूव वागाभिधान' सुविशुद्धवुद्धि ।
विवेकसत्सगतिलोचनाभ्या दृष्ट्वा सुमार्ग य उरीचकार ॥३॥
तदगजन्माजनि वाहडाख्य सद्धर्मकर्माजंनवद्धकक्ष ।
वक्षो यदीय गुरुदेवभक्तिरलचकाराब्जमिवालिराजी ॥४॥
क्रमेण तद्वशविशालकेतु कर्मोविध श्रावकपुगवोभूत् ।
चित्रं कलावानपि य प्रकाम वुधप्रमोदार्पणहेतुरुच्चै ॥५॥
तदगभूरभूत्साघु महणो द्रुहिणोपम ।
राजहसगति शश्वच्चतुराननता दधत् ॥६॥
तस्यार्हदह्रियुगलाब्जमधुव्रतस्य यात्रादिभूरिसुकृतोच्चयकारकस्य ।
आसीदसामयशस किल माल्हणाद्या देविप्रिया प्रणयिनी गिरिजेव शभो ॥७॥
तत्कुक्षिप्रभवावभुवुरभितोप्युद्योतयत कुल,
चत्वारस्तनया नयार्जितवना नाभ्यर्थना भीरव ।
आद्यस्तत्र कुमारपाल इति विख्यात परो वर्द्धन-
स्तार्त्तीयस्त्रिभुवाभिधस्तदपरो गेलाह्वयोमा भुवि ॥८॥
चत्वारोपि व्यधुरवरिता मर्त्यधात्रीरुहस्ते,
स्वौदार्येणातनुधनभृतो वाधवा धर्मकर्म ।
अन्योन्य स्पर्द्धयेव प्रतिदिनमनयास्तेषु गेलाख्य भार्या,
गगा देवीति गंगावदमलहृदयास्तीह जैनाह्रिलीना ॥९॥
तत्कुक्षिभू श्रावक ऊदराज, आघो द्वितीय किल वूट नामा ।
द्वावप्यभूता गुरुदेवभक्तौ मदोदरी नाम सुता तथास्ति ॥१०॥
ऊदाख्यस्य सभीरीति माऊ वूटस्य च प्रिया ।
आसधरो मडनश्च तयो पुत्रौ यथाक्रमम् ॥११॥
अमुना परिवारेण, सारेण सहिता शुभा ।
गगादेवी गुरोर्वक्त्रादुपदेशामृत पपौ ॥१२॥
आवाल्याद्धर्मकर्माणि तत्वान्यसौ निरतर ।
एकादशागमूत्राणि लेखयामास हर्षत ॥१३॥
विजयिन्नि खरतरगच्छे जिनभद्रसूरिसाम्राज्ये ।
गुण' निधि' 'वार्द्धींदु' मिते विक्रमभूपाद् व्रजति वर्षे ॥१४॥
गगादेवी सुतोपेता, लेखयित्वागपुस्तक ।
दत्तेस्म श्रीतपोरलोपाध्यायेभ्य प्रमोदत ॥१५॥

॥छ॥ श्री. ॥

ग हस्तलिखित प्रति गवैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त । इसके पत्र ९ तथा पृष्ठ १८ हैं । प्रत्येक पत्र मे ११ पक्तिया तथा प्रत्येक पक्ति मे ३५ से ४० तक अक्षर हैं । प्रति

की लम्बाई १०$\frac{3}{4}$ इच तथा चौड़ाई ४$\frac{3}{4}$ इच है। अक्षर बड़े तथा स्पष्ट हैं। प्रति शुद्ध तथा 'त' प्रधान है। अत मे लेखन-सवत् तथा लिपिकर्ता का नाम नही है केवल निम्नोक्त वाक्य है—

।।छ।। अणुत्तरोववाइयदशाग नवम अग समत्त छ।। श्री. श्री श्री श्री श्री श्री. छ छ प्रति का अनुमानित समय १६०० है।

५. पण्हावागरणाइं—

क ताडपत्रीय (फोटो प्रिंट) मूलपाठ—

पत्र सख्या २२८ से २५६

ख पचपाठी। हस्तलिखित अनुमानित सवत् १२वी सदी का उत्तरार्ध।

यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर की है। इसके पत्र ६८ हैं। प्रत्येक पत्र १०×४$\frac{3}{4}$ इच है। मूलपाठ की पक्तिया १ से १२ तथा पक्ति मे लगभग २३ से ३५ अक्षर हैं। चारो ओर वृत्ति तथा वीच मे वावडी है। अन्तिम प्रशस्ति की जगह—ग्रथाग्र १२५० शुभ भवतु कल्याणमस्तु ।। लिखा है। लेखन कर्ता तथा लिपि-सवत् का उल्लेख नही है किन्तु अनुमानत यह प्रति १३वी शताब्दी की होनी चाहिए।

ग त्रिपाठी (हस्तलिखित)—

गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर मे प्राप्त। इसके पत्र १११ हैं। प्रत्येक पत्र १०×४$\frac{3}{4}$ इच है। मूल पाठ की पक्तिया १ से ८ तथा प्रत्येक पक्ति मे ३६ से ४६ तक लगभग अक्षर हैं। ऊपर नीचे दोनो तरफ वृत्ति तथा वीच मे कलात्मक वावडी है। प्रति के उत्तरार्ध के वीच वीच के कई पन्ने लुप्त हैं। अत मे सिर्फ ग्रथाग्र १२५० ।छ।। श्री ।। छ।।०।। लिखा है। लिपि सवत् अनुमानत १६वी शताब्दी होना चाहिए।

घ मूलपाठ (सचित्र)—

पूनमचद दुधोडिया, छापर द्वारा प्राप्त। इसके पत्र २७ हैं। प्रत्येक पत्र १२×५ इच है। प्रत्येक पत्र मे १५ पक्तिया तथा प्रत्येक पक्ति मे ५१ से ६० तक अक्षर हैं। वीच मे वावडी है तथा प्रथम दो पत्रो मे सुनहरी कार्य किए हुए भगवान् महावीर और गौतम स्वामी के चित्र हैं। लेखन सवत् नही है पर यह प्रति अनुमानत. १५७० के लगभग की होनी चाहिए। अशुद्धि वहुल है।

च मूलपाठ तथा टब्बा की प्रति—

गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त। पत्र सख्या ८३।

वृ यह प्रति वर्तमान में जैन विश्व भारती, लाडनूं मे है। इसके पत्र १०३ तथा पृष्ठ २०६

है। वालाववोध पचपाठी। पक्तिया नीचे मे १ ऊपर में ११ तक हैं। अक्षर २८ से ३५ तक हैं। लेखन सवत् १६६७। लेखक सुदर्शन। प्रति काफी शुद्ध है।

६ विवागसुयं—

क मदनचन्दजी गोठी सरदारशहर द्वारा प्राप्त (ताडपत्रीय फोटो प्रिंट) २६० से २८५ तक। (मूलपाठ) पक्तिया ५ से ६ तक। कुछ पक्तिया अधूरी तथा कुछ अस्पष्ट हैं। प्रति प्राय. शुद्ध है। लेखन सवत् ११८६ आश्विन सुदि ३ सोमवार। पुष्पिका काफी लम्वी है पर अस्पष्ट है। प्रति की लम्वाई १४ इच तथा चौडाई १$\frac{3}{4}$ इच है और तीन कोष्ठको मे लिखी हुई है।

ख. मूलपाठ—

यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर की है। इसके पत्र ३२ तथा पृष्ठ ६४ हैं। पत्रो की लम्वाई १०$\frac{3}{4}$ तथा चौडाई ४$\frac{3}{4}$ इच है। प्रत्येक पत्र मे १५ पक्तिया तथा प्रत्येक पक्ति मे ४० से ४५ तक अक्षर हैं। कही-कही भाषा का अर्थ लिखा हुआ है। प्रति प्राय शुद्ध है। अन्तिम प्रशस्ति मे लिखा है—

शुभ भवतु लेखकपाठकयो ॥ सवत् १६३३ वर्षे आसो वदि ८ रवि लिखित ।छ॥ ।

ग. मूलपाठ—

यह प्रति हनूतमलजी मागीलालजी वेंगानी वीदासर से प्राप्त हुई। इसके पत्र ३५ तथा पृष्ठ ७० हैं। प्रत्येक पत्र ११$\frac{1}{2}$ इच लम्वा तथा ४$\frac{1}{2}$ इच चौडा है। प्रत्येक पत्र मे १२ पंक्तिया तथा प्रत्येक पक्ति मे ४५ से ४९ तक अक्षर हैं। प्रति अशुद्धि वहुल है। अन्तिम प्रशस्ति में—

एक्कारसय अग समत्त ॥ ग्र थाग्र १२१६ ॥ टीका ९०० एतस्या ॥ लिपि सवत् नही है, पर पत्रो की जीर्णता तथा अक्षरो की लिखावट से यह प्रति करीव ४०० वर्ष पुरानी होनी चाहिए।

वृ एम० सी मोदी तथा वी० जी० चोकसी द्वारा सम्पादित तथा गुर्जरग्रथरत्न कार्यालय, अहमदावाद द्वारा प्रकाशित प्रथम सस्करण १९३५, 'विवागसुय।

सहयोगानुभूति

जैन-परम्परा मे वाचना का इतिहास वहुत प्राचीन है। आज से १५०० वर्ष पूर्व तक आगम की चार वाचनाए हो चुकी हैं। देवर्द्धिगणी के वाद कोई सुनियोजित आगम-वाचना नही हुई। उनके वाचना-काल मे जो आगम लिखे गए थे, वे इस लम्वी अवधि मे वहुत ही अव्यवस्थित हो गए। उनकी पुनर्व्यवस्था के लिए आज फिर एक सुनियोजित वाचना की अपेक्षा थी।

आचार्यश्री तुलसी ने मुनियोजित सामूहिक वाचना के लिए प्रयत्न भी किया था, परन्तु वह पूर्ण नही हो सका। अन्तत हम इसी निष्कर्ष पर पहुचे कि हमारी वाचना अनुसन्धानपूर्ण, तटस्थ-दृष्टि-समन्वित तथा सपरिश्रम होगी तो वह अपने आप सामूहिक हो जाएगी। इसी निर्णय के आधार पर हमारा यह आगम-वाचना का कार्य प्रारम्भ हुआ।

हमारी इस वाचना के प्रमुख आचार्यश्री तुलसी हैं। वाचना का अर्थ अध्यापन है। हमारी इस प्रवृत्ति मे अध्यापन-कर्म के अनेक अग हैं—पाठ का अनुसधान, भाषान्तरण, समीक्षात्मक अध्ययन आदि-आदि। इन सभी प्रवृत्तियो मे आचार्यश्री का हमे सक्रिय योग, मार्ग-दर्शन और प्रोत्साहन प्राप्त है। यही हमारा इस गुरुतर कार्य मे प्रवृत्त होने का शक्ति-बीज है।

मैं आचार्यश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर भार-मुक्त होऊ, उसकी अपेक्षा अच्छा है कि अग्रिम कार्य के लिए उनके आशीर्वाद का शक्ति-सबल पा और अधिक भारी बनूं।

प्रस्तुत पाठ के सम्पादन मे मुनि सुदर्शनजी, मुनि मधुकरजी और मुनि हीरालालजी का पर्याप्त योग रहा है। मुनि बालचन्द्रजी, इस कार्य मे क्वचित् सलग्न रहे हैं। प्रति-शोधन मे मुनि दुलहराजजी का पूर्ण योग मिला है। इसका ग्रथ-परिमाण मुनि मोहनलाल (आमेट) ने तैयार किया है।

कार्य-निष्पत्ति मे इनके योगका मूल्याकन करते हुए मैं इन सबके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

आगमविद् और आगम-सपादन के कार्य मे सहयोगी स्व० श्री मदनचन्दजी गोठी को इस अवसर पर विस्मृत नही किया जा सकता। यदि वे आज होते तो इस कार्य पर उन्हे परम हर्ष होता।

आगम के प्रबन्ध-सम्पादक श्री श्रीचन्दजी रामपुरिया प्रारम्भ से ही आगम कार्य मे सलग्न रहे हैं। आगम साहित्य को जन-जन तक पहुँचाने के लिए वे कृत-सकल्प और प्रयत्नशील हैं। अपने सुव्यवस्थित वकालत कार्य से पूर्ण निवृत्त होकर अपना अधिकाश समय आगम-सेवा मे लगा रहे हैं। 'अगसुत्ताणि' के इस प्रकाशन मे इन्होंने अपनी निष्ठा और तत्परता का परिचय दिया है।

'जैन विश्व-भारती' के अध्यक्ष श्री खेमचन्द जी सेठिया, 'जैन विश्व-भारती' तथा 'आदर्श साहित्य सघ' के कार्यकर्त्ताओ ने पाठ-सम्पादन मे प्रयुक्त सामग्री के सयोजन मे बडी तत्परता से कार्य किया है।

एक लक्ष्य के लिए समान गति से चलने वालो की समप्रवृत्ति मे योगदान की परम्परा का उल्लेख व्यवहारपूर्त्ति मात्र है। वास्तव मे यह हम सब का पवित्र कर्त्तव्य है और उसी का हम सबने पालन किया है।

अणुव्रत विहार
नई दिल्ली
२५०० वा निर्वाण दिवस।

मुनि नथमल

भूमिका

नायाधम्मकहाओ

नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशाङ्गी का छठा अग है। इसके दो श्रुतस्कन्ध हैं। प्रथम श्रुतस्कन्ध का नाम 'नाया' और दूसरे श्रुतस्कन्ध का नाम 'धम्मकहाओ' है। दोनो श्रुतस्कन्धो का एकीकरण करने पर प्रस्तुत आगम का नाम 'नायाधम्मकहाओ' बनता है। 'नाया' (ज्ञात) का अर्थ उदाहरण और 'धम्मकहाओ' का अर्थ धर्म-आख्यायिका है। प्रस्तुत आगम मे चरित और कल्पित—दोनो प्रकार के दृष्टान्त और कथाए है।[1]

जयधवला मे प्रस्तुत आगम का नाम 'नाहधम्मकहा' (नाथधर्मकथा) मिलता है। नाथ का अर्थ है स्वामी। नाथधर्मकथा अर्थात् तीर्थंकर द्वारा प्रतिपादित धर्मकथा। कुछ सस्कृत ग्रन्थो मे प्रस्तुत आगम का नाम 'ज्ञातृधर्मकथा' उपलब्ध होता है। आचार्य अकलक ने प्रस्तुत आगम का नाम 'ज्ञातृधर्मकथा' बतलाया है।[2] आचार्य मलयगिरि और अभयदेवसूरि ने उदाहरण-प्रधान धर्मकथा को ज्ञाताधर्मकथा कहा है। उनके अनुसार प्रथम अध्ययन मे 'ज्ञात' और दूसरे अध्ययन मे 'धर्म-कथाए' है। दोनो ने ही ज्ञात पद के दीर्घीकरण का उल्लेख किया है।[3]

श्वेताम्बर साहित्य मे भगवान् महावीर के वश का नाम 'ज्ञात' और दिगम्बर साहित्य मे 'नाथ' बतलाया गया है। इस आधार पर कुछ विद्वानो ने प्रस्तुत आगम के नाम के साथ भगवान् महावीर का सम्बन्ध जोडने का प्रयत्न किया है। उनके अनुसार 'ज्ञातृधर्मकथा' या 'नाथधर्मकथा'

---

१ समवाओ, पइण्णगसमवाओ, सूत्र ९४।

२. तत्त्वार्थवार्तिक १।२०, पृ० ७२ . ज्ञातृधर्मकथा।

३ (क) नदीवृत्ति, पत्र २३०,३१ ज्ञातानि—उदाहरणानि तत्प्रधाना धर्मकथा ज्ञाताधर्मकथा, अथवा ज्ञातानि—ज्ञाताध्ययनानि प्रथमश्रुतस्कन्धे, धर्मकथा द्वितीयश्रुतस्कन्धे यासु ग्रन्थपद्धतिपु (वा) ज्ञाताधर्मकथा पृषोदरादित्वात्पूर्वपदस्य दीर्घान्तता।

(ख) समवायागवृत्ति, पत्र १०८ . ज्ञातानि—उदाहरणानि तत्प्रधाना धर्मकथा ज्ञाताधर्मकथा, दीर्घत्व संज्ञात्वाद् अथवा प्रथमश्रुतस्कधो ज्ञाताभिधायकत्वात् ज्ञातानि, द्वितीयस्तु तथैव धर्म्मकथा।

का अर्थ है—भगवान् महावीर की धर्मकथा[1]। वेवर के अनुसार जिस ग्रथ मे ज्ञातृवशी महावीर के लिए कथाए हो उसका नाम 'नायाधम्मकहा' है[2]। किन्तु समवायाग और नदी मे जो अगो का विवरण प्राप्त है उसके आधार पर 'नायाधम्मकहा' का 'ज्ञातृवशी महावीर की धर्मकथा'—यह अर्थ सगत नही लगता। वहा बतलाया गया है कि ज्ञाताधर्मकथा मे ज्ञातो (उदाहरणभूत व्यक्तियो) के नगर, उद्यान आदि का निरूपण किया गया है[3]। प्रस्तुत आगम के प्रथम अध्ययन का नाम भी 'उक्खित्तणाए' (उत्क्षिप्त ज्ञात) है। इसके आधार पर 'नाय' शब्द का अर्थ 'उदाहरण' ही सगत प्रतीत होता है।

विषय-वस्तु—

प्रस्तुत आगम के दृष्टान्तो और कथाओ के माध्यम से अहिंसा, अस्वाद, श्रद्धा, इन्द्रिय-विजय आदि आध्यात्मिक तत्त्वो का अत्यन्त सरस शैली मे निरूपण किया गया है। कथावस्तु के साथ वर्णन की विशेषता भी है। प्रथम अध्ययन को पढते समय कादम्बरी जैसे गद्य काव्यो की स्मृति हो आती है। नवे अध्ययन मे समुद्र मे डूबती हुई नौका का वर्णन बहुत सजीव और रोमाचक है। बारहवें अध्ययन मे कलुषित जल को निर्मल बनाने की पद्धति वर्तमान जल-शोधन की पद्धति की याद दिलाती है। इस पद्धति के द्वारा पुद्गल द्रव्य की परिवर्तनशीलता का प्रतिपादन किया गया है।

मुख्य उदाहरणो और कथाओ के साथ कुछ अवान्तर कथाए भी उपलब्ध होती हैं। आठवें अध्ययन मे कूप-मडूक की कथा बहुत ही सरस शैली मे उल्लिखित है। परिव्राजिका चोखा जितशत्रु के पास जाती है। जितशत्रु उसे पूछता है—'तुम बहुत घूमती हो, क्या तुमने मेरे जैसा अन्त पुर कही देखा है ?' चोखा ने मुस्कान भरते हुए कहा—'तुम कूप-मडूप जैसे हो।'

'वह कूप-मडूप कौन है ?' जितशत्रु ने पूछा।

चोखा ने कहा—'कूए मे एक मेढक था। वह वही जन्मा, वही बडा। उसने कोई दूसरा कूप, तालाब और जलाशय नही देखा। वह अपने कूप को ही सब कुछ मानता था। एक दिन एक समुद्री मेढक उस कूप मे आ गया। कूप-मडूक ने कहा—तुम कौन हो ? कहा से आए हो ? उसने कहा—मैं समुद्र का मेढक हूँ, वही से आया हूँ। कूप-मडूक ने पूछा—वह समुद्र कितना बडा है ? समुद्री मेढक ने कहा—वह बहुत बडा है। कूप-मडूक ने अपने पैर से रेखा खीचकर कहा—क्या समुद्र इतना बडा है ? समुद्री मेढक ने कहा—इससे बहुत बडा है। कूप-मडूक ने कूप के पूर्वी तट से पश्चिमी तट तक फुदक कर कहा—क्या समुद्र इतना बडा है ? समुद्री मेढक ने कहा—इससे भी बहुत बडा है। कूप-मडूक इस पर विश्वास नही कर सका। इसने कूप के सिवाय कुछ देखा ही नही था[4]।

इस प्रकार नाना कथाओ, अवान्तर-कथाओ, वर्णनो, प्रसगो और शब्द-प्रयोगो की दृष्टि से प्रस्तुत आगम बहुत महत्वपूर्ण है। इसका विश्व के विभिन्न कथा-ग्रन्थो के साथ तुलनात्मक अध्ययन करने पर कुछ नए तथ्य उपलब्ध हो सकते हैं।

---

१ जैन साहित्य का इतिहास, पूर्व-पीठिका, पत्र ६६०।

२ Stories From the Dharma of NAYA इ० ए० जि० १६, पृष्ठ ६६।

३ (क) समवाओ, पइण्णगसमवाओ, सूत्र ६४।

(ख) नदी, सूत्र ८५।

४ नायाधम्मकहाओ ८।१५४, पृ० १८६,१८७।

उवासगदसाओ

नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशाङ्गी का सातवा अग है। इसमे दस उपासको का जीवन वर्णित है इसलिए इसका नाम 'उवासगदसाओ' है। श्रमण-परम्परा मे श्रमणो की उपासना करने वाले गृहस्थो को श्रमणोपासक या उपासक कहा गया है। भगवान महावीर के अनेक उपासक थे। उनमे से दस मुख्य उपासको का वर्णन करने वाले दस अध्ययन इसमे सकलित हैं।

विषय-वस्तु—

भगवान् महावीर ने मुनि-धर्म और उपासक धर्म—इस द्विविध धर्म का उपदेश दिया था। मुनि के लिए पाच महाव्रतो का विधान किया और उपासक के लिए वारह व्रतो का। प्रथम अध्ययन मे उन वारह व्रतो का विशद वर्णन मिलता है। श्रमणोपासक आनन्द भगवान् महावीर के पास उनकी दीक्षा लेता है। व्रतो की यह सूची धार्मिक या नैतिक जीवन की प्रशस्त आचार-सहिता है। इसकी आज भी उतनी ही उपयोगिता है जितनी ढाई हजार वर्ष पहले थी। मनुष्य स्वभाव की दुर्वलता जब तक वनी रहेगी तब तक उसकी उपयोगिता समाप्त नही होगी।

मुनि का आचार-धर्म अनेक आगमो मे मिलता है, किन्तु गृहस्थ का आचार-धर्म मुख्यत इसी आगम मे मिलता है। इसलिए आचार-शास्त्र मे इसका मुख्य स्थान है। इसकी रचना का मुख्य प्रयोजन ही गृहस्थ के आचार का वर्णन करना है। प्रसगवश इसमे नियतिवाद के पक्ष-विपक्ष की सुन्दर चर्चा हुई है। उपासको की धार्मिक कसौटी की घटनाए भी मिलती है। भगवान महावीर उपासको की साधना का कितना ध्यान रखते थे और उन्हे समय-समय पर कैसे प्रोत्साहित करते थे यह भी जानने को मिलता है।

जयधवला के अनुसार प्रस्तुत आगम उपासको के ग्यारह प्रकार के धर्म का वर्णन करता है। उपासक-धर्म के ग्यारह अग ये हैं—दर्शन, व्रत, सामायिक, पौषधोपवास, सचित्तविरति, रात्रि-भोजन विरति, ब्रह्मचर्य, आरभविरति, अनुमति विरति और उद्दिष्ट विरति[1]। आनन्द आदि श्रावको ने उक्त ग्यारह प्रतिमाओ का आचरण किया था। व्रतो की आराधना स्वतन्त्र रूप मे भी की जाती है और प्रतिमाओ के पालन के समय भी की जाती है। व्रत और प्रतिमा—ये दो पद्धतिया हैं। समवायाग और नन्दी सूत्र मे व्रत और प्रतिमा दोनो का उल्लेख है। जयधवला मे केवल प्रतिमाओ का उल्लेख है।

---

१ कसायपाहुड भाग १, पृष्ठ १२९, १३०।

अंतगडदसाओ

नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशाङ्गी का आठवा अग है। 'इसमे जन्म-मरण की परम्परा का अत करने वाले व्यक्तियो का वर्णन है, तथा इसके दस अध्ययन हैं इसलिए इसका नाम 'अंतगडदसाओ' है। समवायाग मे इसके दस अध्ययन और सात वर्ग वतलाए गए हैं[1]। नदी सूत्र मे इसके अध्ययनो का कोई उल्लेख नही है, केवल आठ वर्गो का उल्लेख है[2]। अभयदेवसूरि ने दोनो मे सामञ्जस्य स्थापित करने का प्रयत्न किया है। उन्होने लिखा है कि प्रथम वर्ग मे दस अध्ययन हैं इस अपेक्षा से समवायाग सूत्र मे दस अध्ययन और अन्य वर्गो की अपेक्षा से सात वर्ग वतलाए गए हैं। नन्दी सूत्र मे अध्ययनो का उल्लेख किए विना केवल आठ वर्ग वतलाए गए हैं[3]। किन्तु इस सामञ्जस्य का अत तक निर्वाह हो नही सकता, क्योकि समवायाग मे प्रस्तुत आगम के शिक्षा-काल (उद्देशन-काल) दस वतलाए गए हैं। नदीसूत्र मे उनकी सख्या आठ है। अभयदेवसूरि ने लिखा है कि उद्देशनकालो के अन्तर का आशय हमे ज्ञात नही[4]। नदीसूत्र के चूर्णिकार श्री जिनदास महत्तर और वृत्तिकार श्री हरिभद्रसूरि ने भी यह लिखा है कि प्रथम वर्ग मे दस अध्ययन होने के कारण प्रस्तुत आगम का नाम 'अतगडदसाओ' है[5]। चूर्णिकार ने दसा का अर्थ अवस्था भी किया है[6]।

प्रस्तुत आगम का वर्णन करने वाली तीन परम्पराए हैं—एक समवायाग की, दूसरी तत्त्वार्थवार्तिक आदि की और तीसरी नदी की।

प्रथम परम्परा के अनुसार प्रस्तुत आगम के दस अध्ययन है। इसकी पुष्टि स्थानाग सूत्र से होती है। स्थानाग मे प्रस्तुत आगम के दस अध्ययन और उनके नाम निर्दिष्ट हैं, जैसे—नमि, मातग, सोमिल, रामगुप्त, सुदर्शन, जमाली, भगाली, किंकष, चिल्वक और फाल अवडपुत्र[7]। तत्त्वार्थवार्तिक मे कुछ पाठ-भेद के साथ ये दस नाम मिलते हैं, जैसे—नमि, मातग, सोमिल, रामगुप्त, सुदर्शन, यमलीक, वलीक, कवल, पाल और अवष्ठपुत्र[8]। समवायाग मे दस अध्ययनो का उल्लेख है, किन्तु उनके नाम निर्दिष्ट नही हैं। तत्त्वार्थवार्तिक के अनुसार प्रस्तुत आगम मे प्रत्येक

---

१ समवाओ, पइण्णगसमवाओ, सूत्र ९६ दस अज्झयणा सत्त वग्गा।

२ नदी, सूत्र ८८ अट्ठ वग्गा।

३ समवायागवृत्ति, पत्र ११२ दस अज्झयण त्ति प्रथमवर्गापेक्षयैव घटन्ते, नन्द्या तथैव व्याख्यातत्वात्, यच्चेह पठ्यते 'सत्त वग्ग' त्ति तत् प्रथमवर्गादन्यवर्गापेक्षया, यतोऽष्ट वर्गा', नन्द्यामपि तथा पठितत्वात्।

४ समवायागवृत्ति, पत्र ११२ ततो भणित—अट्ठ उद्देसणकाला इत्यादि, इह च दश उद्देशनकाला अधीयन्ते इति नास्याभिप्रायमवगच्छाम।

५ (क) नन्दीसूत्र, चूर्णिसहित पृ० ६८. पढमवग्गे दस अज्झयण त्ति तस्सक्खतो अतकडदस त्ति।
(ख) नन्दीसूत्र, वृत्तिसहित पृ० ८३ प्रथमवर्गे दशाध्ययनानि इति तत्सङ्ख्यया अन्तकृद्दशा इति।

६. नन्दीसूत्र, चूर्णिसहित पृ० ६८ : दस त्ति—अवत्था।

७ ठाण, १०।११३।

८. तत्त्वार्थवार्तिक १।२०, पृ० ७३।

तीर्थंकर के समय मे होने वाले दस-दस अतकृत केवलियो का वर्णन है[1]। जयधवला मे भी तत्त्वार्थ-वार्तिक के वर्णन का समर्थन मिलता है[2]। नदी सूत्र मे दस अध्ययनो का उल्लेख और नाम निर्देश दोनो नही हैं। इस आधार पर अनुमान किया जा सकता है कि समवायाग और तत्त्वार्थवार्तिक मे प्राचीन परम्परा सुरक्षित है और नदी सूत्र मे प्रस्तुत आगम के वर्तमान स्वरूप का वर्णन है। वर्तमान मे उपलब्ध आठ वर्गो मे प्रथम वर्ग के दस अध्ययन हैं, किन्तु इनके नाम उक्त नामो से सर्वथा भिन्न है, जैसे—गौतमसमुद्र, सागर, गम्भीर, स्तिमित, अचल, कापिल्य, अक्षोभ, प्रसेनजित, और विष्णु। अभयदेवसूरि ने स्थानाग वृत्ति मे इसे वाचनान्तर माना है[3]। इससे स्पष्ट होता है कि नदी मे जिस वाचना का वर्णन है वह समवायाग मे वर्णित वाचना से भिन्न है।

'अतगड' शब्द के दो सस्कृत रूप प्राप्त होते हैं—अतकृत और अतकृत्। अर्थ की दृष्टि से दोनो मे कोई अन्तर नही है, किन्तु 'गड' का 'कृत' रूप छाया की दृष्टि से अधिक उपयुक्त है।

विषय-वस्तु—

वासुदेव कृष्ण और उनके परिवार के सम्बन्ध मे इस आगम मे विशद जानकारी मिलती है। वासुदेवकृष्ण के छोटे भाई गजसुकुमाल की दीक्षा और उनकी साधना का वर्णन बहुत ही रोमाच-कारी है।

छठे वर्ग मे अर्जुनमालाकार की घटना उल्लिखित है। एक आकस्मिक घटना ने उसे हत्यारा बना दिया और एक प्रसग ने उसे साधु बना दिया। परिस्थिति और वातावरण से मनुष्य बनता-बिगडता है—इसे स्वीकार न करें फिर भी यह स्वीकार किया जा सकता है कि मनुष्य के बनने-बिगडने मे वे निमित्त बनते हैं।

अतिमुक्तक मुनि के अध्ययन मे आन्तरिक साधना का महत्व समझा जा सकता है। समग्र आगम मे तपस्या ही तपस्या दृष्टिगोचर होती है। ध्यान के उल्लेख नगण्य हैं। भगवान् महावीर ने उपवास और ध्यान—दोनो को स्थान दिया था। तपस्या के वर्गीकरण मे उपवास बाह्य तप और ध्यान आन्तरिक तप है। भगवान् महावीर ने अपने साधना-काल मे उपवास और ध्यान—दोनो का प्रयोग किया था। यह अनुसन्धेय है कि प्रस्तुत आगम मे केवल उपवास पर ही इतना बल क्यो दिया गया ? विस्मृति और नव-निर्माण की शृखला मे बचा हुआ प्रस्तुत आगम अनेक दृष्टियो से महत्वपूर्ण और अनुसन्धेय है।

---

१ तत्त्वार्थवार्तिक १।२०, पृ० ७३ · इत्येते दश वर्धमानतीर्थङ्करतीर्थे। एवमृषभादीना त्रयोविंशतेस्तीर्थेष्वन्येऽन्ये च दश दशानगारा दश दश दारुणानुपसर्गान्निर्जित्य कृत्स्नकर्मक्षयादन्तकृत दश अस्या वर्ण्यन्ते इति अन्तकृद्दशा।

२ कसायपाहुड भाग १ पृ० १३० अतयडदसा णाम अग चउव्विहोवसग्गे दारुणे सहिऊण पाडिहेर लद्धूण णिव्वाण गदे सुदसणादि-दस-दस-साहू तित्थं पडि वण्णेदि।

३ स्थानागवृत्ति पत्र ४८३ ···ततो वाचनान्तरापेक्षाणीमानीति सम्भावयाम।

अणुत्तरोववाइयदसाओ

नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशाङ्गी का नवा अग है। इसमे अनुत्तर नामक स्वर्ग-समूह मे उत्पन्न होने वाले मुनियो से सम्बन्धित दस अध्ययन हैं, इसलिए इसका नाम 'अणुत्तरोववाइयदसाओ' है। नदी सूत्र मे केवल तीन वर्गो का उल्लेख है[1]। स्थानाग मे केवल दस अध्ययनो का उल्लेख है[2]। राजवार्तिक के अनुसार इसमे प्रत्येक तीर्थंकर के समय मे होने वाले दस-दस अनुत्तरोपपातिक मुनियो का वर्णन है[3]। समवायाग मे दस अध्ययन और तीन वर्ग—दोनो का उल्लेख है[4]। उसमे दस अध्ययनो के नाम उल्लिखित नही हैं। स्थानाग और तत्त्वार्थवार्तिक के अनुसार उनके नाम इस प्रकार है।

(१) स्थानाग के अनुसार—

ऋषिदास, धन्य, सुनक्षत्र, कार्त्तिक, स्वस्थान, शालिभद्र, आनद, तेतली, दशार्णभद्र और अतिमुक्त[5]।

(२) राजवार्तिक के अनुसार—

ऋषिदास, वान्य, सुनक्षत्र, कार्त्तिक, नन्द, नन्दन, शालिभद्र, अभय, वारिषेण और चिलातपुत्र[6]।

उक्त दस मुनि भगवान् महावीर के शासन मे हुए थे—यह तत्त्वार्थवार्तिककार का मत है। धवला मे कार्तिक के स्थान पर कार्तिकेय और नद के स्थान पर आनंद मिलता है[7]।

प्रस्तुत आगम का जो स्वरूप उपलब्ध है वह स्थानाग और समवायाग की वाचना से भिन्न है। अभयदेवसूरि ने इसे वाचनान्तर वतलाया है[8]। उपलब्ध वाचना के तृतीय वर्ग मे धन्य,

---

१ नदी, सूत्र ८९ तिण्णि वग्गा।

२ ठाण १०।११४

३ (क) तत्त्वार्थवार्तिक १।२०, पृ० ७३।

इत्येते दश वर्धमानतीर्थंकरतीर्थे। एवमृषभादीना त्रयोविंशतेस्तीर्थेष्वन्येऽन्ये च दश दशानगारा दश दश दारुणानुपसर्गान्निर्जित्य विजयाद्यनुत्तरेषूत्पन्ना इत्येवमनुत्तरौपपादिक दशास्या वर्ण्यन्त इत्यनुत्तरौपपादिकदशा।

(ख) कसायपाहुड भाग १, पृ० १३०।

अणुत्तरोववादियदसा णाम अग चउव्विहोवसग्गे दारुणे सहियूण चउवीसण्ह तित्थयराण तित्थेसु अणुत्तर-विमाण गदे दस दस मुणिवसहे वण्णेदि।

४ समवाओ, पइण्णगसमवाओ ९७।

दस अज्झयणा तिण्णि वग्गा ।

५ ठाण १०।११४।

६ तत्त्वार्थवार्तिक १।२० पृ० ७३।

७ षट्खण्डागम १।१।२।

८ स्थानागवृत्ति पत्र ४८३

तदेवमिहापि वाचनान्तरापेक्षयाऽध्ययनविभाग उक्तो न पुनरुपलभ्यमानवाचनापेक्षयेति।

सुनक्षत्र और ऋषिदास—ये तीन अध्ययन प्राप्त है। प्रथम वर्ग मे वारिषेण और अभय—ये दो अध्ययन प्राप्त हैं, अन्य अध्ययन प्राप्त नही हैं।

विषय-वस्तु—

प्रस्तुत आगम मे अनेक राजकुमारो तथा अन्य व्यक्तियो के वैभवपूर्ण और तपोमय जीवन का सुन्दर वर्णन है। धन्य अनगार के तपोमय जीवन और तप से कृश बने हुए शरीर का जो वर्णन है वह साहित्य और तप दोनो दृष्टियो से महत्वपूर्ण है।

पण्हावागरणाइं

नाम-बोध

प्रस्तुत आगम द्वादशाङ्गी का दसवा अग है। समवायाग सूत्र और नदी मे इसका नाम 'पण्हावागरणाइ' मिलता है[1]। स्थानाग मे इसका नाम 'पण्हावागरणदसाओ' है[2]। समवायाग मे 'पण्हावागरणदसासु'–यह पाठ भी उपलब्ध है। इससे जाना जाता है कि समवायाग के अनुसार स्थानाग-निर्दिष्ट नाम भी सम्मत है। जयधवला मे 'पण्हवायरण' और तत्त्वार्थवार्तिक मे 'प्रश्नव्याकरणम्' नाम मिलता है[3]।

विषय-वस्तु

प्रस्तुत आगम के विषय-वस्तु के वारे मे विभिन्न मत प्राप्त होते हैं। स्थानाग मे इसके दस अध्ययन वतलाए गए हैं—उपमा, सख्या, ऋषि-भाषित, आचार्य-भाषित, महावीर-भाषित, क्षौमक प्रश्न, कोमल प्रश्न, आदर्श प्रश्न, अगुष्ठ प्रश्न और वाहु प्रश्न[4]। इनमे वर्णित विषय का सकेत अध्ययन के नामो से मिलता है।

समवायाग और नदी के अनुसार प्रस्तुत आगम मे नाना प्रकार के प्रश्नो, विद्याओ और दिव्य-सवादो का वर्णन है[5]। नदी मे इसके पैतालिस अध्ययनो का उल्लेख है। स्थानाग से उसकी

---

१ (क) समवाओ, पइण्णगसमवाओ सूत्र ९८।
(ख) नदी, सूत्र ९०।

२ ठाण १०।११०।

३ (क) कसायपाहुड, भाग १ पृष्ठ १३१ पण्हवायरण णाम अग।
(ख) तत्त्वार्थवार्तिक १।२० प्रश्नव्याकरणम्।

४ ठाण १०।११६
पण्हावागरणदसाण दस अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा—उवमा सखा, इसिभासियाइ, आयरियभासियाइ, महावीरभासियाइ, खोमगपसिणाइ, कोमलपसिणाइ, अद्दागपसिणाइ, अगुट्ठपसिणाइ वाहुपसिणाइं।

५ (क) समवाओ, पइण्णगसमवाओ सूत्र ९८
पण्हावागरणेसु अट्ठुत्तर पसिणसय अट्ठुत्तर अपसिणसय अट्ठुत्तर पसिणापसिणय विज्जाइसया, नागसुवण्णेहिं सद्धि दिव्वा सवाया आघविज्जति।
(ख) नदी, सूत्र ९०।

कोई सगति नही हैं। समवायाग मे इसके अध्ययनो का उल्लेख नही है, किन्तु उसके 'पण्हावागरणं-दसासु' इस आलापक (पैराग्राफ) के वर्णन से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता हैं कि समवायाग मे प्रस्तुत आगम के दस अध्ययनो की परम्परा स्वीकृत है। उक्त आलापक मे बतलाया गया है कि प्रश्नव्याकरणदसा मे प्रत्येक बुद्ध भाषित, आचार्य भाषित, वीरमहर्षि भाषित, आदर्श प्रश्न, अगुष्ठ प्रश्न, बाहु प्रश्न, असि प्रश्न, मणि प्रश्न, क्षौम प्रश्न, आदित्य प्रश्न आदि-आदि प्रश्न वर्णित हैं। इन नामो की स्थानाग मे निर्दिष्ट दस अध्ययन के नामो के साथ तुलना की जा सकती है। यद्यपि उद्देशनकाल पैंतालिस बतलाए गए हैं फिर भी अध्ययनो की सख्या का स्पष्ट निर्णय नही किया जा सकता। गभीर विषय वाले अध्ययन की शिक्षा अनेक दिनो तक दी जा सकती है।

तत्त्वार्थवार्तिक के अनुसार प्रस्तुत आगम मे अनेक आक्षेप और विक्षेप के द्वारा हेतु और नय से आश्रित प्रश्नो का उत्तर दिया गया है, लौकिक और वैदिक अर्थो का निर्णय किया गया है[1]।

जयधवला के अनुसार प्रस्तुत आगम आक्षेपणी, विक्षेपणी, सवेजनी और निर्वेदनी—इन चारो कथाओ तथा प्रश्न के आधार पर नष्ट, मुष्टि, चिन्ता, लाभ, अलाभ, सुख, दुख, जीवन और मरण का वर्णन करता है[2]।

उक्त ग्रथो मे प्रस्तुत आगम का जो विषय वर्णित है वह आज उपलब्ध नही हैं। आज जो उपलब्ध है उसमे पाच आश्रवो (हिंसा, असत्य, चौर्य, अब्रह्मचर्य और परिग्रह) तथा पांच संवरो (अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह) का वर्णन है। नदी मे उसका कोई उल्लेख नही है। समवायाग मे आचार्य भाषित आदि अध्ययनो का उल्लेख है तथा जयधवला मे आक्षेपणी आदि चारो कथाओ का उल्लेख है। इससे अनुमान किया जा सकता है कि प्रस्तुत आगम का उपलब्ध विषय भी प्रश्नो के साथ रहा हो, बाद मे प्रश्न आदि विद्याओ की विस्मृति हो जाने पर वह भाग प्रस्तुत आगम के रूप मे बचा हो। यह अनुमान भी किया जा सकता है कि प्रस्तुत आगम के प्राचीन स्वरूप के विच्छिन्न हो जाने पर किसी आचार्य के द्वारा नए रूप से रचना की गई हो। नदी मे प्रस्तुत आगम की जिस वाचना का विवरण है, उसमे आश्रवो और सवरो का वर्णन नही है, किन्तु नदी चूर्णि मे उनका उल्लेख मिलता है[3]। यह सभव है कि चूर्णिकार ने उपलब्ध आकार के आधार पर उनका उल्लेख किया है।

---

१. तत्त्वार्थवार्तिक ११२०, पृ० ७३, ७४.
आक्षेपविक्षेपैर्हेतुनयाश्रितानां प्रश्नाना व्याकरणं प्रश्नव्याकरणम्। तस्मिल्लौकिकवैदिकानामर्थाना निर्णय ।

२ कसायपाहुड, भाग १, पृ० १३१, १३२.
पण्हवायरणं णाम अग अक्खेवणी-विक्खेवणी-संवेयणी-णिव्वेयणीणामाओ चउव्विह कहाओ पण्हादो णट्ठ-मुट्ठि-चिंता-लाहालाह-सुखदुक्ख-जीवियमरणाणि च वण्णेदि।

३ नदी सूत्र, चूर्णि सहित पृ० ६६।

विवागसुयं

नाम-बोध

प्रस्तुत आगम द्वादशाङ्गी का ग्यारहवा अग है। इसमे सुकृत और दुष्कृत कर्मों के विपाक का वर्णन किया गया है, इसलिए इसका नाम 'विवागसुय' है[1]। स्थानाग मे इसका नाम 'कम्म विवागदसा' है[2]।

विषय-वस्तु

प्रस्तुत आगम के दो विभाग हैं—दु ख विपाक और सुख विपाक। प्रथम विभाग मे दुष्कर्म करने वाले व्यक्तियो के जीवन प्रसगो का वर्णन है। उक्त प्रसगो को पढने पर लगता है कि कुछ व्यक्ति हर युग मे होते हैं। वे अपनी क्रूर मनोवृत्ति के कारण भयकर अपराध भी करते हैं। दुष्कर्म व्यक्ति की शारीरिक और मानसिक स्थितियो को किस प्रकार प्रभावित करता है, यह भी जानने को मिलता है। दूसरे विभाग मे सुकृत करने वाले व्यक्तियो के जीवन-प्रसग हैं। जैसे क्रूर कर्म करने वाले व्यक्ति हर युग मे मिलते हैं वैसे ही उपशान्त मनोवृत्ति वाले लोग भी हर युग मे मिलते हैं। अच्छाई और बुराई का योग आकस्मिक नही है।

स्थानाग सूत्र मे कर्म विपाक के दस अध्ययन बतलाए गए हैं—मृगापुत्र, गोत्रास, अड, शकट, माहन, नन्दीषेण, शौरिक, उदुम्बर, सहसोद्दाह-आमरक और कुमार लिच्छवी[3]। ये नाम किसी दूसरी वाचना के हैं।

उपसंहार

अग सूत्रो के विवरण और उपलब्ध स्वरूप मे पूर्ण सवादिता नही है। इस आधार पर यह अनुमान किया जा सकता है कि अग सूत्रो का उपलब्ध स्वरूप केवल प्राचीन नही है, प्राचीन और अर्वाचीन दोनो सस्करणो का सम्मिश्रण है। इस विषय का अनुसन्धान बहुत ही महत्वपूर्ण हो सकता है कि अग सूत्रो के उपलब्ध स्वरूप मे कितना प्राचीन भाग है और कितना अर्वाचीन तथा किस आचार्य ने कब उसकी रचना की। भाषा, प्रतिपाद्य, विषय और प्रतिपादन शैली के आधार पर यह अनुसन्धान किया जा सकता है। यद्यपि यह कार्य बहुत ही श्रम, साध्य है, पर असभव नही है।

---

१ (क) समवाओ, पइण्णगसमवाओ सूत्र ९९।
  (ख) नदी, सूत्र ९१।
  (ग) तत्त्वार्थवार्तिक १।२०।
  (घ) कसायपाहुड, भाग १ पृ० १३२।
२ ठाण १०।११०।
३ ठाण १०।१११।

कार्य-संपूर्ति

प्रस्तुत आगमो के पाठ-सशोधन मे अनेक मुनियो का योग रहा है। उन सबको मैं आशीर्वाद देता हूँ कि उनकी कार्यजा शक्ति और अधिक विकसित हो।

इसके सम्पादन का बहुत कुछ श्रेय शिष्य मुनि नथमल को है, क्योंकि इस कार्य में अहर्निश वे जिस मनोयोग से लगे हैं, उसी से यह कार्य सम्पन्न हो सका है। अन्यथा यह गुरुतर कार्य बड़ा दुरूह होता। इनकी वृत्ति मूलत. योगनिष्ठ होने से मन की एकाग्रता सहज बनी रहती है। सहज ही आगम का कार्य करते-करते अन्तर्रहस्य पकड़ने मे इनकी मेधा काफी पैनी हो गई है। विनय-शीलता, श्रम-परायणता और गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण भाव ने इनकी प्रगति मे बड़ा सहयोग दिया है। यह वृत्ति इनकी बचपन से ही है। जब से मेरे पास आए, मैंने इनकी इस वृत्ति में क्रमशः वर्धमानता ही पाई है। इनकी कार्य-क्षमता और कर्त्तव्य-परता ने मुझे बहुत संतोष दिया है।

मैंने अपने सघ के ऐसे शिष्य साधु-साध्वियो के बल-बूते पर ही आगम के इस गुरुतर कार्य को उठाया है। अब मुझे विश्वास हो गया है कि अपने शिष्य साधु-साध्वियो के निस्वार्थ, विनीत एव समर्पणात्मक सहयोग से इस वृहत् कार्य को असाधारण रूप से सम्पन्न कर सकूँगा।

भगवान् महावीर की पचीसवी निर्वाण शताब्दी के अवसर पर उनकी वाणी को जनता के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अनिर्वचनीय आनन्द का अनुभव हो रहा है।

अणुव्रत विहार, नई दिल्ली-१
२५००वा निर्वाण दिवस

आचार्य तुलसी

Preface

NĀYĀ DHAMMAKAHĀO

The title

The present Āgama is the sixth Anga of Dwādaśāngī It has two Śrutaskandhas The first is called as 'NĀYĀ' and the second as 'DHAMMAKAHĀO'. On combining both the Śrutaskandhas, the present Āgama has the title as 'NĀYĀDHAMMAKAHĀO'. 'NĀYĀ' (Jnāta) means examples and 'DHAMMAKAHĀO' means religious fables The present Āgama has both of historical illustrations and imaginary fables [1]

In the Jayadhawalā the title of this Āgama is found as 'Nāhadhāmmakahā' (Nāthadharma-kathā). 'Nātha' means the Lord 'Nāthadhamma-kahā' i.e, the dharmakathā expounded by the Tīrthankara In some Sanskrit works the title of this Āgama is given as 'Jnātṛdharmakathā'. Āchārya Akalanka too has given the title of this Āgama as 'Jnātadharmakathā'[2]. Āchārya Malayagiri and Abhayadeva Sūri give the title of 'Jnātadharmakathā It is a treatise mainly containing illustrative religious stories According to them, the first Śrutasakandha has illustrations and the second Śrutaskandha has religious stories. Both of them mention the lengthening of the word 'Jnāta' [3]

The family name of lord Mahavīra has been given as 'Jnāta' and 'Nātha' in the Śwetamber and Digamber literature respectively. On this basis, some scholars have tried to relate this Āgama with lord Mahāvīra [4] They hold that 'Jnātadharmakathā' or 'Nātha-dharmakathā' means the 'Dharmakathā by lord Mahāvīra'. Waber says that the work having fables pertaining to the religion of Jnātriwanśī Mahāvīra, is titled as 'NĀYĀDHAMMAKAHĀ' [5] But, on the account found in the Samwāyānga and the Nandi, the meaning

1 Samawao, painnagasamawao, Sutra 94
2 Tatwartha Vartika, 1/20
3 (a) Nandivritti, pages 230-31
(b) Samawayanga Vritti, page 108.
4 Jain sahitya ka Pitihas, Purwa-Pithika, page 660
5 Stories from the Dharma of NAYA, I A , Vol 19, page 66

'Dharmakathā of Jnātṛiwansī Mahāvīra' does not seem to be appropriate. It has been told there that in the 'Jnātadharmakathā', the cities and gardens etc of the 'Jnātas' (the persons cited) have been described[1] The title of the first Adhyayana of this Āgama is 'Ukkhittanāye' (Utkshiptajnāta). On this basis also, the word 'Nātha' seems to go with the meaning as an 'illustration' only.

The content

The spiritual elements such as non-voilence, palate contral, faith, restraint of senses etc. have been expounded in an excellent style through the illustrations and fables in the present Āgama Besides that of a plot, it has the elegance of description also. While going through the first Adhyayana, we have the reminiscense of the poetical prose-work such as the Kādambari. In the ninth Adhyayana, the description of the boat sinking in the sea, is very lively and horripilating In the twelfth Adhyayana, the process of purifying water reminds us of the modern method The changability of the Pudgala substance has been expounded by this illustration.

Along with the main illustrations and fables, some subsidiary fables are also found. In the eighth Adhyayana the fable of a well-frog has been recorded in an excellent style. Parivrājikā Chokha goes to Jitaśatru Jitaśatru enquires of her—You wander a lot. Have you ever seen a harem like that of mine? With a smile Chokha said—You are like a Kūpa-Mandūka.

Who is that Kūpa Mandūka ?

Chokha said—There was a frog in a well He was born and brought up there. He considered his well everything One day an ocean-frog came down in that well The well-frog said to him—Who are you ? He answered—I am a frog from the ocean I have came from there The well-frog asked him—How big is the ocean ? The ocean-frog said—It is very big The well-frog, drawing a boundry with his foot, asked him—Is the ocean as big as this ? The ocean-frog answered—Far more greater than this The well-frog had a jump, from the eastern to the western end of the well, and said—Is the ocean so big ? The ocean-frog answered—It is far more bigger than this too. The well-frog could not believe it as it had never seen any thing except the well[2].

---

1. (a) Samwao painnagasamawao, Sutra 94
   (b) Nandi, Sutra 85.
2. Nayadhammakahao, 8/154, pages 186-87.

In this way, from the view point of various fables, insertions, illustrations, descriptions, anecdotes and word-usages, this Āgama has a great value. A comparative study of it with that of the different fable-works found the world over may well give some new facts

UWĀSAGADASĀO

The title

The present Āgama is the seventh Anga of the Dwādaśāngī It has the biographies of ten Upāsakas (lay devotees), therefore, it is called as 'Upāsagadasāo' In the Śramanū order the laymen serving the Śramanas are called Śramanopāsakas or Upāsakas Lord Mahāvira had large number of Upāsakas. It comprises of ten 'Adhyayanas' depicting the life of ten principal Upāsakas.

The Content

Lord Mahāvira has given twofold code of conduct, such as laws of conduct for Munis and laws of conduct for Upāsakas Five Mahāvratas (great vows) were postulated for a Muni and twelve Vratas (vows) for a Upāsaka. Śramanopāsaka Anand was consecreted and initiated to his cult by him The list of the Vratas is an excellent code of conduct pertaining to religious or ethical life Even today, it has the same utility as it had 2500 years ago As long as the weakness of human nature is there, its utility will always exist

The code of conduct for Munis is found in many Āgamas but the code of conduct for laymen is found in this Āgama only It has, therefore, its own place in the codes of conduct The object of its composition is only to put forth the code of conduct for a layman Incidently, Niyatiwāda has also been discussed nicely with its arguments for and against Incidents, proving the religious touch-stone for the Upāsakas, are also found It also throws light on the fact as to how lord Mahāvira took care of the accomplishment of the Upāsakas, and encouraged them to higher spiritual life from time to time

According to the Jayadhawalā the present Āgama narrates eleven-fold practices of the 'Upāsakas' They are—Darśan, Vrat, Sāmayika, Pauṣadhopawā, Saćitta-Virati, Ratri-Bhojan-Virati, Brahmaćarya, Ārambha-Virati, Parigraha-virati, Anumāti-Virati, and Uddiṣta Virati[1] The Śrāwakas, beginning from

1, Kasyapahuda, part i, pages 129-30,

Ananda, had practised above said eleven Pratimās The Vratas are practised indenpedently, and at the time of fulfilment of Pratimās also. These Vratās and Pratimās are the two religious codes for an Upāsaka. In the Samawāyānga and the Nandi Sūtra, Vratā and Pratimā both are mentioned. The Jayadhawalā gives an account of Pratimās only.

ANTAGADADASĀO

The title

The present Āgama is the eighth of the Dwādasāngī The illustrious ones who put an end to the cycle of death and birth, have been narrated in it, and it has ten Adhyayanas Hence the title 'Antagadadasāo' The Samwāyānga tells us that it contained ten Adhyayanas and seven Vargas[1]. The Nandi Sūtra says nothing about its Adhyayanas and only eight Vargas have been accounted for and in it[2]. Sri Abhayadeva Sūri has tried to find consistency in these both He tells us that the first Varga has ten Adhyayanas, therefore the Samawāyānga Sūtra mentions ten Adhyayanas and seven Vargas only The Nandi Sūtra gives eight Vargas only with no mention of Adhyayanas[3]. But this consistency cannot be maintained to the end, because the Samawāyānga gives us ten Śiksha-kālas (Uddeśan kālas) of this Āgama and the Nandi Sūtra gives only eight Sri Abhayadeva Sūri admits that he does not understand the purpose behind the difference in the number of the Uddeśan-kālas[4] The Chūrnikār of the Nandisūtra, Sri Jinadas Mahattar and the Vrittikār, Śri Haribhadra Sūri also write that the present Āgama is given the title 'Antagadadasāo' as it has ten Adhyayanas in the first Varga[5]. The Chūrnikār takes the meaning of 'Daśā' as 'Awasthā' (condition) also[6].

Three traditions are found to narrate the present Āgama . firstly, that of the samawāyānga, secondly, that of the Tatwārtha Vārtika, and thirdly, that of the Nandi Sūtra

---

1 Samawao, painnagasamawao, Sutra *96*
2 Nandi Sutra, 88
3 Samwayanga Vritti, page 112
4 Samawayanga Vritti, page 112
5 (a) Nandi with Churni, page 68
   (b) Nandi with Vritti, page 83.
6. Nandi with the Churnipage 68 Dasatti Awastha

According to the first tradition, the present Āgama has ten Adhyayanas. The Sthānānga Sūtra supports it. The Sthānānga mentions the ten Adhyayanas and their headings, such as Nami, Mātanga, Somila, Ramagupta, Sudarśana, Jamāli, Bhagāli, Kimkaṣa, Ćilawaka, Pāla, and the Ambaṣhthaputtra[1] These headings are found in the Tatwārthavartika also with some variance, such as, Nami, Mātang, Somila, Ramaguptā, Sudarśana, Yamalīka, Kambala, Pāla and Ambasthaputtra Samawayanga mentions ten adhayans without giving their names The present Āgama gives an account of the Antakrīta Kewalīs, in groups of ten contemporaries of each Tīrthankara.[2] The Jayadhawala, too, supports this statement of the Tatwārthavrātika In the Nandisūtra mention is found neither of the ten Adhyayanas nor of their headings On this basis, it can be inferred that the Samawāyānga and the Tatwārthavartika maintain the old tradition and the Nandi-Sūtra gives the Āgama in the form found at present There are ten Adhyayanas of the first Varga out of the eight Vargas found at present, but their headings altogether differ from the above- said headings, i e, Gautama, Samudra, Sāgara, Gambhīra, Stanita, Aćala Kāmpilya, Akśetra, Prasenjit and Visṇu. In the 'Sthānāngavritti' Sri Abhaya-deva Suri acknowledges it as a variant 'Vācnā'[3]. This shows that the 'Vāćnā' of the 'Nandi' is different from the 'Vāćnā' found in the 'Samawāyānga'

The word 'Antagaḍa' has two Sanskrit forms—Antakṛita and Antakrit Both have the same sense but 'gāda' goes more with the Sanskrit version 'Krita' so far as morphology is concerned

The Content

This Āgama gives an excellent account of Vāsudeva Krisṇa and his family. The Dīkśā (initiation) and accomplishment of Gajasukamāla, the younger brother of Vāsudeva Krisna has been horripilatingly narrated

In the sixth Varga, is found an account of the incident occured with Arjuna, the gardener. An accident turned him to be a murderer and the other association made him a saint It may not be admitted that a man changes with the circumstances and atmosphere, but, even then, it may be accepted that they are the cause of the rise and fall of a man

---

1. Tatwarthavartika 1/20
2. Tatwarthavartika 1/20
3 Sihany Vritti

By the Adhyayana of Atımuktaka Munı, the value of spırıtual accomplıshment can be well understood Fastıng alone ıs seen ın this Āgama through out. The narratıons of medıtatıons are scanty Lord Mahavīra had laıd stress upon both—the fast and the medıtatıon In the classıficatıon of penance, fast ıs the outer penance and medıtatıon ıs the ınner one Lord Mahavıra ın hıs penance-perıod, had observed both, fast and medıtatıon. It ıs worth ınvestıgatıng why thıs Āgama lays so much stress on fastıng only Thıs Āgama, a remanent ın the successıon of oblıvıon and reproductıon, ıs valuable and worthy of research work from many poınts of vıew.

ANUTTAROWAWĀIYA-DASĀO

The title

Thıs Āgama ıs the nınth Anga of the Dwādaśangī As ıt contaınsten Adhyayanas regardıng the Munıs born ın the Anuttara Swarga class, ıts title ıs gıven as 'Anuttarowawāıya-Dasāo'. The Nandı Sūtra mentıons only three Vargas[1] The Sthānānga quotes only ten Adhyayanas[2] Accordıng to the Rajavārttıka groups of ten Anuttaropapātıka Munıs, contemporarıes of each Tīrthanker, have been narrated ın ıt[3] The Samawāyānga mentıons the ten Adhyayanās and the three Vargas too[4] But the headıngs of the ten Adhyayanas have not been gıven ın ıt Accordıng to the Sthānānga and the Tattwārthavārttıka they read as, Rısıdasa, Dhanya, Sunaksatra, Kārttıka, Swasthan, Śālıbhadra, Ānanda, Tetalı, Dasārnabhadra and Atımukta[5], and as Rısıdasa, Dhanya, Sunakṣatra, Kārttıka, Nandanandana, Śātībhadra, Abhaya, Wārıṣena, and Cılattaputra respectıvely. The above saıd Munıs were the contemporarīes of Lord Mahāvıra, such is the opınıon of the author of the Tattawārthavārttıka[6] In the Dhawalā we find Kārtıkeya ınstead of Kārttıka and Ānand ınstead of Nanda[7]

The present form of the Āgama ıs dıfferent from the 'Vaćna' of the Sthānāga and the Samawāyānga Abhayadeva Sūrī holds that ıt ıs a dıfferent 'Vaćna' In the form of the Āgama, that ıs avaılable, three Adhyayanas, such

1 Nandı, Sutra, 89
2 Thanam, 10/114
3 Tattawarth varttıkas 1/20, Kasayapahuda I, page 130
4 Samawao, painnagasamawao, Sutra 97.
5 Thanam 10/114
6 Tattwarthvarttıka 1/20
7. Satkhundagama 1/1/2

as Dhanya, Sunakshtra and Risidasa, are found. In the first Varga, only two Adhyayanas, named as Wārisṛena and Abhaya, are seen.

The contents

This Āgama beautifully narrates the luxury and ascetic lives of many princes The narration of the ascetic life of Dhanya Anagāra and his body emaciated due to the penance is noteworthy both from the literary and spiritual viewpoints

PAṆHĀWĀGARAṆĀIN

The title

The present Āgama is the tenth Anga of the Dwādaśāngī Its title has been mentioned as 'Panhāwāgaranāin' in the Samawāyanga Sūtra and the Nandī [1] Its name is found as 'Panhāwāgaradasāo'[2] in the Sthānānga and the same reads as 'Panhāwāgaranadasāsu' in the Samawāyānga It is, therefore inferred that the title mentioned in the Sthānānga is also in concurrence with the Samawāyānga The Jayadhawalā and the Tattwārthavarttika note it as Panhāwāyarana or Praśna-Vyākaranā [3]

The Contents

Opinions differ regarding the contents of the present Āgama The Sthānānga cites its ten Adhyayanas, such as, Upamā, Samkhyā. Riṣibhāṣita, Āćāryabhāṣitā, Mahāvira-bhāsitā, Ksaumaka-Praśna, Komala-Praśna, Ādarśa-Praśna, Angustha-Praśna and Bāhu-Praśna [4] The headings of the Adhyayanas indicate well the contents they have.

According to the Samawāyānga and the Nandī, the present Āgama has various types of queries, sciences (vidyās) and the dialogues of the Devas dealt with [5]

The Nandi notes fortyfive Adhyayanas of it, which do not accord with the Sthānānga. The Samawāyānga makes no mention of its Adhyayanas.

---

1 (a) Samawao painnagasamawao, Sutra 98
(b) Nandi, Sutra 90.

2 Thanam, 10/110

3. (a) Kasayapahuda pt I, page 131.
(b) Tatwarthavarttika 1/20

4 Thanam 10/116

5 (a) Samawao, painnagasamawao, Sutra 98
(b) Nandi, Sutra, 90.

But, from its 'Panhāwāgaranadasāsu paragraph, it may be inferred that the Samawāyānga accepts the traditional ten Adhyayanas of the present Āgama The said paragraph tells us that Pratyeka Buddhabhāsita, Āćārya-bhāsita, Vīramaharsi-Bhāsita, Ādarśa-Praśna, Angustha-Prasna, Bāhu-Praśna, Asi-Praśna, Mani-Praśna, Ksauma-Praśna, Āditya-Praśna etc have been dealt with in the 'Prasna-Vyākarana-Dasā'. These headings can well be compared with those of ten Adhyayanas mentioned in the Sthānānga Though the Uddesana-Kālas have been mentioned as fortyfive, the exact number of the Adhyayanas cannot be decided definitely. The teaching of the Adhyayana on a deep topic could he spread over for many days.

According to the Tattwārthavārttika many queries have been expounded in this Āgama , depending on cause and inference by 'Āksepa' and 'Vikṣepa'. Also the Laukika (secular) and Vedic Arthas have been ascertained in it [1]

The Jayadhawalā notes that this Āgama narrates the Nasta, Muṣṭi, Ćintā, Lābha, Alābha, Sukha, Dukkha, Jīwan and Marana with the help of the four kinds of fables, i e. Āksepanī, Prakṣepanī, Samvejanī, and Nirvedanī, as well as purporting a query [2]

The contents of the Āgama, as mentioned in the said works, is not found today What is found covers the five Āsrawas (Hinsā, Asatya, Ćaurya, Ābrahmaćarya and Parigraha) and the five Samwaras (Ahimsa. Satya, Aćaurya, Brhmaćarya, and Aparigraha) only The Nandi does not make mention of it at all The Samawāyānga mentions the Adhyayanas beginning from Āćārya-Bhāsita, while the Jayadhawala gives an account of the four kinds of fables beginning from Ākṣepanī It may be inferred that the known contents of the Āgama formerly were in the form of the queries and subsequently, the learning of query etc being lost, the remanent part formed the present Āgama It is also likely that the old form of the present Āgama being lost, some Āćarya composed it a fresh The 'Vacna' of this Āgama given in the Nandi, does not narrate the Āśrawas and the Samwaras, but the Ćūrni of the Nandi does it [3] Likely it is that the Čūrnikāra did it on the basis of the present form of the Āgama

---

1 Tattwarthavarttika 1/20
2. Kasayapahuda part I, page 131
3 Nandi Sutra with the Curni on page 12

VIVĀGASUYAM

The title

The present Āgama is the 11th Anga of the Dwādaśāngī The Vipāka (fruit) of the Sukrita and Duskrita deeds has been dealt with in it, therefore the title 'Vivāgasuyam'[1] The Sthānānnga gives its title as 'Kāmma Vivāgadasā'[2]

The Contents

This Āgama has two divisions, i e the Dukha Vipāka and the Sukha Vipāka The first division contains the topics on the lives of the individuals doing bad deeds On going through the said contents, it appears that, in every age, there are some individuals who commit horrible crimes on account of their cruel mentality It is also gathered how the criminal deeds affect their physical and mental states The second division has the līfe-contents of those individuals who perform good deeds As the commitant of cruel deeds are found in every age, so are the persons having the tranquil mentality. Conjunction of goodness and badness is not without cause

Conclusion

The Sthānānga Sūtra enamurates ten Adhyayanas of the Karma-Vipāka such as, Mrigāputra, Gotrāsa, Anda, Sakata, Māhan, Nandisena, Śaurika Udumbara, Sahasoddāha-Āmaraka, and Kumar Licćhavī These headings have been taken from some other 'Vaćna'

The account of the Anga-Sūtras and the peculiar form they are presently found in are not fully harmonīc On this basis, it may be inferred that the obtained form of the Āgama Sūtras in not ancient only, but is a mixture of the editions of old and new, both This will form an important subject of investigation as to how much of the present form of the Anga-Sūtra is ancient and how much modern, as well as who of the Āćaryas composed it and when The language, the subject-matter and the style of ascertainment will surely form the basis of investigation This is of course, highly toilsome, but not impossible

---

1. (a) Samawao, painnagasamawao, Sutra 99
   (b) Nandi Sutra 91.
   (c) Tattawarthavarttika 1/20
   (d) Kasayapahuda, Pt I, page 132,
2. Thanam 10/110

Accomplishment of the work

In the accomplishment of this task, there has been the contribution of many a Muni I bless them that their devotedness to the performance be ever more developed

For the editing of this Āgama major amount of credit goes to my learned disciple Muni Shri Nath Mali Day in and day out he has devoted himself to this arduous task. It is because of his concentrated efforts that the work has got such a nice accomplishment Otherwise, it would not have been an easy job On account of his in-born Yogic temperament he was capable of attaining that concentration of mind which was essential for achieving the end On account of his constant devotion to the work of research in the field of Āgamic literature his intellect has achieved sufficient sharpness in finding out immediately the hidden meaning and mysteries of Āgamic expositions His keen sense of obedience, perseverance and absolute dedication have contributed much in developing his personality The above qualities are seen in him since his early age Right from the time when he joined the Sangha I have been an observor of these qualities of his, which have so developed His capacity to undertake to a big task has given me ever increasing satisfaction

I have undertaken this hard and tremendous task of editing the Āgamas relying on the strength of such learned disciples in the Sangha. I am now, quite confident that I shall be able to complete this hazardous work with the help and assistance of my obedient, selfless and devout disciples

On the holy occasion of this 25th centinary of Lord Mahavira, I have a feeling of great pleasure in presenting to the people the teachings of the Lord.

Anuvrata Vihar
Delhi

Āchārya Tulasi

विसयाणुक्कम

नायाधम्मकहाओ

बीओ सुयक्खंधो

पढमो वग्गो

उवासगदसाओ

धन्नाए समणोवासिव-चरिया-पद १७, सुरादेवस्स धम्मजागरिया-पद १८, सुरादेवस्स देव-कय-उवसग्ग-पद २०, °जेट्ठपुत्त २१, °मज्झिमपुत्त २७, °कणीयसपुत्त ३३, °सोलस-रोगायक ३६, सुरादेवस्स कोलाहल-पद ४२, धन्नाए पसिण-पद ४३, सुरादेवस्स उत्तर-पद ४४, पायच्छित्त-पद ४५, सुरादेवस्स उवासगपडिमा-पद ४७, सुरादेवस्स अणसण-पद ५१, सुरादेवस्स समाहिमरण-पद ५२, निक्खेव-पद ५३ ।

•

पंचमं अज्झयणं सू० १-५४ पृ० ४६७-४१६

उक्खेव-पद १, चुल्लसययगाहावइ-पद २, महावीर-समवसरण-पद ७, चुल्लसययस्स गिहि-धम्म-पडिवत्ति-पद १३, भगवओ जणवयविहार-पद १५, चुल्लसयतस्स समणोवासग-चरिया-पद १६, बहुलाए समणोवासिय-चरिया-पद १७, चुल्लसयय-धम्मजागरिया-पद १८, चुल्लसयगस्स देव-कय-उवसग्ग-पद २०, °जेट्ठपुत्त २१, °मज्झिमपुत्त २७, °कणीयसपुत्त ३३, °हिरण्णकोडीविप्पकिरण ३६, चुल्लसययस्स कोलाहल-पद ४२, बहुलाए पसिण-पद ४३, चुल्लसयगस्स उत्तर-पद ४४, पायच्छित्त-पद ४ , चुल्लसयगस्स उवासगपडिमा-पद ४७, चुल्लसयगस्स अणसण-पद ५१, चुल्लसययस्स समाहिमरण-पद ५२, निक्खेव-पद ५४ ।

•

छट्ठं अज्झयणं सू० १-४२ पृ० ४८०-४८६

उक्खेव-पद १, कुडकोलियगाहावइ-पद २, महावीर समवसरण-पद ७, कुडकोलियस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पद १३, भगवओ जणवयविहार-पद १५, कुडकोलियस्स समणोवासग-चरिया-पद १६, पूमाए समणोवासिय-चरिया-पद १७, देवेण नियतिवाद-समत्थण-पद १८, कुडकोलिएण नियतिवाद-निरसण-पद २१, देवेण नियतिवाद-समत्थण-पद २२, कुडको-लिएण नियतिवाद-निरसण-पद २३, देवस्स पडिगमण-पद २४, महावीर-समवसरण-पद २५, महावीरेण पुव्ववुत्तत-परूवण-पद २८, महावीरेण कुडकोलियस्स पससा-पद २६, भगवओ जणवयविहार-पद ३२, कुडकोलियस्स धम्मजागरिया-पद ३३, कुडकोलियस्स उवासगपडिमा-पद ३५, कुडकोलियस्स अणसण-पद ३६, कुडकोलियस्स समाहिमरण-पद ४०, निक्खेव-पद ४२ ।

•

सत्तमं अज्झयणं सू० १-८६ पृ० ४६०-५१३

उक्खेव-पद १, सद्दालपुत्त-पद २, सद्दालपुत्तस्स देवसदेस-पद ८, सद्दालपुत्तस्स सकप्प-पदं ११, महावीर-समवसरण-पद १२, महावीरस्स देवसदेस-विरूवण-पद १७, सद्दालपुत्तस्स निवेदण-पद १८, महावीरेण सद्दालपुत्त-सवोधण-पद १६, सद्दालपुत्तस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पद २८, अग्गिमित्ताए वदणट्ठ-गमण-पद ३३, अग्गिमित्ताए गिहिधम्म-पडिवत्ति-पद ३७, भगवओ जणवयविहार-पद ३६, सद्दालपुत्तस्स समणोवासगचरिया-पद ४०, अग्गिमित्ताए समणोवासियचरिया-पद ४१, गोसालस्स आगमण-पद ४२, गोसालेण महावीरस्स गुण-कित्तण-पद ४४, विवाद-पट्ठवणा-पसिण-पद ५०, सद्दालपुत्तस्स धम्मजागरिया-पद ५४,

अणुत्तरोववाइयदसाओ

पण्हावागरणाइं

विवागसुयं

पढमो सुयक्कंधो

संकेत निर्देशिका

• ० ये दोनो विन्दु पाठपूर्ति के द्योतक है। पाठपूर्त्ति के प्रारम्भ मे भरा विन्दु [•[और उसके समापन मे रिक्त विन्दु [०] रखा गया है। देखें–पृष्ठ २ सू ६।

[?] कोष्ठकवर्त्ती प्रश्नचिन्ह [?] अदर्शों मे अप्राप्त किन्तु आवश्यक पाठ के अस्तित्व का सूचक है। देखें—पृष्ठ ३. सूत्र ७।

' ' ये दो या इससे अधिक शब्दो के स्थान मे पाठान्तर होने का सूचक है। देखें पृष्ठ २ सू० ४। 'वण्णओ' व 'जाव' शब्द के टिप्पण मे उसके पूर्त्ति स्थल का निर्देश है। देखे—पृष्ठ १ टिप्पण ३ और पृष्ठ ३ सूत्र ८।

X क्राश [X] पाठ न होने का द्योतक है। देखें—पृष्ठ ३ टिप्पण ४।

० पाठ के पूर्व या अन्त मे खाली विन्दु [०] अपूर्ण पाठ का द्योतक है। देखें—पृ० ३ सूत्र ७ टिप्पण ५।

'जहा' 'तहेव' आदि पर टिप्पण मे दिए गए सूत्राक उसकी पूर्ति के सूचक हैं। देखें—पृष्ठ ३०१ सूत्र ७ तथा पृष्ठ ३७८ सूत्र ५०।

क, ख, ग, घ, च, छ, व, देखे—सम्पादकीय मे 'प्रति-परिचय' शीर्षक।

'व्या० वि' व्याकरण विमर्श। देखें—पृष्ठ ३९६ टिप्पण १।

'क्व' क्वचित् प्रयुक्तादर्श।

स० पा० सक्षिप्त पाठ का सूचक है। देखें—पृष्ठ ५ टिप्पण १।

वृपा वृत्ति-सम्मत पाठान्तर। देखे—पृष्ठ १० टिप्पण ३।

वृ वृत्ति का सूचक है। देखें—पृष्ठ ६ टिप्पण १७।

पू० पूर्णपाठार्थं द्रष्टव्यम्। देखे–पृष्ठ ५२६ टिप्पण १।

अ० अतगडदसाओ।

अ० अणुत्तरोववाडयदसाओ।

उवा० उवासगदसाओ।

ओ० ओवाइय।

ना० नायाधम्मकहाओ।

भ०, भग०, भगवई।

राय० रायपसेणइय।

पण्हा० पण्हावागरणाइ।

वि० विवागसूय।

सूय० सूयगडो।

जवू० जवूदीवपण्णत्ति।



नायाधम्मकहाओ

पढमं अज्झयणं

उक्खित्तणाए

उक्खेव-पदं

१. तेण कालेण तेणं समएण चपा नाम नयरी होत्था—वण्णओ[1] ।।

२ तीसे ण चपाए नयरीए वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए पुण्णभद्दे नाम चेइए[2] होत्था—वण्णओ[3] ।।

३ तत्थ ण चपाए नयरीए कोणिए नाम राया होत्था—वण्णओ[4] ।।

४. तेण कालेण तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अतेवासी अज्जसुहम्मे नाम थेरे जातिसपण्णे कुलसपण्णे वल-रूव-विणय-नाण-दसण-चरित्त[5]-लाघव-सपण्णे ओयसी तेयसी वच्चसी जससी जियकोहे जियमाणे जियमाए जियलोहे 'जिइदिए[6] जियनिद्दे'[7] जियपरीसहे जीवियास[8]-मरणभयविप्पमुक्के तवप्पहाणे गुणप्पहाणे एव—करण-चरण-निग्गह-निच्छय-अज्जव-मद्दव-लाघव-खति-गुत्ति-मुत्ति-विज्जा-मत-वभ[9]-वेय-नय-नियम-सच्च-सोय-नाण-दसण-चरित्तप्पहाणे ओराले[10] घोरे घोरव्वए[11] घोरतवस्सी घोरवभचेरवासी उच्छूढसरीरे सखित्त-विउल-तेयलेस्से चोद्दसपुव्वी[12] चउनाणोवगए पचहिं अणगारसएहि सद्धि सपरि-वुडे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे[13] सुहसुहेण विहरमाणे

---

१. ओ० सू० १ ।

२. चेतिए (क, ख, ग) ।

३. ओ० सू० २-१३ ।

४ ओ० सू० १४ ।

५. चरित्त लज्जा (राय० सू० ६८६) ।

६ जियइदिए (ख) ।

७. जियनिद्दे जितिंदिए (राय० सू० ६८६) ।

८. जीवियासा (ग, घ) ।

९. वभचेर (ख, घ) । वृत्तौ 'ब्रह्म' पदमेवव्याख्यातमस्ति, यथा—ब्रह्म—ब्रह्मचर्यं सर्वमेव वा कुशलानुष्ठानम् । कासुचित् प्रतिपु 'वभचेर' इति मूलपाठरूपेण परिवर्तितमभुत् ।

१० उराले (ख, घ) ।

११. घोरगुणे (राय० सू० ६८६) ।

१२. चोदस० (ख), चउद्दस० (ग) ।

१३ दूतिज्ज० (ख, ग) ।

'जेणेव चपा नयरी'[1], जेणेव पुण्णभद्दे चेतिए'[2] तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरति ॥

५. 'तए ण'[3] चपाए नयरीए परिसा निग्गया[4]। धम्मो कहिओ। परिसा जामेव दिसि पाउब्भूया, तामेव दिसि पडिगया ॥

६ तेण कालेण तेण समएण अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स जेट्ठे अतेवासी अज्जजबू नाम अणगारे कासव[5] गोत्तेण सत्तुस्सेहे[6] •समचउरस-सठाण-सठिए वइररिसहणाराय-सघयणे कणग-पुलग-निघस-पम्ह-गोरे उग्गतवे दित्ततवे तत्ततवे महातवे उराले घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबभचेरवासी उच्छूढसरीरे सखित्त-विउल-तेयलेस्से° अज्जसुहम्मस्स थेरस्स अदूरसामते उड्ढजाणू अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥

७ तए ण से अज्जजबूनामे अणगारे जायसड्ढे जायससए[7] जायकोउहल्ले
'सजायसड्ढे संजायससए सजायकोउहल्ले
उप्पण्णसड्ढे उप्पण्णससए उप्पण्णकोउहल्ले'[8]
समुप्पण्णसड्ढे समुप्पण्णससए समुप्पण्णकोउहल्ले[9] उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणामेव अज्जसुहम्मे थेरे, तेणामेव उवागच्छइ,उवागच्छित्ता 'अज्जसुहम्मे थेरे'[10] तिक्खुत्तो 'आयाहिण-पयाहिण'[11] करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता अज्ज-

---

१. नगरी (ग)।

२ क्वचिद् 'राजगृहे गुणसिलके' इति दृश्यते स चापपाठ इति मन्यते (वृ)।

३. तेण कालेण (ख), तेण (घ)।

४. निग्गया। कोणितो निग्गतो (ग), निग्गया। कोणिओ निग्गओ (घ)। वृत्तौ—परिषत् कूणिकराजादिको लोको निर्गता—नि सृता—एव व्याख्यातमस्ति। अनेन 'परिसा निग्गया' इत्येव मूलपाठ. सभाव्यते। 'कोणिओ निग्गओ' इति व्याख्याशो मूलपाठत्वेन परिवर्तितोभून्। उपासकदशासु (१।१६) राजनिर्गमस्य स्वतत्र सूत्रमपि दृश्यते।

५ विभक्तिरहित पदम्। काश्यपो गोत्रेण इति वृत्ति.।

६ स० पा०—सत्तुस्सेहे जाव अज्जसुहम्मस्स।

७ °ससते (ख, ग)।

८ औपपातिक (८३) सूत्रे क्रमभेदोविद्यते, यथा—जायसड्ढे° उप्पण्णसड्ढे° सजायसड्ढे° समुप्पण्णसड्ढे°।

९. °कोऊहल्ले (ख)।

१० अज्जसुहम्म थेर (वृपा)। औपपातिक (८३) सूत्रे तथा रायपसेणइय (१०) सूत्रेपि एतत्सदृशप्रकरणे 'समण भगव महावीर' इति द्वितीयान्तपद लभ्यते। अत्र सप्तम्यन्तपद लभ्यते। वृत्तिकृता एतदेव प्रमाणीकृतम्—'अज्जसुहम्मे थेरे' इत्यत्र षष्ठ्यर्थे सप्तमी (वृ)।

११. आताहिणपदाहिण (ग), आयाहिण (घ)।

सुहम्मस्स थेरस्स नच्चासण्णे नातिदूरे सुस्सूसमाणे नमंसमाणे अभिमुहे पजलिउडे विणएण पज्जुवासमाणे एव वयासी[1]—जइ[2] ण भते ! समणेण भगवया महावीरेण [3]आइगरेण तित्थगरेण सहसंबुद्धेण[4] लोगनाहेण लोगपईवेण लोगपज्जोयगरेण अभयदएण सरणदएण चक्खुदएणं मग्गदएण धम्मदएण धम्मदेसएण धम्मनायगेण[5] धम्मवरचाउरतचक्कवट्टिणा[6] अप्पडिहयवरनाण-दसणधरेण जिणेण जाणएण[6] वुद्धेणं वोहएणं मुत्तेण मोयगेण तिण्णेण तारएण सिवमयलमरुयमणतमक्खयमव्वावाहमपुणरावत्तयं[7] सासय ठाणमुवगएण[8] [सिद्धिगइनामधेज्ज ठाणं संपत्तेण ?][9] पंचमस्स अगस्स[10] अयमट्ठे पण्णत्ते, छट्ठस्स ण 'भते ! अंगस्स'[11] नायाधम्मकहाण के अट्ठे पण्णत्ते ?

८ जंबु त्ति अज्जसुहम्मे थेरे अज्जजबूनाम अणगार एवं वयासी— एवं खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव[12] सपत्तेण छट्ठस्स अगस्स दो सुयक्खधा पण्णत्ता, त जहा—नायाणि य धम्मकहाओ य ।।

९ जइ ण भते ! समणेण भगवया महावीरेणं जाव[13] सपत्तेण छट्ठस्स अगस्स दो सुयक्खधा पण्णत्ता, त जहा—नायाणि य धम्मकहाओ य । पढमस्स ण भते ! सुयक्खंधस्स समणेण भगवया महावीरेण जाव[14] सपत्तेण नायाण कइ अज्झयणा पण्णत्ता ?

१० एवं खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेणं जाव[15] सपत्तेण नायाण एगूणवीसं अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा—

---

१ वदासी (ग, वृ) ।

२ जति (ख, ग) ।

३. मइ° (ख), मय° (घ) ।

४ × (ख, घ) ।

५. °वट्टीण (ख, ग, घ) । अत्र प्रकरणसगत्या तृतीयान्त पद युज्यते । समवायागे (सू० २) इत्यमेव विद्यते । क्वचित् प्रयुक्तासु प्रस्तुत-सूत्रस्य प्रतिष्वपि तृतीयान्त पदं प्राप्यते । तेन तदेव मूले स्वीकृतम् ।

६ जावएण (ख, घ) ।

७ °मरुत °वत्तिय (ख, घ); °मरुत° (ग) ।

८. अत्र चिन्हाकितपाठ औपपातिकादिसूत्रेभ्यो भिन्नो वर्तते । एन० वी० वैद्य सपादित—'नायाधम्मकहाओ' पाठे विशेषणानि अधिकानि लभ्यन्ते, किन्तु अस्माक पाठ-शोधार्थं प्रयुक्तासु प्रतिषु तानि न सन्ति । द्रष्टव्यं—औपपातिकसूत्रस्य तृतीय परि-शिष्टम् ।

९ अष्टमे सूत्रे 'जाव सपत्तेण' सक्षिप्त-पाठो लभ्यते । अत्र च 'सासय ठाणमुवगएण' इति पाठोस्ति । अस्य अग्रिमपाठेन सगति-र्नास्ति, औपपातिक (२१) सूत्रे 'सिद्धिगइ-णामधेज्ज ठाण सपत्ताण' इति पाठो विद्यते । अत्रापि तथैव युज्यते ।

१०. अगस्स विवाहपण्णत्तीए (घ) ।

११ अगस्स भते ! (ख, घ) ।

१२,१३,१४,१५. ना० १।१।७ ।

संगहणी-गाहा

१. उक्खित्तणाए २. संघाडे, ३. अंडे ४. कुम्मे य ५ सेलगे ।
६ तुंबे य ७ रोहिणी ८. मल्ली, ९. मायंदी १० 'चंदिमा इ'[1] य ॥१॥
११ दावद्दवे १२. उदगणाए, १३ मंडुक्के[2] १४. तेयली वि य ।
१५ नंदीफले १६ अवरकंका[3] १७. आइण्णे[4] १८. सुंसुमा इ य ॥ २॥
१९ अवरे य पुंडरीए, नाए एगूणवीसमे[5] ॥

मेहस्स नगरपरिवारादि-वण्णग-पदं

११ जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[6] संपत्तेणं नायाणं एगूणवीसं अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—उक्खित्तणाए जाव[7] पुंडरीए त्ति य । पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

१२ एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे दाहिणड्ढभरहे रायगिहे नामं नयरे होत्था—वण्णओ[8] ॥

१३ गुणसिलए चेतिए—वण्णओ[9] ॥

१४ तत्थ णं रायगिहे नयरे सेणिए नामं राया होत्था—महताहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे वण्णओ[10] ॥

१५ तस्स णं सेणियस्स रण्णो नंदा नामं देवी होत्था—सूमालपाणिपाया[11] वण्णओ[12] ॥

१६ तस्स णं सेणियस्स पुत्ते नंदाए देवीए अत्तए अभए नामं कुमारे होत्था—अहीण[13] •पडिपुण्ण[14]-पंचिंदियसरीरे लक्खण-वंजण-गुणोववेए माणुम्माण-प्पमाण-पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वंगसुंदरंगे ससिसोमाकारे कंते पियदंसणे॰ सुरूवे, साम-दंड-भेय-उवप्पयाणनीति-सुप्पउत्त-नय-विहण्णू[15], 'ईहा-वूह'[16]-मग्गण-गवेसण-अत्थसत्थ-मइविसारए, उप्पत्तियाए वेणइयाए कम्मयाए[17] पारिणामियाए—चउव्विहाए बुद्धीए उववेए, सेणियस्स रण्णो बहूसु कज्जेसु य[18] [कारणेसु य ?]

---

१ चंदमाई (घ) ।
२ मंदुक्के (ख) ।
३ अमर॰ (घ) ।
४ आतिण्णे (ख, ग) ।
५. ॰वीसइमे (ग) ।
६ ना॰ १।१।७ ।
७ ना॰ १।१।१० ।
८ ओ॰ सू॰ १ ।
९. ओ॰ सू॰ २-१३ ।
१०. ओ॰ सू॰ १४ ।
११. नुकुमाल॰ (घ) ।
१२ ओ॰ सू॰ १५ ।
१३ सं॰ पा॰—अहीण जाव सुरूवे ।
१४. प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ 'पडिपुण्ण' पदं व्याख्यातं नास्ति ।
१५ विहिज्जा (ख) ।
१६. ईहापूह (ग); ईहापोह (घ) ।
१७ कम्मइयाए (ख, घ), कम्मियाए (ग) ।
१८ अतोनन्तरं उपासकदशासु (१।१३) राय-पसेणइय (६७५) सूत्रे 'कारणेसु य' इति पाठो विद्यते । प्रस्तुतसूत्रस्य पंचमाध्ययने (९०) सूत्रेपि कज्जेसु य कारणेसु य इति पाठो लभ्यते । अत्रापि तथैव युज्यते ।

कुडुंबेसु य मंतेसु य गुज्झेसु य रहस्सेसु य निच्छएसु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, मेढी पमाण आहारे आलवण चक्खू, मेढीभूए पमाणभूए आहारभूए आलवणभूए चक्खुभूए, सव्वकज्जेसु सव्वभूमियासु लद्धपच्चए विइण्णवियारे रज्जधुरचितए यावि होत्था, सेणियस्स रण्णो रज्ज च रट्ठ च कोस च कोट्ठागार च बलं च वाहण च पुर च अंतेउर च सयमेव समुपेक्खमाणे-समुपेक्खमाणे विहरइ ॥

१७. तस्स ण सेणियस्स रण्णो धारिणी नाम देवी होत्था[1]—°सुकुमाल-पाणिपाया अहीण[2]-पचेंदियसरीरा लक्खण-वजण-गुणोववेया माणुम्माण-प्पमाण[3]-सुजाय-सव्वगसुदरगी ससिसोमाकार-कत-पियदसणा सुरूवा करयल-'परिमित-तिवलिय'[4] वलियमज्झा 'कोमुइ-रयणियर-विमल-पडिपुण्ण-सोमवयणा कुडलुल्लिहिय-गडलेहा'[5] सिगारागार-चारुवेसा सगय-गय-हसिय-भणिय-विहिय-विलास-सललिय-सलाव-निउण-जुत्तोवयारकुसला पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा, सेणियस्स रण्णो इट्ठा कता पिया मणुण्णा नामधेज्जा[6] वेसासिया सम्मया वहुमया अणुमया भडकरडगसमाणा तेल्लकेला इव सुसगोविया चेलपेडा इव सुसपरिगिहीया रयणकरंडगो विव सुसारक्खिया, मा ण सीय मा ण उण्ह मा ण दसा मा ण मसगा मा ण वाला मा ण चोरा मा ण वाइय-पित्तिय-सिंभिय-सन्निवाइय[7] विविहा रोगायका फुसतु त्ति कट्टु सेणिएण रण्णा सद्धि विउलाइ भोगभोगाइ पच्चणुभवमाणी ° विहरइ ॥

धारिणीए सुमिणदंसण-पदं

१८ तए ण सा धारिणी देवी अण्णदा कदाइ तसि तारिसगसि—छक्कट्ठग-लट्ठमट्ठ-

---

१ स० पा०—होत्था जाव सेणियस्स रण्णो इट्ठा जाव विहरइ ।

२. अहीण-पडिपुण्ण (ओ० सू० १५) ।

३. प्पमाण-पडिपुण्ण (ओ० सू० १५) ।

४. परिमिय-पसत्थ-तिवली (ओ० सू० १५) ।

५ कुडलुल्लिहिय गंडलेहा कोमुइ-रयणियर ·· सोमवयणा (ओ० सू० १५) ।

६. आगमेषु वहुषु स्थानेषु 'मणुण्णा मणामा' इति पाठरचना दृश्यते । द्रष्टव्यम्—१।१४।४३ । क्वचिद् 'वेज्जा' इति पाठो लभ्यते । द्रष्टव्यम्—विवागसुय १।१।५९ । प्रस्तुतपाठ वृत्त्या पूरितोस्ति, तत्र 'नामधेज्जा' इति पाठ· उल्लिखितोस्ति । विपाकश्रुतस्य सदर्भे असावपि पाठ समीचीन प्रतिभाति । प्रस्तुतागमे (१।१।१०६) एव 'थेज्जे' इति पाठो लभ्यते । ओवाइय (११७) सूत्रे शरीरवर्णनप्रसङ्गे 'पेज्ज' इति पाठोऽस्ति । एव विभिन्नस्थलेषु पाठावलोकनेन एतत् सुनिश्चित भवति यत् लिपिकरणकाले पाठ-परिवर्तन जातम् । 'वेज्ज थेज्ज' इतिपाठापेक्षया 'नामधेज्जा' इति पाठ· अर्थदृष्ट्या अधिक संगच्छते ।

७. विभक्तिरहित पदम् ।

संठिय-खभुग्गय-पवरवर-सालभंजिय-उज्जलमणिकणगरयणथूभिय-विडकजालद्ध-चदनिज्जूहतरकणयालिचदसालियाविभत्तिकलिए 'सरसच्छवाऊवल-वण्णरइए'[1] वाहिरओ दूमिय-घट्ठ-मट्ठे अब्भितरओ पसत्त-सुविलिहिय[2]-चित्तकम्मे नाणा-विह-पचवण्ण-मणिरयण[3]-कोट्टिमतले पउमलया-फुल्लवल्लि-वरपुप्फजाइ-उल्लोय-चित्तिय-तले वदण[4]-वरकणगकलससुणिम्मिय-पडिपूजिय[5]-सरसपउम-सोहतदारभाए पयरग[6]-लवत-मणिमुत्तदाम-सुविरइयदारसोहे सुगध[7]-वरकुसुम-मउय-पम्हलसयणोवयार-मणहिययनिव्वुइयरे कप्पूर-लवग-मलय-चदण-कालागरु-पवरकुदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-डज्झंत-सुरभि-मघमघंत[8]-गंधुद्धुयाभिरामे सुगंधवर [गध ?] गधिए गधवट्टिभूए मणिकिरण-पणासियधयारे किवहुणा ? जुइगुणेहि सुरवरविमाण-विडवियवरघरए[9], तसि तारिसंगसि सयणिज्जंसि—सालिगणवट्टिए उभओ विव्वोयणे दुहओ उण्णए 'मज्झे णय गभीरे'[11] गगापुलिणवालुय-उद्दालसालिसए ओयविय-खोम-दुगुल्लपट्ट[12]-पडिच्छयणे अत्थरय-मलय-नवतय-कुसत्त-लिंब[13]-सीहकेसरपच्चुत्थिए[14] सुविरइयरयत्ताणे रत्तंसुयसंवुए सुरम्मे आइणग-रूय[15]-बूर[16]-नवणीय-तुल्लफासे पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी-ओहीरमाणी 'एग मह सत्तुस्सेह रययकूड-सन्निहं नहयलसि सोम सोमागार लीलायंतं जंभायमाण मुहमतिगयं गय पासित्ता ण पडिवुद्धा'[17]।

---

१. सरसच्छवाऊववल° (घ), कैश्चित्पुनरेव सभावितमिदम्—सरसच्छवाऊवलरत्तरए (वृ)।

२. सर्वासु प्रतिषु 'सुवि' इति पठ्यमानमस्ति। वृत्तौ 'शुचि—पवित्र' इति व्याख्यातमस्ति। प्राचीनलिप्या चकारवकारयो प्राय. सादृश्येनात्र वर्णविपर्ययो जात । वृत्तिकारेण तथैव व्याख्यात ।

३. मणिरतण (ग)।

४. चदण (ख, घ); अत्र वकारस्थाने चकारो जात ।

५. पडिपुजिय (ख, ग, घ, वृपा)।

६ पयरग (ग, घ), एकस्मिन् वृत्त्यादर्शे 'प्रतरकाणि', अपरस्मिश्च 'प्रवरकाणि' इति सस्कृतरूप लभ्यते।

७. सुगधि (वृ)।

८. °मघित (ग), °मघत (घ)।

९. गध °(ख घ)।

१०. वेलववर° (ग, घ)।

११ मज्झेण य गभीरे (वृपा)।

१२ खोमदुगुल° (घ)।

१३ लिव्व (ख, ग)।

१४. °पच्चुत्थुए (ख), °पच्चुत्थए (क्व०)।

१५ रुय (ख)।

१६ पूर (ख)।

१७ वाचनान्तरे त्वेवं दृश्यते—जाव सीहं सुविणे पासित्ता ण पडिवुद्धा। यावत्करणात् इद द्रष्टव्यम्—एग च ण महतं पंडुर धवल सेय सखउल-विमलदहि-घणगोखीर-फेण-रयणिकरपगासं [अथवा—हार-रजत-खीरसागर-दगरय-महासेल-पडुरतरोरु-रमणिज्ज-दरिसणिज्ज] थिर-लट्ठ-पउट्ठ-पीवर-

सेणियस्स सुमिणनिवेदण-पदं

१६ तए णं सा धारिणी देवी अयमेयारूवं उरालं कल्लाणं सिवं धण्णं मंगल्लं सस्सिरीयं महासुमिणं पासित्ता णं पडिबुद्धा समाणी हट्ठतुट्ठ[1]-चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया[2] हरिसवस-विसप्पमाणहियया 'धाराहय-कलंबपुप्फगं पिव समूससिय-रोमकूवा'[3] तं सुमिणं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता सयणिज्जाओ उट्ठेइ, उट्ठेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता अतुरियमचवलमसंभंताए अविलंबियाए रायहंससरिसीए गईए जेणामेव से सेणिए राया तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सेणियं रायं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुन्नाहिं मणामाहिं उरालाहिं कल्लाणाहिं सिवाहिं धण्णाहिं मंगल्लाहिं सस्सिरीयाहिं हिययगमणिज्जाहिं हिययपल्हायणिज्जाहिं मिय-महुर-रिभिय-गंभीर-सस्सिरीयाहिं गिराहिं संलवमाणी-संलवमाणी पडिबोहेइ, पडिबोहेत्ता सेणिएणं रण्णा अब्भणुण्णाया समाणी नाणा-मणिकणगरयणभत्तिचित्तंसि भद्दासणंसि निसीयइ, निसिइत्ता आसत्था वीसत्था सुहासणवरगया करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु सेणियं रायं एवं वयासी—एवं खलु अहं देवाणुप्पिया! अज्ज तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सालिंगणवट्टिए जाव[4] नियगवयणमइवयंतं[5] गयं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धा—तं एयस्स णं देवाणुप्पिया! उरालस्स[6]

मुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-तिक्खदाढाविडंबियमुहं परिकम्मियजच्चकमलकोमल-माइयसोहंतलट्ठउट्ठं रत्तुप्पलपत्तमउय-सुकुमालतालुनिल्लालियग्गजीहं महुगुलियभिसंत पिंगलच्छं मूसागयपवरकणयतावियआवत्तायंत - वट्ट - तडियविमलसरिसनयणं [अत्र 'वट्ट तडि' इत्येतावदेव पुस्तके दृष्टं संभावनया तु 'वृत्तर्तादित' इति व्याख्यातम्। पाठांतरेण तु—वट्ट-पडिपुन्न-पसत्थ-निद्ध-महुगुलिय पिंगलच्छं] विसाल-पीवरभमरोरु-पडिपुन्नविमलखंधं [अथवा—पडिपुण्ण-सुजायखंधं] मिदुविसदसुहुमलक्खण-पसत्थ-वित्थिन्न-केसरसडं [अथवा—निम्मलवरकेसरधरं] ऊसिय-सुनिम्मियसुजाय अप्फोडियलंगूलं सोमं सोमागारं लीलायंतं जंभायमाणं गगनतलाओ ओवयमाणं सीहं अभिमुहं मुहे पविसमाणं पासित्ता णं पडिबुद्धा (वृ)।

१. हट्ठतुट्ठा (ख), हट्ठातुट्ठा (घ), वृत्तौ 'हृष्ट-तुष्टा—अत्यर्थं तुष्टा अथवा हृष्टा—विस्मिता, तुष्टा—तोषवती' इति व्याख्यातमस्ति किन्तु औपपातिकाद्यागमेषु 'हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया' इति संयुक्तः पाठो लभ्यते। अत्रापि तथैव गृहीतः।

२ °सिया (ख, ग, घ)।

३. एतद् विशेषणं वृत्तौ नास्ति व्याख्यातम्।

४ ना० १।१।१८।

५ एष पाठो यत्र समर्पितोस्ति तत्र (१।१।१८) 'मुहमतिगयं' इति पाठो विद्यते, अत्रापि तथैव युज्यते किन्तु सर्वास्वपि प्रतिषु 'नियगवयणमइवयंतं' इति पाठो लभ्यते। नानयोः कश्चिदर्थभेदः तेनासावेव पाठः स्वीकृतः।

६ सं० पा०—उरालस्स कं सिं धं मं जाव सुमिणस्स।

•कल्लाणस्स सिवस्स धण्णस्स मगल्लस्स सस्सिरीयस्स॰ सुमिणस्स के मण्णे कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ ?

सेणियस्स सुमिणमहिम-निदंसण-पदं

२० तए ण से सेणिए राया धारिणीए देवीए अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-[1]•चित्तमाणदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण॰हियए धाराहयनीवसुरभिकुसुम-चुचुमालइयतणू[2] ऊसवियरोमकूवे त सुमिण ओगिण्हइ[3], ओगिण्हित्ता ईह पविसइ, पविसित्ता अप्पणो साभाविएण मइपुव्वएणं वुद्धिविण्णाणेण तस्स सुमिणस्स अत्थोग्गह करेइ, करेत्ता धारिणिं देवि ताहि जाव[4] हिययपल्हायणिज्जाहि मिय-महुर-रिभिय-गभीर-सस्सिरीयाहि वग्गूहि[5] अणुवूहमाणे-अणुवूहमाणे एव वयासी—उराले ण तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे। कल्लाणे ण तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे। सिवे धण्णे मगल्ले सस्सिरीए ण तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे। आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउय[6]-कल्लाण-मगल्लकारए ण तुमे देवि ! सुमिणे दिट्ठे। अत्थलाभो ते[7] देवाणुप्पिए ! पुत्तलाभो ते देवाणुप्पिए ! रज्जलाभो ते देवाणुप्पिए ! भोग-सोक्खलाभो ते देवाणुप्पिए !

एव खलु तुम देवाणुप्पिए ! नवण्ह मासाण वहुपडिपुण्णाण अद्धट्ठमाण राइदियाण वीइक्कताण अम्ह कुलकेउ कुलदीव[8] कुलपव्वय कुलवडिसय[9] कुलतिलक कुलकित्तिकर कुलवित्तिकर[10] कुलनदिकर कुलजसकर कुलाधार कुलपायव कुलविवद्धणकर सुकुमालपाणिपाय जाव[11] सुरूव दारय पयाहिसि। से वि य ण दारए उम्मुक्कवालभावे विण्णय[12]-परिणयमेत्ते जोव्वणगमणप्पत्ते सूरे वीरे विक्कते[13] वित्थिण्ण-विपुल-वलवाहणे रज्जवई[14] राया भविस्सइ।

त उराले ण तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे[15]। •कल्लाणे णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे। सिवे धण्णे मगल्ले सस्सिरीए ण तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणेदिट्ठे।॰

---

१. स॰ पा॰—हट्ठतुट्ठ जाव हियए।
२. चचु॰ (ख, घ)।
३. ओगिण्हाति २ (ख)।
४. ना॰ १।१।१६।
५. १।१।१६ सूत्रे अत्र 'गिराहिं' पाठो विद्यते।
६. दीहाउ (ख)।
७. × (ग, घ) सर्वत्र।
८ कुलहेउ (वृपा)।
९. ॰वडसय (ख)।
१०. नासौपाठ वृत्तिसम्मतः, यथा—क्वचिद् वृत्तिकरमित्यपि दृश्यते।
११. ओ॰ सू॰ १४३।
१२. विण्णाय (क, ख, घ)।
१३. वितिक्कते (क), वियक्कत (ख)।
१४. रज्जयती (क)।
१५. स॰ पा॰—दिट्ठे जाव आरोग्ग।

आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउय-कल्लाण-मंगल्लकारए णं तुमे देवि ! सुमिणे दिट्ठे त्ति कट्टु भुज्जो-भुज्जो अणुवूहेइ।

धारिणीए सुमिणजागरिया-पदं

२१. तए ण सा धारिणी देवी सेणिएण रण्णा एवं वुत्ता समाणी हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणदिया जाव[1] हरिसवस-विसप्पमाणहियया करयल-परिग्गहियं[2] •सिरसावत्त मत्थए° अंजलि कट्टु एव वयासी—एवमेय देवाणुप्पिया ! तहमेय देवाणुप्पिया ! अवितहमेय देवाणुप्पिया ! असदिद्धमेय देवाणुप्पिया ! इच्छियमेयं देवाणुप्पिया ! पडिच्छियमेय देवाणुप्पिया ! इच्छियपडिच्छियमेय देवाणुप्पिया ! सच्चे णं एसमट्ठे ज तुब्भे वयह त्ति कट्टु त सुमिण सम्मं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता सेणिएण रण्णा अब्भणुण्णाया समाणी नाणामणिकणगरयण-भत्तिचित्ताओ भद्दासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयसि सयणिज्जसि निसीयइ, निसीइत्ता एव वयासी—'मा मे'[3] से उत्तमे पहाणे मगल्ले सुमिणे अण्णेहि पावसुमिणेहि पडिहम्मिहित्ति कट्टु देवय-गुरुजणसवद्धाहि[4] पसत्थाहि धम्मियाहि कहाहि सुमिणजागरिय पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरइ ॥

सुमिणपाढग-निमतण-पद

२२ तए ण से[5] सेणिए राया पच्चूसकालसमयसि कोडुवियपुरिसे[6] सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! वाहिरिय उवट्ठाणसाल अज्ज 'सविसेस परमरम्म'[7] गधोदगसित्त-सुइय[8]-सम्मज्जिओवलित्त पचवण्ण-सरससुरभि[9]-मुक्क-पुप्फपुजोवयारकलियं कालागरु-पवरकुदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-डज्झत-सुरभि[10]-मघमघेत-गधुद्धयाभिराम सुगधवर(गध ?)गधिय[11] गधवट्टिभूय करेह, कारवेह य, एयमाणत्तिय[12] पच्चप्पिणह ॥

---

१. ना० १।१।१६।

२. स० पा०—करयलपरिग्गहिय जाव अजलि।

३ इमे (ख)।

४ °सवुद्धाहि (ख)।

५. × (क,ख, ग)।

६ कोटुविय° (क)।

७ सविसेस° (क), सविसेसे° (ख), सविसेस-परम° (ग)।

८. सुइ (क); सुइय (घ)।

९. °सुरभिकुसुम (क)।

१०. × (ख, ग, घ)।

११. सुयघ° (क); १।१।७६ सूत्रे पूरितपाठे 'गघ' शब्दोविद्यते। औपपातिकस्य ५५ सूत्रेपि स लभ्यते। अत्रापि तथैव युज्यते।

१२. एव° (क, ख, ग, घ)।

२३. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा सेणिएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ-[1]•चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणहियया तमाणत्तियं• पच्चप्पिणंति ॥

२४. तए णं से सेणिए राया कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पल-कमल-कोमलुम्मिलियम्मि अहपंडुरे[2] पभाए रत्तासोगप्पगास-किंसुय-सुयमुह-गुंजद्ध-बंधुजीवग-पारावयचलणनयण-परहुयसुरत्तलोयण-जासुमणकुसुम-जलियजलण-तवणिज्ज-कलस-हिंगुलयनिगर-रूवाइरेगरेहंत-सस्सिरीए दिवायरे अहकमेण उदिए तस्स 'दिणकर-करपरपरोयारपारद्धमि'[3] अंधयारे बालातव[4]-कुंकुमेण 'खचितेव्व'[5] जीवलोए लोयण-विसयाणुयास[6]-विगसंत-विसददंसियम्मि लोए कमलागर-संडबोहए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते सयणिज्जाओ उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव अट्टणसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अट्टणसालं अणुपविसइ ।

अणेगवायाम-जोग्ग[7]-वग्गण-वामद्दण-मल्लजुद्धकरणेहिं संते परिस्संते सयपागसहस्सपागेहिं सुगंधवरतेल्लमाइएहिं पीणणिज्जेहिं दीवणिज्जेहिं दप्पणिज्जेहिं मयणिज्जेहिं विहणिज्जेहिं सव्विंदियगायपल्हायणिज्जेहिं अब्भंगेहिं[8] अब्भंगिए समाणे, तेल्लचम्मंसि पडिपुण्ण-पाणिपाय-सुकुमालकोमलतलेहिं पुरिसेहिं छेएहिं दक्खेहिं पट्ठेहिं कुसलेहिं मेहावीहिं निउणेहिं निउणसिप्पोवगएहिं जियपरिस्समेहिं अब्भंगण-परिमद्दणुव्वलण-करणगुणनिम्माएहिं, अट्ठिसुहाए मंससुहाए तयासुहाए रोमसुहाए--चउव्विहाए संवाहणाए संवाहिए समाणे अवगयपरिस्समे नरिंदे अट्टणसालाओ पडिनिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता समत्तजालाभिरामे[9] विचित्त-मणि-रयण-कोट्टिमतले रमणिज्जे ण्हाणमंडवंसि नाणामणि-रयण-भत्तिचित्तंसि ण्हाणपीढंसि सुहनिसण्णे सुहोदएहिं 'गंधोदएहिं पुप्फोदएहिं'[10]

---

१. स० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव पच्चप्पिणंति ।
२ अहपंडरे (क, ख), अहा° (ग) ।
३. दिनकरपरपरोयारपरद्धम्मि (क, ख, ग, घ, वृपा) ।
४. वालायव (क्वचित्) ।
५. खइय व्व (ख), खचियमिं (घ) ।
६. °तास (क, ख), °वास (घ) ।
७. जोग (क, ख, ग, घ) । प्रयुक्तासु सर्वास्वपि प्रतिषु 'जोग' इति पाठो लभ्यते, किन्तु वृत्तौ 'योग्या' इति व्याख्यातमस्ति तथा औपपातिक (६३) सूत्रे 'जोग्ग' इति पाठोऽस्ति । असौ च समीचीनः तेन मूले स्वीकृतः ।
८ अब्भंगिएहिं (ख) ।
९ समत (वृ), समत्त, समुत्त (वृपा) ।
१०. पुप्फोदएहिं गंधोदएहिं (क, ख, ग, घ) । वृत्तौ पूर्वं गंधोदकं ततश्च पुष्पोदकं व्याख्यातमस्ति । औपपातिक (६३) सूत्रे पि एष एव क्रमो दृश्यते ।

सुद्धोदएहि य पुणो पुणो कल्लाणग[1]-पवर-मज्जणविहीए मज्जिए तत्थ कोउय-सएहि वहुविहेहि कल्लाणग[2]-पवर-मज्जणावसाणे पम्हल-सुकुमाल-गधकासाइ-लूहियगे अहय-सुमहग्घ-दूसरयण-सुसवुए सरस-सुरभि-गोसीस-चदणाणुलित्त-गत्ते सुइमाला-वण्णगविलेवणे आविद्ध-मणिसुवण्णे कप्पिय-हारद्धहार-तिसरय-पालव-पलवमाण-कडिसुत्त-सुकयसोहे पिणद्धगेवेज्ज-अगुलेज्जग-ललियगय-ललियकयाभरणे[3] नाणामणि-कडग-तुडिय-थभियभुए अहियरूवसस्सिरीए कुडलुज्जोइयाणणे मउड-दित्तसिरए हारोत्थय-सुकय-रइयवच्छे 'मुद्दिया-पिंगल-गुलीए पालव-पलंवमाण-सुकय-पडउत्तरिज्जे'[4] नाणामणिकणगरयण-विमल[5]-महरिह-निउणोविय-मिसिमिसित[6]-विरइय-सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-लट्ठ-सठिय-पसत्थ-आविद्ध-वीरवलए, कि वहुणा ? कप्परुक्खए चेव सुअलकिय[7]-विभूसिए नरिदे सकोरेटमल्लदामेण[8] छत्तेण धरिज्जमाणेण चउचामरवालवीइयगे मगल-जय-सद्द-कयालोए[9] 'अणेगगणनायग-दडनायग-राईसर-तलवर-माडविय-कोडुबिय-मति-महामति-गणग - दोवारिय-अमच्च-चेड-पीढमद्द-नगर-निगम-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-दूय-सधिवालसद्धि सपरिवुडे धवलमहामेहनिग्गए विव गहगण-दिप्पत-रिक्खतारागणाण मज्झे ससि व्व पियदसणे नरवई मज्जणघराओ पडिनिक्ख-मइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव' वाहिरिया उवट्ठाणसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे ॥

२५. तए ण से सेणिए राया अप्पणो अदूरसामते उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए अट्ठ भद्दा-सणाइ—सेयवत्थ-पच्चुत्थुयाइ[10] सिद्धत्थय[11]-मगलोवयार-कय[12]-सतिकम्माइ—रयावेइ, रयावेत्ता नाणामणिरतणमडिय अहियपेच्छणिज्जरूव महग्घवरपट्टणु-ग्गय सण्ह-वहुभत्तिसय-चित्तठाण ईहामिय-उसभ-तुरय-नर-मगर-विहग-वालग-

---

१ कल्लाण (ग) ।

२. कल्लाण (क, ख, ग) ।

३ कयाभरणे (ग) ।

४. मुद्दिया-पिंगलगुलीए पालव-पलवमाण-सुकय-पडउत्तरिज्जे (क, ख, ग) ।

५ °कणगरयण (क, ग) ।

६ मिसिमिसत (क, घ) ।

७. अलकिय (क, ख, घ) ।

८. सकोरिंट° (घ) ।

९. अत्र औपपातिकस्य पाठक्रमो अस्माद् भिन्नो वर्तते । अर्थसमीक्षया सचाधिक. सगतोप्यस्ति—'कयालोए मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता अणेगगणनायग-दडनायग-राईसर-तलवर-माडविय-कोडुविय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-दूय-सधिवाल-सद्धि सपरिवुडे धवल-महामेहणिग्गए इव गहगण दिप्पत-रिक्ख-तारागणाण मज्झे ससिव्व पिअदसणे णरवइ जेणेव (ओ० सू० ६३) ।

१०. पच्चत्थयाइ (क); पच्चत्थुयाइ (ग) ।

११. सिद्धत्थ (क, ख, ग) ।

१२. कत (ग) ।

किन्नर[1]-रुरु सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलय-भत्तिचित्तं सुखचियवरकणग-पवरपेरंतदेसभागं अब्भिंतरियं जवणियं अंछावेइ, अंछावेत्ता अत्थरग-मउअ-मसूरग[2]-उत्थइयं धवलवत्थ-पच्चुत्थुयं[3] विसिट्ठं अंगसुहफासयं[4] सुमउयं धारिणीए देवीए भद्दासणं रयावेइ, रयावेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी —खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! अट्ठंगमहानिमित्तसुत्तत्थपाढए विविहसत्थकुसले सुमिणपाढए सद्दावेह, सद्दावेत्ता एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणह।।

२६ तए णं ते कोडुंबियपुरिसा सेणिएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया जाव[6] हरिसवस-विसप्पमाणहियया[7] करयल-परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं देवो! तह त्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति, सेणियस्स रण्णो अंतियाओ पडिनिक्खमंति,[8] रायगिहस्स नगरस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव सुमिणपाढगगिहाणि तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सुमिणपाढए सद्दावेंति।।

सेणियस्स सुमिणफल-पुच्छा-पदं

२७ तए णं ते सुमिणपाढगा सेणियस्स रण्णो कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया जाव[9] हरिसवस-विसप्पमाणहियया ण्हाया कयबलिकम्मा[10] •कय-कोउय-मंगल•-पायच्छित्ता अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा 'हरियालिय-सिद्धत्थय-कयमुद्धाणा'[11] सएहिं-सएहिं गेहेहिंतो[12] पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता रायगिहस्स नगरस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव सेणियस्स भवणवडेंसगदुवारे, तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता एगयओ मिलंति[13], मिलित्ता सेणियस्स रण्णो भवणवडेंसगदुवारेणं अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाण-साला, जेणेव सेणिए राया, तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सेणियं रायं जएणं विजएणं वद्धावेंति, सेणिएणं रण्णा अच्चिय-वंदिय-'पूइय-माणिय'[14]-सक्कारिय-सम्माणिया समाणा पत्तेयं-पत्तेयं पुव्वन्नत्थेसु भद्दासणेसु निसीयंति।।

२८ तए णं से सेणिए राया जवणियंतरियं धारिणिं देविं ठवेइ, ठवेत्ता पुप्फफल-पडिपुण्णहत्थे परेणं विणएणं ते सुमिणपाढए एवं वयासी—एवं खलु

---

१. किंनर (ख, ग)।
२ °मसूर (क, ख, ग, घ)।
३ पच्चत्थुय (क), पच्चत्थिय (घ)।
४ विसिट्ठ° (क, ख, घ)।
५ °सुतत्थधारए (ख)।
६ ना० १।१।१६।
७ हयहियया (क)।
८. °निक्खमति, २ त्ता (ग, घ)।
९. ना० १।१।१६।
१० सं० पा०—कयबलिकम्मा जाव पायच्छित्ता।
११ सिद्धत्थय-हरियालिया कयमंगलमुद्धाणा (वृपा)।
१२ गिहेहिंतो (क)।
१३. मेलायंति (क); मिलायंति (ख, घ)।
१४. माणिय-पूइय (क, ग), पूइय (ख, घ)।

देवाणुप्पिया ! धारिणी देवी अज्ज तसि तारिसगसि सयणिज्जंसि जाव[1] महासुमिण पासित्ता ण पडिबुद्धा। तं एयस्स ण देवाणुप्पिया ! उरालस्स जाव[2] सस्सिरीयस्स महासुमिणस्स के मण्णे कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ ? ॥

सुमिणफल-कहण-पद

२९. तए ण ते सुमिणपाढगा सेणियस्स रण्णो अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणदिया जाव[3] हरिसवस-विसप्पमाणहियया त सुमिण सम्म 'ओगिण्हति ओगिण्हित्ता'[4] ईह अणुप्पविसति, अणुप्पविसित्ता अण्णमण्णेण सद्धि 'सचालेति, सचालेत्ता'[5] तस्स सुमिणस्स लद्धट्ठा 'पुच्छियट्ठा गहियट्ठा'[6] विणिच्छियट्ठा अभिगयट्ठा सेणियस्स रण्णो पुरओ सुमिणसत्थाइ उच्चारेमाणा-उच्चारेमाणा एव वयासी—एव खलु अम्ह सामी ! सुमिणसत्थसि बायालीस सुमिणा, तीस महासुमिणा—बावत्तरि सव्वसुमिणा दिट्ठा ।

तत्थ ण सामी ! अरहतमायरो वा चक्कवट्टिमायरो वा अरहतसि वा चक्क-वट्टिसि वा गब्भ वक्कममाणसि एएसि तीसाए महासुमिणाण इमे चोद्दस महासुमिणे पासित्ता ण पडिबुज्झति, त जहा—

सगहणी-गाहा—

१ गय २.वसह[7] ३ सीह ४ अभिसेय ५ दाम ६ ससि ७ दिणयर ८.झय ९. कुभ ।
१०. पउमसर ११ सागर १२ विमाणभवण १३ रयणुच्चय १४ सिहि च ॥

वासुदेवमायरो वा वासुदेवसि गब्भं वक्कममाणसि एएसि चोद्दसण्ह महा-सुमिणाण अण्णयरे सत्त महासुमिणे पासित्ता ण पडिबुज्झति ।

बलदेवमायरो वा बलदेवसि गब्भ वक्कममाणसि एएसि चोद्दसण्ह महासुमिणाण अण्णयरे चत्तारि महासुविणे पासित्ता ण पडिबुज्झति ।

मडलियमायरो वा मडलियंसि गब्भ वक्कममाणसि एएसि चोद्दसण्ह महा-सुमिणाण अण्णयर महासुमिण पासित्ता ण पडिबुज्झति ।

इमे य सामी ! धारिणीए देवीए एगे महासुमिणे दिट्ठे, त उराले ण सामी ! धारिणीए देवीए सुमिणे दिट्ठे जाव[8] आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउय-कल्लाण-मगल्लकारए ण सामी ! धारिणीए देवीए सुमिणे दिट्ठे । 'अत्थलाभो सामी ! पुत्तलाभो सामी ! रज्जलाभो सामी ! भोगलाभो सामी ! सोक्खलाभो सामी'[9] । एव

---

१. ना० १।१।१८,१९ ।
२, ३ ना० १।१।१९ ।
४ परिगिण्हति २ (ख) ।
५ सवाएति २ त्ता (क), बोलेंति २ (ख) ।
६ गहियट्ठा पुच्छियट्ठा (क, घ) ।
७. उसभ (क, ख) ।
८. ना० १।१।२० ।
९ अत्र विंशतितम सूत्रमनुसृत्य पाठ स्वीकृत,

खलु सामी ! धारिणी देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं जाव[1] दारगं पयाहिइ। से वि य णं दारए उम्मुक्कबालभावे विण्णय[2]-परिणयमित्ते जोव्वणग-मणुप्पत्ते सूरे वीरे विक्कंते वित्थिण्ण-विपुल-बलवाहणे रज्जवई राया भविस्सइ, अणगारे वा भावियप्पा।

तं उराले णं सामी ! धारिणीए देवीए सुमिणे दिट्ठे जाव[3] आरोग्ग-तुट्ठि[4]-•दीहा-उय-कल्लाण-मंगल्लकारए णं सामी ! धारणीए देवीए सुमिणे° दिट्ठे त्ति कट्टु भुज्जो-भुज्जो अणुवूहेति ॥

सुमिणपाढग-विसज्जण-पदं

३० तए णं से सेणिए राया तेसिं सुमिणपाढगाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए जाव[5] हरिसवस-विसप्पमाणहियए करयल[6]•परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° एवं वयासी—एवमेयं देवाणुप्पिया ! जाव[7] जं णं तुब्भे वयह त्ति कट्टु तं सुमिणं सम्मं पडिच्छइ[8], ते सुमिणपाढए विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-गंध-मल्लालंकारेण य सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता विपुलं जीवियारिहं पीतिदाणं दलयति[9], दलइत्ता पडिविसज्जेइ ॥

सेणियस्स सुमिणपसंसा-पदं

३१ तए णं से सेणिए राया सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता जेणेव धारिणी देवी, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता 'धारिणिं देविं'[10] एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिए ! सुमिणसत्थंसि बायालीसं सुमिणा[11] •तीसं महासुमिणा—बावत्तरिं सव्वसुमिणा दिट्ठा जाव[12] तं उराले णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे। कल्लाणे णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे। सिवे धण्णे मंगल्ले सस्सिरीए णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे। आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउय-कल्लाण-मंगल्ल-कारए णं तुमे देवि ! सुमिणे दिट्ठे त्ति कट्टु° भुज्जो-भुज्जो अणुवूहेइ ॥

प्रतिषु चात्र पाठस्य क्रमविपर्ययो दृश्यते—अत्थलाभो सामी ! सोक्खलाभो सामी ! भोगलाभो सामी ! पुत्तलाभो रज्जलाभो (क, ख, ग, घ)।

१ ना० १।१।२०।

२ विण्णाय (वृ), विण्णय (वृपा)।

३ ना० १।१।२०।

४ सं० पा०—आरोग्ग-तुट्ठि जाव दिट्ठे।

५. ना० १।१।१६।

६ सं० पा०—करयल जाव एवं।

७ ना० १।१।२१।

८ संपडिच्छइ (ग, घ)।

९ दलइ (क)।

१०. धारणी देवी (क); धारणीए देवीए (ख, ग), धारणी देवी (घ)।

११. सं० पा०—सुमिणा जाव भुज्जो २ अणुवूहति।

१२. ना० १।१।२६।

धारिणीए दोहल-पदं

३२. तए णं सा धारिणी देवी सेणियस्स रण्णो अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया जाव[1] हरिसवस-विसप्पमाणहियया तं सुमिणं सम्मं पडिच्छति, जेणेव सए वासघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ण्हाया कयबलि-कम्मा[2] °कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ता विपुलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी° विहरइ ॥

३३. तए णं तीसे धारिणीए देवीए दोसु मासेसु वीइक्कंतेसु तइए मासे वट्टमाणे तस्स गब्भस्स दोहलकालसमयंसि अयमेयारूवे अकालमेहेसु दोहले पाउब्भवित्था —

धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, संपुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयत्थाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयपुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयलक्खणाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयविहवाओ णं ताओ अम्मयाओ, सुलद्धे णं तासिं माणुस्सए जम्मजीवियफले, जाओ णं मेहेसु अब्भुग्गएसु अब्भुज्जएसु अब्भुण्णएसु अब्भुट्ठिएसु सगज्जिएसु सविज्जुएसु सफुसिएसु सथणिएसु[3] धंतधोय-रुप्पपट्ट-अंक-संख-चंद-कुंद-सालिपिट्ठरासिसमप्पभेसु चिकुर-हरियाल-भेय-चंपग-सण-कोरेंट-सरिसव[4]-पउमरयसमप्पभेसु लक्खारस-सरस-रत्तकिंसुय-जासुमण-रत्तबंधुजीवग-जातिहिंगुलय[5]-सरस-कुंकुम-उरब्भससरुहिर-इंदगोवग-समप्पभेसु[6] बरहिण-नील-गुलिय[7]-सुगचासपिच्छ-भिंगपत्त-सासग[8]-नीलुप्पलनियर-नवसिरीसकुसुम-नवसद्दलसमप्पभेसु जच्चंजण-भिंगभेय-रिट्ठग-भमरावलि-गवलगुलिय-कज्जलसमप्पभेसु फुरंत-विज्जुय-सगज्जिएसु वायवस-विपुलगगण-चवलपरिसक्किरेसु, निम्मल-वरवारिधारा-पयलिय-पयंडमारुयसमाहय-समोत्थरंत-उवरिउवरितुरियवासं पवासिएसु, धारा-पहकर-निवाय-निव्वाविय[9] मेइणितले हरियगगणकंचुए पल्लविय[10] पायव-

---

१. ना० १।१।१९ ।

२. सं० पा०—कयबलिकम्मा जाव विपुलाइं जाव विहरइ ।।

३. सथणिज्जेसु (क) ।

४. सरिसय (ख), सरिस (घ), वाचनान्तरे—'सण' स्थाने 'कंचण' 'सरिसव' स्थाने 'सरिस' त्ति पठ्यते (वृ) ।

५. हिंगुलिय (ग, घ) ।

६. इंदगोवसम° (क) ।

७. गुलिया (ख, घ) ।

८. सामग (क, ख), साम (वृपा) ।

९. निर्वापितशब्दाच्च सप्तम्येकवचनलोपो दृश्य (वृ) ।

१०. इदं समस्तपदं स्यादपि तथापि वृत्तिकृता 'पल्लविय' पदं स्वतन्त्ररूपेण व्याख्यातम्—इह सप्तमीबहुवचनलोपो दृश्य:, तत: पल्लवितेषु (वृ) ।

गणेसु वल्लिवियाणेसु[1] पसरिएसु उन्नएसु[2] सोभग्गमुवगएसु[3] वेभारगिरि-प्पवाय-तड-कडगविमुक्केसु उज्झरेसु, तुरियपहाविय-पल्लोट्टफेणाउलं सकलुसं जलं वहंतीसु गिरिनदीसु सज्जज्जुण-नीव-कुडय-कंदल-सिलिंध[4]-कलिएसु उववणेसु,

मेहरसिय - हट्ठतुट्ठचिट्ठिय - हरिसवसपमुक्ककंठकेकारवं मुयंतेसु बरहिणेसु[5] उउवस[6]-मयजणिय-तरुणसहयरि-पणच्चिएसु नवसुरभि-सिलिंध-कुडय-कंदल-कलंब-गंधद्धणिं मुयंतेसु उववणेसु।

परहुय-रुय-रिभिय-संकुलेसु उद्दाइंत-रत्तइंदगोवय-थोवय-कारुण्णविलविएसु ओणयतणमंडिएसु दद्दुरपयंपिएसु संपिंडिय-दरिय-भमर-महुयरिपहकर-परिलिंत-मत्त-छप्पय-कुसुमासवलोल-महुर-गुंजंतदेसभाएसु उववणेसु।

परिसामिय[7]-चंद-सूर-गहगण-पणट्ठनक्खत्ततारगपहे[8] इंदाउह-बद्ध-चिंधपट्टंम्मि[9] अंबरतले उड्डीणबलागपंति[10]-सोभंतमेहवंदे कारंडग-चक्कवाय-कलहंस-उस्सुयकरे संपत्ते पाउसम्मि काले ण्हायाओ[11] कयबलिकम्माओ कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ताओ 'किं ते?'[12] वरपायपत्तनेउर-मणिमेहल-हार-रइय-ओविय[13]-कडग-'खुड्डय'[14]-विचित्तवरवलयथंभियभुयाओ कुंडलउज्जोवियाणणाओ[15] रयणभूसियंगीओ, नासा[16]-नीसासवाय-वोज्झं चक्खुहरं वण्णफरिससंजुत्तं हयलालापेलवाइरेयं

---

१ °सु (क, ख), अन्यत्रापि यत्र क्वचित् एतत् दृश्यते।

२ पाठान्तरे - नगेषु पर्वतेषु नदेषु वा ह्रदेषु (वृ)।

३ सोहग्ग° (क)।

४ सिलिंद्ध (ख, ग)।

५. वरिहणेसु (क)।

६. उदु° (ख), उडु° (ग, घ)।

७ परिफामिय (क, ग, घ, वृपा)।

८ °तारागपहे (क), °तारागणपहे (ग)।

९. °पटटंसि (ख, घ)।

१०. °वलागवति (ख)।

११ किंभूता अम्मयाओ इत्याह—ण्हायाओ इत्यादि (वृ)।

१२. किन्नो (क); किन्ने (ग), किं रो (घ)। किं तत् 'यत् करोति' इति शेष। किं च [भ० ९।१४४ सूत्रस्य पादटिप्पण] असौ पाठ व्याख्यादृष्ट्या सरलोऽस्ति।

१३ उचिय (ग, घ)। वृत्तिकारेणापि 'उचिय' पद व्याख्यातमस्ति—उचितानि योग्यानि (वृ)। किन्तु अत्र 'ओविय' पद समीचीन-मस्ति। सभवतो लिपिदोषेण परिवर्तन जातम्। २४ सूत्रे 'ओविय' इति पाठो लभ्यते। तत्र वृत्तिकारेण 'ओविय त्ति परिकर्मितानि इति' व्याख्या कृतास्ति। अत्र वृत्तिकारेण 'उचिय' पाठो लब्ध. तेन तथा व्याख्यात।

१४. खद्दुय (घ), खड्डुय (घ)।

१५ खड्डुय- एगावलि- कंठमुरज- तिसरय-वरवलय-हेमसुत्त-कुंडलुज्जोवियाणणाओ (वृपा)।

१६. नास (क)।

धवलकणय-खचियंतकम्मं आगासफलिह-सरिसप्पभं अंसुयं पवर[1] परिहियाओ, दुगूलसुकुमालउत्तरिज्जाओ[2] 'सव्वोउय-सुरभिकुसुम-पवरमल्लसोभियसिराओ'[3] कालागरुधूवधूवियाओ सिरी-समाणवेसाओ, सेयणय[4]-गधहत्थिरयण दुरूढाओ समाणीओ, सकोरेंटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण 'चदप्पभवइरवेरुलिय-विमलदंड- सखकुद- दगरयअमयमहियफेणपुंजसन्निगास- चउचामरवालवीजियं-गीओ'[5] सेणिएण रण्णा सद्धि हत्थिखधवरगएण पिट्ठओ-पिट्ठओ समणुगच्छमाणीओ चाउरगिणीए सेणाए—महया हयाणीएणं गयाणीएणं रहाणीएण पायत्ताणीएणं—सव्विड्ढीए[6] सव्वज्जुईए[7] •सव्ववलेण सव्वसमुदएण सव्वादरेणं सव्वविभूईए सव्वविभूसाए सव्वसभमेणं सव्वपुप्फगधमल्लालंकारेण सव्वतुडिय-सद्द-सण्णि-णाएण महया इड्ढीए महया जुईए महया वलेण महया समुदएण महया वरतु-डिय-जमगसमग-प्पवाइएण सख-पणव-पडह-भेरि-झल्लरि-खरमुहि-हुडुक्क-मुरय-मुइग-दुदुहि॰-निग्घोसनाइयरवेण रायगिह नयर सिघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु आसित्तसित्त-सुइय-सम्मज्जिओवलित्त[8] •पचवण्ण-सरस-सुरभि-मुक्क-पुप्फपुजोवयारकलिय कालागरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-डज्झत-सुरभि-मघमघेत-गधुद्धयाभिरामं॰ सुगधवर (गध ?) गधिय[9] गधवट्टिभूय अवलोएमाणीओ नागरजणेण अभिनदिज्जमाणीओ[10] गुच्छ-लया-रुक्ख-गुम्म-वल्लि-गुच्छोच्छाइय सुरम्म वेभारगिरिकडग[11]-पायमूल सव्वओ समता 'आहिंडमाणीओ-आहिंडमाणीओ दोहल[12] विणिति[13] ।

तं जइ ण अहमवि मेहेसु अब्भुग्गएसु जाव दोहल विणिज्जामि'[14] ॥

---

१. प्रवरमिहानुस्वारलोपोदृश्य (वृ)। 'ग' प्रती 'पवर' इति पाठो पि लभ्यते ।

२. दुगुल्ल॰ (क) ।

३. पाठान्तरे—सर्वर्तुकमुरभिकुसुमैः सुरचिता. प्रलम्बा शोभमाना. कान्ता चित्रा माला यासा तास्तथा। एवमन्यान्यपिपदानि वहुवचनानि सस्करणीयानि । इह वर्णके वृहत्तरो वाचनाभेद (वृ) ।

४. सेयणय (ख) ।

५ अयमेवार्थो वाचनान्तरे इत्थमधीत — सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं-उद्धुव्वमा-णीहिं (वृ) ।

६ सव्व॰ (ख) ।

७. स॰ पा॰—सव्वजुईए जाव निग्घोसनाइय-रवेण ।

८. स॰ पा॰—सामज्जिओवलित्त जाव सुगध-वरगधिय ।

९. १।१।७६ सूत्रे, वृत्ते. पूरितपाठे 'गध' शब्दो विद्यते । औपपातिकस्य ५५ सूत्रेपि स लभ्यते । अत्रापि तथैव युज्यते ।

१०. अभिनदिज्जमाणीओ २ (क) ।

११. वेब्भार॰ (ख, ग) ।

१२. डोहल (क, घ) ।

१३. विणएति (क), विणियति (घ) ।

१४. वृत्तिकारस्य सम्मुखे सम्मता आदर्शा आसन् तेपु 'समता आहेडज्ज' इत्येतावानेव पाठ आसीत् । अग्रिमस्य पाठस्य वृत्तिकृता

धारिणीए चिंता-पदं

३४ तए ण सा धारिणी देवी तसि दोहलसि अविणिज्जमाणसि असपत्तदोहला असपुण्णदोहला असम्माणियदोहला सुक्का भुक्खा निम्मसा ओलुग्गा ओलुग्ग-सरीरा पमइलदुव्वला किलता ओमथियवयण-नयणकमला पडुइयमुही करयल-मलिय व्व चपगमाला नित्तेया दीणविवण्णवयणा जहोचिय-पुप्फ-गंध-मल्लाल-कार-हारं[1] अणभिलसमाणी किड्डारमणकिरियं[2] परिहावेमाणी दीणा दुम्मणा निराणंदा भूमिगयदिट्ठीया ओहयमणसकप्पा[3] °करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोव-गया° झियाइ ॥

पडिचारियाण चिंताकारणपुच्छा-पदं

३५ तए णं तीसे धारिणीए देवीए अगपडिचारियाओ अब्भितरियाओ दासचेडियाओ[4] धारिणिं देविं ओलुग्ग[5] झियायमाणिं[6] पासति, पासित्ता एवं वयासी—किण्णं[7] तुमे देवाणुप्पिए ! ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा जाव झियायसि ?

३६ तए ण सा धारिणी देवी ताहिं अंगपडिचारियाहिं अब्भितरियाहिं दासचेडि-याहिं[8] य एव वुत्ता समाणी ताओ दासचेडियाओ[9] नो आढाइ नो परियाणइ[10], 'अणाढायमाणी अपरियाणमाणी'[11] तुसिणीया संचिट्ठइ[12] ॥

३७ तए ण ताओ अगपडिचारियाओ अब्भितरियाओ दासचेडियाओ धारिणिं देविं दोच्च पि तच्च पि एव वयासी—किण्ण तुमे[13] देवाणुप्पिए ! ओलुग्गा ओलुग्ग-सरीरा जाव[14] झियायसि ?

३८. तए णं सा धारिणी देवी ताहि अगपडिचारियाहिं[15] अब्भितरियाहि दासचेडि-

---

वाचनान्तरत्वेन उल्लेख. कृत, तस्य मगतत्वमपि प्रदर्शितम्—आहेडज्ज त्ति आहिडते। अनेन चैव मुक्तव्यतिकरभाजा सामान्येन स्त्रीणा प्रशमाद्वारेणात्मविपर्येऽका-लमेघदोहदो धारिण्या प्रादुरभूत् इत्युक्तम्। वाचनान्तरे तु—ओलोयमाणीओ २ आहिंडे-माणीओ २ डोहल विणिंति। त जड ण अहमवि मेहेसु अब्भुग्गएसु जाव डोहल विणिज्जामि। संगतश्चाय पाठ इति (वृ)।

१ मल्लालकाराहार (क, ख, ग)।

२. कीडा (क, ख, घ)।

३. स० पा०—ओहयमणसकप्पा जाव झियाइ।

४. चेडीओ (क, ग)।

५. ना० १।१।३४।

६ अत्र पाठसक्षेपकरणे सुक्ख भुक्ख निम्मस इति विशेषणत्रयी न विवक्षितास्ति। एवमग्रेपि।

७ किं न (क); किं ण (ख); किण्ह (ग)।

८. °चेडीहिं (ख, ग)।

९ चेडियाओ (ख, ग)।

१०. परियाणाइ (ग), परियाणेति (घ)।

११. °माणा अपरियाणमाणा (ख, घ)।

१२. चिट्ठइ (क)।

१३. तुमं (क, ग)।

१४. ना० १।१।३४।

१५. °परियारियाहिं (क)।

याहि दोच्च पि तच्च पि एव वुत्ता समाणो नो आढाइ नो परियाणइ, अणाढायमाणी अपरियाणमाणी तुसिणीया संचिट्ठइ ।।

पडिचारियाणं सेणियस्स निवेदण-पदं

३९ तए ण ताओ अगपडिचारियाओ अब्भितरियाओ दासचेडियाओ धारिणीए देवीए अणाढाइज्जमाणीओ अपरिजाणिज्जमाणीओ तहेव सभताओ समाणीओ धारिणीए देवीए अतियाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं[1] •दसणह सिरसावत्त मत्थए अजलि° कट्टु जएणं विजएण वद्धावेंति, वद्धावेत्ता एवं वयासी—एव खलु सामी ! किंपि अज्ज धारिणी देवी ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा जाव[2] अट्टज्झाणोवगया झियायइ ।।

सेणियस्स चिंताकारणपुच्छा-पदं

४० तए ण से सेणिए राया तासिं अंगपडिचारियाण अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म तहेव सभते समाणे सिग्घ तुरियं चवल वेइय[3] 'जेणेव धारिणी देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता'[4] धारिणि देविं ओलुग्ग ओलुग्गसरीर जाव[5] अट्टज्झाणोवगय झियायमाणिं पासइ, पासित्ता एवं वयासी—किण्ण तुम देवाणुप्पिए ! ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा जाव अट्टज्झाणोवगया झियायसि ?

४१ तए ण सा धारिणी देवी सेणिएणं रण्णा एव वुत्ता समाणी नो आढाइ नो परियाणइ जाव[6] तुसिणीया सचिट्ठइ ।।

४२ तए ण से सेणिए राया धारिणि देविं दोच्च पि तच्च पि एव वयासी—किण्ण तुम देवाणुप्पिए ! ओलुग्गा ओल्लुगसरीरा जाव[7] अट्टज्झाणोवगया झियासि ?

४३ तए ण सा धारिणी देवी सेणिएण रण्णा दोच्च पि तच्च पि एव वुत्ता समाणी नो आढाइ नो परियाणइ[8] तुसिणीया सचिट्ठइ ।।

४४. तए ण से सेणिए राया धारिणिं देविं सवह-साविय करेइ, करेत्ता एव वयासी—किण्ण[9] देवाणुप्पिए[10] ! अहमेयस्स अट्ठस्स अणरिहे सवणयाए ? तो[11] ण तुम मम अयमेयारूव मणोमाणसियं दुक्ख रहस्सीकरेसि ।।

---

१. स० पा०—करयलपरिग्गहियं जाव कट्टु ।
२. ना० १।१।३४ ।
३ चेइय (क, ख, ग, घ) ।
४ जेणेव धारिणी देवी तेणेव पहारेत्थ गमणाए तएण सेणिए राया जेणेव धारिणी देवी तेणेव उवागच्छइ २ (ग, वृपा) ।
५. ना० १।१।३४ ।
६. ना० १।१।३६ ।
७. ना० १।१।३४ ।
८ पू०—ना० १।१।३६ ।
९ किण्हकिण्णमिति वा पाठ (वृ) ।
१०. तुम देवाणु° (क, घ) । अत्र 'तुम' अनावश्यको विद्यते ।
११ ता (घ) ।

धारिणीए चिंताकारणनिवेदण-पदं

४५ तए ण सा धारिणी देवी सेणिएण रण्णा सवह-साविया समाणी सेणिय राय एव वयासी—एव खलु सामी ! मम तस्स उरालस्स जाव[1] महासुमिणस्स तिण्ह मासाण वहुपडिपुण्णाण अयमेयारूवे[2] अकालमेहेसु दोहले पाउब्भूए—धण्णओ णं ताओ अम्मयाओ कयत्थाओ ण ताओ अम्मयाओ जाव[3] वेभारगिरि-कडग[4]-पायमूल सव्वओ समता आहिंडमाणीओ-आहिंडमाणीओ[5] दोहल विणिति । त जइ ण अहमवि मेहेसु अब्भुग्गएसु जाव[6] दोहल विणेज्जामि ।
'तए णं अह'[7] सामी ! अयमेयारूवसि अकालदोहलसि अविणिज्जमाणसि ओलुग्गा जाव[8] अट्टज्झाणोवगया झियामि ॥

सेणियस्स आसासण-पद

४६ तए ण से सेणिए राया धारिणीए देवीए अंतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म धारिणिं देविं एव वयासी—मा ण तुम देवाणुप्पिए ! ओलुग्गा जाव[9] अट्टज्झाणोवगया झियाहि । अह ण तह[10] करिस्सामि[11] जहा ण तुब्भ अयमेयारूवस्स अकाल-दोहलस्स मणोरहसपत्ती भविस्सइ त्ति कट्टु धारिणिं देविं इट्ठाहिं कताहिं पियाहिं मणुन्नाहि मणामाहि वग्गूहिं समासासेइ, समासासेत्ता जेणेव वाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे धारिणीए देवीए एयं अकालदोहल वहूहिं आएहि य उवाएहि य, उप्पत्तियाहि य वेणइयाहि य कम्मियाहि य पारिणामियाहि य—'चउव्विहाहिं वुद्धीहिं'[12] अणुचिंतेमाणे-अणुचितेमाणे तस्स दोहलस्स आय वा उवाय वा 'ठिइं वा उप्पत्तिं वा'[13] अविंदमाणे ओहयमणसकप्पे जाव[14] झियायइ ॥

अभयकुमारस्स सेणियं पइ चिंताकारणपुच्छा-पदं

४७. तयाणतर च ण अभए[15] कुमारे 'ण्हाए कयवलिकम्मे[16] •कयकोउय-मगल-पायच्छित्ते° सव्वालकारविभूसिए पायवदए पहारेत्थ गमणाए ॥

---

१ ना० १।१।१६ ।
२ अतमेया० (ग) ।
३ ना० १।१।३३ ।
४. वेब्भार° (ख, ग) ।
५ द्रष्टव्य १।१।३३ सूत्रस्यासौ पाठ ।
६ ना० १।१।३३ ।
७. तए ण ह (क); तते ण ह (ख), तेणा ह(घ) ।
८, ९ ना० १।१।३४ ।
१० तहा (घ) ।
११. घत्तीहामि (वृ), करिस्सामि (वृपा) ।
१२ चउव्विहाए वुद्धीए (ग) ।
१३ उप्पत्तिं वा ठिइ वा (क); उप्पत्तिं वा (वृपा) ।
१४. ना० १।१।३४ ।
१५. अभय (क, ग, घ) ।
१६. स० पा०—कयवलिकम्मे जाव सव्वालकार° ।

४८ तए णं से अभए कुमारे[1] जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सेणियं रायं ओहयमणसंकप्पं जाव[2] झियायमाणं पासइ, पासित्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—अण्णया[3] ममं सेणिए राया एज्जमाणं पासइ, पासित्ता आढाइ परियाणइ सक्कारेइ सम्माणेइ [इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुन्नाहिं मणामाहिं ओरालाहिं वग्गूहिं ?] आलवइ संलवइ अद्धासणेणं[4] उवनिमंतेइ मत्थयंसि अग्घाइ। इयाणिं ममं सेणिए राया नो आढाइ नो परियाणइ नो सक्कारेइ नो सम्माणेइ नो इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुन्नाहिं मणामाहिं ओरालाहिं वग्गूहिं आलवइ संलवइ नो अद्धासणेणं उवनिमंतेइ नो मत्थयंसि अग्घाइ[5], किं पि ओहयमणसंकप्पे जाव[6] झियायइ। तं भवियव्वं णं एत्थ कारणेणं। तं सेयं खलु ममं सेणियं रायं एयमट्ठं पुच्छित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता जेणामेव[7] सेणिए राया तेणामेव[8] उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयासी—तुब्भे णं ताओ! अण्णया ममं एज्जमाणं पासित्ता आढाह परियाणह[9] °सक्कारेह सम्माणेह[10] आलवह संलवह अद्धासणेणं उवणिमंतेह° मत्थयंसि अग्घायह[11]। इयाणिं ताओ! तुब्भे ममं नो आढाह जाव 'नो मत्थयंसि अग्घायह'[12] किं पि ओहयमणसंकप्पा जाव झियायह। तं भवियव्वं णं ताओ! एत्थ कारणेणं। तओ तुब्भे ममं ताओ! एयं कारणं अगूहमाणा[13] असंकमाणा अनिण्हवमाणा अपच्छाएमाणा जहाभूतमवितहमसंदिद्धं एयमट्ठं आइक्खह। तए णं हं तस्स कारणस्स अंतगमणं गमिस्सामि॥

सेणियस्स चिंताकारणनिवेदण-पदं

४९ तए णं से सेणिए राया अभएणं कुमारेणं एवं वुत्ते समाणे अभयं कुमारं एवं वयासी—एवं खलु पुत्ता! तव चुल्लमाउयाए[14] धारिणीदेवीए तस्स गब्भस्स दोसु मासेसु अइक्कंतेसु तइयमासे वट्टमाणे दोहलकालसमयंसि अयमेयारूवे

---

१. × (घ)।
२. ना० १।१।३४।
३. अण्णया य (क), अण्णतो (घ)।
४. आसणेणं (क, ख, ग)। नोयुक्तपुनरावर्तने 'अद्धासणेणं' पाठोस्ति, अत्रापि तथैव युज्यते।
५. अग्घायइ (क, ख, ग)।
६. ना० १।१।३४।
७. जेणेव (घ)।
८. तेणेव (घ)।
९. सं० पा०—परियाणह जाव मत्थयंसि
१०. पू०—अस्य सूत्रस्य पूर्वभाग।
११. आग्घायह आसणेणं उवनिमंतेह (क, घ)।
१२. नो आसणेणं उवनिमंतेह (क, ख, ग, घ)।
१३. अगूहेमाणा (ख, ग, घ)।
१४. तुल्ल° (ग)।

दोहले पाउब्भवित्था—धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ तहेव निरवसेसं भाणियव्वं जाव[1] वेभारगिरिकडग-पायमूलं सव्वओ समंता आहिंडमाणीओ-आहिंडमाणीओ दोहलं विणिंति। तं जइ णं अहमवि मेहेसु अब्भुग्गएसु जाव दोहलं विणिज्जामि।

तए णं अहं पुत्ता धारिणीए देवीए तस्स अकालदोहलस्स बहूहिं आएहि य उवाएहि य जाव[2] उप्पत्तिं अविंदमाणे ओहयमणसंकप्पे जाव[3] झियामि, तुमं आगयं पि न याणामि। तं एतेण कारणेण अहं पुत्ता! ओहयमणसंकप्पे जाव झियामि॥

अभयस्स आसासण-पदं

५० तए णं से अभए कुमारे सेणियस्स रण्णो अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए जाव[4] हरिसवस-विसप्पमाणहियए सेणियं रायं एवं वयासी—मा णं तुब्भे ताओ! ओहयमणसंकप्पा जाव[5] झियायह। अहं णं तहा करिस्सामि जहा णं मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूवस्स अकालदोहलस्स मणोरहसंपत्ती भविस्सइ त्ति कट्टु सेणियं रायं ताहिं इट्ठाहिं[7] °कंताहिं पियाहिं मणुन्नाहिं मणामाहिं वग्गूहिं° समासासेइ॥

५१ तए णं से सेणिए राया अभएणं कुमारेण एवं वुत्ते समाणे हट्ठ तुट्ठ-चित्तमाणंदिए जाव[8] हरिसवस-विसप्पमाणहियए अभयं कुमारं सक्कारेइ सम्माणेइ, पडिविसज्जेइ॥

अभयस्स देवाराहण-पदं

५२. तए णं से 'अभए कुमारे'[9] 'सक्कारिए सम्माणिए'[10] पडिविसज्जिए समाणे सेणियस्स रण्णो अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणामेव सए भवणे, तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणे निसण्णे॥

५३ तए णं तस्स अभयस्स[11] कुमारस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[12] °चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—नो खलु सक्का माणुस्सएणं उवाएणं मम

---

१ ना० १।१।३३।
२ ना० १।१।४६।
३. ना० १।१।३४।
४. ना० १।१।१६।
५. तोहय° (क)।
६ ना० १।१।३४।
७. स० पा०—इट्ठाहिं जाव समासासेइ।
८. ना० १।१।१६।
९. अभयकुमारे (ख, ग, घ)।
१० सक्कारिय ° (क), सक्कारिय सम्माणिय (ख, ग)।
११. अभय (ख, ग, घ)।
१२. स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।

चुल्लमाउयाए[1] धारिणीए देवीए अकालदोहलमणोरहसपत्ति करित्तए, नन्नत्थ[2] दिव्वेण उवाएण। अत्थि ण मज्झ[3] सोहम्मकप्पवासी पुव्वसगइए देवे महिड्ढीए[4] •महज्जुइए महापरक्कमे महाजसे महव्बले महाणुभावे॰ महासोक्खे[5]। तं सेयं खलु मम पोसहसालाए पोसहियस्स बभचारिस्स[6] उम्मुक्कमणिसुवण्णस्स ववगयमालावण्णगविलेवणस्स निक्खित्तसत्थमुसलस्स एगस्स अबीयस्स दब्भ-सथारोवगयस्स अट्ठमभत्त पगिण्हित्ता[7] पुव्वसगइय देव मणसीकरेमाणस्स विहरित्तए।

तए ण पुव्वसगइए देवे मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूव अकाल-मेहेसु दोहल विणेहिति—एवं सपेहेइ, सपेहेत्ता जेणेव पोसहसाला तेणामेव[8] उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसाल पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता[9] दब्भसथारग दुरुहइ, दुरुहित्ता अट्ठमभत्त[10] पगिण्हइ, पगिण्हित्ता पोसहसालाए पोसहिए बभचारी जाव पुव्वसगइय देवं मणसीकरेमाणे-मणसीकरेमाणे[11] चिट्ठइ॥

देवागमण-पदं

५४. तए ण तस्स अभयकुमारस्स अट्ठमभत्ते परिणममाणे पुव्वसगइयस्स देवस्स आसण चलइ।

५५ तए ण से पुव्वसगइए सोहम्मकप्पवासी देवे आसण चलिय पासइ, पासित्ता ओहि पउजइ।

५६ तए ण तस्स पुव्वसंगइयस्स देवस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[12] •चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे॰ समुप्पज्जित्था—एव खलु मम पुव्वसगइए जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे दाहिणड्ढभरहे रायगिहे नयरे पोसहसालाए पोसहिए अभए नाम कुमारे अट्ठमभत्तं पगिण्हित्ता ण मम मणसीकरेमाणे-मणसीकरेमाणे चिट्ठइ। त सेय खलु मम अभयस्स कुमारस्स अतिए पाउब्भवित्तए—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता उत्तरपुरत्थिम दिसीभाग अवक्कमइ, अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएण

---

१. तुल्ल॰ (ग) प्राय सर्वत्र।
२ ण अण्णत्थ (क)।
३ मम (घ)।
४ स॰ पा॰—महिड्ढीए जाव महासोक्खे।
५ महसोक्खे (क, ख)।
६ बभयारिस्स (घ)।
७. परिगिण्हित्ता (क, घ)।
८. तेणेव (घ)।
९. पडिलेहेत्ता दब्भसथारयं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता (ख, घ), अत्र उपासकदशाया. प्रथमाध्ययने (६०) सूत्रे एव पाठो विद्यते—दब्भसथारयं सथरेइ, सथरेत्ता॰।
१० अट्ठम ॰ (ख)।
११. × (क, ख, घ)।
१२. स॰ पा॰—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।

समोहण्णइ[1], समोहणित्ता संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं[2] निसिरइ, तं जहा—रयणाणं वइराणं[3] वेरुलियाणं लोहियक्खाणं मसारगल्लाणं हंसगब्भाणं पुलगाणं सोगंधियाणं जोईरसाणं अंकाणं अंजणाणं रययाणं[4] जायरूवाणं अंजणपुलगाणं फलिहाणं रिट्ठाणं अहाबायरे पोग्गले परिसाडेइ, परिसाडेत्ता अहासुहुमे पोग्गले परिगिण्हइ, परिगिण्हित्ता अभयकुमारमणुकंपमाणे देवे 'पुव्वभवजणिय-नेह-पीइ-बहुमाणजायसोगे'[5] तओ विमाणवरपुंडरीयाओ रयणुत्तमाओ 'धरणियल-गमण-तुरिय-संजणिय-गमणपयारो'[6] 'वाघुण्णिय-विमल-कणग-पयरग-वडिंसगमउडुक्कडाडोवदंसणिज्जो अणेगमणि-कणगरयणपहकरपरिमंडिय-भत्तिचित्त-विणिउत्तग-मणुगुणजणियहरिसो पिंखोलमाणवरललियकुंडलुज्जलिय-वयणगुणजणिय-सोम्मरूवो'[7] उदिओ विव कोमुदीनिसाए सणिच्छरंगारकुज्जलियमज्झभागत्थो नयणाणंदो सरयचंदो दिव्वोसहिपज्जलुज्जलियदंसणाभिरामो उउलच्छिसमत्त-जायसोहो पइट्ठगंधुद्धयाभिरामो मेरू विव नगवरो विगुव्वियविचित्तवेसो दीवसमुद्दाणं असंखपरिमाणनामधेज्जाणं मज्झकारेणं वीइवयमाणो उज्जोयंतो[8] पभाए विमलाए जीवलोयं रायगिहं पुरवरं च अभयस्स पासं ओवयइ दिव्व-रूवधारी।

५७ तए णं से देवे अंतलिक्खपडिवण्णे दसद्धवण्णाइं सखिंखिणियाइं पवर वत्थाइं परिहिए[9] अभयं कुमारं एवं वयासी—अहं णं देवाणुप्पिया! पुव्वसंगइए

१ समोहणति (क, ख, घ)।

२ दंडं उड्ढं (ग)।

३. वयराणं (ग, घ)।

४ रयणाणं (ग, घ) इत्यपपाठः।

५. वाचनान्तरे—पूर्वभवजनितस्नेहप्रीतिबहुमान-जनितशोभ (वृ)।

६ वाचनान्तरे—धरणीतलगमनसंजनितमन प्रचार (वृ)।

७. °सोमरूवो (ख, घ), वाचनान्तरे पुनरेवं विशेषणत्रयं दृश्यते—वाघुन्निय-विमलकणग-पयरग-वडेंसगपकंपमाण - चललोल - ललिय-पग्घिवमाण-नर-मगर-तुरग-मुहसय-विणिग्गओग्गिण्ण - पवरमोत्तियविरायमाणमउडुक्कडाडोवदरिसणिज्जो अणेगमणिकणगरयण-पहकरपरिमंडिय-भाग भत्तिचित्त-विणिउत्तग-मणुगुणजणिय-पिंखोलमाणवरललियकुंडलुज्ज-लियअहियआभरणजणियसोभे गयजलमल-विमलदंसणविरायमाणरूवे (वृ)।

८. उज्जोवेंतो (क, ग)।

९. 'परिहिए' इतिपाठानन्तरं आदर्शेषु 'एक्को ताव एसो गमो। अन्नो वि गमो' इत्युल्लेखोस्ति। तदनन्तरं द्वितीयो गमः साक्षाल्लिखितोस्ति, तेनादर्शेषु गमद्वयस्य सम्मिश्रणं जातम्। वृत्तावपि अस्य सूचना लभ्यते, यथा—एकस्तावदेष गमः पाठोन्यो पि द्वितीयो गमो वाचनाविशेषः पुस्तकान्तरेषु दृश्यते। अस्योल्लेखस्यानुसारेण द्वितीयगमस्य पाठ इत्थं भवति—"तए णं से देवे ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए चंडाए सीहाए उद्धुयाए जयणाए छेयाए दिव्वाए देवगईए जेणामेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे जेणामेव दाहिणड्ढभरहे

सोहम्मकप्पवासी देवे महिड्ढीए[1] जं णं तुमं पोसहसालाए अट्ठमभत्तं पगिण्हित्ता[2] ण मम मणसीकरेमाणे-मणसीकरेमाणे चिट्ठसि, त एस ण देवाणुप्पिया ! अह इह हव्वमागए। सदिसाहि[3] ण देवाणुप्पिया ! किं करेमि ? किं दलयामि[4] ? किं पयच्छामि ? कि वा ते हियइच्छियं[5] ?

५८. तए ण से अभए कुमारे त पुव्वसगइय देव अतलिक्खपडिवण्ण पासित्ता हट्ठतुट्ठे पोसह पारेइ, पारेत्ता करयल[6] •परिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए° अजलिं कट्टु एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूवे अकालदोहले पाउब्भूए—धन्नाओ ण ताओ अम्मयाओ तहेव पुव्वगमेण जाव[7] वेभारगिरिकडग-पायमूल सव्वओ समता आहिंडमाणीओ-आहिंडमाणीओ दोहल विणिति। त जइ ण अहमवि मेहेसु अब्भुग्गएसु जाव[8] दोहल विणेज्जामि—त ण तुम देवाणुप्पिया ! मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूव अकालदोहलं विणेहि ॥

देवस्स अकालमेहविउव्वण-पदं

५९ तए ण से देवे अभएण कुमारेण एव वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे अभय कुमार एव वयासी—

तुम ण देवाणुप्पिया ! सुनिव्वुय-वीसत्थे अच्छाहि[9] । अह ण तव चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूव अकालदोहल[10] विणेमि त्ति कट्टु अभयस्स कुमारस्स अतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता उत्तरपुरत्थिमे ण वेभार-पव्वए वेउव्वियसमुग्घाएण समोहण्णइ, समोहणित्ता सखेज्जाइ जोयणाइ दड निसिरइ[11] जाव[12] दोच्चपि वेउव्वियसमुग्घाएण समोहण्णइ, समोहणित्ता खिप्पा-मेव सगज्जिय सविज्जुय सफुसिय पचवण्णमेहनिणाओवसोहिय दिव्व पाउससिरिं विउव्वइ, विउव्वित्ता जेणामेव[13] अभए कुमारे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता

रायगिहे नयरे पोसहसाला अभयकुमारे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अत-लिक्खपडिवन्ने दसद्धवण्णाइं सखिखिणियाइ पवर वत्थाइ परिहिए"।

वृत्तिकारेण द्वितीयगमविषये एका सूचनापि दत्तास्ति—अथ द्वितीयो गमो जीवाभिगम-सूत्रवृत्त्यनुसारेण लिखित (वृ)।

१. महड्ढिए (ख, घ), पू०—ना० १।१।५३।

२ सगिण्हित्ता (क, ख, ग)।

३ सदिसहा (क); सदिसह (घ)।

४. दलामि (ख, ग, घ)।

५ हिय° (ग)।

६. स० पा०—करयल अजलिं।

७,८. ना० १।१।३३।

९. अत्थाहि (ग, घ)।

१०. जावदोहल (क)।

११ निसरति (ख, ग, घ)।

१२. ना० १।१।५६।

१३. जेणेव (ख, ग, घ)।

अभयं कुमारं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! मए तव पियट्ठयाए 'सगज्जिया सफुसिया सविज्जुया'[1] दिव्वा पाउससिरी विउव्विया, तं विणेऊ णं देवाणुप्पिया! तव चुल्लमाउया धारिणी देवी अयमेयारूवं अकालदोहलं ।।

धारिणीए दोहद-पूरण पदं

६० तए णं से अभए कुमारे तस्स पुव्वसगइयस्स 'सोहम्मकप्पवासिस्स देवस्स'[2] अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे सयाओ भवणाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणामेव सेणिए राया तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल[3] •परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए° अंजलिं कट्टु एवं वयासी—एवं खलु ताओ! मम पुव्वसगइएणं सोहम्मकप्पवासिणा देवेणं खिप्पामेव सगज्जिया सविज्जुया (सफुसिया?) पंचवण्णमेहनिणाओवसोभिया दिव्वा पाउससिरी विउव्विया। तं विणेऊ णं मम चुल्लमाउया धारिणी देवी अकालदोहलं ।।

६१ तए णं से सेणिए राया अभयस्स कुमारस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे[4] कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो! देवाणुप्पिया! रायगिहं नगरं सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु आसित्तसित्त-सुइय-समज्जिओवलित्तं जाव[5] सुगंधवर [गंध?] गंधियं गंधवट्टिभूयं करेह य कारवेह य, एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ।।

६२ तए णं ते कोडुंबियपुरिसा[6] •सेणिएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाणहियया तमाणत्तियं° पच्चप्पिणंति ।।

६३. तए णं से सेणिए राया दोच्चंपि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! हय-गय-रह-पवरजोह[7]-कलियं चाउरंगिणिं सेणं[8] सन्नाहेह, सेयणयं च गंधहत्थिं परिकप्पेह। तेवि तहेव करेंति जाव पच्चप्पिणंति ।।

६४ तए णं से सेणिए राया जेणेव धारिणी देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता

---

१ सगज्जिय सफुसिय सविज्जुया (क, ख, ग, घ), पूर्वपक्तौ 'सफुसिय' अंतिमं पदमस्ति अत्र च 'सविज्जुया' इत्यंतिमं पदम्। कथमसौविपर्ययो जातः इति न निश्चयपूर्वकं वक्तुं शक्यते।

२ देवस्स सोहम्मकप्पवासिस्स (क, ख, ग, घ)।

३. स० पा०—करयल अंजलिं।

४ हट्ठतुट्ठ (क, ग, घ)।

५. ना० १।१।३३।

६. स० पा०—कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति।

७ जोहपवर (क, ख, ग, घ)। अष्टमाध्ययनस्य १६१ सूत्रानुसारेण असौ पाठः परिवर्तितः।

८. सेन्नं (क, ख, ग, घ)।

धारिणिं देविं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिए ! सगज्जिया[1] •सविज्जुया सफुसिया दिव्वा॰पाउससिरी पाउब्भूया । त ण तुम देवाणुप्पिए ! एय अकाल-दोहल विणेहि ॥

६५. तए ण सा धारिणी देवी सेणिएण रण्णा एव वुत्ता समाणी हट्ठतुट्ठा जेणामेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मज्जणघर अणुप्पविसइ, अणुप्प-विसित्ता अतो अतेउरसि ण्हाया कयवलिकम्मा कय-कोउय-मगल-पायच्छित्ता 'कि ते'[2] वरपायपत्तनेउर-मणिमेहल-हार-रइय-ओविय-कडग-खुड्डय-विचित्त वरवलयथभियभुया जाव[3] 'आगास-फालिय-समप्पभ'[4] असुय नियत्था[5], सेयणय गधहत्थि दुरूढा समाणी अमय-महिय-फेणपुज-सन्निगासाहि सेयचामरवाल-वीयणीहि वीइज्जमाणी-वीइज्जमाणी सपत्थिया ॥

६६ तए ण से सेणिए राया ण्हाए कयवलिकम्मे[6] •कय-कोउय-मगल-पायच्छित्ते अप्पमहग्घाभरणालकिय॰सरीरे हत्थिखधवरगए सकोरेटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण चउचामराहि वीइज्जमाणे धारिणि देविं पिट्ठओ अणुगच्छइ ॥

६७. तए ण सा धारिणी देवी सेणिएण रण्णा हत्थिखधवरगएण पिट्ठओ-पिट्ठओ समणुगम्ममाण-मग्गा हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धि सपरिवुडा महया भड-चडगर-वदपरिक्खित्ता सव्विड्ढीए सव्वज्जुईए जाव[7] दुदुभिनिग्घोसनाइयरवेण रायगिहे नयरे सिघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर[8]-•चउम्मुह॰-महापहपहेसु नागरजणेण अभिनदिज्जमाणी-अभिनदिज्जमाणी जेणामेव 'वेभारगिरि-पव्वए'[9] तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वेभारगिरि-कडग-तडपायमूले आरामेसु य 'उज्जाणेसु य'[10] काणणेसु य वणेसु य वणसडेसु य 'रुक्खेसु य'[11] 'गुच्छेसु य'[12] गुम्मेसु य लयासु य वल्लीसु य कदरासु य दरीसु य चुढीसु[13] य जूहेसु[14] य कच्छेसु य नदीसु य सगमेसु य 'विवरएसु य'[15] अच्छमाणी[16]

---

१. स० पा०—सगज्जिया जाव पाउससिरी ।

२. किं तत् 'यत् करोति' इति शेप. ।

३ ना० १।१।३३ ।

४ सप्पभ ॰फलिय॰ (क), ॰फलिहसप्पभ (ख), ॰फालिय सप्पभ (ग), ॰फालिह-सप्पभ (घ), ॰फलिह-सरिसप्पभ (१।१।३३)

५ नियच्छा (क, ग) ।

६. सं० पा०—कयवलिकम्मे जाव सरीरे ।

७. ना० १।१।३३ ।

८. स० पा०—चच्चर जाव महापहपहेसु ।

९. वेब्भार ॰(ख, ग), विब्भार॰ (घ) ।

१०. × (ख, ग) ।

११. × (ख) ।

१२. गच्छेसु य (ख); × (ग) ।

१३ चुड्डिसु (क); वाल्हिसु (ख), चोड्ढीसु (ग, घ) ।

१४. दहेसु (ख, ग, घ, वृपा) ।

१५ × (क), विरयतेसु य (ख), वियरतेसु य (ग), वियारेसु य (घ) ।

१६. अत्थमाणी (ख) ।

य पेच्छमाणी य मज्जमाणी य पत्ताणि य पुप्फाणि य फलाणि य पल्लवाणि य गिण्हमाणी य माणेमाणी य अग्घायमाणी[1] य परिभुंजेमाणी[2] य परिभाएमाणी य वेभारगिरिपायमूले 'दोहल विणेमाणी'[3] सव्वओ समता आहिंडइ ।।

६८ तए ण सा धारिणी देवी सम्माणियदोहला[4] विणीयदोहला सपुण्णदोहला[5] सपत्तदोहला[6] जाया यावि होत्था ।।

६९ तए ण सा धारिणी देवी सेयणयगधहत्थि दुरूढा[7] समाणी सेणिएण हत्थिखध-वरगएण पिट्ठओ-पिट्ठओ समणुगम्ममाण-मग्गा हय-गय[8]-•रह-पवरजोहकलियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धि सपरिवुडा महया भड-चडगर-वदपरिक्खित्ता सव्विड्ढीए सव्वज्जुईए जाव[9] दुदुभिनिग्घोसनाइय°-रवेण जेणेव रायगिहे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रायगिह नयर मज्झमज्झेण जेणामेव सए भवणे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता विउलाइ माणुस्सगाइं भोगभोगाइ[10] •पच्चणुभवमाणी° विहरइ ।।

अभएण देवस्स पडिविसज्जण-पदं

७० तए ण से अभए कुमारे जेणामेव पोसहसाला तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुव्वसगइय देव सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ।।

७१ तए ण से देवे सगज्जिय [सविज्जुय सफुसिय ?] पचवण्णमेहोवसोहिय दिव्व पाउससिरिं पडिसाहरइ, पडिसाहरित्ता जामेव दिसि[11] पाउब्भूए तामेव दिसि[12] पडिगए ।।

धारिणीए गब्भचरिया-पदं

७२ तए ण सा धारिणी देवी तसि अकालदोहलसि विणीयसि सम्माणियदोहला तस्स गब्भस्स अणुकपणट्ठाए[13] जय चिट्ठइ जय आसयइ[14] जय सुवइ, आहार पि

---

१ × (क), आग्घाएमाणी (ख)।

२. परिभुजमाणी (ख, ग)।

३ विणेमाणी (क, ख, ग), डोहल विणेमाणी (घ), वृत्तिकारेणापि 'दोहल' इति पाठो मूलतया नैव व्याख्यात । यथा—विणेमाणी त्ति—डोहल विनयती (वृ)।

४. १।१।३३ सूत्रानुसारेण 'सम्माणियदोहला' इति पाठो युज्यते, यद्यपि प्रयुक्तादर्शेपु नोपलभ्यते। क्वचित्प्रयुक्तेपु आदर्शेपु लभ्यते।

५ सपन्नडोहला (घ)।

६ सपन्नडोहला (क, ख)।

७ दुरुढा (क)।

८ स० पा०—हयगय जाव रवेण।

९. ना० १।१।३३।

१० स० पा०—भोगभोगाइ जाव विहरइ।

११. दिस (क, घ)।

१२. दिस (क, घ)।

१३. °ट्ठयाए (क)।

१४. आसति (घ)।

य णं आहारेमाणी—नाइतित्तं नाइकडुयं नाइकसायं नाइअंबिलं नाइमहुरं, जं तस्स गब्भस्स हियं मियं पत्थयं देसे य काले य आहारं आहारेमाणी, नाइचिंतं नाइसोयं नाइमोहं नाइभयं नाइपरित्तासं[1] ववगयचिंता-सोय-मोह-भय-परित्तासा उदु[2]-भज्जमाण[3]-सुहेहिं भोयण-च्छायण-गंध-मल्लालंकारेहिं तं[4] गब्भं सुहंसुहेणं परिवहइ ॥

मेहस्स जम्म-वद्धावण-पदं

७३ तए णं सा धारिणी देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण[5] य[6] राइंदियाणं वीइक्कंताणं अद्धरत्तकालसमयंसि[7] सुकुमालपाणिपायं जाव[8] सव्वंगसुंदरं दारगं पयाया ॥

७४ तए णं ताओ अंगपडियारियाओ धारिणिं देविं नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं जाव[9] सव्वंगसुंदरं दारगं पयायं पासंति, पासित्ता सिग्घं तुरियं चवलं वेइयं[10] जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सेणियं रायं जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावेत्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! धारिणी देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं जाव सव्वंगसुंदरं दारगं पयाया। तं णं अम्हे देवाणुप्पियाणं पियं निवेएमो, पियं भे[11] भवउ ॥

७५. तए णं से सेणिए राया तासिं अंगपडियारियाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे ताओ अंगपडियारियाओ महुरेहिं वयणेहिं विउलेण य पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारेणं सक्कारेइ सम्माणेइ, मत्थयधोयाओ[12] करेइ, पुत्ताणुपुत्तियं वित्तिं कप्पेइ, कप्पेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

मेहस्स जम्मुस्सवकरण-पदं

७६ तए णं से सेणिए राया [पच्चूसकालसमयंसि[13] ?] कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! रायगिहं नगरं आसिय[14]-•सम्मज्जिओवलित्तं सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु आसित्त-सित्त-सुइ-सम्मट्ठ-रत्थंतरावण-वीहियं मंचाइमंचकलियं णाणाविहराग-

---

१. × (क, ख, ग)।
२. उडु (ग)।
३. भयमाण (क, ख, घ)।
४. × (क)।
५. अद्धट्ठ ° (ग)।
६. × (ख, ग)।
७. अड्ढरत्त° (ख)। ८. ओ० सू० १४३।
९. ना० १।१।७३।
१० चेतियं (क, ग, घ)।
११. ते (क, ख, ग, घ)।
१२ मत्थाधोयाओ (क, ग)।
१३. क्वचित् प्रयुक्तादर्शेषु कोष्ठकवर्तिपाठो लभ्यते तथा १।१।२२ सूत्रेपि विद्यते, तेनात्र स्वीकृतः।
१४. सं० पा०—आसिय जाव परिगीयं।

ऊसिय-ज्झय-पडागाइपडाग-मडिय लाउल्लोइय-महिय गोसीस-सरस-रत्त-चदण-दद्दर-दिण्णपचगुलितल उवचियचदणकलसं चदणघड-सुकय-तोरण-पडिदुवारदेसभाय आसत्तोसत्तविउल-वट्ट-वग्घारिय-मल्लदाम-कलाव पचवण्ण-सरस-सुरभिमुक्क-पुप्फपुजोवयार-कलिय कालागुरु-पवर-कुदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-डज्झत-मघमघेत-गधुद्धुयाभिराम सुगधवरगधगधिय गधवट्टिभूयं नड-णटग-जल्ल-मल्ल-मुट्ठिय-वेलवग-कहकहग-पवग-लासग-आइक्खग-लख-मख- तूणइल्ल-तुववीणिय-अणेगतालायर॰परिगीय करेह, कारवेह य, चारगपरिसोहण[1] करेह, करेत्ता माणुम्माणवद्धण करेह, करेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह[2] ॥

७७ •तए ण ते कोडुवियपुरिसा सेणिएण रण्णा एव वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ-चित्त-माणदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणहियया तमाण-त्तिय॰ पच्चपिण्णति ॥

७८ तए ण से सेणिए राया अट्ठारससेणि-प्पसेणीओ सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! रायगिहे नगरे अब्भितरवाहिरिए उस्सुक[3] उक्कर अभडप्पवेस अदडिम-कुदडिमं अधरिम अधारणिज्जं अणुद्धयमुइंग अमिलायमल्लदाम गणियावरनाडइज्जकलिय अणेगतालायराणुचरिय पमुइय-पक्कीलियाभिराम जहारिह 'ठिइवडिय दसदेवसिय'[4] करेह, कारवेह य, एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह ॥

७९ तेवि तहेव[5] करेति, तहेव पच्चप्पिणति ॥

८० तए ण से सेणिए राया वाहिरियाए उवट्ठाणसालाए सीहासणवरगए पुरत्थाभि-मुहे सण्णिसण्णे 'सतिएहि य साहस्सिएहि य सयसाहस्सिएहि य दाएहि दलय-माणे दलयमाणे'[6] पडिच्छमाणे-पडिच्छमाणे एव च ण विहरइ ॥

मेहस्स नामादिसक्कार (सस्कार) करण-पदं

८१ तए ण तस्स अम्मापियरो 'पढमे दिवसे ठितिपडियं'[7] करेति, वितिए दिवसे

---

१ चारगारसोहण (क), चारगसोहण (ख, घ); चारागारपरिमोहण (ग) एकस्मिन् हस्त-लिखितवृत्त्यादर्शे 'चारगपरिशोधन' इति व्याख्यातमस्ति अपरस्मिश्च 'चारागारशोधन' इति लभ्यते ।

२ स॰ पा॰—पच्चप्पिणह जाव पच्चप्पिणति ।

३ उस्सुक्क (क, ग, घ) ।

४. ठिइवडियं (वृ), वाचनान्तरे—दसदिवसिय ठिइपडियं ।

५. × (ख, ग, घ) ।

६. सएहिं साहस्सिएहिं य सयसाहस्सिएहिं य दाएहिं भागेहिं॰ (क), ॰जाएहिं दाएहिं भागेहिं॰ (ख, घ), ॰दलमाणे २ (ग), वाचनान्तरे—शतिकांश्च इत्यादि यागान्—देवपूजा, दायान्—दानानि, भागान्—लब्ध-द्रव्यविभागान् इति (वृ) ।

७ जायकम्म (क, ख, ग, घ, वृ,), निरयाव-लियाओ १।१।६० 'ठितिपडिय च जहा मेहस्स' इति सकेतितमस्ति, तस्याधारेणासौ पाठ स्वीकृत ।

जागरियं करेति, ततिए दिवसे चंदसूरदसणियं[1] करेति, एवामेव 'निवत्ते असुइजायकम्मकरणे'[2] सपत्ते वारसाहे[3] विपुल असण-पाण-खाइम-साइम उवक्खडावेति, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परियण बल च वहवे गणनायग[4]-•दडनायग-राईसर-तलवर-माडबिय-कोडुविय-मति-महामति-गणग-दोवारिय-अमच्च-चेड-पीढमद्द-नगर-निगम-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-दूय-सधिवाले° आमतेति। तओ पच्छा ण्हाया कयवलिकम्मा कयकोउय[5]-•मगल-पायच्छित्ता° सव्वालकारविभूसिया[6] महइमहालयसि भोयणमडवसि त विपुल असण पाण खाइम साइम मित्त-नाइ[7]-•नियग-सयण-सवधि-परियणेहि बलेण च बहूहि गणनायग-दडनायग-राईसर-तलवर-माडविय-कोडुविय-मति-महामति-गणग-दोवारिय-अमच्च-चेड - पीढमद्द - नगर-निगम-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह दूय-सधिवालेहि° सद्धि आसाएमाणा 'विसाएमाणा परिभाएमाणा'[8] परिभुजेमाणा एवं च णं विहरति। जिमियभुत्तुत्तरागयावि य ण समाणा आयता चोक्खा परमसुइभूया त मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परियण बल च बहवे गणनायग जाव सधिवाले विपुलेण पुप्फ-गध-मल्लालकारेण सक्कारेति सम्माणेति, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता एवं वयासी—

जम्हा ण अम्ह इमस्स दारगस्स गब्भत्थस्स चेव समाणस्स अकालमेहेसु दोहले पाउब्भूए, त होऊ ण अम्ह दारए मेहे नामेण। तस्स दारगस्स अम्मापियरो अयमेयारूव गोण्ण गुणनिप्फण्ण नामधेज्ज करेति मेहे इ॥

---

१ पाठान्तरे तु—प्रथमदिवसे स्थितिपतिता, तृतीये चन्द्रसूरदर्शनिका, षष्ठे जागरिका (वृ)।

२ निव्वत्ते सुइ° (क, ख, ग, वृपा), निव्वत्ते असुइ° (घ)। वृत्तिकृता 'निवृत्ते—अतिक्रान्ते अशुचीना जातकर्मकरणे' इतिव्याख्यातम्, तेन तदनुसारी पाठ 'निवत्ते असुइजायकम्मकरणे' इत्येवरूप. स्यात्। यत्र 'सुइजाय°' इति पाठ. सम्मतस्तत्रैव 'निव्वत्ते' इति पाठ सङ्गच्छेत।

३ वारसाहदिवसे (क, ख, ग, घ)। वृत्तिकारेण—'वारसाहदिवसे' इति पाठ विकल्पद्वयेन व्याख्यात, यथा—वारसाहदिवसे त्ति—द्वादशाख्ये दिवसे इत्यर्थ। अथवा द्वादशानामह्ना समाहारो द्वादशाह, तस्य दिवसो येन पूर्यते (वृ)। यद्यपि वृत्तिकारेण 'वारसाहदिवसे' इति पाठो व्याख्यातस्तथाप्यस्माभि 'वारसाहे' इतिपाठ स्वीकृत, एतदर्थं द्रष्टव्यम्—ओवाइय (१४४) सूत्रस्य वारसाहे' पदस्य पादटिप्पणम्।

४. स० पा० — गणनायग जाव आमतेंति।

५ स० पा०—कयकोउय जाव सव्वालकारविभूसिया।

६ सव्वालकारभूसिया (क, ख, ग)।

७. स० पा०—मित्त-नाइ-गणनायग जाव सद्धि।

८. पडिलाहेमाणा (क), × (ग)।

मेहस्स लालणपालण-पद

८२ तए ण से मेहे कुमारे पचधाईपरिग्गहिए, [त जहा—खीरधाईए मज्जणधाईए कीलावणधाईए मडणधाईए अकधाईए][1] अण्णाहि य वहूहि—खुज्जाहिं चिलाईहिं[2] 'वामणीहिं वडभीहि वब्बरीहिं बउसीहिं[3] जोणियाहिं पल्हवियाहि ईसिणियाहिं[4] थारुगिणियाहिं[5] लासियाहि लउसियाहि दामिलीहि सिहलीहिं आरबीहि पुलिंदीहि पक्कणीहि वहलीहिं मुरुडीहिं[6] सबरीहिं पारसीहि[7]—नानादेसीहिं[8] विदेसपरिमडियाहि इगिय-चितिय-पत्थिय-वियाणियाहि सदेस-नेवत्थ-गहिय-वेसाहि निउणकुसलाहि विणीयाहिं[9], चेडियाचक्कवाल-वरिसधर-कचुइज्ज-महयरग[10]-वद-परिक्खित्ते हत्थाओ हत्थ साहरिज्जमाणे[11] अकाओ अक परिभुज्जमाणे परिगिज्जमाणे उवलालिज्जमाणे[12] रम्मसि मणिकोट्टिमतलसि परगिज्जमाणे[13] निव्वाय-निव्वाघायंसि गिरिकदरमल्लीणे व चंपगपायवे मुहसुहेण वड्ढइ[14] ॥

८३ तए ण तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो अणुपुव्वेण[15] नामकरण च पजेमणग[16] च पचंकमणग च चोलोवणय च महया-महया इड्ढी-सक्कार-समुदएण करेसु ॥

मेहस्स कलागहण-पदं

८४ तए णं त मेह कुमार अम्मापियरो साइरेगट्ठवासजायग चेव[17] सोहणसि तिहि-करण-मुहुत्तसि कलायरियस्स उवणेति ॥

---

१. असौ कोष्ठकवर्ती पाठ व्याख्याश प्रतीयते ।

२ चिलाइयाहिं (क, ख, ग, घ, रायपसेणइय सू० ८०४) ।

३ पउसियाहि (ओ० सू० ७०) ।

४ इसिणियाहिं (क, ख, ग) ।

५. थारुइणियाहिं (ओ० सू० ७०) ।

६. मुरुडीहिं (ओ० सू० ७०), मुरडीहिं (राय० सू० ८०४) ।

७ वामणि [वावणि (ख, ग)] वडभिवव्वरि-वउसिजोणियपल्हविइसिणिथारुगिणिलासिय-लउसियदमिलिसिहलिआरविपुलिंदिपक्कणि-वहलिमुरडिसवरिपारसीहिं (क, ख, ग, घ) ।

८ नानादेसी (क, ख, ग) ।

९. युक्त इति गम्यते (वृ) ।

१०. महत्तरग (घ) ।

११ साहिज्जमाणे (ख, ग, घ) ।

१२. अतोग्रे वृत्तौ पाठान्तरस्योल्लेखो विद्यते—उवनच्चिज्जमाणे २ उवगाइज्जमाणे २ उवलालिज्जमाणे २ उवगूहिज्जमाणे २ अवयासिज्जमाणे २ परिवदिज्जमाणे २ परिचुविज्जमाणे २ । द्रष्टव्यम्—(ओवाइय-सूत्रस्य परिशिष्ट पृ० १५१); रायपसेणइय सूत्र ८०४ ।

१३. परिगिज्जमाणे २ (क, ग) ।

१४. वद्धति (घ) ।

१५. अणुपुव्वि (ख) ।

१६ एवं जेमण च एव चकमणग च (ख, ग) ।

१७. अतोग्रे 'गब्भट्ठमे वासे' इति पाठो विद्यते, किन्तु एतत् पाठान्तर प्रतीयते । 'साइरेगट्ठ-

८५ तए णं से कलायरिए मेहं कुमार लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउणरुय-पज्जवसाणाओ वावत्तरिं कलाओ सुत्तओ य अत्थओ य करणओ य सेहावेइ सिक्खावेइ, त जहा—

१ लेह २ गणिय ३ रूव ४ नट्टं ५. गीय ६ वाइय ७ सरगय ८. पोक्खर-गय ९ समताल १० जूय[1] ११ जणवाय १२. पासय १३ अट्ठावय १४ पोरेकव्व १५. दगमट्टियं १६ अण्णविहिं १७ पाणविहिं १८ वत्थविहिं १९ विलेवणविहिं २० सयणविहिं २१ अज्ज २२. पहेलिय २३. मागहिय २४ गाह २५ गीइयं २६ सिलोय २७ हिरण्णजुत्ति २८ सुवण्णजुत्ति २९. चुण्णजुत्ति[2] ३०. आभरणविहिं ३१. तरुणीपडिकम्म ३२. इत्थिलक्खणं ३३ पुरिसलक्खण ३४. हयलक्खणं ३५ गयलक्खण ३६ गोणलक्खण ३७ कुक्कुडलक्खण ३८. छत्तलक्खण ३९. दडलक्खण ४० असिलक्खण ४१ मणिलक्खण ४२. कागणिलक्खण[3] ४३. वत्थुविज्ज[4] ४४ खधारमाण[5] ४५ नगरमाण[6] ४६ वूह ४७ पडिवूह ४८. चार ४९. पडिचार ५० चक्कवूह ५१ गरुलवूह ५२ सगडवूह ५३ जुद्ध ५४. निजुद्ध ५५ जुद्धाइजुद्ध ५६ अट्ठिजुद्ध ५७ मुट्ठिजुद्ध ५८ वाहुजुद्ध ५९ लयाजुद्ध ६० ईसत्थ ६१ छरुप्पवाय ६२. धणुवेय[7] ६३ हिरण्णपाग ६४ सुवण्णपाग ६५ वट्टखेड्ड[8] ६६ सुत्तखेड्ड ६७ नालियाखेड्ड ६८ पत्तच्छेज्ज ६९. कडच्छेज्ज ७० सज्जीव ७१ निज्जीव ७२ सउणरुतं ति ॥

८६ तए ण से कलायरिए मेह कुमार लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउणरुयपज्जव-साणाओ वावत्तरिं कलाओ सुत्तओ य अत्थओ य करणओ य सेहावेइ सिक्खा-वेइ, सेहावेत्ता सिक्खावेत्ता अम्मापिऊण उवणेइ ॥

८७ तए ण मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो त कलायरिय महुरेहि वयणेहिं 'विउलेण य'[9] वत्थ-गध-मल्लालकारेण सक्कारेति[10] सम्माणेति, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता विउल जीवियारिह पीइदाण दलयति, दलइत्ता पडिविसज्जेंति ॥

८८ तए ण से मेहे कुमारे वावत्तरि-कलापडिए नवगसुत्तपडिबोहिए अट्ठारस-

---

वासजायग, इति पाठस्यानन्तरमसौ पाठो नावश्यकः प्रतिभाति। ओवाइय (१४५), रायपसेणइय (८०५) सूत्रयोरपि स्वीकृतपाठ उपलभ्यते।

१. तूत (ग)।

२ तुण्णाजुत्ति (ख)।

३. कागिणी० (ग)।

४. वत्थविज्ज (क, ग)।

५. ०मारण (क)।

६. ०मावण (ख)।

७. धणुव्वेय (ख, ग)।

८. वेट्टखेड्ड (क)।

९. विउलेण (ख, घ)।

१०. हक्कारेंति (ख)।

विहिप्पगारदेसीभासाविसारए[1] गीयरई गंधव्वनट्टकुसले हयजोही गयजोही रहजोही बाहुजोही बाहुप्पमद्दी अलंभोगसमत्थे साहसिए वियालचारी जाए यावि होत्था ॥

मेहस्स पाणिग्गहण-पदं

८६ तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो मेहं कुमारं बावत्तरि-कलापंडियं जाव[2] वियालचारिं[3] जायं पासंति, पासित्ता अट्ठ पासायवडिंसए कारेंति—अब्भुग्गयमूसिय[4] पहसिए विव मणि-कणग-रयण-भत्तिचित्ते वाउद्धुय-विजय-वेजयंती-पडाग-छत्ताइच्छत्तकलिए तुंगे गगणतलमभिलंघमाणसिहरे जालंतर-रयण[5] पंजरुम्मिलिए[6] व्व मणिकणगथूभियाए वियसिय-सयवत्त-पुंडरीए तिलयरयणद्धचंदच्चिए[7] नाणामणिमयदामालंकिए अंतो बहिं च सण्हे तवणिज्ज-रुइल[8]-वालुया-पत्थरे सुहफासे सस्सिरीयरूवे पासाईए[9] •दरिसणिज्जे अभिरूवे° पडिरूवे।

एगं च णं महं भवणं कारेंति—अणेगखंभसयसन्निविट्ठं लीलट्ठियसालभंजियागं अब्भुग्गयसुकयवइरवेइयातोरण[10]-वररइयसालभंजिय[11]-सुसिलिट्ठ - विसिट्ठ-लट्ठ-संठिय-पसत्थ-वेरुलियखंभ-नाणामणिकणगरयण-खचियउज्जल बहुसम-सुविभत्त-निचियरमणिज्जभूमिभागं ईहामिय[12]-•उसभ-तुरय-नर-मगर-विहग-वालग-किन्नर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलय°-भत्तिचित्तं खंभुग्गयवयरवेइ-यापरिगयाभिरामं विज्जाहर-जमल-जुयल-जंतजुत्तं पिव अच्चीसहस्समालणीयं[13] रूवगसहस्सकलियं भिसमाणं[14] भिब्भिसमाणं चक्खुल्लोयणलेसं[15] सुहफासं सस्सिरीयरूवं कंचणमणिरयणथूभियागं नाणाविह-पंचवण्ण-घंटापडाग-परिमंडि-

---

१. अट्ठारसविह° (ख), अट्ठारसदेसीभासा° (ओ० सू० १४८), अट्ठारसविहदेसिप्पगार-भासा° (राय° सू० ८०६)। अष्टादश-विधे प्रकारा प्रवृत्तिप्रकारा अष्टादशभिर्वा विधिभिर्भेद प्रचार प्रवृत्तिर्यस्या (वृ)।

२ ना० १।१।८८।

३ वियालचारी (क)।

४ अत्र च द्वितीयाबहुवचनलोपो दृश्य (वृ)।

५ द्वितीयाबहुवचनलोपो दृश्य (वृ)।

६ पंजरुम्मिल्लिय (ख, ग)।

७. °यदच्चिए (क, ख, ग); °चंदचित्ते (वृपा), °चंदचित्ता (राय० सू० १३७)।

८ रुइर (ग)।

९. स० पा०—पासाईए जाव पडिरूवे।

१०. °वतिरवेतिया° (ग); °वरवइरवेइया (राय० सू० १७)।

११ सालभंजिया (क, ख, घ)।

१२ स० पा०—ईहामिय जाव भत्तिचित्त।

१३. °मीण (क, ख, ग)।

१४. °मालिणीय (ख)।

१५ °लेस्स (क, ग)।

यग्गसिहरं धवल-मिरिचिकवय विणिम्मुयतं लाउल्लोइयमहियं जाव[1] गधवट्टिभूय पासाईय दरिसणिज्ज अभिरूव पडिरूव ॥

९०. तए ण तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो मेह कुमार सोहणसि तिहि-करण-नक्खत्त-मुहुत्तंसि सरिसियाण सरिव्वयाण सरित्तयाण सरिसलावण्ण-रूव-जोव्वण-गुणोववेयाण सरिसएहिंतो रायकुलेहिंतो आणिल्लियाण[2] पसाहणट्ठग-अविहववहु[3]-ओवयण-मगलमुजपिएहिं अट्ठहिं रायवरकन्नाहिं सद्धि एगदिवसेण पाणि गिण्हाविसु ॥

पीइदाण-पदं

९१ तए ण तस्स मेहस्स अम्मापियरो इम एयारूवं पीइदाणं दलयति—अट्ठ हिरण्ण-कोडीओ अट्ठ सुवण्णकोडीओ गाहाणुसारेण भाणियव्व जाव[4] पेसणकारियाओ,

---

१. ना० १।१।७६ ।

२. आणतिल्लियाणं (क), आणियल्लियाण (ग)।

३ अविधव० (क) ।

४ मूलपाठे यासा गाथाना समर्पणमस्ति ता वृत्त्यनुसारेणेमा —

१ अट्ठहिरण्णसुवण्णय-कोडीओ मउड-कुडलाहारा ।
अट्ठद्धहार-एक्कावलीओ मुत्तावली अट्ठ ॥

२ कणगावलि-रयणावलि-कडगजुगा तुडिय-खोम-जुगा ।
वडजुग-पट्टजुगाइ-दुकुल्लजुगलाय अट्ठट्ठा ॥

३ सिरि-हिरि-धिइ-कित्तीओ बुद्धी लच्छी य होति अट्ठट्ठा ।
नदा भद्दा य तला य झय-वय नाडाइ आसे य ॥

४. हत्थी जाणा जुग्गा, सीया तह सदमाणि-गिल्लीओ ।
थिल्ली य वियडजाणा, रह-गामा दास-दासीओ ॥
वाचनान्तरे —रथानन्तरमश्वा हस्तिनश्चाधीयन्ते (वृ) ।

५ किंकर-कचुइ-मयहर-वरिसधर-तिविह दीव-थाले य ।
पाई-थासग - पल्लग-कइविय - अवएडय - अवक्का ॥

६ पावीढाभिमिय-करोडियाओ पल्लकए य पडिसिज्जा ।
हसाईहिं विसिट्ठा, आसण-भेया उ अट्ठट्ठ ॥

७ हसे कोंचे गरुडे, उण्णय-पणए य दीह-भद्दे य ।
पक्खे मयरे पउमे, होइ दिसासोत्थि एक्कारे ॥

८ तेल्ले कोट्ठ-समुग्गा, पत्ते चोए तगर एला य ।
हरियाले हिंगुलए, मणोसिला सासवसमुग्गे ॥

९. खुज्जा-चिलाइ-वामणि-वडभीओ वव्वरि-वउसियाओ ।
जोणिय-पल्हवियाओ, इसिणीया थारुइणिया य ॥

अण्ण च विपुलं धण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-सख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-सत-सार-सावएज्ज अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकाम दाउ पकामं भोत्तु पकाम परिभाएउ[1] ॥

९२ तए ण से मेहे कुमारे एगमेगाए भारियाए एगमेगं हिरण्णकोडिं दलयइ, जाव[2] एगमेग पेसणकारिं दलयइ, अण्ण च विउल धण-कणग[3]-°रयण-मणि-मोत्तिय-सख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-सत-सार-सावएज्जं अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवसाओ पकाम दाउ पकाम भोत्तु पकाम° परिभाएउ दलयइ ॥

९३ तए ण से मेहे कुमारे उप्पि पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइगमत्थएहि वरतरुणि-सपउत्तेहि वत्तीसइवद्धएहिं[4] नाडएहि 'उवगिज्जमाणे-उवगिज्जमाणे'[5] उवलालि-ज्जमाणे-उवलालिज्जमाणे [इट्ठे][6] सद्द-फरिस-रस-रूव-गधे विउले माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरइ ॥

महावीरसमवसरण-पदं

९४ तेण कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणु-गाम दूइज्जमाणे सुहसुहेण विहरमाणे जेणामेव रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए[7] °तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे° विहरइ ॥

---

१० लासिय-लउसिय-दमिणी, सीहलि तह आरवी पुलिंदी य ।
पक्कणि-वहलि-मुरुडी, सवरीओ पारसीओ य ॥
११ छत्तधरा चेडीओ, चामरधर-तालयटयधरीओ ।
सकरोडियाधरीओ, खीराई पच धाईओ ॥
१२. अट्ठगमद्दियाओ, उम्मद्दिग-ण्हविग-मडियाओ य ।
वण्णय-चुण्णय-पीसिय-कीलाकारी य दवगारी ॥
१३ उत्थावियाओ तह णाडइल्ल-कोडुविणी-महाणसिणी ।
भडारी अब्भ (उब्भ) धारिणि, पुप्फधरि पाणियधरी य ॥
१४. वलिकारि य सेज्जाकारियाओ अब्भतरीओ वाहरिया ।
पडिहारी मालारी, पेसणकारीओ अट्ठट्ठ ॥
भगवती (११।१५९) सूत्रे क्वचित् केचित् पाठभेदा अपि लभ्यते ।

१. भाएउ (ख, ग) ।
२ ना० १।१।९१ ।
३. स० पा०—धण-कणग जाव परिभाएउं ।
४. °वद्धेहिं (क), वत्तीसनिवद्धेहिं (ग) ।
५ उवणच्चिज्जमाणे उवगाइज्जमाणे (राय० सू० ७१०) ।
६. एतत् पद रायपसेणइय (७१०) सूत्रे विद्यते, अत्रापि युज्यते ।
७. स० पा०—चेइए जाव विहरइ ।

मेहस्स जिज्ञासा-पदं

६५. तए णं रायगिहे नयरे सिंघाडग-[1]°तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु°-महया जणसद्दे इ वा जाव[2] बहवे उग्गा भोगा [०][3] रायगिहस्स नगरस्स मज्झंमज्झेणं एगदिसिं एगाभिमुहा निग्गच्छंति। इमं च णं मेहे कुमारे उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं जाव[4] माणुस्सए कामभोगे भुंजमाणे रायमग्गं च 'ओलोएमाणे-ओलोएमाणे'[5] एवं च णं विहरइ॥

६६. तए णं से मेहे कुमारे ते बहवे उग्गे भोगे जाव[6] एगदिसाभिमुहे निग्गच्छमाणे पासइ, पासित्ता कंचुइज्जपुरिसं[7] सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—किण्णं[8] भो देवाणुप्पिया! अज्ज रायगिहे नगरे इंदमहे इ वा खंदमहे इ वा एवं—रुद्द-सिव-वेसमण-नाग-जक्ख-भूय-नई-तलाय-रुक्ख-चेइय-पव्वयमहे इ वा उज्जाण-गिरिजत्ता इ वा? जओ णं बहवे उग्गा भोगा जाव एगदिसिं एगाभिमुहा निग्गच्छंति॥

कंचुइज्जपुरिसस्स निवेदण-पदं

६७. तए णं से कंचुइज्जपुरिसे समणस्स भगवओ महावीरस्स गहियागमणपवित्तीए मेहं कुमारं एवं वयासी—नो खलु देवाणुप्पिया! अज्ज रायगिहे नयरे इंदमहे इ वा जाव[9] गिरिजत्ता इ वा जं णं एए उग्गा भोगा जाव[10] एगदिसिं एगाभिमुहा निग्गच्छंति। एवं खलु देवाणुप्पिया! समणे भगवं महावीरे आइगरे तित्थगरे[11] इहमागए इहं संपत्ते इह समोसढे इहं चेव रायगिहे नगरे गुणसिलए चेइए अहापडिरूवं[12] °ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ॥

मेहस्स भगवओ समीवे गमण-पदं

६८. तए णं से मेहे कुमारे कंचुइज्जपुरिसस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह।
तहत्ति उवणेंति॥

---

१. सं० पा०—सिंघाडग जाव महया।
२. ओ० सू० ५२।
३. जाव (क, ख, ग, घ)।
४. ना० १।१।९३।
५. उवलोएमाणे २ (ग)।
६. ओ० सू० ५२।
७. कंचुइ-पुरिसं (राय० सू० ६८८)।
८. किं णं (क, ख)।
९. ना० १।१।९६।
१०. ओ० सू० ५२।
११. तित्थकरे (ख)।
१२. सं० पा०—अहापडिरूवं जाव विहरइ।

९९ तए ण से मेहे ण्हाए जाव[1] सव्वालकारविभूसिए चाउग्घंटं आसरहं दुरूढे समाणे सकोरटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण महया भड-चडगर[2]-वंद-परियाल-सपरिवुडे रायगिहस्स नयरस्स मज्भमज्भेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव गुणसिलए चेइए तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवग्रो महावीरस्स छत्ताइच्छत्त पडागाइपडागं विज्जाहर-चारणे जभए य देवे ग्रोवयमाणे उप्पयमाणे पासइ, पासित्ता चाउग्घटाग्रो ग्रासरहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता समण भगव महावीर पचविहेण ग्रभिगमेण ग्रभिगच्छइ।
[त जहा—१. सचित्ताण दव्वाण विउसरणयाए[3] २ ग्रचित्ताण दव्वाण ग्रविउसरणयाए ३. एगसाडिय[4]-उत्तरासगकरणेण ४ चक्खुफासे ग्रजलिपग्गहेण ५ मणसो एगत्तीकरणेण[5]][6]। जेणामेव समणे भगव महावीरे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो ग्रायाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता समणस्स भगवग्रो महावीरस्स नच्चासन्ने नाइदूरे सुस्सूसमाणे नमसमाणे पजलिउडे ग्रभिमुहे विणएणं पज्जुवासइ॥

धम्मदेसणा-पदं

१०० तए ण समणे भगव महावीरे मेहस्स कुमारस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए मज्भगए विचित्त धम्ममाइक्खइ—
जह जीवा वज्भति, मुच्चति जहा य सकिलिस्सति। धम्मकहा भाणियव्वा जाव[7] परिसा पडिगया॥

मेहस्स पव्वज्जासंकप्प-पदं

१०१ तए ण से मेहे कुमारे समणस्स भगवग्रो महावीरस्स ग्रतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे समण भगव महावीरं तिक्खुत्तो ग्रायाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—
सद्दहामि ण भते! निग्गथ पावयण।
पत्तियामि[8] °ण भते! निग्गथ पावयण।
रोएमि ण भते! निग्गथ पावयण।°
ग्रब्भुट्ठेमि ण भते! निग्गथ पावयणं।

---

१. ना० १।१।८१।
२. चउगर-रह-पहकर (राय० सू० ६८३)।
३ विग्रोसरणयाए (वृपा)।
४. एगल्लसाडिय (क)।
५. एगत्तिभावेण (क, वृपा)।
६. असौ कोष्ठकवर्ती पाठ व्याख्याश प्रतीयते।
७. ओ० सू० ७१-७९।
८. स० पा०—एवं पत्तियामि ण रोएमि ण।

एयमेय भंते ! तहमेय भंते ! अवितहमेय भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छिय-मेय भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेय भंते ! से 'जहेय तुब्भे वयह'[1]। नवरि[2] देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि। तओ पच्छा मुडे भवित्ता ण अगाराओ अणगारिय पव्वइस्सामि।

अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिवध करेहि[3]॥

मेहस्स अम्मापिऊणं निवेदण-पदं

१०२ तए ण से मेहे कुमारे समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदिता नमसित्ता जेणामेव चाउग्घटे आसरहे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घट आसरह दुरूहइ, महया भड-चडगर-पहकरेण रायगिहस्स नगरस्स मज्झमज्झेण जेणामेव सए भवणे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घटाओ आसरहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणामेव अम्मापियरो तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अम्मापिऊणं पायवडणं करेइ, करेत्ता एव वयासी—एव खलु अम्मयाओ ! मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्मे निसते, से वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए॥

१०३ तए ण तस्स मेहस्स अम्मापियरो एव वयासी—धन्नोसि तुम जाया ! सपुण्णो सि तुम जाया !

कयत्थो सि तुमं जाया ! कयलक्खणो सि तुम जाया !

जन्न तुमे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्मे निसते, से वि य ते धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए॥

१०४ तए ण से मेहे कुमारे अम्मापियरो दोच्चपि[4] एवं वयासी—एव खलु अम्मयाओ ! मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्मे निसते, से वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए। त इच्छामि ण अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए मुडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए॥

धारिणीए सोगाकुलदसा-पद

१०५ तए ण सा धारिणी देवी त अणिट्ठ अकंत अप्पियं अमणुण्ण अमणाम असुय-

---

१ जहेव त तुब्भे वयह ज (क, ख, ग, घ), असौ पाठ सर्वासु प्रतिपु विद्यते, तथाप्यत्र 'उपासकदशा' (७।३७) नुसारी पाठ स्वीकृत। आदर्शगतपाठापेक्षया तत्रस्थपाठ समीचीन. प्रतिभाति। प्रस्तुतादर्शेपु लिपिदोषेण परिवर्तनस्य सभावना स्यादिति नासौ स्वीकारोन्यथात्व भजते।

२. नवर (घ)।

३. × (क, ख, ग)।

४. दोच्चपि तच्चपि (ख, घ)।

पुव्वं फरुस[1] गिरं सोच्चा निसम्म इमेणं एयारूवेणं मणोमाणसिएणं महया पुत्तदुक्खेण अभिभूया समाणी सेयागयरोमकूवपगलत-चिलिणगाया[2] सोयभर-पवेवियंगी नित्तेया दीण-विमण-वयणा करयलमलिय व्व कमलमाला तक्खणओ-लुग्गदुब्बलसरीर-लावण्णसुन्न-निच्छाय-गयसिरीया पसिढिलभूसण-पडंतखुम्मिय-सचुण्णियधवलवलय[3]-पब्भट्ठउत्तरिज्जा सूमाल[4]-विकिण्ण-केसहत्था मुच्छावस-नट्ठचेय-गरुई[5] परसुनियत्त व्व चंपगलया निव्वत्तमहे व्व[6] इंदलट्ठी विमुक्क-संधिबंधणा कोट्टिमतलंसि सव्वंगेहिं धसत्ति पडिया ॥

धारिणीए मेहस्स य परिसंवाद-पदं

१०६ तए णं सा धारिणी देवी ससंभमोवत्तियाए तुरियं कंचणभिंगारमुहविणिग्गय-सीयलजलविमलधाराए परिसिंचमाण[7]-निव्वावियगायलट्ठी उक्खेवय[8]-तालविंट-वीयणग-जणियवाएणं सफुसिएणं अंतेउर-परिजणेणं[9] आसासिया समाणी मुत्ता-वलि-सन्निगास-पवडंत[10]-अंसुधाराहिं सिंचमाणी पओहरे, कलुण-विमण-दीणा रोयमाणी कंदमाणी तिप्पमाणी सोयमाणी विलवमाणी मेहं कुमारं एवं वयासी—

तुमं सि णं जाया! अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे[11] वेसा-सिए सम्मए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे रयणे रयणभूए जीविय-उस्सा-सिए[12] 'हियय-णंदि-जणणे'[13] 'उंबरपुप्फं व'[14] दुल्लहे सवणयाए, किमंग पुण पासण-याए? नो खलु जाया! अम्हे इच्छामो खणमवि विप्पओगं सहित्तए। तं भुंजाहि ताव जाया! विपुले माणुस्सए कामभोगे जाव ताव वयं जीवामो। तओ पच्छा अम्हेहिं कालगएहिं परिणयवए वड्ढिय-कुलवंसतंतु-कज्जम्मि निरावयक्खे[15] समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्ससि ॥

---

१ परुस (क)।
२. विलीण० (क, ख, ग, घ)।
३ ०खुण्णिय० (भ० ९।१६८)।
४ सुकुमाल (क, घ)।
५ गुरुइ (ग)।
६. व (ग)।
७. परिसिंचमाणा (घ)।
८. उक्खेवण (क, ख)।
९ परियणेणं (ख, ग, घ)।
१०. पडंत (क)।
११ धिज्जे (ग); वेज्जे (घ); पेज्जे (ओ० सू० ११७)।
१२. ०उस्सासए (क, ख, ग); वाचनान्तरे—जीविउस्सविए (वृ)।
१३. हिययाणंदजणणे (क, ख, वृ), एकस्यां हस्त-लिखितवृत्तावपि 'हृदयनंदिजनन.' इति लिखितमस्ति।
१४. ०पुप्फमिव (ख)।
१५. निरवयक्खे (घ)।

१०७. तए णं से मेहे कुमारे अम्मापिऊहिं एवं वुत्ते समाणे अम्मापियरो एवं वयासी—तहेव णं तं अम्मो! जहेव णं तुब्भे ममं एवं वयह—"तुमं सि णं जाया! अम्हं एगे पुत्ते [1]इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे रयणे रयणभूए जीविय-उस्सासिए हियय-णंदि-जणणे उंबरपुप्फं व दुल्लहे सवणयाए, किमंग पुण पासणयाए? नो खलु जाया! अम्हे इच्छामो खणमवि विप्पओगं सहित्तए। तं भुंजाहि ताव जाया! विपुले माणुस्सए कामभोगे जाव ताव वयं जीवामो। तओ पच्छा, अम्हेहिं कालगएहिं परिणयवए वड्ढिय-कुलवसंतंतु-कज्जम्मि निरावयक्खे[2] समणस्स भगवओ महा-वीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइस्ससि।"

एवं खलु अम्मयाओ! माणुस्सए भवे अधुवे अणितिए[3] असासए वसणसओवद्दवाभिभूते विज्जुलयाचंचले अणिच्चे जलबुब्बुयसमाणे कुसग्गजलबिंदुसन्निभे संझब्भरागसरिसे सुविणदंसणोवमे[4] सडण-पडण-विद्धंसण-धम्मे पच्छा पुरं च णं अवस्सविप्पजहणिज्जे। से के णं जाणइ अम्मयाओ! के पुव्विं गमणाए के पच्छा गमणाए? तं इच्छामि णं अम्मयाओ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स[5] •भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए॥

१०८ तए णं तं मेहं कुमारं अम्मापियरो एवं वयासी—'इमाओ ते जाया! सरिसियाओ सरित्तयाओ सरिव्वयाओ सरिसलावण्ण-रूव-जोव्वण-गुणोववेयाओ सरिसेहिंतो रायकुलेहिंतो आणिल्लियाओ[6] भारियाओ[7]। तं भुंजाहि णं जाया! एयाहिं सद्धिं विउले माणुस्सए कामभोगे। पच्छा[8] भुत्तभोगे समणस्स[9] •भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइस्ससि॥

---

१. सं० पा०—तं चेव जाव निरावयक्खे समणस्स जाव पव्वइस्ससि।

२, निरवक्खे (क, ग); निरावेक्खे (ख), निरवयक्खे (घ)।

३ अणिइए (क), अणितिते (ग), अणियए (घ, वृ)।

४. सुविणयदंस° (क), सुविणगदंस° (घ)।

५ सं० पा०—समणस्स जाव पव्वइत्तए।

६ आणिइल्लियाओ (ख), आणियल्लियाओ (ग, घ)।

७. वाचनान्तरे मेघकुमारभार्यावर्णकमेवमुपलभ्यते—इमाओ ते जाया विपुलकुलबालियाओ कला-कुसल-सव्वकाललालिय-सुहोइयाओ मद्दवगुण-जुत्त-निउणविणओवयार-पंडिय-वियक्खणाओ मंजुलमियमहुरभणिय-हसिय-विपेक्खिय-गइ-विलास-चेट्ठियविसारयाओ अविकलकुलसील-सालिणीओ विसुद्ध कुलवंससंताणतंतुवद्धण-पगब्भउब्भवप्पभावणीओ मणोणुकूलहियय-इच्छियाओ अट्ठ तुज्झ गुणवल्लहाओ भज्जाओ उत्तमाओ णिच्चं भावाणुरत्तसव्वंगसुंदरीओ (वृ)।

८. तओ पच्छा (क, घ), पच्छा तु (ख)।

९. सं०पा०—समणस्स जाव पव्वइस्ससि।

१०९. तए णं से मेहे कुमारे अम्मापियरं एवं वयासी—तहेव णं तं अम्मयाओ ! जं णं तुब्भे ममं एवं वयह[1]—"इमाओ ते जाया ! सरिसियाओ[2] °सरित्तयाओ सरिव्वयाओ सरिसलावण्ण-रूव-जोव्वण-गुणोववेयाओ सरिसेहितो रायकुलेहितो आणिल्लियाओ भारियाओ। तं भुंजाहि णं जाया ! एयाहिं सद्धिं विउले माणुस्सए कामभोगे। पच्छा भुत्तभोगे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइस्ससि।"

एवं खलु अम्मयाओ ! माणुस्सगा कामभोगा असुई[3] वंतासवा पित्तासवा खेलासवा सुक्कासवा सोणियासवा 'दुरुय-उस्सास'[4]-नीसासा दुरुय-मुत्त-पुरीस-पूय-बहुपडिपुण्णा उच्चार-पासवण-खेल[5]-सिंघाणग-वंत-पित्त-सुक्क-सोणियसंभवा अधुवा अणितिया[7] असासया सडण-पडण-विद्धंसणधम्मा पच्छा पुरं च णं अवस्सविप्पजहणिज्जा।

से के णं जाणइ अम्मयाओ[8] ! °के पुव्विं गमणाए के पच्छा गमणाए ? तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए॥

११०. तए णं तं मेहं कुमारं अम्मापियरो एवं वयासी—इमे यं[9] ते जाया ! अज्जय-पज्जय-पिउपज्जयागए सुबहू हिरण्णे य सुवण्णे य कंसे य दूसे य मणि-मोत्तिय[10]-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संतसार[11]-सावएज्जे य अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पगामं दाउं पगामं भोत्तुं पगामं परिभाएउं। तं अणुहोही[12] ताव[13] जाया। विपुलं माणुस्सगं इड्ढिसक्कारसमुदयं। तओ पच्छा अणुभूयकल्लाणे

---

१. वयहा (ग)।
२. सं० पा०—सरिसियाओ जाव समणस्स पव्वइस्ससि।
३ असुइ (ख, घ), असुती (ग), अतोग्रे सर्वास्वपि प्रतिषु 'असासया' इति पाठो विद्यते किन्तु वृत्तौ नास्ति स व्याख्यातः तथा प्रस्तुतपाठक्रम एव 'अणितिया असासया' इति पाठो विद्यते, तेन नासावत्र गृहीतः।
४ दुरुस्सास (क, ख, ग, घ) एतत् पदमत्र वृत्तौ नास्ति व्याख्यातम्। अष्टमाध्ययनस्य १८० सूत्रस्य वृत्तौ व्याख्यातमस्ति, यथा—दुरूपो विरूपो उच्छ्वासनिःश्वासो यस्य (वृ)। तदाधारेणास्मा पाठः स्वीकृतः।
५. मुखसुखोच्चारणार्थं 'दुरुव' शब्दस्य 'दुरुय' मिति रूपं कृतं संभाव्यते, अथवा दुरूपार्थवाची देशीशब्दोसौ स्यात् ? वृत्तौ 'दुरुय' शब्दस्य 'दुरूप' इत्यर्थोस्ति कृतः।
६. खेल जल्ल (घ)।
७ अणियता (ग)।
८. सं० पा०—अम्मयाओ जाव पव्वइत्तए।
९. तं (क, ख, ग)।
१० मोत्तिए य (ख)।
११. ततसार (घ)।
१२ अणुहोहि ति (ख, घ), अणुहोहि (ग)
१३ ताव जाव (ख)।

समणस्स भगवओ महावीरस्स[1] •अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय° पव्वइस्ससि ॥

१११ तए ण से मेहे कुमारे अम्मापियर[2] एव वयासी— तहेव ण त अम्मयाओ ! ज ण तुब्भे मम एव वयह—"इमे ते जाया ! अज्जग-पज्जग[3]-•पिउपज्जयागए सुबहू हिरण्णे य सुवण्णे य कसे य दूसे य मणि-मोत्तिय-सख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-सतसार-सावएज्जे य अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवसाओ पगाम दाउ पगाम भोत्तु पगाम परिभाएउ । त अणुहोही ताव जाया ! विपुल माणुस्सग इड्ढि-सक्कारसमुदय । तओ पच्छा अणुभूयकल्लाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय° पव्वइस्ससि ।"

एव खलु अम्मयाओ ! हिरण्णे य जाव सावएज्जे य अग्गिसाहिए चोरसाहिए रायसाहिए दाइयसाहिए[4] मच्चुसाहिए, अग्गिसामण्णे[5] •चोरसामण्णे रायसामण्णे दाइयसामण्णे° मच्चुसामण्णे सडण-पडण-विद्धसणधम्मे पच्छा पुर च ण अवस्सविप्पजहणिज्जे । से के णं जाणइ अम्मयाओ ! के[6] •पुव्वि गमणाए के पच्छा° गमणाए ? त इच्छामि ण[7] •अम्मयाओ ! तुब्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए मुडे भवित्ता ण अगाराओ अण-गारिय° पव्वइत्तए ॥

११२. तए ण तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो जाहे नो सचाएति मेह कुमार बहूहि विसयाणुलोमाहि आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्ण-वणाहि य आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा सण्णवित्तए वा विण्णवित्तए वा ताहे विसयपडिकूलाहि सजमभउव्वेयकारियाहि पण्णवणाहि पण्णवेमाणा एव वयासी— एस ण जाया ! निग्गथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे केवलिए पडिपुण्णे नेयाउए ससुद्धे सल्लगत्तणे सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे निज्जाणमग्गे निव्वाणमग्गे सव्वदुक्ख-प्पहीणमग्गे, अहीव एगतदिट्ठिए[8], खुरो इव एगतधाराए[9], लोहमया इव जवा चावेयव्वा, वालुयाकवले इव निरस्साए, गगा इव महानई पडिसोयगमणाए, महासमुद्दो इव भुयाहि दुत्तरे, तिक्ख कमियव्व[10], गरुअ लबेयव्व, असिधारव्वय[11] चरियव्वं । नो[12] खलु कप्पइ जाया ! समणाण निग्गथाण आहाकम्मिए वा

---

१ स० पा०—महावीरस्स जाव पव्वइस्ससि ।
२. अम्मापियरो (क, ख, ग, घ) ।
३ स० पा०—पज्जग जाव तओ पच्छा अणु-भूयकल्लाणे पव्वइस्ससि ।
४. दाविय° (क) ।
५. स० पा०—अग्गिसामण्णे जाव मच्चुसामण्णे ।
६ स० पा०—के जाव गमणाए ।
७. स० पा०—त इच्छामि ण जाव पव्वइत्तए ।
८. एगतदिट्ठीए (घ) ।
९. एगधाराए (वृ), एगंतधाराए (वृपा) ।
१० चकमियव्व (क) ।
११. असिधारावय (क, ग, घ) ।
१२. नो य (ख, घ) ।

उद्देसिए वा कीयगडे वा ठविए वा रइए वा दुब्भिक्खभत्ते वा कतारभत्ते वा वद्दलियाभत्ते वा गिलाणभत्ते वा मूलभोयणे वा कदभोयणे वा फलभोयणे वा वीयभोयणे वा हरियभोयणे वा भोत्तए वा पायए वा ।

तुम च ण जाया ! सुहसमुचिए[1] नो चेव ण दुहसमुचिए[2], नाल सीय नाल उण्ह नाल खुह नाल पिवास नाल वाइय-पित्तिय-सिभिय-सन्निवाइए[3] विविहे रोगायके, उच्चावए गामकटए, वावीस परीसहोवसग्गे उदिण्णे सम्म अहियासित्तए । भुजाहि ताव जाया ! माणुस्सए कामभोगे । तओ पच्छा भुत्तभोगी समणस्स[4] •भगवओ महावीरस्स अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय° पव्वइस्ससि ।।

११३ तए ण से मेहे कुमारे अम्मापिऊहि एव वुत्ते समाणे अम्मापियर एव वयासी—तहेव ण त अम्मयाओ[5] ! ज ण तुब्भे मम एव वयह—"एस ण जाया ! निग्गथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे[6] •केवलिए पडिपुण्णे नेयाउए ससुद्धे सल्लगत्तणे सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे निज्जाणमग्गे निव्वाणमग्गे सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे, अहीव एगतदिट्ठिए, खुरो इव एगतधाराए, लोहमया इव जवा चावेयव्वा, वालुयाकवले इव निरस्साए, गगा इव महानई पडिसोयगमणाए, महासमुद्दो इव भुयाहि दुत्तरे, तिक्ख कमियव्व, गरुअ लवेयव्व, असिधारव्वय चरियव्व । नो खलु कप्पइ जाया ! समणाण निग्गथाण आहाकम्मिए वा उद्देसिए वा कीयगडे वा ठविए वा रइए वा दुब्भिक्खभत्ते वा कतारभत्ते वा वद्दलियाभत्ते वा गिलाणभत्ते वा मूलभोयणे वा कदभोयणे वा फलभोयणे वा वीयभोयणे वा हरियभोयणे वा भोत्तए वा पायए वा ।

तुम च ण जाया ! सुहसमुचिए नो चेव ण दुहसमुचिए, नाल सीय नाल उण्ह नाल खुह नाल पिवास नाल वाइय-पित्तिय-सिभिय-सन्निवाइए विविहे रोगायके, उच्चावए गामकटए वावीस परीसहोवसग्गे उदिण्णे सम्म अहियासित्तए । भुजाहि ताव जाया ! माणुस्सए कामभोगे । तओ पच्छा भुत्तभोगी समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय° पव्वइस्ससि ।" एव खलु अम्मयाओ ! निग्गथे पावयणे कीवाण कायराण कापुरिसाण इहलोगपडिवद्धाण परलोगनिप्पिवासाण दुरणुचरे पाययजणस्स, नो चेव ण धीरस्स[7] । निच्छियववसियस्स एत्थ कि दुक्कर करणयाए ?

---

१. °नमुच्चिए (क, ग) ।
२ °समुच्चिए (घ) ।
३. सन्निवाइय (ख, ग, घ) ।
४. स० पा०—समणस्स जाव पव्वइस्ससि ।
५ अम्मताओ (ख, ग) ।
६ स० पा०—अणुत्तरे पुणरवि त चेव जाव तओ पच्छा भुत्तभोगी समणस्स भगवओ जाव पव्वइस्ससि ।
७. वीरस्स (ख, ग) ।

तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ[1] •महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता ण अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए ॥

मेहस्स एगदिवसरज्ज-पद

११४. तए णं तं मेह कुमार अम्मापियरो जाहे नो संचाएंति बहूहिं विसयाणुलोमाहि य विसयपडिकूलाहि य आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा सण्णवित्तए वा विण्णवित्तए वा ताहे अकामकाइ चेव मेह कुमार एव वयासी—इच्छामो ताव जाया ! एगदिवसमवि ते रायसिरिं पासित्तए ॥

११५. तए ण से मेहे कुमारे अम्मापियरमणुवत्तमाणे[2] तुसिणीए संचिट्ठइ ॥

११६ तए ण से सेणिए राया कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! मेहस्स कुमारस्स महत्थ महग्घ महरिह विउल रायाभिसेय उवट्ठवेह[3] ॥

११७ तए ण ते कोडुवियपुरिसा[4] •मेहस्स कुमारस्स महत्थ महग्घ महरिह विउल रायाभिसेय° उवट्ठवेंति ॥

११८ तए ण से सेणिए राया वहूहिं गणनायगेहि य जाव[5] सधिवालेहि य सद्धिं सपरिवुडे मेह कुमार अट्ठसएण सोवण्णियाणं कलसाण एव—रुप्पमयाण कलसाण मणिमयाण कलसाण सुवण्णरुप्पमयाण कलसाण, सुवण्णमणिमयाण कलसाण रुप्पमणिमयाण कलसाण सुवण्णरुप्पमणिमयाण कलसाण, भोमेज्जाण कलसाणं सव्वोदएहि सव्वमट्टियाहिं सव्वपुप्फेहि सव्वगधेहि सव्वमल्लेहि सव्वोसहीहिं[6] सिद्धत्थएहि य सव्विड्ढीए सव्वज्जुईए सव्ववलेण जाव[7] दुदुभि-निग्घोस-णाइयरवेण महया-महया रायाभिसेएण अभिसिंचइ, अभिसिंचित्ता करयल[8]•परिग्गहिय दसणह सिरसावत्त मत्थए अंजलिं° कट्टु एव वयासी—
'जय-जय नंदा ! जय-जय भद्दा !
जय-जय नंदा ! भद्द ते[9] अजिय जिणाहि, जियं पालयाहि[10], जियमज्झे वसाहि, [अजिय जिणाहि सत्तुपक्ख, जिय च पालेहि मित्तपक्ख[11],][12] •इंदो इव देवाण

---

१. स० पा०—भगवओ जाव पव्वइत्तए ।
२ °मणुयत्तमाणे (क) ।
३. उवट्ठावेह (ख) ।
४. स० पा०—कोडुवियपुरिसा जाव ते वि तहेव ।
५. ना० १।१।२४ ।
६ सव्वोसहिं (क, ख), सव्वोसहि (ग, घ) ।
७ ना० १।१।३३ ।
८ सं० पा०—करयल जाव कट्टु ।
९ जय-जय णदा ! जय-जय भद्दा ! भद्दते, (ओ० सू० ६८) ।
१०. पालेहिं (क) ।
११ स० पा०—मित्तपक्ख जाव भरहो ।
१२ कोष्ठकवर्तिवाक्यद्वय सर्वासु प्रतिपु लभ्यते,

चमरो इव असुराणं धरणो इव नागाणं चंदो इव ताराणं॰ भरहो इव मणुयाणं रायगिहस्स नगरस्स अन्नेसिं च बहूणं गामागर-नगर[1]-॰खेड-कव्वड-दोणमुह-मडंब-पट्टण-आसम-निगम-संवाह-सण्णिवेसाणं आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे महयाहय-नट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुप्पवाइयरवेणं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे॰ विहराहि त्ति कट्टु जय-जय-सद्दं पउंजंति ॥

११९. तए णं से मेहे राया जाए—महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे जाव[2] रज्जं पसासेमाणे विहरइ ॥

१२०. तए णं तस्स मेहस्स रण्णो [तं मेहं रायं ?] अम्मापियरो एवं वयासी—भण जाया ! किं दलयामो[3] ? किं पयच्छामो ? किं वा ते हियइच्छिए[4] सामत्थे ?

मेहस्स निक्खमणपाओग्ग-उवगरण-पदं

१२१. तए णं से मेहे राया[5] अम्मापियरो एवं वयासी—इच्छामि णं अम्मयाओ ! कुत्तियावणाओ रयहरणं पडिग्गहं[6] च आणियं, कासवयं च सद्दावियं[7] ॥

१२२. तए णं से सेणिए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सिरिघराओ तिण्णि सयसहस्साइं गहाय दोहिं सय-सहस्सेहिं कुत्तियावणाओ रयहरणं पडिग्गहं[8] च उवणेह, सयसहस्सेणं कासवयं सद्दावेह ॥

१२३. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा सेणिएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा सिरि-घराओ तिण्णि सयसहस्साइं गहाय कुत्तियावणाओ दोहिं सयसहस्सेहिं रयहरणं पडिग्गहं च उवणेंति, सयसहस्सेणं कासवयं सद्दावेंति ॥

कासवेण मेहस्स अग्गकेसकप्पण-पदं

१२४. तए णं से कासवए तेहिं कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविए समाणे हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए जाव[9] हरिसवसविसप्पमाणहियए ण्हाए कयबलिकम्मे कय-कोउय-मंगल-

---

तथापि पुनरुक्तं व्याख्यारूपं प्रतीयते। वृत्तावपि नैतद् व्याख्यानमस्ति। 'ओवाइय' (६८) सूत्रे पि नैतल्लभ्यते। तेन नाम्माभि-र्मूलपाठरूपेण स्वीकृतं।

१. सं० पा०—नगर जाव सण्णिवेसाणं आहे-वच्चं जाव विहराहि।

२. ओ० सू० १४।

३. दलामो (क)।

४ हियपइच्छिए (क), हियपयच्छिए (ख)।

५. कुमारे (क, ख, ग)।

६. पडिग्गहणं (ख)।

७ सद्दाविउं (क), सद्दावेउ(ख, ग); सद्दावित्तए (घ), वृत्तौ—'शब्दित—आकारितम्' इति व्याख्यातं विद्यते। 'आनीतमिच्छामि' तथैव 'शब्दितमिच्छामि' इति उपयुक्तोस्ति सम्बन्धः, तस्मात् 'सद्दाविय' इति वृत्त्यनुसारी पाठः स्वीकृतः।

८. पडिग्गहगं (ख)।

९. ना० १।१।१९।

पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं वत्थाइ पवर[1] परिहिए अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरे जेणेव सेणिए राया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सेणिय राय करयलपरिग्गहिय सिरसावत्तं मत्थए अजलिं कट्टु एव वयासी—सदिसह ण देवाणुप्पिया ! जं मए करणिज्ज ॥

१२५ तए ण से सेणिए राया कासवय एव वयासी—गच्छाहि ण तुभे देवाणुप्पिया ! सुरभिणा गधोदएण निक्के[2] हत्थपाए पक्खालेहि, सेयाए चउप्फलाए[3] पोत्तीए मुह वधित्ता मेहस्स कुमारस्स चउरगुलवज्जे निक्खमणपाउग्गे अग्गकेसे कप्पेहि ॥

१२६ तए ण से कासवए सेणिएण रण्णा एव वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणदिए जाव[4] हरिसवस-विसप्पमाणहियए[5] •करयलपरिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु एवं सामि ! त्ति आणाए विणएण वयणं° पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता सुरभिणा गधोदएण [निक्के ?] हत्थपाए पक्खालेइ, पक्खालेत्ता सुद्धवत्थेण मुह वधइ, वधित्ता परेण जत्तेण मेहस्स कुमारस्स चउरगुलवज्जे निक्खमण-पाउग्गे अग्गकेसे कप्पेति ॥

१२७ तए ण तस्स मेहस्स कुमारस्स माया महरिहेण हसलक्खणेण पडसाडएण अग्गकेसे पडिच्छइ, पडिच्छित्ता सुरभिणा गधोदएण पक्खालेइ, पक्खालेत्ता सरसेण गोसीसचदणेण चच्चाओ दलयइ, दलइत्ता सेयाए पोत्तीए वधइ, वधित्ता रयणसमुग्गयसि पक्खिवइ, मजूसाए पक्खिवइ, हार-वारिधार[6]-सिदुवार-छिन्नमुत्तावलि-प्पगासाइ असूइ विणिम्मुयमाणी-विणिम्मुयमाणी, रोयमाणी-रोयमाणी, कदमाणी-कदमाणी, विलवमाणी-विलवमाणी एव वयासी—एस ण अम्ह मेहस्स कुमारस्स अब्भुदएसु य उस्सवेसु य पसवेसु य तिहीसु य छणेसु य जन्नेसु य पव्वणीसु य—अपच्छिमे दरिसणे भविस्सइ त्ति कट्टु उस्सीसामूले ठवेइ ॥

मेहस्स अलंकरण-पद

१२८. तए ण तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो उत्तरावक्कमण सीहासण रयावेति, मेह कुमार दोच्च पि तच्च पि सेयापीएहिं[7] कलसेहिं ण्हावेति, ण्हावेत्ता पम्हलसूमालाए गधकासाइयाए गायाइ लूहेंति, लूहेत्ता सरसेण गोसीसचदणेणं

---

१. विभक्तिरहित पदम् ।
२ निक्के ति सर्वथा विगतमलान् (वृ) ।
३. चउप्फालाए (क्व०) अट्ठपडलाए (भ० ६।१८६) ।
४ ना० १।१।१६ ।
५. स० पा०—हियए जाव पडिसुणेइ ।
६ वारिधारा (ग) ।
७ सेयाणीएहिं (ग, घ); अत्र लिपिकरणे 'पकारो' णकाररूपेण परिवर्तितोभूत् अथवा 'सेकानीतै' इत्यर्थस्य परिकल्पनाया 'सेयाणी-एहिं' इत्यपि पाठ शुद्धस्यात् ।

गायाइ अणुलिंपति, अणुलिंपित्ता नासा-नीसासवाय-वोज्झं[1] •वरणगरपट्टणुग्गय कुसलणरपसंसित अस्सलालापेलवं छेयायरियकणगखचियंतकम्मं° हंसलक्खणं पडसाडगं नियंसेंति, हारं पिणद्धेंति, अद्धहारं पिणद्धेंति, एवं—एगावलिं मुत्तावलिं कणगावलिं रयणावलिं पालंबं पायपलंबं कडगाइं[2] तुडियाइं[3] केऊराइं अंगयाइं दसमुद्दियाणंतयं कडिसुत्तयं कुंडलाइं चूडामणिं रयणुक्कडं मउडं—पिणद्धेंति, पिणद्धेत्ता[4] गंथिम-वेढिम-पूरिम-संघाइमेणं[5]—चउव्विहेणं मल्लेणं कप्परुक्खगं पिव अलंकिय-विभूसियं करेंति ॥

मेहस्स अभिनिक्खमणमहुस्सव-पदं

१२९. तए णं से सेणिए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अणेगखंभसय-सण्णिविट्ठं लीलट्ठिय-सालभंजियागं ईहामिय-उसभ-तुरय-नर-मगर-विहग-वालग-किन्नर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलय-भत्तिचित्तं घंटावलि-महुर-मणहरसरं सुभ-कंत-दरिसणिज्जं निउणोविय-मिसिमिसेंत-मणिरयणघंटियाजालपरिक्खित्तं अब्भुग्गय-वइरवेइया-परिगयाभिरामं विज्जाहरजमल-जंतजुत्तं पिव अच्चीसहस्समालणीयं[6] रूवग-सहस्सकलियं भिसमाणं[7] भिब्भिसमाणं चक्खुल्लोयणलेस्सं सुहफासं सस्सिरीयरूवं सिग्घं तुरियं चवलं वेइयं पुरिससहस्सवाहिणीयं सीयं उवट्ठवेह ॥

१३०. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा हट्ठतुट्ठा अणेगखंभसय-सण्णिविट्ठं जाव[8] सीयं उवट्ठवेंति ॥

१३१. तए णं से मेहे कुमारे सीयं दुरुहइ, दुरुहित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे ॥

१३२. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स माया ण्हाया कयबलिकम्मा जाव[9] अप्पमहग्घा-

---

१. म० पा०—नासानीसासवायवोज्झं जाव हंसलक्खणं ।

२. एतत् पदं वृत्तौ नास्ति व्याख्यातम् ।

३. × (ख, ग) ।

४. पिणद्धेत्ता दिव्वं सुमणदामं पिणद्धति, दद्दरमलयसुगंधिए गंधे पिणद्धेंति । तए णं तं मेहं कुमारं (क, ख, ग), 'घ' प्रतिं विहाय सर्वासु प्रतिषु पाठान्तररूपेणोद्धृतः पाठो लभ्यते । 'घ' प्रतौ एव पाठोस्ति—'दिव्वं सुमणदामं पिणद्धेंति । तते णं तं मेहं कुमारं गंथिम°' । किन्तु भगवत्यां (९।२३) आचारचूलायां (१५।२८) च असौ पाठः अतीव व्यवस्थितरूपेण प्राप्तोस्ति, अतः तयोराधारेण अत्रापि पाठः स्वीकृतः । अनेन प्रस्तुतसूत्रे जातस्य पाठमिश्रणस्य परिहारः सहजमेव जातः ।

५. सजोइमेण (ख) ।

६. °मालिणीय (क, ख, ग) ।

७. मिसमीण (ख, ग) ।

८. ना० १।१।२९ ।

९. ना० १। १।१।२७ ।

भरणालंकियसरीरा सीयं दुरुहइ, दुरुहित्ता मेहस्स कुमारस्स दाहिणपासे भद्दासणंसि[1] निसीयइ ॥

१३३. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मधाई रयहरणं च पडिग्गहं च गहाय सीयं दुरुहइ, दुरुहित्ता मेहस्स कुमारस्स वामपासे भद्दासणंसि निसीयइ ॥

१३४. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स पिट्ठओ एगा वरतरुणी सिंगारागारचारुवेसा संगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-सलावुल्लाव-निउणजुत्तोवयारकुसला आमेलगजमलजुयल-वट्टिय-अब्भुण्णय-पीण-रइय-संठिय-पओहरा हिम-रयय-कुंदेंदुपगासं सकोरेंटमल्लदामं धवलं आयवत्तं गहाय सलीलं ओहारेमाणी-ओहारेमाणी चिट्ठइ ॥

१३५. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स दुवे वरतरुणीओ सिंगारागारचारुवेसाओ[2] °संगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-सलावुल्लाव-निउणजुत्तोवयार° कुसलाओ सीयं दुरुहंति, दुरुहित्ता मेहस्स कुमारस्स उभओ पासं[3] नाणामणि-कणग-रयण-महरिहतवणिज्जुज्जल-विचित्तदंडाओ चिल्लियाओ सुहुमवरदीहवालाओ संख-कुंद-दगरय-अमयमहियफेणपुंज-सण्णिगासाओ चामराओ गहाय सलीलं ओहारेमाणीओ-ओहारेमाणीओ चिट्ठंति ॥

१३६. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स एगा वरतरुणी सिंगारा[4]-°गारचारुवेसा संगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-सलावुल्लाव-निउणजुत्तोवयार° कुसला सीयं दुरुहइ, दुरुहित्ता मेहस्स कुमारस्स पुरओ पुरत्थिमे णं चंदप्पभवइर-वेरुलिय-विमलदंडं तालियंटं गहाय चिट्ठइ ॥

१३७. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स एगा वरतरुणी[5] °सिंगारागारचारुवेसा संगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-सलावुल्लाव-निउणजुत्तोवयार° कुसला सीयं दुरुहइ, दुरुहित्ता मेहस्स कुमारस्स पुव्वदक्खिणे[6] णं सेयं रययामयं विमलसलिल-पुण्णं मत्तगयमहामुहाकितिसमाणं भिंगारं गहाय चिट्ठइ ॥

१३८. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स पिया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! सरिसयाणं सरित्तयाणं सरिव्वयाणं एगाभरण-गहिय-निज्जोयाणं कोडुंबियवरतरुणाणं सहस्सं सद्दावेह[7] ॥

---

१. भद्दासणम्मि (ख), भद्दासणे (ग)।
२. सं० पा०—सिंगारागारचारुवेसाओ जाव कुसलाओ।
३. पासिं (ख)।
४. सं० पा०—सिंगारा जाव कुसला।
५. सं० पा०—वरतरुणी जाव सुरूवा (क, ख, ग, घ) अत्र पूर्वसूत्रक्रमेण 'जाव कुसला' इति युज्यते, कथमिदं परिवर्तनं जातमिति ज्ञातुं न शक्यते।
६. दक्खिणे (ग)।
७. सं० पा०—सद्दावेह जाव सद्दावेंति।

१३९. •तए णं ते कोडुंबियपुरिसा सरिसयाणं सरित्तयाण सरिव्वयाण एगाभरण-गहिय-निज्जोयाण कोडुवियवरतरुणाण सहस्सं° सद्दावेति ।।

१४० तए ण ते कोडुवियवरतरुणपुरिसा सेणियस्स रण्णो कोडुबियपुरिसेहि सद्दाविया समाणा हट्ठा ण्हाया जाव[1] [सव्वालकारविभूसिया ?[2]] एगाभरण-गहिय-णिज्जोया जेणामेव सेणिए राया तेणामेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सेणिय राय एव वयासी—सदिसह ण देवाणुप्पिया ! ज ण अम्हेहिं करणिज्ज ।।

१४१ तए ण से सेणिए राया त कोडुवियवरतरुणसहस्स एव वयासी—गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! मेहस्स कुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणीय[3] सीय परिवहेह ।।

१४२ तए ण त कोडुवियवरतरुणसहस्स सेणिएण रण्णा एव वुत्त सत हट्ठ मेहस्स कुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणीय सीय परिवहइ ।।

१४३. तए ण तस्स मेहस्स कुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणीय[4] सीय दुरूढस्स समाणस्स इमे अट्ठट्ठमगलया तप्पढमयाए पुरओ अहाणुपुव्वीए[5] सपत्थिया, त जहा—सोवत्थिय[6]-सिरिवच्छ-नदियावत्त-वद्धमाणग-भद्दासण-कलस-मच्छ-दप्पणया जाव[7]

---

१. ना० १।१।८१ ।

२ अत्र जाव शब्दस्याग्रिमो पाठो नास्ति सूचित, किन्तु प्रसगानुसारेण पूर्तिकृत एव पाठो युज्यते ।

३ °वाहिणी (ग, घ) ।

४ °वाहिणी (ख), वाहिणी (ग) ।

५ आणुपुव्वीए (घ) ।

६ सोत्थिय (ग) ।

७. (१) तयाणतर च ण पुण्णकलसभिगार दिव्वा य छत्तपडागा सचामरा दसण-रइय-आलोयदरिसणिज्जा वाउद्धुयविजयवेजयती य ऊसिया गगणतलमणुलिहती पुरओ अहाणुपुव्वीए सपट्ठिया ।

(२) तयाणतर च ण वेरुलियभिसतविमलदड पलबकोरेंट मल्लदामोवसोहिय चदमडलनिभ निम्मल आयवत्त पवर सीहासण च मणिरयण-पायपीढ सपाउयाजुयमसाउत्त वहुकिकर-कम्मकर-पुरिस-पायत्त-परिक्खित्त पुरओ अहाणुपुव्वीए सपट्ठिय ।

(३) तयाणतर च ण वहवे लट्ठिग्गाहा कुत-ग्गाहा चावग्गाहा चामरग्गाहा, पोत्थयग्गाहा फलग्गाहा पीढयग्गाहा वीणग्गाहा कूवग्गाहा हडप्पग्गाहा पुरओ अहाणुपुव्वीए सपट्ठिया ।

(४) तयाणतर च ण वहवे दडिणो मुडिणो छिहडिणो पिच्छिणो हासकरा डमरकरा चाडुकरा कीडता य वायंता य गायता य नच्चता य हसता य सोहता य साविंता य रक्खता य आलोय च करेमाणा जयसद्द च पउजमाणा पुरओ अहाणुपुव्वीए सपट्ठिया ।

(५) तयाणतर च ण जच्चाण तरमल्लिहाय-णाण थासग-अहिलाण-चामर-गड-परिमडिय-कडीण किकरवरतरुणपरिग्गहियाण अट्ठसय वरतुरगाण पुरओ अहाणुपुव्वीए सपट्ठियं ।

(६) तयाणतर च ण ईसीदताण ईसीमत्ताणं ईसीतुगाण ईसीउच्छगविसाल-धवलदताण कचणकोसी-पविट्ठदताण कचण-मणिरयण-भूसियाण वरपुरिसारोहगसपउत्ताण अट्ठसय

वहवे अत्थत्थिया' •कामत्थिया भोगत्थिया लाभत्थिया किव्विसिया कारोडिया कारवाहिया सखिया चक्किया नगलिया मुहमगलिया वद्धमाणा पूसमाणया खडियगणा ताहि इट्ठाहि कताहि पियाहि मणुण्णाहि मणामाहि मणाभिरामाहि हिययगमणिज्जाहि वग्गूहि जयविजयमगलसएहि॰ अणवरय अभिनंदता य अभिथुणता य एव वयासी—जय-जय नदा ! जय-जय भद्दा !

जय-जय नदा ! भद्द ते। अजिय जिणाहि इदियाइ, जिय च पालेहि समण-धम्म, जियविग्घो वि य वसाहि त देव ! सिद्धिमज्झे, निहणाहि रागदोसमल्ले तवेण धिइ-धणिय²-वद्धकच्छो, मद्दाहि य अट्ठकम्मसत्तू झाणेण उत्तमेण सुक्केण अप्पमत्तो, पावय वितिमिरमणुत्तरं केवल नाण, गच्छ य मोक्ख परम पयं

गयाण पुरओ अहाणुपुव्वीए सपट्ठिय।

(७) तयाणतर च ण सच्छत्ताणं सज्झयाण सघटाण सपडागाण सतोरणवराण सणदि-घोसाण सखिखिणी-जाल-परिक्खित्ताणं हेमवय-चित्त-तिणिस-कणग-णिज्जुत्त-दारुयाण कालायस-सुकयणेमि-जतकम्माण सुसिलिट्ठ-वत्तमडल-धुराण आइण्णवरतुरगसुस-पउत्ताण कुसलनरच्छेयसारहिसुसपग्गहियाण वत्तीसतोण-परिमडियाण सककड-वडेसगाण सचावसर-पहरणावरणभरिय - जुद्धसज्जाण अट्ठसय रहाण पुरओ अहाणुपुव्वीए सपट्ठिय।

(८) तयाणतर च ण असि-सत्ति-कुत-तोमर-सूल-लउल-भिंडिमाल-धणु-पाणिसज्ज पायत्ता-णीय पुरओ अहाणुपुव्वीए सपट्ठिय।

(९) तए ण से मेहे कुमारे हारोत्थय-सुकय-रइय-वच्छे कुडलुज्जोइयाणणे मउडदित्त-सिरए अब्भहिय रायतेयलच्छीए दिप्पमाणे सकोरेंटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण सेयवरचामराहि उद्धुव्वमाणीहिं-उद्धुव्वमा-णीहि हयगयपवरवरजोहकलियाए चाउरंगि-णीए सेणाए समणुगम्ममाणमग्गे जेणेव गुणसिलए चेइए, तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

(१०) तए ण तस्स मेहस्स कुमारस्स पुरओ मह आसा आसवरा उभओ पासि णागा णागवरा (नागवरा—वृपा) पिट्ठओ रह-सवेल्लि (रहसगेल्लि-वृपा)।

(११) तए ण से मेहे कुमारे अब्भुग्गयभिंगारे पग्गहियतालियटे ऊसवियसेयछत्ते पवीजिय-वालवीयणीए सव्विड्ढीए सव्वजुत्तीए सव्व-वलेण सव्वसमुदएण सव्वादरेण सव्वविभूईए सव्वविभूसाए सव्वसभमेण सव्वपुप्फगध-मल्लालकारेण सव्वतुडिय-सद्द-सण्णिणाएण महया इड्ढीए महया जुईए महया वलेण महया समुदएण महया वरतुडिय-जमगसमग-प्पवाइएण सख-पणव-पडह-भेरि-झल्लरि खरमुहि-हुडुक्क-मुरय-मुइग-दुदुहि - णिग्घोस-णाइयरवेण रायगिहस्स नगरस्स मज्झमज्झेण निग्गच्छइ।

(१२) तए ण तस्स मेहकुमारस्स रायगिहस्स नगरस्स मज्झमज्झेण णिग्गच्छमाणस्स वहवे अत्थत्थिया कामत्थिया भोगत्थिया·· । उपरिलिखित पाठो वृत्ते समुद्धृतोऽस्ति। औपपातिकस्य ६४-६८ सूत्रेषु असौ पाठ किञ्चिच्छब्दभेदेन सहोपलभ्यते।

१ स॰ पा॰—अत्थत्थिया जाव ताहि इट्ठाहि जाव अणवरय।

२. वलिक (ग, वृपा); एकस्या वृत्तिप्रतौ 'पलिक' इत्यपि लभ्यते।

सासय च अयल, 'हता परीसहचमूण'[1], अभीओ परीसहोवसग्गाण, धम्मे ते अविग्घं भवउ त्ति कट्टु पुणो-पुणो मगल-जयसद्द पउजति ।।

१४४ तए ण से मेहे कुमारे रायगिहस्स नगरस्स मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव गुणसिलए चेइए तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ पच्चोरुहइ[2] ।।

सिस्सभिक्ख दाण-पद

१४५ तए ण तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो मेह कुमार पुरओ कट्टु जेणामेव समणे भगव महावीरे तेणामेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेति, करेत्ता वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—एस ण देवाणुप्पिया ! मेहे कुमारे अम्ह एगे पुत्ते इट्ठे कते[3] °पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए वहुमए अणुमए भडकरडग-समाणे रयणे रयणभूए° जीवियऊसासए हिययणदिजणए उवरपुप्फ पिव दुल्लहे सवणयाए, किमग पुण दरिसणयाए ?

से जहानामए उप्पले ति वा पउमे ति वा कुमुदे ति वा पके जाए जले संवड्ढिए नोवलिप्पइ पकरएण नोवलिप्पइ जलरएण, एवामेव मेहे कुमारे कामेसु जाए भोगेसु सवड्ढिए[4] नोवलिप्पइ कामरएण नोवलिप्पइ भोगरएण। एस ण देवाणुप्पिया ! ससारभउव्विग्गे भीए जम्मण[5]-जर-मरणाण, इच्छइ देवाणुप्पियाण अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए। अम्हे ण देवाणुप्पियाण सिस्सभिक्ख[6] दलयामो। पडिच्छतु णं देवाणुप्पिया ! सिस्सभिक्ख ।।

१४६ तए ण समणे भगवं महावीरे मेहस्स कुमारस्स अम्मापिऊहिं एव वुत्ते समाणे एयमट्ठ सम्म पडिसुणेइ ।।

१४७ तए ण से मेहे कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियाओ[7] उत्तरपुरत्थिम दिसीभाग अवक्कमइ, सयमेव आभरण-मल्लालकार ओमुयइ ।।

१४८ तए ण तस्स मेहस्स कुमारस्स माया हसलक्खणेण पडसाडएण[8] आभरण-मल्लालकार पडिच्छइ, पडिच्छित्ता हार-वारिधार-सिदुवार-छिन्नमुत्तावलि-प्पगासाइ असूणि विणिम्मुयमाणी-विणिम्मुयमाणी रोयमाणी-रोयमाणी कद-माणी-कदमाणी विलवमाणी-विलवमाणी एव वयासी—जइयव्वं जाया !

---

१. हत्वा परीसह-चमू—परीषहसैन्यम्। णमित्यलकारे अथवा कथभूत त्वम्, हता—विनाशक परीषह-चमूनाम् (वृ)।

२. पच्चोरुभइ (ख, ग)।

३ स० पा० — कते जाव जीवियऊसासए।

४. सवुड्ढे (ख, ग)।

५ जम्म (ख, ग)।

६ सीसभिक्ख (क)।

७ X (क, ग, घ)।

८ पडग° (ख)।

घडियव्वं जाया ! परक्कमियव्वं जाया ! अस्सि च णं अट्ठे नो पमाएयव्वं। अम्हपि णं एसेव मग्गे भवउ त्ति कट्टु मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो समण भगव महावीरं वदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिस पडिगया ॥

मेहस्स पव्वज्जागहण-पदं

१४९ तए ण से मेहे कुमारे सयमेव पंचमुट्ठिय लोयं करेइ, करेत्ता जेणामेव समणे भगवं महावीरे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—आलित्ते ण भते ! लोए, पलित्ते ण भते ! लोए, आलित्त पलित्ते ण भते ! लोए जराए मरणेण य।

से जहानामए केइ गाहावई अगारसि झियायमाणसि जे तत्थ भंडे भवइ अप्पभारे[1] मोल्लगरुए, त गहाय आयाए एगत अवक्कमइ— एस मे नित्थारिए समाणे 'पच्छा पुरा य'[2] लोए हियाए सुहाए खमाए[3] निस्सेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ। एवामेव मम वि एगे आयाभडे इट्ठे कते पिए मणुण्णे मणामे। एस मे नित्थारिए समाणे संसारवोच्छेयकरे भविस्सइ। त इच्छामि ण देवाणुप्पिएहिं सयमेव पव्वाविय सयमेव मुडाविय सयमेव सेहावियं सयमेव सिक्खाविय सयमेव आयार-गोयर-विणय-वेणइय-चरण-करण-जायामायावत्तिय[4] धम्ममाइक्खिय ॥

१५० तए ण समणे भगवं महावीर मेह कुमार सयमेव पव्वावेइ सयमेव[5] °मुडावेइ सयमेव सेहावेइ सयमेव सिक्खावेइ सयमेव आयार-गोयर-विणय-वेणइय-चरण-करण-जायामायावत्तिय° धम्ममाइक्खइ—एव देवाणुप्पिया ! गतव्व, एव चिट्ठियव्व, एव निसीयव्व, एवं तुयट्टियव्व, एव भुजियव्व, एव भासियव्व, एव उट्ठाए उट्ठाय[6] पाणेहिं भूएहिं जीवेहिं सत्तेहि सजमेण सजमियव्वं, अस्सिं च ण अट्ठे नो पमाएयव्व ॥

१५१ तए ण से मेहे कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए इम एयारूव धम्मिय उवएस सम्म पडिवज्जइ— तमाणाए तह गच्छइ, तह चिट्ठइ[7], °तह निसीयइ तह तुयट्टइ, तह भुजइ, तह भासइ, तह° उट्ठाए उट्ठाय[8] पाणेहिं भूएहिं जीवेहिं सत्तेहिं सजमेण सजमइ ॥

---

१. अप्पसार (वृपा)।
२ पच्छाउरस्स (वृपा)
३. खेमाए (क्व०)।
४. °उत्तिय (क, ख, ग, घ)।
५ स० पा०—सयमेव° आयार जाव धम्ममाइक्खइ।
६ °उट्ठाए (ग), उत्थाय उत्थाय (वृ)।
७ स० पा०—चिट्ठइ जाव उट्ठाए।
८. उट्ठाए (क)।

मेहस्स मणो-संकिलेस-पदं

१५२ जद्दिवसं[1] च णं मेहे कुमारे[2] मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए, तस्स णं दिवसस्स पच्चावरण्हकालसमयंसि[3] समणाणं निग्गंथाणं अहाराइणियाए[4] सेज्जा संथारएसु विभज्जमाणेसु मेहकुमारस्स[5] दारमूले[6] सेज्जा-संथारए जाए यावि होत्था ॥

१५३ तए णं समणा निग्गंथा पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि वायणाए पुच्छणाए परियट्ट-णाए धम्माणुजोगचिंताए य उच्चारस्स वा[7] पासवणस्स वा[8] अइगच्छमाणा य निग्गच्छमाणा य अप्पेगइया मेहं कुमारं हत्थेहिं संघट्टेंति [9]•अप्पेगइया पाएहिं संघट्टेंति अप्पेगइया सीसे संघट्टेंति अप्पेगइया पोट्टे संघट्टेंति अप्पेगइया कायंसि संघट्टेंति° अप्पेगइया ओलंडेंति अप्पेगइया पोलंडेंति अप्पेगइया पाय-रय-रेणु-गुंडियं करेंति। एमहालियं[10] च रयणिं[11] मेहे कुमारे नो संचाएइ खणमवि अच्छिं[12] निमीलित्तए ॥

१५४ तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[13] •चिंतिए पत्थिए मणो-गए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं सेणियस्स रण्णो पुत्ते धारिणीए देवीए अत्तए मेहे[14] •इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे रयणे रयणभूए जीविय-उस्सासए हियय-णंदि-जणणे उंबर-पुप्फं व दुल्लहे° सवणयाए[15]। तं जया णं अहं अगारमज्झावसामि[16] तया णं मम समणा निग्गंथा आढायंति परियाणंति[17] सक्कारेंति सम्माणेंति, अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं[18] आइक्खंति, इट्ठाहिं कंताहिं वग्गूहिं आल-वेंति संलवेंति। जप्पभिइं च णं अहं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए, तप्पभिइं च णं मम समणा निग्गंथा नो आढायंति[19] •नो परियाणंति नो सक्का-रेंति नो सम्माणेंति नो अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं आइक्खंति,

---

१ जं दिवसं (घ)।
२ अणगारे (क)।
३ पुव्वा° (क, ग, घ)।
४ आहारातिणियाए (ख, ग)।
५ मेहस्स अणगारस्स (क) सर्वत्र।
६ वारमूले (क, ख)।
७,८ य (क, ख, ग, घ)। १८९ सूत्रस्य आधारेण अत्र 'वा' इति पाठो गृहीतः।
९ सं० पा०—एवं पाएहिं सीसे पोट्टे कायंसि।
१० एवमहा° (क, घ), एयमहा° (ग)।
११ रयणी (क, घ)।
१२ अच्छी (ख)।
१३ सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
१४ सं० पा०—मेहे जाव सवणयाए।
१५ समणयाए (क, ख, ग)।
१६. °मज्झवसामि (क), °मज्झेवसामि (ग); अगारमज्झे आवसामि (वृपा)।
१७. परिजाणंति (ग)।
१८ वाकरणाइं (क, ख, ग)।
१९ सं० पा०—आढायंति जाव संलवेंति।

नो इट्ठाहि कताहि वग्गूहि आलवेति ° सलवेति। अदुत्तर च ण मम समणा निग्गथा राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि वायणाए पुच्छणाए[1] °परियट्टणाए धम्माणुजोगचिताए य उच्चारस्स वा पासवणस्स वा अइगच्छमाणा य निग्गच्छमाणा य अप्पेगइया हत्थेहि सघट्टेति अप्पेगइया पाएहि सघट्टेति अप्पेगइया सीसे सघट्टेति अप्पेगइया पोट्टे सघट्टेति अप्पेगइया कायसि सघट्टेति अप्पेगइया ओलडेति अप्पेगइया पोलडेति अप्पेगइया पाय-रय-रेणु-गुडिय करेति ° । एमहालिय च ण रत्ति अह नो सचाएमि अच्छि निमिल्लावेत्तए[2] [निमीलित्तए ?]। त सेय खलु मज्झ[3] कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव[4] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते समण भगव महावीर आपुच्छित्ता पुणरवि अगारमज्झावसित्तए[5] त्ति कट्टु एव सपेहेइ, सपेहेत्ता अट्ट-दुहट्ट-वसट्ट-माणसगए निरयपडिरूविय च ण त रयणि खवेइ[6], खवेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए सुविमलाए रयणीए जाव[7] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव[8] उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ जाव[9] पज्जुवासइ ॥

मेहस्स संबोध-पदं

१५५ तए ण मेहा ! इ समणे भगव महावीरे मेह कुमार एव वयासी—से नूण तुम[10] मेहा ! राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि समणेहि निग्गथेहि वायणाए पुच्छणाए[11] °परियट्टणाए धम्माणुजोगचिताए य उच्चारस्स वा पासवणस्स वा अइगच्छमाणेहि य निग्गच्छमाणेहि य अप्पेगइएहि हत्थेहि सघट्टिए अप्पेगइएहि पाएहि सघट्टिए अप्पेगइएहि सीसे सघट्टिए अप्पेगइएहि पोट्टे सघट्टिए अप्पेगइएहि कायसि सघट्टिए अप्पेगइएहिओलडिए अप्पेगइएहि पोलडिए अप्पेगइएहि पाय-रय-रेणु-गुडिए कए।° एमहालिय च ण राइ तुम नो सचाएसि मुहुत्तमवि अच्छि निमिल्लावेत्तए। तए ण तुज्झ[12] मेहा ! इमेयारूवे अज्झत्थिए[13] °चितिए पत्थिए मणोगए सकप्पे ° समुप्पज्जित्था—जया ण अह अगारमज्झावसामि तया ण मम

---

१. स० पा०—पुच्छणाए जाव एमहालिय।
२ १५३ सूत्रे 'निमिलित्तए' इति पाठोस्ति। अत्र तत्तुल्यार्थेऽपि 'निमिल्लावेत्तए' इति पाठ कथं जात ?
३. मम (ग)।
४ ना० १।१।२४।
५. °मज्झे वसित्तए (क)।
६ वेदेति (घ)।
७ ना० १ १।२४।
८ तेणामेव (ग)।
९ राय० सू० ६०।
१० तुमे (ग)।
११ स० पा०—पुच्छणाए जाव एमहालिय।
१२ तुब्भ (क), तुब्भे (ख, घ)।
१३ स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।

समणा निग्गंथा आढायंति' •परियाणंति सक्कारेंति सम्माणेंति अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं आइक्खंति, इट्ठाहिं कंताहिं वग्गूहिं आलवेंति संलवेंति°। जप्पभिइं च णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयामि तप्पभिइं च णं मम समणा निग्गंथा नो आढायंति जाव' संलवेंति। अदुत्तरं च णं मम समणा निग्गंथा राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि अप्पेगइया जाव' पाय-रय-रेणु-गुंडियं करेंति। तं सेयं खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते समणं भगवं महावीरं आपुच्छित्ता पुणरवि अगारमज्झे आवसित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेसि, संपेहेत्ता अट्ट-दुहट्ट-वसट्ट-माणसगए' •निरयपडिरूवियं च णं तं° रयणिं खवेसि, खवेत्ता जेणामेव अहं तेणामेव हव्वमागए।

से नूणं मेहा! एस 'अत्थे समत्थे।

हंता अत्थे समत्थे'' ॥

भगवया सुमेरुप्पभ-भवनिरूवण-पदं

१५६ एवं खलु मेहा! तुमं इओ तच्चे अईए भवग्गहणे वेयड्ढगिरिपायमूले वणयरेहिं निव्वत्तियनामधेज्जे सेए संख-उज्जल-विमल-निम्मल-दहिघण-गोखीर-फेण-रयणियरप्पयासे सत्तुस्सेहे नवायए दसपरिणाहे सत्तंगपइट्ठिए 'सोम-सम्मिए' सुरूवे' पुरओ उदग्गे समूसियसिरे सुहासणे पिट्ठओ वराहे अइयाकुच्छी' अच्छिद्द-कुच्छी अलंबकुच्छी पलंबलंबोदराहरकरे'' धणुपट्ठागिति-विसिट्ठपुट्ठे अल्लीण-पमाणजुत्त-वट्टिय-पीवर-गत्तावरे'' अल्लीण-पमाणजुत्तपुच्छे पडिपुण्ण-सुचारु-कुम्मचलणे पंडुर''-सुविसुद्ध-निद्ध-निरुवहय-विसतिनहे छद्दंते सुमेरुप्पभे नाम हत्थिराया होत्था ॥

१५७ तत्थ णं तुमं मेहा! बहूहिं हत्थीहि य हत्थिणियाहि य लोट्टएहि य लोट्टियाहि

१ स० पा०—आढायंति°।
२ ना० १।१।१५४।
३. ना० १।१।१५३।
४ ना० १।१।२४।
५ सं० पा०—अट्टदुहट्टवसट्टमाणसगए जाव रयणिं।
६ अट्ठे समट्ठे हंता अट्ठे समट्ठे [क्वचित्]।
७ समे सुसंठिए (वृ), सोम-सम्मिए (वृपा)।
८ वृत्तौ नास्ति व्याख्यात.।
९ अतिया° (ग, घ)।
१० अलंब° (वृ), पलंब° (वृपा)।
११ अतोग्रे वृत्तौ वाचनान्तरस्य निर्देशोस्ति—अभ्युद्गत-मुकुल-मल्लिका-धवलदन्त, आनामित-चाप-ललित-संवेल्लिताग्रशुंडः। उपाशकदशाया—(२।२८) मिदं विशेषणद्वयं मूलपाठे विद्यते—अ०भुग्गय - मउल-मल्लिया- विमल-धवलदंत° आणामिय-चाव-ललिय-संवेल्लि-यग्गसोंड।
१२. पंडर (क, च)।

य कलभएहि य कलभियाहि य सद्धिं संपरिवुडे हत्थिसहस्सनायए देसए पागट्ठी पट्ठवए जूहवई वदपरिवड्ढए[1], अण्णेसिं च बहूण एकल्लाण[2] हत्थिकलभाण आहेवच्चं[3] •पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे° विहरसि ॥

१५८ तए णं तुमं मेहा! निच्चप्पमत्ते सइं पललिए कंदप्परई मोहणसीले 'अवितण्हे कामभोगतिसिए'[4] बहूहिं हत्थीहि य[5] •हत्थिणियाहि य लोट्टएहि य लोट्टियाहि य कलभएहि य कलभियाहि य सद्धिं° संपरिवुडे वेयड्ढगिरिपायमूले गिरीसु य दरीसु य कुहरेसु य कंदरासु य उज्झरेसु य निज्झरेसु य वियरएसु[6] य गड्डासु य पल्ललेसु य चिल्ललेसु य कडगेसु य कडयपल्ललेसु य तडीसु य वियडीसु य टंकेसु य कूडेसु य सिहरेसु य पब्भारेसु य मंचेसु य मालेसु य काणणेसु य वणेसु य वणसंडेसु य वणराईसु य नदीसु य नदीकच्छेसु य जूहेसु य संगमेसु य वावीसु य पोक्खरणीसु[7] य दीहियासु य गुंजालियासु य सरेसु य सरपंतियासु य सरसरपंतियासु य वणयरेहिं दिन्नवियारे बहूहिं हत्थीहि य जाव[8] सद्धिं संपरिवुडे बहुविहतरुपल्लव[9]-पउरपाणियतणे[10] निब्भए निरुव्विग्गे सुहंसुहेणं विहरसि ॥

१५९ तए णं तुमं मेहा—अण्णया[11] कयाइ पाउस-वरिसारत्त-सरद[12]-हेमंत-वसंतेसु कमेण पंचसु उऊसु समइक्कंतेसु गिम्हकालसमयंसि जेट्ठामूले मासे पायव-घंससमुट्ठिएणं सुक्कतण-पत्त-कयवर-मारुय-संजोगदीविएणं महाभयकरेणं[13] हुयवहेणं वणदव-जाल[14]-संपलित्तेसु वणंतेसु धूमाउलासु दिसासु महावाय-वेगेणं संघट्टिएसु छिण्णजालेसु आवयमाणेसु पोल्लरुक्खेसु अंतो-अंतो झियायमाणेसु मय-कुहिय-विणट्ठ-किमिय[15]-कद्दम-नईवियरगज्झीणपाणीयंतेसु वणंतेसु भिंगारक-दीणकंदिय-रवेसु 'खरफरुस-अणिट्ठ-रिट्ठ-वाहित्त-विद्दुमग्गेसु'[16] दुमेसु तण्हावस-मुक्कपक्ख-पायडियजिब्भतालुय[17]-असंपुडियतुंड-पक्खिसंघेसु ससंतेसु गिम्हुम्ह[18]-

---

१. परियट्टए (क)।
२ कल्लाण (ग)।
३. स० पा०—आहेवच्चं जाव विहरसि।
४ अवितण्हकामतिसिए (क), अवितण्हकामभोगे (ग)।
५. स० पा०—हत्थीहि य जाव संपरिवुडे।
६. वियरेसु (ख, ग, घ)।
७ पुक्खरिणीसु (क)।
८. ना० १।१।१५७।
९. °पल्लवे (क)।
१०. पाणियतले (क, ग, घ)।
११. अन्नता (ख)।
१२. सरय (ख, ग, घ)।
१३. महाभयकरेण (क, ख, घ)।
१४. जाला (ख)।
१५ किमि (वृ), किमिय (वृपा)।
१६. खरफरुस-रिट्ठ-वाहित्त-विदुमग्गेसु (वृपा)।
१७. पयडिय° (घ)।
१८ गिम्हउम्ह (ख); गिम्ह (घ)।

उण्हवाय-खरफरुसचंडमारुय-सुक्कतणपत्तकयवरवाउलि-भमंतदित्तसंभंतसावया-उल-मिगतण्हाबद्धचिंधपट्टेसु गिरिवरेसु संवट्टइएसु[1] तत्थ-मिय-ससय[2]-सरीसिवेसु[3] अवदालियवयणविवर-निल्लालियग्गजीहे महंततुंबइय-पुण्णकण्णे संकुचिय-थोर-पीवर-करे ऊसिय-नंगूले पीणाइय[4]-विरसरडिय-सद्देणं फोडयंतेव अंबरतलं, पायदद्दरएण कंपयंतेव मेइणितलं, विणिम्मुयमाणे य सीयरं[5], सव्वओ समंता वल्लिवियाणाइं छिंदमाणे, रुक्खसहस्साइं तत्थ सुबहूणि नोल्लयंते[6], विणट्ठरट्ठेव्व नरवरिंदे, वायाइद्धेव्व पोए, मंडलवाएव्व परिब्भमंते, अभिक्खणं-अभिक्खणं लिंडनियरं पमुंचमाणे-पमुंचमाणे बहूहिं हत्थीहि य जाव[7] सद्धिं दिसोदिसिं विप्पलाइत्था ।।

१६० तत्थ णं तुमं मेहा ! जुण्णे जरा-जज्जरिय-देहे आउरे झंझिए[8] पिवासिए दुब्बले किलंते नट्ठसुइए मूढदिसाए सयाओ जूहाओ विप्पहूणे[9] वणदवजालापरद्धे[10] उण्हेण य तण्हाए य छुहाए य परब्भाहए समाणे भीए तत्थे तसिए उव्विग्गे संजायभए सव्वओ समंता आधावमाणे परिधावमाणे एगं च णं महं सरं अप्पोदगं[11] पंकबहुलं अतित्थेणं[12] पाणियपाए ओइण्णे ।

तत्थ णं तुमं मेहा ! तीरमइगए पाणियं असंपत्ते अंतरा चेव सेयंसि विसण्णे ।

तत्थ णं तुमं मेहा ! पाणियं पाइस्सामि त्ति कट्टु हत्थं पसारेसि । से वि य ते हत्थे उदगं न पावइ । तए णं तुमं मेहा ! पुणरवि कायं पच्चुद्धरिस्सामि त्ति कट्टु बलियतरायं पंकंसि खुत्ते ।।

१६१ तए णं तुमं मेहा ! अण्णया कयाइ एगे चिरनिज्जूढए गयवरजुवाणए सगाओ जूहाओ कर-चरण-दंत-मुसलप्पहारेहिं विप्परद्धे समाणे तं चेव महद्दहं पाणीयपाए समोयरइ । तए णं से कलभए तुमं पासइ, पासित्ता तं पुव्ववेरं सुमरइ, सुमरित्ता आसुरुत्ते[13] रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे जेणेव तुमं तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तुमं तिक्खेहिं दंतमुसलेहिं तिक्खुत्तो पिट्ठओ 'उट्टु-

---

१. संवट्टएसु (ग) ।
२ पसय (ख, ग, घ, वृ), अनुयोगद्वारवृत्तौ पाठान्तररूपेण 'पसय' शब्दः प्राप्यते—पसयस्तु—आटविको द्विखुर चतुष्पदविशेष । प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तावपि इत्थमेव व्याख्यातमस्ति—प्रसयाश्चाटव्यचतुष्पदविशेषा ।
३ सिरीसवेसु (ख, ग) ।
४ पिणाइय (ख), पेणाइय (ग) ।
५. सीइरं (क), सीयारं (क्व०) ।
६. नोल्लवते (ग) ।
७ ना० १।१।१५७ ।
८. ज्झुसिए (क, घ), जुजिए (ग), 'झुसिय' बुभुक्षितमित्यर्थ (अंतगडवृत्ति ३।८) ।
९ विप्पहीणे (क) ।
१० °वरद्धे (क), °परद्धे (ख) ।
११. अप्पोयय (ख) ।
१२. अतित्थणं (ख, ग) ।
१३ आसुरुत्ते (क, ख) ।

भइ, उट्ठुभित्ता[1] पुव्व[2] वेरं निज्जाएइ, निज्जाएत्ता हट्ठतुट्ठे पाणीयं 'पिवइ, पिवित्ता'[3] जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥

१६२. तए णं तव मेहा ! सरीरगंसि वेयणा पाउब्भवित्था—उज्जला विउला[4] कक्खडा[5] •पगाढा चंडा दुक्खा° दुरहियासा। पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाह-वक्कतीए यावि विहरित्था ।

भगवया मेरुप्पभ-भवनिरूवण-पदं

१६३. तए णं तुमं मेहा ! तं उज्जलं[6] •विउलं कक्खडं पगाढं चंडं दुक्खं° दुरहियासं सत्तराइंदियं वेयणं वेदेसि, सवीसं वाससयं परमाउयं पालइत्ता अट्ट-'दुहट्ट-वसट्टे'[7] कालमासे कालं किच्चा इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे दाहिणड्ढभरहे गंगाए महानईए दाहिणे कूले विंझगिरिपायमूले एगेणं मत्तवरगंधहत्थिणा एगाए गयवरकरेणूए कुच्छिंसि गयकलभए जणिए ॥

१६४ तए णं सा गयकलभिया नवण्हं मासाणं वसंतमासंसि[8] तुमं पयाया ॥

१६५ तए णं तुमं मेहा ! गब्भवासाओ विप्पमुक्के समाणे गयकलभए यावि होत्था—रत्तुप्पल-रत्तसूमालए जासुमणाऽरत्तपालियत्तय[9]-लक्खारस-सरसकुंकुम-संझब्भरागवण्णे[10], इट्ठे नियगस्स जूहवइणो[11], गणियार[12]-कणेरु[13]-कोत्थ-हत्थी अणेगहत्थिसयसंपरिवुडे रम्मेसु गिरिकाणणेसु सुहंसुहेणं विहरसि ॥

१६६. तए णं तुमं मेहा ! उम्मुक्कबालभावे जोव्वणगमणुप्पत्ते जूहवइणा कालधम्मुणा संजुत्तेणं तं जूहं सयमेव पडिवज्जसि ॥

१६७ तए णं तुमं मेहा ! वणयरेहिं निव्वत्तियनामधेज्जे[14] •सत्तुस्सेहे नवायए दसपरि-णाहे सत्तंगपइट्ठिए सोम-सम्मिए सुरूवे पुरओ उदग्गे समूसियसिरे सुहासणे पिट्ठओ वराहे अइयाकुच्छी अच्छिद्दकुच्छी अलंबकुच्छी पलंबलंबोदराहरकरे धणुपट्ठागिति-विसिट्ठपुट्ठे अल्लीण-पमाणजुत्त-वट्टिय-पीवर-गत्तावरे अल्लीण-

---

१. उट्ठुभइ २ (क)।
२ पुव्वं (ख, घ)।
३ पियइ २ (क, ख, घ)।
४. तिउला विउला (ख), तिउला (वृपा)।
५ स० पा०—कक्खडा जाव दुरहियासा।
६ स० पा०—उज्जलं जाव दुरहियासं।
७ वसट्ट-दुहट्टे (क, ख, ग, वृ)।
८. °मासम्मि (क), °मासे (ग)।
९ पालियात्तय (क, घ), पारिजत्तय (क्व०)।
१०. °संझराग° (क)।
११ °वइणा (ग)।
१२. गणियायार (घ)।
१३. करेणु (घ)।
१४ स० पा०—निव्वत्तियनामधेज्जे जाव चाउदंते। इह यावत् करणेन यद्यपि समग्र-पूर्वोक्तो हस्तिवर्णकः सूचितस्तथापि श्वेततावर्जो द्रष्टव्यः, इह रक्तस्य तस्य वर्णितत्वात्। अतएवाग्रे सत्तुस्सेहे इत्यादिक-मतिदेशं वक्ष्यति (वृ)।

गिम्हकालसमयंसि जेट्ठामूले मासे पायव-घंससमुट्ठिएण[1] जाव[2] मवट्टइएसु मियपसुपक्खिसरीसिवेसु[3] दिसोदिसिं विप्पलायमाणेसु तेहिं बहूहिं हत्थीहि य[4] सद्धिं जेणेव से मंडले तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

यत् पुनः 'तए णं तुमं मेहा! अण्णया कयाइ कमेणं पंचसु' इत्यादि दृश्यते, तद् गमान्तरं मन्यामहे (वृ)

आदर्शेषु गमद्वयं लिखितमस्ति। द्वितीयो गमः पूर्ववर्ति १५६ सूत्रस्य वर्णनेन सादृश्यं गच्छति, तेन तस्यैव मूले सन्निवेशः कृतः। प्रथमो गमः इत्थमस्ति—

अह मेहा! तुमं गइंदभावम्मि वट्टमाणो कमेणं नलिणिवणविहवणकरे हेमंते कुंद-लोद्ध-उद्धत-तुसारपउरम्मि अइक्कंते, अहिणवगिम्हसमयंसि पत्ते वियट्टमाणो वणेसु 'वणकरेणु-विविह-दिन्नकयपंसव-घाओ'[1] उउयकुसुम[2]-चामरा[3]-कण्णपूर-परिमंडियाभिरामो मयवस-विगसंत-कडतड-किलिन्न-गंधमदवारिणा सुरभिजणियगंधो करेणुपरि-वारिओ उउसमत्त[4]-जणियसोहो काले दिणयरकरपयंडे परिसोसिय-तरुवरसिहर[5]-भीमतरदंसणिज्जे भिंगार-रवंत-भेरवरवे नाणाविहपत्त-कट्ठ-तण-कयवरुद्धुत-पइमारुया-इद्ध-नहयल-पदुममाणे[6] वाउलि-दारुणतरे तण्हावस-दोस-दूसिय[7]-भमंत-विविहसावय-समाउले भीमदरिसणिज्जे[8] वट्टंते दारुणम्मि-गिम्हे मारुयवस-पसर-पसरिय-वियंभिएणं अब्भहिय-भीमभेरव-रवप्पगारेणं महुधारा-पडिय-सित्त-उद्धायमाण-धगधगेंत-सद्दुद्धएणं[9] दित्ततर-सफुलिंगेणं धूममालाउलेणं सावयसयंतकरणेणं वणदवेणं जालालोविय[10]-निरुद्धधूमंधकारभीओ आयवालोय[11]-महंततुंबइय-पुण्ण-कण्णो 'आकुंचिय-थोर-पीवरकरो भयवस-भयंत-दित्तनयणो'[12] वेगेण महामेहो व्व वाय-णोल्लिय-महल्लरूवो जेण कओ तेण[13] पुरा दवग्गि-भयभीयहियएणं अवगयतणप्पएसरुक्खो रुक्खोद्देसो दवग्गि-संताणकारणट्ठा[14] 'तेहिं बहूहिं हत्थीहि य सद्धिं'[15] जेणेव मंडले तेणेव पहारेत्थ गमणाए। एक्को ताव एस गमो।

१ सघंस० (क, ख, घ)।
२ ना० १।१।१५६।
३ १५६ सूत्रे इत्थं पाठरचनास्ति—तत्थ-मिय-ससय-सरीसिवेसु।
४ पू०—ना० १।१।१५७।

१ वणरेणुविविहदिन्नकयपंसुघाओ (वृपा)।
२ तुमं कुसुम (घ), कुसुम (वृ), उउयकुसुम (वृपा)।
३ चामर (क्व०)।
४ ०ममय (क)।
५ ०सिरिहर (घ, वृ)।
६, दुमगणे (वृपा)।
७ दोसिय (वृ)।
८ ०दसणिज्जे (ख)।
९ सद्दुद्धएण (वृपा)।
१० जालालेविय (वृ)।
११ आयवाले (वृ), आयवालोय (वृपा)।
१२ आकुंचियथोरपीवरकराभोयसव्वदिसिभयंतदित्तनयणो (वृपा)।
१३. ते (क, ख, घ)।
१४ कारणत्था (क, ग, घ)।
१५ एतावान् पाठः ख, ग, घ, प्रतिषु नास्ति, केवलं 'क' प्रतावेव विद्यते, वृत्त्यनुमोदितोस्ति तेनास्माभिः स्वीकृतः।

तत्थ ण अण्णे बहवे सीहा य वग्घा य विगा य दीविया य अच्छा य तरच्छा य परासरा[1] य सियाला य विराला य सुणहा य कोला य ससा य कोकतिया य चित्ता य[2] चिल्लला[3] य पुव्वपविट्ठा अग्गिभयविद्दुया[4] एगयओ विलधम्मेणं चिट्ठति ॥

१७९ तए ण तुमं मेहा ! जेणेव से मडले तेणेव उवागच्छसि, उवागच्छित्ता तेहि बहूहि सीहेहि य जाव[5] चिल्ललेहि य एगयओ विलधम्मेण चिट्ठसि ॥

मेरुप्पभस्स पादुक्खेव-पद

१८० तए ण तुमे[6] मेहा ! पाएण गत्त कडूइस्सामी[7] ति कट्टु पाए उक्खित्ते[8] । तसि च ण अतरसि अण्णेहि बलवतेहि सत्तेहि पणोलिज्जमाणे[9]-पणोलिज्जमाणे ससए अणुप्पविट्ठे ॥

१८१ तए ण तुमे[10] मेहा ! गाय कडूइत्ता[11] पुणरवि पाय पडिनिक्खेविस्सामि[12] त्ति कट्टु त ससय अणुपविट्ठ पाससि, पासित्ता पाणाणुकपयाए[13] भूयाणुकपयाए जीवाणुकपयाए सत्ताणुकपयाए से पाए अतरा[14] चेव सधारिए, नो चेव ण निक्खित्ते ॥

१८२ तए ण तुम मेहा ! ताए पाणाणुकपयाए[15] °भूयाणुकपयाए जीवाणुकपयाए° सत्ताणुकपयाए ससारे परित्तीकए, माणुस्साउए निवद्धे ॥

१८३ तए ण से वणदवे अड्ढाइज्जाइ राइदियाइ त वण झामेइ, झामेत्ता निट्ठिए उवरए उवसते विज्झाए यावि होत्था ॥

---

१. पारासरा (घ) ।
२ य चित्तलगा य (ख, ग), य चित्तला य (घ) ।
३. चिल्लाला (क) । एतेषा मध्येऽधिकृत-वाचनाया कानिचिन्न दृश्यन्ते ।
४ °भयाभिद्दुया (क, ख, घ) ।
५ ना० १।१।१७८ ।
६. तुम (क, ख, ग, घ) ।
७. कडुइ° (ख) ।
८ अणुक्खित्ते (क, ग, घ) ।
९ पणोल्लिज्ज° (क, ग) ।
१० तुम (क, ख, ग, घ) ।
११ कडुइत्ता (क ख) ।
१२ निक्खिमिस्सामि (क), निक्खमिस्सामि (ख, ग, घ) ।
१३ °कपाए (ग) ।
१४ अतरे (ग) ।
१५ स० पा०—पाणाणुकपयाए जाव सत्ताणुकंपयाए ।

पमाणजुत्तपुच्छे पडिपुण्ण-सुचारु-कुम्मचलणे पंडुर-सुविसुद्ध-निद्ध-निरुवहय-विसतिनहे° चउदंते मेरुप्पभे हत्थिरयणे होत्था[1]। तत्थ णं तुमं मेहा! सत्तसइयस्स जूहस्स आहेवच्चं[2] °पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे° अभिरमेत्था ॥

१६८ तए णं तुमं मेहा! अण्णया कयाइ गिम्हकालसमयंसि जेट्ठामूले [मासे पायव-घससमुट्ठिएणं सुक्कतण-पत्त-कयवर-मारुय-सजोगदीविएणं महाभयकरेणं हुयवहेणं ?][3] वणदव-जाला-पलित्तेसु वणंतेसु धूमाउलासु दिसासु जाव[4] मंडलवाएव्व परिब्भमंते भीए तत्थे[5] °तसिए उव्विग्गे° संजायभए बहूहिं हत्थीहि य[6] °हत्थिणियाहि य लोट्टएहि य लोट्टियाहि य कलभएहि य कलभि-याहि य सद्धिं संपरिवुडे सव्वओ समंता दिसोदिसिं विप्पलाइत्था ॥

१६९ तए णं तव मेहा! तं वणदवं पासित्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए[7] °चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—कहि णं मन्ने मए अयमेयारूवे अग्गिसंभमे[8] अणुभूयपुव्वे ?

१७० तए णं तव मेहा! लेस्साहिं विसुज्झमाणीहिं अज्झवसाणेणं सोहणेणं सुभेणं परिणामेणं तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहा-पूह-मग्गण-गवेसणं करेमाणस्स सन्निपुव्वे जाईसरणे समुप्पज्जित्था ॥

१७१ तए णं तुमं मेहा! एयमट्ठं सम्मं[9] अभिसमेसि—एवं खलु मया[10] अईए दोच्चे भवग्गहणे इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे वेयड्ढगिरिपायमूले जाव[11] सुमेरुप्पभे नामं हत्थिराया होत्था। तत्थ णं मया[12] अयमेवारूवे अग्गिसंभमे[13] समणुभूए ॥

१७२ तए णं तुमं मेहा! तस्सेव दिवसस्स पच्चावरण्हकालसमयंसि नियएणं जूहेणं सद्धिं समण्णागए यावि होत्था ॥

१७३ तए णं तुमं मेहा! सत्तुस्सेहे जाव[14] सन्निजाईसरणे चउदंते मेरुप्पभे नामं हत्थी होत्था ॥

---

१. होत्था। सत्तगपइट्ठिए तहेव जाव पडिरूवे (क, घ)। यत् पुनरिह दृश्यते—सत्तंगेत्यादि तद् वाचनान्तरवर्णकापेक्षं कुलिखितमिति (वृ)।
२. स० पा०—आहेवच्चं जाव अभिरमेत्था।
३. १५९ सूत्रस्य वर्णनपद्धत्यासौ पाठोऽत्र युज्यते।
४. ना० १।१।१५९।
५. स० पा०—तत्थे जाव संजायभए।
६. स० पा०—हत्थीहि य जाव कलभियाहि।
७. स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
८. °संभवे (ख, ग)।
९. × (ग)।
१०. मता (ख)।
११. ना० १।१।१५६।
१२. महया (क, ख, ग), एतत् पदं अशुद्धं दृश्यते।
१३. °संभवे (घ)।
१४. ना० १।१।१६७।

मेरुप्पभेण मडलनिम्माणपदं

१७४ तए ण तुज्भ मेहा ! अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव[1] समुप्पज्जित्था—सेय खलु मम इयाणि गगाए महानईए दाहिणिल्लसि कूलसि विझगिरिपायमूले 'दवग्गि-सताणकारणट्ठा'[2] सएण जूहेण महइमहालय मडल घाइत्तए[3] त्ति कट्टु एव सपेहेसि, सपेहेत्ता सुहसुहेण विहरसि ॥

१७५ तए ण तुम मेहा ! अण्णया कयाइ पढमपाउससि[4] महावुट्ठिकायसि सन्निवयसि गंगाए महानईए अदूरसामते बहूहि हत्थीहि य जाव[5] कलभियाहि य सत्तहि य हत्थिसएहि संपरिवुडे एग मह जोयणपरिमडल महइमहालय मडल घाएसि—ज तत्थ तण वा पत्त वा कट्ठ वा कटए वा लया वा वल्ली वा खाणु वा रुक्खे वा खुवे वा, त सव्व तिक्खुत्तो[6] आहुणिय-आहुणिय पाएण उट्ठवेसि,[7] हत्थेण गिण्हसि, एगते एडेसि ॥

१७६ तए ण तुम मेहा ! तस्सेव मडलस्स अदूरसामते गगाए महानईए दाहिणिल्ले कूले विझगिरिपायमूले गिरीसु य जाव[8] सुहसुहेण विहरसि ॥

१७७ तए ण तुम मेहा ! अण्णया कयाइ मज्झिमए वरिसारत्तसि महावुट्ठिकायसि[9] सन्निवइयसि जेणेव से मडले तेणेव उवागच्छसि, उवागच्छित्ता दोच्च पि 'मडलघाय करेसि'[10] ।

एव—चरिमवरिसारत्तसि[11] महावुट्ठिकायसि सन्निवयमाणसि जेणेव से मडले तेणेव उवागच्छसि, उवागच्छित्ता तच्च पि मडलघाय करेसि[12] जाव[13] सुहसुहेण विहरसि ॥

दवग्गिभीतसावयाण मंडलपवेस-पद

१७८. [14]तए ण तुम मेहा ! अण्णया कयाइ कमेण पचसु उऊसु समइक्कतेसु

---

१ ना० १।१।१६६ ।
२ वणदवग्गिसताण° (क); दवग्गिसजाय° (ख, ग, घ), दवग्गिसताण° (वृपा) ।
४. घातए (ख) ।
४. °पाउसे (ग), °पाउसम्मि (घ) ।
५ ना० १।१।१५७ ।
६. × (ग, घ) ।
७. उद्धवेसि (क), उद्धरेमि (ख, ग), उवट्ठेसि (घ); उट्ठवेसित्ति उद्धरसि (वृ) ।
८ ना० १।१।१५८ ।
९ महाविट्ठि° (क, ख) ।
१० त मडल घाएसि (क, ग, घ) ।
११ °वासारत्तसि (ख) ।
१२ करेसि, ज तत्थ तण वा जाव (क, ख, ग, घ), गमान्तरप्रसगे वृत्तिकारेण 'तच्च पि मडलघायं करेसि जाव सुहसुहेण विहरसि'—इति पाठ उद्धृतोस्ति, तस्याधारेणासौपाठोत्र स्वीकृत ।
१३ ना० १।१।१७५,१७६ ।
१४ प्रथमो गम पादटिप्पणे विन्यस्तोऽस्ति, द्वितीयश्च मूलपाठे रक्षितोऽस्ति । वृत्तिकृता द्वितीय-गमस्य गमान्तरत्वेन उल्लेख कृतोऽस्ति, यथा—

१८४ तए णं ते बहवे सीहा य जाव[1] चिल्लला य तं वणदवं निट्ठियं[2] •उवरयं उवसंतं° विज्झायं पासंति, पासित्ता अग्गिभयविप्पमुक्का तण्हाए य छुहाए य परब्भाहया समाणा तओ मंडलाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता सव्वओ समंता विप्पसरित्था।

१८५ तए णं ते बहवे हत्थी[3] •य हत्थिणीओ य लोट्टया य लोट्टिया य कलभा य कलभिया य तं वणदवं निट्ठियं उवरयं उवसंतं विज्झायं पासंति, पासित्ता अग्गिभयविप्पमुक्का तण्हाए य° छुहाए य परब्भाहया समाणा तओ मंडलाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता दिसोदिसिं विप्पसरित्था।

१८६ तए णं तुमं मेहा! जुण्णे जरा-जज्जरिय-देहे सिढिलवलितय[4]-पिणिद्धगत्ते दुब्बले किलंते जुंजिए पिवासिए अत्थामे अबले अपरक्कमे ठाणुकडे[5] वेगेण विप्पसरिस्सामि त्ति कट्टु पाए पसारेमाणे विज्जुहए विव रययगिरि[6]-पब्भारे धरणितलंसि सव्वंगेहिं सण्णिवइए॥

१८७ तए णं तव मेहा! सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया—उज्जला[7] •विउला कक्खडा पगाढा चंडा दुक्खा दुरहियासा। पित्तज्जरपरिगयसरीरे° दाहवक्कंतीए यावि विहरसि॥

तीय संदब्भे वट्टमाण-तितिक्खोवदेस-पदं

१८८ तए णं तुमं मेहा! तं उज्जलं जाव[8] दुरहियासं तिण्णि राइंदियाइं वेयणं वेएमाणे विहरित्ता एगं वाससयं परमाउं पालइत्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे रायगिहे नयरे सेणियस्स रण्णो धारिणीए देवीए कुच्छिंसि कुमारत्ताए पच्चायाए॥

१८९ तए णं तुमं मेहा! आणुपुव्वेण गब्भवासाओ निक्खंते[9] समाणे उम्मुक्कबालभावे जोव्वणगमणुप्पत्ते मम अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए। तं जइ ताव तुमे मेहा! तिरिक्खजोणियभावमुवगएणं अपडिलद्ध-सम्मत्तरयण-लंभेणं से पाए पाणाणुकंपयाए[10] •भूयाणुकंपयाए जीवाणुकंपयाए सत्ताणुकंपयाए°

---

१ ना० १।१।१७८।
२. स० पा०—निट्ठियं जाव विज्झायं।
३ स० पा०—हत्थी जाव छुहाए।
४ °तया (ध)।
५. ठाणुक्कडे (क), ठाणखंभे (ध)।
६ रेवय० (क्व०), एकस्या हस्तलिखितवृत्तावपि 'रेवयगिरि' इति पाठो लभ्यते। वृत्तौ 'रययगिरि' पाठस्य पर्यालोचनमपि कृतमस्ति-इह प्राग्भारः ईषदवनतखंड उपमानेनास्य महत्तयैव न वर्णतो रक्तत्वात् तस्य। वाचनान्तरे तु सित एवामावित्ति (वृ)।
७. स० पा०—उज्जला जाव दाहवक्कंतीए।
८ ना० १।१।१८७।
९ निक्कंते (ख)।
१०. स० पा०—पाणाणुकंपयाए जाव अंतरा।

अंतरा चेव संधारिए, नो चेव णं निक्खित्ते। किमंग पुण तुम[1] मेहा! इयाणिं 'विपुलकुलसमुब्भवे णं'[2] निरुवहयसरीर-दत्तलद्धपंचिंदिए[3] णं एवं उट्ठाण-बल-वीरिय-पुरिसगार-परक्कमसजुत्ते णं मम अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे समणाणं निग्गंथाणं राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि वायणाए[4] •पुच्छणाए परियट्टणाए॰ धम्माणुओगचिंताए य उच्चारस्स वा पासवणस्स वा अइगच्छमाणाण य निग्गच्छमाणाण य हत्थसंघट्टणाणि य पायसंघट्टणाणि य[5] •सीससंघट्टणाणि य पोट्टसंघट्टणाणि य कायसंघट्टणाणि य ओलंडणाणि य पोलंडणाणि य पाय॰-रय-रेणु-गुंडणाणि य नो सम्मं सहसि खमसि तितिक्खसि अहियासेसि?

मेहस्स जाइसरण-पदं

१९० तए णं तस्स मेहस्स अणगारस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म सुभेहिं परिणामेहिं पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापूह-मग्गण-गवेसणं करेमाणस्स सण्णिपुव्वे जाईसरणे समुप्पण्णे, एयमट्ठं सम्मं अभिसमेइ॥

मेहस्स समप्पणपुव्वं पुणो पव्वज्जा-पदं

१९१ तए णं से मेहे कुमारे समणेणं भगवया महावीरेणं सभारियपुव्वभवे[6] दुगुणाणीयसंवेगे[7] आणंदअंसुपुण्णमुहे[8] हरिसवस[9]-•विसप्पमाण हियए॰ धाराहयकलंबकंपिव समूससियरोमकूवे[10] समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—

अज्जप्पभिई णं भंते! मम दो अच्छीणि मोत्तूणं अवसेसे काए समणाणं निग्गंथाणं निसट्ठे त्ति कट्टु पुणरवि समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—

---

१ तुमे (क, ख, ग, घ)।

२. विपुलकुलसमुद्भवे णं मित्यादौ णकारो वाक्यालंकारे (वृ)।

३ पत्तलद्ध॰ (क, ख, ग, घ, वृपा)।

४ सं॰ पा॰—वायणाए जाव धम्माणुओगचिंताए।

५ सं॰ पा॰—पायसंघट्टणाणि य जाव रयरेणुगुंडणाणि।

६. 'पुव्वजाईसरणे (क, ख, ग, घ, वृ), ॰पुव्वभवे (वृपा), भगवती ११।१७२ सूत्रानुसारेण असौ वृत्तेः पाठभेदो मूले स्वीकृत।

७. दुगुणाणिय॰ (क, ख, ग, घ)।

८ आणंदयंसु॰ (ख, ग)।

९ सं॰ पा॰—हरिसवस॰। हरिसवसत्ति अनेन हरिसवसविसप्पमाणहियए त्ति द्रष्टव्यम् (वृ)।

१०. समूसविय॰ (क, ख, घ)।

इच्छामि णं भंते ! इयाणिं दोच्चंपि सयमेव पव्वावियं सयमेव मुंडावियं[1] •सयमेव सेहावियं सयमेव सिक्खावियं• सयमेव आयार-गोयर जायामाया-वत्तियं[2] धम्ममाइक्खियं[3] ॥

१९२ तए णं समणे भगवं महावीरे मेहं कुमारं सयमेव पव्वावेइ[4] •सयमेव मुंडावेइ सयमेव सेहावेइ सयमेव सिक्खावेइ सयमेव आयार-गोयर-विणय-वेणइय-चरण-करण•-जायामायावत्तियं धम्ममाइक्खइ—एवं देवाणुप्पिया ! गंतव्वं, एवं चिट्ठियव्वं, एवं निसीयव्वं, एवं तुयट्टियव्वं, एवं भुंजियव्वं एवं भासियव्वं एवं उट्ठाए[5] उट्ठाय पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं संजमेणं संजमियव्वं ॥

१९३ तए णं से मेहे समणस्स भगवओ महावीरस्स अयमेयारूवं धम्मियं उवएसं सम्मं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता तह गच्छइ तह चिट्ठइ[6] •तह निसीयइ तह तुयट्टइ तह भुंजइ तह भासइ तह उट्ठाए उट्ठाय पाणेहिं भूएहिं जीवेहिं सत्तेहिं• संजमेणं संजमइ ॥

मेहस्स निग्गंठचरिया-पदं

१९४ तए णं से मेहे अणगारे जाए—इरियासमिए[7] •भासासमिए एसणासमिए आयाण-भंड-मत्त-णिक्खेवणासमिए उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाण-जल्ल-पारिट्ठावणिआ-समिए मणसमिए वइसमिए कायसमिए मणगुत्ते वइगुत्ते कायगुत्ते गुत्ते गुत्तिंदिए गुत्तबंभयारी चाई लज्जू धन्ने खंतिखमे जिइंदिए सोहिए अणियाणे अप्पुस्सुए अबहिल्लेसे सुसामण्णरए दंते इणमेव निग्गंथं पावयणं पुरओकाउं विहरति• ॥

१९५ तए णं से मेहे अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स 'तहारूवाणं थेराणं अंतिए'[8] सामाइयमाइयाइं[9] 'एक्कारस अंगाइं'[10] अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं[11] अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

मेहस्स भिक्खुपडिमा-पदं

१९६ तए णं समणे भगवं महावीरे रायगिहाओ नयराओ गुणसिलयाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

---

१ सं० पा०—मुंडावियं जाव सयमेव ।

२. °वत्तियं (क, ख, ग, घ) ।

३ °माइक्खिउं (क, ग, घ) ।

४ सं० पा०—पव्वावेइ जाव जायामाया-वत्तियं ।

५ उट्ठाय (क, ग, घ) ।

६ सं० पा०—चिट्ठइ जाव संजमेणं ।

७. सं० पा०—अणगार-वण्णओ भाणियव्वो । वृत्तावयं पाठ उल्लिखितोऽस्ति, तत्र 'दंते' इति विशेषणं नास्ति ।

८ अंतिए तहारूवाणं थेराणं (क, ख, ग, घ) । अत्र लेखने 'अंतिए' पदस्य विपर्ययो जात इति संभाव्यते । (१।१।२०८) सूत्रे पि स्वीकृतपाठवत् पाठो लभ्यते—

९ °माइयाणि (क, ग), सामातियमाइयाणि (ख) ।

१० °अंगाति (ख), एक्कारसगाइं (घ) ।

११ °खवणेहिं (ख) । पू०—ना० १।१।२०१ ।

१९७ तए णं से मेहे अणगारे अण्णया कयाइ समणं भगवं महावीरं वंदइ नमसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए।
अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि ॥

१९८ तए णं से मेहे अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए[1] समाणे मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ।
मासियं भिक्खुपडिमं 'अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं'[2] सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोभेइ तीरेइ किट्टेइ, सम्मं काएणं फासेत्ता पालेत्ता सोभेत्ता तीरेत्ता किट्टेत्ता पुणरवि समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे दोमासियं भिक्खु-पडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए।
अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि।
जहा पढमाए अभिलावो तहा दोच्चाए तच्चाए चउत्थाए पंचमाए छम्मासियाए सत्तमासियाए पढमसत्तराइंदियाए दोच्चसत्तराइंदियाए[3] तच्चसत्तराइंदियाए[4] अहोराइयाए[5] एगराइयाए[6] वि ॥

मेहस्स गुणरयणसंवच्छर-पदं

१९९ तए णं से मेहे अणगारे बारस भिक्खुपडिमाओ सम्मं काएणं फासेत्ता पालेत्ता सोभेत्ता तीरेत्ता किट्टेत्ता पुणरवि वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे गुणरयणसंवच्छरं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए।
अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि ॥

२०० तए णं से मेहे अणगारे पढमं मासं चउत्थं-चउत्थेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं, दिया ठाणुक्कुडुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे, रत्तिं वीरासणेणं अवाउडएणं[7]। दोच्चं मासं छट्ठं-छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दिया ठाणु-क्कुडुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे, रत्तिं वीरासणेणं अवाउडएणं। तच्चं मासं अट्ठमं-अट्ठमेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं, दिया ठाणुक्कुडुए सूराभि-मुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे, रत्तिं वीरासणेणं अवाउडएणं।

---

१. अणुण्णाते (ग)।
२. स्थानाङ्गे (७।१३) एवं पाठो लभ्यते—अहासुत्तं अहाअत्थं अहातच्चं अहामग्गं अहाकप्पं।
३ दोच्चा° (ख), बीया° (घ)।
४. तच्चा° (ख), तीया° (घ)।
५ अहोराइंदियाए (ख, घ)।
६ एगराइंदियाए (ग, घ)।
७ अवाउडतेण (ख); अवाउडेण (घ); अप्रा-वृतेन अविद्यमानप्रावरणेन। स एव वा अप्रावृत. णकारस्त्वलकारार्थ· (वृ)।

चउत्थं मासं दसमं-दसमेणं अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण, दिया ठाणुक्कुडुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे, रत्तिं वीरासणेण अवाउडएण ।

पचम मास दुवालसम-दुवालसमेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेणं, दिया ठाणुक्कुडुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे, रत्तिं वीरासणेण अवाउडएण ।

एव एएण अभिलावेण छट्ठे चोद्दसम-चोद्दसमेण, सत्तमे सोलसम-सोलसमेण, अट्ठमे अट्ठारसमं - अट्ठारसमेण, नवमे वीसइम-वीसइमेणं, दसमे बावीसइम-बावीसइमेणं, एक्कारसमे चउव्वीसइम-चउव्वीसइमेण, बारसमे छव्वीसइमं-छव्वीसइमेण, तेरसमे अट्ठावीसइम-अट्ठावीसइमेण, चोद्दसमे तीसइमं-तीसइमेण, पन्नरसमे बत्तीसइम-बत्तीसइमेण, सोलसमे चउत्तीसइम-चउत्तीसइमेण—अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेण, दिया ठाणुक्कुडुए सुराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे, वीरासणेण[1] अवाउडएण य ॥

२०१. तए ण से मेहे अणगारे गुणरयणसवच्छर तवोकम्म अहासुत्तं [2]•अहाकप्प अहामग्गं° सम्म काएण फासेइ पालेइ सोभेइ तीरेइ किट्टेइ अहासुत्त अहाकप्प[3] •अहामग्ग सम्म काएण फासेत्ता पालेत्ता सोभेत्ता तीरेत्ता° किट्टेत्ता समणं भगवं महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता बहूहिं छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

मेहस्स सरीरदसा-पदं

२०२ तए ण से मेहे अणगारे तेण 'ओरालेण[4] विपुलेण सस्सिरीएण पयत्तेणं पग्गहिएणं[5] कल्लाणेण सिवेण धन्नेण मगल्लेणं उदग्गेण उदारेणं उत्तमेण महाणुभावेण तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे[6] निम्मसे किडिकिडियाभूए अट्ठिचम्मावणद्धे किसे धमणिसतए जाए यावि होत्था—जीवजीवेण गच्छइ, जीवजीवेण चिट्ठइ, भास भासित्ता गिलाइ, भास भासमाणे गिलाइ, भास भासिस्सामि त्ति गिलाइ। से जहानामए इगालसगडिया इ वा कट्ठसगडिया इ वा पत्तसगडिया इ वा तिलडासगडिया[7] इ वा एरडसगडिया[8] इ वा[9] उण्हे दिन्ना सुक्का[10] समाणी

---

१ वीरासणेण य (क, ख, ग)।

२ स० पा०—अहासुत्त जाव सम्म ।

३ स० पा०—अहाकप्प जाव किट्टेत्ता ।

४ उरालेण (ख, ग, घ)।

५ परिग्गहिएण (क, ख)।

६ भुक्खे (क, ग, घ)

७ तिलसगडिया (ग)।

८ एरडकट्ठसगडिया (ख)।

९ भगवती (२।१) सूत्रे स्कन्दकवर्णके कानिचित् पदानि अधिकानि विपर्ययं प्राप्तानि च वर्तन्ते, यथा—ओरालेण विउलेण पयत्तेण पग्गहिएण कल्लाणेण सिवेण धण्णेण मगल्लेण सस्सिरिएण उदग्गेण उदत्तेण उत्तमेण उदारेण महाणुभागेणं० । से जहा नामए कट्ठसगडिया इ वा पत्तसगडिया इ वा पत्ततिलभडसगडिया इ वा एरंडकट्ठसगडिया इ वा इगालसगडिया इ वा।

१० सुक्खा (ख, ग)।

ससद्द गच्छइ, ससद्दं चिट्ठइ, एवामेव मेहे अणगारे ससद्दं गच्छइ, ससद्द चिट्ठइ, उवचिए तवेण, अवचिए मससोणिएण, हुयासणे इव भासरासिपरिच्छन्ने तवेण तेएण तवतेयसिरीए अईव-अईव उवसोभेमाणे-उवसोभेमाणे चिट्ठइ ॥

मेहस्स विपुलपव्वए अणसण-पद

२०३. तेण कालेणं तेण समएण समणे भगव महावीरे आइगरे तित्थगरे जाव[1] पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे सुहसुहेण विहरमाणे जेणामेव रायगिहे नयरे जेणामेव गुणसिलए चेइए तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥

२०४ तए ण तस्स मेहस्स अणगारस्स राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[2] •चितिए पत्थिए मणोगए सकप्पे° समुप्पज्जित्था—एव खलु अह इमेण ओरालेण[3]•विपुलेण सस्सिरीएण पयत्तेण पग्गहिएण कल्लाणेण सिवेण धन्नेण मगल्लेण उदग्गेण उदारेणं उत्तमेण महाणुभावेण तवोकम्मेण सुक्के लुक्खे निम्मसे किडिकिडियाभूए अट्ठिचम्मा-वणद्धे किसे धमणिसतए जाए यावि होत्था—जीवजीवेण गच्छामि, जीव-जीवेण चिट्ठामि, भास भासित्ता गिलामि, भास भासमाणे गिलामि°, भास भासिस्सामि त्ति गिलामि। त अत्थि ता[4] मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिस-कार[5]-परक्कमे सद्धा-धिइ-सवेगे, त जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसकार[6]-परक्कमे सद्धा-धिइ-सवेगे, जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, ताव ता[7] मे सेय कल्ल पाउप्प-भायाए रयणीए जाव[8] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते[9] समण भगव महावीर वदित्ता नमसित्ता समणेण भगवया महावीरेण अब्भणु-ण्णायस्स समाणस्स सयमेव पच महव्वयाइ आरुहित्ता गोयमादीए समणे निग्गथे निग्गथीओ य खामेता तहारूवेहिं कडाईहिं थेरेहिं सद्धि विउल पव्वय सणिय-सणिय दुरुहित्ता सयमेव मेहघणसण्णिगास पुढविसिलापट्टय पडिलेहित्ता सलेहणा-झूसणा-झूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खियस्स पाओवगयस्स काल अणवकखमाणस्स विहरित्तए—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव[10] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते जेणेव समणे भगव

---

१ ओ० १६।

२. स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।

३ स० पा०—उरालेण तहेव जाव भासं।

४ तामेव (ख, ग)।

५ पुरिसक्कार (क, घ)।

६ पुरिसगार (क)।

७ ताव (क, ग, घ), तावताव (वृ)।

८ ना० १।१।२४।

६. जलते सूरिए (ख, ग)।

१०. ना० १।१।२४।

महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता नच्चासण्णे नाइदूरे सुस्सूसमाणे नमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे[1] पज्जुवासइ ॥

२०५ 'मेहा इ![2]' समणे भगवं महावीरे मेहं अणगारं एवं वयासी—से नूणं तव मेहा! राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[3] °चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं ओरालेणं[4] तवोकम्मेणं सुक्के जाव[5] जेणेव[6] इहं तेणेव हव्वमागए।

से नूणं मेहा! अट्ठे समट्ठे?

हंता अत्थि।

अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेहि ॥

२०६ तए णं से मेहे अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए जाव[7] हरिसवस-विसप्पमाणहियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता सयमेव पंच महव्वयाइं आरुहेइ[8], आरुहेत्ता गोयमादीए[9] समणे निग्गंथे निग्गंथीओ य खामेइ, खामेत्ता तहारूवेहिं कडाईहिं थेरेहिं सद्धिं विपुलं पव्वयं सणियं-सणियं दुरुहइ, दुरुहित्ता सयमेव मेहघणसण्णिगासं[10] पुढविसिलापट्टयं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसंथारगं संथरइ, संथरित्ता दब्भसंथारगं दुरुहइ, दुरुहित्ता पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसण्णे करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—नमोत्थु णं अरहंताणं जाव[11] सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपत्ताणं। नमोत्थु णं समणस्स जाव सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपाविउकामस्स मम धम्मायरियस्स। वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगए, पासउ मे भगवं तत्थगए इहगयं ति कट्टु वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—पुव्विं पि य णं मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए, मुसावाए अदिण्णादाणे मेहुणे परिग्गहे कोहे माणे माया लोहे पेज्जे दोसे कलहे

---

१ पजलियडे (ख), अजलियडे (घ)।

२ मेह त्ति (ख), मेघाइ (घ)।

३ सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।

४ ना०—१।१।२०४।

५ पू० ना० १।१।२०४।

६ अत्र १।१।२०४ सूत्रस्य 'जेणेव समणे भगवं महावीरे' अंत पूर्ववर्ती पाठः समर्पितोस्ति।

७ ना० १।१।१९।

८ आरुभेइ (ख), आरुहति (घ)।

९ गोयमादि (क, ख, ग, घ)।

१० अतोग्रे १।५।८३ सूत्रे 'देवसण्णिवाय' इति पद विद्यते।

११ ओ० सू० २१।

अब्भक्खाणे पेसुण्णे परपरिवाए अरइरई मायामोसे मिच्छादंसणसल्ले-पच्चक्खाए ।

इयाणिं पि णं अहं तस्सेव अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जाव मिच्छा-दंसणसल्लं पच्चक्खामि, सव्वं असण-पाण-खाइम-साइमं चउव्विहंपि आहारं पच्चक्खामि जावज्जीवाए ।

जंपि य इमं सरीरं इट्ठं कंतं पियं[1] °मणुण्णं मणामं थेज्जं वेस्सासियं सम्मयं बहुमयं अणुमयं भंडकरंडगसमाणं मा णं सीयं मा णं उण्हं मा णं खुहा मा णं पिवासा मा णं चोरा मा णं वाला मा णं दंसा मा णं मसया मा णं वाइय-पित्तिय-सेंभिय-सण्णिवाइय[2]° विविहा रोगायंका परीसहोवसग्गा 'फुसंतीति कट्टु'[3] एयं[4] पि य णं चरमेहिं[5] ऊसास-नीसासेहिं वोसिरामि त्ति कट्टु संलेहणा-झूसणा-झूसिए[6] भत्तपाण-पडियाइक्खिए पाओवगए कालं अणवकंखमाणे विहरइ ।।

२०७ तए णं ते थेरा भगवंतो मेहस्स अणगारस्स अगिलाए वेयावडियं करेंति ।।

मेहस्स समाहिमरण-पदं

२०८ तए णं से मेहे अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं[7] एक्कारसअंगाइं अहिज्जित्ता, बहुपडिपुण्णाइं दुवालस-वरिसाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झोसेत्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेएत्ता, आलोइय-पडिक्कंते उद्धियसल्ले समाहिपत्ते अणुपुव्वेणं कालगए ।।

थेरेहिं मेहस्स आयारभंडसमप्पण-पदं

२०९ तए णं ते थेरा भगवंतो मेहं अणगारं अणुपुव्वेणं कालगयं पासंति, पासित्ता परिनेव्वाणवत्तियं[8] काउस्सग्गं करेंति, करेत्ता मेहस्स आयारभंडगं गेण्हंति, विउलाओ पव्वयाओ सणियं-सणियं 'पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता'[9] जेणामेव गुणसिलए चेइए, जेणामेव समणे भगवं महावीरे, तेणामेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं

---

१ सं० पा०—पियं जाव विविहा ।
२ इह प्रथमाबहुवचनलोपो दृश्य (भ० वृ) ।
३ फुसंति चिट्ठंति (ग, घ) ।
४ एवं (क, ख, ग, घ) ।
५. चरिमेहिं (घ) ।
६ संलेखनास्पर्शक (वृ), संलेहणाभूसणाभूसिए (वृपा) ।
७. सामाइयाइं (ख) ।
८ परिनिव्वाणवत्तियं (ख, घ), परिनिव्वाण-पत्तियं (ग) ।
९ पच्चोरुभंति २ (क) ।

वयासी—एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी मेहे नामं अणगारे पगइभद्दए[1] •पगइउवसंते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउमद्दवसंपण्णे अल्लीणे[2]° विणीए, से णं देवाणुप्पिएहिं अब्भणुण्णाए समाणे गोयमाइए समणे निग्गंथे निग्गंथीओ य खामेत्ता अम्हेहिं सद्धिं विपुलं पव्वयं सणियं-सणियं दुरुहइ, सयमेव मेघघणसण्णिगासं पुढविसिलं पडिलेहेइ[3], भत्तपाण-पडियाइक्खिए अणुपुव्वेणं कालगए।

एस णं देवाणुप्पिया! मेहस्स अणगारस्स आयारभंडए॥

गोयमपुच्छाए भगवओ उत्तर-पदं

२१० भंते! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी मेहे नामं अणगारे से णं भंते! मेहे अणगारे कालमासे कालं किच्चा कहिं गए? कहिं उववण्णे?

२११ गोयमा! इ[4] समणे भगवं महावीरे गोयमं एवं वयासी—एवं खलु गोयमा! मम अंतेवासी मेहे नामं अणगारे पगइभद्दए जाव[5] विणीए, से णं तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं[6] एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता, बारस भिक्खु-पडिमाओ गुणरयण-संवच्छरं तवोकम्मं काएणं फासेत्ता जाव[7] किट्टेत्ता, मए अब्भणुण्णाए समाणे गोयमाई थेरे खामेत्ता, तहारूवेहिं[8] •कडाईहिं थेरेहिं सद्धिं° विपुलं पव्वयं [सणियं-सणियं?] दुरुहित्ता[9], दब्भसंथारगं संथरित्ता दब्भसंथारोवगए सयमेव पंचमहव्वए उच्चारेत्ता, बारस वासाइं सामण्णपरि-यागं पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कंते उद्धियसल्ले समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिम-सूर-गहगण-नक्खत्त-तारारूवाणं बहूइं जोयणाइं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसहस्साइं बहूइं जोयणसयसहस्साइं बहूओ जोयणकोडीओ बहूओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता सोहम्मीसाण-सणंकुमार-माहिंद-बंभ-[10] लंतग-महासुक्क-सहस्साराणय-पाणयारणच्चुए तिण्णि य अट्ठारसुत्तरे गेवेज्ज-विमाणावाससए वीईवइत्ता विजए महाविमाणे देवत्ताए उववण्णे।

---

१. सं० पा०—पगइभद्दए जाव विणीए।
२. प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ 'अल्लीणे' इत्यस्य अनन्तरं 'भद्दए' इति पाठोऽस्ति।
३. अत्र पुनर्लेखने अपूर्णो पाठोऽस्ति। अस्य पूर्त्तये द्रष्टव्यं १।१।२०६ सूत्रम्।
४. दि (क, ख, ग, घ)।
५. ना० १।१।२०६।
६. सामाइयाइं (ख)।
७. ना० १।१।२०१।
८. सं० पा०—तहारूवेहिं जाव विपुलं।
९. अत्र पुनर्लेखने अपूर्णो पाठोऽस्ति। अस्य पूर्त्तये द्रष्टव्यं १।१।२०६ सूत्रम्।
१०. बंभलोक (घ)।

तत्थ णं अत्थेगइयाण देवाण तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। तत्थ ण मेहस्स वि देवस्स तेत्तीस सागरोवमाइं ठिई[1] ॥

२१२. एस ण भंते ! मेहे देवे ताओ देवलोयाओ आउक्खएण ठिइक्खएण भवक्खएण अणतर चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिनिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणमंत काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

२१३. एव खलु जंबू ! समणेण भगवया महावीरेण आइगरेण तित्थगरेण जाव[2] सिद्धिगइनामधेज्जं ठाण संपत्तेण अप्पोलंभ[3]-निमित्त पढमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते।

—त्ति बेमि।

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

महुरेहिं निउणेहिं, वयणेहिं चोययति आयरिया।
सीसे कहिंचि खलिए, जह मेहमुणिं महावीरो ॥१॥

---

१ × (क, ख, ग)।
२. ना० १।१।७।
३. अप्पोपालभ (क्व०), एकस्या वृत्तिप्रतावपि 'अप्पोपालभ' इति लिखितमस्ति।

बीयं अज्झयणं

संघाडे

उक्खेव-पदं

१ जइ ण भंते ! समणेण भगवया महावीरेण पढमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, बितियस्स ण भंते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

२ एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे होत्था—वण्णओ[1] ॥

३. तस्स[2] णं रायगिहस्स नयरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए गुणसिलए नामं चेइए होत्था—वण्णओ[3] ।

४ तस्स णं गुणसिलयस्स चेइयस्स अदूरसामंते, एत्थ णं महं एगं जिण्णुज्जाणे यावि होत्था—विणट्ठदेवउल[4]-परिसडियतोरणघरे नाणाविहगुच्छ-गुम्म-लया-वल्लि-वच्छच्छाइए[5] अणेग-वालसय-संकणिज्जे यावि होत्था ॥

५ तस्स णं जिण्णुज्जाणस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एगे भग्गकूवे[6] यावि होत्था ॥

६ तस्स णं भग्गकूवस्स अदूरसामंते, एत्थ णं महं एगे मालुयाकच्छए यावि होत्था—किण्हे किण्होभासे जाव[7] रम्मे महामेहनिउरंबभूए[8] बहूहिं रुक्खेहि य गुच्छेहि य गुम्मेहि य लयाहि य वल्लीहि य तणेहि य कुसेहि[9] य खण्णुएहि[10] य संछण्णे पलिच्छण्णे अंतो झुसिरे बाहिं गंभीरे अणेग-वालसय-संकणिज्जे यावि होत्था ॥

---

१ नगरवण्णओ (क, ग), नगरस्सवण्णओ (ग), ओ० सू० १ ।

२ नत्थ (ग) ।

३ ओ० सू० २-१३ ।

४. विणट्ठदेवउले (ख, घ) ।

५ ०च्छातिए (ग) ।

६. कूवए (क, ख, ग) ।

७ ओ० सू० ४ ।

८ वाचनान्तरे त्विदमधिकं पठ्यते—पत्तिए पुप्फिए फलिए हरियगरेरिज्जमाणे सिरीए अईव-अईव उवसोभेमाणे चिट्ठइ (वृ) ।

९. कुसएहि (क), कुविएहि (वृपा) ।

१०. खाणुएहि (ख), खत्तएहि (घ, वृपा) ।

धणसत्थवाह-पदं

७. तत्थ णं रायगिहे नयरे धणे नाम सत्थवाहे—अड्ढे दित्ते[1] •वित्थिण्ण[2]-विउल-भवण-सयणासण-जाण-वाहणाइण्णे बहुदासी-दास-गो-महिस-गवेलगप्पभूए बहुधण-बहुजायरूवरयए आओग-पओग-संपउत्ते विच्छड्डिय°-विउल[3]-भत्तपाणे ॥

८. तस्स णं धणस्स सत्थवाहस्स भद्दा[4] नाम भारिया होत्था—सुकुमालपाणिपाया अहीणपडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरा लक्खण-वंजण-गुणोववेया माणुम्माण-प्पमाण-पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वंगसुंदरंगी ससिसोमागार-कंत-पियदंसणा सुरूवा करयल-परिमिय-तिवलिय[5]-वलियमज्झा[6] कुंडलुल्लिहियगंडलेहा कोमुइ-रयणियर[7]-पडिपुण्ण-सोमवयणा[8] सिंगारागार-चारुवेसा[9] •संगय-गय-हसिय-भणिय-विहिय-विलास-सललिय-संलाव-निउण-जुत्तोवयार-कुसला पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा° पडिरूवा वंझा अवियाउरी जाणुकोप्परमाया यावि होत्था ॥

९ तस्स णं धणस्स सत्थवाहस्स पंथए नाम दासचेडे होत्था—सव्वंगसुंदरंगे मंसो-वचिए बालकीलावणकुसले यावि होत्था ॥

१० तए णं से धणे सत्थवाहे रायगिहे नयरे बहूणं नगर-निगम[10]-सेट्ठि-सत्थवाहाणं अट्ठारसण्ह य सेणिप्पसेणीणं बहूसु कज्जेसु य कुडुंबेसु य मंतेसु य जाव[11] चक्खु-भूए यावि होत्था। नियगस्स वि य णं कुडुंबस्स बहूसु कज्जेसु य जाव चक्खुभूए यावि होत्था ॥

विजयतक्कर-पदं

११. तत्थ णं रायगिहे नयरे विजए नामं तक्करे होत्था—पावचंडाल-रूवे भीमतररुद्द-कम्मे आरुसिय-दित्त-रत्तनयणे[12] खरफरुस-महल्ल-विगय-बीभच्छदाढिए असंपुडियउट्ठे उद्धय-पइण्ण-लंबतमुद्धए भमर-राहुवण्णे निरणुक्कोसे निरणुतावे दारुणे पइभए[13] निसंसइए[14] निरणुकंपे अहीव एगंतदिट्ठीए खुरेव एगंतधाराए गिद्धेव आमिसतल्लिच्छे अग्गिमिव सव्वभक्खी जलमिव सव्वग्गाही उक्कंचण-वंचण-माया-नियडि-कूड कवड-साइ-संपओग-बहुले चिरनगरविणट्ठ-दुट्ठसीलायार-

---

१ सं० पा०—दित्ते जाव विउलभत्तपाणे।
२ विच्छिन्न (ओ० सू० १४)।
३. पउर (ओ० सू० १४)।
४ सुभद्दा (ख)।
५. पसत्थ-तिवली (ओ० सू० १५)।
६ मज्झा (क, ख, घ)।
७. रयणियर-विमल (१।१।१७)।
८ सोमचंदवयणा (ग)।
९ सं० पा०—चारुवेसा जाव पडिरूवा।
१० नियम (क, ग)।
११ ना० १।१।१६।
१२ रत्तयनयणे (क)।
१३ पतिभते (ग)।
१४ नेससत्तिए (ख), निससे (वृपा)।

चरित्ते जूयप्पसंगी मज्जप्पसंगी भोज्जप्पसंगी मंसप्पसगी दारुणे हिययदारए[1] साहसिए सधिच्छेयए उवहिए विस्सभघाई आलीवग[2]-तित्थभेय-लहुहत्थसपउत्ते परस्स दव्वहरणम्मि निच्चं अणुवद्धे तिव्ववेरे रायगिहस्स नगरस्स वहूणि अइगमणाणि य निग्गमणाणि य वाराणि य अववाराणि य छिंडीओ य खंडीओ य नगरनिद्धमणाणि य सवट्टणाणि य निव्वट्टणाणि य जूयखलयाणि य पाणागाराणि य वेसागाराणि य तक्करट्ठाणाणि य तक्करघराणि य सिंघाडगाणि य तिगाणि य चउक्काणि य चच्चराणि य नागघराणि य भूयघराणि य जक्खदेउलाणि य सभाणि य पवाणि य पणियसालाणि य सुन्नघराणि य आभोएमाणे मग्गमाणे गवेसमाणे, वहुजणस्स छिद्देसु य विसमेसु य विहुरेसु[3] य वसणेसु य अब्भुदएसु य उस्सवेसु य पसवेसु य तिहीसु य छणेसु य जण्णेसु य पव्वणीसु य मत्तपमत्तस्स य वक्खित्तस्स य वाउलस्स य सुहियस्स य दुहियस्स य विदेसत्थस्स य विप्पवसियस्स य मग्ग च छिद्द च विरह[4] च अतर च मग्गमाणे गवेसमाणे एव च ण विहरइ। वहिया वि य ण रायगिहस्स नगरस्स आरामेसु य उज्जाणेसु य वावि-पोक्खरणि-दीहिय-गुंजालिय-सर-सरपंतिय सरसरपतियासु य जिण्णुज्जाणेसु य भग्गकूवेसु[5] य मालुयाकच्छएसु य सुसाणेसु य 'गिरिकदरेसु य लेणेसु य'[6] उवट्ठाणेसु य वहुजणस्स छिद्देसु य जाव अतर च मग्गमाणे गवेसमाणे एव च ण विहरइ ॥

भद्दाए संताणमणोरह-पद

१२ तए ण तीसे भद्दाए भारियाए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुवजागरियं जागरमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए[7] •चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे° समुप्पज्जित्था—अह धणेण सत्थवाहेण सद्धिं वहूणि वासाणि सद्द-फरिस-रस-गंध[8]-रूवाणि माणुस्सगाइं कामभोगाइ पच्चणुब्भवमाणी विहरामि, नो चेव ण अह दारगं वा दारियं[9] वा पयामि[10]।

त धण्णाओ ण ताओ अम्मयाओ[11], •सपुण्णाओ ण ताओ अम्मयाओ, कयत्थाओ ण ताओ अम्मयाओ, कयपुण्णाओ ण ताओ अम्मयाओ, कयलक्खणाओ

---

१. जणहियाकारए (वृपा)।
२. आलियग (क, ख)।
३ विहरेसु (क, ख, घ)।
४ विहर (ख, ग)।
५ भग्गकूवएसु (क, ख, घ)।
६. °लेणेसु य देवउलेसु य (क); गिरिकदरलेण (ख, ग, घ)।
७. स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
८. × (क, ग, घ)।
९. दारिग (क, ख)।
१० पयायामि (ग)।
११. स० पा०—अम्मयाओ जाव सुलद्धे।

ण ताओ अम्मयाओ, कयविहवाओ ण ताओ अम्मयाओ,° सुलद्धे णं माणुस्सए जम्मजीवियफले तासिं अम्मयाणं, जासिं मण्णे नियगकुच्छिसभूयाइं थणदुद्ध-लुद्धयाइं महुरसमुल्लावगाइं मम्मणपयपियाइं थणमूला[1] कक्खदेसभाग अभिसरमाणाइं[2] मुद्धयाइं थणयं पियंति,[3] तओ य कोमलकमलोवमेहिं हत्थेहिं गिण्हिऊण उच्छग[4]-निवेसियाणि देंति समुल्लावए पिए सुमहुरे पुणो-पुणो मजुलप्पभणिए। 'त णं अह'[5] अधण्णा अपुण्णा अकयलक्खणा एत्तो एगमवि न पत्ता। त सेय मम कल्ल पाउप्पभाए रयणीए जाव[6] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते धण सत्थवाह आपुच्छित्ता धणेण सत्थवाहेण अब्भणुण्णाया समाणी सुवहु विपुल असण पाण खाइम साइम उवक्खडावेत्ता सुवहु पुप्फ-वत्थ[7]-गध-मल्लालकार गहाय वहूहिं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संवधि-परियण-महिलाहिं सद्धिं सपरिवुडा जाइं इमाइं रायगिहस्स नयरस्स वहिया नागाणि य भूयाणि य जक्खाणि य इदाणि य खदाणि य रुद्दाणि य सिवाणि य वेसमणाणि य, तत्थ ण वहूण नागपडिमाण य जाव वेसमणपडिमाण य महरिह पुप्फच्चणिय करेत्ता जन्नुपायपडियाए एव वइत्तए[8]—जइ णह[9] देवाणुप्पिया! दारग वा दारिय वा पयामि[10], 'तो ण'[11] अह तुब्भ जाय च दायं च भाय च अक्खयणिहिं च अणुवड्ढेमि त्ति कट्टु उवाइयं उवाइत्तए[12]—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभाए रयणीए जाव[13] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते जेणामेव धणे सत्थवाहे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एव वयासी—

एवं खलु अह देवाणुप्पिया! तुब्भेहिं सद्धिं वहूइ वासाइ[14] °सद्द-फरिस-रस-गध-रूवाइ माणुस्सगाइ कामभोगाइ पच्चणुब्भवमाणी विहरामि; नो चेव णं अहं दारग वा दारिय वा पयामि। त धण्णाओ ण ताओ अम्मयाओ जाव कोमलकमलोवमेहिं हत्थेहिं गिण्हिऊण उच्छग-निवेसियाणि° देंति समुल्लावए

१. थणमूले (क)।
२. अइसर° (ख, ग)।
३. 'अतगड' सूत्रे (३।८।२६) 'मुद्धयाइ पुणो य' इतिपाठोऽस्ति। तद्वृत्तिकृता मुग्धकानि—अत्यव्यक्तविज्ञानानि भवन्तीति गम्यते, इति क्रियाया अध्याहार कृत। 'निरयावलियाओ' सूत्रे (३।४) 'पण्हयंति पुणो य' इति पाठो विद्यते।
४ उच्छगे (क, ख)।
५. अह णं (क, ख, ग)।
६. ना० १।१।२४।
७ × (ख, ग, घ)।
८. उवाइत्तए (क)।
९. ण अह (घ)।
१० पयायामि (क, ग)।
११ तेण (क, ख, ग)।
१२. उववाइत्तए (क)।
१३ ना० १।१।२४।
१४. स० पा०—वासाइ जाव देंति।

सुमहुरे पिए पुणो-पुणो मजुलप्पभणिए। त ण अह अहण्णा अपुण्णा अकय-लक्खणा एत्तो एगमवि न पत्ता। त इच्छामि ण देवाणुप्पिया! तुब्भेहि अब्भणुण्णाया समाणी विपुल असण[1] •पाण खाइम साइम उवक्खडावेत्ता जाव अक्खयणिहि च° अणुवड्ढेमि उवाइय करित्तए॥

१३ तए ण धणे सत्थवाहे भद्द भारिय एव वयासी—मम[2] पि य णं देवाणुप्पिए! एस चेव मणोरहे—'कह ण'[3] तुम दारग वा दारिय वा पयाएज्जासि?—भद्दाए सत्थवाहीए एयमट्ठ अणुजाणइ॥

१४ तए ण सा भद्दा सत्थवाही धणेण सत्थवाहेण अब्भणुण्णाया समाणी हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणदिया जाव[4] हरिसवस-विसप्पमाण-हियया विपुल असण-पाण-खाइम-साइम उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता सुबहु पुप्फ-वत्थ[5]-गधमल्लालकार गेण्हइ, गेण्हित्ता सयाओ गिहाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता रायगिह नयर मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुक्खरिणीए तीरे सुबहु पुप्फ[6]-•वत्थ-गध°मल्लालकार ठवेइ, ठवेत्ता पुक्खरिणिं ओगाहेइ, ओगाहित्ता जलमज्जण करेइ, करेत्ता जलकीड करेइ, करेत्ता ण्हाया कयबलिकम्मा उल्लपडसाडिगा जाइ तत्थ उप्पलाइ[7] •पउमाइ कुमुयाइ णलिणाइ सुभगाइ सोगधियाइ पोडरीयाइ महापोडरीयाइ सयवत्ताइ° सहस्सपत्ताइ ताइ गिण्हइ, गिण्हित्ता पुक्खरिणीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता त पुप्फ-वत्थ-गध-मल्ल [मल्लालकार?] गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणामेव नागघरए य जाव[8] वेसमणघरए य तेणामेव[9] उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तत्थ ण नागपडिमाण य जाव[10] वेसमणपडिमाण य आलोए पणामं करेइ, ईसि पच्चुण्णमइ, पच्चुण्णमित्ता लोमहत्थग परामुसइ, परामुसित्ता नागपडिमाओ य जाव वेसमणपडिमाओ य लोमहत्थएण[11] पमज्जइ, पमज्जित्ता उदगधाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खेत्ता पम्हल-सूमालाए गधकासाईए गायाइ लूहेइ, लूहेत्ता महरिह 'वत्थारुहण च मल्लारुहण च गधारुहण च वण्णारुहण'[12] च करेइ, करेत्ता धूव डहइ, डहित्ता जन्नुपायपडिया पजलिउडा एव वयासी—

---

१ स० पा०—असण जाव अणुवड्ढेमि।
२. मम (ग)।
३. कहण्ण (क, घ); कह ण (ख)।
४. ना० १।१।१६।
५ × (ख, ग, घ)।
६ स० पा०—पुप्फ जाव मल्लालकार।
७ स० पा०—उप्पलाइ जाव सहस्सपत्ताइ।
८. ना० १।२।१२।
९. तेणेव (क, ख, ग, घ)।
१० ना० १।२।१२।
११ °हत्थेण (ख, ग, घ)।
१२. रायपसेणइय (२९१) सूत्रे असौ पाठः किंचिद् भेदेन लभ्यते—पुप्फारुहण मल्लारुहण चुण्णारुहण वत्थारुहण आभरणारुहण।

जइ णं अहं दारग वा दारिय वा पयामि तो ण अह जाय च[1] •दाय च भाय च अक्खयणिहिं च• अणुवड्ढेमि त्ति कट्टु उवाइय करेइ, करेत्ता जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता त विपुल असण-पाण-खाइम-साइम आसाएमाणी[2] •विसाएमाणी परिभाएमाणी परिभुजेमाणी एव च ण• विहरइ। जिमिय[3]•भुत्तुत्तरागया वि य ण समाणा आयता चोक्खा परम• सुइभूया जेणेव सए गिहे तेणेव उवागया॥

१५ अदुत्तर च णं भद्दा सत्थवाही चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु विपुल असण-पाण-खाइम-साइम उवक्खडेइ, उवक्खडेत्ता बहवे नागा य जाव[4] वेसमणा य उवायमाणी नमसमाणी जाव एव च ण विहरइ॥

भद्दाए देवदिन्न-पुत्तपसव-पदं

१६. तए ण सा भद्दा सत्थवाही अण्णया कयाइ[5] केणइ कालतरेण आवण्णसत्ता जाया यावि होत्था॥

१७ तए ण तीसे भद्दाए सत्थवाहीए [तस्स गब्भस्स ?][6] दोसु मासेसु वीइक्कतेसु तइए मासे वट्टमाणे इमेयारूवे दोहले पाउब्भूए—धण्णाओ ण ताओ अम्मयाओ जाव[7] कयलक्खणाओ ण ताओ अम्मयाओ, जाओ ण विउल असण पाण खाइम साइम सुवहुय पुप्फ-वत्थ-गध-मल्लालकार गहाय मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परियण-महिलियाहिं[8] सद्धि सपरिवुडाओ रायगिह नयर मज्झमज्झेण निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता पोक्खरिणिं ओगाहेति, ओगाहित्ता ण्हायाओ कयवलिकम्माओ सव्वालकार-विभूसियाओ विपुल असण पाण खाइम साइम आसाएमाणीओ[9] •विसाए-माणीओ परिभाएमाणीओ• परिभुजेमाणीओ दोहल विणेति—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभाए रयणीए जाव[10] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते जेणेव धण सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धण सत्थवाह एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया! मम तस्स गब्भस्स[11]

---

१. स० पा०—जाय च जाव अणुवड्ढेमि।
२. स० पा०—आसएमाणी जाव विहरइ।
३. स० पा०—जिमिय जाव सुइभूया।
४. ना० १।२।१२।
५ कयाइ (क)।
६ १।१।३३ सूत्रे 'तइए मासे वट्टमाणे तस्स गब्भस्स दोहलकालसमयसि' इति पाठो विद्यते। प्रस्तुत सूत्रे पि किंचिदग्रे 'तस्स गब्भस्स' इति पाठोस्ति। तेनात्रापि 'तस्स गब्भस्स' इति पाठो युज्यते।
७ ना० १।२।१२।
८. १।२।१२ सूत्रे 'महिलाहिं' पाठो विद्यते।
९ सं० पा०—आसाएमाणीओ जाव परिभुजे-माणीओ।
१० ना० १।१।२४।
११ स० पा०—गब्भस्स जाव विणेंति।

कक्खसि अल्लियावेइ[1], अल्लियावेत्ता उत्तरिज्जेणं पिहेइ[2], पिहेत्ता सिग्घ तुरियं चवल वेइय[3] रायगिहस्स नगरस्स अवद्दारेण[4] निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव जिण्णुज्जाणे जेणेव भग्गकूवए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता देवदिन्नं दारयं जीवियाओ ववरोवेइ, ववरोवेत्ता आभरणालकार गेण्हइ, गेण्हित्ता देवदिन्नस्स दारगस्स सरीर निप्पाण निच्चेट्ठ जीवविप्पजढ भग्गकूवए पक्खिवइ[5], पक्खिवित्ता जेणेव मालुयाकच्छए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मालुयाकच्छय अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता निच्चले निप्फंदे तुसिणीए दिवस खवेमाणे[6] चिट्ठइ ।।

देवदिन्नस्स गवेसणा-पदं

२९ तए ण से पथए दासचेडए[7] तओ मुहुत्ततरस्स जेणेव देवदिन्ने दारए ठविए[8] तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता देवदिन्न दारग तसि ठाणसि अपासमाणे रोयमाणे कदमाणे [विलवमाणे ?][9] देवदिन्नस्स दारगस्स सव्वओ समता मग्गण-गवेसणं करेइ । देवदिन्नस्स दारगस्स कत्थइ सुइ वा खुइ वा पउत्ति वा अलभमाणे जेणेव सए गिहे जेणेव धणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धण सत्थवाह एव वयासी—एव खलु सामी ! भद्दा सत्थवाही देवदिन्न दारय ण्हायं जाव[10] सव्वालंकारविभूसिय मम हत्थसि[11] दलयइ । तए 'ण अह[12] देवदिन्न दारय कडीए गिण्हामि[13], °गिण्हित्ता सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमामि, बहूहिं डिंभएहि य डिंभियाहि य दारएहि य दारियाहि य कुमारएहि य कुमारियाहि य सद्धि सपरिवुडे जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता देवदिन्न दारग एगते ठावेमि, ठावेत्ता बहूहिं डिंभएहि य जाव कुमारियाहि य सद्धि सपरिवुडे पमत्ते यावि विहरामि ।

तए ण अह तओ मुहुत्ततरस्स जेणेव देवदिन्ने दारए ठविए तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता देवदिन्न दारग तसि ठाणसि अपासमाणे रोयमाणे कदमाणे [विलवमाणे ?] देवदिन्नस्स दारगस्स सव्वओ समता° मग्गण-गवेसण करेमि । त न नज्जइ णं सामी ! देवदिन्ने दारए केणइ नीते[14] वा अवहिते वा अक्खित्ते वा—पायवडिए धणस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठ निवेदेइ ।।

---

१. अलियावेइ (क, ख) ।
२ पेहेइ (क) ।
३ चेइय (क, ग) ।
४ अववारेण (क) ।
५. निक्खिवइ (ग) ।
६. क्षेपयन् (वृ) ।
७. चेडे (क, ख, घ) ।
८ ठाविए (ख) ।
९ १।२।३४ सूत्रे 'रोयमाणे जाव विलवमाणे' इति पाठोस्ति । अत्रापि तथैव युज्यते ।
१० ना० १।२।२६ ।
११ हत्थे (घ) ।
१२ ण ह (ख, ग) ।
१३ स० पा०—गिण्हामि जाव मग्गणगवेसण ।
१४. नितिए (क, ग) ।

३०. तए णं से धणे सत्थवाहे पंथयस्स दासचेडगस्स एयमट्ठं सोच्चा निसम्म[1] तेण य महया पुत्तसोएणाभिभूए समाणे परसु[2]-णियत्ते व चंपगपायवे 'धसत्ति' धरणी-यलंसि सव्वगेहिं सण्णिवडए ॥

३१ तए ण से धणे सत्थवाहे तओ मुहुत्ततरस्स आसत्थे पच्चागयपाणे देवदिन्नस्स दारगस्स सव्वओ समता मग्गण-गवेसणं करेइ। देवदिन्नस्स दारगस्स कत्थइ सुइं वा खुइ वा पउत्ति वा अलभमाणे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता महत्थं पाहुडं गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव नगरगुत्तिया[3] तेणेव उवा-गच्छइ, उवागच्छित्ता त महत्थ पाहुडं उवणेइ, उवणेत्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया! मम पुत्ते भद्दाए भारियाए अत्तए देवदिन्ने नाम दारए इट्ठे जाव[4] उबरपुप्फं पिव दुल्लहे सवणयाए, किमग पुण पासणयाए ? तए ण सा भद्दा देवदिन्न ण्हाय[5] सव्वालकारविभूसिय पंथगस्स[6] हत्थे दलाइ जाव[7] पाय-वडिए त मम निवेदेइ। तं इच्छामि ण देवाणुप्पिया! देवदिन्नस्स दारगस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं कय[8] ॥

३२ तए णं ते नगरगोत्तिया धणेणं सत्थवाहेण एव वुत्ता समाणा सण्णद्ध-बद्ध-वम्मिय-कवया उप्पीलिय-सरासण-पट्टिया[9] •पिणद्ध-गेविज्जा आविद्ध-विमल-वरचिंध-पट्टा° गहियाउह-पहरणा धणेण सत्थवाहेण सद्धि रायगिहस्स नगरस्स 'बहुसु अइगमणेसु'[11] य जाव[12] पवासु य मग्गण-गवेसणं करेमाणा रायगिहाओ नगराओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव जिण्णुज्जाणे जेणेव भग्गकूवए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता देवदिन्नस्स दारगस्स सरीरग निप्पाण निच्चेट्ठ जीवविप्पजढ पासति, पासित्ता हा हा अहो! अकज्जमित्ति कट्टु देव-दिन्नं दारगं भग्गकूवाओ उत्तारेति, धणस्स सत्थवाहस्स हत्थे दलयति ॥

विजयतक्करस्स निग्गह-पदं

३३ तए ण ते नगरगुत्तिया विजयस्स तक्करस्स पयमग्गमणुगच्छमाणा[13] जेणेव

---

१. निसम्मा (क, ख, ग)।
२ परिसुणियत्ते (ख, घ)।
३. नगरगोत्तिए (क)।
४ ना० १।१।१०६।
५ पू०—ना० १।२।२६।
६. पथदासस्स (ग)।
७. ना० १।२।२७,२६ ,
८ करेह (क)।
९. × (ग, वृपा)।
१०, स० पा०—पट्टिया जाव गहियाउहपहरणा।
११. बहूणि अइगमणाणि (क, ख, ग, घ)। यद्यपि १।१।११ सूत्रे 'अइगमणाणि य' पाठो विद्यते, किन्तु अत्र 'मग्गण-गवेसण' इति पदस्य सबधेन सप्तम्यन्तो युज्यते, यथा पवासु। इद पद द्वितीयान्त केन कारणेनात्र कृतमथवा सक्षेपीकरणे गृहीत-मिति न ज्ञातु शक्यते।
१२. ना० १।२।११।
१३ पयमग्गमणुगच्छमाणा २ (क), पायमग्ग° (घ)।

•दोसु मासेसु वीइक्कतेसु तइए मासे वट्टमाणे इमेयारूवे दोहले पाउब्भूए—धण्णाओ ण ताओ अम्मयाओ जाव दोहल° विणेंति । त इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहि अब्भणुण्णाया समाणी[1] •विउलं असण पाण खाइमं साइम सुबहुय पुप्फ-वत्थ-गध-मल्लालकार गहाय जाव दोहल° विणित्तए । अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिवध करेहि ॥

१८ तए ण सा भद्दा धणेण सत्थवाहेण अब्भणुण्णाया समाणी हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणदिया जाव[2] हरिसवस-विसप्पमाणहियया विपुल 'असण पाण खाइमं साइम उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता जाव[3] धूव[4] करेइ, करेत्ता जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ ॥

१९ तए ण ताओ मित्त-नाइ[5]-•नियग-सयण-संबंधि-परियण°-नगरमहिलाओ भद्दं सत्थवाहि सव्वालकारविभूसिय करेंति ॥

२०. तए ण सा भद्दा सत्थवाही ताहि मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-'परियण-नगरमहिलियाहि'[6] सद्धि त विपुल असण[7] •पाण खाइम साइम आसाएमाणी विसाएमाणी परिभाएमाणी° परिभुंजेमाणी दोहल विणेइ, विणेत्ता जामेव दिस पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ॥

२१. तए ण सा भद्दा सत्थवाही सपुण्णदोहला जाव[8] त गब्भ सुहसुहेण परिवहइ ॥

२२. तए ण सा भद्दा सत्थवाही नवण्ह मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाण वीइक्कताण सुकुमालपाणिपायं जाव[9] दारग पयाया ॥

२३ तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो पढमे दिवसे जायकम्मं करेंति, तहेव जाव[10]

---

१ स० पा०—समाणी जाव विहरित्तए (क, ख, ग, घ), यद्यपि पाठसशोधनप्रयुक्तेषु सर्वेष्वपि आदर्शेषु 'विहरित्तए' इति पाठो लभ्यते किन्तु अर्थमीमासया नासौ समीचीन प्रतिभाति । नास्य केनापि पाठेन पूर्तिर्जायते । सभवतो लिपिदोषेण 'विणित्तए' इत्यस्य 'विहरित्तए' इति रूपेण परिवर्तन जातम् । एतस्य पाठस्य स्वीकारेऽस्य पूर्तिरपि जायते । स्वकादर्शे 'विणित्तए' इति पदस्यार्थ कृतोऽस्ति ।

२. ना० १।१।१९ ।

३. ना० १।२।१४ ।

४ असण जाव उल्लपडसाडिगा जेणेव नागघराए जाव धूव (क, ख, ग, घ) । दोहदस्य उत्पत्ति', पत्युस्तस्य निवेदनं, तस्यपूर्तिश्च—एतेषु त्रिष्वपि स्थानेषु पाठस्य समानता युज्यते, किन्तु दोहदस्य पूर्तिविषयक. पाठस्ततो भिन्नोस्ति । अत्र अनेकधा जाव शब्द. प्रयुक्तोस्ति । तदनुसारेण पाठपूरणे 'पणाम करेइ' इत्यस्य पदस्य द्विधा प्रयोगो जायते, किन्तु प्रतिप्रामाण्यात् अनन्यगतिकैरस्माभिरन्याधाराभावेन यथा लब्ध एव पाठ स्वीकृतः ।

५ सं० पा०—नाइ जाव नगरमहिलाओ ।

६. १२ सूत्रे—परियण-महिलाहिं । १७ सूत्रे—परियण-महिलियाहिं । १८ सूत्रे—परियण-नगरमहिलियाहिं ।

७. स० पा०—असण जाव परिभुंजेमाणी ।

८ ना० १।१।७२ ।

९ ना० १।१।२० ।

१०. ना० १।१।८१ ।

विपुलं[1] असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेंति, तहेव[2] मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परियण भोयावेत्ता अयमेयारूव गोण्ण गुणनिप्फण्ण नामधेज्जं करेति—जम्हा णं अम्ह इमे दारए वहूणं नागपडिमाण य जाव[3] वेसमणपडिमाण य उवाइयलद्धे[4], त होउ णं अम्ह इमे दारए देवदिन्ने नामेणं ।

तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करेति देवदिन्ने त्ति ॥

२४ तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो जाय च दायं च भाय च अक्खयनिहि च अणुवड्ढेति ॥

देवदिन्नस्स कीडा-पदं

२५. तए ण से पंथए दासचेडए देवदिन्नस्स दारगस्स वालग्गाही जाए, देवदिन्न दारगं कडीए गेण्हइ, गेण्हित्ता वहूहिं डिंभएहि य डिंभियाहि य दारएहि य दारियाहि य कुमारएहि य कुमारियाहि य सद्धि सपरिवुडे अभिरमइ ॥

२६ तए ण सा भद्दा सत्थवाही अण्णया कयाइ देवदिन्नं दारय ण्हाय कयवलिकम्मं कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्त सव्वालकारविभूसिय करेइ, करेत्ता पथयस्स दासचेडगस्स हत्थयसि दलयइ ॥

२७ तए णं से पथए दासचेडए भद्दाए सत्थवाहीए हत्थाओ देवदिन्न दारग कडीए गेण्हइ, गेण्हित्ता सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, वहूहिं डिभएहि य[5] •डिभियाहि य दारएहि य दारियाहि य कुमारएहि य° कुमारियाहि य सद्धि सपरिवुडे जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता देवदिन्न दारग एगते ठावेइ, ठावेत्ता वहूहिं डिंभएहि य जाव कुमारियाहि य सद्धि संपरिवुडे पमत्ते[6] यावि विहरइ ॥

देवदिन्नस्स अपहार-पदं

२८. इमं च णं विजए तक्करे रायगिहस्स नगरस्स वहूणि [अइगमणाणि य निग्गम-णाणि य ?] वाराणि य अववाराणि य तहेव जाव[7] सुन्नघराणि य आभोएमाणे मग्गेमाणे गवेसमाणे जेणेव देवदिन्ने दारए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता देवदिन्न दारगं सव्वालकारविभूसियं पासइ, पासित्ता देवदिन्नस्स दारगस्स आभरणालकारेसु मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववण्णे पथयं दासचेडयं पमत्त पासइ, पासित्ता दिसालोय करेइ, करेत्ता देवदिन्न दारग गेण्हइ, गेण्हित्ता

---

१. तिपुल (ख) ।
२. पू०—ना० १।१।८१ ।
३. ना० १।२।१२ ।
४. ओवाइय° (क) ।
५. स० पा०—डिभएहि य जाव कुमारियाहि ।
६. पमग्गे (ख) ।
७ ना० १।२।११ ।

मालुयाकच्छए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता मालुयाकच्छगं अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता विजयं तक्करं ससक्खं सहोढं सगेवेज्जं जीवग्गाहं[1] गेण्हंति, गेण्हित्ता अट्ठि-मुट्ठि-जाणुकोप्पर-पहार-संभग्ग-महिय-गत्तं करेंति, करेत्ता अवउडा[2] बंधणं करेंति, करेत्ता देवदिन्नस्स दारगस्स आभरणं गेण्हंति, गेण्हित्ता विजयस्स तक्करस्स गीवाए बंधंति, बंधित्ता मालुयाकच्छगाओ पडिणिक्खमंति, पडिणिक्खमित्ता जेणेव रायगिहे नयरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता रायगिहं नयरं अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता रायगिहे नयरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु कसप्पहारे य 'छिवापहारे य लयापहारे'[3] य निवाएमाणा-निवाएमाणा छारं च धूलिं च कयवरं च उवरिं पकिरमाणा[4]-पकिरमाणा महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा एवं वयंति—एस णं देवाणुप्पिया ! विजए नामं तक्करे[5]—°पावचंडालरूवे भीमतररुद्दकम्मे आरुसिय-दित्त-रत्तनयणे खरफरुस-महल्ल-विगय-बीभच्छदाढिए असंपुडियउट्ठे उद्धुय-पइण्ण-लंबतमुद्धए भमर-राहुवण्णे निरणुक्कोसे निरणुतावे दारुणे पइभए निसंसइए निरणुकंपे अहीव एगंतदिट्ठीए खुरेव एगंतधाराए गिद्धेव आमिस-तल्लिच्छे अग्गिमिव° सव्वभक्खी बालघायए बालमारए।

तं नो खलु देवाणुप्पिया ! एयस्स केइ[6] राया वा रायमच्चे वा अवरज्झइ, नन्नत्थ[6] अप्पणो सयाइं कम्माइं अवरज्झंति त्ति कट्टु जेणामेव चारगसाला तेणामेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता हडिबंधणं करेंति, करेत्ता भत्तपाणनिरोहं करेंति, करेत्ता तिसंझं कसप्पहारे य[7] °छिवापहारे य लयापहारे य° निवाए-माणा विहरंति ॥

देवदिन्नस्स नीहरण-पदं

३४. तए णं से धणे सत्थवाहे मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं सद्धिं रोय-माणे[8] °कंदमाणे° विलवमाणे देवदिन्नस्स दारगस्स सरीरस्स[9] महया इड्ढी-सक्कार-समुदएणं नीहरणं करेंति, करेत्ता बहूइं लोइयाइं मयगकिच्चाइं[10] करेंति, करेत्ता केणइ कालंतरेणं अवगयसोए जाए यावि होत्था ॥

---

१. गीवग्गाहं (घ)।
२ अवउटं (ख, घ); अवउडग (वृपा)।
३ लयप्पहारे° (क), लयापहारे य छिवापहारे य (ख, ग, घ), असौ पाठः वृत्त्याधारेण स्वीकृतः। १।२।४५ सूत्रेपि अयमेव क्रमो लभ्यते।
४ पयरमाणा (क)।
५. सं० पा०—तक्करे जाव गिद्धे विव आमिस-भक्खी।
६ वाचनान्तरेत्विदं नाधीयते (वृ)।
७ सं० पा०—कसप्पहारे य जाव निवाएमाणा।
८ सं० पा०—रोयमाणे जाव विलवमाणे।
९. सरीरयस्स (क)।
१०. मयकिच्चाइं (क)।

धणस्स निग्गह-पदं

३५ तए ण से धणे सत्थवाहे अण्णया कयाइ लहुसयसि रायावराहसि सपलित्ते[1] जाए यावि होत्था ।।

३६. तए ण ते नगरगुत्तिया धण सत्थवाह गेण्हति, गेण्हित्ता जेणेव चारए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता चारग अणुप्पवेसति. अणुप्पवेसित्ता विजएण तक्करेण सद्धि एगयओ हडिवधण करेति ।।

धणस्स घराओ आहाराणयण-पद

३७. तए ण सा भद्दा भारिया कल्ल पाउप्पभाए रयणीए जाव[2] उट्ठियम्मि सूरे सहस्स-रस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते विपुल असण पाण खाइम-साइम उवक्खडेइ, 'भोयणपिडय करेइ'[3], करेत्ता भोयणाइ पक्खिवइ, लछिय-मुद्दिय करेइ, करेत्ता एग च सुरभि [वर ?] वारिपडिपुण्ण दगवारय करेइ, करेत्ता पथय दास-चेडय सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया ! इम विपुल असण पाण खाइम साइम गहाय चारगसालाए धणस्स सत्थवाहस्स उवणेहि ।।

३८ तए ण से पथए भद्दाए सत्थवाहीए एव वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे त भोयणपिडय त च सुरभिवरवारिपडिपुण्ण दगवारय गेण्हइ, गेण्हित्ता सयाओ गिहाओ पडि-णिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता रायगिह नगर मज्झमज्झेण जेणेव चारगसाला जेणेव धणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भोयणपिडय ठवेइ, ठवेत्ता उल्लछेइ, उल्लछेत्ता भोयण गेण्हइ, गेण्हित्ता भायणाइ ठावइ[4], ठावित्ता हत्थ-सोय दलयइ, दलइत्ता धण सत्थवाह तेण विपुलेण असण-पाण-खाइम-साइमेण परिवेसेइ ।।

विजयतक्करेण संविभागमग्गण-पद

३९. तए ण से विजए तक्करे धण सत्थवाह एव वयासी—तुब्भे ण देवाणुप्पिया ! मम एयाओ विपुलाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ सविभाग करेहि ।।

धणस्स तन्निसेध-पदं

४० तए ण से धणे सत्थवाहे विजयं तक्कर एवं वयासी—अवियाइं अह विजया ! एय विपुल असण पाण खाइम साइम कायाण वा सुणगाण वा दलएज्जा, उक्कुरुडियाए वा ण छड्डेज्जा, नो चेव ण तव पुत्तघायगस्स पुत्तमारगस्स अरिस्स वेरियस्स पडणीयस्स[5] पच्चामित्तस्स एत्तो विपुलाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ सविभाग करेज्जामि[6] ।।

---

१ सपलत्ते (क, वृ) ।

२. ना० १।१।२४ ।

३. भोयण पिडए करेइ (क, वृपा), ०पिडय भरेइ (वृपा) ।

४ धावइ (ख), धोवइ (ग, घ) ।

५ पडिणीयस्स (ग, घ) ।

६ करेज्जासि (क, ग) ।

४१ तए ण से धणे सत्थवाहे तं विपुलं असणं पाण खाइमं साइम आहारेइ, तं पथयं पडिविसज्जेइ ॥

४२. तए ण से पथए दासचेडए तं भोयणपिडग[1] गिण्हइ, गिण्हित्ता जामेव दिसि पाउब्भूए तामेव दिसि पडिगए ॥

आवाधितस्स धणस्स विजयतक्करावेक्खा-पद

४३ तए ण तस्स धणस्स सत्थवाहस्स तं विपुल असण पाण खाइमं साइमं आहारियस्स समाणस्स उच्चार-पासवणे णं उव्वाहित्था ॥

४४ तए ण से धणे सत्थवाहे विजय तक्कर एवं वयासी—एहि ताव विजया[2] ! एगतमवक्कमामो 'जेण अह'[3] उच्चार-पासवण परिट्ठवेमि ॥

विजयतक्करेण तन्निसेध-पदं

४५. तए ण से विजए तक्करे धणं सत्थवाह एव वयासी—तुज्झ[4] देवाणुप्पिया ! विपुल असण पाण खाइम साइमं आहारियस्स अत्थि उच्चारे वा[5] पासवणे वा, मम ण देवाणुप्पिया ! इमेहि वहूहि कसप्पहारेहि य[6] •छिवापहारेहि य• लयापहारेहि य तण्हाए य छुहाए य परज्झमाणस्स[7] नत्थि केइ उच्चारे वा[8] पासवणे वा । त छदेण तुम देवाणुप्पिया ! एगते अवक्कमित्ता उच्चार-पासवण परिट्ठवेहि ॥

४६ तए ण से धणे सत्थवाहे विजएण तक्करेण एव वुत्ते समाणे तुसिणीए सचिट्ठइ ॥

धणेण पुणो कथिते विजएण सविभागमग्गण-पदं

४७ तए ण से धणे सत्थवाहे मुहुत्ततरस्स वलियतराग उच्चार-पासवणेण उव्वाहिज्जमाणे विजय तक्कर एव वयासी—एहि ताव विजया[9] ! •एगतमवक्कमामो जेण अह उच्चार-पासवण परिट्ठवेमि• ॥

४८. तए ण से विजए तक्करे धण सत्थवाह एव वयासी—जइ ण तुमं देवाणुप्पिया ! ताओ विपुलाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ सविभागं करेहि, तओह तुमेहि सद्धि एगतं अवक्कमामि ॥

४९ तए ण से धणे सत्थवाहे विजय तक्करं एव वयासी—'अह ण'[10] तुब्भ[11] ताओ विपुलाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ सविभाग करिस्सामि ॥

---

१. भोयणपडिग्गह (ख) ।
२ विजया एत्तो (क) ।
३. जाव ण अह ताव (क), जा ण ० (ख, घ) ।
४ तुज्झ ण (क) ।
५ ×(क, ख, ग, घ) ।
६ स०पा०—कसप्पहारेहि य जाव लयापहारेहि ।
७ परब्भवमाणस्स (क, घ) ।
८ ×(क, ख) ।
९. स० पा०—विजया जाव अवक्कमामो ।
१०. अहण्ण (क, घ) ;
११. तुम (घ) ।

५० तए णं से विजए तक्करे धणस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ ॥

५१. तए ण से 'धणे सत्थवाहे विजएण तक्करेण'[1] सद्धि एगते अवक्कमइ, उच्चार-पासवण परिट्ठवेइ, आयते चोक्खे परमसुइभूए तमेव ठाण उवसकमित्ता ण विहरइ ॥

धणेण विजयस्स संविभागदाण-पदं

५२ तए ण सा भद्दा कल्ल पाउप्पभाए रयणीए जाव[1] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते विपुल असण[2] •पाण खाइम साइम उवक्खडेइ, भोयण-पिडय करेइ, करेत्ता भोयणाइ पक्खिवइ, लछिय-मुद्दियं करेइ, करेत्ता एग च सुरभि [वर ?] वारिपडिपुण्ण दगवारय करेइ, करेत्ता पथय दासचेडयं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया ! इम विपुल असण पाण खाइम साइम गहाय चारगसालाए धणस्स सत्थवाहस्स उवणेहि ॥

५३ तए ण से पथए भद्दाए सत्थवाहीए एव वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे त भोयणपिडय तं च सुरभिवरवारिपडिपुण्ण दगवारय गेण्हइ, गेण्हित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता रायगिह नगर मज्झमज्झेण जेणेव चारगसाला जेणेव धणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भोयणपिडय ठवेइ, ठवेत्ता उल्लछेइ, उल्लछेत्ता भोयण गेण्हइ, गेण्हित्ता भायणाइ ठावइ, ठावित्ता हत्थ-सोय दलयइ, दलइत्ता धणं सत्थवाह तेण विपुलेण असण-पाण-खाइम-साइमेण° परिवेसेइ ॥

५४. तए ण से धणे सत्थवाहे विजयस्स तक्करस्स ताओ विपुलाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ सविभाग करेइ ॥

पथगस्स भद्दाए साटोवं तन्निवेदण-पदं

५५. तए ण से धणे सत्थवाहे पथग दासचेडय विसज्जेइ ॥

५६ तए ण से पथए भोयणपिडय गहाय चारगाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता रायगिह नयर मज्झमज्झेण जेणेव सए गिहे जेणेव भद्दा सत्थवाही तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भद्द [सत्थवाहिं ?] एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिए ! धणे सत्थवाहे तव पुत्तघायगस्स[1] •पुत्तमारगस्स अरिस्स वेरियस्स पडणीयस्स° पच्चामित्तस्स ताओ विपुलाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ सविभाग करेइ ॥

भद्दाए कोव-पदं

५७ तए ण सा भद्दा सत्थवाही पथगस्स दासचेडगस्स अंतिए एयमट्ठ सोच्चा

---

४ विजए धणेण सत्थवाहेण (क, ख, ग)।

१. ना० १।१।२४।

२. स० पा०—असण जाव परिवेसेइ।

१ स० पा०—पुत्तघायगस्स जाव पच्चामित्तस्स।

आसुरुत्ता रुट्ठा[1] •कुविया चंडिक्किया° मिसिमिसेमाणी धणस्स सत्थवाहस्स पओसमावज्जइ ।।

धणस्स चारमुत्ति-पदं

५८ तए णं से धणे सत्थवाहे अण्णया कयाइं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं सएण य अत्थसारेणं रायकज्जाओ अप्पाणं मोयावेइ, मोयावेत्ता चारगसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव अलंकारियसभा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अलंकारियकम्मं कारवेइ[2] जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहधोयमट्टियं[3] गेण्हइ, गेण्हित्ता पोक्खरिणी ओगाहइ, ओगाहित्ता जलमज्जणं करेइ, करेत्ता ण्हाए कयबलिकम्मे[4] •कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए° रायगिहं नगरं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता रायगिहस्स नगरस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।।

धणस्स सम्माण-पदं

५९ तए णं तं धणं सत्थवाहं एज्जमाणं पासित्ता रायगिहे नयरे बहवे नगर[5]-निगम[6]-सेट्ठि-सत्थवाह-पभिइओ आढंति[7] परिजाणंति सक्कारेंति सम्माणेंति अब्भुट्ठेंति सरीरकुसलं पुच्छंति ।।

६० तए णं से धणे सत्थवाहे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ।
जावि य से तत्थ बाहिरिया परिसा भवइ, तंजहा—दासा इ वा पेस्सा इ वा भयगा[8] इ वा भाइल्लगा[9] इ वा, सा वि य णं धणं सत्थवाहं एज्जमाणं पासइ, पायवडिया खेमकुसलं पुच्छइ।
जावि य से तत्थ अब्भंतरिया[10] परिसा भवइ, तंजहा—माया इ वा पिया इ वा भाया इ वा भइणी इ वा, सावि य णं धणं सत्थवाहं एज्जमाणं पासइ, आसणाओ अब्भुट्ठेइ, कंठाकंठियं अवयासिय[11] बाह-प्पमोक्खणं करेइ ।।

भद्दाए कोवोवसमपुव्वं सम्माण-पदं

६१ तए णं से धणे सत्थवाहे जेणेव भद्दा भारिया तेणेव उवागच्छइ ।।

---

१ सं० पा०—रुट्ठा जाव मिसिमिसेमाणी।
२ कारेति (ग), करावेई (घ)।
३. अहायमट्टियं (वृ०)।
४ सं० पा०—कयबलिकम्मे जाव रायगिहं।
५ नागर (ग)।
६. नियमे (क); नियग (ग)।
७ आढायति (क)।
८. भइगा (क, ग, घ)।
९ भातिल्लगा (ग)।
१०. अब्भितरिया (ग, घ)।
११ अवदासिय (ग, घ)।

६२ तए णं सा भद्दा धणं सत्थवाहं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता नो आढाइ नो परिजाणइ[1] अणाढायमाणी अपरिजाणमाणी तुसिणीया परम्मुही सचिट्ठइ ।।

६३ तए णं से धणे सत्थवाहे भद्दं भारियं एवं वयासी—किण्णं तुज्झं[2] देवाणुप्पिए ! न तुट्ठी वा न हरिसो वा नाणंदो वा, जं मए सएणं अत्थसारेणं रायकज्जाओ[3] अप्पा[4] विमोइए ।।

६४. तए णं सा भद्दा धणं सत्थवाहं एवं वयासी—कहं णं देवाणुप्पिया ! मम तुट्ठी वा[5] •हरिसो वा° आणंदो वा भविस्सइ ? जेणं तुमं मम पुत्तघायगस्स[6] •पुत्तमारगस्स अरिस्स वेरियस्स पडणीयस्स° पच्चामित्तस्स ताओ विपुलाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ संविभागं करेसि ।।

६५ तए णं से धणे सत्थवाहे भद्दं भारियं एवं वयासी—नो खलु देवाणुप्पिए ! धम्मो त्ति वा तवोत्ति वा 'कय-पडिकया इ वा'[7] लोगजत्ता इ वा नायए इ वा 'घाडियए इ वा'[8] सहाए इ वा सुहि त्ति वा [विजयस्स तक्करस्स ?[9]] ताओ विपुलाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ संविभागे कए, नण्णत्थ सरीरचिंताए ।।

६६ तए णं सा भद्दा धणेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणी हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया जाव[10] हरिसवस-विसप्पमाणहियया आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता कंठाकंठिं[11] अवयासेइ[12] खेमकुसलं पुच्छइ, पुच्छित्ता ण्हाया[13] •कयबलिकम्मा कय-कोउय-मंगल°-पायच्छित्ता विपुलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरइ ।।

विजय-णायस्स निगमण-पदं

६७. तए णं से विजए तक्करे चारगसालाए तेहिं बंधेहि य वहेहि य कसप्पहारेहि य[14] •छिवापहारेहि य लयापहारेहि य ° तण्हाए य छुहाए य परज्झमाणे कालमासे कालं किच्चा नरएसु नेरइयत्ताए उववण्णे ।

---

१ परियाणाइ (क, ख); परियाणइ (ग, घ) ।
२. तुब्भ (क्व०) ।
३. रज्जकज्जाओ (ग, घ) ।
४ अप्पाण (ख) ।
५ सं० पा०—तुट्ठी वा जाव आणंदो ।
६. सं० पा०—पुत्तघायगस्स जाव पच्चामित्तस्स ।
७ कयपडिकइया वा (क), कयाइपडिकईया वाला (घ) ।
८. घोडयए इ वा (क ख), संघाडियाए वा (घ) ।
९ अस्मिन् सूत्रे कस्मै संविभागो दत्त इति न स्पष्टं भवति ७५ सूत्रे 'जाव विजयस्स तक्करस्स ताओ विपुलाओ' इति पाठो विद्यते । तस्य पूर्तिः प्रस्तुतसूत्रेणैव जायते । एतेन प्रतीयते अत्रापि 'विजयस्स तक्करस्स' इति पाठ आसीत्, किन्तु केनापि कारणेनासौ त्रुटितोभूत् ।
१० ना० १।१।१६ ।
११. कंठाकंठि (ख, ग) ।
१२ अवभासेइ (ख), अवतासेइ (ग, घ) ।
१३ सं० पा०—ण्हाया जाव पायच्छित्ता ।
१४ सं० पा०—कसप्पहारेहि य जाव तण्हाए ।

से ण तत्थ नेरइए जाए काले कालोभासे[1] •गंभीरलोमहरिसे भीमे उत्तासणए परमकण्हे वण्णेण।

से ण तत्थ निच्च भीए निच्च तत्थे निच्च तसिए निच्च परमऽसुहसवद्ध नगरगति °वेयण पच्चणुब्भवमाणे विहरइ।

से ण तओ उव्वट्टित्ता अणादीय अणवदग्ग दीहमद्ध[2] चाउरत ससारकंतार अणुपरियट्टिस्सइ॥

६८. एवामेव जवू! जो ण अम्ह निग्गथो वा निग्गथी वा आयरिय-उवज्झायाण अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ[3] अणगारिय पव्वइए समाणे विपुलमणि-मोत्तिय[4]-धण-कणग-रयणसारेण लुब्भइ, सो वि एव चेव॥

धण-णायस्स निगमण-पद

६९ तेण कालेण तेण समएण थेरा भगवतो जाइसपण्णा जाव[5] पुव्वाणुपुव्वि चरमाणा[6] •गामाणुगाम दूइज्जमाणा सुहसुहेण विहरमाणा° जेणेव रायगिहे नयरे जेणेव गुणसिलए चेइए[7] •तेणामेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता° अहा-पडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरति॥

७० परिसा निग्गया धम्मो कहिओ॥

७१ तए ण तस्स धणस्स सत्थवाहस्स वहुजणस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म[8] इमेयारूवे अज्झत्थिए[9] •चितिए पत्थिए मणोगए सकप्पे° समुप्पज्जित्था— एव खलु थेरा भगवतो जाइसपण्णा[10] इहमागया इहसपत्ता। तं गच्छामि ?[11] ण थेरे भगवते वदामि नमसामि [एव सपेहेइ, सपेहेत्ता ?[12]]

---

१ स० पा—कालोभासे जाव वेयण।
२ × (क, ख, ग)।
३ आगाराओ (ख, घ)।
४ मुत्तय (ख, ग)।
५ ना० १।१।४।
६ सं० पा०—चरमाणा जाव जेणेव।
७. स० पा०—चेइए जाव अहापडिरूव।
८. निसम्मा (क, ख, ग)।
९ स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
१० पू०—ना० १।१।४।
११,१२ इच्छामि (क, ख, ग, घ), पाठसशोधन-प्रयुक्तेपु आदर्शेपु तथा मुद्रितपुस्तकेष्वपि 'इच्छामि' इति पाठो लभ्यते, किन्तु अन्यागमानामेतत्तुल्यप्रकरणसमीक्षयाऽत्र 'गच्छामि' इति पाठः उपयुक्त प्रतिभाति। एवमेव 'एवं सपेहेइ, सपेहित्ता' इति सयोजक पाठोपि वहुषु आगमेपु लभ्यते। अत्रापि इत्यमेव युज्यते। अत्र सभाव्यते लिपिदोपेण वर्णपरिवर्तनं जातम्, तेन 'गच्छामि' स्थाने 'इच्छामि' इति जातम्। उत्तरोत्तरमेष एव पाठ प्रचुरेषु आदर्शेपु संक्रान्तोभूत्। सक्षेपीकरणपद्धते: कारणेन 'एव सपेहेइ, सपेहित्ता' इति पाठोत्रालिखि-तोस्ति।
उक्तप्रकरणानुसारी पाठ. 'उवासगदसाओ' (१।२०) सूत्रे इत्यमस्ति—त गच्छामि ण

ण्हाए[1] •कयबलिकम्मे कय-कोउय-मगल-पायच्छित्ते° सुद्धप्पावेसाइ मगल्लाइं वत्थाइ पवर[2] परिहिए पायविहारचारेण जेणेव गुणसिलए चेइए जेणेव थेरा भगवतो तेणेव उवागच्छित्ता वदइ नमसइ ॥

७२. तए ण थेरा भगवंतो धणस्स विचित्तं धम्ममाइक्खति ॥

७३ तए णं से धणे सत्थवाहे धम्म सोच्चा एवं वयासी—
सद्दहामि णं भते ! निग्गथ पावयण[3] ।
•पत्तियामि ण भते ! निग्गथ पावयण ।
रोएमि ण भते ! निग्गथ पावयणं ।
अब्भुट्ठेमि ण भते ! निग्गथ पावयण ।
एवमेय भते ! तहमेय भते ! अवितहमेय भते ! इच्छियमेय भते ! पडिच्छिय-मेय भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेय भते ! से जहेयं तुब्भे वयह त्ति कट्टु थेरे भगवते वंदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता° जाव[4] पव्वइए जाव[5] बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता भत्त पच्चक्खाइत्ता, मासियाए संलेहणाए [अप्पाण झोसेत्ता ?], सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदित्ता[6] कालमासे काल किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववण्णे ।
तत्थ ण अत्थेगइयाण देवाण चत्तारि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता । तस्स[7] ण धणस्स देवस्स चत्तारि पलिओवमाइ ठिई[8] ॥

७४. से ण धणे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएण ठिइक्खएण भवक्खएण अणतर चय चइत्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव[9] सव्वदुक्खाणमतं करेहिइ ॥

७५. जहा ण जबू ! धणेण सत्थवाहेण नो धम्मो त्ति वा[10] •तवो त्ति वा कय-पडिकया इ वा लोगजत्ता इ वा नायए इ वा घाडियए इ वा सहाए इ वा सुहि त्ति वा° विजयस्स तक्करस्स ताओ विपुलाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ सविभागे कए, नण्णत्थ सरीरसारक्खणट्ठाए ॥[11]

७६ एवामेव जबू ! जे ण अम्ह निग्गथे वा[12] निग्गथी वा आयरिय-उवज्झायाण

देवाणुप्पिया ! समण भगव महावीर वदामि णमसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाण मगल देवय चेइय पज्जुवासामि— एव सपेहेइ, सपेहित्ता ण्हाए ।
१. स० पा०—ण्हाए जाव सुद्धप्पावेसाइ ।
२. विभक्तिरहित पदम् ।
३. स० पा०—पावयण जाव पव्वइए ।
४, ५. भग० ६।३३ ।
६ छेदइत्ता (ग, घ) ।
७. तत्थ (ख, ग, घ) ।
८ ठिई पण्णत्ता (क, ख) ।
९ ना० १।१।२१२ ।
१०. स० पा०—धम्मो त्ति वा जाव विजयस्स ।
११. °सारक्खणट्ठयाए (ख), सरीररक्खणट्ठाए (ग) ।
१२. स० पा०—निग्गथे वा जाव पव्वइए ।

अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइए समाणे ववगय-ण्हाणुमद्दण-पुप्फ-गंध-मल्लालंकार-विभूसे[1] इमस्स ओरालिय-सरीरस्स नो वण्णहेउं वा 'नो रूवहेउं वा नो बलहेउं वा नो विसयहेउं वा'[2] तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं आहारमाहारेइ, नण्णत्थ नाणदंसणचरित्ताणं वहणट्ठयाए, से णं इहलोए चेव बहूणं समणाणं बहूणं[3] समणीणं बहूणं[4] सावगाणं बहूणं सावियाण य अच्चणिज्जे[5] °वंदणिज्जे नमंसणिज्जे पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं विणएणं° पज्जुवासणिज्जे भवइ,

परलोए वि य णं नो बहूणि हत्थच्छेयणाणि य कण्णच्छेयणाणि य नासाछेयणाणि य एवं हिययउप्पायणाणि[7] य वसणुप्पायणाणि य उल्लंबणाणि य पाविहिइ, 'पुणो अणाइयं'[8] च णं अणवदग्गं दीहमद्धं[9] °चाउरंतं संसारकंतारं° वीईवइस्सइ—जहा व से धणे सत्थवाहे ॥

निक्खेव-पदं

७७ एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[10] संपत्तेणं दोच्चस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते—त्ति बेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा

सिवसाहणेसु आहार-विरहिओ जं न वट्टए देहो ।
तम्हा धणो व्व विजयं, साहू तं तेण पोसेज्जा ॥१॥

---

१ विभूसिते (ख, ग) ।
२. रूवहेउं वा बलविसयहेउं वा (क, ख, ग, घ) । असौ पाठ-संघटना १।१८।६१ सूत्रस्याधारेण कृतास्ति ।
३, ४. × (क, ख, ग, घ) ।
५ सावगाण य (क, ख, ग) ।
६ सं० पा०—अच्चणिज्जे जाव पज्जुवासणिज्जे ।
७ °उप्पाडणाणि य (क) ।
८ अणाईयं (ख, घ); अणातीतं (ग) ।
९ सं० पा०—दीहमद्धं जाव वीईवइस्सइ ।
१०. ना० १।१।७ ।

तच्चं अज्झयणं

अंडे

उक्खेव-पद

१ जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं दोच्चस्स अज्झयणस्स नायाधम्म-कहाणं अयमट्ठे पण्णत्ते, तच्चस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था — वण्णओ[1]।

३ तीसे णं चंपाए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए सुभूमिभागे नामं उज्जाणे—'सव्वोउय-पुप्फ-फल-समिद्धे'[2] सुरम्मे नंदणवणे[3] इव सुह-सुरभि-सीयलच्छायाए समणुबद्धे ॥

४ तस्स णं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उत्तरओ[4] एगदेसम्मि मालुयाकच्छए होत्था—वण्णओ[5] ॥

मयूरी अंड-पदं

५. तत्थ णं एगा वणमयूरी दो पुट्ठे परियागए पिट्टुंडी[6]-पंडुरे[7] निव्वणे निरुवहए भिण्णमुट्ठिप्पमाणे मयूरी-अंडए पसवइ, पसवित्ता सएणं[8] पक्खवाएणं सारक्ख-माणी संगोवेमाणी[9] संचिट्ठेमाणी[10] विहरइ ॥

---

१. ओ० सू० १।

२. सव्वोउए (वृ), सव्वोउय (क, ख, ग, घ, वृपा), वृत्तिकृता अत्र द्वयोरपि पाठयो समीक्षा कृतास्ति यथा—सव्वोउएत्ति—सर्वे ऋतवो वसन्तादय, तत्सपाद्यकुसुमादि-भावानां वनस्पतीनां सद्भावात्, यत्र तत्तथा। क्वचित् 'सव्वोउयत्ति' दृश्यते तेन च 'संव्वोउयपुप्फफलसमिद्धे' इत्येतत् सूचितम् (वृ)।

३ नंदणे वणे (ख)।

४ उत्तर (क, ख, ग)।

५ ना० १।२।६।

६ पिट्ठपिंडी (क), वृत्तौ 'पिप्टस्य- शालिलोटस्य उंडी—पिंडी' इति व्याख्यातमस्ति। असौ व्याख्याश मूलपाठे पि सक्रान्त ।

७ पंडरे (क, ग)।

८ सतेण (ख घ)।

९ सगोवमाणी (ख), सगोयमाणी (ग)।

१० सचिट्ठमाणी (क), सचिट्ठेमाणी (ख, ग, घ), असौ पाठ वृत्त्याधारेण स्वीकृत ।

सत्थवाहदारग-पदं

६ तत्थ णं चंपाए नयरीए दुवे सत्थवाहदारगा परिवसंति, तं जहा—जिणदत्तपुत्ते[1] य सागरदत्तपुत्ते[2] य—सहजायया सहवड्ढियया सहपंसुकीलियया सहदारदरिसी अण्णमण्णमणुरत्तया अण्णमण्णमणुव्वयया[3] अण्णमण्णच्छंदाणुवत्तया अण्णमण्णहियइच्छियकारया[4] अण्णमण्णेसु गिहेसु किच्चाइं करणिज्जाइं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ॥

७ तए णं तेसिं सत्थवाहदारगाणं अण्णया कयाइ एगयओ सहियाणं समुवागयाणं[5] सण्णिसण्णाणं सण्णिविट्ठाणं इमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था—जण्णं देवाणुप्पिया! अम्हं सुहं वा दुक्खं वा पव्वज्जा वा विदेसगमणं वा समुप्पज्जइ, तण्णं अम्हेहिं एगयओ समेच्चा[6] नित्थरियव्वं ति कट्टु अण्णमण्णमेयारूवं संगारं[7] पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता सकम्मसंपउत्ता जाया यावि होत्था ॥

देवदत्ता गणिया-पदं

८ तत्थ णं चंपाए नयरीए देवदत्ता नामं गणिया परिवसइ—अड्ढा[8] °दित्ता वित्ता वित्थिण्ण-विउल-भवण-सयणासण-जाण-वाहणा बहुधण-जायरूव-रयया आओग-पओग-संपउत्ता विच्छड्डिय-पउर°-भत्तपाणा चउसट्ठिकलापंडिया चउसट्ठि-गणियागुणोववेया अउणत्तीसं विसेसे रममाणी एक्कवीसं[9]-रइगुणप्पहाणा बत्तीस-पुरिसोवयारकुसला नवंगसुत्तपडिबोहिया अट्ठारसदेसीभासाविसारया सिंगारागारचारुवेसा संगय-गय-हसिय[10]-°भणिय-चेट्ठिय-विलाससंलावुल्लाव-निउण-जुत्तोवयारकुसला° ऊसियज्झया सहस्सलंभा विदिण्णछत्त-चामर-वालवीयणिया कण्णीरहप्पयाया वि होत्था।

बहूणं गणियासहस्साणं[11] आहेवच्चं[12] °पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणी पालेमाणी महयाऽऽहय-नट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुप्पवाइयरवेणं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी° विहरइ ॥

---

१ °उत्ते (ग)।
२. °उत्ते (ग)।
३ °मणुव्वया (ग)।
४. तिच्छियकारया (ख, ग, घ)।
५ समुवगयाणं (क, ख, ग)।
६ सहिच्चा (वृपा)।
७. संगरं (वृपा)।
८. स० पा०—अड्ढा जाव भत्तपाणा।
९. एक्कवीस (क)।
१०. स० पा०—संगयगयहसिय (अतोग्रे वृत्तौ वाचनान्तरं लभ्यते—वाचनान्तरे त्विदमधिकम्—सुंदरथण-जघण-वयण-चरण-नयण-लावण्ण-रूव-जोव्वणविलासकलिया (वृ)। ओवाइय-वाचनान्तरे किंचिद्भेदोस्ति-द्रष्टव्यम्—ओवाइय पृष्ठ १३६।
११. °सहस्सीणं (ख)।
१२. स० पा०—आहेवच्चं जाव विहरइ।

सत्थवाहदारगाणं उज्जाणकीडा-पदं

६ तए ण तेसि सत्थवाहदारगाण अण्णया कयाइ पुव्वावरण्हकालसमयसि[1] जिमिय-भुत्तुत्तरागयाणं समाणाण आयताण चोक्खाण परमसुइभूयाण सुहासणवर-गयाण इमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था—सेय खलु अम्ह देवाणुप्पिया! कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव[2] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते विपुल असण पाण खाइम साइम उवक्खडावेत्ता त विपुल असण पाण खाइम साइम धूव-पुप्फ-गध-वत्थ-मल्लालकार[3] गहाय देवदत्ताए गणियाए सद्धि सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उज्जाणसिरिं पच्चणुब्भवमाणाण विहरित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठ पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते कोडुवियपुरिसे सद्दावेति, सद्दावेत्ता एव वयासी—गच्छह ण देवाणुप्पिया! विपुल असण-पाण-खाइम-साइम उवक्खडेह, उवक्खडेत्ता त विपुल असण-पाण-खाइम-साइम धूव-पुप्फ-गध-वत्थ-मल्लालकार गहाय जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे जेणेव नदा पुक्खरिणी तेणेव[4] उवागच्छह, उवागच्छित्ता नंदाए पोक्खरिणीए[5] अदूरसामते थूणामडव[6] आहणह—आसिय-सम्मज्जिओवलित्त[7] •पचवण्ण-सरससुरभि-मुक्क-पुप्फपुजोवयारकलिय कालागरु-पवरकुदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-डज्झत-सुरभि-मघमघेत-गधुद्धुयाभिराम सुगधवर-गधगधिय गधवट्टिभूय° करेह, करेत्ता अम्हे पडिवालेमाणा-पडिवालेमाणा चिट्ठह जाव चिट्ठति ॥

१०. तए ण ते सत्थवाहदारगा दोच्चपि कोडुवियपुरिसे सद्दावेति, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव [भो देवाणुप्पिया!?] 'लहुकरण-जुत्त-जोइय'[8] समखुर-वालिहाण-'समलिहिय-तिक्खग्गसिगएहि'[9] रययामय-घट-सुत्तरज्जु-पवरकञ्चण-

---

१ पुव्वावरद्ध° (क)।

२. ना० १।१।२४।

३. × (ख, ग, घ)।

४. तेणामेव (क, ग, घ)।

५. पुक्खरिणीए (क, ख)।

६. थूण° (ख)।

७. स० पा०—सम्मज्जिओवलित्त सुगध जाव कलिय (क, ख, ग, घ); अत्र पाठसक्षेपे कश्चिद् विपर्यय, सभाव्यते। १।१।३३ सूत्रे 'सम्मज्जिओवल्लित्त जाव सुगधवरगधिय' अस्ति, तथैव अत्रापि 'सम्मज्जिओवलित्तं जाव गधवट्टिभूय' इति सक्षेप उपयुक्त. स्यात्। 'सम्मज्जिओवलित्तं' इति पाठानन्तर 'सुगध' इति पद क्वापि नोपलभ्यते।

८ लहुकरणजुत्तएहिं जोइय (वृपा)।

९ समलिहिय तिक्खग्गिगएहिं (क, घ), समलिहिय-सिंगएहिं।

रुक्खडालयंसि ठिच्चा० अम्हे मालुयाकच्छयं[1] च [अणिमिसाए दिट्ठीए ?] पेच्छमाणी[2] चिट्ठइ, तं भवियव्वमेत्थ कारणेण त्ति कट्टु मालुयाकच्छयं अंतो अणुप्पविसंति। तत्थ णं दो पुट्ठे परियागए[3] •पिट्ठुंडी-पंडुरे निव्वणे निरुवहए भिण्णमुट्ठिप्पमाणे मयूरी-अंडए० पासित्ता अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—सेयं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं इमे वणमयूरी-अंडए साणं जातिमंताणं[4] कुक्कुडियाणं अंडएसु पक्खिवावित्तए। तए णं ताओ जातिमंताओ कुक्कुडियाओ एए अंडए सए य अंडए सएणं पक्खवाएणं सारक्खमाणीओ संगोवेमाणीओ विहरिस्संति। तए णं अम्हं एत्थं[5] दो कीलावणगा मयूरी-पोयगा भविस्संति त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता सए सए दासचेडए[6] सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह[7] णं तुब्भे देवाणुप्पिया! इमे अंडए गहाय सगाणं जातिमंताणं कुक्कुडीणं अंडएसु पक्खिवह जाव ते वि पक्खिवेंति॥

२०. तए णं ते सत्थवाहदारगा देवदत्ताए गणियाए सद्धिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उज्जाणसिरिं पच्चणुब्भवमाणा विहरित्ता तमेव जाणं दुरूढा समाणा जेणेव चंपा नयरी जेणेव देवदत्ताए गणियाए गिहे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता देवदत्ताए गिहं अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता देवदत्ताए गणियाए विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयंति, दलइत्ता सक्कारेंति सम्माणेंति, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता देवदत्ताए गिहाओ पडिणिक्खमंति, पडिणिक्खमित्ता जेणेव साइं-साइं गिहाइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सकम्मसंपउत्ता जाया यावि होत्था॥

सागरदत्तपुत्तस्स संदेहेण अंडयविणास-पदं

२१. तत्थ णं जे से सागरदत्तपुत्ते[8] सत्थवाहदारए से णं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[9] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते जेणेव से वणमयूरी-अंडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तंसि मयूरी-अंडयंसि संकिए कंखिए विति-गिंछसमावण्णे भेयसमावण्णे कलुससमावण्णे किण्णं मम एत्थ कीलावणए[10] मयूरी-पोयए भविस्सइ उदाहु नो भविस्सइ? त्ति कट्टु तं मयूरी-अंडयं अभिक्खणं-अभिक्खणं उव्वत्तेइ परियत्तेइ आसारेइ संसारेइ चालेइ फंदेइ घट्टेइ खोभेइ अभिक्खणं-अभिक्खणं कण्णमूलंसि टिट्टियावेइ[11]।

---

१. ०कच्छक (क), कच्छग (ग)।
२. पेहमाणी (क, घ), पिच्छमाणी (ग)।
३. सं० पा०—परियागए जाव पासित्ता।
४. जायमेत्ताणं (क)।
५. एत्थ (घ)।
६. दासचेडे (क)।
७. एह गच्छह (क)।
८. सागरदत्तस्स पुत्ते (ग)।
९. ना० १।१।२४।
१०. किलावण (ख, ग, घ)।
११. ढिंडियावेइ (क); डिड्डियावेइ (ख)। टिट्टियारेइ (ग)।

२२. तए ण से मयूरी[1]-अडए अभिक्खणं-अभिक्खणं उव्वत्तिज्जमाणे[2] •परियत्तिज्जमाणे आसारिज्जमाणे ससारिज्जमाणे चालिज्जमाणे फदिज्जमाणे घट्टिज्जमाणे खोभिज्जमाणे अभिक्खण-अभिक्खण कण्णमूलसि॰ टिट्टियावेज्जमाणे पोच्चडे जाए यावि होत्था ॥

२३. तए ण से सागरदत्तपुत्ते सत्थवाहदारए अण्णया कयाइ जेणेव से मयूरी-अडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता त मयूरी-अडय पोच्चडमेव[3] पासइ, अहो ण मम एत्थ[4] कीलावणए मयूरी-पोयए न जाए त्ति कट्टु ओहयमण[5] •सकप्पे करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए॰ झियाइ[6] ॥

२४. एवामेव समणाउसो ! जो अम्ह निग्गथो वा निग्गथी वा आयरिय-उवज्झायाण अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए[7] समाणे पचमहव्वएसु[8] छज्जीवनिकाएसु निग्गथे पावयणे सकिए[9] •कखिए वितिगिंछसमावण्णे भेयसमावण्णे॰कलुससमावण्णे, से ण इहभवे चेव बहूण समणाण बहूण समणीण बहूण[10] सावगाण बहूण[11] सावियाण य हीलणिज्जे निंदणिज्जे खिसणिज्जे गरहणिज्जे परिभवणिज्जे[12],

परलोए वि य ण आगच्छइ बहूणि दडणाणि य[13] •बहूणि मुडणाणि य बहूणि तज्जणाणि य बहूणि तालणाणि य बहूणि अदुवधणाणि य बहूणि घोलणाणि य बहूणि माइमरणाणि य बहूणि पिइमरणाणि य बहूणि भाइमरणाणि य बहूणि भगिणीमरणाणि य बहूणि भज्जामरणाणि य बहूणि पुत्तमरणाणि य बहूणि धूयमरणाणि य बहूणि सुण्हामरणाणि य,

बहूणं दारिद्दाण बहूण दोहग्गाण बहूण अप्पियसवासाण बहूणं पियविप्पओगाण बहूण दुक्ख-दोमणस्साण आभागी भविस्सति, अणादिय च ण अणवयग्ग दीहमद्ध चाउरत संसारकतार भुज्जो-भुज्जो॰ अणुपरियट्टिस्सइ[14] ॥

---

१ वणमयूरी (ग, घ)।
२ स॰ पा॰—उव्वत्तिज्जमाणे जाव टिट्टियावेज्जमाणे।
३ पोच्चडमेय (ख)।
४ सत्थवाह (क, ख, ग)।
५ स॰ पा॰—ओहयमण जाव झियायइ।
६ झियायइ (ख, घ); झायति (ग)।
७. पव्वज्जिते (ख); पव्वतिए (ग, घ)।
८. ॰महव्वए (ख, ग, घ)।
९. स॰ पा॰—सकिए जाव कलुससमावण्णे।
१०. × (ख, ग)।
११ × (क, ख, ग)।
१२. परभवणिज्जे (क, ख, घ), भगवती (५।८१) सूत्रे 'गरहह अवमन्नह' इति पदमस्ति।
१३ स॰ पा॰—दडणाणि य जाव अणुपरियट्टइ।
१४. अणुपरियट्टइ (क, ख, ग, घ)। 'भविस्सति' इति क्रियापदस्यानन्तर 'अणुपरियट्टिस्सइ' इति पाठो युज्यते। सप्तमाध्ययनस्य २७ सूत्रेऽपि एवमेव पाठो लभ्यते। तेनात्रापि तथैव स्वीकृत ।

खचिय-नत्थपग्गहोग्गहियएहिं[1] नीलुप्पलकयामेलएहिं पवर-गोण-जुवाणएहिं 'नाना-मणि-रयण-कचण[2]-घटियाजालपरिक्खित्तं'[3] पवरलक्खणोववेय जुत्तामेव पवहण उवणेह। ते वि तहेव उवणेति ॥

११ तए ण ते सत्थवाहदारगा ण्हाया[4] •कयवलिकम्मा कय-कोउय-मगल-पायच्छित्ता अप्पमहग्घाभरणालकिय° सरीरा पवहणं दुरुहंति, दुरुहित्ता जेणेव देवदत्ताए गणियाए गिहे[5] तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पवहणाओ पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता देवदत्ताए गणियाए गिहं[6] अणुप्पविसंति ॥

१२ तए ण सा देवदत्ता गणिया ते सत्थवाहदारए एज्जमाणे पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठा आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता सत्तट्ठपयाइ अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता ते सत्थवाहदारए एव वयासी—सदिसंतु ण देवाणुप्पिया ! किमिहागमणप्पओयण[7] ?

१३ तए ण ते सत्थवाहदारगा देवदत्त गणियं एव वयासी—इच्छामो ण देवाणुप्पिए ! तुमे[8] सद्धि सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उज्जाणसिरिं पच्चणुब्भवमाणा विहरित्तए ॥

१४ तए ण सा देवदत्ता तेसिं सत्थवाहदारगाण एयमट्ठ पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता ण्हाया कयवलिकम्मा[9] जाव[10] सिरी-समाणवेसा जेणेव सत्थवाहदारगा तेणेव उवागया[11] ॥

१५ तए ण ते सत्थवाहदारगा देवत्ताए गणियाए सद्धि जाण दुरुहंति, दुरुहित्ता चपाए नयरीए मज्भमज्भेण जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे जेणेव नदा पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पवहणाओ पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता नद[12]

(जंवूणयामय-कलाव-जुत्त-पडविसिट्ठएहिं। उवासगदसाओ १।४०)। वृत्तौ—जवूणयामय° इति पाठो वाचनान्तरत्वेन उल्लिखितोस्ति।

१ °वग्गहियएहिं (क); °वग्गहोवग्गहिएहिं (ख, ग)

२ × (क)।

३. नाणा-मणि-कणग-घटियाजालपरिगय सुजाय-जुग-जुत्त-उज्जुग - पसत्य - सुविरइय-निम्मिय (उवासगदसाओ १।४७)। वृत्तौ— °'सुजायजुग' °इति पाठ वाचनान्तरत्वेन उल्लिखितोस्ति।

४ स० पा०—ण्हाया जाव सरीरा।

५. गेहे (ख)।

६. गेहे (क, घ)।

७. पयोयण (ख); पतोयण (घ)।

८ तुम्हेहिं (ग), तुब्भेहिं (क्वचित्)।

९ कयवलिकम्मा किं ते (क); कयवलिकम्मा किं ते पवर (ग); कयवलिकम्मा किं ते वर (घ)।

१०. ना० १।१।३३।

११. उवागच्छंति (ख), समागया (घ)।

१२. नदा (ख)।

पोक्खरिणिं ओगाहेंति, ओगाहेत्ता जलमज्जणं करेंति, करेत्ता जलकिड्डं करेंति, करेत्ता ण्हाया देवदत्ताए सद्धिं [नंदाओ पोक्खरिणीओ[1] ?] पच्चुत्तरंति, जेणेव थूणामंडवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता [थूणामंडवं[2] ?] अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता सव्वालंकारभूसिया आसत्था वीसत्था सुहासणवरगया देवदत्ताए सद्धिं तं विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं धूव-पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारं आसाएमाणा विसाएमाणा परिभाएमाणा परिभुंजेमाणा एवं च णं विहरंति। जिमियभुत्तुत्तरागया वि य णं समाणा [आयंता चोक्खा परमसुइभूया[3] ?] देवदत्ताए सद्धिं विपुलाइं कामभोगाइं भुंजमाणा विहरंति ॥

१६ तए णं ते सत्थवाहदारगा पुव्वावरण्हकालसमयंसि देवदत्ताए गणियाए सद्धिं थूणामंडवाओ पडिणिक्खमंति, पडिणिक्खमित्ता हत्थसंगेल्लीए[4] सुभूमिभागे उज्जाणे बहूसु आलिघरएसु य[5] •कयलिघरएसु य लताघरएसु य अच्छणघरएसु य पेच्छणघरएसु य पसाहणघरएसु य मोहणघरएसु य सालघरएसु य जालघरएसु य° कुसुमघरएसु य उज्जाणसिरिं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ॥

सत्थवाहदारगेहिं मयूरीअंडगाणयण-पदं

१७ तए णं ते सत्थवाहदारगा जेणेव से मालुयाकच्छए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

१८. तए णं सा वणमयूरी ते सत्थवाहदारए एज्जमाणे पासइ, पासित्ता भीया तत्था महया-महया सद्देणं केकारवं[6] 'विणिम्मुयमाणी-विणिम्मुयमाणी'[7] मालुयाकच्छाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता एगंसि रुक्खडालयंसि[8] ठिच्चा ते सत्थवाहदारए मालुयाकच्छगं[9] च अणिमिसाए दिट्ठीए पेच्छमाणी[10] चिट्ठइ ॥

१९. तए णं ते सत्थवाहदारगा अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—जहा[11] णं देवाणुप्पिया! एसा वणमयूरी अम्हे एज्जमाणे पासित्ता भीया तत्था तसिया उव्विग्गा पलाया महया-महया सद्देणं[12] •केकारवं विणिम्मुयमाणी-विणिम्मुयमाणी मालुयाकच्छाओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमित्ता एगंसि

---

१. द्रष्टव्यम्—१।२।१४ सूत्रस्य—पुक्खरिणीओ पच्चोरुहइ—इति पदम्।

२. द्रष्टव्यम्—१।३।११ सूत्रस्य—देवदत्ताए गणियाए गिहं अणुप्पविसंति—इति पदम्।

३. द्रष्टव्यम्—१।३।९।

४ संगिल्लीए (क, घ)।

५ सं० पा०—आलिघरएसु य जाव कुसुमघरएसु। वृत्तिकृता पूर्णः पाठो व्याख्यातः, संक्षिप्तपाठस्य सूचनापि कृतास्ति, यथा—क्वचित् कदलीगृहादिपदानि यावच्छब्देन सूच्यन्ते (वृ)।

६. केक्कारवं (क, ख, घ)।

७ विणिमुयमाणी-विणिमुयमाणी (ग)।

८ °डालंसि (घ)।

९. °कच्छं (क, ख, ग, घ)।

१० देहमाणी (क, ग, घ)।

११. जया (क)।

१२ सं० पा०—सद्देणं जाव अम्हे।

जिणदत्तपुत्तस्स सद्धाए मयूर-लद्धि-पद

२५. तए ण से जिणदत्तपुत्ते जेणेव से मयूरी-अडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तसि मयूरी-अडयसि निस्सकिए [निक्कखिए निव्वितिगिछे ?][1] 'सुव्वत्तए ण'[2] मम एत्थ कीलावणए मयूरी-पोयए भविस्सइ त्ति कट्टु त मयूरी-अडय अभिक्खण-अभिक्खण नो उव्वत्तेइ[3] •नो परियत्तेइ नो आसारेइ नो संसारेइ नो चालेइ नो फदेइ नो घट्टेइ नो खोभेइ अभिक्खण-अभिक्खण कण्णमूलसि° नो टिट्टियावेइ ।

२६ तए ण से मयूरी-अडए अणुव्वत्तिज्जमाणे जाव[4] अटिट्टियाविज्जमाणे कालेण समएण उब्भिन्ने[5] मयूरी-पोयए एत्थ जाए ॥

२७. तए ण से जिणदत्तपुत्ते त मयूरी-पोयय पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे मयूर-पोसए सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—तुब्भे ण देवाणुप्पिया ! इम मयूर-पोयग बहूहिं मयूर-पोसण-पाओग्गेहिं दव्वेहिं अणुपुव्वेण सारक्खमाणा सगोवेमाणा सवड्ढेह[6], नदुल्लग[7] च सिक्खावेह ॥

२८ तए ण ते मयूर-पोसगा जिणदत्तपुत्तस्स एयमट्ठ पडिसुणेति, त मयूर-पोयगं गेण्हति, जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छति, त मयूर-पोयग[8] •बहूहिं मयूर-पोसण-पाओग्गेहि दव्वेहिं अणुपुव्वेण सारक्खमाणा संगोवेमाणा सवड्ढेति°, नदुल्लग च सिक्खावेति ॥

२९. तए ण से मयूर-पोयए उम्मुक्कवालभावे विण्णय[9]-परिणयमेत्ते जोव्वणगमणुपत्ते लक्खण-वजण-गुणोववेए माणुम्माण-प्पमाणपडिपुण्णपक्ख-पेहुणकलावे 'विचित्त-पिच्छसतचंदए'[10] नीलकठए नच्चणसीलए एगाए चप्पुडियाए कयाए समाणीए अणेगाइ नदुल्लगसयाइ केकाइयसयाणि[11] य करेमाणे विहरइ ॥

३० तए ण ते मयूर-पोसगा तं मयूर-पोयगं उम्मुक्कबालभावं जाव[12] केकाइय-सयाणि य करेमाण पासित्ता ण त मयूर-पोयग गेण्हति, गेण्हित्ता जिणदत्तपुत्तस्स उवणेति ॥

३१ तए णं से जिणदत्तपुत्ते सत्थवाहदारए मयूर-पोयग उम्मुक्कवालभाव जाव[13]

---

१. द्रष्टव्यम्—३४ सूत्रम् ।
२. सुव्वत्तण (क, घ); × (ख); सुद्धत्तण (ग) ।
३. स० पा०—उव्वत्तेइ जाव नो टिट्टियावेइ ।
४ ना० १।३।२५ ।
५ उब्भिन्न (ग) ।
६ सवट्टेह (क, ख, ग, घ) ।
७ नउल्लग (ग), नट्टल्लग (घ) ।
८. स० पा०—मयूरपोयग जाव नदुल्लग ।
९. विन्नाण (क), विन्नाय (ख, ग, घ) ।
१० विचित्तपिच्छोसत्तचदए (ख, ग, वृपा) ।
११. केयाणियगसइयाइ (क), केयाइग° (ख, ग), केकातित° (घ) ।
१२ ना० १।३।२९ ।
१३. ना० १।३।२६ ।

केकाइयसयाणि य करेमाण पासित्ता हट्ठतुट्ठे तेसिं विपुल जीवियारिह पीइदाण[1] •दलयइ, दलइत्ता° पडिविसज्जेइ ॥

३२ तए ण से मयूर-पोयगे जिणदत्तपुत्तेण एगाए चप्पुडियाए कयाए समाणीए नगोला-भग-सिरोधरे सेयावगे[2] ओयारिय[3]-पइण्णपक्खे उक्खित्तचदकाइय-कलावे केक्काइयसयाणि मुचमाणे[4] नच्चइ ॥

३३ तए ण से जिणदत्तपुत्ते[5] तेण मयूर-पोयएण चपाए नयरीए सिघाडग[6]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°पहेसु सएहि य साहस्सिएहि य सयसाहस्सि-एहि य पणिएहि[7] जय करेमाणे विहरइ ॥

३४ एवामेव समणाउसो ! जो अम्ह निग्गथो वा निग्गथी वा आयरिय-उवज्झायाण अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए समाणे पचमहव्वएसु छज्जीवनिकाएसु निग्गथे पावयणे निस्सकिए निक्कखिए निव्वितिगिछे[8], से ण इहभवे चेव वहूण समणाण[9] •वहूण समणीण वहूण सावगाण बहूण सावियाण य अच्चणिज्जे वदणिज्जे नमसणिज्जे पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाणं मगल देवय चेइय विणएण पज्जुवासणिज्जे भवइ ।

परलोए वि य ण नो वहूणि हत्थच्छेयणाणि य कण्णच्छेयणाणि य नासाछेय-णाणि य एव—हिययउप्पायणाणि य वसणुप्पायणाणि य उल्लबणाणि य पाविहिइ, पुणो अणाइय च ण अणवदग्ग दीहमद्ध चाउरत ससारकतार° वीईवइस्सइ ॥

निक्खेव-पदं

३५ एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण आइगरेण तित्थगरेण जाव[10] सिद्धिगइनामधेज्ज ठाण सपत्तेण 'तच्चस्स नायज्झयणस्स'[11] अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति बेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

जिणवरभासियभावेसु, भावसच्चेसु भावओ मइम ।
नो कुज्जा सदेह, सदेहोऽणत्थहेउ त्ति ॥१॥

---

१ स० पा०—पीइदाण जाव पडिविमज्जेइ ।
२ सेयावण्णे (घ, वृ), मेयावगे (वृपा) ।
३. ओरालिय (ग, घ) ।
४. मुच्चमाणे (क, ख, ग, घ); विमुचमाणे (क्व०) ।
५. जिणयत्त° (क) ।
६. स० पा०—सिघाडग जाव पहेसु ।
७ पणिएहि य (ख, ग, घ) ।
८ निव्वितिगिच्छे (ख, घ) ।
९ स० पा०—समणाण जाव वीईवइस्सइ ।
१० ना० १।१।७ ।
११. नायाण तच्चस्स अज्झयणस्स (क, ख, ग); नायाण तच्चस्स णायाज्झयणस्स (घ) ।

निसदेहत्त पुण, गुणहेउ ज तओ तय कज्ज ।
एत्थ दो सेट्ठिसुया, अडयगाही उदाहरण ॥२॥

कत्थइ मइदुव्वल्लेण, तव्विहायरियविरहओ वावि ।
नेयगहणत्तणेण, नाणावरणोदयेण च ॥३॥

हेऊदाहरणासभवे य, सइ सुट्ठु ज न बुज्झेज्जा ।
सव्वण्णुमयमवितह, तहावि इइ चितए मइम ॥४॥

अणुवकय-पराणुग्गह-परायणा उ जिणा जगप्पवरा ।
जिय - राग - दोस - मोहा, य नन्नहावाइणो तेण ॥५॥

— —

चउत्थं अज्झयणं

कुम्मे

उक्खेव-पद

१. जइ ण भते ! समणेण भगवया महावीरेण 'तच्चस्स नायज्झयणस्स'[1] अयमट्ठे पण्णत्ते, चउत्थस्स ण भते ! नायज्झयणस्स[2] के अट्ठे पण्णत्ते ?

२ एव खलु जवू ! तेण कालेण तेण समएण वाणारसी[3] नाम नयरी होत्था—वण्णओ[4] ॥

३ तीसे ण वाणारसीए नयरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए गगाए महानईए मयग-तीरद्दहे नाम दहे होत्था—अणुपुव्वसुजायवप्प[5]-गभीरसीयलजले 'अच्छ-विमल-सलिल-पलिच्छण्णे'[6] सछण्ण-पत्त-पुप्फ-पलासे[7] वहुउप्पल-पउम-कुमुय-नलिण-सुभग-सोगधिय-'पुडरीय - महापुडरीय'[8] - सयपत्त-सहस्सपत्त - केसरपुप्फोवचिए[9] पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ॥

४ 'तत्थ ण वहूण मच्छाण य कच्छभाण य गाहाण य मगराण य सुसुमाराण य सयाणि य सहस्साणि य सयसहस्साणि य जूहाइं निब्भयाइ निरुव्विग्गाइ सुहसुहेण अभिरममाणाइ-अभिरममाणाइ विहरंति'[10] ॥

---

१ नायाण तच्चस्स° (ख, ग), नायाण तच्चस्स अज्झयणस्स (घ)।

२ नायाण (क, ख, घ)

३ वाराणसो (ग)।

४ ओ० सू० १।

५ आणुपुव्व° (घ)।

६. × (वृ); अच्छ-विमल-सलिल-पलिच्छन्ने (वृपा)।

७ × (वृ); क्वचित्तु सछन्नेत्यादि सूचनादिद दृश्यम्—सछन्नपउमपत्त - विसमुणाले। क्वचिदेव पाठ —सछन्नपत्तपुप्फपलासे (वृ)।

८ पोडरीय-महापोडरीय (ग)।

९ °चिए छप्पय-परिभुज्जमाण-कमले अच्छ-विमल-सलिल-पत्थ-पुण्णे परिहत्थभमत-मच्छ - कच्छभ - अणेगसउणगण - मिहुणय पविचरिए (वृ), असौ पाठ आदर्शेषु नोपलभ्यते।

१०. 'तत्थ ण' इत्यादि आदर्शगत पाठ नास्ति वृत्तौ व्याख्यात.।

५ तस्स ण मयगतीरद्दहस्स अदूरसामते, एत्थ णं महं एगे[1] मालुयाकच्छए होत्था—वण्णओ[2] ॥

पावसियालग-पद

६. तत्थ ण दुवे पावसियालगा परिवसति—पावा चडा रुद्दा तल्लिच्छा साहसिया लोहियपाणी आमिसत्थी आमिसाहारा आमिसप्पिया आमिसलोला आमिस गवेसमाणा रत्तिवियालचारिणो दिया पच्छन्न[3] या वि चिट्ठति ॥

कुम्म-पदं

७. तए ण ताओ मयगतीरद्दहाओ अण्णया कयाइ सूरियसि चिरत्थमियसि लुलियाए सझाए पविरलमाणुससि निसत-पडिनियतसि समाणसि दुवे कुम्मगा आहारत्थी आहार गवेसमाणा सणिय-सणिय उत्तरति, तस्सेव[4] मयगतीरद्दहस्स परिपेरतेण सव्वओ समता परिघोलमाणा-परिघोलमाणा 'वित्ति कप्पेमाणा'[5] विहरति ॥

पावसियालगाण आहारगवेसण-पदं

८. तयाणंतर च ण ते पावसियालगा आहारत्थी[6] आहार गवेसमाणा मालुयाकच्छगाओ पडिणिक्खमति, पडिणिक्खमित्ता जेणेव मयगतीरद्दहे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तस्सेव मयंगतीरद्दहस्स परिपेरतेण परिघोलमाणा-परिघोलमाणा वित्ति कप्पेमाणा विहरति ॥

९. तए ण ते पावसियालगा[7] ते कुम्मए पासति, पासित्ता जेणेव ते कुम्मए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

कुम्माण साहरण-पद

१० तए ण ते कुम्मगा ते पावसियालए एज्जमाणे पासति, पासित्ता भीया तत्था तसिया उव्विग्गा सजायभया हत्थे य पाए य गीवाओ य सएहिं-सएहिं काएहिं साहरति[8], साहरित्ता निच्चला निप्फदा[9] तुसिणीया सचिट्ठति ॥

---

१ वेगे (ग, घ)।

२. ना० १।२।६।

३. पच्छन्न (क, ख); पच्छिन्न (ग, घ)।

४ तस्स य (ख); तस्से य (ग, घ)।

५ एव च ण (क)।

६ आहारत्थी जाव (क, ख, ग, घ), सर्वास्वपि प्रतिषु जाव शब्दो लभ्यते किन्तु अर्थमीमासया नासौ समीचीन प्रतिभाति । यद्यत्र जाव शब्द स्यात् तदा आमिसत्थी जाव आमिस इति पाठ. संगत. स्यात्। यदि पूर्ववर्तिसूत्रमनुश्रियते तदा जाव शब्दो नापेक्ष्यते ।

७. °सियाला (ख, ग, घ)।

८. सहरति (ग, घ)।

९ निप्फदा (ख, घ)।

११ तए ण ते पावसियालगा जेणेव ते कुम्मगा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता ते कुम्मए[1] सव्वश्रो समता उव्वत्तेति परियत्तेति श्रासारेति ससारेति चालेति घट्टेति फदेति खोभेति नहेहिं श्रालुपति दतेहि य अक्खोडेति, नो चेव ण सचाएंति तेसि कुम्मगाण सरीरस्स किंचि[2] श्रावाह वा 'वावाह वा'[3] उप्पाइत्तए छविच्छेय वा करेत्तए ॥

१२. तए ण ते पावसियालगा ते कुम्मए दोच्चपि तच्चपि सव्वश्रो समता उव्वत्तेति[4] •परियत्तेति श्रासारेति ससारेति चालेति घट्टेति फदेति खोभेति नहेहि श्रालुपति दतेहि य अक्खोडेति, नो चेव ण सचाएति तेसि कुम्मगाण सरीरस्स किंचि श्रावाहं वा वावाह वा उप्पाइत्तए छविच्छेय वा° करेत्तए, ताहे सता तता परितता निव्विण्णा समाणा सणिय-सणिय पच्चोसक्कति, एगतमवक्कमंति[5], निच्चला निप्फंदा तुसिणीया सचिट्ठति ॥

अगुत्त-कुम्मस्स मच्चु-पदं

१३. तए[6] ण एगे कुम्मए ते पावसियालए चिरगए दूरगए जाणित्ता सणियं-सणियं एग पायं निच्छुभइ ॥

१४ तए ण ते पावसियालगा तेण कुम्मएण सणिय-सणिय एग पाय नीणिय पासति, पासित्ता सिग्घ तुरिय चवल चड जइण वेगिय[7] जेणेव से कुम्मए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तस्स ण कुम्मगस्स त पाय नखेहि श्रालुपति दतेहि अक्खोडेति, तश्रो पच्छा मंस च सोणिय च श्राहारेति, श्राहारेत्ता त कुम्मग सव्वश्रो समता उव्वत्तेति जाव[8] नो चेव ण सचाएति[9] •तस्स कुम्मगस्स सरीरस्स किंचि श्रावाह वा वावाह वा उप्पाइत्तए छविच्छेय वा करेत्तए ॥

१५. तए णं ते पावसियालगा त कुम्मय दोच्चपि तच्चपि सव्वश्रो समता उव्वत्तेति परियत्तेति श्रासारेति ससारेति चालेति घट्टेति फदेति खोभेति नहेहिं श्रालुपति दतेहि य अक्खोडेति, नो चेव ण सचाएति तस्स कुम्मगस्स सरीरस्स किंचि आवाह वा वावाह वा उप्पाइत्तए छविच्छेय वा करेत्तए, ताहे सता तता

---

१. कुम्मगा (क, ख, ग, घ); अग्रिमसूत्रे 'ते कुम्मए' इति पाठोस्ति, अत्रापि तथैव युज्यते ।
२. × (ग, घ) ।
३. × (क) ।
४ स० पा०—उव्वत्तेति जाव नो चेव ण सचाएंति करेत्तए ।
५ एगते अवक्कमति (क) ।
६. तत्थ (ख, ग, घ) ।
७. वेगित (ख) ।
८. ना० १।४।११ ।
९. स० पा०—सचाएति° करेत्तए । ताहे दोच्चपि अवक्कमति ।

परितता निविण्णा समाणा सणिय-सणियं पच्चोसक्कंति, दोच्चंपि एगत-मवक्कमति । °

एव चत्तारि वि' पाया ॥

१६ °'तए ण से कुम्मए ते पावसियालए चिरगए दूरंगए जाणित्ता° सणिय-सणियं गीव नीणेइ ॥

१७ तए ण ते पावसियालगा तेण कुम्मएण [सणिय-साणिय ?] गीव नीणियं पासति, पासित्ता सिग्घ तुरिय चवल' °चड जइण वेगिय जेणेव से कुम्मए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तस्स ण कुम्मगस्स त गीव ° नहेहिं [आलुपति ?] दतेहिं कवाल विहाडेति, विहाडेत्ता त कुम्मग जीवियाओ ववरोवेंति, ववरोवेत्ता मस च सोणिय च आहारेति ॥

१८ एवामेव समणाउसो ! जो अम्ह निग्गथो वा निग्गथी वा आयरिय-उवज्झायाण अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए समाणे', पच य से इदिया अगुत्ता भवति, से ण इहभवे चेव वहूण समणाण वहूण समणीण वहूण सावगाण वहूण सावियाण य हीलणिज्जे °निदणिज्जे खिसणिज्जे गरहणिज्जे परिभवणिज्जे,° परलोए वि य ण आगच्छइ—वहूणि दडणाणि' °य वहूणि मुडणाणि य वहूणि तज्जणाणि य वहूणि तालणाणि य वहूणि अदुबधणाणि य वहूणि घोलणाणि य वहूणि माइमरणाणि य वहूणि पिइमरणाणि य वहूणि भाइमरणाणि य वहूणि भगिणीमरणाणि य वहूणि भज्जामरणाणि य वहूणि पुत्तमरणाणि य वहूणि धूयमरणाणि य वहूणि सुण्हामरणाणि य। वहूण दारिद्दाण वहूण दोहग्गाण वहूण अप्पियसवासाण वहूण पियविप्पओगाण वहूण दुक्ख-दोमणस्साण आभागी भविस्सति, अणादिय च ण अणवयग्ग दीहमद्ध चाउरत ससारकतार भुज्जो-भुज्जो° अणुपरियट्टिस्सइ—जहा व से कुम्मए अगुत्तिदिए ॥

गुत्तकुम्मस्स सोक्ख-पद

१९ तए ण ते पावसियालगा जेणेव से दोच्चे कुम्मए तेणेव उवागछति, उवागच्छित्ता त कुम्मग सव्वओ समता उव्वत्तेति' °परियत्तेति आसारेति ससारेति चालेति घट्टेति फदेति खोभेति नहेहि आलुपति दतेहि य अक्खोडेति, नो चेव णं

१ ×(ख, ग)।
२ स० पा०—जाव सणिय।
३. स० पा०—चवल नहेहिं।
४ 'समाणे' इत्यत्र विहरतीति शेषो द्रष्टव्य (वृ)।
५ स० पा०—हीलणिज्जे०।
६. स० पा०—दडणाणि जाव अणुपरियट्टइ।
७. स० पा०—उव्वत्तेति जाव दतेहिं निक्खुडेंति जाव करेत्तए।

सचाएति तस्स कुम्मगस्स सरीरस्स किंचि आवाहं वा वावाहं वा उप्पाइत्तए छविच्छेयं वा° करेत्तए ॥

२०. तए णं ते पावसियालगा तं कुम्मगं दोच्चंपि तच्चंपि उव्वत्तेंति जाव[1], नो चेव णं संचायंति तस्स कुम्मगस्स सरीरस्स किंचि आवाहं वा वावाहं वा[2] °उप्पाइत्तए° छविच्छेयं वा करेत्तए, ताहे संता तंता परितंता निव्विण्णा समाणा जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ॥

२१ तए णं से कुम्मए ते पावसियालए चिरगए दूरगए[3] जाणित्ता सणियं-सणियं गीवं नीणेइ, नीणेत्ता दिसावलोयं करेइ, करेत्ता जमगसमगं चत्तारि वि पाए नीणेइ, नीणेत्ता ताए उक्किट्ठाए[4] °तुरियाए चवलाए चंडाए सिग्घाए उद्धयाए जइणाए छेयाए° कुम्मगईए वीईवयमाणे-वीईवयमाणे जेणेव मयंगतीरद्दहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं सद्धिं अभिसमण्णागए यावि होत्था ॥

२२ एवामेव समणाउसो! जो अम्हं समणो वा समणी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे[5] पंच य से इंदियाइं गुत्ताइं भवंति[6], °से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावगाणं बहूणं सावियाण य अच्चणिज्जे वंदणिज्जे नमंसणिज्जे पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं विणएणं पज्जुवासणिज्जे भवइ।

परलोए वि य णं नो बहूणि हत्थच्छेयणाणि य कण्णच्छेयणाणि य नासाछेयणाणि य एवं हिययउप्पायणाणि य वसणुप्पायणाणि य उल्लंवणाणि य पाविहिइ, पुणो अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं वीईवइस्सइ°— जहा व से कुम्मए गुत्तिंदिए ॥

निक्खेव-पदं

२३ एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं चउत्थस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते।

—त्ति बेमि ॥

---

१ ना० १।४।११।

२ सं० पा०—वावाहं वा जाव छविच्छेयं।

३ दूरगए (क, ख, ग, घ)।

४ सं० पा०—उक्किट्ठाए प्फ कुम्मगईए। अत्र पाठ संक्षेप. 'प्फ' अनेन संकेतेन सूचितोस्ति। वृत्तौ पूर्णपाठस्य निर्देशो लभ्यते।

५. विहरतीति शेष (वृ)।

६ सं० पा०—जाव जहा।

४ तस्स णं रेवयगस्स अदूरसामंते, एत्थ णं नंदणवणे नाम उज्जाणे होत्था—सव्वोउय-पुप्फ-फल-समिद्धे रम्मे नंदणवणप्पगासे पासाईए[1] दरिसणीए अभिरूवे पडिरूवे ॥

५ तस्स णं उज्जाणस्स बहुमज्झदेसभाए सुरप्पिए नाम जक्खाययणे होत्था—दिव्वे वण्णओ[2] ॥

६ तत्थ णं बारवईए नयरीए कण्हे नाम वासुदेवे राया परिवसइ। से णं तत्थ समुद्दविजयपामोक्खाणं दसण्हं दसाराणं, बलदेवपामोक्खाणं पंचण्हं महावीराणं, उग्गसेणपामोक्खाणं सोलसण्हं राईसाहस्सीणं[3], पज्जुन्नपामोक्खाणं अद्धुट्ठाणं कुमारकोडीणं, संबपामोक्खाणं सट्ठीए[4] दुद्दंतसाहस्सीणं, वीरसेणपामोक्खाणं एक्कवीसाए वीरसाहस्सीणं, महासेणपामोक्खाणं[5] छप्पण्णाए बलवगसाहस्सीणं, रुप्पिणिप्पामोक्खाणं बत्तीसाए महिलासाहस्सीणं, अणंगसेणापामोक्खाणं अणेगाणं गणियासाहस्सीणं अण्णेसिं च बहूणं ईसर-तलवर[6]-°माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ°-सत्थवाहप्पभिईणं, वेयड्ढगिरि[7]-सागरपेरंतस्स य दाहिणड्ढ-भरहस्स, बारवईए नयरीए आहेवच्चं[8] °पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे° पालेमाणे विहरइ ॥

थावच्चापुत्त-पदं

७ तत्थ णं बारवईए नयरीए थावच्चा नाम गाहावइणी परिवसइ—अड्ढा[9] °दित्ता वित्ता वित्थिण्ण-विउल-भवण-सयणासण-जाणवाहणा बहुधण-जायरूव-रयया आओग-पओग-संपउत्ता विच्छड्डिय-पउर-भत्तपाणा बहुदासी-दास-गो-महिस-गवेलग-प्पभूया बहुजणस्स° अपरिभूया ॥

८. तीसे णं थावच्चाए गाहावइणीए पुत्ते थावच्चापुत्ते नाम सत्थवाहदारए होत्था—सुकुमालपाणिपाए[10] °अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरे लक्खण-वंजण-गुणोववेए माणुम्माण-प्पमाणपडिपुण्ण-सुजाय-सव्वंगसुंदरंगे ससिसोमाकारे कंते पिय-दंसणे° सुरूवे ॥

९ तए णं सा थावच्चा गाहावइणी तं दारगं साइरेगअट्ठवासजाययं[11] जाणित्ता

---

१. पासातीए (ग, घ)।

२ ओ० सू० २।

३ रायसहस्साण (क); रातीसहस्साण (ग); रायासहस्साण (घ)।

४ सट्ठी (क); सट्ठीण (घ)।

५ महसेण° (ख, घ)।

६ सं० पा०—तलवर जाव सत्थवाह।

७. वियड्ढ° (ख)।

८ सं० पा०—आहेवच्चं जाव पालेमाणे।

९ सं० पा०—अड्ढा जाव अपरिभूया।

१० सं० पा०—सुकुमालपाणिपाए जाव सुरूवे।

११. °जाइ (ख); °जाय (क्वचित्)।

सोहणंसि तिहि-करण-नक्खत्त-मुहुत्तंसि कलायरियस्स उवणेइ जाव[1] भोगसमत्थं जाणित्ता बत्तीसाए इब्भकुलबालियाणं एगदिवसेणं पाणिं गेण्हावेइ।
बत्तीसओ दाओ जाव[2] बत्तीसाए इब्भकुलबालियाहिं सद्धिं विपुले सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधे[3] °पंचविहे माणुस्सए कामभोए° भुंजमाणे विहरइ॥

अरिट्ठनेमि-समवसरण-पदं

१० तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहा[4] अरिट्ठनेमी आइगरे तित्थगरे सो चेव वण्णओ[5] दसधणुस्सेहे नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासे अट्ठारसहिं समण-साहस्सीहिं[6], चत्तालीसाए अज्जियासाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे[7] °गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे° जेणेव बारवती नामं नगरी जेणेव रेवतगपव्वए जेणेव नंदणवणे उज्जाणे जेणेव सुरप्पियस्स जक्खस्स जक्खाययणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ॥

११. परिसा निग्गया। धम्मो कहिओ॥

कण्हस्स पज्जुवासणा-पदं

१२ तए णं से कण्हे वासुदेवे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! सभाए सुहम्माए मेघो-घरसियं गंभीरमहुरसद्दं[8] कोमुइयं[9] भेरिं तालेह॥

१३ तए णं ते कोडुंबियपुरिसा कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ[10]-°चित्त-माणंदिया जाव[11] हरिसवस-विसप्पमाणहियया करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं° मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामी! तह त्ति[12] °आणाए विणएणं वयणं° पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता कण्हस्स वासुदेवस्स अंतियाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सभा सुहम्मा, जेणेव कोमुइया भेरी, तेणेव उवागच्छंति,

---

१ ओ० सू० १४६-१४६।
२. ना० १।१।९१-९३।
३ सं० पा०—सद्दफरिसरसरूवगंधे जाव भुंज-माणे।
४ अरिहा (क, ख, ग)।
५ ओ० सू० १६ तथा वाचनान्तर पृ० १४०; अत्र 'संपाविउकामे' पर्यन्त वर्णको ग्राह्य।
६ °साहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे (क, ख, ग, घ) (औपपातिकसूत्रे सू० १६) 'चउद्दसहिं समणसाहस्सीहिं, छत्तीसाए अज्जियासाह-स्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे' एकवारमेव सद्धिं संपरिवुडे, इतिपाठोस्ति। अन्यागमेष्वपि इत्थमेव दृश्यते। अत्रापि इत्थमेव युज्यते।
७ सं० पा०—चरमाणे जाव जेणेव।
८ गंभीर° (ख, घ)।
९. सामुदा (द) इय (वृपा)।
१० सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव मत्थए।
११. ना० १।१।१६।
१२ सं० पा०—तहत्ति जाव पडिसुणेंति।

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

विसएसु इंदियाइं, रुंभता राग-दोस-निम्मुक्का ।
पावेंति निव्वुइसुहं, कुम्मोव्व मयगदहसोक्खं ॥१॥
इयरे उ अणत्थ-परंपराओ पावेंति पावकम्मवसा ।
संसार-सागरगया, गोमाउग्गसियकुम्मोव्व ॥२॥

पंचमं अज्झयणं

सेलगे

उक्खेव-पदं

१ जइ ण भंते ! समणेण भगवया महावीरेणं चउत्थस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, पचमस्स ण भते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

२. एव खलु जबू ! तेण कालेण तेण समएण वारवती[1] नाम नयरी होत्था—पाईणपडीणायया उदीणदाहिणवित्थिण्णा नवजोयणवित्थिण्णा दुवालसजोयणायामा धणवइ-मइ-निम्मिया[2] चामीयर-पवर-पागारा नाणामणि-पचवण्ण-कविसीसग-सोहिया अलकापुरि[3]-संकासा पमुइय-पक्कीलिया पच्चक्ख[4] देवलोगभूया ॥

३ तीसे ण वारवईए नयरीए वहिया[5] उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए रेवतगे[6] नामं पव्वए होत्था—तुगे गगणतलमणुलिहतसिहरे नाणाविहगुच्छ-गुम्म-लया-वल्लि-परिगए हस-मिग-मयूर-कोच-सारस-चक्कवाय-मयणसाल-कोइलकुलोववेए अणेगतड[7]-कडग-वियर-उज्झर-पवायपब्भारसिहरपउरे अच्छरगण-देवसघ-चारण-विज्जाहरमिहुण-सविचिण्णे[8] निच्चच्छणए दसारवर-वीरपुरिस-तेलोक्क-वलवगाण, सोमे सुभगे पियदसणे सुरूवे पासाईए दरिसणीए अभिरूवे पडिरूवे ॥

---

१ वारवई (क) ।

२ निम्माया (क, ग, घ); निम्मया (ख); अस्माक पार्श्वे वृत्ते आदर्शद्वयमस्ति । तत्रैकस्मिन् धणवइमतिनिम्मियत्ति—'धनपतिर्वैश्रमण तन्मत्यानिर्मिता निरूपिता' इति पाठोस्ति । अपरस्मिनादर्शे 'धणवइमइ-निम्मायत्ति—धनपतिर्वैश्रमणः तन्मत्या-निर्मापिता निरूपिता' इति पाठोस्ति । आदर्शगत-पाठभेदानुसारेण वृत्तावपि लिपि-कर्त्रा भेद कृत इति प्रतीयते ।

३ अलया (क, ख) ।

४. पच्चक्ख (ख) ।

५ वहिया (क, ख) ।

६ रेवयए (क); रेवए (घ) ।

७ °तडाग (क) ।

८. रायपसेणइय (३२) सूत्रे 'सविकिण्ण' इति पाठो लभ्यते ।

उवागच्छित्ता तं मेघोघरसियं गभीरमहुरसद्दं कोमुइयं[1] भेरिं तालेंति[2]। नओ निद्ध-महुर-गभीर-पडिसुएण पिव[3] सारइएण बलाहएणं अणुरसियं भेरीए॥

१४. तए ण तीसे कोमुइयाए भेरीए तालियाए समाणीए बारवईए नयरीए नव-जोयणवित्थिण्णाए दुवालसजोयणायामाए सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-कंदर-दरी-विवर[4]-कुहर-गिरिसिहर-नगरगोउर-पासाय-दुवार-भवण-देउल-पडिस्सुया[5]-सयसहस्ससंकुलं[6] करेमाणे[7] 'बारवतिं नयरिं'[8] सब्भिंतर-बाहिरियं सव्वओ समंता सद्दे विप्पसरित्था॥

१५. तए ण बारवईए नयरीए नवजोयणवित्थिण्णाए बारसजोयणायामाए समुद्द-विजयपामोक्खा दस दसारा जाव[9] गणियासहस्साइं[10] कोमुईयाए भेरीए सद्दं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया जाव[11] हरिसवस-विसप्पमाणहियया ण्हाया आविद्ध-वग्घारिय-मल्लदाम-कलावा अहयवत्थ-चंदणोकिन्नगायसरीरा[12] अप्पेगइया हयगया एवं गयगया रह-सीया[13]-संदमाणीगया अप्पेगइया पायविहार-चारेण पुरिसवग्गुरापरिक्खित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स अंतियं[14] पाउब्भवित्था॥

१६ तए ण से कण्हे वासुदेवे समुद्दविजयपामोक्खे दस दसारे जाव[15] अंतियं पाउब्भव-माणे पासित्ता हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए जाव[16] हरिसवस-विसप्पमाणहियए कोडुं-बियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! चाउ-रंगिणिं सेणं सज्जेह[17], विजयं च गंधहत्थिं उवट्ठवेह[18]। तेवि तहत्ति उवट्ठवेंति[19]॥

१७ [20]•तए ण से कण्हे वासुदेवे ण्हाए जाव[21] सव्वालंकारविभूसिए विजयं गंधहत्थिं दुरुढे समाणे सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं महया भड-चडगर-वंद-

---

१ कोमुदियं (ख, ग, घ)।
२ तार्डेति (ग)।
३ तिव (क)।
४ वियर (क)।
५. पडिसुया (क, घ); पंडिसुया (ख, ग)।
६ °संकुलसद्द (क, ख)।
७ करेमाणा (क, ख, ग, घ); असौ पाठ वृत्त्याधारेण स्वीकृत। अत्र 'करेमाणे' 'सद्दे' इति पदस्य विशेषणमस्ति। वृत्तौ-कुर्वन्निति व्याख्यातमुपलभ्यते।
८. वारवईए नयरीए (क)।
९ ना० १।५।६।
१०. अनोग्रे 'ईसरतलवर' सवन्धिपाठो विद्यते, सचात्र संक्षेपीकरणहेतुना परित्यक्तोभूदिति प्रतीयते।
११. ना० १।१।१९।
१२. °किन्नगासरीरा (ख, ग)।
१३. सिया (ख)।
१४. अंतिए (ग, घ)।
१५. ना० १।५।१५।
१६. ना० १।१।१९।
१७. सज्जेहा (ग)
१८. उट्ठवेह (ग)।
१९. उट्ठवेंति (ग)।
२०. सं० पा० —जाव पज्जुवासइ।
२१. ना० १।१।८१।

परियाल-सपरिवुडे बारवतीए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव रेवतगपव्वए जेणेव नंदणवणे उज्जाणे जेणेव सुरप्पियस्स जक्खस्स जक्खाययणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहओ अरिट्ठनेमिस्स छत्ताइच्छत्तं पडागाइपडागं विज्जाहर-चारणे जंभए य देवे ओवयमाणे उप्पयमाणे पासइ, पासित्ता विजयाओ गंधहत्थीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता अरहं अरिट्ठनेमिं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छइ,

[तं जहा—सचित्ताणं दव्वाणं विउसरणयाए, अचित्ताणं दव्वाणं अविउसरणयाए, एगसाडिय-उत्तरासंगकरणेणं, चक्खुफासे अंजलिपग्गहेणं, मणसो एगत्तीकरणेणं][1]। जेणामेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहं अरिट्ठनेमिं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता अरहओ अरिट्ठनेमिस्स नच्चासन्ने नाइदूरे सुस्सूसमाणे नमंसमाणे पंजलिउडे अभिमुहे विणएणं° पज्जुवासइ ॥

थावच्चापुत्तस्स पव्वज्जासंकप्प-पदं

१८. थावच्चापुत्ते वि निग्गए। जहा मेहे[2] तहेव धम्मं सोच्चा निसम्म[3] जेणेव थावच्चा गाहावइणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पायग्गहणं करेइ। जहा मेहस्स[4] तहा चेव निवेयणा ॥

१९. तए णं तं थावच्चापुत्तं थावच्चा गाहावइणी जाहे नो संचाएइ विसयाणुलोमाहि य विसयपडिकूलाहि य बहूहिं[5] आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा सण्णवित्तए वा विण्णवित्तए वा ताहे अकामिया चेव थावच्चापुत्तस्स दारगस्स[6] निक्खमणमणुमन्नित्था ॥

२० तए णं सा थावच्चा [गाहावइणी ?] आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता महत्थं महग्घं महरिहं रायारिहं पाहुडं गेण्हइ, गेण्हित्ता मित्त[7]-•नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं सद्धिं° संपरिवुडा जेणेव कण्हस्स वासुदेवस्स भवणवर-पडिदुवार-देसभाए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पडिहारदेसिएणं मग्गेणं जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल[8]-•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं° वद्धावेइ, वद्धावेत्ता तं महत्थं महग्घं महरिहं रायारिहं पाहुडं उवणेइ, उवणेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! मम एगे पुत्ते थावच्चापुत्ते नामं दारए—इट्ठे[9] •कंते पिए मणुण्णे

---

१. असौ कोष्ठकवर्ती पाठः व्याख्यांशः प्रतीयते।
२. पू०—ना० १।१।१०१, १०२।
३. निसम्मा (ख, ग, घ)।
४. पू०—ना० १।१।१०२-११३।
५. १।१।११४ सूत्रे 'बहूहिं' इति पदं विसयाणुलोमाहि इति पदस्य पूर्वं विद्यते।
६. × (ख, ग, घ)।
७. सं० पा०—मित्त जाव संपरिवुडा।
८. सं० पा०—करयल वद्धावेइ।
९. सं० पा०—इट्ठे जाव से णं।

मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए वहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे रयणे रयणभूए जीवियऊसासए हिययनदिजणए उवरपुप्फं पिव दुल्लहे सवणयाए, किमग पुण दरिसणयाए ?

से जहानामए उप्पले ति वा पउमे ति वा कुमुदे ति वा पके जाए जले संवड्ढिए नोवलिप्पइ पकरएण नोवलिप्पइ जलरएण, एवामेव थावच्चापुत्ते कामेसु जाए भोगेसु सवड्ढिए नोवलिप्पइ कामरएण नोवलिप्पइ भोगरएण ।° से ण देवाणुप्पिया ! ससारभउव्विग्गे भीए 'जम्मण-जर-मरणाण'[1] इच्छइ अरहओ अरिट्ठनेमिस्स[2] °अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय° पव्वइत्तए । अहण्ण[3] निक्खमणसक्कार करेमि । त इच्छामि ण देवाणुप्पिया ! थावच्चापुत्तस्स निक्खममाणस्स छत्तमउड-चामराओ य विदिन्नाओ ।।

२१ तए ण कण्हे वासुदेवे थावच्च गाहावइणि एव वयासी—अच्छाहि ण तुम देवाणुप्पिए ! सुनिव्वुत-वीसत्था, अहण्ण सयमेव थावच्चापुत्तस्स दारगस्स निक्खमणसक्कार करिस्सामि ।।

कण्हस्स थावच्चापुत्तस्स य परिसंवाद-पदं

२२ तए ण से कण्हे वासुदेवे चाउरगिणीए सेणाए विजय हत्थिरयण दुरूढे समाणे जेणेव थावच्चाए गाहावइणीए भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थावच्चापुत्त एव वयासी—मा[4] ण तुम देवाणुप्पिया ! मुडे भवित्ता पव्वयाहि, भुंजाहि ण देवाणुप्पिया[5] ! विपुले माणुस्सए कामभोगे मम वाहुच्छाय[6]-परिग्गहिए । केवल देवाणुप्पियस्स अह नो सचाएमि वाउकाय[7] उवरिमेण गच्छमाण निवारित्तए । अण्णो[8] ण[9] देवाणुप्पियस्स ज किंचि आवाह वा वाबाह[10] वा उप्पाएइ, त सव्व निवारेमि ।।

२३ तए ण से थावच्चापुत्ते कण्हेण वासुदेवेण एव वुत्ते समाणे कण्ह वासुदेव एव वयासी—जइ ण देवाणुप्पिया ! मम जीवियतकर[11] मच्चु एज्जमाण निवारेसि, जर वा सरीररूव-विणासणि सरीर अइवयमाणि निवारेसि, तए ण अह तव वाहुच्छाय-परिग्गहिए विउले माणुस्सए कामभोगे भुजमाणे विहरामि ।।

२४ तए ण से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्तेण एव वुते समाणे थावच्चापुत्त एवं

---

१. लिपिसक्षेपेण एतवान् पाठ परित्यक्तोस्ति । स च १।१।१४५ सूत्राधारेण पूरितोस्ति ।
२. स० पा०—अरिट्ठनेमिस्स जाव पव्वइत्तए ।
३. अह ण (ख) ।
४. नो (ग) ।
५ °प्पिया मम जीवियणुस्सए (ख) ।
६ °छाया (ख) ।
७. °क्काय (क) ।
८ अन्ने (घ) ।
९. ण्ण (ख, ग) ।
१०. विवाह (ख) ।
११. °करणिय (क, ख, घ) ।

वयासी—एए णं देवाणुप्पिया दुरइक्कमणिज्जा, नो खलु सक्का सुवलिएणावि देवेण वा दाणवेण वा निवारित्तए, नण्णत्थ[1] अप्पणो[2] कम्मक्खएणं ॥

२५ तए ण से थावच्चापुत्ते कण्ह वासुदेव एवं वयासी—जइ ण एए दुरइक्कमणिज्जा, नो खलु सक्का[3] •सुवलिएणावि देवेण वा दाणवेण वा निवारित्तए°, नण्णत्थ अप्पणो कम्मक्खएण । त इच्छामि ण देवाणुप्पिया ! अण्णाण-मिच्छत्त-अविरइ-कसाय-सचियस्स अत्तणो कम्मक्खयं करित्तए ॥

कण्हस्स जोगक्खेम-घोसणा-पद

२६ तए णं से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्तेणं एव वुत्ते समाणे कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह ण देवाणुप्पिया ! बारवईए नयरीए सिंघाडग-तिग[4]-•चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°पहेसु हत्थिखधवरगया महया-महया सद्देण उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा उग्घोसणं करेह—एव खलु देवाणुप्पिया ! थावच्चापुत्ते ससारभउव्विग्गे भीए जम्मण-जर-मरणाण, इच्छइ अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अतिए मुडे भवित्ता पव्वइत्तए[5], त जो खलु देवाणुप्पिया ! राया वा जुवराया वा देवी वा कुमारे वा ईसरे वा तलवरे वा कोडुबिय-माडबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहे वा थावच्चापुत्तं पव्वयतमणुपव्वयइ, तस्स ण कण्हे वासुदेवे अणुजाणइ[6] पच्छाउरस्स वि य से मित्त-नाइ[7]-•नियग-सयण-सबधि-परिजणस्स° 'जोगक्खेम-वट्टमाणी'[8] पडिवहइ त्ति कट्टु घोसण घोसेह जाव घोसति ॥

थावच्चापुत्तस्स अभिनिक्खमण-पद

२७ तए ण थावच्चापुत्तस्स अणुराएण पुरिससहस्स निक्खमणाभिमुह ण्हायं सव्वालकारविभूसिय[9] पत्तेयं-पत्तेय पुरिससहस्सवाहिणीसु सिवियासु दुरूढ समाणं मित्त-नाइ-परिवुड थावच्चापुत्तस्स अतिय पाउब्भूय ॥

२८ तए ण से कण्हे वासुदेवे पुरिससहस्स अतिय पाउब्भवमाण पासइ, पासित्ता कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—जहा मेहस्स निक्खमणाभिसेओ[10]

---

१ अन्नत्थ (ख, ग) ।
२ अप्पणा (क, ख, ग, वृ) ।
३. स० पा०—सक्का जाव नन्नत्थ ।
४ सं० पा०—तिग जाव पहेसु ।
५. पव्वतित्तते (ख, घ) ।
६. अणुजाणाति (ख) ।
७ स० पा०—नाइ° ।
८. जोगक्खेमं वट्टमाणी (क, ख, ग), जोगक्खेम-वट्टमाणी (घ) ।
९ सव्वालंकारभूसिय (क, ख) ।
१० ना० १।१।१२२-१२८ ।

●'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अणेगखंभ-सयसन्निविट्ठं जाव[2] सीयं उवट्ठवेह[3] ॥

२९ तए णं से थावच्चापुत्ते बारवतीए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव रेवतगपव्वए जेणेव नंदणवणे उज्जाणे जेणेव सुरप्पियस्स जक्खस्स जक्खाययणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहओ अरिट्ठनेमिस्स छत्ताइछत्तं पडागाइपडागं विज्जाहर-चारणे जंभए य देवे ओवयमाणे उप्पयमाणे पासइ°, पासित्ता सीयाओ पच्चोरुहइ ॥

सिस्सभिक्खादाण-पद

३० तए णं से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्तं पुरओ काउं जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी [4]●तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अरहं अरिट्ठनेमिं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेति, करेत्ता वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया ! थावच्चापुत्ते थावच्चाए गाहावइणीए एगे पुत्ते इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे रयणे रयणभूए जीवियऊसासए हिययनंदिजणए उंबरपुप्फं पिव दुल्लहे सवणयाए, किमंग पुण दरिसणयाए ?

से जहानामए उप्पले ति वा पउमे ति वा कुमुदे ति वा पंके जाए जले संवड्ढिए नोवलिप्पइ पंकरएणं नोवलिप्पइ जलरएणं, एवामेव थावच्चापुत्ते कामेसु जाए भोगेसु संवड्ढिए नोवलिप्पइ कामरएणं नोवलिप्पइ भोगरएणं। एस णं देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गे भीए जम्मण-जर-मरणाणं, इच्छइ देवाणु-प्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए। अम्हे णं देवाणुप्पियाणं सिस्सभिक्खं दलयामो। पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! सिस्सभिक्खं ॥

३१. तए णं अरहा अरिट्ठनेमी कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे एयमट्ठं सम्मं पडिसुणेइ ॥

३२ तए णं से थावच्चापुत्ते अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतियाओ उत्तरपुरत्थिमं दिसीभायं अवक्कमइ, सयमेव° आभरण-मल्लालंकारं ओमुयइ।

३३ तए णं सा थावच्चा गाहावइणी हंसलक्खणेणं पडसाडएणं[5] आभरण-मल्लालंकारं पडिच्छइ, हार-वारिधार-सिंदुवार-छिन्नमुत्तावलि-प्पगासाइं अंसूणि 'विणिम्मु-

---

१. सं० पा०—तहेव सेयापीएहिं कलसेहिं ण्हावेइ जाव अरहओ अरिट्ठनेमिस्स छत्ताइछत्तं पडागाइपडागं पासइ, पासित्ता विज्जाहरचारणे जाव पासित्ता।

२. ना० १।१।१२९।

३. पू०—ना० १।१।१३०-१४३।

४. सं० पा०—सव्वं तं चेव जाव आभरणं।

५. पडगसाडगेण (ख)।

यमाणी-विणिम्मुयमाणी[1] •रोयमाणी-रोयमाणी कंदमाणी-कदमाणी विलव-माणी-विलवमाणी° एव वयासी—जइयव्व जाया ! घडियव्वं जाया ! परक्कमियव्व जाया ! अस्सिं च ण अट्ठे नो पमाएयव्व[2]। •अम्हपि ण एसेव मग्गे भवउ त्ति कट्टु थावच्चा गाहावइणी अरह अरिट्ठनेमिं वंदति नमंसति, वदित्ता नमसित्ता° जामेव दिसि पाउब्भूया तामेव दिसि पडिगया ॥

थावच्चापुत्तस्स पव्वज्जागहण-पदं

३४. तए ण से थावच्चापुत्ते पुरिससहस्सेण सद्धि सयमेव पचमुट्ठिय लोयं करेइ, करेत्ता जेणामेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरह अरिट्ठनेमिं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ जाव[3] पव्वइए ॥

थावच्चापुत्तस्स अणगारचरिया-पदं

३५. तए ण से थावच्चापुत्ते अणगारे जाए—इरियासमिए भासासमिए[4] •एसणासमिए आयाण-भंड-मत्त-णिक्खेवणासमिए उच्चार-पासवण-खेल-सिघाण-जल्ल-पारिट्ठावणियासमिए मणसमिए वइसमिए कायसमिए मणगुत्ते वइगुत्ते कायगुत्ते गुत्ते गुत्तिदिए गुत्तबभयारी अकोहे अमाणे अमाए अलोहे सते पसते उवसंते परिनिव्वुडे अणासवे अममे अकिंचणे निरुवलेवे,

कसपाईव मुक्कतोए सखो इव निरगणे जीवो विव अप्पडिहयगई गगणमिव निरालवणे वायुरिव अप्पडिवद्धे सारयसलिल व सुद्धहियए पुक्खरपत्त पिव निरुवलेवे कुम्मो इव गुत्तिदिए खग्गविसाण व एगजाए विहग इव विप्पमुक्के भारडपक्खीव अप्पमत्ते कुजरो इव सोडीरे वसभो इव जायत्थामे सीहो इव दुद्धरिसे मंदरो इव निप्पकपे सागरो इव गंभीरे चदो इव सोमलेस्से सूरो इव दित्ततेए जच्चकचण व जायरूवे वसुधरव्व सव्वफासविसहे सुहुयहुयासणोव्व तेयसा जलते ॥

३६ नत्थि ण तस्स भगवतस्स कत्थइ पडिवधे भवइ। [सेय पडिवधे चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ। दव्वओ—सच्चित्ताचित्त-मीसेसु। खेत्तओ—गामे वा नगरे वा रण्णे वा खले वा घरे वा अंगणे वा। कालओ—समए वा आवलियाए वा आणापाणुए वा थोवे वा लवे वा मुहुत्ते वा

---

१. विणिमुचमाणी-विणिमुचमाणी (ख, ग, घ), स० पा०—विणिम्मुयमाणी २ एव।

२. स० पा०—पमाएयव्व जाव जामेव।

३. ना० १।१।१४९,१५०।

४. स० पा०—भासासमिए जाव विहरइ। औपपातिकसूत्रे स्थानद्वये (२७-२९, १६४) अनगार-वर्णको विद्यते। प्रस्तुतसूत्रस्यवृत्तौ व्याख्यातादनगार-वर्णकात् तद् द्वयमपि भिन्नमस्ति।

अहोरत्ते वा पक्खे वा मासे वा अयणे वा संवच्छरे वा अण्णयरे वा दीहकाल-संजोए। भावओ—कोहे वा माणे वा माए वा लोहे वा भए वा हासे वा। एवं तस्स न भवइ'] ॥

३७ से णं भगवं वासीचंदणकप्पे समतिणमणि-लेट्ठुकंचणे समसुहदुक्खे इहलोग-परलोग-अप्पडिबद्धे जीविय-मरण-निरवकंखे संसारपारगामी कम्मनिग्घायणट्ठाए एवं च णं० विहरइ ॥

३८ तए णं से थावच्चापुत्ते अरहओ अरिट्ठनेमिस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं[2] चोद्दसपुव्वाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं[3] •चउत्थ-छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ ॥

थावच्चापुत्तस्स जणवयविहार-पद

३९ तए णं अरहा अरिट्ठनेमि थावच्चापुत्तस्स अणगारस्स तं इब्भाइयं अणगार-सहस्सं सीसत्ताए दलयइ ॥

४० तए णं से थावच्चापुत्ते अण्णया कयाइं अरहं अरिट्ठनेमिं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे 'अणगारसहस्सेण सद्धिं'[4] बहिया जणवयविहारं विहरित्तए।
अहासुहं[5] ॥

४१. तए णं से थावच्चापुत्ते अणगारसहस्सेण सद्धिं[6] बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

---

१. असौ कोष्ठकवर्ती पाठः व्याख्यांशः प्रतीयते।

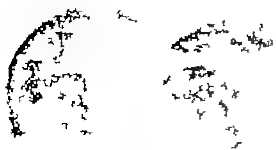
२. सामाइयाइं (ख, ग)।

३ सं० पा०—बहूहिं जाव चउत्थ विहरइ (क, ख, ग, घ)। अत्र 'चउत्थ' शब्दानंतरं 'जाव' शब्दो युज्यते। 'बहूहिं' इति पदानन्तरं 'जाव' शब्दोनर्थकोस्ति। प्रस्तुतसूत्रस्य द्वितीयश्रुतस्कन्धस्य प्रथमवर्गस्य प्रथमाध्ययनेपि 'बहूहिं चउत्थ जाव विहरइ' एव पाठो लभ्यते।

४. सहस्सेण अणगाराण (क, ख, घ)। सहस्सेण अणगारेण (ग)। अग्रिमसूत्रे 'अणगार सहस्सेण सद्धिं' इति पाठो लभ्यते। 'क्वचित्' प्रयुक्तादर्शेषु अत्रापि इत्थमेव पाठोस्ति, तेनात्र स एव पाठः स्वीकृतः।

५. अहासुहं देवाणुप्पिया! (क)।

६ सद्धिं तेणं उरालेणं उदग्गेणं (उग्गेणं—ख, ग) पयत्तेणं पग्गहिएणं (क, ख, ग, घ)। पूर्वसूत्रे थावच्चापुत्रेण विहारस्य अनुज्ञा प्रार्थिता तत्र यः पाठोऽस्ति, तस्यानुसारेण प्रस्तुतसूत्रेऽपि 'अणगारसहस्सेण सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरइ' इत्येव पाठो युक्तोस्ति। एतादृशे प्रसङ्गे सर्वत्रापि एतावानेव पाठः उपलभ्यते। 'तेणं उरालेणं° पग्गहिएणं' एतावान् पाठोऽत्र अतिरिक्त इव प्रतिभाति।
यद्यसौ पाठः स्वीक्रियेत, तदानीं 'पग्गहिएणं' इति पदस्यानन्तरं 'तवोकम्मेणं' इति पाठः आवश्यकोऽस्ति। तं विना कश्चिद् अर्थ-सम्बन्धो नोपपद्यते।



सेलगराय-पदं

४२ तेणं कालेण तेण समएण सेलगपुरे नाम नगरे होत्था। सुभूमिभागे उज्जाणे। सेलए राया। पउमावई देवी। मडुए[1] कुमारे जुवराया।

४३ तस्स ण सेलगस्स पथगपामोक्खा[2] पच मतिसया होत्था—उप्पत्तियाए वेणइयाए कम्मियाए पारिणामियाए उववेया रज्जधुरं चितयति ।।

४४ थावच्चापुत्ते सेलगपुरे समोसढे। राया निग्गए ।।

सेलगस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं

४५ [3]•तए णं से सेलए राया थावच्चापुत्तस्स अणगारस्स अतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण-हियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता थावच्चापुत्त अणगार तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—

सद्दहामि ण भते ! निग्गथ पावयण।

पत्तियामि ण भते ! निग्गथ पावयण।

रोएमि ण भते ! निग्गथ पावयण।

अब्भुट्ठेमि ण भते ! निग्गथ पावयणं।

एवमेय भते ! तहमेय भते ! अवितहमेय भते ! असदिद्धमेय भते ! इच्छिय-मेय भते ! पडिच्छियमेय भते ! इच्छिय-पडिच्छियमेय भते ! ज णं तुब्भे वदह त्ति कट्टु वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—जहा ण देवाणुप्पियाण अतिए वहवे उग्गा उग्गपुत्ता भोगा जाव[4] इब्भा इब्भपुत्ता चिच्चा हिरण्ण, एव—धण धन्न वल वाहण कोस कोट्ठागार पुर अतेउर, चिच्चा विउल धण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-सख-सिल-प्पवाल-सतसार-सावएज्ज, विच्छड्डित्ता विगोवइत्ता, दाण दाइयाण परिभाइत्ता, मुडा भवित्ता ण अगाराओ अणगारिय पव्वइया, तहा ण अह नो सचाएमि° जाव[5] पव्वइत्तए, अह ण देवाणुप्पियाण अतिए चाउज्जामिय[6] •गिहिधम्मं पडिवज्जि-

---

१. मड्डुए (क) सर्वत्र मद्दुए (ग), मद्दुए (घ)।

२. °मोक्खा ण (क, ग, घ)।

३ स० पा०—धम्म सोच्चा जहा ण देवाणुप्पियाण अतिए वहवे उग्गा भोगा जाव चइत्ता हिरण्ण जाव पव्वइया तहा ण अह णो सचाएमि पव्वइए।

४ राय० सू० ६८८।

५. राय० सू० ६९५।

६. अत्र 'पचाणुव्वइय' इति पाठ प्रवाहपतित इवाभाति। अर्हतोऽरिष्टनेमे. समये चतुर्यामधर्मस्य प्रवृत्तिरासीत्। यथा केशिस्वामिना चित्तसारथये चतुर्यामधर्मस्य उपदेश कृत (रायपसेणइय सू० ६९३)। चित्तसारथेर्न तस्वीकारेप्यस्य समीक्षा कृतास्ति, द्रष्टव्य—रायपसेणइय, ६९५ सूत्रस्य पादटिप्पणम्। अत्रापि वस्तुत. 'चाउज्जामिय गिहिधम्म' इति पाठ. समीचीन प्रतिभाति।

स्सामि[१]।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि[२]॥

४६. तए णं से सेलए राया थावच्चापुत्तस्स अणगारस्स अंतिए चाउज्जामियं गिहि-धम्मं उवसंपज्जइ॥

सेलगस्स समणोवासग-चरिया-पदं

४७. तए णं से सेलए राया समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे उवलद्धपुण्णपावे आसव-संवर-निज्जर-किरिया-अहिगरण-बंधमोक्ख-कुसले असहेज्जे देवासुर-णाग-जक्ख-रक्खस-किण्णर-किंपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगाइएहिं देवगणेहिं निग्गंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जे, निग्गंथे पावयणे णिस्संकिए णिक्कंखिए निव्वितिगिच्छे लद्धट्ठे गहियट्ठे पुच्छियट्ठे अभिगयट्ठे विणिच्छियट्ठे अट्ठिमिंज-पेमाणुरागरत्ते 'अयमाउसो ! निग्गंथे पावयणे अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे', ऊसियफलिहे अवगुयदुवारे चियत्ततेउर-परघरदार-प्पवेसे चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेमाणे समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसहभेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढफलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणे सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं[३] अप्पाणं भावेमाणे विहरइ॥

४८. पंथगपामोक्खा पंच मंति-सया[४] समणोवासया जाया॥

४९. थावच्चापुत्ते बहिया जणवयविहारं विहरइ॥

५०. तेणं कालेणं तेणं समएणं सोगंधिया नामं नयरी होत्था—वण्णओ[५]। नीलासोए उज्जाणे—वण्णओ[६]॥

सुदंसणसेट्ठि पदं

५१. तत्थ णं सोगंधियाए नयरीए सुदंसणे नामं नयरसेट्ठी परिवसइ, अड्ढे जाव[७] अपरिभूए॥

सुयपरिव्वायग-पदं

५२. तेणं कालेणं तेणं समएणं सुए नामं परिव्वायए होत्था—'रिउव्वेय[८]-जजुव्वेय[९]-साम-

---

सं० पा०—पंचाणुव्वइयं जाव समणोवासए जाए अहिगयजीवाजीवे जाव अप्पाणं। वृत्तौ 'पंचाणुव्वइयं' इति पदस्याग्रे 'सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं' इति पाठोऽस्ति। असावपि औपपातिकसूत्रात् उद्धृतोऽस्ति वृत्तिकृता।

१. पडिवज्जित्तए (वृ)।

२. काहिसि (वृ)।

३. वृत्तौ अस्य पाठस्य पूर्तिः कृताऽस्ति। तत्र कानिचित् पदानि भिन्नानि लभ्यन्ते।

४. °सया य (ग)।

५. ओ० सू० १।

६. ना० १।३।३।

७. ना० १।५।७।

८. रियुव्वेय (ख)।

९. यजुव्वेय (घ); जउव्वेय (क्व०)।

वेय-अथव्वणवेय-सट्ठितंतकुसले[1] संखसमए लद्धट्ठे पंचजम[2]-पचनियमजुत्त सोय-मूलय दसप्पयार परिव्वायगधम्म दाणधम्मं च सोयधम्म च तित्थाभिसेय च आघवेमाणे पण्णवेमाणे धाउरत्त-'वत्थ-पवर'[3]-परिहिए तिदड-कुडिय[4]-छत्त-छन्नालय-अकुस-पवित्तय[5]-केसरि-हत्थगए परिव्वायगसहस्सेण सद्धि सपरिवुडे जेणेव सोगंधिया नयरी जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता परिव्वायगावसहसि भडगनिक्खेव करेइ, करेत्ता सखसमएण अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

५३. तए ण सोगंधियाए नगरीए सिंघाडग[6]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु° बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ—एव खलु सुए परिव्वायए इहमागए[7] •इह सपत्ते इह समोसढे इह चेव सोगंधियाए नयरीए परिव्वायगावसहसि सखसमएणं अप्पाण भावेमाणे° विहरइ ॥

५४. परिसा निग्गया ! सुदसणो वि णीति[8] ॥

सोयमूलय-धम्म-पद

५५ तए ण से सुए परिव्वायए तीसे परिसाए सुदसणस्स य अण्णेसिं च बहूण सखाण[9] परिकहेइ— एवं खलु सुदसणा ! अम्ह सोयमूलए धम्मे पण्णत्ते । से वि य सोए दुविहे पण्णत्ते, त जहा—दव्वसोए य भावसोए य ।

दव्वसोए उदएण मट्टियाए य । भावसोए दब्भेहि य मतेहि य ।

जं ण अम्ह देवाणुप्पिया ! किंचि असुई भवइ त सव्व सज्जपुढवीए आलिप्पइ[10], तओ पच्छा सुद्धेण वारिणा पक्खालिज्जइ, तओ त असुई सुई भवइ । एव खलु जीवा जलाभिसेय-पूयप्पाणो अविग्घेण सग्ग गच्छंति ॥

---

१. वृत्तिकारेणात्र वाचनान्तरं व्याख्यातमस्ति । तद् औपपातिकसूत्रे (९७) इत्थमस्ति—रिउव्वेद - यज्जुव्वेद - सामवेद-अहव्वणवेद-इतिहासपचमाण निघण्टुछट्ठाण सगोवगाण सरहस्साणं चउण्ह वेदाण सारगा पारगा धारगा सडगवी सट्ठितंतविसारया सखाणे सिक्खाकप्पे वागरणे छदे निरुत्ते जोइसामयणे अण्णेसु य बहूसु बभण्णएसु य सत्थेसु सुपरिणिट्ठिए ।

२. पचजाम (घ) ।

३. पवरवत्य (ग) ।

४. वृत्तौ वाचनान्तरस्य उल्लेखो विद्यते, तदनुसारेण 'कु डिय-कचणिय-करोडिय-छत्त°' एव पाठ-सरचना स्यात् । औपपातिके (११७) पि इत्थ पाठक्रमो विद्यते—कु डियाओ य कचणियाओ य करोडियाओ य भिसियाओ य' ।

५. परिवत्तिय (ख, ग) अशुद्ध प्रतिभाति; पवित्तिय (घ) ।

६. स० पा०—सिंघाडग° ।

७. स० पा०—इहमागए जाव विहरइ ।

८. निग्गए (क्व०) ।

९. सखाण धम्मं (क्व०) ।

१०. आलिपइ (ख) ।

सुदंसणस्स सोयमूलय-धम्मपडिवत्ति-पदं

५६ तए णं से सुदसणे सुयस्स अंतिए धम्म सोच्चा हट्ठतुट्ठे[1] सुयस्स अंतियं सोयमूलयं धम्म गेण्हइ, गेण्हित्ता परिव्वायए विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेण पडिलाभेमाणे[2] •सखसमएण अप्पाण भावेमाणे° विहरइ ।।

५७ तए ण से सुए परिव्वायए सोगंधियाओ नयरीओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता वहिया जणवयविहार विहरइ ।।

थावच्चापुत्तस्स सुदंसणेण संवाद-पदं

५८ तेणं कालेण तेण समएण थावच्चापुत्तस्स समोसरणं। परिसा निग्गया। सुदसणो वि णीइ[3]। थावच्चापुत्त वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एवं वयासी—तुम्हाण[4] किंमूलए धम्मे पण्णत्ते ?

५९ तए ण थावच्चापुत्ते सुदसणेण एवं वुत्ते समाणे सुदसण एव वयासी—सुदसणा ! विणयमूलए[5] धम्मे पण्णत्ते। से वि य विणए दुविहे पण्णत्ते, त जहा—अगारविणए[6] अणगारविणए य।

तत्थ ण जे से अगारविणए, से ण 'चाउज्जामिए गिहिधम्मे। तत्थ ण जे से अणगारविणए, से णं चाउज्जामा, त जहा—सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमण, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमण सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमण, सव्वाओ वहिद्धादाणाओ वेरमण'[7]।

---

१ हट्ठ (क, ख, ग)।

२ स० पा०—पडिलाभेमाणे जाव विहरइ।

३ णीओ (ग), निग्गओ (क्व०)।

४ तुब्भाण (घ)।

५ विणयमूले (ख, ग, घ)।

६. आगार° (ख, घ)।

७. पच अणुव्वयाइ सत्त सिक्खावयाइ एक्कारस उवासगपडिमाओ। तत्थण जे से अणगारविणए, से ण पच महव्वयाइ, त जहा—सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमण सव्वाओ मुसावायाओ वेरमण सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमण सव्वाओ मेहुणाओ वेरमण सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमण सव्वाओ राइभोयणाओ वेरमण जाव मिच्छादसणसल्लाओ वेरमण, दसविहे पच्चक्खाणे वारस भिक्खुपडिमाओ (क, ख, ग, घ)। एतत् अगारानगारविनययोर्निरूपण महावीरकालीन वर्तते। अर्हन्नरिष्टनेमि. द्वाविंशतितम तीर्थंकरो विद्यते। तच्छासने चतुर्याम धर्मस्यैव निरूपणमासीत्। मज्झिमगा वावीस अरहता भगवतो चाउज्जाम धम्म पण्णवयति' इति स्थानाङ्गवर्ति पाठेन उक्ताभिमतस्य पुष्टिर्जायते। उत्तराध्ययनेनापि (२३।२३-२८) अस्य समर्थन भवति। अत्र पचमहाव्रतात्मकस्य अनगारधर्मस्य तथा पचाणुव्रत-सप्तशिक्षाव्रतात्मकस्य अगारधर्मस्य निरूपण जात तद्वर्णनसक्रमणमेव प्रतीयते। स्थानाङ्गे चतुर्यामनिरूपण इत्थमस्ति—सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमण सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं सव्वाओ वहिद्धादाणाओ वेरमण (४।१३६)।

इच्चेएणं दुविहेण विणयमूलएण धम्मेणं आणुपुव्वेण अट्ठकम्मपगडीओ खवेत्ता लोयग्गपइट्ठाणा भवति ॥

६०. तए ण थावच्चापुत्ते सुदसण एव वयासी—तुब्भण्ण सुदसणा ! किंमूलए धम्मे पण्णत्ते ?

अम्हाणं देवाणुप्पिया ! सोयमूलए धम्मे पण्णत्ते[1]। •से वि य सोए दुविहे पण्णत्ते, त जहा—दव्वसोए य भावसोए य।

दव्वसोए उदएण मट्टियाए य। भावसोए दब्भेहि य मतेहि य।

जं ण अम्ह देवाणुप्पिया ! किचि असुई भवइ त सव्व सज्जपुढवीए आलिप्पइ, तओ पच्छा सुद्धेण वारिणा पक्खालिज्जइ, तओ ण असुई सुई भवइ। एव खलु जीवा जलाभिसेय-पूयप्पाणो अविग्घेण° सग्ग गच्छंति ॥

६१ तए ण थावच्चापुत्ते सुदसण एव वयासी—सुदसणा ! से जहानामए केइ पुरिसे एग मह रुहिरकय वत्थ रुहिरेण चेव धोवेज्जा[2], तए ण सुदसणा ! तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेण चेव[3] पक्खालिज्जमाणस्स अत्थि काइ[4] सोही ?

नो इणट्ठे[5] समट्ठे। एवामेव सुदसणा ! तुब्भ पि पाणाइवाएणं जाव[6] वहिद्धा-दाणेण[7] नत्थि सोही, जहा तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेण चेव पक्खालिज्ज-माणस्स नत्थि सोही।

सुदसणा ! से जहानामए केइ पुरिसे एग मह रुहिरकय वत्थ सज्जिय[8]-खारेण आलिपइ[9], आलिपित्ता पयण आरुहेइ[10], आरुहेत्ता उण्हं गाहेइ, तओ पच्छा सुद्धेण वारिणा धोवेज्जा। से नूण सुदसणा ! तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स सज्जिय-खारेण अणुलित्तस्स पयण आरुहियस्स उण्ह गाहियस्स सुद्धेण वारिणा पक्खालिज्जमाणस्स सोही भवइ ?

हता भवइ। एवामेव सुदसणा ! अम्ह पि पाणाइवायवेरमणेण जाव[11] वहिद्धा-दाणवेरमणेण[12] अत्थि सोही, जहा वा तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स[13] •सज्जिय-खारेण अणुलित्तस्स पयण आरुहियस्स उण्ह गाहियस्स° सुद्धेण वारिणा पक्खालिज्जमाणस्स अत्थि सोही ॥

---

१ स० पा०—पण्णत्ते जाव सग्ग।

२ धोएज्जा (क, ग, घ)।

३ × (ख, ग)।

४. काय (क, ग)।

५ यणट्ठे (क, ख)।

६ ना० १।५।५६।

७ मिच्छादसणसल्लेणं (क, ख, ग, घ)। द्रष्टव्यम्—१।५।५६ सूत्रस्य पादटिप्पणम्।

८ सज्जिया (क, घ)।

९ अणुलिप्पति (ख, घ), अणुलिंपइ (ग)।

१० आरोहइ (घ)।

११. ना० १।५।५६।

१२. मिच्छादसणसल्लवेरमणेण (क, ख, ग, घ)। द्रष्टव्यम्—१।५।५६ सूत्रस्य पादटिप्पणम्।

१३. स० पा०—वत्थस्स जाव सुद्धेण।

सुदंसणस्स विणयमूलय-धम्मपडिवत्ति-पदं

६२ तत्थ णं सुदंसणे संबुद्धे थावच्चापुत्तं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! [तुब्भं अंतिए ?] धम्मं सोच्चा जाणित्तए ॥

६३ [1]•तए णं थावच्चापुत्ते अणगारे सुदंसणस्स तीसे य महइमहालियाए महच्चपरिसाए चाउज्जामं धम्मं कहेइ, तं जहा—सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं, सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं, सव्वाओ बहिद्धादाणाओ[2] वेरमणं जाव[3] ॥

६४ तए णं से सुदंसणे समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे जाव[4] समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं° पडिलाभेमाणे विहरइ ॥

सुएण सुदंसणस्स पडिसंबोध-पयत्त-पदं

६५ तए णं तस्स सुयस्स परिव्वायगस्स इमीसे कहाए लद्धट्ठस्स समाणस्स अयमेयारूवे[5] •अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—एवं खलु सुदंसणेणं सोयधम्मं विप्पजहाय विणयमूले धम्मे पडिवण्णे, तं सेयं खलु मम सुदंसणस्स दिट्ठिं वामेत्तए पुणरवि सोयमूलए धम्मे आघवित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता परिव्वायगसहस्सेणं सद्धिं जेणेव सोगंधिया नगरी जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता परिव्वायगावसहंसि भंडगनिक्खेवं करेइ, करेत्ता धाउरत्त-वत्थ-पवर[6]-परिहिए पविरल-परिव्वायगेणं सद्धिं संपरिवुडे परिव्वायगावसहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सोगंधियाए नयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव सुदंसणस्स गिहे जेणेव सुदंसणे तेणेव उवागच्छइ ॥

६६ तए णं से सुदंसणे तं सुयं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता नो अब्भुट्ठेइ न पच्चुग्गच्छइ[7] नो आढाइ नो वंदइ तुसिणीए संचिट्ठइ ॥

६७ तए णं से सुए परिव्वायए सुदंसणं अणब्भुट्ठियं[8] पासित्ता एवं वयासी—'तुमं णं[9] सुदंसणा ! अण्णया ममं एज्जमाणं पासित्ता अब्भुट्ठेसि[10] •पच्चुग्गच्छसि

---

१. सं० पा०—जाव समणोवासए जाए अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे ।
२. एतत् १।५।५६ सूत्रात् पूरितम् ।
३. राय० ६६४-६६७ ।
४. ना० १।५।४७ ।
५. सं० पा०—अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था ।
६. × (क, ख, ग, घ) ।
७. पत्तुगच्छइ (घ) ।
८. अणुब्भुट्ठिय (ख, ग, घ) ।
९. तुमण्ण (क) ।
१०. सं० पा०—अब्भुट्ठेसि जाव वंदसि ।

आढासि° वंदसि, इयाणि सुदंसणा ! तुमं ममं एज्जमाणं पासित्ता[1] •नो अब्भुट्ठेसि नो पच्चुग्गच्छसि नो आढासि° नो वदसि। तं कस्स ण तुमे सुदंसणा ! इमेयारूवे विणयमूले धम्मे पडिवण्णे ?

६८ तए ण से सुदंसणे सुएण परिव्वायगेण एवं वुत्ते समाणे आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता करयल[2]•परिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलिं कट्टु° सुय परिव्वायग एव वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अतेवासी थावच्चापुत्ते नाम अणगारे[3] •पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे° इहमागए इह चेव नीलासोए उज्जाणे विहरइ। तस्स ण अतिए विणयमूले धम्मे पडिवण्णे ॥

६९ तए ण से सुए परिव्वायए सुदसणं एव वयासी—त गच्छामो णं सुदसणा ! तव धम्मायरियस्स थावच्चापुत्तस्स अतियं पाउब्भवामो, इमाइं च ण एयारूवाइं अट्ठाइं हेऊइं[4] पसिणाइ कारणाइ वागरणाइं पुच्छामो। त जइ मे से इमाइ अट्ठाइ[5] •हेऊइं पसिणाइं कारणाइ वागरणाइ° वागरेइ[6], तओ ण वदामि नमंसामि। अह मे से इमाइ अट्ठाइ[7] •हेऊइ पसिणाइ कारणाइ वागरणाइ° नो[8] वागरेइ, तओ ण अहं एएहिं चेव अट्ठेहिं हेऊहिं निप्पट्ठ-पसिणवागरण करिस्सामि ॥

सुयस्स थावच्चापुत्तेण सवाद-पदं

७० तए ण से सुए परिव्वायगसहस्सेण सुदंसणेण य सेट्ठिणा सद्धिं जेणेव नीलासोए उज्जाणे जेणेव थावच्चापुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थावच्चापुत्तं एव वयासी—जत्ता ते भते ? जवणिज्ज 'ते (भते ?) ? अव्वाबाह (ते भते ?) ? फासुय विहारं (ते भते ?) ?'[9]

७१ तए ण से थावच्चापुत्ते अणगारे सुएण परिव्वायगेण एव वुत्ते समाणे सुयं परिव्वायगं एव वयासी—सुया ! जत्तावि मे जवणिज्जं पि मे अव्वाबाह पि मे फासुयं विहार पि मे ॥

७२ तए णं से सुए थावच्चापुत्त एव वयासी—किं ते[10] भते ! जत्ता ?

---

१. स० पा०—पासित्ता जाव नो वदसि।
२ सं० पा०—करयल°।
३. स० पा०— अणगारे जाव इहमागए।
४. हेऊणि (क); हेऊंति (ख, ग, घ)।
५. स० पा०—अट्ठाइ जाव वागरेइ।
६. वाकरेइ (ख, ग, घ)।
७. स० पा०—अट्ठाइं जाव नो वागरेइ।
८ नो से (ख, ग)।
९ प्रयुक्तादर्शेषु एतेषु त्रिष्वपि प्रश्नेषु 'ते भते ?' इति पाठो नास्ति। क्वचित्प्रयुक्तादर्शे 'जवणिज्ज' इति पदस्याग्रे 'ते' इति पद लभ्यते। तेनानुमीयते चतुर्ष्वपि प्रश्नेषु एवमासीत्। उत्तरसूत्रेणाप्यस्य पुष्टिर्जायते।
१०. आदर्शेषु 'ते' इति पद न लभ्यते, किन्तु पूर्वप्रसगानुसारेणात्र तद् युज्यते। भगवत्या (१८।२०७) मपि इत्थमेव पाठो लभ्यते।

सुया ! जण्णं मम नाण-दसण-चरित्त-तव-संजममाइएहिं जोएहिं जयणा, से तं जत्ता ।

से किं ते भंते ! जवणिज्जं ?

सुया ! जवणिज्जे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—इदियजवणिज्जे य नोइदियजवणिज्जे य ।

से किं त इदियजवणिज्जे[1] ?

सुया ! जण्णं मम सोतिंदिय-चक्खिदिय-घाणिंदिय-जिब्भिदिय-फासिंदियाइं निरुवहयाइं वसे वट्टंति[2], से तं इदियजवणिज्जे ।

से किं त नोइदियजवणिज्जे ?

सुया ! जण्णं मम कोह-माण-माया-लोभा खीणा उवसता नो उदयंति, से तं नोइदियजवणिज्जे ।

से किं ते भंते ! अव्वावाह ?

सुया ! जण्णं मम वाइय-पित्तिय-सिंभिय-सन्निवाइया[3] विविहा रोगायका नो उदीरेंति, से त अव्वावाह ।

से किं ते भंते ! फासुयं विहारं ?

सुया ! जण्ण आरामेसु उज्जाणेसु देउलेसु सभासु पवासु इत्थी-पसु-पंडग-विवज्जियासु वसहीसु पाडिहारिय पीढ-फलग-सेज्जा-सथारय ओगिण्हित्ता णं विहरामि, से त फासुय विहारं ॥

सरिसवयाण भक्खाभक्ख-पदं

७३. सरिसवया[4] ते भंते ! कि भक्खेया ? अभक्खेया ?

सुया ! सरिसवया भक्खेया वि अभक्खेया वि ।

से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ—सरिसवया भक्खेया वि अभक्खेया वि ?

सुया ! सरिसवया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—मित्तसरिसवया[5] य धण्णसरिसवया[6] य ।

तत्थ ण जे ते मित्तसरिसवया ते तिविहा पण्णत्ता, त जहा—सहजायया सहवड्ढियया सहपसुकीलियया[7], ते ण समणाणं निग्गथाण अभक्खेया ।

अग्रवर्तिषु त्रिष्वपि प्रश्नेषु आदर्शलब्धस्य 'त' इति पदस्य स्थाने 'ते' इति पद स्वीकृतमस्ति ।

१. जवणिज्ज (क, ख, ग, घ) । भगवत्या (१८।२०६) मपि इत्थमेव पाठो लभ्यते ।

२. चिट्ठंति (ख) ।

३ सन्निवाइय (क, ख, ग, घ) । १।१।११२ सूत्रे 'सन्निवाइय' पद विभक्त्यन्तं स्वीकृतमस्ति, तदाधारेणात्रापि तथैव स्वीकृतम् ।

४. सरिसवता (ख, ग) ।

५. °सरिसवा (ख, ग) ।

६. °सरिसवा (ख, ग) ।

७. °कीलयया (क), °कीलया (ग, घ) ।

तत्थ णं जे ते धण्णसरिसवया[1] ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सत्थपरिणया य असत्थपरिणया य। तत्थ ण जेते असत्थपरिणया ते ण समणाण निग्गथाण अभक्खेया। तत्थ ण जेते सत्थपरिणया ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—फासुया य अफासुया य। अफासुया ण सुया! [समणाण निग्गथाण ?] नो भक्खेया। तत्थ ण जेते 'फासुया ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—एसणिज्जा[2] य अणेसणिज्जा[3] य। तत्थ ण जेते अणेसणिज्जा ते [ण समणाण निग्गथाण ?] अभक्खेया। तत्थ ण जेते एसणिज्जा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—जाइया य अजाइया य'[4]। तत्थ ण जेते अजाइया ते [ण समणाण निग्गथाण ?] अभक्खेया। तत्थ ण जेते जाइया ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—लद्धा य अलद्धा य। तत्थ ण जेते अलद्धा ते [ण समणाण निग्गथाण ?] अभक्खेया। तत्थ ण जेते लद्धा ते ण समणाण निग्गथाण भक्खेया।

एएणं अट्ठेण सुया! एव वुच्चइ—सरिसवया भक्खेया वि अभक्खेया वि॥

कुलत्थाणं भक्खाभक्ख-पदं

७४. [5]•कुलत्था ते भते! किं भक्खेया? अभक्खेया?

सुया! कुलत्था भक्खेया वि अभक्खेया वि।

से केणट्ठेण भते! एव वुच्चइ—कुलत्था भक्खेया वि अभक्खेया वि?

सुया! कुलत्था दुविहा पण्णत्ता, त जहा—इत्थिकुलत्था य धण्णकुलत्था य।

तत्थ ण जेते इत्थिकुलत्था ते तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—कुलवहुया इ य कुलमाउया इ य कुलधूया इ य। ते ण समणाण निग्गथाण अभक्खेया।

तत्थ ण जेते धण्णकुलत्था ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सत्थपरिणया य असत्थ-परिणया य। तत्थ ण जेते असत्थपरिणया ते समणाण निग्गथाण अभक्खेया। तत्थ ण जेते सत्थपरिणया ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा- फासुया य अफासुया य। अफासुया ण सुया! समणाणं निग्गथाण नो भक्खेया। तत्थ ण जेते

---

१. ०सरिसवा (क, ख, ग, घ)।

२. जातिया (क, ख, ग, घ)।

३. अजातिया (क, ख, ग, घ)।

४ भगवतीसूत्रे सोमिलप्रश्नोत्तरप्रसंगे (१८। २१४) एसणिज्जा अणेसणिज्जा, जाइया अजाइया, असौ पाठक्रमो विद्यते। तत्र 'अफासुया फासुया' इति पाठो नास्ति। अत्र 'जाइय' इति पाठानन्तर 'एसणिज्जा अणे-सणिज्जा' इति पाठोस्ति। द्वयोस्तुलनाया भगवतीवर्तिपाठक्रम सगतोस्ति। याचिता-नन्तर एषणीयत्वस्य कापेक्षा स्यात् लिपि-दोषेण अस्य परिवर्तन जातमथवा अन्येन केनचित् कारणेन, नेति वक्तु शक्यते।

५ स० पा०—एव कुलत्था वि भाणियव्वा। नवर—इमं नाणत्त—इत्थिकुलत्था य धन्नकुलत्था य। इत्थिकुलत्था तिविहा पण्णत्ता, त जहा—कुलवहुया इ य कुलमाउया इ य कुलधूया इ य। धन्नकुलत्था तहेव।

फासुया ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—एसणिज्जा य अणेसणिज्जा य । तत्थ णं जेते अणेसणिज्जा ते ण समणाण निग्गथाणं अभक्खेया । तत्थ ण जेते एसणिज्जा ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—जाइया य अजाइया य तत्थ ण जेते अजाइया ते ण समणाण निग्गथाणं अभक्खेया । तत्थ णं जेते जाइया ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—लद्धा य अलद्धा य । तत्थ ण जेते अलद्धा ते अभक्खेया । तत्थ ण जेते लद्धा ते णं समणाण निग्गथाण भक्खेया ।

एएण अट्ठेण सुया ! एव वुच्चइ—कुलत्था भक्खेया वि अभक्खेया वि° ॥

मासाण भक्खाभक्ख-पदं

७५ [1]•मासा ते भते ! किं भक्खेया ? अभक्खेया ?

सुया ! मासा भक्खेया वि अभक्खेया वि ।

से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ—मासा भक्खेया वि अभक्खेया वि ?

सुया ! मासा तिविहा पण्णत्ता, त जहा—कालमासा य अत्थमासा य धण्णमासा य ।

तत्थ ण जेते कालमासा ते दुवालसविहा पण्णत्ता, त जहा—सावणे भद्दवए आसोए कत्तिए मग्गसिरे पोसे माहे फग्गुणे चेत्ते वइसाहे जेट्ठामूले आसाढे । ते ण समणाणं निग्गथाणं अभक्खेया ।

तत्थ ण जेते अत्थमासा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—हिरण्णमासा य सुवण्ण-मासा य । ते णं समणाण निग्गथाण अभक्खेया ।

तत्थ ण जेते धण्णमासा ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सत्थपरिणया य असत्थपरिणया य। तत्थ ण जेते असत्थपरिणया ते समणाण निग्गंथाणं अभक्खेया । तत्थ ण जेते सत्थपरिणया ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—फासुया य अफासुया य । अफासुया णं सुया ! समणाण निग्गथाणं नो भक्खेया । तत्थ ण जेते फासुया ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—एसणिज्जा य अणेसणिज्जा य । तत्थ ण जेते अणेसणिज्जा ते ण समणाण निग्गथाण अभक्खेया ।

तत्थ ण जेते एसणिज्जा ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—जाइया य अजाइया य । तत्थ णं जेते अजाइया ते ण समणाण निग्गथाणं अभक्खेया ।

तत्थ ण जेते जाइया ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—लद्धा य अलद्धा य । तत्थ ण जेते अलद्धा ते ण समणाणं निग्गथाण अभक्खेया ।

---

१. स० पा०—एव मासा वि । नवर—इम नाणत्तं—मासा तिविहा पण्णत्ता, त जहा—कालमासा य अत्थमासा य धन्नमासा य । तत्थ ण जे ते कालमासा ते णं दुवालस, त जहा—सावणे जाव आसाढे । ते णं अभक्खेया । अत्थमासा दुविहा—हिरण्ण-मासा य सुवण्णमासा य । ते ण अभक्खेया । धन्नमासा तहेव ।

तत्थ ण जेते लद्धा ते ण समणाण निग्गथाण भक्खेया ।
एएण अट्ठेण सुया ! एव वुच्चइ—मासा भक्खेया वि अभक्खेया वि °[1] ॥

अत्थित्त-पण्ह-पदं

७६. एगे भव ? दुवे भव ? अक्खए भव ? अव्वए भव ? अवट्ठिए भव ? अणेगभूय-भाव-भविए भवं ?
सुया ! एगे वि अह[2], •दुवेवि अह, अक्खए वि अह, अव्वए वि अह, अवट्ठिए वि अह, °अणेगभूय-भाव-भविए वि अह ।
से केणट्ठेण भते ! एगे वि अह[3] ? •दुवेवि अह ? अक्खए वि अह ? अव्वए वि अह ? अवट्ठिए वि अह ? अणेगभूय-भाव-भविए वि अह ? °
सुया ! दव्वट्ठयाए 'एगे वि अह'[4], नाणदसणट्ठयाए दुवे वि[5] अह, पएसट्ठयाए अक्खए वि अह, अव्वए वि अह, अवट्ठिए वि अह, उवओगट्ठयाए अणेगभूय-भाव-भविए वि[6] अह ॥

सुयस्स परिव्वायगसहस्सेण पव्वज्जा-पदं

७७ एत्थ ण से सुए सवुद्धे थावच्चापुत्त वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—इच्छामि ण भते ! तुब्भ अतिए केवलिपण्णत्त धम्म निसामित्तए ॥

७८. [7]•तए ण थावच्चापुत्ते अणगारे सुयस्स चाउज्जाम धम्म कहेइ ॥°

७९ तए ण से सुए परिव्वायए थावच्चापुत्तस्स अतिए धम्मं सोच्चा निसम्म एव वयासी—इच्छामि ण भते ! परिव्वायगसहस्सेण सद्धि सपरिवुडे देवाणुप्पियाण अतिए मुडे भवित्ता पव्वइत्तए ।
अहासुह देवाणुप्पिया ॥

८० •[8]तए ण से सुए परिव्वायए उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए अवक्कमड, अवक्कमित्ता तिदडय य कुडियाओ य छत्तए य छन्नालए य अकुसए य पवित्तए य केसरियाओ य ° धाउरत्ताओ य एगते एडेइ, सयमेव सिह उप्पाडेइ, उप्पाडेत्ता जेणेव थावच्चापुत्ते[9] •अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थावच्चापुत्त अणगार वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता थावच्चापुत्तस्स अणगारस्स अतिए° मुडे 'भवित्ता पव्वइए'[10] । सामाइयमाइयाइ चोद्दसपुव्वाइ अहिज्जइ ॥

---

१. भगवतीसूत्रे (१८।२१३-२१८) एतत्तुल्य प्रकरणमस्ति, क्वचित्-क्वचित् किंचित् पाठभेदो विद्यते ।
२ स० पा०—अह जाव अणेगभूयभाव भविए ।
३. स० पा०—अह जाव सुया ।
४. एगेह (क) एगे अह (ख, ग घ) ।
५. × (ख, ग, घ) ।
६ × (घ) ।
७ स० पा०—धम्मकहा भाणियव्वा ।
८ सं० पा०—उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए तिदडय जाव धाउरत्ताओ ।
९ स० पा०—थावच्चापुत्ते जाव मुडे ।
१०. भवित्ता जाव पव्वइए (ख, ग, घ); अत्र 'जाव' शब्दस्य विपर्ययो जातोस्ति ।

सुयस्स जणवयविहार-पदं

८१. तए णं थावच्चापुत्ते सुयस्स अणगारसहस्स सीसत्ताए वियरइ ॥

८२ तए ण थावच्चापुत्ते सोगधियाओ नयरीओ नीलासोयाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता वहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

थावच्चापुत्तस्स परिनिव्वाण-पदं

८३. तए ण से थावच्चापुत्ते अणगारसहस्सेणं सद्धि संपरिवुडे जेणेव पुडरीए पव्वए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुडरीय पव्वयं सणियं-सणिय दुरुहइ[1], दुरुहित्ता[2] मेघघणसन्निगास देवसन्निवायं पुढवि[3]•सिलापट्टय पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता जाव[4] सलेहणा-झूसणा-झूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए° पाओवगमणणुवन्ने ॥

८४. तए ण से थावच्चापुत्ते वहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता, मासियाए सलेहणाए अत्ताण झूसित्ता, सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदित्ता जाव[5] केवलवर-नाणदसण समुप्पाडेत्ता तओ पच्छा सिद्धे[6] •वुद्धे मुत्ते अतगडे परिनिव्वुडे सव्वदुक्ख°प्पहीणे ॥

सेलगस्स अभिनिक्खमणाभिप्पाय-पदं

८५. तए ण से सुए अण्णया कयाइ जेणेव सेलगपुरे नगरे जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे[7] तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ° ॥

८६. परिसा निग्गया। सेलओ निग्गच्छइ ॥

८७ [8]•तए ण से सेलए सुयस्स अतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे सुयं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वंदइ नमसइ, वंदित्ता नमसित्ता एव वयासी—सद्दहामि णं भंते! निग्गथ पावयण[9] जाव[10] नवर[11] देवाणुप्पिया!

---

१ द्रुहति (ख)।

२, अतोग्रे १।१।२०६ सूत्रे 'सयमेव' इति पद विद्यते।

३ स० पा०—पुढवि जाव पाओवगमण।

४ ना० १।२।२०६।

५. अमो पाठ भगवती (६।१५१) सूत्रात् पूर्तिमर्हति, तद्महावीरकालीन वर्णनमस्ति, ततो नाक्षरशोत्र घटनामर्हति।

६ स० पा०—सिद्धे जाव प्पहीणे।

७ स० पा०—समोसरणं।

८ सं० पा०—धम्म सोच्चा ज नवर।

९. अत्र पाठपूर्त्तिकारणेन 'निग्गथं पावयणं' इति पद प्राप्तं किन्तु ऐतिहासिकदृष्टयात्र 'अरहत पावयण' इति पदं समीचीन स्यात्।

१०. ना० १।१।१०१।

११. जं नवर (क, ख, ग, घ), संभवतः 'जं' इति पद 'जं तुब्भे वदह' इति पाठस्य सकेतरूपमस्ति।

पंथगपामोक्खाइं पंच मतिसयाइं आपुच्छामि, मंडुयं च कुमारं रज्जे ठावेमि। तओ पच्छा देवाणुप्पियाण अंतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयामि।

अहासुह देवाणुप्पिया ॥

८८. तए णं से सेलए राया सेलगपुरं नगरं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव वाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणे[1] सण्णिसण्णे ॥

८९. तए ण से सेलए राया पंथगपामोक्खे पंच मतिसए सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया! मए सुयस्स अंतिए धम्मे निसते, से वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए[2]। 'तए णं अह'[3] देवाणुप्पिया! ससार-भउव्विग्गे[4] •भीए जम्मण-जर-मरणाणं सुयस्स अणगारस्स अंतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वयामि। तुब्भे णं देवाणुप्पिया! किं करेह? किं ववसह[5]? 'किं वा भे[6] हियइच्छिए सामत्थे?'[7]

९०. तए णं ते पथगपामोक्खा पच मतिसया सेलगं राय एव वयासी—जइ णं तुब्भे देवाणुप्पिया! संसारभउव्विग्गा जाव[8] पव्वयह, अम्हं णं देवाणुप्पिया! के[9] अण्णे आहारे वा आलवे वा? अम्हे वि य ण देवाणुप्पिया! ससारभउव्विग्गा जाव पव्वयामो।

जहा[10] णं[11] देवाणुप्पिया! अम्हं वहूसु कज्जेसु य कारणेसु य[12] •कुडुवेसु य मतेसु य गुज्झेसु य रहस्सेसु य निच्छएसु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, मेढी पमाण आहारे आलवण चक्खू, मेढीभूए पमाणभूए आहारभूए आलंबणभूए चक्खुभूए°, तहा ण पव्वइयाण वि समाणाण[13] बहूसु कज्जेसु य जाव चक्खुभूए ॥

९१ तए ण से सेलगे पंथगपामोक्खे पच मतिसए एव वयासी—जइ णं देवाणुप्पिया! तुब्भे संसारभउव्विग्गा जाव[14] पव्वयह, त गच्छह ण देवाणुप्पिया! सएसु-सएसु

---

१ सिहासण (क, ख, ग, घ)।

२. अभिरुतिते (ग)।

३. तए णं अहन्नं (ख), अहन्न (ग)।

४ स० पा०—ससारभउव्विग्गे जाव पव्वयामि।

५ वसह (ग, घ)।

६. ते (ख, ग)।

७. किं भे हियइच्छिए, किं भे सामत्थे (भ० १८।४५)।

८ ना० १।५।८९।

९ किं (ख, ग, घ)।

१०. जह (ख)।

११ × (क, ख, ग, घ)।

१२ सं० पा०—कारणेसु य जाव तहा।

१३. समणाण (क, ख, ग, घ)।

१४ ना० १।५।८८।

कुटुंवेसु[1] जेट्ठपुत्ते कुटुंबमज्झे[2] ठावेत्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ[3] सीयाओ दुरूढा समाणा मम अंतियं पाउब्भवह। ते वि तहेव पाउब्भवंति॥

मंडुयस्स रायाभिसेय-पदं

९२. तए णं से सेलए राया पंच मतिसयाइं पाउब्भवमाणाइं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! मंडुयस्स कुमारस्स महत्थं[4] •महग्घं महरिहं विउलं° रायाभिसेयं उवट्ठवेह॥

९३. [5]•तए णं ते कोडुंबियपुरिसा मंडुयस्स कुमारस्स महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायाभिसेयं उवट्ठवेंति॥

९४. तए णं से सेलए राया बहूहिं गणनायगेहि य जाव[6] संधिवालेहि य सद्धिं संपरिवुडे मंडुयं कुमारं जाव[7] रायाभिसेएणं अभिसिंचइ॥

९५. तए णं से मंडुए राया जाए—महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे जाव[8] रज्जं पसासेमाणे° विहरइ॥

सेलयस्स निक्खमणाभिसेय-पदं

९६. तए णं से सेलए मंडुयं रायं आपुच्छइ॥

९७. तए णं मंडुए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! सेलगपुरं नयरं आसिय[9]-•सित्त-सुइय-सम्मज्जिओवलित्तं जाव[10] सुगंधवरगंधियं° गंधवट्टिभूयं करेह य कारवेह य, एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह॥

९८. तए णं से मंडुए दोच्चं पि कोडुंबियपुरिसे एवं[11] वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! सेलगस्स रण्णो महत्थं[12] •महग्घं महरिहं विउलं° निक्खमणाभिसेयं [करेह ?] जहेव मेहस्स तहेव[13] नवरं—पउमावती देवी अग्गकेसे पडिच्छइ, सच्चेव पडिग्गहं गहाय सीयं दुरुहइ। अवसेसं तहेव जाव[14]॥

---

१ कोडुवेसु (ख)।
२. कोडुंब° (घ)।
३. °वाहिणीयाओ (घ)।
४ सं० पा०—महत्थं जाव रायाभिसेयं।
५ सं० पा०—अभिसिंचइ जाव राया जाए विहरइ।
६. ना० १।१।२४।
७. ना० १।१।११८।
८ ओ० सू० १४।
९ सं० पा०—आसिय जाव गंधवट्टिभूयं।
१०. ना० १।१।३३।
११. सद्दावेइ २ एवं (क)।
१२. सं० पा०—महत्थं जाव निक्खमणाभिसेयं।
१३ ना० १।१।१२२-१३२।
१४. ना० १।१।१३४-१४३, १।५।२९-३३।

सेलगस्स पव्वज्जा-पदं

९९. [1]•तए णं से सेलगे [पचहिं मतिसएहिं सद्धिं[2] ?] सयमेव पंचमुट्ठियं लोय करेइ, करेत्ता जेणामेव सुए तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुय अणगार तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ जाव[3] पव्वइए ॥

सेलगस्स अणगारचरिया-पदं

१०० तए ण से सेलए अणगारे जाए जाव[4] कम्मनिग्घायणट्ठाए एव च ण विहरइ ॥

१०१ तए ण से सेलए सुयस्स तहारूवाण थेराणं अतिए° सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइ अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ[5]-•छट्ठट्ठम - दसम - दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाण भावेमाणे° विहरइ ॥

सुयस्स परिनिव्वाण-पदं

१०२. तए ण से सुए सेलगस्स अणगारस्स ताइ पथगपामोक्खाइ पच अणगारसयाइं सीसत्ताए वियरइ ॥

१०३ तए ण से सुए अण्णया कयाइ सेलगपुराओ नगराओ सुभूमिभागाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता वहिया जणवयविहार विहरइ ॥

१०४. तए ण से सुए अणगारे अण्णया कयाइ[6] तेण अणगारसहस्सेण सद्धिं सपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे सुहसुहेण विहरमाणे जेणेव पुडरीयपव्वए[7] •तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुडरीय पव्वय सणिय-सणिय दुरुहइ, दुरुहित्ता मेघघणसन्निगास देवसन्निवाय पुढविसिलापट्टय पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता जाव[8] सलेहणा-झूसणा-झूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए पाओवगमणणुवन्ने ॥

१०५ तए ण से सुए बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता, मासियाए सलेहणाए अत्ताण झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइ अणसणाए छेदित्ता जाव[9] केवलवरनाणदसण समुप्पाडेत्ता तओ पच्छा सिद्धे वुद्धे मुत्ते अंतगडे परिनिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे° ॥

सेलगस्स रोगातंक-पदं

१०६ तए ण तस्स सेलगस्स रायरिसिस्स तेहिं अतेहि य पतेहि य तुच्छेहि य लूहेहि

---

१. सं० पा०—अवसेस तहेव जाव सामाइयमाइयाइ।

२. प्रव्रज्या-प्रसगे मंत्रिणामुल्लेखोनोपलभ्यते, सच आवश्यकोस्ति। तेनासौ पाठ. प्रकरण-सादृश्येन थावच्चापुत्रवर्णनगत ३४ सूत्रात् पूरितोस्ति।

३. ना० १।१।१४६,१५०।

४ ना० १।५।३५-३७।

५ स० पा०—चउत्थ जाव विहरइ।

६. कयाइं (ख)।

७ सं० पा०—पव्वए जाव सिद्धे०।

८. ना० १।१।२०६।

९ भग० ६।१५१।

य अरसेहि य विरसेहि य सीएहि य उण्हेहि य कालाइक्कतेहि य पमाणाइक्कतेहि य निच्च[1] पाणभोयणेहि य पयइ-सुकुमालस्स सुहोचियस्स[2] सरीरगसि 'वेयणा पाउब्भूया'[3]—उज्जला[4] •विउला कक्खडा पगाढा चडा दुक्खा° दुरहियासा। कडु-दाह-पित्तज्जर-परिगयसरीरे यावि विहरइ॥

१०७ तए ण से सेलए तेण रोयायकेण सुक्के भुक्खे जाए यावि होत्था॥

१०८ तए ण से सेलए अण्णया कयाइ पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे[5] •गामाणुगाम दूइज्जमाणे सुहसुहेण विहरमाणे जेणेव सेलगपुरे नयरे जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता संजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे° विहरइ॥

१०९ परिसा निग्गया। मडुओ वि निग्गओ सेलगं अणगारं 'वदइ नमसइ पज्जुवासइ'[6]॥

सेलगस्स तिगिच्छा-पद

११० तए ण से मडुए राया सेलगस्स अणगारस्स सरीरग सुक्क भुक्ख[7] सव्वाबाहं सरोग पासइ, पासित्ता एव वयासी—अहण्ण भंते! तुब्भ अहापवत्तेहिं[8] तेगिच्छिएहिं[9] अहापवत्तेण[10] ओसह-भेसज्ज-भत्तपाणेण तेगिच्छ आउट्टावेमि[11]। तुब्भे ण भते! मम जाणसालासु समोसरह, फासु-एसणिज्ज पीढ-फलग-सेज्जा-सथारग ओगिण्हित्ताण विहरह॥

१११. तए ण से सेलए अणगारे मडुयस्स रण्णो एयमट्ठं तह 'त्ति' पडिसुणेइ॥

११२ तए ण से मंडुए सेलग वदइ नमंसइ, वदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसिं[12] पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए॥

११३ तए ण से सेलए कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव[13] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते स-भंड-मत्तोवगरणमायाए पथगपामोक्खेहिं पचहिं

---

१. निच्च य (क, ख, ग, घ)।
२. सुहोइयस्स (ग)।
३. रोगायके पाउब्भूए (वृपा)।
४. सं० पा०—उज्जला जाव दुरहियासा।
५. सं० पा०—चरमाणे जाव जेणेव सुभूमिभागे जाव विहरइ।
६. अणगारं जाव वंदइ नमसइ, २त्ता पज्जुवासइ, २त्ता (क)।
७. भुक्खं जाव (क, ख, ग, घ) अत्र आदर्शेषु 'जाव' शब्द. उपलभ्यते, किन्तु अस्य पूर्तिस्थलमद्यापि क्वापि नोपलब्धम्।
८. अहापउत्तेहिं (ख); अहापवत्तितेहिं (घ)।
९. तिगच्छएहि (क)।
१०. अहापवित्तेण (ख)।
११. आउटावेमि (क, ग, घ); आउट्ठावेमि (ख); आदर्शेषु प्रायेण 'आउंटावेमि' इति पाठो लभ्यते, वृत्तावत्र नास्त्यनुस्वारः।
१२. दिसं (क)।
१३. ना० १।१।२४।

अणगारसएहिं सद्धिं[1] सेलगपुरमणुप्पविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव 'मड्डुयस्स रण्णो जाणसाला'[2] तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता फासु-एसणिज्जं[3] •पीढ-फलग-सेज्जा-संथारगं ओगिण्हित्ताणं॰ विहरइ ॥

११४. तए णं से मड्डुए तेगिच्छिए[4] सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया! सेलगस्स फासु-एसणिज्जेणं[5] •ओसह-भेसज्ज-भत्तपाणेणं॰ तेगिच्छं आउट्टेह[6] ॥

११५. तए णं ते तेगिच्छिया मड्डुएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा सेलगस्स अहा-पवत्तेहिं ओसह-भेसज्ज-भत्तपाणेहिं तेगिच्छं आउट्टेंति, 'मज्जपाणगं च से उवदिसंति'[7] ॥

११६. तए णं तस्स सेलगस्स[8] अहापवत्तेहिं[9] •ओसह-भेसज्ज-भत्तपाणेहिं॰ मज्जपाण-एण य से रोगायंके उवसंते यावि होत्था—हट्ठे गल्लसरीरे[10] जाए ववगय-रोगायंके ॥

सेलगस्स पमत्तविहार-पदं

११७. तए णं से सेलए तंसि रोगायंकंसि उवसंतंसि समाणंसि तंसि विपुले असण-पाण-खाइम-साइमे मज्जपाणए य मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववन्ने ओसन्ने ओसन्न-विहारी, पासत्थे[11] •पासत्थविहारी कुसीले कुसीलविहारी पमत्ते पमत्तविहारी॰ संसत्ते संसत्तविहारी उउबद्ध[12]-पीढ[13]-•फलग-सेज्जा-संथारए॰ पमत्ते यावि विहरइ, नो संचाएइ फासु-एसणिज्जं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारयं पच्चप्पिणित्ता मड्डुयं च रायं आपुच्छित्ता बहिया[14] •जणवयविहारं॰ विहरित्तए ॥

साहूहिं सेलगस्स परिच्चाय-पदं

११८. तए णं तेसिं पंथगवज्जाणं पंचण्हं अणगारसयाणं अण्णया कयाइ एगयओ सहियाणं[15] •समुवागयाणं सण्णिसण्णाणं सण्णिविट्ठाणं॰ पुव्वरत्तावरत्तकाल-

---

१. × (ख, ग, घ)।
२. मड्डुया जाणसाला (ग)।
३. सं० पा०—फासुयं पीढं जाव विहरइ।
४. तिगिच्छिए (क, ख)।
५. सं० पा०—फासुएसणिज्जेणं जाव तेगिच्छं।
६. आउटेह (क, ख, ग)।
७. × (क), मज्जण ॰ (ख, ग) सर्वत्र।
८. सेलगस्स तेहिं २ (क)।
९. सं० पा०—अहापवत्तेहिं जाव मज्जपाणएणं।
१०. मल्लसरीरे (ग), बलियसरीरे (क्वचित्)। अत्र 'कल्ल' शब्दस्य ककारस्य गकारादेशो जातोस्ति।
११. सं० पा०—एवं पासत्थे कुसीले पमत्ते।
१२. ओबद्ध (क, ख)।
१३. सं० पा०—पीढ।
१४. सं० पा०—बहिया जाव विहरित्तए।
१५. सं० पा०—सहियाणं जाव पुव्वरत्ता॰।

समयसि धम्मजागरियं जागरमाणाणं अयमेयारूवे अज्झत्थिए[1] °चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—एवं खलु सेलए रायरिसी चइत्ता रज्जं जाव[2] पव्वइए विउले[3] असण-पाण-खाइम-साइमे मज्जपाणए य मुच्छिए नो संचाएइ[4] °फासु-एसणिज्जं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारयं पच्चप्पिणित्ता मंडुयं च रायं आपुच्छित्ता बहिया जणवयविहारं° विहरित्तए। नो खलु कप्पइ देवाणुप्पिया! समणाणं °निग्गंथाणं[5] ओसन्नाणं पासत्थाणं कुसीलाणं पमत्ताणं संसत्ताणं उउ-बद्ध-पीढ-फलग-सेज्जा-संथारए° पमत्ताणं विहरित्तए। तं सेयं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं कल्लं सेलगं रायरिसिं आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारयं पच्चप्पिणित्ता सेलगस्स अणगारस्स पंथयं अणगारं वेयावच्चकरं ठावेत्ता बहिया अब्भुज्जएणं[7] °जणवयविहारेणं° विहरित्तए—एवं संपेहेंति, संपेहेत्ता कल्लं जेणेव सेलए रायरिसी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सेलयं रायरिसिं आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारयं पच्चप्पिणंति, पच्चप्पिणित्ता पंथयं अणगारं वेयावच्चकरं ठावेंति, ठावेत्ता बहिया[8] °जणवयविहारं° विहरंति॥

पंथगस्स चाउम्मासिय-खामणा-पदं

११९. तए णं से पंथए सेलगस्स सेज्जा-संथारय-उच्चार-पासवण-खेल्ल-सिंघाणमत्त-ओसह-भेसज्ज-भत्तपाणएणं अगिलाए विणएणं वेयावडियं करेइ॥

१२० तए णं से सेलए अण्णया कयाइ कत्तिय[9]-चाउम्मासियंसि विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं आहारमाहारिए सुबहुं च मज्जपाणयं[10] पीए पच्चावरण्हकाल-समयंसि[11] सुहप्पसुत्ते॥

१२१ तए णं से पंथए कत्तिय-चाउम्मासियंसि कयकाउस्सग्गे देवसियं पडिक्कमणं

---

१. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
२. ओ० सू० २३।
३ विपुलेण (क)।
४. सं० पा०—संचाएइ जाव विहरित्तए।
५ सं० पा०—समणाणं जाव पमत्ताणं। अस्य पूर्ति १।५।११० सूत्रे प्रदत्तसंकेतानुसारेण कृतास्ति।
६ एतत् पदं १।५।१२४ सूत्राधारेण स्वीकृतम्।
७. सं० पा०—अब्भुज्जएणं जाव विहरित्तए।
८ सं० पा०—बहिया जाव विहरंति।
९. कत्तिया (ख)।
१०. मज्जणपाययं (ख)।
११ पुव्वावरण्हकालसमयंसि (क, ख, ग, घ)। सर्वेषु आदर्शेषु 'पुव्वावरण्ह०' इति पाठो लभ्यते, किन्तु अर्थ-मीमांसया नासावत्र संगतोस्ति। अत्र सायंकालीनसमयस्य प्रसंगोस्ति, अतः 'पच्चावरण्ह०' इति पाठोस्माभिः गृहीतः। आदर्शेषु लिपिदोषेण 'पच्चा०' स्थाने 'पुव्वा०' जातमिति संभाव्यते। उपासकदशासूत्रेपि (६।१७) इत्थं जातमस्ति।

पडिक्कते, चाउम्मासियं पडिक्कमिउकामे सेलग रायरिसि खामणट्ठयाए सीसेणं पाएसु संघट्टेइ ॥

सेलगस्स कोव-पदं

१२२. तए णं से सेलए पंथएण सीसेण पाएसु सघट्टिए समाणे आसुरुत्ते[1] •रुट्ठे कुविए चडिक्किए॰ मिसिमिसेमाणे उट्ठेइ, उट्ठेत्ता एव वयासी—से केस ण भो ! एस अपत्थियपत्थए[2], •दुरत-पत-लक्खणे, हीणपुण्णचाउद्दसिए, सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परि॰वज्जिए, जे ण मम सुहपसुत्त पाएसु सघट्टेइ ?

१२३ तए ण से पथए सेलएण एव वुत्ते समाणे भीए तत्थे तसिए करयल[3]-•परिग्गहियं सिरसावत्त मत्थए अजलि॰ कट्टु एव वयासी—'अह ण'[4] भते ! पथए कयकाउस्सग्गे देवसिय पडिक्कमण पडिक्कते[5], चाउम्मासिय खामेमाणे देवाणुप्पिय वदमाणे सीसेणं पाएसु सघट्टेमि ।

'त खामेमि ण तुब्भे देवाणुप्पिया'[6] !

खमतु ण देवाणुप्पिया !

खतुमरहति[7] ण देवाणुप्पिया ! नाइ भुज्जो एवकरणयाए त्ति कट्टु सेलय अणगार एयमट्ठ सम्म विणएण भुज्जो-भुज्जो खामेइ ॥

सेलगस्स अब्भुज्जयविहार-पदं

१२४ तए ण तस्स सेलगस्स रायरिसिस्स पथएण एव वुत्तस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[8] •चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे॰ समुप्पज्जित्था—एव खलु अह[9] •चइत्ता रज्ज जाव[10] पव्वइए ओसन्ने ओसन्नविहारी, पासत्थे पासत्थविहारी कुसीले कुसीलविहारी पमत्ते पमत्तविहारी ससत्ते ससत्तविहारी उउबद्ध-पीढ-फलग-सेज्जा-सथारए पमत्ते यावि॰ विहरामि । त नो खलु कप्पइ समणाण निग्गथाण[11] •ओसन्नाणं पासत्थाण कुसीलाण पमत्ताण ससत्ताण उउबद्ध-पीढ-

---

१ स॰ पा॰—आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे ।

२ स॰ पा॰—अपत्थियपत्थिए जाव वज्जिए (ख, ग, घ) । अत्रापि त्रिषु आदर्शेषु अन्यत्र च उपासकदशादिषु सूत्रेषु पाठान्तरनिर्दिष्ट पाठो लभ्यते, किन्तु 'पत्थय' इति पाठे समाससारल्यमस्ति ।

३. स॰ पा॰—करयल ।

४. अहण्ण (ख) ।

५. पडिक्कते चाउम्मासिय पडिक्कते (क) ।

६. × (क, ख, ग, घ); असौ पाठ क्वचिद् प्रयुक्तादर्शाधारेण स्वीकृत । १।१६।२६५ सूत्रेपि लभ्यते ।

७ खतुमरुहतु (क, ग), खमन्तु ममाराह तुम ण (ख) ।

८. स॰ पा॰—अज्झित्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

९ स॰ पा॰—अह रज्ज च जाव ओसन्न जाव उउबद्धपीढ॰ विहरामि ।

१०. ओ॰ सू॰ २३ ।

११ स॰ पा॰—निग्गथाण जाव विहरित्तए ।

फलग-सेज्जा-संथारए पमत्ताणं° विहरित्तए। तं सेयं खलु मे कल्लं मंडुयं रायं आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारगं पच्चप्पिणित्ता पंथएणं अणगारेण सद्धिं बहिया अब्भुज्जएणं[1] जणवयविहारेण विहरित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं[2] •मंडुयं रायं आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारगं पच्चप्पिणित्ता पंथएणं अणगारेणं सद्धिं बहिया अब्भुज्जएणं जणवय-विहारेणं° विहरइ॥

१२५ एवामेव समणाउसो! जे[3] निग्गंथे वा निग्गंथी वा ओसन्ने[4] •ओसन्नविहारी, पासत्थे पासत्थविहारी कुसीले कुसीलविहारी पमत्ते पमत्तविहारी संसत्ते संसत्तविहारी उउबद्ध-पीढ-फलग-सेज्जा°-संथारए पमत्ते विहरइ, से णं इहलोए चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाण य हीलणिज्जे[5] •निंदणिज्जे खिंसणिज्जे गरहणिज्जे परिभवणिज्जे, परलोए वि य णं आगच्छइ बहूणि दंडणाणि[6] य अणादियं च णं अणवयग्गं दीहमद्धं चाउरंत-संसार कंतारं भुज्जो-भुज्जो अणुपरियट्टिस्सइ° ॥

१२६ तए णं ते पंथगवज्जा पंच अणगारसया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! सेलए रायरिसी पंथएणं[7] •अणगारेणं सद्धिं बहिया अब्भुज्जएणं जणवयविहारेणं° विहरइ। तं सेयं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं सेलगं रायरिसिं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए—एवं संपेहेंति, संपेहेत्ता सेलगं रायरिसिं उवसंपज्जित्ता णं विहरंति॥

१२७ तए णं से सेलए रायरिसी पंथगपामोक्खा पंच अणगारसया[8] •जेणेव पुंडरीए पव्वए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पुंडरीयं पव्वयं सणियं-सणियं दुरुहंति, दुरुहित्ता मेघघणसन्निगासं देवसन्निवायं पुढविसिलापट्टयं पडिलेहंति, पडिले-हित्ता जाव[9] संलेहणा-झूसणा-झूसिया भत्तपाण-पडियाइक्खिया पाओवगमणं-णुवन्ना॥

---

१. अब्भुज्जएणं जाव (क, ख, ग, घ), अत्र जाव पदं अनावश्यकं प्रतिभाति। १।५।११८ सूत्रे संक्षिप्तपाठ आसीत् तत्र 'जाव' पदस्योपयोगित्वम्, किन्तु नात्र।

२. सं० पा०—कल्लं जाव विहरइ।

३. जाव (क, ग, घ), अत्र लिपिदोषेण 'जे' पदस्य स्थाने 'जाव' इति पदं जातम्।

४. सं० पा०—ओसन्ने जाव संथारए।

५. सं० पा०—हीलणिज्जे संसारो भाणियव्वो।

६. पू०—ना० १।३।२४।

७. सं० पा०—पंथएणं जाव विहरइ।

८. सं० पा०—पंच अणगारसया बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता जेणेव पुंडरीए पव्वए तेणेव उवागच्छंति जहेव थावच्चापुत्ते तहेव सिद्धा°।

९. ना० १।१।२०६।

१२८. तए णं से सेलए रायरिसी पंथगपामोक्खा पंच अणगारसया बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता जाव[1] केवलवरनाणदंसणं समुप्पाडेत्ता तओ पच्छा सिद्धा बुद्धा मुत्ता अंतगडा परिनिव्वुडा सव्वदुक्खप्पहीणा° ॥

१२९. एवामेव समणाउसो ! जो निग्गंथो वा निग्गंथी वा[2] °अब्भुज्जएणं जणवय-विहारेण विहरइ, से णं इहलोए चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावगाणं बहूणं सावियाण य अच्चणिज्जे वंदणिज्जे नमंसणिज्जे पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं विणएणं पज्जुवास-णिज्जे भवइ,

परलोए वि य णं नो बहूणि हत्थच्छेयणाणि य कण्णच्छेयणाणि य नासाछेय-णाणि य एवं हिययउप्पायणाणि य वसणुप्पायणाणि य उल्लंबणाणि य पाविहिइ, पुणो अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं° वीईवइस्सइ ॥

निक्खेव-पदं

१३०. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं पंचमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति बेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

सिढिलिय-संजम-कज्जा वि, होइउं उज्जमंति जइ पच्छा ।
संवेगाओ ते सेलओ व्व आराहया होंति ॥ १ ॥

---

१. भग० ९।३३।

२. सं० पा०—निग्गंथो वा २ जाव विहरिस्सइ (क, ख, ग, घ); अत्र लिपिदोषेण 'वीईवइस्सइ' स्थाने 'विहरिस्सइ' इति जातम् । यद्यत्र 'विहरिस्सइ' इति पदं स्यात्, तर्हि प्रस्तुतपाठस्य पूर्तिरपि न स्यात्, न च यच्छन्दस्योत्तरवर्त्ती तच्छब्दस्यनिर्देशोपि प्राप्तो भवेत् । तेनात्र इति कल्पना कर्तुं न्याय्या यल्लिपिदोषेण विपर्ययोसौ जातः ।

छट्ठं अज्झयणं

तुंबे

उक्खेव-पदं

१. जइ ण भते ! समणेण भगवया महावीरेणं पंचमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, छट्ठस्स ण भंते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

२. एव खलु जबू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे समोसरणं। परिसा निग्गया ॥

३. तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अतेवासी इंदभूई नाम अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामते जाव[1] सुक्कज्झाणोवगए विहरइ ॥

गरुयत्त-लहुयत्त-पदं

४. तए णं से इदभूई नामं अणगारे जायसड्ढे जाव[2] एवं वयासी—कहण्ण[3] भते ! जीवा गरुयत्तं वा लहुयत्तं वा हव्वमागच्छंति ?
गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे एगं महं सुक्कतुंव[4] निच्छिड्डं निरुवहयं दब्भेहि य कुसेहि य वेढेइ, वेढेत्ता मट्टियालेवेण लिंपइ, लिंपित्ता उण्हे दलयइ, दलयित्ता सुक्कं समाणं दोच्चंपि दब्भेहि य कुसेहि य वेढेइ, वेढेत्ता मट्टियालेवेणं लिंपइ, लिंपित्ता उण्हे दलयइ, दलयित्ता सुक्कं समाणं तच्चंपि दब्भेहि य कुसेहि य वेढेइ, मट्टियालेवेण लिंपइ, उण्हे दलयइ। एव खलु एएणुवाएणं अंतरा वेढेमाणे

---

१ ओ० सू० ८२।
२. ओ० सू० ८३।
३. कह ण (क, ग)।
४. सुक्क० (क, घ)।

अंतरा लिंपमाणे[1] अंतरा सुक्कवेमाणे[2] जाव अट्ठहिं मट्टियालेवेहिं लिंपइ[3], अत्थाहमतारमपोरिसियंसि उदगंसि पक्खिवेज्जा[4]। से नूणं गोयमा! से तुंबे तेसिं अट्ठण्हं मट्टियालेवेणं गरुययाए[5] भारिययाए[6] गरुय-भारिययाए[7] उप्पिं सलिलमइवइत्ता[8] अहे धरणियल[9]-पइट्ठाणे भवइ।

एवामेव गोयमा! जीवा वि पाणाइवाएणं[10] •मुसावाएणं अदिण्णादाणेणं मेहुणेणं परिग्गहेणं जाव[11] °मिच्छादंसणसल्लेणं अणुपुव्वेणं अट्ठकम्मपगडीओ समज्जिणित्ता तासिं गरुययाए भारिययाए[12] गरुय-भारिययाए[13] कालमासे कालं किच्चा धरणियलमइवइत्ता[14] अहे नरगतल-पइट्ठाणा भवंति। एवं खलु गोयमा! जीवा गरुयत्तं हव्वमागच्छंति। 'अह णं'[15] गोयमा! से तुंबे तंसि पढमिल्लुगंसि[16] मट्टियालेवंसि तित्तंसि कुहियंसि परिसडियंसि ईसिं धरणियलाओ उप्पतित्ता णं चिट्ठइ। तयाणंतरं दोच्चं पि मट्टियालेवे[17] •तित्ते कुहिए परिसडिए ईसिं धरणियलाओ° उप्पतित्ता णं चिट्ठइ। एवं खलु एएणं उवाएणं तेसु अट्ठसु मट्टियालेवेसु तित्तेसु[18] •कुहिएसु परिसडिएसु° [से तुंबे ?] विमुक्कबंधणे[19] अहे धरणियलमइवइत्ता उप्पिं सलिलतल-पइट्ठाणे भवइ।

एवामेव गोयमा! जीवा पाणाइवायवेरमणेणं जाव मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं अणुपुव्वेणं अट्ठकम्मपगडीओ खवेत्ता गगणतलमुप्पइत्ता उप्पिं लोयग्ग-पइट्ठाणा भवंति। एवं खलु गोयमा! जीवा लहुयत्तं[20] हव्वमागच्छंति॥

निक्खेव-पदं

५ एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[21] संपत्तेणं छट्ठस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते।

—त्ति बेमि॥

---

१. लिंपेमाणे (ख, घ)।
२. सुक्खवेमाणे (ख, ग, घ)।
३. आलिंपइ (ख, ग)।
४. पक्खेवेज्जा (ख)।
५. गुरुय° (ख, ग)।
६. × (ख)।
७. × (ग)।
८. °मतिवतित्ता (ख, ग)।
९. धरणितल (क)।
१०. सं० पा०—पाणाइवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं।
११. ना० १।१।२०६।
१२ × (क, ख)।
१३ × (ग)।
१४. °मतिवतित्ता (ख), °मतिवितित्ता (ग)।
१५ अहण्णं (क, ग, घ)।
१६ पढमिलुगंसि (ख)।
१७. सं० पा०—मट्टियालेवे जाव उपतित्ता।
१८ सं० पा०—तित्तेसु जाव विमुक्कबंधणे।
१९ विमुक्कबंधणेसु (क)।
२० लहुत्तं (ख)।
२१. १।१।७।

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

जह मिउलेवालित्तं, गुरुयं तुवं अहो वयइ।
एवं कय-कम्मगुरू, जीवा वच्चंति अहरगइं ॥१॥
त चेव तव्विमुक्कं, जलोवरिं ठाइ जाय-लहुभावं।
जह तह कम्म-विमुक्का, लोयग्ग-पइट्ठिया होंति ॥२॥

———

सत्तमं अज्झयणं

रोहिणी

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं छट्ठस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, सत्तमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे होत्था। सुभूमिभागे उज्जाणे ॥

धणसत्थवाह-पदं

३. तत्थ णं रायगिहे नयरे धणे नामं सत्थवाहे परिवसइ—अड्ढे जाव[1] अपरिभूए। भद्दा भारिया—अहीणपंचिंदियसरीरा जाव[2] सुरूवा ॥

४. तस्स णं धणस्स सत्थवाहस्स पुत्ता भद्दाए भारियाए अत्तया चत्तारि सत्थवाह-दारगा होत्था, तं जहा—धणपाले धणदेवे धणगोवे धणरक्खिए ॥

५. तस्स णं धणस्स सत्थवाहस्स चउण्हं पुत्ताणं भारियाओ चत्तारि सुण्हाओ होत्था, तं जहा—उज्झिया भोगवइया रक्खिया[3] रोहिणिया ॥

धणस्स परिक्खापओग-पदं

६. तए णं तस्स धणस्स सत्थवाहस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे[4] •अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं रायगिहे नयरे बहूणं ईसर[5]•-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह°पभितीणं सयस्स य कुडुंबस्स बहूसु कज्जेसु य कारणेसु

---

१. ना० १।५।७।

२. ना० १।२।८।

३. रक्खित्तिया (ग), रक्खितिया (घ)।

४. सं० पा०—इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था

५. सं० पा०—ईसर जाव पभितीणं।

चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ पंच सालिअक्खए गेण्हइ, गेण्हित्ता° चउत्थ रोहिणीय सुण्हं सद्दावेइ,[1] •सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुम णं पुत्ता ! मम हत्थाओ इमे पच सालिअक्खए गेण्हाहि, जाव[2] गेण्हइ, गेण्हित्ता एगंतमवक्कमइ, एगतमवक्कमियाए इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु मम ताओ इमस्स मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स चउण्ह य सुण्हाण कुलघरवग्गस्स पुरओ सद्दावेत्ता एवं वयासी–तुम णं पुत्ता ! मम हत्थाओ इमे पच सालिअक्खए गेण्हाहि, अणुपुव्वेणं सारक्खमाणी सगोवेमाणी विहराहि। जया ण अह पुत्ता ! तुमं इमे पच सालिअक्खए जाएज्जा, तया ण तुम मम इमे पच सालिअक्खए पडिनिज्जाएज्जासि त्ति कट्टु मम हत्थसि पच सालिअक्खए दलयइ° । तं भवियव्व एत्थ कारणेणं[3] । तं सेय खलु मम एए पच सालिअक्खए सारक्खमाणीए सगोवेमाणीए सवड्ढेमाणीए त्ति कट्टु एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कुलघर-पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—तुब्भे ण देवाणुप्पिया ! एए पंच सालिअक्खए गेण्हइ, गेण्हित्ता पढमपाउससि महावुट्ठिकायसि निवइयसि समाणसि खुड्डाग केयार सुपरिकम्मिय करेह, करेत्ता इमे पच सालिअक्खए वावेह, वावेत्ता दोच्च पि 'तच्च पि'[4] उक्खय-निहए[5] करेह, करेत्ता वाडिपक्खेव[6] करेह, करेत्ता सारक्खमाणा सगोवेमाणा आणुपुव्वेण संवड्ढेह ॥

११. तए ण ते कोडुबिया रोहिणीए एयमट्ठं पडिसुणेति, ते पंच सालिअक्खए गेण्हंति, अणुपुव्वेण सारक्खति, संगोविंति[7] ॥

१२ तए ण कोडुबिया पढमपाउससि महावुट्ठिकायसि निवइयसि समाणसि खुड्डाग केयार सुपरिकम्मिय करेति, ते पच सालिअक्खए ववंति, दोच्च पि तच्चं पि उक्खय-निहए करेति, वाडिपरिक्खेव करेति, अणुपुव्वेण सारक्खेमाणा सगोवेमाणा सवड्ढेमाणा विहरति ॥

१३ तए ण ते साली अणुपुव्वेण सारक्खिज्जमाणा सगोविज्जमाणा संवड्ढिज्जमाणा साली जाया—किण्हा किण्होभासा[8] •नीला नीलोभासा हरिया हरिओभासा सीया सीओभासा णिद्धा णिद्धोभासा तिव्वा तिव्वोभासा किण्हा किण्हच्छाया नीला नीलच्छाया हरिया हरियच्छाया सीया सीयच्छाया णिद्धा णिद्धच्छाया तिव्वा तिव्वच्छाया घण-कडियकडिच्छाया रम्मा महामेह°निउरंबभूया पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥

---

१. स० पा०—सद्दावेइ जाव त।
२. ना० १।७।६,७।
३. कारणेण त्ति कट्टु (क, घ)।
४. ×(क, ग)।
५. निक्खए (क, ख, ग, घ)।
६. ×(क, ख ग)।
७. सगोविंति विहरंति (क, ख, ग, घ)।
८. सं० पा०—किण्होभासा जाव निउरवभूया।

१४ तए ण ते साली पत्तिया वत्तिया[1] गब्भिया पसूइया आगयगधा[2] खीराइया[3] वद्धफला पक्का परियागया सल्लइय[4]-पत्तइया 'हरिय-फेरडा'[5] जाया यावि होत्था ।

१५. तए ण ते कोडुंबिया ते साली पत्तिए[6] •वत्तिए गब्भिए पसूइए आगयगधे खीराइए वद्धफले पक्के परियागए° सल्लइय-पत्तइए जाणित्ता तिक्खेहिं नवपज्जणएहिं असिएहिं लुणति, लुणित्ता करयलमलिए करेति, करेत्ता पुणति । तत्थ ण चोक्खाण सूइयाण[7] अखडाण अफुडियाण छडछडापूयाण[8] सालीण मागहए पत्थए जाए ॥

१६ तए ण ते कोडुंबिया ते साली नवएसु घडएसु पक्खिवति पक्खिवित्ता ओलिपति, ओलिपित्ता लछिय-मुद्दिए[9] करेति, करेत्ता कोट्ठागारस्स एगदेससि[10] ठावेति, ठावेत्ता सारक्खमाणा सगोवेमाणा विहरति ॥

१७ तए ण ते कोडुंबिया दोच्चसि वासारत्तसि पढमपाउससि महावुट्ठिकायसि निवइयसि [समाणसि ?]खुड्डाग केयार सुपरिकम्मिय करेति, ते साली ववति[11], दोच्चपि उक्खाय-णिहए करेति जाव[12] असिएहिं लुणति लुणित्ता[13] चलणतल-मलिए करेति करेत्ता पुणति । तत्थ ण[14] सालीण वहवे कुडवा[15] •जाया ॥

१८. तएण ते कोडुंबिया ते साली नवएसु घडएसु पक्खिवति, पक्खिवित्ता ओलिपति ओलिपित्ता लछिय-मुद्दिए करेति, करेत्ता कोट्ठागारस्स° एगदेससि ठावेति, ठावेत्ता सारक्खमाणा सगोवेमाणा विहरति ॥

१९. तए ण ते कोडुंबिया तच्चसि वासारत्तसि महावुट्ठिकायसि निवइयसि [समाणसि ?] केयारे[16] सुपरिकम्मिए करेति जाव[17] असिएहिं लुणति, लुणित्ता सवहति, सवहित्ता खलय करेंति, मलेति,[18] पुणति । तत्थ ण[19] सालीण वहवे कुभा जाया ॥

---

१. पाठान्तरेण तयावत्ति (वृ) ।
२. आययगधा (वृ) ।
३. क्षीरकिता (वृ) ।
४. सल्लइया (क, ख, ग, घ, वृपा) ।
५. हरिया° (ख), °पेरुडा (ग) ।
६. स० पा०—पत्तिए जाव सल्लइयपत्तइए ।
७. सूयाण (घ) ।
८ छड्डछड्डाण पूयाण (क), छड्डछड्डा-पूयाण (ख), छडछडाभूयाण (ग, वृपा), छडछडपूयाण (घ) ।
९ मुद्दियाए (क) ।
१०. °देसम्मि (ग) ।
११. वुप्पति (क, ग), वुपति (ख), वुप्पति (घ) ।
१२. ना० १।७।१२-१५ ।
१३. जाव (क, ख, ग, घ) ।
१४. पू०—ना० १।७।१५ ।
१५ स० पा०—कुडवा जाव एगदेससि ।
१६. केदारे (ख, ग, घ) ।
१७ ना० १।७।१२-१५ ।
१८ मेलित्ति (ख), मेलेति (ग, घ) ।
१९. पू०—ना० १।७।१५ ।

य कोडुंबेसु य मंतेसु य गुज्झेसु य रहस्सेसु य निच्छएसु य ववहारेसु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, मेढी पमाणं आहारे आलंबणे चक्खू, मेढीभूते पमाणभूते आहारभूते आलंबणभूते चक्खूभूए सव्वकज्जवड्ढावए।

तं 'न नज्जइ'[1] णं मए[2] गयंसि वा चुयंसि वा मयंसि वा भग्गंसि वा लुग्गंसि वा सडियंसि वा पडियंसि वा विदेसत्थंसि वा विप्पवसियंसि वा इमस्स कुडुंबस्स के मन्ने आहारे वा आलंबे वा पडिबंधे वा भविस्सइ ?

तं सेयं खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[3] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ[4]-°नियग-सयण-संबंधि-परियण° चउण्ह य सुण्हाणं[5] कुलघरवग्गं आमंतेत्ता तं मित्त-नाइ-नियग[6]-°सयण-संबंधि-परियण° चउण्ह य सुण्हाणं[7] कुलघरवग्गं विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं धूव-पुप्फ-वत्थ-गंध[8]-°मल्लालंकारेण य° सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्त-नाइ[9]-°नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स° चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ चउण्हं सुण्हाणं परिक्खणट्ठयाए पंच-पंच सालिअक्खए दलइत्ता जाणामि ताव का किहं वा सारक्खेइ वा ? संगोवेइ वा ? संवड्ढेइ वा ? एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[10] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते 'विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेइ, मित्त-नाइ[11]-°नियग-सयण-संबंधि-परियण° चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गं आमंतेइ'[12], तओ पच्छा ण्हाए भोयणमंडवंसि सुहासणवरगए तेणं मित्त-नाइ[13]-°नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं° चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गेण सद्धिं तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसादेमाणे जाव[14] सक्कारेइ, सक्कारेत्ता तस्सेव मित्त-नाइ[15]-°नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स° चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ पंच सालिअक्खए गेण्हइ, गेण्हित्ता जेट्ठं सुण्हं उज्झियं[16] सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुमं णं पुत्ता ! मम

---

१. ×(ख, ग)।
२. मए त्ति मयि (वृ)।
३. ना० १।१।२४।
४. सं० पा०—नाइ°।
५. ण्हुसाणं (ख)।
६. सं० पा०—नियग°।
७. ण्हुसाणं (ख, ग)।
८. सं० पा०—गंध जाव सक्कारेत्ता।
९. सं० पा०—नाइ°।
१०. ना० १।१।२४।
११. सं० पा०—नाइ°।
१२. मित्त-नाइ° चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गं आमंतेइ, विपुलं असणं ४ उवक्खडावेइ (क, ख, ग)।
१३. सं० पा—नाइ°।
१४. ना० १।१।८१।
१५. सं० पा०—नाइ°।
१६. उज्झिइत (ख); उज्झिहतितं (ग); उज्झिहितितं (घ)।

हत्थाओ इमे पंच सालिअक्खए गेण्हाहि, अणुपुव्वेणं सारक्खमाणी[1] सगोवेमाणी विहराहि। जया णं अहं[2] पुत्ता! तुमं इमे पंच सालिअक्खए जाएज्जा, तया णं तुमं मम इमे पंच सालिअक्खए पडिनिज्जाएज्जासि[3] त्ति कट्टु सुण्हाए हत्थे दलयइ, दलइत्ता पडिविसज्जेइ॥

७ तए णं सा उज्झिया धणस्स तह त्ति एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता धणस्स सत्थवाहस्स हत्थाओ ते पंच सालिअक्खए गेण्हइ, गेण्हित्ता एगंतमवक्कमइ, एगंतमवक्कमियाए इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु तायाणं कोट्ठागारंसि बहवे पल्ला सालीणं पडिपुण्णा चिट्ठंति, तं जया णं ममं ताओ इमे पंच सालिअक्खए जाएसइ[4], तया[5] णं अहं पल्लंतराओ अण्णे पंच सालिअक्खए गहाय दाहामि[6] त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता ते पंच सालिअक्खए एगंते एडेइ, सकम्मसंजुत्ता जाया यावि होत्था॥

८ एवं भोगवइयाए वि, नवरं—सा छोल्लेइ, छोल्लेत्ता अणुगिलइ, अणुगिलित्ता सकम्मसंजुत्ता जाया यावि होत्था॥

९ एवं रक्खियाए वि, नवरं—गेण्हइ, गेण्हित्ता एगंतमवक्कमइ, एगंतमवक्कमियाए इमेयारूवे[7] अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु ममं ताओ इमस्स मित्त-नाइ[8]-°नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स° चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुमं णं पुत्ता! मम हत्थाओ[9] °इमे पंच सालिअक्खए गेण्हाहि, अणुपुव्वेणं सारक्खमाणी संगोवेमाणी विहराहि। जया णं अहं पुत्ता! तुमं इमे पंच सालिअक्खए जाएज्जा, तया णं तुमं मम इमे पंच सालिअक्खए° पडिनिज्जाएज्जासि त्ति कट्टु मम हत्थंसि पंच सालिअक्खए दलयइ। तं भवियव्वमेत्थ कारणेणं ति कट्टु एवं संपेहेइ संपेहेत्ता ते पंच सालिअक्खए सुद्धे वत्थे बंधइ, बंधित्ता रयणकरंडियाए पक्खिवइ, पक्खिवित्ता[10] ऊसीसामूले ठावेइ, ठावेत्ता तिसंझं पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरइ॥

१० तए णं से धणे सत्थवाहे तहेव[11] मित्त[12]-°नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स

---

१. सरक्खमाणी (ग)।
२. हं (क, ख)।
३ पडिदिज्जाएज्जासि (क); दलएज्जासि (ग), पडिदेज्जासि (घ)।
४. जातिसति (ख)।
५. तता (क)।
६. देहामि (ख, ग)।
७. एमेयारूवे (ख)।
८. सं० पा०—नाइ°।
९ सं० पा०—हत्थाओ जाव पडिनिज्जाएज्जासि।
१०. पक्खिवइ २ मंजूसाए पक्खिवइ २ (क, घ)।
११. तस्सेव (ख, ग)।
१२. सं० पा०—मित्त जाव चउत्थ।

चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ पंच सालिअक्खए गेण्हइ, गेण्हित्ता ° चउत्थ रोहिणीय सुण्हं सद्दावेइ,[1] •सद्दावेत्ता एव वयासी—तुम णं पुत्ता ! मम हत्थाओ इमे पच सालिअक्खए गेण्हाहि, जाव[2] गेण्हइ, गेण्हित्ता एगतमवक्कमइ, एगतमवक्कमियाए इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु मम ताओ इमस्स मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स चउण्ह य सुण्हाण कुलघरवग्गस्स पुरओ सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुमं णं पुत्ता ! मम हत्थाओ इमे पच सालिअक्खए गेण्हाहि, अणुपुव्वेण सारक्खमाणी सगोवेमाणी विहराहि। जया ण अह पुत्ता ! तुमं इमे पच सालिअक्खए जाएज्जा, तया ण तुम मम इमे पंच सालिअक्खए पडिनिज्जाएज्जासि त्ति कट्टु मम हत्थसि पच सालिअक्खए दलयइ° । तं भवियव्व एत्थ कारणेण[3] । तं सेयं खलु मम एए पच सालिअक्खए सारक्खमाणीए सगोवेमाणीए सवड्ढेमाणीए त्ति कट्टु एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कुलघर-पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—तुब्भे ण देवाणुप्पिया ! एए पच सालिअक्खए गेण्हइ, गेण्हित्ता पढमपाउससि महावुट्ठिकायसि निवइयसि समाणसि खुड्डाग केयार सुपरिकम्मिय करेह, करेत्ता इमे पच सालिअक्खए वावेह, वावेत्ता दोच्चं पि 'तच्च पि'[4] उक्खय-निहए[5] करेह, करेत्ता वाडिपक्खेव[6] करेह, करेत्ता सारक्खमाणा सगोवेमाणा आणुपुव्वेण संवड्ढेह ॥

११. तए ण ते कोडुंबिया रोहिणीए एयमट्ठ पडिसुणेति, ते पच सालिअक्खए गेण्हंति, अणुपुव्वेण सारक्खति, संगोविंति[7] ॥

१२ तए ण कोडुंबिया पढमपाउससि महावुट्ठिकायसि निवइयसि समाणसि खुड्डाग केयार सुपरिकम्मिय करेति, ते पच सालिअक्खए ववंति, दोच्च पि तच्चं पि उक्खय-निहए करेति, वाडिपरिक्खेव करेति, अणुपुव्वेण सारक्खेमाणा सगोवेमाणा सवड्ढेमाणा विहरति ॥

१३ तए ण ते साली अणुपुव्वेण सारक्खिज्जमाणा सगोविज्जमाणा संवड्ढिज्जमाणा साली जाया—किण्हा किण्होभासा[8] •नीला नीलोभासा हरिया हरिओभासा सीया सीओभासा णिद्धा णिद्धोभासा तिव्वा तिव्वोभासा किण्हा किण्हच्छाया नीला नीलच्छाया हरिया हरियच्छाया सीया सीयच्छाया णिद्धा णिद्धच्छाया तिव्वा तिव्वच्छाया घण-कडियकडिच्छाया रम्मा महामेह° निउरवभूया पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥

---

१. म० पा०—सद्दावेइ जाव त।
२. ना० १।७।६,७।
३. कारणेण त्ति कट्टु (क, घ)।
४. ×(क, ग)।
५. निक्खए (क, ख, ग, घ)।
६. ×(क, ख, ग)।
७. सगोविंति विहरंति (क, ख, ग, घ)।
८. स० पा०—किण्होभासा जाव निउरवभूया।

१४. तए ण ते साली पत्तिया वत्तिया[1] गब्भिया पसूइया आगयगधा[2] खीराइया[3] बद्धफला पक्का परियागया सल्लइय[4]-पत्तइया 'हरिय-फेरडा'[5] जाया यावि होत्था ।

१५ तए ण ते कोडुबिया ते साली पत्तिए[6] •वत्तिए गब्भिए पसूइए आगयगधे खीराइए बद्धफले पक्के परियागए° सल्लइय-पत्तइए जाणित्ता तिक्खेहि नवपज्जणएहि असिएहि लुणति, लुणित्ता करयलमलिए करेति, करेत्ता पुणति । तत्थ ण चोक्खाण सूइयाण[7] अखडाण अफुडियाण छडछडापूयाण[8] सालीण मागहए पत्थए जाए ।।

१६ तए ण ते कोडुबिया ते साली नवएसु घडएसु पक्खिवति पक्खिवित्ता ओलिपति, ओलिपित्ता लछिय-मुद्दिए[9] करेति, करेत्ता कोट्ठागारस्स एगदेससि[10] ठावेति, ठावेत्ता सारक्खमाणा सगोवेमाणा विहरति ।।

१७ तए ण ते कोडुबिया दोच्चसि वासारत्तसि पढमपाउससि महावुट्ठिकायसि निवइयसि [समाणसि ?]खुड्डाग केयार सुपरिकम्मिय करेति, ते साली ववति[11], दोच्चपि उक्खाय-णिहए करेति जाव[12] असिएहि लुणति लुणित्ता[13] चलणतल-मलिए करेति करेत्ता पुणति । तत्थ ण[14] सालीण बहवे कुडवा[15] •जाया ।।

१८. तएण ते कोडुबिया ते साली नवएसु घडएसु पक्खिवति, पक्खिवित्ता ओलिपति ओलिपित्ता लछिय-मुद्दिए करेति, करेत्ता कोट्ठागारस्स° एगदेससि ठावेति, ठावेत्ता सारक्खमाणा सगोवेमाणा विहरति ।।

१९. तए ण ते कोडुबिया तच्चसि वासारत्तसि महावुट्ठिकायसि निवइयसि [समाणसि ?] केयारे[16] सुपरिकम्मिए करेति जाव[17] असिएहि लुणति, लुणित्ता सवहति, सवहित्ता खलय करेति, मलेति,[18] पुणति । तत्थ ण[19] सालीण बहवे कुभा जाया ।।

---

१. पाठान्तरेण तयावत्ति (वृ) ।
२ आययगधा (वृ) ।
३. क्षीरकिता (वृ) ।
४. सल्लइया (क, ख, ग, घ, वृपा) ।
५ हरिया° (ख), °पेरुडा (ग) ।
६. सं० पा०—पत्तिए जाव सल्लइयपत्तइए ।
७ सूयाण (घ) ।
८ छड्डछड्डाण पूयाणं (क), छड्डछड्डा-पूयाण (ख), छडछडाभूयाण (ग, वृपा), छडछडपूयाण (घ) ।
९ मुद्दियाए (क) ।
१०. °देसम्मि (ग) ।
११. वुप्पति (क, ग), वुपति (ख), वुप्पति (घ) ।
१२. ना० १।७।१२-१५ ।
१३. जाव (क, ख, ग, घ) ।
१४. पू०—ना० १।७।१५ ।
१५ स० पा०—कुडवा जाव एगदेससि ।
१६. केदारे (ख, ग, घ) ।
१७ ना० १।७।१२-१५ ।
१८ मेलित्ति (ख), मेलेति (ग, घ) ।
१९. पू०—ना० १।७।१५ ।

२०. तए णं ते कोडुंबिया ते साली कोट्ठागारंसि पल्लंसि[1] •पक्खिवंति, पक्खिवित्ता ओलिंपंति, ओलिंपित्ता लंछिय-मुद्दिए करेंति, करेत्ता सारक्खमाणा संगोवेमाणा° विहरंति ॥

२१. चउत्थे वासारत्ते बहवे कुंभसया जाया ॥

परिक्खा-परिणाम-पदं

२२. तए णं तस्स धणस्स पंचमयंसि संवच्छरंसि परिणममाणंसि पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु मए इओ अतीते[2] पंचमे संवच्छरे चउण्हं सुण्हाणं परिक्खणट्ठयाए ते पंच-पंच सालिअक्खया हत्थे दिन्ना। तं सेयं खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[3] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते पंच सालिअक्खए परिजाइत्तए[4] जाव[5] जाणामि ताव काए किहं सारक्खिया वा संगोविया वा संवड्ढिया वत्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[6] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते विपुलं असणं[7] •पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गं जाव[8]° सम्माणित्ता तस्सेव मित्त-नाइ[9]-•नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स° चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ जेट्ठं उज्झियं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु अहं पुत्ता! इओ अतीते पंचमम्मि संवच्छरे[10] इमस्स मित्त-[11]•नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स° चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरओ तव हत्थंसि पंच सालिअक्खए दलयामि। जया णं अहं पुत्ता! एए पंच सालिअक्खए जाएज्जा तया णं तुमं मम इमे पंच सालिअक्खए पडिनिज्जाएसि[12]। से नूणं पुत्ता! अट्ठे समट्ठे?

---

१. सं० पा०—पल्लंसि जाव विहरंति, घल्लंति (क) पल्लंति (ख, ग, घ), यद्यपि बहुषु आदर्शेषु 'पल्लंति' इति पदं विद्यते, किन्तु नैतत् समीचीनं प्रतिभाति। यद्येतत् स्वीकृतं स्यात् तर्हि जाव शब्दस्य पूर्तेराधारस्थलं नोपलभ्यते 'पल्लंति' इति पदस्यार्थोपि नैव संगच्छते। अतएव अस्माभिः 'पल्लंसि' इति पदं स्वीकृतम्। अस्याधारः (४३) सूत्रे 'पल्ले उब्भिदइ' इति पाठे उपलभ्यते।

२. अईए (क)।

३. ना० १।१।२४।

४. परिजातित्तए (ख, ग, घ)।

५. एवं (घ)।

६. ना० १।१।२४।

७. सं० पा०—असणं मित्त-नाइ चउण्ह य सुण्हाणं कुलघर जाव सम्माणित्ता।

८. ना० १।७।६।

९. सं० पा०—नाइ °।

१०. संवत्सरे (ग)।

११. सं० पा०—मित्त।

१२. °निज्जाएसि त्ति कट्टु (क)।

हंता अत्थि ।

त णं तुमं पुत्ता ! मम ते सालिअक्खए पडिनिज्जाएसि ।।

२३ तए ण सा उज्झिया एयमट्ठं धणस्स सत्थवाहस्स पडिसुणेइ, जेणेव कोट्ठागारं तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पल्लाओ पच सालिअक्खए गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव धणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धण सत्थवाहं एवं वयासी—एए ण ताओ[1] ! पच सालिअक्खए ति कट्टु धणस्स हत्थसि ते[1] पंच सालिअक्खए दलयइ ।।

२४ तए णं धणे सत्थवाहे उज्झिय सवह-साविय करेइ, करेत्ता एव वयासी—किण्ण पुत्ता ! ते चेव पच सालिअक्खए उदाहु अण्णे ?

२५. तए णं उज्झिया धण सत्थवाहं एव वयासी—एव खलु तुब्भे ताओ ! इओ अतीए पचमे सवच्छरे इमस्स मित्त-नाइ[3]-•नियग-सयण-सबधि-परिजणस्स चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ पंच सालिअक्खए गेण्हह, गेण्हित्ता ममं सद्दावेह, सद्दावेत्ता एव वयासी—तुम ण पुत्ता ! मम हत्थाओ इमे पंच सालिअक्खए गेण्हाहि, अणुपुव्वेण सारक्खमाणी संगोवेमाणी° विहराहि । तए णह तुब्भं एयमट्ठ पडिसुणेमि, ते पच सालिअक्खए गेण्हामि, एगतमवक्कमामि ।

तए णं मम इमेयारूवे[4] अज्झत्थिए[5] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—एव खलु तातांणं कोट्ठागारसि[6] •वहवे पल्ला सालीण पडिपुण्णा चिट्ठति, त जया ण मम ताओ इमे पच सालिअक्खए जाएसइ, तया णं अहं पल्लतराओ अण्णे पच सालिअक्खए गहाय दाहामि त्ति कट्टु एव सपेहेमि, सपेहेत्ता ते पंच सालिअक्खए एगते एडेमि, सकम्मसंजुत्ता यावि भवामि° । त नो खलु ताओ ! ते चेव पच सालिअक्खए, एए ण अण्णे ।।

२६. तए ण से धणे सत्थवाहे उज्झियाए अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्मा[8] आसुरुत्ते जाव[7] मिसिमिसेमाणे उज्झियं तस्स मित्त-नाइ[9]-•नियग-सयण-संबधि-परियणस्स° चउण्ह सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरओ तस्स कुलघरस्स छारुज्झियं च 'छाणुज्झियं च[10] 'कयवरुज्झिय च सपुच्छिय च[11] सम्मज्जिय च पाओवदाइयं

---

१ ते (क, ख, ग) ।

२. ×(क) ।

३ स० पा०—नाइ चउण्ह य कुल जाव विहराहि ।

४. इमे एयारूवे (क) ।

५ स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

६. स० पा०—कोट्ठागारसि सकम्मस ।

७. ना० १।१।१६१ ।

८ निसम्म (क्वचित्) ।

९ स० पा०—नाइ° ।

१० ×(ख), वृत्तावपि नास्तिव्याख्यातम् ।

११ समुक्खिय (वृ), सपुच्छिय (वृपा) ।

च ण्हाणोवदाइय च बाहिर[1]-पेसणकारियं[2] च ठवेइ[3] ॥

२७ एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गथो वा निग्गथी वा[4] •आयरिय-उवज्झा-याण अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइए, पच य से महव्व-याइ उज्झियाइ भवति, से ण इहभवे चेव बहूण समणाण बहूण समणीणं वहूण सावयाण बहूण सावियाण य हीलणिज्जे जाव[5] चाउरंत-ससार-कतार भुज्जो-भुज्जो अणुपरियट्टिस्सइ—जहा सा उज्झिया[6] ॥

२८. एव भोगवइया वि, नवर[7]—•छोल्लेमि, छोल्लित्ता अणुगिलेमि, अणुगिलित्ता सकम्मसजुत्ता यावि भवामि । त नो खलु ताओ ! ते चेव पच सालिअक्खए, एए ण अण्णे ।

२९ तए ण से धणे सत्थवाहे भोगवइयाए अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्मा आसुरुत्ते जाव[8] मिसिमिसेमाणे भोगवइ तस्स मित्त-नाइ-नियग-सयण-सबधि-परियणस्स चउण्ह सुण्हाण कुलघरवग्गस्स य पुरओ° तस्स कुलघरस्स कंडितिय[9] च कोट्टेतिय च पीसतिय च एव—रुंधतिय रधतिय परिवेसतिय[10] परिभायतिय[11] अब्भितरिय[12] पेसणकारिं महाणसिणिं ठवेइ ॥

३० एवामेव समणाउसो ! जो अम्ह निग्गथो वा निग्गथी वा आयरिय-उवज्झा-याण अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए, पच य से महव्वयाइ फालियाइ[13] भवति, से ण इहभवे चेव बहूण समणाणं बहूण समणीण वहूणं सावयाण बहूण सावियाण य हीलणिज्जे जाव[14] चाउरत-ससार-कतार भुज्जो-भुज्जो अणुपरियट्टिस्सइ—जहा व सा भोगवइया ॥

३१ एवं रक्खियावि[15], नवर—जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मजूस विहाडेइ, विहाडेत्ता रयणकरडगाओ ते पच सालिअक्खए गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव धणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पच सालिअक्खए धणस्स हत्थे दलयइ ॥

३२ तए ण से धणे सत्थवाहे रक्खिय एव वयासी—किं ण पुत्ता ! ते चेव एए पंच सालिअक्खए उदाहु अण्णे ?

---

१ वाहर (ख) ।
२. पेसणकारिं (क, ख) ।
३. ठावेइ (क) ।
४. स० पा०—निग्गथी वा जाव पव्वइए ।
५ ना० १।३।२४ ।
६. उज्झिइया (ग, घ) ।
७. स० पा०—नवर तस्स ।
८ ना० १।१।१६१ ।
९ कुडेतिय (ख); कडेतिय (ग), खडेतिय (घ) ।
१०. °तियं च (ग) ।
११. °तिय च (ग) ।
१२ °तरिय च (ग) ।
१३. फाडियाति (घ) फोडियाइं (ख) ।
१४. ना० १।३।२४ ।
१५. रक्खितियावि (ख, ग) ।

३३ तए ण रक्खिया धणं सत्थवाहं एव वयासी—ते चेव ताओ[1] ! एए पच सालिअक्खए, नो अण्णे ।

कहण्णं ? पुत्ता !

एवं खलु ताओ ! तुब्भे इओ अतीते पचमे[2] •संवच्छरे इमस्स मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबधि-परियणस्स चउण्ह य सुण्हाण कुलघरवग्गस्स पुरओ पंच सालिअक्खए गेण्हह, गेण्हित्ता ममं सद्दावेह, सद्दावेत्ता ममं एव वयासी—तुम णं पुत्ता ! मम हत्थाओ इमे पच सालिअक्खए गिण्हाहि, अणुपुव्वेण सारक्खमाणी सगोवेमाणी विहराहि। जया णं अह पुत्ता ! तुम इमे पच सालिअक्खए जाएज्जा, तया णं तुमं मम इमे पच सालिअक्खए पडिनिज्जाएज्जासि ति कट्टु मम हत्थसि पच सालिअक्खए दलयह। त° भवियव्व एत्थ कारणेणं ति कट्टु ते पच सालिअक्खए सुद्धे वत्थे[3] •बधेमि, बधित्ता रयणकरडियाए पक्खिवेमि, पक्खिवित्ता उसीसामूले ठावेमि, ठावेत्ता° तिसझ पडिजागरमाणी यावि विहरामि। तओ[4] एएण कारणेण ताओ ! ते चेव पच सालिअक्खए, नो अण्णे ।।

३४. तए णं से धणे सत्थवाहे रक्खियाए[5] अतिय एयमट्ठ सोच्चा हट्ठतुट्ठे तस्स कुलघरस्स हिरण्णस्स य कस-दूस-विपुल-धण[6]-•कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-सख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संत-सार°-सावएज्जस्स[7] य भडागारिणी[8] ठवेइ ।।

३५ एवामेव समणाउसो[9] ! •जो अम्ह निग्गथो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झायाण अंतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए,° पच य से महव्वयाइं रक्खियाइं भवति, से ण इहभवे चेव बहूणं समणाण बहूण समणीणं बहूण सावगाण बहूण सावियाण य अच्चणिज्जे जाव[10] चाउरत ससारकतार वीईवइस्सइ—जहा व सा रक्खिया ।।

३६ रोहिणीया वि एव चेव, नवर—तुब्भे ताओ ! मम सुवहुयं सगडि-सागडं दलाह[11], जा ण[12] अह तुब्भं ते पच सालिअक्खए पडिनिज्जाएमि ।।

३७. तए णं से धणे सत्थवाहे रोहिणि[13] एव वयासी—कह[14] ण तुम[15] पुत्ता ! ते पच

१. ताया (ख, ग), ताय (घ) ।
२. स० पा०—पचमे जाव भवियव्व ।
३. स० पा०—वत्थे जाव तिसझ ।
४. ततेण (ख), तते (ग), तं (घ) ।
५. रक्खितियाए (क, ख, ग, घ) ।
६ स० पा०—धण जाव सावएज्जस्स ।
७. सावइज्जस्स (क), सावतेयस्स (ख, ग, घ) ।
८ भडागारिणि (क्व) ।
९. स० पा०—समणाउसो जाव पच ।
१०. ना० १।३।३४ ।
११. दलयाह (घ) ।
१२. जोअण (ख) ।
१३. रोहिणी (क, ख, ग) ।
१४. कह (ग) ।
१५. तुम मम (क, ख, ग)

सालिअक्खए सगडि-सागडेणं निज्जाइस्ससि ? ॥

३८. तए ण सा रोहिणी धण सत्थवाह एव वयासी—एवं खलु ताओ ! तुब्भे इओ अतीते पचमे सवच्छरे इमस्स मित्त[1]-•नाइ-नियग-सयण-सबधि-परियणस्स चउण्ह य सुण्हाण कुलघरवग्गस्स पुरओ पच सालिअक्खए गेण्हह, गेण्हित्ता मम सद्दावेह, सद्दावेत्ता एव वयासी—तुम णं पुत्ता मम हत्थाओ इमे पंच सालि-अक्खए गेण्हाहि, अणुपुव्वेण सारक्खमाणी सगोवेमाणी विहराहि । जया ण अह पुत्ता ! तुम इमे पंच सालिअक्खए जाएज्जा, तया ण तुम मम इमे पंच सालि-अक्खए पडिनिज्जाएज्जासि ति कट्टु मम हत्थसि पच सालिअक्खए दलयह । त भवियव्व एत्थ कारणेण । त सेयं खलु मम एए पच सालिअक्खए सारक्ख-माणीए सगोवेमाणीए सवड्ढेमाणीए जाव[2] °वहवे कुभसयाजाया तेणेव कमेण । एव खलु ताओ ! तुब्भे ते पच सालिअक्खए सगडि-सागडेण निज्जाएमि ॥

३९. तए णं से धणे सत्थवाहे रोहिणीयाए सुवहुय सगडि-सागड दलाति[3] ॥

४०. तए ण से रोहिणी सुवहु सगडि-सागड गहाय जेणेव सए कुलघरे तेणेव उवा-गच्छइ, उवागच्छित्ता कोट्ठागारे विहाडेइ, विहाडित्ता पल्ले उब्भिदइ, उब्भिदित्ता सगडि-सागडं भरेइ, भरेत्ता रायगिह नगरं मज्झमज्झेणं जेणेव सए गिहे जेणेव धणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ ॥

४१. तए ण रायगिहे नयरे सिंघाडग[4]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु° वहुजणो अण्णमण्ण एवमाइक्खइ—धण्णे ण देवाणुप्पिया ! धणे सत्थवाहे, जस्स ण रोहिणीया सुण्हा पंच सालिअक्खए 'सगडि-सागडेण'[5] निज्जाएइ ॥

४२. तए ण से धणे सत्थवाहे ते पच सालिअक्खए सगडि-सागडेणं निज्जाइए पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे[6] पडिच्छइ, पडिच्छित्ता तस्सेव मित्त-नाइ[7]-•नियग-सयण-सबधि-परियणस्स° चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ रोहिणीय सुण्ह तस्स कुलघरस्स वहूसु कज्जेसु य[8] •कारणेसु य कुडुंवेसु य मंतेसु य गुज्झेसु य •रहस्सेसु य आपुच्छणिज्ज[9] •पडिपुच्छणिज्ज मेढि पमाणं आहार आलवणं चक्खु, मेढीभूय पमाणभूयं आहारभूय आलवणभूय चक्खुभूयं सव्वकज्ज°वड्ढाविय पमाणभूय ठवेइ ।

४३. एवामेव समणाउसो[10] ! •जो अम्हं निग्गथो वा निग्गथी वा आयरिय-उवज्झा-याण अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए°, पच से महव्वया

---

१ स० पा०—मित्त जाव वहवे ।
२. ना० १।७।१०-२१ ।
३ दलयइ (ख) ।
४ सं० पा०—सिंघाडग जाव वहुजणो ।
५. सगडसागडिएण(क), सगडिसागडिएण (ख) ।
६ हट्ठ जाव (क, च) ।
७. सं० पा०—नाइ ।
८. स० पा०—कज्जेसु जाव रहस्सेसु ।
९. स० पा०—आपुच्छणिज्ज जाव वड्ढाविय ।
१०. स० पा०—समणाउसो ! जाव पच ।

संवड्ढिया भवंति, से णं इहभवे चेव वहूण समणाणं बहूण समणीण वहूणं सावगाण वहूण सावियाण य अच्चणिज्जे जाव[1] चाउरंत ससारकतार वीईवइ-स्सइ—जहा व सा रोहिणीया ।।

निक्खेव-पद

४४ एवं खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेण आइगरेणं तित्थगरेण जाव[2] सिद्धिगइनामधेज्ज ठाण सपत्तेण सत्तमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति बेमि ।।

वृत्तिकृना समुद्धृता निगमनगाथा—

जह सेट्ठी तह गुरुणो, जह नाइ-जणो तहा समणसघो ।
जह वहुया तह भव्वा, जह सालिकणा तह वयाइं ।।१।।

उज्झिया—

जह सा उज्झियनामा, उज्झियसाली जहत्थमभिहाणा ।
पेसणगारित्तेण, असखदुक्खक्खणी जाया ।।२।।
तह भव्वो जो कोई, सघसमक्ख गुरु-विदिण्णाइ ।
पडिवज्जिउ समुज्झइ, महव्वयाइ महामोहा ।।३।।
सो इह चेव भवम्मि, जणाण धिक्कार-भायण होइ ।
परलोए उ दुहत्तो, नाणा-जोणीसु सचरइ ।।४।।

भोगवती—

जह वा सा भोगवती, जहत्थनामोवभुत्तसालिकणा ।
पेसणविसेसकारित्तणेण पत्ता दुह चेव ।।५।।
तह जो महव्वयाइ, उवभुजइ जीवियत्ति पालितो ।
आहाराइसु सत्तो, चत्तो सिवसाहणिच्छाए ।।६।।
सो एत्थ जहिच्छाए, पावइ आहारमाइ लिगित्ता ।
विउसाण नाइपुज्जो, परलोयसी दुही चेव ।।७।।

रक्खिया—

जह वा रक्खियवहुया, रक्खियसालीकणा जहत्थक्खा ।
परिजणमण्णा जाया, भोगसुहाइ च सपत्ता ।।८।।
तह जो जीवो सम्मं, पडिवज्जित्ता महव्वए पच ।
पालेइ निरइयारे, पमाय-लेसपि वज्जेतो ।।९।।

---

१. ना० १।३।३४ ।   २. ना० १।१।७ ।

सो अप्पहिएक्करई, इहलोयम्मिवि विऊहिं पणयपओ।
एगंतसुही जायइ, परम्मि मोक्खंपि पावेइ ॥१०॥

रोहिणी—

जह रोहिणी उ सुण्हा, रोवियसाली जहत्थमभिहाणा।
वड्ढित्ता सालिकणे, पत्ता सव्वस्स सामित्तं ॥११॥

तह जो भव्वो पाविय, वयाइ पालेइ अप्पणा सम्मं।
अण्णेसि वि भव्वाण, देइ अणेगेसि हियहेउ ॥१२॥

सो इह सघप्पहाणो, जुगप्पहाणोत्ति लहइ ससद्द।
अप्पपरेसि कल्लाण-कारओ गोयमपहुव्व ॥१३॥

तित्थस्स वुड्ढिकारी, अक्खेवणओ कुतित्थियाईणं।
विउस-नरसेविय-कमो, कमेण सिद्धि पि पावेइ ॥१४॥

———

अट्ठमं अज्झयणं

मल्ली

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[1] संपत्तेणं सत्तमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, अट्ठमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

बल-राय-पदं

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेणं, निसढस्स वासहरपव्वयस्स उत्तरेणं, सीओदाए महानदीए दाहिणेणं, सुहावहस्स वक्खारपव्वयस्स पच्चत्थिमेणं, पच्चत्थिम-लवणसमुद्दस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं सलिलावई[2] नामं विजए पण्णत्ते ॥

३. तत्थ णं सलिलावईविजए वीयसोगा नामं रायहाणी[3]—नवजोयणवित्थिण्णा जाव[4] पच्चक्खं देवलोगभूया ॥

४. तीसे णं वीयसोगाए रायहाणीए उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए इंदकुंभे नामं उज्जाणे ॥

५. तत्थ णं वीयसोगाए रायहाणीए बले[5] नामं राया । तस्स[6] धारिणीपामोक्खं देवीसहस्सं ओरोहे[7] होत्था ॥

६. तए णं सा धारिणी देवी अण्णया कयाइ सीहं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धा जाव[8] महब्बले दारए जाए—उम्मुक्कबालभावे जाव भोगसमत्थे ॥

---

१. ना० १।१।७ ।

२. नलिणावती (वृपा) ।

३. °हाणी पण्णत्ता (क, घ) ।

४. ना० १।५।२ ।

५. धीबले (क, ख) ।

६. तस्स णं (क) ।

७. ओरोहो (क) ।

८. भग० ११।१३३-१५६ ।

७ तए णं तं महब्बलं अम्मापियरो सरिसियाणं कमलसिरिपामोक्खाणं पंचण्हं रायवरकन्नासयाण[1] एगदिवसेणं पाणिं गेण्हावेंति। पंच पासायसया। पंचसओ दाओ जाव[2] माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणे विहरइ।

८ [3]•तेणं कालेणं तेणं समएणं इंदकुंभे उज्जाणे थेरा° समोसढा। परिसा निग्गया। 'बलो वि'[4] निग्गओ। धम्मं सोच्चा निसम्म[5] •हट्ठतुट्ठे थेरे तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—सद्दहामि णं भंते! निग्गंथं पावयणं जाव[6] नवरं महब्बलं कुमारं रज्जे° ठावेमि। तओ पच्छा देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयामि।

अहासुहं देवाणुप्पिया! जाव[7] एक्कारसंगवी। बहूणि[8] वासाणि परियाओ। जेणेव चारुपव्वए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[9] मासिएणं भत्तेणं सिद्धे॥

महब्बल-राय-पदं

९ तए णं सा कमलसिरी अण्णया कयाइ सीहं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धा जाव[6]। बलभद्दो कुमारो जाओ। जुवराया यावि होत्था॥

१० तस्स णं महब्बलस्स रण्णो इमे 'छप्पि य बालवयंसगा'[10] रायाणो होत्था, तं जहा—
अयले धरणे पूरणे वसू वेसमणे अभिचंदे[11]—सहजायया[12] •सहवड्ढियया सहपंसु-कीलियया सहदारदरिसी अण्णमण्णमणुरत्तया अण्णमण्णमणुव्वयया अण्णमण्ण-च्छंदाणुवत्तया अण्णमण्णहियइच्छियकारया अण्णमण्णेसु रज्जेसु किच्चाइं करणिज्जाइं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति॥

११ तए णं तेसिं रायाणं अण्णया कयाइ एगयओ सहियाणं समुवागयाणं सण्णि-सण्णाणं सण्णिविट्ठाणं इमेयारूवे मिहोकहा-समुल्लावे समुप्पज्जित्था—जण्णं देवाणुप्पिया! अम्हं सुहं वा दुक्खं वा पवज्जा वा विदेसगमणं वा समुप्पज्जइ, तण्णं अम्हेहिं एगयओ° समेच्चा[13] नित्थरियव्वे त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति॥

---

१. °कन्नया° (ग)।
२. ना० १।१।९१-९३।
३. म० पा०—थेरागमणं इंदकुंभे उज्जाणे समोसढा। असौ पाठः (१२) सूत्रेण नियोजितोस्ति।
४. बीबलो (क)।
५. म० पा०—निसम्म ज० नवरं महब्बलं कुमारं रज्जे ठावेमि।
६. ना० १।१।१०१।
७. ना० १।५।८८-१०१।
८. पू०—ना० १।५।१०४, १०५।
९. भग० ११।१३३-१५६।
१०. छप्पिया° (क, ख, ग)।
११. अभियदे (ख, घ)।
१२. सं० पा०—सहजायया जाव समेच्चा।
१३. सहिच्चाए (ख, ग, घ)।

१२ तेणं कालेणं तेण समएण इदकुभे उज्जाणे थेरा समोसढा। परिसा निग्गया। महव्वले ण धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे[1]। ज नवर—छप्पि य बालवयसए आपुच्छामि, वलभद्द च कुमार रज्जे ठावेमि, जाव[2] ते छप्पि य वालवयसए आपुच्छइ ॥

१३ तए ण ते छप्पि य वालवयसगा महव्वल राय एव वयासी—जइ ण देवाणुप्पिया! तुब्भे पव्वयह, अम्ह के अण्णे आहारे[3] •वा आलवे वा? अम्हे वि य ण° पव्वयामो ॥

१४ तए णं से महव्वले राया ते छप्पि य वालवयसए एवं वयासी—जइ ण तुब्भे मए सद्धि[4] पव्वयह, त[5] गच्छह, जेट्ठपुत्ते सएहिं-सएहि रज्जेहिं[6] ठावेह, पुरिस-सहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरूढा[7] •समाणा मम अतिय पाउब्भवह। तेवि तहेव° पाउब्भवति ॥

१५. तए ण से महव्वले राया छप्पि य बालवयसए पाउब्भूए पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ जाव[8] वलभद्दस्स अभिसेओ। जाव[9] वलभद्द राय आपुच्छइ ॥

महव्वलादीणं पव्वज्जा-पदं

१६. तए ण से महव्वले[10] •छहिं बालवयसगेहि सद्धि° महया इड्ढीए पव्वइए। एक्कारसगवी[11]। बहूहि चउत्थ[12]-•छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहि मासद्धमासखमणेहि अप्पाण° भावेमाणे विहरइ ॥

१७. तए ण तेसिं महव्वलपामोक्खाण सत्तण्ह अणगाराण अण्णया कयाइ एगयओ सहियाण इमेयारूवे मिहोकहा-समुल्लावे समुप्पज्जित्था—जण्ण[13] अम्ह देवाणुप्पिया एगे तवोकम्म उवसपज्जित्ता ण विहरइ, तण्ण अम्हेहि सव्वेहि तवोकम्म उवसपज्जित्ता ण विहरित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठ पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता बहूहि चउत्थ[14]-•छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं मासद्धमास-खमणेहिं अप्पाण भावेमाणा° विहरति ॥

---

१. पू०—ना० १।५।८७।
२. ना० १।५।८७-८६।
३. स० पा०—आहारे जाव पव्वयामो।
४. सद्धि जाव (क, ख, ग, घ)।
५. तो ण (क्व०)।
६. रज्जेहिं रट्ठेहिं (ख, ग, घ)।
७. सं० पा०—दुरूढा जाव पाउब्भवति।
८. ना० १।५।६२-६४।
९. ना० १।५।६५,६६।
१०. स० पा०—महव्वले जाव महया।
११. एक्कारसअगाइ (क),एक्कारसअगवी (ख,घ)।
१२. स० पा०—चउत्थ जाव भावेमाणे।
१३ जण्ह (ग, घ)।
१४. स० पा०—चउत्थ जाव विहरति।

महब्बलस्स तवविसय-माया-पद

१८ तए ण से महब्बले अणगारे इमेण कारणेण इत्थिनामगोय कम्मं निव्वत्तिसु—जइ ण ते महब्बलवज्जा छ अणगारा चउत्थ उवसंपज्जित्ता ण विहरति, तओ से महब्बले अणगारे छट्ठ उवसपज्जित्ता ण विहरइ। जइ[1] णं ते महब्बलवज्जा छ अणगारा छट्ठ उवसपज्जित्ता ण विहरति, तओ से महब्बले अणगारे अट्ठम उवसपज्जित्ता ण विहरइ। एव—अह अट्ठम तो दसम, अह दसम तो दुवालसम। 'इमेहि य'[2] ण वीसाए ण कारणेहिं आसेविय-बहुलीकएहिं तित्थयर-नामगोय कम्म निव्वत्तिसु, त जहा—

संगहणी-गाहा

अरहत-सिद्ध-पवयण-गुरु-थेर-बहुस्सुय[3]-तवस्सीसु।
वच्छल्लया य तेसिं, अभिक्ख[4] नाणोवओगे य ॥१॥
दसण-विणए आवस्सए य सीलव्वए निरइयारो।
खणलवतवच्चियाए, वेयावच्चे समाहीए[5] ॥२॥
अपुव्वनाणगहणे, सुयभत्ती पवयण[6]-पहावणया।
एएहि कारणेहिं, तित्थयरत्त लहइ 'सो उ'[7] ॥३॥

महब्बलादीणं विविहतवचरण-पदं

१९ तए णं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा मासिय भिक्खुपडिम उवसपज्जित्ता ण विहरति जाव[8] एगराइय ॥

२०. तए ण ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा खुड्डाग 'सीहनिक्कीलिय तवोकम्म'[9] उवसपज्जित्ता ण विहरति, त जहा—

चउत्थ करेति, सव्वकामगुणिय पारेति।
छट्ठ करेति, चउत्थ करेति।
अट्ठम करेति, छट्ठं करेति।
दसम करेति, अट्ठम करेति।
दुवालसम करेति, दसम करेति।
चोद्दसमं करेति, दुवालसम करेति।

---

१. अत्र वर्णविपर्ययेण 'यकार' स्थाने इकारो जात। मृदूच्चारणार्थं वर्णविपर्ययो लभ्यते आर्षवाक्येषु।
२. इमेहिं च (क)।
३. बहुस्सुए (क, ख, ग, घ)।
४. अत्र अनुस्वारलोप.।
५. समाही य (क, ख, ग, घ)।
६. पवयणे (क, ख, ग, घ)।
७. जीवो (वृ), एसो (वृपा)।
८. ना० १।१।१९८।
९. °लियत्तवोकम्म (ख)।

सोलसम करेति, चोद्दसमं करेति।
अट्ठारसम करेति, सोलसम करेति।
वीसइम करेति, सोलसम करेति।
अट्ठारसम करेति, चोद्दसम करेति।
सोलसम करेति, दुवालसमं करेति।
चोद्दसम करेति, दसम करेति।
दुवालसम करेति, अट्ठम करेति।
दसम करेति, छट्ठ करेति।
अट्ठम करेति, चउत्थ करेति।

छट्ठ करेति, चउत्थ करेति, करेत्ता सव्वत्थ सव्वकामगुणिएण पारेति।
एव खलु एसा खुड्डागसीहनिक्कीलियस्स तवोकम्मस्स पढमा परिवाडी छहिं मासेहि सत्तहि य अहोरत्तेहिं अहासुत्त जाव[1] आराहिया भवइ ॥

२१. तयाणतर दोच्चाए परिवाडीए चउत्थ करेति, नवर—विगइवज्ज[2] पारेति ॥

२२. एवं तच्चा वि परिवाडी, नवर—पारणए अलेवाड पारेति ॥

२३. एवं चउत्था वि परिवाडी, नवर—पारणए आयबिलेण पारेति ॥

२४. तए ण ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा खुड्डाग सीहनिक्कीलिय तवोकम्म दोहि सवच्छरेहिं अट्ठवीसाए अहोरत्तेहिं अहासुत्त जाव[3] आणाए आराहेत्ता जेणेव थेरे भगवते तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता थेरे भगवते वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—इच्छामो ण भते! महालय सीहनिक्कीलिय तवोकम्म उवसपज्जित्ता ण विहरित्तए।
तहेव जहा[4] खुड्डाग, नवर—चोत्तीसइमाओ नियत्तइ। एगाए परिवाडीए कालो एगेण सवच्छरेण छहि मासेहिं अट्ठारसहि य अहोरत्तेहि समप्पेइ[5]। सव्वपि [महालय ?] सीहनिक्कीलिय छहि वासेहि दोहिं मासेहिं बारसहि य अहोरत्तेहिं समप्पेइ ॥

२५ तए ण ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा महालय सीहनिक्कीलिय अहासुत्त जाव[6] आराहित्ता जेणेव थेरे भगवते तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता थेरे भगवते वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता बहूणि चउत्थ[7]-•छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहि मासद्धमासखमणेहिं अप्पाण भावेमाणा° विहरति ॥

---

१. ठा० ७।१३।
२. विगति° (ख), विगय (घ)।
३. ठा० ७।१३।
४. पू०—ना० १।८।२०।
५. समप्पइ (क)।
६. ठा० ७।१३।
७. स० पा०—चउत्थ जाव विहरति।

समाहिमरण-पद

२६ तए णं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा तेणं उरालेणं[1] तवोकम्मेणं सुक्का भुक्खा निम्मंसा किडिकिडियाभूया अट्ठिचम्मावणद्धा किसा धमणिसतया जाया यावि होत्था। जहा खंदओ[2] नवरं—थेरे आपुच्छित्ता चारुपव्वयं सणियं-सणियं दुरुहंति जाव[3] दोमासियाए संलेहणाए अप्पाणं झोसेत्ता, सवीसं भत्तसयं अणसणाए छेएत्ता, चतुरासीइं वाससयसहस्साइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता, चुलसीइं पुव्वसयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता जयंते विमाणे देवत्ताए उववण्णा। तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। तत्थ णं महब्बलवज्जाणं छण्हं देवाणं देसूणाइं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई। महब्बलस्स देवस्स य पडिपुण्णाइं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई[4]॥

पच्चायाति-पदं

२७ तए णं ते महब्बलवज्जा छप्पि देवा जयंताओ देवलोगाओ आउक्खएणं 'भवक्खएणं ठितिक्खएणं'[5] अणंतरं चयं चइत्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे विसुद्धपिइमाइवंसेसु[6] रायकुलेसु पत्तेयं-पत्तेयं कुमारत्ताए पच्चायाया, तं जहा—
पडिबुद्धी इक्खागराया,
चंदच्छाए अंगराया,
संखे कासिराया,
रुप्पी कुणालाहिवई,
अदीणसत्तू कुरुराया,
जियसत्तू पंचालाहिवई॥

२८ तए णं से महब्बले देवे तिहिं नाणेहिं समग्गे 'उच्चट्ठाणगएसु गहेसु'[7], सोमासु दिसासु वितिमिरासु विसुद्धासु, जइएसु[8] सउणेसु, पयाहिणाणुकूलंसि भूमि-सप्पिंसि मारुयंसि पवायंसि, निप्फण्ण-सस्स-मेइणीयंसि कालंसि पमुइय-पक्कीलिएसु[9] जणवएसु अद्धरत्तकालसमयंसि अस्सिणीनक्खत्तेणं जोगमुवागएणं जे से 'हेमंताणं चउत्थे मासे अट्ठमे पक्खे, तस्स णं फग्गुणसुद्धस्स'[10] चउत्थीपक्खेणं जयंताओ विमाणाओ बत्तीसं सागरोवमट्ठिइयाओ अणंतरं चयं चइत्ता इहेव

---

१. पू०—ना० १।१।२०२।
२. भग० २।१६४-६८, इहैव यथा मेघकुमारो वर्णितः (१।१।२०३-२०६)।
३. ना० १।१।२०६-२०८।
४. ठिई पण्णत्ता (क, ख, घ)।
५. ठितिक्खएणं भवक्खएणं (ख, ग, घ)।
६. पितिमाति° (ख, ग, घ)।
७. °गएसु गहेसु (घ)।
८. जइतेसु गहेसु (क, ख, ग, घ)।
९. पकीलिएसु (ख)।
१०. वाचनान्तरेषु—गिम्हाणं पढमे मासे दोच्चे पक्खे चेत्तसुद्धे तस्स णं चेत्तसुद्धस्स (वृ)।

जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे मिहिलाए रायहाणीए कुभस्स[1] रण्णो पभावतीए देवीए कुच्छिसि आहारवक्कतीए भववक्कतीए सरीरवक्कंतीए गब्भत्ताए वक्कते ॥

२९ [2]•ज रयणि च ण महव्वले देवे पभावतीए देवीए कुच्छिसि गब्भत्ताए वक्कते, त रयणि च ण सा पभावती देवी[3] चोद्दस महासुमिणे पासित्ता ण पडिबुद्धा[4]° । भत्तार-कहण । सुमिणपाढगपुच्छा[5] जाव[6] •विपुलाइ भोगभोगाइ भुजमाणी° विहरइ ॥

३०. तए ण तीसे पभावईए देवीए तिण्ह मासाण वहुपडिपुण्णाण इमेयारूवे डोहले पाउब्भूए—धण्णाओ ण 'ताओ अम्मयाओ'[7] जाओ ण जल-थलय-भासर[8]-प्पभूएण दसद्धवण्णेण मल्लेण अत्थुय-पच्चत्थुयसि सयणिज्जसि सण्णिसण्णाओ निवण्णाओ[9] य विहरति, एग च मह सिरिदामगड पाडल-मल्लिय-चपग-असोग-पुन्नाग-नाग-मरुयग-दमणग-अणोज्जकोज्जय[10]-पउर परमसुहफास[11] दरिसणिज्ज महया गधद्धणि मुयत अग्घायमाणीओ[12] डोहल विणेति ॥

३१ तए ण तीसे[13] पभावईए इम एयारूव डोहल पाउब्भूय पासित्ता अहासण्णिहिया वाणमतरा देवा खिप्पामेव जल-थलय[14]-•भासरप्पभूय दसद्धवण्णं° मल्ल कुभग्गसो य भारग्गसो य कुभस्स[15] रण्णो भवणसि साहरति, एग च ण मह सिरिदामगड जाव[16] गधद्धणि मुयत उवणेति ॥

३२ तए णं सा पभावई देवी जल-थलय[17]-•भासरप्पभूएण दसद्धवण्णेण° मल्लेण[18] दोहल विणेइ ॥

३३ तए ण सा पभावई देवी पसत्थदोहला[19] •सम्माणियदोहला विणीयदोहला सपुण्णदोहला सपत्तदोहला विउलाइ माणुस्सगाइ भोगभोगाइ पच्चणुभवमाणी° विहरइ ॥

---

१ कुभगस्स (क, ख, ग) ।
२. स० पा०—त रयणि च ण चोद्दसमहासुमिणा वण्णओ ।
३ पू० कप्पो० सू० ४ ।
४. पू०—कप्पो० सू० ३ ।
५. स० पा०—सुमिणपाढगपुच्छा जाव विहरइ ।
६ ना० १।१।१९-३२ ।
७ तातो अम्मयातो (ख) ।
८. पभासुर (ख, ग) ।
९ सयणुवण्णाओ (क, ग), सयणुवण्णातो (ख, घ) ।
१०. °कुज्जय (क) ।
११. °सुह (ग, घ) ।
१२ आघाय° (क) ।
१३. तीए (ख, ग, घ) ।
१४ स० पा०—थलय जाव दसद्धवण्ण ।
१५ कुभगस्स (ख) ।
१६ ना० १।८।३० ।
१७ स० पा०—थलय जाव मल्लेण ।
१८. पू०—ना० १।८।३० ।
१९ स० पा०—पसत्थदोहला जाव विहरइ ।

३४ तए ण सा पभावई देवी नवण्हं मासाण [वहुपडिपुण्णाणं ?] अद्धट्ठमाण य राइदियाण [वीइक्कंताणं ?] जे से हेमंताण पढमे मासे दोच्चे पक्खे मग्गसिर-सुद्धे, तस्स णं एक्कारसीए पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि अस्सिणीनक्खत्तेण [जोगमुवागएण ?] उच्चट्ठाणगएसु गहेसु जाव[1] पमुइय-पक्कीलिएसु जणवएसु आरोयारोय[2] एगूणवीसइम तित्थयर पयाया ।।

३५. तेण कालेण तेणं समएणं अहेलोगवत्थव्वाओ अट्ठ दिसाकुमारीमहयरियाओ जहा जंबुद्दीवपण्णत्तीए[3] जम्मणुस्सव[4], नवर—मिहिलाए कुभस्स पभावईए अभिलाओ सजोएयव्वो जाव नदीसरवरदीवे महिमा ।।

३६. तया ण कुभए राया वहूहिं भवणवइ[5]-•वाणमतर-जोइस-वेमाणिएहिं देवेहिं तित्थयर-जम्मणाभिसेयमहिमाए कयाए समाणीए पच्चूसकालसमयंसि नगर-गुत्तिए सद्दावेइ° जायकम्मं जाव[6] नामकरणं—जम्हा[7] ण अम्ह इमीसे[8] दारियाए माऊए मल्लसयणिज्जसि डोहले विणीए, तं होउ णं [अम्ह दारिया ?] नामेण मल्ली[9] ।।

३७ [10]•तए ण सा मल्ली पचधाईपरिक्खित्ता जाव[11] सुंहसुहेणं परिवड्ढई° ।।

---

१. ना०—१।८।२८ ।

२. आरोग्गारोग्ग (ग) ।

३. वक्ष° ५ ।

४ जम्मण सव्व (क, ख, ग, घ) । अत्र 'जम्मण सव्व' अस्य पाठस्यार्थो नैव सगतिं गच्छति । वृत्तिकृता —'जन्मवक्तव्यता सर्वा वाच्या' इति विवृतम्, किन्तु नात्र विवरणानुसारी पाठोऽस्ति । अत्र 'जम्मणुस्सव' इति पाठ स्वाभाविक स्यात् । जवुद्वीपप्रज्ञप्त्यामपि 'जम्मणमहिमं करेंति' इति पाठो लभ्यते । असौ 'जम्मणुस्सव' इति पाठस्य पुष्टि करोति । लिपिदोषेण पाठविपर्ययो जात. इति कल्पना नात्रास्वाभाविकी ।

५ स० पा०—भवणवइ° तित्थयर° ।

६ कप्पो° महावीर जन्म प्रकरण ।

७. जहा (ख, घ) ।

८ इमीए (क, ख, ग, घ); अत्र षष्ठ्यन्त पदमस्ति तेन 'इमीसे' इति पद युज्यते ।

९ मल्ली २ (क) ।

१०. सं० पा०—जहा महव्वले जाव परिवड्ढिया । अत्र पूर्णपाठावलोकनार्थं महावलस्य सकेत: कृतोऽस्ति । तस्य वर्णनं भगवत्या (११।११) विद्यते । तत्राप्यादर्शेषु 'जहा दढपइण्णे' इति समर्पणमस्ति, तेनास्माभिरसौ पाठ: दृढप्रतिज्ञप्रकरणादेव पूरित: ।

अतोऽग्रे आदर्शेषु निम्नलिखित गाथाद्वयं प्राप्यते, किन्तु एतत् प्रक्षिप्तमस्ति । वृत्तिकारेणापि सूचितमिद, यथा—'सा वड्ढई भगवई' इत्यादि गाथाद्वय आवश्यकनिर्युक्तिसवधिऋषभमहावीरवर्णकरूप वहुविशेषणसाधर्म्यादिहाधीतम्, न पुनर्गाथाद्वयोक्तानि विशेषणानि सर्वाणि मल्लिजिनस्य घटन्ते । तेनास्माभि. नैतत् मूलपाठे स्वीकृतम् । तच्च गाथाद्वयमिदम्—

सा वड्ढई भगवई, दियलोयचुया अणोवमसिरीया ।
दासीदासपरिवुडा, परिकिण्णा पीढमद्देहिं ।।१।।

३८ तए णं सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना उम्मुक्कबालभावा[1] •विण्णय-परिणयमेत्ता जोव्वणगमणुपत्ता° रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य अईव-अईव उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था ॥

३९. तए णं सा मल्ली देसूणवाससयजाया ते 'छप्पि य रायाणो'[2] विउलेण ओहिणा आभोएमाणी-आभोएमाणी विहरइ, त जहा—पडिबुद्धिं[3] •इक्खागरायं, चदच्छाय अगराय, सखं कासिरायं, रुप्पि कुणालाहिवइं, अदीणसत्तु कुरुराय° जियसत्तु पचालाहिवइ ॥

मल्लिस्स मोहणघर-निम्माण-पदं

४० तए ण सा मल्ली कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—तुब्भे ण देवाणुप्पिया ! असोगवणियाए एगं मह मोहणघर करेह—अणेगखभसय-सण्णिविट्ठं[4]। तस्स ण मोहणघरस्स वहुमज्झदेसभाए छ गब्भघरए करेह। तेसि णं गब्भघरगाणं वहुमज्झदेसभाए जालघरय करेह। तस्स ण जालघरयस्स वहुमज्झदेसभाए मणिपेढिय[5] करेह[6]। •एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह। तेवि तहेव° पच्चप्पिणति ॥

असियसिरया सुनयणा, विवोट्ठी धवलदतपतीया।
वरकमलकोमलगी, फुल्लुप्पलगधनीसासा ॥२॥
वृत्तिकारेण स्थाने-स्थाने अनयोः पाठभेदा उल्लिखिता।

आवश्यकनिर्युक्तौ भगवतो ऋषभस्य वर्णने इदं गाथाद्वयमित्यमस्ति—

अह वड्ढइ सो भयव, दियलोगचुतो य अणुवमसिरीओ।
देवगणसपरिवुडो, नदाए सुमगला-सहितो ॥१८७॥
असियसिरतो सुनयणो, विवोट्ठो धवलदतपतीओ।
वरपउमगब्भगोरो, फुल्लुप्पलगधनीसासो ॥१८८॥

भगवतो महावीरस्य वर्णने तद् गाथाद्वयमित्यमस्ति—

अह वड्ढइ सो भयव, दिवलोगचुओ अणुवमसिरीओ।
दासीदासपरिवुडो, परिकिण्णो पीढमद्देहिं ॥६९॥
असियसिरओ सुनयणो, विवोट्ठो धवलदतपतीओ।
वरपउमगब्भगोरो, फुल्लुप्पलगधनीसासो ॥७०॥

११. राय० सू० ८०४। ४. पूर्ती—ना० १।१।९६।
१. स० पा०—उम्मुक्कवालभावा जाव रूवेण। ५. °पीढियं (ख, घ), °पीढयं (ग)।
२ छप्पिया° (क), छप्पि° (ख, घ)। ६. स० पा०—करेह जाव पच्चप्पिणति।
३ स० पा०—पडिवुद्धि जाव जियसत्तु।

४१ तए णं सा मल्ली मणिपेढियाए उवरिं अप्पणो सरिसियं सरित्तयं सरिव्वयं सरिस-लावण्ण-रूव-जोव्वण-गुणोववेयं कणगामइं[1] मत्थयच्छिड्डं पउमुप्पल[2]-पिहाणं पडिमं करेइ, करेत्ता जं विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं आहारेइ, तओ मणुण्णाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ कल्लाकल्लिं एगमेगं पिंडं गहाय तीसे कणगामईए मत्थयछिड्डाए[3] •पउमुप्पल-पिहाणाए° पडिमाए मत्थयंसि पक्खिवमाणी-पक्खिवमाणी विहरइ ॥

४२. तए णं तीसे कणगामईए मत्थयछिड्डाए[4] •पउमुप्पल-पिहाणाए° पडिमाए एगमेगंसि पिंडे पक्खिप्पमाणे-पक्खिप्पमाणे तओ गंधे पाउब्भवेइ, से जहानामए —अहिमडे इ वा[6] •गोमडे इ वा सुणहमडे इ वा मज्जारमडे इ वा मणुस्समडे इ वा महिसमडे इ वा मूसगमडे इ वा आसमडे इ वा हत्थिमडे इ वा सीहमडे इ वा वग्घमडे इ वा विगमडे इ वा दीविगमडे इ वा। मय-कुहिय-विणट्ठ-दुरभिवा-वण्ण-दुब्भिगंधे किमिजालाउलसंसत्ते असुइ-विलीण-विगय-बीभत्सदरिसणिज्जे भवेयारूवे सिया ?

नो इणट्ठे समट्ठे। एत्तो अणिट्ठतराए चेव अकंततराए चेव अप्पियतराए चेव अमणुण्णतराए चेव° अमणामतराए चेव ॥

पडिबुद्धिराय-पदं

४३. तेणं कालेणं तेणं समएणं कोसला नामं जणवए। तत्थ णं सागेए नामं नयरे।

४४ तस्स णं उत्तरपुरत्थिमे[7] दिसीभाए, एत्थ णं महेगे नागघरए होत्था—दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सण्णिहिय-पाडिहेरे ॥

४५ तत्थ णं सागेए नयरे पडिबुद्धी नामं इक्खागराया परिवसइ। पउमावई देवी। सुबुद्धी अमच्चे साम-दंड[8]-•भेय-उवप्पयाण-नीति-सुपउत्त-नय-विहण्णू[9] विहरई °॥

४६. तए णं पउमावईए देवीए अण्णया कयाइ नागजण्णए यावि होत्था ॥

४७. तए णं सा पउमावई देवी नागजण्णमुवट्ठियं जाणित्ता जेणेव पडिबुद्धी[10] •राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए

---

१. कणगामय (ग)।
२ पउमप्पल (ख, ग, घ)।
३. स० पा०—मत्थयछिड्डाए जाव पडिमाए।
४. स० पा—कणगामईए जाव मत्थयछिड्डाए। अत्र जाव शब्दस्य प्रयोगोऽशुद्धोस्ति। असौ उपरितनसूत्रवत् 'मत्थयछिड्डाए जाव पडिमाए' एव युज्यते।
५. गंधिए (क); गंधि (ग, घ)।
६. सं० पा०—अहिमडे इ वा जाव अणिट्ठतराए अमणामतराए।
७. उत्तरपुरत्थिमे णं (ख, ग)।
८. स० पा०—साम दंड°। असौ अपूर्ण. पाठः 'जाव' आदिपूर्तिसंकेतरहितोस्ति।
९. पू०—ना० १।१।१६।
१०. स० पा०—पडिबुद्धी° करयल°।

अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता° एवं वयासी—एवं खलु सामी ! मम कल्लं नागजण्णए भविस्सइ। तं इच्छामि णं सामी ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी नागजण्णयं गमित्तए । तुब्भे वि णं सामी ! मम नागजण्णयंसि समोसरह ।।

४८. तए णं पडिबुद्धी पउमावईए एयमट्ठं पडिसुणेइ ।।

४९. तए णं पउमावई पडिबुद्धिणा रण्णा अब्भणुण्णाया समाणी हट्ठतुट्ठा कोडुंबिय-पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! मम कल्लं नागजण्णं भविस्सइ, तं तुब्भे मालागारे सद्दावेह, सद्दावेत्ता एवं वदाह—एवं खलु पउमावईए देवीए कल्लं नागजण्णए भविस्सइ, तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! जल-थलय[1]-°भासरप्पभूयं° दसद्धवण्णं मल्लं नागघरयंसि साहरह, एगं च णं महं सिरिदामगंडं उवणेह ।

तए णं जल-थलय-[2]°भासरप्पभूएणं° दसद्धवण्णेणं मल्लेणं नाणाविह-भत्ति-सुविरइयं हंस-मिय-मयूर-कोंच-सारस-चक्कवाय[3]-मयणसाल-कोइल-कुलोववेयं ईहामिय[4]-°उसभ-तुरय-नर-मगर-विहग-वालग-किंनर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलय°-भत्तिचित्तं महग्घं महरिहं विउलं पुप्फमंडवं विरएह । तस्स णं बहुमज्झदेसभाए एगं महं सिरिदामगंडं जाव[5] गंधद्धणिं मुयंतं उल्लोयंसि ओलएह, पउमावइं देविं पडिवालेमाणा चिट्ठह ।।

५०. तए णं ते कोडुंबिया जाव[6] पउमावतिं देविं पडिवालेमाणा चिट्ठंति ।।

५१. तए णं सा पउमावई देवी कल्लं[7] °पाउप्पभायाए रयणीए जाव[8] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते° कोडुंबिए पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सागेयं नयरं सब्भिंतरबाहिरियं आसिय-सम्मज्जिओवलित्तं जाव[9] गंधवट्टिभूयं करेह, कारवेह य, एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । ते वि तहेव पच्चप्पिणंति ।।

५२. तए णं सा पउमावई देवी दोच्चंपि कोडुंबिय[10]-°पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! लहुकरणजुत्तं जाव[11] धम्मियं जाणप्पवरं उवट्ठवेह । ते वि तहेव° उवट्ठवेंति ।।

---

१. स० पा०—थलय° ।
२. स० पा०—थलय° ।
३ चक्काय (क) ।
४ स० पा०—ईहामिय जाव भत्तिचित्त ।
५. ना० १।८।३० ।
६. ना० १।८।४६ ।
७. स० पा०—कल्लं° ।
८. ना० १।१।२४ ।
९. ना० १।१।३३ ।
१०. स० पा०—कोडुंबिय जाव खिप्पामेव लहुकरणजुत्तं जाव जुत्तामेव उवट्ठवेंति ।
११. उवा० १।४७ ।

५३. तए ण सा पउमावई देवी अतो अतेउरसि ण्हाया जाव[1] धम्मियं जाणं दुरूढा ॥

५४. तए ण सा पउमावई देवी नियग-परियाल-संपरिवुडा सागेय नयरं मज्झमज्झेण निज्जाइ[2], जेणेव पोक्खरणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोक्खरणिं ओगाहति, ओगाहित्ता जलमज्जण करेइ जाव[3] परमसुइभूया उल्लपडसाडया जाइं तत्थ उप्पलाइ जाव[4] ताइ[5] गेण्हइ, जेणेव नागघरए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

५५. तए ण पउमावईए देवीए दासचेडीओ वहूओ पुप्फपडलग-हत्थगयाओ धूवकडच्छुय-हत्थगयाओ पिट्ठओ समणुगच्छति ॥

५६. तए ण पउमावई देवी सव्विड्ढीए जेणेव नागघरए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता नागघरं अणुप्पविसइ, लोमहत्थग परामुसइ जाव[6] धूव डहइ, पडिवुद्धि पडिवालेमाणी-पडिवालेमाणी चिट्ठइ ॥

५७ तए ण से पडिवुद्धी ण्हाए[7] हत्थिखधवरगए सकोरेंट[8]•मल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण॰ सेयवरचामराहि वीइज्जमाणे हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धि सपरिवुडे महया भड-चडगर-रह-पहकर-विदपरिक्खित्ते सागेय नगर मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव नागघरए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिखधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता आलोए पणाम करेइ, करेत्ता पुप्फमडव अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता पासइ त एग मह सिरिदामगड ॥

५८. तए ण पडिवुद्धी त सिरिदामगड सुचिर[9] काल निरिक्खइ। तसि सिरिदामगडसि जायविम्हए सुबुद्धि अमच्च एवं वयासी—तुमं देवाणुप्पिया! मम दोच्चेण वहूणि गामागर जाव[10] सण्णिवेसाइं आहिंडसि, वहूण य राईसर जाव[11] सत्थवाहपभिईणं गिहाइ अणुप्पविससि, त अत्थि ण तुमे कहिंचि एरिसए सिरिदामगडे दिट्ठपुव्वे, जारिसए ण इमे पउमावईए देवीए सिरिदामगडे ?

५९. तए ण सुवुद्धी पडिबुद्धि रायं एव वयासी—एव खलु सामी! अह अण्णया कयाइ[12] तुब्भ दोच्चेण मिहिलं रायहाणि गए। तत्थ ण मए कुभयस्स रण्णो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए सवच्छर-पडिलेहणगसि दिव्वे

---

१. ना० १।१।६५।
२ नियाइ (क, ख), निग्गच्छइ (घ)।
३. ४. ना० १।२।१४।
५. तत्य (क, ख, ग, घ) एतत् अशुद्ध प्रतिभाति।
६. ना० १।२ १४।
७. पू०—ना० १।१।६६।
८. स० पा०—सकोरेंट जाव सेयवर०।
९. सुइरं (क, ख, ग)।
१०. ना० १।१।११८।
११. ना० १।५।६।
१२. कयाइ (ग)।

सिरिदामगडे दिट्ठपुव्वे। तस्स णं सिरिदामगडस्स इमे पउमावईए देवीए सिरिदामगडे सयसहस्सइमपि कलं न अग्घइ ॥

६० तए ण पडिबुद्धी सुबुद्धि अमच्च एव वयासी—केरिसिया ण देवाणुप्पिया! मल्ली विदेहरायवरकन्ना, जस्स[1] णं सवच्छर-पडिलेहणयसि सिरिदामगडस्स पउमावईए देवीए सिरिदामगडे सयसहस्सइमपि कल न अग्घइ ?

६१ तए ण सुबुद्धी पडिबुद्धि इक्खागराय एव वयासी—एव खलु सामी! मल्ली विदेहरायवरकन्ना सुपइट्ठियकुम्मुण्णय-चारुचरणा जाव[2] पडिरूवा ॥

६२ तए ण पडिबुद्धी सुबुद्धिस्स अमच्चस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म सिरिदाम-गड-जणियहासे[3] दूय सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—गच्छाहि ण तुम देवाणुप्पिया! मिहिल रायहाणिं। तत्थ ण कुभगस्स रण्णो धूय पभावईए अत्तय[4] मल्लि विदेहरायवरकन्न[5] मम भारियत्ताए वरेहि, जइ वि य ण सा सय रज्जसुका ॥

६३ तए ण से दूए पडिबुद्धिणा रण्णा एव वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता जेणेव सए गिहे जेणेव चाउग्घटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घट आसरह पडिकप्पावेइ, पडिकप्पावेत्ता दुरूढे हय-गय[6]-•रह-पवर-जोहकलियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धि सपरिवुडे॰ महया भड-चडगरेण साएयाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव विदेहजणवए[7] जेणेव मिहिला रायहाणी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

चंदच्छाय-राय-पदं

६४ तेणं कालेण तेण समएण अगनामं[8] जणवए होत्था। तत्थ ण चपा नाम नयरी होत्था। तत्थ ण चपाए नयरीए चदच्छाए अगराया होत्था। तत्थ ण चपाए नयरीए अरहण्णगपामोक्खा बहवे सजत्ता-नावावाणियगा परिवसति—अड्ढा जाव[9] बहुजणस्स अपरिभूया ॥

६५ तए ण से अरहण्णगे समणोवासए यावि होत्था—अहिगयजीवाजीवे वण्णओ[10] ॥

६६ तए ण तेसिं अरहण्णगपामोक्खाणं सजत्ता-नावावाणियगाण अण्णया कयाइ एगयओ सहियाण इमेयारूवे मिहोकहा समुल्लावे[11] समुप्पज्जित्था—सेय खलु

१. अत्र पुस्त्वनिर्देश मल्ल्या. तीर्थंकरत्वेन कृत स्यात् ?
२. वण्णओ॰ (क, ख, ग, घ), जीवाजीवा-भिगमपडिवत्ती ३।
३ ॰हरिसे (क, ख)।
४. अत्तिय (क, ख, ग, घ)।
५ ॰कन्नय (क, ख)।
६ स॰ पा॰—गय॰।
७ विदेहा॰ (क, ख)।
८. अगा॰ (क, ख, ग)।
९. ना॰ १।५।७।
१०. ना॰ १।५।४७।
११. सलावे (ख, ग, घ)।

अम्हे गणिमं च धरिमं च मेज्जं च पारिच्छेज्जं च भंडगं गहाय लवणसमुद्दं पोयवहणेणं ओगाहित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता गणिमं च धरिमं च मेज्जं च पारिच्छेज्जं च भंडगं गेण्हंति, गेण्हित्ता सगडी-सागडयं सज्जेति, सज्जेत्ता गणिमस्स धरिमस्स मेज्जस्स पारिच्छेज्जस्स य भंडगस्स सगडी-सागडियं भरेंति, भरेत्ता सोहणंसि तिहि-करण-नक्खत्त-मुहुत्तंसि विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेंति, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं भोयणवेलाए भुंजावेंति[1], °भुंजावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं° आपुच्छंति, आपुच्छित्ता सगडी-सागडियं जोयंति, जोइत्ता चंपाए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति, निग्ग-च्छित्ता जेणेव गंभीरए[2] पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सगडी-सागडियं मोयंति, पोयवहणं सज्जेंति, सज्जेत्ता गणिमस्स[3] °धरिमस्स मेज्जस्स पारिच्छेज्जस्स य° भंडगस्स [पोयवहणं?] भरेंति, तंदुलाण य समियस्स य तेल्लस्स य घयस्स य गुलस्स य गोरसस्स य उदगस्स य भायणाण[4] य ओसहाण य भेसज्जाण य तणस्स य कट्ठस्स य आवरणाण य पहरणाण य अण्णेसिं च बहूणं पोयवहणपाउग्गाणं दव्वाणं पोयवहणं भरेंति। सोहणंसि तिहि-करण-नक्खत्त-मुहुत्तंसि विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेंति, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं भोयणवेलाए भुंजावेंति, भुंजावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं आपुच्छंति, जेणेव पोयट्ठाणे तेणेव उवागच्छंति॥

६७. तए णं तेसिं अरहण्णग[5]°पामोक्खाणं बहूणं संजत्ता-नावा°वाणियगाणं[6] °मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि°-परियणा ताहिं इट्ठाहिं[7] °कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं ओरालाहिं° वग्गूहिं अभिनंदंता य अभिसंथुणमाणा य एवं वयासी—अज्ज! ताय! भाय! माउल! भाइणेज्ज! भगवया समुद्देणं अभिरक्खिज्जमाणा-अभिरक्खिज्जमाणा चिरं जीवह, भद्दं च भे, पुणरवि लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे नियगं घरं हव्वमागए पासामो त्ति कट्टु ताहिं सोमाहिं निद्धाहिं दीहाहिं सप्पिवासाहिं पप्पुयाहिं दिट्ठीहिं निरिक्खमाणा मुहुत्तमेत्तं संचिट्ठंति। तओ समाणिएसु पुप्फबलिकम्मेसु, दिन्नेसु सरस-रत्त-चंदण-दद्दर-पंचंगुलितलेसु, अणुक्खित्तंसि धूवंसि, पूइएसु[8] समुद्दवाएसु,

---

१. सं० पा०—भुंजावेंति जाव आपुच्छंति।
२. गंभीर (ग, घ)।
३. सं० पा०—गणिमस्स जाव चउव्विहभंडगस्स।
४. भायणस्स (घ)।
५. सं० पा०—अरहण्णग जाव वाणियगाणं।
६. सं० पा०—वाणियगाणं जाव परियणा।
७. सं० पा०—इट्ठाहिं जाव वग्गूहिं।
८. पूतिएसु (ख); पूईतेसु (ग, घ)।

ससारियासु[1] वलयासु[2], ऊसिएसु सिएसु झयग्गेसु, पड्डुप्पवाइएसु तूरेसु[3] जइएसु[4] सव्वसउणेसु, गहिएसु रायवरसासणेसु महया उक्किट्ठ-सीहनाय[5]-•बोल-कलकल° रवेण पक्खुभियमहासमुद्द-रवभूय पिव मेइणि करेमाणा एगदिसि[6] •एगाभिमुहा अरहण्णगपामोक्खा सजत्ता-नावा° वाणियगा नावाए दुरूढा ।।

६८ तओ पुस्समाणवो वक्कमुदाहु—हं भो ! 'सव्वेसिमेव भे'[7] अत्थसिद्धी, उवट्ठियाइ कल्लाणाइ, पडिहयाइ सव्वपावाइ, 'जुत्तो पूसो,'[8] विजओ मुहुत्तो 'अयं देसकालो'[9] ।।

६९. ताओ पुस्समाणवेण[10] वक्कमुदाहिए[11] हट्ठतुट्ठा 'कण्णधार-कुच्छिधार'[12]-गब्भिज्ज-सजत्ता-नावावाणियगा वावारिंसु, त नाव पुण्णुच्छग[13] पुण्णमुहिं बधणेहिंतो मुचति ।।

७०. तए ण सा नावा विमुक्कबधणा पवणबल-समाहया ऊसियसिया विततपक्खा इव गरुलजुवई गगासलिल-तिक्ख-सोयवेगेहिं 'सखुब्भमाणी-सखुब्भमाणी'[14] उम्मी-तरग-मालासहस्साइ समइच्छमाणी-समइच्छमाणी कइवएहिं अहोरत्तेहिं लवणसमुद्द अणेगाइ जोयणसयाइ ओगाढा ।।

७१. तए णं तेसिं अरहण्णगपामोक्खाण सजत्ता-नावावाणियगाण लवणसमुद्द अणेगाइ जोयणसयाइ ओगाढाण समाणाण बहूइ उप्पाइयसयाइ पाउब्भूयाइ, त जहा—अकाले गज्जिए अकाले विज्जुए अकाले थणियसद्दे अभिक्खण-अभिक्खण आगासे देवयाओ नच्चति ।।

७२. [15]तए ण ते अरहण्णगवज्जा सजत्ता-नावावाणियगा एग[16] च ण मह तालपिसाय

---

१. सचारियासु (क) ।
२ वलयवाहासु (क), वलयवाहासु (ग, घ) ।
३ भूतेसु (ग) ।
४. जतिएसु (ख), जइतेसु (ग, घ) ।
५ स० पा०—सीहनाय जाव रवेण ।
६ स० पा०—एगदिसिं जाव वाणियगा ।
७. सव्वेसामवि (क, ख, ग, घ) ।
८ इहावसरे इति गम्यते (वृ) ।
९ एप प्रस्तावो गमनस्येति गम्यते ।
१० °माणएण (ख, ग, घ) ।
११. °मुदाहरिए (क, घ) ।
१२. कुच्छिधारकण्णधार (ख, ग, घ) ।
१३. पुण्णत्थग (ख) ।
१४ सखुज्झमाणी २ (क, ख, ग, घ) ।
१५. अत्र द्वयोर्वाचनयो समिश्रण जातमस्ति । वृत्तिकारस्य सम्मुखे असौ मिश्रितपाठ एवादर्शेषु लिखित आसीत्, तेन वृत्तिकृता द्वयो. सगतिं स्थापयितु प्रयत्न कृत, यथा—तत्रार्हन्नकवर्जा यत् कुर्वन्ति तत् दर्शयितु-मुक्तमेव पिशाचस्वरूप सविशेष तेषा तद्दर्शन चानुवदन्नाह—तए णमित्यादि. ततस्ते अर्हन्नकवर्जा सायात्रिका पिशाचरूप वक्ष्यमाणविशेषण पश्यन्ति (वृ) । वृत्तिकारेण वैकल्पिकरूपेण 'तएण ते अरहण्णग वज्जा' इति सूत्राश वाचनान्तरत्वेन स्वीकृतम्, यथा—अथवा 'तएण ते 'अरहण्णगवज्जा'

पासति—तालजघ दिवंगयाहिं वाहाहिं फुट्टसिर भमर-निगर-वरमासरासि-महिसकालग भरिय-मेहवण्ण सुप्पणह फाल-सरिस-जीह लवोट्ठं धवलवट्ट-असिलिट्ठ-तिक्ख-थिर-पीण-कुडिल-दाढोवगूढवयण विकोसिय-धारासिजुयल-समसरिस-तणुय - चचल - गलतरसलोल - चवल-फुरुफुरेत - निल्लालियगग्जीह अवयत्थिय[1]-महल्ल-विगय-बीभच्छ-लालपगलत-रत्ततालुय हिंगुलय-सगब्भ-कदरविल व अजणगिरिस्स अग्गिज्जालुग्गिलतवयण[2] आऊसिय[3]-अक्खचम्म-उइट्ठगडदेस[4] चीण-चिमिढ-वक-भग्गनास रोसागय-धमधमेत[5]-मारुय-निट्ठुर-खर-फरुसभुसिर ओभुग्ग-नासियपुड घाडुब्भड[6]-रइय-भीसणमुह उद्धमुहकण्ण-सक्कुलिय-महतविगय-लोम-सखालग[7]-लंबत-चलियकण्ण पिंगल-दिप्पतलोयण 'भिउडि-तडिनिडाल'[8] नरसिरमाल-परिणद्धचिंध विचित्तगोणस-सुवद्धपरिकरं अवहोलत-फुप्फुयायत[9]-सप्प - विच्छुय-गोधुदुर[10]-नउल- सरड-विरइय-विचित्त-वेयच्छमालियाग भोगकूर-कण्हसप्प-धमधमेत-लबतकण्णपूर मज्जार-सियाल-लइयखध दित्त-घुघुयत[11]-घूय-कय-भुभरसिर[12], घटारवेण भीम-भयकर कायर-

---

इत्यादि गमान्तर 'आगासे देवयाओ नच्चति' इतोनन्तर द्रष्टव्यम्, अतएव वाचनान्तरे नेदमुपलभ्यते चैवम् 'अभिमुह आवयमाण पासति' (वृ)।

प्रथमवाचनापाठे कोपि कर्ता नास्ति अतोस्माभि द्वितीयवाचनापाठो मूले स्वीकृत। प्रथमवाचना पाठ इत्थमस्ति—'एग च ण मह पिसायरूव पासति—तालजघ दिवगयाहिं वाहाहिं मसि-मूसग-महिस-कालग भरिय-मेहवण्ण लवोट्ठ निग्गयग्गदत निल्लालिय-जमल-जुयल-जीह आऊसिय-[आघूसिय (ख); आघूसिय, आपूमिय (वृपा)।] वयण-गडदेस चीण-चिमिढ-[चिविड (क); चमड (घ)।] नासिय विगय-भुग्ग-[भुग्ग-भग्ग (क, वृपा)।] भुमय [भमय (ख)।] खज्जोयग-दित्त-चक्खुराग [वाचनान्तरे - विगय - भग्ग भुमय - पहसिय - पयलिय - पडिय-फुल्लिग-खज्जोय-चक्खुराग।] उत्तासणग विसालवच्छं विसालकुच्छि पलवकुच्छि पहसिय-पयलिय-पयडियगत्त [पडियगत्त (क, ख, ग)।] पणच्चमाण अप्फोडत अभिवगत अभिगज्जत वहुसो-वहुसो य अट्टट्टहासे विणिम्मुयत नीलुप्पल-गवल-गुलिय-[गुडिय (ख)।] अयसिकुसुमप्पगास खुरधार असिं गहाय अभिमुहमावयमाण पासति।

१६. एव (क)।

१. अवत्थिय (वृपा)।

२. अग्गिजालो° (क), अग्गिजालु° (ख)।

३ आवूसिय० (वृपा)।

४ उट्ठ° (ख, ग)।

५ धम्मधम्मेत (ख)।

६. घोडुब्भड (ख)।

७. सखालग्ग (वृपा)।

८. भिउडितनिडाल (वृपा)।

९. पुप्फया° (क, ख, ग, घ)।

१० गोधुदर (ग, घ)।

११. घुघूयत (ख)।

१२. भुभल° (क, ग); सुभल° (ख)। एकस्मिन् वृत्त्यादर्शे 'वुभल' इति लभ्यते। कुतल (क्व)।

जणहिययफोडण दित्तं अट्टट्टहासं विणिम्मुयत, वसा-रुहिर-पूय-मस-मल-मलिण-पोच्चडतणु उत्तासणय विसालवच्छ पेच्छता भिन्ननख-मुह-नयण-कण्ण वरवग्घ-चित्त-कत्ती-णियसण सरस-रुहिर-गयचम्म-वियय-ऊसविय-वाहुजुयल ताहि य खर-फरुस-असिणिद्ध-दित्त-अणिट्ठ-असुभ-अप्पिय[1]-अकत-वग्गूहि य तज्जयतं[2]—त तालपिसायरूव एज्जमाण पासति, पासित्ता भीया[3] •तत्था तसिया उव्विग्गा° सजायभया अण्णमण्णस्स काय समतुरगेमाणा-समतुरगेमाणा वहूण इदाण य खदाण य रुद्दाण य सिवाण य वेसमणाण य नागाण य भूयाण य जक्खाण य अज्ज-कोट्टकिरियाण[4] य वहूणि उवाइयसयाणि उवाइमाणा चिट्ठति ॥

७३ तए णं से अरहण्णए समणोवासए त दिव्व पिसायरूव एज्जमाण पासइ, पासित्ता अभीए अतत्थे अचलिए असभते अणाउले अणुव्विग्गे अभिण्णमुहराग-नयणवण्णे अदीण-विमण-माणसे पोयवहणस्स एगदेससि वत्थतेण भूमिं पमज्जइ, पमज्जित्ता ठाण ठाइ, ठाइत्ता, करयल[5]-•परिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अंजलिं कट्टु° एवं वयासि—नमोत्थु ण अरहताण भगवताण जाव[6] सिद्धिगइनामधेज्ज ठाण सपत्ताण। जइ ण ह एत्तो उवसग्गाओ मुचामि तो मे कप्पइ पारित्तए, अह ण एत्तो उवसग्गाओ न मुचामि तो मे तहा पच्चक्खाएयव्वे ति कटटु सागार भत्त पच्चक्खाइ ॥

७४ तए ण से पिसायरूवे जेणेव अरहण्णगे समणोवासए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहण्णग एव वयासी—हभो अरहण्णगा ! अपत्थियपत्थया[7] ! •दुरत-पत-लक्खणा ! हीणपुण्ण-चाउद्दसिया ! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति°-परिवज्जिया ! नो खलु कप्पइ तव सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासाइ चालित्तए वा[8] खोभित्तए वा खडित्तए वा भजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तए वा। त जइ ण तुम सील-व्वय[9]-•गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासाइ न चालेसि न खोभेसि न खडेसि व भजेसि न उज्झसि° न परिच्चयसि, तो ते अह एय पोयवहण दोहि अगुलियाहिं[10] गेण्हामि, गेण्हित्ता सत्तट्ठतलप्पमाणमेत्ताइ उड्ढ वेहास उव्विहामि अतोजलसि

---

१. अप्पियअमणुण्ण (क, घ)।
२. तज्जयत पासति (क, ख, ग, घ)।
३. स० पा०—भीया सजायभया।
४ कोटिकिरियाण (क)।
५ स० पा०—करयल°।
६. ओ० सू० २१।
७. अपत्थियपत्थिया (ग, घ, वृपा), स० पा—अपत्थियपत्थया जाव परिवज्जिया।
८. वा एव (क, ख, ग, घ)।
९ स० पा०—सीलव्वय जाव न परिच्चयसि।
१०. अगुलीहिं (ग)।

अवक्कमामि[1] उत्तरवेउव्विय रूव विउव्वामि, विउव्वित्ता ताए उक्किट्ठाए[2] देवगईए[3] जेणेव लवणसमुद्दे जेणेव देवाणुप्पिए तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता देवाणुपियस्स उवसग्ग करेमि, नो चेव ण देवाणुप्पिए भीए[4] •तत्थे चलिए सभते आउले उव्विग्गे भिण्णमुहराग-नयणवण्णे दीणविमणमाणसे जाए°। तं ज णं सक्के देविदे देवराया एव वयइ, सच्चे ण एसमट्ठे। त दिट्ठे ण देवाणुप्पियस्स इड्ढी[5] •जुई जसो बल वीरिय पुरिसकार°-परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए। त खामेमि ण देवाणुप्पिया। खमेसु ण देवाणुप्पिया! खतुमरिहसि ण देवाणुप्पिया! नाइ भुज्जो एवकरणयाए त्ति कट्टु पंजलिउडे पायवडिए एयमट्ठं विणएण भुज्जो-भुज्जो खामेइ, अरहण्णगस्स य दुवे कुडलजुयले दलयइ, दलइत्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसि पडिगए॥

८० तए ण से अरहण्णए निरुवसग्गमिति कट्टु पडिमं पारेइ॥

८१. तए ण ते अरहण्णगपामोक्खा[6] •संजत्ता-नावा°वाणियगा दक्खिणाणुकूलेण वाएण जेणेव गभीरए पोयट्ठाणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोय लंबेंति, लबेत्ता सगडि[7]-सागड सज्जेति, तं गणिम धरिम मेज्ज परिच्छेज्जं च सगडि-सागड सकामेति, सकामेत्ता सगडि-सागडं जोविंति[8] जोवित्ता जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता मिहिलाए रायहाणीए बहिया अग्गुज्जाणंसि सगडि-सागड मोएति, मोएत्ता महत्थं महग्घ महरिह विउलं रायारिहं पाहुड दिव्व कुंडलजुयलं च गेण्हति, गेण्हित्ता [मिहिलाए रायहाणीए[9] ?] अणुप्पविसति, अणुप्पविसित्ता जेणेव कुभए राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल[10]•परिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु° महत्थ[11] •महग्घ महरिह विउल रायारिह पाहुड° दिव्व कुडलजुयल च उवणेति॥

८२ तए ण कुभए राया तेसि संजत्ता[12]-°नावावाणियगाणं तं महत्थ महग्घ महरिहं विउलं रायारिह पाहुड दिव्व कुडलजुयल च° पडिच्छइ, पडिच्छित्ता मल्लि विदेहवररायकन्न सद्दावेइ, सद्दावेत्ता त दिव्व कुडलजुयलं मल्लीए विदेहरायकन्नगाए पिणद्धेइ, पिणद्धेत्ता पडिविसज्जेइ॥

---

१. २, ३ पू०—राय सू० १०।

४. म० पा०—भीया वा°।

५. स० पा०—इड्ढी जाव परकम्मे।

६ म० पा०—पामोक्खा जाव वाणियगा।

७. सगड (ग, घ)।

८ जोएन्ति (क)।

९ 'क' प्रतौ अमी पाठ 'महत्थ' अत प्राग् लिखितो लभ्यते, किन्तु वस्तुत कोष्ठक-स्थाने युज्यते। अन्यादर्शेषु नासौ लब्धोस्ति।

१०. स० पा०—करयल°।

११. स० पा०—महत्थं°।

१२. सं० पा०—सजत्तगाणं जाव पडिच्छइ।

८३. तए णं से कुंभए राया ते अरहण्णगपामोक्खे[1] •संजत्ता-नावा॰वाणियगे विपुलेणं वत्थ-गंध[2]-•मल्लालंकारेण य सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता॰ उस्सुक्कं वियरइ, वियरित्ता रायमग्गमोगाढे य आवासे वियरइ, वियरित्ता पडिविसज्जेइ ॥

८४. तए णं अरहण्णग[3]•पामोक्खा संजत्ता-नावावाणियगा॰ जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता भंडववहरणं[4] करेंति, पडिभंडे गेण्हंति, गेण्हित्ता सगडी-सागडं भरेंति, भरेत्ता जेणेव गंभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोयवहणं सज्जेंति, सज्जेत्ता भंडं संकामेंति, संकामेत्ता दक्खिणाणुकूलेणं वाएणं जेणेव चंपाए पोयट्ठाणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोयं लवेंति, लवेत्ता सगडी-सागडं सज्जेंति, सज्जेत्ता तं गणिमं धरिमं मेज्जं परिच्छेज्जं च सगडी-सागडं संकामेंति, संकामेत्ता[5] •सगडि-सागडं जोविंति, जोवित्ता जेणेव चंपानयरी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता चंपाए रायहाणीए बहिया अग्गुज्जाणंसि सगडि-सागडं मोएंति, मोएत्ता महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं॰ पाहुडं दिव्वं च कुंडलजुयलं गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव चंदच्छाए अंगराया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तं महत्थं[6] •महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं पाहुडं दिव्वं च कुंडलजुयलं॰ उवणेंति ॥

८५. तए णं चंदच्छाए अंगराया तं महत्थं[7] पाहुडं दिव्वं च कुंडलजुयलं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता ते अरहण्णगपामोक्खे एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया! बहूणि गामागर जाव[8] सण्णिवेसाइं आहिंडह, लवणसमुद्दं च अभिक्खणं-अभिक्खणं पोयवहणेहिं ओगाहेह, तं अत्थियाइं भे केइ कहिंचि अच्छेरए दिट्ठपुव्वे ?

८६. तए णं ते अरहण्णगपामोक्खा चंदच्छायं अंगरायं एवं वयासी—एवं खलु सामी! अम्हे इहेव चंपाए नयरीए अरहण्णगपामोक्खा बहवे संजत्तगा-नावा-वाणियगा परिवसामो। तए णं अम्हे अण्णया कयाइ गणिमं च धरिमं च मेज्जं च परिच्छेज्जं च गेण्हामो तहेव अहीण-अइरित्तं जाव[9] कुंभगस्स रण्णो उवणेमो। तए णं से कुंभए मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए तं दिव्वं कुंडलजुयलं पिणद्धेइ[10], पिणद्धेत्ता पडिविसज्जेइ। तं एस णं सामी! अम्हेहिं कुंभगरायभवणंसि

---

१. सं० पा०—॰पामोक्खे जाव वाणियगे।
२. सं० पा०—गंध जाव उस्सुक्कं।
३. सं० पा०—अरहन्नग संजत्तगा।
४. भंडग॰ (ग)।
५. सं० पा०—संकामेत्ता जाव महत्थं पाहुडं।
६. सं० पा०—महत्थं जाव उवणेंति।
७. पू०—ना० १।८।८१।
८. ना० १।१।११८।
९. ना० १।८।६४-८२।
१०. पिणिद्धइ (ख); पिणिवेइ (क)।

निव्वोलेमि[1], जेण[2] तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे असमाहिपत्ते अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

७५ तए णं से अरहण्णगे समणोवासए तं देवं मणसा चेव एवं वयासी—अहं णं देवाणुप्पिया ! अरहण्णए नामं[3] समणोवासए अहिगयजीवाजीवे। नो खलु अहं सक्के केणइ देवेण वा[4] •दाणवेण वा जक्खेण वा रक्खसेण वा किन्नरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा° निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा, तुमं णं जा[5] सद्धा तं करेहि त्ति कट्टु अभीए जाव[6] अभिन्नमुहराग-नयणवण्णे अदीण-विमण-माणसे निच्चले निप्फंदे[7] तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ ॥

७६ तए णं से दिव्वे पिसायरूवे अरहण्णगं समणोवासगं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी—हंभो अरहण्णगा ! जाव[8] धम्मज्झाणोवगए विहरइ ॥

७७ तए णं से दिव्वे पिसायरूवे अरहण्णगं धम्मज्झाणोवगयं पासइ, पासित्ता बलियतरागं आसुरत्ते तं पोयवहणं दोहिं अंगुलियाहिं गेण्हइ, गेण्हित्ता सत्तट्ठतल[9]-•प्पमाणमेत्ताइं उड्ढं वेहासं उव्विहइ, उव्विहित्ता° अरहण्णगं एवं वयासी—हंभो अरहण्णगा ! अपत्थियपत्थया[10] ! नो खलु कप्पइ तव सील-व्वय[11]-•गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासाइं चालित्तए वा खोभित्तए वा खंडित्तए वा भंजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तए वा। तं जइ णं तुमं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासाइं न चालेसि न खोभेसि न खंडेसि न भंजेसि न उज्झसि न परिच्चयसि, तो ते अहं एयं पोयवहणं अतो जलंसि निव्वोलेमि, जेण तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे असमाहिपत्ते अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

७८ तए णं से अरहण्णगे समणोवासए तं देवं मणसा चेव एवं वयासी—अहं णं देवाणुप्पिया ! अरहण्णए नामं समणोवासए—अहिगयजीवाजीवे नो खलु अहं सक्के केणइ देवेण वा दाणवेण वा जक्खेण वा रक्खसेण वा किन्नरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा, तुमं णं जा सद्धा तं करेहि त्ति कट्टु अभीए जाव[12] अभिन्नमुहराग-नयणवण्णे अदीण-विमण-माणसे निच्चले निप्फंदे

---

१. निच्छोल्लेमि (क)।
२ जाण (क, ग, घ)।
३. × (ग)।
४. सं० पा०—देवेण वा जाव निग्गंथाओ।
५ जाव (ख, ग, घ) अशुद्ध प्रतिभाति।
६. ना० १।८।७३।
७. निप्पंदे (ख)।
८. ना० १।८।७४,७५।
९ सं० पा०—सत्तट्ठतलाइं जाव अरहन्नगं।
१०. पू०—ना० १।८।७४।
११. सं० पा०—सीलव्वय तहेव जाव धम्मज्झाणोवगए।
१२. ना० १।८।७३।

तुसिणीए॰ धम्मज्झाणोवगए विहरइ।

७९. तए णं से पिसायरूवे अरहण्णगं जाहे नो संचाएइ निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा, ताहे संते[1] •तंते परितंते॰ निव्विण्णे तं पोयवहणं सणियं-सणियं उवरिं जलस्स ठवेइ, ठवेत्ता तं दिव्वं पिसायरूवं पडिसाहरेइ, पडिसाहरेत्ता दिव्वं देवरूवं विउव्वइ[2]—अंतलिक्ख-पडिवन्ने सखिंखिणीयाइं दसद्धवण्णाइं वत्थाइं पवरं परिहिए अरहण्णगं समणोवासगं एवं वयासी—हं भो अरहण्णगा! समणोवासया! धन्नेसि णं तुमं देवाणुप्पिया[3]! •पुण्णेसि णं तुमं देवाणुप्पिया! कयत्थेसि णं तुमं देवाणु-प्पिया! कयलक्खणेसि णं तुमं देवाणुप्पिया! सुलद्धे णं तव देवाणुप्पिया! माणुस्सए जम्म॰जीवियफले, जस्स णं तव निग्गंथे पावयणे इमेयारूवा पडिवत्ती लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया।

एवं खलु देवाणुप्पिया! सक्के देविंदे देवराया सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए बहूणं देवाणं मज्झगए महया-महया सद्देणं एवं आइक्खइ, एवं भासेइ, एवं पण्णवेइ, एवं परूवेइ—एवं खलु देवा! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे चंपाए नयरीए अरहण्णए समणोवासए अभिगयजीवाजीवे। नो खलु सक्के[4] केणइ देवेण वा दाणवेण वा जक्खेण वा रक्खसेण वा किन्नरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए[5] •वा खोभित्तए वा॰ विपरिणामित्तए वा। तए णं अहं देवाणुप्पिया! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो नो एयमट्ठं सद्दहामि, पत्तियामि रोएमि। तए णं मम इमेयारूवे अज्झत्थिए[6] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था॰— गच्छामि णं अहं अरहण्णगस्स अंतियं पाउब्भवामि, जाणामि ताव अहं अरहण्णगं—किं पियधम्मे नो पियधम्मे? दढधम्मे नो दढधम्मे? सील-व्वय-गुण[7]-•वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासाइं किं चालेइ नो चालेइ? खोभेइ नो खोभेइ? खंडेइ नो खंडेइ? भंजेइ नो भंजेइ? उज्झइ नो उज्झइ? परिच्चयइ॰ नो परिच्चयइ त्ति कट्टु एवं संपेहेमि, संपेहेत्ता ओहिं पउंजामि, पउंजित्ता देवाणुप्पियं ओहिणा आभोएमि, आभोएत्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं

---

१ स॰ पा॰—संते जाव निव्विण्णे। तहेव संते जाव निव्विण्णे (क, ख, ग, घ)।

२. पू॰—उवा॰ २।४०।

३. स॰ पा॰—देवाणुप्पिया जाव जीवियफले।

४. सक्का (क, ख, ग, घ)।

५. स॰ पा॰—चालित्तए जाव विपरिणामित्तए।

६. स॰ पा॰—अज्झत्थिए॰।

७ स॰ पा॰—गुणे॰ किं चालेइ जाव नो परिच्चयइ।

अवक्कमामि[1] उत्तरवेउव्विय रूवं विउव्वामि, विउव्वित्ता ताए उक्किट्ठाए[2] देवगईए[3] जेणेव लवणसमुद्दे जेणेव देवाणुप्पिए तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता देवाणुप्पियस्स उवसग्ग करेमि, नो चेव ण देवाणुप्पिए भीए[4] •तत्थे चलिए सभते आउले उव्विग्गे भिण्णमुहराग-नयणवण्णे दीणविमणमाणसे जाए°। त ज ण सक्के देविंदे देवराया एव वयइ, सच्चे ण एसमट्ठे। त दिट्ठे ण देवाणुप्पियस्स इड्ढी[5] •जुई जसो वल वीरिय पुरिसकार°-परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए। त खामेमि ण देवाणुप्पिया। खमेमु ण देवाणुप्पिया। खतुमरिहसि ण देवाणुप्पिया। नाइ भुज्जो एवकरणयाए त्ति कट्टु पजलिउडे पायवडिए एयमट्ठ विणएण भुज्जो-भुज्जो खामेइ, अरहण्णगस्स य दुवे कुडलजुयले दलयइ, दलइत्ता जामेव दिसि पाउब्भूए तामेव दिसि पडिगए॥

८० तए ण से अरहण्णए निरुवसग्गमिति कट्टु पडिम पारेइ॥

८१. तए ण ते अरहण्णगपामोक्खा[6] •सजत्ता-नावा°वाणियगा दक्खिणाणुकूलेण वाएण जेणेव गभीरए पोयट्ठाणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पोय लंवेति, लवेत्ता सगडि[7]-सागड सज्जेति, त गणिम धरिम मेज्ज परिच्छेज्ज च सगडि-सागडं सकामेति, सकामेत्ता सगडि-सागडं जोविति[8] जोवित्ता जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता मिहिलाए रायहाणीए वहिया अग्गुज्जाणसि सगडि-सागड मोएति, मोएत्ता महत्थ महग्घ महरिह विउलं रायारिह पाहुडं दिव्व कुडलजुयल च गेण्हति, गेण्हित्ता [मिहिलाए रायहाणीए[9] ?] अणुप्पविसति, अणुप्पविसित्ता जेणेव कुभए राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल[10]•परिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु° महत्थ[11] •महग्घं महरिह विउल रायारिह पाहुड° दिव्व कुडलजुयल च उवणेति॥

८२ तए ण कुभए राया तेसि संजत्ता[12]-•नावावाणियगाण त महत्थ महग्घं महरिह विउल रायारिह पाहुड दिव्व कुडलजुयलं च° पडिच्छइ, पडिच्छित्ता मल्लि विदेहवररायकन्न सद्दावेइ, सद्दावेत्ता त दिव्व कुडलजुयलं मल्लीए विदेहरायकन्नगाए पिणद्धेइ, पिणद्धेत्ता पडिविसज्जेइ॥

---

१. २, ३ पू०—राय सू० १०।
४. स० पा०—भीया वा ··।
५ स० पा०—इड्ढी जाव परकम्मे।
६ स० पा०—पामोक्खा जाव वाणियगा।
७ सगड (ग, घ)।
८ जोएति (क)।
९ 'क' प्रतौ असौ पाठ 'महत्थ' अत प्राग् लिखितो लभ्यते, किन्तु वस्तुत कोष्ठक-स्थाने युज्यते। अन्यादर्शेषु नासौ लब्धोस्ति।
१०. स० पा०—करयल°।
११. स० पा०—महत्थ°।
१२. स० पा०—सजत्तगाणं जाव पडिच्छइ।

८३. तए ण से कुभए राया ते अरहण्णगपामोक्खे[1] •संजत्ता-नावा॰वाणियगे विपुलेणं वत्थ-गध[2]-•मल्लालकारेण य सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता॰ उस्सुक्क वियरइ, वियरित्ता रायमग्गमोगाढे य आवासे वियरइ, वियरित्ता पडिविसज्जेइ ॥

८४. तए ण अरहण्णग[3]•पामोक्खा सजत्ता-नावावाणियगा॰ जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता भडववहरण[4] करेति, पडिभडे गेण्हति, गेण्हित्ता सगडी-सागड भरेति, भरेत्ता जेणेव गभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पोयवहण सज्जेति, सज्जेत्ता भड सकामेंति, सकामेत्ता दक्खिणाणुकूलेण वाएण जेणेव चपाए पोयट्ठाणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पोय लबेंति, लबेत्ता सगडी-सागड सज्जेति, सज्जेत्ता त गणिम धरिम मेज्ज परिच्छेज्जं च सगडी-सागड सकामेंति, सकामेत्ता[5] •सगडि-सागड जोविंति, जोवित्ता जेणेव चपानयरी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता चपाए रायहाणीए वहिया अग्गुज्जाणसि सगडि-सागड मोएति, मोएत्ता महत्थ महग्घ महरिहं विउल रायारिह॰ पाहुड दिव्व च कुडलजुयल गेण्हति, गेण्हित्ता जेणेव चदच्छाए अगराया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता त महत्थ[6] •महग्घ महरिह विउल रायारिह पाहुड दिव्व च कुडलजुयल॰ उवणेति ॥

८५. तए ण चदच्छाए अगराया त महत्थ[7] पाहुड दिव्व च कुडलजुयल पडिच्छइ, पडिच्छित्ता ते अरहण्णगपामोक्खे एव वयासी—तुब्भे ण देवाणुप्पिया! वहूणि गामागर जाव[8] सण्णिवेसाइ आहिंडह, लवणसमुद्द च अभिक्खण-अभिक्खण पोयवहणेंहि ओगाहेह, त अत्थियाइ भे केइ कहिंचि अच्छेरए दिट्ठपुव्वे ?

८६. तए ण ते अरहण्णगपामोक्खा चदच्छाय अगराय एव वयासी—एव खलु सामी! अम्हे इहेव चपाए नयरीए अरहण्णगपामोक्खा बहवे सजत्तगा-नावा-वाणियगा परिवसामो। तए ण अम्हे अण्णया कयाइ गणिम च धरिम च मेज्ज च परिच्छेज्ज च गेण्हामो तहेव अहीण-अइरित्त जाव[9] कुभगस्स रण्णो उवणेमो। तए ण से कुभए मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए त दिव्व कुडलजुयल पिणद्धेइ[10], पिणद्धेत्ता पडिविसज्जेइ। त एस ण सामी! अम्हेहिं कुभगरायभवणसि

---

१. सं॰ पा॰—॰पामोक्खे जाव वाणियगे।
२. स॰ पा॰—गध जाव उस्सुक्क।
३. स॰ पा॰—अरहन्नग सजत्तगा।
४ भंडग॰ (ग)।
५ स॰ पा॰—सकामेत्ता जाव महत्थ पाहुड।
६. स॰ पा॰—महत्थ जाव उवणेंति।
७. पू॰—ना॰ १।८।८१।
८. ना॰ १।१।११८।
९. ना॰ १।८।६४-८२।
१०. पिणिद्धइ (ख), पिणिधेइ (क)।

मल्ली विदेहरायवरकन्ना अच्छेरए दिट्ठे। तं नो खलु अण्णा कावि तारिसिया देवकन्ना वा[1] •असुरकन्ना वा नागकन्ना वा जक्खकन्ना वा गंधव्वकन्ना वा रायकन्ना वा° जारिसिया णं मल्ली विदेहरायवरकन्ना ॥

८७ तए णं चंदच्छाए अरहण्णगपामोक्खे[2] सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता उस्सुक्कं वियरइ, वियरित्ता पडिविसज्जेइ ॥

८८. तए णं चंदच्छाए वाणियग-जणियहासे दूयं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—जाव[3] मल्लिं विदेहरायवरकन्नं मम भारियत्ताए वरेहि, जइ वि य णं सा सयं रज्जसुका[4] ॥

८९. तए णं से दूए चंदच्छाएणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे जाव[5] पहारेत्थ गमणाए ॥

रुप्पि-राय-पदं

९०. तेणं कालेणं तेणं समएणं कुणाला नामं जणवए होत्था। तत्थ णं सावत्थी नामं नयरी होत्था। तत्थ णं रुप्पी कुणालाहिवई नामं राया होत्था। तस्स णं रुप्पिस्स धूया धारिणीए देवीए अत्तया सुबाहू नामं दारिया होत्था—सुकुमाल-पाणिपाया[6] रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था ॥

९१. तीसे णं सुबाहूए दारियाए अण्णया चाउम्मासिय-मज्जणए जाए यावि होत्था ॥

९२. तए णं से रुप्पी कुणालाहिवई सुबाहूए दारियाए चाउम्मासिय-मज्जणयं उवट्ठियं जाणइ, जाणित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! सुबाहूए दारियाए कल्लं चाउम्मासिय-मज्जणए भविस्सइ, तं तुब्भे णं रायमग्गमोगाढंसि चउक्कंसि[7] जल-थलय-दसद्धवण्णं मल्लं साहरह[8] •जाव[9] एगं महं सिरिदामगंडं[10] गंधद्धणिं मुयंतं उल्लोयंसि ओलएह। ते वि तहेव° ओलयंति[11] ॥

९३ तए णं से रुप्पी कुणालाहिवई सुवण्णगार-सेणिं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! रायमग्गमोगाढंसि पुप्फमंडवंसि नाणाविहपंच-वण्णेहिं तंदुलेहिं नगरं आलिहह। तस्स बहुमज्झदेसभाए पट्टयं रएह, एयमाण-त्तियं पच्चप्पिणह। ते वि तहेव पच्चप्पिणंति ॥

---

१. सं० पा०—देवकन्ना वा जाव जारिसिया। देवकन्नगा (क, ख, ग, घ)।
२. पामोक्खा (क, ख, घ)।
३. ना० १।८।६२।
४. °सुक्का (घ)।
५ ना० १।८।६३।
६. पू०—ना० १।१।१७।
७. मंडवंसि (क, ख, ग, घ)।
८. सं० पा०—साहरह जाव ओलयंति।
९. ना० १।८।४८।
१०. पू०—ना० १।८।३०।
११. ओलेंति (क)।

९४. तए ण से रुप्पी कुणालाहिवई हत्थिखंधवरगए चाउरंगिणीए सेणाए महया भड[1]-•चडगर-रह-पहकर-विंदपरिक्खित्ते॰ अंतेउर-परियाल-सपरिवुडे सुबाहुं दारियं पुरओ कट्टु जेणेव रायमग्गे जेणेव पुप्फमंडवे[2] तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पुप्फमंडवं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे ॥

९५ तए ण ताओ अंतेउरियाओ सुबाहुं दारियं पट्टयंसि दुरुहेंति[3], दुरुहेत्ता सेयापीयएहिं[4] कलसेहिं ण्हाणेति, ण्हाणेत्ता सव्वालंकारविभूसियं[5] करेंति, करेत्ता पिउणो पायवंदियं उवणेंति ॥

९६. तए ण सुबाहू दारिया जेणेव रुप्पी राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पायग्गहणं[6] करेइ ॥

९७ तए णं से रुप्पी राया सुबाहुं दारियं अंके निवेसेइ, निवेसित्ता सुबाहूए दारियाए रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य जायविम्हए वरिसधरं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुमं ण देवाणुप्पिया! मम दोच्चेण बहूणि गामागर-नगर[7] •जाव[8] सण्णिवेसाइं आहिंडसि, बहूण य राईसर जाव[9] सत्थवाहपभिईणं॰ गिहाणि अणुप्पविससि, तं अत्थियाइं ते कस्सइ रण्णो वा ईसरस्स वा कहिंचि एयारिसए मज्जणए दिट्ठपुव्वे, जारिसए णं इमीसे सुबाहूए दारियाए मज्जणए?

९८ तए ण से वरिसधरे रुप्पिं रायं करयल[10]-•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—एवं खलु सामी! अहं अण्णया तुब्भं दोच्चेणं मिहिलं गए। तत्थ णं मए कुंभगस्स रण्णो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए विदेहरायवरकन्नगाए मज्जणए दिट्ठे। तस्स णं मज्जणगस्स इमे सुबाहूए दारियाए मज्जणए सयसहस्सइमंपि कलं न अग्घइ ॥

९९ तए ण से रुप्पी राया वरिसधरस्स अंतिय एयमट्ठं सोच्चा निसम्म मज्जणग-जणिय-हासे[11] दूयं सद्दावेइ[12], •सद्दावेत्ता एवं वयासी—जाव[13] मल्लिं विदेहराय-वरकन्नं मम भारियत्ताए वरेहि, जइ वि य णं सा सयं रज्जसुंका ॥

---

१ स० पा०—भड···।
२. °मंडवं (क)।
३ दुरुहंति (ग घ)।
४ सेयावीयएहिं (क)।
५ °भूसियं (क, ख)।
६ पायगहणं (क)।
७ स० पा०—नगर गिहाणि।
८ ना० १।१।११८।
९ ना० १।५।६।
१०. स० पा०—करयल···।
११ अग्घइ सेसं तहेव मज्जणग-जणियहासे (क)।
१२ स० पा०—सद्दावेइ जाव जेणेव।
१३. ना० १।८।६२।

१०० तए णं से दूए रुप्पिणा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे जाव[10] जेणेव मिहिला नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

संख-राय-पद

१०१. तेणं कालेणं तेणं समएणं कासी नामं जणवए होत्था। तत्थ णं वाणारसी नामं नयरी होत्था। तत्थ णं संखे नामं कासीराया होत्था ॥

१०२ तए णं तीसे मल्लीए विदेहवररायकन्नाए[2] अण्णया कयाइं तस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स संधी विसंघडिए यावि होत्था ॥

१०३ तए णं से कुंभए राया सुवण्णगारसेणिं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया! इमस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स संधिं[3] संघाडेह, [संघाडेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह[4] ?] ॥

१०४ तए णं सा सुवण्णगारसेणी एयमट्ठं तहत्ति पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तं दिव्वं कुंडलजुयलं गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव सुवण्णगार-भिसियाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुवण्णगार-भिसियासु निवेसेइ, निवेसेत्ता बहूहिं आएहि य[5] °उवाएहि य उप्पत्तियाहि य वेणइयाहि य कम्मयाहि य पारिणामियाहि य बुद्धीहिं° परिणामेमाणा इच्छंति तस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स संधिं घडित्तए, नो चेव णं संचाएइ घडित्तए ॥

१०५ तए णं सा सुवण्णगारसेणी जेणेव कुंभए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल[6]-°परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ°, वद्धावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु सामी! अज्ज तुम्हे[7] अम्हे सद्दावेह, जाव[8] संधिं संघाडेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह। तए णं अम्हे तं दिव्वं कुंडलजुयलं गेण्हामो, गेण्हित्ता जेणेव सुवण्णगार-भिसियाओ तेणेव उवगच्छामो जाव[9] नो संचाएमो संविं[10] संघाडेत्तए। तए णं अम्हे सामी! एयस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स अण्णं सरिसयं कुंडलजुयलं घडेमो ॥

१०६ तए णं से कुंभए राया तीसे सुवण्णगारसेणीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु एवं वयासी—केस णं तुब्भे कलाया णं भवह, जे णं तुब्भे इमस्स

१. ना० १।८।६३।
२. °कन्नयाए (ख)।
३ संधी (क, ख, ग, घ)।
४. स्वर्णकारश्रेण्या राज्ञे निवेदने कोष्ठकवर्ती पाठो विद्यते। द्रष्टव्यम्—सू० १०५। तेन अत्रासौ युज्यते।
५ सं० पा०—आएहि य जाव परिणामेमाणा।
६. सं० पा—करयलवद्धावेत्ता।
७. तुब्भे (ग)।
८ ना० १।८।१०३।
९ ना० १।८।१०४।
१०. × (ख, घ)।

दिव्वस्स कुडलजुयलस्स नो सचाएह संधि सघाडित्तए ? ते सुवण्णगारे निव्विसए आणवेइ ॥

१०७. तए ण ते सुवण्णगारा कुभगेण रण्णा निव्विसया आणत्ता समाणा जेणेव साइ-साइ गिहाइ तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सभडमत्तोवगरणमायाए मिहि-लाए रायहाणीए मज्झमज्झेण निक्खमति, निक्खमित्ता विदेहस्स जणवयस्स मज्झमज्झेण निक्खमति, निक्खमित्ता जेणेव कासी जणवए जेणेव वाणारसी नयरी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अग्गुज्जाणसि[1] सगडी-सागड मोएति, मोएत्ता महत्थ जाव[2] पाहुड गेण्हति, गेण्हित्ता वाणारसीए नयरीए मज्झमज्झेण[3] जेणेव सखे कासीराया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल[4]-•परिग्गहियं सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु जएण विजएण° वद्धावेंति, वद्धावेत्ता पाहुड उवणेति, उवणेत्ता एव वयासी—अम्हे ण सामी ! मिहिलाओ कुभएण रण्णा निव्विसया आणत्ता समाणा इह हव्वमागया । त इच्छामो ण सामी ! तुब्भं वाहुच्छायापरिग्गहिया निब्भया निरुव्विग्गा सुहसुहेण परिवसिउ ॥

१०८ तए ण सखे कासीराया ते सुवण्णगारे एवं वयासी—किं ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! कुभएणं रण्णा निव्विसया आणत्ता ?

१०९ तए ण ते सुवण्णगारा सख कासीराय एव वयासी—एव खलु सामी ! कुभगस्स रण्णो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए कुडल-जुयलस्स सधी विसघडिए । तए ण से कुभए राया सुवण्णगारसेणि सद्दावेइ जाव[5] निव्विसया आणत्ता । तं एएण कारणेण सामी ! अम्हे कुभएण रण्णा निव्विसया आणत्ता ॥

११० तए ण से सखे कासीराया सुवण्णगारे एवं वयासी केरिसिया ण देवाणुप्पिया ! कुभगस्स रण्णो धूया पभावईदेवीए अत्तया मल्ली विदेहरायवरकन्ना ?

१११ तए ण ते सुवण्णगारा सख कासीराय एव वयासी—नो खलु सामी ! अण्णा कावि तारिसिया देवकन्ना वा[6] •असुरकन्ना वा नागकन्ना वा जक्खकन्ना वा गधव्वकन्ना वा रायकन्ना वा° जारिसिया णं मल्ली विदेहवररायकन्ना ॥

११२. तए णं से सखे कासीराया कुडल-जणिय-हासे दूय सद्दावेइ[7], •सद्दावेत्ता एवं

---

१. अगुजाणसि (घ) ।
२ ना० १।८।८१ ।
३ रायपसेणइय ६८३ सूत्रे अस्यानन्तरं 'अणुपविसइ' इति क्रियापद लभ्यते ।
४. स० पा०—करयल जाव वद्धावेहि (क), करयल ए (ख, ग) ।
५. ना० १।८।१०३-१०६ ।
६ स० पा०—देवकन्ना वा जाव जारिसिया ।
७ स० पा०—सद्दावेइ जाव तहेव पहारेत्थ ।

वयासी—जाव[1] मल्लिं विदेहरायवरकन्नं मम भारियत्ताए वरेहि, जइ वि य णं सा सयं रज्जसुंका ।।

११३ तए णं से दूए सखेण एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे जाव[2] जेणेव मिहिला नयरी तेणेव° पहारेत्थ गमणाए ।।

अदीणसत्तु-राय-पदं

११४. तेणं कालेणं तेणं समएणं कुरु नामं जणवए होत्था । तत्थ णं हत्थिणाउरे नामं नयरे होत्था । तत्थ णं अदीणसत्तू नामं राया होत्था जाव[3] रज्जं पसासेमाणे विहरइ ।।

११५. तत्थ णं मिहिलाए तस्स णं कुंभगस्स रण्णो पुत्ते पभावईए देवीए अत्तए मल्लीए अणुमग्गजायए मल्लदिन्ने[4] नामं कुमारे सुकुमालपाणिपाए जाव[5] जुवराया यावि होत्था ।।

११६. तए णं मल्लदिन्ने कुमारे अण्णया कयाइ कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे मम पमदवणंसि एगं महं चित्तसभं करेह—अणेग-खंभसयसण्णिविट्ठं[6] एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । तेवि तहेव पच्चप्पिणंति ।।

११७. तए णं से मल्लदिन्ने कुमारे चित्तगर-सेणिं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुब्भे णं[7] देवाणुप्पिया ! चित्तसभं हाव-भाव-विलास-विब्बोयकलिएहिं रूवेहिं चित्तेह[8], •चित्तेत्ता एयमाणत्तियं° पच्चप्पिणह ।।

११८ तए णं सा चित्तगर-सेणी एयमट्ठं[9] तहत्ति पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता जेणेव सयाइं गिहाइं तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तूलियाओ वण्णए य गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव चित्तसभा तेणेव अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता भूमिभागे विरचंति, विरचित्ता भूमिं सज्जेइ, सज्जेत्ता चित्तसभं हाव-भाव[10]-विलास-विब्बोय-कलिएहिं रूवेहिं°, चित्तेउं पयत्ता यावि होत्था ।।

११९. तए णं एगस्स चित्तगरस्स इमेयारूवा चित्तगर-लद्धी लद्धा पत्ता अभिसमण्णा-गया—जस्स णं दुपयस्स वा चउप्पयस्स वा अपयस्स वा एगदेसमवि पासइ, तस्स णं देसाणुसारेणं तयाणुरूवं निव्वत्तेइ ।।

१२०. तए णं से चित्तगरे[11] मल्लीए जवणियंतरियाए[12] जालंतरेण पायंगुट्ठं पासइ । तए

---

१. ना० १।८।६२ ।
२. ना० १।८।६३ ।
३. ओ० सू० १४ ।
४. °दिन्नए (क, ख, ग, घ) ।
५. ओ० सू० १४३ ।
६. पू०—ना० १।१।८६ ।
७. गच्छह णं तुब्भे (ख, घ) ।
८. सं० पा०—चित्तेह जाव पच्चप्पिणह ।
९. द्रष्टव्यम्—अस्यैवाध्ययनस्य १०४ सूत्रम् ।
१०. सं० पा०—भाव जाव चित्तेउं ।
११ चित्तगरदारए (क, ख, ग, घ) ।
१२. जवणियतराए (ख), जवणतरियाए (ग) ।

णं तस्स चित्तगरस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव[1] समुप्पज्जित्था—सेय खलु मम मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए पायगुट्ठाणुसारेण सरिसग[2] °सरित्तय सरिव्वय सरिसलावण्ण-रूव-जोव्वण °गुणोववेय रूव निव्वत्तित्तए—एवं सपेहेइ, सपेहेत्ता भूमिभाग सज्जेइ, सज्जेत्ता मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए पायगुट्ठासारेण सरिसग जाव रूव निव्वत्तेइ ।।

१२१. तए ण सा चित्तगर-सेणी चित्तसभ हाव-भाव[3]-विलास-विब्बोयकलिएहिं रूवेहि° चित्तेइ, चित्तेत्ता जेणेव मल्लदिन्ने कुमारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एयमाणत्तिय पच्चप्पिणइ ।।

१२२. तए ण से मल्लदिन्ने कुमारे चित्तगर-सेणिं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता विपुल जीवियारिहं पीइदाण दलयइ, दलइत्ता पडिविसज्जेइ ।।

१२३. तए ण से मल्लदिन्ने कुमारे[4] ण्हाए अतेउर-परियाल-सपरिवुडे अम्मधाईए सद्धि जेणेव चित्तसभा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चित्तसभ अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता हाव-भाव-विलास-विब्बोयकलियाइ रूवाइ पासमाणे-पासमाणे जेणेव मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तिए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।।

१२४ तए ण से मल्लदिन्ने कुमारे मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए तयाणुरूवं रूव निव्वत्तिय पासइ, पासित्ता[5] इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव[6] समुप्पज्जित्था - एस णं मल्ली विदेहरायवरकन्ने त्ति कट्टु लज्जिए विलिए[7] वेड्डे सणिय-सणिय पच्चोसक्कइ ।।

१२५ तए णं त मल्लदिन्न कुमार अम्मधाई सणिय-सणिय पच्चोसक्कत पासित्ता एव वयासी—किण्णं तुम पुत्ता ! लज्जिए विलिए वेड्डे सणिय-सणिय पच्चोसक्कसि ?

१२६ तए ण से मल्लदिन्ने कुमारे अम्मधाइ[8] एवं वयासी—जुत्त ण अम्मो ! मम जेट्ठाए भगिणीए गुरु-देवयभूयाए लज्जणिज्जाए मम चित्तसभ[9] अणुपविसित्तए ?

१२७. तए ण अम्मधाई मल्लदिन्न कुमार एव वयासी—नो खलु पुत्ता ! एस मल्ली

---

१. ना० १।१।४८ ।
२ स० पा०—सरिसग जाव गुणोववेय ।
३. स० पा०—जाव हाव भाव । अत्र जाव शब्द. भावशब्दानतर युज्यते ।
४ कुमारे अण्णया (क, ख, ग) ।
५. अतोऽग्रे 'तस्स' इति पदमध्याहर्तव्यम् ।
६. ना० १।१।४८ ।
७. विलए (ख), विलज्जिए (घ), वीडिए (क्व) ।
८ अम्मधाई (क, ख, ग, घ) ।
९. चित्तघरसभं (ख, ग, घ) ।

विदेहरायवरकन्ना। एस णं मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए चित्तगरएणं तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तिए ॥

१२८. तए णं से मल्लदिन्ने कुमारे अम्मधाईए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते[1] एवं वयासी—केस णं भो! से चित्तारए अपत्थिय[2]°पत्थए, दुरंत-पंत-लक्खणे, हीणपुण्णचाउद्दसिए, सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-°परिवज्जिए, जे णं मम जेट्ठाए भगिणीए गुरु-देवयभूयाए[3] °लज्जणिज्जाए मम चित्तसभाए तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तिए त्ति कट्टु तं चित्तगरं वज्झं आणवेइ ॥

१२९ तए णं सा चित्तगर-सेणी इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा जेणेव मल्लदिन्ने कुमारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं[4] °सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ° वद्धावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु सामी! तस्स चित्तगरस्स इमेयारूवा चित्तगर[5]-लद्धी लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया—जस्स णं दुपयस्स वा[6] °चउप्पयस्स वा अपयस्स वा एगदेसमवि पासइ, तस्स णं देसाणुसारेण तयाणुरूवं रूवं° निव्वत्तेइ। तं मा णं सामी! तुब्भे तं चित्तगरं वज्झं आणवेह। तं तुब्भे णं सामी! तस्स चित्तगरस्स अण्णं तयाणुरूवं दंडं निव्वत्तेह[7] ॥

१३०. तए णं से मल्लदिन्ने कुमारे तस्स चित्तगरस्स संडासगं छिंदावेइ, छिंदावेत्ता निव्विसयं आणवेइ ॥

१३१ तए णं से चित्तगरे मल्लदिन्नेणं कुमारेणं निव्विसए आणत्ते समाणे सभंडमत्तोवगरणमायाए मिहिलाओ नयरीओ निक्खमइ, निक्खमित्ता 'विदेहस्स जणवयस्स'[8] मज्झंमज्झेणं[9] जेणेव कुरुजणवए जेणेव हत्थिणाउरे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भंडनिक्खेवं करेइ, करेत्ता चित्तफलगं सज्जेइ, सज्जेत्ता मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए पायंगुट्ठाणुसारेणं रूवं निव्वत्तेइ, निव्वत्तेत्ता कक्खंतरंसि छुब्भइ, छुब्भित्ता महत्थं जाव[10] पाहुडं गेण्हइ, गेण्हित्ता 'हत्थिणाउरस्स नयरस्स'[11] मज्झंमज्झेणं[12] जेणेव अदीणसत्तू राया तेणेव उवागच्छइ,

---

१. पू०—ना० १।८।१०६।

२. सं० पा०—अपत्थिय जाव परिवज्जिए।

३. स० पा०—देवयभूयाए जाव निव्वत्तिए।

४. स० पा०—करयलपरिग्गहियं जाव वद्धावेत्ता।

५. चित्तकार (ख, ग)।

६. स० पा०—दुपयस्स वा जाव निव्वत्तेति।

७ निव्वत्तएह (ख)।

८. विदेहं जणवयं (क, ख, ग, घ); १।८।१०७ सूत्रानुसारेणासौ पाठः स्वीकृतोस्ति। अत्र क्रियापदमन्तरा द्वितीयाः विभक्तिर्नैव संगच्छते।

९ 'निक्खमइ, निक्खमित्ता' इत्यध्याहार्यम्।

१०. ना० १।८।८१।

११. हत्थिणाउरं नयरं (क, ख, ग, घ)।

१२. रायपसेणइय ६८३ सूत्रे अस्यानन्तरं 'अणुपविसइ' इति क्रियापदं लभ्यते।

उवागच्छित्ता करयल[1]॰परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ॰ वद्धावेत्ता पाहुडं उवणेइ, उवणेत्ता एवं वयासी—एवं खलु अहं सामी! मिहिलाओ रायहाणीओ कुंभगस्स रण्णो पुत्तेणं पभावईए देवीए अत्तएणं मल्लदिन्नेणं कुमारेणं निव्विसए आणत्ते समाणे इहं हव्वमागए। तं इच्छामि णं सामी! तुब्भं बाहुच्छाया-परिग्गहिए[2] ॰निब्भए निरुव्विग्गे सुहं-सुहेणं॰ परिवसित्तए॥

१३२ तए णं से अदीणसत्तू राया तं चित्तगरं[3] एवं वयासी—किण्णं तुमं देवाणुप्पिया! मल्लदिन्नेणं निव्विसए आणत्ते?

१३३ तए णं से चित्तगरे अदीणसत्तुं रायं एवं वयासी—एवं खलु सामी! मल्लदिन्ने कुमारे अण्णया कयाइ चित्तगर-सेणिं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया! मम चित्तसभं हाव-भाव-विलास-विब्बोयकलिएहिं रूवेहिं चित्तेहं तं चेव सव्वं भाणियव्वं जाव[4] मम संडासगं छिंदावेइ, छिंदावेत्ता निव्विसयं आणवेइ। एवं खलु अहं सामी! मल्लदिन्नेणं कुमारेणं निव्विसए आणत्ते॥

१३४ तए णं अदीणसत्तू राया तं चित्तगरं एवं वयासी—से केरिसए णं देवाणुप्पिया! तुमे मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तिए॥

१३५ तए णं से चित्तगरे कक्खतराओ चित्तफलगं नीणेइ, नीणेत्ता अदीणसत्तुस्स उवणेइ, उवणेत्ता एवं वयासी—एस णं सामी मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए तयाणुरूवस्स रूवस्स केइ आगार-भाव-पडोयारे निव्वत्तिए। नो खलु सक्का[5] केणइ देवेण वा[6] ॰दाणवेण वा जक्खेण वा रक्खसेण वा किन्नरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा॰ मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तित्तए॥

१३६ तए णं से अदीणसत्तू पडिरूव-जणिय-हासे दूयं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी[7]—॰जाव[8] मल्लिं विदेहरायवरकन्नं मम भारियत्ताए वरेहि, जइ वि य णं सा सयं रज्जसुंका॥

१३७ तए णं से दूए अदीणसत्तुणा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे जाव[9] जेणेव मिहिला नयरी तेणेव॰ पहारेत्थ गमणाए॥

---

१ सं॰ पा॰—करयल जाव वद्धावेत्ता।

२. सं॰ पा॰—परिग्गहिए जाव परिवसित्तए।

३. चित्तगरदारयं (ख, ग, घ)।

४ ना॰ १।८।११७ १३०।

५ प्राकृतव्याकरणानुसारेण 'सक्क' इति पदं युज्यते, किन्तु आदर्शेषु 'सक्का' इति पदमेव लिखितमस्ति। एतद् लिपिदोषेण जातमथवा प्राकृतशैल्या प्रयुक्तम्?

६. सं॰ पा॰—देवेण वा जाव मल्लीए।

७. सं॰ पा॰—तहेव जाव पहारेत्थ।

८. ना॰ १।८।६२।

९. ना॰ १।८।६३।

जियसत्तु-राय-पद

१३८ तेण कालेण तेणं समएणं पचाले जणवए। कंपिल्लपुरे नयरे। जियसत्तू नाम राया पचालाहिवई। तस्स णं जियसत्तुस्स धारिणीपामोक्खं देवीसहस्सं ओरोहे[1] होत्था ॥

१३९. तत्थ णं मिहिलाए चोक्खा[2] नाम परिव्वाइया—रिउव्वेद-•यजुव्वेद-सामवेद-अहव्वणवेद-इतिहासपंचमाणं निघंटुछट्ठाणं संगोवंगाणं सरहस्साणं चउण्हं वेदाणं सारगा जाव[4] बंभण्णएसु य सत्थेसु[°] सुपरिणिट्ठिया यावि होत्था ॥

१४० तए णं सा चोक्खा परिव्वाइया मिहिलाए बहूणं राईसर जाव[5] सत्थवाहपभिईणं पुरओ दाणधम्मं च सोयधम्मं च तित्थाभिसेयं च आघवेमाणी पण्णवेमाणी परूवेमाणी उवदसेमाणी विहरइ ॥

१४१. तए णं सा चोक्खा अण्णया कयाइ तिदंडं च कुंडियं च जाव[6] धाउरत्ताओ य गेण्हइ, गेण्हित्ता परिव्वाइगावसहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पविरल-परिव्वाइया-सद्धि संपरिवुडा मिहिलं रायहाणिं मज्झंमज्झेणं जेणेव कुंभगस्स रण्णो भवणे जेणेव कन्नतेउरे जेणेव मल्ली विदेहरायवरकन्ना तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उदयपरिफोसियाए[7] 'दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए'[8] निसीयइ, निसीइत्ता मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए पुरओ दाणधम्मं च •सोयधम्मं च तित्थाभिसेयं च आघवेमाणी पण्णवेमाणी परूवेमाणी उवदंसेमाणी[°][9] विहरइ ॥

१४२. तए णं मल्ली विदेहरायवरकन्ना चोक्खं परिव्वाइयं एवं वयासी—तुब्भण्णं[10] चोक्खे ! किंमूलए धम्मे पण्णत्ते ?

१४३. तए णं सा चोक्खा परिव्वाइया मल्लिं विदेहरायवरकन्नं एवं वयासी—अम्हं णं देवाणुप्पिए ! सोयमूलए धम्मे पण्णत्ते। जं णं अम्हं किंचि असुई भवइ तं णं उदएण य मट्टियाए[11] •य सुई भवइ। एवं खलु अम्हे जलाभिसेय-पूयप्पाणो[°] अविग्घेणं सग्गं गच्छामो ॥

१४४ तए णं मल्ली विदेहरायवरकन्ना चोक्खं परिव्वाइयं एवं वयासी—चोक्खे[12] ! से जहानामए केइ पुरिसे रुहिरकयं वत्थं रुहिरेण चेव धोवेज्जा, अत्थि णं

---

१. ओरोहो (क), उवरोहे (ख)।
२. चोक्खी (ख)।
३. सं॰ पा॰—रिउव्वेय जाव परिणिट्ठिया।
४. ओ॰ सू॰ ९७।
५. ना॰ १।५।६।
६ ओ॰ सू॰ ११७।
७. °फासियाए (क, ग)।
८ °पच्चत्थुयाते भिसियाते (ख, घ)।
९. सं॰ पा॰—दाणधम्मं च जाव विहरइ।
१०. तुब्भेणं (ख, घ) अशुद्धं प्रतिभाति।
११. सं॰ पा॰—मट्टियाए जाव अविग्घेणं। १।५।६० सूत्रे एतत् वर्णनं किञ्चित् परिवर्तनेन लभ्यते।
१२. चोक्खा (ख, घ)।

चोक्खे ! तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेणं धोव्वमाणस्स काइ सोही ?

नो इणट्ठे समट्ठे ।

एवामेव चोक्खे[1] ! तुब्भण्ण पाणाइवाएण जाव[2] मिच्छादसणसल्लेण नत्थि काइ सोही, जहा तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेण चेव धोव्वमाणस्स ।।

१४५ तए ण सा चोक्खा[3] परिव्वाइया मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए एव वुत्ता समाणी सकिया कखिया वितिगिछिया भेयसमावण्णा जाया यावि[4] होत्था, मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए नो सचाएइ किचिवि पामोक्खमाइक्खित्तए[5], तुसिणीया सचिट्ठइ ।।

१४६. तए णं त चोक्ख मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए वहूओ दासचेडीओ हीलेति निदति खिसति गरिहति, अप्पेगइयाओ हेरुयालेति अप्पेगइयाओ मुहमक्कडियाओ[6] करेति अप्पेगइयाओ वग्घाडियाओ[7] करेति अप्पेगइयाओ तज्जेमाणीओ तालेमाणीओ निच्छुहति ।।

१४७ तए ण सा चोक्खा मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए दासचेडियाहिं[8] •हीलिज्जमाणी निदिज्जमाणी खिसिज्जमाणी ° गरहिज्जमाणी आसुरुत्ता जाव[9] मिसिमिसेमाणी मल्लीए विदेहरायवरकन्नयाए पओसमावज्जइ, भिसिय गेण्हइ, गेण्हित्ता कन्नतेउराओ पडिणिक्खमई, पडिणिक्खमित्ता मिहिलाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता, परिव्वाइया-सपरिवुडा जेणेव पचालजणवए जेणेव कपिल्लपुरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वहूण राईसर[10] •जाव[11] सत्थवाहपभिईण पुरओ दाणधम्म च सोयधम्म च तित्थाभिसेय च आघवेमाणी पण्णवेमाणी परूवेमाणी उवदसेमाणी ° विहरइ ।।

१४८. तए ण से जियसत्तू अण्णया कयाइ अतो अतेउर-परियाल-सद्धि सपरिवुडे[12] •सीहासणवरगए यावि ° विहरइ ।।

१४९ तए ण सा चोक्खा, परिव्वाइया-सपरिवुडा जेणेव जियसत्तुस्स रण्णो भवणे जेणेव जियसत्तू राया तेणेव अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जियसत्तु जएण विजएण वद्धावेइ ।।

१५० तए ण से जियसत्तू चोक्ख परिव्वाइय एज्जमाण पासइ, पासित्ता सीहासणाओ

---

१ एव चोक्खी (क, ग), एव चोक्खा (ख) ।

२. ओ० सू० १६३ ।

३ चोक्खी (क, ख, ग, घ) ।

४. वि (ग) ।

५. °माति° (ग, घ) ।

६ मुहमक्कडिय (क) ।

७ बग्घाडिया (क), वग्घाडिओ (ख, ग), बग्घाडाओ (घ) ।

८. स० पा०—दासचेडियाहिं जाव गरहिज्जमाणी ।

९. ना० १।८।१०६ ।

१०. स० पा० — राईसर जाव विहरइ ।

११ ना० १।५।६ ।

१२. स० पा०—सपरिवुडे एव जाव विहरइ ।

अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता चोक्खं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता आसणेण उवनिमंतेइ ॥

१५१ तए णं सा चोक्खा उदगपरिफोसियाए[1] °दब्भोवरि पच्चत्थुयाए° भिसियाए निविसइ[2], निविसित्ता जियसत्तुं रायं रज्जे य[3] °रट्ठे य कोसे य कोट्ठागारे य बले य वाहणे य पुरे य° अंतेउरे य कुसलोदंतं पुच्छइ ॥

१५२ तए णं सा चोक्खा जियसत्तुस्स रण्णो दाणधम्मं च[4] °सोयधम्मं च तित्थाभिसेयं च आघवेमाणी पण्णवेमाणी परूवेमाणी उवदंसेमाणी° विहरइ ॥

१५३ तए णं से जियसत्तू अप्पणो ओरोहंसि जायविम्हए चोक्खं एवं वयासी—तुमं णं देवाणुप्पिया ! बहूणि गामागर जाव[5] सण्णिवेसंसि आहिंडसि, बहूण य राईसर[6]-सत्थवाहप्पभिईणं गिहाइं अणुप्पविससि, तं अत्थियाइं ते कस्सइ रण्णो वा[7] °ईसरस्स वा कहिंचि° एरिसए ओरोहे दिट्ठपुव्वे, जारिसए णं इमे मम ओरोहे[8] ?

१५४. तए णं सा चोक्खा परिव्वाइया[9] जियसत्तुणा एवं वुत्ता समाणी ईसिं विहसियं करेइ, करेत्ता एवं वयासी—सरिसए णं तुमं देवाणुप्पिया ! तस्स अगडदद्दुरस्स। के णं देवाणुप्पिए ! से अगडदद्दुरे ?

जियसत्तू ! से जहानामए अगडदद्दुरे सिया। से णं तत्थ जाए तत्थेव वुड्ढे अण्णं अगडं वा तलागं वा दहं वा सरं वा सागरं वा अपासमाणे मण्णइ—अयं चेव अगडे वा[10] °तलागे वा दहे वा सरे वा° सागरे वा।

तए णं तं कूवं अण्णे सामुद्दए दद्दुरे हव्वमागए।

तए णं से कूवदद्दुरे तं सामुद्दयं[11] दद्दुरं एवं वयासी—से के[12] तुमं देवाणुप्पिया ! कत्तो वा इह हव्वमागए ?

तए णं से सामुद्दए दद्दुरे तं कूवदद्दुरं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अहं सामुद्दए दद्दुरे।

---

१ सं० पा०—उदगपरिफोसियाए जाव भिसियाए।

२ णिवसइ (क, ख, ग, घ)।

३. सं० पा०—रज्जे य जाव अंतेउरे।

४ सं० पा०—दाणधम्मं च जाव विहरइ।

५ ना० १।१।११८।

६ पू०—ना० १।५।६।

७ सं० पा०—रण्णो वा जाव एरिसए।

८ ओरोधे (ख)।

६. जियसत्तुं एवं व ईसिं अवहसियं (क, ख, ग), जियसत्तुं एवं वयासी ईसिं अवहसियं (घ); आदर्शेषु 'एवं व' इति संक्षिप्तरूपं लिखितं लभ्यते स्तवकादर्शे तत्र 'एवं वयासी' इति जातम्। स्तवककारेण 'इमं कहइ' इत्यर्थोपि कृत.। अस्य मौलिकं रूपं अस्माभि. प्रस्तुतसूत्रस्य षोडशाध्ययने लब्धम्।

१० सं० पा०—अगडे वा जाव सागरे।

११. समुद्दयं (घ)।

१२. केसणं (घ)।

तए ण से कूवदद्दुरे त सामुद्दयं दद्दुर एवं वयासी—केमहालए ण देवाणुप्पिया ! से समुद्दे ?

तए ण से सामुद्दए दद्दुरे त कूवदद्दुर एव वयासी—महालए ण देवाणुप्पिया ! समुद्दे।

तए णं से कूवदद्दुरे पाएण लीह कड्ढेइ, कड्ढेत्ता एवं वयासी—एमहालए ण देवाणुप्पिया ! से समुद्दे ?

नो इणट्ठे समट्ठे। महालए ण से समुद्दे।

तए ण से कूवदद्दुरे पुरत्थिमिल्लाओ तीराओ उप्फिडित्ता ण 'पच्चत्थिमिल्ल तीर'[1] गच्छइ, गच्छित्ता एव वयासी—एमहालए णं देवाणुप्पिया ! से समुद्दे ?

नो इणट्ठे समट्ठे[2]।

एवामेव तुमपि जियसत्तू अण्णेसिं वहूण राईसर जाव[3] सत्थवाहप्पभिईण भज्ज वा भगिणि वा धूय वा सुण्हं वा अपासमाणे जाणसि[4] जारिसए मम चेव ण ओरोहे, तारिसए नो अण्णेसिं।

त एव खलु जियसत्तू ! मिहिलाए नयरीए कुभगस्स धूया पभावईए अत्तया मल्ली नाम विदेहरायवरकन्ना रूवेण य जोव्वणेण य[5] °लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा,° नो खलु अण्णा काइ [तारिसिया ?] देवकन्ना[6] °वा असुरकन्ना वा नागकन्ना वा जक्खकन्ना वा गंधव्वकन्ना वा रायकन्ना वा° जारिसिया मल्ली विदेहरायवरकन्ना [तीसे ?] छिन्नस्स वि पायगुट्ठगस्स इमे तवोरोहे सयसहस्सइमपि कल न अग्घइ त्ति कट्टु जामेव दिस पाउब्भूया तामेव दिस पडिगया॥

१५५. तए ण से जियसत्तू परिव्वाइया-जणिय-हासे दूय सद्दावेइ[7], °सद्दावेत्ता एव वयासी—जाव[8] मल्लि विदेहरायवरकन्न मम भारियत्ताए वरेहि, जइ वि य ण सा सयं रज्जसुका॥

१५६ तए णं से दूए जियसत्तुणा एव वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे जाव[9] जेणेव मिहिला नयरी तेणेव° पहारेत्थ गमणाए॥

दूयाणं संदेस-निवेदण-पदं

१५७ तए ण तेसिं जियसत्तुपामोक्खाण छण्ह राईण दूया जेणेव मिहिला तेणेव पहारेत्थ गमणाए॥

---

१. × (क, ख, ग, घ)।
२ तहेव (क, ख, ग, घ)।
३ ना० १।५।६।
४ जाणासि (घ)।
५ स० पा०—जोव्वणेण य जाव नो खलु।
६. स० पा०—देवकन्ना···।
७ स० पा०—सद्दावेइ जाव पहारेत्थ।
८. ना० १।८।६२।
९ ना० १।८।६३।

१५८ तए णं छप्पि दूयगा जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता मिहिलाए अग्गुज्जाणंसि पत्तेयं-पत्तेयं खंधावारनिवेसं करेंति, करेत्ता मिहिलं रायहाणिं अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पत्तेयं करयल[1]•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° साणं-साणं राईणं वयणाइं निवेदेंति[2] ॥

कुंभएण दूयाणं असक्कार-पदं

१५९ तए णं से कुंभए तेसिं दूयाणं 'अंतियं एयमट्ठं'[3] सोच्चा आसुरुत्ते[4] •रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे° तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु एवं वयासी—न देमि णं अहं तुब्भं मल्लिं विदेहरायवरकन्नं ति कट्टु ते छप्पि दूए असक्कारिय असम्माणिय अवद्दारेण निच्छुभावेइ ॥

१६० तए णं ते जियसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राईणं दूया कुंभएणं रण्णा 'असक्कारिय असम्माणिय'[5] अवद्दारेणं[6] निच्छुभाविया समाणा जेणेव सगा-सगा जणवया जेणेव 'सयाइं-सयाइं नगराइं'[7] जेणेव सया-सया रायाणो तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल[8]•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° एवं वयासी—एवं खलु सामी! अम्हे जियसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राईणं दूया जमगसमगं चेव जेणेव मिहिला तेणेव उवागया जाव[9] अवद्दारेणं निच्छुभावेइ। "तं न देइ णं सामी! कुंभए मल्लिं विदेहरायवरकन्नं" साणं-साणं राईणं एयमट्ठं निवेदेंति ॥

जियसत्तुपामोक्खाणं कुंभएणं जुज्झ-पदं

१६१ तए णं ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो तेसिं दूयाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ता रुट्ठा कुविया चंडिक्किया मिसिमिसेमाणा अण्णमण्णस्स दूय-संपेसणं करेंति, करेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं छण्हं राईणं दूया जमगसमगं चेव मिहिला तेणेव उवागया जाव[11] अवद्दारेणं निच्छूढा। तं सेयं खलु देवाणुप्पिया! कुंभगस्स जत्तं[12] गेण्हित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं

१. स० पा०—करयल··· ।
२. निवेसंति (क, ग, घ) ।
३. × (ख, ग) ।
४. स० पा०—आसुरुत्ते जाव तिवलियं ।
५ अवदारेण (क, ख, घ) ।
६ असक्कारिय-असम्माणिया (ख, ग) ।
७. अवदारेण (क) ।
८ सयाति-सयाति नगराति (ख) ।
९. स० पा०—करयल° ।
१०. ना० १।८।१५८,१५९ ।
११. ना० १।८।१५८,१५९ ।
१२. जुत्त (ख, ग) ।

पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता ण्हाया सण्णद्धा[1] हत्थिखंधवरगया सकोरेंटमल्लदामेण[2] •छत्तेण धरिज्जमाणेण सेयवरचामराहि वीइज्जमाणा° महया हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धि सपरिवुडा सव्विड्ढीए जाव[3] दुदुभि-नाइयरवेण 'सएहितो-सएहितो नगरेहितो निग्गच्छति',[4] निग्गच्छित्ता एगयओ मिलायति, जेणेव मिहिला तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।।

१६२ तए ण कुभए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे बलवाउयं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव हय-•गय-रह-पवरजोहकलियं चाउरगिणिं° सेण सन्नाहेहि[6], सन्नाहेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि सेवि जाव पच्चप्पिणति[7] ।।

१६३ तए ण कुभए राया ण्हाए सण्णद्धे[8] हत्थिखधवरगए[9] •सकोरेटमल्लदामेण छत्तेणं धरिज्जमाणेण° सेयवरचामराहि वीइज्जमाणे महया हय-गय-रह-पवर-जोहकलियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धि संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव[10] दुदुभि-नाइयरवेण मिहिल मज्झमज्झेण निज्जाइ[11], निज्जावेत्ता विदेहजणवय मज्झ-मज्झेण जेणेव देसग्ग[12] तेणेव खधावारनिवेस करेइ, करेत्ता जियसत्तुपामोक्खा छप्पि य रायाणो पडिवालेमाणे जुज्झसज्जे पडिचिट्ठइ ।।

१६४ तए ण ते जियसत्तुपामोक्खा[13] छप्पि रायाणो जेणेव कुभए राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता कुभएण रण्णा सद्धि सपलग्गा[14] यावि होत्था ।।

१६५. तए णं ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो कुभय राय हय-महिय-पवरवीर-घाइय-'विवडियचिंध-धय'[15]-पडाग किच्छोवगयपाण[16] दिसोदिसिं पडिसेहेति ।।

---

१. पू०—ना० १।२।३२ ।
२ स० पा०—सकोरेंटमल्लदाम जाव सेयवर-चामराहि महया ।
३. ना० १।१।३३ ।
४ सएहितो जाव निग्गच्छति (क); सएहि २ नगरेहितो जाव निग्गच्छति (ख, ग, घ) ।
५. स० पा०—हय जाव सेण ।
६. सन्नाहेह (क, ख, ग, घ) । आदर्शेषु बहुवचनान्त प्रयोगो दृश्यते, किन्तु एकवचन-कर्तृके पाठे नासौ उपयुक्तोस्ति । ओवाइय—५६ सूत्रेपि एकवचनान्त क्रियापद लभ्यते ।
७ पच्चप्पिणति (क, ख, ग, घ) ।
८ पू०—ना० १।२।३२ ।
९ स० पा०—हत्थिखधवरगए जाव सेयवर-चामराहि ।
१० ना० १।१।३३ ।
११ णिगच्छई (घ) ।
१२ देसग्गते (क, ख, घ), देसग्रते (क्व), देसमग्गे (क्व) ।
१३. जियसत्तू° (क, ख, ग, घ) ।
१४ योद्धुमिति शेष (वृ) ।
१५. निवडियधयच्छत्तचिंध (क) ।
१६. किछपाणोवगय (क), किच्छपाणोवगय (ख, ग, घ) । प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ नाय पाठो व्याख्यातोस्ति । १।१६।२५२ सूत्रस्य वृत्तावस्य व्याख्या दृश्यते । तत्रत्य पाठो व्याख्या च सम्यक् प्रतिभाति, तेन तदनु-सारेणात्र पाठ स्वीकृत. ।

१६६ तए ण से कुभए जियसत्तुपामोक्खेहिं छहिं राईहिं हय-महिय-[1]•पवरवीर-घाइय-विवडियचिंध-धय-पडागे किच्छोवगयपाणे दिसोदिसिं° पडिसेहिए समाणे अत्थामे अवले अवीरिए[2] •अपुरिसक्कारपरक्कमे° अधारणिज्जमिति कट्टु सिग्घ तुरिय[3] •चवल चड जइण° वेइय जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मिहिल अणुपविसइ,[4] अणुपविसित्ता मिहिलाए दुवाराइ पिहेइ, पिहेत्ता रोहसज्जे चिट्ठइ ॥

१६७ तए ण ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता मिहिल रायहाणि निस्सचारं निरुच्चार सव्वओ समता ओरुभित्ता ण चिट्ठति ॥

१६८ तए ण से कुभए राया मिहिल रायहाणि ओरुद्ध जाणित्ता अब्भितरियाए उवट्ठाणसालाए सीहासणवरगए तेसिं जियसत्तुपामोक्खाणं छण्ह राईण अतराणि य छिद्दाणि य 'विवराणि य'[5] मम्माणि[6] य अलभमाणे बहूहिं आएहि य उवाएहि य, उप्पत्तियाहि य वेणइयाहि य कम्मयाहि य पारिणामियाहि य—बुद्धीहिं परिणामेमाणे-परिणामेमाणे किंचि आय वा उवाय वा अलभमाणे ओहयमणसकप्पे[7] •करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए° झियायइ ॥

मल्लीए चिंताहेउ-पुच्छा-पदं

१६९ इम च ण मल्ली विदेहरायवरकन्ना ण्हाया[8] •कयबलिकम्मा कयकोउय-मगलपायच्छित्ता सव्वालंकारविभूसिया° बहूहिं खुज्जाहिं[9] सपरिवुडा जेणेव कुभए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कुभगस्स पायग्गहणं करेइ ॥

१७० तए ण कुभए मल्लि विदेहरायवरकन्न नो आढाइ नो परियाणाइ[10] तुसिणीए सचिट्ठइ ॥

१७१ तए ण मल्ली विदेहरायवरकन्ना कुभग एव वयासी—तुब्भे ण ताओ ! अण्णया मम एज्जमाणि[11] •पासित्ता आढाह परियाणाह अके निवेसेह । इयाणि ताओ ! तुब्भे मम नो आढाह नो परियाणाह नो अके° निवेसेह । किण्णं तुब्भं अज्ज ओहय[12]•मणसकप्पा करतलपल्हत्थमुहा अट्टज्झाणोवगया° झियायह ?

---

१ स० पा०—हयमहिय जाव पडिसेहिए ।
२. स० पा०—अवीरिए जाव अधारणिज्ज° ।
३ स० पा० – तुरिय जाव वेइय ।
४. °पवेसेइ (ख, ग, घ) ।
५. विरहाणि य (ग); विरहाणि य विवराणि (घ) ।
६. सम्माणि (क, ख, ग) अशुद्ध प्रतिभाति ।
७. स० पा०—ओहयमणसकप्पे जाव झियायइ ।
८. स० पा० — ण्हाया जाव बहूहिं ।
९ पू०—ओ० सू० ७० ।
१० द्रष्टव्यम्—१।१।३६ सूत्रम् ।
११ एज्जमाणं (ख, ग, घ) । स० पा०—एज्जमाणि जाव निवेसेह ।
१२. स० पा०—ओहय जाव झियायह ।

कुंभगस्स चिंताहेउ-कहण-पदं

१७२ तए णं कुंभए मल्लिं विदेहरायवरकन्नं एवं वयासी—एवं खलु पुत्ता ! तव कज्जे जियसत्तुपामोक्खेहिं छहिं राईहिं दूया संपेसिया। ते णं मए असक्कारिय[1] •असम्माणिय अवद्दारेणं° निच्छूढा। तए णं जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो तेसिं दूयाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा परिकुविया समाणा मिहिलं रायहाणिं निस्संचारं[2] •निरुच्चारं सव्वओ समंता ओरुंभित्ता णं° चिट्ठंति। तए णं अहं पुत्ता तेसिं जियसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राईणं अंतराणि [य छिद्दाणि य विवराणि य मम्माणि य ?] अलभमाणे जाव[3] अट्टज्झाणोवगए झियामि ॥

मल्लीए उवायनिरूवण-पदं

१७३. तए णं सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना कुंभगं रायं एवं वयासी—मा णं तुब्भे ताओ ! ओहयमणसंकप्पा[4] •करतलपल्हत्थमुहा अट्टज्झाणोवगया° झियायह। तुब्भे णं ताओ ! तेसिं जियसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राईणं पत्तेयं-पत्तेयं रहस्सिए[5] दूयसंपेसे करेह, एगमेगं एवं वयह—तव देमि मल्लिं विदेहरायवरकन्नं ति कट्टु संझकालसमयंसि[6] पविरल-मणूसंसि निसंत-पडिनिसंतंसि पत्तेयं-पत्तेयं मिहिलं रायहाणिं अणुप्पवेसेह, अणुप्पवेसेत्ता गब्भघरएसु अणुप्पवेसेह, अणुप्पवेसेत्ता मिहिलाए रायहाणीए दुवाराइं पिहेह, पिहेत्ता रोहासज्जा[7] चिट्ठह ॥

१७४ तए णं कुंभए[8] •तेसिं जियसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राईणं पत्तेयं-पत्तेयं रहस्सिए दूयसंपेसे करेइ जाव[9]° रोहासज्जे चिट्ठइ ॥

मल्लीए जियसत्तुपामोक्खाणं संबोह-पदं

१७५ तए णं ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[10] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते जालंतरेहिं कणगमइं मत्थयछिड्डं पउमुप्पल-पिहाणं पडिमं पासंति—एस णं मल्ली विदेहरायवरकन्नत्ति कट्टु मल्लीए रायवरकन्नाए रूवे य जोव्वणे य लावण्णे य मुच्छिया गिद्धा गढिया अज्झोववण्णा अणिमिसाए दिट्ठीए पेहमाणा-पेहमाणा चिट्ठंति ॥

---

१. सं० पा०—असक्कारिया जाव निच्छूढा।

२ सं० पा०—निस्संचारं जाव चिट्ठंति।

३ ना० १।८।१६८।

४ सं० पा०—ओहयमणसंकप्पा जाव झियायह।

५ रहस्सियं (क, ख, ग, घ)।

६ संझा° (क, ग)।

७ °सज्जे (क, ख, ग, घ), अत्र कर्तृपदं क्रियापदं च बहुवचनान्तमस्ति अतः अनेन कर्तृपदविशेषणेन बहुवचनान्तेन भाव्यम्।

८. सं० पा०—कुंभए एवं तं चेव जाव पवेसेइ रोहासज्जे।

९. ना० १।८।१७३।

१०. ना० १।१।२४।

१७६ तए ण सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना ण्हाया[1] •कयवलिकम्मा कयकोउय-मगल°-पायच्छित्ता सव्वालकारविभूसिया वहूहि खुज्जाहि जाव[2] परिक्खित्ता जेणेव जालघरए जेणेव कणगमई मत्थयछिड्डा पउमुप्पल-पिहाणा पडिमा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तीसे कणगमईए मत्थयछिड्डाए पउमुप्पल-पीहाणाए पडिमाए मत्थयाओ त पउमुप्पल-पिहाण[3] अवणेइ। तओ[4] ण गधे निद्धावेइ[5], से जहाणामए—अहिमडे इ वा जाव[6] एत्तो असुभतराए[7] चेव ॥

१७७. तए ण ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो तेण असुभेण गधेणं अभिभूया समाणा सएहि-सएहि उत्तरिज्जेहि आसाइ[8] पिहेति,[9] पिहेत्ता परम्मुहा चिट्ठति ॥

१७८. तए ण सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना ते जियसत्तुपामोक्खे एव वयासी—किण्ण तुब्भे देवाणुप्पिया! सएहि-सएहि उत्तरिज्जेहि[10] •आसाइं पिहेत्ता° परम्मुहा चिट्ठह ?

१७९ तए ण ते जियसत्तुपामोक्खा मल्लि विदेहरायवरकन्न एव वयति—एव खलु देवाणुप्पिए! अम्हे इमेण असुभेणं गधेण अभिभूया समाणा सएहि-सएहि उत्तरिज्जेहि[11] •आसाइं पिहेत्ता° चिट्ठामो ॥

१८०. तए णं मल्ली विदेहरायवरकन्ना ते जियसत्तुपामोक्खे एवं वयासी—जइ ताव देवाणुप्पिया! इमीसे कणग[12]•मईए मत्थयछिड्डाए पउमुप्पल-पिहाणाए° पडिमाए कल्लाकल्लि ताओ मणुण्णाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ एगमेगे पिंडे पक्खिप्पमाणे-पक्खिप्पमाणे इमेयारूवे असुभे पोग्गल[13]-परिणामे, इमस्स[14] पुण ओरालियसरीरस्स खेलासवस्स वतासवस्स पित्तासवस्स सुक्कासवस्स सोणियपूयासवस्स दुरुय[15]-ऊसास-नीसासस्स 'दुरुय-मुत्त-पूइय-पुरीस-पुण्णस्स'[16]

---

१. स० पा०—ण्हाया जाव पायच्छित्ता।
२ ओ० सू० ७०।
३ पउम (क, ख, ग, घ)।
४ ततेण (ख, घ)।
५. णिद्धाइ (क); णिद्धवेइ (ख)।
६ ना० १।८।४२।
७. प्रस्तुताध्ययनस्य ४२ सूत्रे 'एत्तो अणिट्ठतराए चेव अकततराए चेव' इत्यादि पदानि दृश्यन्ते। तत्र 'असुभतराए चेव' इति पद नास्ति। अत्र सभवत 'अणिट्ठतराए' इत्यादिपदाना सारसग्रहरूपेण 'असुभतराए' इति पद प्रयुक्तमस्ति।
८. आसाति (ख, ग, घ)।
९ पिहिति (क, ग)।
१० सं० पा०—उत्तरिज्जेहि जाव परम्मुहा।
११ सं० पा०—उत्तरिज्जेहि जाव चिट्ठामो।
१२ स० पा०—कणग जाव पडिमाए।
१३. पोग्गले (क, ख, घ)।
१४ अत. पूर्वं वाचनान्तरे 'किमग पुण' इति लभ्यते। (वृ)।
१५ दुरूय (घ)। मुखसुखोच्चारणार्थं 'दुरूव' शब्दस्य 'दुरुय' मितिरूप कृत सभाव्यते अथवा दुरूपार्थवाची देशी शब्दः स्यात्? वृत्तौ 'दुरुय' शब्दस्य 'दुरूप' इत्यर्थोऽस्ति कृतः।
१६ दुरुय-मुत्त-पुरिस-पूय-बहुपडिपुण्ण(१।१।१०९)।

'सडण-पडण-छेयण-विद्धसण-धम्मस्स'[1] केरिसए य परिणामे भविस्सइ ? त माणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! माणुस्सएसु कामभोगेसु सज्जह रज्जह गिज्झह मुज्झह अज्झोववज्जह। एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे इमाओ[2] तच्चे भवग्गहणे अवरविदेहवासे सलिलावतिंसि[3] विजए वीयसोगाए रायहाणीए महब्बल-पामोक्खा सत्तवि[4] य बालवयसया रायाणो होत्था—सहजाया जाव[5] पव्वइया। तए ण अह देवाणुप्पिया ! इमेण कारणेण इत्थीनामगोय कम्म निव्वत्तेमि—जइ णं तुब्भे चउत्थ[6] उवसपज्जित्ता ण विहरह, तए ण अह छट्ठ उवसपज्जित्ता णं विहरामि सेसं तहेव सव्व[7]। तए ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! कालमासे काल किच्चा जयते विमाणे उववण्णा। तत्थ णं तुब्भ देसूणाइ बत्तीस सागरोवमाइं ठिई। तए ण तुब्भे ताओ देवलोगाओ अणतर चय चइत्ता इहेव जबुद्दीवे दीवे जाव[8] साइ-साइ रज्जाइ उवसपज्जित्ता ण विहरह। तए ण अह ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं जाव[9] दारियत्ताए पच्चायाया।

गाहा—

किंथ तय पम्हुट्ठ[10], जथ तया भो ! जयतपवरम्मि।
बुत्था समय-णिवद्धा[11], देवा त सभरह जाइ ॥१॥

जियसत्तुपामोक्खाणं जाइसरण-पदं

१८१ तए ण तेसिं जियसत्तुपामोक्खाण छण्हं राईणं मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्मा सुभेण परिणामेण पसत्थेण अज्झवसाणेण लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तयावर[12]•णिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापूह-मग्गण-गवेसण करेमाणाण सण्णिपुव्वे° जाइसरणे[13] समुप्पण्णे, एयमट्ठ सम्म अभिसमागच्छति[14] ॥

मल्लीए पव्वज्जा-पदं

१८२ तए ण मल्ली अरहा[15] जियसत्तुपामोक्खे छप्पि रायाणो समुप्पण्णजाईसरणे जाणित्ता गब्भघराण दाराइ विहाडेइ ॥

---

१ सडण जाव धम्मम्म (ग)।
२. इमे (ग)।
३ सलिलावतिम्मि (ख)।
४. सत्तपि (क, ख, घ)।
५ ना० १।८।१०-१६।
६ चोत्थ (ख, ग, घ)।
७. ना० १।८।१८-२६।
८. ना० १।८।२७।
९. ना० १।८।२८-३४।
१०. पम्हुट्ठा (ख, ग)।
११ णिवद्ध (वृपा)।
१२. स० पा०—तयावर ईहापूह जाव सण्णि-जाइसरणे।
१३ जाई° (घ)।
१४ अभिसमण्णागच्छति (ग)।
१५ अरिहा (क)।

१८३ तए ण ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो जेणेव मल्ली अरहा तेणेव उवागच्छति ॥

१८४ तए णं महब्बलपामोक्खा सत्तवि य[1] बालवयंसा एगयओ अभिसमण्णागया वि होत्था ॥

१८५ तए ण मल्ली अरहा ते जियसत्तुपामोक्खे छप्पि रायाणो एव वयासी—एवं खलु अह देवाणुप्पिया ! ससारभउव्विग्गा जाव[2] पव्वयामि । त तुब्भे ण किं करेह ? किं ववसह ? 'किं वा भे हियइच्छिए सामत्थे'[3] ?

१८६ तए णं जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो मल्लि अरह एव वयासी—जइ ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! ससारभउव्विग्गा जाव[4] पव्वयह, अम्हं णं देवाणुप्पिया ! के अण्णे आलवणे वा आहारे वा पडिवधे वा ? जह चेव ण देवाणुप्पिया ! तुब्भे अम्ह इओ तच्चे भवग्गहणे वहूसु कज्जेसु[5] य मेढी पमाण जाव[6] धम्मधुरा होत्था, तह[7] चेव णं देवाणुप्पिया ! इण्हि पि जाव[8] धम्मधुरा भविस्सह । अम्हे वि ण देवाणुप्पिया ! ससारभउव्विग्गा[9] भीया जम्मणमरणाण देवाणुप्पिया[10]-सद्धिं मुडा भवित्ता[11] •ण अगाराओ अणगारिय° पव्वयामो ॥

१८७ तए ण मल्ली अरहा ते जियसत्तुपामोक्खे छप्पि रायाणो एव वयासी—जइ णं तुब्भे ससारभउव्विग्गा जाव[12] मए सद्धिं पव्वयह, त गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! सएहिं-सएहि रज्जेहिं जेट्ठपुत्ते[13] ठावेह, ठावेत्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ[14] दुरुहह[15], मम अतिय पाउब्भवह ॥

१८८ तए णं ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो मल्लिस्स अरहओ एयमट्ठ पडिसुणेति ॥

१८९ तए ण मल्ली अरहा ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो गहाय जेणेव कुभए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कुभगस्स पाएसु पाडेइ ॥

१९० तए ण कुभए ते जियसत्तुपामोक्खे विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पुप्फ-

---

१. पिय (ख) ।
२. ना० १।५।८९ ।
३. के भे हियसामत्थे (क, ख, ग); १।५।८९ सूत्रात् किंचित् पाठः स्वीकृत. ।
४. ना० १।५।८९ ।
५ पू०—ना० १।५।९० ।
६ ना० १।५।९० ।
७. तहा (ख, ग, घ) ।
८. ना० १।५।९० ।
९. भउव्विगा जाव (क, ख, ग, घ) । अशुद्ध प्रतिभाति ।
१०. देवाणुप्पियाण (क्व °) ।
११. स० पा०—भवित्ता जाव पव्वयामो ।
१२ ना० १।५।८९ ।
१३ °पुत्ते रज्जे (ख, ग, घ) ।
१४. सीविया (क) ।
१५. दुरूढा समाणा (क); अस्याध्ययनस्य १४ सूत्रेपि 'दुरूढा समाणा' इति पाठोस्ति ।

वत्थ-गंध-मल्लालकारेणं सक्कारेइ सम्माणेइ[1], सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडि-विसज्जेइ ॥

१९१. तए ण ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो कुभएण रण्णा विसज्जिया समाणा जेणेव साइ-साइ रज्जाइं जेणेव [साइ-साइ ?] नगराइ तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता 'सगाइ-सगाइ'[2] रज्जाइ उवसपज्जित्ता ण विहरति ॥

१९२ तए ण मल्ली अरहा सवच्छरावसाणे निक्खमिस्सामि त्ति मण पहारेइ[3] ॥

१९३. तेण कालेण तेण समएण सक्कस्स आसण चलइ ॥

१९४. तए ण से[4] सक्के देविंदे देवराया आसण चलिय पासइ, पासित्ता ओहिं पउंजइ, पउजित्ता मल्लि अरह ओहिणा आभोएइ। इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु जवुद्दीवे दीवे भारहे वासे मिहिलाए नयरीए कुभगस्स रण्णो [धूया पभावईए देवीए अत्तया ?] मल्ली अरहा निक्खमिस्सामित्ति मण पहारेइ। त जीयमेय तीय-पच्चुप्पण्ण-मणागयाण सक्काण अरहताण भगवताण निक्खममाणाण इमेयारूव अत्थ-संपयाण दलइत्तए, [त जहा—

संगहणी-गाहा—

तिण्णेव य कोडिसया, अट्ठासीइ च हुति कोडीओ।
असिइ च सयसहस्सा[5], इंदा दलयति अरहाण ॥१॥]

एव सपेहेइ, सपेहेत्ता वेसमण देव सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया! जवुद्दीवे दीवे भारहे वासे[6] °मिहिलाए रायहाणीए कुभगस्स रण्णो धूया पभावईए देवीए अत्तया मल्ली अरहा निक्खमिस्सामित्ति मणं पहारेइ जाव इदा दलयति अरहाण।° तं गच्छह ण देवाणुप्पिया! जवुद्दीव दीव भारह वास मिहिलं रायहाणिं कुभगस्स रण्णो भवणसि इमेयारूव अत्थ-सपयाण साहराहि, साहरित्ता खिप्पामेव मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणाहि ॥

१९५ तए ण से वेसमणे देवे सक्केणं देविंदेण देवरण्णा एव वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे करयल[7] °परिग्गहियं दसणह सिरसावत्त मत्थए अजलिं कट्टु एव देवो! तहत्ति आणाए विणएण वयण° पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता जभए देवे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया! जवुद्दीवं दीव भारहं वास मिहिल

---

१. सम्माणेई जाव (क, ख, ग)।
२ सयाइ २ (ख)।
३. सपहारेइ (क); सपाहारेति (ख), पाहारेइ (ग)।
४. × (ख)।
५ सयसहस्स (ग, घ)।
६. स० पा०—वासे जाव असीइ च सयसहस्सा दलइत्तए। अत्र सक्षेपीकरणे किञ्चित् विपर्ययो जात, इति सभाव्यते।
७ स० पा०—करयल जाव पडिसुणेइ।

रायहाणिं कुंभगस्स रण्णो भवणंमि तिण्णि कोडिसया अट्ठासीइं च कोडीओ असीइं सयसहस्साइं—इमेयारूवं अत्थ-संपयाणं साहरह, साहरित्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥

१९६. तए णं ते जंभगा देवा वेसमणेणं देवेणं एवं वुत्ता समाणा जाव[1] पडिसुणेत्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमंति अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णंति, समोहणित्ता संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निसिरंति, जाव[2] उत्तरवेउव्वियाइं रूवाइं विउव्वंति, विउव्वित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव[3] देवगईए वीईवयमाणा-वीईवयमाणा जेणेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे जेणेव मिहिला रायहाणी जेणेव कुंभगस्स रण्णो भवणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता कुंभगस्स रण्णो भवणंसि तिण्णि कोडिसया जाव[4] साहरंति, साहरित्ता जेणेव वेसमणे देवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल[5]•परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु तमाणत्तियं° पच्चप्पिणंति ॥

१९७. तए णं से वेसमणे देवे जेणेव सक्के देविंदे देवराया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं जाव[6] तमाणत्तियं पच्चप्पिणइ ॥

१९८. तए णं मल्ली अरहा कल्लाकल्लिं जाव मागहओ पायरासो त्ति बहूणं सणाहाण य अणाहाण य पंथियाण य पहियाण य करोडियाण[7] य कप्पडियाण य 'एगमेगं हिरण्णकोडिं अट्ठ य अणूणाइं सयसहस्साइं—इमेयारूवं अत्थ-संपयाणं'[8] दलयइ ॥

१९९. तए णं कुंभए राया मिहिलाए रायहाणीए तत्थ-तत्थ तहिं-तहिं देसे-देसे बहूओ महाणससालाओ करेइ। तत्थ णं बहवे मणुया दिण्णभइ-भत्त-वेयणा विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडेंति। जे जहा आगच्छंति, तं जहा—पंथिया वा पहिया वा करोडिया वा कप्पडिया वा पासंडत्था वा गिहत्था वा, तस्स य तहा आसत्थस्स वीसत्थस्स सुहासणवरगयस्स तं विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं परिभाएमाणा परिवेसेमाणा[9] विहरंति ॥

२००. तए णं मिहिलाए नयरीए सिंघाडग[10]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु° बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ—एवं खलु देवाणुप्पिया! कुंभगस्स रण्णो भवणंसि सव्वकामगुणियं किमिच्छियं विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं

---

१. ना० १।८।१९५।
२, ३. राय० सू० १०।
४. ना० १।८।१९५।
५. सं० पा०—करयल जाव पच्चप्पिणंति।
६. ना० १।८।१९६।
७. काउडियाण (वृपा)।
८. एगमेगं हत्थामास ति वाचनान्तरे दृश्यते (वृ)।
९. परिवेसमाणा (क, ख)।
१०. सं० पा०—सिंघाडग जाव बहुजणो।

वहूण समणाण य[1] •माहणाण य सणाहाण य अणाहाण य पथियाण य पहियाण य करोडियाण य कप्पडियाण य परिभाइज्जइ° परिवेसिज्जइ[2]।

संगहणी-गाहा—

वरवरिया घोसिज्जइ, किमिच्छिय दिज्जए वहुविहीय ।
सुर-असुर देव-दाणव-नरिंद-महियाण निक्खमणे ॥१॥

२०१ तए ण मल्ली अरहा सवच्छरेण तिण्णि कोडिसया अट्ठासीइ च[3] कोडीओ असीइ सयसहस्साइ[4]—इमेयारूव अत्थ-सपयाण दलइत्ता निक्खमामि त्ति मण पहारेइ[5] ॥

२०२ तेण कालेण तेण समएण लोगतिया देवा वभलोए कप्पे रिट्ठे विमाणपत्थडे[6] सएहि-सएहि विमाणेहि सएहि-सएहि पासायवडिसएहि पत्तेय-पत्तेय चउहि सामाणियसाहस्सीहि तिहि परिसाहि सत्तहि अणिएहि सत्तहि अणियाहिवईहि सोलसहि आयरक्खदेवसाहस्सीहि अण्णेहि य वहूहि लोगतिएहि देवेहि सद्धि सपरिवुडा महयाऽहय-नट्ट-गीय-वाइय[7]-•तती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइग-पडुप्पवाइय° रवेण [विउलाइ भोगभोगाइ ?] भुजमाणा विहरति, त जहा—

संगहणी-गाहा

सारस्सयमाइच्चा, वण्ही वरुणा य गद्दतोया य ।
तुसिया अव्वावाहा, अग्गिच्चा चेव रिट्ठा य[8] ॥१॥

२०३ तए ण तेसि लोगतियाण देवाण पत्तेय-पत्तेय आसणाइ चलति तहेव जाव[9] त जीयमेय लोगतियाण देवाण अरहताण भगवताण निक्खममाणाण सबोहण करित्तए त्ति । त गच्छामो ण अम्हे वि मल्लिस्स अरहओ सवोहण करेमो त्ति कट्टु एव सपेहेति, सपेहेत्ता उत्तरपुरत्थिम दिसीभाग अवक्कमति, अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएण समोहण्णति, समोहणित्ता सखेज्जाइ जोयणाइ दड निसिरति, एव जहा जभगा जाव[10] जेणेव मिहिला रायहाणी जेणेव कुभगस्स रण्णो भवणे जेणेव मल्ली अरहा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अतलिक्ख-

---

१ स० पा०—समणाण य जाव परिवेसिज्जइ।
२ सूरासूरिय परिवेसिज्जइ—इति वाचनान्तरम् (वृ)।
३. च होति (क, ख, ग, घ)।
४ च सयसहस्सा (क, ख, ग, घ)।
५ पधारेति (ख, घ)।
६ विमाणे पत्थडे (ख, ग, घ)।
७ स० पा०—वाइय जाव रवेण।
८ क्वचिद् दशविधा एते व्याख्यायन्ते, अस्माभिस्तु स्थानाङ्गानुसारेणैवमभिहिता. (वृ)।
९. ना० १।८।१९४।
१० ना० १।८।१९६।

पडिवण्णा सखिखिणियाइं[1] •दसद्धवण्णाइं° वत्थाइं पवरं[2] परिहिया करयल[3]-•परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° ताहिं इट्ठाहिं[4] •कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं वग्गूहिं° एवं वयासी—बुज्झाहि भगवं लोगणाहा! पवत्तेहि धम्मतित्थं जीवाणं हियसुहनिस्सेयसकरं भविस्सइ त्ति कट्टु दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयंति, मल्लिं अरहं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ॥

२०४. तए णं मल्ली अरहा तेहिं लोगंतिएहिं देवेहिं संबोहिए समाणे जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल[5]•परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु°एवं वयासी—इच्छामि णं अम्मयाओ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे मुंडे भवित्ता[6] •णं अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए। अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेह ॥

२०५ तए णं कुंभए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! अट्ठसहस्सेणं सोवण्णियाणं कलसाणं जाव[7] अट्ठसहस्सेणं भोमेज्जाणं कलसाणं अण्णं च महत्थं[8] •महग्घं महरिहं विउलं° तित्थयराभिसेयं उवट्ठवेह। तेवि जाव उवट्ठवेंति ॥

२०६ तेणं कालेणं तेणं समएणं चमरे असुरिंदे जाव[9] अच्चुयपज्जवसाणा आगया ॥

२०७ तए णं सक्के देविंदे देवराया आभिओगिए देवे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! अट्ठसहस्सेणं सोवण्णियाणं कलसाणं जाव[10] अण्णं च[11] •महत्थं महग्घं महरिहं° विउलं तित्थयराभिसेयं उवट्ठवेह। तेवि जाव उवट्ठवेंति। तेवि कलसा 'तेसु चेव कलसेसु'[12] अणुपविट्ठा ॥

२०८ तए णं से सक्के देविंदे देवराया कुंभए य राया मल्लिं अरहं सीहासणंसि पुरत्थाभिमुहं निवेसेंति[13], अट्ठसहस्सेणं सोवण्णियाणं कलसाणं जाव[14] तित्थयराभिसेयं अभिसिंचंति ॥

२०९. तए णं मल्लिस्स भगवओ अभिसेए वट्टमाणे अप्पेगइया देवा मिहिलं च

---

१. सं० पा०—सखिखिणियाइं जाव वत्थाइं। अत्र वस्तुतः 'जाव परिहिए' इति संक्षेपो युज्यते। पूर्वसूत्रेष्वपि इत्थमेव लब्धत्वात् ॥
२ विभक्तिरहितं पदम्।
३. सं० पा०—करयल°।
४. सं० पा०—इट्ठाहिं जाव एवं।
५. सं० पा०—करयल°।
६ सं० पा०—भवित्ता जाव पव्वइत्तए।
७. राय० सू० २८०।
८ सं० पा०—महत्थं जाव तित्थयराभिसेयं।
९. जंबु° वक्खारो ५।
१० ना० १।८।२०५।
११ सं० पा०—अण्णं च तं विउलं।
१२ ते चेव कलसे (ख, ग)।
१३. निवेसेइ (क, ख, ग, घ)।
१४ ना० १।८।२०५।

सब्भितरबाहिरिय जाव[1] सव्वओ समता 'आधावति परिधावति'[2] ।।

२१० तए ण कुभए राया दोच्चपि उत्तरावक्कमण सीहासण रयावेइ, जाव[3] सव्वालकारविभूसिय करेइ, करेत्ता कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! मणोरम सीय उवट्ठवेह । तेवि उवट्ठवेति ।।

२११. तए ण सक्के देविंदे देवराया आभिओगिए देवे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अणेगखभसय-सण्णिविट्ठ जाव[4] मणोरम सीय उवट्ठवेह । तेवि जाव उवट्ठवेति । सावि सीया त चेव सीय अणुप्पविट्ठा ।।

२१२ तए ण मल्ली अरहा सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता जेणेव मणोरमा सीया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मणोरम सीय अणुपयाहिणीकरेमाणे[5] मणोरम सीय दुरुहइ, दुरुहित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे ।।

२१३. तए णं कुभए अट्ठारस सेणिप्पसेणीओ सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—तुब्भे ण देवाणुप्पिया ! ण्हाया जाव[6] सव्वालकारविभूसिया मल्लिस्स सीय परिवहह । तेवि जाव परिवहति ।।

२१४ तए णं सक्के देविंदे देवराया मणोरमाए सीयाए दक्खिणिल्ल[7] उवरिल्ल वाह गेण्हइ, ईसाणे उत्तरिल्ल उवरिल्ल वाह गेण्हइ, चमरे दाहिणिल्ल हेट्ठिल्ल, वली उत्तरिल्ल हेट्ठिल्ल, अवसेसा देवा जहारिह मणोरम सीय परिवहति ।

संगहणी-गाहा—

पुव्वि उक्खित्ता, माणुसेहि साहट्टरोमकूवेहिं[8] ।
पच्छा वहति सीय, असुरिंदसुरिंदनागिंदा ।।१।।
चलचवलकुडलधरा, सच्छदविउव्वियाभरणधारी ।
देविंददाणविंदा, वहति सीय जिणिदस्स ।।२।।

२१५ तए ण मल्लिस्स अरहओ मणोरम सीयं दुरुढस्स[9] समाणस्स इमे अट्ठट्ठमगला पुरओ अहाणुपुव्वीए सपत्थिया—एव निग्गमो जहा जमालिस्स[10] ।।

२१६ तए ण मल्लिस्स अरहओ निक्खममाणस्स अप्पेगइया देवा मिहिल रायहाणिं

---

१ राय० सू० २८१, जबु० वक्खारो ५ ।
२ सपरिधावति (क, ख, ग, घ) ।
३ ना० १।१।१२८ ।
४ ना० १।१।१२९ ।
५ ×(क), °करेमाणा (ग) ।
६ ना० १।८।१७६ ।
७ दक्खिणिल्लेण (ग) ।
८. °रोमपुलएहिं (आयारचूला १५।२८ गा० १२) ।
९ दुरुहस्स (ख, घ) ।
१० भगवत्या (९।३३) यथा जमालेर्निष्क्रमण तथेह वाच्य, इहैव यथा मेघकुमारस्य, नवर चमरधारितरुण्यादिषु शक्रेशानादीन्द्रप्रवेशत इह विशेष (वृ) । ओ० सू० ६४-६८ ।

अब्भिंतरबाहिरं आसिय-संमज्जिय-संमट्ठ-सुइ-रत्थंतरावणवीहियं करेंति 'जाव परिधावंति'[1] ॥

२१७ तए णं मल्ली अरहा जेणेव सहस्सववणे उज्जाणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीयाओ पच्चोरुहइ, 'आभरणालंकारं ओमुयइ ॥

२१८. तए णं पभावई हंसलक्खणेणं पडसाडएणं आभरणालंकारं पडिच्छइ'[2] ॥

२१९ तए णं मल्ली अरहा सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ ॥

२२०. तए णं सक्के देविंदे देवराया मल्लिस्स केसे पडिच्छइ, पडिच्छित्ता खीरोदग-समुद्दे साहरइ ॥

२२१ तए णं मल्ली अरहा नमोत्थु णं सिद्धाणं ति कट्टु सामाइयचरित्तं पडिवज्जइ । जं समयं च णं मल्ली अरहा सामाइयचरित्तं पडिवज्जइ, तं समयं च णं देवाणं माणुसाण य निग्घोसे तुडिय-णिणाए[3] गीय-वाइय[4]-निग्घोसे य सक्कवयणसंदे-सेणं निलुक्के यावि होत्था । जं समयं च णं मल्ली अरहा सामाइयचारित्तं[5] पडि-वण्णे तं समयं च मल्लिस्स अरहओ माणुसधम्माओ उत्तरिए मणपज्जवणाणे समुप्पण्णे ॥

२२२ मल्ली णं अरहा जे से हेमंताणं दोच्चे मासे चउत्थे पक्खे पोससुद्धे तस्स णं पोससुद्धस्स एक्कारसीपक्खेणं पुव्वण्हकालसमयंसि अट्ठमेणं भत्तेणं अपाणएणं अस्सिणीहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं तिहिं इत्थीसएहिं—अब्भिंतरियाए परि-साए, तिहिं पुरिससएहिं—बाहिरियाए परिसाए सद्धिं मुंडे भवित्ता पव्वइए ॥

२२३ मल्लिं अरहं इमे अट्ठ नायकुमारा अणुपव्वइंसु, तं जहा—

---

१. आसिय अब्भिंतरवासविहिं, गाहा जाव परिधावंति (क, ख, ग, घ), 'अप्पेगइया देवा मंचाइमंचकलियं करेंतीत्यादिमेघकुमार-निष्क्रमणोक्तनगरवर्णकस्य' तथा 'अप्पेगइया देवा हिरण्णवासं वासिंसु एवं सुवन्नवासं वासिंसु एवं रयण-वइर-पुप्फ-मल्ल-गंध-चुण्ण-आभरणवासं वासिंसु' इत्यादि वर्षासमूहस्य तथा 'अप्पेगइया देवा हिरण्णविहिं भाइंसु एवं सुवण्णविहिं भाइंसु' इत्यादिविधिसमूहस्य तीर्थंकरजन्माभिषेकोक्त-सग्रहार्था या क्वचिद् गाथा सन्ति ता अनुसृत्य सूत्रमध्येयं यावदप्पे-गइया देवा आधावंति परिधावंतीत्येतदवसान-मित्यर्थ । इदं च राजप्रश्नकृतादौ (सू० २८१) द्रष्टव्यमिति (वृ) । वृत्तिकृता निर्दिष्टो नगरवर्णको मेघकुमार-निष्क्रमणप्रकरणे नास्ति, किन्तु जन्मोत्सव-प्रकरणे लभ्यते । द्रष्टव्य १।१।७६ सूत्रम् । वृत्तिकृता पाठान्तररूपेण निर्दिष्टा गाथा आदर्शेषु प्रकटरूपेण न लभ्यन्ते वृत्तावपि लिखिता न सन्ति । ना० १।८।२०६ ।

२. आभरणालंकार पभावई पडिच्छइ (क, ख, ग, घ) असौ पाठः सक्षिप्तलिपिपद्धत्या कालक्रमेण अपूर्णो जातः । असौ च १।१।१४८ सूत्रमनुसृत्य पूरितः ।

३. णाए (ग) ।

४. वाइयपणिय (ग, घ) ।

५. सामाइय (क) ।

गाहा—

नंदे य नंदिमित्ते, सुमित्त बलमित्त भाणुमित्ते य।
अमरवइ अमरसेणे, महसेणे चेव अट्ठमए॥

२२४ तए णं ते भवणवइ-वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया देवा मल्लिस्स अरहओ निक्खमण-महिमं करेंति, करेत्ता जेणेव नंदीसरे[1] °दीवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अट्ठाहियं महिमं करेंति, करेत्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं° पडिगया॥

मल्लिस्स केवलणाण-पदं

२२५ तए णं मल्ली अरहा जं चेव दिवसं पव्वइए, तस्सेव दिवसस्स पच्चावरण्हकाल-समयंसि[2] असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टयंसि सुहासणवरगयस्स सुहेणं परिणामेणं पसत्थाहिं लेसाहिं तयावरण-कम्मरय-विकरणकरं अपुव्वकरणं अणुपविट्ठस्स अणंते[3] °अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे° केवल-वरनाणदंसणे समुप्पण्णे॥

२२६. तेणं कालेणं तेणं समएणं सव्वदेवाणं आसणाइं चलेंति, समोसढा धम्मं सुणेंति, सुणेत्ता जेणेव नंदीसरे दीवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अट्ठाहियं[4] महिमं करेंति, करेत्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं° पडिगया। कुंभए वि निग्गच्छइ।

जियसत्तुपामोक्खाणं पव्वज्जा-पदं

२२७ तए णं ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो जेट्ठपुत्ते रज्जे ठावेत्ता पुरिससहस्स-वाहिणीयाओ [सीयाओ ?] दुरूढा [समाणा ?] सव्विड्ढीए जेणेव मल्ली अरहा तेणेव उवागच्छंति जाव[5] पज्जुवासंति॥

२२८ तए णं मल्ली अरहा तीसे महइमहालियाए परिसाए, कुंभगस्स रण्णो, तेसिं च जियसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राईणं धम्मं परिकहेइ। परिसा जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया। कुंभए समणोवासए जाव पडिगए, पभावई य॥

२२९ तए णं जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो धम्मं सोच्चा निसम्म एवं वयासी— आलित्तए णं भंते! लोए, पलित्तए णं भंते! लोए, आलित्त-पलित्तए णं भंते!

---

१. सं० पा०—नंदीसरे अट्ठाहियं करेंति जाव पडिगया।
२ पुव्वावरण्ह° (क, ग, घ)।
३ सं० पा०—अणंते जाव समुप्पण्णे।
४ सं० पा०—अट्ठाहियं महानंदीसरं जामेव दिसं पाउ जाव पडिगए।
५ ओ० सू० ६९।

लोए जराए मरणेण य जाव[1] पव्वइया जाव[2] चोद्दसपुव्विणो। अणंते वरनाण-दंसणे केवले [समुप्पाडेत्ता तओ पच्छा ?] सिद्धा ॥

मल्लिस्स सिस्ससंपदा-पदं

२३०. तए णं मल्ली अरहा सहस्संबवणाओ उज्जाणाओ निक्खमइ, निक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

२३१. मल्लिस्स णं अरहओ भिसगपामोक्खा अट्ठावीसं गणा अट्ठावीसं गणहरा होत्था ॥

२३२. मल्लिस्स णं अरहओ चत्तालीसं समणसाहस्सीओ उक्कोसिया समणसंपया होत्था, बंधुमइपामोक्खाओ पणपन्नं अज्जियासाहस्सीओ उक्कोसिया अज्जिया-संपया होत्था, सावयाणं एगा सयसाहस्सी चुलसीइं सहस्सा, सावियाणं तिण्णि सयसाहस्सीओ पण्णट्ठिं च सहस्सा, छस्सया चोद्दसपुव्वीणं, वीसं सया ओहि-नाणीणं, बत्तीसं सया केवलनाणीणं, पणतीसं सया वेउव्वियाणं, अट्ठसया मणपज्जवनाणीणं, चोद्दससया वाईणं,[3] वीसं सया अणुत्तरोववाइयाणं ॥

२३३. मल्लिस्स णं अरहओ दुविहा अंतकरभूमी[4] होत्था, तं जहा—जुगंतकरभूमी परियायंतकरभूमी य। जाव वीसइमाओ पुरिसजुगाओ जुगंतकरभूमी दुवासपरियाए[5] अंतमकासी ॥

२३४. मल्ली णं अरहा पणुवीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं, वण्णेणं पियंगुसामे समचउरंस-संठाणे वज्जरिसहनाराय-संघयणे मज्झदेसे सुहंसुहेणं विहरित्ता जेणेव सम्मेए[6] पव्वए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सम्मेयसेलसिहरे पाओवगमणणुवन्ने[7] ॥

मल्लिस्स निव्वाण-पदं

२३५. मल्ली णं अरहा एगं वाससयं अगारवासमज्झे पणपण्णं वाससहस्साइं वाससय-ऊणाइं केवलिपरियागं पाउणित्ता पणपण्णं वाससहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता जे से गिम्हाणं पढमे मासे दोच्चे पक्खे चेत्तसुद्धे, तस्स णं चेत्तसुद्धस्स चउत्थीए पक्खेणं[8] भरणीए नक्खत्तेणं [जोगमुवागएणं ?] अद्धरत्तकालसमयंसि पंचहिं अज्जियासएहिं—अब्भिंतरियाए परिसाए, पंचहिं अणगारसएहिं—बाहिरियाए

---

१ ना० १।१।१४६,१५०।
२ भग० २।१।
३ वातीणं (ग)।
४. अंतगड० (घ)।
५ 'दुमासपरियाए' इति क्वचित् क्वचिच्च 'चउमासपरियाए' इति दृश्यते (वृ), दुवालस० (क) अशुद्धं प्रतिभाति।
६. सम्मेते (ग, घ)।
७. पाओवगमणुववण्णे (ख); पाओवगमणुवण्णे (ग)।
८. × (ख, ग)।

परिसाए, मासिएणं भत्तेण अपाणएणं वग्घारियपाणी 'पाए साहट्टु'[1] खीणे वेयणिज्जे आउए नामगोए सिद्धे। एव परिनिव्वाणमहिमा भाणियव्वा जहा जंबुद्दीवपण्णत्तीए,[2] नदीसरे अट्ठाहियाओ पडिगयाओ ॥

निक्खेव-पद

२३६. एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण अट्ठमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते।

—त्ति वेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धता निगमनगाथा—

उग्गतवसजमवओ, पगिट्ठफलसाहगस्स वि जयिस्स।
धम्मविसए वि सुहमा वि, होइ माया अणत्थाय ॥१॥
जह मल्लिस्स महावल-भवम्मि तित्थयरनामवधे वि।
तव-विसय-थेवमाया जाया जुवइत्त-हेउत्ति ॥२॥

---

१. × (ख, ग, घ)। २. वक्ष० २।

१० तए ण सा नावा तेण कालियवाएण आहुणिज्जमाणी-आहुणिज्जमाणी संचालिज्जमाणी-सचालिज्जमाणी सखोभिज्जमाणी-संखोभिज्जमाणी सलिल-तिक्ख-वेगेहि अइअट्टिज्जमाणी[1]-अइअट्टिज्जमाणी कोट्टिमंसि[2] करतलाहते विव तिंदूसए[3] तत्थेव-तत्थेव ओवयमाणी य उप्पयमाणी य, उप्पयमाणी विव धरणीयलाओ सिद्धविज्जा विज्जाहरकन्नगा, ओवयमाणी विव गगणतलाओ भट्ठविज्जा विज्जाहरकन्नगा, विपलायमाणी विव महागरुल-वेग-वित्तासिय भुयगवरकन्नगा, धावमाणी विव महाजण-रसियसद्द-वित्तत्था ठाणभट्ठा आसकिसोरी, निगुजमाणी विव गुरुजण-दिट्ठावराहा सुजणकुलकन्नगा, घुम्ममाणी विव वीचि[4]-पहार-सय-तालिया[5], गलिय-लवणा विव गगणतलाओ[6], रोयमाणी विव सलिलगंथि[7]-विप्पइर-माण-थोरसुवाएहि नववहू उवरयभत्तुया, विलवमाणी विव परचक्करायाभिरोहिया परममहब्भयाभिद्दुया महापुरवरी, झायमाणी विव कवड-च्छोमण-पओगजुत्ता जोगपरिव्वाइया, नीससमाणी विव महाकंतार-विणिग्गय-परिस्सता परिणयवया अम्मया, सोयमाणी विव तव-चरण-खीण-परिभोगा चवणकाले देववरवहू, सचुण्णियकट्ठ-कूवरा, भग्गमेढि-मोडिय-सहस्समाला, सूलाइय[8]-वकपरिमासा[9], फलहतर-तडतडेत-फुट्टत-सधिवियलंत-लोहकीलिया[10], सव्वग-वियभिया, परिसडियरज्जुविसरतसव्वगत्ता, आमगमल्ल-गभूया, अकयपुण्ण-जणमणोरहो विव चिंतिज्जमाणगुरुई[11] हाहाक्कय[12]-कण्णधार-नाविय-वाणियगजण-कम्मकर[13]-विलविया नाणाविह-रयण-पणिय-सपुण्णा वहूहि पुरिससएहि रोयमाणेहि कंदमाणेहि सोयमाणेहि तिप्पमाणेहि विलव-माणेहि एग मह अतोजलगय गिरिसिहरमासाइत्ता सभग्गकूवतोरणा मोडियज्झयदडा वलयसयखडिया करकरस्स तत्थेव विद्दव उवगया ॥

११. तए ण तीए नावाए भिज्जमाणीए ते वहवे पुरिसा विपुल-पणिय-भंडमायाए अतोजलमि निमज्जाविया[14] यावि होत्था ॥

१२ तए ण ते मागदिय-दारगा छेया दक्खा पत्तट्ठा कुसला मेहावी[15] निउणसिप्पो-

---

१ अइयट्टि° (क, ख), अइवट्टि° (क्व) ।
२. कोट्टिम (क, ख, घ) ।
३. तेदूसए (क) ।
४. वीयी (क), वीती (ख, ग) ।
५ ताडिता हि स्त्री वेदनया घूर्णयन्तीत्येव-मुपमान द्रष्टव्यम् (वृ) ।
६ पतितेति गम्यते (वृ); क्वचित्तु 'गलितल-वना' इत्येतावदेव दृश्यते ।
७ °गठि (घ) ।
८ सूलातित (वृपा) ।
९. °पारिमासा (क, ख) ।
१०. °खीलिया (क, ख, ग) ।
११. °गुरुती (ख, ग, घ) ।
१२ हाहाकय (क) ।
१३ कम्मगार (क); कम्मकार (ग, घ) ।
१४. निवज्जाविया (ख) ।
१५. मेहाविणो (क) ।

वगया बहूसु[1] पोयवहण-सपराएसु कयकरणा लद्धविजया अमूढा अमूढहत्था एग मह फलगखडं आसादेति ॥

रयणदीव-पदं

१३ जसि[2] च ण पएससि से पोयवहणे विवण्णे तंसि[3] च ण पएससि एगे मह रयणदीवे नाम दीवे होत्था—अणेगाइ जोयणाइ आयामविक्खभेण अणेगाइ जोयणाइ परिक्खेवेण नाणादुमसड-मडिउद्देसे सस्सिरीए पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ।

'तस्स[4] बहुमज्झदेसभाए, एत्थ[5] ण मह एगे पासायवडेंसए 'यावि होत्था'[6]—अब्भुग्गयमूसिय-पहसिए जाव[7] सस्सिरीयरूवे पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ।

तत्थ ण पासायवडेसए रयणदीव[8]-देवया नाम देवया परिवसइ—पावा चडा रुद्दा खुद्दा साहस्सिया[9] ।

तस्स ण पासायवडेसयस्स चउद्दिसि चत्तारि वणसडा—किण्हा किण्होभासा[10] ॥

१४ तए ण ते माकदिय-दारगा तेण फलयखडेंण 'ओवुज्झमाणा-ओवुज्झमाणा'[11] रयणदीवतेण सवूढा यावि होत्था ॥

१५ तए ण ते मागदिय[12]-दारगा थाह लभति,[13] मुहुत्ततर आससति, फलगखड विसज्जेति, रयणदीव उत्तरति, फलाण मग्गण-गवेसण करेंति, फलाइ आहारेति, नालिएराण मग्गण-गवेसण करेंति, नालिएराइ[14] फोडेति, नालिएरतेल्लेण[15] अण्णमण्णस्स गायाइ अब्भगेति, पोक्खरणीओ ओगाहेति, जलमज्जण करेति,[16]● पोक्खरणीओ° पच्चुत्तरति, पुढविसिलावट्टयसि निसीयति, निसीइत्ता आसत्था वीसत्था सुहासणवरगया चप नयरिं अम्मापिउआपुच्छण च लवण-समुद्दोत्तारण च कालियवायसम्मुच्छण च पोयवहणविवत्ति च फलयखडस्सा-

---

१ बहुसु (ग, घ) ।
२ जेंसि (क, ग, घ) ।
३. तेंमि (ख, ग, घ) ।
४ तस्स ण (क, ख, घ) ।
५. तत्थ (क, ख) ।
६. होत्था (क), × (ख) ।
७ ना० १।१।८६ ।
८ रयणद्दीव (ख) ।
९ साहसिया (क्व°) ।
१० पू०—ना० १।७।१३ ।
११ ओवु° २ (ख) ।
१२ माकदिय (क्व) ।
१३ लहति (ख, ग) ।
१४ नालियराय (ख) ।
१५ °तिल्लेणं (क), नालियर° (ख), नालियरस्स (ग, घ) ।
१६. स० पा०—करेंति जाव पच्चुत्तरति ।

नवमं अज्झयणं

मायंदी

उक्खेव-पदं

१ जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[1] संपत्तेणं अट्ठमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, नवमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स[2] के अट्ठे पण्णत्ते ?

२ एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी[3] । पुण्णभद्दे चेइए ।।

३ तत्थ[4] णं मायंदी नामं सत्थवाहे परिवसइ—अड्ढे[5] । तस्स णं भद्दा नामं भारिया । तीसे णं भद्दाए अत्तया दुवे सत्थवाहदारया होत्था, तं जहा - जिणपालिए य जिणरक्खिए य ।।

मागंदिय-दारगाणं समुद्द-जत्ता-पदं

४. तए णं तेसिं मागंदिय-दारगाणं अण्णया कयाइ एगयओ सहियाणं[6] इमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अम्हे लवणसमुद्दं पोयवहणेणं एक्कारसवाराओ[7] ओगाढा । सव्वत्थ वि य णं लद्धट्ठा कयकज्जा अणहसमग्गा[8] पुणरवि नियघरं हव्वमागया । तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! दुवालसंपि[9] लवणसमुद्दं पोयवहणेणं ओगाहित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता

---

१. ना० १।१।७ ।

२. नायज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं (क, ख, ग, घ) ।

३. नयरी पुव्ववन्नओ (ख), नयरी पुव्वुत्त (ग) ।

४ एत्थ (ख) ।

५. पू०—ना० १।२।७ ।

६ पू०—ना० १।३।७ ।

७ °वारा (ख, ग, घ) ।

८. अणहसमुग्गा (ख), अणट्ठ ° (ग) ।

९. दुवालसमपि (क) ।

एव वयासी एव खलु अम्हे अम्मयाओ ! लवणसमुद्द पोयवहणेण एक्कारसवाराओ[1] •ओगाढा। सव्वत्थ वि य णं लद्धट्ठा कयकज्जा अणहसमग्गा पुणरवि° नियघर हव्वमागया। त इच्छामो णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणा दुवालसपि[2] लवणसमुद्द पोयवहणेण ओगाहित्तए ।।

५ तए ण ते मागंदिय-दारए अम्मापियरो एव वयासी—इमे भे जाया ! अज्जय[3]-•पज्जय-पिउपज्जयागए सुबहु हिरण्णे य सुवण्णे य कसे य दूसे य मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-सतसार-सावएज्जे य अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवसाओ पगाम दाउं पगाम भोत्तु पगाम° परिभाएउ। त अणुहोह ताव जाया ! विपुले माणुस्सए इड्ढीसक्कारसमुदए। कि भे सपच्चा-वाएण निरालवणेण लवणसमुद्दोत्तारेण ? एव खलु पुत्ता ! दुवालसमी जत्ता सोवसग्गा यावि भवइ। त मा ण तुब्भे दुवे पुत्ता ! दुवालसपि[4] लवण[5]•समुद्द पोयवहणेण° ओगाहेह। मा हु तुब्भ सरीरस्स वावत्ती भविस्सइ ।।

६ तए ण ते मागदिय-दारगा अम्मापियरो दोच्चपि तच्चपि एव वयासी—एव खलु अम्हे अम्मयाओ ! एक्कारसवाराओ लवण[6] •समुद्द पोयवहणेण ओगाढा। सव्वत्थ वि य ण लद्धट्ठा कयकज्जा अणहसमग्गा पुणरवि नियघर हव्वमागया। त सेय खलु अम्ह अम्मयाओ ! दुवालसपि लवणसमुद्द पोयवहणेण° ओगाहित्तए ।।

७ तए ण ते मागदिय-दारए अम्मापियरो जाहे नो सचाएति बहूहिं आघवणाहि य पण्णवणाहि य आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा ताहे अकामा चेव एयमट्ठ अणुमण्णित्था ।।

८ तए ण ते मागदिय-दारगा अम्मापिऊहि अब्भणुण्णाया समाणा गणिम च धरिम च मेज्ज च पारिच्छेज्ज च भडग गेण्हति, जहा अरहन्नगस्स जाव[7] लवणसमुद्द बहूइ जोयणसयाइं ओगाढा ।।

नावा-भग-पदं

९ तए ण तेसिं मागदिय-दारगाण लवणसमुद्द अणेगाइ जोयणसयाइ ओगाढाण समाणाणं अणेगाइ उप्पाइयसयाइ पाउब्भूयाइ, त जहा—अकाले[8] गज्जिए[9] •अकाले विज्जुए अकाले° थणियसद्दे कालियवाए जाव[10] समुट्ठिए ।।

---

१ स० पा० वाराओ त चेव जाव नियघर।
२ दुवालस (क, ख, ग, घ)।
३ स० पा०—अज्जग जाव परिभाएत्तए।
४ दुवालसमपि (क, ख)।
५. स० पा०—लवण जाव ओगाहेह।
६ स० पा०—लवण जाव ओगाहित्तए।
७. ना० १।८।६६-७०।
८. अगाले (क), अयाले (ख)।
९ स० पा०—गज्जिय जाव थणियसद्दे।
१०. तत्थ (क्व)।

सायणं च रयणदीवोत्तारं[1] च अणुचिंतेमाणा-अणुचिंतेमाणा ओहयमणसंकप्पा[2] •करतलपल्हत्थमुहा अट्टज्झाणोवगया° झियायंति ।।

रयणदीवदेवया-पदं

१६. तए णं सा रयणदीवदेवया ते मागंदिय-दारए ओहिणा आभोएइ, असि-खेडग[3]-वग्ग-हत्था सत्तट्ठतलप्पमाणं उड्ढं वेहासं उप्पयइ, उप्पइत्ता ताए उक्किट्ठाए जाव[4] देवगईए वीईवयमाणी-वीईवयमाणी जेणेव मागंदिय-दारया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता आसुरत्ता[5] ते मागंदिय-दारए खर-फरुस-निट्ठुर-वयणेहिं एवं वयासी—हंभो मागंदिय-दारया[6] ! जइ णं तुब्भे मए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरह, तो[7] भे अत्थि जीवियं । अहण्णं तुब्भे मए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा नो विहरह, तो[8] भे इमेणं नीलुप्पल-गवलगुलिय[9]-•अयसिकुसुमप्पगासेणं° खुरधारेणं असिणा रत्तगंडमंसुयाइं माउआहिं उवसोहियाइं तालफलाणि[10] व सीसाइं[11] एगंते एडेमि ।।

१७. तए णं ते मागंदिय-दारगा रयणदीवदेवयाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म भीया करयल[12]•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° एवं वयासी—जण्णं देवाणुप्पिया वइस्सति[13] तस्स आणा-उववाय-वयण-निद्देसे चिट्ठिस्सामो ।।

१८. तए णं सा रयणदीवदेवया ते मागंदिय-दारए गेण्हइ, जेणेव पासायवडेंसए तेणेव उवागच्छइ, असुभपोग्गलावहारं करेइ, सुभपोग्गलपक्खेवं करेइ, तओ पच्छा तेहिं[14] सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरइ, कल्लाकल्लिं च अमयफलाइं उवणेइ ।।

रयणदीवदेवयाए मागंदिय-पुत्ताणं निद्देस-पदं

१९. तए णं सा रयणदीवदेवया सक्कवयण-संदेसेणं सुट्ठिएणं लवणाहिवइणा लवण-समुद्दे तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टेयव्वे त्ति जं किंचि तत्थ तणं वा पत्तं वा कट्ठं वा

---

१. रयणद्दीवुत्तारं (क, ख) ।
२. सं० पा०—ओहयमणसंकप्पा जाव झियायंति ।
३. फलग (ख, ग, घ), वृत्तौ 'खेडग' शब्दस्यार्थः फलकोस्ति । उत्तरवर्त्यादर्शेषु 'फलक' पदस्यैव मूलपाठे स्वीकृतिर्जाता ।
४. राय० सू० १० ।
५. आसुरुत्ता (क, ख) ।
६. °दारया अप्पत्थियपत्थिया (क) ।
७. ता (ग) ।
८. ता (ग) ।
९. सं० पा०—गवलगुलिय जाव खुरधारेणं ।
१०. तालियफलाणि (क) ।
११. छित्त्वेति वाक्यशेषः (वृ) ।
१२. सं० पा०—करयल जाव एवं ।
१३. वतिस्सइ (ग) ।
१४. एहिं (ग) ।

कयवर[1] वा असुइ पूइयं[2] दुरभिगंधमचोक्खं, तं सव्वं आहुणिय-आहुणिय तिसत्तखुत्तो एगंते एडेयव्व त्ति कट्टु निउत्ता ॥

२० तए णं सा रयणदीवदेवया ते मागंदिय-दारए एवं वयासी—एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! सक्कवयण-संदेसेणं सुट्ठिएणं लवणाहिवइणा तं चेव जाव[3] निउत्ता । तं जाव[4] अहं देवाणुप्पिया ! लवणसमुद्दे[5] ॰तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टित्ता जं किंचि तत्थ तणं वा पत्तं वा कट्ठं वा कयवरं वा असुइ पूइयं दुरभिगंधमचोक्खं, तं सव्वं आहुणिय-आहुणिय तिसत्तखुत्तो एगंते॰ एडेमि ताव तुब्भे इहेव पासायवडेंसए सुहंसुहेणं अभिरममाणा चिट्ठह । जइ णं तुब्भे एयंसि अंतरंसि उव्विग्गा वा 'उस्सुया वा उप्पुया'[6] वा भवेज्जाह तो णं तुब्भे पुरत्थिमिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह । तत्थ णं दो उऊ सया साहीणा, तं जहा—पाउसे य वासारत्ते य ।

गाहा—

तत्थ उ[7]—कंदल - सिलिंध - दंतो, निउर - वरपुप्फपीवरकरो ।
कुडयज्जुण-नीव-सुरभिदाणो, पाउसउऊ गयवरो साहीणो ॥१॥

तत्थ य—सुरगोवमणि - विचित्तो, दद्दुरकुलरसिय-उज्झररवो ।
बरहिणवंद[8]-परिणद्धसिहरो, वासारत्तउऊ पव्वओ साहीणो ॥२॥

तत्थ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! बहूसु वावीसु य जाव[9] सरसरपंतियासु य बहूसु आलीघरएसु य मालीघरएसु य जाव[10] कुसुमघरएसु य सुहंसुहेणं अभिरममाणा-अभिरममाणा विहरिज्जाह । जइ णं तुब्भे तत्थ वि उव्विग्गा वा उस्सुया वा उप्पुया वा भवेज्जाह तो णं तुब्भे उत्तरिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह । तत्थ णं दो उऊ सया साहीणा, तं जहा—सरदो य हेमंतो य ।

गाहा—

तत्थ उ—सण - सत्तिवण्ण - कउहो, नीलुप्पल - पउम - नलिण-सिंगो ।
सारस - चक्काय - रवियघोसो, सरयउऊ गोवई साहीणो ॥३॥

तत्थ य—'सियकुंद-धवलजोण्हो'[11], कुसुमिय-लोद्धवणसंड-मंडलतलो ।
तुसार-दगधार-पीवरकरो, हेमंतउऊ ससी सया साहीणो ॥४॥

---

१. केयवर (क) ।
२. पूय (ख) ।
३. ना० १।८।१९ ।
४ जाव ताव (क) ।
५. सं० पा०—लवणसमुद्दे जाव एडेमि ।
६. ॰उप्पया (क); उप्पित्था वा उस्सुया (वृ), उप्पुया वा उस्सुया (वृपा) ।
७ य (क) ।
८. ॰विंद (ग) ।
९. राय० सू० १७४ ।
१०. राय० सू० १८२ ।
११ ॰जुण्हो (ख), सितकुंदविमलजोण्हो (वृपा) ।

तत्थ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! बहूसु वावीसु य[1] °जाव सरसरपंतियासु य बहूसु आलीघरएसु य मालीघरएसु य जाव कुसुमघरएसु य सुहंसुहेण अभिरममाणा-अभिरममाणा° विहरिज्जाह। जइ णं तुब्भे तत्थ वि उव्विग्गा वा उस्सुया वा उप्पुया वा भवेज्जाह तो णं तुब्भे अवरिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह। तत्थ णं दो उऊ सया साहीणा तं जहा—वसंते य गिम्हे य।

गाहा—

तत्थ उ—सहकार - चारुहारो, किंसुय - कण्णियारासोगमउडो।
ऊसियतिलग - बकुलायवत्तो, वसंतउऊ नरवई साहीणो ॥५॥

तत्थ य—पाडल - सिरीस - सलिलो, मल्लिया-वासतिय-धवलवेलो।
सीयलसुरभि-निल[2]-मगरचरिओ, गिम्हउऊ सागरो साहीणो ॥६॥

तत्थ णं बहूसु[3] °वावीसु य जाव सरसरपंतियासु य बहूसु आलीघरएसु य मालीघरएसु य जाव कुसुमघरएसु य सुहंसुहेण अभिरममाणा-अभिरममाणा° विहरेज्जाह। जइ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! तत्थ वि उव्विग्गा वा उस्सुया वा उप्पुया वा भवेज्जाह तओ तुब्भे जेणेव पासायवडेंसए तेणेव उवागच्छेज्जाह ममं पडिवाले-माणा-पडिवालेमाणा चिट्ठेज्जाह, मा णं तुब्भे दक्खिणिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह। तत्थ णं महं एगे उग्गविसे[4] चंडविसे घोरविसे[5] अइकाए[6] महाकाए[7] मसि-महिस[8]-मूसा[9]-कालए नयणविसरोसपुण्णे[10] अंजणपुंज-नियरप्पगासे रत्तच्छे जमल-जुयल-चंचल-चलंतजीहे धरणितल-वेणिभूए उक्कड-फुड-कुडिल-जडुल[11]-कक्खड[12]-वियड-फडाडोव[13]-करणदच्छे लोहागर-धम्ममाण[14]-धमधमेंतघोसे अणागलिय-चंडतिव्वरोसे 'समुहिय-तुरिय-चवलं'[15] धमंते[16] दिट्ठीविसे सप्पे परिवसइ। मा णं

---

१. स० पा०—वावीसु य जाव विहरेज्जाह।
२. अनिल (क, ख, ग, घ); इह वा अनिल-शब्दस्य अकारलोपः प्राकृतत्वात् (वृ)।
३. स० पा०—बहूसु जाव विहरेज्जाह।
४ भोगविसे (वृपा)।
५. घोरविसे महाविसे (क)।
६ अइकाय (क, ख, ग, घ)।
७. °काए जहा तेयनिसग्गे (वृ); वृत्तिगत-व्याख्यया इति प्रतीयते वृत्तिकारस्य सम्मुखे ये आदर्शा आसंस्तेषु 'जहा तेय-निसग्गे' इति संक्षिप्तः पाठ आसीत्, अतएव वृत्तिकृता लिखितम्—जहा तेयनिसग्गेति—शेषविशेषणानि यथा गोशालकचरिते तथेहाध्येतव्यानीत्यर्थः। तानि चैतानि—मसि-महिस°।
८. महिसा (क, ख)।
९. मूस (घ)।
१०. पुण्णए (ख)।
११. जडिल (क्व०)।
१२. कक्कड (क, ख)।
१३ फलाडोव (ख); फणाडोव (घ)।
१४. लोहमितिगम्यते।
१५. समुहिं तुरियचवलं (क, ग), समुहिं तुरिय चवल (ख)।
१६. धमधमंते (ग)।

तुब्भ सरीरगस्स वावत्ती भविस्सइ—ते मागदिय-दारए दोच्चंपि तच्चपि एवं वदति, वदित्ता वेउव्वियसमुग्घाएण समोहण्णइ, समोहणित्ता ताए उक्किट्ठाए[1] देवगईए लवणसमुद्द तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टेउ पयत्ता यावि होत्था ॥

मागंदियपुत्ताणं वणसडगमण-पदं

२१ तए ण ते मागदिय-दारया तओ मुहुत्ततरस्स पासायवडेसए सइ वा रइं वा धिइं वा अलभमाणा अण्णमण्ण एवं वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया! रयणदीव-देवया अम्हे एव वयासी—एव खलु अह सक्कवयण-सदेसेण सुट्ठिएणं लवणा-हिवइणा[2] निउत्ता जाव[3] मा ण तुब्भ सरीरगस्स वावत्ती भविस्सइ। त सेयं खलु अम्ह देवाणुप्पिया! पुरत्थिमिल्ल वणसड गमित्तए—अण्णमण्णस्स एयमट्ठ पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता जेणेव पुरत्थिमिल्ले वणसंडे तेणेव उवागच्छति। तत्थ ण वावीसु य जाव[4] आलीघरएसु य जाव[5] सुहसुहेण अभिरममाणा-अभिरम-माणा विहरति ॥

२२ तए णं ते मागदिय-दारगा तत्थ वि सइं वा[6] °रइं वा धिइ वा° अलभमाणा जेणेव उत्तरिल्ले वणसंडे तेणेव उवागच्छति। तत्थ ण वावीसु य जाव[7] आली-घरएसु य[8] सुहसुहेण अभिरममाणा-अभिरममाणा विहरति ॥

२३ तए ण ते मागदिय-दारगा तत्थ वि सइं वा[9] °रइ वा धिइं वा अलभमाणा° जेणेव पच्चत्थिमिल्ले वणसडे तेणेव उवागच्छति। तत्थ ण वावीसु य जाव[10] आलीघरएसु य[11] सुहसुहेण अभिरममाणा-अभिरममाणा विहरति ॥

२४ तए ण ते मागदिय-दारगा तत्थ वि सइ वा[12] रइं वा धिइ वा° अलभमाणा अण्ण-मण्ण एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया! अम्हे रयणदीवदेवया एव वयासी—एव खलु अह देवाणुप्पिया! सक्कवयण-सदेसेण सुट्ठिएणं लवणाहिवइणा[13] निउत्ता जाव[14] मा ण तुब्भ सरीरगस्स वावत्ती भविस्सइ। त भवियव्व एत्थ कारणेण। त सेय खलु अम्ह दक्खिणिल्ल वणसडं गमित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठ पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता जेणेव दक्खिणिल्ले वणसडे तेणेव पहारेत्थ गमणाए। तओ णं गधे निद्धाइ, से जहानामए—अहिमडे इ वा जाव[15] अणिट्ठतराए चेव[16] ॥

१. पू०—राय० सू० १० ।
२ पू०—ना० १।९।२० ।
३,४,५ ना० १।९।२० ।
६ स० पा०—सइ वा जाव अलभमाणा ।
७. ना० १।९।२० ।
८ पू०—ना० १।९।२० ।
९. स० पा०—सइ वा जाव जेणेव ।
१०. ना० १।९।२० ।
११ पू०—ना० १।९।२० ।
१२ सं० पा०—सइ वा जाव अलभमाणा ।
१३. पू०—ना० १।९।२० ।
१४. ना० १।९।२० ।
१५. ना० १।८।४२ ।
१६ पू०—ना० १।८।४२ ।

२५. तए ण ते मागंदिय-दारगा तेणं असुभेणं गंधेणं अभिभूया समाणा सएहिं-सएहिं उत्तरिज्जेहिं आसाइ 'पिहेति, पिहेत्ता'[1] जेणेव दक्खिणिल्ले वणसडे तेणेव उवागया। तत्थ ण महं एगं आघयण[2] पासति—अट्ठियरासि-सय-सकुल भीम-दरिसणिज्ज। एग च तत्थ सूलाइयं[3] पुरिसं कलुणाइ कट्ठाइ विस्सराइ कूवमाणं[4] पासति, भीया[5] °तत्था तसिया उव्विग्गा° संजायभया जेणेव से सूलाइए पुरिसे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तं सूलाइयं पुरिसं एवं वयासी—एस ण देवाणुप्पिया! कस्साघयणे? तुम च णं के कओ वा इह हव्वमागए? केण[6] वा इमेयारूव आवय पाविए[7]?

२६ तए णं से सूलाइए पुरिसे ते मागंदिय-दारगे एव वयासी—एस ण देवाणुप्पिया! रयणदीवदेवयाए आघयणे। अह ण देवाणुप्पिया! जवुद्दीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ कागदए[8] आसवाणियए विपुल[9] पणियभडमायाए पोयवहणेण लवणसमुद्द ओयाए। तए ण अहं पोयवहण-विवत्तीए निव्वुड्ड-भडसारे एग फलगखड आसाएमि। तए ण अह ओवुज्झमाणे-ओवुज्झमाणे रयणदीवतेण सवूढे। तए णं सा रयणदीवदेवया मम पासइ, पासित्ता मम गेण्हइ, गेण्हित्ता मए सद्धि विउलाइ भोगभोगाइ भुजमाणी विहरइ। तए ण सा रयणदीवदेवया अण्णया कयाइ अहालहुसगसि अवराहसि परिकुविया समाणी मम एयारूव आवय[10] पावेइ। त न नज्जइ ण देवाणुप्पिया! तुब्भ पि इमेसि सरीरगाण का मण्णे आवई भविस्सइ?

२७ तए ण ते मागदिय-दारगा तस्स सूलाइगस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म बलियतर भीया[11] °तत्था तसिया उव्विग्गा° सजायभया सूलाइय पुरिस एव वयासी—कहण्ण देवाणुप्पिया! अम्हे रयणदीवदेवयाए हत्थाओ साहत्थि नित्थरेज्जामो[12]?

२८ तए ण से सूलाइए पुरिसे ते मागदिय-दारगे एव वयासी—एस ण देवाणुप्पिया!

---

१. पेहेति २ (ख)।

२. आहयण (क), आघतेण (ख, घ)।

३ सूलाइतय (क), मूलायय (ख), वृत्तौ एकस्मिन्नादर्शे 'सूलाइग' अपरस्मिश्च 'सूलाइयग' इति पाठ-सकेतो दृश्यते। शूलिकाभिन्नमिति च व्याख्यातमस्ति।

४. कुव्वमाण (ख,ग,घ)। वृत्तौ—कूजन्तव्यक्तं शब्दायमान, इति दृश्यते, तत. कुव्वमाण अशुद्ध प्रतिभाति।

५ स० पा०—भीया जाव सजायभया।

६. केणइ (क), केणे (ख)।

७. पाविएसि (क)।

८. कागदिए (घ), काकदए (ख)।

९. विपुल (ख, घ), विउल (ग)।

१०. आवइ (क, ख), आवर्ति (ग, घ)।

११. स० पा०—भीया जाव सजायभया।

१२. नित्थरिज्जामो (ख)।

पुरत्थिमिल्ले वणसडे सेलगस्स जक्खस्स जक्खाययणे सेलए नाम आसरूवधारी जक्खे परिवसइ। तए णं से सेलए जक्खे चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु आगय-समए पत्तसमए महया-महया सद्देण एव वदइ—क तारयामि ? क पालयामि ? त गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! पुरत्थिमिल्ल वणसड सेलगस्स जक्खस्स महरिह पुप्फच्चणियं करेह, करेत्ता जन्नुपायवडिया पजलिउडा[1] विणएण पज्जुवासमाणा विहरह[2]। जाहे ण से सेलए जक्खे आगयसमए पत्तसमए एव वएज्जा—क तारयामि ? क पालयामि ? ताहे तुब्भे 'एव वदह'[3]—अम्हे तारयाहि अम्हे पालयाहि। सेलए भे जक्खे पर रयणदीवदेवयाए हत्थाओ साहत्थि नित्थारेज्जा। अण्णहा भे न याणामि इमेसिं सरीरगाण का मण्णे आवई भविस्सइ ?

सेलगजक्ख-पद

२९ तए ण ते मागदिय-दारगा तस्स सूलाइयस्स पुरिसस्स अंतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्मा सिग्घ चड चवल तुरिय वेइयं जेणेव पुरत्थिमिल्ले वणसडे जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोक्खरिणि ओगाहेंति, ओगाहेत्ता जलमज्जण करेंति, करेत्ता जाइं तत्थ उप्पलाइं जाव[4] ताइ गेण्हति, गेण्हित्ता जेणेव सेलगस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता आलोए पणाम करेति, करेत्ता महरिह पुप्फच्चणिय करेति, करेत्ता जन्नुपायवडिया[5] सुस्सूसमाणा नमसमाणा पज्जुवासति ॥

३० तए णं से सेलए जक्खे आगयसमए पत्तसमए एव वयासी—क तारयामि ? क पालयामि ?

३१ तए ण ते मागदिय-दारगा उट्ठाए उट्ठेति, उट्ठेत्ता करयल[6]°परिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु° एव वयासी—अम्हे तारयाहि अम्हे पालयाहि ॥

३२. तए ण से सेलए जक्खे ते मागदिय-दारए एव वयासी[7]—एव खलु देवाणुप्पिया ! तुब्भ मए सद्धि लवणसमुद्दं मज्झमज्झेण वीईवयमाणाण सा रयण-दीवदेवया पावा चडा रुद्दा खुद्दा साहसिया बहूहि खरएहि य मउएहि य अणुलोमेहि य पडिलोमेहि य सिंगारेहि य कलुणेहि य उवसग्गेहिं उवसग्ग करेहिइ। त जइ ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! रयणदीवदेवयाए एयमट्ठ आढाह वा परियाणह वा अवयक्खह वा तो भे अह पट्ठाओ[8] विहुणामि[9]। 'अह ण'[10] तुब्भे

---

१ पजलियडा (ख), अजलिउडा (ग)।
२ चिट्ठह (क)।
३. वदह (क), वइज्जह (ख)।
४ ना० १।२।१४।
५. °पडिया य (ग)।
६ स० पा०—करयल°।
७. वदइ (क)।
८. पट्ठतो (ख), पुट्ठाओ (घ)।
९. विघुणामि (क), विहूणामि (ख)।
१०. अहृण्ण (ग)।

रयणदीवदेवयाए एयमट्ठं नो आढाह नो परियाणह नो अवयक्खह तो भे रयणदीवदेवयाए हत्थाओ साहत्थिं नित्थारेमि ॥

३३ तए णं ते मागंदिय-दारगा सेलगं जक्खं एवं वयासी—जं णं देवाणुप्पिया वइस्संति[1] तस्स णं [आणा ?] उववाय-वयण-निद्देसे चिट्ठिस्सामो ॥

३४ तए णं से सेलए जक्खे उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ, समोहणित्ता संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निस्सिरइ, दोच्चंपि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ, समोहणित्ता एगं महं आसरूवं विउव्वइ, विउवित्ता मागंदिय-दारए एवं वयासी—हं भो मागंदिय-दारया ! आरुहह णं देवाणुप्पिया ! मम पट्ठंसि ॥

३५. तए णं ते मागंदिय-दारया हट्ठा सेलगस्स जक्खस्स पणामं करेंति, करेत्ता सेलगस्स पट्ठं दुरूढा ॥

३६. तए णं से सेलए ते मागंदिय-दारए पट्ठं दुरूढे जाणित्ता सत्तट्ठतलप्पमाणमेत्ताइं उड्ढं वेहासं उप्पयइ[2], उप्पइत्ता ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए चंडाए दिव्वाए देवगईए लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं जेणेव जंबुद्दीवे दीवे जेणेव भारहे वासे जेणेव चंपा नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

रयणदीवदेवया-उवसग्ग-पदं

३७. तए णं सा रयणदीवदेवया लवणसमुद्दं तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टइ, जं तत्थ तणं वा जाव[3] एगंते एडेइ, जेणेव पासायवडेंसए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ते मागंदिय-दारए पासायवडेंसए अपासमाणी जेणेव पुरत्थिमिल्ले वणसंडे तेणेव उवागच्छइ जाव[4] सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेइ, करेत्ता तेसिं मागंदिय-दारगाणं कत्थइ सुइं वा[5] °खुइं वा पउत्तिं वा° अलभमाणी जेणेव उत्तरिल्ले, एवं चेव पच्चत्थिमिल्ले वि जाव अपासमाणी ओहिं पउंजइ, ते मागंदिय-दारए सेलएणं सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीईवयमाणे पासइ, पासित्ता आसुरुत्ता असिखेडगं गेण्हइ, गेण्हित्ता सत्तट्ठ[6]°तलप्पमाणमेत्ताइं उड्ढं वेहासं° उप्पयइ, उप्पइत्ता ताए उक्किट्ठाए[7] देवगईए जेणेव मागंदिय-दारया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एवं वयासी—हंभो मागंदिय-दारगा ! अपत्थियपत्थया ! किण्णं तुब्भे जाणह मम विप्पजहाय सेलएणं जक्खेणं सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीईवयमाणा ? तं एवमवि गए। जइ णं तुब्भे मम

---

१. वतंति (ख); वत्तंति (ग, घ)।
२. पाउप्पयइ (क)।
३. ना० १।६।१६।
४. ना० १।६।२१।
५. स० पा०—सुइं वा०।
६. स० पा०—सत्तट्ठ जाव उप्पयइ।
७. पू०—ना० १।६।३६।

अवयक्खह तो भे अत्थि जीविय। अह ण नावयक्खह तो भे इमेण नीलुप्पल-गवल[1]•गुलिय-अयसिकुसुमप्पगासेण खुरधारेण असिणा रत्तगडमसुयाइ माउ-आहिं उवसोहियाइ तालफलाणि व सीसाइ एगते॰ एडेमि ॥

३८ तए ण ते मागदिय-दारगा रयणदीवदेवयाए अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म अभीया अतत्था अणुव्विग्गा अक्खुभिया असभता रयणदीवदेवयाए एयमट्ठ नो आढति[2] नो परियाणति 'नो अवयक्खति'[3] अणाढामाणा[4] अपरियाणमाणा अणवयक्खमाणा सेलएण जक्खेण सद्धि लवणसमुद्द मज्झमज्झेण वीईवयति ॥

३९ तए ण सा रयणदीवदेवया ते मागदिय-दारए जाहे नो सचाएइ बहूहि पडि-लोमेहिं उवसग्गेहिं[5] चालित्तए वा 'लोभित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा'[6] ताहे महुरेहि सिगारेहि य कलुणेहि य उवसग्गेहिं[7] 'उवसग्गेउ पयत्ता'[8] यावि होत्था—हभो मागदिय-दारगा! जइ ण तुब्भेहि देवाणुप्पिया! मए सद्धि हसियाणि य रमियाणि य ललियाणि य कीलियाणि य हिडियाणि य मोहियाणि[9] य ताहे ण तुब्भे सव्वाइ अगणेमाणा मम विप्पजहाय सेलएण सद्धि लवणसमुद्द मज्झमज्झेण वीईवयह ॥

४० तए ण सा रयणदीवदेवया जिणरक्खियस्स मण ओहिणा आभोएइ, आभोएत्ता एव वयासी—निच्चपि य ण अह जिणपालियस्स अणिट्ठा अकता अप्पिया अमणुण्णा अमणामा। निच्च मम जिणपालिए अणिट्ठे अकते अप्पिए अमणुण्णे अमणामे। निच्चपि य ण अह जिणरक्खियस्स इट्ठा कता पिया मणुण्णा मणामा। निच्चपि य ण मम जिणरक्खिए इट्ठे कते पिए मणुण्णे मणामे। जइ ण मम जिणपालिए रोयमाणि कदमाणि[10] सोयमाणि तिप्पमाणि[11] विलवमाणि नाव-यक्खइ, किण्ण तुमपि जिणरक्खिया! मम रोयमाणि[12] •कदमाणि सोयमाणि

---

१ स॰ पा॰—गवल जाव एडेमि।
२ आढायति (क)।
३. नावयक्खति (क)।
४. अणाढायमाणा (क), अणाढेमाणा (ख), अणाढामीणा (ग)।
५. उवसग्गेहि य (ख, ग, घ)।
६. लोभित्तए वा (क), खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा लोभित्तए वा (ख)।
७ °सग्गेहि य (ख)।
८ उवसग्गेहि य पत्ता (क), उवसग्गे उपयत्ता (ख), उवसग्गेहि य उपयत्ता (ग)।
९. एतच्च वाक्य काक्वा व्याख्येयम्, तत उपालभ प्रतीयते (वृ)।
१० ×(क)।
११. ×(ख, घ)।
१२. स॰ पा॰—रोयमाणि जाव नावयक्खसि।

तिप्पमाणिं विलवमाणिं॰ नावयक्खसि[1] ?

---

१. अतोग्रे आदर्शेषु 'तए ण इति पदमस्ति। ततश्चाष्टौ श्लोकाः उल्लिखिता. सन्ति। वृत्त्यनुसारेण ते श्लोका वाचनान्तरवर्तिनः सन्ति, यथा—तए ण सा रयणदीवेत्यादि सूत्र वाचनान्तरे रूपकविशेषेण द्वय भ्रान्ति करोति' (वृ)। तए ण सा रयणदीवेत्यस्मिन् सूत्रे 'जिणरक्खियस्स मण ओहिणा आभोएइ', इति वाक्यमस्ति, प्रथम श्लोकेपि 'ओहिणा जिणरक्खियस्स नाऊण' इति पदमस्ति। अष्टमे श्लोके 'सप्पणयसरलमहुराइ' इति पदमस्ति, 'ततेण से जिणरक्खिए' इत्यस्मिन् सूत्रे 'ते हि य सप्पणयसरलमहुरभणिएहिं' इति वाक्यमस्ति। एतादृश पौनरुक्त्य द्वयोर्वाचनयो सम्मिश्रणेन जातमस्ति। अतएव एते श्लोका. वाचनान्तरत्वेनादृता.। तए ण—

'सा पवररयणदीवस्स, देवया ओहिणा जिणरक्खियस्स नाऊण।'[1]
वधनिमित्त उवरिं, मागदिय-दारगाण दोण्हपि ॥१॥
दोसकलिया सललियं[2], नाणाविह-चुण्णवास-मीस[3] दिव्वं।
घाण-मण-निव्वुइकरं, सव्वोउय-सुरभिकुसुम-वुट्ठि पमुचमाणी ॥२॥
नाणामणि-कणग-रयण-घंटियखिखिणि नेउर-मेहल-भूसणरवेण।
दिसाओ विदिसाओ पूरयती वयणमिण वेइ सा सकलुसा ॥३॥
होल! वसुल! गोल! नाह! दइत! पिय! रमण! कत! सामिय! निग्घिण! निरथक्क![4]।
थिण्ण! निक्किव[5]! अकयण्णुय! सिढिलभाव!, निल्लज्ज! लुक्ख!
अकलुण! जिणरक्खिय! मज्झ! हिययरक्खगा[6] ॥४॥
न हु जुज्जसि एक्कय[7] अणाह, अबवर्वं तुज्झ चलण-ओवायकारियं[8] उज्झिउमधन्न।
गुणसकर! ह तुमे विहूणा, न समत्था जीविउं खणपि ॥५॥
इमस्स उ अणेगझस-मगर-विविधसावय-सयाउलघरस्स रयणागरस्स मज्झे[9]।
अप्पाण वहेमि तुज्झ पुरओ, एहि नियत्ताहि जइ सि कुविओ खमाहि एगावराह[10] मे ॥६॥
तुज्झ य 'विगयघण-विमलससिमडलागार'[11]-सस्सिरीय,
सारयनवकमल-कुमुद-कुवलय[12]-दलनिकरसरिस निभनयण।
वयण पिवासागयाए सद्धा मे पेच्छिउ जे,
अवलोएहि ता इओ मम नाह! जा ते पेच्छामि वयणकमल ॥७॥
एव सप्पणय-सरल-महुराइ पुणो-पुणो कलुणाइ।
वयणाइ जपमाणी, सा पावा मग्गओ समण्णेइ पावहियया ॥८॥

एते श्लोकाः सन्ति अथवा गद्यभागोसौ इति सुनिर्णीत मासीत्। वृत्तिकृता एते श्लोकाः इति मत प्रदर्शितम्—पद्यवन्धं विना तुकारादिनिपाताना पादपूर्णार्थानां निर्देशो न घटते। अपरिमितानि च छन्द शास्त्राणि (वृ)।

१ सा रयणदीवदेवता, ओहिणा जिणरक्खियस्स मण नाऊण(क), ज्ञात्वाभावमिति शेष (वृ)।
२ सलिलिय (क), सलिलय (घ)।
३ मीसिय (क्व॰)।
४ निरियक्क (क)।
५ निक्कव (ख)।
६ ॰रक्खग (ख)।
७ एविक्कय (क, ग, घ)।
८ उववाय॰ (घ)।
९ मज्झेण [ग]।
१० एक्का॰ (क, ख, घ)।
११. विगयघण-विउल॰ (ग), विगयघणविमलससिमडल (वृपा)।
१२. कुवलय-विमउल (क, ख), कुवलय-विमल (ग, घ), विमउल (वृपा)।

जिणरक्खियविवत्ति-पदं

४१. तए णं से जिणरक्खिए चलमणे तेणेव भूसणरवेण कण्णसुहमणहरेण तेहि य सप्पणय-सरल-महुर-भणिएहि संजाय-विउण-राए रयणदीवस्स देवयाए तीसे सुदरथण-जहण[1]-वयण-कर-चरण-नयण-लावण्ण[2]-रूव-जोवणसिरि च दिव्व सरभस-उवगूहियाइ विव्वोय-विलसियाणि[3] य विहसिय-सकडक्खदिट्ठि[4]-निस्स-सिय-मलिय[5]-उवललिय[6]-थिय-गमण-पणयखिज्जिय-पसाइयाणि य सरमाणे रागमोहियमती अवसे कम्मवसगए[7] अवयक्खइ मग्गतो सविलिय[8] ॥

४२ तए ण जिणरक्खिय समुप्पण्णकलुणभाव मच्चु-गलत्थल्ल[9]-णोल्लियमइ अवय-क्खत तहेव[10] जक्खे उ सेलए जाणिऊण सणिय-सणिय[11] उव्विहइ नियगपट्ठाहि विगयसड्ढे[12] ॥

४३. तए ण सा रयणदीवदेवया निस्ससा कलुण जिणरक्खिय सकलुसा[13] सेलगपट्ठाहि[14] ओवयत—दास ! मओसि त्ति जपमाणी अपत्त सागरसलिल गेण्हिय वाहाहि आरसंत उड्ढ उव्विहइ अवरतले ओवयमाण च मडलग्गेण पडिच्छित्ता नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासेण[15] असिवरेण खडाखडि करेइ, करेत्ता तत्थेव[16] विलवमाणं तस्स य सरस-वहियस्स घेत्तूण अगमगाइं सरुहिराइ उक्खित्तवलि चउद्दिसि[17] करेइ, सा पजली पहिट्ठा[18] ॥

४४ एवामेव समणाउसो ! जो अम्ह निग्गथो वा निग्गथी वा आयरिय-उवज्झायाण अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए समाणे पुणरवि माणुस्सए कामभोगे आसयइ पत्थयइ पीहेइ अभिलसइ, से ण इहभवे चेव वहूण समणाण वहूण समणीण वहूण सावयाण वहूण सावियाण य हीलणिज्जे जाव[19] चाउरत ससारकतार भुज्जो-भुज्जो अणुपरियट्टिस्सइ—जहा व से जिणरक्खिए।

---

१. जघण (ख)।
२. लायण्ण (क, ख)।
३. विलवियाणि (क, ख)।
४. कडक्ख० (क, ख)।
५. मणिय (वृपा)।
६ ललिय (वृपा)।
७. कम्मवसवेगनडिए (वृपा)।
८ सविलविय (ग)।
९. गलत्थ (क); गल्लत्यल्ल (ख)।
१०,११ 'तहेव, सणिय' इत्येतद् पदद्वय वाचनान्तरे नोपलभ्यते (वृपा)।
१२. विगयसत्थे (वृ); विगयसड्ढे (वृपा)।
१३ अकलुणा (क)।
१४. ०पुट्ठाहि (घ)।
१५ असीयप्पगासेण (ग)।
१६. तत्थ (ग, घ)।
१७ चाउद्दिसि (क)।
१८ पहट्ठा (क, ख)।
१९ ना० १।३।२४।

गाहा—

छलिओ अवयक्खंतो, निरवयक्खो[1] गओ अविग्घेण ।
तम्हा पवयणसारे[2], निरावयक्खेण भवियव्वं ॥१॥
भोगे अवयक्खता, पडति ससारसागरे घोरे ।
भोगेहिं निरवयक्खा, तरति ससारकतारं ॥२॥

जिणपालियस्स चपागमण-पद

४५ तए ण सा रयणदीवदेवया जेणेव जिणपालिए तेणेव उवागच्छइ, बहूहि अणुलोमेहि य पडिलोमेहि य खरएहि य मउएहि य सिगारेहि य कलुणेहि य उवसग्गेहिं जाहे नो सचाएइ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा ताहे सता तता परितता निव्विण्णा समाणा[3] जामेव दिसिं[4] पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ॥

४६ तए ण से सेलए जक्खे जिणपालिएण सद्धि लवणसमुद्दं मज्झमज्झेणं वीईवयइ, वीईवइत्ता जेणेव चपा नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चंपाए नयरीए अग्गुज्जाणसि जिणपालिय पट्ठाओ ओयारेइ, ओयारेत्ता एव वयासी—एस ण देवाणुप्पिया ! चपा नयरी दीसइ त्ति कट्टु जिणपालिय पुच्छइ, जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसि पडिगए ॥

४७. तए ण से जिणपालिए चप नयरिं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अम्मापिऊणं रोयमाणे[5] •कदमाणे सोयमाणे तिप्पमाणे॰ विलवमाणे जिणरक्खिय-वावत्तिं[6] निवेदेइ ॥

४८ तए ण जिणपालिए अम्मापियरो [य ?] मित्त-नाइ[7]-•नियग-सयण-सबधि॰ परियणेण सद्धि 'रोयमाणा कदमाणा सोयमाणा तिप्पमाणा विलवमाणा'[8] बहूइ लोइयाइं मयकिच्चाइ करेति, करेत्ता कालेण विगयसोया जाया ॥

४९ तए ण जिणपालिय अण्णया कयाइ सुहासणवरगय अम्मापियरो एवं वयासी—कहण्ण पुत्ता ! जिणरक्खिए कालगए ?

५० तए ण से जिणपालिए अम्मापिऊण लवणसमुद्दोत्तार च कालियवाय-संमुच्छण च पोयवहण-विवत्ति च फलहखड[9]-आसायण च रयणदीवुत्तार च रयणदीव-

---

१. निरवेक्खो (ग) ।
२. °सारेण (ग); चारित्रे लब्धे सतीति गम्यते (वृ) ।
३. समाणी (क) ।
४. दिस (क) ।
५. स० पा०—रोयमाणे जाव विलवमाणे ।
६. वाविति (ख, ग) ।
७. स० पा०—नाइ जाव परियणेण ।
८. रोयमाणाइ (क, ख, ग, घ) ।
९. फलगखंड (क) ।

देवया—गिण्हणं च भोगविभूइं च रयणदीवदेवया-आघयणं[1] च सूलाइयपुरिस-दरिसणं च सेलगजक्खआरुहण च रयणदीवदेवया-उवसग्गं च जिणरक्खिय-वावत्तिं[2] च लवणसमुद्दउत्तरण च 'चपागमण च सेलगजक्खआपुच्छण च'[3] जहाभूयमवितहमसदिद्ध परिकहेइ ॥

५१. तए णं से जिणपालिए 'अप्पसोगे [जाए ?] जाव'[4] विपुलाइं भोगभोगाइं भुजमाणे विहरइ ॥

५२. तेण कालेण तेण समएणं 'समणे भगव महावीरे'[5] समोसढे। जिणपालिए[6] धम्मं सोच्चा पव्वइए। एगारसंगवी। मासियाए सलेहणाए अप्पाण झोसेत्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेएत्ता कालमासे काल किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववण्णे। दो सागरोवमाइ ठिई। महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव[7] सव्व-दुक्खाणमत काहिइ ॥

५३. एवामेव समणाउसो[8]! •जो अम्ह निग्गथो वा निग्गथी वा आयरिय-उवज्झा-याणं अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए समाणे॰ माणुस्सए कामभोगे नो पुणरवि आसयइ पत्थयइ पीहेइ, सेणं इह भवे चेव बहूण समणाणं बहूण समणीण बहूण सावयाण बहूणं सावियाण य अच्चणिज्जे जाव[9] चाउरत ससारकंतारं वीईवइस्सइ—जहा व से जिणपालिए ॥

निक्खेव-पदं

५४. एव खलु जंबू! समणेण भगवया महावीरेणं आइगरेण तित्थगरेण जाव[10]

---

१. अप्पाहण (क, ख, ग, घ)। अत्र पूर्वक्रमानु-सारेण 'आवयण' इति पाठो युज्यते, द्रष्टव्यम्—२५ सूत्रम्। सम्भवतो लिपिदोषेण 'आघयण' इत्यस्य स्थाने 'अप्पाहण' इति जातम्। अत्र अस्यार्थोपि नावगम्यते।

२ विवत्ति (क, ख, ग, घ)। ४७ सूत्रानुसारेण अत्र परिवर्तन कृतम्।

३. सेलगजक्खआपुच्छण च चपागमण च (क), सेलगजक्खआपुच्छण च (ग)।

४. जाव अप्पसोगे जाव (क, ख, ग, घ); अस्यैवाध्ययनस्य ४८ सूत्रे 'विगयसोया जाया' इत्युल्लेखोस्ति। अत्र पुनरपि 'अप्पसोगे' इत्युल्लेखो विद्यते। द्वयोरपि 'जाव' पदयो पूर्तिस्थल एतत् तुल्यप्रकरणेषु नोपलब्धम्। अत्र प्रथम 'जाव' पद अना-वश्यक प्रतिभाति। 'अप्पसोगे जाए जाव' यद्येव पाठ परिकल्पेत तदा 'जाव' पद न पूर्तिसूचक भवति।

५ समणे भगवया महावीरेण (क), समणे (ख, ग,), समणे भगव महावीरे जाव जेणेव चपा नयरी पुण्णभद्दे चेइए तेणेव समोसढे परिसा निग्गया कूणिओ वि राया निग्गओ (घ)।

६ × (क, ख, ग)।

७. ना० १।१।२१२।

८. स० पा०—समणाउसो जाव माणुस्सए।

९ ना० १।२।७३।

१०. ना० १।१।७।

सिद्धिगइनामधेज्ज ठाण संपत्तेणं नवमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।
—त्ति बेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

जह रयणदीवदेवी, तह एत्थ अविरई महापावा ।
जह लाहत्थी वणिया, तह सुहकामा इहं जीवा ॥१॥
जह तेहि भीएहिं, दिट्ठो आघायमडले पुरिसो ।
ससारदुक्खभीया, पासति तहेव धम्मकह ॥२॥
जह तेण तेसि कहिया, देवी दुक्खाण कारण घोर ।
तत्तो चिय नित्थारो, सेलगजक्खाउ नन्नत्तो ॥३॥
तह धम्मकही भव्वाण, साहए दिट्ठअविरइसहावा ।
सयलदुहहेउभूया, विसया विरयति जीवा ण ॥४॥
सत्ताण दुहत्ताण, सरण चरण जिणिदपण्णत्तं ।
आणदरूव-निव्वाण-साहण तह य दसेइ ॥५॥
जह तेसि तरियव्वो, रुद्दसमुद्दो तहेह ससारो ।
जह तेसि सगिहगमणं, निव्वाणगमो तहा एत्थ ॥६॥
जह सेलगपट्ठाओ, भट्ठो देवीए मोहियमई उ ।
सावय-सहस्सपउरम्मि, सायरे पाविओ निहण ॥७॥
तह अविरईइ नडिओ, चरणचुओ दुक्खसावयाइण्णो ।
निवडइ 'अगाह-ससार-सागर अणतमविकाल'[1] ॥८॥
जह देवीए अक्खोहो, पत्तो सट्ठाण-जीवियसुहाइं ।
तह चरणठिओ साहू, अक्खोहो जाइ निव्वाण ॥९॥

---

१. अपारसंसारसायरे दारुणसरूवे (ख) ।

दसमं अज्झयणं

चंदिमा

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं नवमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दसमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

परिहायमाण-पदं

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे[1] गोयमो एवं वयासी—कहण्णं[2] भंते ! जीवा वड्ढंति वा हायंति वा ?

गोयमा ! से जहानामए बहुलपक्खस्स पाडिवय[3]-चंदे पुण्णिमा-चंदं पणिहाय हीणे वण्णेणं हीणे सोम्माए[4] हीणे निद्धयाए हीणे कंतीए एवं—दित्तीए जुत्तीए छायाए पभाए ओयाए लेसाए[5] हीणे मंडलेणं।

तयाणंतरं च णं बीयाचंदे पाडिवय[6]-चंदं पणिहाय हीणतराए वण्णेणं जाव हीणतराए मंडलेणं।

तयाणंतरं च णं तइया[7]-चंदे बीया[8]-चंदं पणिहाय हीणतराए वण्णेणं जाव हीणतराए मंडलेणं।

एवं खलु एएणं कमेणं परिहायमाणे-परिहायमाणे जाव अमावसा-चंदे चाउद्दसि-चंदं पणिहाय नट्ठे वण्णेणं जाव नट्ठे मंडलेणं॥

---

१ नयरे सामी समोसढे परिसा निग्गया (घ)।

२ कहणं (ख, ग)।

३ पडिवय (क); पडिवया (ख, घ); पाडिवया (ग)।

४. सम्मेताए (क)।

५ लेस्साए (क, ख)।

६ पडिवय (घ)।

७. ततिया (ख, ग, घ)।

८ वितिया (क, ख, ग, घ)।

३. एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा[1] •आयरिय-उवज्झायाण अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइए समाणे हीणे खंतीए एवं—मुत्तीए गुत्तीए अज्जवेणं मद्दवेणं लाघवेणं सच्चेणं तवेणं चियाए अकिंचणयाए हीणे बंभचेरवासेणं।
तयाणंतरं च णं हीणतराए खंतीए जाव हीणतराए बंभचेरवासेणं।
एवं खलु एएणं कमेणं परिहायमाणे-परिहायमाणे नट्ठे खंतीए जाव नट्ठे बंभचेर-वासेणं॥

परिवड्ढमाण-पदं

४. से जहा वा सुक्कपक्खस्स पाडिवय[2]-चंदे अमावसा-चंदं पणिहाय अहिए वण्णेणं[3] •अहिए सोम्माए अहिए निद्धयाए अहिए कंतीए एवं—दित्तीए जुत्तीए छायाए पभाए ओयाए लेसाए° अहिए मंडलेणं।
तयाणंतरं च णं बीया-चंदे पाडिवय-चंदं पणिहाय अहिययराए वण्णेणं जाव अहिययराए मंडलेणं।
एवं खलु एएणं कमेणं परिवड्ढेमाणे-परिवड्ढेमाणे जाव पुण्णिमा-चंदे चाउद्दसि-चंदं पणिहाय पडिपुण्णे वण्णेणं जाव पडिपुण्णे मंडलेणं॥

५. एवामेव समणाउसो[4] ! •जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइए समाणे अहिए खंतीए[5] •एवं—मुत्तीए गुत्तीए अज्जवेणं मद्दवेणं लाघवेणं सच्चेणं तवेणं चियाए अकिंचणयाए अहिए° बंभचेरवासेणं।
तयाणंतरं च णं अहिययराए खंतीए जाव अहिययराए बंभचेरवासेणं।
एवं खलु एएणं कमेणं परिवड्ढेमाणे-परिवड्ढेमाणे पडिपुण्णे खंतीए जाव पडि-पुण्णे बंभचेरवासेणं।
एवं खलु जीवा वड्ढंति वा हायंति वा॥

निक्खेव-पदं

६. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं दसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते।

—त्ति बेमि॥

---

१. सं० पा०—निग्गंथी वा जाव पव्वइए।
२. पाडिवया (क, ख), पडिवया (ग, घ)।
३. सं० पा०—वण्णेणं जाव अहिए।
४. सं० पा०—समणाउसो ! जाव पव्वइए।
५. सं० पा०—खंतीए जाव बंभचेरवासेणं।

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

जह चदो तह साहू, राहुवरोहो जहा तह पमाओ।
वण्णाइगुणगणो जह, तहा खमाइसमणधम्मो ॥१॥

पुण्णोवि पइदिण जह, हायतो सव्वहा ससी नस्से।
तह पुण्णचरित्तो वि हु, कुसीलससग्गिमाईहिं ॥२॥

जणिय-पमाओ साहू, हायतो पइदिण खमाईहिं।
जायइ नट्ठचरित्तो, ततो दुक्खाइ पावेइ ॥३॥

हीणगुणो वि हु होउ, सुहगुरुजोगाइ-जणियसवेगो।
पुण्णसरूवो जायइ, विवड्ढमाणो ससहरोव्व ॥४॥

एक्कारसमं अज्झयणं

दावद्दवे

उक्खेव-पदं

१ जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं दसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, एक्कारसमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

देसविराहय-पदं

२ एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नगरे गोयमो एवं वयासी—कहण्णं[1] भंते ! जीवा आराहगा वा विराहगा वा भवंति ?
गोयमा ! से जहानामए एगंसि समुद्दकूलंसि दावद्दवा नाम रुक्खा पण्णत्ता—किण्हा जाव[2] निउरंबभूया पत्तिया पुप्फिया फलिया हरियग-रेरिज्जमाणा[3] सिरीए अईव उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा चिट्ठंति।
जया णं दीविच्चगा[4] ईसिं[5] पुरेवाया पच्छावाया मंदावाया महावाया वायंति, तया णं बहवे दावद्दवा रुक्खा पत्तिया[6] °पुप्फिया फलिया हरियग-रेरिज्जमाणा सिरीए अईव उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा° चिट्ठंति। अप्पेगइया दावद्दवा रुक्खा जुण्णा झोडा[7] परिसडिय-पडुपत्त-पुप्फ-फला सुक्करुक्खओ विव मिलायमाणा-मिलायमाणा चिट्ठंति ॥

३. एवामेव समणाउसो[8] ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा[9] °आयरिय-

---

१ कहं णं (ख, ग, घ)।
२. ना० १।७।१३।
३. रेरिज्जमाणा-रेरिज्जमाणा (क, ग)।
४. दीविब्वगा (ख, ग, घ)।
५. इसिं (क, घ)।
६. सं० पा०—पत्तिया जाव चिट्ठंति।
७. ज्झोडा (क, ख); झोट्ठा (ग)।
८ समणातोसो (ग)।
९. सं० पा०—निग्गंथी जाव पव्वइए।

उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइए समाणे वहूणं समणाणं वहूण समणीणं वहूणं सावयाणं वहूण सावियाण य सम्मं सहइ[1] •खमइ तितिक्खइ° अहियासेइ, वहूण अण्णउत्थियाण वहूण गिहत्थाण नो सम्म सहइ जाव नो अहियासेइ—एस ण मए पुरिसे देसविराहए पण्णत्ते ॥

देसाराहय-पदं

४. समणाउसो! जया णं सामुद्दगा[2] ईसिं पुरेवाया पच्छावाया मदावाया महावाया वायति, तया णं वहवे दावद्दवा रुक्खा जुण्णा झोडा[3] •परिसडिय-पंडुपत्त-पुप्फ-फला सुक्करुक्खओ विव° मिलायमाणा-मिलायमाणा चिट्ठति। अप्पेगइया दावद्दवा रुक्खा पत्तिया पुप्फिया फलिया[4] •हरियग-रेरिज्जमाणा सिरीए अईव° उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा चिट्ठति ॥

५. एवामेव समणाउसो! जो अम्ह निग्गथो वा निग्गथी वा[5] •आयरिय-उवज्झायाण अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय° पव्वइए समाणे वहूण अण्णउत्थियाण वहूण गिहत्थाण सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ, वहूण समणाणं वहूण समणीण वहूणं सावयाण वहूण सावियाण य नो सम्मं सहइ जाव नो अहियासेइ—एस ण मए पुरिसे देसाराहए पण्णत्ते ॥

सव्वविराहय-पद

६ समणाउसो! जया ण नो दीविच्चगा नो सामुद्दगा ईसिं पुरेवाया पच्छावाया मंदावाया महावाया वायति, तया ण सव्वे दावद्दवा रुक्खा जुण्णा झोडा परिसडिय-पडुपत्त-पुप्फ-फला सुक्करुक्खओ विव मिलायमाणा-मिलायमाणा चिट्ठंति। अप्पेगइया दावद्दवा रुक्खा पत्तिया पुप्फिया फलिया हरियग-रेरिज्ज-माणा सिरीए अईव उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा चिट्ठति ॥

७. एवामेव समणाउसो! जो अम्ह निग्गथो वा निग्गथी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए समाणे वहूण समणाण वहूण समणीणं वहूणं सावयाण वहूण सावियाणं वहूण अण्णउत्थियाण वहूण गिहत्थाणं नो सम्मं सहइ जाव[6] नो अहियासेइ—एस णं मए पुरिसे सव्व-विराहए पण्णत्ते ॥

सव्वाराहय-पदं

८. समणाउसो! जया णं दीविच्चगा वि सामुद्दगा वि ईसिं पुरेवाया पच्छावाया

---

१. स० पा०—सहइ जाव अहियासेइ।
२. समुद्दगा (ख, घ)।
३. स० पा०—झोडा जाव मिलायमाणा।
४. सं० पा०—फलिया जाव उवसोभेमाणा।
५. स० पा०—निग्गंथी वा जाव पव्वइए।
६. ना० १।११।३।

मदावाया महावाया वायति, तया णं सव्वे दावद्दवा रुक्खा पत्तिया पुप्फिया फलिया हरियग-रेरिज्जमाणा सिरीए अईव उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा चिट्ठंति ॥

९ एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाणं बहूणं अण्णउत्थियाणं बहूणं गिहत्थाणं सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ—एस णं मए पुरिसे सव्व-आराहए पण्णत्ते । एवं खलु गोयमा ! जीवा आराहगा वा विराहगा वा भवंति ॥

निक्खेव-पदं

१० एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं एक्कारसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति बेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

जह दावद्दव-'तरुणो, एवं'[1] साहू जहेह दीविच्चा ।
वाया तह समणा इय, सपक्ख-वयणाइं दुसहाइं ॥१॥
जह सामुद्दय-वाया, तहण्णतित्थाइ-कडुयवयणाइ ।
कुसुमाइं सपया जह, सिवमग्गाराहणा तह उ ॥२॥
जह कुसुमाइ-विणासो, सिवमग्ग-विराहणा तहा णेया ।
जह दीववायु-जोगे, बहु इड्ढी ईसि य अणिड्ढी ॥३॥
तह साहम्मिय-वयणाण, सहणमाराहणा भवे बहुया ।
इयराणमसहणे, पुण सिवमग्ग-विराहणा थोवा ॥४॥
जह जलहिवाय-जोगे, थेविड्ढी बहुयरा अणिड्ढी य ।
तह परपक्खक्खमणे, आराहणमीसि बहु इयरं ॥५॥
जह उभयवाय-विरहे, सव्वा तरुसपया विणट्ठत्ति ।
अणिमित्तोभय-मच्छर-रूवेह विराहणा तह य ॥६॥
जह उभयवाय-जोगे, सव्वसमिद्धी वणस्स संजाया ।
तह उभयवयण-सहणे सिवमग्गाराहणा पुण्णा ॥७॥
ता पुण्णसमणधम्माराहणचित्तो सया महापुण्णो[2] ।
सव्वेण वि कीरंतं, सहेज्ज सव्वं पि पडिकूलं ॥८॥

———

१. तरूणमेवं [क्व] ।
२. महासत्तो [क्व] ।

बारसमं अज्झयणं

उदगणाए

उक्खेव-पदं

१ जइ णं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं एक्कारसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, बारसमस्स णं भंते! नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

२ एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी। पुण्णभद्दे चेइए। जियसत्तू राया। धारिणी देवी। अदीणसत्तू कुमारे जुवराया वि होत्था। सुबुद्धी अमच्चे जाव[1] रज्जधुराचिंतए, समणोवासए॥

फरिहोदग-पदं

३. तीसे णं चंपाए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमेणं एगे फरिहोदए यावि होत्था—मेय-वसा-रुहिर-मंस-पूय-पडल-पोच्चडे मयग-कलेवर-सछण्णे अमणुण्णे वण्णेणं[2] •अमणुण्णे गंधेणं अमणुण्णे रसेणं अमणुण्णे° फासेणं, से जहानामए—अहिमडे इ वा गोमडे इ वा जाव[3] मय-कुहिय-विणट्ठ-किमिण-वावण्ण-दुरभिगंधे किमि-जालाउले ससत्ते असुइ-विगय-बीभच्छ-दरिसणिज्जे। भवेयारूवे सिया ?

नो इणट्ठे समट्ठे। एत्तो अणिट्ठतराए चेव[4] •अकंततराए चेव अप्पियतराए चेव अमणुण्णतराए चेव अमणामतराए चेव° गंधेणं पण्णत्ते॥

जियसत्तुणा पाणभोयणपसंसा-पदं

४ तए णं से जियसत्तू राया अण्णया कयाइ ण्हाए कयबलिकम्मे जाव[5]

---

१ ना० १।८।४२।

२. स० पा०—वण्णेणं जाव फासेणं।

३. ना० १।८।४२।

४ स० पा०—अणिट्ठतराए चेव जाव गंधेणं।

५ ना० १।१।२७।

अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे बहूहिं ईसर[1] जाव[2] सत्थवाहपभिईहिं सद्धिं भोयणमडवंसि भोयणवेलाए सुहासणवरगए विउलं असणं[3] •पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणे विसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे एवं च णं° विहरइ। जिमियभुत्तुत्तरागए[4] वि य णं समाणे आयंते चोक्खे परम° सुइभूए तंसि विपुलंसि असण-पाण-खाइम-साइमंसि जायविम्हए ते बहवे ईसर जाव[5] सत्थवाहपभिइओ एवं वयासी—अहो णं देवाणुप्पिया! इमे मणुण्णे असण-पाण-खाइम-साइमे वण्णेणं उववेए[6] •गंधेणं उववेए रसेणं उववेए° फासेणं उववेए अस्सायणिज्जे विसायणिज्जे 'पीणणिज्जे दीवणिज्जे'[7] दप्पणिज्जे मयणिज्जे बिंहणिज्जे सव्विंदियगाय-पल्हायणिज्जे॥

५. तए णं ते बहवे ईसर जाव[8] सत्थवाहपभिइओ जियसत्तुं रायं एवं वयासी—तहेव णं सामी! जण्णं तुब्भे[9] वयह—अहो णं इमे मणुण्णे असण-पाण-खाइम-साइमे वण्णेणं उववेए जाव[10] सव्विंदियगाय-पल्हायणिज्जे॥

सुबुद्धिस्स उवेहा-पदं

६. तए णं जियसत्तू राया सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी—अहो णं देवाणुप्पिया सुबुद्धी! इमे मणुण्णे असण-पाण-खाइम-साइमे जाव[11] सव्विंदियगाय-पल्हायणिज्जे॥

७. तए णं सुबुद्धी जियसत्तुस्स रण्णो एयमट्ठं नो आढाइ[12] •नो परियाणाइ° तुसिणीए संचिट्ठइ॥

८. तए णं जियसत्तू राया सुबुद्धिं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी—अहो णं देवाणुप्पिया सुबुद्धी! इमे मणुण्णे[13] •असण-पाण-खाइम-साइमे जाव[14] सव्विंदियगाय°-पल्हायणिज्जे॥

९. तए णं से सुबुद्धी अमच्चे जियसत्तुणा रण्णा दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे

---

१ राईसर (ग)।
२. ना० १।७।६।
३. स० पा०—असणं जाव विहरइ।
४. स० पा०—°भुत्तुत्तरागए जाव सुइभूए।
५ ना० १।७।६।
६. सं० पा०—उववेए जाव फासेणं।
७ दीवणिज्जे पीणणिज्जे (क, घ); दीवणिज्जे (ख); वीयणिज्जे दीवणिज्जे परियणिज्जे (ग)।
८. ना० १।७।६।
९ तुम्हे (ख), तुम्ह (ग, घ)।
१०. ना० १।१२।४।
११ ना० १।१२।४।
१२. स० पा०—आढाइ जाव तुसिणीए।
१३. स० पा०—मणुण्णे तं चेव जाव पल्हायणिज्जे।
१४. ना० १।१२।४।

जियसत्तु राय एवं वयासी—नो खलु सामी ! अम्ह् एयसि मणुण्णसि असण-पाण-खाइम-साइमसि केइ विम्हुए ।
एव खलु सामी ! सुब्भिसद्दा वि पोग्गला दुब्भिसद्दत्ताए परिणमति, दुब्भिसद्दा वि पोग्गला सुब्भिसद्दत्ताए परिणमति । सुरूवा वि पोग्गला दुरूवत्ताए परिणमति, दुरूवा वि पोग्गला सुरूवत्ताए परिणमति । सुब्भिगधा वि पोग्गला दुब्भिगधत्ताए परिणमति, दुब्भिगधा वि पोग्गला सुब्भिगधत्ताए परिणमति । सुरसा वि पोग्गला दुरसत्ताए परिणमति, दुरसा वि पोग्गला सुरसत्ताए परिणमति । सुहफासा वि पोग्गला दुहफासत्ताए परिणमति, दुहफासा वि पोग्गला सुहफासत्ताए परिणमति, पओग-वीससा-परिणया वि य ण सामी ! पोग्गला पण्णत्ता ॥

१० तए ण जियसत्तू राया सुबुद्धिस्स अमच्चस्स एवमाइक्खमाणस्स भासमाणस्स पण्णवेमाणस्स परूवेमाणस्स एयमट्ठ नो आढाइ नो परियाणइ तुसिणीए सचिट्ठइ ॥

जियसत्तुणा फरिहोदगस्स गरहा-पदं

११ तए ण से जियसत्तू राया अण्णया कयाइ ण्हाए आसखधवरगए महयाभड-चडगर-आसवाहिणिआए[1] निज्जायमाणे तस्स फरिहोदयस्स अदूरसामतेणं वीईवयइ ॥

१२ तए ण जियसत्तू राया तस्स फरिहोदगस्स असुभेण गधेण अभिभूए समाणे सएण उत्तरिज्जगेण आसग 'पिहेइ, पिहेत्ता'[2] एगत अवक्कमइ, अवक्कमित्ता वहवे ईसर जाव[3] सत्थवाहपभियओ एव वयासी—अहो ण देवाणुप्पिया ! इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेण अमणुण्णे गधेण अमणुण्णे रसेण अमणुण्णे फासेण, से जहानामए—अहिमडे इ वा जाव[4] अमणामतराए चेव गंधेण पण्णत्ते ॥

१३ तए ण ते वहवे ईसर[5] जाव[6] सत्थवाहपभियओ एव वयासी—तहेव ण त सामी ! ज ण तुब्भे[7] वयह—अहो ण इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेण अमणुण्णे गधेण अमणुण्णे रसेण अमणुण्णे फासेण, से जहानामए—अहिमडे इ वा जाव[8] अमणामतराए चेव गधेणं पण्णत्ते ॥

१४ तए ण से जियसत्तू राया सुबुद्धि अमच्च एवं वयासी—अहो ण सुबुद्धी ! इमे फ़रिहोदए अमणुण्णे वण्णेण अमणुण्णे गधेण अमणुण्णे रसेण अमणुण्णे फासेण, से जहानामए—अहिमडे इ वा जाव[9] अमणामतराए चेव गधेण पण्णत्ते ॥

---

१. °वाहणियाए (क) ।
२. पिहइ (क) ।
३. ना० १।७।६ ।
४ ना० १।१२।३ ।
५. राईसर (क, ख, घ) ।
६. ना० १।७।६ ।
७. तुब्भे एव (क, ख, ग, घ) ।
८,९. ना० १।१२।३ ।

सुबुद्धिस्स उवेहा-पदं

१५. तए णं से सुबुद्धी अमच्चे[1] °जियसत्तुस्स रण्णो एयमट्ठं नो आढाइ नो परिया-णाइ° तुसिणीए संचिट्ठइ ॥

१६ तए णं से जियसत्तू राया सुबुद्धिं अमच्चं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी—अहो णं[2] °सुबुद्धी ! इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेणं अमणुण्णे गंधेणं अमणुण्णे रसेणं अमणुण्णे फासेणं, से जहानामए—अहिमडे इ वा जाव[3] अमणामतराए चेव गंधेणं पण्णत्ते° ॥

१७ तए णं से सुबुद्धी अमच्चे जियसत्तुणा रण्णा दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे एवं वयासी—नो खलु सामी ! अम्हं एयंसि फरिहोदगंसि केइ विम्हए । एवं खलु सामी ! सुब्भिसद्दा वि पोग्गला दुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति[4], °दुब्भिसद्दा वि पोग्गला सुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति । सुरूवा वि पोग्गला दुरूवत्ताए परिण-मंति, दुरूवा वि पोग्गला सुरूवत्ताए परिणमंति । सुब्भिगंधा वि पोग्गला दुब्भिगंधत्ताए परिणमंति, दुब्भिगंधा वि पोग्गला सुब्भिगंधत्ताए परिणमंति । सुरसा वि पोग्गला दुरसत्ताए परिणमंति, दुरसा वि पोग्गला सुरसत्ताए परिणमंति । सुहफासा वि पोग्गला दुहफासत्ताए परिणमंति, दुहफासा वि पोग्गला सुहफासत्ताए परिणमंति° । पओग-वीससा-परिणया वि य णं सामी ! पोग्गला पण्णत्ता ॥

जियसत्तुस्स विरोध-पदं

१८ तए णं जियसत्तू राया सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी—मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! अप्पाणं च परं च तदुभयं च बहूहि य असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिनिवेसेण य वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे विहराहि ॥

सुबुद्धिणा जलसोधण-पदं

१९ तए णं सुबुद्धिस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्प-ज्जित्था—अहो णं जियसत्तू राया संते[5] तच्चे तहिए अवितहे सब्भूए जिण-पण्णत्ते भावे नो[6] उवलभइ । तं सेयं खलु मम जियसत्तुस्स रण्णो संताणं तच्चाणं तहियाणं अवितहाणं सब्भूयाणं जिणपण्णत्ताणं भावाणं अभिगमणट्ठयाए एयमट्ठं उवाइणावेत्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता पच्चइएहिं पुरिसेहिं सद्धिं अंतरावणाओ[7]

---

१. सं० पा०—अमच्चे जाव तुसिणीए ।
२. सं० पा०—अहो णं तं चेव ।
३. ना० १।१२।३ ।
४. सं० पा०—परिणमंति तं चेव ।
५. सच्चे (ख) ।
६. नो सद्दहइ (क) ।
७. अब्भितरावणाओ (क) ।

नवए घडए य पडए य गेण्हइ, गेण्हित्ता संझाकालसमयंसि विरलमणूससि निसंत-पडिनिसतंसि जेणेव फरिहोदए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता त फरिहोदग गेण्हावेइ, गेण्हावित्ता नवएसु पडएसु[1] गालावेइ[2], गालावेत्ता नवएसु घडएसु पक्खिवावेइ, पक्खिवावेत्ता सज्जखार पक्खिवावेइ, पक्खिवावेत्ता लछिय[3]-मुद्दिए कारावेइ[4], कारावेत्ता सत्तरत्त परिवसावेइ[5], परिवसावेत्ता दोच्चपि नवएसु पडएसु[6] गालावेइ, गालावेत्ता नवएसु घडएसु पक्खिवावेइ, पक्खिवावेत्ता सज्जखार पक्खिवावेइ, पक्खिवावेत्ता लंछिय-मुद्दिए कारावेइ, कारावेत्ता सत्तरत्त परिवसावेइ[7], परिवसावेत्ता तच्चपि नवएसु पडएसु[8] •गालावेइ, गालावेत्ता नवएसु घडएसु पक्खिवावेइ, पक्खिवावेत्ता सज्जखार पक्खिवावेइ, पक्खिवावेत्ता लछिय-मुद्दिए कारावेइ, कारावेता सत्तरत्तं° संवसावेइ[9]। एवं खलु एएण उवाएण अतरा गालावेमाणे अतरा पक्खिवावेमाणे अतरा य सवसावेमाणे[10] सत्तसत्त य राइदियाइ परिवसावेइ। तए ण से फरिहोदए सत्तमसि[11] सत्तयंसि परिणममाणसि उदगरयणे जाए यावि होत्था—अच्छे पत्थे जच्चे तणुए फालियवण्णाभे वण्णेण उववेए गधेण उववेए रसेण उववेए फासेण उववेए आसायणिज्जे[12] •विसायणिज्जे पीणणिज्जे दीवणिज्जे दप्पणिज्जे मयणिज्जे विंहणिज्जे° सव्विदियगाय-पल्हायणिज्जे ॥

सुबुद्धिणा जलपेसण-पदं

२०. तए ण सुबुद्धी जेणेव से उदगरयणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलसि आसादेइ, आसादेत्ता तं उदगरयण वण्णेण उववेय गधेण उववेय रसेण उववेयं फासेण उववेय आसायणिज्ज[13] •विसायणिज्ज पीणणिज्ज दीवणिज्ज दप्पणिज्ज मयणिज्ज विंहणिज्ज° सव्विदियगाय-पल्हायणिज्ज जाणित्ता हट्ठतुट्ठे बहूहिं

---

१ घडएसु (क, ख, ग, घ)। अस्मिन्नेव सूत्रे 'अतरावणाओ नवए घडए य पडए य गेण्हइ' इति पाठोस्ति तथा 'गालावेइ' इति क्रियापदस्यार्थोऽपि 'पडए' इति पदेन सम्बद्धोस्ति, तेन 'घडएसु गालावेइ' इत्यस्य स्थाने सर्वत्र 'पडएसु गालावेइ' इति पाठो युज्यते। सम्भवतो लिपिदोषेण अत्र वर्ण-विपर्ययो जातः।

२. गलावेइ (ख)।

३. लछिए (ख)।

४. करावेइ (ख)।

५. परिसवेइ (ख)।

६ पडएसु (क, ख, ग, घ)।

७ परिसावेइ (ख)।

८. स० पा०—घडएसु जाव सवसावेइ। सर्वासु प्रतिषु 'घडएसु' इत्येव पाठो लभ्यते।

९ पूर्वं 'परिवसावेइ' पाठो विद्यते, अत्र 'सवसावेइ' पाठोस्ति। एतत् परिवर्तन किमर्थं कृतमिति न ज्ञायते।

१०. वसावेमाणे (ख, ग, घ)।

११. सत्तम (ख)।

१२. सं० पा०—आसायणिज्जे जाव सव्विदिय°।

१३ स० पा०—आसायणिज्ज जाव सव्विदिय°।

उदगसंभारणिज्जेहिं दव्वेहिं संभारेइ, संभारेत्ता जियसत्तुस्स रण्णो पाणिय-घरियं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुमं णं देवाणुप्पिया ! इमं उदगरयणं गेण्हाहि, गेण्हित्ता जियसत्तुस्स रण्णो भोयणवेलाए उवणेज्जासि ॥

जियसत्तुणा उदगरयणपसंसा-पदं

२१. तए णं से पाणिय-घरिए सुबुद्धिस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ[1], पडिसुणेत्ता तं उदगरयणं गेण्हइ, गेण्हित्ता जियसत्तुस्स रण्णो भोयणवेलाए उवट्ठवेइ ॥

२२. तए णं से जियसत्तू राया तं विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं आसाएमाणे[2] •विसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे एवं च णं° विहरइ । जिमियभुत्तुत्तरागए वि य णं[3] •समाणे आयंते चोक्खे° परमसुइभूए तंसि उदगरयणंसि जायविम्हए ते बहवे राईसर जाव[4] सत्थवाहपभिइओ एवं वयासी—अहो णं देवाणुप्पिया ! इमे उदगरयणे अच्छे जाव[5] सव्विंदियगाय-पल्हायणिज्जे ॥

२३. तए णं ते बहवे राईसर जाव[6] सत्थवाहपभिइओ एवं वयासी—तहेव णं सामी ! जण्णं तुब्भे वयह[7]—•इमे उदगरयणे अच्छे जाव[8] सव्विंदियगाय°-पल्हायणिज्जे ॥

जियसत्तुणा उदगाणयणपुच्छा-पदं

२४. तए णं जियसत्तू राया पाणिय-घरियं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एस णं तुमे देवाणुप्पिया ! उदगरयणे कओ[9] आसादिते ?

२५. तए णं से पाणिय-घरिए जियसत्तुं एवं वयासी—एस णं सामी ! मए उदगरयणे सुबुद्धिस्स अंतियाओ आसादिते ॥

२६. तए णं जियसत्तू सुबुद्धिं अमच्चं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—अहो णं सुबुद्धी ! केणं कारणेणं अहं तव अणिट्ठे अकंते अप्पिए अमणुण्णे अमणामे जेणं तुमं मम कल्लाकल्लिं भोयणवेलाए इमं उदगरयणं न उवट्ठवेसि ? तं एस णं तुमे देवाणुप्पिया ! उदगरयणे कओ उवलद्धे ?

सुबुद्धिस्स उत्तर-पदं

२७. तए णं सुबुद्धी जियसत्तुं एवं वयासी—एस णं सामी ! से फरिहोदए ॥

---

१. पडिसुणाति (ख) ।
२. सं० पा०—आसाएमाणे जाव विहरइ ।
३. सं० पा०—य णं जाव परमसुइभूए ।
४. ना० १।७।६ ।
५. ना० १।१२।१६ ।
६. ना० १।७।६ ।
७. सं० पा०—जाव एवं चेव पल्हायणिज्जे ।
८. ना० १।१२।१६ ।
९. कत्तो (ख), कतो (ग) ।

२८. तए णं से जियसत्तू सुबुद्धिं एवं वयासी—केणं कारणेणं सुबुद्धी ! एस से फरिहोदए ?

२९ तए णं सुबुद्धी जियसत्तुं एवं वयासी—एवं खलु सामी ! तुब्भे तया मम एवमाइक्खमाणस्स भासमाणस्स पण्णवेमाणस्स परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहह। तए णं मम इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो णं जियसत्तू राया संते[1] •तच्चे तहिए अवितहे सब्भूए जिणपण्णत्ते° भावे नो सद्दहइ नो पत्तियइ नो रोएइ। तं सेयं खलु मम जियसत्तुस्स रण्णो संताणं[2] •तच्चाणं तहियाणं अवितहाणं° सब्भूयाणं जिणपण्णत्ताणं भावाणं अभिगमणट्ठयाए एयमट्ठं उवाइणावेत्तए—एवं संपेहेमि, संपेहेत्ता तं चेव जाव[3] पाणिय-घरियं सद्दावेमि, सद्दावेत्ता एवं वदामि—तुमं णं देवाणुप्पिया ! उदगरयणं जियसत्तुस्स रण्णो भोयणवेलाए उवणेहि। तं एएणं कारणेणं सामी ! एस से फरिहोदए ॥

जियसत्तुणा जलसोधण-पद

३० तए णं जियसत्तू राया सुबुद्धिस्स एवमाइक्खमाणस्स भासमाणस्स पण्णवेमाणस्स परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहइ नो पत्तियइ नो रोएइ, असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे अब्भितरठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! अंतरावणाओ नवए घडए पडए य गेण्हह जाव[4] उदगसंभारणिज्जेहिं दव्वेहिं संभारेह। तेवि तहेव संभारेंति, संभारेत्ता जियसत्तुस्स उवणेंति ॥

जियसत्तुस्स जिण्णासा-पद

३१ तए णं से जियसत्तू राया तं उदगरयणं करयलंसि आसाएइ, आसाएत्ता आसायणिज्जं जाव[5] सव्विंदियगाय-पल्हायणिज्जं जाणित्ता सुबुद्धिं अमच्चं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—सुबुद्धी ! एए णं तुमे संता तच्चा[6] तहिया अवितहा °सब्भूया भावा कओ उवलद्धा ?

सुबुद्धिस्स उत्तर-पदं

३२. तए णं सुबुद्धी जियसत्तुं एवं वयासी—एए णं सामी ! मए संता[7] •तच्चा तहिया अवितहा सब्भूया° भावा जिणवयणाओ उवलद्धा ॥

---

१. सं० पा०—संते जाव भावे।
२. सं० पा०—संताणं जाव सब्भूयाणं।
३. ना० १।१२।१९,२०।
४. ना० १।१२।१९,२०।
५ ना० १।१२।४।
६. सं० पा०—तच्चा जाव सब्भूया।
७. सं० पा०—संता जाव भावा।

३३ तए ण जियसत्तू सुबुद्धि एवं वयासो—त इच्छामि ण देवाणुप्पिया ! तव अतिए जिणवयण निसामित्तए ॥

जियसत्तुस्स समणोवासयत्त-पदं

३४ तए ण सुबुद्धी जियसत्तुस्स विचित्त केवलिपण्णत्त चाउज्जामं धम्म परिकहेइ[1] ।

३५ तए ण जियसत्तू सुबुद्धिस्स अतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे सुबुद्धि अमच्च एव वयासी—सद्दहामि ण देवाणुप्पिया ! निग्गथं पावयण[2] । •पत्तियामि ण देवाणुप्पिया ! निग्गथं पावयण । रोएमि ण देवाणुप्पिया ! निग्गथं पावयण । अब्भुट्ठेमि ण देवाणुप्पिया ! निग्गथ पावयणं । एवमेय देवाणुप्पिया ! तहमेय देवाणुप्पिया ! अवितहमेय देवाणुप्पिया ! इच्छियमेय देवाणुप्पिया ! पडिच्छियमेय देवाणुप्पिया ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं देवाणुप्पिया !° से जहेय तुब्भे वयह । त इच्छामि ण तव अंतिए 'चाउज्जामियं गिहिधम्म'[3] उवसपज्जित्ता ण विहरित्तए ।

अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिवध करेह ॥

३६ तए ण से जियसत्तू सुबुद्धिस्स अतिए चाउज्जामिय[4] गिहिधम्म पडिवज्जइ ॥

३७. तए ण जियसत्तू समणोवासए जाए—अहिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरइ ॥

पव्वज्जा-पदं

३८ तेण कालेण तेणं समएण थेरागमण । जियसत्तू राया सुबुद्धी य निग्गच्छइ[6] । सुबुद्धी धम्म सोच्चा निसम्म एव वयासो[7]—ज नवर—जियसत्तु आपुच्छामि[8] •तओ पच्छा मुडे भवित्ता ण अगाराओ अणगारियं° पव्वयामि ।

अहासुह देवाणुप्पिया !

३९ तए ण सुबुद्धी जेणेव जियसत्तू तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एव वयासी—एव खलु सामी ! मए थेराण अतिए धम्मे निसते । से वि य धम्मे 'इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए'[9] । तए ण अह सामी ! ससारभउव्विग्गे भीए[10] •जम्मण-

---

१. परिकहेइ तमाइक्खइ, जहा—जीवा वज्झंति जाव पचाणुव्वयाइ । द्रष्टव्यम्—१।५।४५ सूत्रस्य प्रथम पादटिप्पणम् ।

२. स० पा०—पावयण जाव से जहेयं ।

३. पचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइय जाव (क, ख, ग, घ) । द्रष्टव्यम्—१।५।४५ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

४. पचाणुव्वइय जाव दुवालसविह (क,ख,ग,घ)। द्रष्टव्यम्—१।५।४५ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

५. ना० १।५।४७ ।

६ निग्गच्छति (क, ग) ।

७. पू०—ना० १।१।१०१ ।

८. स० पा०—आपुच्छामि जाव पव्वयामि ।

९. इच्छिए पडिच्छिए ३ (क), इच्छियपडिच्छिए (ख, ग) ।

१०. सं० पा०—भीए जाव इच्छामि ।

जर-मरणाण° इच्छामि ण तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए[1] •समाणे थेराण अंतिए मुंडे भवित्ता ण अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए ॥

४०. तए णं जियसत्तू राया सुबुद्धिं एवं वयासी—अच्छसु[2] ताव देवाणुप्पिया! कइवयाइं[3] वासाइं उरालाइं[4] •माणुस्सगाइं भोगभोगाइं° भुंजमाणा तओ पच्छा एगयओ[5] थेराण अंतिए मुंडे भवित्ता[6] •ण अगाराओ अणगारियं° पव्वइस्सामो ॥

४१. तए ण सुबुद्धी जियसत्तुस्स रण्णो एयमट्ठ पडिसुणेइ ॥

४२. तए ण तस्स जियसत्तुस्स रण्णो सुबुद्धिणा सद्धिं विपुलाइं माणुस्सगाइं कामभोगाइं[7] पच्चणुब्भवमाणस्स दुवालस वासाइं वीइक्कताइं ॥

४३ तेणं कालेण तेण समएण थेरागमण। जियसत्तू राया धम्मं सोच्चा निसम्म एवं वयासी—जं नवरं—देवाणुप्पिया! सुबुद्धिं अमच्चं आमंतेमि, जेट्ठपुत्तं रज्जे ठावेमि[8], तए ण तुब्भण्णं[9] •अंतिए मुंडे भवित्ता ण अगाराओ अणगारियं° पव्वयामि।

अहासुहं देवाणुप्पिया!

४४. तए ण जियसत्तू राया जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुबुद्धिं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु मए थेराण अंतिए धम्मे निसंते जाव[10] पव्वयामि। तुमं ण किं करेसि[11]?

४५. तए ण सुबुद्धी जियसत्तुं रायं एवं वयासी[12]—•जइ ण तुब्भे देवाणुप्पिया! संसारभउव्विग्गा जाव[13] पव्वयह, अम्हं ण देवाणुप्पिया! के अण्णे आहारे वा आलंबे वा? अहं वि य ण देवाणुप्पिया! संसारभउव्विग्गे जाव° पव्वयामि[14]। तं जइ ण देवाणुप्पिया! जाव पव्वाहि। गच्छह ण देवाणुप्पिया! जेट्ठपुत्तं[15] कुडुंबे ठावेहि, ठावेत्ता पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरुहित्ता ण मम अंतिए पाउब्भवउ। सो वि तहेव पाउब्भवइ ॥

---

१. सं० पा०—अब्भणुण्णाए जाव पव्वइत्तए।
२. तत्थ (क), अच्छासु (ख, ग), अच्छ (घ)।
३. कतिवयाति (ख, ग)।
४. सं० पा०—उरालाइं जाव भुंजमाणा।
५. एगओ (ख, ग)।
६. सं० पा०—भवित्ता जाव पव्वइस्सामो।
७. जाव (क)।
८. ठवेमि (ख, ग, घ)।
९ तुब्भे ण (ख, घ), सं० पा०—तुब्भण्णं जाव पव्वयामि।
१० ना० १।१२।३६।
११. पू०—ना० १।५।८६।
१२ सं० पा०—वयासी जाव के अन्ने आहारे वा जाव पव्वयामि।
१३ ना० १।५।८६।
१४. पव्वामि (क, ग)।
१५. °पुत्तं च (क, ख, ग)।

४६. तए णं जियसत्तू राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! अदीणसत्तुस्स कुमारस्स रायाभिसेयं उवट्ठवेह । ते वि तहेव उवट्ठवेंति जाव[1] अभिसिंचति[2] जाव[3] पव्वइए ।।

४७ तए णं जियसत्तू रायरिसी[4] एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता[5], बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता जाव[6] सिद्धे ।।

४८ तए णं सुबुद्धी एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता, बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता जाव[7] सिद्धे ।।

निक्खेव-पद

४९. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं बारसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति बेमि ।।

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

मिच्छत्त-मोहियमणा, पावपसत्ता वि पाणिणो विगुणा ।
फरिहोदगं व गुणिणो, हवंति वरगुरुपसायाओ ।।१।।

---

१. ना० १।५।९३,९४ ।
२. अभिसिंचति (क, ख, ग) ।
३. ना० १।५।९५-९९ ।
४. × (क, ख, ग) ।
५. अहिज्जिऊण (ख) ।
६. ना० १।५।१०५ ।
७. ना० १।५।१०५ ।

तेरसमं अज्झयणं

मंडुक्के

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेण बारसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, तेरसमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं 'रायगिहे नयरे। गुणसिलए चेइए। समोसरणं'[1]। परिसा निग्गया ॥

३. तेणं कालेणं तेणं समएणं सोहम्मे कप्पे दद्दुरवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए दद्दुरंसि सीहासणंसि दद्दुरे देवे चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं अग्गमहिसीहिं सपरिसाहिं एवं जहा सूरियाभे जाव[2] दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ। इमं च णं केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं विउलेणं ओहिणा आभोएमाणे जाव[3] नट्टविहिं उवदंसित्ता पडिगए, जहा—सूरियाभे ॥

गोयमस्स पुच्छा-पदं

४. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—अहो णं भंते ! दद्दुरे देवे महिड्ढिए महज्जुईए महब्बले महायसे महासोक्खे महाणुभागे ॥

५. दद्दुरस्स णं भंते ! देवस्स सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभावे कहिं गए ? कहिं अणुपविट्ठे ?
गोयमा ! सरीरं गए सरीरं अणुपविट्ठे कूडागारदिट्ठंतो[4] ॥

---

१. 'घ' प्रतौ अत्र विस्तृत पाठो विद्यते।
२. राय० सू० ७।
३. राय० सू० ७-१२०।
४. राय० सू० १२३।

६ दद्दुरेण भंते! देवेण सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभावे किण्णा लद्धे ? किण्णा पत्ते ? किण्णा अभिसमण्णागए ?

भगवओ उत्तरे दद्दुरदेवस्स नंदभव-पदं

७ एवं खलु गोयमा ! इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे रायगिहे नयरे। गुणसिलए चेइए। सेणिए राया॥

८ तत्थ णं रायगिहे नंदे नामं मणियारसेट्ठी—अड्ढे दित्ते[1]॥

नंदस्स धम्मपडिवत्ति-पदं

९ तेणं कालेणं तेणं समएणं अहं गोयमा ! समोसढे। परिसा निग्गया। 'सेणिए वि निग्गए'[3]॥

१० तए णं से नंदे मणियारसेट्ठी इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे पायविहारचारेणं[4] जाव[5] पज्जुवासइ॥

११. नंदे मणियारसेट्ठी धम्मं सोच्चा समणोवासए जाए॥

१२ तए णंऽहं रायगिहाओ पडिनिक्खमंते बहिया जणवयविहारेणं[6] विहरामि॥

मिच्छत्तपडिवत्ति-पदं

१३ तए णं से नंदे मणियारसेट्ठी अण्णया कयाइ असाहुदंसणेण य अपज्जुवासणाए य अणणुसासणाए य असुस्सूसणाए य सम्मत्तपज्जवेहिं परिहायमाणेहिं-परिहायमाणेहिं मिच्छत्तपज्जवेहिं परिवड्ढमाणेहिं-परिवड्ढमाणेहिं मिच्छत्तं विप्पडिवण्णे जाए यावि होत्था॥

१४ तए णं नंदे मणियारसेट्ठी अण्णया कयाइ[7] गिम्हकालसमयंसि जेट्ठामूलंसि मासंसि अट्ठमभत्तं परिगेण्हइ, परिगेण्हित्ता पोसहसालाए[8] •पोसहिए बंभचारी उमुक्कमणिसुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अबीए दब्भसंथारोवगए° विहरइ॥

पोक्खरिणी-निम्माण-पदं

१५ तए णं नंदस्स अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि तण्हाए[9] छुहाए य अभिभूयस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—धण्णा णं ते[10] •ईसरपभियओ, संपुण्णा णं ते ईसरपभियओ, कयत्था णं ते

---

१. पू०—राय० सू० ६६७।
२ पू०—ना० १।५।७।
३. सेणिए राया निग्गए (क); राया निग्गओ (ख), राया निग्गए (ग)।
४. पायचारेण (क, ख, ग)।
५ उवा० १।२०।
६. °विहार (ख)।
७. × (क, ख, ग)।
८. सं० पा०—पोसहसालाए जाव विहरइ।
९. तण्हा (ग)।
१०. सं० पा०—धण्णा णं ते जाव ईसरपभियओ।

ईसरपभियओ, कयपुण्णा णं ते ईसरपभियओ, कयलक्खणा णं ते ईसरपभियओ कयविभवा णं ते ० ईसरपभियओ, जेसिं णं रायगिहस्स बहिया बहूओ वावीओ पोक्खरिणीओ[1] •दीहियाओ गुंजालियाओ सरपंतियाओ० सरसरपंतियाओ, जत्थ णं बहुजणो 'ण्हाइ य पियइ य'[2] पाणियं च संवहइ। तं सेयं खलु ममं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[3] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते सेणियं रायं आपुच्छित्ता रायगिहस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे वेब्भारपव्वयस्स अदूरसामंते वत्थुपाढग-रोइयंसि भूमिभागंसि नंदं पोक्खरिणिं खणावेत्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते पोसहं पारेइ, पारेत्ता ण्हाए कयबलिकम्मे मित्त-नाइ[4]-•नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं सद्धिं० संपरिवुडे महत्थं[5] •महग्घं महरिहं रायारिहं० पाहुडं गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छइ जाव[6] पाहुडं उवट्ठवेइ, उवट्ठवेत्ता एवं वयासी—इच्छामि णं सामी! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे रायगिहस्स बहिया[7] •उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे वेब्भारपव्वयस्स अदूरसामंते वत्थुपाढग-रोइयंसि भूमिभागंसि नंदं पोक्खरिणिं० खणावेत्तए।

अहासुहं देवाणुप्पिया!

१६ तए णं से नंदे मणियारसेट्ठी सेणिएणं रण्णा अब्भणुण्णाए समाणे हट्ठतुट्ठे रायगिहं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता वत्थुपाढय-रोइयंसि भूमिभागंसि नंदं पोक्खरिणिं खणावेउं पयत्ते यावि होत्था॥

१७ तए णं सा नंदा पोक्खरणी अणुपुव्वेणं खम्ममाणा-खम्ममाणा[8] पोक्खरणी जाया यावि होत्था—चाउक्कोणा[9] समतीरा अणुपुव्व सुजायवप्पसीयलजला संछन्न[10]-पत्त-भिसमुणाला[11] बहुउप्पल-पउम-कुमुद-नलिण-सुभग-सोगंधिय-पुंडरीय-महापुंडरीय-सयपत्त-सहस्सपत्त-पप्फुल्लकेसरोववेया[12] परिहत्थ-भमंत-मत्तछप्पय[13]-

---

१. स० पा०—पोक्खरिणीओ जाव सरसरपंतियाओ।
२. ण्हायइ पियइ (क, ख)।
३ ना० १।१।२४।
४. स० पा०—नाइ जाव संपरिवुडे।
५ स० पा०—महत्थं जाव पाहुडं रायारिहं (क, ख, ग, घ); पाहुडं रायारिहं—अत्र लिपिदोषेण व्यत्ययो जात इति संभाव्यते।
६. ना० १।५।२०।
७ स० पा०—बहिया जाव खणावेत्तए।
८. खणमाणा (घ)।
९ चउक्कोणा (क)।
१०. सच्छन्न (क, ख, ग, घ)।
११ विस० (ख, ग)।
१२ पुप्फफलकेसरोविया (क); प्फुल्लप्पलकेसरोवचिया (ख); फुल्लकेसरोववेया (घ)।
१३ महच्छप्पय (क)।

अणेग-सउणगण-मिहुण-वियरिय-सद्दुन्नइय[1]-महुरसरनाइया पासाईया दरिस-णिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥

वणसंड-पदं

१८ तए णं से नंदे मणियारसेट्ठी नंदाए पोक्खरिणीए चउद्दिसिं चत्तारि वणसंडे रोवावेइ ॥

१९ तए णं ते वणसंडा अणुपुव्वेणं सारक्खिज्जमाणा संगोविज्जमाणा संवड्ढिज्ज-माणा य वणसंडा जाया—किण्हा जाव[2] महामेह-निउरंबभूया पत्तिया पुप्फिया[3]-•फलिया हरियग-रेरिज्जमाणा सिरीए अईव° उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा चिट्ठंति ॥

चित्तसभा-पदं

२० तए णं नंदे मणियारसेट्ठी पुरत्थिमिल्ले वणसंडे एगं महं चित्तसभं कारावेइ[4]-अणेगखंभसयसण्णिविट्ठं[5] पासाईयं दरिसणिज्जं अभिरूवं पडिरूवं। तत्थ णं बहूणि किण्हाणि य[6] •नीलाणि य लोहियाणि य हालिद्दाणि य° सुक्किलाणि य कट्ठकम्माणि य पोत्थकम्माणि य चित्त-लेप्प-गंथिम-वेढिम-पूरिम-संघाइमाइं[7] उवदंसिज्जमाणाइं-उवदंसिज्जमाणाइं चिट्ठंति।

तत्थ णं बहूणि आसणाणि य सयणाणि य अत्थुय-पच्चत्थुयाइं चिट्ठंति।

तत्थ णं बहवे 'नडा य'[8] नट्टा य[9] •जल्ल-मल्ल-मुट्ठिय-वेलंबग-कहग-पवग-लासग-आइक्खग-लंख-मंख-तूणइल्ल-तुंबवीणिया य° दिन्नभइ-भत्त-वेयणा तालायर-कम्मं करेमाणा-करेमाणा विहरंति।

रायगिहविणिग्गओ एत्थ[10] णं बहुजणो तेसु पुव्वन्नत्थेसु आसण-सयणेसु सण्णि-सण्णो[11] य संतुयट्टो य सुयमाणो य 'पेच्छमाणो य'[12] 'साहेमाणो य'[13] सुहंसुहेणं विहरइ ॥

---

१ सद्दुन्नइय (क, ग), सद्दुनइय (ख, घ)। असौ पाठः जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति (मुद्रित प्रति सू० ७४) राधारेण स्वीकृतः।

२. ना० १।७।१३।

३. सं० पा०—पुप्फिया जाव उवसोभेमाणा।

४ करावेइ (ख)।

५ पू०—ना० १।१।८६।

६. सं० पा०—किण्हाणि य जाव सुक्किलाणि।

७. संघातिम (क, ख, ग, घ)।

८. × (ग, घ)।

९. सं० पा०—नट्टा य जाव दिन्न°।

१०. तत्थ (क)।

११. उच्चत्थुयसंनिसण्णो (क)।

१२. × (ख, ग, घ)।

१३. × (ख, ग), सोहेमाणो य (घ)।

महाणससाला-पद

२१. तए ण नंदे मणियारसेट्ठी दाहिणिल्ले वणसडे एगं महं महाणससालं कारावेइ—अणेगखंभसयसण्णिविट्ठं जाव[1] पडिरूवं। तत्थ णं बहवे पुरिसा दिन्नभइ-भत्त-वेयणा[2] विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडेंति, बहूणं समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगाणं परिभाएमाणा-परिभाएमाणा विहरंति॥

तिगिच्छियसाला-पद

२२. तए णं नंदे मणियारसेट्ठी पच्चत्थिमिल्ले वणसडे एगं महं तिगिच्छियसालं कारावेइ[3]—अणेगखंभसयसण्णिविट्ठं जाव[4] पडिरूवं। तत्थ णं बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य 'जाणुया य जाणुयपुत्ता य'[5] कुसला य कुसलपुत्ता य दिन्नभइ-भत्त-वेयणा बहूणं वाहियाण य गिलाणाण य रोगियाण य दुब्बलाण य तेइच्छ-कम्मं करेमाणा-करेमाणा विहरंति। अण्णे य एत्थ बहवे पुरिसा दिन्नभइ-भत्त-वेयणा तेसिं बहूणं वाहियाण य गिलाणाण य रोगियाण य दुब्बलाण य ओसह-भेसज्ज-भत्तपाणेणं पडियारकम्मं करेमाणा विहरंति॥

अलंकारियसभा-पदं

२३. तए णं नंदे मणियारसेट्ठी उत्तरिल्ले वणसडे एगं महं अलंकारियसभं कारावेइ[6]—अणेगखंभसयसण्णिविट्ठं जाव[7] पडिरूवं। तत्थ णं बहवे अलंकारिय-मणुस्सा दिन्नभइ-भत्त-वेयणा बहूणं समणाण य[8] अणाहाण य गिलाणाण य रोगियाण य दुब्बलाण य अलंकारियकम्मं करेमाणा-करेमाणा विहरंति॥

नंदस्स पसंसा-पदं

२४. तए णं तीए नंदाए पोक्खरिणीए बहवे सणाहा य अणाहा य पंथिया य पहिया य करोडिया[9] य तणहारा य पत्तहारा य कट्ठहारा य—अप्पेगइया ण्हायंति अप्पे-गइया पाणियं पियंति अप्पेगइया पाणियं संवहंति[10] अप्पेगइया विसज्जियसेय-जल्ल-मल-परिस्सम-निद्द-खुप्पिवासा सुहंसुहेणं विहरंति। रायगिहविणिग्गओ[11]

---

१. ना० १।१।८६।
२. दिन्नभय० (ग) सर्वत्र।
३. कारेइ (क, ग, घ)।
४. ना० १।१।८६।
५. × (क)।
६. करेइ (ख, ग); कारेति (घ)।
७. ना० १।१।८६।
८. य माहणाण य सनाहाण य (क्व०)।
९. करोडिकारवा (ख, ग)।
१०. सवाहंति (क, ख)।
११. रायगिहनिग्गओ (ख, ग)।

वि यत्थ[1] वहुजणो 'किं ते'[2] जलरमण-विविहमज्जण-कयलिलयाहरय[3]-कुसुम-सत्थरय-अणेगसउणगण-कयरिभियसकुलेसु सुहसुहेण अभिरममाणो-अभिरग-माणो[4] विहरइ ॥

२५ तए णं नदाए पोक्खरिणीए[5] बहुजणो ण्हायमाणो य पियमाणो य पाणियं च[6] संवहमाणो य अण्णमण्णं एवं वयासी—धण्णे[7] णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियार-सेट्ठी, कयत्थे[8] •णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियारसेट्ठी, कयलक्खणे णं देवाणु-प्पिया ! नंदे मणियारसेट्ठी, कयपुण्णे णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियारसेट्ठी, कया णं लोया ! सुलद्धे माणुस्सए° जम्मजीवियफले [नंदस्स मणियारस्स ?] ? जस्स णं इमेयारूवा नंदा पोक्खरिणी चाउक्कोणा जाव[9] पडिरूवा[10] जाव[11] रायगिहविणिग्गओ जत्थ बहुजणो आसणेसु य सयणेसु य सण्णिसण्णो य संतुयट्टो य पेच्छमाणो य साहेमाणो य सुहसुहेणं विहरइ। तं धन्ने णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियारसेट्ठी, कयत्थे णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियारसेट्ठी, कयलक्खणे णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियारसेट्ठी, कयपुण्णे णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियारसेट्ठी, कया णं लोया ! सुलद्धे माणुस्सए जम्मजीवियफले नंदस्स मणियारस्स ?

२६ तए णं रायगिहे सिंघाडग[12]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु° बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ -धन्ने णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियारसेट्ठी सो चेव गमओ जाव सुहसुहेणं विहरइ ॥

२७. तए णं से नंदे मणियारसेट्ठी बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे 'धाराहत - कलंबगं पिव'[13] समूसवियरोमकूवे परं सायासोक्खमणुभवमाणे विहरइ ॥

नंदस्स रोगुप्पत्ति-पदं

२८ तए णं तस्स नंदस्स मणियारसेट्ठिस्स अण्णया कयाइ सरीरगंसि सोलस रोगा-यंका[14] पाउब्भूया। [तं जहा—

---

१ जत्थ (क, ख); तत्थ (घ)।
२ किं तत् 'यत् करोति' इति शेषः।
३ °घरय (क)।
४. अभिरममाणे (क)।
५ पुक्खरणीए (क), पोक्खरणीए (ख)।
६ वा (क)।
७ धण्णेसि (क, घ)।
८. सं० पा०—कयत्थे जाव जम्म°।
९. ना० १।१३।१७।
१०. पडिरूवा जस्स णं पुरत्थिमिल्ले तं चेव चउसु वि वणसडेसु (क, ख, ग, घ)।
११. ना० १।१३।१८-२४।
१२. सं० पा०—सिंघाडग जाव बहुजणो।
१३ धाराहयकलंबकं पिव (ख, ग), °कयबकं पिव (घ)।
१४. रोगातंका (क), रोयायंका (ख)।

गाहा—

सासे कासे जरे दाहे, कुच्छिसूले भगंदरे।
अरिसा[2] अजीरए दिट्ठी-मुद्धसूले[3] अकारए।।
अच्छिवेयणा कण्णवेयणा कंडू दउदरे[3] कोढे[4] ।।१।।]

तिगिच्छा-पदं

२९ तए णं से नंदे मणियारसेट्ठी सोलसहिं रोयायंकेहिं अभिभूए समाणे कोडुंबिय-पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! रायगिहे नयरे सिंघाडग[5]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°पहेसु महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एवं वयह—एवं खलु देवाणुप्पिया! नंदस्स मणियारस्स सरीरगंसि सोलस रोयायंका पाउब्भूया। [तं जहा—सासे जाव कोढे[6]]। तं जो णं इच्छइ देवाणुप्पिया! विज्जो वा विज्जपुत्तो वा जाणुओ वा जाणुअपुत्तो वा कुसलो वा कुसलपुत्तो वा नंदस्स मणियारस्स तेसिं च णं सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं उवसामित्तए, तस्स णं नंदे मणियार-सेट्ठी विउलं अत्थसंपयाणं दलयइ त्ति कट्टु दोच्चंपि तच्चंपि घोसणं[7] घोसेह, घोसेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह। तेवि तहेव पच्चप्पिणंति।।

३० तए णं रायगिहे नगरे इमेयारूवं घोसणं सोच्चा निसम्म बहवे वेज्जा य[8] •वेज्ज-पुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य कुसला य° कुसलपुत्ता य सत्थकोसहत्थगया य सिलियाहत्थगया य गुलियाहत्थगया य ओसह-भेसज्जहत्थगया य सएहिं-सएहिं गिहेहिंतो निक्खमंति, निक्खमित्ता रायगिहं मज्झंमज्झेणं जेणेव नंदस्स मणियारसेट्ठिस्स गिहे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता नंदस्स मणियारसेट्ठिस्स सरीरं[9] पासंति, पासित्ता तेसिं रोगायंकाणं नियाणं पुच्छंति, पुच्छित्ता नंदस्स मणियारसेट्ठिस्स बहूहिं उव्वलणेहि[10] य उव्वट्टणेहि य सिणेहपाणेहिं[11] य वमणेहि य विरेयणेहि य सेयणेहि य अवदहणेहिं[12] य अवण्हावणेहिं[13] य अणुवासणाहिं[14] य वत्थिकम्मेहिं य निरूहेहिं[15] य सिरावेहेहि य तच्छणाहि य पच्छणाहि य

---

१ आयारो ६।८ सूत्रे षोडशरोगविवरणे भिन्न क्रमो विद्यते।
२ मुद्धिसूले (क), पुट्ठसूले (ग)।
३ दओदरे (ख)।
४. असौ कोष्ठकवर्ती पाठः व्याख्यांशः प्रतीयते।
५ सं० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु।
६. असौ कोष्ठकवर्ती पाठः व्याख्यांशः प्रतीयते।
७ उग्घोसणं (क)
८. सं० पा०—वेज्जा य जाव कुसलपुत्ता।
९ सरीरं हस्सं (क)।
१० उव्वेलणेहि (ग)।
११. सिणेहि य पाणेहि य (ख)।
१२, अवद्दाणाहि (क); अववहणेहि (ख)। अवद्दवेयणाहि (ग)।
१३ अवण्हावणाहि (क), अवण्हाणेहि (ख, घ)।
१४. °वासणेहि (घ)।
१५. निरूवेहि (ख)।

सिरावत्थीहि[1] य तप्पणाहि य पुडवाएहि य 'छल्लीहि य वल्लीहि य'[2] मूलेहि य कंदेहि य पत्तेहि य पुप्फेहि य फलेहि य वीएहि य सिलियाहि य गुलियाहि य ओसहेहि य भेसज्जेहि य[3] इच्छंति तेसिं सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं[4] उवसामित्तए, नो चेव णं संचाएंति उवसामेत्तए ॥

३१. तए णं ते बहवे वेज्जा[5] य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य कुसला य कुसलपुत्ता य जाहे नो संचाएंति तेसिं सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं उवसामित्तए, ताहे संता तंता परितंता[6] •निव्विण्णा समाणा जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं° पडिगया ॥

भगवओ उत्तरे दद्दुरदेवस्स दद्दुरभव-पदं

३२. तए णं नंदे मणियारसेट्ठी तेहिं सोलसेहिं रोगायंकेहिं अभिभूए समाणे नंदाए पुक्खरिणीए मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववण्णे तिरिक्खजोणिएहिं निबद्धाउए बद्धपएसिए अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे कालमासे कालं किच्चा नंदाए पोक्खरिणीए दद्दुरीए कुच्छिंसि दद्दुरत्ताए उववण्णे ॥

३३ तए णं नंदे[7] दद्दुरे[8] गब्भाओ विणिमुक्के समाणे उम्मुक्कबालभावे[9] विण्णय-परिणयमित्ते[10] जोव्वणगमणुप्पत्ते नंदाए पोक्खरिणीए अभिरममाणे-अभिरममाणे विहरइ ॥

३४. तए णं नंदाए पोक्खरिणीए बहुजणो ण्हायमाणो य पियमाणो य पाणियं च संवहमाणो य अण्णमण्णं[11] एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ— धन्ने णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियारे, जस्स णं इमेयारूवा नंदा पुक्खरिणी— चाउक्कोणा जाव[12] पडिरूवा[13] ॥

दद्दुरस्स जाइसरण-पदं

३५. तए णं तस्स दद्दुरस्स तं अभिक्खणं-अभिक्खणं बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं

---

१. सिरावेहेहि (क), अवरहसिरावत्थीहि (ख); सिरावेढेहि य (ग)।
२ छल्लीहि य (ख), वल्लीहि य छल्लीहि-य (घ)।
३. य आसज्जेहि य (क, ग); आइज्जेहि य (घ)।
४. रोगातंक (क, ग)।
५ विज्जा (क, ख, ग)।
६ स० पा०—परितंता जाव पडिगया।
७ नंदे जीवे (घ)।
८ दद्दुरीए (घ)।
९. उमुक्क° (ख, घ)।
१०. विण्णाय° (घ)।
११. अण्णमण्णस्स (क, ग, घ)।
१२. ना० १।१३।१७।
१३. पडिरूवा जस्स णं पुरत्थिमिल्ले वणसंडे चित्तसभा अणेगखंभ(क, ख, ग, घ), पू०— ना० १।१३।१८-२४।

सोच्चा निसम्म[1] इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—कहि[2] मन्ने मए इमेयारूवे सद्दे निसतपुव्वे[3] त्ति कट्टु सुभेण परिणामेण[4] •पसत्थेण अज्झवसाणेण लेसाहि विसुज्जमाणीहि तयावरणिज्जाण कम्माण खओवसमेण ईहापूह-मग्गण-गवेसण करेमाणस्स सण्णिपुव्वे° जाईसरणे समुप्पण्णे, पुव्वजाइ सम्म समागच्छइ ॥

३६ तए ण तस्स दद्दुरस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु अह इहेव रायगिहे नयरे नदे नाम मणियारे—अड्ढे[5] । तेण कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे समोसढे । तए ण मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए पचाणुव्वइए सत्तसिक्खावइए[6]—•दुवालसविहे गिहिधम्मे° पडिवण्णे । तए ण अह अण्णया कयाइ असाहुदसणेण य जाव[7] मिच्छत्त विप्पडिवण्णे ।

तए ण अह अण्णया कयाइ गिम्हकालसमयसि जाव[8] पोसह उवसपज्जित्ता ण विहरामि । एव जहेव चिता । आपुच्छणा । नदापुक्खरिणी । वणसडा । सभाओ । त चेव सव्व जाव[9] नंदाए दद्दुरत्ताए उववण्णे । त अहो ण अह अधण्णे[10] अपुण्णे[11] अकयपुण्णे निग्गथाओ पावयणाओ नट्ठे भट्ठे परिब्भट्ठे । त सेय खलु मम सयमेव पुव्वपडिवण्णाइ पचाणुव्वयाइ[12] उवसपज्जित्ता ण विहरित्तए—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता पुव्वपडिवण्णाइ पचाणुव्वयाइ आरुहेइ[13], आरुहेत्ता इमेयारूव अभिग्गह अभिगिण्हइ—कप्पइ मे जावज्जीव छट्ठछट्ठेणं अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण अप्पाण भावेमाणस्स विहरित्तए, छट्ठस्स वि य ण पारणगसि कप्पइ मे नदाए पोक्खरिणीए परिपेरतेसु फासुएण ण्हाणोदएण उम्मद्दणालोलियाहि[14] य[15] वित्ति कप्पेमाणस्स विहरित्तए—इमेयारूव अभिग्गह अभिगेण्हइ, जावज्जीवाए छट्ठछट्ठेण[16] •अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण अप्पाण भावेमाणे° विहरइ ॥

भगवओ रायगिहे समवसरण-पद

३७ तेण कालेण तेण समएण अह गोयमा ! गुणसिलए समोसढे । परिसा निग्गया ॥

---

१. निसम्मा (ख, ग) ।
२. से कहि (क्व०) ।
३ °पुव्व (ख) ।
४ स० पा०—परिणामेण जाव जाईसरणे ।
५. पू०—ना० १।५।७ ।
६, स० पा०—सिक्खावइए जाव पडिवण्णे ।
७. ना० १।१३।१३ ।
८ ना० १।१३।१४ ।
९. ना० १।१३।१५-३२ ।
१० अहन्ने (ख, ग) ।
११ अकयत्थे (घ) ।
१२ पचाणुव्वयाइ सत्तसिक्खावयाइ (घ) ।
१३. आरुहइ (ख) ।
१४. उम्मद्दणो° (क, ख, ग), उम्मद्दणाइ लोलियाहि (घ) ।
१५. 'मट्टियाए' इति शेषः ।
१६. स० पा०—छट्ठछट्ठेणं जाव विहरइ ।

३८. तए णं नंदाए पोक्खरिणीए बहुजणो ण्हायमाणो य पियमाणो य पाणियं च संवहमाणो य[1] अण्णमण्णं[2] •एवमाइक्खइ—एवं खलु° समणे भगवं महावीरे इहेव गुणसिलए चेइए समोसढे। तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया। समणं भगवं महावीरं वंदामो[3] •णमंसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं° पज्जुवासामो। एयं णे इहभवे परभवे य हियाए[4] •सुहाए खमाए निस्सेयसाए° आणुगामियत्ताए भविस्सइ॥

दद्दुरस्स समवसरणं पइ गमण-पदं

३९. तए णं तस्स दद्दुरस्स बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु समणे भगवं महावीरे समोसढे। तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि[5]—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता नंदाओ पोक्खरिणीओ सणियं-सणियं पच्चुत्तरेइ[6], जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ताए उक्किट्ठाए[7] दद्दुरगईए वीईवयमाणे-वीईवयमाणे जेणेव ममं अंतिए तेणेव पहारेत्थ गमणाए॥

४०. इमं च णं सेणिए राया भंभसारे[8] ण्हाए जाव[9] सव्वालंकारविभूसिए हत्थिखंधवरगए सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामरेहि य उद्धुव्वमाणेहिं महयाहय-गय-रह-भड-चडगर-[कलियाए ?] चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे मम पायवंदए हव्वमागच्छइ॥

दद्दुरस्स मच्चु-पदं

४१. तए णं से दद्दुरे सेणियस्स रण्णो एगेणं आसकिसोरएणं वामपाएणं अक्कंते समाणे अंतनिग्घाइए कए यावि होत्था॥

४२. तए णं से दद्दुरे अथामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्जमित्ति कट्टु एगंतमवक्कमइ, करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—नमोत्थु णं अरहंताणं जाव[10] सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपत्ताणं। नमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव[11] सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं

---

१. ण्हाइ ३ (क, ख, ग), ण्हाणे य ३ (घ)। असौ पाठः ३४ सूत्रेण पूरितः।
२. सं० पा०—अण्णमण्णं जाव समणे।
३. सं० पा०—वंदामो जाव पज्जुवासामो।
४. हिययाए (क, ख, ग) सं० पा०—हियाए जाव आणुगामियत्ताए।
५. पू०—ना० १।१३।३७।
६. उत्तरेइ, २ (ख)।
७. उक्किट्ठाए ५ (क, ख)।
८. भिंभिसारे (क), भिंभसारे (ख); भिंभासारे (घ)।
९. ना० १।१।८१।
१०,११. ओ० सू० २१।

संपाविउकामस्स। पुव्विंपि य णं मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए थूलए पाणाइवाए पच्चक्खाए[1], •थूलए मुसावाए पच्चक्खाए, थूलए अदिण्णादाणे पच्चक्खाए, थूलए मेहुणे पच्चक्खाए°, थूलए परिग्गहे पच्चक्खाए। तं इयाणिं पि तस्सेव अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जाव सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामि जावज्जीवं, सव्वं असण-पाण-खाइम-साइमं पच्चक्खामि जावज्जीवं। जंपि य इमं सरीरं इट्ठं कंतं जाव[2] मा णं विविहा रोगायंका परीसहोवसग्गा फुसंतु एयंपि य णं चरिमेहिं ऊसासेहिं वोसिरामि त्ति कट्टु॥

४३. तए णं से दद्दुरे कालमासे कालं किच्चा जाव[3] सोहम्मे कप्पे दद्दुरवडिंसए विमाणे उववायसभाए दद्दुरदेवत्ताए उववण्णे। एवं खलु गोयमा! दद्दुरेणं सा दिव्वा देविड्ढी लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया॥

४४. दद्दुरस्स णं भंते! देवस्स केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता?
गोयमा! चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। से णं दद्दुरे देवे महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ[4] •मुच्चिहिइ परिनिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणं° अंतं करेहिइ॥

निक्खेव-पदं

४५. एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[5] संपत्तेणं तेरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते।

—त्ति बेमि॥

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

संपन्नगुणो वि जओ[6], सुसाहु-संसग्गवज्जिओ पायं।
पावइ गुणपरिहाणिं, दद्दुरजीवोव्व मणियारो॥१॥

अथवा—

तित्थयर-वंदणत्थं, चलिओ भावेण पावए सग्गं।
जह दद्दुरदेवेणं, पत्तं वेमाणिय-सुरत्तं॥२॥

---

१. सं० पा०—पच्चक्खाए जाव थूलए।
२. ना० १।१।२०६।
३. ना० १।१।२११।
४. सं० पा०—बुज्झिहिइ जाव अंतं।
५. ना० १।१।७।
६. जिओ (ख, ग)।

चोद्दसमं अज्झयणं

तेयली

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[1] संपत्तेणं तेरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, चोद्दसमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

२ एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं तेयलिपुरं नामं नयरं। पमयवणे उज्जाणे। कणगरहे राया ॥

३. तस्स णं कणगरहस्स पउमावई देवी ॥

४ तस्स णं कणगरहस्स तेयलिपुत्ते नामं अमच्चे—'साम-दंड'[2]-•भेय-उवप्पयाण-नीति-सुपउत्त-नयविहण्णू[3] विहरइ ॥

५. तत्थ णं तेयलिपुरे कलादे नामं मूसियारदारए होत्था—अड्ढे जाव[4] अपरिभूए॥

६ तस्स णं भद्दा नामं भारिया ॥

७ तस्स णं कलायस्स मूसियारदारगस्स धूया भद्दाए अत्तया[5] पोट्टिला नामं दारिया होत्था—रूवेण य जोव्वणेण[6] य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठ-सरीरा ॥

पोट्टिलाए कीडा-पदं

८. तए णं सा पोट्टिला दारिया अण्णया कयाइ ण्हाया सव्वालंकारविभूसिया चेडिया-चक्कवाल-संपरिवुडा उप्पिं पासायवरगया आगासतलगंसि कणग[7]-तिंदूसएणं कीलमाणी-कीलमाणी विहरइ ॥

---

१. ना० १।१।७।

२. सं० पा०—साम-दंड°। असौ अपूर्णः पाठः 'जाव' आदिपूर्तिसंकेत-रहितोस्ति।

३. पू०—ना० १।१।१६।

४. ना० १।५।७।

५. अत्तिया (क, ख, ग)।

६. × (ग)।

७ कणगमयेण (घ)।

तेयलिपुत्तस्स आसत्ति-पदं

९. इमं च णं तेयलिपुत्ते अमच्चे ण्हाए आसखधवरगए महया-भड-चडगर-आसवाहणियाए निज्जायमाणे कलायस्स मूसियारदारगस्स गिहस्स अदूरसामतेण वीईवयइ ।।

१०. तए ण से तेयलिपुत्ते अमच्चे मूसियारदारगस्स गिहस्स अदूरसामतेण वीईवयमाणे-वीईवयमाणे पोट्टिलं दारिय उप्पि आगासतलगसि कणग-तिंदूसएण कीलमाणि पासइ, पासित्ता पोट्टिलाए दारियाए रूवे य जोव्वणे य लावण्णे य अज्झोववण्णे कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—एस ण देवाणुप्पिया ! कस्स दारिया कि नामधेज्जा वा ?

११ तए ण कोडुबियपुरिसा तेयलिपुत्त एव वयासी—एस ण सामी ! कलायस्स मूसियारदारयस्स धूया भद्दाए अत्तया पोट्टिला नामं दारिया—रूवेण य[1] •जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठ°सरीरा ।।

पोट्टिलाए वरण-पदं

१२ तए णं से तेयलिपुत्ते आसवाहणियाओ पडिणियत्ते समाणे अब्भितरठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! कलायस्स मूसियारदारयस्स धूय भद्दाए अत्तय पोट्टिल दारिय मम भारियत्ताए वरेह ।।

१३ तए ण ते अब्भितरठाणिज्जा पुरिसा तेयलिणा एव वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा करयल[2]•परिग्गहिय दसणह सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु "एव सामी"! तहत्ति आणाए विणएण वयण पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता तेयलिस्स अतियाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता° जेणेव कलायस्स मूसियारदारयस्स गिहे तेणेव उवागया ।।

१४. तए ण से कलाए मूसियारदारए ते पुरिसे एज्जमाणे पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता सत्तट्ठपयाइ अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता आसणेण उवणिमतेइ, उवणिमतेत्ता आसत्थे वीसत्थे सुहासणवरगए एव वयासी—सदिसतु ण देवाणुप्पिया ! किमागमणपओयण ?

१५ तए ण ते अब्भितरठाणिज्जा पुरिसा कलाय मूसियारदारयं एव वयासी—अम्हे ण देवाणुप्पिया ! तव धूयं भद्दाए अत्तय पोट्टिल दारिय तेयलिपुत्तस्स भारियत्ताए वरेमो । त जइ ण जाणसि[3] देवाणुप्पिया ! जुत्तं वा पत्त वा

---

१. स० पा०—रूवेण य जाव सरीरा ।
२. स० पा०—करयल तहत्ति जेणेव ।
३. जाणासि (ग) ।

सलाहणिज्ज वा सरिसो वा सजोगो वा दिज्जउ ण पोट्टिला दारिया तेयलिपुत्तस्स। तो[1] भण देवाणुप्पिया! किं दलामो सुक[2]॥

१६ तए ण कलाए मूसियारदारए ते अब्भितरठाणिज्जे पुरिसे एवं वयासी—एस चेव ण देवाणुप्पिया! मम सुके जण्ण तेयलिपुत्ते मम दारियानिमित्तेण अणुग्गह करेइ। ते अब्भितरठाणिज्जे पुरिसे विपुलेण असण-पाण-खाइम-साइमेण पुप्फ-वत्थ-गध[3]-मल्लालकारेण सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ॥

१७ [तए ण ते अब्भितरठाणिज्जा पुरिसा[4]?] कलायस्स मूसियारदारयस्स गिहाओ पडिनियत्तति[5], जेणेव तेयलिपुत्ते अमच्चे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तेयलिपुत्त अमच्च एयमट्ठं निवेइति[6]॥

पोट्टिलाए विवाह-पद

१८ तए ण कलाए मूसियारदारए अण्णया कयाइ सोहणसि तिहि-करण-नक्खत्त-मुहुत्तसि पोट्टिल दारिय ण्हाय सव्वालकारविभूसिय सीयं दुरुहेत्ता मित्त-नाइ[7]-•नियग-सयण-सबधि-परियणेण सद्धि॰ सपरिवुडे साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सव्विड्ढीए[8] तेयलिपुर नयर मज्झमज्झेण जेणेव तेयलिस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, पोट्टिल दारिय तेयलिपुत्तस्स सयमेव भारियत्ताए दलयइ॥

१९ तए ण तेयलिपुत्ते पोट्टिल दारिय भारियत्ताए उवणीयं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे पोट्टिलाए सद्धि पट्टय दुरुहइ, दुरुहित्ता सेयापीएहि[9] कलसेहि अप्पाण मज्जावेइ, मज्जावेत्ता अग्गिहोम कारेइ, कारेत्ता पाणिग्गहण करेइ, करेत्ता पोट्टिलाए भारियाए[10] मित्त-नाइ[11]-•नियग-सयण-सबधि॰-परियण विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेण पुप्फ-वत्थ[12]-•गध-मल्लालकारेण सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता॰ पडिविसज्जेइ॥

२० तए ण से तेयलिपुत्ते पोट्टिलाए भारियाए अणुरत्ते अविरत्ते उरालाइ[13] •माणुस्सगाइ भोगभोगाइ भुजमाणे॰ विहरइ॥

---

१. ता (क, घ)।
२. सुक्क (घ)।
३ जाव (ख, घ)।
४. कोष्ठकान्तर्गत पाठ प्रतिपु नोपलभ्यते।
५. नियत्तति २ (क, ख, ग), पडिनिक्खमइ (घ)।
६. निवेयति (ख); निवेत्तेति (ग)।
७. स॰ पा॰—नाइ॰।
८. पू॰—ना॰ १।१।३३।
९. सेयपीएहिं (ग)।
१०. भारियाए सद्धि (घ)।
११. स॰ पा॰—नाइ जाव परियण।
१२. स॰ पा॰—वत्थ जाव पडिविसज्जेइ।
१३. स॰ पा॰—उरालाइ जाव विहरइ।

कणगरहस्स रज्जासत्ति-पदं

२१ तए ण से कणगरहे राया रज्जे य रट्ठे य बले य वाहणे य कोसे य कोट्ठागारे य 'पुरे य'[1] अतेउरे य मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववण्णे जाए, जाए पुत्ते वियगेइ—अप्पेगइयाण हत्थगुलियाओ छिंदइ, अप्पेगइयाण हत्थगुट्ठए छिंदइ, [2]•अप्पेगइयाण पायगुलियाओ छिंदइ, अप्पेगइयाण पायगुट्ठए छिंदइ, अप्पेगइयाण कण्णसक्कुलीओ छिंदइ, अप्पेगइयाण° नासापुडाइ फालेइ, अप्पेगइयाण अगोवगाइ वियत्तेइ[3] ॥

पउमावईए अमच्चेण मतणा-पदं

२२. तए ण तीसे पउमावईए देवीए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु कणगरहे राया रज्जे य[4] •रट्ठे य बले य वाहणे य कोसे य कोट्ठागारे य पुरे य अतेउरे य मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववण्णे जाए, जाए पुत्ते वियगेइ—अप्पेगइयाण हत्थगुलियाओ छिंदइ, अप्पेगइयाण हत्थगुट्ठए छिंदइ, अप्पेगइयाण पायगुलियाओ छिंदइ,अप्पेगइयाण पायगुट्ठए छिंदइ, अप्पेगइयाण कण्णसक्कुलीओ छिंदइ, अप्पेगइयाण नासापुडाइ फालेइ, अप्पेगइयाण° अगमगाइ वियत्तेइ[5]। त जइ ण अह दारय पयायामि, सेय खलु मम त दारग कणगरहस्स रहस्सियय[6] चेव सारक्खमाणीए सगोवेमाणीए विहरित्तए त्ति कट्टु एव सपेहेइ, सपेहेत्ता तेयलिपुत्त अमच्च सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया! कणगरहे राया रज्जे य[7] •रट्ठे य बले य वाहणे य कोसे य कोट्ठागारे य पुरे य अतेउरे य मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववण्णे जाए, जाए पुत्ते वियगेइ—अप्पेगइयाण हत्थगुलियाओ छिंदइ, अप्पेगइयाण हत्थगुट्ठए छिंदइ, अप्पेगइयाण पायगुलियाओ छिंदइ, अप्पेगइयाण पायगुट्ठए छिंदइ, अप्पेगइयाण कण्णसक्कुलीओ छिंदइ, अप्पेगइयाण नासापुडाइ फालेइ, अप्पेगइयाण अगोवगाइ° वियत्तेइ। त जइ ण अह देवाणुप्पिया! दारग पयायामि, तए ण तुम कणगरहस्स रहस्सियय चेव अणुपुव्वेण सारक्खमाणे सगोवेमाणे सवड्ढेहि। तए ण से

---

१. ×(क, ख, ग, घ)। १।१।१६ सूत्रवद् अत्रापि 'पुरे य' इति पाठो युज्यते।

२ स० पा०—एवं पायगुलियाओ पायगुट्ठए वि कण्णसक्कुलीओ वि नासापुडाइ।

३ वियगेइ (क, घ)।

४. स० पा०—रज्जे य जाव वियगेइ जाव अगमंगाइ।

५. वियगेइ (क, ख, ग, घ), २१ सूत्रानुसारेण अत्र 'वियत्तेइ' त्ति पाठेन भवितव्यम्। अतोऽस्माभि स एव स्वीकृत।

६. रहस्सिगत (क); रहसियय (ख, ग)।

७. स० पा०—रज्जे य जाव वियत्तेइ।

दारए उम्मुक्कबालभावे[1] •विण्णय-परिणयमेत्ते° जोव्वणगमणुप्पत्ते 'तव मम य'[2] भिक्खाभायणे[3] भविस्सइ ॥

२३. तए ण से तेयलिपुत्ते अमच्चे पउमावईए देवीए एयमट्ठ पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता पडिगए ॥

अवच्च-परिवत्तण-पद

२४ तए ण पउमावई देवी पोट्टिला य अमच्ची सममेव गब्भ गेण्हंति, सममेव परिवहति ॥

२५ तए णं सा पउमावई देवी नवण्ह मासाणं बहुपडिपुण्णाण जाव[4] पियदसण सुरूव दारग पयाया । ज रयणि च णं पउमावई देवी दारय पयाया त रयणि च ण पोट्टिला वि अमच्ची नवण्ह मासाण विणिहायमावन्न दारिय पयाया ॥

२६ तए ण सा पउमावई देवी अम्मधाइ सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—गच्छह ण तुम अम्मो ! तेयलिपुत्त रहस्सिययं[5] चेव सद्दावेहि ॥

२७ तए ण सा अम्मधाई तहत्ति पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता अतेउरस्स अवदारेण[6] निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव तेयलिस्स गिहे जेणेव तेयलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल[7]•परिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु° एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! पउमावई देवी सद्दावेइ ॥

२८. तए ण तेयलिपुत्ते अम्मधाईए अतिए एगमट्ठ सोच्चा हट्ठतुट्ठे अम्मधाईए सद्धि साओ गिहाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता अतेउरस्स अवदारेण रहस्सियय चेव अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव पउमावई देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल[8]•परिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु° एव वयासी—सदिसतु णं देवाणुप्पिया ! ज[9] मए कायव्व ॥

२९ तए ण पउमावई देवी तेयलिपुत्त एव वयासी—एव खलु कणगरहे राया जाव[10] पुत्ते वियगेइ । अहं च णं देवाणुप्पिया ! दारग पयाया । त तुम ण देवाणुप्पिया ! एय दारग गेण्हाहि जाव[11] तव मम य भिक्खाभायणे[12] भविस्सइ त्ति कट्टु तेयलिपुत्तस्स हत्थे दलयइ ॥

---

१ स० पा०—उम्मुक्कवालभावे जाव जोव्वण-गमणुप्पत्ते ।
२. तव य मम य (क), तव मम (ग, घ) ।
३ भिक्खायभातणे (ग) ।
४. ओ० सू० १४३ ।
५. रहस्सिय (क, ग) ।
६. अवद्दारेण (ग) ।
७. स० पा०—करयल जाव-एवं ।
८. स० पा०—करयल जाव एव ।
९ देवाणुप्पिए (घ) ।
१०. ना० १।१४।२१ ।
११. ना० १।१४।२३ ।
१२. भिक्खायभायणे (ग) ।

३० तए ण तेयलिपुत्ते पउमावईए हत्थाओ दारग गेण्हइ, उत्तरिज्जेण पिहेइ, अतेउरस्स रहस्सियय अवदारेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव पोट्टिला भारिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोट्टिल एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिए! कणगरहे राया जाव[1] पुत्ते वियगेइ। अय च ण दारए कणगरहस्स पुत्ते पउमावईए अत्तए। तन्न तुम देवाणुप्पिए! इम दारग कणगरहस्स रहस्सियय चेव अणुपुव्वेण सारक्खाहि य सगोवेहि[2] य सवड्ढेहि य। तए णं एस दारए उम्मुक्कबालभावे तव य मम य पउमावईए य आहारे भविस्सइ त्ति कट्टु पोट्टिलाए पासे निक्खिवइ, निक्खिवित्ता पोट्टिलाए पासाओ तं विणिहायमावण्णिय दारियं गेण्हइ, गेण्हित्ता उत्तरिज्जेण पिहेइ, पिहेत्ता अतेउरस्स अवदारेण अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव पउमावई देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पउमावईए देवीए पासे ठावेइ जाव पडिनिग्गए॥

दारियाए मयकिच्च-पदं

३१. तए ण तीसे पउमावईए देवीए अगपडियारियाओ पउमावइ देविं विणिहाय-मावण्णियं च दारिय पयाय पासति, पासित्ता जेणेव कणगरहे राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल[3]°परिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु° एव वयासी—एव खलु सामी! पउमावई देवी मएल्लिय दारिय पयाया॥

३२ तए ण कणगरहे राया तीसे मएल्लियाए दारियाए नोहरण करेइ, बहूइ लोगियाइ मयकिच्चाइ करेइ, करेत्ता कालेण विगयसोए जाए॥

अमच्चपुत्तस्स उस्सव-पद

३३ तए ण से तेयलिपुत्ते कल्ल कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! चारगसोहण[4] °करेह जाव[5] ठिइपडिय दसदेवसिय करेह, कारवेह य, एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह॥

३४. तेवि तहेव करेति, तहेव पच्चप्पिणति°॥

३५ जम्हा ण अम्ह एस दारए कणगरहस्स रज्जे जाए त होउ ण दारए नामेण कणगज्झए जाव[6] अलभोगसमत्थे जाए॥

पोट्टिलाए अप्पियत्त-पद

३६ तए णं सा पोट्टिला अण्णया कयाइ तेयलिपुत्तस्स अणिट्ठा अकता अप्पिया

---

१ ना० १।१४।२१।
२ सगोवाहि (ख, ग, घ)।
३ सं० पा०—करयल°।
४ स० पा०—चारगसोहण जाव ठिइपडिय।
५ ना० १।१।७६-७८।
६ ना० १।१।८१-८८।

अमणुण्णा अमणामा जाया यावि होत्था—नेच्छइ ण तेयलिपुत्ते पोट्टिलाए नामगोयमवि सवणयाए, किं पुण दसणं वा परिभोग वा ?

३७ तए ण तीसे पोट्टिलाए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अह तेयलिस्स पुव्वि इट्ठा कंता पिया मणुण्णा मणामा आसि, इयाणि अणिट्ठा अकंता अप्पिया अमणुण्णा अमणामा जाया। नेच्छइ णं तेयलिपुत्ते मम नाम[1] •गोयमवि सवणयाए, किं पुण दसणं वा° परिभोग वा ? [ति कट्टु ?] ओहयमणसकप्पा[2] •करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया° झियायइ ॥

पोट्टिलाए दाणसाला-पदं

३८ तए ण तेयलिपुत्ते पोट्टिल ओहयमणसंकप्प[3] •करतलपल्हत्थमुहिं अट्टज्झाणोवगय° झियायमाणिं पासइ, पासित्ता एवं वयासी—मा ण तुम देवाणुप्पिए ! ओहयमणसकप्पा[4] •करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया° झियाहि। तुम ण मम महाणसंसि विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेहि, उवक्खडावेत्ता वहूण समण-माहण[5]-•अतिहि-किवण-°-वणीमगाणं देयमाणी य दवावेमाणी[6] य विहराहि ॥

३९ तए ण सा पोट्टिला तेयलिपुत्तेणं अमच्चेण एव वुत्ता समाणी[7] हट्ठा तेयलिपुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता कल्लाकल्लिं महाणसंसि विपुल असण-[8] •पाण-खाइम-साइम उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता वहूण समण-माहण-अतिहि किवण-वणीमगाण देयमाणी य° दवावेमाणी य विहरइ ॥

अज्जा-संघाडगस्स भिक्खायरियागमण-पदं

४० तेण कालेण तेण समएण सुव्वयाओ नाम अज्जाओ इरियासमियाओ[9] •भासासमियाओ एसणासमियाओ आयाण-भंड-मत्त-णिक्खेवणासमियाओ उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाण-जल्ल-पारिट्ठावणियासमियाओ मणसमियाओ वइसमियाओ कायसमियाओ मणगुत्ताओ वइगुत्ताओ कायगुत्ताओ गुत्ताओ गुत्तिंदियाओ° गुत्तवंभचारिणीओ वहुस्सुयाओ वहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुव्वि

---

१. स० पा०—नाम जाव परिभोग।
२ स० पा०—ओहयमणसकप्पा जाव झियायइ।
३. स० पा०—ओहयमणसकप्प जाव झियायमाणिं।
४ स० पा०—ओहयमणसकप्पा°।
५ स० पा०—माहण जाव वणीमगाण।
६. देवावेमाणी (क)।
७. समाणा (ख, ग)।
८. स० पा०—असण जाव दवावेमाणी।
९. स० पा०—इरियासमियाओ जाव गुत्तवभचारिणीओ।

चरमाणीओ जेणामेव तेयलिपुरे नयरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हंति, ओगिण्हित्ता संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणीओ विहरंति ॥

४१. तए णं तासिं सुव्वयाणं अज्जाणं एगे संघाडए पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ[1], •बीयाए पोरिसीए झाणं झियाइ, तइयाए पोरिसीए अतुरियमचवल-मसंभंते मुहपोत्तियं पडिलेहेइ, भायणवत्थाणि पडिलेहेइ, भायणाणि पमज्जेइ, भायणाणि ओग्गाहेइ, जेणेव सुव्वयाओ अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ, सुव्वयाओ अज्जाओ वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामो णं तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए तेयलीपुरे नयरे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्तए।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि ॥

४२. तए णं ताओ अज्जाओ सुव्वयाहिं अज्जाहिं अब्भणुण्णाया समाणीओ सुव्वयाणं अज्जाणं अंतियाओ पडिस्सयाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता अतुरियम-चवलमसंभंताए गतीए जुगंतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रियं सोहेमाणीओ तेयलीपुरे नयरे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियं° अडमाणीओ तेयलिस्स गिहं अणुपविट्ठाओ ॥

पोट्टिलाए अमच्चपसायोवाय-पुच्छा-पदं

४३. तए णं सा पोट्टिला ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठा आसणाओ अब्भुट्ठेइ, वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेइ, पडिलाभेत्ता एवं वयासी—एवं खलु अहं अज्जाओ ! तेयलिपुत्तस्स अमच्चस्स पुव्विं इट्ठा कंता पिया मणुण्णा मणामा आसि, इयाणिं अणिट्ठा[2] •अकंता अप्पिया अमणुण्णा अमणामा जाया। नेच्छइ णं तेयलीपुत्ते मम नामगोयमवि सवणयाए, किं पुण° दंसणं वा परिभोगं वा ? तं तुब्भे णं अज्जाओ बहुनायाओ बहुसिक्खियाओ[3] बहुपढियाओ बहूणि गामागर[4]-•नगर-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-पट्टण-आसम-निगम-संवाह-सण्णि-वेसाइं° आहिंडह, बहूणं राईसर[5]-•तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणा-वइ-सत्थवाहपभिईणं° गिहाइं अणुपविसह। तं अत्थियाइं भे अज्जाओ ! केइ कहिंचि चुण्णजोए वा 'मंतजोगे वा कम्मणजोए'[6] वा 'कम्मजोए वा'[7]

---

१. सं० पा०—करेइ जाव अडमाणीओ।
२. सं० पा०—अणिट्ठा जाव दंसणं।
३. × (क)।
४. सं० पा०—गामागर जाव आहिंडह।
५. सं० पा०—राईसर जाव गिहाइं।
६. × (ग)।
७. × (क, ख)।

हियउड्डावणे वा काउड्डावणे[1] वा आभिओगिए वा वसीकरणे वा कोउयकम्मे वा भूइकम्मे वा मूले वा कंदे वा छल्ली वल्ली सिलिया वा गुलिया वा ओसहे वा भेसज्जे वा उवलद्धपुव्वे, जेणाहं तेयलिपुत्तस्स पुणरवि इट्ठा कंता पिया मणुण्णा मणामा भवेज्जामि ?

अज्जा-संघाडगस्स उत्तर-पदं

४४ तए णं ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए एवं वुत्ताओ समाणीओ दोवि कण्णे ठएंति[2], ठवेत्ता पोट्टिलं एवं वयासी—अम्हे णं देवाणुप्पिए ! समणीओ निग्गंथीओ जाव[3] गुत्तबंभचारिणीओ। नो खलु कप्पइ अम्हं एयप्पगारं कण्णेहिं वि निसामित्तए, किमंग पुण उवदंसित्तए वा आयरित्तए वा ? अम्हे णं तव देवाणुप्पिए! विचित्तं केवलिपण्णत्तं धम्मं परिकहिज्जामो ॥

पोट्टिलाए साविया-पदं

४५ तए णं सा पोट्टिला ताओ अज्जाओ एवं वयासी—इच्छामि णं अज्जाओ ! तुब्भं अंतिए केवलिपण्णत्तं धम्मं निसामित्तए ॥

४६ तए णं ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए विचित्तं केवलिपण्णत्तं धम्मं परिकहेंति ॥

४७ तए णं सा पोट्टिला धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठा एवं वयासी—सद्दहामि णं अज्जाओ ! निग्गंथं पावयणं जाव[4] से जहेयं तुब्भे वयह। इच्छामि णं अहं तुब्भं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जित्तए।

अहासुहं देवाणुप्पिए !

४८ तए णं सा पोट्टिला तासिं अज्जाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव[5] गिहिधम्मं पडिवज्जइ, ताओ अज्जाओ वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता पडिविसज्जेइ ॥

४९ तए णं सा पोट्टिला समणोवासिया जाया जाव[6] •समणे निग्गंथे फासुएणं एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसहभेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं° पडिलाभेमाणी विहरइ ॥

पोट्टिलाए पव्वज्जा-पदं

५० तए णं तीसे पोट्टिलाए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं

---

१. कायउड्डावणे वा निण्हवणे वा (क, ख); × (ग)।
२. अंगुलिय ठावेंति (क्व), अंगुलियं छाएंति (क्व०)।
३. ना० १।१४।४०।
४. ना० १।१।१०१।
५. ना० १।१४।४७।
६ ना० १।५।४७। सं० पा०—जाया जाव पडिलाभेमाणी।

जागरमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुपज्जित्था—एव खलु अह तेयलिपुत्तस्स पुव्वि इट्ठा कता पिया मणुण्णा मणामा आसि, इयाणि अणिट्ठा[1] •अकंता अप्पिया अमणुण्णा अमणामा जाया। नेच्छइ ण तेयलीपुत्ते मम नामगोयमवि सवणयाए किं पुण दसणं वा° परिभोगं वा? त सेय खलु मम सुव्वयाण अज्जाण अतिए पव्वइत्तए—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव[2] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते जेणेव तेयलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल[3]-•परिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलिं कट्टु° एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया! मए सुव्वयाणं अज्जाणं अतिए धम्मे निसते[4], •से वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए। त इच्छामि ण तुब्भेहिं° अब्भणुण्णाया पव्वइत्तए॥

५१ तए ण तेयलिपुत्ते पोट्टिल एव वयासी—एव खलु तुम देवाणुप्पिए! मुंडा पव्वइया समाणी कालमासे काल किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववज्जिहिसि। त जइ ण तुम देवाणुप्पिए! मम ताओ देवलोगाओ आगम्म केवलिपण्णत्ते धम्मे बोहेहि, तो[5] ह विसज्जेमि। अह ण तुम मम न सबोहेसि, तो ते न विसज्जेमि॥

५२ तए ण सा पोट्टिला तेयलिपुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ॥

५३. तए ण तेयलिपुत्ते विउल असणं पाण खाइमं साइम उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ[6]-•नियग-सयण-सबधि-परियण° आमतेइ जाव[7] सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पोट्टिल ण्हाय[8] •सव्वालकारविभूसिय° पुरिससहस्स-वाहिणीय सीय दुरुहित्ता मित्त-नाइ[9]-•नियग-सयण-सबधि-परियणेण सद्धिं° सपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव[10] दुदुहिनिग्घोसनाइय-रवेण तेयलिपुर मज्झमज्झेण जेणेव सुव्वयाण उवस्सए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीयाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पोट्टिल पुरओ कट्टु जेणेव सुव्वया अज्जा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! मम पोट्टिला भारिया इट्ठा कता पिया मणुण्णा मणामा। एस णं संसारभउव्विग्गा[11] •भीया जम्मण-जर-मरणाणं इच्छइ देवाणुप्पियाणं अतिए

---

१ स० पा०—अणिट्ठा जाव परिभोग।
२. ना० १।१।२४।
३. स० पा०—करयल°।
४. स० पा०—निसते जाव अब्भणुण्णाया।
५. ता (क, ख, ग)।
६. स० पा०—नाइ जाव आमतेइ।
७. ना० १।७।६।
८ स० पा०—ण्हाय जाव पुरिससहस्सवाहिणीय।
९. स० पा०—नाइ जाव सपरिवुडे।
१०. ना० १।१।३३।
११. स० पा०—ससारभउव्विग्गा जाव पव्वइत्तए।

मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए। पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया! सिस्सिणिभिक्खं।

अहासुहं, मा पडिबंधं करेहि॥

५४. तए णं सा पोट्टिला सुव्वयाहिं अज्जाहिं एवं वुत्ता समाणी हट्ठा उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, जेणेव सुव्वयाओ अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ, वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—आलित्ते णं अज्जा! लोए एवं जहा देवाणंदा जाव[1] एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झोसेत्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणेणं छेएत्ता आलोइय-पडिक्कंता समाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववण्णा॥

कणगरहस्स मच्चु-पदं

५५. तए णं से कणगरहे राया अण्णया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते यावि होत्था॥

५६. तए णं ते ईसर[2]-°तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-पभिइणो रोयमाणा कंदमाणा विलवमाणा तस्स कणगरहस्स सरीरस्स महया इड्ढी-सक्कार-समुदएणं°नीहरणं करेंति, करेत्ता अण्णमण्णं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! कणगरहे राया रज्जे य जाव[3] मुच्छिए पुत्ते वियंगित्था। अम्हे णं देवाणुप्पिया! रायाहीणा रायाहिट्ठिया रायाहीणकज्जा। अयं च णं तेयली अमच्चे कणगरहस्स रण्णो सव्वट्ठाणेसु सव्वभूमियासु लद्धपच्चए दिन्न-वियारे सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था। तं सेयं खलु अम्हं तेयलिपुत्तं अमच्चं कुमारं जाइत्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता जेणेव तेयलिपुत्ते अमच्चे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तेयलिपुत्तं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! कणगरहे राया रज्जे य जाव मुच्छिए पुत्ते वियंगित्था[4]। अम्हे णं देवाणुप्पिया! रायाहीणा[5]° रायाहिट्ठिया° रायाहीणकज्जा। तुमं च णं देवाणुप्पिया! कणगरहस्स रण्णो सव्वठाणेसु[6]° सव्वभूमियासु लद्धपच्चए दिन्नवियारे° रज्जधुराचिंतए होत्था। तं जइ णं देवाणुप्पिया! अत्थि केइ

---

१. भग० ९।१५२, १५४, १५५।

२. सं० पा०—ईसर जाव नीहरणं।

३. ना० १।१४।२१।

४. वियंगेइ (क, ख, ग, घ)। यद्यपि सर्वासु प्रतिषु अत्र 'वियंगेइ' इति पाठः उपलभ्यते। अस्मिन्नेव सूत्रे 'वियंगित्था' इति पाठः वर्तते, तदनुसारेण स एव पाठः अस्माभिरत्र स्वीकृतः।

५. सं० पा०—रायाहीणा जाव रायाहीणकज्जा।

६ सं० पा०—सव्वठाणेसु जाव रज्जधुरा-चिंतए।

कुमारे रायलक्खणसपण्णे अभिसेयारिहे तण्ण तुमं अम्ह[1] दलाहि, जण्ण[2] अम्हे महया-महया रायाभिसेएणं अभिसिंचामो ॥

कणगज्झयस्स रायाभिसेय-पदं

५७ तए ण तेयलिपुत्ते तेसिं ईसरपभिईणं एयमट्ठ पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता कणगज्झयं कुमारं ण्हाय जाव[3] सस्सिरीय करेइ, करेत्ता तेसिं ईसरपभिईणं उवणेइ, उवणेत्ता एव वयासी—एस णं देवाणुप्पिया ! कणगरहस्स रण्णो पुत्ते पउमावईए देवीए अत्तए कणगज्झए नामं कुमारे अभिसेयारिहे रायलक्खणसपण्णे, मए कणगरहस्स रण्णो रहस्सिययं सवड्ढिए[4]। एयं ण तुब्भे महया-महया रायाभिसेएण अभिसिंचह । सव्व च से[5] उट्ठाणपरियावणियं परिकहेइ ॥

५८. तए णं ते ईसरपभिइओ कणगज्झयं कुमार महया-महया रायाभिसेएणं अभिसिंचति ॥

५९ तए ण से कणगज्झए कुमारे राया जाए—महयाहिमवत-महत-मलय-मंदर-महिंदसारे जाव[6] रज्ज पसासेमाणे[7] विहरइ ॥

तेयलिपुत्तस्स सम्माण-पदं

६० तए ण सा पउमावई देवी कणगज्झय राय सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—एस ण पुत्ता ! तव रज्जे[8] •य रट्ठे य बले य वाहणे य कोसे य कोट्ठागारे य पुरे य° अतेउरे य, तुम च तेयलिपुत्तस्स अमच्चस्स पभावेण[9] । त तुम ण तेयलिपुत्तं अमच्चं आढाहि परिजाणाहि सक्कारेहि सम्माणेहि, इत अब्भुट्ठेहि, ठियं पज्जुवासेहि[10], वच्चत[11] पडिससाहेहि[12], अद्धासणेण उवणिमतेहि, भोग च से अणुवड्ढेहि ॥

६१ तए ण से कणगज्झए पउमावईए तहत्ति वयणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तेयलिपुत्तं अमच्च आढाइ[13] •परिजाणाइ सक्कारेइ सम्माणेइ, इत अब्भुट्ठेइ, ठिय पज्जुवासेइ, वच्चत पडिससाहेइ, अद्धासणेण उवणिमंतेइ°, भोग च से अणुवड्ढेइ ॥

---

१. × (ग, घ) ।
२. जाण (ग, घ) ।
३ ओ० सू० ६३ ।
४. सचिट्ठिए (ग) ।
५. तेसिं (क, ख, ग) ।
६. वण्णओ जाव (क, ख, ग, घ) । ओ० सू० १४ ।
७. पसाहेमाणे (ख) ।
८. स० पा०—रज्जे जाव अतेउरे ।
९. पहावेण (क, घ) ।
१०. पज्जुवासाहि (ख, ग) ।
११. वयतं (ग, घ) ।
१२. पडिसाहेहि (क, ख) ।
१३. स० पा०—आढाइ जाव भोगं ।

पोट्टिलदेवेण तेयलिपुत्तस्स संबोह-पदं

६२ तए णं से पोट्टिले देवे तेयलिपुत्तं अभिक्खणं-अभिक्खणं केवलिपण्णत्ते धम्मे संबोहेइ, नो चेव णं से तेयलिपुत्ते संबुज्झइ ॥

६३ तए णं तस्स पोट्टिलदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु कणगज्झए राया तेयलिपुत्तं आढाइ जाव[1] भोगं च से अणुवड्ढेइ[2], तए णं से तेयलिपुत्ते अभिक्खणं-अभिक्खणं संबोहिज्जमाणे वि धम्मे नो संबुज्झइ। तं सेयं खलु मम कणगज्झयं तेयलिपुत्ताओ विप्परिणामित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कणगज्झयं तेयलिपुत्ताओ विप्परिणामेइ ॥

६४. तए णं तेयलिपुत्ते कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[3] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते ण्हाए[4] •कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल°-पायच्छित्ते आसखंधवरगए बहूहिं पुरिसेहिं सद्धिं संपरिवुडे साओ गिहाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कणगज्झए राया तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

६५ तए णं तेयलिपुत्तं अमच्चं जे जहा बहवे राईसर-तलवर[5] •माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह°पभियओ[6] पासंति ते तहेव आढायंति परियाणंति अब्भुट्ठेंति, अंजलिपग्गहं[7] करेंति, इट्ठाहिं कंताहिं जाव[8] वग्गूहिं 'आलवमाणा य संलवमाणा[9] य पुरओ य पिट्ठओ य पासओ य[10] समणुगच्छंति ॥

६६ तए णं से तेयलिपुत्ते जेणेव कणगज्झए तेणेव उवागच्छइ ॥

६७ तए णं से कणगज्झए तेयलिपुत्तं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता नो आढाइ[11] नो परियाणाइ नो अब्भुट्ठेइ, अणाढायमाणे[12] अपरियाणमाणे अणब्भुट्ठेमाणे परम्मुहे संचिट्ठइ ॥

६८ तए णं से तेयलिपुत्ते अमच्चे कणगज्झयस्स रण्णो अंजलिं करेइ। 'तओ य णं'[13] से कणगज्झए राया अणाढायमाणे[14] अपरियाणमाणे अणब्भुट्ठेमाणे तुसिणीए परम्मुहे संचिट्ठइ ॥

---

१ ना० १।१४।६०।

२. वड्ढेइ (क, ख, ग, घ)।

३ ना० १।१।२४।

४ सं० पा०—ण्हाए जाव पायच्छित्ते।

५ सं० पा०—तलवर जाव पभियओ।

६ पभितयो (क), पभिइओ (ग, घ)।

७ °परिग्गहिए (क), °परिग्गहिय (घ); °परिग्गह (ख, ग)।

८ ना० १।१।४८।

९ आलवमाणे य संलवमाणे (ग)।

१०. य मग्गओ (क, ख, ग, घ)। अत्र 'मग्गओ य' इति पाठोऽतिरिक्त सम्भाव्यते। पिट्ठओ य मग्गओ य' एते द्वे अपि पदे समानार्थके स्तः। अस्याध्ययनस्यैव ७० सूत्रे 'मग्गओ य' इति पाठो नोपलभ्यते।

११ आयाणति (क)।

१२. अणायणमाणे ३(क), अणाढामीणे ३ (ग)।

१३. तए णं (क, ख, घ)।

१४. अणाढाइज्जमाणे ३ (क); अणाढामीणे (ख, ग), अणादिज्जमाणे (घ)।

६९ तए णं तेयलिपुत्ते कणगज्झयं रायं विप्परिणयं जाणित्ता भीए[1] •तत्थे तसिए उव्विग्गे° संजायभए एवं वयासी—रुट्ठे णं मम कणगज्झए राया। हीणे[2] णं मम कणगज्झए राया। अवज्झाए[3] णं मम कणगज्झए राया। तं न नज्जइ णं मम केणइ कु-मारेण मारेहिइ त्ति कट्टु भीए तत्थे जाव सणियं-सणियं 'पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता'[4] तमेव आसखंधं दुरूहइ, दुरूहित्ता तेयलिपुरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए॥

७० तए णं तेयलिपुत्तं जे जहा ईसर जाव[5] सत्थवाहपभियओ पासंति ते तहा नो आढायंति नो परियाणंति नो अब्भुट्ठेंति नो अंजलिपग्गहं करेंति, इट्ठाइं जाव[6] वग्गूहिं नो आलवंति नो संलवंति नो पुरओ य पिट्ठओ य पासओ य समणुगच्छंति॥

७१ तए णं तेयलिपुत्ते अमच्चे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागए। जा वि य से तत्थ बाहिरिया परिसा भवइ, तं जहा—दासे इ वा पेसे इ वा भाइल्लए इ वा, सा वि य णं नो आढाइ नो परियाणाइ नो अब्भुट्ठेइ। जा वि य से अब्भिंतरिया परिसा भवइ, तं जहा—पिया इ वा माया इ वा[7] •भाया इ वा भगिणी इ वा भज्जा इ वा पुत्ता इ वा धूया इ वा° सुण्हा इ वा, सा वि य णं नो आढाइ नो परियाणाइ नो अब्भुट्ठेइ॥

तेलियपुत्तस्स मरणचेट्ठा-पदं

७२ तए णं से तेयलिपुत्ते जेणेव वासघरे जेणेव सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयणिज्जंसि निसीयइ, निसीइत्ता एवं वयासी—एवं खलु अहं सयाओ गिहाओ निग्गच्छामि तं चेव जाव[8] अब्भिंतरिया परिसा नो आढाइ नो परियाणाइ नो अब्भुट्ठेइ। तं सेयं खलु मम अप्पाणं जीवियाओ ववरोवित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता तालउडं विसं आसगंसि पक्खिवइ। से य विसे नो कमइ॥

७३. तए णं से तेयलिपुत्ते अमच्चे नीलुप्पल[9]-•गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासं खुरधारं° असिं खंधंसि ओहरइ। तत्थ वि य से धारा ओएल्ला[10]॥

७४. तए णं से तेयलिपुत्ते जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पासगं गीवाए बंधइ, बंधित्ता रुक्खं दुरुहइ, दुरुहित्ता पासगं रुक्खे बंधइ, बंधित्ता अप्पाणं मुयइ। तत्थ वि य से रज्जू छिन्ना॥

---

१ सं० पा०—भीए जाव संजायभए।
२. प्रीत्येति गम्यते (वृ)।
३ पाठान्तरेण दुर्ध्यातोह (वृ)।
४. पच्चोरुहइ २ (ग)।
५. ना० १।१४।६५।
६. ना० १।१।४८।
७. सं० पा०—माया इ वा जाव सुण्हा।
८. ना० १।१४।६४-७१।
९. सं० पा०—नीलुप्पल जाव असिं।
१०. ओइल्ला (ख), ओपल्ला (ग, घ), अवदीर्णा कुंठीभूता इत्यर्थः (वृ)।

७५. तए णं से तेयलिपुत्ते महइमहालिय सिल गीवाए बंधइ, बधित्ता अत्थाहमतारम-पोरिसीयंसि उदगसि अप्पाण मुयइ । तत्थ वि से थाहे जाए ॥

७६. तए ण से तेयलिपुत्ते सुक्कसि तणकूडसि अगणिकायं पक्खिवइ, पक्खिवित्ता अप्पाण मुयइ । तत्थ वि य से अगणिकाए विज्झाए[1] ।

---

१ आवश्यकचूर्णो (पृष्ठ ४९९,५००) समुद्धृते प्रस्तुताध्ययने अरण्यगमनस्य निर्देशोऽस्ति । तथा अन्योपि क्रमभेदो वर्तते । स च अतीव मननीयोस्ति, यथा—

ताहे तणकूडे अगिंग दातु पविट्ठो, तत्थवि न डज्झति, ताहे अडविं पविसति, तत्थ पुरतो छिण्णगिरिसिहरकदरप्पवाते पिट्ठतो कपेमाणेव्व मेदिणितल आकड्ढतव्व पादवगणे विफोडेमाणेव्व अवरतल सव्वतमोरासिव्व पिंडिते पच्चक्खमिव सतं कतते भीमे भीमारवं करेंते महावारणे समुट्ठिते, दोसु चक्खुनिवातेसु पयडधणुजुत्तविप्पमुक्को पुखमेत्तवसेसा धरणितलपवेमाणि सराणि पतति हुतवहजालासहस्ससकुलं समततो पलित्तव धगधगेति सव्वारण्णं, अइरुग्गतवालसूरगुजद्धपुजनिगरप्पगास झियाति इंगालभूत गिह, ताहे चितेति—पोट्टिला जदि मे नित्थारेज्जति, एव वयासी—आउसो पोट्टिला ! आहता आयाणाहि ।

ततेण सा पोट्टिला पचवण्णाइ सखिखिणीयाइ जाव एव वयासी—आउसो तेतलिपुत्ता ! एहि ता आदाणाहि, पुरतो छिण्णगिरिसिहर-कंदरप्पवाते त चेव जाव इगालभूत गिह त आउसो तेतलिपुत्ता ! कहिं वयामो ?

ततेण से तेतली एवं वयासी—सद्धेतं खलु भो समणा वयंति, सद्धेय खलु भो माहणा वयंति, अहमेगो असद्धेय वदिस्सामि,

एवं खलु अह सह पुत्तेहिं अपुत्तो को मे त सद्दहिस्सति ? एवं सह मित्तेहिं° सह दारेहिं° सह वित्तेण°, सह परिग्गहेण° सह दासेहिं जाव दाणमाणसक्कारोवयारसगहिते तेतलिपुत्तस्स सयणपरियणेवि तग गते को मे त सद्दहिस्सति ?

एव खलु तेतलिपुत्ते कणगज्झत्तेण अवज्झातके को मे त सद्दहिस्सति ?

कानक्कमणीतिसत्थविसारदे तेतलिपुत्ते विसाद गतेति को मे तं सद्दहिस्सति ?

ततेण तेतलिपुत्तेणं तालपुडे विसे खइते सेविय पडिहतेत्ति को मे त सद्दहिस्सति ?

एव असी वेहासे जले अग्गी जाव रण्णेवि पुरतो पवाते एमादि को मे त सद्दहिस्सति ?

जातिकुलरूवविणओवयारसालिणी पोट्टिला मुसिकारधूता मिच्छ विपडिवण्णा को मे त सद्दहिस्सति ?

ताहे पोट्टिला भणति—एहि ता आदाणाहि, भीतस्स खलु भो पवज्जा ताण, आतुरस्स भेसज्ज किच्च अभिउत्तस्स पच्चयकरण सतस्स वाहणकिच्च महाजले वाहणकिच्च माइस्स रहस्सकिच्च उक्कठितस्स देसगमणकिच्च छुहितस्स भोयणकिच्च पिवासितस्स पाणकिच्चं सोहातुरस्स जुवतिकिच्च पर अभियुजितुकामस्स सहायकिच्च खतस्स दंतस्स गुत्तस्स जितेंदियस्स एत्तो एगमवि न भवति । सुट्ठु-सुट्ठु तण्ण तुम तेतलिपुत्ता । एयमट्ठ आदाणाहित्ति कट्टु दोच्चपि तच्चपि एव वयति, वइत्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगता ।

तेयलिपुत्तस्स विम्हयकरण-पदं

७७. तए णं से तेयलिपुत्ते एवं वयासी—सद्धेयं खलु भो ! समणा वयंति । सद्धेयं खलु भो ! माहणा वयंति । सद्धेयं खलु भो ! समण-माहणा वयंति । अहं एगो असद्धेयं वयामि । एवं खलु—

अहं सह पुत्तेहिं अपुत्ते । को मेदं सद्दहिस्सइ ?
सह मित्तेहिं अमित्ते । को मेदं सद्दहिस्सइ ?
[1]•सह अत्थेण अणत्थे । को मेदं सद्दहिस्सइ ?
सह दारेण अदारे । को मेदं सद्दहिस्सइ ?
सह दासेहिं अदासे । को मेदं सद्दहिस्सइ ?
सह पेसेहिं अपेसे । को मेदं सद्दहिस्सइ ?
सह परिजणेणं अपरिजणे । को मेदं सद्दहिस्सइ ? °

एवं खलु तेयलिपुत्तेणं अमच्चेणं कणगज्झएणं रण्णा अवज्झाएणं समाणेणं तालपुडगे विसे आसगंसि पक्खित्ते । से वि य नो कमइ । को मेयं सद्दहिस्सइ ?
तेयलिपुत्तेणं नीलुप्पल[2]-•गवलगुलिय-अयसि-कुसुमप्पगासे खुरधारे असी° खधंसि ओहरिए । तत्थ वि य से धारा ओएल्ला । को मेयं सद्दहिस्सइ ?
तेयलिपुत्तेणं पासगं गीवाए बंधित्ता[3] •रुक्खं दुरूढे, पासगं रुक्खे बंधित्ता अप्पा मुक्के । तत्थ वि य से° रज्जू छिन्ना । को मेयं सद्दहिस्सइ ?
तेयलिपुत्तेणं महइमहालियं[4] •सिलं गीवाए बंधित्ता अत्थाहमतारमपोरिसीयंसि° उदगंसि अप्पा मुक्के । तत्थ वि य णं से थाहे जाए । को मेयं सद्दहिस्सइ ?
तेयलिपुत्तेणं सुक्कंसि तणकूडंसि[5] •अगणिकायं पक्खिवित्ता अप्पा मुक्के । तत्थ वि य से° अग्गी विज्झाए । को मेयं सद्दहिस्सइ ?—ओहयमणसंकप्पे[6] •करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए° झियायइ[7] ।।

पोट्टिलदेवस्स संवाद-पदं

७८. तए णं से पोट्टिले देवे पोट्टिलारूवं विउव्वइ, विउव्वित्ता तेयलिपुत्तस्स अदूर-सामंते ठिच्चा एवं वयासी—हं भो तेयलिपुत्ता ! पुरओ पवाए, पिट्ठओ हत्थि-भयं, दुहओ अचक्खुफासे, मज्झे सराणि वरिसंति[8] । गामे पलित्ते रण्णे झियाइ, रण्णे पलित्ते गामे झियाइ । आउसो तेयलिपुत्ता ! कओ वयामो ?

---

१. सं० पा०—एवं अत्थेण दारेण दासेहिं पेसेहिं परिजणेणं ।
२. सं० पा०—नीलुप्पल जाव खधंसि ।
३. सं० पा०—बंधित्ता जाव रज्जू ।
४. सं० पा०—महालियं जाव बंधित्ता अत्थाह जाव उदगंसि ।
५. सं० पा०—तणकूडे °
६. सं० पा०—ओहयमणसंकप्पे जाव झियायइ ।
७. झियाति (क, ख, ग) ।
८. पतति (वृ) ।

७९. तए णं से तेयलिपुत्ते पोट्टिल एवं वयासी—भीयस्स खलु भो ! पव्वज्जा[1], उक्कट्ठियस्स सदेसगमणं, छुहियस्स[2] अन्न, तिसियस्स पाण, आउरस्स भेसज्जं माइयस्स रहस्स, अभिजुत्तस्स पच्चयकरणं, अद्धाणपरिसतस्स वाहणगमणं, तरिउकामस्स पवहणकिच्च, परं अभिउजिउकामस्स सहायकिच्चं। खतस्स दतस्स जिइदियस्स एत्तो एगमवि न भवइ ।।

८०. तए ण से पोट्टिले देवे तेयलिपुत्त अमच्च एवं वयासी—सुट्ठु णं तुमं तेयलिपुत्ता ! एयमट्ठ आयाणाहि त्ति कट्टु दोच्चपि तच्चंपि एवं वयइ, वइत्ता जामेव दिसि पाउब्भूए तामेव दिसि पडिगए ।।

तेयलिपुत्तस्स जाईसरणपुव्वं पव्वज्जा-पदं

८१. तए ण तस्स तेयलिपुत्तस्स सुभेण परिणामेणं जाईसरणे समुप्पन्ने ।।

८२. तए ण तेयलिपुत्तस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु अह इहेव जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे पोक्खलावईए विजए पोडरीगिणीए रायहाणीए महापउमे नामं राया होत्था। तए ण ह थेराणं अतिए मुडे भवित्ता[3] •पव्वइए सामाइयमाइयाइं° चोद्दसपुव्वाइ अहिज्जित्ता बहूणि वासाणि सामण्णपरियाग पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए महासुक्के कप्पे 'देवत्ताए उववण्णे'[4]। तए ण हं ताओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण अणतर चय चइत्ता इहेव तेयलिपुरे तेयलिस्स अमच्चस्स भद्दाए भारियाए दारगत्ताए पच्चायाए। तं सेय खलु मम पुव्वुद्दिट्ठाइ[5] महव्वयाइ[6] सयमेव उवसंपज्जित्ता ण विहरित्तए—एवं सपेहेइ, सपेहेत्ता सयमेव महव्वयाइ[7] आरुहेइ, आरुहेत्ता जेणेव पमयवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टयंसि सुहनिसण्णस्स अणुचिंतेमाणस्स पुव्वाहीयाइ सामाइयमाइयाइ चोद्दसपुव्वाइ सयमेव अभिसमण्णागयाइं ।।

केवलणाण-पदं

८३. तए ण तस्स तेयलिपुत्तस्स अणगारस्स सुभेण परिणामेण[8] •पसत्थेण अज्झवसाणेणं लेसाहि विसुज्झमाणीहिं° तयावरणिज्जाणं कम्माण खओवसमेण कम्मरयविकरणकरं अपुव्वकरण पविट्ठस्स केवलवरनाणदसणे समुप्पण्णे ।।

---

१. सरण इति गम्यते (वृ)।
२. छायस्स (क, ख, ग)।
३. स० पा०—भवित्ता जाव चोद्दसपुव्वाइ।
४. देवे (क, ख, ग)।
५. पुव्वदिट्ठाइ (ख)।
६. पंच महव्वयाइं (घ)।
७ पच महव्वयाइं (घ)।
८. स० पा०—परिणामेण जाव तयावरणिज्जाण।

८४ तए णं तेयलिपुरे नयरे अहासन्निहिएहिं वाणमंतरेहिं देवेहिं देवीहि य देवदुदुहीओ समाहयाओ, दसद्धवण्णे कुसुमे निवाइए, चेलुक्खेवे[1] दिव्वे गीयगधव्वनिनाए कए यावि होत्था ॥

कणगज्झयस्स सावगधम्म-पदं

८५ तए ण से कणगज्झए राया इमोसे[2] कहाए लद्धट्ठे समाणे एव वयासो—एव खलु तेयलिपुत्ते मए अवज्झाए मुडे भवित्ता पव्वइए। त गच्छामि ण तेयलिपुत्त अणगार वदामि नमसामि, वदित्ता नमसित्ता एयमट्ठ विणएण भुज्जो-भुज्जो खामेमि—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता ण्हाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धि जेणेव पमयवणे उज्जाणे जेणेव तेयलिपुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तेयलिपुत्त वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एयमट्ठ 'च ण'[3] विणएण भुज्जो-भुज्जो खामेइ, खामेत्ता नच्चासण्णे[4] •नाइदूरे सुस्सूसमाणे नमसमाणे पजलिउडे अभिमुहे विणएण° पज्जुवासइ ॥

८६. तए ण से तेयलिपुत्ते अणगारे कणगज्झयस्स रण्णो तीसे य महइमहालियाए परिसाए धम्म परिकहेइ ॥

८७ तए ण से कणगज्झए राया तेयलिपुत्तस्स केवलिस्स अतिए धम्मं सोच्चा निसम्मा पचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइय—दुवालसविह सावगधम्म पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे[5] ॥

तेयलिपुत्तस्स सिद्धि-पदं

८८ तए ण तेयलिपुत्ते केवली वहूणि वासाणि केवलिपरियाग पाउणित्ता जाव सिद्धे ॥

निक्खेव-पदं

८९. एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव[6] सपत्तेण चोद्दसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति बेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

जाव न दुक्ख पत्ता, माणब्भसं च पाणिणो पाय ।
ताव न धम्म गेण्हति भावओ तेयलिसुयव्व ॥१॥

---

१. × (ग, घ)।
२ इमीसे कहाए लद्धट्ठे कणगज्झए माताए सम निग्गते सव्विड्ढीए (आवश्यकचूर्णि पृ० ५०१)।
३. × (ख, ग, घ)।
४. स० पा०—नच्चासण्णे जाव पज्जुवासइ।
५. पू०-ना० १।५।४७।
६. ना० १।१।७।

पण्णरसमं अज्झयण

नंदीफले

उक्खेव-पदं

१. जइ ण भंते ! समणेणं भगवया महावीरेण चोद्दसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, पण्णरसमस्स ण भंते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

२. एव खलु जंबू ! तेण कालेण तेण समएणं चंपा नाम नयरी होत्था । पुण्णभद्दे चेइए । जियसत्तू राया ॥

३ तत्थ ण चंपाए नयरीए धणे नाम सत्थवाहे होत्था—अड्ढे जाव[1] अपरिभूए ॥

४. तीसे णं चंपाए नयरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए अहिच्छत्ता नाम[2] नयरी होत्था—रिद्धत्थिमिय-समिद्धा वण्णओ[3] ॥

५ तत्थ ण अहिच्छत्ताए नयरीए कणगकेऊ नाम राया होत्था—महया वण्णओ[4] ॥

धणस्स घोसणा-पदं

६ तए ण तस्स धणस्स सत्थवाहस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—सेय खलु मम विपुलं पणियभंडमायाए अहिच्छत्त नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता गणिम च धरिम च मेज्जं च पारिच्छेज्ज च - चउव्विह भंडं गेण्हइ, गेण्हित्ता सगडी-सागड सज्जेइ, सज्जेत्ता सगडी-सागडं भरेइ, भरेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! चंपाए नयरीए सिंघाडग जाव[5] महापहपहेसु [उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा ?]

---

१. ना० १।५।७ ।
२. नाम (ख, घ) ।
३ ओ० सू० १ ।
४. ओ० सू० १४ ।
५. ना० १।१।६५ ।

एवं वयह—एवं खलु देवाणुप्पिया! धणे सत्थवाहे विपुलं पणियं आदाय इच्छइ अहिच्छत्तं नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए। तं जो णं देवाणुप्पिया! चरए वा चीरिए वा चम्मखंडिए वा भिच्छुंडे वा पंडुरंगे[1] वा गोयमे वा गोव्वतिए वा 'गिहिधम्मे वा धम्मचिंतए'[2] वा अविरुद्ध-विरुद्ध-वुड्ढसावग-रत्तपड[3]-निग्गंथप्पभिई पासंडत्थे वा गिहत्थे वा धणेण सत्थवाहेण सद्धिं अहिच्छत्तं नयरिं गच्छइ, तस्स णं धणे सत्थवाहे अच्छत्तगस्स छत्तगं दलयइ, अणुवाहणस्स उवाहणाओ दलयइ, अकुंडियस्स कुंडियं दलयइ, अपत्थयणस्स पत्थयणं दलयइ, अपक्खेवगस्स पक्खेवं दलयइ, अंतरा वि य से पडियस्स वा भग्गलुग्गस्स साहेज्जं दलयइ, सुहंसुहेण य अहिच्छत्तं संपावेइ त्ति कट्टु दोच्चंपि तच्चंपि घोसणं[4] घोसेह, घोसेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह॥

७. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा[5] •धणेण सत्थवाहेण एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा चंपाए नयरीए सिंघाडग जाव[6] महापहपहेसु° एवं वयासी—हंदि सुणंतु भगवंतो! चंपानयरीवत्थव्वा! बहवे चरगा! वा[7] जाव[8] •गिहत्था! वा, जो णं धणेण सत्थवाहेण सद्धिं अहिच्छत्तं नयरिं गच्छइ, तस्स णं धणे सत्थवाहे अच्छत्तगस्स छत्तगं दलयइ जाव[9] सुहंसुहेण य अहिच्छत्तं संपावेइ त्ति कट्टु दोच्चंपि तच्चंपि घोसणं घोसेत्ता तमाणत्तियं° पच्चप्पिणंति॥

८. तए णं तेसिं कोडुंबियपुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा चंपाए नयरीए बहवे चरगा य जाव[10] गिहत्था य जेणेव धणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छंति॥

९. तए णं धणे सत्थवाहे तेसिं चरगाण य जाव[11] गिहत्थाण य अच्छत्तगस्स छत्तं दलयइ जाव[12] अपत्थयणस्स पत्थयणं दलयइ, दलयित्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! चंपाए नयरीए बहिया अग्गुज्जाणंसि मम पडिवालेमाणा-पडिवालेमाणा चिट्ठह॥

१०. तए णं ते चरगा य जाव[13] गिहत्था य धणेण सत्थवाहेण एवं वुत्ता समाणा[14] •चंपाए नयरीए बहिया अग्गुज्जाणंसि धणं सत्थवाहं पडिवालेमाणा-पडिवालेमाणा° चिट्ठंति॥

---

१. पंडरंगे (क, ख), पंडुरागे (घ)।
२. गिहत्थधम्मचिंतए (क), गिहधम्मचिंतए (ख, ग)।
३. रत्तपडी (क)।
४. घोसणयं (क); × (ख, ग), उग्घोसणं (घ)।
५. स० पा०—कोडुंबियपुरिसा जाव एवं।
६. ना० १।१।६५।
७. स० पा०—चरगा वा जाव पच्चप्पिणंति।
८. ना० १।१५।६।
९,१०,११,१२. ना० १।१५।६।
१३. ना० १।१५।६।
१४. स० पा०—समाणा जाव चिट्ठंति।

धणस्स निद्देस-पदं

११. तए ण धणे सत्थवाहे सोहणंसि तिहि-करण-नक्खत्तंसि विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ[1]-•नियग-सयण-संबंधि-परियणं॰ आमंतेइ, आमंतेत्ता भोयणं भोयावेइ, भोयावेत्ता आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सगडी-सागडं जोयावेइ[2], जोयावेत्ता चंपाओ नयरीओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता नाइविप्पगिट्ठेहिं अद्धाणेहिं वसमाणे-वसमाणे सुहेहिं वसहि-पायरासेहिं अंगं जणवयं मज्झंमज्झेणं जेणेव देसग्गं तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सगडी-सागडं मोयावेइ, सत्थनिवेसं करेइ, करेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! मम सत्थनिवेसंसि महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एवं वयह—एवं खलु देवाणुप्पिया ! इमीसे आगामियाए[3] छिण्णावायाए दीहमद्धाए अडवीए बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं बहवे नंदिफला नामं रुक्खा[4]—किण्हा जाव[5] पत्तिया पुप्फिया फलिया हरिया रेरिज्जमाणा सिरीए अईव-अईव उवसोभेमाणा चिट्ठंति—मणुण्णा वण्णेणं मणुण्णा गंधेणं मणुण्णा रसेणं मणुण्णा फासेणं मणुण्णा छायाए।

तं जो णं देवाणुप्पिया ! तेसिं नंदिफलाणं रुक्खाणं मूलाणि वा कंदाणि वा तयाणि वा पत्ताणि वा पुप्फाणि वा फलाणि वा बीयाणि वा हरियाणि वा आहारेइ, छायाए वा वीसमइ, तस्स णं आवाए भद्दए भवइ। तओ पच्छा परिणममाणा-परिणममाणा अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेंति। तं मा णं देवाणुप्पिया ! केइ तेसिं नंदिफलाणं मूलाणि वा जाव हरियाणि वा आहारउ, छायाए वा वीसमउ, मा णं से वि अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जिस्सउ[6]। तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! अण्णेसिं रुक्खाणं मूलाणि य जाव हरियाणि य आहारेह, छायासु वीसमह त्ति घोसणं घोसेह, घोसेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह। ते वि तहेव घोसणं घोसेत्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति।

१२. तए णं धणे सत्थवाहे सगडी-सागडं जोएइ, जोएत्ता जेणेव नंदिफला रुक्खा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तेसिं नंदिफलाणं अदूरसामंते सत्थनिवेसं करेइ, करेत्ता दोच्चंपि तच्चंपि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! मम सत्थनिवेसंसि महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एवं वयह—एए णं देवाणुप्पिया ! ते नंदिफला रुक्खा किण्हा जाव[7] मणुण्णा छायाए।

---

१. सं० पा०—नाइ०।
२. जोएइ (क)।
३. द्रष्टव्यम्—१।१८।४४ सूत्रम्।
४. रुक्खा पण्णत्ता (क, ख, ग, घ)।
५. ना० १।१३।१९।
६. ववरोविज्जिस्सइ (क, ख, ग)।
७. ना० १।१५।११।

तं जो णं देवाणुप्पिया ! एएसिं नंदिफलाण रुक्खाणं मूलाणि वा कंदाणि वा तयाणि वा पत्ताणि वा पुप्फाणि वा फलाणि वा बीयाणि वा हरियाणि वा आहारेइ जाव[1] अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेइ। त मा ण तुब्भे तेसिं नदिफलाणं मूलाणि वा जाव आहारेह, छायाए वा वीसमह, मा ण अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जिस्सह[2], अण्णेसिं रुक्खाणं मूलाणि य जाव[3] आहारेह, छायाए वा वीसमह त्ति कट्टु घोसण घोसेह, घोसेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह। ते वि तहेव घोसण घोसेत्ता तमाणत्तिय पच्चप्पिणति ॥

निद्देसपालणस्स निगमण-पदं

१३. तत्थ ण अत्थेगइया पुरिसा धणस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठ सद्दहति[4] •पत्तियति॰ रोयति, एयमट्ठ सद्दहमाणा पत्तियमाणा रोयमाणा तेसिं नदिफलाण दूरंदूरेण परिहरमाणा-परिहरमाणा अण्णेसिं रुक्खाण मूलाणि य जाव[5] आहारति, छायासु वीसमति। तेसि ण आवाए नो भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणा-परिणममाणा सुभरूवत्ताए[6] •सुभगधत्ताए सुभरसत्ताए सुभफासत्ताए सुभछायत्ताए॰ भुज्जो-भुज्जो परिणमति ॥

१४. एवामेव समणाउसो ! जो अम्ह निग्गथो वा[7] •निग्गथी वा आयरिय-उवज्झायाण अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए समाणे॰ पचसु कामगुणेसु नो सज्जइ नो रज्जइ नो गिज्झइ नो मुज्झइ नो अज्झोव-वज्जइ, से ण इहभवे चेव बहूण समणाण बहूण समणीण बहूण सावगाण बहूण सावियाण य अच्चणिज्जे[8] भवइ, परलोए[9] •वि य ण नो बहूणि हत्थछेयणाणि य कण्णछेयणाणि य नासाछेयणाणि य एव—हिययउप्पायणाणि य वसणुप्पा-यणाणि उल्लबणाणि य पाविहिइ, पुणो अणाइय च ण अणवदग्ग दीहमद्ध चाउरंत ससारकतार॰ वीईवइस्सइ—जहा व ते पुरिसा ॥

निद्देसाऽपालणस्स निगमण-पद

१५. तत्थ ण अप्पेगइया पुरिसा धणस्स एयमट्ठ नो सद्दहति नो पत्तियति नो रोयति, धणस्स एयमट्ठं असद्दहमाणा अपत्तियमाणा अरोयमाणा जेणेव ते नदिफला तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तेसिं नदिफलाण मूलाणि य जाव[10]

---

१. ना० १।१५।११।
२ ववरोविज्जिस्सति(क,ग),ववरोविस्सति(ख)।
३. ना० १।१५।११।
४. स० पा०—सद्दहति जाव रोयति।
५. ना० १।१५।११।
६. सं० पा०—सुभरूवत्ताए।
७. स० पा०—निग्गथो वा जाव पचसु।
८ पू०—ना० १।२।७६।
९ सं० पा०—परलोए नो आगच्छइ जाव वीईवइस्सइ (क, ख, ग, घ)।
१०. ना० १।१५।११।

आहारंति, छायासु वीसमंति। तेसि णं आवाए भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणा-परिणममाणा[1] •अकाले चेव जीवियाओ° ववरोवेंति ॥

१६. एवामेव समणाउसो! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे पंचसु कामगुणेसु सज्जइ[2] •रज्जइ गिज्झइ मुज्झइ अज्झोववज्जइ, सेणं इहभवे जाव[3] अणादियं च णं अणवयग्गं दीहमद्धं संसारकंतारं भुज्जो-भुज्जो° अणुपरियट्टिस्सइ—जहा व ते पुरिसा ॥

धणस्स अहिच्छत्ताऽऽगमण-पदं

१७. तए णं से धणे सत्थवाहे सगडी-सागडं जोयावेइ, जोयावेत्ता जेणेव अहिच्छत्ता नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहिच्छत्ताए नयरीए बहिया अग्गुज्जाणे सत्थनिवेसं करेइ, करेत्ता सगडी-सागडं मोयावेइ ॥

१८. तए णं से धणे सत्थवाहे महत्थं महग्घं महरिहं रायारिहं पाहुडं गेण्हइ, गेण्हित्ता बहुपुरिसेहिं सद्धिं संपरिवुडे अहिच्छत्तं नयरिं मज्झमज्झेणं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल[4]•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं° वद्धावेइ, वद्धावेत्ता तं महत्थं महग्घं महरिहं रायारिहं पाहुडं उवणेइ ॥

१९. तए णं से कणगकेऊ राया हट्ठतुट्ठे धणस्स सत्थवाहस्स तं महत्थं महग्घं महरिहं रायारिहं पाहुडं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता धणं सत्थवाहं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता उस्सुक्कं वियरइ, वियरित्ता पडिविसज्जेइ, भंडविणिमयं करेइ, करेत्ता पडिभंडं गेण्हइ, गेण्हित्ता सुहंसुहेणं जेणेव चंपा नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मित्त-नाइ[5]-•नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं सद्धिं° अभिसमण्णागए विपुलाइं माणुस्सगाइं[6] •भोगभोगाइं पच्चणुभवमाणे° विहरइ ॥

धणस्स पव्वज्जा-पदं

२०. तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरागमणं ॥

२१. धणे सत्थवाहे धम्मं सोच्चा जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठावेत्ता पव्वइए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता, बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेत्ता, अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववण्णे।

---

१. सं० पा०—परिणममाणा जाव ववरोवेंति।
२. सं० पा०—सज्जइ जाव अणुपरियट्टिस्सइ।
३. ना० १।३।२४।
४. सं० पा०—करयल जाव वद्धावेइ।
५. सं० पा०—नाइ०।
६. सं० पा०—माणुस्सगाइं जाव विहरइ।

महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ[1] •बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिनिव्वाहिइ सव्वदुक्खाण•मत करेहिइ ॥

निक्खेव-पदं

२२ एवं खलु जंबू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव[2] सपत्तेण पण्णरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति बेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

चपा इव मणुयगई, धणोव्व भयव जिणो दएक्करसो ।
अहिच्छत्ता नयरिसम, इह निव्वाण मुणेयव्व ॥१॥

घोसणया इव तित्थकरस्स सिवमग्गदेसणमहग्घ ।
चरगाइणो व्व एत्थ, सिवसुहकामा जिया वहवे ॥२॥

नदिफलाइ व्व इह, सिवपहपडिपण्णगाण विसया उ ।
तब्भक्खणाओ मरणं, जह तह विसएहि ससारो ॥३॥

तव्वज्जणेण जह इट्ठपुरगमो विसयवज्जणेण तहा ।
परमानदनिबधण-सिवपुरगमण मुणेयव्व ॥४॥

---

१. स० पा०—सिज्झिहिइ जाव मतं । २ ना० १।१।७ ।

सोलसमं अज्झयणं

अवरकंका

उक्खेव-पदं

१ जइ ण भते ! समणेणं भगवया महावीरेण जाव[1] संपत्तेण पण्णरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, सोलसमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

२. एव खलु जबू ! तेणं कालेणं तेणं समएण चंपा नाम नयरी होत्था ।।

३ तीसे ण चपाए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए सुभूमिभागे नामं उज्जाणे होत्था ।।

नागसिरी-कहाणग-पदं

४ तत्थ ण चपाए नयरीए तओ माहणा भायरो परिवसति, त जहा —सोमे सोमदत्ते सोमभूई—अड्ढा जाव[2] अपरिभूया रिउव्वेय-जउव्वेय-सामवेय-अथव्वणवेय जाव[3] बंभण्णएसु य सत्थेसु सुपरिनिट्ठिया ।।

५ तेसि ण माहणाण तओ भारियाओ होत्था, तं जहा—नागसिरी भूयसिरी जक्खसिरी—सुकुमालपाणिपायाओ जाव[4] तेसि ण माहणाणं इट्ठाओ[5], तेहिं माहणेहिं सद्धि विउले माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणीओ विहरति ।।

नागसिरीए तित्तालाउय-उवक्खडण-पदं

६. तए ण तेसिं माहणाण अण्णया कयाइ एगयओ समुवागयाण जाव[6] इमेयारूवे मिहोकहा-समुल्लावे समुप्पज्जित्था—एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमे विउले

१ ना० १।१।७ ।

२. ना० १।५।७ ।

३. ना० १।८।१३६ ।

४. ना० १।१।१७ ।

५. पू०—ना० १।१।१७ ।

६. ना० १।३।७ ।

धण[1]-•कणग - रयण - मणि - मोत्तिय-सख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-सत-सार°-सावएज्जे, अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवसाओ पकाम दाउ पकाम भोत्तु पकाम परिभाएउ। त सेय खलु अम्ह देवाणुप्पिया! अण्णमण्णस्स गिहेसु कल्लाकल्लि विपुल असण-पाण-खाइम-साइम उवक्खडेउ परिभुजेमाणाणं विहरित्तए। अण्णमण्णस्स एयमट्ठ पडिसुणेति, कल्लाकल्लि अण्णमण्णस्स गिहेसु[2] विपुल असण-पाण-खाइम-साइम उवक्खडावेति, परिभुजेमाणा विहरति ॥

७. तए ण तीसे नागसिरीए माहणीए अण्णया कयाइ भोयणवारए जाए यावि होत्था ॥

८ तए ण सा नागसिरी विपुल असण-पाण-खाइम-साइम उवक्खडेइ, एग मह सालइय तित्तालाउय[3] वहुसभारसजुत्त नेहावगाढ उवक्खडेइ[4], एगं विंदुयं करयलसि आसाएइ[5], त खार कडुय अखज्ज विसभूय[6] जाणित्ता एव वयासी—धिरत्थु ण मम नागसिरीए अधन्नाए अपुण्णाए दूभगाए दूभगसत्ताए दूभगनिंबोलियाए[7], जाए ण मए सालइए तित्तालाउए वहुसभारसभिए नेहावगाढे उवक्खडिए[8], सुवहुदव्वक्खए नेहक्खए य कए। त जइ ण मम जाउयाओ जाणिस्सति तो[9] ण मम खिसिस्सति। त जाव[10] मम जाउयाओ न जाणति ताव मम सेय एयं सालइय तित्तालाउय 'वहुसभारसभियं नेहावगाढ'[11] एगते गोवित्तए, अण्ण सालइय महुरालाउयं[12] •वहुसभारसभिय° नेहावगाढ उवक्खडित्तए—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता त सालइय[13] •तित्तालाउयं वहुसभारसभिय नेहावगाढ एगते° गोवेइ, गोवेत्ता अण्ण सालइय महुरालाउय बहुसभारसभिय नेहावगाढं उवक्खडेइ, उवक्खडेत्ता तेसिं माहणाण ण्हायाण[14] •भोयणमडवसि° सुहासणवरगयाण तं विपुल असण-पाण-खाइम-साइम परिवेसेइ ॥

९ तए ण ते माहणा जिमियभुत्तुत्तरागया समाणा आयता चोक्खा परमसुइभूया सकम्मसपउत्ता जाया यावि होत्था ॥

१० तए ण ताओ माहणीओ ण्हायाओ जाव[15] विभूसियाओ त विपुल असण-पाण-

---

१ स० पा०—धण जाव सावएज्जे।
२. गिहे (ग)।
३. तित्त° (ग)।
४. उवक्खडावेइ (क, ख, ग, घ)।
५ आसएइ (ग)।
६. विसभूयमिति (क); विसब्भूय (ख, ग)।
७ दूभगलिंवोलियाए (ग)।
८. उवक्खडियाए (ख, ग)।
९ ता (ख), ताओ (घ)।
१० जावताव (क, ख, घ)।
११ वहुसभारनेहकय (क, ख, ग, घ)।
१२. स० पा०—महुरालाउय जाव नेहावगाढ।
१३ स० पा०—सालइय जाव गोवेइ।
१४ स० पा०—ण्हायाण जाव सुहासण°।
१५ ना० १।१।८१।

खाइम-साइमं आहारेति, जेणेव सयाइं गिहाइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सकम्मसंपउत्ताओ जायाओ ॥

धम्मरुइस्स तित्तालाउय-दाण-पदं

११. तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसा नामं थेरा जाव[1] बहुपरिवारा जेणेव चंपा नयरी जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं[2] •ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा° विहरंति। परिसा निग्गया। धम्मो कहिओ। परिसा पडिगया ॥

१२. तए णं तेसिं धम्मघोसाणं थेराणं अंतेवासी धम्मरुई[3] नामं अणगारे ओराले[4] •घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्त-विउल°-तेयलेस्से मासंमासेणं खममाणे विहरइ ॥

१३. तए णं से धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए[5] सज्झायं करेइ, बीयाए पोरिसीए झाणं झियाइ, एवं जहा गोयमसामी तहेव[6] भायणाइं ओगाहेइ, तहेव धम्मघोसं थेरं आपुच्छइ जाव[7] चंपाए नयरीए उच्च-नीअ-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे जेणेव नागसिरीए माहणीए गिहे तेणेव अणुपविट्ठे ॥

१४. तए णं सा नागसिरी माहणी धम्मरुइं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता तस्स सालइयस्स तित्तालाउयस्स[8] बहुसंभारसंभियस्स नेहावगाढस्स एडणट्ठयाए हट्ठतुट्ठा उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं सालइयं 'तित्तालाउयं बहुसंभारसंभियं नेहावगाढं'[9] धम्मरुइस्स अणगारस्स पडिग्गहंसि[10] सव्वमेव निसिरइ[11] ॥

१५. तए णं से धम्मरुई अणगारे अहापज्जत्तमिति कट्टु नागसिरीए माहणीए गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता चंपाए नयरीए मज्झंमज्झेणं पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे जेणेव धम्मघोसा थेरा तेणेव

---

१. ना० १।१४।४०।

२. सं० पा०—अहापडिरूवं जाव विहरति।

३. धम्मरुती (ग)।

४. सं० पा०—उराले जाव तेयलेस्से।

५. पोरुसीए (क); पोरसीए (ख); पोरसीयाए (ग)।

६. पू०—भग० २।१०७।

७. भग० २।१०७-१०९।

८. तित्तकडुयस्स (क, ख, ग, घ), पूर्ववर्तिसूत्रेषु 'तित्तालाउय' इति पाठोऽस्ति। अस्मिन् सूत्रे तस्य परिवर्तनं जातम्। अत्रापि 'अलाउय' पदमपेक्षितमस्ति, तेनात्र पूर्ववर्तिपाठ एव स्वीकृतः।

९. तित्तकडुयं च बहुनेहावगाढं (क, ख, ग, घ)।

१०. पडिग्गहगे (ख, ग), पडिग्गहए (घ)।

११. निस्सरइ (घ)।

उवागच्छइ, धम्मघोसस्स [धम्मघोसाणं ?] अदूरसामंते[1] अन्नपाणं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता अन्नपाणं करयलंसि पडिदंसेइ ॥

तित्तालाउय-परिट्ठावण-पदं

१६. तए णं धम्मघोसा थेरा तस्स सालइयस्स तित्तालाउयस्स बहुसंभारसंभियस्स नेहावगाढस्स गंधेण अभिभूया समाणा तओ सालइयाओ तित्तालाउयाओ बहुसंभारसंभियाओ नेहावगाढाओ एगं बिंदुयं गहाय करयलंसि आसादेंति[2], तित्तगं[3] खारं कडुयं अखज्जं अभोज्जं[4] विसभूयं[5] जाणित्ता धम्मरुइं अणगारं एवं वयासी—जइ णं तुमं देवाणुप्पिया! एयं सालइयं[6] •तित्तालाउयं बहुसंभार-संभियं॰ नेहावगाढं आहारेसि तो णं तुमं अकाले चेव जीवियाओ ववरो-विज्जसि। तं मा णं तुमं देवाणुप्पिया! इमं सालइयं[7] •तित्तालाउयं बहुसंभार-संभियं नेहावगाढं॰ आहारेसि, मा णं तुमं अकाले चेव जीवियाओ ववरो-विज्जसि। तं गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया! इमं सालइयं तित्तालाउयं बहुसंभार-संभियं नेहावगाढं एगंतमणावाए अचित्ते थंडिले[8] परिट्ठवेहि, अण्णं फासुयं एसणिज्जं असण-पाण-खाइम-साइमं पडिगाहेत्ता आहारं आहारेहि ॥

१७. तए णं से धम्मरुई अणगारे धम्मघोसेणं थेरेणं एवं वुत्ते समाणे धम्मघोसस्स थेरस्स अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सुभूमिभागाओ उज्जाणाओ अदूरसामंते थंडिलं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता तओ[9] सालइयाओ तित्तालाउयाओ बहुसंभारसंभियाओ नेहावगाढाओ एगं बिंदुगं[10] गहाय थंडिलंसि निसिरइ ॥

१८. तए णं तस्स सालइयस्स 'तित्तालाउयस्स बहुसंभारसंभियस्स नेहावगाढस्स'[11] गंधेणं बहूणि पिपीलिगासहस्साणि पाउब्भूयाणि[12]। जा जहा य णं पिपीलिगा आहारेइ, सा तहा अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जइ ॥

अहिंसट्ठं तित्तालाउय-भक्खण-पदं

१९. तए णं तस्स धम्मरुइस्स अणगारस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—जइ ताव इमस्स सालइयस्स[13] •तित्तालाउयस्स बहुसंभारसंभियस्स॰ एगंमि बिंदुगंमि पक्खित्तंमि अणेगाइं पिपीलिगासहस्साइं

---

१. अदूरसामंते इरियावहियं पडिक्कमइ (घ)।
२. आसाएंति (क)· आसाइंति (घ)।
३. तित्तं (ख)।
४ अपिज्जं (क)।
५. विसभूयमित्ति (ख)।
६. स॰ पा॰—सालइयं जाव नेहावगाढं।
७. स॰ पा॰—सालइयं जाव आहारेसि।
८ थंडिल्ले (ख)।
९. ताओ (क, ख)।
१०. बिंदुं (क, ख)।
११ तित्तकडुयस्स बहुनेहावगाढस्स (क, ख, ग, घ)।
१२. पाउ (क, ग, घ), पाउब्भूया (ख)।
१३. स॰ पा॰—सालइयस्स जाव एगंमि।

ववरोविज्जंति, तं जइ णं अहं एयं सालइयं तित्तालाउयं बहुसंभारसंभियं नेहावगाढं थंडिलंसि सव्वं निसिरामि तो[1] णं बहूणं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं वहकरणं भविस्सइ। तं सेयं खलु ममेयं सालइयं[2] •तित्तालाउयं बहुसंभारसंभियं° नेहावगाढं सयमेव आहारित्तए, मम चेव एएणं सरीरएणं निज्जाउ त्ति कट्टु एवं संपेहेइ संपेहेत्ता मुहपोत्तियं पडिलेहेइ, ससीसोवरियं कायं पमज्जेइ, तं सालइयं 'तित्तालाउयं बहुसंभारसंभियं नेहावगाढं'[3] बिलमिव पन्नगभूएणं अप्पाणेणं सव्वं सरीरकोट्ठगंसि पक्खिवइ ॥

धम्मरुइस्स समाहिमरण-पदं

२० तए णं तस्स धम्मरुइस्स तं सालइयं[4] •तित्तालाउयं बहुसंभारसंभियं° नेहावगाढं आहारियस्स समाणस्स मुहुत्तंतरेणं परिणममाणंसि सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया—उज्जला[5] •विउला कक्खडा पगाढा चंडा दुक्खा° दुरहियासा ॥

२१ तए णं से धम्मरुई अणगारे अथामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे[6] अधारणिज्जमित्ति कट्टु आयारभंडगं एगंते ठवेइ, थंडिलं पडिलेहेइ, दब्भसंथारगं संथरेइ[7], दब्भसंथारगं दुरूहइ, पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसण्णे करयल-परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—नमोत्थु णं अरहंताणं जाव[8] सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपत्ताणं। नमोत्थु णं धम्मघोसाणं थेराणं मम धम्मायरियाणं धम्मोवएसगाणं। पुव्विं पि णं मए धम्मघोसाणं थेराणं अंतिए[9] सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए जाव[10] बहिद्धादाणे[11] [पच्चक्खाए जावज्जीवाए ?], इयाणिं पि णं अहं तेसिं चेव भगवंताणं अंतियं सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जाव बहिद्धादाणं पच्चक्खामि जावज्जीवाए जहा खंदओ जाव[12] चरिमेहिं उस्सासेहिं वोसिरामि त्ति कट्टु आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालगए ॥

साहूहिं धम्मरुइस्स गवेसणा-पदं

२२ तए णं ते धम्मघोसा थेरा धम्मरुइं अणगारं चिरंगयं जाणित्ता समणे निग्गंथे सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! 'धम्मरुई अणगारे'[13]

---

१ ता (क, ग), तए (ख)।
२ स० पा०—सालइयं जाव नेहावगाढं।
३. तित्तकडुयं बहुनेहावगाढं (क, ख, ग, घ)।
४ स० पा०—सालइयं जाव नेहावगाढं।
५ स० पा०—उज्जला जाव दुरहियासा।
६. अपुरिसकार° (ग)।
७. संथारेइ (ग)।
८ ओ० सू० २१।
९. अंतियं (क)।
१०. ना० १।५।५९।
११. परिग्गहे (क, ख, ग, घ) अत्रापि १।५।५९ वत् पाठरचना समालोचनीयास्ति। द्रष्टव्यम्—१।५।५९ सूत्रस्य पादटिप्पणम्।
१२. भग० २।६८,६९।
१३. धम्मरुइस्स अणगारस्स (ख)।

मासक्खमणपारणगंसि सालइयस्स[1] •तित्तालाउयस्स बहुसंभारसंभियस्स° नेहावगाढस्स निसिरणट्ठयाए बहिया निग्गए चिरावेइ[2]। तं गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेह॥

साहूहिं धम्मरुइस्स समाहिमरण-निवेदण-पदं

२३. तए णं ते समणा निग्गंथा[3] •धम्मघोसाणं थेराणं जाव[4] तहत्ति आणाए विणएणं वयणं° पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता धम्मघोसाणं थेराणं अंतियाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेमाणा जेणेव थंडिले तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता धम्मरुइस्स अणगारस्स सरीरगं निप्पाणं निच्चेट्ठं जीवविप्पजढं पासंति, पासित्ता हा हा अहो! अकज्जमिति कट्टु धम्मरुइस्स अणगारस्स परिनिव्वाणवत्तियं काउस्सग्गं करेंति, धम्मरुइस्स आयारभंडगं गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव धम्मघोसा थेरा तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता गमणागमणं पडिक्कमंति, पडिक्कमित्ता एवं वयासी—एवं खलु अम्हे तुब्भं अंतियाओ पडिनिक्खमामो, सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स परिपेरंतेणं धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्वओ[5] •समंता मग्गण-गवेसणं° करेमाणा जेणेव थंडिले तेणेव उवागच्छामो जाव इहं हव्वमागया। तं कालगए णं भंते! धम्मरुई अणगारे। इमे से आयारभंडए॥

धम्मरुइस्स सइसभा-पदं

२४ तए णं ते धम्मघोसा थेरा पुव्वगए उवओगं गच्छंति, समणे निग्गंथे निग्गंथीओ य सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु अज्जो! मम अंतेवासी धम्मरुई नामं अणगारे पगइभद्दए[6] •पगइउवसंते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउ-मद्दव-संपण्णे अल्लीणे भद्दए° विणीए मासंमासेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे जाव[7] नागसिरीए माहणीए गिहं अणुपविट्ठे। तए णं सा नागसिरी माहणी[8] जाव[9] •तं सालइयं तित्तालाउयं बहुसंभारसंभियं नेहावगाढं धम्मरुइस्स अणगारस्स पडिग्गहंसि सव्वमेव° निसिरइ।

तए णं से धम्मरुई अणगारे अहापज्जत्तमित्ति कट्टु नागसिरीए माहणीए गिहाओ पडिनिक्खमइ जाव[10] 'समाहिपत्ते कालगए'[11]।

---

१. सं० पा०—सालइयस्स जाव नेहावगाढस्स।
२. चिराइते (क), चिरगए (घ)।
३ सं० पा०—निग्गया जाव पडिसुणेंति।
४. ना० १।१।२६।
५. सं० पा०—सव्वओ जाव करेमाणा।
६. सं० पा०—पगइभद्दए जाव विणीए।
७ ना० १।१६।१३।
८. सं० पा०—माहणी जाव निसिरइ।
९ ना० १।१६।१४।
१०. ना० १।१६।१५-२१।
११. अत्र 'कालं अणवकंखमाणे विहरइ' इति पाठो लभ्यते, किन्तु जाव शब्दसमर्पिते २१ सूत्रे 'समाहिपत्ते कालगए' इति पाठो वर्तते। तदनुसारेण अत्रास्माभिः स एव पाठः स्वीकृतः।

से ण धम्मरुई अणगारे बहूणि वासाणि सामण्णपरियाग पाउणित्ता आलोइय-पडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा उड्ढं जाव[1] सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववण्णे। तत्थ ण अजहन्नमणुक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता। तत्थ णं धम्मरुइस्स वि देवस्स तेत्तीसं सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता। से ण धम्मरुई देवे ताओ देवलोगाओ[2] •आउक्खएणं ठिइक्खएण भवक्खएण अणतर चय चइत्ता° महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ।।

नागसिरीए गरिहा-पदं

२५. त धिरत्थु ण अज्जो! नागसिरीए माहणीए अधन्नाए अपुण्णाए[3] •दूभगाए दूभगसत्ताए दूभग°निंबोलियाए, जाए ण तहारूवे साहू साहुरूवे धम्मरुई अणगारे मासक्खमणपारणगसि सालइएण[4] •तित्तालाउएण बहुसभारसभिएण° नेहावगाढेण अकाले चेव जीवियाओ ववरोविए ।।

२६. तए ण ते समणा निग्गथा धम्मघोसाणं थेराणं अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म[5] चपाए सिंघाडग-तिग[6]-•चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु° बहुजणस्स एवमाइक्खति एवं भासति एव पण्णवेति एव परूवेति—धिरत्थु णं देवाणुप्पिया! नागसिरीए जाव[7] दूभगनिंबोलियाए, जाए णं तहारूवे साहू साहुरूवे धम्मरुई अणगारे सालइएण[8] •तित्तालाउएण बहुसभारसभिएणं° नेहावगाढेण अकाले चेव जीवियाओ ववरोविए ।।

२७ तए ण तेसि समणाण अतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एव भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ—धिरत्थु णं नागसिरीए माहणीए जाव[9] जीवियाओ ववरोविए ।।

नागसिरीए गिहनिव्वासण-पदं

२८. तए ण ते माहणा चंपाए नयरीए बहुजणस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म आसुरुत्ता[10] •रुट्ठा कुविया चडिक्किया° मिसिमिसेमाणा जेणेव नागसिरी माहणी तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता नागसिरिं माहणिं एवं वयासी—"हंभो नागसिरी! अपत्थियपत्थिए! दुरंतपतलक्खणे! हीणपुण्णचाउद्दसे! [सिरि-हिरि-धिइ-कित्तिपरिवज्जिए?] धिरत्थु णं तव अधन्नाए अपुण्णाए

---

१. ना० १।१।२११।
२. स०पा०—देवलोगाओ जाव महाविदेहे।
३. स० पा०—अपुण्णाए जाव निंबोलियाए।
४. स० पा०—सालइएण जाव नेहावगाढेणं।
५ निसम्मा (क, ख, ग)।
६. स० पा०—तिग जाव बहुजणस्स।
७ ना० १।१६।२५।
८ स० पा०—सालइएण जाव नेहावगाढेण।
९. ना० १।१६।२६।
१० स० पा०—आसुरुत्ता जाव मिसिमिसेमाणा।

दूभगाए दूभगसत्ताए दूभगनिंबोलियाए, जाए णं तुमे तहारूवे साहू साहुरूवे धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगंसि सालइएणं तित्तालाउएणं जाव[1] जीवियाओ ववरोविए।" उच्चावयाहिं अक्कोसणाहिं अक्कोसंति, उच्चावयाहिं उद्धंसणाहिं उद्धंसेंति, उच्चावयाहिं निब्भच्छणाहिं निब्भच्छेंति,[2] उच्चावयाहिं निच्छोडणाहिं निच्छोडेंति, तज्जेंति तालेंति, तज्जित्ता तालित्ता सयाओ गिहाओ निच्छुभंति ॥

२९. तए णं सा नागसिरी सयाओ गिहाओ निच्छूढा समाणी चंपाए नयरीए सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु बहुजणेणं हीलिज्जमाणी खिंसिज्जमाणी निंदिज्जमाणी गरहिज्जमाणी तज्जिज्जमाणी पव्वहिज्जमाणी[3] धिक्कारिज्जमाणी थुक्कारिज्जमाणी कत्थइ ठाणं वा निलयं वा अलभमाणी दंडीखंड-निवसणा[4] खंडमल्लय-खंडघडग-हत्थगया फुट्ट[5]-हडाहड-सीसा मच्छियाचडगरेणं अन्निज्जमाणमग्गा गेहंगेहेणं देहबलियाए[6] वित्तिं कप्पेमाणी विहरइ ॥

नागसिरीए भवभमण-पदं

३०. तए णं तीसे नागसिरीए माहणीए तब्भवंसि चेव सोलस रोगायंका[7] पाउब्भूया। [तं जहा—

सासे कासे[8] •जरे दाहे, जोणिसूले भगंदरे।
अरिसा अजीरए दिट्ठी-मुद्धसूले अकारए ॥
अच्छिवेयणा कण्णवेयणा कंडू दउदरे ° कोढे[9] ॥१॥]

३१. तए णं सा नागसिरी माहणी सोलसेहिं रोगायंकेहिं अभिभूया समाणी अट्ट-दुहट्ट-वसट्टा कालमासे कालं किच्चा छट्ठाए पुढवीए उक्कोसं बावीससागरोवमट्ठिइएसु नरएसु नेरइयत्ताए उववण्णा।

सा णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता मच्छेसु उववण्णा[10]। तत्थ णं सत्थवज्झा दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा अहेसत्तमाए पुढवीए 'उक्कोसं तेत्तीस-सागरोवमट्ठिईएसु'[11] नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णा।

---

१. ना० १।१६।२५।
२. १।१८।८ सूत्रे निब्भच्छेइ।
३ तालिज्जमाणी वहिज्जमाणी (घ)।
४. वसणा (क, ख, ग)।
५ फट्ट (ख)।
६. देहवलियाए (क, ख, ग, घ), देहवलिका तया, अनुस्वारो नैपातिक (वृ)।
७ रोयायंका (ख)।
८. सं० पा०—कासे जोणिसूले जाव कोढे।
९. असौ कोष्ठकवर्ती पाठ व्याख्यांश प्रतीयते।
१०. उववज्जइ (क, ख)।
११. उक्कोससागरोवम° (क, ख)।

सा णं तओणंतरं उव्वट्टित्ता दोच्चंपि मच्छेसु उववज्जइ[1]। तत्थ वि य णं सत्थवज्झा दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा दोच्चंपि अहेसत्तमाए पुढवीए उक्कोसं तेत्तीससागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जइ। सा णं तओहिंतो[2] उव्वट्टित्ता तच्चंपि मच्छेसु उववण्णा। तत्थ वि य णं सत्थवज्झा[3] °दाहवक्कंतीए° कालमासे कालं किच्चा दोच्चंपि छट्ठाए पुढवीए उक्कोसं[4] बावीससागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णा।

तओणंतरं उव्वट्टित्ता उरगेसु, एवं जहा गोसाले[5] तहा नेयव्वं जाव रयणप्पभाओ पुढवीओ उव्वट्टित्ता [6]सण्णीसु उववण्णा।

तओ उव्वट्टित्ता असण्णीसु उववण्णा। तत्थ वि य णं सत्थवज्झा दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा दोच्चं पि रयणप्पभाए पुढवीए पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णा।

तओ उव्वट्टित्ता जाइं इमाइं खहयरविहाणाइं[6] जाव[7] अदुत्तरं च णं खरबायर-पुढविकाइयत्ताए, तेसु अणेगसयसहस्सखुत्तो॥

सूमालिया-कहाणग-पदं

३२ सा णं तओणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे चंपाए नयरीए सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स भद्दाए भारियाए कुच्छिंसि दारियत्ताए पच्चायाया॥

३३ तए णं सा भद्दा सत्थवाही नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं[8] दारियं पयाया—सुकुमालकोमलियं गयतालुयसमाणं॥

३४. तए णं तीसे णं दारियाए निव्वत्तबारसाहियाए अम्मापियरो इमं एयारूवं गोण्णं गुणनिप्फण्णं नामधेज्जं करेंति—जम्हा णं अम्हं एसा दारिया सुकुमाल-कोमलिया गयतालुयसमाणा, तं होउ णं अम्हं इमीसे दारियाए नामधेज्जं सुकुमालिया-सुकुमालिया॥

---

१. अत्रापि पूर्वोक्तक्रमानुसारेण भूतकालक्रिया-प्रयोगो युज्यते, किन्तु आदर्शेषु तथा नोपलभ्यते।

२. तओहिंतो जाव (क, ख, ग, घ)। एतत् पदमनावश्यकं प्रतिभाति।

३. सं० पा०—सत्थवज्झा जाव कालमासे।

४. उक्कोसेणं (क, ख, ग, घ)।

५ भग० १५।१८६।

६ सण्णीसु उववण्णा तओ उव्वट्टित्ता जाइं इमाइं खहयरविहाणाइं (क, ख, ग, घ) एष संक्षिप्तपाठोऽस्ति। भगवत्यनुसारेण अस्य स्थाने पाठः पूरितोस्ति। समर्पणसूत्रे प्रायः पाठस्य संक्षेपः कृतो लभ्यते। अत्रापि स एव क्रमः अनुसृतोस्ति, किन्तु संज्ञिभवानन्तरं खेचरयोनौ जन्म नाभूत्। स्वीकृतपाठावलोकनेन एतत् स्पष्टं भवति।

७. भग० १५।१८६।

८ पू०—ना० १।१६।१२४।

३५ तए णं तीसे दारियाए अम्मापियरो नामधेज्जं करेंति सूमालियत्ति ॥

३६ तए णं सा सूमालिया दारिया पंचधाईपरिग्गहिया [तं जहा—खीरधाईए[1] •मज्जणधाईए मंडावणधाईए खेल्लावणधाईए अंकधाईए][2] अंकाओ अंकं साहरिज्जमाणी रम्मे मणिकोट्टिमतले° गिरिकंदरमल्लीणा इव चंपगलया निवाय[3]-निव्वाघायंसि[4] •सुहंसुहेणं° परिवड्ढइ ॥

सूमालियाए सागरेण सद्धिं विवाह-पदं

३७ तए णं सा सूमालिया दारिया उम्मुक्कबालभावा[5] •विण्णय-परिणयमेत्ता जोव्वणगमणुपत्ता° रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था ।

३८. तत्थ णं चंपाए नयरीए जिणदत्ते नामं सत्थवाहे—अड्ढे ॥

३९ तस्स णं जिणदत्तस्स भद्दा भारिया—सूमाला इट्ठा[6] माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणा विहरइ ॥

४० तस्स णं जिणदत्तस्स पुत्ते भद्दाए भारियाए अत्तए सागरए नामं दारए—सुकुमालपाणिपाए जाव[7] सुरूवे ॥

४१ तए णं से जिणदत्ते सत्थवाहे अण्णया कयाइ सयाओ[8] गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स अदूरसामंतेणं वीईवयइ ।
इमं च णं सूमालिया दारिया ण्हाया चेडिया-'चक्कवाल-सपरिवुडा'[9] उप्पिं आगासतलगंसि कणग-तिंदूसएणं 'कीलमाणी-कीलमाणी'[10] विहरइ ॥

४२ तए णं से जिणदत्ते सत्थवाहे सूमालियं दारियं पासइ, पासित्ता सूमालियाए दारियाए रूवे य जोव्वणे य लावण्णे य जायविम्हए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया ! कस्स दारिया ? किं वा नामधेज्जं से ?

४३ तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जिणदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा करयल[11]•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया ! सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स धूया भद्दाए भारियाए अत्तया

---

१. सं० पा०—खीरधाईए जाव गिरिकंदरमल्लीणा ।
२. असौ कोष्ठकवर्ती पाठः व्याख्यांशः प्रतीयते ।
३. × (ख) ।
४ सं० पा०—निव्वाघायंसि जाव परिवड्ढइ ।
५ सं० पा०—उम्मुक्कबालभावा जाव रूवेण ।
६. इट्ठा जाव (ख, घ) ।
७. ना० १।१।१७ ।
८. साओ (क, ख, ग) ।
९ सघपरिवुडा (ग) ।
१०. कीलमाणी (ख, ग) ।
११. सं० पा०—करयल जाव एवं ।

सूमालिया नाम दारिया—सुकुमालपाणिपाया जाव[1] रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा ॥

४४ तए ण जिणदत्ते सत्थवाहे तेसि कोडुवियाण अतिए एयमट्ठ सोच्चा जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ण्हाए मित्त-नाइ-परिवुडे चपाए नयरीए मज्झमज्झेण जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव उवागए ॥

४५. तए ण से सागरदत्ते सत्थवाहे जिणदत्त सत्थवाह एज्जमाणं पासइ, पासित्ता आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता आसणेण उवनिमतेइ, उवनिमंतेत्ता आसत्थं वीसत्थ सुहासणवरगयं एव वयासी—भण देवाणुप्पिया ! किमागमण-पओयण ?

४६. तए ण से जिणदत्ते सागरदत्त एव वयासी—एव खलु अह देवाणुप्पिया ! तव धूय भद्दाए अत्तिय सूमालिय सागरस्स[2] भारियत्ताए वरेमि। जइ णं जाणह देवाणुप्पिया ! जुत्तं वा पत्तं वा सलाहणिज्जं वा सरिसो वा सजोगो, ता दिज्जउ ण सूमालिया सागरदारगस्स। तए ण देवाणुप्पिया ! भण कि दलयामो[3] सुक[4] सूमालियाए ?

४७. तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे जिणदत्त सत्थवाहं एवं वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! सूमालिया दारिया एगा[5] एगजाया[6] इट्ठा कंता पिया मणुण्णा मणामा जाव[7] उवरपुप्फं व दुल्लहा सवणयाए, किमग पुण पासणयाए ? त नो खलु अह इच्छामि सूमालियाए दारियाए खणमवि विप्पओग। तं जइ ण देवाणुप्पिया ! सागरए दारए मम घरजामाउए भवइ, तो ण अहं सागरस्स सूमालिय दलयामि ॥

४८. तए ण से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्तेण सत्थवाहेणं एव वुत्ते समाणे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरग[8] दारग सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—एवं खलु पुत्ता ! सागरदत्ते सत्थवाहे मम एव वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! सूमालिया दारिया—इट्ठा[9] °कता पिया मणुण्णा मणामा जाव[10] उवरपुप्फ व दुल्लहा सवणयाए, किमंग पुण पासणयाए ? त नो खलु अह इच्छामि सूमालियाए दारियाए खणमवि विप्पओग° । त जइ णं सागरए दारए मम घरजामाउए भवइ, 'तो णं'[11] दलयामि ॥

---

१. ना० १।८।६० ।
२. सागरदत्तस्स दारगस्स (ख, ग) ।
३. दलामो (क) ।
४. सुकं (ख), सुक्क (घ) ।
५. मम एगा धूया (क)
६ एगा जाया (ख, घ) ।
७. ना० १।१।१०६ ।
८. सागर (ग, घ) ।
९. स० पा०—इट्ठा तं चेव ।
१० ना० १।१।१०६ ।
११. जाव (ख, घ) ।

४९ तए णं से सागरए दारए जिणदत्तेण सत्थवाहेण एव वुत्ते समाणे तुसिणीए ।।

५०. तए ण[1] जिणदत्ते सत्थवाहे अण्णया कयाइ सोहणसि तिहि-करण-नक्खत्त-मुहुत्तंसि विपुल असण-पाण-खाइम-साइम उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ[2]-•नियग-सयण-संबधि-परियण° आमतेइ, जाव[3] सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता सागर दारग ण्हाय जाव[4] सव्वालकारविभूसिय करेइ, करेत्ता पुरिससहस्स-वाहिणीय सीय दुरूहावेइ[5], मित्त-नाइ[6]-•नियग-सयण-सबधि-परियणेण सद्धि° परिवुडे सव्विड्ढीए सयाओ[7] गिहाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता चप नयरिं मज्झमज्झेण जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीयाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता सागरग दारग सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स उवणेइ ।।

५१ तए ण से सागरदत्ते सत्थवाहे विपुल असण-पाण-खाइम-साइम उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता जाव[8] सम्माणेत्ता सागरग दारग सूमालियाए दारियाए सद्धि पट्टयं दुरूहावेइ, दुरूहावेत्ता सेयापीएहिं[9] कलसेहिं मज्जावेइ, मज्जावेत्ता अग्गिहोम[10] करावेइ, करावेत्ता 'सागरग दारय'[11] सूमालियाए दारियाए पाणिं गेण्हावेइ ।।

सागरस्स पलायण-पदं

५२ तए ण सागरए सूमालियाए दारियाए इम एयारूव 'पाणिफास पडिसवेदेइ'[12], से जहानामए—असिपत्ते इ वा[13] •करपत्ते इ वा खुरपत्ते इ वा कलवचीरिगा-पत्ते इ वा सत्तिअग्गे इ वा कोतग्गे इ वा तोमरग्गे इ वा भिंडिमालग्गे इ वा सूचिकलावए इ वा विच्छुयडंके इ वा कविकच्छू इ वा इगाले इ वा मुम्मुरे इ वा अच्ची इ वा जाले इ वा अलाए इ वा सुद्धागणी इ वा भवे एयारूवे ? नो इणट्ठे समट्ठे । एत्तो अणिट्ठतराए चेव अकततराए चेव अप्पियतराए चेव अमणुण्णतराए चेव अमणामतराए चेव° पाणिफास संवेदेइ ।।

५३ तए ण से सागरए अकामए अवसवसे[14] मुहुत्तमेत्त सचिट्ठइ ।।

५४ तए ण सागरदत्ते सत्थवाहे सागरस्स अम्मापियरो मित्त-नाइ[15]-•नियग-सयण-

---

१ ण से (ख, घ) ।
२ स० पा०—नाइ० ।
३. ना० १।१४।५३ ।
४. ना० १।१।४७ ।
५. द्रुहावेइ (क, ख) ।
६ सं० पा०—नाइ जाव पडिवुडे ।
७ सातो (क, ख, ग, घ) ।
८. ना० १।१६।५० ।
९. सीयापीयएहिं (ख, ग); सीयापीएहिं (घ) ।
१०. होमं (क, ख, ग, घ) ।
११ सागरस्स (क) ।
१२. सपडिवेदेति (ख), पाणिं फासेंति सपडिवेदेति (ग), सवेदेइ (क्व) ।
१३. स० पा०—असिपत्ते इ वा जाव मुम्मुरे इ वा एत्तो अणिट्ठतराए चेव ।
१४ अवसव्वसे (ख, ग), अपस्ववशः अपगतात्मतन्त्र इत्यर्थ. (वृ) ।
१५ स० पा०—नाइ० ।

सबंधि-परियण॰ विपुलेण[1] असण-पाण-खाइम-साइमेण पुप्फ-वत्थ[2]-•गंध-मल्लालंकारेण य सक्कारेत्ता॰ सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

५५ तए णं सागरए सूमालियाए सद्धिं जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सूमालियाए दारियाए सद्धिं तलिमंसि[3] निवज्जइ ॥

५६ तए णं से सागरए दारए सूमालियाए दारियाए इमं एयारूवं अंगफासं पडिसवेदेइ, से जहानामए—असिपत्ते इ वा जाव[4] एत्तो अमणामतरागं चेव अंगफासं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ॥

५७ तए णं से सागरए दारए सूमालियाए दारियाए अंगफासं असहमाणे अवसवसे[5] मुहुत्तमेत्तं संचिट्ठइ ॥

५८ तए णं से सागरदारए सूमालियं दारियं सुहपसुत्तं जाणित्ता सूमालियाए दारियाए पासाओ उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयणिज्जंसि[6] निवज्जइ ॥

५९. तए णं सा सूमालिया दारिया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा समाणी पइव्वया[7] पइमणुरत्ता पइं पासे अपस्समाणी तलिमाओ[8] उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव से सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरस्स पासे णुवज्जइ ॥

६० तए णं से सागरदारए सूमालियाए दारियाए दोच्चंपि इमं एयारूवं अंगफासं पडिसवेदेइ जाव[9] अकामए अवसवसे मुहुत्तमेत्तं संचिट्ठइ ॥

६१ तए णं से सागरदारए सूमालियं दारियं सुहपसुत्तं जाणित्ता सयणिज्जाओ उट्ठेइ, उट्ठेत्ता वासघरस्स दारं विहाडेइ, विहाडेत्ता मारामुक्के विव काए जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥

सूमालियाए चिंता-पदं

६२ तए णं सा सूमालिया दारिया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा पतिव्वया[10] •पइमणुरत्ता पइं पासे॰ अपासमाणी सयणिज्जाओ उट्ठेइ, सागरस्स दारगस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेमाणी-करेमाणी वासघरस्स दारं विहाडियं पासइ, पासित्ता एवं वयासी—गए णं से सागरए त्ति कट्टु ओहयमणसंकप्पा[11] •करतल-पल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया॰ झियायइ ॥

---

१ विपुल (क, ख, ग, घ)।
२ स॰ पा॰—वत्थ जाव सम्माणेत्ता।
३. तलिगंमि (ख, ग)।
४. ना॰ १।१६।५२।
५. अवसव्वसे (क, ख, ग)।
६. सयणीयंसि (क, ख, घ)।
७ पतिवया (ख, ग, घ)।
८ तलिगाओ (ख), तलियग्गतो (ग)।
९. ना॰ १।१६।५२,५३।
१० स॰ पा॰—पतिवया जाव अपासमाणी। पतिवया॰ (ग, घ)।
११ स॰ पा॰—ओहयमणसंकप्पा जाव झियायइ।

६३ तए णं सा भद्दा सत्थवाही कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए[1] उट्ठियम्मि सूरे सहस्स-रस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते दासचेडिं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—गच्छह ण तुम देवाणुप्पिए ! बहूवरस्स मुहधोवणिय[2] उवणेहि ।।

६४. तए ण सा दासचेडी भद्दाए सत्थवाहीए एव वुत्ता समाणी-एयमट्ठ तहत्ति पडि-सुणेइ, पडिसुणेत्ता मुहधोवणिय गेण्हइ,गेण्हित्ता जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सूमालियं दारियं[3] •ओहयमणसकप्प करतलपल्हत्थमुहिं अट्टज्झा-णोवगय ° झियायमाणि पासइ, पासित्ता एव वयासी—किण्ण तुम देवाणुप्पिए ! ओहयमणसकप्पा[4] •करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया ° झियाहि ?

६५ तए ण सा सूमालिया दारिया त दासचेडिं एव वयासी –एव खलु देवाणुप्पिए ! सागरए दारए मम सुहपसुत्त जाणित्ता मम पासाओ उट्ठेइ, उट्ठेत्ता वासघरदुवार अवगुणेइ[5] •अवगुणेत्ता मारामुक्के विव काए जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं° पडिगए । तए णह तओ मुहुत्ततरस्स पडिबुद्धा[6] •पतिव्वया पइमणुरत्ता पइं पासे अपासमाणी सयणिज्जाओ उट्ठेमि सागरस्स दारगस्स सव्वओ समता मग्गण-गवेसण करेमाणी-करेमाणी वासघरस्स दार° विहाडिय पासामि, पासित्ता गए ण से सागरए ति कट्टु ओहयमणसकप्पा[7] •करतलपल्हत्थमुहा अट्टज्झाणोवगया° झियायामि ।।

६६ तए ण सा दासचेडी सूमालियाए दारियाए एयमट्ठ सोच्चा जेणेव सागरदत्ते सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरदत्तस्स एयमट्ठ निवेदेइ ।।

सागरदत्तेण जिणदत्तस्स उवालंभ-पद

६७ तए ण से सागरदत्ते दासचेडीए अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चडिक्किए मिसिमिसेमाणे जेणेव जिणदत्तस्स सत्थवाहस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जिणदत्त सत्थवाह एव वयासी—किण्ण देवाणु-प्पिया ! एय जुत्त वा पत्त वा कुलाणुरूव वा कुलसरिस वा जण्ण सागरए दारए सूमालिय दारिय अदिट्ठदोसवडिय[8] पइव्वय[9] विप्पजहाय इहमागए ? बहूहिं खिज्जणियाहि य रुटणियाहि[10] य उवालभइ ।।

---

१ पू०—ना० १।१।२४ ।
२ मुहसोवणिय (क), °सोहणिय (ख), °सोयणिय (ग)।
३. स० पा०—दारिय जाव झियायमाणि ।
४ स० पा०—ओहयमणसंकप्पा जाव झियाहि।
५. अपगुणेइ (ग)। स० पा०—अवगुणेइ जाव पडिगए ।
६ स० पा०—पडिबुद्धा जाव विहाडिय ।
७ स० पा०—ओहयमणसकप्पा जाव झिया-यामि ।
८ अदिट्ठदोस (क, ग) ।
९ पइव्वय (क, ख, ग, घ) ।
१०. × (क), कटणियाहि (ग), रुढणियाहि (घ) ।

सागरस्स पुणोगमण-ववुदास-पदं

६८ तए णं जिणदत्ते सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सागरए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरयं दारयं एवं वयासी—दुट्ठु णं पुत्ता ! तुमे कयं सागरदत्तस्स गिहाओ इहं हव्वमागच्छतेणं[1]। तं गच्छह णं तुमं पुत्ता ! 'एवमवि[2] गए'[3] सागरदत्तस्स गिहे ॥

६९ तए णं से सागरए दारए जिणदत्तं सत्थवाहं एवं वयासी—अवियाइं अहं ताओ ! गिरिपडणं वा तरुपडणं वा मरुप्पवायं[4] वा जलप्पवेसं वा जलणप्पवेसं वा विसभक्खणं वा सत्थोवाडणं वा वेहाणसं[5] वा गिद्धपट्ठं[6] वा पव्वज्जं वा विदेसगमणं वा अब्भुवगच्छेज्जा, नो खलु अहं सागरदत्तस्स गिहं गच्छेज्जा[7] ॥

सूमालियाए दमगेण सद्धिं पुणव्विवाह-पद

७० तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे कुड्डंतरियाए सागरस्स एयमट्ठं निसामेइ, निसामेत्ता लज्जिए विलीए विड्डे जिणदत्तस्स सत्थवाहस्स गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुकुमालियं दारियं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता अंके निवेसेइ, निवेसेत्ता एवं वयासी—किण्णं तव पुत्ता ! सागरएणं दारएणं[8] ? अहं णं तुमं तस्स दाहामि, जस्स णं तुमं इट्ठा[9] •कंता पिया मणुण्णा॰ मणामा भविस्ससि त्ति सूमालियं दारियं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं वग्गूहिं[10] समासासेइ, समासासेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

७१ तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे अण्णया उप्पिं आगासतलगंसि सुहनिसण्णे रायमग्गं ओलोएमाणे-ओलोएमाणे चिट्ठइ ॥

७२ तए णं से सागरदत्ते एगं महं दमगपुरिसं पासइ—दंडिखंड-निवसणं[11] खंडमल्लग-खंडघडग-हत्थगयं 'फुट्ट-हडाहड-सीसं मच्छियासहस्सेहिं'[12] अन्निज्जमाणमग्गं ॥

७३. तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! एयं दमगपुरिसं विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं

---

१ हव्वमागए (ख, घ)।

२. एयमवि (क)।

३ इत्थमपिगते—अस्मिन् कार्ये (१।१६।२६६ सूत्रस्य वृत्ति.)।

४ मरुप्पवेसं (क)

५ विहणसं (ख)।

६. गेद्धपट्ठं (ख, ग)।

७ अणुगच्छेज्जा (क)।

८. दारएणं मुक्का (घ)।

९. सं॰ पा॰—इट्ठा जाव मणामा।

१० बहूहिं वग्गूहिं (घ)।

११ वसणं (ख, ग)।

१२. मच्छियासहस्सेहिं जाव (क, ख, ग, घ)। आदर्शेषु पाठान्तररूपेण निर्दशितः पाठ उपलभ्यते, किन्तु अस्मिन् 'जाव' पदस्य विपर्ययो जात.। हत्थगयं जाव' इति पाठरचना युक्तास्ति। प्रस्तुताध्ययनस्य २९ सूत्रावलोकनेन एतत् स्पष्टं जायते।

पलोभेह[1], गिहं अणुप्पवेसेह[2], अणुप्पवेसेत्ता खंडमल्लगं खंडघडगं च से एगंते एडेह, एडेत्ता अलंकारियकम्मं करेह, ण्हायं कयबलिकम्मं[3] •कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्तं° सव्वालंकारविभूसियं करेह, करेत्ता मणुण्णं असण-पाण-खाइम-साइमं भोयावेह, मम अंतियं उवणेह ॥

७४. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव[4] पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता जेणेव से दमगपुरिसे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तं दमगं असण-पाण-खाइम-साइमेणं उवप्पलोभेंति[5], उवप्पलोभेत्ता सयं गिहं अणुप्पवेसंति, अणुप्पवेसेत्ता तं खंडमल्लगं खंडघडगं च तस्स दमगपुरिसस्स एगंते एडेंति ॥

७५. तए णं से दमगे तंसि खंडमल्लगंसि खंडघडगंसि य एडिज्जमाणंसि महया-महया सद्देणं आरसइ ॥

७६ तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे तस्स दमगपुरिसस्स तं महया-महया आरसियसद्दं सोच्चा निसम्म कोडुंबियपुरिसे एवं वयासी—किन्नं देवाणुप्पिया ! एस दमगपुरिसे महया-महया सद्देणं आरसइ ?

७७ तए णं ते कोडुंबियपुरिसा एवं वयंति—एस णं सामी ! तंसि खंडमल्लगंसि खंडघडगंसि य एडिज्जमाणंसि महया-महया सद्देणं आरसइ ॥

७८ तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे ते कोडुंबियपुरिसे एवं वयासी—मा णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! एयस्स दमगस्स तं खंड[6]•मल्लगं खंडघडगं च एगंते° एडेह, पासे से ठवेह जहा 'अपत्तियं न'[7] भवइ। ते वि तहेव ठवेंति[8], ठवेत्ता तस्स दमगस्स अलंकारियकम्मं करेंति, करेत्ता सयपागसहस्सपागेहिं तेल्लेहिं अब्भंगेंति, अब्भंगिए[9] समाणे सुरभिणा गंधट्टएणं[10] गायं उव्वट्टेंति, उव्वट्टेत्ता उसिणोदग-गंधोदएणं ण्हाणेंति, सीओदगेणं ण्हाणेंति, पम्हल-सुकुमालाए गंधकासाईए गायाइं लूहेंति, लूहेत्ता हंसलक्खणं पडगसाडगं परिहेंति, सव्वालंकारविभूसियं करेंति, विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं भोयावेंति, भोयावेत्ता सागरदत्तस्स उवणेंति[11] ॥

---

१ पडिलाभेह (घ) अशुद्धं प्रतिभाति।
२. अणुपविसेह (ग)।
३ स० पा०—कयबलिकम्मं जाव सव्वालंकारविभूसियं।
४ ना० १।१।१२६।
५ उवलोभेंति (क)।
६ स० पा०—खंड जाव एडेह।
७ ण पत्तियं (ख, ग, घ)।
८ ठावेंति (ख, ग)।
९ अब्भिंगिए (ग)।
१० गंधोद्धुएणं (क, घ), गंधुदएणं (ख), गंधद्दूएणं (ग), गंधवट्टएणं (वृ०)। अत्र लिपिदोषेण वर्णपरिवर्तनं जातम्। उद्वर्तनप्रकरणे उद्वर्तकवस्तुनिर्देशो युज्यते। अत एवात्र 'गंधट्टएणं' इति पाठः स्वीकृतः। स्थानाङ्गे (३।८७) पि एतत् तुल्यप्रकरणे असौ पाठ उपलभ्यते।
११ समीवे उवणेंति (वृ)।

७९ तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे सूमालियं दारियं ण्हायं जाव[1] सव्वालंकारविभूसियं करेत्ता तं दमगपुरिसं एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया ! मम धूया इट्ठा कंता पिया मणुण्णा मणामा । एयं णं अहं तव भारियत्ताए दलयामि[2], भद्दियाए भद्दओ भवेज्जासि[3] ॥

दमगस्स पलायण-पदं

८० तए णं से दमगपुरिसे सागरदत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता सूमालियाए दारियाए सद्धिं वासघरं अणुपविसइ, सूमालियाए दारियाए सद्धिं तलिमंसि निवज्जइ ॥

८१. तए णं से दमगपुरिसे सूमालियाए इमेयारूवं अंगफासं पडिसवेदेइ[4], °से जहानामए—असिपत्ते इ वा जाव[5] एत्तो अमणामतरागं चेव अंगफासं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ॥

८२ तए णं से दमगपुरिसे सूमालियाए दारियाए अंगफासं असहमाणे अवसवसे मुहुत्तमेत्तं संचिट्ठइ ॥

८३ तए णं से दमगपुरिसे सूमालियं दारियं सुहपसुत्तं जाणित्ता सूमालियाए दारियाए पासाओ उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयणिज्जंसि निवज्जइ ॥

८४ तए णं सा सूमालिया दारिया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा समाणी पइव्वया पइमणुरत्ता पइं पासे अपस्समाणी तलिमाओ उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव से सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दमगपुरिसस्स पासे णुवज्जइ ॥

८५ तए णं से दमगपुरिसे सूमालियाए दारियाए दोच्चंपि इमं एयारूवं अंगफासं पडिसवेदेइ जाव[6] °अकामए अवसवसे मुहुत्तमेत्तं संचिट्ठइ ॥

८६. तए णं से दमगपुरिसे सूमालियं दारियं सुहपसुत्तं जाणित्ता° सयणिज्जाओ 'अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता[7]' वासघराओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता खंडमल्लगं खंडघडगं च गहाय मारामुक्के विव काए जामेव दिसिं[8] पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥

सूमालियाए पुणोचिंता-पदं

८७. तए णं सा सूमालिया[9] °दारिया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा पतिव्वया पइमणु-

---

१ ना० १।१।४७ ।
२ दलामि (क) ।
३. भवेज्जाहि (ग) ।
४ स० पा०—सेसं जहा सागरस्स जाव सयणिज्जाओ ।
५ ना० १।१६।५२ ।
६. ना० १।१६।५२,५३ ।
७ पब्भुट्ठेइ २ (क, ग) ।
८ दिसं (क, ख) ।
९. स० पा०—सूमालिया जाव गए ।

रत्ता पइं पासे अपासमाणी सयणिज्जाओ उट्ठेइ, दमगपुरिसस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसण करेमाणी-करेमाणी वासघरस्स दार विहाडियं पासइ, पासित्ता एव वयासी°—गए ण से दमगपुरिसे त्ति कट्टु ओहयमणसकप्पा[1] •करतल-पल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया° झियायइ ॥

८८ तए ण सा भद्दा कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए[2] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते दासचेडिं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव[3] •वयासी—गच्छह णं तुम देवाणुप्पिए ! वहूवरस्स मुहधोवणिय उवणेहि ॥

८९ तए ण सा दासचेडी भद्दाए सत्थवाहीए एवं वुत्ता समाणी एयमट्ठ तहत्ति पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता मुहधोवणिय गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सूमालिय दारिय ओहयमणसकप्प करतलपल्हत्थमुहिं अट्टज्झाणोवगय झियायमाणिं पासइ, पासित्ता एव वयासी—किण्णं तुमं देवाणुप्पिए ! ओहयमणसकप्पा करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया झियाहि ?

९० तए ण सा सूमालिया दारिया त दासचेडिं एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिए ! दमगपुरिसे मम सुहपसुत्त जाणित्ता मम पासाओ उट्ठेइ, उट्ठेत्ता वासघरदुवारं अवगुणेइ, अवगुणेत्ता मारामुक्के विव काए जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए। तए णह तओ मुहुत्ततरस्स पडिबुद्धा पतिव्वया पइमणुरत्ता पइं पासे अपासमाणी सयणिज्जाओ उट्ठेमि, दमगपुरिसस्स सव्वओ समता मग्गण-गवेसण करेमाणी-करेमाणी वासघरस्स दार विहाडिय पासामि, पासित्ता गए णं से दमगपुरिसे त्ति कट्टु ओहयमणसकप्पा करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया झियायामि ॥

९१. तए ण सा दासचेडी सूमालियाए दारियाए एयमट्ठ सोच्चा जेणेव सागरदत्ते सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता° सागरदत्तस्स एयमट्ठं निवेदेइ ॥

सूमालियाए दाणसाला-पदं

९२ तए ण से सागरदत्ते तहेव सभते समाणे जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सूमालिय दारिय अके निवेसेइ, निवेसेत्ता एव वयासी—अहो णं तुम पुत्ता ! पुरापोराणाण[4] •दुच्चिण्णाण दुप्परक्कताण कडाण पावाण कम्माण पावग फलवित्तिविसेस° पच्चणुब्भवमाणी विहरसि । त मा ण तुमं पुत्ता ! ओहयमणसकप्पा[5] •करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया° झियाहि ।

---

१ स० पा०—ओहयमणसकप्पा जाव झियायइ ।

२ पू०—ना० १।१।२४ ।

३ स० पा०—एव जाव सागरदत्तस्स ।

४ स० पा०—पुरापोराणाण जाव पच्चणुब्भमाणी ।

५ स० पा०—ओहयमणसकप्पा जाव झियाहि ।

तुमं णं पुत्ता ! मम महाणसंसि विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं [1]•उवक्खडा-वेहि, उवक्खडावेत्ता बहूणं समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगाणं देयमाणी य दवावेमाणी य° परिभाएमाणी विहराहि ॥

६३ तए णं सा सूमालिया दारिया एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता [कल्लाकल्लिं ?] महाणसंसि विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं[2] •उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता बहूणं समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगाणं देयमाणी य दवावेमाणी य° परिभाएमाणी[3] विहरइ ॥

अज्जा-संघाडगस्स भिक्खायरियागमण-पदं

६४ तेणं कालेणं तेणं समएणं गोवालियाओ अज्जाओ[4] बहुस्सुयाओ [5]•बहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुव्विं चरमाणीओ जेणेव चंपा नयरी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हंति, ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावे-माणीओ विहरंति ।

६५ तए णं तासिं गोवालियाणं अज्जाणं एगे संघाडए[6] जेणेव गोवालियाओ अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गोवालियाओ अज्जाओ वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामो णं तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए चंपाए नयरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्तए ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि ॥

६६ तए णं ताओ अज्जाओ गोवालियाहिं अज्जाहिं अब्भणुण्णाया समाणीओ[7] भिक्खायरियं अडमाणीओ सागरदत्तस्स गिहं अणुप्पविट्ठाओ ।

सूमालियाए सागरपसायोवाय-पुच्छा-पदं

६७ तए णं सूमालिया ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठा आसणाओ अब्भुट्ठेइ, वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेइ°, पडिलाभेत्ता एवं वयासी—एवं खलु अज्जाओ ! अहं सागरस्स अणिट्ठा[8] •अकंता अप्पिया अमणुण्णा° अमणामा ! नेच्छइ णं सागरए दारए मम नामं[9]•गोयमवि सवणयाए, किं पुण दंसणं वा° परिभोगं वा ?

---

१. सं० पा०—जहा पोट्टिला जाव परिभाए-माणी ।

२. सं० पा०—साइमं जाव परिभाएमाणी ।

३ दलयमाणी (क, ग), दलमाणी (ख, घ) ।

४. पू०—ना० १।१४।४० ।

५ सं० पा०—एवं जहेव तेयलिणाए सुव्वयाओ तहेव समोसढाओ तहेव संघाडओ जाव अणुपविट्ठे तहेव जाव सूमालिया ।

६. पू०—ना० १।१४।४१ ।

७ पू०—ना० १।१४।४२ ।

८ सं० पा०—अणिट्ठा जाव अमणामा ।

६ सं० पा०—नामं वा जाव परिभोगं ।

जस्स-जस्स वि य ण देज्जामि[1] तस्स-तस्स वि य णं अणिट्ठा[2] •अकंता अप्पिया अमणुण्णा° अमणामा भवामि।

तुब्भे य ण अज्जाओ! वहुनायाओ[3] •वहुसिक्खियाओ वहुपढियाओ वहूणि गामागर-णगर-खेड-कव्वड-दोणमुह-मडव-पट्टण-आसम-निगम-सबाह-सण्णिवेसाइं आहिंडह, वहूण राईसर-तलवर-माडविय-कोडुबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहपभिईण गिहाइ अणुपविसह। त अत्थियाइ भे अज्जाओ! केइ कहिंचि चुण्णजोए वा मंतजोगे वा कम्मणजोए वा कम्मजोए वा हियउड्डावणे वा काउड्डावणे वा आभिओगिए वा वसीकरणे वा कोउयकम्मे वा भूइकम्मे वा मूले वा कदे वा छल्ली वल्ली सिलिया वा गुलिया वा ओसहे वा भेसज्जे वा° उवलद्धपुव्वे, जेण अहं सागरस्स दारगस्स इट्ठा कता[4] •पिया मणुण्णा मणामा° भवेज्जामि?

अज्जा-संघाडगस्स उत्तर-पदं

९८ [5]•तए ण ताओ अज्जाओ सूमालियाए एव वुत्ताओ समाणीओ दोवि कण्णे ठएंति, ठएत्ता सूमालिय एव वयासी—अम्हे ण देवाणुप्पिए! समणीओ निग्गथीओ जाव[6] गुत्तवभचारिणीओ नो खलु कप्पइ अम्ह एयप्पगार कण्णेहिं वि निसामित्तए, किमंग पुण उवदसित्तए वा आयरित्तए वा अम्हे ण तव देवाणुप्पिए! विचित्त केवलिपण्णत्त धम्म परिकहिज्जामो॥

सूमालियाए साविया-पदं

९९ तए ण सा सूमालिया ताओ अज्जाओ एव वयासी—इच्छामि णं अज्जाओ! तुब्भ अतिए केवलिपण्णत्त धम्म निसामित्तए॥

१०० तए ण ताओ अज्जाओ सूमालियाए विचित्त केवलिपण्णत्त धम्म परिकहेंति॥

१०१ तए ण सा सूमालिया धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठा एव वयासी—सद्दहामि ण अज्जाओ! निग्गथं पावयण जाव[7] से जहेय तुब्भे वयह। इच्छामि ण अहं तुब्भ अतिए पचाणुव्वइयं सत्त सिक्खावइय—दुवालसविहं गिहिधम्म पडिवज्जित्तए।

अहासुह देवाणुप्पिए!

१०२ तए ण सा सूमालिया तासिं अज्जाण अतिए पचाणुव्वइय जाव[8] गिहिधम्मं पडिवज्जइ, ताओ अज्जाओ वदइ नमसइ, वदित्ता नमंसित्ता पडिविसज्जेइ॥

---

१. देज्जाहि (क)।
२. स० पा०—अणिट्ठा जाव अमणामा।
३ सं० पा०—वहुनायाओ एव जहा पोट्टिला जाव उवलद्धे।
४ सं० पा०—कंता जाव भवेज्जामि।
५ स० पा०—अज्जाओ तहेव भणति तहेव साविया जाया तहेव चिंता तहेव सागरदत्त आपुच्छति।
६. ना० १।१४।४०।
७ ना० १।१।१०१।
८. ना० १।१४।४७।

१०३ तए ण सा सूमालिया समणोवासिया जाया जाव[1] समणे निग्गथे फासुएणं एसणिज्जेण असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-पडिग्गह-कवल-पायपुछणेण ओसहभेसज्जेण पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-सथारएण पडिलाभेमाणी विहरइ ॥

सूमालियाए पव्वज्जा-पदं

१०४ तए ण तीसे सूमालियाए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि कुडुबजागरियं जागरमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु अह सागरस्स पुव्वि इट्ठा कता पिया मणुण्णा मणामा आसि, इयाणि अणिट्ठा अकता अप्पिया अमणुण्णा अमणामा। नेच्छइ ण सागरए मम नामगोयमवि सवणयाए, किं पुण दसण वा परिभोग वा? जस्स-जस्स वि य ण देज्जामि तस्स-तस्स वि य ण अणिट्ठा अकता अप्पिया अमणुण्णा अमणामा भवामि। त सेय खलु मम गोवालियाणं अज्जाणं अतिए पव्वइत्तए—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव[2] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते जेणेव सागरदत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु° एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया! मए गोवालियाण अज्जाण अतिए धम्मे निसते, से वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए। तं इच्छामि ण तुब्भेहि अब्भणुण्णाया पव्वइत्तए जाव[3] गोवालियाण अज्जाणं अतिए पव्वइया ॥

१०५ तए ण सा सूमालिया अज्जा जाया—इरियासमिया जाव[4] गुत्तबंभयारिणी बहूहिं चउत्थ-छट्ठट्ठम[5]-°दसम दुवालसेहि मासद्धमासखमणेहिं अप्पाण भावेमाणी° विहरइ ॥

सूमालियाए आतावणा-पदं

१०६ तए ण सा सूमालिया अज्जा अण्णया कयाइ जेणेव गोवालियाओ अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—इच्छामि ण अज्जाओ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी चपाए नयरीए बाहिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामते छट्ठछट्ठेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण सूराभिमुही आयावेमाणी विहरित्तए ॥

१०७ तए ण ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सूमालियं अज्जं एवं वयासी—अम्हे ण

---

१ ना० १।५।४७।
२ ना० १।१।२४।
३ ना० १।१४।५३,५४।
४. ना० १।१४।४०।
५. स० पा०—छट्ठट्ठम जाव विहरइ।

अज्जो[1] समणीओ निग्गथीओ इरियासमियाओ जाव[1] गुत्तबभचारिणीओ। नो खलु अम्हं कप्पइ बहिया गामस्स वा जाव[2] सण्णिवेसस्स वा छट्ठछट्ठेण[3] •अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण सूराभिमुहीण आयावेमाणीण° विहरित्तए। कप्पइ णं अम्हं अतोउवस्सयस्स वइपरिक्खित्तस्स सघाडिबद्धियाए ण समतलपइयाए[4] आयावेत्तए॥

१०८ तए ण सा सूमालिया गोवालियाए एयमट्ठ नो सद्दहइ नो पत्तियइ नो रोएइ, एयमट्ठ असद्दहमाणी अपत्तियमाणी अरोयमाणी सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामते छट्ठंछट्ठेणं[5] •अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेण सुराभिमुही आयावेमाणी° विहरइ॥

सूमालियाए नियाण-पदं

१०९ तत्थ ण चपाए ललिया नाम गोट्ठी परिवसइ—'नरवइ-दिन्न-पयारा'[6] अम्मापिइ°[7]-नियण-निप्पिवासा वेसविहार-कय-निकेया[8] नाणाविह-अविणयप्पहाणा अड्ढा जाव[9] बहुजणस्स अपरिभूया॥

११०. तत्थ ण चपाए देवदत्ता नाम गणिया होत्था—सूमाला जहा अड-नाए[10]॥

१११ तए ण तीसे ललियाए गोट्ठीए अण्णया कयाइ पच गोट्ठिल्लगपुरिसा देवदत्ताए गणियाए सद्धि सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स[11] उज्जाणसिरिं पच्चणुब्भवमाणा विहरति॥

११२ तत्थ ण एगे गोट्ठिल्लगपुरिसे देवदत्तं गणियं उच्छगे धरेइ, एगे पिट्ठओ आयवत्त धरेइ, एगे पुप्फपूरग रएइ, एगे पाए रएइ[12], एगे चामरुक्खेव करेइ॥

११३. तए णं सा सूमालिया अज्जा देवदत्त गणिय तेहिं[13] पचहिं गोट्ठिल्लपुरिसेहिं सद्धि उरालाइ माणुस्सगाइ भोगभोगाइ भुजमाणिं[14] पासइ, पासित्ता इमेयारूवे संकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो ण इमा इत्थिया पुरापोराणाणं[15] •सुचिण्णाण सुपरक्कताण कडाण कल्लाणाण कम्माण कल्लाण फलवित्तिविसेस पच्च-

---

१ ना० १।१४।४०।

२. ना० १।१।११८।

३. स० पा०—छट्ठछट्ठेण जाव विहरित्तए।

४ समतलवइयाए (क); °पतियाए (ख, घ), °वत्तियाए (ग)।

५. स० पा०—छट्ठछट्ठेण जाव विहरइ।

६. नरवइविदिण्णवियारा (क, ख)।

७. अम्मापिई° (क, ख, ग)।

८. निक्केया (क), विक्किया (ख), निक्किया (ग)।

९. ना० १।५।७।

१० ना० १।३।८।

११ × (ख, घ)।

१२ पाठान्तरे पाए रोवेइत्ति घृतजलाभ्या आर्द्रयति (वृ)।

१३. एहिं (क)।

१४. भुजमाणी (क, ख, ग, घ)।

१५ स० पा०—पुरापोराणाण जाव विहरइ।

णुब्भवमाणी• विहरइ। त जइ णं केइ इमस्स सुचरियस्स तव-नियम-बभचेरवासस्स कल्लाणे फलवित्तिविसेसे अत्थि, तो ण अहमवि आगमिस्सेणं भवग्गहणेण इमेयारूवाइ उरालाइं[1] •माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुजमाणी° विहरिज्जामि त्ति कट्टु नियाण करेइ, करेत्ता आयावणभूमीओ[2] पच्चोरुभइ ॥

सूमालियाए बाउसियत्त-पदं

११४ तए ण सा सूमालिया अज्जा सरीरबाउसिया[3] जाया यावि होत्था—अभिक्खणं-अभिक्खण हत्थे धोवेइ, पाए धोवेइ, सीसं धोवेइ, मुह धोवेइ, थणंतराइ धोवेइ, कक्खतराइ धोवेइ, गुज्झतराइ धोवेइ, जत्थ ण ठाणं वा सेज्ज वा निसीहिय वा चेएइ, तत्थ वि य ण पुव्वामेव उदएण अब्भुक्खेत्ता तओ पच्छा ठाणं वा सेज्जं वा निसीहिय वा चेएइ ॥

११५. तए णं ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सूमालिय अज्ज एवं वयासी—एवं खलु अज्जे ! अम्हे समणीओ निग्गथीओ इरियासमियाओ जाव[4] बंभचेरधारिणीओ। नो खलु कप्पइ अम्ह सरीरबाउसियाए[5] होत्तए। तुम च ण अज्जे ! सरीरबाउसिया[6] अभिक्खण-अभिक्खण हत्थे धोवेसि[7], •पाए धोवेसि, सीस धोवेसि, मुह धोवेसि, थणतराइ धोवेसि, कक्खतराइ धोवेसि,गुज्झंतराइ धोवेसि, जत्थ ण ठाण वा सेज्ज वा निसीहिय वा चेएसि, तत्थ वि य ण पुव्वामेव उदएण अब्भुक्खेत्ता तओ पच्छा ठाण वा सेज्ज वा निसीहिय वा° चेएसि। त तुमं णं देवाणुप्पिए ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि[8] •निंदाहि गरिहाहि पडिक्कमाहि विउट्टाहि विसोहेहि अकरणयाए अब्भुट्ठेहि, अहारिह तवोकम्म पायच्छित्तं° पडिवज्जाहि ॥

११६. तए णं सा सूमालिया गोवालियाणं अज्जाणं एयमट्ठं नो आढाइ नो परियाणाइ, 'अणाढायमाणी अपरियाणमाणी'[9] विहरइ ॥

११७ तए ण ताओ अज्जाओ सूमालिय अज्ज अभिक्खण-अभिक्खण हीलेंति[10] •निंदेति खिंसेति गरिहंति° परिभवंति, अभिक्खण-अभिक्खणं एयमट्ठं निवारेति ॥

---

१. स० पा०—उरालाइ जाव विहरिज्जामि।
२. °भूमीए (ख, ग, घ)।
३ °वाउसा (क), °पाउसा (ख, ग), पाउसिया (घ)।
४. ना० १।१४।४०।
५ °पाउसिया (ख, ग, घ)।
६. पाउसिया (ख, घ)।
७ स० पा०—धोवेसि जाव चेएसि।
८. स० पा०—आलोएहि जाव पडिवज्जाहि।
९. अणाढाइमाणा अपरिजाणमाणा (क, घ); अणाढायमाणा अप्परियाणमाणा (ख); अपरिजाणमाणा (ग)।
१०. स० पा०—हीलेंति जाव परिभवति।

सूमालियाए पुढोविहार-पदं

११८. तए णं तीसे सूमालियाए समणीहिं निग्गंथीहिं हीलिज्जमाणीए[1] •निंदिज्जमाणीए खिंसिज्जमाणीए गरिहिज्जमाणीए परिभविज्जमाणीए अभिक्खणं-अभिक्खणं एयमट्ठं° निवारिज्जमाणीए इमेयारूवे अज्झत्थिए[2] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—जया णं अहं अगारमज्झे[3] वसामि[4], तया णं अहं अप्पवसा। जया णं अहं मुंडा भवित्ता पव्वइया, तया णं अहं परवसा। पुव्विं च णं ममं समणीओ आढंति परिजाणंति, इयाणिं नो आढंति नो परिजाणंति। तं सेयं खलु ममं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए[5] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते गोवालियाणं अज्जाणं अंतियाओ पडिनिक्खमित्ता पाडिएक्कं उवस्सयं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते गोवालियाणं अज्जाणं अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पाडिएक्कं उवस्सयं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ॥

११९. तए णं सा सूमालिया अज्जा अणोहट्टिया[6] अनिवारिया सच्छंदमई अभिक्खणं-अभिक्खणं हत्थे धोवेइ[7], •पाए धोवेइ, सीसं धोवेइ, मुहं धोवेइ, थणंतराइं धोवेइ, कक्खंतराइं धोवेइ, गुज्झंतराइं धोवेइ, जत्थ णं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएइ, तत्थ वि य णं पुव्वामेव उदएणं अब्भुक्खेत्ता तओ पच्छा ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा° चेएइ।

तत्थ वि य णं पासत्था पासत्थविहारिणी ओसन्ना ओसन्नविहारिणी कुसीला कुसीलविहारिणी संसत्ता संसत्तविहारिणी बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए अप्पाणं झोसेत्ता, तीसं भत्ताइं अणसणाए छेएत्ता, तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा ईसाणे कप्पे अण्णयरंसि विमाणंसि देवगणियत्ताए उववण्णा। तत्थेगइयाणं[8] देवीणं नवपलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। तत्थ णं सूमालियाए देवीए नवपलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता॥

दोवई-कहाणग-पदं

१२०. तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे पंचालेसु जणवएसु कंपिल्लपुरे नामं नयरे होत्था—वण्णओ[9]॥

---

१. स० पा०—हीलिज्जमाणीए जाव निवारिज्जमाणीए।
२. स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
३. अगारवास° (ख)।
४. परिवसामि (क)।
५. पू०—ना० १।१।२४।
६. अणाहट्टिया (ख, घ)।
७. स० पा०—धोवेइ जाव चेएइ।
८. तत्थगतियाणं (क, ग)।
९. ओ० सू० १।

१२१ तत्थ ण दुवए नामं राया होत्था—वण्णओ[1] ।।

१२२. तस्स ण चुलणी देवी । धट्ठज्जुणे कुमारे जुवराया ।।

१२३ तए ण सा सूमालिया देवी ताओ देवलोगाओ आउक्खएण[2] •ठिइक्खएणं भवक्खएण अणतर चय° चइत्ता इहेव जंवुद्दीवे दीवे भारहे वासे पचालेसु जणवएसु कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स[3] रण्णो चुलणीए देवीए कुच्छिसि दारियत्ताए पच्चायाया[4] ।।

१२४ तए णं सा चुलणी देवी नवण्ह मासाण[5] •वहुपडिपुण्णाण अद्धट्ठमाण य राइंदियाण वीइक्कताण सुकुमाल-पाणिपाय जाव[6]° दारियं पयाया ।।

१२५ तए ण तीसे दारियाए निव्वत्तवारसाहियाए इम एयारूव नाम—जम्हा ण एसा दारिया दुपयस्स रण्णो धूया चुलणीए देवीए अत्तया, त होउ ण अम्ह इमीसे दारियाए नामधेज्जे[7] दोवई ।।

१२६. तए ण तीसे अम्मापियरो इम एयारूवं गोण्ण गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं करेति—दोवई-दोवई ।।

१२७ तए ण सा दोवई दारिया पचधाईपरिग्गहिया जाव[8] गिरिकदरमल्लीणा इव चपगलया निवाय[9]-निव्वाघायसि सुहंसुहेणं परिवड्ढइ ।।

१२८. तए ण सा दोवई रायवरकण्णा उम्मुक्कवालभावा[10] •विण्णय-परिणयमेत्ता जोव्वणगमणुपत्ता रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा° उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था ।।

१२९. तए ण त दोवइ रायवरकण्णं अण्णया कयाइ अतेउरियाओ ण्हाय जाव[11] सव्वालकारविभूसिय करेति, करेत्ता दुवयस्स रण्णो पायवदिय पेसेति ।।

१३० तए ण सा दोवई रायवरकण्णा जेणेव दुवए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दुवयस्स रण्णो पायग्गहण करेइ ।।

दोवईए सयंवर-संकप्प-पदं

१३१. तए ण से दुवए राया दोवइ दारिय अके निवेसेइ, निवेसेत्ता दोवईए रायवरकण्णाए रूवे य जोवण्णे य लावण्णे य जायविम्हए दोवइं रायवरकण्ण एव वयासी—जस्स ण अह तुम पुत्ता ! रायस्स वा जुवरायस्स वा भारियत्ताए

---

१. ओ० सू० १४ ।
२. सं० पा०—आउक्खएण जाव चइत्ता ।
३. दुपयस्स (ख, ग) ।
४. पयाया (क) ।
५. सं० पा०—मासाण जाव दारिय ।
६. ना० १।१।२० ।
७ नामधेज्जं (ख, घ) ।
८ ना० १।१६।३६ ।
९. निव्वाय (क) ।
१०. स० पा०—उम्मुक्कवालभावा जाव उक्किट्ठसरीरा ।
११. ना० १।१।४७ ।

सयमेव दलइस्सामि, तत्थ णं तुमं सुहिया वा दुहिया वा भवेज्जासि। तए णं मम जावज्जीवाए हिययदाहे भविस्सइ। तं णं अहं तव पुत्ता! अज्जयाए सयवरं वियरामि। अज्जयाए णं तुमं दिन्नसयंवरा। जं णं तुमं सयमेव रायं वा जुवरायं वा वरेहिसि, से णं तव भत्तारे भविस्सइ त्ति कट्टु ताहिं इट्ठाहिं[1] •कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं वग्गूहिं° आसासेइ, आसासेत्ता पडिविसज्जेइ॥

बारवईए दूयपेसण-पदं

१३२. तए णं से दुवए राया दूयं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया! बारवइं नयरिं। तत्थ णं तुमं कण्हं वासुदेवं समुद्दविजयपामोक्खे दस दसारे, बलदेवपामोक्खे पंच महावीरे, उग्गसेणपामोक्खे सोलस रायसहस्से, पज्जुन्नपामोक्खाओ अद्धट्ठाओ कुमारकोडीओ, संबपामोक्खाओ सट्ठिं दुद्दंत-साहस्सीओ, वीरसेणपामोक्खाओ एक्कवीसं वीरपुरिससाहस्सीओ[2], महासेण-पामोक्खाओ छप्पन्नं बलवगसाहस्सीओ, अण्णे य बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहपभिइओ करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेहि, वद्धावेत्ता एवं वयाहि[3]—एवं खलु देवाणुप्पिया! कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो धूयाए, चूलणीए अत्तयाए, धट्ठज्जुणकुमारस्स[4] भइणीए, दोवईए रायवरकण्णाए सयंवरे भविस्सइ। तं[5] णं तुब्भे दुवयं रायं अणुगिण्हेमाणा[6] अकालपरिहीणं[7] चेव कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह॥

१३३. तए णं से दूए करयल[8]•परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं° कट्टु दुवयस्स रण्णो एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह। 'ते वि तहेव उवट्ठवेंति'[9]॥

१३४. तए णं से दूए ण्हाए जाव[10] अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे चाउग्घंटं आसरहं

---

१. सं० पा०—इट्ठाहिं जाव आसासेइ।
२. रायवरवीर° (ख, ग); वीरसाहस्सीण (१।५।६)।
३. वयह (क)।
४. धिट्ठ° (ग)।
५. ते (ख)।
६. अणुगिण्हमाणा (क, ग, घ)।
७. °परिहीणा (ख, घ)।
८. सं० पा०—करयल जाव कट्टु।
९. सो वि तहेव उवट्ठवेति (क, ख, ग, घ), 'कोडुंबियपुरिसे' तथा 'उवट्ठवेह' एते क्रियापदे बहुवचनान्ते स्तः, तेनात्रापि बहुवचनान्ते क्रियापदे युज्येते। एवं प्रतीयते पाठपूरणे कश्चिद् विपर्ययो जात.।
१०. ना० १।१।२७।

दुरुहइ, दुरुहित्ता बहूहि पुरिसेहिं—सण्णद्ध[1]-•बद्ध-वम्मिय-कवएहिं उप्पीलिय-सरासण-पट्टिएहि पिणद्ध-गेविज्जेहिं आविद्ध-विमल-वरचिंध-पट्टेहिं° गहियाउह-पहरणेहिं—सद्धिं संपरिवुडे कंपिल्लपुर नयर मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, पंचाल-जणवयस्स मज्झमज्झेण जेणेव देसप्पंते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुरट्ठाजणवयस्स[2] मज्झमज्झेणं जेणेव बारवई नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवा-गच्छित्ता बारवइ नयरिं मज्झमज्झेण अणुप्पविसइ, अणुप्पविसत्ता जेणेव कण्हस्स वासुदेवस्स बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंट आसरह ठावेइ, ठावेत्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता मणुस्स-वग्गुरापरिक्खित्ते पायचारविहारेण जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कण्ह वासुदेव, समुद्दविजयपामोक्खे य दस दसारे जाव[3] 'छप्पन्नं बलवगसाहस्सीओ'[4] करयल[5]•परिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अंजलिं कट्टु जएण विजएण वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एव वयइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो धयाए, चुलणीए अत्तयाए, धट्ठज्जुणकुमारस्स भइणीए, दोवईए रायवरकण्णाए सयंवरे अत्थि। त ण तुब्भे दुवय रायं अणुगिण्हेमाणा अकालपरिहीण चेव कंपिल्लपुरे नयरे° समोसरह ॥

१३५ तए ण से कण्हे वासुदेवे तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-[6]•चित्तमाणदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण°-हियए त दूय सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

कण्हस्स पत्थाण-पदं

१३६ तए ण से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया ! सभाए सुहम्माए सामुदाइयं भेरिं तालेहि ॥

१३७. तए ण से कोडुंबियपुरिसे करयल[7]•परिग्गहिय दसणहं सिरसावत्त मत्थए अंजलिं° कट्टु कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठ पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता जेणेव सभाए सुहम्माए सामुदाइया[8] भेरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सामुदाइय भेरिं महया-महया सद्देण तालेइ ॥

१३८ तए ण ताए सामुदाइयाए भेरीए तालियाए समाणीए समुद्दविजयपामोक्खा दस

---

१. स० पा०—सण्णद्ध जाव गहिया°।
२. सुरट्ठ° (क, घ)।
३ ना० १।१६।१३२।
४. १३२ सूत्रानुसारेणात्र 'सत्थवाहप्पभिइओ' इति पाठ. सगच्छते।
५ स० पा०—करयल त चेव जाव समोसरह।
६. स० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियए।
७. सं० पा०—करयल०।
८. सामुदाणिया (ख, घ)।

दसारा जाव[1] 'महासेणपामोक्खाओ छप्पन्न वलवगसाहस्सीओ'[2] ण्हाया जाव[3] सव्वालकारविभूसिया जहाविभवइड्ढिसक्कारसमुदएण अप्पेगइया हयगया[4] •एव गयगया रह-सीया-सदमाणीगया° अप्पेगइया पायविहारचारेण[5] जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल[6]•परिग्गहिय दसणह सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु° कण्ह वासुदेव जएण विजएण वद्धावेति ॥

१३९. तए ण से कण्हे वासुदेवे कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! आभिसेक्क[7] हत्थिरयण पडिकप्पेह हय-गय[8]-•रह-पवरजोहकलिय चाउरंगिणि सेण सण्णाहेह, सण्णाहेत्ता एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह। ते वि तहेव° पच्चप्पिणति ॥

१४० तए ण से कण्हे वासुदेवे जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समत्तजालाकुलाभिरामे[9] •विचित्तमणि-रयणकुट्टिमतले रमणिज्जे ण्हाणमडवसि णाणामणि-रयण-भत्ति-चित्तसि ण्हाणपीढसि सुहणिसण्णे सुहोदएहिं गधोदएहिं पुप्फोदएहिं सुद्धोदएहिं पुणो-पुणो कल्लाणग-पवर मज्जणविहीए मज्जिए जाव[10]° अजणगिरिकूडसन्निभ गयवइ नरवई दुरूढे ॥

१४१. तए ण से कण्हे वासुदेवे समुद्दविजयपामोक्खेहि दसहि दसारेहिं जाव[11] अणगसेणापामोक्खाहिं अणेगाहि गणियासाहस्सीहि सर्द्धि संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव[12] दुदुहि-निग्घोसनाइयरवेण वारवइ नयरिं मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता सुरट्ठाजणवयस्स मज्झमज्झेण जेणेव देसप्पते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पचालजणवयस्स मज्झमज्झेण जेणेव कपिल्लपुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

हत्थिणाउरे दूयपेसण-पदं

१४२. तए ण से दुवए राया दोच्च पि दूय सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—गच्छह ण तुमं देवाणुप्पिया! हत्थिणाउरं[13] नयर। तत्थ ण तुम पडुराय सपुत्तय—

---

१ ना० १।१६।१३२।
२. १३२ सूत्रानुसारेणाऽत्र 'सत्थवाहप्पमिइओ' इति पाठ सगच्छते।
३. ना० १।१।४७।
४. स० पा०—हयगया जाव अप्पेगइया।
५. पायचारविहारेण (क, ख, ग)।
६. स० पा०—करयल जाव कण्ह।
७. अभिसेक्कं (क, ख, घ)।
८ स० पा०—हयगय जाव पच्चप्पिणति।
९ स० पा०—समत्तजालाकुलाभिरामे जाव अजणगिरि०।
१० ओ० सू० ६३।
११. ना० १।५।६।
१२. ना० १।१।३३।
१३. हत्थिणपुरं (ख, घ)।

जुहिट्ठिल[1] भीमसेण अज्जुण नउल सहदेव, दुज्जोहणं भाइसय[2]-समग्ग, गगेयं विदुर दोण जयद्दह सउणि कीव आसत्थाम करयल[3]•परिग्गहियं दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलिं कट्टु जएण विजएणं वद्धावेहि, वद्धावेत्ता एव वयाहि—एव खलु देवाणुप्पिया! कपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो धूयाए, चुलणीए अत्तयाए धट्ठज्जुणकुमारस्स भइणीए, दोवईए रायवरकण्णाए सयवरे भविस्सइ। त ण तुब्भे दुवय राय अणुगिण्हेमाणा अकालपरिहीणं चेव कपिल्ल-पुरे नयरे° समोसरह॥

१४३ तए ण से दूए[4] •जेणेव हत्थिणाउरे नयरे जेणेव पडुराया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पडुराय सपुत्तय—जुहिट्ठिल भीमसेण अज्जुणं नउल सहदेवं, दुज्जोहण भाइसय-समग्ग, गगेय विदुर दोण जयद्दहं सउणिं कीव आसत्थामं[5] एव वयइ—एव खलु देवाणुपिया! कपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो धूयाए, चुलणीए अत्तयाए, धट्ठज्जुणकुमारस्स भइणीए दोवईए रायवरकण्णाए सयवरे अत्थि। त ण तुब्भे दुवय राय अणुगिण्हेमाणा अकालपरिहीण चेव कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह॥

१४४ तए ण से पडुराया जहा वासुदेवे नवर—भेरी नत्थि जाव[6]° जेणेव कपिल्लपुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए॥

दूयपेसण-पदं

१४५ एएणेव कमेण—

तच्चं दूय[7] •एव वयासी—गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया! चप नयरिं। तत्थ ण

---

१. जुहिट्ठिल्ल (घ)।

२. भायसय° (ख, घ)।

३ स० पा०—करयल जाव कट्टु तहेव जाव समोसरह।

४. स० पा०—तए ण से दूए एव वयासी जहा वासुदेवे नवर भेरी नत्थि जाव जेणेव, पू०—ना० १।१६।१३३,१३४।

५ पू०—ना० १।१६।१३४।

६. ना० १।१६। १३५-१४१।

७ स० पा०—तच्च दूय चप नयरिं। तत्थ ण तुम कण्ण अगराय सल्ल नदिरायं करयल तहेव जाव समोसरह। चउत्थं दूय सोत्तिमइ नयरिं। तत्थ णं तुम सिसुपाल दमघोससुय पचभाइसयसपरिवुड करयल तहेव जाव समोसरह। पचम दूय हत्थिसीस नयरिं। तत्थ ण तुम दमदत राय करयल जाव समोसरह। छट्ठ दूय महुर नयरिं। तत्थ ण तुमं धर राय करयल जाव समोसरह। सत्तमं दूय रायगिह नयर। तत्थ ण तुम सहदेव जरासधसुय करयल जाव समोसरह। अट्ठम दूय कोडिण्ण नयर। तत्थ ण तुम रुप्पि भेसगसुय करयल तहेव जाव समो-सरह। नवम दूयं विराटं नयरिं। तत्थ णं तुम कीयग भाउसयसमग्गं करयल जाव समोसरह। दसमं दूय अवसेसेसु गामागर-नगरेसु अणेगाइं रायसहस्साइं जाव समो-सरह। तए ण से दूए तहेव निग्गच्छइ जेणेव गामागर तहेव जाव समोसरह।

तुम कण्णं[1] अगराय, सल्ल नंदिरायं एव वयाहि—कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह[2]।
चउत्थ दूय एव वयासी—गच्छह णं तुम देवाणुप्पिया! सोत्तिमइ नयरिं। तत्थ ण तुम सिसुपाल दमघोससुय पचभाइसय-सपरिवुड एव वयाहि—कपिल्लपुरे नयरे समोसरह[3]।
पचम दूय एव वयासी—गच्छह णं तुम देवाणुप्पिया! हत्थिसीस नयरिं। तत्थ ण तुम दमदत राय एव वयाहि—कपिल्लपुरे नयरे समोसरह[4]।
छट्ठं दूय एव वयासी—गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया! महुर नयरिं। तत्थ ण तुम धरं राय एव वयाहि—कपिल्लपुरे नयरे समोसरह[5]।
सत्तम दूयं एव वयासी—गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया! रायगिह नयरिं। तत्थ ण तुम सहदेव जरासघसुय एव वयाहि—कपिल्लपुरे नयरे समोसरह[6]।
अट्ठमं दूय एव वयासी—गच्छह ण तुमं देवाणुप्पिया! कोडिण्ण नयर। तत्थ ण तुम रुप्पि भेसगसुयं एव वयाहि—कपिल्लपुरे नयरे समोसरह[7]।
नवम दूय एव वयासी—गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया! विराट नयर। तत्थ ण कीयग भाउसय-समग्ग एव वयाहि—कपिल्लपुरे नयरे समोसरह[8]।
दसम दूय एव वयासी—गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया! अवसेसेसु गामागर-नगरेसु। तत्थ ण तुम अणेगाइ रायसहस्साइ एव वयाहि—कपिल्लपुरे नयरे° समोसरह[9]।

रायसहस्साण पत्थाणं-पदं

१४६ तए ण ते[10] वहवे रायसहस्सा पत्तेय-पत्तेय ण्हाया सण्णद्ध-बद्ध-वम्मिय-

---

१. कण्ह (क्व)।
२. शेष १३२-१३४ सूत्रवत् पूरणीयम्।
३-८. शेष १३२-१३४ सूत्रवत् पूरणीयम्।
९ शेष १३२-१३४ सूत्रवत् पूरणीयम्। अन्तिमात् 'समोसरह' इति पदादग्रे निम्नलिखित पाठो लभ्यते, किन्तु पूर्वक्रमानुसारेण असौ सक्षिप्तपाठपद्धतावेव गर्भितोस्ति, तेनात्रास्माभि पाठान्तररूपेण स्वीकृत। 'तए ण से दूए तहेव निग्गच्छइ जेणेव गामागर-नगराइ जेणेव अणेगाइ रायसहस्साइ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एव वयासी—कपिल्लपुरे नयरे समोसरह। तए ण ताइ अणेगाइ रायसहस्साइ तस्स दूयस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठा तं दूयं सक्कारेंति सम्माणेति, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेति' [ख, ग, घ]। १३४ सूत्रात् १४५ सूत्रपर्यन्त 'क' प्रतौ एतावान् एव पाठ उपलभ्यते – गच्छह ण तुम देवाणु रायगिह नयर। तत्थ ण तुम सहदेव रायाण अण्णे य जाव वहवे जाव वद्धावेत्ता एव वयह—एव खलु देवाणुप्पिया। कपिल्लपुरे जाव समोसरह। एवं महुराए उग्गेण उग्गसेण वा राय। हत्थिणाउरे पडु सपुत्तय। वइराडए णगरे दुज्जोहण भाइसतसमग्ग सउणि सल्लिंगि च जयद्दह दोण आसत्थाम अण्णे य। दतपुरी दतवक्को। चपाए पउमराया। तए ण से दूए तहत्ति जाव पडिसुणेइ।
१०. ते वासुदेवपामोक्खा [क, ख, ग, घ]।

कवया[1] हत्थिखधवरगया[2] हय-गय-रह[3]-•पवरजोहकलियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धि सपरिवुडा महयाभड-चडगर-रह-पहकर-विंदपरिक्खित्ता° सएहि-सएहि नगरेहितो अभिनिग्गच्छति, अभिनिग्गच्छित्ता जेणेव पचाले जणवए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

दुवयस्स आतिथ्य-पद

१४७ तए ण से दुवए राया कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—गच्छह णं तुम देवाणुप्पिया ! कपिल्लपुरे नयरे वहिया गंगाए महानईए अदूरसामते एग मह सयवरमडव करेह—अणेगखंभ-सयसन्निविट्ठं लीलट्ठिय-सालिभजियागं जाव[4] पासाईयं दरिसणिज्ज अभिरूव पडिरूव—करेत्ता एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह । ते वि तहेव पच्चप्पिणति ।।

१४८ तए ण से दुवए राया [दोच्चपि ?] कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! वासुदेवपामोक्खाणं वहूण रायसहस्साणं आवासे करेह, करेत्ता एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह । ते वि तहेव पच्चप्पिणति ।।

१४९. तए ण से दुवए राया वासुदेवपामोक्खाण वहूण[5] रायसहस्साण आगमण जाणेत्ता पत्तेय-पत्तेयं हत्थिखंध[6]•वरगए सकोरेटमल्लदामेणं छत्तेण धरिज्ज-माणेण सेयवरचामराहि वीइज्जमाणे हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धि सपरिवुडे महयाभड-चडगर-रह-पहकर-विंदपरि-क्खित्ते° अग्घं च पज्ज च गहाय सव्विड्ढीए कपिल्लपुराओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव ते वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ताइ वासुदेवपामोक्खाइ अग्घेण य पज्जेण य सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तेसिं वासुदेवपामोक्खाण पत्तेय-पत्तेय आवासे वियरइ ।।

१५० तए ण ते वासुदेवपामोक्खा जेणेव सया-सया आवासा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता हत्थिखधेहितो पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता पत्तेयं-पत्तेयं खंधावार-निवेस करेति, करेत्ता सएसु-सएसु आवासेसु अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता सएसु-सएसु आवासेसु[7] आसणेसु य सयणेसु य सन्निसण्णा य सतुयट्टा य वहूहिं गधव्वेहि य नाडएहि य उवगिज्जमाणा य उवनच्चिज्जमाणा य विहरंति ।।

१५१ तए ण से दुवए राया कपिल्लपुर नयरं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता विपुलं

वासुदेवस्य प्रस्थानविषयक सूत्र पूर्वं साक्षात् उल्लिखितमस्ति, तथैव पाण्डुराजस्यापि, तेनासौ पाठः पाठान्तररूपेण स्वीकृत. ।

१. पू०—ना० १।१६।१३४ ।

२. पू०—ना० १।८।५७, १।१६।१५३ ।

३. स० पा०—रह महया ।

४. ना० १।१ ८९ ।

५. × (ग, घ) ।

६. स० पा०—हत्थिखध जाव परिवुडे ।

७. आवासेसु य (क, ख, ग, घ) ।

असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं सुरं च मज्जं च मंसं च सीधुं च पसन्नं च सुबहुं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारं च वासुदेवपामोक्खाणं रायसहस्साणं आवासेसु साहरह। तेवि साहरंति॥

१५२. तए णं ते वासुदेवपामोक्खा तं विपुलं असण[1]-•पाण-खाइम-साइमं सुरं च मज्जं च मंसं च सीधुं च° पसन्नं च आसाएमाणा विसाएमाणा परिभाएमाणा परिभुंजेमाणा विहरंति। जिमियभुत्तुत्तरागया वि य णं समाणा आयंता चोक्खा[2] •परमसुइभूया° सुहासणवरगया बहूहिं गंधव्वेहि य[3] •नाडएहि य उवगिज्जमाणा य उवनच्चिज्जमाणा य° विहरंति॥

दोवईए सयंवर-पदं

१५३ तए णं से दुवए राया पच्चावरण्ह[4]-कालसमयंसि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! कंपिल्लपुरे सिंघाडग[5]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°-पहेसु वासुदेवपामोक्खाणं रायसहस्साणं आवासेसु हत्थिखंधवरगया महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा एवं वयह—एवं खलु देवाणुप्पिया! कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए[6] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते दुवयस्स रण्णो धूयाए, चुलणीए देवीए अत्तियाए, धट्ठज्जुणस्स भगिणीए, दोवईए रायवरकण्णाए सयंवरे भविस्सइ। तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया! दुवयं रायाणं अणुगिण्हेमाणा ण्हाया जाव[7] सव्वालंकारविभूसिया हत्थिखंधवरगया सकोरेंट[8]•मल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहिं वीइज्जमाणा हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा महयाभड-चडगर-रह-पहकर-विंद°परिक्खित्ता जेणेव सयंवरामंडवे तेणेव उवागच्छह, उवागच्छित्ता पत्तेयं-पत्तेयं नामंकिएसु[9] आसणेसु निसीयह, निसीइत्ता दोवइं रायवरकण्णं पडिवालेमाणा-पडिवालेमाणा चिट्ठह त्ति[10] घोसणं घोसेह, घोसेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह॥

१५४ तए णं ते कोडुंबियपुरिसा तहेव जाव[11] पच्चप्पिणंति॥

---

१ सं० पा०—असणं जाव पसन्नं।
२ सं० पा०—चोक्खा जाव सुहासणवरगया।
३. सं० पा०—गंधव्वेहि य जाव विहरंति।
४ पुव्वावरण्ह (ख, ग, घ)।
५ सं० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु।
६ पू०—ना० १।१।२४।
७ ना० १।१४७।
८ सं० पा०—सकोरेंट° सेयचामर हय-गय-रह-महयाभडचडगरेणं जाव परिक्खित्ता।
९ नामंकेसु (क, ख, ग, घ)।
१० × (क, ख, ग)।
११ ना० १।१६।१५३।

१५५ तए णं से दुवए राया कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सयवरमडवं आसिय-संमज्जिओवलित्त पचवण्ण[1]-पुप्फोवयारकलियं कालागरु-पवरकुदुरुक्क-तुरुक्क[2]-•धूव-डज्झत-सुरभि-मघमघेत-गधुद्धयाभिराम सुगधवरगधगधियं• गंधवट्टिभूय मचाइमचकलियं करेह कारवेह, करेत्ता कारवेत्ता वासुदेवपामोक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं पत्तेय-पत्तेय नामकियाइ[3] आसणाइ अत्थुयपच्चत्थुयाइ रएह, रएत्ता एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह। तेवि जाव पच्चप्पिणति ॥

१५६ तए ण ते वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए[4] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते ण्हाया जाव[5] सव्वालकार-विभूसिया हत्थिखधवरगया सकोरेटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहि वीइज्जमाणा हय-गय[6]-•रह-पवरजोहकलियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धि सपरिवुडा महयाभड-चडगर-रह-पहकर-विदपरिक्खित्ता° सव्वि-ड्ढीए जाव[7] दुदुहि-निग्घोस-नाइयरवेण जेणेव सयवरामडवे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता पत्तेय-पत्तेय नामकिएसु[8] आसणेसु निसीयति दोवइ रायवरकण्णं पडिवालेमाणा-पडिवालेमाणा चिट्ठति ॥

१५७ तए ण से दुवए राया कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए[9] उट्ठियम्मि सूरे सहस्स-रस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते ण्हाए जाव[10] सव्वालंकारविभूसिए हत्थिखंध-वरगए सकोरेट[11]•मल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहिं वीइज्जमाणे हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धि सपरिवुडे महयाभड-चडगर-रह-पहकर-विंदपरिक्खित्ते° कपिल्लपुरं नगरं मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, जेणेव सयवरामंडवे जेणेव वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तेसि वासुदेवपामोक्खाण करयल[12]-•परिग्गहिय दसणह सिरसावत्त मत्थए अंजलिं कट्टु जएण विजएण वद्धावेइ°, वद्धावेत्ता कण्हस्स वासुदेवस्स सेयवरचामर गहाय उववीयमाणे चिट्ठइ ॥

१५८ तए ण सा दोवई रायवरकण्णा कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए[13] उट्ठियम्मि सूरे

---

१. सुगव-वरगंधिय पचवण्ण (क ख, ग, घ)।
२. स० पा०—तुरुक्क जाव गधवट्टिभूय।
३ नामकाइ (क, ख, ग, घ)।
४ पू०—ना० १।१।२४।
५ ना० १।१।१४७।
६ स० पा०—हयगय जाव परिवुडा।
७. ना० १।१।३३।
८. नामकेसु (ख, घ)।
९. पू०—ना० १।१।२४।
१० ना० १।१।४७।
११ स० पा०—सकोरेंट हयगय।
१२. स० पा०—करयल वद्धावेत्ता।
१३. पू०—ना० १।१।२४।

सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते जेणेव मज्जणघरे तेणेव उव छइ, उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता ण्हाया कयबलिकम्मा कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइ मगल्लाइ वत्थाइ पवर परिहिया मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव जिणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जिणघर अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जिणपडिमाणं अच्चण करेइ, करेत्ता[1] जिणघराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव अतेउरे तेणेव उवागच्छइ ॥

१५९ तए ण त दोवइ रायवरकण्ण अंतेउरियाओ सव्वालकारविभूसिय करेति। 'किं ते'[2] ? वरपायपत्तनेउरा जाव[3] चेडिया-चक्कवाल-'महयरग-विंद'[4]-परिक्खित्ता अंतेउराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव वाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव चाउग्घटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किड्डावियाए लेहियाए सद्धि चाउग्घट आसरह दुरूहइ ॥

१६० तए णं से धट्ठज्जुणे कुमारे दोवईए रायवरकण्णाए सारत्थ करेइ ॥

१६१ तए ण सा दोवई रायवरकण्णा कपिल्लपुर नयर मज्झमज्झेण जेणेव सयवरामडवे[5] तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रह ठवेइ, रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता किड्डावियाए लेहियाए सद्धि सयवरामडव अणुपविसइ, अणुपविसित्ता करयल[6]°परिग्गहिय दसणह सिरसावत्त मत्थए अजलिं कट्टु° तेसिं वासुदेव-पामोक्खाण वहूण रायवरसहस्साण पणाम करेइ ॥

१६२ तए ण सा दोवई रायवरकण्णा एग मह सिरिदामगड—किं ते ? पाडल-

---

१ जिणपडिमाण अच्चण करेइ त्ति एकस्या वाचनायामेतावदेव दृश्यते (वृ)। वाचनान्तरे तु—ण्हाया जाव सव्वालकारविभूसिया मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ जेणामेव जिणघरे तेणामेव उवागच्छति जिणघर अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जिणपडिमाण आलोए पणाम करेइ, करेत्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता एव जहा सूरियाभे जिणपडिमाओ अच्चेति तहेव भाणियव्व जाव धूव डहइ २ वामं जाणु अचेइ, दाहिण जाणु धरणितलसि निहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाण धरणितलसि निवेसइ [निमेइ (क, ग), निसीयइ (घ); निवाडेइ (राय० सू० २९२)] ईसिं पच्चुण्णमइ पच्चुण्णमित्ता करयलपरिग्गहिय अजलिं मत्थए कट्टु एव वयासी—नमोत्थु ण अरहताण जाव सपत्ताण वदइ नमसइ नमसित्ता जिणघराओ पडिनिक्खमइ (वृपा, क, ख, ग, घ)।

२ किं तत 'यत् करोति' इति शेष ।

३. ना० १।१।३३ ।

४. मयहरिग° (क), मयहरग° (ख, घ); मयहरयद (ग), यद्यपि पाठसशोधन-प्रयुक्तेषु आदर्शेषु 'मयहरग'° इतिपाठो लभ्यते किन्तु 'ओवाइय' ७० सूत्रे 'महत्तरवद' इति पाठोस्ति, तदनुसारेण 'महयरगवद' इति पाठोऽस्माभि स्वीकृत । लिपिदोषेण यकार-हकारयोर्विपर्यय सजातः इति सभाव्यते ।

५. सयवरमडवे (क, ख, ग, घ) ।

६. स० पा०—करयल° ।

मल्लिय-चंपय जाव[1] सत्तच्छयाईहिं[2] गंधद्धणि मुयंतं परमसुहफास दरिसणिज्जं—गेण्हइ ॥

१६३. तए ण सा किड्डाविया सुरूवा[3] •साभावियघंस वोद्दहजणस्स उस्सुयकर विचित्त-मणि-रयण-वद्धच्छरुहं° वामहत्थेण चिल्लगं दप्पणं गहेऊण सललिय दप्पण-संकतविंब[4]-सदंसिए[5] य से दाहिणेणं हत्थेण दरिसए[6] पवररायसीहे। फुडविसय-विसुद्ध-रिभिय-गभीर-महुरभणिया सा तेसिं सव्वेसिं[7] पत्थिवाणं अम्मापिउ-वस-सत्त-सामत्थ-गोत्त-विक्कति-कति[8]-वहुविहआगम-माहप्प-रूव - कुलसीलजा-णिया कित्तण करेइ। पढमं ताव वण्हिपुगवाण दसारवर[9]-वीरपुरिस-तेलोक्क-वलवगाण[10], सत्तु[11]-सयसहस्स-माणावमद्दगाणं[12] 'भवसिद्धिय-वरपुडरीयाणं'[13] चिल्लगाणं वल-वीरिय-रूव-जोवण्ण-गुण-लावण्णकित्तिया कित्तण करेइ।

तओ पुणो उग्गसेणमाईण[14] जायवाण भणइ—सोहग्गरूवकलिए वरेहि वरपुरिसगधहत्थीण जो हु ते होइ हियय-दइओ ॥

दोवईए पडव-वरण-पदं

१६४ तए ण सा दोवई रायावरकण्णगा वहूणं रायवरसहस्साणं मज्झंमज्झेणं समइच्छमाणी-समइच्छमाणी[15] पुव्वकयनियाणेण चोइज्जमाणी-चोइज्जमाणी जेणेव पच पडवा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ते पंच पडवे तेणं दसद्ध-वण्णेण कुसुमदामेण आवेढियपरिवेढिए करेइ, करेत्ता एव वयासी—एए ण मए पच पडवा वरिया॥

१६५. तए ण ताइ वासुदेवपामोक्खाइं वहूणि रायसहस्साणि महया-महया सद्देण उग्घोसेमाणाइ-उग्घोसेमाणाइ एवं वयति—सुवरिय खलु भो! दोवईए रायवरकण्णाए त्ति कट्टु सयंवरमडवाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सया-सया आवासा तेणेव उवागच्छति ॥

१६६. तए ण धट्ठज्जुणे कुमारे पच पंडवे दोवइं च[16] रायवरकण्णं चाउग्घंटं आसरहं

---

१ ना० १।८।३०।

२ १।८।३० सूत्रे 'सत्तच्छयाईहिं' इति पाठो नोपलभ्यते तथा येषा पदानामपि क्रमभेदो वर्तते।

३ सं० पा०—सुरूवा जाव वामहत्थेण।

४. °विंव (ख, ग)।

५. दसिए (घ)।

६. दरिसीएइ (ख), दरसिए (घ)।

७. सव्व (क, ख, ग)।

८ कित्ति (वृपा)।

९. दसदसार (ग)। पूर्णपाठ अस्याध्ययनस्य १३२ सूत्रे द्रष्टव्य।

१०. तिल्लोक° (क)।

११ सक्क (घ)।

१२ माणोवमद्दगाणं (ख, घ)।

१३. भवसिद्धिपवर° (क्व)।

१४. °माइयाणं (क)।

१५. समतिच्छमाणी (ख, ग, घ)।

१६. × (ग)।

'दुरुहावेइ, दुरुहावेत्ता'[1] कंपिल्लपुरं नयरं मज्झंमज्झेणं[2] •उवागच्छइ, उवागच्छित्ता° सयं भवणं अणुपविसइ ।।

पाणिग्गहण-पदं

१६७. तए णं से दुवए राया पंच पंडवे दोवइं च[3] रायवरकण्णं पट्टयं 'दुरुहावेइ, दुरुहावेत्ता'[4] सेयापीयएहिं कलसेहिं मज्जावेइ, मज्जावेत्ता अग्गिहोमं करावेइ[5], पंचण्हं पंडवाणं दोवईए य पाणिग्गहणं करावेइ[6] ।।

१६८. तए णं से दुवए राया दोवईए रायवरकण्णाए इमं एयारूवं पीइदाणं दलयइ, तं जहा—अट्ठ हिरण्णकोडीओ जाव[7] पेसणकारीओ दासचेडीओ, अण्णं च विपुलं धण-कणग[8]-•रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संत-सार-सावएज्जं अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं पकामं भोत्तुं पकामं परिभाएउं° दलयइ ।।

१६९. तए णं से दुवए राया ताइं वासुदेवपामोक्खाइं बहूइं रायसहस्साइं विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पुप्फ-वत्थ-गंध[9]-•मल्लालंकारेणं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता° पडिविसज्जेइ ।।

पंडुरायस्स निमंतण-पदं

१७०. तए णं से पंडू राया तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं करयल[10]-•परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! हत्थिणाउरे नयरे पंचण्हं पंडवाणं दोवईए य देवीए कल्लाणकारे[11] भविस्सइ। तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया! ममं अणुगिण्हमाणा अकालपरिहीणं चेव समोसरह ।।

१७१. तए णं ते वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा पत्तेयं-पत्तेयं[12] •ण्हाया सण्णद्ध-बद्ध-वम्मिय-कवया[13] हत्थिखंधवरगया जाव[14] जेणेव हत्थिणाउरे नयरे तेणेव° पहारेत्थ गमणाए ।।

---

१. दुरुहेइ २ (क, ख, ग, घ)। अस्मिन्नर्थप्रसंगे प्रेरणार्थकं क्रियापदं युज्यते। आदर्शेषु तथा नोपलभ्यते। १।१६।५१ सूत्रस्य संदर्भेण एतत् क्रियापदं मूलपाठे स्वीकृतम्।

२. स० पा०—मज्झंमज्झेणं जाव सयं।

३. × (ख, ग)।

४. दुरुहेइ २ (क, ख, ग, घ)। द्रष्टव्यम्—१६६ सूत्रस्य पादटिप्पणम्।

५. करेइ (ख, घ), कारवेइ (ग)।

६. कारेइ (क, घ); करेइ (ग)।

७. ना० १।१।९१ टिप्पणगाथा।

८. स० पा०—कणग जाव दलयइ।

९. स० पा०—गंध जाव पडिविसज्जेइ।

१०. सं० पा०—करयल जाव एवं।

११. कल्लाणकारी (क), कल्लाणकरे (घ)।

१२. स० पा०—पत्तेयं जाव पहारेत्थ।

१३. पू०—ना० १।१६।१३४।

१४. ना० १।१६।१४६।

पंडुरायस्स आतित्थ-पदं

१७२ तए ण से पडू राया कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया। हत्थिणाउरे नयरे पचण्ह पडवाण पंच पासायवडिसए कारेह—अब्भुग्गयमूसिय जाव[1] पडिरूवे ।।

१७३ तए णं ते कोडुवियपुरिसा पडिसुणेति जाव कारवेति ।।

१७४. तए ण से पडू राया पचहिं पडवेहिं दोवईए देवीए सद्धि हय-गय[2]-•रह-पवर-जोहकलियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धि सपरिवुडे महयाभडचडगर-रह-पहकर-विदपरिक्खित्ते° कपिल्लपुराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागए ।।

१७५ तए ण से पडू राया तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं आगमण जाणित्ता कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! हत्थिणाउरस्स नयरस्स वहिया वासुदेवपामोक्खाण वहूण रायसहस्साण आवासे—अणेगखभ-सयसण्णिविट्ठे[3] कारेह, कारेत्ता एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह। तेवि तहेव पच्चप्पिणंति ।।

१७६. तए ण ते वासुदेवपामोक्खा वहवे रायसहस्सा जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागए ।।

१७७ तए ण से पडू राया ते वासुदेवपामोक्खे[4] •वहवे रायसहस्से° उवागए[5] जाणित्ता हट्ठतुट्ठे ण्हाए कयवलिकम्मे जहा दुवए जाव[6] जहारिहं आवासे दलयइ ।।

१७८ तए ण ते वासुदेवपामोक्खा वहवे रायसहस्सा जेणेव सया-सया आवासा तेणेव उवागच्छति तहेव जाव[7] विहरति ।।

१७९ तए ण से पडू राया हत्थिणाउरं नयर अणुपविसइ, अणुपविसित्ता कोडुविय-पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुब्भे ण देवाणुप्पिया! विपुलं असण-पाण-खाइम-साइम[8] आवासेसु उवणेह। तेवि तहेव उवणेंति ।।

१८०. तए ण ते वासुदेवपामोक्खा वहवे रायसहस्सा ण्हाया कयवलिकम्मा कय-कोउय-मगल-पायच्छित्ता तं विपुल असण-पाण-खाइम-साइम आसाएमाणा तहेव जाव[9] विहरति ।।

कल्लाणकार-पद

१८१. तए ण से पडू राया ते पच पडवे दोवइं च देविं पट्टय 'दुरुहावेइ, दुरुहावेत्ता'[10] सेया-

---

१ वण्णओ जाव(क, ख, ग, घ),ना० १।१।८६।

२. सं० पा०—हयगय संपरिवुडे।

३. पू०—ना० १।१।८६।

४. स० पा०—वासुदेवपामोक्खे जाव उवागए।

५. आगए (ग)।

६. ना० १।१६।१४६।

७. ना० १।१६।१५०।

८. पू०—ना० १।१६।१५१।

९ ना० १।१६।१५२।

१० दुरुहेइ २(क, ख, ग, घ)। द्रष्टव्यम्—१६६ सूत्रस्य पादटिप्पणम्।

पीएहिं[1] कलसेहिं ण्हावेइ,ण्हावेत्ता कल्लाणकारं[2] करेइ[3],करेत्ता ते वासुदेवपामोक्खे बहवे रायसहस्से विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारेण य सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

१८२. तए णं ताइं वासुदेवपामोक्खाइं बहूइं[4] •रायसहस्साइं पंडूएणं रण्णा विसज्जिया समाणा जेणेव साइं-साइं रज्जाइं जेणेव साइं-साइं नगराइं तेणेव° पडिगयाइं[5] ॥

१८३. तए णं ते पंच पंडवा दोवईए देवीए सद्धिं कल्लाकल्लिं वारवारेणं उरालाइं भोगभोगाइं[6] •भुंजमाणा° विहरंति ॥

नारदस्स आगमण-पदं

१८४. तए णं से पंडू राया अण्णया कयाइ पंचहिं पंडवेहिं कोंतीए[7] देवीए दोवईए य सद्धिं अंतोअंतेउरपरियालसद्धिं संपरिवुडे सीहासणवरगए यावि विहरइ ॥

१८५. इमं च णं 'कच्छुल्लनारए—दंसणेणं अइभद्दए विणीए अंतो-अंतो य कलुसहियए 'मज्झत्थ-उवत्थिए'[8] य अल्लीण-सोमपियदंसणे सुरूवे अमइल-सगल-परिहिए कालमियचम्म-उत्तरासंग-रइयवच्छे दंड-कमंडलु-हत्थे जडामउड-दित्तसिरए जन्नोवइय-गणेत्तिय-मुंजमेहला-वागलधरे हत्थकय-कच्छभीए[9] पियगंधव्वे धरणिगोयरप्पहाणे संवरणावरणि-ओवयणुप्पयणि-लेसणीसु य संकामणि-आभिओगि[10]-पण्णत्ति-गमणि[11]-थंभिणीसु य बहूसु विज्जाहरीसु[12] विज्जासु विस्सुयजसे इट्ठे रामस्स य केसवस्स य पज्जुन्न-पईव-संब-अनिरुद्ध-निसढ-उम्मुय-सारण-गय-सुमुह-दुम्मुहाईण[13] जायवाणं अद्धुट्ठाण य कुमारकोडीणं हियय-दइए संथवए कलह-जुद्ध-कोलाहलप्पिए[14] भंडणाभिलासी बहूसु य समर-सयसंपराएसु दंसणरए समंतओ कलहं सदक्खिणं अणुगवेसमाणे असमाहिकरे दसारवर[15]-वीरपुरिस-तेलोक्कबलवगाणं आमंतेऊण तं भगवइं पक्कमणिं गगण-गमणदच्छं उप्पइओ गगणमभिलंघयंतो गामागर-नगर-खेड-कब्बड-मडंब-दोणमुह-पट्टण-संवाह-सहस्समंडियं थिमियमेइणीयं[16] निब्भर[17]-जणपदं वसुहं

---

१ सीया° (क, ख, ग)।

२ कल्लाणालंकारं (क) कल्लाणलंकारं (ख), कल्लाणकरं (घ)।

३ कारेइ (ख)।

४ सं० पा०—बहूइं जाव पडिगयाइं।

५ परिगयाइं (क)।

६ सं० पा०—भोगभोगाइं जाव विहरंति।

७ कुंतीए (ख)।

८ मज्झत्थोवत्थिए (ग)।

९. एकस्यां हस्तलिखितवृत्तौ 'कच्छवीए' इति पाठोऽपि लभ्यते।

१० अभिओग (क, ख, ग, घ)।

११. गमण (ख), गमणी (घ)।

१२ × (ख)।

१३ दुमुहा° (घ)।

१४ कोउहल° (ख)।

१५ पूर्णपाठः अस्याध्ययनस्य १३२ सूत्रे द्रष्टव्यः।

१६. थिमियमेयणीतल (ग)।

१७. निभय (ख)।

ओलोइते रम्म हत्थिणाउर उवागए पडुरायभवणंसि'[1] 'झत्ति-वेगेण'[2] समोवइए ॥

१८६ तए ण से पडू राया कच्छुल्लनारय एज्जमाण पासइ, पासित्ता पचहि पडवेहि कुतीए य देवीए सद्धि आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता कच्छुल्लनारय सत्तट्ठपयाइ पच्चुग्गच्छइ, पच्चुग्गच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता महरिहेण 'अग्घेण पज्जेण'[3] आसणेण य उवनिमतेइ ॥

१८७ तए ण से कच्छुल्लनारए उदगपरिफोसियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए निसीयइ, निसीइत्ता पडुरायं रज्जे य[4] •रट्ठे य कोसे य कोट्ठागारे य बले य वाहणे य पुरे य° अतेउरे य कुसलोदत पुच्छइ ॥

१८८ तए ण से पडू राया कोती देवी पच य पडवा कच्छुल्लनारय आढति[5] •परियाणति अब्भुट्ठेति° पज्जुवासति ।

१८९ तए ण सा दोवई देवी कच्छुल्लनारय 'अस्संजयं अविरय अप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मति'[6] कट्टु नो आढाइ नो परियाणइ नो अब्भुट्ठेइ नो पज्जुवासइ ॥

१९० तए ण तस्स कच्छुल्लनारयस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था— अहो ण दोवई देवी रूवेण य[7] •जोव्वणेण य° लावण्णेण य पचहि पडवेहि अवत्थद्धा[8] समाणी ममं नो आढाइ[9] •नो परियाणइ नो अब्भुट्ठेइ° नो पज्जुवासइ। तं सेय खलु मम दोवईए देवीए विप्पिय करेत्तए त्ति कट्टु एव सपेहेइ, सपेहेत्ता पडुराय आपुच्छइ, आपुच्छित्ता उप्पयणि[10] विज्ज आवाहेइ, आवाहेत्ता ताए उक्किट्ठाए[11] •तुरियाए चवलाए चडाए सिग्घाए उद्धुयाए जइणाए छेयाए° विज्जाहरगईए लवणसमुद्द मज्झमज्झेण पुरत्थाभिमुहे वीईवइउ पयत्ते यावि होत्था ।

नारदस्स अवरकंका-गमण-पदं

१९१. तेण कालेण तेण समएण धायइसडे दीवे पुरत्थिमद्ध-दाहिणड्ढ-भरहवासे अवरकका नाम रायहाणी होत्था ॥

---

१. कच्छुल्लनारए जाव पडुस्स रण्णो भवणसि (क) अस्य सक्षिप्तपाठस्य परम्पराया उल्लेखो वृत्तावपि लभ्यते, यथा—इह क्वचिद् यावत् करणादिद दृश्यम् (वृ) ।

२. झइवेगेण (ख, ग, घ) ।

३ × (ग, घ) ।

४. स० पा०—रज्जे य जाव अतेउरे ।

५. सं० पा०—आढति जाव पज्जुवासति ।

६. अस्सजय-अविरय-अप्पडिहयअपचक्खायपावकम्मति (क, ग) ।

७ स० पा०—रूवेण य जाव लावण्णेण ।

८. अठुद्धा (ख) ।

९ स० पा०—आढाइ जाव नो पज्जुवासइ ।

१०. उप्पणि (ख, ग) ।

११. स० पा०– उक्किट्ठाए जाव विज्जाहरगईए ।

१९२ तत्थ ण अवरककाए रायहाणीए पउमनाभे नामं राया होत्था—महयाहिमवत-महत-मलय-मदर-महिदसारे वण्णओ[1] ॥

१९३ तस्स ण पउमनाभस्स रण्णो सत्त देवीसयाइ ओरोहे होत्था ॥

१९४ तस्स णं पउमनाभस्स रण्णो सुनाभे नाम पुत्ते जुवरायावि होत्था ॥

१९५ तए ण से पउमनाभे राया अतोअतेउरसि ओरोह-सपरिवुडे सीहासणवरगए विहरइ ॥

१९६ तए ण से कच्छुल्लनारए जेणेव अवरकका रायहाणी जेणेव पउमनाभस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पउमनाभस्स रण्णो भवणसि झत्ति-वेगेण समोवइए ॥

१९७ तए ण से पउमनाभे राया कच्छुल्लनारय एज्जमाण पासइ, पासित्ता आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता अग्घेण[2] •पज्जेण° आसणेण उवनिमतेइ ॥

१९८ तए ण से कच्छुल्लनारए उदगपरिफोसियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए निसीयइ[3], •निसीइत्ता पउमनाभ राय रज्जे य रट्ठे य कोसे य कोट्ठागारे य बले य वाहणे य पुरे य अतेउरे य° कुसलोदत आपुच्छइ ।

१९९ तए ण से पउमनाभे राया नियगओरोहे जायविम्हए कच्छुल्लनारय एव वयासी—तुम देवाणुप्पिया ! बहूणि[4] •गामागर-नगर-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडब-पट्टण-आसम-निगम-सवाह-सण्णिवेसाइ आहिंडसि, बहूण य राईसर-तलवर-माडबिय-कोडुबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहपभिईण° गिहाइ अणुपविससि, त अत्थियाइ ते कहिचि देवाणुप्पिया ! एरिसए ओरोहे दिट्ठपुव्वे, जारिसए ण मम ओरोहे ?

२००. तए ण से कच्छुल्लनारए पउमनाभेण एव वुत्ते समाणे ईसि विहसिय करेइ, करेत्ता एव वयासी—सरिसे ण तुम पउमनाभा ! तस्स अगडदद्दुरस्स ।
के ण देवाणुप्पिया ! से अगडदद्दुरे ?
[5]•पउमनाभा ! से जहानामए अगडदद्दुरे सिया । सेण तत्थ जाए तत्थेव वुड्ढे अण्ण अगड वा तलाग वा दह वा सर वा सागर वा अपासमाणे मण्णइ— अय चेव अगडे वा तलागे वा दहे वा सरे वा सागरे वा । तए ण त कूव अण्णे सामुद्दए दद्दुरे हव्वमागए । तए ण से कूवदद्दुरे त सामुद्दय दद्दुर एव वयासी—से के तुम देवाणुप्पिया ! कत्तो वा इह हव्वमागए ?
तए ण से सामुद्दए दद्दुरे त कूवदद्दुर एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! अह सामुद्दए दद्दुरे ।

---

१ ओ० सू० १४ ।

२. स० पा०—अग्घेण जाव आसणेण ।

३ स० पा०—निसीयइ जाव कुसलोदत ।

४. स० पा०—बहूणि गामाणि जाव गिहाइ ।

५ सं० पा०—एव जहा मल्लिणाए ।

तए णं से कूवदद्दुरे त सामुद्दय दद्दुर एव वयासी—केमहालए ण देवाणुप्पिया! से समुद्दे ?
तए ण से सामुद्दए दद्दुरे त कूवदद्दुर एव वयासी—महालए ण देवाणुप्पिया! समुद्दे ।
तए ण से कूवदद्दुरे पाएण लीह कड्ढेइ, कड्ढेत्ता एव वयासी—एमहालए ण देवाणुप्पिया! से समुद्दे ?
नो इणट्ठे समट्ठे । महालए ण से समुद्दे ।
तए ण से कूवदद्दुरे पुरत्थिमिल्लाओ तीराओ उप्फिडित्ता ण पच्चत्थिमिल्ल तीर गच्छइ, गच्छित्ता एव वयासी—एमहालए ण देवाणुप्पिया! से समुद्दे ?
नो इणट्ठे समट्ठे । एवामेव तुम पि पउमनाभा! अण्णेसिं वहूणं राईसर जाव[1] सत्थवाहप्पभिईण भज्ज वा भगिणिं वा धूय वा सुण्ह वा अपासमाणे जाणसि जारिसए मम चेव णं ओरोहे, तारिसए णो अण्णेसिं° ।
एव खलु देवाणुप्पिया! जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे नयरे दुपयस्स रण्णो धूया चुलणीए देवीए अत्तया पंडुस्स सुण्हा पचण्ह पंडवाण भारिया दोवई नाम देवी रूवेण य[2] •जोवण्णेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा° उक्किट्ठ-सरीरा । दोवईए ण देवीए छिन्नस्सवि पायगुट्ठस्स अय तव ओरोहे सयपि कल न अग्घइ त्ति कट्टु पउमनाभ आपुच्छइ[3], •आपुच्छित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं° पडिगए ॥

दोवईए साहरण-पदं

२०१. तए ण से पउमनाभे राया कच्छुल्लनारयस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म दोवईए देवीए रूवे य जोवण्णे य लावण्णे य मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववण्णे जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं[4] •अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता पुव्वसगइय देव मणसीकरेमाणे-मणसीकरेमाणे चिट्ठइ ॥

२०२ तए ण पउमनाभस्स रण्णो अट्ठमभत्तसि परिणममाणसि पुव्वसगइओ देवो जाव[5] आगओ ।
भणतु ण देवाणुप्पिया! ज मए कायव्वं ॥

२०३. तए ण से पउमनाभे° पुव्वसगइय देवं एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया! जवुद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे[6] •नयरे दुपयस्स रण्णो धूया चुलणीए देवीए अत्तया पडुस्स सुण्हा पचण्ह पंडवाण भारिया दोवई नाम देवी रूवेण य

१. ना० १।५।६ ।
२. सं० पा०—रूवेण य जाव उक्किट्ठसरीरा ।
३. स० पा०—आपुच्छइ जाव पडिगए ।
४. स० पा०—पोसहसाल जाव पुव्वसगइय ।
५ ना० १।१।५४-५७ ।
६. सं० पा०—हत्थिणाउरे जाव सरीरा ।

जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठ°सरीरा। तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया! दोवइं देविं 'इहं हव्वमाणीयं'[1]॥

२०४. तए णं से पुव्वसंगइए देवे पउमनाभं एवं वयासी—नो खलु देवाणुप्पिया! एवं भूयं वा भव्वं वा भविस्सं वा जण्णं दोवई देवी पंच पंडवे मोत्तूण अण्णेणं पुरिसेणं सद्धिं उरालाइं[2] °माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी° विहरिस्सइ। तहावि य णं अहं तव पियट्ठयाए दोवइं देविं इहं हव्वमाणेमि त्ति कट्टु पउमनाभं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता ताए उक्किट्ठाए[3] °तुरियाए चवलाए चंडाए जवणाए सिग्घाए उद्धूयाए दिव्वाए° देवगईए लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं जेणेव हत्थिणाउरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए॥

२०५. तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिणाउरे नयरे जुहिट्ठिल्ले राया दोवईए देवीए सद्धिं उप्पिं आगासतलगंसि सुहप्पसुत्ते यावि होत्था॥

२०६ तए णं से पुव्वसंगइए देवे जेणेव जुहिट्ठिल्ले राया जेणेव दोवई देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दोवईए देवीए ओसोवणिं[4] दलयइ, दलइत्ता दोवइं देविं गिण्हइ, गिण्हित्ता ताए उक्किट्ठाए °तुरियाए चवलाए चंडाए जवणाए सिग्घाए उद्धूयाए दिव्वाए° देवगईए जेणेव अवरकंका[6] जेणेव पउमनाभस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पउमनाभस्स भवणंसि असोगवणियाए दोवइं देविं ठावेइ, ठावेत्ता ओसोवणिं अवहरइ, अवहरित्ता जेणेव पउमनाभे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया! मए हत्थिणाउराओ दोवई देवी इहं हव्वमाणीया तव असोगवणियाए चिट्ठइ। अओ परं तुमं जाणसि त्ति कट्टु जामेव दिसिं[7] पाउब्भूए तामेव दिसिं[8] पडिगए॥

दोवईए चिंता-पदं

२०७ तए णं सा दोवई देवी तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा समाणी तं भवणं असोगवणियं च अपच्चभिजाणमाणी एवं वयासी—नो खलु अम्हं 'एसे सए भवणे'[9] नो खलु एसा अम्हं सगा असोगवणिया। तं न नज्जइ णं अहं केणइ देवेण वा दाणवेण वा किण्णरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा अण्णस्स रण्णो असोगवणियं साहरिय त्ति कट्टु ओहयमणसंकप्पा[10] °करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया° झियायइ॥

---

१. माणीयं (क, ख, ग)।
२ स० पा०—उरालाइं जाव विहरिस्सइ।
३ स० पा०—उक्किट्ठाए जाव देवगईए।
४ ओसोवणियं (ख)।
५ स० पा०—उक्किट्ठाए जाव देवगईए।
६ अमरकंका (ख, ग, घ)।
७,८ दिसं (क)।
९. इमे सए पासाए (घ)।
१० स० पा०—ओहयमणसंकप्पा जाव झियायइ।

पउमनाभस्स आसासण-पदं

२०८. तए ण से पउमनाभे राया ण्हाए जाव[1] सव्वालकारविभूसिए अतेउर-परियाल-सपरिवुडे जेणेव असोगवणिया जेणेव दोवई देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दोवइ देवि ओहयमणसकप्प[2] •करतलपल्हत्थमुहिं अट्टज्झाणोवगयं° झियायमाणि पासइ, पासित्ता एव वयासी—किन्न तुम देवाणुप्पिए! ओहयमणसकप्पा[3] •करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया° झियाहि[4]? एव खलु तुमं देवाणुप्पिए! मम पुव्वसगइएण देवेण जबुद्दीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ हत्थिणाउराओ नयराओ जुहिट्ठिलस्स रण्णो भवणाओ साहरिया। त मा ण तुम देवाणुप्पिया! ओहयमणसकप्पा[5] •करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया° झियाहि। तुम ण मए सद्धि विपुलाइ भोगभोगाइ[6] •भुजमाणी° विहराहि॥

२०९ तए ण सा दोवई देवी पउमनाभ एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया! जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे बारवईए नयरीए कण्हे नाम वासुदेवे मम पियभाउए परिवसइ। त जइ ण से छण्ह मासाण मम कूव नो हव्वमागच्छइ, तए ण अह[7] देवाणुप्पिया! ज तुम वदसि, तस्स आणा-ओवाय-वयणनिद्देसे चिट्ठिस्सामि॥

२१० तए ण से पउमनाभे दोवईए देवीए एयमट्ठ पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता दोवइ देवि कण्णतेउरे[8] ठवेइ[9]॥

२११ तए ण सा दोवई देवी छट्ठछट्ठेण अणिक्खित्तेण आयविल-परिग्गहिएण[10] तवोकम्मेण अप्पाण भावेमाणी विहरइ॥

दोवईए गवेसणा-पदं

२१२ तए ण से जुहिट्ठिल्ले राया तओ मुहुत्ततरस्स पडिबुद्धे समाणे दोवइ देविं पासे अपासमाणे सयणिज्जाओ उट्ठेइ, उट्ठेत्ता दोवईए देवीए सव्वओ समता मग्गण-गवेसण करेइ, करेत्ता दोवईए देवीए कत्थइ सुइ वा खुइ वा पवत्ति वा अलभमाणे जेणेव पडू राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पडु राय एव वयासी—एव खलु ताओ! मम आगासतलगसि सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी न नज्जइ केणइ देवेण वा दाणवेण वा 'किण्णरेण वा किंपुरिसेण'[11] वा महोरगेण

---

१. ना० १।१।४७।
२. स० पा०—ओहयमणसंकप्प जाव झियायमाणि।
३ स० पा०—ओहयमणसकप्पा जाव झियाहि।
४. झियासि (क)।
५. स० पा०—ओहयमणसकप्पा जाव झियाहि।
६. स० पा०—भोगभोगाइ जाव विहराहि।
७. ह (क, ख)।
८. कण्णतेउरसि (क)।
९. ठावेइ (ग)।
१०. पग्गहिएण (ग)।
११. किंपुरिसेण वा किन्नरेण (ख, ग, घ)।

वा गधव्वेण वा हिया वा निया वा अवक्खित्ता वा। त इच्छामि ण ताओ ! दोवईए देवीए सव्वओ समता मग्गण-गवेसण करित्तए[1] ॥

२१३ तए ण से पडू राया कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरे नयरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु महया-महया सद्देण उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एव वयह—एव खलु देवाणुप्पिया ! जुहिट्ठिलस्स[2] रण्णो आगासतलगसि सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी न नज्जइ केणइ देवेण वा दाणवेण वा किण्णरेण[3] वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गधव्वेण वा हिया वा निया वा अवक्खित्ता[4] वा। त जो ण देवाणुप्पिया ! दोवईए देवीए सुइ वा खुइ वा पवत्ति वा परिकहेइ, तस्स ण पडू राया विउल अत्थसपयाण दलयइ त्ति कट्टु घोसण घोसावेह, घोसावेत्ता एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह ॥

२१४ तए ण ते कोडुवियपुरिसा जाव[5] पच्चप्पिणति ॥

२१५ तए ण से पडू राया दोवईए देवीए कत्थइ सुइ वा[6] •खुइ वा पवत्ति वा° अलभमाणे कोति देविं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—गच्छह ण तुम देवाणुप्पिए ! वारवइ नयरिं कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठ निवेदेहि—कण्हे ण[7] वासुदेवे दोवईए मग्गण-गवेसण करेज्जा, अण्णहा न नज्जइ दोवईए देवीए 'सुई वा खुई वा पवत्ती वा'[8] ॥

२१६ तए ण सा कोती देवी पंडुणा एव वुत्ता समाणी जाव[9] पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता ण्हाया कयवलिकम्मा हत्थिखधवरगया हत्थिणाउर[10] नयर मज्झमज्झेण निगच्छइ, निगच्छित्ता कुरुजणवयस्स[11] मज्झमज्झेण जेणेव सुरट्ठाजणवए जेणेव वारवई नयरी जेणेव अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिखधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! वारवइ नयरिं[12], •जेणेव कण्हस्स वासुदेवस्स गिहे तेणेव° अणुपविसह, अणुपविसित्ता कण्ह वासुदेव करयल[13]•परिग्गहिय दसणह सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु° एव वयह—एव खलु सामी ! तुब्भ

---

१. कय (ख, ग)।
२. जुहिट्ठिल्लस्स (घ)।
३ किनरेण (ग, घ)।
४. अक्खित्ता (क, ख, ग, घ)। २२० सूत्रानुसारी पाठ स्वीकृत।
५ ना० १।१६।२१३।
६. स० पा०—सुइ वा जाव अलभमाणे।
७. ण परं (क, ग, घ)।
८ सुइ वा खुइ वा पवत्ति वा उवलभेज्जा (क, ख, घ)।
९. ना० १।५।१३।
१०. हत्थिणउरं (घ)।
११ कुरुजणवय (ग, घ)।
१२. स० पा०—नयरिं अणुपविसह।
१३ स० पा०—करयल०।

पिउच्छा कोती देवी हत्थिणाउराओ नयराओ इह हव्वमागया तुब्भं दसणं कखइ ॥

२१७ तए ण ते कोडुवियपुरिसा जाव[1] कहेति ॥

२१८ तए ण कण्हे वासुदेवे कोडुवियपुरिसाण अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे हत्थिखधवरगए[2] वारवईए नयरीए मज्झमज्झेण जेणेव कोती देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिखधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता कोतीए देवीए पायग्गहण करेइ, करेत्ता कोतीए देवीए सद्धि हत्थिखध दुरुहइ, दुरुहित्ता वारवईए नयरीए मज्झमज्झेण जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सय गिह अणुप्पविसइ ॥

२१९ तए ण से कण्हे वासुदेवे कोतिं देवि ण्हाय कयवलिकम्म जिमियभुत्तुत्तरागय[3] •वि य ण समाणि आयत चोक्ख परमसुइभूय° सुहासणवरगय एव वयासी—सदिसउ ण पिउच्छा ! किमागमणपओयण ?

२२०. तए ण सा कोती देवी कण्ह वासुदेव एव वयासी—एव खलु पुत्ता ! हत्थिणाउरे नयरे जुहिट्ठिलस्स रण्णो आगासतलए सुहप्पसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी न नज्जइ केणइ अवहिया[4] •निया° अवक्खित्ता वा । त इच्छामि ण पुत्ता ! दोवईए देवीए सव्वओ समता मग्गण-गवेसण कय ॥

२२१ तए ण से कण्हे वासुदेवे कोतिं पिउच्छ एव वयासी—ज नवर—पिउच्छा ! दोवईए देवीए कत्थइ सुइ वा[5] •खुइ वा पवत्ति वा° लभामि, तो ण अह पायालाओ वा भवणाओ वा अद्धभरहाओ वा समतओ दोवइ देवि साहत्थि उवणेमि त्ति कट्टु कोतिं पिउच्छ सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

२२२. तए णं सा कोती देवी कण्हेण वासुदेवेण पडिविसज्जिया समाणी जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ॥

२२३ तए ण से कण्हे वासुदेवे कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! वारवईए[6] •नयरीए सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु महया-महया सद्देण उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एव वयह—एव खलु देवाणुप्पिया ! जुहिट्ठिलस्स रण्णो आगासतलगसि

---

१. ना० १।१६।२१६ ।

२ °वरगए हयगय (क), °वरगए हयगय जाव (ख, घ)। पूर्णपाठ. अस्याध्ययनस्य १५७ सूत्रे द्रष्टव्य ।

३. स० पा०—जिमियभुत्तुत्तरागयं जाव सुहासण° ।

४. स० पा०—अवहिया वा जाव अवक्खित्ता ।

५. सं० पा०—सुइ वा जाव लभामि ।

६. स० पा०—वारवइ एव जहा पट्ट तहा घोसण घोसावेइ जाव पच्चप्पिणति पंडुस्स जहा ।

सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी न नज्जइ केणइ देवेण वा दाणवेण वा किण्णरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गधव्वेण वा हिया वा निया वा अवक्खित्ता वा। त जो ण देवाणुप्पिया! दोवईए देवीए सुइ वा खुइ वा पवत्ति वा परिकहेइ, तस्स ण कण्हे वासुदेवे विउल अत्थसपयाण दलयइ त्ति कट्टु घोसण घोसावेह, घोसावेत्ता एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह ॥

२२४. तए ण ते कोडुवियपुरिसा जाव[1] पच्चप्पिणति ॥

२२५ तए ण से कण्हे वासुदेवे अण्णया अतोअतेउरगए ओरोह[2]-•सपरिवुडे सीहासण-वरगए° विहरइ ॥

दोवईए उवलद्धि-पदं

२२६ इम च ण कच्छुल्लनारए जाव[3] झत्ति-वेगेण समोवइए[4] ॥

२२७. •तए ण से कण्हे वासुदेवे कच्छुल्लनारय एज्जमाण पासइ, पासित्ता आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता अग्घेण पज्जेण आसणेण उवनिमतेइ ॥

२२८ तए ण कच्छुल्लनारए उदगपरिफोसियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए निसीयइ°, निसीइत्ता कण्ह वासुदेव कुसलोदत पुच्छइ ॥

२२९ तए ण से कण्हे वासुदेवे कच्छुल्लनारय एव वयासी—तुम ण देवाणुप्पिया! वहूणि गामागर[5]-•नगर-खेड-कव्वड-दोणमुह-मडब-पट्टण-आसम-निगम-सवाह-सण्णिवेसाइ आहिंडसि, वहूण य राईसर-तलवर-माडविय-कोडुविय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहपभिईण गिहाइ° अणुपविससि, त अत्थियाइ ते कहिंचि दोवईए देवीए सुई वा[6] •खुई वा पवित्ती वा° उवलद्धा ?

२३०. तए ण से कच्छुल्लनारए कण्ह वासुदेव एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया! अण्णया धायइसडदीवे पुरत्थिमद्ध दाहिणड्ढ-भरहवास अवरकका[7]-रायहाणि गए। तत्थ ण मए पउमनाभस्स रण्णो भवणसि दोवई-देवी-जारिसिया दिट्ठपुव्वा यावि होत्था ॥

२३१ तए ण कण्हे वासुदेवे कच्छुल्लनारय एव वयासी—तुब्भ चेव ण देवाणुप्पिया! एय पुव्वकम्म ॥

२३२. तए ण से कच्छुल्लनारए कण्हेण वासुदेवेण एव वुत्ते समाणे उप्पयणि विज्जं आवाहेइ, आवाहेत्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥

---

१ ना० १।१६।२२३।
२. स० पा०—ओरोह जाव विहरइ।
३. ना० १।१६।१८५।
४ स० पा०—समोवइए जाव निसीइत्ता।
५. स० पा०—गामागर जाव अणुपविससि।
६ स० पा०—सुई वा जाव उवलद्धा।
७. अवरकक (ग)।

सपंडवस्स कण्हस्स पयाण-पदं

२३३ तए णं से कण्हे वासुदेवे दूयं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरं नयरं पंडुस्स रण्णो एयमट्ठं निवेएहि—एवं खलु देवाणुप्पिया ! धायइसंडदीवे पुरत्थिमद्धे दाहिणड्ढ-भरहवासे अवरकंकाए रायहाणीए पउमनाभभवणंसि दोवईए देवीए पउत्ती उवलद्धा, तं गच्छंतु पंच पंडवा चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा पुरत्थिम-वेयालीए ममं पडिवाले-माणा चिट्ठंतु ॥

२३४ तए णं से दूए भणइ जाव[1] पडिवालेमाणा चिट्ठह । तेवि जाव[2] चिट्ठंति ॥

२३५ तए णं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सन्नाहियं भेरिं तालेह । तेवि तालेंति ॥

२३६ तए णं तीए सन्नाहियाए भेरीए सद्दं सोच्चा समुद्दविजयपामोक्खा दस दसारा जाव[3] छप्पन्नं बलवगसाहस्सीओ सण्णद्ध-बद्ध[4]-•वम्मिय-कवया उप्पीलिय-सरासण-पट्टिया पिणद्ध-गेविज्जा आविद्ध-विमल-वरचिंध-पट्टा° गहियाउह-पहरणा अप्पेगइया हयगया अप्पेगइया गयगया जाव[5] पुरिसवग्गुरापरिक्खित्ता जेणेव सभा सुहम्मा जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल[6]•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं° वद्धावेंति ॥

कण्हस्स देवाराधण-पदं

२३७ तए णं से कण्हे वासुदेवे हत्थिखंधवरगए सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्ज-माणेणं सेयवर[7]•चामराहिं वीइज्जमाणे हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे महयाभड-चडगर-रह-पहकर-विंदपरि-क्खित्ते° बारवईए नयरीए मज्झंमज्झेणं निगच्छइ, निगच्छित्ता जेणेव पुरत्थिमवेयाली तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं एगयओ मिलइ, मिलित्ता खंधावारनिवेसं करेइ, करेत्ता पोसहसालं[8] अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता सुट्ठियं देवं मणसीकरेमाणे-मणसीकरेमाणे चिट्ठइ ॥

२३८ तए णं कण्हस्स वासुदेवस्स अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि सुट्ठिओ जाव[9] आगओ । 'भणतु णं'[10] देवाणुप्पिया ! जं मए कायव्वं ॥

१,२. ना० १।१६।२३३ ।
३. ना० १।१६।१३२ ।
४ स० पा०—सण्णद्धबद्ध जाव गहियाउह ।
५. ओ० सू० ५२ ।
६. स० पा०—करयल जाव वद्धावेंति ।
७. स० पा०—सेयवर हयगय महया भडचडगर-पहकरेणं ।
८. पोसहसालं करेइ, करेत्ता पोसहसालं (ग,घ) ।
९ ना० १।१।५४-५७ ।
१०. भण (ख, ग, घ) ।

कण्हस्स मग्गजायणा-पदं

२३६ तए ण से कण्हे वासुदेवे सुट्ठिय देव एवं वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! दोवई देवी[1] •धायईसडदीवे पुरत्थिमद्धे दाहिणड्ढ-भरहवासे अवरककाए रायहाणीए॰ पउमनाभभवणसि[2] साहिया[3] तण्णं तुम देवाणुप्पिया ! मम पंचहि पडवेहि सद्धि अप्पछट्ठस्स छण्ह रहाण लवणसमुद्दे मग्ग वियराहि, जेणाह[4] 'अवरकक रायहाणि'[5] दोवईए कूव गच्छामि ॥

२४० तए ण से सुट्ठिए देवे कण्ह वासुदेव एवं वयासी—किण्ण देवाणुप्पिया ! जहा चेव पउमनाभस्स रण्णो पुव्वसगइएण देवेण दोवई देवी[6] •जबुद्दीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ हत्थिणाउराओ नयराओ जुहिट्ठिलस्स रण्णो भवणाओ॰ साहिया, तहा चेव दोवइ देविं धायईसडाओ दीवाओ भारहाओ[7] •वासाओ अवरकंकाओ रायहाणीओ पउमनाभस्स रण्णो भवणाओ॰ हत्थिणाउर साहरामि ? उदाहु--पउमनाभं राय सपुरबलवाहण लवणसमुद्दे पक्खिवामि ?

२४१ तए णं से कण्हे वासुदेवे सुट्ठिय देव एव वयासी—मा ण तुम देवाणुप्पिया[8] ! •जहा चेव पउमनाभस्स रण्णो पुव्वसगइएण देवेण दोवई देवी जबुद्दीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ हत्थिणाउराओ नयराओ जुहिट्ठिलस्स रण्णो भवणाओ साहिया, तहा चेव दोवइ देविं धायईसडाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ अवरककाओ रायहाणीओ पउमनाभस्स रण्णो भवणाओ हत्थिणाउर॰ साहराहि। तुम ण देवाणुप्पिया ! मम लवणसमुद्दे पंचहि पडवेहि सद्धि अप्पछट्ठस्स छण्ह रहाण मग्ग वियराहि। सयमेव ण अह दोवईए कूव गच्छामि[9] ॥

२४२ तए ण से सुट्ठिए देवे कण्ह वासुदेव एव वयासी—एव होउ। पचहि पडवेहि सद्धि अप्पछट्ठस्स छण्हं रहाण लवणसमुद्दे मग्ग वियरइ ॥

कण्हेण दूयपेसण-पदं

२४३ तए ण से कण्हे वासुदेवे चाउरगिणि सेण पडिविसज्जेइ, पडिविसज्जेत्ता पचहि पडवेहि सद्धि अप्पछट्ठे छहि रहेहि लवणसमुद्द मज्झमज्झेण वीईवयइ, वीईवइत्ता जेणेव अवरकका रायहाणी जेणेव अवरककाए रायहाणीए अग्गुज्जाणे

---

१. स० पा०—देवी जाव पउमनाभ॰ ।
२ नाभस्स भवणसि (ख, ग, घ) ।
३. साहरिया (घ) ।
४ जेण अह(ख) जाण ह (ग), जण्ण अह (घ) ।
५. अवरकक॰ (क),अवरकका रायहाणी (ख) ।
६ स० पा०—देवी जाव साहिया ।
७. स० पा०—भारहाओ जाव हत्थिणाउर ।
८ सं० पा०—देवाणुप्पिया जाव साहराहि ।
९. गच्छिस्सामि (ख) ।

तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रहं ठवेइ, ठवेत्ता दारुयं सारहिं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! अवरकंकं रायहाणिं अणुप्पविसाहि, अणुप्पविसित्ता पउमनाभस्स रण्णो वामेणं पाएणं पायपीढं अक्कमित्ता[1] कुंतग्गेणं लेहं पणामेहि, पणामेत्ता तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे एवं वयाहि—हंभो पउमनाभा ! अपत्थियपत्थिया ! दुरंतपंतलक्खणा ! हीणपुण्णचाउद्दसा ! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिया ! अज्ज न भवसि । किण्णं तुमं न याणसि[2] कण्हस्स वासुदेवस्स भगिणिं दोवइं देविं इहं हव्वमाणेमाणे[3] ? तं 'एवमवि गए'[4] पच्चप्पिणाहि णं तुमं दोवइं देविं कण्हस्स वासुदेवस्स अहव णं जुद्धसज्जे निग्गच्छाहि । एस णं कण्हे वासुदेवे पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे दोवईए देवीए कूवं हव्वमागए ॥

२४४. तए णं से दारुए सारही कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे[5] पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता अवरकंकं रायहाणिं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव पउमनाभे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल[6]•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ,° वद्धावेत्ता एवं वयासी—एस णं सामी ! मम विणयपडिवत्ती, इमा अण्णा मम सामिस्स समुहाणत्ति[7] त्ति कट्टु आसुरुत्ते[8] वामपाएणं पायपीढं अक्कमइ[9], अक्कमित्ता कुंतग्गेणं लेहं पणामेइ, पणामेत्ता[10] •तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे एवं वयासी—हंभो पउमनाभा ! अपत्थियपत्थिया ! दुरंतपंतलक्खणा ! हीणपुण्णचाउद्दसा ! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिया ! अज्ज न भवसि । किण्णं तुमं न याणासि कण्हस्स वासुदेवस्स भगिणिं दोवइं देविं इहं हव्वमाणमाणे ? तं एवमवि गए पच्चप्पिणाहि णं तुमं दोवइं देविं कण्हस्स वासुदेवस्स अहव णं जुद्धसज्जे निग्गच्छाहि । एस णं कण्हे वासुदेवे पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे दोवईए देवीए° कूवं हव्वमागए ॥

पउमनाभेण दूयस्स अवमाण-पदं

२४५. तए णं से पउमनाभे दारुएणं सारहिणा एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे तिवलिं भिउडिं निडाले साहट्टु एवं वयासी—

---

१. अइक्कमित्ता (ख); अवक्कमित्ता (घ) ।
२. याणासि (ख, घ) ।
३. हव्वमाणमाणे (क, ख); हव्वमाणीते (घ) ।
४. द्रष्टव्यम्—६८ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।
५. हट्ठजाव (क) ।
६. स० पा०—करयल जाव वद्धावेत्ता ।
७. स्वमुखाऽऽज्ञप्ति. (वृ) ।
८. आसुरुत्ते ५ (क) ।
९. अवक्कमइ (ख, घ) ।
१०. स० पा०—पणामेत्ता जाव कूवं ।

णप्पिणामि[1] णं अहं देवाणुप्पिया ! कण्हस्स वासुदेवस्स दोवइं। एस णं अहं सयमेव जुज्झसज्जे निग्गच्छामि त्ति कट्टु दारुय सारहि एवं वयासी—केवलं भो ! रायसत्थेसु दूए अवज्झे त्ति कट्टु असक्कारिय असम्माणिय अवदारेणं निच्छुभावेइ ॥

दूयस्स पुणो आगमण-पदं

२४६ तए णं से दारुए सारही पउमनाभेण रण्णा असक्कारिय[2] •असम्माणिय अवदारेणं° निच्छूढे समाणे जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल[3]•परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएण वद्धावेइ, वद्धावेत्ता° कण्हं वासुदेव एवं वयासी—एवं खलु अहं सामी ! तुब्भं वयणेण अवरकक रायहाणिं गए जाव[4] अवदारेण निच्छुभावेइ ॥

पउमनाभस्स पंडवेहिं जुद्ध-पदं

२४७ तए णं से पउमनाभे वलवाउय सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेक्क हत्थिरयण पडिकप्पेह।
तयाणतर च ण छेयायरिय-उवदेस-मइ[5]-•कप्पणा-विकप्पेहिं सुणिउणेहिं उज्जल-णेवत्थि-हत्थ-परिवत्थिय सुसज्ज जाव[6] आभिसेक्क हत्थिरयण पडिकप्पेइ, पडिकप्पेत्ता° उवणेति ॥

२४८. तए ण से पउमनाहे सण्णद्ध[7]-•बद्ध-वम्मिय-कवए उप्पीलिय-सरासण-पट्टिए पिणद्ध-गेविज्जे आविद्ध-विमल-वरचिंध-पट्टे गहियाउह-पहरणे° 'आभिसेक्कं हत्थिरयण'[8], दुरुहइ[9], दुरुहित्ता हय-गय[10]-•रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं सपरिवुडे महयाभड-चडगर-रह-पहकर-विंदपरिक्खित्ते° जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

२४९. तए ण से कण्हे वासुदेवे पउमनाभ राय[11] एज्जमाण पासइ, पासित्ता ते पंच

---

१ अप्पिणामि (ख, ग, घ)।
२ स० पा०—असक्कारिय जाव निच्छूढे।
३ स० पा०—करयल°।
४ ना० १।१६।२४४-२४६।
५ स० पा०—मइविकप्पणाहिं जाव उवणेति। आदर्शेषु 'मइविकप्पणाहिं' इति पाठो लभ्यते। वृत्तौ 'मइविगप्पणाविगप्पेहिं' इति पाठ उल्लिखितोस्ति, किन्तु व्याख्याया 'कल्पना-विकल्पा' इति दृश्यते, तेन कप्पणा-विकप्पेहिं, इति स्वीकृत पाठ समीचीन प्रतिभाति।
६ ओ० सू० ५७।
७. स० पा०—सण्णद्ध°।
८ अभिसेय (क, ख, ग, घ)।
९ द्रुहइ (ग)।
१०. स० पा०—हय गय°।
११. रायाण (ख, ग)।

पडवे एव वयासी—हभो दारगा ! किण्ण तुब्भे पउमनाभेणं सद्धि जुज्झिहिह[1] उदाहु[2] पेच्छिहिह[3] ?

२५० तए ण ते पंच पडवा कण्ह वासुदेव एव वयासी—अम्हे ण सामी ! जुज्झामो, तुब्भे पेच्छह ॥

२५१ तए ण ते पच पडवा सण्णद्ध[4]-•वद्ध-वम्मिय-कवया उप्पीलिय-सरासण-पट्टिया पिणद्ध-गेविज्जा आविद्ध-विमल-वरचिधपट्टा गहियाउह°-पहरणा रहे दुरुहंति, दुरुहित्ता जेणेव पउमनाभे राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता एव वयासी—अम्हे वा पउमनाभे वा राय त्ति कट्टु पउमनाभेण सद्धि सपलग्गा यावि होत्था ॥

पडवाणं पराजय-पदं

२५२ तए णं से पउमनाभे राया ते पच पडवे खिप्पामेव हय-महिय-'पवरवीर-घाइय-विवडियचिंध-धय'[5]-पडागे[6] •किच्छोवगयपाणे° दिसोदिसिं पडिसेहेइ ॥

२५३ तए ण ते पच पडवा पउमनाभेण रण्णा हय-महिय-पवर[7]•वीर-घाइय-विवडिय-चिंध-धय-पडागा किच्छोवगयपाणा दिसोदिसिं-° पडिसेहिया समाणा अत्थामा[8] •अबला अवीरिया अपुरिसक्कारपरक्कमा° अधारणिज्जमित्ति कट्टु जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छति ॥

कण्हेण पराजय-हेउ-कहणपुव्वं जुज्झ पदं

२५४. तए ण से कण्हे वासुदेवे ते पच-पडवे एव वयासी—कहण्ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! पउमनाभेण रण्णा सद्धि सपलग्गा ?

२५५. तए ण ते पच पडवा कण्ह वासुदेव एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणा सण्णद्ध-वद्ध-वम्मिय-कवया[9] रहे दुरुहामो, दुरुहेत्ता जेणेव पउमनाभे तेणेव उवागच्छामो, उवागच्छित्ता एव वयामो—अम्हे वा पउमनाभे वा रायत्ति कट्टु[10] •पउमनाभेण सद्धि सपलग्गा । तए ण

---

१. जुज्झिहह (क, ख), जुज्झिह (ग), जुज्झिहेह (घ) ।

२. उयाहु (ग, घ) ।

३. पेच्छिहह(क),पिच्छिह(ख),पच्छिहिह (घ) ।

४. स० पा०—सण्णद्ध जाव पहरणा ।

५. पवरपवडियवयचिंध (क), पवरविडिय° (ख, ग, घ) । असौ लेखनपद्धतौ पाठसक्षेप कृतोऽस्ति । १।८।१६५ सूत्रे असौ पूर्ण पाठ उपलभ्यते । अत्रासौ तमनुसृत्य पूर्णता नीत वृत्तिकारेण अष्टमाध्ययने पूर्णः पाठो व्याख्यातः। अत्र च आदर्शेषु यथा पाठसक्षेपो लब्धस्तथैव व्याख्यात. ।

६ स० पा०—पडागे जाव दिसोदिसिं ।

७ स० पा०—पवरविवडिय जाव पडिसेहिया ।

८. स० पा०—अत्थामा जाव अधारणिज्ज° । अयामा° (ग, घ) ।

९ पूर्णपाठ अस्याध्ययनस्य २५१ सूत्रे द्रष्टव्य: ।

१० सं० पा०—कट्टु जाव पडिसेहेइ ।

से पउमनाभे राया अम्ह खिप्पामेव हय-महिय-पवरवीर-घाइय-विवडियचिंध-धय-पडागे किच्छोवगयपाणे दिसोदिसि ° पडिसेहेइ ॥

२५६ तए ण से कण्हे वासुदेवे ते पच पंडवे एव वयासी —जइ ण तुब्भे देवाणुप्पिया! एव वयता—'अम्हे' णो पउमनाभे रायत्ति कट्टु पउमनाभेण सद्धि सपलग्गता तो ण तुब्भे नो पउमनाभे हय-महिय-पवर[1]°वीर-घाइय-विवडियचिंध-धय-पडागे किच्छोवगयपाणे दिसोदिसि ° पडिसेहित्था। त पेच्छह[2] ण तुब्भे देवाणुप्पिया! 'अह' णो पउमनाभे रायत्ति कट्टु पउमनाभेण रण्णा सद्धि जुज्झामि [त्ति ?] रह दुरुहइ, दुरुहित्ता जेणेव पउमनाभे राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सेय[3] गोखीरहार-धवल तणसोल्लिय-सिंदुवार-कुदेदु-सण्णिगास निययस्स वलस्स हरिस-जणण रिउसेण्ण-विणासणकर पचजण्ण[4] सख परामुसइ, परामुसित्ता मुहवायपूरिय करेइ ॥

२५७ तए ण तस्स पउमनाभस्स तेण सखसद्देण वल-तिभाए हय[5]-°महिय-पवरवीर-घाइय-विवडियचिंध-धय-पडागे किच्छोवगयपाणे दिसोदिसि °पडिसेहिए ॥

२५८ तए ण से कण्हे वासुदेवे[6]
°अइरुग्गयवालचद-इदधणु-सण्णिगास,
वरमहिस-दरिय-दप्पिय-दढघणसिंगग्गरइयसार,
उरगवर-पवरगवल-पवरपरहुय-भमरकुल-नीलि-निद्ध-धत-धोय-पट्ट,
निउणोविय-मिसिमिसित-मणिरयण-घटियाजालपरिक्खित्त,
तडितरुणकिरण-तवणिज्जवद्धचिंध,
दद्दरमलयगिरिसिहर-केसरचामरवाल-अद्धचदचिंध,
काल-हरिय-रत्त-पीय सुक्किल-वहुण्हारुणि-सपिणद्धजीव,
जीवियतकर° धणु परामुसइ, परामुसित्ता धणु पूरेइ, पूरेत्ता धणुसद्द करेइ ॥

२५९ तए ण तस्स पउमनाभस्स दोच्चे वल-तिभाए तेण धणुसद्देण हय-महिय[7]

---

१. स० पा०—पवर जाव पडिसेहित्था ।
२ पेच्छतु (क) ।
३. वृत्तौ शङ्खविशेषणानि पाठान्तरत्वेन उल्लिखितानि सन्ति, यथा—शङ्खविशेषणानि क्वचिद् दृश्यन्ते—'सेय' ° ।
४ पचयण्ण (क, ख); पचजण्ण (ग) ।
५ सं० पा०—हए जाव पडिसेहिए ।
६. स० पा०—वसुदेवे धणु परामुसइ वेढो । विस्तृत: पाठो वृत्त्यनुसारेण स्वीकृत: । मूलपाठे अस्य सूचना 'वेढो' इति पदेन प्रदत्तास्ति । वृत्तिकारेणापि सूचितमिदम्, यथा—वेष्टन एकवस्तुविषय पदपद्धति । स चेह धनुर्विषयो जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिप्रसिद्धोऽध्येतव्य:, तद्यथा—अइरुग्गय ° (वृ) । जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेस्तृतीये वक्षस्कारे मागधतीर्थकुमारसाधने वृत्तिकारसूचित पाठो लभ्यते । सोपि वृत्तिव्याख्यातपाठसवादी एव ।
७ स० पा०—हयमहिय जाव पडिसेहिए ।

•पवरवीर-घाइय-विवडियचिंध-धय-पडागे किच्छोवगयपाणे दिसोदिसिं° पडिसेहिए ॥

पउमनाभस्स पलायण-पद

२६० तए ण से पउमनाभे राया तिभागबलावसेसे अत्थामे[1] अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्जमिति कट्टु सिग्घ तुरियं चवल चड जइण वेइयं जेणेव अवरकका[2] तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अवरकक रायहाणिं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता बाराइं[3] पिहेइ, पिहेत्ता रोहासज्जे चिट्ठइ ॥

कण्हस्स नरसिंहरूव-पदं

२६१. तए ण से कण्हे वासुदेवे जेणेव अवरकका तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रह ठवेइ, ठवेत्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वेउव्वियसमुग्घाएण समोहण्णइ[4] एग मह नरसीह-रूव विउव्वइ, विउव्वित्ता महया-महया सद्देणं पायदद्दरिय करेइ ॥

२६२. तए ण कण्हेण वासुदेवेण महया-महया सद्देण पायदद्दरएणं कएण समाणेण अवरकका रायहाणी सभग्ग-पागार[5]-गोउराट्टालय-चरिय-तोरण-पल्हत्थिय-पवरभवण-सिरिघरा सरसरस्स धरणियले सण्णिवइया ॥

पउमनाभस्स सरण-पदं

२६३ तए ण से पउमनाभे राया अवरकक रायहाणिं सभग्ग[6]-•पागार-गोउराट्टालय-चरिय-तोरण-पल्हत्थियपवरभवण-सिरिघर सरसरस्स धरणियले सण्णिवइय° पासित्ता भीए दोवइ देविं सरणं उवेइ ॥

२६४. तए ण सा दोवई देवी पउमनाभं राय एव वयासी—किण्ण तुम देवाणुप्पिया ! न[7] जाणसि कण्हस्स वासुदेवस्स उत्तमपुरिसस्स विप्पिय करेमाणे ? 'मम इह हव्वमाणेमाणे'[8] त 'एवमवि गए'[9] गच्छ'[10] णं तुम देवाणुप्पिया ! ण्हाए उल्लपडसाडए ओचूलगवत्थनियत्थे अंतेउर-परियालसपरिवुडे[11] अग्गाइ वराइ रयणाइं गहाय मम पुरओकाउं कण्ह वासुदेव करयल[12]•परिग्गहिय दसणह सिरसावत्त मत्थए अंजलिं कट्टु° पायवडिए सरण उवेहि । पणिवइय-वच्छला ण देवाणुप्पिया ! उत्तमपुरिसा ॥

---

१. अथामे (ग, घ) ।
२ अमरकका (क) ।
३ दाराइ (ख) ।
४ समोहणइ (क, ख, घ) ।
५. पायार (क, घ); पगार (ख) ।
६ स० पा०—सभग्ग जाव पासित्ता ।
७. × (क, ख, ग) ।
८ × (ख, ग, घ) ।
९ द्रष्टव्यम्—६८ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।
१०. गच्छह (ग, घ) ।
११. परियाल° (क) ।
१२. स० पा०—करयल° ।

२६५ तए ण से पउमनाभे दोवईए देवीए 'एव वुत्ते समाणे'[1] ण्हाए[2] •उल्लपडसाडए ओचूलगवत्थनियत्थे अतेउर-परियालसपरिवुडे अग्गाइ वराइ रयणाइ गहाय दोवइ देविं पुरओकाउ कण्ह वासुदेव करयलपरिग्गहिय दसणह सिरसावत्त मत्थए अजलिं कट्टु पायवडिए सरण उवेइ, उवेत्ता° एव वयासी—दिट्ठा णं देवाणुप्पियाण इड्ढी[3] •जुई जसो बल वीरिय पुरिसक्कार°-परक्कमे। त खामेमि णं देवाणुप्पिया! खमतु ण देवाणुप्पिया![4] •खतुमरहति ण देवाणुप्पिया!° नाइं भुज्जो एवकरणयाए त्ति कट्टु पजलिउडे पायवडिए कण्हस्स वासुदेवस्स दोवइ देविं साहत्थि उवणेइ॥

सदोवई-पंडवस्स कण्हस्स पच्चावट्टण-पदं

२६६ तए ण से कण्हे वासुदेवे पउमनाभ एव वयासी—हंभो पउमनाभा! अपत्थिय-पत्थिया! दुरतपतलक्खणा! हीणपुण्णचाउद्दसा! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिया! किण्ण तुम न[5] जाणसि मम भगिणिं दोवइ देविं इह हव्वमाणे-माणे[6]? त 'एवमवि गए'[7] नत्थि? ते ममाहितो इयाणि भयमत्थि[8]? त्ति कट्टु पउमनाभ पडिविसज्जेइ, दोवइ देविं गेण्हइ, गेण्हित्ता रह दुरुहेइ, दुरुहित्ता जेणेव पच पडवा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पचण्ह पडवाण दोवइ देविं साहत्थि उवणेइ॥

२६७ तए ण से कण्हे वासुदेवे पचहिं पडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं लवणसमुद्द मज्झमज्झेण जेणेव जबुद्दीवे दीवे जेणेव भारहे वासे तेणेव पहारेत्थ गमणाए॥

वासुदेव-जुयलस्स संखसद्देण मिलण-पद

२६८ तेण कालेण तेण समएण धायइसडे दीवे पुरत्थिमद्धे भारहे वासे चपा नाम नयरी होत्था। पुण्णभद्दे चेइए॥

२६९ तत्थ ण चपाए नयरीए कविले नाम वासुदेवे राया होत्था—महताहिमवत-महत-मलय-मदर-महिंदसारे वण्णओ[10]॥

२७०. तेण कालेण तेण समएण मुणिसुव्वए अरहा[11] चपाए पुण्णभद्दे समोसढे। कविले वासुदेवे धम्म सुणेइ॥

---

१. एयमट्ठ पडिसुणेइ २ (ख, ग, घ)।
२. स० पा०—ण्हाए जाव सरण उवेइ २ करयल एव व।
३ स० पा०—इड्ढी जाव परक्कमे।
४. स० पा०—देवाणुप्पिया जाव नाइ।
५. नाह (क, ख, ग, घ)। एतत् पद १।५।१२३ सूत्रस्याधारेण स्वीकृतम्।
६ × (ग, घ)।
७. हव्वमाणे (ख, ग, घ)।
८ द्रष्टव्यम्—६८ सूत्रस्य पादटिप्पणम्।
९ अभयमत्थि (घ)।
१० ओ० सू० १४।
११. अरिहा (क)।

२७१ तए णं से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयस्स अरहओ अंतिए धम्मं सुणेमाणे कण्हस्स वासुदेवस्स संखसद्दं सुणेइ ॥

२७२ तए णं तस्स कविलस्स वासुदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—किमण्णे धायइसंडे दीवे भारहे वासे दोच्चे वासुदेवे समुप्पण्णे, जस्स णं अयं संखसद्दे ममं पिव मुहवायपूरिए वियंभइ[1] ?

कविला वासुदेवा भद्दाइ[2] ! मुणिसुव्वए अरहा कविलं वासुदेवं एवं वयासी—से नूणं कविला वासुदेवा ! ममं अंतिए धम्मं निसामेमाणस्स (ते ?) संखसद्दं आकण्णित्ता[3] इमेयारूवे अज्झत्थिए[4] °चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—किमण्णे धायइसंडे दीवे भारहे वासे दोच्चे वासुदेवे समुप्पण्णे, जस्स णं अयं संखसद्दे ममं पिव मुहवायपूरिए° वियंभइ ? से नूणं कविला वासुदेवा ! अट्ठे समट्ठे ?

हंता ! अत्थि । तं नो खलु कविला ! एवं भूयं वा भव्वं वा भविस्सं वा जण्णं एगखेत्ते एगजुगे एगसमए णं दुवे अरहंता वा चक्कवट्टी वा बलदेवा वा वासुदेवा वा उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा ।

एवं खलु वासुदेवा ! जंबुद्दीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ हत्थिणाउराओ नयराओ पंडुस्स रण्णो सुण्हा पंचण्हं पंडवाणं भारिया दोवई देवी तव पउमनाभस्स रण्णो पुव्वसंगइएणं देवेणं अवरकंकं नयरिं साहरिया । तए णं से कण्हे वासुदेवे पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं अवरकंकं रायहाणिं दोवईए देवीए कूवं हव्वमागए । तए णं तस्स कण्हस्स वासुदेवस्स पउमनाभेणं रण्णा सद्धिं संगामं संगामेमाणस्स अयं संखसद्दे तव 'मुहवायपूरिए इव'[5] वियंभइ ॥

२७३ तए णं से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयं अरहं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—गच्छामि णं अहं भंते ! कण्हं वासुदेवं उत्तमपुरिसं सरिसपुरिसं[6] पासामि ॥

२७४ तए णं मुणिसुव्वए अरहा कविलं वासुदेवं एवं वयासी—नो खलु देवाणुप्पिया ! एवं भूयं वा भव्वं वा भविस्सं वा जण्णं अरहंता वा अरहंतं पासंति, चक्कवट्टी वा चक्कवट्टिं पासंति, बलदेवा वा बलदेवं पासंति, वासुदेवा वा वासुदेवं

---

१. वियंभइ (क) ।
२. सद्दाति (ख), सद्दाइ सुणेइ (घ) ।
३. अकिण्णित्ता (ख) ।
४. सं० पा०—अज्झत्थिए किमण्णे जाव वियंभइ ।
५. मुहवायाइट्ठे इव (क), मुहवायइट्ठे एवं (ख), मुहवायइट्ठे कते इहेव (ग), मुहवाया इव (घ), अस्मिन्नेव सूत्रे कपिलवासुदेवचिंतनसमये 'मम पिव मुहवायपूरिए' इति पाठोस्ति । तस्याधारेणैवासौ पाठ स्वीकृतः ।
६. × (क) ।

पासति। तहवि य ण तुम कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्द मज्झमज्झेण वीईवयमाणस्स सेयापीयाइ धयग्गाइ[1] पासिहिसि ॥

२७५. तए ण से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वय अरह वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता हत्थिखध दुरुहइ, दुरुहित्ता 'सिग्घ तुरिय चवल चड जइण वेइय'[2] जेणेव वेलाउले[3] तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्द मज्झमज्झेण वीईवयमाणस्स सेयापीयाइ धयग्गाइ पासइ, पासित्ता एव वयइ— एस ण मम सरिसपुरिसे उत्तमपुरिसे कण्हे वासुदेवे लवणसमुद्द मज्झमज्झेण वीईवयइ त्ति कट्टु पचयण्ण सख परामुसइ, परामुसित्ता मुहवायपूरिय करेइ ॥

२७६ तए ण से कण्हे वासुदेवे कविलस्स वासुदेवस्स सखसद्द 'आयण्णेइ, आयण्णेत्ता'[4] पचयण्ण[5] •संख परामुसइ, परामुसित्ता मुहवाय॰पूरिय करेइ ॥

२७७ तए ण दोवि वासुदेवा सखसद्द-सामायारि[6] करेति ॥

कविलेण पउमनाभस्स निव्वासण-पद

२७८ तए ण से कविले वासुदेवे जेणेव अवरकका रायहाणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अवरकक रायहाणि सभग्ग[7]-•पागार-गोउराट्टालय-चरिय-तोरण-पल्हत्थियपवरभवण-सिरिघर सरसरस्स धरणियले सण्णिवइय॰ पासइ, पासित्ता पउमनाभ एव वयासी—किण्ण देवाणुप्पिया ! एसा अवरकका राय-हाणी सभग्ग[8]-•पागार-गोउराट्टालय-चरिय-तोरण-पल्हत्थियपवरभवण-सिरि-घरा सरसरस्स धरणियले॰ सण्णिवइया ?

२७९ तए ण से पउमनाभे कविल वासुदेव एव वयासी—एव खलु सामी ! जबुद्दी-वाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ इह हव्वमागम्म कण्हेण वासुदेवेण तुब्भे परिभूय अवरकका[9] •रायहाणी सभग्ग-गोउराट्टालय-चरिय-तोरण-पल्हत्थिय-पवरभवण-सिरिघरा सरसरस्स धरणियले॰ सण्णिवाडिया[10] ॥

२८० तए ण से कविले वासुदेवे पउमनाभस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा पउमनाभ एव वयासी—हभो पउमनाभा ! अपत्थियपत्थिया ! दुरतपतलक्खणा ! हीण-पुण्णचाउद्दसा ! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिया ! किण्ण तुम न[11] जाणसि मम सरिसपुरिसस्स कण्हस्स वासुदेवस्स विप्पिय करेमाणे ?—आसु-रुत्ते[12] •रुट्ठे कुविए चडिक्किए मिसिमिसेमाणे तिवलिय भिउडि निलाडे साहट्टु॰

---

१ धयाइ (घ)।
२ सिग्घ (क, घ)।
३ वेलाकूले (क्व)।
४ आकण्णेइ २ (क)।
५. स॰ पा॰—पचयण्ण जाव पूरिय।
६ समायारि (ख, ग)।
७ स॰ पा॰—सभग्ग तोरण जाव पासइ।
८. स॰ पा॰—सभग्ग जाव सण्णिवइया।
९ स॰ पा॰—अवरकका जाव सण्णिवाडिया।
१० सण्णिवाइया (घ)।
११. × (क, ग, घ)।
१२. स॰ पा॰—आसुरुत्ते जाव पउमनाभ।

पउमनाभ निव्विसय आणवेइ, पउमनाभस्स पुत्त अवरकंकाए रायहाणीए महया-महया रायाभिसेएण अभिसिचइ[1], •अभिसिंचित्ता जामेव दिसि पाउब्भूए तामेव दिसिं• पडिगए ॥

अपरिक्खणीयपरिक्खा-पद

२८१ तए ण से कण्हे वासुदेवे लवणसमुद्द मज्झमज्झेण 'वीईवयमाणे-वीईवयमाणे गग उवागए'[2] [उवागम्म ?] ते पच पडवे एव वयासी—गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! गग महानइ उत्तरह जाव ताव अह सुट्ठिय लवणाहिवइ पासामि ॥

२८२ तए ण ते पच पडवा कण्हेण वासुदेवेण एव वुत्ता समाणा जेणेव गंगा महानदी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता एगट्ठियाए[3] मग्गण-गवेसण करेति, करेत्ता एगट्ठियाए गग महानइ उत्तरति, उत्तरित्ता अण्णमण्णं एव वयति—पहू ण देवाणुप्पिया ! कण्हे वासुदेवे गग महानइ वाहाहि उत्तरित्तए, उदाहू नो पहू उत्तरित्तए ? त्ति कट्टु एगट्ठिय[4] 'णूमेति, णूमेत्ता'[5] कण्ह वासुदेव पडिवाले-माणा-पडिवालेमाणा चिट्ठति ॥

२८३ तए ण से कण्हे वासुदेवे सुट्ठिय लवणाहिवइ पासइ, पासित्ता जेणेव गगा महानई तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एगट्ठियाए सव्वओ समता मग्गण-गवेसण करेइ, करेत्ता एगट्ठिय अपासमाणे एगाए वाहाए रह सतुरगं ससारहि गेण्हइ, एगाए वाहाए गग महानइ वासट्ठि जोयणाइ अद्धजोयण च वित्थिण्ण उत्तरिउं पयत्ते यावि होत्था ॥

२८४. तए ण से कण्हे वासुदेवे गगाए महानईए वहुमज्झदेसभाए सपत्ते समाणे सते तते परितते वद्धसेए जाए यावि होत्था ॥

२८५ तए ण तस्स कण्हस्स वासुदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए[6] •चितिए पत्थिए मणोगए सकप्पे• समुप्पज्जित्था—अहो ण पच पडवा महावलवगा जेहिं गगा महानई वासट्ठि[7] जोयणाइ अद्धजोयण च वित्थिण्णा वाहाहि उत्तिण्णा ।

---

१ स० पा०—अभिसिचइ जाव पडिगए ।

२. वीईवयइ २ (क, ख, ग), वीईवयइ गग० (घ) ।

३. एगट्ठियाए नावाए (क, ख, ग, घ) । वृत्तौ 'एगट्ठियति नौ' इति व्याख्यानमस्ति । अस्यानुसारेण 'एगट्ठिया' पद नौ वाचकमस्ति । प्रतिपु 'नावाए' इति पदस्यापि उल्लेखो लभ्यते । स च वहुपु स्थानेपु सारल्यार्थं परिवर्तितपदवद् विद्यते ।

४ एगट्ठियाओ (ग) ।

५. ण मुयंति (क), ण मुचति (ख), मुस्संति २ (घ) ।

६. स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुपज्जित्था ।

७. वावट्ठि (क, ग) ।

इच्छतएहि[1] ण पचहि पडवेहि पउमनाभे हय-महिय[2]-•पवरवीर-घाइय-विवडिय-चिंध-धय-पडागे किच्छोवगयपाणे दिसोदिसिं° नो पडिसेहिए ॥

२८६. तए ण गगादेवी कण्हस्स वासुदेवस्स इम एयारूव अज्झत्थियं[3] •चिंतिय पत्थिय मणोगय सकप्प° जाणित्ता थाह वियरइ ॥

२८७ तए ण से कण्हे वासुदेवे मुहुत्ततर समासासेइ, समासासेत्ता गग महानदि वासट्ठि[4] •जोयणाइ अद्धजोयण च वित्थिण्ण बाहाए° उत्तरइ,उत्तरित्ता जेणेव पच पडवा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पच पडवे एव वयासी—अहो ण तुब्भे देवाणुप्पिया! महाबलवगा, जेहि ण तुब्भेहिं गगा महानई बासट्ठि[5] •जोयणाइ अद्ध-जोयण च वित्थिण्णा बाहाहि° उत्तिण्णा। इच्छंतएहिं ण तुब्भेहिं पउमनाहे[6] •हय-महिय-पवरवीर-घाइय-विवडियचिंध-धय-पडागे किच्छोवगयपाणे दिसो-दिसिं° नो पडिसेहिए ॥

२८८ तए ण ते पच पडवा कण्हेण वासुदेवेण एव वुत्ता समाणा कण्ह वासुदेव एवं वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया! अम्हे तुब्भेहि विसज्जिया समाणा जेणेव गगा महानई तेणेव उवागच्छामो, उवागच्छित्ता एगट्ठियाए मग्गण-गवेसण करेमो,[7] •करेत्ता एगट्ठियाए गग महानइ उत्तरेमो, उत्तरेत्ता अण्णमण्ण एव वयामो—पहू ण देवाणुप्पिया! कण्हे वासुदेवे गग महानइ बाहाहिं उत्तरित्तए, उदाहु नो पहू उत्तरित्तए? त्ति कट्टु एगट्ठिय° णूमेमो, तुब्भे पडिवालेमाणा चिट्ठामो ॥

कण्हेण पंडवाणं निव्वासण-पदं

२८९ तए ण से कण्हे वासुदेवे तेसिं पचपडवाण एयमट्ठ सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते[8] •रुट्ठे कुविए चडिक्किए मिसिमिसेमाणे तिवलिय भिउडिं निडाले साहट्टु° एव वयासी—अहो ण जया मए लवणसमुद्द दुवे जोयणसयसहस्सवित्थिण्ण वीईवइत्ता पउमनाभ हय-महिय[9]-•पवरवीर-घाइय-विवडियचिंध-धय-पडाग किच्छोवगय-पाण दिसोदिसिं° पडिसेहित्ता अवरकका सभग्गा, दोवई साहत्थि उवणीया, तया ण तुब्भेहिं मम माहप्प न विण्णायं, इयाणि जाणिस्सह त्ति कट्टु लोहदड परामुसइ, पचण्ह पडवाण रहे सुसूरेइ[10], सुसूरेत्ता [पच पडवे?] निव्विसए आणवेइ। तत्थ ण रहमद्दणे नाम कोट्टे निविट्ठे ॥

---

१. इत्थतएहिं (ख, घ), एत्थतएहिं (ग)।
२ स० पा०—हयमहिय जाव नो पडिसेहिए।
३ स० पा०—अज्झत्थिय जाव जाणित्ता।
४. स० पा०—वासट्ठि जाव उत्तरइ।
५. सं० पा०—वासट्ठि जाव उत्तिण्णा।
६. स० पा०—पउमनाहे जाव नो पडिसेहिए।
७ स० पा०—करेमो तं चेव जाव णूमेमो।
८. सं० पा०—आसुरुत्ते जाव तिवलिय एव।
९ सं० पा०—हयमहिय जाव पडिसेहित्ता।
१०. सुमुचूरेइ (ख), सुसुसूरेइ (ग) चूरेइ (घ)।

२६० तए णं से कण्हे वासुदेवे जेणेव सए खंधावारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सएणं खंधावारेणं सद्धिं अभिसमण्णागए यावि होत्था ।[1]

२६१. तए णं से कण्हे वासुदेवे जेणेव बारवई नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता [सयं भवणं ?]' अणुप्पविसइ ॥

२६२ तए णं ते पंच पंडवा जेणेव हत्थिणाउरे नयरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता जेणेव पंडू राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल[2] •परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° एवं वयासी—एवं खलु ताओ ! अम्हे कण्हेणं निव्विसया आणत्ता ॥

२६३ तए णं पंडू राया ते पंच पंडवे एवं वयासी—कहण्णं पुत्ता ! तुब्भे कण्हेणं वासुदेवेणं निव्विसया आणत्ता ?

२६४ तए णं ते पंच पंडवा पंडुं रायं एवं वयासी—एवं खलु ताओ ! अम्हे अवरकंकाओ पडिनियत्ता लवणसमुद्दं दोण्णि जोयणसयसहस्साइं वीईवइत्था । तए णं से कण्हे वासुदेवे अम्हे एवं वयइ—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! गंगं महानइं उत्तरह जाव ताव अहं सुट्ठियं लवणाहिवइं पासामि, एवं तहेव जाव[3] चिट्ठामो ॥

२६५ तए णं से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं लवणाहिवइं दट्ठूण जेणेव गंगा महानई तेणेव उवागच्छइ, तं चेव सव्वं नवरं कण्हस्स चिंता न वुज्झइ[4] जाव[5] निव्विसए आणवेइ ॥

२६६. तए णं से पंडू राया ते पंच पंडवे एवं वयासी—दुट्ठु णं[6] पुत्ता ! कयं कण्हस्स वासुदेवस्स विप्पियं करेमाणेहिं ॥

२६७ तए णं से पंडू राया कोंतिं देविं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिए ! बारवइं नयरिं कण्हस्स वासुदेवस्स एवं[7] निवेएहि—एवं खलु देवाणुप्पिया ! तुमे पंच पंडवा निव्विसया आणत्ता । तुमं च णं देवाणुप्पिया ! दाहिणड्ढभरहस्स सामी । तं संदिसतु णं देवाणुप्पिया । ते पंच पंडवा कयरं देसं वा दिसं वा 'विदिसं वा'[8] गच्छंतु ?

२६८ तए णं सा कोंती पंडुणा एवं वुत्ता समाणी हत्थिखंधं दुरुहइ, जहा हेट्ठा जाव[9] संदिसतु णं पिउच्छा ! किमागमणपओयणं ?

२६९ तए णं सा कोंती देवी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—एवं खलु तुमे पुत्ता ! पंचपंडवा निव्विसया आणत्ता । तुमं च णं दाहिणड्ढभरहस्स[10] •सामी । तं

---

१. द्रष्टव्यम्—अस्यैवाध्ययनस्य १६६ सूत्रम् ।
२. सं० पा०—करयल जाव एवं ।
३ ना० १।१६।२८२ ।
४ वुच्चइ (घ) ।
५. ना० १।१६।२८३, २८४, २८६-२९० ।
६ ण तुमं (ख) ।
७ × (क, ग, घ) ।
८ × (क, ख, ग) ।
९ ना० १।१६।२१६-२१९ ।
१०. सं० पा०—दाहिणड्ढभरहस्स जाव दिसं ।

सदिसतु ण देवाणुप्पिया ! ते पच पडवा कयर देस वा° दिस वा विदिसिं वा गच्छंतु ?

३०० तए ण से कण्हे वासुदेवे कोंतिं देविं एव वयासी—अपूइवयणा[1] ण पिउच्छा ! उत्तमपुरिसा—वासुदेवा वलदेवा चक्कवट्टी। त गच्छतु ण पच पडवा दाहिणिल्ल वेयालिं तत्थ पडुमहुर निवेसतु, मम अदिट्ठसेवगा भवतु त्ति कट्टु कोंतिं देविं सक्कारेइ सम्माणेइ[2], •सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता° पडिविसज्जेइ ।।

३०१. तए ण सा कोंती देवी[3] •जेणेव हत्थिणाउरे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता° पंडुस्स एयमट्ठ निवेएइ ।।

३०२. तए णं पडू राया पच पडवे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह ण तुब्भे पुत्ता ! दाहिणिल्ल वेयालिं। तत्थ ण तुब्भे पडुमहुर निवेसेह ।।

पडुमहुरा-निवेसण-पद

३०३ तए ण ते पच पडवा पडुस्स रण्णो[4] •एयमट्ठ° तहत्ति पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता सबलवाहणा हय-गय[5]-•रह-पवरजोहकलियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धि सपरिवुडा महयाभड-चडगर-रह-पहकर-विंदपरिक्खित्ता° हत्थिणाउराओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव दक्खिणिल्ले वेयाली तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पडुमहुर नगरिं[6] निवेसति। तत्थवि[7] ण ते विपुलभोग-समिति-समण्णागया यावि होत्था ।।

पंडुसेण-जम्म-पदं

३०४ तए ण सा दोवई देवी अण्णया कयाइ आवण्णसत्ता जाया यावि[8] होत्था ।।

३०५ तए ण सा दोवई देवी नवण्ह मासाण बहुपडिपुण्णाण जाव[9] सुरूव दारग पयाया—सूमाल[10]•कोमलय गयतालुयसमाण ।।

३०६ तए ण तस्स ण दारगस्स निव्वत्तवारसाहस्स अम्मापियरो इम एयारूव गोण्णं गुणनिप्फण्ण नामधेज्ज करेति° जम्हा ण अम्ह एस दारए पचण्ह पडवाण पुत्ते दोवईए देवीए अत्तए, त होउ ण इमस्स दारगस्स नामधेज्ज 'पडुसेणे-पडुसेणे'[11] ।।

---

१ अपूईवयणा (ख, ग)।
२ स० पा०—सम्माणेइ जाव पडिविसज्जेइ।
३. स० पा०—देवी जाव पडुस्स।
४ स० पा०—रण्णो जाव तहत्ति।
५ स० पा०—हयगय जाव हत्थिणाउराओ।
६ नगर (ख)।
७. तत्थ (ग, घ)।
८ वि (ख, घ)।
९ ओ० सू० १४३।
१०. स० पा०—सूमाल निव्वत्तबारसाहस्स इम एयारूव। सर्वास्वपि प्रतिपु एतावानेव पाठो विद्यते, किन्तु १।१६।३३,३४ सूत्रानुसारेण अस्य पूर्ति कृता।
११. पडुसेणे (ग)।

३०७ तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करेति[1] पडुसेणत्ति ॥

३०८ [2]•तए ण त पंडुसेण दारय अम्मापियरो साइरेगट्ठवासजायग चेव सोहणसि तिहि-करण-मुहुत्तसि कलायरियस्स उवणेति ॥

३०९ तए ण से कलायरिए पडुसेण कुमारं लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउणरुय-पज्जवसाणाओ वावत्तरिं कलाओ सुत्तओ य अत्थओ य करणओ य सेहावेइ सिक्खावेइ° जाव[3] अलभोगसमत्थे जाए। जुवराया जाव[4] विहरइ ॥

पंडवाणं दोवईए य पव्वज्जा-पदं

३१० थेरा समोसढा। परिसा निग्गया। पडवा निग्गया। धम्मं सोच्चा एवं वयासी—जं नवर—देवाणुप्पिया! दोवइ देविं आपुच्छामो। पंडुसेण च कुमारं रज्जे ठावेमो। तओ पच्छा देवाणुप्पियाण अतिए मुडे भवित्ता[5] •ण अगाराओ अणगारियं° पव्वयामो[6]।

अहासुह देवाणुप्पिया!

३११. तए ण ते पच पडवा जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता दोवइ देविं सद्दावेति, सद्दावेत्ता एव वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिए! अम्हेहिं थेराण अतिए धम्मे निसते जाव[7] पव्वयामो। तुम णं देवाणुप्पिए! किं करेसि?

३१२. तए ण सा दोवई ते पच पडवे एवं वयासी—जइ ण तुब्भे देवाणुप्पिया! ससार-भउव्विग्गा जाव[8] पव्वयह, मम के अण्णे आलवे वा[9] •आहारे वा पडिवधे वा° भविस्सइ? अह पि य ण ससारभउव्विग्गा देवाणुप्पिएहिं सद्धिं पव्वइस्सामि ॥

३१३. तए ण ते पच पंडवा[10] •कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! पडुसेणस्स कुमारस्स महत्थं महग्घं महरिहं विउल रायाभिसेहं उवट्ठवेह°। पडुसेणस्स अभिसेओ जाव[11] राया जाए जाव[12] रज्ज पसाहेमाणे विहरइ ॥

३१४. तए णं ते पच पडवा दोवई य देवी अण्णया कयाइ पंडुसेण रायाणं आपुच्छंति ॥

३१५. तए ण से पडुसेणे राया कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—

---

१. कय (क); × (ख, ग)।
२ स० पा०—वावत्तरिं कलाओ जाव अलंभोग-समत्थे।
३. ना० १।१।८५-८८।
४. राय० सू० ६७४।
५. स० पा०—भवित्ता जाव पव्वयामो।
६. पव्वामो (क, ग)।
७. ना० १।५।८९।
८. ना० १।५।९०।
९. स० पा०—आलंवे वा जाव भविस्सइ।
१०. स० पा०—पडवा°।
११. ना० १।१।११७-११९।
१२. ओ० सू० १४।

खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! निक्खमणाभिसेयं करेह जाव[1] पुरिससहस्स-वाहिणीओ सिबियाओ उवट्ठवेह जाव[2] सिबियाओ पच्चोरुहंति[3], जेणेव थेरा[4] •भगवंतो तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता थेरे भगवंते तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेंति, करेत्ता वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी°— आलित्ते णं भंते ! लोए जाव[5] समणा जाया, चोद्दस्स पुव्वाइं अहिज्जंति, अहिज्जित्ता बहूणि वासाणि छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ॥

३१६ तए णं सा दोवई देवी सीयाओ पच्चोरुहइ जाव[6] पव्वइया । सुव्वयाए अज्जाए सिस्सिणियत्ताए दलयंति,[7] एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, बहूणि वासाणि छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ ॥

३१७ तए णं ते थेरा भगवंतो अण्णया कयाइ पंडुमहुराओ नयरीओ सहस्संबवणाओ[8] उज्जाणाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरंति ॥

अरिट्ठनेमिस्स निव्वाण-पदं

३१८ तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहा अरिट्ठनेमी जेणेव सुरट्ठाजणवए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुरट्ठाजणवयंसि संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

३१९ तए णं बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ, भासइ पण्णवेइ परूवेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अरहा अरिट्ठनेमी सुरट्ठाजणवए[9] •संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ ॥

३२० तए णं ते जुहिट्ठिलपामोक्खा पंच अणगारा बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अरहा अरिट्ठनेमी पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे[10] •सुहंसुहेणं विहरमाणे सुरट्ठाजणवए संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ । तं सेयं खलु अम्हं [थेरे भगवंते ?] आपुच्छित्ता अरहं अरिट्ठनेमिं वंदणाए गमित्तए, अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—

---

१. ना० १।१।१२१-१२९ ।
२. ना० १।१।१३०-१४४ ।
३ द्रष्टव्यम्—ना० १।१।१४५-१४८ सूत्रम् ।
४ सं० पा०—थेरा जाव आलित्ते ।
५ ना० १।१।१४९ ।
६. ना० १।१६।३१५ ।
७ दलयइ (क, ख, ग, घ) ।
८. सहसंब° (ख, ग) ।
९. सं० पा०—सुरट्ठाजणवए जाव विहरइ ।
१०. सं० पा०—दूइज्जमाणे जाव विहरइ ।

इच्छामो ण तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणा अरहं अरिट्ठनेमिं[1] •वंदणाए° गमित्तए।

अहासुहं देवाणुप्पिया!

३२१ तए ण ते जुहिट्ठिलपामोक्खा पच अणगारा थेरेहिं अब्भणुण्णाया समाणा थेरे भगवंते वदति नमसंति, वंदित्ता नमसित्ता थेराण अंतियाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता मासमासेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण गामाणुगाम दूइज्ज-माणा[2] •सुहसुहेण विहरमाणा° जेणेव हत्थकप्पे[3] नयरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता हत्थकप्पस्स बहिया सहस्सववणे उज्जाणे[4] •सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणा° विहरति ॥

३२२. तए ण ते जुहिट्ठिलवज्जा चत्तारि अणगारा मासक्खमणपारणए पढमाए पोरि-सीए सज्झाय करेति, बीयाए झाण झायति एव जहा गोयमसामी[5], नवर— जुहिट्ठिल आपुच्छति जाव[6] अडमाणा बहुजणसद्द निसामेंति —एव खलु देवाणु-प्पिया! अरहा अरिट्ठनेमी उज्जतसेलसिहरे मासिएण भत्तेण अपाणएण पचहिं छत्तीसेहिं अणगारसएहिं सद्धि कालगए[7] •सिद्धे बुद्धे मुत्ते अतगडे परिनिव्वुडे सव्वदुक्ख°प्पहीणे ॥

पंडवाणं निव्वाण-पदं

३२३ तए ण ते जुहिट्ठिलवज्जा चत्तारि अणगारा बहुजणस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हत्थकप्पाओ नयराओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सहस्सब-वणे उज्जाणे जेणेव जुहिट्ठिले अणगारे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता भत्तपाणं पच्चुवेक्खति[8], पच्चुवेक्खित्ता गमणागमणस्स पडिक्कमति, पडिक्क-मित्ता एसणमणेसण आलोएति, आलोएत्ता भत्तपाण पडिदंसेति, पडिदसेत्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया[9]! •अरहा अरिट्ठनेमी उज्जतसेलसिहरे मासिएण भत्तेण अपाणएण पचहिं छत्तीसेहिं अणगारसएहिं सद्धि° कालगए। त सेय खलु अम्ह देवाणुप्पिया! इम पुव्वगहिय भत्तपाण परिट्ठवेत्ता सेत्तुज्ज पव्वय सणिय-सणियं दुरुहित्तए, सलेहणा-झूसणा-झोसियाण काल अणवेक्ख-माणाण[10] विहरित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठ पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता त पुव्वगहिय भत्तपाण एगंते परिट्ठवेति, परिट्ठवेत्ता जेणेव सेत्तुज्जे[11] पव्वए तेणेव

---

१. स० पा०—अरिट्ठनेमिं जाव गमित्तए।
२. स० पा०—दूइज्जमाणा जाव जेणेव।
३ हत्थीकप्पे (क)।
४. स० पा०—उज्जाणे जाव विहरति।
५. भ० २।१०७।
६. भ० २।१०८, १०९।
७. स० पा०—कालगए जाव प्पहीणे।
८ पचुवेक्खइति (ख); पच्चक्खति (घ)।
९. स० पा०—देवाणुप्पिया जाव कालगए।
१०. अणवकंखमाणाण (घ)।
११. सेत्तु जे (क्व)।

उवागच्छति, उवागच्छित्ता सेत्तुज्ज पव्वय सणिय-सणिय दुरुहति[1], •दुरुहित्ता संलेहणा-झूसणा-झोसिया° काल अणवकखमाणा विहरति ॥

३२४. तए ण ते जुहिट्ठिलपामोक्खा पच अणगारा सामाइयमाइयाइ चोद्दसपुव्वाइ अहिज्जित्ता, वहूणि वासाणि सामण्णपरियाग पाउणित्ता, दोमासियाए संलेहणाए अत्ताण झोसेत्ता जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे जाव[2] तमट्ठमाराहेति, आराहेत्ता अणत[3] •केवलवरनाणदसण समुप्पाडेत्ता तओ पच्छा सिद्धा बुद्धा मुत्ता अंतगडा परिनिव्वुडा सव्वदुक्खप्पहीणा° ॥

दोवईए देवत्त-पद

३२५. तए ण सा दोवई अज्जा सुव्वयाण अज्जियाण अतिए सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइ अहिज्जित्ता[4] वहूणि वासाणि सामण्णपरियाग पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए [अत्ताण झोसेत्ता ?] आलोइय-पडिक्कता कालमासे काल किच्चा वभलोए उववण्णा। तत्थ ण अत्थेगइयाण देवाण दस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता। तत्थ ण दुवयस्स वि देवस्स दससागरोवमाइ ठिई ॥

३२६. से ण भते ! दुवए देवे ताओ[5] •देवलोगाओ आउक्खएण ठिइक्खएण भवक्खएण अणतरं चय चइत्ता जाव[6] महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिनिव्वाहिइ सव्वदुक्खाण°मत काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

३२७ एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण आइगरेण तित्थगरेण जाव[7] सिद्धिगइणामधेज्ज ठाणं सपत्तेण सोलसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते।

—त्ति बेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

सुवहू वि तव-किलेसो, नियाण-दोसेण दूसिओ सतो।
न सिवाय दोवईए, जह किल सूमालिया-जम्मे ॥१॥

अथवा—

अमणुण्णमभत्तीए, पत्ते दाण भवे अणत्थाय।
जह कडुय-तुब-दाण, नागसिरि-भवम्मि दोवईए ॥२॥

---

१. स० पा०—दुरुहति जाव काल।
२. ओ० सू० १५४।
३. स० पा०—अणंते णाणे समुप्पण्णे जाव सिद्धा।
४ अहिज्जइ २ (क, ख, ग, घ)।
५. स० पा०—ताओ जाव विदेहे वासे जाव अत
६. ना० १।१।२१२।
७ ना० १।१।७।

सत्तरसमं अज्झयणं

आइण्णे

उक्खेव-पदं

१. जइ ण भते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव[1] सपत्तेण सोलसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, सत्तरसमस्स ण भते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

२. एव खलु जबू ! तेणं कालेण तेण समएण हत्थिसीसे नाम नयरे होत्था—वण्णओ[2] ॥

३. तत्थ ण कणगकेऊ नाम राया होत्था—वण्णओ[3] ॥

४ तत्थ ण हत्थिसीसे नयरे बहवे सजत्ता[4]-नावावाणियगा परिवसति—अड्ढा जाव[5] बहुजणस्स अपरिभूया यावि होत्था ॥

कालियदीव-जत्ता-पदं

५ तए ण तेसिं 'सजत्ता-नावावाणियगाण'[6] अण्णया कयाइ एगयओ[7] •सहियाण इमेयारूवे मिहोकहा-समुल्लावे समुप्पज्जित्था—सेय खलु अम्ह गणिम च धरिमं च मेज्ज च परिच्छेज्ज च भडगं गहाय लवणसमुद्द पोयवहणेण ओगाहेत्तए त्ति कट्टु° जहा अरहन्नए जाव[8] लवणसमुद्द अणेगाइ जोयणसयाइ ओगाढा यावि होत्था ॥

६. तए णं तेसिं[9] •सजत्ता-नावावाणियगाण लवणसमुद्द अणेगाइं जोयणसयाइं

---

१ ना० १।१।७ ।

२. ओ० सू० १ ।

३. ओ० सू० १४ ।

४. सजुत्ता (ग) ।

५. ना० १।५।७ ।

६ सजुत्ता वाणियगाण (ख, ग) ।

७ स० पा०—एगयओ जहा अरहन्नए जाव लवणसमुद्द ।

८. ना० १।८।६६-७० ।

९. स० पा०—तेसिं जाव बहूणि ।

ओगाढाण समाणाण° वहूणि उप्पाइयसयाइं [1]•पाउब्भूयाइ, तं जहा—अकाले गज्जिए अकाले विज्जुए अकाले थणियसद्दे° कालियवाए य[2] समुत्थिए ।।

७ तए ण सा नावा तेण कालियवाएण आहुणिज्जमाणी[3]-आहुणिज्जमाणी सचालिज्जमाणी-सचालिज्जमाणी सखोहिज्जमाणी-सखोहिज्जमाणी[4] तत्थेव परिभमइ ।।

८ तए ण से निज्जामए नट्ठमईए नट्ठसुईए नट्ठसण्णे मूढदिसाभाए जाए यावि होत्था—न जाणइ कयर देस वा दिस वा 'विदिस वा'[5] पोयवहणे 'अवहिए त्ति'[6] कट्टु ओहयमणसकप्पे[7] •करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए° झियायइ ।।

९ तए ण ते वहवे कुच्छिधारा य कण्णधारा य गब्भेल्लगा य सजत्ता-नावावाणियगा य जेणेव से निज्जामए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता एव वयासी—किण्ण तुम देवाणुप्पिया ! ओहयमणसकप्पे[8] •करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए° झियायसि ?

१० तए ण से निज्जामए ते वहवे कुच्छिधारा य कण्णधारा य गब्भेल्लगा य सजत्ता-नावावाणियगा य एव वयासी—एव खलु अह देवाणुप्पिया ! नट्ठमईए[9] •नट्ठसुईए नट्ठसण्णे मूढदिसाभाए जाए यावि होत्था—न जाणइ कयरं देस वा दिस वा विदिस वा पोयवहणे° अवहिए त्ति कट्टु तओ ओहयमणसकप्पे[10] •करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए° झियामि ।।

११ तए ण से कुच्छिधारा य कण्णधारा य गब्भेल्लगा य संजत्ता-नावावाणियगा य तस्स निज्जामयस्सतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म भीया तत्था उव्विग्गा उव्विग्गमणा ण्हाया कयवलिकम्मा करयल[11]•परिग्गहिय दसणह सिरसावत्त मत्थए अजलिं कट्टु° वहूण इदाण य खधाण य [12]•रुद्दाण य सिवाण य वेसमणाण य नागाण य भूयाण य जक्खाण य अज्ज-कोट्टकिरियाण य बहूणि उवाइय-सयाणि° उवायमाणा[13]-उवायमाणा चिट्ठति ।।

१२. तए ण से निज्जामए तओ मुहुत्ततरस्स लद्धमईए लद्धसुईए लद्धसण्णे अमूढदिसाभाए जाए यावि होत्था ।।

---

१. स० पा०—जहा माकदियदारगाण जाव कालियवाए ।
२ यत्थ (ग, घ) ।
३ अणुत्तिज्जमाणी (ख), आघुलिज्जमाणी (ग), आहुणियमाणी (घ) ।
४ सखोभेज्जमाणी (क) ।
५ × (क) ।
६ अवहित्ति (क), अवहिति त्ति (ख) ।
७ स० पा०—ओहयमणसकप्पे जाव झियायइ ।
८ स० पा०—ओहयमणसकप्पे जाव झियायसि ।
९ स० पा०—नट्ठमईए जाव अवहिए ।
१०. स० पा०—ओहयमणसकप्पे जाव झियामि ।
११. स० पा०—करयल° ।
१२. स० पा०—जहा मल्लिनाए जाव उवायमाणा ।
१३ उवाइमाणा (१।८।७२)

१३ तए ण स निज्जामए ते बहवे कुच्छिधारा य कण्णधारा य गब्भेल्लगा य सजत्ता-नावावाणियगा य एव वयासी—एव खलु अह देवाणुप्पिया! लद्धमईए[1] °लद्धसुईए लद्धसण्णे° अमूढदिसाभाए जाए। अम्हे ण देवाणुप्पिया! कालिय-दीवतेण सछूढा[2]। एस ण कालियदीवे आलोक्कइ[3]॥

कालियदीवे आस-पेच्छण-पदं

१४ तए ण ते कुच्छिधारा य कण्णधारा य गब्भेल्लगा य सजत्ता-नावावाणियगा य तस्स निज्जामगस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा हट्ठतुट्ठा पयक्खिणाणुकूलेण वाएणं जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पोयवहण लवेंति, लवेत्ता एगट्ठियाहिं कालियदीव उत्तरति। तत्थ ण बहवे हिरण्णागरे य सुवण्णागरे य रयणागरे य वइरागरे य, बहवे तत्थ आसे पासति, किं ते?—

हरिरेणु-सोणिसुत्तग-[4]°सकविल-मज्जार-पायकुक्कुड-वोडसमुग्गयसामवण्णा।
गोहूमगोरग-गोरपाडल-गोरा, पवालवण्णा य धूमवण्णा य केइ॥१॥
तलपत्त-रिट्ठवण्णा य, सालिवण्णा य भासवण्णा य केइ।
जपिय-तिल-कीडगा य, सोलोय-रिट्ठगा य पुड-पइया य कणग पिट्ठा य केइ॥२॥
चक्कागपिट्ठवण्णा, सारसवण्णा य हसवण्णा य केइ।
केइत्थ अब्भवण्णा, पक्कतल[5]-मेघवण्णा य बाहुवण्णा[6] केइ॥३॥
सझाणुरागसरिसा, सुयमुह-गुजद्धराग- सरिसत्थ केइ।
एलापाडल-गोरा, सामलया-गवलसामला पुणो केइ॥४॥

बहवे अण्णे अणिद्देसा, सामा कासीसरत्तपीया, अच्चतविसुद्धा वि य ण आइण्णग-जाइ-कुल-विणीय-गयमच्छरा।
हयवरा जहोवएस-कम्मवाहिणो वि य ण।
सिक्खा विणीयविणया,
लघण-वग्गण-धावण-धोरण-तिवई जईण-सिक्खिय-गई।
किं ते? मणसा वि उव्विहताइ अणेगाइ आससयाई पासति°॥

१५ तए ण ते आसा[7] वाणियए पासति, तेसि गधं आघायति[8], आघाइत्ता भीया

---

१ स० पा०—लद्धमईए जाव अमूढदिसायाए।
२ सवूढा (ख), सवूढा (ग)।
३ ओलोकिज्जइ (घ)।
४ स० पा०—आइण्णवेढो। विस्तृत पाठो वृत्त्यनुसारेण स्वीकृत। मूलपाठे अस्य सूचना 'आइण्णवेढो' इति पदेन प्रदत्तास्ति। वृत्ति-कारेणापि सूचितमिदम् यथा—वेढो त्ति वर्णनार्था वाक्यपद्धति (वृ)।
५. पविरल (वृपा)।
६ बहु° (वृपा)।
७. आसा ते(क, घ),आसाए(ग),आसाओ(ख)।
८. अग्घायति (ख, ग)।

तत्था उव्विग्गा उव्विग्गमणा तओ अणेगाइं जोयणाइं उब्भमंति। ते णं तत्थ पउर-गोयरा पउर-तणपाणिया निब्भया[1] निरुव्विग्गा[2] सुहसुहेण विहरंति॥

संजत्तियाणं पुणरागमण-पदं

१६ तए णं ते संजत्ता-नावावाणियगा अण्णमण्णं एवं वयासी—किण्णं अम्हं देवाणुप्पिया! आसेहिं? इमे णं बहवे हिरण्णागरा य सुवण्णागरा य रयणागरा य वइरागरा य। तं सेयं खलु अम्हं हिरण्णस्स य सुवण्णस्स य रयणस्स य वइरस्स य पोयवहणं भरित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता हिरण्णस्स य सुवण्णस्स य रयणस्स य वइरस्स य तणस्स य कट्ठस्स य अन्नस्स य पाणियस्स य पोयवहणं भरेंति, भरेत्ता पयक्खिणाणुकूलेणं[3] वाएणं जेणेव गभीरए[4] पोयपट्टणे[5] तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोयवहणं लंबेंति, लंबेत्ता सगडी-सागडं सज्जेंति, सज्जेत्ता तं हिरण्णं[6] •च सुवण्णं च रयणं च° वइरं च एगट्ठियाहिं पोयवहणाओ संचारेंति, संचारेत्ता सगडी-सागडं संजोएंति[7], जेणेव हत्थिसीसए[8] नयरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता हत्थिसीसयस्स नयरस्स बहिया अग्गुज्जाणे सत्थनिवेसं करेंति, करेत्ता सगडी-सागडं मोएंति, मोएत्ता महत्थं[9] •महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं° पाहुडं गेण्हंति, गेण्हित्ता हत्थिसीसयं नयरं अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता जेणेव से कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तं महत्थं[10] •महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं° पाहुडं उवणेंति॥

आसाणं आणयण-पदं

१७ तए णं से कणगकेऊ राया तेसिं संजत्ता-नावावाणियगाणं तं महत्थं[11] •महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं पाहुडं° पडिच्छइ, पडिच्छित्ता ते संजत्ता-नावावाणियगे एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया! गामागर[12]-•नगर-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-पट्टण-आसम-निगम-संबाह-सण्णिवेसाइं° आहिंडह, लवणसमुद्दं च अभिक्खणं-अभिक्खणं पोयवहणेणं ओगाहेह। तं अत्थियाइं च केइ भे[13] कहिंचि अच्छेरए दिट्ठपुव्वे?

---

१. निब्भया निब्भेया (ग)।
२ निउव्विग्गा (ख)।
३ दक्खिणाणु° (ख, ग)।
४ गभीर (ख, ग, घ)।
५ पोयवहणपट्टणे (ग)।
६. सं० पा०—हिरण्णं जाव वइरं।
७. जोएंति (क, ख, घ)।
८. हत्थिसीसे (घ)।
९. सं० पा०—महत्थं जाव पाहुडं।
१०. सं० पा०—महत्थं जाव पाहुडं।
११. सं० पा०—महत्थं जाव पडिच्छइ।
१२. सं० पा०—गामागर जाव आहिंडह।
१३ हे (ग)।

१८ तए णं ते संजत्ता-नावावाणियगा कणगकेउं एवं वयासी—एवं खलु अम्हे देवाणुप्पिया ! इहेव हत्थिसीसे नयरे परिवसामो तं चेव जाव[1] कालियदीवंतेणं संछूढा। तत्थ णं बहवे हिरण्णागरे य[2] •सुवण्णागरे य रयणागरे य वइरागरे य°, बहवे तत्थ[3] आसे पासामो[4]।
किं ते ? हरिरेणु जाव[5] अम्हं गंधं आघायंति, आघाइत्ता भीया तत्था उव्विग्गा उव्विग्गमणा तओ अणेगाइं जोयणाइं उब्भमंति। तए णं सामी ! अम्हेहिं कालियदीवे 'ते आसा' अच्छेरए दिट्ठपुव्वे ॥

१९ तए णं से कणगकेऊ तेसिं संजत्ता-नावावाणियगाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म ते संजत्ता-नावावाणियए एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! मम कोडुंबियपुरिसेहिं सद्धिं कालियदीवाओ ते आसे आणेह ॥

२०. तए णं ते संजत्ता-नावावाणियगा[6] एवं सामि ! त्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति ॥

२१. तए णं से कणगकेऊ कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! संजत्ता-नावावाणियएहिं सद्धिं कालियदीवाओ मम आसे आणेह। तेवि पडिसुणेंति ॥

२२. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा सगडी-सागडं सज्जेंति, सज्जेत्ता तत्थ णं बहूणं वीणाण य वल्लकीण य भामरीण य कच्छभीण य भंभाण य छब्भामरीण य चित्तवीणाण य अण्णेसिं च बहूणं सोइंदिय-पाउग्गाणं दव्वाणं सगडी-सागडं भरेंति। बहूणं किण्हाण य[7] •नीलाण य लोहियाण य हालिद्दाण य° सुक्किलाण य कट्ठकम्माण य चित्तकम्माण य पोत्थकम्माण य लेप्पकम्माण य गंथिमाण य वेढिमाण य पूरिमाण य संघाइमाण य अण्णेसिं च बहूणं चक्खिंदिय-पाउग्गाणं दव्वाणं सगडी-सागडं भरेंति। बहूणं कोट्ठपुडाण य[8] •पत्तपुडाण य चोयपुडाण य तगरपुडाण य एलापुडाण य हिरिवेरपुडाण य उसीरपुडाण य चंपगपुडाण य मरुयगपुडाण य दमणगपुडाण य जातिपुडाण य जुहियापुडाण य मल्लियापुडाण य वासंतियापुडाण य केयइपुडाण य कप्पूरपुडाण य पाडलपुडाण य° अण्णेसिं च बहूणं घाणिंदिय-पाउग्गाणं दव्वाणं सगडी-सागडं

---

१. ना० १।१७।४-१३।
२. सं० पा०—हिरण्णागरे य जाव बहवे, हिरण्णागरा° (ख, ग)।
३ यत्थ (ख); अत्थि (घ)।
४. एतत् क्रियापदं १४ सूत्रानुसारेण स्वीकृतम्।
५. ना० १।१७।१४,१५।
६. नावावाणियगा कणगकेउं एवं वयासी (क, ख, ग, घ)। यद्यपि सर्वेष्वपि आदर्शेषु असौ पाठो विद्यते, तथापि अर्थमीमांसया नासौ संगच्छते। एतादृशप्रसंगे तथा अदर्शनात्। द्रष्टव्यम्—१।८।१०४ सूत्रम्। तेनासौ पाठः पाठान्तरत्वेन स्वीकृतः।
७. सं० पा०—किण्हाण य जाव सुक्किलाण।
८ सं० पा०—कोट्ठपुडाण य जाव अण्णेसिं।

भरेंति। वहुस्स खडस्स य गुलस्स य 'सक्कराए य मच्छंडियाए य'[1] पुप्फुत्तर-पउमुत्तराए अण्णेसिं च जिब्भिदिय-पाउग्गाणं दव्वाणं सगडी-सागडं भरेंति। वहूणं कोयवाणं[2] य कंवलाण य पावाराण य नवतयाण य 'मलयाण य'[3] मसूराण य 'सिलावट्टाण य जाव हंसगब्भाण य'[4] अण्णेसिं च फासिंदिय-पाउग्गाणं दव्वाणं सगडी-सागडं भरेंति, भरेत्ता सगडी-सागडं जोयंति, जोइत्ता जेणेव गंभीरए पोयट्ठाणे तेणेव उवागच्छंति, सगडी-सागडं मोएंति, मोएत्ता पोयवहणं सज्जेंति, सज्जेत्ता तेसिं उक्किट्ठाणं सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधाणं कट्ठस्स य 'तणस्स य'[5] पाणियस्स य तंदुलाण य समियस्स य गोरसस्स य जाव[6] अण्णेसिं च बहूणं पोयवहणपाउग्गाणं पोयवहणं भरेंति, भरेत्ता दक्खिणाणुकूलेणं वाएणं जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोयवहणं लंवेंति, लंवेत्ता ताइं उक्किट्ठाइं सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधाइं, एगट्ठियाहिं कालियदीवं उत्तरेंति।

जहिं-जहिं च णं ते आसा आसयंति वा सयंति वा चिट्ठंति वा तुयट्टंति वा तहिं-तहिं च णं ते कोडुंवियपुरिसा ताओ वीणाओ य जाव चित्तवीणाओ य अण्णाणि य बहूणि सोइंदिय पाउग्गाणि य[7] दव्वाणि समुदीरेमाणा-समुदीरेमाणा ठवेंति, तेसिं च परिपेरंतेणं पासए[8] ठवेंति, ठवेत्ता निच्चला निप्फंदा तुसिणीया चिट्ठंति।

जत्थ-जत्थ ते आसा आसयंति वा[9] °सयंति वा चिट्ठंति वा° तुयट्टंति वा तत्थ-तत्थ णं ते कोडुंवियपुरिसा बहूणि किण्हाणि य नीलाणि य लोहियाणि य हालिद्दाणि य सुक्किलाणि य कट्ठकम्माणि य जाव संघाइमाणि य अण्णाणि य बहूणि चक्खिंदिय-पाउग्गाणि य दव्वाणि ठवेंति, तेसिं परिपेरंतेणं पासए ठवेंति, ठवेत्ता निच्चला निप्फंदा तुसिणीया चिट्ठंति।

जत्थ-जत्थ ते आसा आसयंति वा सयंति वा चिट्ठंति वा तुयट्टंति वा तत्थ-तत्थ णं ते कोडुंवियपुरिसा तेसिं वहूणं कोट्ठपुडाण य जाव पाडलपुडाण य अण्णेसिं

---

१. सक्कर तणस्स य पाणियस्स य गोरसस्स य तंदुलाण य समियस्स य जाव अण्णेसिं च पोयवहणपाओग्गाणं य (क), °मुच्छंडियाए य तणस्स य पाणियस्स य गोरसस्स य तंदुलाण य समियस्स य जाव अण्णेसिं च पोयवहण-पाओग्गाणं य (ख)।

२ कोयगाणं (वृ), कोयहा (वा ?) णि (आयारचूला ५।१४)।

३ मसगाण य (वृपा)।

४. 'सिलावट्टाण य जाव हंसगब्भाण य' अस्य पूर्तिस्थलं नोपलभ्यते। प्रज्ञापनाया प्रथमपदे हंसगब्भ' इति पदं मध्यवर्ति विद्यते। अन्तिमं पदं 'सूरकंते' अस्ति। उत्तराध्ययनस्य ३६ अध्ययनेपि एवमेव।

५ × (ख, ग, घ)।

६ ना० १।८।६६।

७ × (ख, घ)।

८. पासे (ख, घ)।

९. सं० पा०—आसयंति वा जाव तुयट्टंति।

च बहूण घाणिंदिय-पाउग्गाण दव्वाण पुंजे य नियरे य करेंति, करेत्ता तेसिं परिपेरंतेण[1] °पासए ठवेंति, ठवेत्ता निच्चला निप्फंदा तुसिणीया° चिट्ठंति ।

जत्थ-जत्थ ते आसा आसयंति वा सयंति वा चिट्ठंति वा तुयट्टंति वा तत्थ-तत्थ णं ते कोडुंबियपुरिसा गुलस्स जाव पुप्फुत्तर-पउमुत्तराए अण्णेसिं च बहूणं जिब्भिंदिय-पाउग्गाण दव्वाण पुंजे य नियरे य करेंति, करेत्ता वियरए खणंति, खणित्ता गुलपाणगस्स 'खंडपाणगस्स पोरपाणगस्स'[2] अण्णेसिं च बहूणं पाणगाणं वियरए भरेंति, भरेत्ता तेसिं परिपेरंतेणं पासए ठवेंति[3], °ठवेत्ता निच्चला निप्फंदा तुसिणीया° चिट्ठंति ।

जहिं-जहिं च णं ते आसा आसयंति वा सयंति वा चिट्ठंति वा तुयट्टंति वा तहिं-तहिं च णं ते कोडुंबियपुरिसा बहवे 'कोयवया जाव सिलावट्टया'[4] अण्णाणि य फासिंदिय-पाउग्गाइं अत्थुय-पच्चत्थुयाइं ठवेंति, ठवेत्ता तेसिं परिपेरंतेण[5] °पासए ठवेंति, ठवेत्ता निच्चला निप्फंदा तुसिणीया° चिट्ठंति ॥

२३. तए णं ते आसा जेणेव ते उक्किट्ठा सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधा तेणेव उवागच्छंति ॥

अमुच्छिय-आसाणं सायत्त-विहार-पदं

२४. तत्थ णं अत्थेगइया आसा अपुव्वा णं इमे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधत्ति[6] कट्टु तेसु उक्किट्ठेसु सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधेसु अमुच्छिया अगढिया अगिद्धा अणज्झोववण्णा तेसिं उक्किट्ठाणं सद्द[7]-°फरिस-रस-रूव°-गंधाणं दूरंदूरेणं अवक्कमंति । ते णं तत्थ पउर-गोयरा पउर-तणपाणिया निब्भया निरुव्विग्गा सुहंसुहेणं विहरंति ॥

निगमण-पदं

२५. एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा[8] °निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे° सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधेसु नो सज्जइ नो रज्जइ नो गिज्झइ नो मुज्झइ नो अज्झोववज्झइ, से णं इहलोए चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाण य अच्चणिज्जे जाव[9] चाउरंतं संसारकंतारं वीईवइस्सइ ॥

---

१. सं० पा०—परिपेरंतेण जाव चिट्ठंति ।

२. खंडपाणगस्स पोरपाणगस्स (क), पोरपाणगस्स य खंडपाणगस्स य (ख)· खंडपाणगस्स (ग) ।

३. सं० पा०—ठवेंति जाव चिट्ठंति ।

४. अस्य सूत्रस्य पूर्वपाठापेक्षया 'कोयवया जाव हंसगब्भा' एव पाठो युज्यते । संभवतः संक्षेपीकरणेऽस्य विपर्ययो जातः ।

५. सं० पा०—परिपेरंतेण जाव चिट्ठंति ।

६. गंधाति (ख, घ) ।

७. सं० पा०—सद्द जाव गंधाणं ।

८. सं० पा०—निग्गंथो वा° ।

९. ना० १।२।७६ ।

मुच्छिय-आसाणं परायत्त-पद

२६ तत्थ ण अत्थेगइया आसा जेणेव उक्किट्ठा सद्द-फरिस-रस-रूव-गधा तेणेव उवागच्छति । तेसु उक्किट्ठेसु सद्द-फरिस-रस-रूव-गधेसु मुच्छिया गढिया गिद्धा अज्झोववण्णा आसेविउ पयत्ता यावि होत्था ।।

२७. तए ण ते आसा ते उक्किट्ठे सद्द-फरिस-रस-रूव-गधे आसेवमाणा तेहिं बहूहि कूडेहि य पासेहि य गलएसु य पाएसु य बज्झति ।।

२८ तए णं ते कोडुवियपुरिसा ते आसे गिण्हति, गिण्हित्ता एगट्ठियाहि पोयवहणे सचारेति, कट्ठस्स य[1] °तणस्स य पाणियस्स य तदुलाण य समियस्स य गोरसस्स य जाव[2] अण्णेसि च बहूण पोयवहणपाउग्गाण पोयवहण° भरेति ।।

२९. तए ण ते सजत्ता-नावावाणियगा दक्खिणाणुकूलेण वाएण जेणेव गभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पोयवहण लवेति, लवेत्ता ते आसे उत्तारेति, उत्तारेत्ता जेणेव हत्थिसीसे नयरे जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल °परिग्गहिय दसणह सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु जएण विजएण° वद्धावेति ते आसे उवणेति ।।

३० तए ण से कणगकेऊ राया तेसि सजत्ता-नावावाणियगाण उस्सुक[4] वियरइ, सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ।।

३१ तए ण से कणगकेऊ राया कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ।।

३२ तए ण से कणगकेऊ राया आसमद्दए सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—तुब्भे ण देवाणुप्पिया ! मम आसे विणएह ।।

३३ तए ण ते आसमद्दगा तहत्ति पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता ते आसे बहूहि मुहवधेहि य कण्णवधेहि य नासावधेहि य वालवधेहि य खुरबधेहि य 'कडगवधेहि य खलिणवधेहि य'[5] ओवीलणाहि[6] य 'पडयाणेहि य'[7] अकणाहि य वेत्तप्पहारेहि[8] य लयप्पहारेहि[9] य कसप्पहारेहि य छिवप्पहारेहि य विणयति, विणइत्ता कणगकेउस्स रण्णो उवणेति ।।

३४. तए ण से कणगकेऊ राया ते आसमद्दए सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ।।

---

१ स० पा०—कट्ठस्स य जाव भरेंति ।
२ ना० १।८।६६ ।
३ स० पा०—करयल जाव वद्धावेंति ।
४. उस्सुक्क (क, ग, घ) ।
५. × (क), °खलीण° (ख, ग) ।
६. अधिलाणेहि (क), आवलणेहि (ख), अहिलाणवधेहि (ग), अहिलाणेहि (घ, वृपा) ।
७ × (क), पलियाणेही य (ख) ।
८. वित्त° (ख, ग, घ) ।
९. × (ख, ग) ।

३५ तए णं ते आसा बहूहिं मुहबंधेहि य जाव[1] छिवप्पहारेहि य बहूणि सारीर-माणसाइं दुक्खाइं पावेंति ॥

निगमण-पदं

३६. एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा[2] °निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइए समाणे इट्ठेसु सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधेसु सज्जइ रज्जइ गिज्झइ मुज्झइ अज्झोववज्झइ, से णं इहलोए चेव बहूणं समणाणं[3] °बहूणं समणीणं बहूणं सावगाणं बहूणं° सावियाण य हीलणिज्जे जाव[4] चाउरंतं संसारकंतारं भुज्जो-भुज्जो अणुपरियट्टिस्सइ ।

गाहा —

कल-रिभिय-महुर-तंती-तल-ताल-वंस-कउहाभिरामेसु[5] ।
सद्देसु रज्जमाणा[6], रमंति सोइंदिय - वसट्टा ॥१॥
सोइंदिय-दुद्दंतत्तणस्स अह 'एत्तिओ हवइ'[7] दोसो ।
दीविग-रुयमसहंतो,[8] वहबंधं तित्तिरो पत्तो ॥२॥
थण-जहण-वयण-कर-चरण-नयण-गव्विय-विलासियगईसु[9] ।
रूवेसु रज्जमाणा, रमंति चक्खिंदिय-वसट्टा ॥३॥
चक्खिंदिय-दुद्दंतत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो ।
जं[10] जलणंमि जलंते, पडइ पयंगो अबुद्धीओ ॥४॥
अगरुवर-पवरधूवण - उउयमल्लाणुलेवणविहीसु ।
गंधेसु रज्जमाणा, रमंति घाणिंदिय-वसट्टा ॥५॥
घाणिंदिय-दुद्दंतत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो ।
जं ओसहिगंधेणं, बिलाओ निद्धावई उरगो ॥६॥
तित्त-कडुयं[11] कसायं, महुरं[12] बहुखज्ज-पेज्ज-लेज्झेसु ।
आसायंमि[13] उ गिद्धा, रमंति जिब्भिंदिय-वसट्टा ॥७॥
जिब्भिंदिय-दुद्दंतत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो ।
जं गललग्गुक्खित्तो, फुरइ थलविरेल्लिओ[14] मच्छो ॥८॥

---

१. ना० १।१७।३३ ।
२. सं० पा०—निग्गंथो वा पव्वइए ।
३. सं० पा०—समणाणं जाव सावियाणं ।
४. ना० १।३।२४ ।
५. कट्ठहा° (क), ककुहा° (ख); ककुदा° (घ, वृ) ।
६. रयमाणा (ख) ।
७. तत्तियो हवति (क, ग),हवइ एत्तिओ (ख) ।
८. भयममहंतो (ग), खमसहंतो (घ, वृ) ।
९. °मईसु (क) ।
१०. स (क) ।
११. कटुय (घ) ।
१२. अविलमहुरं (घ) ।
१३. आसायंति (ख) ।
१४. °विरिल्लिओ (क,ख,ग), °विरल्लिओ(घ) ।

उउ-भयमाणसुहेसु[1] य, सविभव[2]-हियमण-निव्वुइकरेसु[3] ।
फासेसु रज्जमाणा, रमंति फासिंदिय-वसट्टा ॥९॥
फासिंदिय-दुद्दंतत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो ।
ज खणइ मत्थय कुंजरस्स लोहंकुसो तिक्खो ॥१०॥
कल-रिभिय-महुर-तंती-तल-ताल-वंस-कउहाभिरामेसु ।
सद्देसु जे न गिद्धा, वसट्टमरण न ते मरए ॥११॥
थण-जहण-वयण-कर-चरण-नयण-गव्विय-विलासियगईसु[4] ।
रूवेसु जे न रत्ता, वसट्टमरण न ते मरए ॥१२॥
अगरुवर - पवर - धूवण - उउयमल्लाणुलेवणविहीसु ।
गंधेसु[5] जे न गिद्धा, वसट्टमरण न ते मरए ॥१३॥
तित्त-कडुय, कसाय, महुर बहुखज्ज-पेज्ज-लेज्झेसु ।
आसायमि 'न गिद्धा',[6] वसट्टमरण न ते मरए ॥१४॥
उउ-भयमाणसुहेसु य, सविभव-हिययमण-निव्वुइकरेसु[7] ।
फासेसु जे न गिद्धा, वसट्टमरण न ते मरए ॥१५॥
सद्देसु य भद्दय[8]-पावएसु सोयविसयमुवगएसु ।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व, समणेण सया न होयव्व ॥१६॥
रूवेसु य भद्दय[9] - पावएसु चक्खुविसयमुवगएसु ।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व, समणेण सया न होयव्व ॥१७॥
गंधेसु य भद्दय-पावएसु घाणविसयमुवगएसु ।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व, समणेण सया न होयव्व[10] ॥१८॥
रसेसु य भद्दय-पावएसु जिब्भविसयमुवगएसु ।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व, समणेण सया न होयव्व ॥१९॥
फासेसु य भद्दय-पावएसु कायविसयमुवगएसु ।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व, समणेण सया न होयव्व[11] ॥२०॥

---

१. °सुहेहिं (क, ख) ।
२. सविहव (क, ग) ।
३. °करेहिं (क, ख, ग) ।
४ °गईसु (ग) ।
५ घाणेसु (ख) ।
६. अगिद्धा (क, ख, ग) ।
७ पेच्चुय° (क) ।
८. सद्देसु य (ग) ।
९ भद्दग (ख, ग) ।
१०. होदव्व (ग) ।
११. एतद् गाथा-विंशतिक वृत्तिकृता प्रस्तुतवाचनाया न स्वीक्रियते—यथा—अर्थेन्द्रियासक्तानां स्वरूपस्य इन्द्रियासक्तदोषस्य चाभिधायकः गाथाद्वयं वाचनान्तरेष्विदमुपलभ्यते ।

३७ एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेण जाव[1] संपत्तेणं सत्तरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति बेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

जह सो कालियदीवो, अणुवमसोक्खो तहेव जइ-धम्मो ।
जह आसा तह साहू, वणियव्व अणुकूलकारिजणा ॥१॥
जह सद्दाइ-अगिद्धा, पत्ता नो पासबंधणं आसा ।
तह विसएसु अगिद्धा, वज्झंति न कम्मणा साहू ॥२॥
जह सच्छंदविहारो, आसाण तह इहं वरमुणीणं ।
जर-मरणाइ-विवज्जिय, सायत्ताणंदनिव्वाणं ॥३॥
जह सद्दाइसु गिद्धा, बद्धा आसा तहेव विसयरया ।
पावेंति कम्मबंधं, परमासुह-कारणं घोरं ॥४॥
जह ते कालियदीवा, णीया अण्णत्थ दुहगणं पत्ता ।
तह धम्म-परिब्भट्ठा, अधम्मपत्ता इह जीवा ॥५॥
पावेंति कम्म-नरवइ-वसया संसारवाहियालीए[2] ।
आसप्पमद्दएहि व, नेरइयाईहिं दुक्खाइं ॥६॥

———

१. ना० १।१।७ ।

२. °वाहयालीए (घ) ।

अट्ठारसमं अज्झयणं

सुंसुमा

उक्खेव-पदं

१ जइ ण भंते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव[1] सपत्तेणं सत्तरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, अट्ठारसमस्स ण भंते नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

२ एव खलु जंबू ! तेणं कालेण तेण समएण रायगिहे नाम नयरे होत्था—वण्णओ[2] ।।

३ तत्थ ण धणे नाम सत्थवाहे । भद्दा भारिया ।।

४ तस्स ण धणस्स सत्थवाहस्स पुत्ता भद्दाए अत्तया पच सत्थवाहदारगा होत्था, त जहा—धणे धणपाले[3] धणदेवे धणगोवे धणरक्खिए ।।

५ तस्स ण धणस्स सत्थवाहस्स धूया भद्दाए अत्तया पंचण्हं पुत्ताण अणुमग्गजाइया सुसुमा नाम दारिया होत्था—सूमालपाणिपाया ।।

चिलाय-दासचेडस्स विग्गह-पद

६ तस्स ण धणस्स सत्थवाहस्स चिलाए नाम दासचेडे होत्था—अहीणपचिंदिय-सरीरे मसोवचिए बालकीलावणकुसले यावि होत्था[4] ।।

७ तए ण से दासचेडे सुसुमाए दारियाए बालग्गाहे जाए यावि होत्था, सुसुम दारिय कडीए गिण्हइ, गिण्हित्ता बहूहि दारएहि य दारियाहि य डिंभएहि य डिंभियाहि य कुमारएहि य कुमारियाहि य सद्धि अभिरममाणे-अभिरममाणे विहरइ ।।

८ तए ण से चिलाए दासचेडे तेसिं बहूण दारयाण य दारियाण य डिभयाण य

---

१ ना० १।१।७ ।

२ ओ० सू० १ ।

३ धणवाले (क, ख) ।

४. होत्था सूमालपाणिपाया (ख, ग) ।

डिंभियाण य कुमारयाण य कुमारियाण य अप्पेगइयाण खुल्लए[1] अवहरइ[2], °अप्पेगइयाण वट्टए अवहरइ, अप्पेगइयाण आडोलियाओ[3] अवहरइ, अप्पेगइयाणं तिदूसए अवहरइ, अप्पेगइयाण पोत्तुल्लए अवहरइ, अप्पेगइयाण साडोल्लए अवहरइ,° अप्पेगइयाण आभरणमल्लालंकारं अवहरइ, अप्पेगइए आउसइ अवहसइ निच्छोडेइ निब्भच्छेइ तज्जेइ तालेइ ॥

९ तए णं ते बहवे दारगा य दारिया य डिंभया य डिंभिया य कुमारया य कुमारिया य रोयमाणा य कंदमाणा य सोयमाणा य तिप्पमाणा य विलवमाणा य साणं-साणं अम्मापिऊणं निवेदेंति ॥

चिलायस्स गिहाओ निक्कासण-पदं

१० तए णं तेसिं बहूणं दारयाण य दारियाण य डिंभयाण य डिंभियाण य कुमारयाण य कुमारियाण य अम्मापियरो जेणेव धणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता धणं सत्थवाहं बहूहिं खिज्जणियाहि य रुंटणाहि य उवलंभणाहि[4] य खिज्जमाणा य रुंटमाणा य उवलंभमाणा[5] य धणस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं निवेदेंति ॥

११. तए णं से धणे सत्थवाहे चिलायं दासचेडं एयमट्ठं भुज्जो-भुज्जो निवारेइ, नो चेव णं चिलाए दासचेडे उवरमइ ॥

१२ तए णं से चिलाए दासचेडे तेसिं बहूणं दारयाण य दारियाण य डिंभयाण य डिंभियाण य कुमारयाण य कुमारियाण य अप्पेगइयाणं खुल्लए अवहरइ[6] अप्पेगइयाणं वट्टए अवहरइ, अप्पेगइयाणं आडोलियाओ अवहरइ, अप्पेगइयाणं तिदूसए अवहरइ, अप्पेगयाणं पोत्तुल्लए अवहरइ, अप्पेगइयाणं साडोल्लए अवहरइ, अप्पेगइयाणं आभरणमल्लालंकारं अवहरइ, अप्पेगइए आउसइ अवहसइ निच्छोडेइ निब्भच्छेइ तज्जेइ° तालेइ ॥

१३ तए णं ते बहवे दारगा य दारिया य डिंभया य डिंभिया य कुमारया य कुमारिया य रोयमाणा य[7] °कंदमाणा य सोयमाणा य तिप्पमाणा य विलवमाणा य साणं-साणं° अम्मापिऊणं निवेदेंति ॥

१४ तए णं ते आसुरुत्ता रुट्ठा कुविया चंडिक्किया मिसिमिसेमाणा जेणेव धणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता बहूहिं खिज्जणाहि य[8] °रुंटणाहि य

---

१ खल्लए (ग)।

२ सं० पा०—एवं वट्टए आडोलियाओ तिंदूसए पोत्तुल्लए साडोल्लए।

३ अप्पोडियाओ (ख) आलोडियाओ (क्व)।

४. उवलंभणियाहि (ख), उवलंभणायाहि (ग)।

५ उवालभमाणा (क), उवलभमाणा (ख, ग)।

६. सं० पा०—अवहरइ जाव तालेइ।

७. सं० पा०—रोयमाणा य जाव अम्मापिऊणं।

८. सं० पा०—खिज्जणाहि य जाव एयमट्ठं।

उवलभणाहि य खिज्जमाणा य रुटमाणा य उवलभमाणा य धणस्स सत्थवाहस्स॰ एयमट्ठ निवेदेति ॥

१५. तए ण से धणे सत्थवाहे बहूण दारगाणं दारियाण डिभयाण डिभियाण कुमार-याण कुमारियाणं अम्मापिऊण अतिए एयमट्ठ सोच्चा आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चडिक्किए मिसिमिसेमाणे चिलाय दासचेड उच्चावयाहि आउसणाहिं[1] आउसइ उद्धसइ नि०भच्छेइ निच्छोडेइ तज्जेइ उच्चावयाहि तालणाहि तालेइ साओ गिहाओ निच्छुभइ ॥

चिलायस्स दुव्वसण-पवत्ति-पदं

१६. तए ण से चिलाए दासचेडे साओ गिहाओ निच्छूढे समाणे रायगिहे नयरे सिघा-डग[2]-॰तिग-चउक्क चच्चर-चउम्मुह-महापह॰पहेसु देवकुलेसु य सभासु य पवासु य जूयखलएसु य वेसाघरएसु य पाणघरएसु य सुहसुहेण परिवट्टइ[3] ॥

१७ तए ण से चिलाए दासचेडे अणोहट्टिए[4] अणिवारिए सच्छदमई सइरप्पयारी 'मज्जप्पसगी चोज्जप्पसगी'[5] जूयप्पसगी वेसप्पसगी परदारप्पसगी जाए यावि होत्था ॥

चोरपल्ली-पद

१८. तए ण रायगिहस्स नयरस्स अदूरसामते दाहिणपुरत्थिमे दिसीभाए सीहगुहा नामं चोरपल्ली होत्था—विसम-गिरिकडग-कोलव[6]-सण्णिविट्ठा 'वसीकलक-पागार'[7]-परिक्खित्ता छिण्णसेल-विसमप्पवाय[8]-फरिहोवगूढा एगदुवारा अणेग-खडी विदितजण-निग्गमप्पवेसा अब्भितरपाणिया सुदुल्लभजल-पेरता सुबहुस्सवि कूवियबलस्स आगयस्स दुप्पहसा यावि होत्था[9] ॥

१९ तत्थ ण सीहगुहाए चोरपल्लीए विजए नाम चोरसेणावई परिवसई—अहम्मिए[10] ॰अहम्मिट्ठे अहम्मक्खाई अहम्माणुए अहम्मपलोई अहम्मपलज्जणे अहम्मसील-समुदायारे अहम्मेण चेव वित्तिं कप्पेमाणे विहरइ। हण-छिंद-भिंद-वियत्तए लोहियपाणी चडे रुद्दे खुद्दे साहस्सिए उक्कचण-वचण-माया-नियडि-कवड-कूड-साइ-सपओग-बहुले निस्सीले निव्वए निग्गुणे निप्पच्चक्खाणपोसहोववासे बहूण

---

१ × (ख, ग, घ)।

२ स० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु।

३ परिवड्ढइ (घ)।

४. अणोहट्टए (ख); अणाहट्टिए (घ), अणोहट्टए (वृ)।

५ चोज्जप्पसगी मसप्पसगी (घ)।

६ कोडव (ग)।

७ वशीकृतप्राकारा (वृपा)।

८. ॰प्पवेस (ख)।

९. वाचनान्तरे पुनरेव पठ्यते—जत्थ चउरग-बलनिउत्तावि कुविय-बलाहय-महिय-पवर-वीरघाइय-विवडिय-चिधज्झयपडागा कीरति (वृ)।

१०. स० पा०—अहम्मिए जाव अहम्मकेऊ।

दुप्पय-चउप्पय-मिय-पसु-पक्खि-सरिसिवाणं घायाए वहाए उच्छायणयाए° अहम्मकेऊ समुट्ठिए बहुनगर-निग्गय-जसे सूरे दढप्पहारी साहसिए सद्दवेही ॥

२० से णं तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पचण्ह चोरसयाणं आहेवच्चं[1] °पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे° विहरइ ॥

२१ तए णं से विजए 'तक्कर-सेणावई'[2] बहूणं चोराण य पारदारियाण य गंठिभेयगाण य संधिच्छेयगाण य खत्तखणगाण य रायावगारीण य अणधारगाण य बालघायगाण य वीसंभघायगाण य जूयकाराण य खंडरक्खाण य अण्णेसिं च बहूणं छिण्ण-भिण्ण-बाहिराहयाणं कुडंगे यावि होत्था ॥

२२ तए णं से विजए चोरसेणावई[3] रायगिहस्स दाहिणपुरत्थिमं जणवयं बहूहिं गामघाएहि य नगरघाएहि य गोगहणेहि य बंदिग्गहणेहि[4] य पंथकुट्टणेहि[5] य खत्तखणणेहि य उवीलेमाणे-उवीलेमाणे विद्धंसेमाणे-विद्धंसेमाणे नित्थाणं[6] निद्धणं करेमाणे विहरइ ॥

चिलायस्स चोरपल्ली-गमण-पदं

२३ तए णं से चिलाए दासचेडए रायगिहे बहूहिं अत्थाभिसंकीहि य चोज्जाभिसंकीहि[7] य दाराभिसंकीहि य धणिएहिं[8] य जूयकरेहिं[9] य परब्भवमाणे-परब्भवमाणे रायगिहाओ नगराओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सीहगुहा चोरपल्ली तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता विजयं चोरसेणावइं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥

२४ तए णं से चिलाए दासचेडे विजयस्स चोरसेणावइस्स अग्ग-असिलट्ठिग्गाहे जाए यावि होत्था। जाहे वि य णं से विजए चोरसेणावई गामघायं वा[10] °नगरघायं वा गोगहणं वा बंदिग्गहणं वा° पंथकोट्टिं वा काउं वच्चइ[11] ताहे वि य णं से चिलाए दासचेडे सुबहुंपि कूवियबलं हय-महिय[12]-°पवरवीर-घाइय-विवडियचिंध-धय-पडागं किच्छोवगयपाणं दिसोदिसिं° पडिसेहेइ, पडिसेहेत्ता पुणरवि लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे सीहगुहं चोरपल्लिं हव्वमागच्छइ ॥

---

१. म० पा०—आहेवच्चं जाव विहरइ।
२. तक्करे चोरसेणावइ (घ)।
३. तक्करसेणावइ (क)।
४. × (ग)।
५. कोट्टणेहि (क)।
६. निद्धाणं (क)।
७. चोरा° (घ)।
८. धणएहि (ख)।
९. जुइ° (ख, ग)।
१०. सं० पा०—गामघायं वा जाव पंथकोट्टिं।
११. वयइ (घ)।
१२. सं० पा०—हयमहिय जाव पडिसेहेइ।

२५. तए णं से विजए चोरसेणावई चिलायं तक्कर वहूओ चोरविज्जाओ य चोरमते य चोरमायाओ य चोरनिगडीओ य सिक्खावेइ ॥

विजयस्स मच्चु-पदं

२६. तए ण से विजए चोरसेणावई अण्णया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते यावि होत्था ॥

२७. तए ण ताइ पंचचोरसयाइ विजयस्स चोरसेणावइस्स महया-महया इड्ढी-सक्कार-समुदएणं नीहरण करेति, करेत्ता वहूइ लोइयाइ मयकिच्चाइ करेति, करेत्ता[1] •कालेण° विगयसोया जाया यावि होत्था ॥

चिलायस्स चोरसेणावइत्त-पदं

२८ तए ण ताइ पचचोरसयाइ अण्णमण्ण सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एव वयासी—एव खलु अम्ह देवाणुप्पिया! विजए चोरसेणावई कालधम्मुणा सजुत्ते। अय च ण चिलाए तक्करे विजएण चोरसेणावइणा वहूओ चोरविज्जाओ य[2] •चोरमते य चोरमायाओ य चोरनिगडीओ य° सिक्खाविए। त सेय खलु अम्ह देवाणुप्पिया! चिलाय तक्कर सीहगुहाए चोरपल्लीए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठ पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता चिलाय सीहगुहाए चोरपल्लीए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचति ॥

२९. तए णं से चिलाए चोरसेणावई जाए—अहम्मिए[3] •अहम्मिट्ठे अहम्मक्खाई अहम्माणुए अहम्मपलोइ अहम्मपलज्जणे अहम्मसीलसमुदायारे अहम्मेण चेव वित्ति कप्पेमाणे° विहरइ ॥

३० तए ण से चिलाए चोरसेणावई चोरनायगे[4] •वहूण चोराण य पारदारियाण य गठिभेयगाण य सधिच्छेयगाण य खत्तखणगाण य रायावगारीण य अणधारगाण य वालघायगाण य वीसभघायगाण य जूयकाराण य खडरक्खाण य अण्णेसिं च वहूण छिण्ण-भिण्ण-वाहिराहयाण° कुडगे यावि होत्था ॥

३१. से ण तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पचण्ह चोरसयाण [5]•आहेवच्च पोरेवच्च सामित्तं भट्टित्त महत्तरगत्त आणा-ईसर-सेणावच्च कारेमाणे पालेमाणे विहरइ ॥

३२. तए ण से चिलाए चोरसेणावई° रायगिहस्स नयरस्स दाहिणपुरत्थिमिल्ल जणवय[6] •वहूहिं गामघाएहि य नगरघाएहि य गोगहणेहि य वदिग्गहणेहि य

---

१. स० पा०—करेत्ता जाव विगयसोया।

२ स० पा०—चोरविज्जाओ य जाव सिक्खाविए।

३, स० पा०—अहम्मिए जाव विहरइ।

४ स० पा०—चोरनायगे जाव कुडगे।

५. स० पा०—एव जहा विजओ तहेव सव्व जाव रायगिहस्स।

६. स० पा०—जणवय जाव नित्थाण।

पथकुट्टणेहि य खत्तखणणेहि य उवीलेमाणे-उवीलेमाणे विद्धंसेमाणे-विद्धंसेमाणे ° नित्थाण निद्धणं करेमाणे विहरइ ॥

चिलायस्स धणस्स गिहे चोरिय-पद

३३. तए ण से चिलाए चोरसेणावई अण्णया कयाइ विपुल असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेत्ता ते पच चोरसए आमतेइ तओ पच्छा ण्हाए कयवलिकम्मे भोयणमडवसि तेहिं पचहिं चोरसएहिं सद्धि विपुल असण-पाण-खाइम-साइम सुर च[1] •मज्ज च मंस च सीधु च ° पसन्न च आसाएमाणे विसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुजेमाणे विहरइ, जिमियभुत्तुत्तरागए ते पच चोरसए विपुलेण धूव-पुप्फ-गध-मल्लालकारेण[2] सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! रायगिहे नयरे धणे नाम सत्थवाहे अड्ढे । तस्स ण धूया भद्दाए अत्तया पचण्हं पुत्ताण अणुमग्गजाइया सुंसुमा नामं दारिया[3]—अहीणा जाव[4] सुरूवा । त गच्छामो ण देवाणुप्पिया ! धणस्स सत्थवाहस्स गिह विलुपामो । तुब्भ विपुले धण-कणग[5]-•रयण-मणि-मोत्तिय-संख °-सिल-प्पवाले मम सुसुमा दारिया ॥

३४ तए ण ते पच चोरसया चिलायस्स [एयमट्ठ ?] पडिसुणेति ॥

३५. तए ण ते चिलाए चोरसेणावई तेहिं पचहिं चोरसएहि सद्धि अल्ल[6] चम्मं दुरुहइ, दुरुहित्ता पच्चावरण्ह[7]-कालसमयसि पचहिं चोरसएहिं सद्धि सण्णद्ध[8]-•वद्ध-वम्मिय-कवए उप्पीलिय-सरासणपट्टिए पिणद्ध-गेविज्जे आविद्ध-विमल-वरचिंधपट्टे° गहियाउह-पहरणे माइय-गोमुहिएहिं फलएहिं, निक्किट्ठाहिं असिलट्ठीहिं[9], असगएहिं[10] तोणेहिं, सज्जीवेहि धणूहिं, समुक्खित्तेहि सरेहि, समुल्लालियाहिं दाहाहिं[11], ओसारियाहिं ऊरुघंटियाहिं, छिप्पतूरेहिं[12] वज्जमाणेहिं महया-महया उक्किट्ठ-सीहनाय[13]-•वोल-कलकलरवेणं पक्खुभिय-महा°समुद्द-रवभूय पिव करेमाणा सीहगुहाओ चोरपल्लीओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव रायगिहे नयरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता रायगिहस्स अदूरसामते

---

१. स० पा०—सुर च जाव पसन्न ।
२. द्रष्टव्यम्—१।७।६ सूत्रम् ।
३ दारिया होत्था (क, ख, ग, घ) ।
४. ना० १।१।१७ ।
५. स० पा० कणग जाव सिलप्पवाले । अस्याध्ययनस्य ३८ सूत्रे 'कणग जाव सावएज्ज' इति पाठोऽस्ति । अत्रापि तथैव युज्यते, किन्तु संक्षेपीकरणे सभवत. पदभिन्नता जाता ।
६. अल्ल (ख, ग, घ) ।
७ पुव्वावरण्ह (ग, घ) ।
८ स० पा०—सण्णद्ध जाव गहिया० ।
९ असीहिं (क), असिलट्ठेहिं (ख) ।
१० असागएहिं (क), अस गएहिं (ग) ।
११. दावाहिं (क) एतत् प्रहरण वगभाषाया 'दाव' इति उच्यते ।
१२. छिप्पतरेहिं (क), छिप्पत्तरेहिं (ग) ।
१३ स० पा०—सीहनाय जाव समुद्दरवभूयं ।

एग मह गहण अणुप्पविसति, अणुप्पविसित्ता दिवस खवेमाणा चिट्ठति ॥
३६. तए ण से चिलाए चोरसेणावई अद्धरत्त-कालसमयसि 'निसत-पडिनिसतसि'[1] पर्चाहि चोरसएहि सद्धि माडय-गोमुहिएहि फलएहि जाव[2] मूइयाहि ऊरुघटियाहि जेणेव रायगिहे नयरे पुरत्थिमिल्ले दुवारे तेणेव उवागच्छइ, उदगवत्थि परामुसइ आयते चोक्खे परमसुइभूए तालुग्घाडणि विज्ज आवाहेइ, आवाहेत्ता रायगिहस्स दुवारकवाडे उदएण अच्छोडेइ, अच्छोडेत्ता कवाड विहाडेइ, विहाडेत्ता रायगिह अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता महया-महया सद्देण उग्घोसेमाणे-उग्घोसेमाणे एव वयासी—एव खलु अह देवाणुप्पिया ! चिलाए नाम चोरसेणावई पंचहि चोरसएहि सद्धि सीहगुहाओ चोरपल्लीओ इह हव्वमागए धणस्स सत्थवाहस्स गिह घाउकामे। त जे ण नवियाए माउयाए दुद्ध पाउकामे, से ण निगच्छउ त्ति कट्टु जेणेव धणस्स सत्थवाहस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धणस्स गिह विहाडेइ ॥
३७ तए ण से धणे चिलाएण चोरसेणावइणा पचहि चोरसएहि सद्धि गिह घाइज्जमाण पासइ, पासित्ता भीए तत्थे तसिए उव्विग्गे सजायभए पचहि पुत्तेहि सद्धि एगत अवक्कमइ ॥
३८. तए णं से चिलाए चोरसेणावई धणस्स सत्थवाहस्स गिह घाएइ, घाएत्ता सुबहुं धण-कणग[3]-•रयण-मणि-मोत्तिय - सख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-सत-सार°-सावएज्जं सुसुम च दारिय गेण्हइ, गेण्हित्ता रायगिहाओ पडिनिक्खमई, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सीहगुहा तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

नगरगुत्तिएहि चोरनिग्गह-पदं

३९ तए ण से धणे सत्थवाहे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुबहु धण-कणग[4] सुसुम च दारिय अवहरिय जाणित्ता महत्थ महग्घ महरिह पाहुड गहाय जेणेव नगरगुत्तिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता त महत्थ महग्घ महरिह पाहुड उवणेइ, उवणेत्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! चिलाए चोरसेणावई[5] सीहगुहाओ चोरपल्लीओ इह हव्वमागम्म पचहि चोरसएहि सद्धि मम गिह घाएत्ता सुबहु धण-कणग[6] सुसुम च दारिय गहाय[7] •रायगिहाओ पडिनिक्खमित्ता जेणेव सीहगुहा तेणेव° पडिगए। तं इच्छामो

---

१ निसण्णपडिनिसण्णसि (क)।
२ ना० १।१८।३५।
३ स० पा०—कणग जाव सावएज्ज।
४. असौ पाठ ३८ सूत्रस्य सक्षेपोस्ति।
५. चोरसेणावई ५ (ख, ग)।
६ असौ पाठ ३८ सूत्रस्य सक्षेपोस्ति।
७ स० पा०—गहाय जाव पडिगए।

ण देवाणुप्पिया! सुसुमाए दारियाए कूव गमित्तए। तुब्भ णं देवाणुप्पिया! से विपुले धण-कणगे, मम सुसुमा दारिया ॥

४० तए ण ते नगरगुत्तिया धणस्स एयमट्ठ पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता सण्णद्ध-बद्ध-वम्मिय-कवया जाव[1] गहियाउहपहरणा महया-महया उक्किट्ठ[2]-•सीहनाय-बोल-कलकलरवेण पक्खुभिय-महा॰समुद्द-रवभूयं पिव करेमाणा रायगिहाओ निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव चिलाए चोरसेणावई तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता चिलाएण चोरसेणावइणा सद्धि सपलग्गा यावि होत्था ॥

४१ तए ण ते नगरगुत्तिया चिलाय चोरसेणावइ हय-महिय[3]-•पवरवीर-घाइय-विवडियचिंध-धय-पडाग किच्छोवगयपाण दिसोदिसिं॰ पडिसेहेति ॥

४२ तए ण ते पच चोरसया नगरगुत्तिएहिं हय-महिय[4]-•पवरवीर-घाइय-विवडिय-चिंध-धय-पडागा किच्छोवगयपाणा दिसोदिसिं॰ पडिसेहिया समाणा त विपुल धण-कणग विच्छड्डमाणा य विप्पकिरमाणा य सव्वओ समता विप्पलाइत्था ॥

४३ तए ण ते नगरगुत्तिया त विपुल धण-कणग गेण्हति, गेण्हित्ता जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवागच्छति ॥

चिलायस्स चोरपल्लीतो पलायण-पदं

४४. तए ण से चिलाए तं चोरसेन्न तेहिं नगरगुत्तिएहिं हय-महिय-पवर[5]•वीर-घाइय-विवडियचिंध-धय-पडागं किच्छोवगयपाण दिसोदिसिं पडिसेहिय [पासित्ता ?]॰ भीए तत्थे[6] सुसुम दारिय गहाय एग मह अगामियं[7] दीहमद्ध अडविं अणुप्पविट्ठे ॥

४५. तए ण से धणे सत्थवाहे सुसुमं दारिय चिलाएण अडवीमुहिं[8] अवहीरमाणिं पासित्ता ण पंचहिं पुत्तेहिं सद्धि अप्पछट्ठे सण्णद्ध-बद्ध-वम्मिय-कवए[9] चिलायस्स पयमग्गविहि 'अणुगच्छमाणे अभिगज्जते'[10] हक्कारेमाणे पुक्कारेमाणे अभितज्जेमाणे अभितासेमाणे पिट्ठओ अणुगच्छइ ॥

४६ तए ण से चिलाए त धण सत्थवाह पचहिं पुत्तेहिं सद्धि अप्पछट्ठ सण्णद्ध-बद्ध-वम्मिय-कवय[11] समणुगच्छमाण पासइ, पासित्ता अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे जाहे नो सचाएइ सुसुम दारियं निव्वाहित्तए ताहे सते

---

१ ना॰ १।१८।३५।
२ स॰ पा॰—उक्किट्ठ जाव समुद्दरवभूय।
३ स॰ पा॰—हयमहिय जाव पडिसेहेति।
४. स॰ पा॰—हयमहिय जाव पडिसेहिया।
५ स॰ पा॰—पवर जाव भीए।
६. द्रष्टव्यम—अस्याध्ययनस्य ३७ सूत्रम।
७ आगामिय (ख, ग, घ)।
८. अडवीमुहं (घ)।
९. द्रष्टव्यम्—अस्याध्ययनस्य ३५ सूत्रम्।
१०. अभिगच्छते अणुगिज्जमाणे (ख, ग)।
११. द्रष्टव्यम्—अस्याध्ययनस्य ३५ सूत्रम्।

तते परितते[1] नीलुप्पल[2]-•गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासं खुरधारं° असिं परामुसइ, परामुसित्ता सुसुमाए दारियाए उत्तमंग छिंदइ, छिंदित्ता त गहाय त अगामियं[3] अडविं अणुप्पविट्ठे ॥

४७ तए ण से चिलाए तीसे अगामियाए अडवीए तण्हाए [छुहाए ?] अभिभूए समाणे पम्हट्ठ-दिसाभाए सीहगुहं चोरपल्लिं असपत्ते अतरा चेव कालगए ॥

निगमण-पदं

४८. एवामेव समणाउसो[4] ! •जो अम्हं निग्गथो वा निग्गथी वा आयरिय-उवज्झायाण अतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइए समाणे इमस्स ओरालियसरीरस्स वतासवस्स पित्तासवस्स खेलासवस्स सुक्कासवस्स सोणियासवस्स[5] •दुरुय-उस्सास-निस्सासस्स दुरुय-मुत्त-पुरीस-पूय-बहुपडिपुण्णस्स उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाणग-वत-पित्त-सुक्क-सोणियसभवस्स अधुवस्स अणितियस्स असासयस्स सडण-पडण-विद्धसणधम्मस्स पच्छा पुरं च ण अवस्स-विप्पजहणिज्जस्स° वण्णहेउं वा[6] •रूवहेउ वा वलहेउ वा विसयहेउं वा आहारं° आहारेइ, से ण इहलोए चेव बहूण समणाण बहूणं समणीण बहूणं सावयाण बहूण सावियाण य हीलणिज्जे जाव[7] चाउरंत ससारकतार अणुपरियट्टिस्सइ—जहा व से चिलाए तक्करे ॥

धणस्स सुसुमाकए कदण-पद

४६ तए ण से धणे सत्थवाहे पचहिं पुत्तेहिं [सद्धिं ?] अप्पछट्ठे चिलायं तीसे अगामियाए अडवीए सव्वओ समता परिधाडेमाणे-परिधाडेमाणे सते तते परितते नो सचाएइ चिलाय चोरसेणावइं साहत्थिं गिण्हित्तए। से ण तओ पडिनियत्तइ, पडिनियत्तित्ता जेणेव सा सुसुमा चिलाएण जीवियाओ ववरोविया[8] तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुसुमं दारियं चिलाएण जीवियाओ ववरोवियं पासइ, पासित्ता परसुनियत्ते व्व चपगपायवे[9] •निव्वत्तमहे व्व इदलट्ठी विमुक्क-सधिबंधणे धरणितलसि सव्वगेहिं धसत्ति पडिए° ॥

५०. तए ण से धणे सत्थवाहे [पचहिं पुत्तेहिं सद्धिं ?] अप्पछट्ठे आसत्थे कूवमाणे कदमाणे विलवमाणे महया-महया सद्देण कुहुकुहुस्स परुन्ने सुचिरकालं वाहप्पमोक्खं[10] करेइ ॥

---

१. परिसते (ख, ग)।
२ स० पा०—नीलुप्पल°।
३. आगामिय (ख, ग, घ)।
४. स० पा०—समणाउसो जाव पव्वइए।
५. स० पा०—सोणियासवस्स जाव विद्धसण-धम्मस्स।
६ स० पा०—वण्णहेउ वा जाव आहारेइ।
७. ना० १।३।२४।
८ ववरोविएल्लिया (ग, घ)।
९. स० पा०—चपगपायवे°।
१० वाहमोक्ख (क, ग, घ)।

धणेणं अडवि-लघणट्ठं सुया-मंससोणियाहार-पदं

५१. तए ण से धणे सत्थवाहे पर्चाहि पुत्तेहिं [सद्धि ?] अप्पछट्ठे चिलाय तीसे अगामियाए अडवीए सव्वओ समता परिधाडेमाणे[1] तण्हाए छुहाए य परब्भाहते[2] समाणे तीसे अगामियाए अडवीए सव्वओ समता उदगस्स मग्गण-गवेसण करेमाणे[3] सते तते परितने निव्विण्णे तीसे अगामियाए अडवीए[4] उदग अणासाएमाणे जेणेव सुसुमा जीवियाओ ववरोविएल्लिया[5] तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जेट्ठ पुत्त धण[6] सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—एव खलु पुत्ता! सुसुमाए दारियाए अट्ठाए चिलाय तक्कर सव्वओ समता परिधाडेमाणा तण्हाए छुहाए य अभिभूया समाणा इमीसे अगामियाए अडवीए उदगस्स मग्गण-गवेसण करेमाणा नो चेव ण उदग आसादेमो। तए ण उदग अणासाएमाणा नो सचाएमो रायगिह सपावित्तए। तण्ण तुब्भे मम देवाणुप्पिया! जीवियाओ ववरोवेह, मम मस च सोणियं च आहारेह, तेण आहारेण अवथद्धा[7] समाणा तओ पच्छा इम अगामिय अर्डावं नित्थरिहिह[8], रायगिह च सपावेहिह[9], मित्त-नाइ[10]-•नियग-सयण-सबधि-परियण॰ अभिसमागच्छिहिह[11], अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह ॥

५२ तए ण से जेट्ठे पुत्ते धणेण सत्थवाहेणं एवं वुत्ते समाणे धण सत्थवाह एव वयासी—तुब्भे ण ताओ! अम्ह पिया गुरुजणया देवयभूया ठवका पइट्ठवका सरक्खगा सगोवगा। त कहण्ण अम्हे ताओ! तुब्भे जीवियाओ ववरोवेमो, तुब्भ ण मसं च सोणिय च आहारेमो ? त तुब्भे ण ताओ! 'ममं जीवियाओ ववरोवेह, मस च सोणिय च आहारेह, अगामिय'[12] अर्डावं नित्थरिहिह,[13] •रायगिह च सपावेहिह, मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबधि-परियणं अभिसमागच्छिहिह॰, अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह ॥

---

१ परिधावेमाणे (घ)।

२. परिब्भमने (क), परब्भते (ख, घ); परब्भए (घ)। द्रष्टव्यम्—१।१।१८४।

३ करेइ (क, ख, ग, घ)!

४ × (क, ख, ग), अडवीए उदगस्स मग्गण-गवेसणं करेमाणे नो चेव ण उदग आसाएइ तए ण (घ)।

५ ववरोविया (घ)।

६ धणे (क, ख, ग, घ); यद्यपि सर्वासु प्रतिषु 'धणे' इति पाठ उपलभ्यते, पर ज्येष्ठपुत्रस्य विशेषणत्वेन 'धण' इत्येव उपयुज्यते। लिपि-दोषात् 'धणे' इति जातमिति सभाव्यते।

७. अवबद्धा (ख)।

८. नित्थरिहह (क), नित्थरेहिह (ग)।

९. सपावेहह (क)।

१०. स॰ पा॰—नाइ॰।

११. अभिसमागच्छिहह (क, ख, घ)।

१२. चिन्हाङ्कितपाठ ५१ सूत्रात् किञ्चित् सक्षिप्तोऽस्ति।

१३. नित्थरेह (क), नित्थरह (ख, ग)। स॰ पा॰—तं चेव सव्व भणइ जाव अत्थस्स।

५३ तए ण धण सत्थवाह दोच्चे पुत्ते एवं वयासी—मा ण ताओ अम्हे जेट्ठ भायर गुरुदेवय जीवियाओ ववरोवेमो, तस्स ण मस च सोणिय च आहारेमो। त तुब्भे ण ताओ! ममं जीवियाओ ववरोवेह[1], •मस च सोणिय च आहारेह, अगामिय अडवि नित्थरिहिह, रायगिह च सपावेहिह, मित्त-नाइ-नियग-सयण-सबधि-परियण अभिसमागच्छिहिह, अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य° आभागी भविस्सह। एव जाव पचमे पुत्ते ॥

५४ तए ण से धणे सत्थवाहे पचपुत्ताण हियइच्छिय जाणित्ता ते पचपुत्ते एव वयासी—मा ण अम्हे पुत्ता! एगमवि जीवियाओ ववरोवेमो। एस ण सुसुमाए दारियाए सरीरे निप्पाणे[2] •निच्चेट्ठे° जीवविप्पजढे। त सेय खलु पुत्ता! अम्ह सुसुमाए दारियाए मस च सोणिय च आहारेत्तए। तए ण अम्हे तेण आहारेण अवथद्धा समाणा रायगिह सपाउणिस्सामो ॥

५५ तए ण ते पचपुत्ता धणेण सत्थवाहेण एव वुत्ता समाणा एयमट्ठ पडिसुणेति ॥

५६ तए ण धणे सत्थवाहे पचहि पुत्तेहि सद्धि अरणि करेइ, करेत्ता सरग करेइ, करेत्ता सरएण अरणि महेइ, महेत्ता अग्गि पाडेइ, पाडेत्ता अग्गि सधुक्केइ[3] सधुक्केत्ता दारुयाइ पक्खिवइ, पक्खिवित्ता अग्गि पज्जालेइ, सुसुमाए दारियाए मस च सोणिय च आहारेइ। तेण आहारेण अवथद्धा समाणा रायगिह नयर सपत्ता मित्त-नाइ[4]-•नियग-सयण-सबधि-परियण° अभिसमण्णागया, तस्स य विउलस्स धण-कणग-रयण[5]-•मणि-मोत्तिय-सख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-सत-सार-सावएज्जस्स° आभागी जाया[6] ॥

५७ तए ण से धणे सत्थवाहे सुसुमाए दारियाए बहूइ लोइयाइ[7] •मयकिच्चाइ करेइ, करेत्ता कालेण° विगयसोए जाए यावि होत्था ॥

५८ तेण कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए समोसढे ॥

५९ तए ण धणे सत्थवाहे सपुत्ते धम्म सोच्चा पव्वइए। एक्कारसगवी। मासियाए सलेहणाए सोहम्मे कप्पे उववण्णे। महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ॥

निगमण-पद

६० जहा वि य ण जबू! धणेण सत्थवाहेण नो वण्णहेउ वा नो रूवहेउं वा नो

---

१ स० पा०—ववरोवेह जाव आभागी।

२. स० पा०—निप्पाणे जाव जीवविप्पजढे।

३ सधुक्खेइ २ (क)।

४. स० पा०—नाइ°।

५ स० पा०—रयण जाव आभागी।

६ जाया यावि होत्था (ख, ग)।

७ स० पा०—लोइयाइ जाव विगयसोए।

वलहेउं वा नो विसयहेउं वा सुसुमाए दारियाए मंससोणिए आहारिए, नन्नत्थ[1] एगाए रायगिहं[2]-संपावणट्ठयाए ॥

६१ एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा[3] •आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे° इमस्स ओरालियसरीरस्स वंतासवस्स पित्तासवस्स [खेलासवस्स ?] सुक्कासवस्स सोणियासवस्स[4] •दुरुय-उस्सास-निस्सासस्स दुरुय-मुत्त-पुरीस-पूय-बहुपडिपुण्णस्स उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाणग-वंत-पित्त-सुक्क-सोणियसंभवस्स अधुवस्स[5] अणितियस्स असासयस्स सडण-पडण-विद्धंसणधम्मस्स पच्छा पुरं च णं° अवस्सविप्पजहियव्वस्स नो वण्णहेउं वा नो रूवहेउं वा नो बलहेउं वा नो विसयहेउं वा आहारं आहारेइ, नन्नत्थ एगाए सिद्धिगमण-संपावणट्ठयाए, से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाण य अच्चणिज्जे जाव[6] चाउरंतं संसारकंतारं वीईवइस्सइ—जहा व से संपुत्ते धणे सत्थवाहे ॥

६२ एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[6] संपत्तेणं अट्ठारसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति बेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

जह सो चिलाइपुत्तो सुंसुमगिद्धो अकज्ज-पडिबद्धो ।
धण-पारद्धो पत्तो, महाडविं वसण-सयकलियं ॥१॥
तह जीवो विसय-सुहे, लुद्धो काऊण पावकिरियाओ ।
कम्मवसेण पावइ, भवाडवीए महादुक्खं ॥२॥
धणसेट्ठी विव गुरुणो, पुत्ता इव साहवो भवो अडवी ।
सुयमंसमिवाहारो, रायगिहं इह सिवं नेयं ॥३॥
जह अडवि-नियर-नित्थरण-पावणत्थं तएहिं सुयमंसं ।
भुत्तं तहेह साहू, गुरूण आणाइ आहारं ॥४॥
भव-लंघण-सिव-साहणहेउं भुंजंति ण गेहीए ।
वण्ण-बल-रूव-हेउं, च भावियप्पा महासत्ता ॥५॥

---

१. अण्णत्थ (ख, ग) ।
२. रायगिहं (क्व) ।
३. सं० पा०—निग्गंथी वा ।
४. सं० पा०—सोणियासवस्स जाव अवस्स° ।
५. ना० १।२।७६ ।
६. ना० १।१।७ ।

एगूणवीसइमं अज्झयणं

पुंडरीए

उक्खेव-पदं

१ जइ ण भते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव[1] सपत्तेण अट्ठारसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, एगूणवीसइमस्स ण भते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

२ एव खलु जबू ! तेण कालेणं तेण समएण इहेव जवुद्दीवे दीवे पुव्वविदेहे, सीयाए महानईए उत्तरिल्ले कूले, नीलवतस्स [वासहरपव्वयस्स ?] दाहिणेण, उत्तरिल्लस्स सीयामुहवणसडस्स पच्चत्थिमेण, एगसेलगस्स वक्खारपव्वयस्स पुरत्थिमेण, एत्थ ण पुक्खलावई नाम विजए पण्णत्ते ॥

३ तत्थ ण पुडरीगिणी[2] नामं रायहाणी पण्णत्ता—नवजोयणवित्थिण्णा दुवालस जोयणायामा जाव[3] पच्चक्ख देवलोगभूया पासाईया दरिसणीया अभिरूवा पडिरूवा ॥

४ तीसे ण पुडरीगिणीए नयरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए नलिणिवणे नाम उज्जाणे ॥

५. तत्थ ण पुडरीगिणीए रायहाणीए महापउमे नाम राया होत्था ॥

६ तस्स ण पउमावई नाम देवी होत्था ॥

७ तस्स ण महापउमस्स रण्णो पुत्ता पउमावईए देवीए अत्तया दुवे कुमारा होत्था, त जहा—पुडरीए य कडरीए य-- सुकुमालपाणिपाया[4] । पुडरीए जुवराया ॥

कंडरीयस्स पव्वज्जा-पद

८. तेण कालेण तेण समएण थेरागमण । महापउमे राया निग्गए । धम्म सोच्चा

---

१ ना० १।१।७ ।

२ पुडरिगिणी (क, ख, ग) ।

३. ना० १।५।२ ।

४. पू०—ओ० सू० १४३ ।

पुडरीयं रज्जे ठवेत्ता पव्वइए। पुडरीए राया जाए, कडरीए जुवराया। महापउमे अणगारे चोद्दसपुव्वाइ अहिज्जइ ॥

९ तए ण थेरा वहिया जणवयविहार विहरति ॥

१०. तए ण से महापउमे वहूणि वासाणि सामण्णपरियाग पाउणित्ता जाव[1] सिद्धे ॥

११. तए ण थेरा अण्णया कयाइ पुणरवि पुडरीगिणीए[2] रायहाणीए नलिण [णि ?] वणे उज्जाणे समोसढा। पुडरीए राया निग्गए। कडरीए महाजणसद्द सोच्चा जहा महावलो जाव[3] पज्जुवासइ। थेरा धम्म परिकहेति। पुडरीए समणोवासए जाए जाव[4] पडिगए ॥

१२ तए ण कडरीए[5] •थेराण अतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता थेरे तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—सद्दहामि ण भते! निग्गथ पावयण जाव[6]° से जहेय तुब्भे वयह। ज नवर—पुडरीय राय आपुच्छामि[7]। •तओ पच्छा मुडे भवित्ता ण अगाराओ अणगारिय° पव्वयामि।
अहासुह देवाणुप्पिया!

१३. तए ण से कडरीए[8] थेरे वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता थेराण अतियाओ पडिनिक्खमइ, तमेव चाउग्घट आसरह दुरुहइ[9] •महयाभड-चडगर-पहकरेण पुडरीगिणीए नयरीए मज्झमज्झेण जेणामेव सए भवणे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घटाओ आसरहाओ° पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव पुडरीए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल[10]•परिग्गहिय दसणह सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु° एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया! मए थेराण अतिए धम्मे निसते, से[11] •वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए। त इच्छामि ण देवाणुप्पिया! तुब्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे थेराण अतिए मुडे भवित्ता ण अगाराओ अणगारिय° पव्वइत्तए ॥

१४. तए ण से पुडरीए राया कडरीय एव वयासी—मा ण तुम भाउया! इयाणि

---

१. ना० १।५।८४।
२. पुडरगिणीए (ग)।
३. भग० ११।१६४-१६६।
४. उवा० १।५२।
५. स० पा०—कडरीए उट्ठाए उट्ठेइ उट्ठेत्ता जाव से जहेयं।
६. ना० १।१।१०१।
७. स० पा०—आपुच्छामि तए ण जाव पव्वयामि।
८. कंडरीए जाव [क, ख, ग, घ]।
९ स० पा०—दुरुहइ जाव पच्चोरुहइ।
१०. स० पा०—करयल जाव एव।
११. स० पा०—से धम्मे अभिरुइए। तए ण देवा जाव पव्वइत्तए।

मुडे[1] •भवित्ता ण अगाराओ अणगारियं° पव्वयाहि। 'अह ण'[2] तुम महारायाभिसेएण[3] अभिसिचामि ॥

१५ तए णं से कडरीए पुडरीयस्स रण्णो एयमट्ठ नो आढाइ[4] •नो परियाणाइ[5]° तुसिणीए सचिट्ठइ ॥

१६ तए ण से पुडरीए राया कडरीय दोच्चपि तच्चपि एव वयासी[6]—•मा ण तुम भाउया! इयाणि मुडे भवित्ता ण अगाराओ अणगारिय पव्वयाहि। अह ण तुम महारायाभिसेएण अभिसिचामि ॥

१७ तए ण से कडरीए पुडरीयस्स रण्णो एयमट्ठ नो आढाइ नो परियाणाइ° तुसिणीए सचिट्ठइ ॥

१८ तए ण पुडरीए कडरीय कुमार जाहे नो सचाएइ बहूहिं आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा सण्णवित्तए वा विण्णवित्तए वा ताहे अकामए चेव एयमट्ठ अणुमन्नित्था जाव[7] निक्खमणाभिसेएण अभिसिचइ जाव[8] •थेराण सीसभिक्ख दलयइ। पव्वइए। अणगारे जाए। एक्कारसगवी ॥

१९. तए ण थेरा भगवतो अण्णया कयाइ पुडरीगिणीओ नयरीओ नलिणिवणाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमति, बहिया जणवयविहार विहरति ॥

कंडरीयस्स वेयणा-पदं

२०. तए ण तस्स कंडरीयस्स अणगारस्स तेहि अतेहि य पतेहि य[9] •तुच्छेहि य लूहेहि य अरसेहि य विरसेहि य सीएहि य उण्हेहि य कालाइक्कतेहि य पमाणाइक्कतेहि य निच्च पाणभोयणेहि य पयइसुकुमालस्स सुहोचियस्स सरीरगसि वेयणा पाउब्भूया—उज्जला विउला कक्खडा पगाढा चडा दुक्खा दुरहियासा। पित्तज्जर-परिगयसरीरे° दाहवक्कतीए[10] यावि विहरइ ॥

२१. तए ण थेरा अण्णया कयाइ जेणेव पोडरीगिणी नयरी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता नलिणीवणे समोसढा। पुडरीए निग्गए। धम्म सुणेइ ॥

कंडरीयस्स तिगिच्छा-पदं

२२ तए ण पुडरीए राया धम्म सोच्चा जेणेव कडरीए अणगारे तेणेव उवागच्छइ,

---

१ स० पा०—मुडे जाव पव्वयाहि।
२ अहण्ण (ग)।
३ महयामहया रायाभिसेएण (ख, ग)।
४. स० पा०—आढाइ जाव तुसिणीए।
५ द्रष्टव्यम्—१।१।३६ सूत्रम्।
६. स० पा०—वयासी जाव तुसिणीए।
७ ना० १।५।२८।
८. ना० १।५।३०।
९ स० पा०—जहा सेलगस्स जाव दाहवक्कतीए।
१०. शैलकाध्ययने 'कडु-दाह-पितज्जर-परिगय-सरीरे' इति पाठो लभ्यते।

उवागच्छित्ता कंडरीयं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता कंडरीयस्स अणगारस्स सरीरगं सव्वाबाहं सरोगं पासइ, पासित्ता जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—अहण्णं भंते! कंडरीयस्स अणगारस्स अहापवत्तेहिं[1] ओसह-भेसज्ज[2]-•भत्त-पाणेहिं° तेगिच्छं आउट्टामि। तं तुब्भे णं भंते! मम जाणसालासु समोसरह॥

२३ तए णं थेरा भगवंतो पुंडरीयस्स [एयमट्ठं?] पडिसुणेंति[3], •पडिसुणेत्ता जेणेव पुंडरीयस्स रण्णो जाणसाला तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता फासु-एसणिज्जं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारगं° उवसंपज्जित्ता णं विहरंति॥

२४ तए णं पुंडरीए राया [4]•तेगिच्छिए सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया! कंडरीयस्स फासु-एसणिज्जेणं ओसह-भेसज्ज-भत्त-पाणेणं तेगिच्छं आउट्टेह॥

२५. तए णं ते तेगिच्छिया पुंडरीएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा कंडरीयस्स अहापवत्तेहिं ओसह-भेसज्ज-भत्त-पाणेहिं तेगिच्छं आउट्टेंति, मज्जपाणगं च से उवदिसंति॥

२६ तए णं तस्स कंडरीयस्स अहापवत्तेहिं ओसह-भेसज्ज-भत्त-पाणेहिं मज्जपाणएण य से रोगायंके उवसंते यावि होत्था—हट्ठे बलियसरीरे[5] जाए ववगयरोगायंके°॥

कंडरीयस्स पमत्तविहार-पदं

२७ तए णं थेरा भगवंतो [6]पुंडरीयं रायं आपुच्छंति, आपुच्छित्ता[6] बहिया जणवय-विहारं विहरंति॥

२८ तए णं से कंडरीए ताओ रोयायंकाओ विप्पमुक्के समाणे तंसि मणुण्णंसि असण-पाण-खाइम-साइमंसि मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे नो संचाएइ पुंडरीयं आपुच्छित्ता बहिया अब्भुज्जएणं[7] •जणवयविहारेणं° विहरित्तए तत्थेव ओसन्ने जाए॥

पुंडरीएण पडिबोह-पदं

२९ तए णं से पुंडरीए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे ण्हाए अंतेउर-परियाल[8]-संपरिवुडे जेणेव कंडरीए अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता

---

१. अहापत्तेहिं (ख), अहावत्तेहिं (ग), अहा-पवित्तेहिं (घ)।
२. म० पा०—भेसज्जेहिं जाव तेगिच्छं।
३ म० पा०—पडिसुणेंति जाव उवसंपज्जित्ता।
४ स० पा०—जहा मड्डुए सेलगस्स जाव बलियसरीरे जाए।
५. १।५।११६ सूत्रे 'गल्लसरीरे' इति पाठोस्ति।
६ पोंडरीयं पुच्छति २ (ख, ग)।
७. स० पा०—अब्भुज्जएणं जाव विह-रित्तए।
८ परियाल सद्धिं (क, घ)।

कंडरीयं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता, नमंसित्ता एवं वयासी—धन्नेसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! कयत्थे कयपुण्णे कय-लक्खणे। सुलद्धे णं देवाणुप्पिया ! तव माणुस्सए जम्म-जीवियफले जे णं तुमं रज्जं च[1] •रट्ठं च कोसं च कोट्ठागारं च बलं च वाहणं च पुरं च° अंतेउरं च विछड्डेत्ता विगोवइत्ता,[2] •दाणं च दाइयाणं परिभाएइत्ता, मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइए, अहण्णं अधन्ने अकयत्थे अकयपुण्णे अकयलक्खणे रज्जे य[3] •रट्ठे य कोसे य कोट्ठागारे य बले य वाहणे य पुरे य° अंतेउरे य माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिए[4] •गिद्धे गढिए° अज्झोववण्णे नो संचाएमि जाव पव्वइत्तए। तं धन्नेसि णं तुमं देवाणुप्पिया[5] ! •कयत्थे कयपुण्णे कयलक्खणे°। सुलद्धे णं देवाणुप्पिया ! तव माणुस्सए जम्मजीवियफले ॥

३०. तए णं से कंडरीए अणगारे पुंडरीयस्स एयमट्ठं नो आढाइ[7] •नो परियाणाइ[8] तुसिणीए° संचिट्ठइ ॥

३१ तए णं से कंडरीए अणगारे पोंडरीएणं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे-अकामए अवसवसे[9] लज्जाए गारवेण य पुंडरीयं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता थेरेहिं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

कंडरीयस्स पव्वज्जा-परिच्चाय-पदं

३२ तए णं से कंडरीए थेरेहिं सद्धिं कंचि कालं उग्गउग्गेणं विहरित्ता तओ पच्छा समणत्तण-परितंते समणत्तण-निव्विण्णे समणत्तण-निब्भच्छिए समणगुण-मुक्क-जोगी थेराणं अंतियाओ सणियं-सणियं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता जेणेव पुंडरीगिणी नयरी जेणेव पुंडरीयस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता असोगवणियाए असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टगंसि निसीयइ, नीसी-इत्ता ओहयमणसंकप्पे[10] •करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए° झियायमाणे संचिट्ठइ ॥

३३. तए णं तस्स पोंडरीयस्स अम्मधाई जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कंडरीयं अणगारं असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टगंसि ओहयमणसंकप्पं जाव[11] झियायमाणं पासइ, पासित्ता जेणेव पुंडरीए राया

---

१ सं० पा०— रज्जं च जाव अंतेउरं।

२ सं० पा०—विगोवइत्ता जाव पव्वइए।

३ सं० पा०—रज्जे य जाव अंतेउरे।

४ सं० पा०—मुच्छिए जाव अज्झोववण्णे।

५ राय० सू० ६९५।

६ सं० पा० – देवाणुप्पिया जाव सुलद्धे।

७ सं० पा०— आढाइ जाव संचिट्ठइ।

८ द्रष्टव्यम्—१।१।३६ सूत्रम्।

९ अवसव्वसे (ग)।

१० सं० पा०—ओहयमणसंकप्पे जाव झियाय-माणे।

११ ना० १।१९।३२।

तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुंडरीयं रायं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! तव पियभाउए[1] कंडरीए अणगारे असोगवणियाए असोगवर-पायवस्स अहे पुढविसिलापट्टे ओहयमणसंकप्पे जाव झियायइ ॥

३४. तए णं से पुंडरीए अम्मधाईए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म तहेव संभंते समाणे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता अंतेउर-परियालसंपरिवुडे जेणेव असोगवणिया[2] •तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता° कंडरीयं अणगारं तिक्खुत्तो[3] •आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता° एवं वयासी—धन्नेसि णं तुमं देवाणुप्पिया[4]! •कयत्थे कयपुण्णे कयलक्खणे सुलद्धे णं देवाणुप्पिया! तव माणुस्सए जम्म-जीवियफले जाव[5] अगाराओ अणगारियं° पव्वइए, अहं णं अधन्ने अकयत्थे अकयपुण्णे अकयलक्खणे जाव[6] नो संचाएमि[7] पव्वइत्तए। तं धन्नेसि णं तुमं देवाणुप्पिया! जाव[8] सुलद्धे णं देवाणुप्पिया! तव माणुस्सए जम्म-जीवियफले ॥

३५ तए णं कंडरीए पुंडरीएणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए संचिट्ठइ। दोच्चंपि तच्चंपि[9] •पुंडरीएणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए° संचिट्ठइ ॥

३६ तए णं पुंडरीए कंडरीयं एवं वयासी—अट्ठो भंते[10]! भोगेहिं?
हंता! अट्ठो ॥

३७ तए णं से पुंडरीए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! कंडरीयस्स महत्थं[11] •महग्घं महरिहं विउलं° रायाभिसेयं उवट्ठवेह जाव[12] रायाभिसेएणं अभिसिंचति ॥

पुंडरीयस्स पव्वज्जा-पदं

३८. तए णं से पुंडरीए सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, सयमेव चाउज्जामं धम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता कंडरीयस्स संतियं आयारभंडगं गेण्हइ, गेण्हित्ता इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ—कप्पइ मे थेरे वंदित्ता नमंसित्ता थेराणं अंतिए चाउज्जामं धम्मं उवसंपज्जित्ता णं तओ पच्छा आहारं आहारित्तए त्ति कट्टु इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हित्ता णं पुंडरीगिणीए[13] पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

---

१ पिउभाउए (ख, ग), भाउए (घ)।
२. सं० पा०—असोगवणिया जाव कंडरीयं।
३ सं० पा०—तिक्खुत्तो जाव एवं।
४ सं० पा०—देवाणुप्पिया जाव पव्वतिए।
५,६. ना० १।१९।२९।
७. द्रष्टव्यम्—२९ सूत्रम्।
८. ना० १।१९।२९।
९. सं० पा०—तच्चं पि जाव संचिट्ठइ।
१०. हंते (ग)।
११. सं० पा०—महत्थं जाव रायाभिसेयं।
१२. ना० १।१।११७,११८।
१३. पोंडरिगिणीए (क, ख)।

कंडरीयस्स मच्चु-पदं

३९. तए णं तस्स कडरीयस्स रण्णो त पणीय पाणभोयण आहारियस्स समाणस्स अइजागरएण य अइभोय[1]-प्पसगेण य से आहारे नो सम्म परिणमइ[2] ॥

४० तए ण तस्स कडरीयस्स रण्णो तसि आहारसि अपरिणममाणसि पुव्वरत्ता-वरत्तकालसमयसि सरीरगसि वेयणा पाउब्भूया—उज्जला विउला[3] •कक्खडा पगाढा चडा दुक्खा° दुरहियासा। पित्तज्जर-परिगय-सरीरे दाहवक्कतीए यावि विहरइ ॥

४१. तए ण से कडरीए राया रज्जे य रट्ठे य अतेउरे य[4] •माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिए गिद्धे गढिए° अज्झोववण्णे अट्टदुहट्टवसट्टे अकामए अवसवसे कालमासे काल किच्चा अहेसत्तमाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयसि नरयसि नेरइयत्ताए उववण्णे ॥

निगमण-पदं

४२ एवामेव समणाउसो[5]! •जो अम्ह निग्गथो वा निग्गथी वा आयरिय-उवज्झायाण अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय° पव्वइए समाणे पुणरवि माणुस्सए कामभोए आसाएइ[6] •पत्थयइ पीहेइ अभिलसइ, से ण इह भवे चेव वहूण समणाण वहूण समणीण वहूण सावयाण वहूण सावियाण य हीलणिज्जे निंदणिज्जे खिसणिज्जे गरहणिज्जे परिभवणिज्जे, परलोए वि य ण आगच्छइ वहूणि दडणाणि य मुडणाणि य तज्जणाणि य तालणाणि य जाव[7] चाउरत ससार-कतार भुज्जो-भुज्जो° अणुपरियट्टिस्सइ – जहा व से कडरीए राया ॥

पुडरीयस्स आराहणा-पदं

४३. तए ण से पुडरीए अणगारे जेणेव थेरा भगवतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थेरे भगवते वदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता थेराण अतिए दोच्चपि चाउज्जाम धम्म पडिवज्जइ, छट्ठक्खमणपारणगसि पढमाए पोरिसीए सज्झाय करेइ, वीयाए पोरिसीए झाण झियाइ, तइयाए पोरिसीए जाव[8] उच्च-नीय-मज्झि-माइं कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरिय अडमाणे सीयलुक्ख पाणभोयण पडिगाहेइ, पडिगाहेत्ता अहापज्जत्तमित्ति कट्टु पडिनियत्तेइ, जेणेव थेरा भगवतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भत्तपाण पडिदसेइ, पडिदसेत्ता थेरेहि भगवतेहिं अब्भणुण्णाए समाणे अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए अणज्झोववण्णे

---

१. भोय (ख, ग)।
२. परिणए (ख, ग, घ)।
३. स० पा०—विउला पगाढा जाव दुरहियासा।
४. स० पा०—अतेउरे य जाव अज्झोववण्णे।
५ स० पा०— समणाउसो जाव पव्वइए।
६ स० पा०—आसाएइ जाव अणुपरियट्टिस्सइ।
७ ना०—१।३।२४।
८ ना० १।१६।१३।

विलमिव पण्णगभूएण अप्पाणेण[1] तं फासु-एसणिज्जं असण-पाण-खाइम-साइमं सरीरकोट्ठगंसि पक्खिवइ ॥

४४ तए ण तस्स पुंडरीयस्स अणगारस्स त कालाइक्कत अरसं विरसं सीयलुक्ख पाणभोयण आहारियस्स समाणस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स से आहारे नो सम्म परिणमइ ॥

४५ तए ण तस्स पुंडरीयस्स अणगारस्स सरीरगसि वेयणा पाउब्भूया —उज्जला[2] •विउला कक्खडा पगाढा चडा दुक्खा° दुरहियासा। पित्तज्जर-परिगय-सरीरे दाहवक्कतीए विहरइ ॥

४६. तए ण से पुंडरीए अणगारे अत्थामे अवले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे करयल[3]•परिग्गहिय दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु° एव वयासी— नमोत्थु णं अरहताण भगवंताणं जाव[4] सिद्धिगइणामधेज्ज ठाण संपत्ताणं। नमोत्थु ण थेराण भगवताण मम धम्मायरियाण धम्मोवएसयाणं। पुव्वि पि य ण मए थेराणं अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जाव[5] वहिद्धादाणे[6] पच्चक्खाए[7], •इयाणि पि णं अह तेसिं चेव अंतिए सव्व पाणाइवाय पच्चक्खामि जाव बहिद्धादाण पच्चक्खामि। सव्व असण-पाण-खाइम-साइम पच्चक्खामि चउव्विह पि आहारं पच्चक्खामि जावज्जीवाए। जपि य इमं सरीर इट्ठ कत[8] त पि य ण चरिमेहिं उस्सास-नीसासेहिं वोसिरामि त्ति कट्टु° आलोइय-पडिक्कते कालमासे काल किच्चा सव्वट्ठसिद्धे उववण्णे। तओ अणतर उव्वट्टित्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ[9] •वुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिनिव्वाहिइ° सव्वदुक्खाणमंत काहिइ ॥

निगमण-पदं

४७. एवामेव समणाउसो[10] ! •जो अम्ह निग्गथो वा निग्गथी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइए समाणे माणुस्सएहिं

---

१. अत्तणेण (ख)।
२. स० पा०—उज्जला जाव दुरहियासा।
३. स० पा०—करयल जाव एव।
४. ओ० मू० २१।
५. ना० १।५।५६।
६. मिच्छादसणसल्ले (क, ख, ग, घ) अस्याध्ययनस्य ३८,४३ सूत्रे 'चाउज्जामं धम्म पडिवज्जइ' इति पाठोस्ति। उपलब्धपाठस्त्र अस्य विसवादी वर्तते। मेघकुमाराधिकारात् पूरितोसौ पाठ तेनात्रापि विसवादो जात। द्रष्टव्यम्—१।५।५६ सूत्रस्य पादटिप्पणम्।
७ स० पा०—पच्चक्खाए जाव आलोइय०। चिह्नाङ्कित. पाठः १।१।२०६ सूत्रेण पूरित.।
८. पू०—ना० १।१।२०६।
९ स० पा०—सिज्झिहिइ जाव सव्वदुक्खाण।
१०. सं० पा०—समणाउसो जाव पव्वइए।

कामभोगेहि नो सज्जइ नो रज्जइ[1] •नो गिज्झइ नो मुज्झइ नो अज्झोवज्झइ ° नो विप्पडिधायमावज्जइ[2], से ण इहभवे चेव बहूण समणाण बहूण समणीण बहूण सावगाण बहूण सावियाण य अच्चणिज्जे वदणिज्जे [नमसणिज्जे ?] पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाण मगल देवय चेइय [विण-एण ?] पज्जुवासणिज्जे[3] भवइ,

परलोए वि य ण नो आगच्छइ बहूणि दडणाणि य मुडणाणि य तज्जणाणि य तालणाणि य जाव[4] चाउरत ससारकतार वीईवइस्सइ—जहा व से पुडरीए अणगारे ॥

निक्खेव-पद

४८ एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेण आइगरेण तित्थगरेण सयसबुद्धेण जाव[5] सिद्धिगइनामधेज्ज ठाण सपत्तेण एगूणवीसइमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥

वृत्तिकृता समुद्धता निगमनगाथा—

वाससहस्सपि जइ, काऊण सजम सुविउलपि ।
अते किलिट्ठभावो, न विसुज्झइ कडरीउ व्व ॥१॥
अप्पेण वि कालेण, केइ जहा गहिय-सील-सामण्णा ।
साहति नियय-कज्ज, पुडरीय-महारिसि व्व जहा ॥२॥

४९. एवं खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव[6] सपत्तेण छट्ठस्स अगस्स पढमस्स सुयखधस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति बेमि ।

परिसेसो

एयस्स[7] सुयखधस्स एगूणवीस अज्झयणाणि[8] एक्कासरगाणि[9] एगूणवीसाए दिवसेसु समप्पति ।

---

१ स० पा०—रज्जइ जाव नो विप्पडिघाय० ।
२. विणिग्घाय° (क) ।
३. 'पज्जुवासणिज्जे' इति पदानन्तर सर्वासु प्रतिपु 'त्ति कट्टु' इति पाठोस्ति, किन्तु [१।२।७३] सूत्रानुसार अत्र 'भवइ' इति पाठो युज्यते ।
४. ना० १।३।२४ ।
५. ना० १।१।७ ।
६. ना० १।१।७ ।
७. तस्स ण (ख, ग) ।
८. नायज्झयणाणि (क) ।
९. एक्कारसाणि (ख), एक्करसगाणि (ग) ।

बीओ सुयक्खंधो

पढमो वग्गो

पढमं अज्झयणं

काली

उक्खेव-पदं

१ तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नाम नयरे होत्था—वण्णओ[1] ।।

२ तस्स ण रायगिहस्स नयरस्स वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ[2] ण गुण-सिलए नाम चेइए होत्था—वण्णओ[3] ।

३ तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतेवासी अज्जसुहम्मा नाम थेरा भगवतो जाइसंपण्णा कुलसपण्णा जाव[4] चोद्दसपुव्वी चउनाणोवगया पर्चाहि अणगारसएहि सद्धि सपरिवुडा पुव्वाणुपुव्वि चरमाणा गामाणुगाम दूइज्जमाणा सुहसुहेण विहरमाणा जेणेव रायगिहे नयरे जेणेव गुणसिलए चेइए[5] °तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता° सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणा विहरंति । परिसा निग्गया । धम्मो कहिओ । परिसा जामेव दिसि पाउब्भूया, तामेव दिसि पडिगया ।।

४. तेण कालेण तेण समएणं अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स [जेट्ठे ?] अतेवासी अज्जजंवू नामं अणगारे[6] जाव[7] °अज्जसुहमस्स थेरस्स नच्चासण्णे नाइदूरे

---

१ ओ० सू० १ ।

२ तत्थ (ख, ग) ।

३ ओ० सू० २-१३ ।

४ ना० १।१।४ ।

५. सं० पा०—चेइए जाव सजमेण ।

६. म० पा०—अणगारे जाव पज्जुवासमाणे ।

७. ना० १।१।६,७ ।

सुस्सूसमाणे नमंसमाणे अभिमुहे पंजलिउडे विणएण° पज्जुवासमाणे एव वयासी—जइ ण भते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव[1] सपत्तेण छट्ठस्स अगस्स पढमस्स सुयक्खधस्स नायाण अयमट्ठे पण्णत्ते, दोच्चस्स ण भते ! सुयक्खधस्स धम्मकहाण समणेण भगवया महावीरेण जाव[2] सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ?

५ एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेणं जाव[3] सपत्तेण धम्मकहाण दस वग्गा पण्णत्ता त जहा—

१. चमरस्स अग्गमहिसीण पढमे वग्गे ।

२ वलिस्स वइरोयणिंदस्स[4] वइरोयणरण्णो अग्गमहिसीण वीए वग्गे ।

३ असुरिंदवज्जियाण दाहिणिल्लाण 'इदाण अग्गमहिसीण'[5] तईए वग्गे ।

४ उत्तरिल्लाण असुरिंदवज्जियाण भवणवासि[6]-इदाण अग्गमहिसीण चउत्थे वग्गे ।

५ दाहिणिल्लाण वाणमतराण इदाण अग्गमहिसीण पचमे वग्गे ।

६ उत्तरिल्लाण वाणमतराण इदाणं अग्गमहिसीण छट्ठे वग्गे ।

७. चदस्स अग्गमहिसीण सत्तमे वग्गे ।

८ सूरस्स अग्गमहिसीण अट्ठमे वग्गे ।

९ सक्कस्स अग्गमहिसीण नवमे वग्गे ।

१०. ईसाणस्स य अग्गमहिसीणं दसमे वग्गे ।

६ जइ ण भते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव[7] सपत्तेण धम्मकहाणं दस वग्गा पण्णत्ता, पढमस्स ण भते ! वग्गस्स समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[8] संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

७. एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव[9] सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता तंजहा—काली, राई, रयणी, विज्जू[10], मेहा ॥

८ जइ ण भते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[11] संपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स ण भते ! अज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरेण जाव[12] संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

९ एव खलु जबू ! तेण कालेण तेणं समएणं रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए । सेणिए राया । चेल्लणा देवी । सामी समोसढे । परिसा निग्गया जाव[13] परिसा पज्जुवासइ ॥

१, २, ३. ना० १।१।७ ।
४. × (क, ख, ग) ।
५. × (क, ख, ग) ।
६. भवणवइ (क) ।
७, ८, ९ ना० १।१।७ ।
१०. विज्जा (क, ग) ।
११, १२. ना० १।१।७
१३. ओ० सू० ५२ ।

कालीदेवी-पद

१० तेण कालेण तेण समएण काली देवी चमरचचाए रायहाणीए कालिवडेंसगभवणे कालसि सीहासणसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं महयरियाहिं[1] सपरिवाराहि, तिहिं परिसाहिं सत्तहि अणिएहिं सत्तहि अणियाहिवईहिं सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अण्णेहि य बहूहिं कालिवडिसय[2]-भवणवासीहिं असुरकुमारेहि देवेहिं देवीहि य सद्धि सपरिवुडा महयाहय[3]-•नट्ट-गीय-वाइय-तती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइग-पडुप्पवादियरवेण दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणी° विहरइ। इम च ण केवलकप्प जबुद्दीवं दीव विउलेण ओहिणा 'आभोएमाणी-आभोएमाणी'[4] पासइ ॥

कालीए भगवओ वंदण-पदं

११ एत्थ[5] समणं भगव महावीर जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाण पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणदिया पीइमणा[6] •परमसोमणस्सिया हरिस-वस-विसप्पमाण°-हियया सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता तित्थगराभिमुही सत्तट्ठ पयाइ अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता वाम जाणु अचेइ, अचेत्ता दाहिण जाणु धरणियलसि निहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाण धरणियलसि निवेसेइ[7], ईसिं पच्चुन्नमइ, पच्चुन्नमित्ता कडग-तुडिय-थभियाओ भुयाओ साहरइ, साहरित्ता करयल[8] •परिग्गहिय दसणह सिरसावत्त मत्थए अजलि° कट्टु एव वयासी—नमोत्थु ण अरहताण भगवताण जाव[9] सिद्धिगइनामधेज्जं ठाण सपत्ताण। नमोत्थु ण समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव[10] सिद्धिगइनामधेज्ज ठाण सपाविउकामस्स। वंदामि ण भगवत तत्थगय इहगया, पासउ मे समणे भगव महावीरे तत्थगए इहगय ति कट्टु वदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता सीहासणवरसि पुरत्था-भिमुहा निसण्णा ॥

१२ तए ण तीसे कालीए देवीए इमेयारूवे[11] •अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे° समुप्पज्जित्था—सेय खलु मे समण भगव महावीर वदित्तए[12]

---

१. मयहरियाहि (क,ख ग,घ), महरियाहिं (वृ)। द्रष्टव्यम्—१।१६।१५६ सूत्रस्य पादटिप्पणम्।
२ °वडेंसय (ख, ग)।
३. स० पा०—महयाहय जाव विहरइ।
४ आभोएमाणी (क, ख, ग, घ)।
५. जत्थ (क, घ), यत्थ (ग)।
६. स० पा० पीइमणा जाव हियया।
७ निमेइ (क, ग)।
८ स० पा०—करयल जाव कट्टु।
९,१० ओ० सू० २१।
११. स० पा०—इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था।
१२. वदित्ता (क, ख, ग, घ), सं० पा०—वंदित्तए जाव पज्जुवासित्तए। असौ पाठ 'रायपसेणइय' सूत्रस्य वृत्त्यनुसारेण पूरित। द्रष्टव्यम्—'रायपसेणइय' वृत्ति पृ० ५१,५२।

•नमसित्तए सक्कारित्तए सम्माणित्तए कल्लाण मंगलं देवयं चेइय° पज्जुवासित्तए त्ति कट्टु एव सपेहेइ, सपेहेत्ता आभिओगिए देवे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगव महावीरे[1] विहरइ एव जहा सूरियाभो तहेव आणत्तिय देइ जाव[2] दिव्व सुरवराभिगमण-जोग्ग करेह[3] •य कारवेह य करेत्ता य कारवेत्ता य खिप्पामेव एवमाणत्तिय° पच्चप्पिणह। ते वि तहेव करेत्ता जाव[4] पच्चप्पिणति, नवर—जोयणसहस्स-वित्थिण्ण जाण। सेस तहेव। तहेव नामगोय साहेइ, तहेव नट्टविहिं उवदसेइ जाव[5] पडिगया ॥

गोयमस्स पसिण-पदं

१३ भतेति ! भगव गोयमे समणं भगवं महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—कालीए णं भते ! देवीए सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभाए कहिं गए ? कहिं अणुप्पविट्ठे ?
गोयमा ! सरीर गए सरीर अणुप्पविट्ठे। कूडागारसाला दिट्ठतो[6]।
अहो ण भते ! काली देवी महिड्ढिया महज्जुइया महव्वला महायसा महासोक्खा महाणुभागा ॥

१४ कालीए णं भते ! देवीए सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभागे किण्णा लद्धे ? किण्णा पत्ते ? किण्णा अभिसमण्णागए[7] ?

भगवओ उत्तरे काली-पदं

१५. •गोयमाति ! समणे भगव महावीरे भगव गोयम आमतेत्ता एव वयासी—एव° खलु गोयमा ! तेण कालेण तेण समएण इहेव जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे आमलकप्पा नामं नयरी होत्था—वण्णओ[8]। अवसालवणे चेइए। जियसत्तू राया ॥

१६ तत्थ ण आमलकप्पाए नयरीए काले नाम गाहावई होत्था—अड्ढे जाव[9] अपरिभूए ॥

१७. तस्स ण कालस्स गाहावइस्स कालसिरी नाम भारिया होत्था—सुकुमाल-पाणिपाया जाव[10] सुरूवा ॥

१८ तस्स ण कालस्स गाहावइस्स धूया कालसिरीए भारियाए अत्तया काली नामं

---

१. पू०—राय० सू० ६।
२. राय० सू० ६।
३. स० पा०—करेह करेत्ता जाव पच्चप्पिणह।
४. राय० सू० १०-४६।
५. राय० सू० ४७-१२०।
६. राय० सू० १२३।
७. पू०—राय० सू० ६६७। स० पा०—एव जहा सूरियाभस्स जाव एव।
८. ओ० सू० १।
९. ना० १।५।७।
१०. ना० १।१।१७।

दारिया होत्था—वड्डा वड्डकुमारी जुण्णा जुण्णकुमारी पडियपुयत्थणी[1] निव्विण्णवरा वरगपरिवज्जिया[2] वि होत्था ॥

कालीए पव्वज्जा-पदं

१९. तेणं कालेणं तेणं समएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे[3] •तित्थगरे सहसबुद्धे पुरिसोत्तमे पुरिससीहे पुरिसवरपुंडरीए पुरिसवरगंधहत्थी अभयदए चक्खुदए मग्गदए सरणदए जीवदए दीवो ताणं सरणं गई पइट्ठा धम्मवरचाउरंत-चक्कवट्टी अप्पडिहय-वरनाणदंसणधरे वियट्टच्छउमे अरहा जिणे केवली जिणे जाणए तिण्णे तारए मुत्ते मोयए बुद्धे बोहए सव्वण्णू सव्वदरिसी नवहत्थुस्सेहे समचउरंससंठाणसंठिए वज्जरिसहनारायसंघयणे जल्लमल्लकलंकसेयरहियसरीरे सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावत्तगं सिद्धिगइणामधेज्जं ठाणं संपाविउकामे[4] सोलसहिं समणसाहस्सीहिं अट्ठत्तीसाए अज्जियासाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे आमलकप्पाए नयरीए बहिया° अंबसालवणे समोसढे। परिसा निग्गया जाव[5] पज्जुवासइ ॥

२०. तए णं सा काली दारिया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठ[6]•तुट्ठ-चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण°हियया जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल[7]•परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° एवं वयासी—एवं खलु अम्मयाओ! पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे[8] •तित्थगरे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इह चेव आमलकप्पाए नयरीए अंबसालवणे अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ। तं इच्छामि णं अम्मयाओ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणीयस्स पायवंदिया गमित्तए।

अहासुहं देवाणुप्पिए! मा पडिबंधं करेहि ॥

२१. तए णं सा काली दारिया अम्मापिईहिं अब्भणुण्णाया समाणी हट्ठ[9]•तुट्ठ-चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण°हियया ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं

---

१. °पुतत्थणी (ग)।
२. वरपरिवज्जिया (घ), वरवज्जिया (वृ)।
३. सं० पा०—जहा वद्धमाणसामी नवरं नवहत्थुस्सेहे° (क, ख, ग, घ)।
४. पू०—ओ० सू० १६।
५. ओ० सू० ५२।
६. सं० पा०—हट्ठ जाव हियया।
७. सं० पा०—करयल जाव एवं।
८. सं० पा०—आइगरे जाव विहरइ।
९. सं० पा०—हट्ठ जाव हियया।

पवर परिहिया अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरा चेडिया-चक्कवाल-परिकिण्णा साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मिय जाणपवर दुरूढा ॥

२२ तए ण सा काली दारिया धम्मिय जाणप्पवर दुरूढा समाणी एवं जहा देवई[1] तहा[2] पज्जुवासइ ॥

२३ तए ण पासे अरहा पुरिसादाणीए कालीए दारियाए तीसे य महइमहालियाए परिसाए धम्म कहेइ ॥

२४. तए ण सा काली दारिया पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठ[3]•तुट्ठ-चित्तमाणदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण॰हियया पास अरह पुरिसादाणीयं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—सद्दहामि ण भते! निग्गथ पावयण, जाव[4] से जहेय तुब्भे वयह। ज नवर—देवाणुप्पिया! अम्मापियरो आपुच्छामि, तए ण अह देवाणुप्पियाण अतिए[5] •मुडे भवित्ता ण अगाराओ अणगारिय॰ पव्वयामि।

अहासुह देवाणुप्पिए!

२५ तए ण सा काली दारिया पासेण अरहया पुरिसादाणीएण एव वुत्ता समाणी हट्ठ[6]•तुट्ठ-चित्तमाणदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण॰-हियया पास अरह वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता तमेव धम्मिय जाणप्पवर दुरुहइ, दुरुहित्ता पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अतियाओ अवसालवणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव आमलकप्पा नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता आमलकप्प नयरिं मज्झमज्झेण जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मिय जाणप्पवर ठवेइ, ठवेत्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहिय दसणह सिरसावत्त मत्थए अजलिं कट्टु एव वयासी—एव खलु अम्मयाओ! मए पासस्स अरहओ अतिए धम्मे निसते। से वि य धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए[7]। तए ण अह अम्मयाओ[8]! ससारभउव्विग्गा भीया जम्मण-मरणाण इच्छामि ण तुब्भेहिं

---

१ दोवइ (क, घ)।

२. अत॰ ३।८।१५।

३ स॰ पा॰—हट्ठ जाव हियया।

४. ना॰ १।१।१०१।

५. स॰ पा॰—अतिए जाव पव्वयामि।

६. स॰ पा॰—हट्ठ जाव हियया।

७. अभिरुतिए (ख), अभिरुतिते (ग), अभिरुचिए (घ)।

८. अम्मापियातो (ग)।

अब्भणुण्णाया समाणी पासस्स अरहओ अंतिए मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगा-
रियं पव्वइत्तए।
अहासुहं देवाणुप्पिए! मा पडिबंधं करेहि॥

२६ तए णं से काले गाहावई विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं आमंतेइ, आमंतेत्ता तओ पच्छा ण्हाए जाव[1] विपुलेणं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारेणं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स पुरओ कालिं दारियं सेयापीएहिं कलसेहिं ण्हावेइ, ण्हावेत्ता सव्वालंकार-विभूसियं करेइ, करेत्ता पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरूहेइ, दुरूहेत्ता मित्तनाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव[2] दुंदुहि-निग्घोस-नाइयरवेणं आमलकप्पं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव अंबसालवणे चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्ताईए तित्थगराइसए पासइ, पासित्ता सीयं ठवेइ, ठवेत्ता कालिं दारियं सीयाओ पच्चोरुहेइ[3]॥

२७ तए णं तं कालिं दारियं अम्मापियरो पुरओ काउं जेणेव पासे अरहा पुरिसादाणीए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! काली दारिया अम्हं धूया इट्ठा कंता जाव[4] उंवरपुप्फं पिव दुल्लहा सवणयाए, किमंग पुण पासणयाए? एस णं देवाणुप्पिया! संसारभउव्विग्गा इच्छइ देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडा भवित्ता[5] •णं अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए। तं एयं णं देवाणुप्पियाणं सिस्सिणिभिक्खं दलयामो। पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया! सिस्सिणिभिक्खं। अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेहि॥

२८. तए णं सा काली कुमारी पासं अरहं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव लोयं करेइ, करेत्ता जेणेव पासे अरहा पुरिसादाणीए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पासं अरहं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—आलित्ते णं भंते! लोए[6]

---

१ ना० १।७।६।
२ ना० १।१।३३।
३. पच्चोरुहइ (क, ख, ग, घ)।
४. ना० १।१।१४५।
५ सं० पा०—भवित्ता जाव पव्वइत्तए।
६ 'लोए' अतोग्रे "एवं जहा देवाणंदा जाव" समर्पणवाक्यमस्ति, किन्तु भगवतीसूत्रे (९।१५२) देवाणंदा-प्रकरणे समर्पितः पाठः संक्षिप्तोस्ति, तेन एतद्वाक्यं पाठान्तररूपेण स्वीकृतमस्माभिः। अस्य पूर्तिस्थलनिर्देशः प्रस्तुतसूत्रादेव कृतः।

जाव[1] त इच्छामि ण देवाणुप्पिएहिं सयमेव पव्वाविय[2] जाव[3] धम्ममाइक्खिय ॥

२९ तए णं पासे अरहा पुरिसादाणीए कालिं सयमेव पुप्फचूलाए अज्जाए सिस्सिणियत्ताए दलयइ ॥

३० तए ण सा पुप्फचूला अज्जा कालि कुमारिं सयमेव पव्वावेइ[4] जाव[5] •धम्ममाइक्खइ ॥

३१ तए ण सा काली पुप्फचूलाए अज्जाए अतिए इम एयारूव धम्मिय उवएस सम्म° उवसपज्जित्ता ण विहरइ ॥

३२ तए ण सा काली अज्जा जाया—इरियासमिया जाव[6] गुत्तबभयारिणी ॥

३३ तए ण सा काली अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए अतिए सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइ अहिज्जइ, बहूहिं चउत्थ[7]-•छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाण भावेमाणी° विहरइ ॥

कालीए वाउसियत्त-पदं

३४. तए ण सा काली अज्जा अण्णया कयाइ सरीरवाउसिया जाया यावि[8] होत्था । अभिक्खण-अभिक्खण हत्थे धोवेइ, पाए धोवेइ, सीस धोवेइ, मुह धोवेइ, थणतराणि धोवेइ, कक्खतराणि धोवेइ, गुज्झतराणि धोवेइ, जत्थ-जत्थ वि य ण ठाण वा सेज्ज वा निसीहिय वा चेएइ, त पुव्वामेव अब्भुक्खित्ता तओ पच्छा आसयइ वा सयइ वा ॥

३५ तए ण सा पुप्फचूला अज्जा कालि अज्ज एव वयासी—नो खलु कप्पइ देवाणुप्पिए ! समणीण निग्गथीण सरीरवाउसियाण होत्तए । तुम च ण देवाणुप्पिए ! सरीरवाउसिया[9] जाया अभिक्खण-अभिक्खण हत्थे धोवसि[10], •पाए धोवसि, सीस धोवसि, मुह धोवसि, थणतराणि धोवसि, कक्खतराणि धोवसि, गुज्झतराणि धोवसि, जत्थ-जत्थ वि य ण ठाण वा सेज्ज वा निसीहिय वा चेएसि, त पुव्वामेव अब्भुक्खित्ता तओ पच्छा° 'आसयसि वा सयसि'[11] वा । त तुम देवाणुप्पिए ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि जाव[12] पायच्छित्त पडिवज्जाहि[13] ॥

---

१ ना० १।१।१४६ ।
२ पव्वाविउ (ख, ग) ।
३ ना० १।१।१४६ ।
४ स० पा०—पव्वावेइ जाव उवसपज्जित्ता ।
५ ना० १।१।१५० ।
६ ना० १।१४।४० ।
७ स० पा०—चउत्थ जाव विहरइ ।
८ × (ख) ।
९ °पाउसिया (ख, ग, घ) ।
१० स० पा—धोवसि जाव आसयसि ।
११ आमयाहि वा सयाहि (क, ख, ग, घ); आदर्शेषु तुवाद्यर्थवाचक क्रियापदमस्ति, किन्तु प्रसगापातेनात्र तिवाद्यर्थवाचक क्रियापद युज्यते, तेन तथा परिगृहीतम् ।
१२ ना० १।१६।११५ ।
१३. पडिवज्जेहि (ख); पडिवज्जिहि (ग)

३६ तए णं सा काली अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए एयमट्ठं नो आढाइ[1] •नो परियाणाइ° तुसिणीया संचिट्ठइ ॥

३७. तए णं ताओ पुप्फचूलाओ अज्जाओ कालिं अज्जं अभिक्खणं-अभिक्खणं हीलेंति निंदंति खिंसंति गरहंति अवमन्नंति अभिक्खणं-अभिक्खणं एयमट्ठं निवारेंति ॥

कालीए पुढोविहार-पदं

३८ तए णं तीसे कालीए अज्जाए समणीहिं निग्गंथीहिं अभिक्खणं-अभिक्खणं हीलिज्जमाणीए जाव[2] निवारिज्जमाणीए इमेयारूवे अज्झत्थिए[3] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—जया णं अहं अगारमज्झे[4] वसित्था तया णं अहं सयवसा, जप्पभिइं च णं अहं मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया तप्पभिइं च णं अहं परवसा[5] जाया। तं सेयं खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए[6] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते पाडिक्कयं[7] उवस्सयं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए[8] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते पाडिक्कं उवस्सयं गेण्हइ। तत्थ णं अणिवारिया अणोहट्टिया सच्छंदमई अभिक्खणं - अभिक्खणं हत्थे धोवेइ[9], •पाए धोवेइ, सीसं धोवेइ, मुहं धोवेइ, थणंतराणि धोवेइ, कक्खंतराणि धोवेइ, गुज्झंतराणि धोवेइ, जत्थ-जत्थ वि य णं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएइ, तं पुव्वामेव अब्भुक्खित्ता तओ पच्छा° आसयइ वा सयइ वा ॥

कालीए मच्चु-पदं

३९. तए णं सा काली अज्जा पासत्था पासत्थविहारी ओसन्ना ओसन्नविहारी कुसीला कुसीलविहारी अहाछंदा अहाछंदविहारी संसत्ता संसत्तविहारी बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसेइ, झूसेत्ता तीसं भत्ताइं अणसणाए छेएइ, छेएत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंता[10] कालमासे कालं किच्चा चमरचंचाए रायहाणीए कालिवडिंसए भवणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिया अंगुलस्स 'असंखेज्जाए भागमेत्ताए'[11] ओगाहणाए कालीदेवित्ताए उववण्णा ॥

---

१. सं० पा०—आढाइ जाव तुसिणीया।
२. ना० २।१।३७।
३ सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
४ अगारवास° (ख, ग, घ)।
५. परव्वसा (क, ख, घ)।
६. पू०—ना० १।१।२४।
७. पाडिक्कं (क), पडिक्कयं (ख, ग); पाडिएक्कयं (घ)।
८. पू०—ना० १।१।२४।
९. सं० पा०—धोवेइ जाव आसयइ।
१०. अपडिक्कंता (ख)।
११. असंखेज्जए• (ख); असंखेज्जए भागमेत्तए (ग); असंखेज्जइ° (घ)।

४० तए ण सा काली देवी अहुणोववण्णा समाणी पचविहाए पज्जत्तीए[1] •पज्जत्तभाव गच्छति [त जहा—आहारपज्जत्तीए सरीरपज्जत्तीए इदियपज्जत्तीए आणपाण-पज्जत्तीए° भासमणपज्जत्तीए[2]] ॥

४१ तए ण सा काली देवी चउण्ह सामाणिय-साहस्सीण जाव[3] सोलसण्ह आयरक्ख-देवसाहस्सीण अण्णेसि च वहूण कालिवडेसगभवणवासीण असुरकुमाराण देवाण य देवीण य आहेवच्चं[4] कारेमाणी जाव[5] विहरइ ॥

४२. एव खलु गोयमा ! कालीए देवीए सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए ॥

४३ कालीए ण भते ! देवीए केवइय काल ठिई पण्णत्ता ?
गोयमा ! अड्ढाइज्जाइ पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

४४. काली ण भते ! देवी ताओ देवलोगाओ अणतर उव्वट्टित्ता कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिनिव्वाहिइ सव्वदुक्खाण अत काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

४५ एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव[6] सपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति वेमि ॥

---

१. स० पा०—जहा सूरियाभो जाव भासमण-पज्जत्तीए ।
२. असौ कोष्ठकवर्त्तिपाठ व्याख्याश प्रतीयते ।
३ ना० २।१।१० ।
४. द्रष्टव्यम्—१।१।११८ सूत्रम् ।
५. ना० १।१।११८ ।
६. ना० १।१।७ ।

बीअं अज्झयणं

राई

४६. जइ ण भंते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव[1] संपत्तेण धम्मकहाणं पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, बिइयस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरेण जाव[2] संपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ?

४७. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए। सामी समोसढे। परिसा निग्गया जाव[3] पज्जुवासइ ॥

४८. तेणं कालेणं तेणं समएणं राई देवी चमरचंचाए रायहाणीए एवं जहा काली तहेव[4] आगया, नट्टविहिं उवदंसित्ता पडिगया ॥

४९. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता पुव्वभवपुच्छा[5] ॥

५०. •गोयमाति ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं आमंतेत्ता एवं वयासी°— एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं आमलकप्पा नयरी अंबसालवणे चेइए। जियसत्तू राया। राई गाहावई। राइसिरी भारिया। राई दारिया। पासस्स समोसरणं। राई दारिया जहेव काली तहेव[6] निक्खंता ॥

५१. [7]•तए णं सा राई अज्जा जाया[8] ॥

५२. तए णं सा राई अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ[9] ॥

१,२. ना० १।१।७।

३. ओ० सू० ५२।

४. ना० २।१।१०-१२।

५. सं० पा०—पुव्वभवपुच्छा एवं। पू०—ना० २।१।१३,१४।

६. ना० २।१।१८-३१।

७. सं० पा०—तहेव सरीरबाउसिया तं चेव सव्वं जाव अंतं।

८. पू०—ना० २।१।३२।

९. पू०—ना० २।१।३३।

५३ तए ण सा राइ अज्जा अण्णया कयाइ सरीरबाउसिया जाया या वि होत्था[1] ।।

५४. तए ण सा राई अज्जा पासत्था[2] तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कता कालमासे काल किच्चा चमरचचाए रायहाणीए रायवडिसए भवणे उववायसभाए देवसयणिज्जसि देवदूसतरिया अगुलस्स असखेज्जाए भागमेत्ताए ओगाहणाए राईदेवित्ताए उववण्णा जाव[3] अत काहिइ ।।

५५ एव खलु जबू ! [4]•समणेण भगवया महावीरेण जाव[5] सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स बिइयज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति बेमि ।।

तइयं अज्झयणं

रयणी

५६. जइ ण भते ! [6]•समणेण भगवया महावीरेण धम्मकहाण पढमस्स वग्गस्स बिइयज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, तइयस्स ण भते ! अज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरेण के अट्ठे पण्णत्ते ?°

५७. एव खलु जबू ! रायगिहे नयरे । गुणसिलए चेइए । [7]•सामी समोसढे[8] ।।

५८. तेणं कालेण तेणं समएण रयणी देवी चमरचचाए रायहाणीए आगया[9] ।।

५९. भतेति ! भगव गोयमे समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता पुव्वभवपुच्छा[10] ।।

६०. गोयमाति ! समणे भगव महावीरे भगव गोयम आमतेत्ता एव वयासी—एव खलु गोयमा ! तेण कालेण तेण समएण° आमलकप्पा नयरी । अबसालवणे चेइए । जियसत्तू राया । रयणे गाहावई । रयणसिरी भारिया । रयणी दारिया । सेस तहेव जाव[11] अत काहिइ ।।

---

१. पू०—ना० २।१।३४-३८ ।
२. पू०—ना० १।१।३९ ।
३. ना० २।१।४०-४४ ।
४ स० पा०—बिइयज्झयणस्स निक्खेवओ ।
५ ना० १।१।७ ।
६ स० पा—तइयज्झयणस्स उक्खेवओ ।
७ स० पा०—एव जहेव राई तहेव रयणी वि ।
८. पू०—ना० २।१।४७ ।
९ पू०—ना० २।१।४८ ।
१० पू०—ना० २।१।४९ ।
११ ना० २।१।५०-५४ ।

चउत्थं अज्झयणं

विज्जू

६१. एव विज्जू वि—आमलकप्पा नयरी। विज्जू गाहावई। विज्जूसिरी भारिया। विज्जू दारिया। सेस तहेव[1] ॥

पंचमं अज्झयणं

मेहा

६२. एव मेहा वि—आमलकप्पाए नयरीए मेहे गाहावई। मेहसिरी भारिया। मेहा दारिया। सेस तहेव[2] ॥

६३. एवं खलु जंबू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव[3] सपत्तेण धम्मकहाण पढमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥

---

१. ना० २।१।४६-५४।
२. ना० २।१।४६-५४।
३. ना० १।१।७।

बीओ वग्गो

पढमं अज्झयणं

सुंभा

१ जइ ण भते ! समणेणं [1]•भगवया महावीरेण धम्मकहाण पढमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दोच्चस्स ण भते ! वग्गस्स समणेण भगवया महावीरेण के अट्ठे पण्णत्ते ?°

२ एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण दोच्चस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता, तजहा—सुभा, निसुभा, रभा, निरभा, मदणा ॥

३ जइ ण भते ! समणेण भगवया महावीरेण धम्मकहाण दोच्चस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता, दोच्चस्स ण भते ! वग्गस्स पढमज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

४. एव खलु जवू ! तेणं कालेण तेण समएणं रायगिहे नयरे । गुणसिलए चेइए । सामी समोसढे । परिसा निग्गया जाव[2] पज्जुवासइ ॥

५ तेण कालेण तेण समएण सुभा देवी बलिचचाए रायहाणीए सुभवडेसए भवणे सुभसि सीहासणसि[3] विहरइ । काली गमएण जाव[4] नट्टविहिं उवदसेत्ता पडिगया ॥

६. पुव्वभवपुच्छा ॥

७ सावत्थी नयरी । कोट्ठए चेइए । जियसत्तू राया । सुभे गाहावई । सुभसिरी भारिया । सुभा दारिया । सेस जहा कालीए[5] नवर अद्धट्ठाइ पलिओवमाइ ठिई ॥

८. एव खलु जवू ! [6]•समणेण भगवया महावीरेण दोच्चस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते° ॥

२-५ अज्झयणाणि

९ एव[7]—सेसा वि चत्तारि अज्झयणा । सावत्थीए । नवर—माया पिया धूया-सरिनामया ।

१० एव खलु जवू ! [8]•समणेण भगवया महावीरेण धम्मकहाण विइयस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥°

---

१ स० पा०—दोच्चस्स वग्गस्स उवक्खेवओ ।
२ ओ० सू० ५२ ।
३ पू०—ना० २।१।१० ।
४. ना० २।१।११,१२ ।
५. ना० २।१।१८-४४ ।
६ स० पा०—निक्खेवओ अज्झयणस्स ।
७. ना० २।२।१-८ ।
८. स० पा०—निक्खेवओ विइयवग्गस्स ।

तइयो वग्गो

पढमं अज्झयणं

अला

१ [1]•जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेण धम्मकहाणं बिइयस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, तइयस्स णं भंते ! वग्गस्स समणेणं भगवया महावीरेण के अट्ठे पण्णत्ते ?०

२. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं तइयस्स वग्गस्स चउपण्ण अज्झयणा पण्णत्ता तंजहा—पढमे अज्झयणे जाव चउपण्णइमे अज्झयणे ॥

३ जइ णं भंते समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं तइयस्स वग्गस्स चउपण्ण अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेण के अट्ठे पण्णत्ते ?

४ एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए सामी समोसढे परिसा निग्गया जाव[2] पज्जुवासइ ॥

५ तेणं कालेणं तेणं समएणं अला देवी धरणाए रायहाणीए अलावडेंसए भवणे अलंसि सीहासणंसि एवं कालीगमएणं जाव[3] नट्टविहिं उवदंसेत्ता पडिगया ॥

६ पुव्वभवपुच्छा ॥

७. वाणारसीए नयरीए काममहावणे चेइए । अले गाहावई । अलसिरी भारिया । अला दारिया । सेसं जहा कालीए[4], नवरं—धरणअग्गमहिसित्ताए उववाओ । साइरेगं अद्धपलिओवमं ठिई सेसं तहेव ॥

८ एवं खलु जंबू ! [5]•समणेणं भगवया महावीरेणं तइयस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते० ।

---

१. सं० पा०—उक्खेवओ तइयवग्गस्स ।

२. ओ० सू० ५२ ।

३. ना० २।१।१०-१२ ।

४. ना० २।१।१८-४४ ।

५. सं० पा०—निक्खेवओ पढमज्झयणस्स ।

२-६ अज्झयणाणि

९ एवं[1]—कमा[2], सतेरा, सोयामणी[3], इंदा, घणविज्जुया वि सव्वाओ एयाओ धरणस्स अग्गमहिसीओ ।

७-१२ अज्झयणाणि

१०. एए[4] छ अज्झयणा वेणुदेवस्स वि अविसेसिया भाणियव्वा ।

१३-५४ अज्झयणाणि

११ एवं[5]—°हरिस्स अग्गिसिहस्स पुण्णस्स जलकंतस्स अमियगतिस्स वेलंबस्स° घोसस्स वि एए[6] चेव छ-छ अज्झयणा । एवमेते दाहिणिल्लाणं चउपण्णं अज्झयणा भवंति । सव्वाओ वि वाणारसीए काममहावणे चेइए ।

१२ [7]°एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं तइयस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते° ॥

---

१ ना० २।३।१-८ ।
२ सक्का (ठाण ६।५५, भ० १०।७६) ।
३ सोयमणी (क, ख); सोयमाणी (ग, घ); सोतामणी (ठाण ६।५५) ।
४. ना० २।३।१-८ ।
५ स० पा०—एवं जाव घोसस्स ।
६ ना० २।३।१-८ ।
७. स० पा०—तइयवग्गस्स निक्खेवओ ।

पंचमो वग्गो

पढमं अज्झयणं

कमला

१ [1]•जइ ण भते ! समणेण भगवया महावीरेण धम्मकहाणं चउत्थस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, पचमस्स ण भते ! वग्गस्स समणेण भगवया महावीरेण के अट्ठे पण्णत्ते ?

२ एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण पचमस्स वग्गस्स° वत्तीसं अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा—

१ कमला २ कमलप्पभा चेव, ३ उप्पला य ४ सुदसणा ।
५. रूववई ६ वहुरूवा, ७ सुरूवा ८ सुभगावि य ॥१॥
९ पुण्णा १०. वहुपुत्तिया[2] चेव, ११ उत्तमा १२ तारयावि[3] य ।
१३ पउमा १४ वसुमई चेव, १५ कणगा १६ कणगप्पभा[4] ॥२॥
१७ वडेसा १८ केउमई चेव, १९ 'वइरसेणा २० रइप्पिया'[5] ।
२१ रोहिणी २२ नवमिया चेव, २३ हिरी २४ पुप्फवईवि य ॥३॥
२५ 'भुयगा २६ भुयगावई'[6] चेव, २७ महाकच्छा २८ फुडा इय ।
२९ सुघोसा ३० विमला चेव, ३१ सुस्सरा य ३२ सरस्सई ॥४॥

३ [7]•जइ ण भते ! समणेण भगवया महावीरेण धम्मकहाण पचमस्स वग्गस्स बत्तीस अज्झयणा पण्णत्ता, पचमस्स ण भते ! वग्गस्स पढमज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?०

४ एव खलु जवू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे समोसरण जाव[8] परिसा पज्जुवासइ ॥

---

१ स० पा०—पचम वग्गस्स उक्खेवओ । एव खलु जवू ! जाव वत्तीस ।
२. वहुपुण्णिया (क, ख, घ) ।
३. भारियावि (क, घ) ।
४. रतणप्पभा (ठाण ४।१६५) ।
५ रतिसेणा रतिप्पभा (ठाण ४।१६७), रतिसेणा रइप्पिया (भ० १०.८६) ।
६ सुभगा सुभगावती (ख) ।
७. सं० पा०—उक्खेवेओ पढमज्झयणस्स ।
८. ओ० सू० ५२ ।

५. तेण कालेण तेणं समएणं कमला देवी कमलाए रायहाणीए कमलवडेसए भवणे कमलसि सीहासणसि सेस जहा कालीए तहेव[1], नवर—पुव्वभवे नागपुरे नयरे सहसववणे उज्जाणे कमलस्स गाहावइस्स कमलसिरीए भारियाए कमला दारिया पासस्स अतिए निक्खता। कालस्स पिसायकुमारिदस्स अग्गमहिसी। अद्धपलिओवमं ठिई।

२-३२ अज्झयणाणि

६ एव सेसा वि अज्झयणा दाहिणिल्लाण इदाण[2] भाणियव्वाओ। नागपुरे सहसववणे उज्जाणे। मायापियरो धूया—सरिनामया। ठिई अद्धपलिओवम।

छट्ठो वग्गो

१-३२ अज्झयणाणि

१ छट्ठो वि वग्गो पचमवग्ग-सरिसो, नवर—महाकालाईण[3] उत्तरिल्लाणं इदाण[4] अग्गमहिसीओ। पुव्वभवे सागेए नगरे। उत्तरकुरु-उज्जाणे। मायापियरो धूया—सरिनामया। सेस त चेव॥

सत्तमो वग्गो

पढमं अज्झयणं

सूरप्पभा

१ [5]•जइ ण भते! समणेण भगवया महावीरेण धम्मकहाण छट्ठस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, सत्तमस्स ण भते! वग्गस्स समणेण भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते?

२ एव खलु जवू! समणेण भगवया महावीरेण सत्तमस्स वग्गस्स॰ चत्तारि अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा—सूरप्पभा, आयवा, अच्चिमाली, पभकरा॥

३ [6]•जइ णं भते! समणेण भगवया महावीरेण धम्मकहाण सत्तमस्स वग्गस्स चत्तारि अज्झयणा पण्णत्ता, सत्तमस्स ण भते! वग्गस्स पढमज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते?॰

---

१. ना० २।१।१०-४४।

२ ठाण २।३६४-३७०।

३ महाकायाई ण (ख)।

४. ठाण २।३६४-३७०।

५. स० पा०—सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ एव खलु जवू जाव चत्तारि।

६ सं० पा० —पढमज्झयणस्स उक्खेवओ।

चउत्थो वग्गो

पढमं अज्झयणं

रूया

१ [1]•जइ ण भते ! समणेण भगवया महावीरेणं धम्मकहाण तइयस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, चउत्थस्स ण भते ! वग्गस्स समणेण भगवया महावीरेण के अट्ठे पण्णत्ते ?०

२. एव खलु जंबू ! समणेण भगवया महावीरेणं धम्मकहाण चउत्थस्स वग्गस्स चउप्पण्णं अज्झयणा पण्णत्ता, तंजहा—पढमे अज्झयणे जाव चउप्पण्णइमे अज्झयणे ।।

३ 'जइ ण भते ! समणेण भगवया महावीरेण धम्मकहाण चउत्थस्स वग्गस्स चउपण्णं अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स ण भंते ! अज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरेण के अट्ठे पण्णत्ते ?'[2]

४. एव खलु जवू ! तेण कालेण तेण समएणं रायगिहे समोसरणं जाव[3] परिसा पज्जुवासइ ।।

५. तेणं कालेण तेणं समएण रूया देवी भूयाणंदा रायहाणी रूयगवडेसए भवणे रूयगसि सीहासणसि जहा कालीए[4] तहा, नवर—पुव्वभवे चपाए पुण्णभद्दे चेइए रूयगगाहावई रूयगसिरी भारिया रूया दारिया । सेस तहेव, नवर—भूयाणद-अग्गमहिसित्ताए उववाओ । देसूण पलिओवमं ठिई ।।

६. [5]•एव खलु जंवू ! समणेणं भगवया महावीरेण चउत्थस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति बेमि° ।।

---

१. म० पा०—चउत्थस्स उक्खेवओ ।

२ × (क, ख, ग, घ) । पूर्वक्रमेण एतत् सूत्र युज्यते ।

३. ओ० सू० ५२ ।

४. ना० २।१।१०-४४ ।

५. सं० पा०—निक्खेवओ ।

२-६ अज्झयणाणि

७ एवं[1]— सुरूयावि, रूयसावि, रूयगावईवि, रूयकतावि, रूयप्पभावि ।।

७-५४ अज्झयणाणि

८ एयाओ[2] चेव उत्तरिल्लाण इदाण[3]—°वेणुदालिस्स हरिस्सहस्स अग्गिमाणवस्स विसिट्ठस्स जलप्पभस्स अमितवाहणस्स पभजणस्स महाघोसस्स भाणियव्वाओ ।।°

९ [4]°एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेण धम्मकहाण चउत्थस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते° ।।

---

१ एव खलु (क, ख, ग, घ) । ना० २।४।१-६ ।
२ ना० २।४।१-६ ।
३ स० पा०—भाणियव्वाओ जाव महाघोसस्स ।
४ स० पा०—निक्खेवओ चउत्थवग्गस्स ।

४ एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव[1] परिसा पज्जुवासइ ॥

५ तेणं कालेणं तेणं समएणं सूरप्पभा देवी सूरंसि[2] विमाणंसि सूरप्पभंसि सीहासणंसि। सेसं जहा कालीए तहा[3], नवरं—पुव्वभवो अरक्खुरीए नयरीए सूरप्पभस्स गाहावइस्स सूरसिरीए भारियाए सूरप्पभा दारिया। सूरस्स अग्गमहिसी। ठिई अद्धपलिओवमं पंचहिं वाससएहिं अब्भहियं। सेसं जहा कालीए ॥

२-४ अज्झयणाणि

६. एवं[4]—°आयवा, अच्चिमाली, पभंकरा °। सव्वाओ अरक्खुरीए नयरीए ॥

———

अट्ठमो वग्गो

पढमं अज्झयणं

चंदप्पभा

१ °जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं सत्तमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, अट्ठमस्स णं भंते ! वग्गस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

२ एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्ठमस्स वग्गस्स° चत्तारि अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—चंदप्पभा, दोसिणाभा, अच्चिमाली, पभंकरा ॥

३ [6]°जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं अट्ठमस्स वग्गस्स चत्तारि अज्झयणा पण्णत्ता, अट्ठमस्स णं भंते ! वग्गस्स पढमज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? °

४ एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव[7] परिसा पज्जुवासइ ॥

५ तेणं कालेणं तेणं समएणं चंदप्पभा देवी चंदप्पभंसि विमाणंसि चंदप्पभंसि सीहासणंसि। सेसं जहा कालीए[8], नवरं—पुव्वभवो महुराए नयरीए भंडिवडेंसए

---

१ ओ० सू० ५२।

२ २।८।५ सूत्रपद्धत्या अत्रापि 'सूरप्पभंसि' इति पाठो युज्यते।

३. ना० २।१।१०-४४।

४. स० पा०—एवं मेमाओवि।

५ स० पा०—अट्ठमस्स उक्खेवओ। एवं खलु जंबू जाव चत्तारि।

६. स० पा०—पढमज्झयणस्स उक्खेवओ।

७. ओ० सू० ५२।

८. ना० २।१।१०-४४।

उज्जाणे । चदप्पभे गाहावई । चदसिरी भारिया । चदप्पभा दारिया । चदस्स अग्गमहिसी । ठिई अद्धपलिओवम पण्णासवाससहस्सेहि अब्भहिय ॥

२-४ अज्झयणाणि

६ एव[1]—•दोसिणाभा, अच्चिमाली, पभकरा°, महुराए नयरीए । मायापियरो धूया-सरिसनामा ॥

नवमो वग्गो

१-८ अज्झयणाणि

१ [2]•जइ ण भते ! समणेण भगवया महावीरेण धम्मकहाण अट्ठमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, नवमस्स ण भते ! वग्गस्स समणेण भगवया महावीरेण के अट्ठे पण्णत्ते ?

२ एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण नवमस्स वग्गस्स° अट्ठ अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा—

गाहा—

१ पउमा २ सिवा[3] ३ सई[4] ४. अजू,
५ रोहिणी ६ नवमिया[5] इ य ।
७ अयला[6] ८ अच्छरा ॥

३ [7]•जइ ण भते ! समणेण भगवया महावीरेण धम्मकहाण नवमस्स वग्गस्स अट्ठ अज्झयणा पण्णत्ता, नवमस्स ण भते ! वग्गस्स पढमज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? °

४ एव खलु जवू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे समोसरण जाव[8] परिसा पज्जुवासइ ॥

५ तेण कालेण तेण समएण पउमावई देवी सोहम्मे कप्पे पउमवडेसए विमाणे सभाए सुहम्माए पउमसि सीहासणसि जहा कालीए[9] ॥

---

१ स० पा०—एव सेसाओवि ।
२ स० पा०—नवमस्स उक्खेवओ । एव खलु जवू ! जाव अट्ठ ।
३ सिया (क, ग) ।
४. सुती (क, ख, ग), सची (ठाण ८।२७) ।
५ नमिया (घ) ।
६. अमला (ठाण ८।२७; भ० १०।९२) ।
७ स० पा० – पढमज्झयणस्स उक्खेवओ ।
८ ओ० सू० ५२ ।
९ ना० २।१।१०-४४ ।

६ एव अट्ठ वि अज्झयणा काली-गमएण नायव्वा, नवर—सावत्थीए दोजणीओ। हत्थिणाउरे दोजणीओ। कंपिल्लपुरे दोजणीओ। साएए दोजणीओ। पउमे पियरो विजया मायराओ। सव्वाओ वि पासस्स अतिय पव्वइयाओ। सक्कस्स अग्गमहिसीओ। ठिई सत्त पलिओवमाइ। महाविदेहे वासे अत काहिति॥

दसमो वग्गो

१-८ अज्झयणाणि

१. [1]°जइ ण भते! समणेण भगवया महावीरेण धम्मकहाण नवमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दसमस्स ण भते! वग्गस्स समणेण भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते?

२. एव खलु जबू! समणेण भगवया महावीरेण दसमस्स वग्गस्स° अट्ठ अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा—

संगहणी-गाहा

१ कण्हा य २. कण्हराई, ३. रामा तह ४ रामरक्खिया।
५. वसू या ६ वसुगुत्ता ७ वसुमित्ता ८ वसुधरा चेव ईसाणे॥१॥

३. [2]°जइ ण भते! समणेण भगवया महावीरेण धम्मकहाण दसमस्स वग्गस्स अट्ठ अज्झयणा पण्णत्ता, दसमस्स ण भते! वग्गस्स पढमज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते?°

४. एव खलु जबू! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे समोसरण जाव[3] परिसा पज्जुवासइ॥

५. तेण कालेण तेण समएण कण्हा देवी ईसाणे कप्पे कण्हवडेसए विमाणे सभाए सुहम्माए कण्हसि सीहासणसि, सेसं जहा कालीए॥

६ एव अट्ठ वि अज्झयणा काली-गमएण नायव्वा, नवर—पुव्वभवो वाणारसीए नयरीए दोजणीओ। रायगिहे नयरे दोजणीओ। सावत्थीए नयरीए दोजणीओ। कोसवीए नयरीए दोजणीओ। रामे पिया धम्मा माया। सव्वाओ वि पासस्स अरहओ अंतिए पव्वइयाओ। पुप्फचूलाए अज्जाए सिस्सिणियत्ताए। ईसाणस्स

---

१. सं० पा०—दसमस्स उक्खेवओ। एव खलु जंबू जाव अट्ठ।

२. स० पा०—पढमस्स उक्खेवओ।

३. ओ० सू० ५२।

अग्गमहिसीओ। ठिई नवपलिओवमाइं। महाविदेहे वासे सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति सव्वदुक्खाणं अंतं काहिति॥

७ एवं खलु जंबू! [1]°समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं दसमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते°॥

८. एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेणं सयसंबुद्धेणं पुरिसोत्तमेणं पुरिससीहेणं जाव[2] सिद्धिगइ नामधेज्जं ठाणं संपत्तेणं धम्मकहाणं अयमट्ठे पण्णत्ते।

परिसेसो

धम्मकहा-सुयक्खंधो सम्मत्तो।
दसहिं वग्गेहिं नायाधम्मकहाओ समत्ताओ॥

ग्रन्थ-परिमाण

कुल अक्षर—२२६६४३।
अनुष्टुप् श्लोक—७०९१, अक्षर ३१।

---

१ सं० पा०—निक्खेवओ दसमवग्गस्स। २ ना० १।१।७।

उवासगदसाओ

पढमं अज्झयणं

आणंदे

उक्खेव-पदं

१. तेण कालेण तेण समएण चंपा नामं[1] नयरी होत्था[2]—वण्णओ[3] ।।

२. पुण्णभद्दे चेइए—वण्णओ[4] ।।

३ तेण कालेण तेण समएण[5] •समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अज्जसुहम्मे नामं थेरे जातिसंपण्णे कुलसंपण्णे बलसंपण्णे रूवसंपण्णे विणयसंपण्णे नाणसंपण्णे दंसणसंपण्णे चरित्तसंपण्णे लज्जासंपण्णे लाघवसंपण्णे ओयंसी तेयंसी वच्चंसी जसंसी जियकोहे जियमाणे जियमाए जियलोहे जियणिद्दे जिइंदिए जियपरीसहे जीवियासमरणभयविप्पमुक्के तवप्पहाणे गुणप्पहाणे करणप्पहाणे चरणप्पहाणे निग्गहप्पहाणे निच्छयप्पहाणे अज्जवप्पहाणे मद्दवप्पहाणे लाघवप्पहाणे खंतिप्पहाणे गुत्तिप्पहाणे मुत्तिप्पहाणे विज्जप्पहाणे मंतप्पहाणे बंभप्पहाणे वेयप्पहाणे नयप्पहाणे नियमप्पहाणे सच्चप्पहाणे सोयप्पहाणे नाणप्पहाणे दंसणप्पहाणे चरित्तप्पहाणे ओराले घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्तविउलतेयलेस्से चउदसपुव्वी चउनाणोवगए पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेण विहरमाणे जेणेव चंपा नयरी जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छइ, चंपानयरीए बहिया

---

१. नाम (ख) ।

२ हुत्था (ग) ।

३. ओ० सू० १ ।

४. ओ० सू० २-१३ ।

५ म० पा०—समएण अज्जसुहम्मे समोसरिए जाव जंबू पज्जुवासमाणे । असौ बिन्दुमध्यवर्ती पाठः क्रमशः रायपसेणइय-ओवाइय-सूत्राभ्यां पूरितः । प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ 'नायाधम्मकहाओ' सूत्रात् पूरणस्य सूचना कृतास्ति । अस्माभिः पूरिते पाठे तत्र किञ्चिद् भेदो विद्यते, नास्ति क्वचिद् मौलिको भेदः ।

पुण्णभद्दे चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

४. तेणं कालेणं तेणं समएणं अज्जसुहम्मस्स थेरस्स जेट्ठे अंतेवासी अज्जजंबू नामं अणगारे कासव[1] गोत्तेणं सत्तुस्सेहे समचउरंससंठाणसंठिए वइररिसहणाराय-संघयणे कणगपुलगनिघसपम्हगोरे उग्गतवे दित्ततवे तत्ततवे महातवे ओराले घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्तविउलतेयलेस्से अज्जसुहम्मस्स थेरस्स अदूरसामंते उड्ढंजाणू अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

५. तए णं से अज्जजंबू नामं अणगारे जायसड्ढे जायसंसए जायकोऊहल्ले, उप्पण्णसड्ढे उप्पण्णसंसए उप्पण्णकोऊहल्ले, संजायसड्ढे संजायसंसए संजाय-कोऊहल्ले, समुप्पण्णसड्ढे समुप्पण्णसंसए समुप्पण्णकोऊहल्ले उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव अज्जसुहम्मे थेरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अज्जसुहम्मं थेरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासमाणे[2] एवं वयासी—जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[3] संपत्तेणं[4] छट्ठस्स अंगस्स नायाधम्मकहाणं अयमट्ठे पण्णत्ते, सत्तमस्स णं भंते ! अंगस्स उवासगदसाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[5] संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

६. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[6] संपत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

आणंदे कामदेवे य, गाहावतिचुलणीपिता ।
सुरादेवे चुल्लसयए, गाहावइकुंडकोलिए ॥
सद्दालपुत्ते महासतए, नंदिणीपिया लेइयापिता[7] ।१॥

---

१ व्या० वि०—विभक्तिरहित पदम् ।
२ पज्जुवासइ (क) ।
३. ना० १।१।७ ।
४ संपाविउकामेण (समवाओ १।२) ।
५,६ ना०१।१।७ ।
७. लेतियापिया (क, ग), सालेइणीपिया (ख) । उवासगदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—
आणंदे कामदेवे अ, गाहावतिचूलणीपिता ।
सुरादेवे चुल्लसतए, गाहावतिकुंडकोलिए ॥
सद्दालपुत्ते महासतए णंदिणीपिया सालेइया-पिता । (स्थानांग १०।११२) । स्थानांग-सूत्रे दशमाध्ययनस्य नाम 'सालेइयापिता' लभ्यते । अत्र एकस्या प्रतौ 'सालेइणीपिया' नाम उपलब्धमस्ति, किन्तु 'सालइयापिता' नाम नोपलभ्यते । स्यादसौ वाचनाभेद अथवा लिपिदोषेणासौ विपर्ययो जात ; इति अनुसंधेयमस्ति ।

७ जइ ण भंते ! समणेणं भगवया महावीरेण जाव[1] सपत्तेण सत्तमस्स अगस्स उवासगदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स ण भते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव[2] सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ?

आणंदगाहावइ-पदं

८ एव खलु जवू ! तेण कालेण तेण समएण वाणियगामे नाम नयरे होत्था—वण्णओ[3] ॥

९ तस्स वाणियगामस्स नयरस्स वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ ण दूइपलासए नाम चेइए[4] ॥

१० तत्थ णं वाणियगामे नयरे जियसत्तू राया होत्था—वण्णओ[5] ।

११ तत्थ ण वाणियगामे नयरे आणदे नाम गाहावई परिवसइ—अड्ढे[6] °दित्ते वित्ते विच्छिण्णविउलभवण-सयणासण-जाणवाहणे वहुधण-जायरूव-रयए आओग-पओगसपउत्ते विच्छड्डियपउरभत्तपाणे वहुदासी-दास-गो-महिस-गवेलगप्पभूए वहुजणस्स° अपरिभूए ॥

१२ तस्स ण आणदस्स गाहावइस्स चत्तारि हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, 'चत्तारि हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ'[7] चत्तारि हिरण्णकोडीओ पवित्थर-पउत्ताओ, चत्तारि वया दसगोसाहस्सिएण वएण होत्था ॥

१३ से ण आणदे गाहावई वहूण राईसर[8]-°तलवर-माडविय-कोडुविय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ°-सत्थवाहाण वहूसु कज्जेसु य कारणेसु य कुडुवेसु[9] य मतेसु य गुज्झेसु य रहस्सेसु य निच्छएसु य ववहारेसु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य ण 'कुडुवस्स मेढी पमाण आहारे आलवण चक्खू, मेढीभूए पमाणभूए आहारभूए आलवणभूए चक्खुभूए'[10] सव्वकज्जवड्ढावए[11] यावि होत्था ॥

१,२ ना० १।१।७ ।
३. ओ० सू० १४ ।
४. चेतिते (क), चेइए होत्था (घ) ।
५. ओ० सू० १४ ।
६ स० पा०—अड्ढे जाव अपरिभूए ।
७ ×(क) ।
८ ईसर (क,ख,ग), ईसराण (घ), राईसर (ओ० सू० १८)। स० पा०—राईसर जाव सत्थवाहाण ।
९. यद्यपि सर्वास्वपि प्रतिपु 'मतेसु य कुडुवेसु य' इति पाठो लभ्यते, किंतु अर्थसगत्या 'कुडुवेसु य मतेपु य' इति पाठ उपयुक्तोस्ति । ज्ञाता (१।१६) सूत्रे तथा रायपसेणइय (६७५) सूत्रेपि इत्थमेवपाठो विद्यते । ज्ञातावृत्तौ अर्थसंगतिरित्थ कृतास्ति—कुटुम्वेपु च स्वकीयपरकीयेपु विपयभूतेपु च मन्त्रादयो निश्चयान्तास्तेपु आप्रच्छनीय ।
१०. कुडुवस्स मेढीभूए (क,ग), कुडुवस्स मेढी-भूए जाव (ख) ।
११ मेढीभूते सव्व° (घ) ।

१४ तस्स ण आणदस्स गाहावइस्स सिवणदा[1] नामं भारिया होत्था—अहीण[2]-°पडिपुण्ण-पचिंदियसरीरा लक्खण-वजण-गुणोववेया माणुम्माण-प्पमाण-पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वग-सुदरगी ससि-सोमाकार-कत-पिय-दसणा° सुरूवा, आणदस्स गाहावइस्स इट्ठा, आणदेण गाहावइणा सद्धि अणुरत्ता अविरत्ता, इट्ठे[3] °सद्द-फरिस-रस-रूव-गधे° पचविहे माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी विहरइ ॥

१५ तस्स ण वाणियगामस्स नयरस्स वहिया उत्तरपुरित्थमे दिसीभाए, एत्थ ण कोल्लाए[4] नाम सण्णिवेसे होत्था—रिद्धत्थिमिए[5] जाव[6] पासादिए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ॥

१६ तत्थ ण कोल्लाए सण्णिवेसे आणदस्स गाहावइस्स वहवे[7] मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परिजणे परिवसइ—अड्ढे जाव[8] वहुजणस्स अपरिभूए ॥

महावीर-समवसरण-पदं

१७ तेण कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे[9] जाव[10] °जेणेव वाणियगामे नयरे जेणेव दूइपलासए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ° ॥

१८ परिसा निग्गया ॥

१९ कूणिए राया जहा, तहा जियसत्तू निग्गच्छइ जाव[11] पज्जुवासइ ॥

२० तए ण से आणदे गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे—"एव खलु समणे[12] °भगव महावीरे[13] पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे इहमागए इह सपत्ते इह समोसढे इहेव वाणियगामस्स नयरस्स वहिया दूइपलासए चेइए अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।" त महप्फल खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहारूवाण अरहताण भगवंताण णामगोयस्स वि सवणयाए, किमग पुण अभिगमण-वदण-णमसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्सवि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? तं गच्छामि ण देवाणुप्पिया ! समण

---

१. सिवानदा (ख,घ) ।
२ स० पा०—अहीण जाव सुरूवा ।
३ स० पा०—इट्ठे जाव पचविहे ।
४ कोलाते (क,ग) ।
५ रिद्धित्थमिए (ख) ।
६ ओ० सू० १ ।
७ वहुवे (ग) ।
८ उवा० १।११ ।
९ स० पा०—महावीरे जाव समोसरिए ।
१० ओ० सू० १९, २२ ।
११. ओ० सू० ५३-६९ ।
१२ स० पा०—समणे जाव विहरइ त महा-फल गच्छामि ण जाव पज्जुवासामि ।
१३. पू०—ओ० सू० ५२ ।

भगवं महावीरं वंदामि णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं° पज्जुवासामि—एवं संपेहेइ, संपेहित्ता ण्हाए[1] •कयवलिकम्मे कय-कोउय मंगलपायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं 'पवर परिहिए'[2] °अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे 'सयाओ गिहाओ'[3] पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते पादविहारचारेणं 'वाणियगामं नयरं'[4] मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव दूइपलासए[5] चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ[6] •वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे° पज्जुवासइ ॥

२१ तए णं समणे भगवं महावीरे आणंदस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए जाव[7] धम्मं परिकहेइ ॥

२२ परिसा पडिगया, राया य गए[8] ॥

आणंदस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पद

२३ तए णं से आणंदे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ[9]-•चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता° एवं वयासी—सद्दहामि णं[10] •भंते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं। एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते !° से जहेयं तुब्भे वदह[11]। जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए

---

१. सं० पा०—ण्हाए सुद्धप्पावेसा अप्प° ।

२. अत्र नायाधम्मकहाओ (१।१।३३) सूत्रे 'पवर परिहियाओ' पाठो विद्यते। तत्र वृत्तौ—प्रवरमिहानुस्वारलोपो दृश्य, इति व्याख्यातमस्ति। एतत् उपयुक्तं प्रतिभाति।

३ सयातो गिहातो (ग)।

४ वाणियागामं नगरं (क)।

५. °पलासे (क,ग)।

६ सं० पा०—णमंसइ जाव पज्जुवासइ।

७ ओ० सू० ७१-७७।

८. पडिगओ (क), गया (ख)।

९ सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव एवं वयासी।

१० सं० पा०—सद्दहामि णं जाव से जहेयं।

११ वदह त्ति (क), वदह त्ति कट्टु (ख,ग,घ), रायपसेणइयसूत्रे (६९५) अत्र किञ्चिदधिकः पाठो लभ्यते—त्ति कट्टु वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—

बहवे राईसर-तलवर-माडविय-कोडुविय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुडा भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइया, नो खलु अह तहा सचाएमि मुडे[1] °भवित्ता अगाराओ अणगारिय° पव्वइत्तए। अह ण देवाणुप्पियाणं अतिए पचाणुव्वइय सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविह सावगधम्म[2] पडिवज्जिस्सामि।

अहासुह देवाणुप्पिया! मा पडिबध करेहि[3] ॥

२४ तए ण से आणदे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए तप्पढमयाए[4] थूलय[5] पाणाइवाय पच्चक्खाइ[6] जावज्जीवाए दुविह तिविहेण—न करेमि न कारवेमि, मणसा वयसा कायसा ॥

२५ तयाणतर[7] च ण थूलय[8] मुसावाय पच्चक्खाइ जावज्जीवाए दुविह तिविहेण—न करेमि न कारवेमि, मणसा वयसा कायसा ॥

२६ तयाणतर च ण थूलय[9] अदिण्णादाण पच्चक्खाइ जावज्जीवाए दुविह तिविहेण—न करेमि न कारवेमि, मणसा वयसा कायसा ॥

२७. तयाणतर च ण सदारसतोसीए[10] परिमाण करेइ—नन्नत्थ एक्काए सिवनदाए भारियाए, अवसेस[11] सव्व मेहुणविहि[12] पच्चक्खाइ ॥

२८ तयाणतर च ण इच्छापरिमाण करेमाणे—

(१) हिरण्ण-सुवण्णविहिपरिमाण[13] करेइ—नन्नत्थ चउहि हिरण्णकोडीहि निहाणपउत्ताहि, चउहि वड्ढिपउत्ताहि, चउहि पवित्थरपउत्ताहि, अवसेस सव्व हिरण्ण-सुवण्णविहि पच्चक्खाइ[14]।

---

१ स० पा०—मुडे जाव पव्वइत्तए।

२ गिहिधम्म (क,ख,ग,घ)। दिग्व्रत-शिक्षाव्रतानामतिचारनिरूपणप्रसगे वृत्तिकारेण समालोच्यपाठ समुद्धृतोस्ति। तत्र व्रतग्रहणसकल्पावसरे व्रतग्रहणानन्तर च उभयत्रापि 'सावगधम्म' इति पाठो विद्यते, यथा—"कथमन्यथा प्रागुक्त दुवालसविह सावगधम्म पडिवज्जिस्सामीति? कथ वा वक्ष्यति—दुवालसविह सावगधम्म पडिवज्जति त्ति" (वृ), अग्रिमस्थलेषु 'गिहिधम्म' इत्येवपाठ प्रतिषु लभ्यते। तत्र वृत्तौ नास्ति काचिद् व्याख्या, तेन क्वचित्-क्वचित् गिहिधम्म' पाठोऽपि स्वीकृत.। नानयो कश्चिद् अर्थभेदोऽस्ति।

३. करेह (घ)।

४ °मताते (ग)।

५. थूल (क)।

६. पच्चक्खामि (ख,ग,घ)।

७ तदा° (ग)।

८ थूल (क)।

९ थूल (क,ग); थूलग (घ)।

१०. °सतोसिए (क,ख); °सतोसिते(ग,घ),३५ सूत्रे इकारस्य दीर्घत्व लभ्यते।

११. असेस (क)।

१२. मेथुन° (क), मेथुण° (घ)।

१३ सुवण्णपरिमाण (ग,घ)।

१४. पच्चक्खामि (ख,ग) अग्रे सर्वत्रापि।

(२) तयाणंतर च णं चउप्पयविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ चउहिं वएहिं[1] दसगोसाहस्सिएणं वएणं[2], अवसेसं सव्वं चउप्पयविहिं पच्चक्खाइ ।

(३) तयाणंतर च णं खेत्त-वत्थुविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ पंचहिं हलसएहिं नियत्तणसतिएणं हलेणं, अवसेसं सव्वं खेत्त-वत्थुविहिं पच्चक्खाइ ।

(४) तयाणंतरं च णं सगडविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ पंचहिं सगडसएहिं[3] दिसायत्तिएहिं, पंचहिं सगडसएहिं संवहणिएहिं, अवसेसं सव्वं सगडविहिं[4] पच्चक्खाइ ।

(५) तयाणंतर च णं वाहणविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ चउहिं वाहणेहिं दिसायत्तिएहिं, चउहिं वाहणेहिं संवहणिएहिं[5], अवसेसं सव्वं वाहणविहिं[6] पच्चक्खाइ ॥

२६ तयाणंतर च णं उवभोग-परिभोगविहिं पच्चक्खायमाणे—

(१) उल्लणियाविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ 'एगाए गंधकासाईए'[7], अवसेसं सव्वं उल्लणियाविहिं पच्चक्खाइ ।

(२) तयाणंतर च णं दंतवणविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ एगेणं अल्ललट्ठीमहु-एणं[8], अवसेसं सव्वं[9] दंतवणविहिं पच्चक्खाइ ।

(३) तयाणंतरं च णं फलविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ एगेणं खीरामलएणं, अवसेसं सव्वं फलविहिं पच्चक्खाइ ।

(४) तयाणंतर च णं अब्भंगणविहिपरिमाणं[10] करेइ—नन्नत्थ सयपागसहस्स-पागेहिं तेल्लेहिं[11], अवसेसं सव्वं अब्भंगणविहिं पच्चक्खाइ ॥

(५) तयाणंतर च णं उव्वट्टणाविहिपरिमाणं[12] करेइ—नन्नत्थ एगेणं सुरभिणा गंधट्टएणं[13], अवसेसं सव्वं उव्वट्टणाविहिं पच्चक्खाइ ।

(६) तयाणंतर च णं मज्जणविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ अट्ठहिं उट्टिएहिं[14]

---

१ वतेहिं (ग) ।
२ वतेणं (ग) ।
३ सगडसागडेहिं (क), सगडीसएहिं (ख) ।
४ सगडविहं (घ) ।
५ संवा° (ख) ।
६. वहण° (क) ।
७ एगाते गंधकासातीते (क,ग) ।
८ अल्ललट्ठो° (ग) ।
९. × (क,ग) । अनयोरादर्शयोरग्रे सर्वत्रापि 'सव्वं' पाठो नास्ति । अत्र लिपे संक्षेपी-करणमेव कारणं संभाव्यते ।
१०. अभिं° (घ) ।
११ तिल्लेहिं (घ) ।
१२. उव्वट्टण (क्व) ।
१३ गंधवट्टएणं (क,ख,घ) । एतत् परिवर्तनं संभवतो लिपिदोषेण जातम् । वृत्तौ अस्य मौलिकं रूपं सुरक्षितमस्ति, यथा—गन्ध-द्रव्याणामुपलकुष्ठादीनाम्, 'अट्टओ' त्ति चूर्णं गोधूमचूर्णं वा गन्धयुक्तम् । स्थानांगे (३।८७) पि 'गंधट्टएणं' इति प्रयोगो लभ्यते ।
१४ उव्वट्टिएहिं(क) । उद्वर्तितैः इति विशेषणेन अरघट्टपरिवर्तिभिः उदकघटैः इत्यर्थः सूच्यते।

'उदगस्स घडेहिं'[1], अवसेस सव्व मज्जणविहिं पच्चक्खाइ ।

(७) तयाणतर च ण वत्थविहिपरिमाण करेइ—'नन्नत्थ एगेण'[2] खोमजुयलेण, अवसेस सव्व वत्थविहि पच्चक्खाइ ।

(८) तयाणतर च ण विलेवणविहिपरिमाण करेइ—नन्नत्थ अगरु[3]-कुकुम-चदणमादिएहिं[4], अवसेस सव्व विलेवणविहि पच्चक्खाइ ।

(९) तयाणतर च ण पुप्फविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ एगेण सुद्धपउमेण मालइकुमुमदामेण[5] वा, अवसेस सव्व पुप्फविहिं पच्चक्खाइ ।

(१०) तयाणतर च ण आभरणविहिपरिमाण करेइ—नन्नत्थ मट्ठकण्णेज्जएहि नाममुद्दाए य, अवसेस सव्व आभरणविहि पच्चक्खाइ ।

(११) तयाणतर च ण धूवणविहिपरिमाण करेइ—नन्नत्थ अगरु[6]-तुरुक्क-धूवमादिएहि, अवसेस सव्व धूवणविहिं पच्चक्खाइ ।

(१२) तयाणतर च ण भोयणविहिपरिमाण करेमाणे—

(क) पेज्ज-विहिपरिमाण करेइ—नन्नत्थ एगाए कट्ठपेज्जाए, अवसेस सव्व पेज्जविहिं पच्चक्खाइ ।

(ख) तयाणतर च ण भक्खविहिपरिमाण[7] करेइ—नन्नत्थ एगेहिं घयपुण्णेहिं खडखज्जएहि वा, अवसेस सव्वं भक्खविहिं[8] पच्चक्खाइ ।

(ग) तयाणतर च ण ओदणविहिपरिमाण करेइ—नन्नत्थ कलमसालि-ओदणेण, अवसेसं सव्व ओदणविहि पच्चक्खाइ ।

(घ) तयाणतरं च सूवविहिपरिमाण[9] करेइ—नन्नत्थ कलायसूवेण[10] वा 'मुग्गसूवेण वा माससूवेण'[11] वा अवसेस सव्व सूवविहिं पच्चक्खाइ ।

(ङ) तयाणतर च णं घयविहिपरिमाण करेइ—नन्नत्थ सारदिएण गोघय-मडेण, अवसेस सव्वं घयविहिं पच्चक्खाइ ।

(च) तयाणतर च ण सागविहिपरिमाण करेइ—नन्नत्थ वत्थुसाएण[12] वा तुबसाएण वा सुत्थियसाएण[13] वा मडुक्कियसाएण वा, अवसेस सव्व सागविहिं पच्चक्खाइ ॥

---

१. उदगघडेहिं (क) ।
२ नन्नत्थेक्केण (क,ग) ।
३ अगुरु (क,घ) ।
४ °मातितेहिं (क), माइतेहिं (घ) ।
५. मालई° (घ) ।
६. अगुरु (क, घ) ।
७ भक्खण° (ख) ।
८. भक्खण° (क,ख) ।
९. सूय° (क,ग,घ) ।
१०. कालाय° (क) ।
११ मुग्गमाससूवेण (क) ।
१२ वुसातेण (क), वत्थुसातेण (ग), चुच्चुसाएण (घ) ।
१३. सुत्थिया° (ग); सूवत्थिय° (घ) ।

(छ) तयाणतरं च ण माहुरयविहिपरिमाण करेइ—नन्नत्थ एगेण पालकामाहुरएण[1], अवसेस सव्व माहुरयविहिं पच्चक्खाइ ।

(ज) तयाणतर च ण तेमणविहिपरिमाण[2] करेइ—नन्नत्थ सेहव-दालियवेहिं, अवसेस सव्व तेमणविहिं पच्चक्खाइ ।

(झ) तयाणतर च ण पाणियविहिपरिमाण[3] करेइ—नन्नत्थ एगेणं अतलिक्खोदएण, अवसेस सव्व पाणियविहिं पच्चक्खाइ ।

(ञ) तयाणतर च ण मुहवासविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ पंचसोगधि-एण[4] तबोलेण, अवसेस सव्व मुहवासविहिं पच्चक्खाइ ॥

३० तयाणतर च ण चउव्विह अणट्ठादड[5] पच्चक्खाइ, त जहा—१. अवज्झाणाचरित[6] २ पमायाचरित[7] ३ हिंसप्पयाण ४. पावकम्मोवदेसे ॥

अतियार-पद

३१. आणंदाइ[8] ! समणे भगव महावीरे आणद समणोवासग एव वयासी—एव खलु आणदा ! समणोवासएण[9] अभिगयजीवाजीवेण[10] •उवलद्धपुण्णपावेण आसव-सवर-निज्जर-किरिया-अहिगरण-बधमोक्खकुसलेण असहेज्जेण, देवासुर-णाग-सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-किण्णर-किंपुरिस-गरुल-गधव्व-महोरगाइएहिं देवगणेहि निग्गथाओ पावयणाओ° अणइक्कमणिज्जेण सम्मत्तस्स पच 'अतियारा पेयाला'[11] जाणियव्वा, न समायरियव्वा, त जहा—१. सका २ कखा ३ वितिगिच्छा[12] ४ परपासडपससा ५ परपासडसथवो[13] ॥

३२. तयाणतर च ण थूलयस्स पाणाइवायवेरमणस्स[14] समणोवासएण 'पच अतियारा

---

१ °माधुरतेण (क), °माधुरतेण (ग) ।

२. जेवण° (क), जेमण° (ख,ग,घ) । 'तेमण' इति पाठो वृत्त्याधारेण स्वीकृत. । 'ग' प्रतौ वारद्वयमपि जेमण' शब्दस्य जकारोपरि सूक्ष्माक्षरेण 'ते' इति लिखितमस्ति ।

३. पाणित° (ग) ।

४. °सोगंवितेण (ग), °सोगधेण (घ) ।

५ अनत्थ° (ख) ।

६ °यरिय (ख) ।

७. °यरियं (क,ख) ।

८. °दि (क), °ति (ग) ।

९. °वासतेण (ग,घ) ।

१० स० पा०—अभिगयजीवाजीवेण जाव अण-इक्कमणिज्जेण ।

११ अतियारपेयाला (क,ग), अतिचारा पेयाला (घ) । पेयालत्ति सारा प्रधाना स्थूलत्वेन शक्यव्यपदेशत्वात् (उवासगदसाओ वृत्ति); पेयाल पेज्जल पमाणम्मि (देशीनाममाला ६।५७) ।

१२. °गिच्छा (क) ।

१३ शङ्काकाङ्क्षाविचिकित्साऽन्यदृष्टिप्रशसा-सस्तवा. सम्यग्दृष्टेरतिचारा (तत्त्वार्थसूत्र ७।१८) ।

१४. पाणायिवाय° (क), पाणादिवाय° (ग) ।

पेयाला"[1] जाणियव्वा, न समायरियव्वा, त जहा—१ वधे २ वहे ३. छविच्छेदे[2] ४ अतिभारे[3] ५ भत्तपाणवोच्छेदे[4] ॥

३३ 'तयाणतर च ण 'थलयस्स मुसावायवेरमणस्स'[5] समणोवासएण 'पच अतियारा'[6] जाणियव्वा'[7], न समायरियव्वा, त जहा—१. सहसाभक्खाणे[8] २. रहस्सब्भक्खाणे[9] ३ 'सदारमतभेए ४ मोसोवएसे'[10] ५ कूडलेहकरणे ॥[11]

३४ तयाणतर च णं थूलयस्स अदिण्णादाणवेरमणस्स समणोवासएण पंच अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, त जहा—१ तेणाहडे २. तक्करप्पओगे[12] ३ विरुद्धरज्जातिक्कमे ४. कूडतुल[13]-कूडमाणे ५. तप्पडिरूवगववहारे ॥

३५. तयाणतर च ण सदारसतोसीए समणोवासएण पंच अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, त जहा—१ इत्तरियपरिग्गहियागमणे[14] २ अपरिग्गहियागमणे ३ अणगकिड्डा[15] ४ परवीवाहकरणे[16] ५ 'कामभोगे तिव्वाभिलासे'[17] ॥

३६ तयाणतर च ण इच्छापरिमाणस्स समणोवासएण पच[18] अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, त जहा—१. खेत्तवत्थुपमाणातिक्कमे २ हिरण्णसुवण्णपमाणातिक्कमे ३ धण धण्णपमाणातिक्कमे ४. दुपयचउप्पयपमाणातिक्कमे ५ कुवियपमाणातिक्कमे ॥

---

१. पचतियारपेयाला (क), पचतियारा पेयाला (घ)।
२. ०च्छेए (क,ख,घ)।
३ अयि० (क), अइ० (ख,घ)।
४. ०वोच्छेए (क,ख), ०वोच्छेए (घ)।
५ थूलगमुसावाय० (क,ग,घ)।
६ पचतियारा (क,ग,घ)। अस्मिन् सूत्रे तथा उत्तरवर्तिअतिचारसूत्रेषु 'पेयाला' शब्द. साक्षात् लिखितो नास्ति।
७ थूलगमुसावायस्स पचविहे पण्णत्ते, तजहा—कण्णालिय, गोवालिय, भोमालियं, णासावहारो, कूडसक्खेज्ज सविकरणे। थूलगमुसावायस्स पच अतियारा जाणियव्वा (ख)।
८ सहसब्भक्खाणे (क)
९ रहसब्भक्खाणे (क), रहसाभक्खाणे (ख,घ)।
१०. मोसोवएसे सदारमंतभेए (क)।
११ वाचनान्तरे तु– कन्नालीय, गवालीय, भूमालिय, नासावहार, कूडसक्खेज्ज सधिकरणे त्ति पठ्यते। "आवश्यकादौ पुनरिमे स्थूलमृषावादभेदा उक्ताः" ततोयमर्थ सभाव्यते—एत एव प्रमादसहसाकाराऽनाभोगैरभिधीयमाना मृषावादविरतेरतिचारा भवन्त्याकुट्या च भगा इति (वृ)।
१२ तक्करपओगे (क,घ)।
१३ कूडतुल्ल (घ)।
१४ इत्तिरिय० (क,ग)।
१५ ०कीडा (ख,घ)।
१६ परविवाह० (ख)।
१७. कामभोगे तिव्वाभिनिवेसे (क), कामभोएसु तिव्वाभिनिवेसे (ख)।
१८. इमे पच (क)।

३७. 'तयाणतरं च ण दिसिव्वयस्स[1] समणोवासएण पच अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, त जहा १ उड्ढदिसिपमाणातिक्कमे[3] २ अहोदिसिपमाणातिक्कमे ३ तिरियदिसिपमाणातिक्कमे ४ खेत्तवुड्ढी ५ सतिअतरद्धा[4] ॥

३८ तयाणतरं च ण उवभोगपरिभोगे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—'भोयणओ कम्मओ य'[5] ।

भोयणओ[6] समणोवासएण पच अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, त जहा—१ सचित्ताहारे २. सचित्तपडिबद्धाहारे ३ अप्पउलिओसहिभक्खणया[7] ४ दुप्पउलिओसहिभक्खणया ५ तुच्छोसहिभक्खणया ।

कम्मओ ण समणोवासएण पण्णरस कम्मादाणाइ जाणियव्वाइ, न समायरियव्वाइ, त जहा—१. इगालकम्मे २ वणकम्मे ३ 'साडीकम्मे ४ भाडीकम्मे ५ फोडीकम्मे'[8] ६. दतवाणिज्जे[9] ७ लक्खवाणिज्जे ८ रसवाणिज्जे ९ विसवाणिज्जे १० केसवाणिज्जे ११ जतपीलणकम्मे १२ निल्लछणकम्मे १३ दवग्गिदावणया १४ सरदहतलागपरिसोसणया[10] १५ असतीजणपोसणया[11] ॥

३९ तयाणतरं च ण अणट्ठादडवेरमणस्स समणोवासएण पच अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, त जहा—१ कदप्पे २ कुक्कुइए[12] ३ मोहरिए ४ सजुत्ताहिकरणे ५ उवभोगपरिभोगातिरित्ते[13] ॥

---

१. वृत्तिकृता अत्र एक महत्त्वपूर्णं सूचन कृतमस्ति —दिग्व्रत शिक्षाव्रतानि च यद्यपि पूर्वं नोक्तानि तथापि तत्र तानि द्रष्टव्यान्यतिचारभणनस्यान्यथा निरवकाशता स्यादिहेति, कथमन्यथा प्रागुक्तम् —दुवालसविह सावगधम्म पडिवज्जिस्सामीति ? कथ वा वक्ष्यति —दुवालसविह सावगधम्मं पडिवज्जइत्ति, अथवा सामायिकादीनामित्वरकालीनत्वेन प्रतिनियतकालकरणीयत्वात् न तदैव तान्यसौ प्रतिपन्नवान्, दिग्व्रत च विरतेरभावात् उचितावसरे तु प्रतिपत्स्यते इति भगवतस्तदतिचारवर्जनोपदेशनमुपपन्नम् । यच्चोक्त द्वादशविध गृहिधर्मं प्रतिपत्स्ये, यच्च वक्ष्यति द्वादशविध श्रावकधर्मं प्रतिपद्यते, तद् यथा काल तत्करणाभ्युपगमादनवद्यमवसेयम् (वृ) ।

२ दिसि विदिसि (ख,घ) ।

३ उड्ढदिसाइक्कमे (वृपा) ।

४ सइ° (ख, घ) ।

५. भोयणओ य कम्मओ य (क), भोयणतो कम्मतो (ख) ।

६. तत्थ ण भोयणओ (ख) ।

७ व्या० वि०—अप्पउलि + ओसहि° = अप्पउलिओसहि° ।

८ साडीकम्मे य भाडीकम्मे य फोडीकम्मे य (ख) ।

९ 'दतवाणिज्जे' इत्यनन्तर पाठभिन्नता दृश्यते— °केसवाणिज्जे विसवाणिज्जे (क), रसवाणिज्जे लक्खवाणिज्जे (ग), केसवाणिज्जे रसवाणिज्जे लक्खवाणिज्जे विसवाणिज्जे(घ)।

१० °तलाय° (क), तडायसोसणया (ख), तलावसोसणया (घ) ।

११ असति° (क, ग), असइ° (घ) ।

१२. कुक्कुतिए (क) ।

१३. °भोगाइरित्ते (क) ।

४० तयाणतर च ण सामाइयस्स समणोवासएणं पंच अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, त जहा—१ मणदुप्पणिहाणे २. वइदुप्पणिहाणे[1] ३ कायदुप्पणिहाणे ४ सामाइयस्स सतिअकरणया ५ सामाइयस्स अणवट्ठियस्स करणया ।।

४१ तयाणतर च ण देसावगासियस्स[2] समणोवासएण पच अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, त जहा—१ आणवणप्पओगे २. पेस[सा ?]णवणप्पओगे[3] ३ सद्दाणुवाए ४ रूवाणुवाए ५ वहियापोग्गलपक्खेवे[4] ।।

४२ तयाणतर च ण पोसहोववासस्स समणोवासएण पंच अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, त जहा—१ अप्पडिलेहिय-दुप्पडिलेहिय-सिज्जासथारे[5] २ अप्पमज्जिय-दुप्पमज्जिय-सिज्जासथारे ३ अप्पडिलेहिय-दुप्पडिलेहिय-उच्चारपासवणभूमी ४ अप्पमज्जिय-दुप्पमज्जिय-उच्चारपासवणभूमी ५ पोसहोववासस्स[6] सम्म[7] अणणुपालणया ।।

४३ तयाणतर च ण अहासविभागस्स समणोवासएणं पच अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, त जहा—१. सचित्तनिक्खेवणया[8] २ सचित्तपिहणया[9] ३ कालातिक्कमे[10] ४ परववदेसे[11] ५. मच्छरियया[12] ।।

४४. तयाणतर च ण अपच्छिममारणतियसलेहणाझूसणाराहणाए[13] पच अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, त जहा—१ इहलोगाससप्पओगे २ परलोगाससप्पओगे ३ जीवियाससप्पओगे ४ मरणासंसप्पओगे ५. कामभोगाससप्पओगे ।।

आणंद-अभिग्गह-पदं

४५ तए ण से आणंदे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए पचाणुव्वइय सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविह सावयधम्म पडिवज्जति, पडिवज्जित्ता समण

---

१. वय० (घ)।

२. ०कामियस्स (ग)।

३ क, ख, घ, आदर्शेषु 'पेसवण' इति पाठो लभ्यते, किन्तु 'पेसवण' शब्दस्यार्थो दुरधिगमोऽस्ति। प्रेषणस्यार्थ 'पेसण' शब्देनापि सूचितो भवेत्। ग' आदर्शे 'पेसणवण' इति पाठो विद्यते। वृत्त्यनुसारेण अत्रापि आनयनस्यार्थोऽस्ति, यथा—"बलाद् विनियोज्य. प्रेष्यस्तस्य प्रयोगो यथाऽभिगृहीतप्रविचारदेशव्यतिक्रमभयात् त्वयाऽवश्यमेव तत्र गत्वा मम गवाद्यानेयम्" (वृ) तेनात्र 'पेसणवण' इति पाठ समीचीन. प्रतिभाति।

४. ०पोग्गलक्खेवे (क)।

५ ०सथारए (ग)।

६ पोसहस्स (ग)।

७ वृत्तौ 'सम्म' शब्दो न व्याख्यातो दृश्यते।

८. ०निक्खिवणयाए (क)।

९. ०पिहणयाए (क), ०पेहणया (ख, घ)।

१०. कालातिकम्मदाणे (ख)।

११. परओवदेसे (ख)।

१२. मच्छरया (ख)।

१३ ०राहणयाते (क)।

भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—नो खलु मे भंते ! कप्पइ अज्जप्पभिइ[1] अण्णउत्थिए[2] वा अण्णउत्थिय-देवयाणि वा अण्ण-उत्थिय-परिग्गहियाणि वा अरहंतचेइयाइं[3] वंदित्तए वा नमंसित्तए वा, पुव्विं अणालत्तेणं आलवित्तए वा संलवित्तए वा, तेसिं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा दाउं वा अणुप्पदाउं वा, नन्नत्थ रायाभिओगेणं गणाभिओगेणं बलाभिओगेणं देवयाभिओगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्तिकंतारेणं[4]।

कप्पइ मे समणे निग्गंथे 'फासु-एसणिज्जेणं[5] असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं ओसह-भेसज्जेण य पडिलाभेमाणस्स विहरित्तए—त्ति कट्टु इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ, अभिगिण्हित्ता पसिणाइं पुच्छइ, पुच्छित्ता अट्ठाइं आदियइ, आदित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता, समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ दूइपलासाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव वाणियगामे नयरे, [जेणेव सए गिहे जेणेव सिवणंदा भारिया[6] ?] तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सिवणंदं[7] भारियं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिए![8] मए[9] समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मे निसंते। से वि य धम्मे मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए[10]। तं गच्छाहि[11] णं तुमं देवाणुप्पिए! समणं भगवं महावीरं वंदाहि[12] °णमंसाहि सक्कारेहि सम्माणेहि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं° पज्जुवासाहि, समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जाहि॥

सिवणंदाए वंदणट्ठ-गमण-पदं

४६ तए णं सा सिवणंदा भारिया आणंदेणं समणोवासएणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ[13]-

---

१. अज्जप्पभिईए (ख), अज्जपभिई (घ)।
२. °उत्थिया (ग, घ)।
३. चेइयाइं (क, ख, ग), कोष्ठकसंकेतितासु तिसृष्वपि प्रतिषु 'अरहंतचेइयाइं' पाठस्य स्थाने केवलं 'चेइयाइं' इति पाठो लभ्यते। वृत्तौ 'अरहंत' शब्दो व्याख्यातोऽस्ति।
४. वित्ती° (क, ग)।
५. फासुतेसणिज्जेण (क), फासुएणं एसणिज्जेणं (ख)।
६. सप्तमाध्ययनानुसारेण असौ पाठः उपयुक्तः प्रतिभाति।
७. सिवनंदा (क), सिवानंद (घ)।
८. °प्पिया (घ)।
९. मते (ग)।
१०. अभिरुतिते (ग)।
११. गच्छ (क, ख, घ), गच्छह (ग)।
१२. सं० पा०—वंदाहि जाव पज्जुवासाहि।
१३. सं० पा०—हट्ठतुट्ठा कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, २त्ता एवं वयासी—खिप्पामेव लहुकरणं जाव पज्जुवासइ। प्रस्तुतसंक्षिप्तपाठस्य सूचकचिन्हं नोपलभ्यते। अस्य पूर्तिः औपपातिकस्य (सू०८०), प्रस्तुतसूत्रवर्तिसप्तमाध्ययनस्य (७।३३) तथा भगवत्याः (६।१४१-१४५) आधारेण कृतास्ति।

•चित्तमाणदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणहियया करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामि! त्ति आणंदस्स समणोवासगस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ ॥

४७ तए णं से आणंदे समणोवासए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो! देवाणुप्पिया! लहुकरणजुत्त-जोइयं समखुरवालिहाण-समलिहियसिंगएहिं जंबूणयामयकलावजुत्त-पइविसिट्ठएहिं रययामयघंट-सुत्तरज्जुग-वरकंचणखचियनत्थपग्गहोग्गहियएहिं नीलुप्पलकयामेलएहिं पवरगोणजुवाणएहिं नाणामणिकणग-घंटियाजालपरिगयं सुजायजुगजुत्त-उज्जुग-पसत्थसुविरइय-निम्मियं पवरलक्खणोववेयं जुत्तामेव धम्मियं जाणप्पवरं उवट्ठवेह, उवट्ठवेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥

४८ तए णं ते कोडुंबियपुरिसा आणंदेणं समणोवासएणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणहियया करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामि! त्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता खिप्पामेव लहुकरणजुत्त-जोइयं जाव[1] धम्मियं जाणप्पवरं उवट्ठवेत्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ॥

४९ तए णं सा सिवणंदा भारिया ण्हाया कयबलिकम्मा कय-कोउय-मंगलपायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिया अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा धम्मियं जाणप्पवरं दुरुहइ, दुरुहित्ता वाणियगामं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव दूइपलासए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणा णमंसमाणा अभिमुहे विणएणं पंजलियडा॰ पज्जुवासइ ॥

५० 'तए णं'[2] समणे भगवं महावीरे सिवणंदाए तीसे य[3] महइमहालियाए[4] परिसाए जाव[5] धम्मं परिकहेइ[6] ॥

सिवणंदाए गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं

५१. तए णं सा सिवणंदा भारिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ[7]-•चित्तमाणदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-

१. उवा॰ १।४७।
२. ततो (क, ख)।
३. × (क)।
४. महति॰ (क)।
५. ओ॰ सू॰ ७१-७७।
६. कहेइ (क, ख, ग, घ)।
७. सं॰ पा॰—हट्ठतुट्ठ जाव गिहिधम्मं।

विसप्पमाणहियया उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी—सद्दहामि ण भते ! निग्गथ पावयण, पत्तियामि ण भते ! निग्गथ पावयण, रोएमि ण भते ! निग्गथ पावयण, अब्भुट्ठेमि णं भते ! निग्गथ पावयण। एवमेय भते ! तहमेय भते ! अवितहमेय भते ! असदिद्धमेय भते ! इच्छिय-मेय भते ! पडिच्छियमेय भते ! इच्छिय-पडिच्छियमेय भते ! से जहेय तुब्भे वदह। जहा ण देवाणुप्पियाण अतिए वहवे राईसर-तलवर-माडविय-कोडुबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुडा भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइया, नो खलु अह तहा सचाएमि मुडा भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए। अह ण देवाणुप्पियाण अतिए पचाणुव्वइय सत्तसिक्खावइय—दुवालसविह गिहिधम्म पडिवज्जिस्सामि।

अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबध करेहि ॥

५२. तए ण सिवणदा भारिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए पचाणुव्वइय सत्तसिक्खावइय—दुवालसविह॰ गिहिधम्म पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता समण भगव महावीर वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता तमेव धम्मिय जाणप्पवर दुरुहइ, दुरुहित्ता जामेव दिस[1] पाउब्भूया, तामेव दिस[2] पडिगया ॥

गोयमपुच्छा-पदं

५३ भतेति ! भगव गोयमे समण भगव महावीर वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी—पहू ण भते ! आणदे समणोवासए देवाणुप्पियाण अतिए मुडे[3] ॰भवित्ता अगाराओ अणगारिय॰ पव्वइत्तए[4] ?

नो इणट्ठे[5] समट्ठे।

गोयमा ! आणदे ण समणोवासए वहूइ वासाइ समणोवासगपरियाग[6] पाउणि-हिति[7], पाउणित्ता[8] ॰एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्म काएण फासित्ता, मासियाए सलेहणाए अत्ताण झूसित्ता, सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता, आलो-इय-पडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा॰ सोहम्मे कप्पे अरुणाभे विमाणे देवत्ताए उववज्जिहिति। तत्थ ण अत्थेगइयाण देवाण चत्तारि

---

१. दिसिं (ख, घ)।
२. दिसिं (क, ख, घ)।
३ स॰ पा॰—मुडे जाव पव्वइत्तए।
४. पव्वतित्तते (ग)।
५. तिणट्ठे (क, ग)।
६. ॰परियाय (घ)।
७. पाहुणीहिति (क)।
८. स॰ पा॰—पाउणित्ता जाव सोहम्मे।

पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता[1]। तत्थ णं आणंदस्स वि समणोवासगस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता[2] [भविस्सई ?]॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

५४ तए णं समणे भगवं महावीरे 'अण्णदा कदाइ'[3] •वाणियगामाओ नयराओ दूइपलासाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं° विहरइ॥

आणंदस्स समणोवासग-चरिया-पदं

५५ तए णं से आणंदे समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे[4] •उवलद्धपुण्णपावे आसव-संवर-निज्जर-किरिया-अहिगरण-बंधमोक्खकुसले असहेज्जे, देवासुर-णाग-सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-किण्णर-किंपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगाइएहिं देवगणेहिं निग्गंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जे, निग्गंथे पावयणे णिस्संकिए णिक्कंखिए निव्वितिगिच्छे लद्धट्ठे गहियट्ठे पुच्छियट्ठे अभिगयट्ठे विणिच्छियट्ठे अट्ठिमिंजपेमाणुरागरत्ते, अयमाउसो! निग्गंथे पावयणे अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे ऊसियफलिहे अवंगुयदुवारे चियत्ततेउर-परघरदार-प्पवेसे चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठ-पुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेत्ता समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं° पडिलाभे-माणे विहरइ॥

सिवणंदाए समणोवासिय-चरिया-पदं

५६ तए णं सा सिवणंदा भारिया समणोवासिया जाया[5]—•अभिगयजीवाजीवा उवलद्धपुण्णपावा आसव-संवर-निज्जर-किरिया-अहिगरण-बंधमोक्खकुसला असहेज्जा, देवासुर-णाग-सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-किण्णर-किंपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगाइएहिं देवगणेहिं निग्गंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जा, निग्गंथे पावयणे णिस्संकिया णिक्कंखिया निव्वितिगिच्छा लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा अभिगयट्ठा विणिच्छियट्ठा अट्ठिमिंजपेमाणुरागरत्ता, अयमाउसो! निग्गंथे

---

१. अतोग्रवर्ती 'पण्णत्ता' पर्यन्तं पाठः अत्र अनावश्यकः प्रतीयते, असौ चतुरशीतितमे सूत्रे प्रासंगिकोस्ति। किन्तु सर्वासु प्रतिषु कथमपि समागतोसौ लभ्यते।

२. पूर्ववाक्ये 'उववज्जिहिति' इति भविष्यत्-कालीनं क्रियापदं युज्यते।

३. सं० पा०—अण्णदा कदाइ बहिया जाव विहरइ। °कयायि (क); अन्नया कयाइ (ख), अन्नया कयाइ (घ)।

४. सं० पा०—अभिगयजीवाजीवे जाव पडि-लाभेमाणे।

५. सं० पा०—जाया जाव पडिलाभेमाणी।

पावयणे अट्ठे अय परमट्ठे सेसे अणट्ठे ऊसियफलिहा अवगुयदुवारा चियत्ततेउर-परघरदार-प्पवेसा चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्ण पोसह सम्म अणुपालेत्ता समणे निग्गथे फासु-एसणिज्जेण असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-पडिग्गह-कवल-पायपुछणेण ओसह-भेसज्जेण पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-सथारएण° पडिलाभेमाणी विहरइ ॥

आणंदस्स धम्मजागरिया-पदं

५७ तए ण तस्स आणदस्स समणोवासगस्स उच्चावएहि[1] 'सील-व्वय-गुण'[2]-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि अप्पाण भावेमाणस्स चोद्दस सवच्छराइ वीइक्कताइ। पण्णरसमस्स सवच्छरस्स अतरा[3] वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु अह वाणियगामे नयरे बहूण राईसर[4]-•तलवर-माडविय-कोडुविय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहाण बहूसु कज्जेसु य कारणेसु य कुडुबेसु य मतेसु य गुज्झेसु य रहस्सेसु य निच्छएसु य ववहारेसु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे°, सयस्स वि य ण कुडुबस्स[5] •मेढी पमाणं आहारे आलवण चक्खू, मेढीभूए पमाणभूए आहारभूए आलवणभूए चक्खुभूए सव्वकज्जवड्ढावए°, त एतेण वक्खेवेण अह नो सचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय[6] धम्मपण्णत्ति उवसपज्जित्ता ण विहरित्तए। त सेय खलु मम[7] कल्ल[8] •पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पलकमलकोमलुम्मिलियम्मि अह पडुरे पहाए रत्तासोगप्पगास-किंसुय-सुयमुह-गुजद्धरागसरिसे कमलागरसडबोहए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा° जलते विपुल[9] असण-पाण-खाइम-साइम[10] •उवक्खडावेत्ता, मित्त-नाइ-नियग-सयण-सबधि-परिजण आमतेत्ता, त मित्त-नाइ-नियग-सयण-सबधि-परिजण विपुलेण असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-गधमल्लालकारेण य सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता, तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-सबधि-परिजणस्स पुरओ° जेट्ठपुत्त कुडुबे ठवेत्ता, त मित्त[11]-•नाइ-नियग-सयण-सबधि-परिजण° जेट्ठपुत्त च आपुच्छित्ता,

---

१. °वतेहि (ग)।
२. सीलगुणव्वय (क)।
३ अतरे (क, ग)।
४ स० पा०—राईसर जाव सयस्स।
५. स० पा०—कुडुबस्स जाव आधारे तं।
६. अतित (ग)।
७ मम (घ)।
८. स० पा०—कल्ल जाव जलते।
९ विउल (ख)।
१० स० पा०—साइम जहा पूरणो जाव जेट्ठपुत्त।
११ स० पा०—मित्त जाव जेट्ठपुत्त।

'कोल्लाए सण्णिवेसे'[1] नायकुलसि[2] पोसहसाल पडिलेहित्ता, समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मपण्णत्ति उवसपज्जित्ता ण विहरित्तए—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्ल[3] °पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते° विपुल असण-पाण-खाइम-साइम उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परिजण आमतेइ, आमतेत्ता ततो पच्छा ण्हाए[4] °कयवलिकम्मे कयकोउय-मगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइ मगल्लाइ वत्थाइ पवर परिहिए° अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरे भोयणवेलाए भोयणमडवसि सुहासणवरगए, तेण मित्त-नाइ-नियग-सयण-संवधि-परिजणेण सद्धि त विपुल असण-पाण-खाइम-साइमं आसादेमाणे विसादेमाणे परिभाएमाणे परिभुजेमाणे विहरइ। जिमियभुत्तुत्तरागए ण आयते चोक्खे परमसुइब्भूए, त मित्त-°नाइ-नियग-सयण-संवधि-परिजण विपुलेण असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-गधमल्लालकारेण य सक्कारेइ सम्माणेइ, तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परिजणस्स° पुरओ जेट्ठपुत्त सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—एव खलु पुत्ता ! अह वाणियगामे नयरे वहूण[6] °जाव[7] आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य ण कुडुवस्स मेढी जाव[8] सव्वकज्जवड्ढावए, त एतेण वक्खेवेण अह नो संचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मपण्णत्ति उवसपज्जित्ता ण° विहरित्तए। त सेय खलु मम इदाणि तुम सयस्स कुडुवस्स मेढि पमाण आहार आलवणं चक्खु ठावेत्ता[9], °तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परिजण तुमं च आपुच्छित्ता कोल्लाए सण्णिवेसे नायकुलसि पोसहसाल पडिलेहित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मपण्णत्ति उवसपज्जित्ता ण° विहरित्तए॥

५८. तए ण [से ?] जेट्ठपुत्ते आणदस्स समणोवासगस्स तह त्ति एयमट्ठ विणएणं पडिसुणेति॥

५९ तए ण से आणदे समणोवासए तस्सेव मित्त[10]-°नाइ-नियग-सयण-सवधि-परिजणस्स° पुरओ जेट्ठपुत्तं कुडुवे[11] ठावेति, ठावेत्ता एव वयासी—मा णं

---

१. कोल्लागसण्णि° (ग)।
२ नातकुलसि (ग)।
३ स० पा०—कल्ल विउल असण। कल्ल विउल तहेव जिमियभुत्तुत्तरागए (क, ख)।
४. स० पा०—ण्हाए जाव अप्पमहग्घा°।
५. स० पा०—त मित्त जाव विउलेण पुप्फ ५ सक्कारेइ सम्माणेइ, २त्ता तस्सेव मित्त जाव पुरओ।
६. स० पा०—वहूणं राईसर जहा चितिय जाव विहरित्तए।
७,८. उवा० १।१३।
९ स० पा०—ठावेत्ता जाव विहरित्तए।
१० सं० पा०– मित्त जाव पुरओ।
११. कुटुवे (ग), कुडवे (घ)।

देवाणुप्पिया! तुब्भे अज्जप्पभिइ केइ मम बहूसु कज्जेसु[1] य •कारणेसु य मतेसु य कुडुवेसु य गुज्झेसु य रहस्सेसु य निच्छएसु य ववहारेसु य° आपुच्छउ वा पडिपुच्छउ वा, मम अट्ठाए असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा उवक्खडेउ वा उवक्करेउ वा ॥

६०. तए ण से आणदे समणोवासए जेट्ठपुत्त मित्त-नाइ-नियग-सयण-सबधि-परिजण च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता वाणियगाम नयरं मज्झमज्झेण[2] निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कोल्लाए सण्णिवेसे, जेणेव नायकुले, जेणेव पोसहसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसाल पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चार-पासवणभूमि पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसथारय सथरेइ, सथरेत्ता दब्भसथारय दुरुहइ[3], दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए[4] •बभयारी उम्मुक्कमणिसुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्त-सत्थमुसले एगे अबीए° दब्भसथारोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मपण्णत्ति उवसपज्जित्ता ण विहरइ ॥

आणदस्स उवासगपडिमा-पडिवत्ति-पद

६१. तए ण से आणदे समणोवासए पढम उवासगपडिम उवसपज्जित्ता ण विहरइ ॥

६२. [तए ण से आणदे समणोवासए[5]?] पढम उवासगपडिम[6] अहासुत्त अहाकप्प अहामग्ग अहातच्च सम्म काएण फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥

६३. तए ण से आणदे समणोवासए दोच्च उवासगपडिम, एव तच्च, चउत्थ, पचम, छट्ठ, सत्तम, अट्ठम, नवम, दसम, एक्कारसम[7] •उवासगपडिम अहासुत्त अहाकप्प अहामग्ग अहातच्च सम्म काएण फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ° आराहेइ ॥

६४ तए णं से आणदे समणोवासए इमेण एयारूवेण ओरालेण विउलेण पयत्तेण पग्गहिएण तवोकम्मेण सुक्के[8] •लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडिया-भूए° किसे धमणिसतए जाए ॥

आणंदस्स अणसण-पद

६५ तए णं तस्स आणंदस्स समणोवासगस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्ता[9] •वरत्तकाल-

---

१. स० पा०—कज्जेसु य आपुच्छउ वा ।
२. मज्झ मज्झ (क) ।
३ द्रूहति (क) ।
४ स० पा०—पोसहिए° ।
५ भगवती (२।५६) सूत्रानुसारेण कोष्ठकान्त-र्गतपाठक्रम. सभाव्यते ।
६ उपासकप्रतिमाना विवरण ज्ञातु द्रष्टव्या दशाश्रुतस्कन्धस्य सप्तमीदशा ।
७ स० पा०—एक्कारसम जाव आराहेइ ।
८. स० पा०—सुक्के जाव किसे ।
९. स० पा०—पुव्वरत्ता जाव धम्मजागरिय ।

समयसि° धम्मजागरियं जागरमाणस्स अय अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु अहं इमेण[1] •एयारूवेणं ओरालेणं विउलेण पयत्तेण पग्गहिएण तवोकम्मेण सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे° धम्मणिसतए जाए। त अत्थि ता[2] मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-सवेगे, त जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-सवेगे, जाव 'य मे'[3] धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगव महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे[4] सेय कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव[5] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा-जलते अपच्छिममारणतियसलेहणा-झूसणा-झूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खियस्स, काल अणवकखमाणस्स विहरित्तए—एव सपेहेइ, संपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते अपच्छिममारणतिय[6]•सलेहणा-झूसणा-झूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए° काल अणवकखमाणे विहरइ॥

आणंदस्स ओहिनाणुप्पत्ति-पदं

६६ तए ण तस्स आणदस्स समणोवासगस्स अण्णदा कदाइ सुभेणं अज्झवसाणेण, सुभेण[7] परिणामेण, लेसाहि विसुज्झमाणीहिं, तदावरणिज्जाण कम्माणं खओवसमेण ओहिणाणे समुप्पण्णे—पुरत्थिमे ण लवणसमुद्दे[8] पचजोयणसयाइ[9] खेत्त जाणइ पासइ। [10]•दक्खिणे ण लवणसमुद्दे पंचजोयणसयाइ खेत्तं जाणइ पासइ। पच्चत्थिमे ण लवणसमुद्दे पचजोयणसयाइ खेत्त जाणइ पासइ°। उत्तरे ण जाव चुल्लहिमवत वासधरपव्वय जाणइ पासइ। उड्ढ जाव सोहम्म कप्प जाणइ पासइ। अहे जाव इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुत[11] नरय चउरासीतिवाससहस्सट्ठितिय जाणइ पासइ॥

गोयमस्स आगमण-पदं

६७ तेण कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे समोसरिए॥

६८. परिसा निग्गया जाव[12] पडिगया॥

---

१. स० पा०—इमेण जाव धम्मणिसतए।
२. जा (ग)।
३. सयमेव (क)।
४. णो (क)।
५. उवा० १।५७।
६. सं० पा०—मारणतिय जाव काल।
७ सुहेण (क), सोभणेण (ग)।
८. °समुद्दे ण (क)।
९. °सतिय (क, ख), °सइय (ग)।
१० स० पा०—एव दक्खिणे ण पच्चत्थिमे ण च।
११. लोलुय अच्चुत (ख)।
१२. ओ० सू० ५२,७८-८०।

६९. तेण कालेण तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे[1] अंतेवासी इंदभूई नामं अणगारे गोयमसगोत्ते णं सत्तुस्सेहे समचउरंससंठाणसंठिए वज्जरिसह-नारायसंघयणे कणगपुलगनिघसपम्हगोरे उग्गतवे दित्ततवे तत्ततवे महातवे ओराले घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्त-विउलतेयलेस्से छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

७०. तए णं से भगवं गोयमे छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ, बिइयाए पोरिसीए झाणं झियाइ, तइयाए पोरिसीए अतुरियमचवलमसंभंते मुहपोत्तियं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता भायणवत्थाइं, पडिलेहेइ पडिलेहेत्ता भाय-णाइं[2] पमज्जइ, पमज्जित्ता भायणाइं उग्गाहेइ, उग्गाहेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए [समाणे ?] छट्ठक्खमणपारणगंसि वाणियगामे नयरे उच्च-नीच-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्तए।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह ॥

७१ तए णं भगवं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ दूइपलासाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडि-णिक्खमित्ता अतुरियमचवलमसंभंते जुगंतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रियं[3] सोहेमाणे-सोहेमाणे जेणेव वाणियगामे नयरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वाणियगामे नयरे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियं अडइ ॥

७२ तए णं से भगवं गोयमे वाणियगामे नयरे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घर-समुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे अहापज्जत्तं भत्तपाणं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेत्ता वाणियगामाओ नयराओ पडिणिग्गच्छइ, पडिणिग्गच्छित्ता कोल्लायस्स सण्णिवेसस्स अदूरसामंतेणं वीईवयमाणे बहुजणसद्दं निसामेइ। बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ, एवं भासइ, एवं पण्णवेइ, एवं परूवेइ— एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी आणंदे नामं समणोवासए पोसहसालाए अपच्छिम[4] °मारणंतिय-संलेहणा-झूसणा-झूसिए, भत्तपाणपडियाइक्खिए कालं° अणवकंखमाणे विहरइ ॥

---

१ जेट्ठे जहा पण्णत्तीए तहा भिक्खायरियाए जाव अडमाणे (क, ग)।

२. भायणवत्थाइ (क्व)।

३ इरियं (क्व)।

४. सं० पा०—अपच्छिम जाव अणवकंखमाणे।

एवं वयासी—एव खलु भते ! अहं तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए[1] *समाणे वाणियगामे नयरे भिक्खायरियाए अडमाणे अहापज्जत्तं भत्तपाणं पडिग्गाहेमि, पडिग्गाहेत्ता वाणियगामाओ नयराओ पडिणिग्गच्छामि, पडिणिग्गच्छित्ता कोल्लायस्स सण्णिवेसस्स अदूरसामतेणं वीईवयमाणे बहुजणसद्द निसामेमि। बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ, एव भासइ, एव पण्णवेइ, एव परूवेइ—एव खलु देवाणुप्पिया ! समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी आणदे नामं समणोवासए पोसहसालाए अपच्छिममारणतियसलेहणा-झूसणा-झूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए काल अणवकखमाणे विहरइ।

तए ण मम बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—त गच्छामि णं आणंद समणोवासय पासामि— एव सपेहेमि, सपेहेत्ता जेणेव कोल्लाए सण्णिवेसे, जेणेव पोसहसाला, जेणेव आणदे समणोवासए तेणेव उवागच्छामि।

तए ण से आणदे समणोवासए मम एज्जमाण पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणहियए मम वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी—एवं खलु भते ! अह इमेण ओरालेण विउलेण पयत्तेणं पग्गहिएण तवोकम्मेण सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसतए जाए, णो संचाएमि देवाणुप्पियस्स अंतिय पाउब्भवित्ता ण तिक्खुत्तो मुद्धाणेण पादे [सु ?] अभिवदित्तए। तुब्भे ण भते ! इच्छक्कारेण अणभिओगेण इओ चेव एह, जेण देवाणुप्पियाणं तिक्खुत्तो मुद्धाणेण पादेसु वदामि णमसामि।

तए ण अह जेणेव आणदे समणोवासए, तेणेव उवागच्छामि। तए ण से आणदे समणोवासए मम तिक्खुत्तो मुद्धाणेण पादेसु वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी—अत्थि ण भते ! गिहिणो गिहमज्झावसतस्स ओहिणाणे समुप्पज्जइ ?

हता अत्थि।

जइ ण भते ! गिहिणो गिहमज्झावसतस्स ओहिणाणे समुप्पज्जइ, एव खलु भते ! मम वि गिहिणो गिहमज्झावसंतस्स ओहिणाणे समुप्पण्णे—पुरत्थिमे ण लवणसमुद्दे पंचजोयणसयाइ खेत्त जाणामि पासामि। दक्खिणे ण लवणसमुद्दे पचजोयणसयाइ खेत्त जाणामि पासामि। पच्चत्थिमे ण लवणसमुद्दे पचजोयण-सयाइ खेत्त जाणामि पासामि। उत्तरे ण जाव चुल्लहिमवतं वासधरपव्वय जाणामि पासामि। उड्ढं जाव सोहम्म कप्प जाणामि पासामि। अहे जाव

---

१. म० पा०—अब्भणुण्णाए त चेव सव्वं कहेइ जाव।

इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुयं नरयं चउरासीतिवाससहस्सट्ठितिय जाणामि पासामि।

तए णं अहं आणद समणोवासय एवं वइत्था—अत्थि ण आणदा! गिहिणो गिहमज्झावसतस्स ओहिणाणे समुप्पज्जइ। नो चेव ण एमहालए। त ण तुमं आणदा! एयस्स ठाणस्स आलोएहि जाव[1] अहारिह पायच्छित्त तवोकम्मं पडिवज्जाहि।

तए ण से आणदे मम एवं वयासी—अत्थि ण भते! जिणवयणे संताण तच्चाणं तहियाण सब्भूयाण भावाण आलोइज्जइ जाव[2] अहारिह पायच्छित्त तवोकम्म पडिवज्जिज्जइ?

नो इणट्ठे समट्ठे।

जइ ण भते! जिणवयणे सताणं तच्चाणं तहियाण सब्भूयाण भावाण नो आलोइज्जइ जाव[3] अहारिह पायच्छित्त तवोकम्म नो पडिवज्जिज्जइ, त णं भंते! तुब्भे चेव एयस्स ठाणस्स आलोएह जाव[4] अहारिह पायच्छित्त तवोकम्मं पडिवज्जेह॰॥

८० तए ण अह आणदेण समणोवासएणं एव वुत्ते समाणे सकिए कखिए वितिगिच्छसमावण्णे आणंदस्स समणोवासगस्स अतियाओ पडिणिक्खमामि, पडिणिक्खमित्ता जेणेव इह तेणेव हव्वमागए। 'त ण'[5] भते! किं आणदेण समणोवासएण तस्स ठाणस्स आलोएयव्व[6] •पडिक्कमेयव्वं निंदेयव्व गरिहेयव्व विउट्टेयव्व विसोहेयव्व अकरणयाए अब्भुट्ठेयव्वं अहारिह पायच्छित्त तवोकम्म॰ पडिवज्जेयव्व? उदाहु मए?

भगवओ उत्तर-पदं

८१ गोयमाइ! समणे भगव महावीरे भगव गोयम एव वयासी—गोयमा! तुम चेव ण तस्स ठाणस्स आलोएहि[7] जाव[8] •अहारिह पायच्छित्त तवोकम्म॰ पडिवज्जाहि, आणद च समणोवासय एयमट्ठ खामेहि॥

गोयमस्स खामणा-पदं

८२ तए ण से भगव गोयमे समणस्स भगवओ महावीरस्स तह त्ति एयमट्ठ विणएण पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तस्स ठाणस्स आलोएइ[9] •पडिक्कमइ निंदइ गरिहइ

---

१. उवा॰ १।७७।

२,३,४. उवा॰ १।७८।

५ तए ण (ख); ते ण (घ)।

६. सं॰ पा॰—आलोएयव्व जाव पडिवज्जेयव्व।

७ स॰ पा॰—आलोएहि जाव पडिवज्जाहि।

८. उवा॰ १।७७।

९. स॰ पा॰ —आलोएइ जाव पडिवज्जइ।

७३ तए णं तस्स गोयमस्स बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं[1] सोच्चा निसम्म अयमेयारूवे[2] अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—तं गच्छामि णं आणंदं समणोवासयं पासामि—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता जेणेव कोल्लाए सण्णिवेसे 'जेणेव पोसहसाला, जेणेव आणंदे समणोवासए'[3], तेणेव उवागच्छइ ॥

७४. तए णं से आणंदे समणोवासए भगवं गोयमं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठ[4]-•चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण° हियए भगवं गोयमं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु भंते! अहं इमेणं ओरालेणं[5] •विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे° धमणिसंतए जाए, णो संचाएमि देवाणुप्पियस्स अंतियं पाउब्भवित्ता णं तिक्खुत्तो मुद्धाणेणं पादे (सु ?) अभिवंदित्तए। 'तुब्भे णं भंते! इच्छाक्कारेणं[6] अणभिओएणं[7] इओ चेव एह, जेणं[8] देवाणुप्पियाणं तिक्खुत्तो मुद्धाणेणं पादेसु वंदामि णमंसामि ॥

७५ तए णं से भगवं गोयमे जेणेव आणंदे समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ ॥

आणंद-गोयम-संवाद-पद

७६ तए णं से आणंदे समणोवासए भगवओ गोयमस्स तिक्खुत्तो मुद्धाणेणं पादेसु वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—अत्थि णं भंते! गिहिणो गिहमज्झावसंतस्स ओहिणाणे समुप्पज्जइ ?

हंता अत्थि।

जइ णं भंते! गिहिणो[9] •गिहमज्झावसंतस्स ओहिणाणे° समुप्पज्जइ, एवं खलु भंते! मम वि गिहिणो गिहमज्झावसंतस्स ओहिणाणे[10] समुप्पण्णे—पुरत्थिमे णं लवणसमुद्दे पंचजोयणसयाइं[11] •खेत्तं जाणामि पासामि। दक्खिणे णं लवणसमुद्दे पंच जोयणसयाइं खेत्तं जाणामि पासामि। पच्चत्थिमे णं लवण-समुद्दे पंच जोयणसयाइं खेत्तं जाणामि पासामि। उत्तरे णं जाव चुल्लहिमवंतं वासधरपव्वयं जाणामि पासामि। उड्ढं जाव सोहम्मं कप्पं जाणामि पासामि।

---

१. एवं (ख)।

२ अतमेयारूवे (क), अयं इमेयारूवे (ख)।

३. जेणेव आणंदे समणोवासए जेणेव पोसहसाला (क, ख, ग, घ), महाशतकाध्ययने—'जेणेव महासयगस्स समणोवासगस्स गिहे जेणेव महासयए समणोवासए' अयं क्रमो विद्यते। अत्राप्यसौ क्रमो युज्यते।

४. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियए।

५. सं० पा०—उरालेणं जाव धमणिसंतए।

६. इच्छाकारेण (घ)।

७ अभिओगेण (क,ख)।

८ जा णं (क,ख,ग), जहा णं (घ)।

९ सं० पा० —गिहिणो जाव समुप्पज्जइ।

१०. ओहिण्णाणे (ग)।

११. सं० पा०—पंचजोयणसयाइं जाव लोलुय-च्चुयं।

अहे जाव इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए° लोलुयच्चुतं[1] नरयं जाणामि पासामि ।।

७७ तए णं से भगवं गोयमे आणंदं समणोवासयं एवं वयासी—अत्थि णं आणंदा ! गिहिणो[2] °गिहमज्झावसंतस्स ओहिणाणे° समुप्पज्जइ । नो चेव णं एमहालए । तं णं तुमं आणंदा ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि[3] °पडिक्कमाहि निंदाहि गरिहाहि विउट्टाहि विसोहेहि अकरणाए अब्भुट्ठाहि अहारिहं पायच्छित्तं° तवोकम्मं पडिवज्जाहि ।।

७८ तए णं से आणंदे समणोवासए भगवं गोयमं एवं वयासी—अत्थि णं भंते ! जिणवयणे संताणं[4] तच्चाणं तहियाणं सब्भूयाणं भावाणं आलोइज्जइ[5] °निंदिज्जइ गरिहिज्जइ विउट्टिज्जइ विसोहिज्जइ अकरणयाए अब्भुट्ठिज्जइ पडिक्कमिज्जइ अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं° पडिवज्जिज्जइ ?

नो इणट्ठे समट्ठे ।

जइ णं भंते ! जिणवयणे संताणं[6] °तच्चाणं तहियाणं सब्भूयाणं° भावाणं नो आलोइज्जइ[7] °नो पडिक्कमिज्जइ नो निंदिज्जइ नो गरिहिज्जइ नो विउट्टिज्जइ नो विसोहिज्जइ अकरणयाए नो अब्भुट्ठिज्जइ अहारिहं पायच्छित्तं° तवोकम्मं[8] नो पडिवज्जिज्जइ, तं णं भंते ! तुब्भे चेव एयस्स ठाणस्स आलोएह[9] °पडिक्कमेह निंदेह गरिहेह विउट्टेह विसोहेह अकरणाए अब्भुट्ठेह अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं° पडिवज्जेह[10] ।।

७९ तए णं से भगवं गोयमे आणंदेणं समणोवासएणं एवं वुत्ते समाणे संकिए कंखिए वितिगिच्छसमावण्णे[11] आणंदस्स समणोवासगस्स अंतियाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव दूइपलासे चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे[12], तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते गमणागमणाए पडिक्कमइ, पडिक्कमित्ता एसणमणेसणं आलोएइ, आलोएत्ता भत्तपाणं पडिदंसेइ, पडिदंसित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता

---

१. लोलुय अच्चुत (ख) ।

२. सं० पा०—गिहिणो जाव समुप्पज्जइ ।

३. सं० पा०—आलोएहि जाव तवोकम्मं । अत्र स्थानांगे प्रस्तुतवृत्तौ च किञ्चित् पाठभेदो विद्यते—पायच्छित्तं तवोकम्मं (स्थानांग ३।३३८) तवोकम्मं पायच्छित्तं (वृत्ति अध्ययन ३) प्रतिषु 'आलोएहि जाव तवोकम्मं' इति पाठसंक्षेपो लभ्यते, तेन स्थानांगानुसारी पाठ एव मूले स्वीकृत ।

४. सच्चाणं (क), सभासे (ख) ।

५. सं० पा०—आलोइज्जइ जाव पडिवज्जिज्जइ ।

६. सं० पा०—संताणं जाव भावाणं, सच्चाणं (ग), सभासे (ख) ।

७. सं० पा०—आलोइज्जइ जाव तवोकम्मं ।

८. तवे° (क) ।

९. सं० पा०—आलोएह जाव पडिवज्जेह ।

१०. पडिवज्जह (क,ख,घ) ।

११. वितिगिंछ° (क), वितिगिच्छा° (ख,घ) ।

१२. महावीरे जाव भत्तपाणं (ग) ।

विउट्टइ विसोहइ अकरणयाए अब्भुट्ठइ अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं° पडिवज्जइ, आणंदं च समणोवासयं एयमट्ठं खामेइ ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

८३ तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ बहिया जणवयविहारं[1] विहरइ ॥

आणंदस्स समाहिमरण-पदं

८४. तए णं से आणंदे समणोवासए बहूहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेत्ता, वीसं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणित्ता, एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्मं काएण फासित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं[2] झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं[3] अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कंते, समाहिपत्ते, कालमासे कालं किच्चा, सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडेंसगस्स[4] महाविमाणस्स उत्तरपुरत्थिमे णं 'अरुणाभे विमाणे'[5] देवत्ताए उववण्णे। तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। तत्थ णं आणंदस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

८५. आणंदे[6] णं भंते! देवे ताओ[7] देवलोगाओ[8] आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिइ? कहिं उववज्जिहिइ?
गोयमा! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

८६. [9]°एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं उवासगदसाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते° ॥

---

१ जणवत विहारं (घ)।
२. अप्पाणं (ग)।
३. भत्तांति (क, ग)।
४. °वडिंसगस्स (घ)।
५. अरुणे विमाणे (क), अरुणेहिं विमाणेहिं (ख)।
६ तत्थ णं आणंदे (क)।
७ ततो (ख)।
८. देवलोगलोगाओ (क)।
९. सं० पा—निक्खेवो पढमस्स।

बीअं अज्झयणं

कामदेवे

उक्खेव-पद

१ जइ ण भंते ! समणेण भगवया महावीरेणं जाव[1] सपत्तेण सत्तमस्स अगस्स उवासगदसाणं पढमस्स अज्झयणस्स[2] अयमट्ठे पण्णत्ते, दोच्चस्स ण भते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

कामदेवगाहावइ-पदं

२ एव खलु जवू ! तेणं कालेण तेण समएण चपा नाम नयरी । पुण्णभद्दे चेइए । जियसत्तू राया ।।

३ [3]तत्थ ण चपाए नयरीए कामदेवे नाम गाहावई परिवसइ—अड्ढे जाव[4] बहुजणस्स अपरिभूए ।।

४ तस्स ण कामदेवस्स गाहावइस्स छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ[5], छ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, छ व्वया दसगोसाहस्सिएण वएण होत्था ।।

५ से ण कामदेवे गाहावई वहूण जाव[6] आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य ण कुडुवस्स मेढी जाव[7] सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था ।।

---

१. ना० १।१।७ ।

२ वग्गस्स (क) ।

३. सं० पा०—कामदेवे गाहावई । भद्दा भारिया । छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ छ वड्ढिपउत्ताओ छ पवित्थरपउत्ताओ छ व्वया दसगोसाहस्सिएण वएणं ।

४. उवा० १।११ ।

५. वुड्ढि० (ख,घ) ।

६ उवा० १।१३ ।

७ उवा० १।१३ ।

६ तस्स ण कामदेवस्स गाहावइस्स भद्दा नाम भारिया होत्था— अहीण-पडिपुण्ण-पचिदियसरीरा जाव[1] माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी विहरइ° ॥

महावीर-समवसरण-पद

७. [2]•तेण कालेण तेण समएण समणे भगवं महावीरे जाव[3] जेणेव चपा नयरी, जेणेव पुण्णभद्दे चेइए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥

८ परिसा निग्गया ॥

९ कूणिए राया जहा, तहा जियसत्तू निग्गच्छइ जाव[4] पज्जुवासइ ॥

१० तए ण से कामदेवे गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे—"एव खलु समणे भगव महावीरे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह सपत्ते इह समोसढे इहेव चपाए नयरीए वहिया पुण्णभद्दे चेइए अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ।"

त महप्फलं खलु भो! देवाणुप्पिया! तहारूवाण अरहताण भगवंताण णामगोयस्स वि सवणयाए, किमग पुण अभिगमण-वदण-णमसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए? त गच्छामि ण देवाणुप्पिया! समण भगव महावीर वदामि णमसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाण मंगल देवय चेइय पज्जुवासामि—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता ण्हाए कयवलिकम्मे कय-कोउय-मगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइ मगल्लाइ वत्थाइ पवर परिहिए अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सकोरेटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण मणुस्सवग्गुरापरिखित्ते पादविहारचारेण चप नयरिं मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव पुण्णभद्दे चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमसमाणे अभिमुहे विणएणं पजलिउडे पज्जुवासइ ॥

११. तए ण समणे भगव महावीरे कामदेवस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए जाव[5] धम्म परिकहेइ ॥

१२ परिसा पडिगया, राया य गए ॥

---

१. उवा० १।१४।

२. स० पा०—समोसरण जहा आणवो तहा निग्गओ। तहेव सावयधम्म पडिवज्जइ। सा चेव वत्तव्वया जाव जेट्ठपुत्त।

३. ओ० सू० १६,२२।

४. ओ० सू० ५३-६९।

५. ओ० सू० ७१-७७।

कामदेवस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं

१३ तए ण कामदेवे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण-हियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी—सद्दहामि ण भते ! निग्गथ पावयण, पत्तियामि ण भते ! निग्गथ पावयण, रोएमि ण भते ! निग्गथ पावयण, अब्भुट्ठेमि ण भते ! निग्गथ पावयण। एवमेय भते ! तहमेय भते ! अवितहमेय भते ! असदिद्धमेय भते ! इच्छियमेय भते ! पडिच्छियमेय भते ! इच्छिय-पडिच्छियमेय भते ! से जहेय तुब्भे वदह। जहा ण देवाणुप्पियाण अतिए बहवे राईसर-तलवर-माडविय-कोडुविय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुडा भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइया, नो खलु अह तहा सचाएमि मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए। अह ण देवाणुप्पियाण अतिए पचाणुव्वइय सत्तसिक्खावइय—दुवालसविह सावगधम्म पडिवज्जिस्सामि।

अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबध करेहि ॥

१४ तए ण से कामदेवे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए[1] सावयधम्म पडिवज्जइ ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

१५ तए ण समणे भगव महावीरे अण्णदा कदाइ चपाए नयरीए पुण्णभद्दाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहार विहरइ ॥

कामदेवस्स समणोवासग-चरिया-पदं

१६. तए ण से कामदेवे समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे जाव[2] समणे निग्गथे फासु-एसणिज्जेण असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-पडिग्गह-कबल-पायपुछणेण ओसह-भेसज्जेण पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा सथारएण पडिलाभेमाणे विहरइ ॥

भद्दाए समणोवासिय-चरिया-पदं

१७ तए ण सा भद्दा भारिया समणोवासिया जाया—अभिगयजीवाजीवा जाव[3] समणे निग्गथे फासु-एसणिज्जेण असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-पडिग्गह-

---

१. पू०—उवा० १।२४-५३।

२. उवा० १।५५

३. उवा० १।५६।

कवल-पायपुछणेण ओसह-भेसज्जेण पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-सथारएण पडिलाभेमाणी विहरइ ।।

कामदेवस्स धम्मजागरिया-पदं

१८ तए ण तस्स कामदेवस्स समणोवासगस्स उच्चावएहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि अप्पाण भावेमाणस्स चोद्दस सवच्छराइं वीइक्कताइ । पण्णरसमस्स सवच्छरस्स अतरा वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु अह चपाए नयरीए बहूणं जाव[1] आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुवस्स मेढी जाव[2] सव्वकज्जवड्ढावए, त एतेण वक्खेवेण अह नो सचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मपण्णत्ति उवसपज्जित्ता ण विहरित्तए[3] ।।

१९. तए ण से कामदेवे समणोवासए° जेट्ठपुत्त मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परिजण च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता[4] °सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता चप नयरिं मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसहसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसाल पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चार-पासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसथारय सथरेइ, सथरेत्ता दब्भसथारय दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए वभयारी उम्मुक्कमणि-सुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अबीए दब्भसथारोवगए° समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मपण्णत्ति उवसपज्जित्ता णं विहरइ ।।

कामदेवस्स पिसायरूव-कय-उवसग्ग-पद

२०. तए ण तस्स कामदेवस्स समणोवासगस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि एगे देवे मायी मिच्छदिट्ठी[5] अतिय पाउब्भूए ।।

२१. तए ण से देवे एग मह पिसायरूव विउव्वइ । तस्स ण दिव्वस्स[6] पिसायरूवस्स इमे एयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते—सीस से गोकिलज-सठाण-सठिय[7], सालि-

---

१,२. उवा० १।१३ ।

३. पू०—उवा० १।५७-५९ ।

४ स० पा०—आपुच्छित्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, २ त्ता जहा आणदो जाव समणस्स ।

५. मिच्छा° (क,घ) ।

६ देवस्स (ख,घ) ।

७. पुस्तकान्तरे विशेषणातरमुपलभ्यते—'विगयकप्पयनिभ', क्वचित्तु, 'वियडकोप्पर-निभ' (वृ) ।

भसेल्ल-सरिसा से केसा कविलतेएण[1] दिप्पमाणा, 'उट्टिया-कभल्ल-सठाण-सठिय'[2] निडालं, मुगुसपुच्छं व तस्स भुमकाओ[3] फुग्गफुग्गाओ[4] विगय-वीभत्स[5]-दसणाओ, सीसघडिविणिग्गयाइं अच्छीणि विगय-वीभत्स[6]-दसणाइं, कण्णा जह[7] सुप्प-कत्तरं चेव विगय-वीभत्स[8]-दसणिज्जा, उरब्भपुडसंनिभा[9] से नासा, भुसिरा जमल-चुल्ली-सठाण-सठिया दो वि तस्स नासापुडया[10], 'घोडयपुच्छं[11] व तस्स मसूइं कविल-कविलाइं विगय-वीभत्स[12]-दसणाइं'[13], 'उट्ठा उट्टस्स चेव लबा'[14], फालसरिसा से दंता, जिब्भा जह सुप्प-कत्तरं चेव 'विगय-वीभत्स-दंसणिज्जा'[15], हल-कुड्डाल[16]-सठिया से हणुया, गल्ल-कडिल्लं व तस्स खड्डुं[17] फुट्टं 'कविल फरुस महल्लं'[18], मुइंगाकारोवमे से खधे, पुरवरकवाडोवमे से वच्छे, कोट्ठिया-सठाण-सठिया दो वि तस्स बाहा, निसापाहाण-सठाण-सठिया दो वि तस्स अग्गहत्था, निसालोढ-संठाण-सठियाओ हत्थेसु अगुलीओ, सिप्पि-पुडग-सठिया से नखा[19], ण्हाविय-पसेवओ[20] व्व उरम्मि[21] लबति दो वि तस्स थणया, पोट्टं अयकोट्ठओ व्व वट्टं, 'पाण-कलद'[22]-सरिसा से नाही[23], सिक्कग-सठाण-सठिए से नेत्ते, किण्णपुड-सठाण-सठिया दो वि तस्स वसणा, जमल-कोट्ठिया-

---

१ कविला तेएण (क,ग,घ)।

२ महल्लउट्टिया० (क,ख,ग), महल्लउट्टिया-कभल्लमरिसोवमं (वृपा)।

३ भुमगाओ (ख); भुम्मकाओ (घ)।

४ फग्गुपुग्गाओ (क); जडिलजडिलाओ, जडिल कुडिलाओ (वृपा)।

५. वीभच्छ (ख,घ)।

६. वीभच्छ (ख,घ)।

७. जहा (ख)।

८ वीभच्छ (ख,घ)।

९ हुरप्पपुडसठाणसठिया (वृपा)।

१० वृत्तावत्र अतिरिक्तपाठस्य उल्लेखोस्ति, वाचनान्तरे—महल्लकुव्व [कुच्च] सठिया दो वि से कवोला।

११. ०पुछ (क्व)।

१२ वीभच्छ (ख,घ)।

१३ घोडयपुच्छ व तस्स कविलफरुसाओ उड्ढलोमाओ दाढियाओ (वृपा)।

१४. उट्ठा से घोडगस्स जह दोवि विलवमाणा (वृपा)।

१५. वृत्तावत्र अतिरिक्तपाठस्य उल्लेखोस्ति, पाठान्तरे—'हिंगुलयधाउकदरबिलं व तस्स वयण'।

१६. कुडा (क); कुडाल (ख), कूडा (ग); कुद्दाल (घ)।

१७ खड (क,ख)।

१८ कविलफरुस महल्ल (क,ग), कविलफरिस-महल्ल (घ)।

१९ नहा (ख), नक्खा (ग,घ), वाचनान्तरे तु इदमपरमधीयते—अडियालसठिओ उरो तस्स रोमगुविलो (वृ)।

२०. पसेवउ (क)।

२१. उरसि (ख,घ)।

२२ पाणालद (क,ग)।

२३. नाभी (क,घ); वाचनान्तरेऽधीतं—भग्गकडी विगयवकपिट्ठी असरिसा दो वि तस्स फिसगा (वृ)।

सठाण-सठिया दो वि तस्स ऊरू, 'अज्जुण-गुट्ठ'[1] व तस्स जाणूइ कुडिल-कुडिलाइ विगय-वीभत्स-दसणाइ, जघाओ कक्खडीओ लोमेहि उवचियाओ, अहरी-सठाण-सठिया दो वि तस्स पाया, अहरी-लोढ-सठाण-सठियाओ पाएसु अगुलीओ, सिप्पि-पुडसठिया से नखा[2] ॥

२२ लडह-मडह-जाणुए[3], विगय-भग्ग-भुग्ग-भुमए[4], अवदालिय-वयण-विवर-निल्लालियग्गजीहे[5], सरड-कयमालियाए 'उदुरमाला-परिणद्ध-सुकयचिंधे, नउल[6]-कयकण्णपूरे, सप्प-कयवेगच्छे'[7], अप्फोडते, अभिगज्जते, भीम-मुक्कट्टहासे[8], 'नाणाविह-पचवण्णेहि लोमेहि उवचिए'[9] एग मह नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगास खुरधार असि गहाय जेणेव पोसहसाला, जेणेव कामदेवे समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता आसुरत्ते[10] रुट्ठे कुविए चडिक्किए मिसिमिसीयमाणे कामदेव समणोवासय एव वयासी—हभो ! कामदेवा ! समणोवासया ! अप्पत्थियपत्थिया[11] ! दुरंत[12]-पत-लक्खणा ! हीणपुण्णचाउद्दसिया ! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिया ! धम्मकामया ! पुण्णकामया ! सग्गकामया ! मोक्खकामया ! धम्मकखिया ! पुण्णकखिया ! सग्गकखिया ! मोक्खकखिया ! धम्मपिवासिया ! पुण्णपिवासिया ! सग्गपिवासिया ! मोक्खपिवासिया ! नो खलु कप्पइ तव देवाणुप्पिया ! सीलाइ[13] वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइं चालित्तए वा खोभित्तए वा खडित्तए वा भजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तए वा, त जइ ण तुम अज्ज सीलाइं[14] •वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ° पोसहोववासाइ न छड्डेसि[15] न भजेसि[16], 'तो त'[17] अह अज्ज इमेण नीलुप्पल[18]-•गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासेण खुरधारेण° असिणा खडाखडि करेमि, जहा ण तुमं देवाणुप्पिया[19] ! अट्ट-दुहट्ट-

---

१ अज्जुणागुट्ठं (क)।
२ नक्खा (ग,घ)।
३ जण्णुए (क)।
४ इह अन्यदपि विशेषणचतुष्टय वाचनान्तरे तु अभिवीयते—मसिमूसगमहिसकालए भरिय-मेहवन्ने लंबोट्ठे निगयदते (वृ)।
५. निद्दालिय अग्गजीहे (ख)।
६ णेउल (क)।
७ पाठान्तरेण—सप्पकयवेगच्छे मूसगकयभूभलए विच्छुयकयवेयच्छे सप्पकयजण्णोवईए अभिन्नमुहनयणनखवरवग्घचित्तकत्तिनियंसणे (वृ)।
८ भीममुक्कअट्टट्टहासे (ख,घ)।
९ ×(क)।
१०. आसुरुत्ते (क)।
११ °पत्थया (क)।
१२ दुरत ४ जाव परिवज्जिया (क,ग)।
१३. ज सीलाइ (ख)।
१४. स० पा०—सीलाइ जाव पोसहोववासाइ।
१५. छड्डसि (ख); छडेसि (घ)।
१६ भजसि (क)।
१७ तो ते (क,ग,घ), तो (ख)।
१८. स० पा०—नीलुप्पल जाव असिणा।
१९ ×(क,ख)।

वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

२३. तए ण से कामदेवे समणोवासए तेण दिव्वेण[1] पिसायरूवेण एव वुत्ते समाणे अभीए अतत्थे अणुव्विग्गे अखुभिए अचलिए असंभते तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ ॥

२४. तए ण से दिव्वे[2] पिसायरूवे कामदेवं समणोवासय अभीय[3] •अतत्थ अणुव्विग्ग अखुभिय अचलिय असभत तुसिणीय° धम्मज्झाणोवगय विहरमाण पासइ, पासित्ता दोच्च पि तच्च पि कामदेव समणोवासय एव वयासी—हभो ! कामदेवा ! समणोवासया ! जाव[4] जइ ण तुम अज्ज सीलाइ[5] •वयाइ वेरमणाइ, पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो त अह अज्ज इमेण नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासेण खुरधारेण असिणा खडाखडि करेमि, जहा णं तुम देवाणुप्पिया ! अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव° जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

२५. तए ण से कामदेवे समणोवासए तेण दिव्वेण पिसायरूवेण दोच्च पि तच्च पि एव वुत्ते समाणे अभीए जाव[6] विहरइ ॥

२६. तए ण से दिव्वे पिसायरूवे कामदेव समणोवासय अभीय जाव[7] पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चडिक्किए मिसिमिसीयमाणे तिवलिय[8] भिउडि निडाले साहट्टु कामदेव समणोवासय नीलुप्पल[9]-•गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासेण खुरधारेण° असिणा खडाखडि करेइ ॥

२७ तए णं से कामदेवे समणोवासए त उज्जल[10] •विउल कक्कस पगाढ चड दुक्ख° दुरहियास वेयण सम्म सहइ[11] •खमइ तितिक्खइ° अहियासेइ ॥

कामदेवस्स हत्थिरूव-कय-उवसग्ग-पदं

२८ तए ण से दिव्वे पिसायरूवे कामदेव समणोवासय अभीय[12] •अतत्थ अणुव्विग्ग अखुभियं अचलियं असभत तुसिणीय धम्मज्झाणोवगय° विहरमाण पासइ, पासित्ता जाहे[13] नो सचाएइ कामदेव समणोवासय निग्गथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा, ताहे सते तते परितते सणिय-

---

१ देवेण (ख,घ)।
२. देवेण (ख,घ)।
३ स० पा०—अभीय जाव धम्मज्झाणोवगय।
४ उवा० २।२२।
५ स० पा०—सीलाइ वयाइ न छड्डेसि तो जीवियाओ।
६. उवा० २।२३।
७. उवा० २।२४।
८ तिउडिय (क)।
९ स० पा० —नीलुप्पल जाव असिणा।
१०. स० पा०—उज्जल जाव दुरहियास।
११. स० पा०—सहइ जाव अहियासेइ।
१२. सं० पा०—अभीय जाव विहरमाण।
१३. जाव (ग,घ,) अशुद्ध प्रतिभाति।

सणिय पच्चोसवकइ, पच्चोसविकत्ता पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता दिव्व पिसायरूव विप्पजहइ[1], विप्पजहित्ता एग मह दिव्व हत्थिरूव विउव्वइ—सत्तगपइट्ठियं सम्म सठिय सुजात पुरतो[2] उदग्ग पिट्ठतो वराह[3] अयाकुच्छि अलंवकुच्छि[4] पलव-लवोदराधरकर अब्भुग्गय-मउल-मल्लिया-विमल-धवलदत कचणकोसी-पविट्ठदत आणामिय[5]-चाव-ललिय-सवेल्लियग्ग-सोड कुम्म-पडिपुण्णचलण वीसतिनख[6] अल्लीण-पमाणजुत्तपुच्छ मत्त मेहमिव गुलुगुलेत[7] मण-पवण-जइणवेग—दिव्व हत्थिरूव विउव्वित्ता जेणेव पोसहसाला, जेणेव कामदेवे समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कामदेव समणोवासय एव वयासी—हभो ! कामदेवा ! समणोवासया[8] ! •अप्पत्थियपत्थिया ! दुरत-पत-लक्खणा ! हीणपुण्णचाउद्दसिया ! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिया ! धम्मकामया ! पुण्णकामया ! सग्गकामया ! मोक्खकामया ! धम्मकखिया ! पुण्णकखिया ! सग्गकखिया ! मोक्खकखिया ! धम्मपिवासिया ! पुण्णपिवासिया ! सग्गपिवासिया ! मोक्खपिवासिया ! नो खलु कप्पइ तव देवाणुप्पिया ! सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ चालित्तए वा खोभित्तए वा खडित्तए वा भजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तए वा, त जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि° न भजेसि, तो[9] त 'अहं अज्ज'[10] सोडाए गेण्हामि, गेण्हित्ता पोसहसालाओ नीणेमि, नीणेत्ता उड्ढं वेहास उव्विहामि, उव्विहित्ता तिक्खेहिं दतमुसलेहिं पडिच्छामि, पडिच्छित्ता अहे धरणितलसि तिक्खुत्तो पाएसु लोलेमि, जहा णं तुम देवाणुप्पिया ! अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।।

२९ तए ण से कामदेवे समणोवासए तेण दिव्वेण हत्थिरूवेण एव वुत्ते समाणे अभीए[11] •अतत्थे अणुव्विग्गे अखुभिए अचलिए असभते तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए° विहरइ ।।

३० तए ण से दिव्वे हत्थिरूवे कामदेव समणोवासय अभीयं[12] •अतत्थ अणुव्विग्गं

---

१. विप्पहयति (क) सर्वत्र, विप्पयहती (ग) सर्वत्र ।
२. पुरओ (क) ।
३ वसहं (ग) ।
४. × (क,ग); अइया (अजिया) कुच्छी (ना० १।१।१५६) ।
५. अणोमिय (क) ।
६. °नक्ख (ग) ।
७. गुलगुलेंत (घ)
८ सं० पा०—समणोवासया तहेव भणइ जाव न भजेसि ।
९. × (क,ख,ग,घ) ।
१० अज्ज अह (क,ख,ग,घ) ।
११. स० पा०—अभीए जाव विहरइ ।
१२ स० पा०—अभीय जाव विहरमाण ।

अखुभिय अचलिय असभंत तुसिणीयं धम्मज्झाणोवगय° विहरमाण पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्च पि कामदेव समणोवासय एव वयासी—हभो! कामदेवा[1]! °समणोवासया! जाव[2] जइ णं तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो तं अज्ज अह सोडाए गेण्हामि, गेण्हेत्ता पोसहसालाओ नीणेमि, नीणेत्ता उड्ढ वेहास उव्विहामि, उव्विहित्ता तिक्खेहि दतमुसलेहि पडिच्छामि, पडिच्छेत्ता अहे धरणितलसि तिक्खुत्तो पाएसु लोलेमि, जहा ण तुम देवाणुप्पिया! अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

३१ तए ण से कामदेवे समणोवासए तेण दिव्वेण हत्थिरूवेण दोच्च पि तच्च पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[3]° विहरइ ॥

३२. तए ण से दिव्वे हत्थिरूवे कामदेव समणोवासय अभीय जाव[4] पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चडिक्किए मिसिमिसीयमाणे कामदेव समणोवासय सोडाए गेण्हेति[5], गेण्हित्ता उड्ढं वेहास उव्विहइ[6], उव्विहित्ता तिक्खेहि दतमुसलेहि पडिच्छइ, पडिच्छित्ता अहे धरणितलसि तिक्खुत्तो पाएसु लोलेइ ॥

३३ तए ण से कामदेवे समणोवासए त उज्जल[7] °विउल कक्कस पगाढ चड दुक्ख दुरहियास वेयण सम्म सहइ खमइ तितिक्खइ° अहियासेइ ॥

कामदेवस्स सप्परूव-कय-उवसग्ग-पद

३४. तए ण से दिव्वे हत्थिरूवे कामदेव समणोवासयं अभीय अतत्थ अणुव्विग्ग अखुभिय अचलिय असभत तुसिणीय धम्मज्झाणोवगय विहरमाण पासइ, पासित्ता जाहे नो सचाएइ[8] °कामदेव समणोवासय निग्गथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा, ताहे सते तते परितते° सणिय-सणिय पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता दिव्व हत्थिरूव विप्पजहइ, विप्पजहित्ता एग मह दिव्व सप्परूव विउव्वइ—उग्गविस[9] चडविस घोरविस महाकाय मसीमूसाकालग नयणविसरोसपुण्ण अजणपुज-निगरप्पगास रत्तच्छ लोहियलोयण जमलजुयल-चचलचलतजीह[10] धरणीयलवेणिभूय उक्कड-फुड-कुडिल-जडिल-कक्कस-वियड-

---

१. सं० पा—कामदेवा तहेव जाव सो वि विहरइ।
२. उवा० २।२२।
३ उवा० २।२३।
४. उवा० २।२४।
५. गिण्हइ (ख,घ)।
६. उव्वहइ (क)।
७ सं० पा०—उज्जल जाव अहियासेइ।
८ स० पा०—सचाएइ जाव सणिय।
९. उग्गविस दिट्ठिविस जाव सप्परूव (क,ग), उग्गविस दिट्ठिविस (घ)।
१०. चचलजीह (ख)।

फडाडोवकरणदच्छं लोहागर-धम्ममाण-धमधमेतघोस अणागलियदिव्वपचंडरोस-दिव्वं सप्परूव विउव्वित्ता जेणेव पोसहसाला, जेणेव कामदेवे समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कामदेव समणोवासय एवं वयासी—हंभो ! कामदेवा ! समणोवासया[1] ! अप्पत्थियपत्थिया ! दुरंत-पंत-लक्खणा ! हीणपुण्णचाउद्दसिया । सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिया ! धम्मकामया ! पुण्णकामया ! सग्गकामया ! मोक्खकामया ! धम्मकंखिया ! पुण्णकंखिया ! सग्गकंखिया ! मोक्खकंखिया ! धम्मपिवासिया ! पुण्णपिवासिया ! सग्गपिवासिया ! मोक्खपिवासिया ! नो खलु कप्पइ तव देवाणुप्पिया ! सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं चालित्तए वा खोभित्तए वा खंडित्तए वा भंजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तए वा, तं जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि ० न भंजेसि[2], तो ते अज्जेव अहं सरसरस्स कायं दुरुहामि, दुरुहित्ता पच्छिमेणं भाएणं तिक्खुत्तो गीवं वेढेमि, वेढित्ता तिक्खाहिं विसपरिगताहिं[3] दाढाहिं उरसि चेव निकुट्टेमि, जहा णं तुमं देवाणुप्पिया ! अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

३५. तए णं से कामदेवे समणोवासए तेणं दिव्वेणं सप्परूवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए[4] •अतत्थे अणुव्विग्गे अखुभिए अचलिए असंभंते तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए° विहरइ ॥

३६ [5]•तए णं से दिव्वे सप्परूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं अतत्थं अणुव्विग्गं अखुभियं अचलियं असंभंतं तुसिणीयं धम्मज्झाणोवगयं विहरमाणं पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—हंभो ! कामदेवा ! समणोवासया ! जाव[6] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अज्जेव अहं सरसरस्स कायं दुरुहामि, दुरुहित्ता पच्छिमेणं भाएणं तिक्खुत्तो गीवं वेढेमि, वेढित्ता तिक्खाहिं विसपरिगताहिं दाढाहिं उरसि चेव निकुट्टेमि, जहा णं तुमं देवाणुप्पिया ! अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

३७ तए णं से कामदेवे समणोवासए तेणं दिव्वेणं सप्परूवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[7]° विहरइ ॥

---

१ स० पा० – समणोवासया जाव न भंजेसि ।
२ भंजसि (क,ग) ।
३. विसमपरिगताइं (क) ।
४. स० पा०—अभीए जाव विहरइ।
५. स० पा०—सो वि दोच्चं पि तच्चं पि भणइ, कामदेवो वि जाव विहरइ ।
६. उवा० २।२२ ।
७. उवा० २।२३ ।

३८ तए णं से दिव्वे सप्परूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं जाव[1] पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे कामदेवस्स सरसरस्स कायं दुरुहइ, दुरुहित्ता पच्छिमेणं भाएणं तिक्खुत्तो गीवं वेढेइ, वेढित्ता तिक्खाहिं विसपरिगताहिं दाढाहिं उरसि चेव निकुट्टेइ ॥

३९ तए णं से कामदेवे समणोवासए तं उज्जलं[2] •विउलं कक्कसं पगाढं चंडं दुक्खं दुरहियासं वेयणं सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ° अहियासेइ ॥

देवरूव-विउव्वण-पदं

४० तए णं से दिव्वे सप्परूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं[3] •अतत्थं अणुव्विग्गं अखुभियं अचलियं असंभंतं तुसिणीयं धम्मज्झाणोवगयं विहरमाणं° पासइ, पासित्ता जाहे नो संचाएइ कामदेवं समणोवासयं निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामेत्तए वा, ताहे संते तंते परितंते सणियं-सणियं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता दिव्वं सप्परूवं विप्पजहइ, विप्पजहित्ता एगं महं दिव्वं देवरूवं विउव्वइ— हार-विराइय-वच्छं[4] •कडग-तुडिय-थंभियभुयं अंगय-कुंडल-मट्ठ-गंड-कण्णपीढ-धारिं विचित्तहत्थाभरणं विचित्तमाला-मउलि-मउडं कल्लाणग-पवरवत्थपरिहियं कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणं भासुरबोंदिं पलंबवणमालधरं दिव्वेणं वण्णेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं रूवेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणं संघाएणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुईए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए लेसाए° दसदिसाओ उज्जोवेमाणं पभासेमाणं पासाईयं[5] 'दरिसणिज्जं अभिरूवं पडिरूवं—दिव्वं देवरूवं विउव्वित्ता'[6] कामदेवस्स समणोवासयस्स पोसहसालं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता अंतलिक्खपडिवण्णे सखिंखिणियाइं पंचवण्णाइं वत्थाइं पवर परिहिए कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! कामदेवा ! समणोवासया ! धण्णेसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! पुण्णेसि[7] •णं तुमं देवाणुप्पिया ! कयत्थेसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! कयलक्खणेसि णं तुमं देवाणुप्पिया !° सुलद्धे णं तव देवाणुप्पिया ! माणुस्सए जम्मजीवियफले, जस्स णं तव निग्गंथे पावयणे इमेयारूवा पडिवत्ती लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया ।

---

१ उवा० २।२४ ।
२. सं० पा०—उज्जलं जाव अहियासेइ ।
३. सं० पा०—अभीयं जाव पासइ ।
४. सं० पा०—हारविराइयवच्छं जाव दस-दिसाओ ।
५. पासति (ख) ।
६ ×(ख) ।
७. सपुण्णे (क,ग) । सं० पा०—पुण्णे कयत्थे कयलक्खणे सुलद्धे ।

एव खलु देवाणुप्पिया ! सक्के देविंदे देवराया[1] •वज्जपाणी पुरदरे सयक्कऊ सहस्सक्खे मघव पागसासणे दाहिणड्ढलोगाहिवई वत्तीस-विमाण-सयसहस्सा-हिवई एरावणवाहणे सुरिंदे अरयवर-वत्थधरे आलइय-मालमउडे नव-हेम-चारु-चित्त-चचल-कुडल-विलिहिज्जमाणगडे भासुरवोंदी पलंववणमाले सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडेसए विमाणे सभाए सोहम्माए° सक्कसि सीहासणसि चउरासीईए सामाणियसाहस्सीण[2], •तायत्तीसाए तावत्तीसगाणं, चउण्ह लोगपालाणं, अट्ठण्ह अग्गमहिसीणं सपरिवाराण, तिण्ह परिसाण, सत्तण्हं अणियाण, सत्तण्ह अणियाहिवईणं, चउण्ह चउरासीणं आयरक्ख-देवसाहस्सीणं°, अण्णेसिं च वहूण देवाण य देवीण य मज्झगए एवमाइक्खइ, एव भासइ, एव पण्णवेइ, एवं परूवेइ—एवं खलु देवा ! जवुद्दीवे दीवे भारहे वासे चपाए नयरीए कामदेवे समणोवासए पोसहसालाए पोसहिए वंभचारी[3] •उम्मुक्क-मणिसुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अवीए दब्भसथारोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मपण्णत्ति उवसपज्जित्ता ण विहरइ। नो खलु से सक्के[4] केणइ देवेण वा 'दाणवेण वा'[5] जक्खेण वा रक्खसेण वा किन्नरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामेत्तए वा। तए ण अह सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो एयमट्ठं असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे इहं हव्वमागए। त अहो ण देवाणुप्पियाणं इड्ढी जुई जसो वलं वीरिय पुरिसक्कार-परक्कमे 'लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए।'[6] तं दिट्ठा ण देवाणुप्पियाणं इड्ढी[7] •जुई जसो वल वीरिय पुरिसक्कार-परक्कमे लद्धे पत्ते° अभिसमण्णागए। तं खामेमि ण देवाणुप्पिया ! खमंतु णं देवाणुप्पिया ! खतुमरिहति[8] ण देवाणुप्पिया ! नाइं भुज्जो करणयाए त्ति कट्टु पायवडिए पजलिउडे[9] एयमट्ठं भुज्जो-भुज्जो खामेइ, खामेत्ता जामेव दिस पाउब्भूए, तामेव दिसं पडिगए॥

कामदेवस्स पडिमा-पारण-पदं

४१. तए णं से कामदेवे समणोवासए निरुवसग्गमिति कट्टु पडिमं पारेइ॥

---

१. देवराया सतक्कतु जाव सक्कंसि (क), देव-राया सतक्कत्त जाव सक्कंसि (ग), स० पा०--देवराया जाव सक्कंसि।
२. सं० पा०—साहस्सीण जाव अण्णेसिं।
३. सं० पा०—वभचारी जाव दब्भसथारोवगए।
४. सक्का (क, ख, ग, घ)।
५. दाणवेण वा जा गधव्वेण वा (क); दाणवेण वा गंधव्वेण वा (ग)।
६. लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया (ख)।
७. सं० पा०—इड्ढी जाव अभिसमण्णागए।
८. °मरुहती (क)।
९. पजलियडे (क)।

कामदेवस्स भगवओ पज्जुवासणा-पदं

४२ तेण कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे[1] •जाव[2] जेणेव चपा नयरी, जेणेव पुण्णभद्दे चेइए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूव ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे° विहरइ ॥

४३ तए ण से कामदेवे समणोवासए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे—"एव खलु समणे भगव महावीरे[3] •पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे इहमागए इह सपत्ते इह समोसढे इहेव चपाए नयरीए वहिया पुण्णभद्दे चेइए अहापडिरूवं ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे° विहरइ।" त सेय खलु मम समण भगव महावीर वदित्ता नमसित्ता ततो पडिणियत्तस्स पोसह पारेत्तए त्ति कट्टु एव सपेहेइ, सपेहेत्ता [पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमित्ता[4] ?] सुद्धप्पावेसाइ मगल्लाइ वत्थाइ[5] पवर परिहिए मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमित्ता चप[6] नयरिं मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पुण्णभद्दे चेइए[7], •जेणेव समणे भगव महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता तिविहाए पज्जुवासणाए° पज्जुवासइ ॥

---

१ स० पा०—महावीरे जाव विहरइ ।

२ ओ० सू० १६,२२ ।

३. स० पा०—महावीरे जाव विहरइ ।

४ 'सपेहेत्ता' इति पाठस्याग्रे कोष्ठकान्तर्गतपाठो युज्यते । १६ सूत्रे—'सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता चप नयरिं मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसहसाला, तेणेव उवागच्छइ, इति पाठोस्ति, तेन अत्रापि 'पोसहसालाओ पडिणिक्खमित्ता' एष पाठ आवश्यकोस्ति। भगवती (१२।१५) सूत्रेपि इत्थमेव पाठयोजना विद्यते—पोसहसालाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सुद्धप्पावेसाइ मगल्लाइ वत्थाइ पवर परिहिए साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ ।

५ सुद्धप्पा अप्प मणुस्सवग्गुरा (क), सुद्धप्पवेसाइ अप्पमहग्घा मणुस्सवग्गुरा (ख, घ), सुद्धपावेसाइ वत्थाइ अप्पमहग्घाइ जाव अप्पमणुस्सवग्गुरा (ग), प्रतिषु ऊर्ध्वमुट्टंकित पाठो विद्यते, किन्तु नासौ प्रसगानुसारी प्रतिभाति। कामदेव सप्रति पौषधिको वर्तते। अतएव 'अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरे' नासौ पाठ पोषधावस्थाया सगच्छते। शखश्रावकेणापि पोषधावस्थाया भगवतो दर्शनं कृतम्। तत्र 'सुद्धप्पावेसाइ मगल्लाइ वत्थाइ पवर परिहिए', (भगवती १२।१५) एतावान् एव पाठो विद्यते। भगवतीवृत्तावपि एतावत, पाठस्यैव व्याख्या समुपलभ्यते। प्रस्तुताध्ययने (सू० १६) 'उम्मुक्कमणिसुवण्णे' एव पाठोस्ति, तदा आभरणालकरण कथ प्रासगिक स्यात्? असावत्र प्रवाहरूपेण आयात इति सभाव्यते ।

६ चपा (ख) ।

७, स० पा०—चेइए जहा सखे जाव पज्जुवासइ ।

४४ तए णं समणे भगवं महावीरे कामदेवस्स समणोवासयस्स तीसे य[1] •महइमहालियाए परिसाए जाव[2] धम्म परिकहेइ° ।।

भगवया कामदेवस्स उवसग्ग-वागरण-पद

४५ कामदेवाइ ! समणे भगवं महावीरे कामदेवं समणोवासय एवं वयासी—से नूणं कामदेवा ! तुब्भ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे अतियं पाउब्भूए। तए ण से देवे एग महं दिव्वं पिसायरूवं[3] विउव्वइ, विउव्वित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चडिक्किए मिसिमिसीयमाणे एगं मह नीलुप्पल[4]-•गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगास खुरधार° असि गहाय तुम एव वयासी हंभो ! कामदेवा[5] ! •समणोवासया ! जाव[6] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइं पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भंजेसि, तो त अज्ज अहं इमेण नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासेण खुरधारेण असिणा खडाखंडि करेमि, जहा ण तुमं देवाणुप्पिया ! अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव° जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तुम तेणं दिव्वेण पिसायरूवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[7] विहरसि ।

[8]•तए ण से दिव्वे पिसायरूवे तुमं अभीयं जाव[9] पासइ, पासित्ता दोच्च पि तच्च पि तुमं एव वयासी—हंभो ! कामदेवा ! समणोवासया ! जाव[10] जइ णं तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भजेसि, तो त अह अज्ज इमेण नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासेण खुरधारेण असिणा खडाखडि करेमि, जहा णं तुम देवाणुप्पिया ! अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए णं तुमे तेण दिव्वेणं पिसायरूवेण दोच्च पि तच्च पि एव वुत्ते समाणे अभीए जाव[11] विहरसि ।

तए ण से दिव्वे पिसायरूवे तुम अभीय जाव[12] पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चडिक्किए मिसिमिसीयमाणे तिवलियं भिउडि निडाले साहट्टु तुम

---

१. सं० पा०—तीसे य जाव धम्म कहा सम्मत्ता ।
२. ओ० सू० ७१-७७ ।
३ पिसातरूव (ग) ।
४. स० पा०—नीलुप्पल जाव असि ।
५ स० पा०—कामदेवा जाव जीवियाओ ।
६. उवा० २।२२ ।
७ उवा० २।२३ ।
८. स० पा०—एव वण्णगरहिया तिण्णि वि उवसग्गा तहेव पडिउच्चारेयव्वा जाव देवो पडिगओ ।
९ उवा० २।२४ ।
१० उवा० २।२२ ।
११. उवा० २।२३ ।
१२. उवा० २।२४ ।

नीलुप्पल-गवलगुलिय-ग्रयसिकुसुमप्पगासेण खुरधारेण ग्रसिणा खडाखडि करेइ ।

तए ण तुमे त उज्जल जाव[1] वेयण सम्म सहसि खमसि तितिक्खसि ग्रहियासेसि।
तए ण से दिव्वे पिसायरूवे तुम ग्रभीयं जाव[2] पासइ, पासित्ता जाहे नो सचाएइ, तुम निग्गथाग्रो पावयणाग्रो चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा, ताहे सते तते परितते सणिय-सणिय पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता पोसह-सालाग्रो पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता दिव्व पिसायरूव विप्पजहइ, विप्प-जहित्ता एग मह दिव्व हत्थिरूव विउव्वइ, विउव्वित्ता जेणेव पोसहसाला, जेणेव तुमे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तुमं एव वयासी—हभो ! काम-देवा ! समणोवासया ! जाव[3] जइ ण तुम ग्रज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो त ग्रह ग्रज्ज सोडाए गेण्हामि, गेण्हित्ता पोसहसालाग्रो नीणेमि, नीणेत्ता उड्ढ वेहास उव्विहामि, उव्विहित्ता तिक्खेहिं दतमुसलेहिं पडिच्छामि, पडिच्छित्ता ग्रहे धरणितलसि तिक्खुत्तो पाएसु लोलेमि, जहा ण तुम देवाणुप्पिया ! ग्रट्ट-दुहट्ट-वसट्टे ग्रकाले चेव जीवियाग्रो ववरोविज्जसि ।

तए ण तुमे तेण दिव्वेण हत्थिरूवेण एव वुत्ते समाणे ग्रभीए जाव[4] विहरसि ।
तए ण से दिव्वे हत्थिरूवे तुम ग्रभीय जाव[5] पासइ, पासित्ता दोच्च पि तच्च पि तुम एव वयासी—हभो ! कामदेवा ! समणोवासया ! जाव[6] जइ ण तुम ग्रज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो त ग्रज्ज ग्रह सोडाए गेण्हामि, गेण्हित्ता पोसहसालाग्रो नीणेमि, निणित्ता उड्ढ वेहास उव्विहामि, उव्विहित्ता तिक्खेहिं दतमुसलेहिं पडिच्छामि, पडिच्छित्ता ग्रहे धरणितलसि तिक्खुत्तो पाएसु लोलेमि, जहा ण तुम देवाणु-प्पिया ! ग्रट्ट-दुहट्ट-वसट्टे ग्रकाले चेव जीवियाग्रो ववरोविज्जसि ।

तए ण तुमे तेण दिव्वेण हत्थिरूवेण दोच्च पि तच्च पि एव वुत्ते समाणे ग्रभीए जाव[7] विहरसि ।

तए ण से दिव्वे हत्थिरूवे तुम ग्रभीय जाव[8] पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चडिक्किए मिसिमिसीयमाणे तुम सोडाए गेण्हति, गेण्हित्ता उड्ढ वेहास उव्विहइ, उव्विहित्ता तिक्खेहिं दतमुसलेहिं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता ग्रहे धरणि-तलसि तिक्खुत्तो पाएसु लोलेइ ।

---

१ उवा० २।२७ ।
२ उवा० २।२४ ।
३ उवा० २।२२ ।
४ उवा० २।२३ ।
५ उवा० २।२४ ।
६. उवा० २।२२ ।
७. उवा० २।२३ ।
८ उवा० २।२४ ।

तए णं तुमे त उज्जलं जाव[1] वेयण सम्मं सहसि खमसि तितिक्खसि अहियासेसि।

तए ण से दिव्वे हत्थिरूवे तुम अभीय जाव[2] पासइ, पासित्ता जाहे नो संचाएति निग्गथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा, ताहे सते तते परितते सणिय-सणिय पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता दिव्व हत्थिरूव विप्पजहइ, विप्पजहित्ता एग मह दिव्व सप्परूव विउव्वइ, विउव्वित्ता जेणेव पोसहसाला, जेणेव तुम, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तुम एव वयासी—हभो! कामदेवा! समणोवासया! जाव[3] जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भजेसि, तो ते अज्जेव अहं सरसरस्स काय दुरुहामि, दुरुहित्ता पच्छिमेण भाएण तिक्खुत्तो गीव वेढेमि, वेढित्ता तिक्खाहि विसपरिगताहि दाढाहि उरसि चेव निकुट्टेमि, जहा ण तुम देवाणुप्पिया! अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि।

तए ण तुमे तेण दिव्वेण सप्परूवेण एव वुत्ते समाणे अभीए जाव[4] विहरसि।

तए ण से दिव्वे सप्परूवे तुम अभीय जाव[5] पासइ, पासित्ता दोच्च पि तच्च पि तुम एवं वयासी—हभो! कामदेवा! समणोवासया! जाव[6] जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो ते अज्जेव अह सरसरस्स काय दुरुहामि, दुरुहित्ता पच्छिमेण भाएण तिक्खुत्तो गीव वेढेमि, वेढित्ता तिक्खाहि विसपरिगताहि दाढाहि उरंसि चेव निकुट्टेमि, जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि।

तए ण तुमे तेण दिव्वेण सप्परूपेण दोच्चं पि तच्च पि एव वुत्ते समाणे अभीए जाव[7] विहरसि।

तए ण से दिव्वे सप्परूवे तुम अभीय जाव[8] पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चडिक्किए मिसिमिसीयमाणे तुब्भ सरसरस्स काय दुरुहइ, दुरुहित्ता पच्छिमेण भाएण तिक्खुत्तो गीव वेढेइ, वेढेत्ता तिक्खाहि विसपरिगताहि दाढाहि उरसि चेव निकुट्टेइ।

तए ण तुमे त उज्जल जाव[9] वेयण सम्म सहसि खमसि तितिक्खसि अहियासेसि।

तए ण से दिव्वे सप्परूवे तुम अभीय जाव[10] पासइ, पासित्ता जाहे नो सचाएइ

---

१. उवा० २।२७।
२ उवा० २।२४।
३ उवा० २।२२।
४ उवा० २।२३।
५ उवा० २।२४।
६ उवा० २।२२।
७. उवा० २।२३।
८. उवा० २।२४।
९. उवा० २।२७।
१०. उवा० २।२४।

तुम निग्गंथाग्रो पावयणाग्रो चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामेत्तए वा, ताहे सते तते परितते सणिय-सणिय पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता पोसह-सालाग्रो पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता दिव्व सप्परूव विप्पजहइ, विप्पजहित्ता एग मह दिव्व देवरूव विउव्वइ, विउव्वित्ता पोसहसाल ग्रणुप्पविसइ, ग्रणुप्प-विसित्ता ग्रतलिक्खपडिवण्णे सखिखिणियाइ पचवण्णाइ वत्थाइ पवर परिहिए तुम एव वयासी—हभो ! कामदेवा ! समणोवासया ! धण्णेसि ण तुम देवाणुप्पिया ! पुण्णेसि ण तुम देवाणुप्पिया ! कयत्थेसि ण तुम देवाणुप्पिया ! कयलक्खणेसि ण तुम देवाणुप्पिया ! सुलद्धे ण तव देवाणुप्पिया ! माणुस्सए जम्मजीवियफले, जस्स ण तव निग्गथे पावयणे इमेयारूवा पडिवत्ती लद्धा पत्ता ग्रभिसमण्णागया ।

एव खलु देवाणुप्पिया ! सक्के देविंदे देवराया जाव[1] एवमाइक्खइ, एव भासइ, एव पण्णवेइ, एव परूवेइ एव खलु देवा ! जवुद्दीवे दीवे भारहे वासे चपाए नयरीए कामदेवे समणोवासए पोसहसालाए पोसहिए वभचारी उम्मुक्कमणि-सुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे ग्रवीए दब्भसथा-रोवगए समणस्स भगवग्रो महावीरस्स ग्रतिय धम्मपण्णत्तिं उवसपज्जित्ता ण विहरइ । नो खलु से सक्के केणइ देवेण वा दाणवेण वा जक्खेण वा रक्खसेण वा किन्नरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गधव्वेण वा निग्गथाग्रो पावय-णाग्रो चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामेत्तए वा ।

तए ण ग्रहं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो एयमट्ठ ग्रसद्दहमाणे ग्रपत्तियमाणे ग्ररोएमाणे इह हव्वमागए । त ग्रहो ण देवाणुप्पियाण इड्ढी जुई जसो वल वीरिय पुरिसक्कार-परक्कमे लद्धे पत्ते ग्रभिसमण्णागए । त दिट्ठा ण देवाणुप्पि-याण इड्ढी जुई जसो वल वीरिय पुरिसक्कार-परक्कमे लद्धे पत्ते ग्रभिसमण्णागए । त खामेमि ण देवाणुप्पिया ! खमतु ण देवाणुप्पिया ! खतुमरिहति ण देवाणु-प्पिया ! नाइ भुज्जो करणयाए त्ति कट्टु पायवडिए पजलिउडे एयमट्ठ भुज्जो-भुज्जो खामेइ, खामेत्ता जामेव दिस पाउब्भूए, तामेव दिस पडिगए° । से नूण कामदेवा ! ग्रट्ठे समट्ठे ?

हता ग्रत्थि ।।

भगवया कामदेवस्स पसंसा-पदं

४६ ग्रज्जोति ! समणे भगव महावीरे वहवे समणे निग्गथे य निग्गथीग्रो य ग्राम-तेत्ता एव वयासी—जइ ताव ग्रज्जो ! समणोवासगा गिहिणो गिहमज्झावसता दिव्व-माणुस-तिरिक्खजोणिए उवसग्गे सम्म सहति[2] °खमति तितिक्खति°

---

१. उवा० २।४० ।

२. स० पा०—सहति जाव अहियासेंति ।

अहियासेति, सक्का पुणाइं अज्जो! समणेहिं निग्गंथेहिं दुवालसंग गणिपिडगं अहिज्जमाणेहिं दिव्व-माणुस-तिरिक्खजोणिए उवसग्गे सम्मं सहित्तए[1] °खमित्तए तितिक्खित्तए° अहियासित्तए ॥

४७ ततो ते बहवे समणा निग्गंथा य निग्गंथीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स तह त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेंति ॥

कामदेवस्स पडिगमण-पदं

४८ तए णं से कामदेवे समणोवासए हट्ठतुट्ठ[2]-°चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणहियए° समणं भगवं महावीरं पसिणाइं पुच्छइ, अट्ठमादियइ, समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए, तामेव दिसं पडिगए ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

४९ तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ चंपाओ नयरीओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

कामदेवस्स उवासगपडिमा-पडिवत्ति-पदं

५० तए[3] णं से कामदेवे समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ[4] ॥

५१ °तए णं से कामदेवे समणोवासए पढमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥

५२ तए णं से कामदेवे समणोवासए दोच्चं उवासगपडिमं, एवं तच्चं, चउत्थं, पंचमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं, एक्कारसमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥

५३ तए णं से कामदेवे समणोवासए इमेणं एयारूवेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए ॥

कामदेवस्स अणसण-पदं

५४. तए णं तस्स कामदेवस्स समणोवासयस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-

---

१. सं० पा०—सहित्तए जाव अहियासित्तए।
२. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव समणं।
३. तओ (क, ग, घ)।
४. सं० पा०—विहरइ तएणं।

समयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स अय अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—'एव खलु अह इमेण एयारूवेण ओरालेण विउलेण पयत्तेण पग्गहिएणं तवोकम्मेण सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडि-याभूए किसे धमणिसतए जाए। त अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-सवेगे, त जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-सवेगे, जाव य मे धम्मायरिए धम्मोव-एसए समणे भगव महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेय कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते अपच्छिममारणतियसलेहणा-झूसणा-झूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खियस्स काल अणवकखमाणस्स विहरित्तए एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते अपच्छिममारणतियसलेहणा-झूसणा-झूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए काल अणवकखमाणे विहरइ ॥°

कामदेवस्स समाहिमरण-पदं

५५ तए ण से कामदेवे समणोवासए वहूहिं[2] °सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि अप्पाण° भावेत्ता वीस वासाइ समणोवासगपरियाग पाउणित्ता, एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्म काएण फासित्ता, मासियाए सलेहणाए अत्ताण[3] झूसित्ता, सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कते, समाहि-पत्ते, कालमासे काल किच्चा, सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिसगस्स महाविमाणस्स उत्तरपुरत्थिमे ण अरुणाभे विमाणे देवत्ताए उववण्णे। तत्थ ण अत्थेगइयाण देवाण चत्तारि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता। कामदेवस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

५६ से ण भते! कामदेवे ताओ[4] देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण अणतर चय चइत्ता कहिं गमिहिइ? कहिं उववज्जिहिइ?

गोयमा! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणमत काहिइ ॥

निक्खेव-पद

५७ [5]°एव खलु जंवू! समणेण भगवया महावीरेण उवासगदसाण दोच्चस्स अज्झ-यणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते °॥

---

१. उवा० १।५७।
२ स० पा०—वहूहिं जाव भावेत्ता।
३. अप्पाणं (क, ख, ग, घ)।
४. तओ चेव (ख)।
५. स० पा०—निक्खेवो।

तइयं अज्झयण

चुलणीपिता

उक्खेव-पदं

१ [1]°जइ ण भंते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव[2] सपत्तेण सत्तमस्स अगस्स उवासगदसाण दोच्चस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, तच्चस्स ण भंते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?°

चुलणीपियगाहावइ-पदं

२ एव खलु जवू ! तेण कालेण तेण समएणं वाणारसी नाम नयरी। कोट्ठए[3] चेइए। जियसत्तू राया ॥

३ [4]°तत्थ णं वाणारसीए नयरीए चुलणीपिता[5] नामं गाहावई परिवसइ—अड्ढे जाव[6] वहुजणस्स अपरिभूए ॥

४. तस्स ण चुलणीपियस्स गाहावइस्स अट्ठ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, अट्ठ हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, अट्ठ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, अट्ठ वया दसगोसाहस्सिएण वएण होत्था ॥

५. से ण चुलणीपिता गाहावई वहूणं जाव[7] आपुच्छणिज्जे, पडिपुच्छणिज्जे सयस्स वि य ण कुडुवस्स मेढी जाव[8] सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था ॥

---

१. स० पा०—उक्खेवो।

२. ना० १।१।७।

३. क्वचित् कोष्ठक चैत्यमधीत क्वचिन्महाकामवनमिति (वृ)।

४ स० पा०—तत्थ ण वाणारसीए चुलणिपिया नाम गाहावई परिवसई अड्ढे सामा भारिया अट्ठ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ अट्ठ वड्ढिय °अट्ठ पवित्थरप°। अट्ठ वया दसगोसाहस्सिएणं वएण जहा आणदो ईसर जाव सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था।

५. चुलणिपिता (ग, घ)।

६. उवा० १।११।

७,८. उवा० १।१३।

६. तस्स ण चुलणीपियस्स गाहावइस्स सामा[1] नामं भारिया होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरा जाव[2] माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी विहरइ° ।।

महावीर-समवसरण-पदं

७ [3]°तेण कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे जाव[4] जेणेव वाणारसी नयरी जेणेव कोट्ठए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।

८ परिसा निग्गया ।।

९ कूणिए राया जहा, तहा जियसत्तू निग्गच्छइ जाव[5] पज्जुवासइ ।।

१० तए ण से चुलणीपिया गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे—"एव खलु समणे भगव महावीरे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे इहमागए इह सपत्ते इह समोसढे इहेव वाणारसीए नयरीए बहिया कोट्ठए चेइए अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ।"
त महप्फल खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहारूवाण अरहताण भगवताण णामगोयस्स वि सवणयाए, किमग पुण अभिगमण-वदण-णमसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? त गच्छामि ण देवाणुप्पिया ! समण भगव महावीर वदामि णमसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाण मगल देवय चेइय पज्जुवासामि—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता ण्हाए कयबलिकम्मे कय-कोउय-मगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइ मगल्लाइ वत्थाइ पवर परिहिए अप्प-महग्घाभरणालकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सकोरेंटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण मणुस्सवग्गुरापरिखित्ते पादविहार-चारेण वाणारसिं नयरिं मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव कोट्ठए चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ णम-सइ, वदित्ता णमसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमसमाणे अभिमुहे विणएण पजलिउडे पज्जुवासइ ।।

---

१. सोमा (ख) ।
२. उवा० १।१४ ।
३. स० पा०—सामी समोसढे । चुलणीपिया वि जहा आणदे तहा निग्गओ । तहेव गिहिधम्म पडिवज्जइ । गोयमपुच्छा । तहेव सेसं जहा कामदेवस्स जाव पोसहसालाए ।
४. ओ० सू० १६, २२ ।
५. ओ० सू० ५३-६६ ।

११ तए ण समणे भगव महावीरे चुलणीपियस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए जाव[1] धम्म परिकहेइ ॥

१२ परिसा पडिगया, राया य गए ॥

चुलणीपियस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पद

१३ तए ण से चुलणीपिता गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणहियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी—सद्दहामि ण भते ! निग्गथ पावयण, पत्तियामि ण भते ! निग्गथ पावयण, रोएमि ण भते ! निग्गथ पावयण, अब्भुट्ठेमि ण भते ! निग्गथ पावयण। एवमेय भते ! तहमेय भते ! अवितहमेय भते ! असदिद्धमेय भते ! इच्छियमेय भते ! पडिच्छियमेय भते ! इच्छिय-पडिच्छियमेय भते ! से जहेय तुब्भे वदह। जहा ण देवाणुप्पियाण अतिए बहवे राईसर-तलवर-माडविय-कोडुबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुडा भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइया, नो खलु अह तहा सचाएमि मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए। अह ण देवाणुप्पियाण अतिए पचाणुव्वइय सत्तसिक्खावइय—दुवालसविह सावगधम्म पडिवज्जिस्सामि।

अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबध करेहि ॥

१४ तए ण से चुलणीपिता गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए[2] सावय-धम्म पडिवज्जइ ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

१५ तए ण समणे भगव महावीरे अण्णदा कदाइ वाणारसीए नयरीए कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता वहिया जणवयविहार विहरइ ॥

चुलणीपियस्स समणोवासग-चरिया-पद

१६ तए ण से चुलणीपिता समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे जाव[3] समणे निग्गथे फासु-एसणिज्जेण असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-पडिग्गह-कबल-पायपुछणेण ओसह-भेसज्जेण पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-सथारएण पडिलाभेमाणे विहरइ ॥

---

१. ओ० सू० ७१-७७।
२ पू०—उवा० १।२४-५३।
३ उवा० १।५५।

सामाए समणोवासिय-चरिया-पद

१७ तए ण सा सामा भारिया समणोवासिया जाया—अभिगयजीवाजीवा जाव[1] समणे निग्गथे फासु-एसणिज्जेण असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-पडिग्गह-कवल-पायपुछणेण ओसह-भेसज्जेण पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-सथारएण पडिलाभेमाणी विहरइ ॥

चुलणीपियस्स धम्मजागरिया-पदं

१८ तए ण तस्स चुलणीपियस्स समणोवासगस्स उच्चावएहि सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि अप्पाण भावेमाणस्स चोद्दस सवच्छराइ वीइक्कताइं। पण्णरसमस्स सवच्छरस्स अतरा वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्त-कालसमयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु अह वाणारसीए नयरीए बहूण जाव[2] आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य ण कुडुबस्स मेढी जाव[3] सव्वकज्जवड्ढावए, त एतेण वक्खेवेण अह नो सचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मपण्णत्ति उवसपज्जित्ता णं विहरित्तए[4] ॥

१९ तए ण से चुलणीपिता समणोवासए जेट्ठपुत्त मित्त-नाइ-नियग-सयण-सबधि-परिजण च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडि-णिक्खमित्ता वाणारसिं नयरिं मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसहसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसाल पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चार-पासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसथारय सथरेइ, सथरेत्ता दब्भसथारय दुरुहइ, दुरुहित्ता° पोसहसालाए पोसहिए बभयारी[5] °उम्मुक्कमणिसुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अबीए दब्भसथारोवगए° समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मपण्णत्तिं उवसपज्जित्ता ण विहरइ ॥

चुलणीपियस्स देव-कय-उवसग्ग-पदं

२० तए ण तस्स चुलणीपियस्स समणोवासयस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि एगे देवे[6] अतिय पाउब्भूए ॥

°जेट्ठपुत्त

२१ तए ण से देवे एग मह नीलुप्पल[7]-°गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगास खुरधार°

---

१. उवा० १।५६ ।

२,३ उवा० १।१३ ।

४ पू०—उवा० १।५७-५९ ।

५ स० पा०—बभयारी समणस्स ।

६ द्वितीयाध्ययनस्य विंशतितमे सूत्रे अस्याग्रे 'मायी मिच्छदिट्ठी' एतद् विशेषणद्वय विद्यते ।

७. स० पा०—नीलुप्पल जाव असिं ।

असि गहाय चुलणीपिय समणोवासय एव वयासी— हभो ! चुलणीपिता ! समणोवासया[1] ! °अप्पत्थियपत्थिया ! दुरत-पत-लक्खणा ! हीणपुण्ण-चाउद्दसिया ! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिया ! धम्मकामया ! पुण्णकामया ! सग्गकामया ! मोक्खकामया ! धम्मकखिया ! पुण्णकखिया ! सग्गकखिया ! मोक्खकखिया ! धम्मपिवासिया ! पुण्णपिवासिया ! सग्ग-पिवासिया ! मोक्खपिवासिया ! नो खलु कप्पइ तव देवाणुप्पिया ! सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ चालित्तए वा खोभित्तए वा खडित्तए वा भजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तए वा, त जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न° भजेसि, तो[2] ते अह अज्ज जेट्ठपुत 'साओ गिहाओ'[3] नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता तओ[4] मससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेमि[5], अद्दहेत्ता तव गाय मसेण य सोणिएण य आइचामि[6], जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

२२. तए ण से चुलणीपिता समणोवासए तेण देवेण एव वुत्ते समाणे अभीए[7] °अतत्थे अणुव्विग्गे अखुभिए अचलिए असभते तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए° विहरइ ॥

२३. तए ण से देवे चुलणीपिय समणोवासय अभीय[8] °अतत्थ अणुव्विग्ग अखुभिय अचलिय असभत तुसिणीय धम्मज्झाणोवगय° विहरमाण पासइ, पासित्ता दोच्च पि तच्च पि चुलणीपिय समणोवासय एव वयासी हभो ! चुलणीपिया ! समणोवासया[9] ! °जाव[10] जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो ते अहं अज्ज जेट्ठपुत्त साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता तओ मससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गाय मसेण य सोणिएण य आइचामि, जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

२४ तए ण से चुलणीपिता समणोवासए तेण देवेण दोच्च पि तच्च पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[11]° विहरइ ॥

---

१. स० पा०—समणोवासया जहा कामदेवो जाव न भजेसि ।
२. ततो (क), तओ (ख) ।
३. सातो गिहातो (क, ग),सयातो गिहाओ(घ) ।
४. ततो (क) ।
५ दहेमि (ख) ।
६. आसिचामि (ख, ग) ।
७. स० पा०—अभीए जाव विहरइ ।
८ स० पा०—अभीय जाव पासइ ।
९ स० पा०—समणोवासया ! त चेव भणइ सो जाव विहरइ ।
१० उवा० २।२२ ।
११ उवा० २।२३ ।

२५ तए ण से देवे चुलणीपियं समणोवासय अभीय जाव[1] पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चडिक्किए मिसिमिसीयमाणे चुलणीपियस्स समणोवासयस्स जेट्ठपुत्त गिहाओ[2] नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता तओ मससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता चुलणीपियस्स समणोवासयस्स गाय मसेण य सोणिएण य आइचइ ॥

२६ तए ण से चुलणीपिता समणोवासए त उज्जल[3] •विउल कक्कस पगाढ चड दुक्ख दुरहियास वेयण सम्म सहइ खमइ तितिक्खइ॰ अहियासेइ ॥

॰मज्झिमपुत्त

२७ तए ण से देवे चुलणीपिय समणोवासय अभीय जाव[4] पासइ, पासित्ता चुलणीपिय समणोवासय एव वयासी—हभो ! चुलणीपिता ! समणोवासया ! जाव[5] जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, 'तो ते'[6] अह अज्ज मज्झिम पुत्त साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता[7] •तओ मससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गाय मसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

२८ तए ण से चुलणीपिता समणोवासए तेण देवेण एव वुत्ते समाणे अभीए जाव[8] विहरइ ॥

२९ तए ण से देवे चुलणीपिय समणोवासय अभीय जाव[9] पासइ, पासित्ता दोच्च पि तच्च पि चुलणीपिय समणोवासय एव वयासी— हभो ! चुलणीपिया ! समणोवासया ! जाव[10] जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो ते अह अज्ज मज्झिम पुत्त साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता तओ मससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गाय मसेण य

---

१ उवा० २।२४।

२ यत्र उत्तमपुरुषक्रियाप्रयोगस्तत्र सर्वत्रापि 'साओ गिहाओ' इतिपाठो लभ्यते। यत्र च प्रथमपुरुषक्रियाप्रयोगोस्ति तत्र केवल 'गिहाओ' पाठो लभ्यते, किन्तु यत्र श्रमणोपासकाः घटितघटना मनसि चिन्तयन्ति श्रावयन्ति च तत्र 'साओ गिहाओ' पाठो युज्यते।

३ स० पा०—उज्जल जाव अहियासेइ।

४ उवा० २।२४।

५ उवा० २।२२।

६ ततो ते (क), ततो (ख)।

७. स०पा०—घाएत्ता जहा जेट्ठपुत्त तहेव भणइ, तहेव करेइ। एवं कणीयसपि जाव अहियासेइ।

८ उवा० २।२३।

९ उवा० २।२४।

१० उवा० २।२२।

सोणिएण य आइचामि, जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

३० तए ण से चुलणीपिया समणोवासए तेण देवेण दोच्च पि तच्च पि एव वुत्ते समाणे अभीए जाव[1] विहरइ ॥

३१ तए ण से देवे चुलणीपियं समणोवासय अभीय जाव[2] पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चडिक्किए मिसिमिसीयमाणे चुलणीपियस्स समणोवासयस्स मज्झिम पुत्त गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता चुलणीपियस्स समणोवासयस्स गाय मसेण य सोणिएण य आइचइ ॥

३२ तए ण से चुलणीपिता समणोवासए त उज्जलं जाव[3] वेयण सम्म सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ ॥

°कणीयसपुत्त

३३ तए ण से देवे चुलणीपिय समणोवासय अभीय जाव[4] पासइ, पासित्ता चुलणीपिय समणोवासय एवं वयासी—हंभो ! चुलणीपिता ! समणोवासया ! जाव[5] जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भजसि, तो ते अह अज्ज कणीयस पुत्त साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता तओ मससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गाय मसेण य सोणिएण य आइचामि, जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

३४ तए ण से चुलणीपिता समणोवासए तेण देवेण एव वुत्ते समाणे अभीए जाव[6] विहरइ ॥

३५ तए ण से देवे चुलणीपिय समणोवासय अभीय जाव[7] पासइ, पासित्ता दोच्च पि तच्च पि चुलणीपिय समणोवासय एवं वयासी—हंभो ! चुलणीपिता ! समणोवासया ! जाव[8] जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइं पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो ते अह अज्ज कणीयस पुत्त साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता तओ मससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गाय मसेण

१ उवा० २।२३ ।
२ उवा० २।२४ ।
३ उवा० २।२७ ।
४. उवा० २।२४ ।
५. उवा० २।२२ ।
६. उवा० २।२३ ।
७ उवा० २।२४ ।
८. उवा० २।२२ ।

य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।।

३६ तए ण से चुलणीपिता समणोवासए तेण देवेण दोच्चं पि तच्च पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[1] विहरइ ।।

३७ तए ण से देवे चुलणीपिय समणोवासय अभीय जाव[2] पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चडिविकए मिसिमिसीयमाणे चुलणीपियस्स समणोवासयस्स कणीयस पुत्त गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता चुलणीपियस्स समणोवासयस्स गाय मसेण य सोणिएण य आइचइ ।।

३८ तए ण से चुलणीपिता समणोवासए त उज्जल जाव[3] वेयण सम्म सहइ खमइ तितिक्खइ° अहियासेइ ।।

°भद्दा सत्थवाही

३९ तए ण से देवे चुलणीपियं समणोवासय अभीय जाव[4] पासइ, पासित्ता चउत्थ पि चुलणीपिय समणोवासयं एव वयासी—हभो ! चुलणीपिया ! समणोवासया ! जाव[5] जइ ण तुम[6] •अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि° न भजेसि, 'तो ते'[7] अह अज्ज जा इमा[8] माया भद्दा सत्थवाही देवत 'गुरु-जणणी'[9] 'दुक्कर-दुक्करकारिया'[10] त[11] साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता तओ मससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गाय मसेण य सोणिएण य आइचामि, जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।।

४० तए ण से चुलणीपिता समणोवासए तेण देवेण एव वुत्तं समाणे अभीए जाव[12] विहरइ ।।

---

१. उवा० २।२३ ।
२. उवा० २।२४ ।
३ उवा० २।२७ ।
४. उवा० २।२४ ।
५. उवा० २।२२ ।
६. स० पा०—तुम जाव न भजेसि ।
७. तओ (ख, ग) ।
८, इमा तव (क्व) ।
९ गुरुजणणी (क), गुरु जणणी (ख, ग) ।
१०. दुक्करकारिया (ग) ।
११ त ते (क, ख, ग, घ), डा० ए० एफ० रुडोल्फ होरनल द्वारा प्रस्तुतसूत्रस्य पाठ-सशोधनप्रयुक्तादर्शेषु एकस्मिन् आदर्शे 'ते' पाठो नोपलभ्यते । तदाधारेण अस्माभिरत्र तस्याग्रहण कृतम् ।
१२. उवा० २।२३ ।

४१ तए ण से देवे चुलणीपिय समणोवासय अभीय जाव[1] पासइ, पासित्ता दोच्च पि तच्च पि चुलणीपिय समणोवासय एव वयासी—हभो! चुलणीपिता! समणोवासया[2]! •जाव[3] जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो ते अह अज्ज जा इमा माया भद्दा सत्थवाही देवत गुरु-जणणी दुक्कर-दुक्करकारिया, तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता तओ मससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गाय मसेण य सोणिएण य आइचामि, जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ° ववरोविज्जसि ॥

चुलणीपियस्स कोलाहल-पद

४२ तए ण तस्स चुलणीपियस्स समणोवासयस्स तेण देवेण दोच्च पि तच्च पि एव वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे[4] •अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे° समुप्पज्जित्था—अहो णं इमे पुरिसे अणारिए अणारियबुद्धी अणारियाइ पावाइ कम्माइ समाचरति[5], 'जे ण'[6] मम जेट्ठ पुत्त साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता[7] •तओ मससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता मम° गाय मसेण य सोणिएण य आइचइ, 'जे ण मम'[8] मज्झिम पुत्त साओ गिहाओ[9] •नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता तओ मससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता मम गाय मसेण य° सोणिएण य आइचइ, जे ण मम कणीयसं पुत्त साओ गिहाओ[10] •नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता तओ मससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता ममं गाय मसेण य सोणिएण य° आइचइ, जा वि य ण इमा[11] मम माया भद्दा सत्थवाही देवत 'गुरु-जणणी'[12] दुक्कर-दुक्करकारिया, त पि य ण इच्छइ[13] साओ गिहाओ नीणेत्ता मम अग्गओ घाएत्तए—त सेय खलु मम एय पुरिस गिण्हित्तए

---

१. उवा० २।२४।
२. स० पा०—समणोवासया तहेव जाव ववरोविज्जसि।
३. उवा० २।२२।
४. स० पा०—इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था।
५ समातरति (क, ग), समायरइ (ख, घ)।
६. जेण (ग)।
७ स० पा०—घाएत्ता जहा कय तहा विचिंतेइ जाव गाय।
८. जेणेव मम (क, ख, ग, घ)।
९ स० पा०—गिहाओ जाव सोणिएण।
१०. स० पा०—गिहाओ तहेव जाव आइचइ।
११. इम (ख)।
१२. गुरु जणणी (क, ख, ग, घ)।
१३ इच्छेति (ग)।

त्ति कट्टु उद्धाविए[1], से वि य आगासे उप्पइए, तेण च[2] खभे आसाइए, महया-महया सद्देण कोलाहले कए ॥

भद्दाए पसिण-पदं

४३. तए ण सा भद्दा सत्थवाही त कोलाहलसद्दं सोच्चा निसम्म जेणेव चुलणीपिया समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ[3], उवागच्छित्ता चुलणीपियं समणोवासयं एव वयासी—किण्ण पुत्ता ! तुम महया-महया सद्देण कोलाहले कए ?

चुलणीपियस्स उत्तर-पदं

४४. तए ण से चुलणीपिया समणोवासए अम्मय भद्द सत्थवाहि एव वयासी—एव खलु अम्मो ! न याणामि के वि पुरिसे आसुरत्ते[4] रुट्ठे कुविए चडिक्किए मिसिमिसीयमाणे एग मह नीलुप्पल[5]-•गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगास खुर-धारं° असि गहाय मम एव वयासी—हभो ! चुलणीपिया ! समणोवासया[6] ! जाव[7] जइ णं तुम[8] •अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अह अज्ज जेट्ठपुत्त साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता तओ मससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाण-भरियसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गाय मसेण य सोणिएण य आइ-चामि, जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ° ववरोविज्जसि। तए ण अह तेण पुरिसेण[9] एव वुत्ते समाणे अभीए जाव[10] विहरामि ।

तए ण से पुरिसे मम अभीय जाव[11] पासइ, पासित्ता मम दोच्च पि तच्च पि एव वयासी—हंभो ! चुलणीपिया ! समणोवासया[12] ! •जाव[13] जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो जाव[14] तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

---

१ उद्धाइए (ख), उद्धाएइत्ते (घ); डा० ए० एफ० रुडोल्फ होरनल सपादिते पुस्तके प्रस्तुतसूत्रे 'उद्धाइए' इति पाठ स्वीकृतोऽस्ति, लिपिजनितभ्रमकारणेन बहुषु आदर्शेषु मुद्रित-पुस्तकेषु च 'उद्धा' स्थाने 'उद्धा' एव लभ्यते । अग्रे 'भग्गवए' इति पाठस्य व्याख्याया वृत्ति-कारेणापि 'उद्धावनात्' इति उल्लिखतमस्ति ।

२ य (घ) ।

३. उवागते (क) ।

४. आसुरुत्ते (ग, घ) ।

५ स० पा०—नीलुप्पल जाव असि ।

६ समणोवासया अपत्थियय-पत्थिया ! ४ (क) ।

७. उवा० २।२२ ।

८. स० पा०—तुम जाव ववरोविज्जसि ।

९. देवेण (क, ख, ग, घ); अस्मिन् सूत्रे सर्वत्र ।

१०. उवा० २।२३ ।

११. उवा० २।२४ ।

१२. स० पा०—समणोवासया तहेव जाव गाय आइचइ ।

१३. उवा० २।२२ ।

१४. उवा० २।२२ ।

तए णं अहं तेणं पुरिसेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[1] विहरामि।

तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव[2] पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे ममं जेट्ठपुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता ममं अग्गओ घाएइ, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिएण य° आइंचइ।

तए णं अहं तं उज्जलं[3] °जाव[4] वेयणं सम्मं सहामि खमामि तितिक्खामि° अहियासेमि।

[5]°एवं मज्झिमं पुत्तं जाव[6] वेयणं सम्मं सहामि खमामि तितिक्खामि अहियासेमि।

एवं कणीयसं पुत्तं जाव[7] वेयणं सम्मं सहामि खमामि तितिक्खामि° अहियासेमि।

तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव[8] पासइ, पासित्ता ममं चउत्थं पि एवं वयासी—हंभो! चुलणीपिया! समणोवासया[9]! जाव[10] °जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि° न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जा इमा माया देवत गुरु[11]-°जणणी दुक्कर-दुक्करकारिया, तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ° ववरोविज्जसि।

तए णं अहं तेणं पुरिसेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[12] विहरामि।

तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव[13] पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि ममं एवं वयासी—हंभो! चुलणीपिया! समणोवासया! जाव[14] जइ णं तुमं अज्ज[15] °सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न

---

१ उवा० २।२३।
२. उवा० २।२४।
३. सं० पा०—उज्जलं जाव अहियासेमि।
४ उवा० २।२७।
५. सं० पा०—एवं तहेव उच्चारेयव्वं सव्वं जाव कणीयसं जाव आइंचइ। अहं तं उज्जलं जाव अहियासेमि।
६. उवा० ३।२७-३२।
७ उवा० ३।३३-३८।
८. उवा० २।२४।
९. सं० पा०—समणोवासया अप्पत्थियपत्थिया जाव न भंजेसि।
१०. उवा० २।२२।
११ सं० पा०—गुरु जाव ववरोविज्जसि।
१२ उवा० २।२३।
१३. उवा० २।२४।
१४. उवा० २।२२।
१५. सं० पा०—अज्ज जाव ववरोविज्जसि।

भजेसि, तो जाव तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ° ववरोविज्जसि ॥
तए ण तेण पुरिसेण दोच्च पि तच्च पि मम एव वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो ण इमे पुरिसे अणारिए[1] •अणारियबुद्धी अणारियाइ पावाइ कम्माइ° समाचरति, जे ण मम जेट्ठ पुत्त साओ गिहाओ[2] •नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता तओ मससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता मम गाय मसेण य सोणिएण य आइचइ, जे ण मम मज्झिम पुत्त साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता तओ मससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता मम गाय मसेण य सोणिएण य आइचइ, जे ण मम कणीयस पुत्त साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता मम गाय मंसेण य सोणिएण य° आइचइ, तुब्भे वि य ण इच्छइ साओ गिहाओ नीणेत्ता मम अग्गओ घाएत्तए, त सेय खलु मम एय पुरिस गिण्हित्तए त्ति कट्टु उद्धाविए। से वि य आगासे उप्पइए मए वि य खभे आसाइए, महया-महया सद्देण कोलाहले कए ॥

पायच्छित्त-पद

४५ तए ण सा भद्दा सत्थवाही चुलणीपिय समणोवासय एव वयासी—नो खलु केइ पुरिसे तव[3] •जेट्ठपुत्त साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, नो खलु केइ पुरिसे तव मज्झिम पुत्त साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, नो खलु केइ पुरिसे तव° कणीयस पुत्त साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, एस णं केइ पुरिसे तव उवसग्ग करेइ, एस ण तुमे विदरिसणे[4] दिट्ठे। त ण तुम इयाणि भग्गवए भग्गनियमे भग्गपोसहे विहरसि। 'त ण'[5] तुम पुत्ता! एयस्स ठाणस्स आलोएहि[6] •पडिक्कमाहि निंदाहि गरिहाहि विउट्टाहि विसोहेहि अकरणयाए अब्भुट्ठाहि अहारिह पायच्छित्त तवोकम्म° पडिवज्जाहि ॥

४६. तए ण से चुलणीपिता समणोवासए अम्माए[7] भद्दाए सत्थवाहीए तह त्ति एयमट्ठ विणएण पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तस्स ठाणस्स आलोएइ[8] •पडिक्कमइ

---

१ स० पा०—अणारिए जाव समाचरति।
२ स० पा०—गिहाओ तहेव जाव कणीयस जाव आइचइ।
३. स० पा०—तव जाव कणीयस।
४ विहरिसणे (ग)।
५. तण्ण (क), तेण (घ)।
६. स० पा०—आलोएहि जाव पडिवज्जाहि।
७. अम्मगाते (ग, घ)।
८ स० पा०—आलोएइ जाव पडिवज्जइ।

निंदइ गरिहइ विउट्टइ विसोहेइ अकरणयाए अब्भुट्ठेइ अहारिहं पायच्छित्त तवोकम्म ° पडिवज्जइ ॥

चुलणीपियस्स उवासगपडिमा-पदं

४७ तए णं से चुलणीपिता समणोवासए पढमं उवासगपडिम उवसपज्जित्ता ण विहरइ ॥

४८ [१]•तए ण से चुलणीपिता समणोवासए पढमं उवासगपडिमं अहासुत्त अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्च सम्म काएण फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥

४९. तए ण से चुलणीपिता समणोवासए दोच्च उवासगपडिम, एव तच्च, चउत्थ, पंचम, छट्ठ, सत्तमं, अट्ठम, नवम, दसम एक्कारसमं उवासगपडिम अहासुत्तं अहाकप्प अहामग्ग अहातच्चं सम्मं काएण फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ° ॥

५० तए ण से चुलणीपिता समणोवासए तेण[२] ओरालेण[३] •विउलेण पयत्तेण पग्गहिएण तवोकम्मेण सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसतए जाए ॥

चुलणीपियस्स अणसण-पदं

५१ तए ण तस्स चुलणीपियस्स समणोवासगस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स अय अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु अह इमेणं एयारूवेण ओरालेण विउलेण पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेण सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडि-किडियाभूए किसे धमणिसतए जाए। त अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-सवेगे, त जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-सवेगे, जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगव महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेय कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव[४] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते अपच्छिममारणतियसलेहणा-झूसणा-झूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खि-यस्स, काल अणवकखमाणस्स विहरित्तए—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा

---

१. स० पा०—पढम उवासगपडिमं अहासुत्त ४ जहा आणदो जाव एक्कारस वि।

२ अस्य स्थाने १।६४ सूत्रे 'इमेणं एयारूवेण' पाठो विद्यते।

३. स० पा०—उरालेण जहा कामदेवे जाव सोहम्मे।

४ उवा० १।५७।

जलते अपच्छिममारणतियसलेहणा-झूसणा-झूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए काल अणवकखमाणे विहरइ ॥

चुलणीपियस्स समाहिमरण-पदं

५२ तए णं से चुलणीपिता समणोवासए बहूहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाण भावेत्ता, वीस वासाइ समणोवासगपरियाग पाउणित्ता, एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्म काएण फासित्ता, मासियाए सलेहणाए अत्ताण झूसित्ता, सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा° सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिंसगस्स महाविमाणस्स उत्तरपुरत्थिमे ण अरुणप्पभे विमाणे देवत्ताए उववण्णे। चत्तारि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता। महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणमत काहिइ ॥

निक्खेव-पद

५३ [1]°एव खलु जबू! समणेण भगवया महावीरेणं उवासगदसाणं तच्चस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते° ॥

---

१. स० पा०—निक्खेवो।

चउत्थं अज्झयणं

सुरादेवे

उक्खेव-पदं

१ [1]°जइ ण भते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव[2] सपत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाण तच्चस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, चउत्थस्स ण भते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते° ?

सुरादेवगाहावइ-पद

२ एव खलु जवू ! तेण कालेण तेण समएण वाणारसी नाम नयरी । कोट्ठए[3] चेइए । जियसत्तू राया ॥

३ [4]°तत्थ ण वाणारसीए नयरीए सुरादेवे नामं गाहावइ परिवसइ—अड्ढे जाव[5] वहुजणस्स अपरिभूए ॥

४ तस्स ण सुरादेवस्स गाहावइस्स छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, छ व्वया दसगोसाहस्सिएण वएण होत्था ॥

५ से ण सुरादेवे गाहावई वहूण जाव[6] आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य ण कुडुवस्स मेढी जाव[7] सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था ॥

---

१ स० पा०—उवखेवो ।

२. ना० १।१।७ ।

३ कामवनम् (वृपा) ।

४ मं० पा०—मुरादेवे गाहावइ अड्ढे । छ हिरण्णकोडीओ जाव छ व्वया दसगोसाहस्सिएण वएण तस्स धन्ना भारिया सामी समोसढे । जहा आणदो तहेव पडिवज्जइ गिहिधम्म । जहा कामदेवो जाव समणस्स ।

५ उवा० १।११ ।

६ उवा० १।१३ ।

७. उवा० १।१३ ।

६ तस्स ण सुरादेवस्स गाहावइस्स धन्ना नाम भारिया होत्था— अहीण-पडिपुण्ण-पचिदियसरीरा जाव[1] माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी विहरइ ।।

महावीर-समवसरण-पदं

७ तेण कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे जाव[2] जेणेव वाणारसी नयरी जेणेव कोट्ठए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ।।

८ परिसा निग्गया ।।

९ कूणिए राया जहा, तहा जियसत्तू निग्गच्छइ जाव[3] पज्जुवासइ ।।

१०. तए णं से सुरादेवे गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे—"एव खलु समणे भगव महावीरे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे इहमागए इह सपत्ते इह समोसढे इहेव वाणारसीए नयरीए वहिया कोट्ठए चेइए अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवमा अप्पाण भावेमाणे विहरइ।"
त महप्फल खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहारूवाण अरहताण भगवताणं णामगोयस्स वि सवणयाए, किमग पुण अभिगमण-वदण-णमसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? त गच्छामि ण देवाणुप्पिया ! समण भगव महावीर वदामि णमसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाण मगल देवय चेइय पज्जुवासामि—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता ण्हाए कयवलिकम्मे कय-कोउय-मगलपायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइ मगल्लाइ वत्थाइ पवर परिहिए अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सकोरेंटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण मणुस्सवग्गुरापरिखित्ते पादविहार-चारेण वाणारसिं नयरिं मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव कोट्ठए चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे,तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमसमाणे अभिमुहे विणएण पजलि-उडे पज्जुवासइ ।।

११ तए ण समणे भगव महावीरे सुरादेवस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए जाव[4] धम्म परिकहेइ ।।

१२. परिसा पडिगया, राया य गए ।।

---

१. उवा० १।१४ ।
२. ओ० सू० १६, २२ ।
३. ओ० सू० ५३-६९ ।
४ ओ० सू० ७१-७७ ।

सुरादेवस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं

१३ तए ण से सुरादेवे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण-हियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एवं वयासी—सद्दहामि णं भते ! निग्गथ पावयण, पत्तियामि णं भते ! निग्गंथ पावयणं, रोएमि णं भते ! निग्गथ पावयण, अब्भुट्ठेमि णं भते ! निग्गंथ पावयण । एवमेय भंते ! तहमेयं भते ! अवितहमेय भते ! असदिद्धमेयं भते ! इच्छियमेय भते ! पडिच्छिय-मेय भते ! इच्छिय-पडिच्छियमेय भते ! से जहेय तुब्भे वदह । जहा ण देवाणुप्पियाण अतिए वहवे राईसर-तलवर-माडविय-कोडुविय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुडा भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइया, नो खलु अह तहा सचाएमि मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए । अह ण देवाणुप्पियाण अतिए पंचाणुव्वइय सत्तसिक्खावइय—दुवालसविह सावगधम्म पडिवज्जिस्सामि ।

अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिवंध करेहि ॥

१४. तए ण से सुरादेवे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए[1] सावयधम्म पडिवज्जइ ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

१५ तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ वाणारसीए नयरीए कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता वहिया जणवयविहार विहरइ ॥

सुरादेवस्स समणोवासग-चरिया-पदं

१६ तए ण से सुरादेवे समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे जाव[2] समणे निग्गथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-पडिग्गह-कवल-पायपुंछणेण ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-सथारएण पडिलाभेमाणे विहरइ ॥

धन्नाए समणोवासिय-चरिया-पदं

१७. तए ण सा धन्ना भारिया समणोवासिया जाया—अभिगयजीवाजीवा जाव[3] समणे निग्गथे फासु-एसणिज्जेण असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-पडिग्गह-

---

१. पू०—उवा० १।२४-५३ ।
२. उवा० १।५५ ।
३. उवा० १।५६ ।

कवल-पायपुछणेण ओसह-भेसज्जेण पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-सथारएण पडिलाभेमाणी विहरइ ॥

सुरादेवस्स धम्मजागरिया-पदं

१८ तए ण तस्स सुरादेवस्स समणोवासगस्स उच्चावएहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि अप्पाणं भावेमाणस्स चोद्दस सवच्छराइ वीइक्कताइ। पण्णरसमस्स सवच्छरस्स अतरा वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु अह वाणारसीए नयरीए वहूण जाव[1] आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य ण कुडुवस्स मेढी जाव[2] सव्वकज्जवड्ढावए, त एतेण वक्खेवेण अह नो सचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मपण्णत्ति उवसपज्जित्ता ण विहरित्तए[3] ॥

१९ तए ण सुरादेवे समणोवासए जेट्ठपुत्त मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परिजण च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता वाणारसि नयरि मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसहसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसाल पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चार-पासवणभूमि पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता दब्भसथारय सथरेइ, सथरेत्ता दब्भसथारय दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए बभयारी उम्मुक्कमणिसुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अबीए दब्भसथारोवगए° समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मपण्णत्ति उवसपज्जित्ता ण विहरइ ॥

सुरादेवस्स देव-कय-उवसग्ग-पदं

२० तए ण तस्स सुरादेवस्स समणोवासयस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि एगे देवे अतिय पाउब्भवित्था ॥

°जेट्ठपुत्त

२१ तए ण से देवे एग मह नीलुप्पल[4]-°गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगास खुरधार° असि गहाय[5] सुरादेवं समणोवासय एव वयासी—हभो ! सुरादेवा ! समणोवासया ! अप्पत्थियपत्थिया[6] ! दुरत-पत-लक्खणा ! हीणपुण्णचाउद्दसिया !

---

१ उवा० १।१३।

२ उवा० १।१३।

३. पू०—उवा० १।५७-५९।

४ स० पा०—नीलुप्पल जाव असि।

५ द्वितीयाध्ययनस्य द्वाविंशतितमे सूत्रे निम्न-लिखित पाठोतिरिक्तो विद्यते—'जेणेव पोसहसाला जेणेव कामदेवे समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चडिक्किए मिसिमिसीयमाणे कामदेव'।

६. °पत्थिया ४ (क, ख, ग, घ)।

सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिया ! धम्मकामया ! पुण्णकामया ! सग्ग-कामया ! मोक्खकामया ! धम्मकंखिया ! पुण्णकंखिया ! सग्गकंखिया ! मोक्खकंखिया ! धम्मपिवासिया ! पुण्णपिवासिया ! सग्गपिवासिया ! मोक्खपिवासिया ! नो खलु कप्पइ तव देवाणुप्पिया ! सीलाइं वयाइं वेरम-णाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं चालित्तए वा खोभित्तए वा खंडित्तए वा भंजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तए वा, तं जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं[1] •वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि ° न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं 'अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे'[2] अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।।

२२. [3]•तए णं से सुरादेवे समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए अतत्थे अणुव्विग्गे अखुभिए अचलिए असंभंते तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ ।।

२३. तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासयं अभीयं अतत्थं अणुव्विग्गं अखुभियं अच-लियं असंभंतं तुसिणीयं धम्मज्झाणोवगयं विहरमाणं पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि सुरादेवं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सुरादेवा ! समणो-वासया ! जाव[4] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरो-विज्जसि ।।

२४ तए णं से सुरादेवे समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[5] विहरइ ।।

२५. तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासयं अभीयं जाव[6] पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे सुरादेवस्स समणोवासयस्स जेट्ठपुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता सुरादेवस्स समणोवासयस्स गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ ।।

---

१. सं० पा०—सीलाइं जाव न भंजेसि ।

२. × (क, ख, ग, घ) ।

३ सं० पा०—एवं मज्झिमयं, कणीयसं, एक्के-क्के पंच सोल्लया । तहेव करेइ, जहा चुलणीपियस्स, नवरं एक्केक्के पंच सोल्लया ।

४. उवा० २।२२ ।

५. उवा० २।२३ ।

६. उवा० २।२४ ।

२६. तए ण से सुरादेवे समणोवासए त उज्जल विउल कक्कस पगाढ चड दुक्ख दुरहियास वेयण सम्म सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ ।।

°मज्झिमपुत्त

२७ तए ण से देवे सुरादेवं समणोवासय अभीय जाव[1] पासइ, पासित्ता सुरादेव समणोवासय एव वयासी—हभो ! सुरादेवा ! समणोवासया ! जाव[2] जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो ते अह अज्ज मज्झिम पुत्त साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता पच मससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गाय मसेण य सोणिएण य आइचामि, जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।।

२८. तए ण से सुरादेवे समणोवासए तेण देवेण एव वुत्ते समाणे अभीए जाव[3] विहरइ ।।

२९ तए ण से देवे सुरादेव समणोवासय अभीय जाव[4] पासइ, पासित्ता दोच्च पि तच्च पि सुरादेव समणोवासय एव वयासी—हभो ! सुरादेवा ! समणोवासया ! जाव[5] जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो ते अह अज्ज मज्झिम पुत्त साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता पच मससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गाय मसेण य सोणिएण य आइचामि, जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।।

३० तए ण से सुरादेवे समणोवासए तेण देवेण दोच्च पि तच्च पि एव वुत्ते समाणे अभीए जाव[6] विहरइ ।।

३१ तए ण से देवे सुरादेव समणोवासय अभीय जाव[7] पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चडिक्किए मिसिमिसीयमाणे सुरादेवस्स समणोवासयस्स मज्झिम पुत्त गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पच मससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता सुरादेवस्स समणोवासयस्स गायं मसेण य सोणिएण य आइचइ ।।

३२ तए ण से सुरादेवे समणोवासए त उज्जल जाव[8] वेयण सम्म सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ ।।

---

१ उवा० २।२४ ।
२. उवा० २।२२ ।
३ उवा० २।२३ ।
४. उवा० २।२४ ।
५ उवा० २।२२ ।
६ उवा० २।२३ ।
७. उवा० २।२४ ।
८. उवा० २।२७ ।

°कणीयसपुत्त

३३. तए णं से देवे सुरादेव समणोवासय अभीय जाव[1] पासइ, पासित्ता सुरादेव समणोवासय एव वयासी—हंभो ! सुरादेवा ! समणोवासया ! जाव[2] जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइं पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो ते अह अज्ज कणीयस पुत्त साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता पच मससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मसेण य सोणिएण य आइचामि, जहा णं तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

३४ तए ण से सुरादेवे समणोवासए तेण देवेण एव वुत्ते समाणे अभीए जाव[3] विहरइ ॥

३५ तए ण से देवे सुरादेव समणोवासय अभीय जाव[4] पासइ, पासित्ता दोच्च पि तच्च पि सुरादेव समणोवासय एव वयासी—हंभो ! सुरादेवा ! समणोवासया ! जाव[5] जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो ते अह अज्ज कणीयस पुत्त साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता पच मससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गाय मसेण य सोणिएण य आइचामि, जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

३६ तए ण से सुरादेवे समणोवासए तेणं देवेण दोच्चं पि तच्च पि एव वुत्ते समाणे अभीए जाव[6] विहरइ ॥

३७ तए ण से देवे सुरादेव समणोवासय अभीयं जाव[7] पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चडिक्किए मिसिमिसीयमाणे सुरादेवस्स समणोवासयस्स कणीयसं पुत्त गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पच मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता सुरादेवस्स समणोवासयस्स गाय मसेण य सोणिएण य आइंचइ ।

३८ तए णं से सुरादेवे समणोवासए तं उज्जलं जाव[8] वेयण सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ° अहियासेइ ॥

---

१. उवा० २।२४ ।
२. उवा० २।२२ ।
३. उवा० २।२३ ।
४. उवा० २।२४ ।
५. उवा० २।२२ ।
६. उवा० २।२३ ।
७. उवा० २।२४ ।
८. उवा० २।२७ ।

°सोलसरोगायंक

३९. तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासय अभीयं जाव[1] पासइ, पासित्ता चउत्थं पि सुरादेवं समणोवासय एव वयासी—हंभो ! सुरादेवा ! समणोवासया ! जाव[2] जइ ण तुम अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भजेसि[3], तो ते अहं अज्ज सरीरसि[4] जमगसमगमेव सोलस रोगायके पक्खिवामि, [त जहा—१ सासे २ कासे[5] ३. °जरे ४ दाहे ५ कुच्छिसूले ६ भगदरे ७. अरिसए ८. अजीरए ९. दिट्ठिसूले १०. मुद्धसूले ११ अकारिए १२ अच्छिवेयणा १३ कण्णवेयणा १४ कडुए १५. उदरे° १६ कोढे ।][6] जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

४० तए ण से सुरादेवे समणोवासए[7] °तेण देवेण एव वुत्ते समाणे अभीए जाव[8]° विहरइ ॥

४१. [9]°तए णं से देवे सुरादेव समणोवासय अभीयं जाव[10] पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्च पि सुरादेव समणोवासय एव वयासी—हभो ! सुरादेवा ! समणोवासया ! जाव[11] जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइं वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो ते अह अज्ज सरीरसि जमगसमगमेव सोलस रोगायके पक्खिवामि जाव[12] जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ° ववरोविज्जसि ॥

सुरादेवस्स कोलाहल-पदं

४२ तए णं तस्स सुरादेवस्स समणोवासयस्स तेण देवेण दोच्च पि तच्च पि एव वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो ण इमे पुरिसे अणारिए[13] °अणारियबुद्धी अणारियाइ पावाइ कम्माइ° समाचरति, जे ण मम जेट्ठपुत्त[14] °साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पच मससोल्ले[15] करेइ, करेत्ता आदाण-

---

१. उवा० २।२४ ।
२. उवा० २।२२ ।
३ परिच्चयसि (क, ख, ग, घ) ।
४ सरीरस्स (क, ख, ग, घ) ।
५. स० पा०—कासे जाव कोढे ।
६ असौ कोष्ठकवर्तिपाठ व्याख्याश प्रतीयते ।
७. स० पा०—समणोवासए जाव विहरइ ।
८. उवा० २।२३ ।
९ स० पा०—एव देवो दोच्च पि तच्च पि भणइ जाव ववरोविज्जसि ।
१०. उवा० २।२४ ।
११. उवा० २।२२ ।
१२. उवा० ४।३९ ।
१३ स० पा०—अणारिए जाव समाचरति ।
१४ स० पा०—जेट्ठपुत्त जाव कणीयस जाव आइचइ ।
१५. मससोल्लया (क, ख, ग, घ) ।

भरियसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता ममं गायं मसेण य सोणिएण य आइंचइ, जे ण मम मज्झिम पुत्त साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पच मससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता मम गाय मसेण य सोणिएण य आइचइ, जे ण मम कणीयस पुत्त साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पच मससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता मम गाय मसेण य सोणिएण य° आइचइ, जे वि य इमे सोलस रोगायका, ते वि य इच्छइ मम सरीरसि[1] पक्खिवित्तए, त सेय खलु मम एय पुरिस गिण्हित्तए त्ति कट्टु उद्धाविए, से वि य आगासे उप्पइए, तेण य खभे आसाइए, महया-महया सद्देण कोलाहले कए ॥

धन्नाए पसिण-पदं

४३ तए ण सा धन्ना भारिया कोलाहलसद्द[2] सोच्चा निसम्म जेणेव सुरादेवे समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एव वयासी—किण्ण[3] देवाणुप्पिया ! तुब्भे ण महया-महया सद्देण कोलाहले कए ?

सुरादेवस्स उत्तर-पद

४४ तए ण से सुरादेवे समणोवासए धन्नं भारिय एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिए ! न याणामि के वि पुरिसे[4] •आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चडिक्किए मिसिमिसीयमाणे एग महं नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासं खुरधार असिं गहाय मम एवं वयासी—हभो ! सुरादेवा ! समणोवासया ! जाव[5] जइ ण तुम अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो ते अह अज्ज जेट्ठपुत्त साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गाय मसेण य सोणिएण य आइचामि, जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।
तए ण अह तेण पुरिसेण एव वुत्ते समाणे अभीए जाव[6] विहरामि ।
तए ण से पुरिसे मम अभीय जाव[7] पासइ, पासिता मम दोच्च पि तच्च पि

---

१ मरीरगसि (क) ।
२ कोलाहल (क, ख, ग, घ); ३।४३ सूत्रे 'कोलाहलसद्द' इति पाठो विद्यते । अत्रापि तथैव युज्यते । आदर्शेषु सक्षिप्तलेखने 'कोलाहल' पाठो जातः इति प्रतीयते ।
३. किण्ण तुम (ग) ।
४ सं० पा०—पुरिसे तहेव कहेइ जहा चुलणीपिया धन्ना वि पडिभणइ जाव कणीयस ।
५. उवा० २।२२ ।
६. उवा० २।२३ ।
७. उवा० २।२४ ।

एव वयासी—हभो ! सुरादेवा ! समणोवासया ! जाव[1] जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइं वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो जाव तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए ण अह तेण पुरिसेण दोच्च पि तच्च पि एव वुत्ते समाणे अभीए जाव[2] विहरामि ।

तए ण से पुरिसे मम अभीयं जाव[3] पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चण्डिक्किए मिसिमिसीयमाणे मम जेट्ठपुत्त गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पच मससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता मम गायं मसेण य सोणिएण य आइचइ । तए ण अह त उज्जल जाव[4] वेयण सम्म सहामि खमामि तितिक्खामि अहियासेमि ।

एव मज्झिम पुत्त जाव[5] वेयण सम्म सहामि खमामि तितिक्खामि अहियासेमि ।

एव कणीयस्स पुत्त जाव[6] वेयण सम्म सहामि खमामि तितिक्खामि अहियासेमि ।

तए ण से पुरिसे मम अभीय जाव[7] पासइ, पासित्ता मम चउत्थ पि एव वयासी—हभो ! सुरादेवा ! समणोवासया ! जाव[8] जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो ते अह अज्ज सरीरसि जमगसमगमेव सोलस रोगायके पक्खिवामि जाव[9] जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए ण अह तेण पुरिसेण एव वुत्ते समाणे अभीए जाव[10] विहरामि ।

तए ण से पुरिसे मम अभीय जाव[11] पासइ, पासित्ता दोच्च पि तच्च पि मम एव वयासी—हभो ! सुरादेवा ! समणोवासया ! जाव[12] जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो ते अह अज्ज सरीरसि जमगसमगमेव सोलस रोगायके पक्खिवामि जाव[13] जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए ण तेण पुरिसेणं दोच्च पि तच्च पि मम एव वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे

---

१. उवा० २।२२ ।
२ उवा० २।२३ ।
३. उवा० २।२४ ।
४. उवा० २।२७ ।
५. उवा० ४।२७-३२ ।
६. उवा० ४।३३-३८ ।
७. उवा० २।२४ ।
८ उवा० २।२२ ।
९ उवा० ४।३९ ।
१०. उवा० २।२३ ।
११ उवा० २।२४ ।
१२ उवा० २।२२ ।
१३. उवा० ४।३९ ।

अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो णं इमे पुरिसे अणारिए अणारियबुद्धी अणारियाइं पावाइं कम्माइं समाचरति, जे णं मम जेट्ठं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता मम गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ, जे णं मम मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाण-भरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता मम गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ, जे णं मम कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेइ,करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता मम गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ, जे वि य इमे सोलस रोगायंका, ते वि य इच्छइ मम सरीरंसि पक्खिवित्तए, तं सेयं खलु ममं एयं पुरिसं गिण्हित्तए त्ति कट्टु उद्धाविए, से वि य आगासे उप्पइए, मए वि य खंभे आसाइए, महया-महया सद्देणं कोलाहले कए ॥

पायच्छित्त-पदं

४५. तए णं सा धन्ना भारिया सुरादेवं समणोवासयं एवं वयासी—नो खलु केइ पुरिसे तव जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, नो खलु केइ पुरिसे तव मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, नो खलु केइ पुरिसे तव कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ°, नो खलु देवाणुप्पिया! तुब्भं[1] के वि पुरिसे सरीरंसि[2] जमगसमगं सोलस रोगायंके पक्खिवइ, एस णं के वि पुरिसे तुब्भं उवसग्गं करेइ[3], •एस णं तुमे विदरिसणे दिट्ठे। तं णं तुमं इयाणिं भग्गवए भग्गनियमे भग्गपोसहे विहरसि। तं णं तुमं पिया! एयस्स ठाणस्स आलोएहि पडिक्क-माहि निंदाहि गरिहाहि विउट्टाहि विसोहेहि अकरणयाए अब्भुट्ठाहि अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जाहि ॥

४६. तए णं से सुरादेवे समणोवासए धन्नाए भारियाए तह त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तस्स ठाणस्स आलोएइ पडिक्कमइ निंदइ गरिहइ विउट्टइ विसोहेइ अकरणयाए अब्भुट्ठेइ अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जइ ॥

---

१ यद्यपि 'तुब्भे, तुब्भं' इत्यादिबहुवचनान्ताः प्रयोगा व्याकरणे दृश्यन्ते, तथापि प्रस्तुतागमे एकवचनान्ता अपि प्रयुक्ताः सन्ति। महाशत-काध्ययने २७ सूत्रे 'तुब्भ, तुमं, विहरमि' एते प्रयोगाः एकस्मिन्नेव प्रसङ्गे प्राप्ताः सन्ति।

२. सरीरगंसि (क)।

३. सं० पा०—करेइ। सेसं जहा चुलणीपियस्स तहा भद्दा भणइ। एवं सेसं जहा चुलणी-पियस्स निरवसेसं जाव सोहम्मे।

सुरादेवस्स उवासगपडिमा-पदं

४७ तए ण से सुरादेवे समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसपज्जित्ता ण विहरइ ॥

४८ तए ण से सुरादेवे समणोवासए पढम उवासगपडिम अहासुत्त अहाकप्प अहामग्ग अहातच्च सम्म काएण फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥

४९ तए ण मे सुरादेवे समणोवासए दोच्च उवासगपडिम, एव तच्च, चउत्थ, पचम, छट्ठ, सत्तम, अट्ठम, नवम, दसमं, एक्कारस उवासगपडिम अहासुत्त अहाकप्प अहामग्ग अहातच्च सम्म काएण फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥

५० तए ण से सुरादेवे समणोवासए तेणं ओरालेण विउलेण पयत्तेण पग्गहिएण तवोकम्मेण सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसतए जाए ॥

सुरादेवस्स अणसण-पद

५१ तए णं तस्स सुरादेवस्स समणोवासगस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स अय अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु अह इमेण एयारूवेण ओरालेण विउलेण पयत्तेण पग्गहिएणं तवोकम्मेण सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसतए जाए। त अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार परक्कमे सद्धा-धिइ-सवेगे, त जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-सवेगे, जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगव महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेय कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव[1] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते अपच्छिममारणतियसलेहणा-झूसणा-झूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खि-यस्स, काल अणवकखमाणस्स विहरित्तए—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्ल पाउप्प-भायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते अपच्छिममारणतियसलेहणा-झूसणा-झूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए काल अणवकखमाणे विहरइ ॥

सुरादेवस्स समाहिमरण-पदं

५२ तए ण से सुरादेवे समणोवासए वहूहि सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि अप्पाण भावेत्ता, वीस वासाइ समणोवासगपरियाग पाउणित्ता, एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्म काएण फासित्ता, मासियाए सलेहणाए

---

१. उवा० १।५७।

अत्ताण झूसित्ता, सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा° सोहम्मे कप्पे अरुणकते विमाणे उववण्णे। चत्तारि पलिओवमाइ ठिई। महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणमत काहिइ ॥

निक्खेव-पद

५३ °[1]एव खलु जवू! समणेण भगवया महावीरेण उवासगदसाण चउत्थस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते° ॥

---

१. म० पा०— निक्खेवो।

पचमं अज्झयण

चुल्लसयए

उक्खेव-पदं

१. [1]•जइ ण भते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[2] सपत्तेण सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाण चउत्थस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, पचमस्स णं भते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ° ?

चुल्लसययगाहावइ-पदं

२ एव खलु जवू ! तेण कालेण तेणं समएण आलभिया[3] नामं नयरी। सखवणे उज्जाणे। जियसत्तू राया ॥

३ [4]•तत्थ ण आलभियाए नयरीए चुल्लसयए नाम गाहावई परिवसइ—अड्ढे जाव[5] वहुजणस्स अपरिभूए ॥

४. तस्स णं चुल्लसययस्स गाहावइस्स छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, छ व्वया दसगोसाहस्सिएण वएण होत्था ॥

५ से ण चुल्लसयए गाहावई वहूण जाव[6] आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य ण कुडुवस्स मेढी जाव[7] सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था ॥

६ तस्स ण चुल्लसययस्स गाहावइस्स बहुला नाम भारिया होत्था—अहीण-

---

१. स० पा०—उक्खेवो।

२ ना० १।१।७।

३ आलभिया (क, घ)।

४ स० पा०—चुल्लसयए गाहावई अड्ढे जाव छ हिरण्णकोडीओ जाव छ व्वया दसगोसाहस्सिएण वहुला भारिया।

५. उवा० १।११।

६. उवा० १।१३।

७ उवा० १।१३।

पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरा जाव[1] माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी विहरइ °।।

महावीर-समवसरण-पदं

७ [2]°तेण कालेणं तेणं समएणं समणे भगव महावीरे जाव[3] जेणेव आलभिया नयरी जेणेव संखवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेणं तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ।।

८ परिसा निग्गया ।।

९ कुणिए राया जहा, तहा जियसत्तू निग्गच्छइ जाव[4] पज्जुवासइ ।।

१० तए ण से चुल्लसयए गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे— "एव खलु समणे भगव महावीरे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह सपत्ते इह समोसढे इहेव आलभियाए नयरीए वहिया सखवणे उज्जाणे अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता संजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ।" त महप्फल खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहारूवाण अरहताण भगवताण णाम-गोयस्स वि सवणयाए, किमग पुण अभिगमण-वदण-णमसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए; किमग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? त गच्छामि णं देवाणुप्पिया ! समण भगव महावीर वदामि णमसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाण मंगल देवय चेइय पज्जुवासामि—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता ण्हाए कयवलिकम्मे कय-कोउय-मगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइ मगल्लाइ वत्थाइ पवर परिहिए अप्प-महग्घाभरणालकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सकोरेटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण मणुस्सवग्गुरापरिखित्ते पादविहार-चारेण आलभिय नयरिं मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव सखवणे उज्जाणे, जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमसमाणे अभिमुहे विणएण पजलिउडे पज्जुवासइ ।।

११. तए ण समणे भगव महावीरे चुल्लसययस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहालि-याए परिसाए जाव[5] धम्म परिकहेइ ।।

१२ परिसा पडिगया, राया य गए ।।

---

१. उवा० २।२४ ।
२. स० पा०—सामी समोसढे जहा आणदो तहा गिहिधम्म पडिवज्जइ। सेस जहा कामदेवो जाव धम्मपण्णत्ति ।
३. ओ० सू० १६, २२ ।
४. ओ० सू० ५३-६९ ।
५ ओ० सू० ७१-७७ ।

चुल्लसययस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पद

१३. तए ण चुल्लसयए गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण-हियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी—सद्दहामि ण भंते ! निग्गथ पावयण, पत्तियामि ण भते ! निग्गथ पावयण, रोएमि णं भते ! निग्गथ पावयण, अब्भुट्ठेमि ण भते ! निग्गथ पावयण। एवमेय भते ! तहमेय भते ! अवितहमेय भते ! असदिद्धमेय भते ! इच्छियमेय भते ! पडिच्छियमेय भते ! इच्छिय-पडिच्छियमेय भते ! से जहेय तुब्भे वदह। जहा ण देवाणुप्पियाण अतिए वहवे राईसर-तलवर-माडबिय-कोडुबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ सत्थवाहप्पभिइया मुडा भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइया, नो खलु अह तहा सचाएमि मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए। अहं ण देवाणुप्पियाण अतिए पचाणुव्वइय सत्तसिक्खावइय—दुवालसविह सावग-धम्म पडिवज्जिस्सामि।

अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिवधं करेहि॥

१४. तए ण से चुल्लसयए गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए सावय-धम्म पडिवज्जइ॥

भगवओ जणवयविहार-पद

१५. तए णं समणे भगव महावीरे अण्णदा कदाइ आलभियाए नयरीए सखवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता वहिया जणवयविहार विहरइ॥

चुल्लसययस्स समणोवासग-चरिया-पद

१६. तए ण से चुल्लसयए समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे जाव[१] समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेण असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-पडिग्गह-कवल-पायपुछणेण ओसह-भेसज्जेण पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-सथारएण पडिलाभेमाणे विहरइ॥

वहुलाए समणोवासिय-चरिया-पद

१७ तए ण सा वहुला भारिया समणोवासिया जाया—अभिगयजीवाजीवा जाव[२] समणे निग्गथे फासु-एसणिज्जेण असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-पडिग्गह-

---

१ पू०—१।२४-५३।

२. उवा० १।५५।

३. उवा० १।५६।

कवल-पायपुंछणेण ओसह-भेसज्जेण पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-सथार-एण पडिलाभेमाणी विहरइ ॥

चुल्लसयय-धम्मजागरिया-पदं

१८. तए ण तस्स चुल्लसययस्स समणोवासगस्स उच्चावएहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाण भावेमाणस्स चोद्दस सवच्छराइ वीइक्कताइ। पण्णरसमस्स सवच्छरस्स अतरा वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स इमेयारुवे अज्झत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु अह आलभियाए नयरीए वहूण जाव[1] आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य ण कुडुवस्स मेढी जाव[2] सव्वकज्जवड्ढावए, त एतेण वक्खेवेण अह नो सचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मपण्णत्ति उवसपज्जित्ता ण विहरित्तए[3] ॥

१९. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए जेट्ठपुत्त मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परिजण च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता आलभिय नयरिं मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसाल पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चार-पासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसथारयं सथरेइ, संथरेत्ता दब्भसथारय दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए वंभयारी उम्मुक्कमणि-सुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अवीए दब्भसथारोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय° धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता ण विहरइ ॥

चुल्लसयगस्स देव-कय-उवसग्ग-पदं

२०. तए ण तस्स चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि एगे देवे अंतिय[4] •पाउब्भूए ॥

°जेपुट्टत्त

२१. तए णं से देवे एग महं नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासं खुरधारं° असि गहाय एवं वयासी—हभो ! चुल्लसयगा ! समणोवासया[5] ! •अप्पत्थिय-पत्थिया ! दुरत-पत-लक्खणा ! हीणपुण्णचाउद्दसिया ! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिया ! धम्मकामया ! पुण्णकामया ! सग्गकामया ! मोक्ख-

---

१. उवा० १।१३ ।
२. उवा० १।१३ ।
३. पू०—उवा० १।५७-५९ ।
४. स० पा०—अंतिय जाव असि ।
५ स० पा०—समणोवासया जाव न भजेसि ।

कामया ! धम्मकखिया ! पुण्णकखिया ! सग्गकखिया ! मोक्खकखिया ! धम्मपिवासिया ! पुण्णपिवासिया ! सग्गपिवासिया ! मोक्खपिवासिया ! नो खलु कप्पइ तव देवाणुप्पिया ! सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ चालित्तए वा खोभित्तइ वा खडित्तए वा भजित्तए वा उज्झि-त्तए वा परिच्चइत्तए वा, त जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खा-णाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि° न भजेसि, तो ते [अह ?] अज्ज जेट्ठपुत्त साओ गिहाओ नोणेमि[1], •नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता सत्त मससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गाय मसेण य सोणिएण य आइचामि, जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवि-याओ ववरोविज्जसि ॥

२२ तए ण से चुल्लसयए समणोवासए तेण देवेण एव वुत्ते समाणे अभीए अतत्थे अणुव्विग्गे अखुभिए अचलिए असभते तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ ॥

२३. तए ण से देवे चुल्लसयग समणोवासय अभीय अतत्थ अणुव्विग्ग अखुभिय अचलिय असभत तुसिणीय धम्मज्झाणोवगय विहरमाण पासइ, पासित्ता दोच्च पि तच्च पि चुल्लसयय समणोवासय एव वयासी—हभो ! चुल्लसयगा ! समणोवासया ! जाव[2] जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खा-णाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो ते अह अज्ज जेट्ठपुत्त साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता सत्त मससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गाय मसेण य सोणिएण य आइचामि, जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

२४ तए ण से चुल्लसयए समणोवासए तेण देवेण दोच्च पि तच्च पि एव वुत्ते समाणे अभीए जाव[3] विहरइ ॥

२५ तए ण से देवे चुल्लसयग समणोवासय अभीय जाव[4] पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चडिक्किए मिसिमिसीयमाणे चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स जेट्ठपुत्त गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता सत्त मससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स गाय मसेण य सोणिएण य आइचइ ॥

२६ तए ण से चुल्लसयए समणोवासए त उज्जल विउल कक्कस पगाढ चड दुक्ख दुरहियास वेयण सम्म सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ ॥

---

१. स० पा०—नीणेमि, एव जहा चुलणीपिय, नवर एक्केक्के सत्त मससोल्लया जाव कणी-यस जाव आइचामि ।
२ उवा० २।२२ ।
३. उवा० २।२३ ।
४ उवा० २।२४ ।

°मज्झिमपुत्त

२७ तए ण से देवे चुल्लसयग समणोवासय अभीय जाव[1] पासइ, पासित्ता चुल्लसयगं समणोवासय एव वयासी—हभो ! चुल्लसयगा ! समणोवासया ! जाव[2] जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो ते अह अज्ज मज्झिम पुत्त साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता सत्त मससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गाय मसेण य सोणिएण य आइचामि, जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

२८ तए ण से चुल्लसयए समणोवासए तेण देवेण एव वुत्ते समाणे अभीए जाव[3] विहरइ ॥

२९. तए ण से देवे चुल्लसयग समणोवासय अभीय जाव[4] पासइ, पासित्ता दोच्च पि तच्च पि चुल्लसयग समणोवासय एवं वयासी—हभो ! चुल्लसयया ! समणोवासया ! जाव[5] जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो ते अह अज्ज मज्झिम पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता सत्त मससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गाय मसेण य सोणिएण य आइचामि, जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

३०. तए ण से चुल्लसयए समणोवासए तेण देवेण दोच्च पि तच्च पि एव वुत्ते समाणे अभीए जाव[6] विहरइ ॥

३१ तए ण से देवे चुल्लसयग समणोवासय अभीय जाव[7] पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चडिक्किए मिसिमिसीयमाणे चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स मज्झिम पुत्त गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता सत्त मससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स गाय मसेण य सोणिएण य आइचइ ॥

३२ तए ण से चुल्लसयए समणोवासए त उज्जल जाव[8] वेयण सम्म सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ ॥

---

१. उवा० २।२४ ।
२. उवा० २।२२ ।
३ उवा० २।२३ ।
४ उवा० २।२४ ।
५. उवा० २।२२ ।
६. उवा० २।२३ ।
७. उवा० २।२४ ।
८. उवा० २।२७ ।

°कणीयसपुत्त

३३. तए ण से देवे चुल्लसयग समणोवासय अभीय जाव[1] पासइ, पासित्ता चुल्लसयग समणोवासय एव वयासी—हभो ! चुल्लसयगा ! समणोवासया ! जाव[2] जइ ण तुम अज्ज ! सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो ते अह अज्ज कणीयस पुत्त साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता सत्त मससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गाय मसेण य सोणिएण य आइचामि, जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

३४ तए ण से चुल्लसयए समणोवासए तेण देवेणं एव वुत्ते समाणे अभीए जाव[3] विहरइ ॥

३५ तए ण से देवे चुल्लसयगं समणोवासय अभीय जाव[4] पासइ, पासित्ता दोच्च पि तच्च पि चुल्लसयग समणोवासय एव वयासी—हभो ! चुल्लसयगा ! समणोवासया ! जाव[5] जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो ते अह अज्ज कणीयस पुत्त साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता सत्त मससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गाय मसेण य सोणिएण य आइचामि, जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

३६ तए ण से चुल्लसयए समणोवासए तेण देवेणं दोच्च पि तच्च पि एव वुत्ते समाणे अभीए जाव[6] विहरइ ॥

३७ तए ण से देवे चुल्लसयग समणोवासय अभीय जाव[7] पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चडिक्किए मिसीमिसीयमाणे चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स कणीयस पुत्त गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता सत्त मससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स गाय मसेण य सोणिएण य° आइचइ ॥

३८. तए ण से चुल्लसयए समणोवासए[8] °त उज्जल जाव[9] वेयण सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ° अहियासेइ ॥

---

१. उवा० २।२४।
२. उवा० २।२२।
३ उवा० २।२३।
४. उवा० २।२४।
५. उवा० २।२२।
६ उवा० २।२३।
७. उवा० २।२४।
८. स० पा०—समणोवासए जाव अहियासेइ।
९. उवा० २।२७।

°हिरण्णकोडी-विप्पकिरण

३९ तए णं से देवे चुल्लसयगं समणोवासयं अभीयं जाव[1] पासइ, पासित्ता चउत्थं पि चुल्लसयगं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! चुल्लसयगा ! समणोवासिया[2] ! °जाव[3] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि° न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जाओ इमाओ छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, ताओ साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता आलभियाए नयरीए सिंघाडग[4]-°तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°पहेसु सव्वओ समंता विप्पइरामि[5], जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

४० तए णं से चुल्लसयए समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[6] विहरइ ॥

४१ तए णं से देवे चुल्लसयगं समणोवासयं अभीयं जाव[7] पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि[8] °एवं वयासी--हंभो ! चुल्लसयगा ! समणोवासया ! जाव[9] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जाओ इमाओ छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, ताओ साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता आलभियाए नयरीए सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु सव्वओ समंता विप्पइरामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि °॥

चुल्लसयगस्स कोलाहल-पदं

४२. तए णं तस्स चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्तस्स समाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो णं इमे पुरिसे अणारिए[10] °अणारियबुद्धी अणारियाइं पावाइं कम्माइं समायरति, जे णं ममं जेट्ठं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता

---

१. उवा० २।२४।
२. सं० पा०—समणोवासया जाव न भंजेसि।
३ उवा० २।२२।
४. सं० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु।
५. विप्पयिरामि (क, ग)।
६. उवा० २।२३।
७. उवा० २।२४।
८ सं० पा०—तच्चं पि तहेव भणइ जाव ववरोविज्जसि।
९. उवा० २।२२।
१०. सं० पा०—अणारिए जहा चुलणीपिया तहा चिंतेइ जाव कणीयसं जाव आइंचइ।

मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता सत्त मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता मम गायं मसेण य सोणिएण य आइंचइ, जे ण मम मज्झिम पुत्त साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता सत्त मससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता मम गाय मसेण य सोणिएण य आइचइ, जे ण मम कणीयस पुत्त साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता सत्त मससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता मम गाय मसेण य सोणिएण य° आइचइ, जाओ वि य ण इमाओ मम छ हिरण्णकोडीओ निहाण-पउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउ-त्ताओ, ताओ वि य ण इच्छइ मम साओ गिहाओ नीणेत्ता आलभियाए नयरीए सिंघाडग[1]-•तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु सव्वओ समता° विप्प-इरित्तए, त सेय खलु मम एय पुरिस गिण्हित्तए त्ति कट्टु उद्धाविए[2], •से वि य आगासे उप्पइए, तेण य खभे आसाइए, महया-महया सद्देण कोलाहले कए ।।

बहुलाए पसिण-पदं

४३ तए ण सा बहुला भारिया त कोलाहलसद्द सोच्चा निसम्म जेणेव चुल्लसयए समणोवासए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चुल्लसयग समणोवासयं एव वयासी—किण्ण देवाणुप्पिया ! तुब्भे ण महया-महया सद्देण कोलाहले कए ?

चुल्लसयगस्स उत्तर-पद

४४ तए ण से चुल्लसयए समणोवासए बहुल भारिय एव वयासी—एव खलु बहुले ! न याणामि के वि पुरिसे आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चडिक्किए मिसिमिसीयमाणे एग मह नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगास खुरधार असिं गहाय मम एव वयासी—हभो ! चुल्लसयगा ! समणोवासया ! जाव[3] जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो ते अह अज्ज जेट्ठपुत्त साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता सत्त मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गाय मसेण य सोणिएण य आइचामि, जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए ण अह तेण पुरिसेण एव वुत्ते समाणे अभीए जाव[4] विहरामि ।

---

१ स० पा०—सिंघाडग जाव विप्पइरित्तए ।

२. स० पा०—उद्धाविए जहा सुरादेवो । तहेव भारिया पुच्छइ, तहेव कहेइ । सेस जहा चुलणीपियस्स जाव सोहम्मे ।

३. उवा० २।२२ ।

४ उवा० २।२३ ।

तए णं से पुरिसे ममं अभीय जाव[1] पासइ, पासित्ता ममं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—हंभो ! चुल्लसयगा ! समणोवासया ! जाव[2] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो जाव तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए णं अहं तेणं पुरिसेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[3] विहरामि ।

तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव[4] पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे ममं जेट्ठपुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता ममं अग्गओ घाएइ, घाएत्ता सत्त मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ ।

तए णं अहं तं उज्जलं जाव[5] वेयणं सम्मं सहामि खमामि तितिक्खामि अहियासेमि ।

एवं मज्झिमं पुत्तं जाव[6] वेयणं सम्मं सहामि खमामि तितिक्खामि अहियासेमि । एवं कणीयसं पुत्तं जाव[7] वेयणं सम्मं सहामि खमामि तितिक्खामि अहियासेमि ।

तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव[8] पासइ, पासित्ता ममं चउत्थं पि एवं वयासी—हंभो ! चुल्लसयगा ! समणोवासया ! जाव[9] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जाओ इमाओ छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ हिरण्ण-कोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, ताओ साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता आलभियाए नयरीए सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु सव्वओ समंता विप्पइरामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए णं अहं तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[10] विहरामि ।

तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव[11] पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि ममं एवं वयासी—हंभो ! चुल्लसयगा ! समणोवासया ! जाव[12] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो जाव तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

---

१. उवा० २।२४ ।
२. उवा० २।२२ ।
३. उवा० २।२३ ।
४. उवा० २।२४ ।
५. उवा० २।२७ ।
६. उवा० ५।२७-३२ ।
७. उवा० ५।३३-३८ ।
८. उवा० २।२४ ।
९. उवा० २।२२ ।
१०. उवा० २।२३ ।
११ उवा० २।२४ ।
१२. उवा० २।२२ ।

तए णं तेणं पुरिसेण दोच्च पि तच्चं पि ममं एवं वुत्तस्स समाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो ण इमे पुरिसे अणारिए अणारियवुद्धी अणारियाइं पावाइ कम्माइ समाचरति, जे ण मम जेट्ठ पुत्त साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता सत्त मससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता मम गाय मसेण य सोणिएण य आइचइ, जे ण मम मज्झिमं पुत्त साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता सत्त मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता मम गाय मसेण य सोणिएण य आइचइ, जे ण मम कणीयस पुत्त साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता सत्त मससोल्ले करेइ,करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता मम गाय मसेण य सोणिएण य आइचइ,जाओ वि य ण इमाओ मम छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, छ हिरण्ण-कोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, ताओ वि य ण इच्छइ मम साओ गिहाओ नीणेत्ता आलभियाए नयरीए सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु सव्वओ समता विप्पइरित्ताए, त सेय खलु मम एय पुरिस गिण्हित्ताए त्ति कट्टु उद्धाविए, से वि य आगासे उप्पइए, मए वि य खभे आसाइए, महया-महया सद्देण कोलाहले कए ॥

पायच्छित्त-पदं

४५ तए ण सा बहुला भारिया चुल्लसयग समणोवासयं एव वयासी –नो खलु केइ पुरिसे तव जेट्ठपुत्त साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, नो खलु केइ पुरिसे तव मज्झिम पुत्त साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, नो खलु केइ पुरिसे तव कणीयस पुत्त साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, नो खलु देवाणुप्पिया! तुब्भ के वि पुरिसे तव छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, साओ गिहाओ नीणेत्ता आलभियाए नयरीए सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु सव्वओ समता विप्पइरइ, एस ण केइ पुरिसे तव उवसग्ग करेइ, एस ण तुमे विदरिसणे दिट्ठे, त ण तुम इयाणिं भग्गवए भग्गनियमे भग्गपोसहे विहरसि। त ण तुम पिया! एयस्स ठाणस्स आलोएहि पडिक्कमाहि निंदाहि गरिहाहि विउट्टाहि विसोहेहि अकरणयाए अब्भुट्ठाहि अहारिह पायच्छित्त तवोकम्म पडिवज्जाहि ॥

४६. तए ण से चुल्लसयए समणोवासए बहुलाए भारियाए तह त्ति एयमट्ठ विणएण पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तस्स ठाणस्स आलोएइ पडिक्कमइ निंदइ गरिहइ

विउट्टइ विसोहेइ अकरणयाए अब्भुट्ठेइ अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जइ ॥

चुल्लसयगस्स उवासगपडिमा-पदं

४७ तए णं से चुल्लसयए समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥

४८. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए पढमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥

४९ तए णं से चुल्लसयए समणोवासए दोच्चं उवासगपडिमं, एवं तच्चं, चउत्थं, पंचमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं, एक्कारसमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥

५०. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए तेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए ॥

चुल्लसयगस्स अणसण-पदं

५१ तए णं तस्स चुल्लसयगस्स समणोवासगस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं एयारूवेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए। तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, तं जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[1] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-झूसणा-झूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खि-यस्स कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-झूसणा-झूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए कालं अणवकंखमाणे विहरइ ॥

---

१. उवा० १।५७।

चुल्लसययस्स समाहिमरण-पदं

५२. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए बहूहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि अप्पाणं भावेत्ता, वीस वासाइ समणोवासगपरियाग पाउणित्ता, एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्म काएण फासित्ता, मासियाए सलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कते, समाहिपत्ते, कालमासे काल किच्चा° सोहम्मे कप्पे अरुणसिद्धे विमाणे देवत्ताए उववण्णे । •[1]तत्थ ण अत्थेगइयाणं देवाण चत्तारि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता । चुल्लसयगस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

५३ से ण भते ! चुल्लसयए ताओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण अणतर चय चइत्ता कहिं गमिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे° सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणमंत काहिइ ।।

निक्खेव-पदं

५४ •[2]एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेण उवासगदसाण पचमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते° ।।

---

१ स० पा०—चत्तारि पलिओवमाइ ठिई । सेस तहेव जाव सिज्झिहिति ।

२. स० पा०—निक्खेवो ।

छट्ठं अज्झयणं

कुडकोलिए

उक्खेव-पदं

१. •'जइ ण भते समणेण भगवया महावीरेण जाव' संपत्तेणं सत्तमस्स अगस्स उवासगदसाण पचमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, छट्ठस्स ण भते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? •

कुडकोलियगाहावइ-पदं

२ एव खलु जबू ! तेण कालेण तेण समएण कपिल्लपुरे नयरे[२]। सहस्सववणे उज्जाणे। जियसत्तू राया ॥

३. •'तत्थ ण कपिल्लपुरे नयरे कुडकोलिए नाम गाहावई परिवसइ—अड्ढे जाव' वहुजणस्स अपरिभूए ॥

४. तस्स ण कुडकोलियस्स गाहावइस्स छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, छव्वया दसगोसाहस्सिएण वएण होत्था ॥

५ से ण कुडकोलिए गाहावई बहूण जाव[६] आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य ण कुडुवस्स मेढी जाव[७] सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था ॥

---

१ स० पा०—उक्खेवो ।

२ ना० १।१।७ ।

३ अस्यानन्तरमतिरिक्तपाठः—'पुढविसिलापट्टए चेइए' (ग) ।

४ स० पा०— कुडकोलिए गाहावई । पूसा भारिया छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ वड्ढिपउत्ताओ, छ पवित्थरपउत्ताओ, छव्वया दसगोसाहस्सिएण वएण ।

५. उवा० १।११ ।

६. उवा० १।१३ ।

७. उवा० १।१३ ।

६ तस्स ण कुडकोलियस्स गाहावइस्स पूसा नाम भारिया होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरा जाव[1] माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी विहरइ°।।

महावीर-समवसरण-पदं

७ •[2]तेण कालेण तेण समएण समणे भगवं महावीरे जाव[3] जेणेव कंपिल्लपुरे नयरे जेणेव सहस्सववणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ।।

८ परिसा निग्गया ।।

९ कूणिए राया जहा, तहा जियसत्तू निग्गच्छइ जाव[4] पज्जुवासइ ।।

१० तए ण से कुडकोलिए गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे—"एव खलु समणे भगव महावीरे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे इहमागए इह सपत्ते इह समोसढे इहेव कपिल्लपुरस्स नयरस्स बहिया सहस्सबवणे उज्जाणे अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ।"

तं महप्फल खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं अरहताणं भगवताणं णामगोयस्स वि सवणयाए, किमग पुण अभिगमण-वदण-णमसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? त गच्छामि ण देवाणुप्पिया ! समण भगव-महावीर वदामि णमसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाण मगल देवय चेइय पज्जुवासामि—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता ण्हाए कयबलिकम्मे कय-कोउय-मगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइ मगल्लाइ वत्थाइ पवर परिहिए अप्पमहग्घा-भरणालकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सकोरेंट-मल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते पादविहारचारेण कपिल्लपुर नयर मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव सहस्संबवणे उज्जाणे, जेणेव समणे भगव महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमसमाणे अभिमुहे विणएण पंजलिउडे पज्जुवासइ ।।[5]

११ तए ण समणे भगव महावीरे कुडकोलियस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहा-लियाए परिसाए जाव[1] धम्म परिकहेइ ।।

---

१ उवा० १।१४ ।
२ स० पा०—सामी समोसढे । जहा कामदेवो तहा सावयधम्म पडिवज्जइ सा सव्वेव वत्तव्वया जाव पडिलाभेमाणी विहरइ ।
३. ओ० सू० १६, २२ ।
४. ओ० सू० ५३-६९ ।
५. ओ० सू० ७१-७७ ।

१२. परिसा पडिगया, राया य गए ॥

कुडकोलियस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं

१३. तए णं कुडकोलिए गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्प-माणहियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—सद्दहामि णं भंते! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं भंते! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंते! निग्गंथं पावयणं। एवमेयं भंते! तहमेयं, भंते! अवितहमेयं भंते! असंदिद्धमेयं भंते! इच्छियमेयं भंते! पडिच्छियमेयं भंते! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते! से जहेयं तुब्भे वदह। जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, नो खलु अहं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए। अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं सावग-धम्मं पडिवज्जिस्सामि।

अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेहि ॥

१४. तए णं से कुडकोलिए गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए[1] सावय-धम्मं पडिवज्जइ ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

१५. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ कंपिल्लपुराओ नयराओ सहस्सब-वणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

कुडकोलियस्स समणोवासग-चरिया-पदं

१६. तए णं से कुडकोलिए समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे जाव[2] समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसहभेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणे विहरइ ॥

पूसाए समणोवासिय-चरिया-पदं

१७. तए णं सा पूसा भारिया समणोवासिया जाया—अभिगयजीवाजीवा

---

१. पू०—उवा० १।२४-५३। २. उवा० १।५५।

जाव[1] समणे निग्गथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुछणेण ओसह-भेसज्जेण पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-सथारएण° पडिलाभेमाणी विहरइ ॥

देवेण नियतिवाद-समत्थण-पदं

१८ तए णं से कुडकोलिए समणोवासए अण्णदा कदाइ पच्चावरण्हकालसमयसि[2] जेणेव असोगवणिया, जेणेव[3] पुढविसिलापट्टए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता नाममुद्दग[4] च उत्तरिज्जग च पुढविसिलापट्टए ठवेइ, ठवेत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मपण्णत्ति उवसपज्जित्ता ण विहरइ ॥

१९ तए ण तस्स कुडकोलियस्स समणोवासयस्स एगे देवे अतिय पाउब्भवित्था ॥

२० तए ण से देवे नाममुद्दग[5] च उत्तरिज्जग[6] च पुढविसिलापट्टयाओ गेण्हइ, गेण्हित्ता 'अतलिक्खपडिवण्णे सखिखिणियाइ'[7] पचवण्णाइ वत्थाइ पवर परिहिए कुडकोलिय समणोवासयं एव वयासी -हंभो ! कुडकोलिया ! समणोवासया ! सुदरी ण देवाणुप्पिया ! गोसालस्स मखलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती—नत्थि उट्ठाणे इ वा कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा नियता[8] सव्वभावा[9], मगुली ण समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्ती—अत्थि उट्ठाणे इ वा[10] °कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार°-परक्कमे इ वा अणियता[11] सव्वभावा ॥

कुंडकोलिएण नियतिवाद-निरसण-पद

२१ तए ण से कुडकोलिए समणोवासए त देव एव वयासी—जइ ण देवाणुप्पिया ! सुदरी ण गोसालस्स मखलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती[12]—नत्थि उट्ठाणे इ वा[13] °कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा° नियता सव्वभावा, मगुली ण समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्ती—अत्थि उट्ठाणे इ वा[14] °कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा° अणियता

---

१ °उवा १।५६ ।

२ पुव्वा° (ख, घ) ।

३ जेणामेव (क) ।

४ नामामुद्दग (क, ख, ग) ।

५ नाममुद्द (क, ख, घ); नामामुद्द (ग) ।

६ उत्तरिज्ज (ख, ग, घ) ।

७ सखिखिणिं अतलिक्खपडिवण्णे (क, ख, ग, घ), पाठसंक्षेपकरणेनात्र परिवर्तन जातम् । मूलपाठ. २।४० सूत्रानुसारी स्वीकृत ।

८ नियया (ख, घ) ।

९ सव्वेभावा (ग) ।

१० म° पा°—उट्ठाणे इ वा जाव परक्कमे ।

११ अणियता (क, घ), अणियया (ख) ।

१२ °पण्णत्ति (ग) ।

१३ स° पा°—उट्ठाणे इ वा जाव नियता ।

१४ स° पा°—उट्ठाणे इ वा जाव अणियता ।

सव्वभावा, तुमे ण देवाणुप्पिया ! इमा एयारूवा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे किण्णा[1] लद्धे ? किण्णा पत्ते ? किण्णा अभिसमण्णागए ? किं उट्ठाणेण[2] •कम्मेण बलेण वीरिएणं॰पुरिसक्कार-परक्कमेण ? उदाहु अणुट्ठाणेण[3] •अकम्मेण अबलेण अवीरिएण॰ अपुरिसक्कारपरक्कमेण ?

देवेण नियतिवाद-समत्थण-पद

२२. तए ण से देवे कुडकोलिय समणोवासय एवं वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! मए इमा एयारूवा[4] दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे अणुट्ठाणेण[5] अकम्मेण अबलेण अवीरिएण अपुरिसक्कारपरक्कमेण 'लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए'[6] ॥

कुडकोलिएण नियतिवाद-निरसण-पदं

२३. तए ण से कुडकोलिए समणोवासए त देव एव वयासी—जइ ण देवाणुप्पिया ! तुमे 'इमा एयारूवा'[7] दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे अणुट्ठाणेण[8] •अकम्मेण अबलेण अवीरिएण॰ अपुरिसक्कारपरक्कमेण 'लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए'[9], जेसि ण जीवाण नत्थि उट्ठाणे इ वा[10] •कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार॰-परक्कमे इ वा, ते किं न देवा[11] ?
'अह तुब्भे'[12] इमा एयारूवा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे उट्ठाणेण[13] •कम्मेणं बलेण वीरिएण पुरिसक्कार॰-परक्कमेण लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए, तो ज वदसि सुंदरी णं गोसालस्स मखलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती—नत्थि उट्ठाणे इ वा[14] •कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा॰ णियता सव्वभावा, मंगुली ण समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्म-

---

१ किणा (क)।
२. स॰ पा॰—उट्ठाणेण जाव पुरिसक्कारपरक्कमेण।
३ स॰ पा॰—अणुट्ठाणेणं जाव अपुरिसक्कारपरक्कमेण।
४ इमेयारूवा (क, ख, ग, घ)।
५. स॰ पा॰—अणुट्ठाणेण जाव अपुरिसक्कारपरक्कमेण।
६ लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया (ख)।
७. इमेयारूवा (क, घ), इमे एयारूवा (ग)।
८ स॰ पा॰—अणुट्ठाणेण जाव अपुरिसक्कारपरक्कमेण।
९ लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया (क, ख, ग, घ)।
१०. स॰ पा॰—उट्ठाणे इ वा जाव परक्कमे।
११. 'क' प्रतौ अस्यानन्तर—'अह ते एवं भवति, तो ज वदसि॰' एव पाठो विद्यते। 'ग' प्रतौ 'अह तुब्भे इमा एयारूवा दिव्वा देविड्ढी ३ उट्ठाणेण जाव परक्कमेण लद्धा ३। त ते एव न भवति, तो ज वदसि'॰।
१२. अह ण देवाणुप्पिया तुमे (ख, घ)।
१३. स॰ पा॰—उट्ठाणेण जाव परक्कमेण।
१४. स॰ पा॰—उट्ठाणे इ वा जाव णियता।

पण्णत्ती—अत्थि उट्ठाणे इ वा[1] •कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिस-क्कार-परक्कमे इ वा॰ अणियता सव्वभावा, तं ते मिच्छा ।।

देवस्स पडिगमण-पदं

२४ तए णं से देवे कुंडकोलिएणं समणोवासएणं एवं वुत्ते समाणे संकिए[2] कंखिए वितिगिच्छासमावण्णे कलुससमावण्णे नो संचाएइ कुंडकोलियस्स समणोवास-यस्स किंचि पमोक्खमाइक्खित्तए, नाममुद्दगं च उत्तरिज्जयं च पुढविसिलापट्टए ठवेइ[3], ठवेत्ता जामेव दिसं पाउब्भूए, तामेव दिसं पडिगए ।।

महावीर-समवसरण-पदं

२५ तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे ।।

२६ तए णं से कुंडकोलिए समणोवासए इमीसे कहाए लद्धट्ठे[4] •समाणे—"एवं खलु समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इहेव कंपिल्लपुरस्स नयरस्स बहिया सहस्सव-वणे उज्जाणे अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।"

तं सेयं खलु मम समणं भगवं महावीरं वंदित्ता णमंसित्ता ततो पडिणियत्तस्स पोसहं पारेत्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता [पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता ?] सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए मणुस्स-वग्गुरापरिक्खित्ते सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता कंपिल्लपुरं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सहस्सववणे उज्जाणे, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ ।।

२७. तए णं समणे भगवं महावीरे कुंडकोलियस्स समणोवासयस्स तीसे य महइ-महालियाए परिसाए जाव धम्मं परिकहेइ[5]॰ ।।

महावीरेण पुव्ववुत्तंत-परूवण-पदं

२८ कुंडकोलियाइ ! समणे भगवं महावीरे कुंडकोलियं समणोवासयं एवं वयासी—

---

१. सं॰ पा॰—उट्ठाणे इ वा जाव अणियता ।

२. संकिए जाव कलुससमावण्णे (ग) ।

३ ठावेइ (घ) ।

४ लद्धट्ठे हट्ठ (क, ख, ग, घ), अत्र 'हट्ठ' शब्दः किमर्थमुल्लिखितः, इति न ज्ञायते । कामदेव-वर्णने नासौ उपलभ्यते । सं॰ पा॰—लद्धट्ठे जहा कामदेवो तहा निग्गच्छइ जाव पज्जु-वासइ । धम्मकहा ।

५ ओ॰ सू॰ ७१-७७ ।

से नूणं कुडकोलिया ! कल्लं[1] तुब्भं पच्चावरण्हकालसमयंसि[2] असोगवणियाए एगे देवे अंतिय पाउब्भवित्था ।

तए ण से देवे नाममुद्दग च[3] •उत्तरिज्जग च पुढविसिलापट्टयाओ गेण्हइ, गेण्हित्ता अतलिक्खपडिवण्णे सखिखिणियाइ पचवण्णाइ वत्थाइ पवर परिहिए तुम एव वयासी—हभो ! कुडकोलिया ! समणोवासया ! सुदरी ण देवाणुप्पिया ! गोसालस्स मखलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती—नत्थि उट्ठाणे इ वा कम्मे इ वा वले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा नियता सव्व-भावा, मगुली ण समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्ती—अत्थि उट्ठाणे इ वा कम्मे इ वा वले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा अणियता सव्वभावा ।

तए ण तुम त देव एव वयासी—जइ ण देवाणुप्पिया ! सुदरी णं गोसालस्स मखलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती—नत्थि उट्ठाणे इ वा जाव पुरिसक्कार-परकम्मे इ वा नियता सव्वभावा, मगुली ण समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्म-पण्णत्ती—अत्थि उट्ठाणे इ वा जाव पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा अणियता सव्वभावा, तुमे ण देवाणुप्पिया ! इमा एयारूवा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे किण्णा लद्धे ? किण्णा पत्ते ? किण्णा अभिसमण्णागए ? कि उट्ठाणेण जाव पुरिसक्कार-परक्कमेण ? उदाहु अणुट्ठाणेण जाव अपुरिसक्कार-परकम्मेण ?

तए ण से देवे तुम एवं वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! मए इमा एयारूवा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे अणुट्ठाणेण जाव अपुरिसक्कार-परक्कमेण लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए ।

तए ण तुम त देव एवं वयासी जइ णं देवाणुप्पिया ! तुमे इमा एयारूवा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे अणुट्ठाणेण जाव अपुरिसक्कार-परक्कमेण लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए, जेसि ण जीवाण नत्थि उट्ठाणे इ वा जाव परक्कमे इ वा, ते कि न देवा ?

अह तुब्भे इमा एयारूवा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे उट्ठाणेण जाव परक्कमेण लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए, तो ज वदसि सुंदरी ण गोसालस्स मखलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती—नत्थि उट्ठाणे इ वा जाव नियता सव्वभावा, मगुली ण समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्ती—अत्थि उट्ठाणे इ वा जाव अणियता सव्वभावा, त ते मिच्छा। तए ण से देवे तुम एव वुत्ते समाणे सकिए कखिए वितिगिच्छासमावण्णे कलुससमावण्णे नो

---

१ × (ख) ।
२ पुव्वावरण्ह० (ख, घ) ।
३ स० पा०—नामुद्दग च तहेव जाव पडिगए ।

सचाएइ तुब्भे किंचि पमोक्खमाइक्खित्तए, नाममुद्दगं च उत्तरिज्जयं च पुढविसिलापट्टए ठवेइ, ठवेत्ता जामेव दिसं पाउब्भूए, तामेव दिसं° पडिगए। से नूणं कुंडकोलिया! अट्ठे समट्ठे ?

हंता अत्थि[1]॥

महावीरेण कुंडकोलियस्स पसंसा-पदं

२९ अज्जोति! समणे भगवं महावीरे [बहवे?][2] समणा निग्गंथा य निग्गंथीओ य आमंतेत्ता एवं वयासी—जइ ताव अज्जो! गिहिणो गिहिमज्झावसंता[3] अण्णउत्थिए अट्ठेहि य हेऊहि य पसिणेहि य कारणेहि य वागरणेहि य निप्पट्ठ-पसिणवागरणे करेंति, सक्का पुणाइं अज्जो! समणेहिं निग्गंथेहिं दुवालसंगं गणिपिडगं अहिज्जमाणेहिं अण्णउत्थिया अट्ठेहि य[4] °हेऊहि य पसिणेहि य कारणेहि य वागरणेहि य° निप्पट्ठ-पसिणवागरणा करेत्तए॥

३० तए णं [ते बहवे?][5] समणा निग्गंथा य निग्गंथीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स तह त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेंति॥

३१ [6]तए णं से कुंडकोलिए समणोवासए समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता पसिणाइं पुच्छइ, पुच्छित्ता अट्ठमादियइ, अट्ठमादित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

३२ सामी बहिया जणवयविहारं विहरइ॥

कुंडकोलियस्स धम्मजागरिया-पदं

३३ तए णं तस्स कुंडकोलियस्स समणोवासयस्स बहूहिं[7] °सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं° भावेमाणस्स चोद्दस संवच्छराइं

---

१ हंता अत्थि अस्य पाठस्यानन्तरमेतावान् पाठ उपलभ्यते, यथा—तं धन्ने सि णं तुमं जहा कामदेवो तहा पसंसिओ (क),
तं धन्नेसि णं तुमं जहा कामदेवो (ख, घ);
तं धन्ने सि णं तुमं जहा कामदेवो जाव पडिगता (ग), असौ अत्र अप्रासंगिकः प्रतीयते। कामदेवाध्ययने 'तं धन्नेसि णं तुमं' इत्यादि वाक्यानि देवो ब्रवीति (सू० २।४०)। अत्र च भगवतो महावीरस्य संवादप्रसंगे असौ पाठोस्ति, किन्तु कामदेवाध्ययने 'हंता अत्थि' इति पाठस्यानन्तरं—'अज्जोति! समणे भगवं महावीरे' इति सूत्रमस्ति (सू० २।४६) अत्रापि इत्थमेव युज्यते।

२. महावीरे बहवे (२।४६)।

३. गिहिमज्झे वसंता (क, ग), °वसंता णं (ख, वृ)।

४ सं० पा०—अट्ठेहि य जाव निप्पट्ठ°।

५. ते बहवे समणा (२।४७)।

६. २।४८ सूत्रस्य क्रमं अस्माद् भिन्नोस्ति।

७. सं० पा०—बहूहिं जाव भावेमाणस्स।

वीइक्कंताइ। पण्णरसमस्स सवच्छरस्स अतरा वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ[1] •पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु अह कंपिल्लपुरे नयरे बहूण जाव[2] आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुबस्स मेढी जाव[3] सव्वकज्जवड्ढावए, त एतेण वक्खेवेण अह नो सचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मपण्णत्ति उवसपज्जित्ता ण विहरित्तए[4] ॥

३४. तए ण से कुडकोलिए समणोवासए जेट्ठपुत्त मित्त-नाइ-नियग-सयण-सबधि-परिजण च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता कपिल्लपुर नयर मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसह-साला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसाल पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चार-पासवणभूमि पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसथारय सथरेइ, सथरेत्ता दब्भसथारय दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए बभयारी उम्मुक्कमणि-सुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अबीए दब्भसथा-रोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय ° धम्मपण्णत्ति उवसपज्जित्ता ण विहरइ ॥

कुडकोलियस्स उवासगपडिमा-पदं

३५. •[5]तए ण से कुडकोलिए समणोवासए पढम उवासगपडिम उवसपज्जित्ता ण विहरइ ॥

३६ तए ण से कुडकोलिए समणोवासए पढम उवासगपडिमं अहासुत्त अहाकप्प अहामग्ग अहातच्च सम्म काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥

३७. तए ण से कुडकोलिए समणोवासए दोच्च उवासगपडिम, एव तच्च, चउत्थ, पचमं, छट्ठ, सत्तम, अट्ठम, नवम, दसम, एक्कारसम उवासगपडिम अहासुत्त अहाकप्प अहामग्ग अहातच्च सम्म काएण फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥

३८. तए ण से कुडकोलिए समणोवासए इमेण एयारूवेण ओरालेणं विउलेणं

---

१. स० पा०—कदाइ जहा कामदेवो तहा जेट्ठ-पुत्त ठवेत्ता तहा पोसहसालाए जाव धम्म-पण्णत्ति ।

२. उवा० १।१३।

३. उवा० १।१३।

४. पू०—उवा० १।५७-५६।

५. स० पा०–एव एक्कारस उवासगपडिमाओ। तहेव जाव सोहम्मे कप्पे अरुणज्झए विमाणे जाव अत काहिइ ।

पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेण सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकि-डियाभूए किसे धमणिसतए जाए ॥

कुडकोलियस्स अणसण-पद

३९. तए ण तस्स कुडकोलियस्स समणोवासगस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अय अज्झत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु अह इमेण एयारूवेण ओरालेण विउलेण पयत्तेण पग्गहिएण तवोकम्मेण सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसतए जाए। त अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-सवेगे, त जावता मे उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-सवेगे, जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगव महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेय कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव[1] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते अपच्छिममारणतियसलेहणा-झूसणा-झूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खि-यस्स काल अणवकखमाणस्स विहरित्तए—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते अपच्छिममारणतियसलेहणा-झूसणा-झूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए काल अणवकखमाणे विहरइ ॥

कुडकोलियस्स समाहिमरण पदं

४०. तए ण से कुडकोलिए समणोवासए वहूहि सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि अप्पाण भावेत्ता, वीस वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणित्ता, एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्म काएण फासित्ता, मासियाए सलेहणाए अत्ताण झूसित्ता, सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कते, समाहिपत्त, कालमासे काल किच्चा, सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिसगस्स महा-विमाणस्स उत्तरपुरत्थिमे ण अरुणज्झए विमाणे देवत्ताए उववण्णे। तत्थ ण अत्थेगइयाण देवाण चत्तारि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

४१ से ण भते ! कुडकोलिए ताओ देवलागाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण अणतरं चय चइत्ता कहिं गमिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?

गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाण° अत काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

४२ •[2]एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेण उवासगदसाण छट्ठस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते° ॥

१. उवा० १।५७।

२. स० पा०—निक्खेवो।

सत्तमं अज्झयणं

सद्दालपुत्ते

उक्खेव-पदं

१. •[1]जइ ण भंते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव[2] संपत्तेण सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाण छट्ठस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, सत्तमस्स ण भंते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

सद्दालपुत्त-पद

२. एव खलु जंबू ! तेण कालेण तेणं समएण॰ पोलासपुर नामं नयर । सहस्सववण उज्जाण । जियसत्तू राया ।।

३. तत्थ णं पोलासपुरे नयरे सद्दालपुत्ते नामं कुंभकारे[3] आजीविओवासए[4] परिवसइ । आजीवियसमयंसि लद्धट्ठे गहियट्ठे पुच्छियट्ठे विणिच्छियट्ठे अभिगयट्ठे अट्ठिमिजपेमाणुरागरत्ते । "अयमाउसो ! आजीवियसमए अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे" त्ति[5] आजीवियसमएण अप्पाण भावेमाणे विहरइ ।।

४. तस्स ण सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स एक्का हिरण्णकोडी निहाणपउत्ताओ एक्का हिरण्णकोडी वड्ढिपउत्ताओ, एक्का हिरण्णकोडी पवित्थरपउत्ताओ, एक्के वए दसगोसाहस्सिएण वएण ।।

५. तस्स णं सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स अग्गिमित्ता नाम भारिया होत्था ।।

६. तस्स ण सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स पोलासपुरस्स नगरस्स बहिया पंच कुंभारावणसया[6] होत्था ।।

---

१. स॰ पा॰—उक्खेवो ।

२. ना॰ १।१।७ ।

३. कुभकारे इड्ढे (ख) ।

४. आजीवितोवासते (क), आजीवितोवासए (ग); आजीवियओवासगे (घ) ।

५. ति एव (ग) ।

६ कुभकारा॰ (ख, घ) ।

७. तस्स[1] णं वहवे पुरिसा दिण्ण-भइ-भत्तवेयणा कल्लाकल्लिं[2] वहवे करए य वारए य पिहडए[3] य घडए य अद्धघडए य कलसए य अलिजरए य जवूलए य उट्टियाओ य करेंति। अण्णे य से वहवे पुरिसा दिण्ण-भइ-भत्तवेयणा कल्लाकल्लिं[4] तेहिं बहूहिं करएहि य[5] •वारएहि य पिहडएहि य घडएहि य अद्धघडएहि य कलसएहि य अलिजरएहि य जवूलएहि य° उट्टियाहि य रायमग्गंसि वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति ।।

सद्दालपुत्तस्स देवदेसस-पद

८ तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए अण्णदा कदाइ पच्चावरण्हकाल--समयंसि[6] जेणेव असोगवणिया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ।।

९ तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स एक्के[7] देवे अंतियं पाउब्भवित्था ।।

१०. तए णं से देवे अंतलिक्खपडिवण्णे सखिंखिणियाइं[8] •पंचवण्णाइं वत्थाइं पवर° परिहिए सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं एवं वयासी—एहिइ[9] णं देवाणुप्पिया! कल्लं इहं महामाहणे उप्पण्णणाणदंसणधरे तीयप्पडुप्पण्णाणागयजाणए[10] अरहा जिणे केवली सव्वण्णू सव्वदरिसी तेलोक्कचहिय[11]-महिय-पूइए[12] सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स अच्चणिज्जे पूयणिज्जे[13] वंदणिज्जे[14] •णमंसणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं° पज्जुवासणिज्जे तच्च-कम्मसंपया-संपउत्ते। तं णं तुमं वंदेज्जाहि[15] •णमंसेज्जाहि सक्कारेज्जाहि सम्माणेज्जाहि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं° पज्जुवासेज्जाहि, पाडिहारिएणं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं उवनिमंतेज्जाहि। दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयइ[16], वइत्ता जामेव दिसं[17] पाउब्भूए, तामेव दिसं पडिगए ।।

---

१. डा०होर्नलसंपादितपुस्तके 'तस्थ' पाठो लभ्यते।
२ कल्लाकल्लं (क, ख, ग)।
३ हेमशब्दानुशासन (१।२०१) 'पिठरे हो वारश्च ड'।
४. कल्लाकल्लं (ग)।
५ सं० पा०—करएहि य जाव उट्टियाहि।
६ पुव्वा° (ख, घ)।
७ एगे (ख)।
८. सं० पा०—सखिंखिणियाइं जाव परिहिए।
९. एहीति (क, ग), एही (ख, घ)।
१० तीयपच्चुपण्णाणागय° (क), तीयपडुपण्णागय° (ख)।
११. प्राचीनलिप्या वकार-चकारयो: सादृश्यात् केषुचिदादर्शेषु 'वहिय' इति पाठोपि दृश्यते।
१२ पूतिते (क)।
१३ × (क, ख, ग)।
१४. सं० पा०—वंदणिज्जे जाव पज्जुवासणिज्जे।
१५. सं० पा०—वंदेज्जाहि जाव पज्जुवासेज्जाहि।
१६. वयासी (ग, घ)।
१७. दिसिं (ख, घ)।

सद्दालपुत्तस्स संकप्प-पदं

११. तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स तेणं देवेणं एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे—एवं खलु मम धम्मायरिए धम्मोवएसए गोसाले मंखलिपुत्ते—से णं महामाहणे उप्पण्ण-णाणदंसणधरे[1] •तीयप्पडुप्पण्णाणागयजाणए अरहा जिणे केवली सव्वण्णू सव्वदरिसी तेलोक्कचहिय-महिय-पूइए सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स अच्चणिज्जे पूयणिज्जे वंदणिज्जे णमंसणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासणिज्जे° तच्च-कम्मसंपया-संपउत्ते, से णं कल्लं इहं हव्वमागच्छिस्सति। तए णं तं अहं वंदिस्सामि[2] °णमंसिस्सामि सक्कारेस्सामि सम्माणेस्सामि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं° पज्जुवासिस्सामि पाडिहारिएणं[3] •पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं° उवनिमंतिस्सामि॥

महावीर-समवसरण-पदं

१२. तए णं कल्लं[4] •पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पलकमलकोमलुम्मिलियम्मि अह पंडुरे पहाए रत्तासोगप्पगास-किंसुय-सुयमुह-गुंजद्धरागसरिसे कमलागरसंडबोहए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा° जलंते समणे भगवं महावीरे[5] जाव[6] •जेणेव पोलासपुरे नयरे जेणेव सहस्सववणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ°॥

१३. परिसा निग्गया॥

१४. [7] •कूणिए राया जहा, तहा जियसत्तू निग्गच्छइ जाव[8] °पज्जुवासइ॥

१५. तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे—"एवं खलु समणे भगवं महावीरे[9] •पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इहेव पोलासपुरस्स नयरस्स बहिया सहस्सववणे उज्जाणे अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे °विहरइ।" तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि[10] •णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि

---

१. सं० पा०—उप्पण्णणाणदंसणधरे जाव तच्च-कम्मसंपया।
२. सं० पा०—वंदिस्सामि जाव पज्जुवासिस्सामि।
३. सं० पा०—पाडिहारिएणं जाव उवनिमंतिस्सामि।
४. सं० पा०—कल्लं जाव जलंते।
५. सं० पा०—महावीरे जाव समोसरिए।
६. ओ० सू० १६, २२।
७. सं० पा०—जाव पज्जुवासइ।
८. ओ० सू० ५३-६६।
९. सं० पा०—महावीरे जाव विहरइ।
१०. सं० पा०—वंदामि जाव पज्जुवासामि।

कल्लाण मंगलं देवयं चेइयं° पज्जुवासामि—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता ण्हाए[1] °कयबलिकम्मे कय-कोउय-मंगल °पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं[2] °मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए° अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे मणुस्सवग्गुरापरिगए साओ[3] गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता पोलासपुरं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता[4] °णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे° पज्जुवासइ ॥

१६ तए णं समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स तीसे य महइ[5]-°महालियाए परिसाए जाव[6] धम्मं परिकहेइ °॥

महावीरस्स देवसंदेस-निरूवण-पदं

१७ सद्दालपुत्ताइ[7] ! समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं एवं वयासी - से नूणं सद्दालपुत्ता ! कल्लं तुमं पच्चावरण्हकालसमयंसि जेणेव असोगवणिया[8], °तेणेव उवागच्छसि, उवागच्छित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ता णं° विहरसि । तए णं तुब्भं एगे देवे अंतियं पाउब्भवित्था ।

तए णं से देवे अंतलिक्खपडिवण्णे[10] °सखिंखिणियाइं पंचवण्णाइं वत्थाइं पवर परिहिए तुमं° एवं वयासी— हंभो ! सद्दालपुत्ता[11] ! °एहिइ णं देवाणुप्पिया ! कल्लं इहं महामाहणे जाव[12] तच्च-कम्मसंपया-संपउत्ते । तं णं तुमं वंदेज्जाहि णमंसेज्जाहि सक्कारेज्जाहि सम्माणेज्जाहि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेज्जाहि, पाडिहारिएणं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं उवनिमंतेज्जाहि । दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयइ, वइत्ता जामेव दिसं पाउब्भूए, तामेव दिसं पडिगए ।

तए णं तुब्भं तेणं देवेणं एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे—एवं खलु मम धम्मायरिए धम्मोवएसए गोसाले मंखलिपुत्ते —से णं महामाहणे जाव[13] तच्च-कम्मसंपया-संपउत्ते, से णं

---

१. सं० पा०—ण्हाए जाव पायच्छित्ते ।
२ सं० पा०—सुद्धप्पावेसाइं जाव अप्पमहग्घा ।
३. सयाओ (घ) ।
४ सं० पा०—णमंसित्ता जाव पज्जुवासइ ।
५ सं० पा०—महइ जाव धम्मकहा समत्ता ।
६. ओ० सू० ७१-७७ ।
७. °दि (ग) ।
८ पुव्वा° (ख, घ) ।
९ सं० पा०—असोगवणिया जाव विहरसि ।
१० सं० पा०—अंतलिक्खपडिवण्णे एवं वयासी ।
११ सं० पा०—सद्दालपुत्ता तं चेव सव्वं जाव पज्जुवासिस्सामि ।
१२. उवा० ७।१० ।
१३ उवा० ७।११ ।

कल्ल इह हव्वमागच्छिस्सति । तए ण तं अह वंदिस्सामि णमसिस्सामि सक्कारेस्सामि सम्माणेस्सामि कल्लाण मगल देवय चेइयं पज्जुवासिस्सामि, पाडिहारिएण पीढ-फलग-सेज्जा-सथारएण उवनिमतिस्सामि °। से नूण सद्दालपुत्ता !
अट्ठे समट्ठे ?
हता अत्थि ।
त नो खलु सद्दालपुत्ता ! तेण देवेण गोसालं मखलिपुत्त पणिहाय एवं वुत्ते ॥

सद्दालपुत्तस्स निवेदण-पदं

१८ तए ण तस्स सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासयस्स समणेण भगवया महावीरेणं एव वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे – एस ण समणे भगव महावीरे महामाहणे उप्पण्णणाणदसणधरे[1] •तीयप्पडुपण्णाणागयजाणए अरहा जिणे केवली सव्वण्णू सव्वदरिसी तेलोक्क-चहिय-महिय-पूइए सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स अच्चणिज्जे पूयणिज्जे वदणिज्जे णमसणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाण मगल देवय चेइय पज्जुवासणिज्जे ° तच्च-कम्मसपया-सपउत्ते । त सेयं खलु मम समण भगवं महावीर वदित्ता णमसित्ता पाडिहारिएण पीढ-फलग[2] •सेज्जा-सथारएण ° उवनिमंतेत्तए—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समण भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी—एव खलु भते ! मम पोलासपुरस्स नयरस्स बहिया पच कुभारावणसया । तत्थ ण तुब्भे पाडिहारियं पीढ[3]-•फलग-सेज्जा °-संथारय ओगिण्हित्ता[4] णं विहरह ॥

महावीरेण सद्दालपुत्त-संबोधण-पदं

१९. तए ण से समणे भगव महावीरे सद्दालपुत्तस्स अजीविओवासगस्स एयमट्ठ पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स 'पचसु कुभारावणसएसु'[5] फासु-एसणिज्ज पाडिहारियं पीढ-फलग[6]-•सेज्जा °-सथारय ओगिण्हित्ता ण विहरइ ॥

२० तए ण से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए अण्णदा कदाइ वाताहतय[7] कोलालभंड अतो सालाहितो बहिया नीणेइ, नीणेत्ता आयवसि[8] दलयइ ॥

---

१. स० पा०—उप्पण्णणाणदसणधरे जाव तच्चकम्मसपया ।
२. स० पा०—पीढ-फलग जाव उवनिमंतेत्तए ।
३. स० पा०—पीढ जाव सथारय ।
४. तुगिण्हित्ता (क) ।
५. पचकुभ ° (ख, घ) ।
६. स० पा०—फलग जाव सथारय ।
७ वायाहतय (क, ग); वायाहययं (ख) ।
८. आतपसि (ख) ।

२१. तए णं समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं एवं वयासी—सद्दालपुत्ता! एस णं कोलालभंडे कहं[1] कतो ?

२२. तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए समणं भगवं महावीरं एवं वयासी—एस णं भंते! पुव्वि मट्टिया आसी, तओ पच्छा उदएणं तिम्मिज्जइ[2], तिम्मिज्जित्ता छारेण य करिसेण य एगयओ मीसिज्जइ, मीसिज्जित्ता चक्के आरुभिज्जति[3], तओ बहवे करगा य[4] •वारगा य पिहडगा य घडगा य अद्धघडगा य कलसगा य अलिंजरगा य जंबूलगा य° उट्टियाओ य कज्जंति ॥

२३. तए णं समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं एवं वयासी—सद्दालपुत्ता! एस णं कोलालभंडे किं उट्ठाणेणं[5] •कम्मेणं बलेणं वीरिएणं° पुरिसक्कार-परक्कमेणं कज्जति, उदाहु अणुट्ठाणेणं[6] •अकम्मेणं अबलेणं अवीरिएणं° अपुरिसक्कारपरक्कमेणं कज्जति ?

२४. तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए समणं भगवं महावीरं एवं वयासी—भंते! अणुट्ठाणेणं[7] •अकम्मेणं अबलेणं अवीरिएणं° अपुरिसक्कारपरक्कमेणं। नत्थि उट्ठाणे इ वा[8] •कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा° पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा, नियता सव्वभावा ॥

२५. तए णं समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं एवं वयासी—सद्दालपुत्ता! जइ णं तुब्भं केइ पुरिसे वाताहतं वा पक्केल्लयं वा कोलालभंडं अवहरेज्ज[9] वा विक्खिरेज्ज वा भिंदेज्ज वा अच्छिंदेज्ज[10] वा परिट्ठवेज्ज वा, अग्गिमित्ताए वा भारियाए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरेज्जा, तस्स णं तुमं पुरिसस्स कं[11] दंडं वत्तेज्जासि ?

भंते! 'अहं णं'[12] तं पुरिसं आओसेज्ज वा हणेज्ज वा बंधेज्ज वा महेज्ज[13] वा

---

१. × (क, ख, ग) प्रायो बहुषु आदर्शेषु केवलं 'कतो' पाठो लभ्यते, उत्तरसूत्रे 'कज्जति' इति प्रयोगो विद्यते, तेन प्रश्नसूत्रे 'कहं कतो' इति पाठः उपयुज्यते।

२. नमिज्जइ (ख), तिमिज्जइ (ग), निमिज्जइ (घ); आर्द्रीकरणार्थे 'तिम्म' धातुर्विद्यते। तेन 'तिम्मिज्जइ' पाठः स्वीकृतः। 'त-न' वर्णयोः प्राचीनलिप्या सादृश्येन परिवर्तनं जातमिति प्रतीयते।

३. आरोहिज्जइ (ख), आरुहिज्जति (घ)।

४. सं० पा०—करगा य जाव उट्टियाओ।

५. सं० पा०—उट्ठाणेण जाव पुरिसक्कार।

६. सं० पा०—अणुट्ठाणेण जाव अपुरिसक्कार।

७. सं० पा०—अणुट्ठाणेण जाव अपुरिसक्कार।

८. सं० पा०—उट्ठाणे इ वा जाव पुरिसक्कार।

९. 'ख, ग' प्रत्योः 'ज्ज' स्थाने सर्वत्र 'ज्जा' विद्यते।

१०. विच्छिंदेज्ज (वृपा)।

११. किं (ख, घ)।

१२. अहण्णं (ग, घ)।

१३. महेज्ज (ग)।

तज्जेज्ज वा तालेज्ज वा निच्छोडेज्ज वा निब्भच्छेज्ज वा, अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेज्जा ॥

२६ सद्दालपुत्ता ! नो खलु तुब्भ केइ पुरिसे वाताहत वा पक्केल्लय[1] वा कोलालभड अवहरइ वा[2] •विक्खिरइ वा भिदइ वा अच्छिदइ वा° परिट्ठवेइ वा, अग्गिमित्ताए भारियाए सद्धि विउलाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरइ; नो वा तुम त पुरिस आओसेसि[3] वा हणेसि वा[4] •बंधेसि वा महेसि वा तज्जेसि वा तालेसि वा निच्छोडेसि वा निब्भच्छेसि वा° अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेसि, जइ नत्थि उट्ठाणे इ वा[5] •कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार°-परक्कमे इ वा, नियता[6] सव्वभावा। 'अह ण'[7] तुब्भ केइ पुरिसे वाताहत वा[8] पक्केल्लय वा कोलालभड अवहरेइ वा विक्खिरेइ वा भिदेइ वा अच्छिदेइ वा° परिट्ठवेइ वा, अग्गिमित्ताए वा[9] •भारियाए सद्धि विउलाइ भोगभोगाइ भुजमाणे° विहरइ, तुम वा त पुरिस आओसेसि वा[10] •हणेसि वा बधेसि वा महेसि वा तज्जेसि वा तालेसि वा निच्छोडेसि वा निब्भच्छेसि वा, अकाले चेव जीवियाओ° ववरोवेसि, तो ज वदसि नत्थि उट्ठाणे इ वा[11] •कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा°, नियता सव्वभावा, त ते मिच्छा ॥

२७. एत्थ ण से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए सबुद्धे ॥

सद्दालपुत्तस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पद

२८ तए ण से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए समण भगव महावीर वंदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी—इच्छामि ण भते ! तुब्भ अंतिए धम्म निसामेत्तए ॥

२९ तए ण समणे भगव महावीरे सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स तोसे य महइमहालियाए परिसाए जाव[12] धम्म परिकहेइ ॥

३० तए ण से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ[13] •चित्तमाणदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए

---

१ पक्कोल्लय (ग, घ)।
२. स० पा०—अवहरइ वा जाव परिट्ठवेइ।
३ आतोसमि (क, ग)।
४. स० पा०—हणेसि वा जाव अकाले।
५ स० पा०—उट्ठाणे इ वा जाव परक्कमे।
६. निगिया (क); णितिया (ग)।
७. अहण्ण (क, ग, घ)।
८. स० पा०—वाताहत वा जाव परिट्ठवेइ।
९ स० पा०—अग्गिमित्ताए वा जाव विहरइ।
१० स० पा०—आओसेसि वा जाव ववरोवेसि।
११. स० पा०—उट्ठाणे इ वा जाव नियता।
१२. ओ० सू० ७१-७७।
१३. स० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियए जहा आणदो तहा गिहिधम्म पडिवज्जइ, नवर एगा

हरिसवस-विसप्पमाणहियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं। एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! से जहेयं तुब्भे वदह। जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, नो खलु अहं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए। अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जिस्सामि।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि॥

३१ तए णं से सद्दालपुत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए[1] पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता° समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता जेणेव पोलासपुरे नयरे[2], जेणेव सए गिहे, जेणेव अग्गिमित्ता भारिया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अग्गिमित्तं भारियं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिए[3] ! °मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मे निसंते। से वि य धम्मे मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए°। तं गच्छाहि णं तुमं समणं भगवं महावीरं वंदाहि[4] °णमंसाहि सक्कारेहि सम्माणेहि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं° पज्जुवासाहि, समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं गिहिधम्मं[5] पडिवज्जाहि॥

३२ तए णं सा अग्गिमित्ता भारिया सद्दालपुत्तस्स समणोवासगस्स तह त्ति एयमट्ठं विणएण पडिसुणेइ॥

हिरण्णकोडी निहाणपउत्ता एगा हिरण्णकोडी वड्ढिपउत्ता एगा हिरण्णकोडी पवित्थरपउत्ता एगे वए दसगोसाहस्सिएणं जाव समणं।

१. पू०—उवा० १।२४-४५।

२. नयरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पोलासपुरं नयरं मज्झंमज्झेणं (क, ख, ग, घ), प्रथमाध्ययनस्य ४५ सूत्रानुसारेण असौ पाठः अनावश्यकः प्रतिभाति। नास्यार्थसंगतिरपि विद्यते।

३. सं० पा०—देवाणुप्पिए समणे भगवं महावीरे जाव समोसढे तं। अस्य पाठस्य पूर्तिः प्रथमाध्ययनस्य ४५ सूत्रेण जायते। तत्र 'समणे भगवं महावीरे जाव समोसढे' एतादृशः पाठो नास्ति। संभवतः पाठस्य संक्षेपीकरणे किंचित् परिवर्तनं जातम्।

४. सं० पा०—वंदाहि जाव पज्जुवासाहि।

५. गिधिधम्मं (ग)।

अग्गिमित्ताए वंदणट्ठ-गमण-पद

३३ तए ण से सद्दालपुत्ते समणोवासए कोडुंवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! लहुकरणजुत्त-जोइयं[1] समखुरवालिहाण-समलिहियसिंगएहिं जवूणयामयकलावजुत्त-पइविसिट्ठएहिं रययामयघंट-सुत्तरज्जुग-वरकंचणखचिय[2]-नत्थपग्गहोग्गहियएहिं[3] नीलुप्पलकयामेलएहिं[4] पवरगोणजुवाणएहिं नाणामणिकणग-घंटियाजालपरिगयं सुजायजुगजुत्त-उज्जुग-पसत्थसुविरइयनिम्मियं पवरलक्खणोववेयं जुत्तामेव धम्मियं जाणप्पवरं उवट्ठवेह, उवट्ठवेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥

३४. तए ण ते कोडुंवियपुरिसा •सद्दालपुत्तेण समणोवासएण एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणहियया करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामि ! त्ति आणाए विणएण वयणं पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता खिप्पामेव लहुकरणजुत्त-जोइयं जाव[6] धम्मियं जाणप्पवरं उवट्ठवेत्ता तमाणत्तियं° पच्चप्पिणति[5] ॥

३५ तए णं सा अग्गिमित्ता भारिया ण्हाया[7] •कयवलिकम्मा कय-कोउय-मंगल° पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं[8] •मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिया° अप्पमहग्घा-भरणालंकियसरीरा चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा धम्मियं जाणप्पवरं दुरुहइ, दुरुहित्ता पोलासपुरं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सहस्सववणे उज्जाणे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो[9] • आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता° वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे[10] •सुस्सूसमाणा णमंसमाणा अभिमुहे विणएणं° पंजलियडा[11] ठिइया चेव पज्जुवासइ ॥

३६ तए णं समणे भगवं महावीरे अग्गिमित्ताए तीसे य महइमहालियाए परिसाए जाव[12] धम्मं परिकहेइ ॥

---

१ पुस्तकान्तरे यानवर्णको दृश्यते (वृ) ।
२. °खइय (ख) ।
३ नत्थापग्गहो° (ख, ग) ।
४. °कयामलएहिं (ख), °कयमालएहिं (ग) ।
५ सं०पा०—कोडुंवियपुरिसा जाव पच्चप्पिणति ।
६ उवा० १।४७ ।
७. सं० पा०—ण्हाया जाव पायच्छित्ता ।
८. सं० पा०—सुद्धप्पावेसाइं जाव अप्प-महग्घा° ।
९ सं० पा०—तिक्खुत्तो जाव वंदइ ।
१०. सं० पा०—णाइदूरे जाव पंजलियडा ।
११. पंजलिउडा (ख, घ) ।
१२. ओ० सू० ७१-७७ ।

अग्गिमित्ताए गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं

३७ तए ण सा अग्गिमित्ता भारिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ[1] •चित्तमाणदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणहियया उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता° समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी—सद्दहामि ण भते ! निग्गथ पावयण[2], •पत्तियामि ण भते ! निग्गथ पावयण, रोएमि ण भते ! निग्गथ पावयण, अब्भुट्ठेमि ण भते ! निग्गथ पावयण। एवमेय भते ! तहमेय भते। अवितहमेय भते ! असदिद्धमेय भते ! इच्छियमेय भते ! पडिच्छियमेय भते ! इच्छिय-पडिच्छियमेय भते ! से° जहेय तुब्भे वदह। जहा ण देवाणुप्पियाण अतिए वहवे उग्गा भोगा[3] •राइण्णा खत्तिया माहणा भडा जोहा पसत्थारो मल्लई लेच्छई अण्णे य बहवे राईसर-तलवर-माडविय-कोडुविय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुडा भवित्ता अगाराओ अणगारिय° पव्वइया नो खलु अह तहा सचाएमि देवाणुप्पियाण अतिए मुडा भवित्ता[4] •अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए°। अह ण देवाणुप्पियाणं अतिए पचाणुव्वइय सत्तसिक्खावइय—दुवालसविह गिहिधम्म पडिवज्जिस्सामि[5]।

अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिवधं करेहि ॥

३८. तए ण सा अग्गिमित्ता भारिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए पचाणुव्वइय सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविह गिहिधम्म पडिवज्जइ,पडिवज्जित्ता समण भगव महावीर वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता तमेव धम्मिय जाणप्पवर दुरुहइ, दुरुहित्ता जामेव दिस पाउब्भूया, तामेव दिस पडिगया ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

३९ तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ पोलासपुराओ नगराओ सहस्सववणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता वहिया जणवय-विहार विहरइ ॥

सद्दालपुत्तस्स समणोवासग-चरिया-पदं

४० तए ण से सद्दालपुत्ते समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे[6] जाव[7] •समणे

---

१. स० पा०—हट्ठतुट्ठा समण।
२ स० पा०—पावयण जाव जहेय।
३ स० पा०—भोगा जाव पव्वइया।
४. स० पा०—भवित्ता जाव अह।
५. पडिवज्जामि (क, ख, ग, घ)।
६ स० पा०—अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ।
७ उवा० १।५५।

निग्गथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुछणेण ओसह-भेसज्जेण पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-सथारएणं पडिलाभेमाणे विहरइ ॥

अग्गिमित्ताए-समणोवासिय-चरिया-पदं

४१ तए ण सा अग्गिमित्ता भारिया समणोवासिया जाया—अभिगयजीवाजीवा जाव[1] समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेण असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-पडिग्गह-कबल-पायपुछणेण ओसह-भेसज्जेण पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-सथारएणं पडिलाभेमाणी° विहरइ ॥

गोसालस्स आगमण-पदं

४२ तए णं से गोसाले मखलिपुत्ते इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे—एव खलु सद्दालपुत्ते आजीवियसमय वमित्ता समणाणं निग्गथाण दिट्ठि पवण्णे[2], तं गच्छामि णं सद्दालपुत्त आजीविओवासय समणाणं निग्गथाणं दिट्ठि वामेत्ता पुणरवि आजीवियदिट्ठि गेण्हावित्तए त्ति कट्टु—एव सपेहेइ, संपेहेत्ता आजीवियसघ-परिवुडे जेणेव पोलासपुरे नयरे, जेणेव आजीवियसभा, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भंडगनिक्खेव करेइ, करेत्ता कतिवएहिं[3] आजीविएहिं सद्धि जेणेव सद्दालपुत्ते समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ ॥

४३ तए ण से सद्दालपुत्ते समणोवासए गोसाल मंखलिपुत्त एज्जमाण पासइ, पासित्ता नो आढाति[4] नो परिजाणति[5], अणाढामाणे[6] अपरिजाणमाणे तुसिणीए सचिट्ठइ ॥

गोसालेण महावीरस्स गुणकित्तण-पदं

४४ तए ण से गोसाले मंखलिपुत्ते सद्दालपुत्तेण समणोवासएण अणाढिज्जमाणे अपरिजाणिज्जमाणे पीढ-फलग-सेज्जा-सथारट्ठयाए समणस्स भगवओ महा-वीरस्स गुणकित्तणं करेइ[7]—आगए ण देवाणुप्पिया ! इह महामाहणे ?

४५ तए णं से सद्दालपुते समणोवासए गोसाल मखलिपुत्त एव वयासी—के ण देवाणुप्पिया ! महामाहणे ?

तए ण से गोसाले मंखलिपुत्ते सद्दालपुत्त समणोवासय एव वयासी—समणे भगव महावीरे महामाहणे ।

---

१. उवा० १।५६ ।

२ पडिवण्णे (क, घ) ।

३ कतिवतेहिं (क); कइवएहिं (ख, घ) ।

४. अढाति (क, ग) ।

५. परिजाणाति (घ) ।

६. अणाढामीणे (क); अणाढायमाणे (ख, घ) ।

७. करेमाणे सद्दालपुत्त समणोवासय एव वयासी (ख) ।

से केणट्ठेण देवाणुप्पिया ! एव वुच्चइ—समणे भगवं महावीरे महामाहणे ?
एव खलु सद्दालपुत्ता ! समणे भगवं महावीरे महामाहणे उप्पण्णणाणदसणधरे[1] •तीयप्पडुपण्णाणागयजाणए अरहा जिणे केवली सव्वण्णू सव्वदरिसी तेलोक्क-चहिय-महिय-पूइए सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स अच्चणिज्जे पूयणिज्जे वदणिज्जे नमसणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाण मगल देवय चेइय पज्जुवास-णिज्जे॰ तच्च-कम्मसपया-सपउत्ते । से तेणट्ठेण देवाणुप्पिया ! एव वुच्चइ—समणे भगव महावीरे महामाहणे ॥

४६ आगए ण देवाणुप्पिया ! इह महागोवे ?
के ण देवाणुप्पिया ! महागोवे ?
समणे भगव महावीरे महागोवे ।
से केणट्ठेण देवाणुप्पिया[2] ! •एव वुच्चइ –समणे भगव महावीरे॰ महागोवे ?
एव खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगव महावीरे ससाराडवीए बहवे जीवे नस्समाणे विणस्समाणे खज्जमाणे छिज्जमाणे भिज्जमाणे लुप्पमाणे विलुप्पमाणे धम्ममएण दडेण सारक्खमाणे सगोवेमाणे निव्वाणमहावाड साहत्थि सपावेइ । से तेणट्ठेण सद्दालपुत्ता ! एव वुच्चइ –समणे भगव महावीरे महागोवे ॥

४७ आगए[3] ण देवाणुप्पिया ! इह महासत्थवाहे ?
के[4] ण देवाणुप्पिया ! महासत्थवाहे ?
सद्दालपुत्ता ! समणे भगव महावीरे महासत्थवाहे ।
से केणट्ठेण देवाणुप्पिया ! एव वुच्चइ—समणे भगव महावीरे महासत्थवाहे ?
एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगव महावीरे ससाराडवीए बहवे जीवे नस्समाणे विणस्समाणे[5] •खज्जमाणे छिज्जमाणे भिज्जमाणे लुप्पमाणे॰ विलुप्पमाणे उम्मग्गपडिवण्णे[6] धम्ममएण[7] पथेण[8] सारक्खमाणे निव्वाणमहा-पट्टणे[9] साहत्थि सपावेइ । से तेणट्ठेण सद्दालपुत्ता ! एव वुच्चइ—समणे भगव महावीरे महासत्थवाहे ॥

४८ आगए[10] ण देवाणुप्पिया ! इह महाधम्मकही ?

---

१ स॰ पा॰—उप्पण्णणाणदंसणधरे जाव महियपूइए जाव तच्च ।
२ स॰ पा॰—देवाणुप्पिया जाव महागोवे ।
३. आगदे (क) ।
४ से के (क, ख, ग, घ) ।
५ स॰ पा॰—विणस्समाणे जाव विलुप्पमाणे ।
६. × (क) ।
७. धम्ममतेण (क, ग) ।
८ पथेणं (घ) ।
९. निव्वाणमहापट्टणाभिमुहे (ख, घ) ।
१० महासार्थवाहालापकानन्तरं पुस्तकान्तरे इदमपरमधीयते—वृत्तावस्योल्लेखस्यानुसारेण 'महाधम्मकही' इत्यालापक पाठान्तररूपेण स्वीकृतोऽस्ति ।

के[1] ण देवाणुप्पिया ! महाधम्मकही ?

समणे भगव महावीरे महाधम्मकही।

से केणट्ठेण देवाणुप्पिया ! एवं वुच्चइ—समणे भगव महावीरे महाधम्मकही ? एव खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगव महावीरे महइमहालयसि ससारंसि वहवे जीवे नस्समाणे विणस्समाणे खज्जमाणे छिज्जमाणे भिज्जमाणे लुप्पमाणे विलुप्पमाणे उम्मग्गपडिवण्णे सप्पहविप्पणट्ठे मिच्छत्तवलाभिभूए अट्ठविहकम्म-तमपडल[2]-पडोच्छण्णे वहूहि अट्ठेहि य[3] •हेऊहि य पसिणेहि य कारणेहि य वागरणेहि य निप्पट्ठ-पसिण॰वागरणेहि य चाउरताओ ससारकताराओ साहत्थि नित्थारेइ। से तेणट्ठेण देवाणुप्पिया ! एव वुच्चइ—समणे भगव महावीरे महाधम्मकही ॥

४९ आगए ण देवाणुप्पिया ! इह महानिज्जामए ?

के[4] णं देवाणुप्पिया ! महानिज्जामए ?

समणे भगव महावीरे महानिज्जामए।

से केणट्ठेण[5] •देवाणुप्पिया ! एव वुच्चइ—समणे भगव महावीरे महानिज्जा-मए ?॰

एव खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगव महावीरे ससारमहासमुद्दे वहवे जीवे नस्समाणे विणस्समाणे[6] •खज्जमाणे छिज्जमाणे भिज्जमाणे लुप्पमाणे॰ विलुप्पमाणे वुड्डमाणे निवुड्डमाणे उप्पियमाणे[7] धम्ममईए[8] नावाए निव्वाण-तीराभिमुहे साहत्थि सपावेइ। से तेणट्ठेण देवाणुप्पिया ! एव वुच्चइ—समणे भगवं महावीरे महानिज्जामए ॥

विवाद-पट्ठवणा-पसिण-पदं

५०. तए ण से सद्दालपुत्ते समणोवासए गोसाल मखलिपुत्तं एव वयासी—तुब्भे[9] ण देवाणुप्पिया ! इयच्छेया[10] इयदच्छा इयपट्ठा[11] इयनिउणा इयनयवादी इयउव-एसलद्धा[12] इयविण्णाणपत्ता। पभू ण[13] तुब्भे मम धम्मायरिएण धम्मोवएसएण समणेण भगवया महावीरेण सद्धि विवाद करेत्तए ?

नो इणट्ठे समट्ठे।

---

१. से के (क, ख, ग, घ)।
२. पडल (क)।
३. स॰ पा॰—अट्ठेहि य जाव वागरणेहि।
४. से के (क, ख, घ)।
५ स॰ पा॰—केणट्ठेण एव।
६. स॰ पा॰—विणस्समाणे जाव विलुप्पमाणे।
७. उप्पिमाणे (क)।
८. धम्ममतीते (क, ग)।
९ तुब्भ (ग)।
१० इयच्छेयाओ (ख)।
११. इयपत्तट्ठा (वृपा)।
१२. अस्यानन्तर वृत्तौ 'इयमेधाविणो' अस्य पाठान्तरस्य उल्लेखोस्ति।
१३. ण भंते ! (क, ग)।

से केणट्ठेण देवाणुप्पिया ! एव वुच्चइ—नो खलु पभू तुब्भे मम धम्मायरिएण[1] •धम्मोवएसएण समणेणं भगवया° महावीरेण सद्धि विवाद करेत्तए ? सद्दालपुत्ता ! से जहानामए केइ पुरिसे तरुणे जुगव[2] •बलव अप्पायके थिरग्गहत्थे पडिपुण्णपाणिपाए पिट्ठतरोरुसघायपरिणए घणनिचियवट्टवलिय-खधे लघण-वग्गण-जयण-वायाम-समत्थे चम्मेट्ठ-दुघण-मुट्ठिय-समाहय-निचिय-गत्ते उरस्सबलसमन्नागए तालजमलजुयलबाहू छेए दक्खे पत्तट्ठे° निउणसिप्पो-वगए एग मह अय वा एलय वा सूयर वा कुक्कुड वा तित्तर[3] वा वट्टय वा लावय वा कवोय वा कविजल[4] वा वायस वा सेणय[5] वा, हत्थसि वा पायसि वा खुरसि वा पुच्छसि वा पिच्छसि वा सिंगसि वा विसाणसि वा रोमसि वा जहि-जहि गिण्हइ, तहि-तहि निच्चलं निप्फद[6] करेइ[7], एवामेव[8] समणे भगवं महावीरे मम बहूहि अट्ठेहि य हेऊहि य[9] •पसिणेहि य कारणेहि य° वागरणेहि य जहि-जहि गिण्हइ, तहि-तहि निप्पट्ठ-पसिणवागरणं करेइ। से तेणट्ठेणं सद्दाल-पुत्ता ! एव वुच्चइ—नो खलु पभू अह तव धम्मायरिएण[10] •धम्मोवएसएणं समणेण भगवया° महावीरेणं सद्धि विवाद करेत्तए ॥

५१. तए ण से सद्दालपुत्ते ! समणोवासए गोसाल मखलिपुत्त एव वयासी—जम्हा ण 'देवाणुप्पिया ! तुब्भे'[11] मम धम्मायरिस्स[12] •धम्मोवएसगस्स समणस्स भगवओ° महावीरस्स सतेहि तच्चेहि तहिएहि सब्भूएहि भावेहि गुणकित्तण करेह[13], तम्हा ण अह तुब्भे पाडिहारिएण पीढ[14]-•फलग-सेज्जा°-सथारएण उवनिमतेमि, नो चेव ण धम्मो त्ति वा तवो त्ति वा। त गच्छह ण तुब्भे मम कुभारावणेसु पाडिहारिय पीढ-फलग[15]-•सेज्जा-सथारय° ओगिण्हित्ता णं[16] विहरह ॥

५२. तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स एयमट्ठ पडिसुणेइ,

---

१ स० पा०—धम्मायरिएण जाव महावीरेण।
२. स० पा०—जुगव जाव निउणसिप्पोवगए।
३ तित्तर (घ)।
४. कविजलि (घ)।
५. सण्ह (क), सेण्णय (ख)।
६. निप्पद (क)।
७. घरेइ (क, ख, ग)।
८. एवमेव (ख, ग)।
९ स० पा०—हेऊहि य जाव वागरणेहि।
१०. स० पा०—धम्मायरिएण जाव महावीरेण।
११. तुब्भे देवाणुप्पिया (क)।
१२ स० पा०—धम्मायरिस्स जाव महावीरस्स।
१३ करेसि (ख)।
१४. स० पा०—पीढ जाव संथारएण।
१५ स० पा०—फलग जाव ओगिण्हित्ता।
१६. ण उवसपज्जित्ता ण (क, ख, ग, घ)।

पडिसुणेत्ता कुंभारावणेसु पाडिहारियं पीढ[1]-•फलग-सेज्जा-संथारयं॰ ओगि-ण्हित्ता णं विहरइ ॥

५३ तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते सद्दालपुत्तं समणोवासयं जाहे नो संचाएइ बहूहिं आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामेत्तए[2] वा, ताहे संते तंते परितंते पोलासपुराओ नयराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

सद्दालपुत्तस्स धम्मजागरिया-पदं

५४ तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स बहूहिं सील[3]-•व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं॰ भावेमाणस्स चोद्दस संवच्छरा वीइ-क्कंता। पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स 'अण्णदा कदाइ'[4] पुव्वरत्तावरत्तकाल[5]•समयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झ-त्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं पोलासपुरे नयरे बहूणं जाव[6] आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी जाव[7] सव्वकज्जवड्ढावए, तं एतेणं वक्खेवेणं अहं नो संचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए[8] ॥

५५ तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए जेट्ठपुत्तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता पोलासपुरं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चार-पासवण-भूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसंथारयं संथरेइ, संथरेत्ता दब्भसंथारयं दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी उम्मुक्कमणिसुवण्णे ववगयमाला-वण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अबीए दब्भसंथारोवगए॰ समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं[9] उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥

---

१. सं० पा०—पीढ जाव ओगिण्हित्ता।

२. विपरिणावित्तए (ग)।

३. सं० पा०—सील जाव भावेमाणस्स।

४. × (क, ख, ग, घ)।

५. सं० पा०—पुव्वरत्तावरत्तकाले जाव पोसह-सालाए समणस्स। संक्षेपीकरणपद्धतौ प्रायो नैकरूपता लभ्यते। क्वचित् 'जाव' शब्दा-नन्तरं संक्षिप्तपाठस्य अन्तिमशब्दो निविश्यते क्वचिच्च पूर्ववर्तिशब्दः। अत्रापि इत्थमेव विद्यते। तेन द्वितीयाध्ययनस्याधारेणात्र 'दब्भसंथारोवगए' इति पर्यन्तं पाठः पूरितः।

६. उवा० १।१३।

७. उवा० १।१३।

८. पू०—उवा० १।५७-५९।

९. धम्म (क)।

सद्दालपुत्तस्स देवरूव-कय-उवसग्ग-पदं

५६. तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले एगे देवे अंतियं पाउब्भवित्था ।।

°जेट्ठपुत्त

५७ तए णं से देवे एगं महं नीलुप्पल[1]-°गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासं खुरधारं असिं गहाय सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया ! अप्पत्थियपत्थिया ! दुरंत-पंत-लक्खणा ! हीणपुण्णचाउद्दसिया ! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिया ! धम्मकामया ! पुण्णकामया ! सग्गकामया ! मोक्खकामया ! धम्मकंखिया ! पुण्णकंखिया ! सग्गकंखिया ! मोक्खकंखिया ! धम्मपिवासिया ! पुण्णपिवासिया ! सग्गपिवासिया ! मोक्खपिवासिया ! नो खलु कप्पइ तव देवाणुप्पिया ! सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं चालित्तए वा खोभित्तए वा खंडित्तए वा भंजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तए वा, तं जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।।

५८ तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए अतत्थे अणुव्विग्गे अखुभिए अचलिए असंभंते तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ ।।

५९ तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं अतत्थं अणुव्विग्गं अखुभियं अचलियं असंभंतं तुसिणीयं धम्मज्झाणोवगयं विहरमाणं पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया ! जाव[2] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।।

---

१. स० पा०—नीलुप्पल एवं जहा चुलणीपियस्स तहेव देवो उवसग्गं करेइ नवरं एक्केक्के पुत्ते नव मंससोल्लए करेइ जाव कणीयसं घाएइ, २ त्ता जाव आइंचइ ।

२. उवा० २।२२ ।

६०. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेण देवेण दोच्चं पि तच्च पि एव वुत्ते समाणे अभीए जाव[1] विहरइ ॥

६१. तए ण से देवे सद्दालपुत्त समणोवासय अभीय जाव[2] पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चडिक्किए मिसिमिसीयमाणे सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स जेट्ठपुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता नव मससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स गाय मसेण य सोणिएण य आइचइ ॥

६२ तए ण से सद्दालपुत्ते समणोवासए त उज्जल विउल कक्कस पगाढं चड दुक्ख दुरहियास वेयण सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ ॥

° मज्झिमपुत्त

६३ तए ण से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीय जाव[3] पासइ, पासित्ता सद्दालपुत्तं समणोवासय एव वयासी—हभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया ! जाव[4] जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भजेसि, तो ते अह अज्ज मज्झिम पुत्त साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव मससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गाय मसेण य सोणिएण य आइचामि, जहा णं तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

६४ तए ण से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेणं देवेणं एव वुत्ते समाणे अभीए जाव[5] विहरइ ॥

६५ तए ण से देवे सद्दालपुत्त समणोवासयं अभीयं जाव[6] पासइ, पासित्ता दोच्च पि तच्च पि सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—हभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया ! जाव[7] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइं पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज मज्झिम पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव मससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गाय मसेण य सोणिएण य आइचामि, जहा णं तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

६६ तए ण से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेण देवेणं दोच्चं पि तच्च पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[8] विहरइ ॥

---

१. उवा० २।२३ ।
२. उवा० २।२४ ।
३. उवा० २।२४ ।
४. उवा० २।२२ ।
५ उवा० २।२३ ।
६. उवा० २।२४ ।
७. उवा० २।२२ ।
८. उवा० २।२३ ।

६७ तए ण से देवे सद्दालपुत्त समणोवासय अभीय जाव[1] पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स मज्झिम पुत्त गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता नव मससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स गाय मसेण य सोणिएण य आइचइ ॥

६८ तए ण से सद्दालपुत्ते समणोवासए त उज्जल जाव[2] वेयणं सम्म सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ ॥

°कणीयसपुत्त

६९. तए ण से देवे सद्दालपुत्त समणोवासय अभीय जाव[3] पासइ, पासित्ता सद्दालपुत्त समणोवासय एव वयासी—हभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया ! जाव[4] जइ ण तुम अज्ज सीलाइं वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अह अज्ज कणीयसं पुत्त साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव मससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गाय मसेण य सोणिएण य आइचामि, जहा णं तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

७०. तए ण से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेण देवेण एव वुत्ते समाणे अभीए जाव[5] विहरइ ॥

७१. तए ण से देवे सद्दालपुत्त समणोवासय अभीयं जाव[6] पासइ, पासित्ता दोच्च पि तच्च पि सद्दालपुत्त समणोवासय एव वयासी—हभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया ! जाव[7] जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो ते अहं अज्ज कणीयस पुत्त साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव मससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गाय मसेण य सोणिएण य आइचामि, जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

७२ तए ण से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेण देवेण दोच्च पि तच्चं पि एव वुत्ते समाणे अभीए जाव[8] विहरइ ॥

---

१. उवा० २।२४ ।
२ उवा० २।२७ ।
३. उवा० २।२४ ।
४. उवा० २।२२ ।
५. उवा० २।२३ ।
६. उवा० २।२४ ।
७ उवा० २।२२ ।
८ उवा० २।२३ ।

७३ तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं जाव[1] पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसीमिसीयमाणे सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स कणीयसं पुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स गायं मंसेण य सोणिएण य° आइंचइ ।।

७४. [2]तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तं उज्जलं जाव[3] वेयणं सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ ।।

°अग्गिमित्ताभारिया

७५ तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं जाव[4] पासइ, पासित्ता चउत्थं पि सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया[5] ! जाव[6] •जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि° न भंजेसि, 'तो ते'[7] अहं अज्ज जा इमा अग्गिमित्ता भारिया धम्मसहाइया धम्मविइज्जिया धम्माणुरागरत्ता समसुहदुक्खसहाइया, तं[8] साओ[9] गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव मंससोल्लए करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट[10]-•वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ° ववरोविज्जसि ।।

७६ तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[11] विहरइ ।।

७७ तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं जाव[12] पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणो-

---

१. उवा० २।२४।

२ पूर्ववर्ति क्रमानुसारेण (३।३८) स्वीकृतं सूत्रमत्र युज्यते, किन्तु आदर्शेषु नास्य संकेतं प्राप्तोस्ति। संभवतः संक्षेपीकरणे परित्यक्तमिदमभूत्। अस्य स्थाने आदर्शेषु निम्नप्रकारं सूत्रं लभ्यते—'तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए अभीए जाव विहरइ'। नैतद् अत्र उपयुक्तमस्ति।

३. उवा० २।२७।

४. उवा० २।२४।

५ स० पा०—समणोवासिया अप्पत्थियपत्थिया जाव न भंजसि।

६. उवा० २।२२।

७ तओ (क, ख, ग, घ)।

८. तं ते (क, ख, ग, घ)।

९. × (क, ख, ग, घ)।

१०. स० पा०—दुहट्ट जाव ववरोविज्जसि।

११. उवा० २।२३।

१२ उवा० २।२४।

वासया[1] ! ॰जाव[2] जइ ण तुम अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो ते अह अज्ज जा इमा अग्गिमित्ता भारिया धम्मसहाइया धम्मविइज्जिया धम्माणुरागरत्ता समसुहदुक्खसहाइया, त साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव मससोल्ले करेमि, करेत्ता तव गाय मसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि° ।।

सद्दालपुत्तस्स कोलाहल-पद

७८ तए ण तस्स सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स तेण देवेण दोच्च पि तच्च पि एव वुत्तस्स समाणस्स अय अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था[3]—॰अहो णं इमे पुरिसे अणारिए अणारियबुद्धी अणारियाइ पावाइ कम्माइ समाचरति,° जे ण मम जेट्ठं पुत्त, जे णं ममं मज्झिमय पुत्तं, जेण मम कणीयस पुत्त[4] ॰साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता नव मससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता मम गाय मसेण य सोणिएण य° आइचइ, जा वि य णं मम इमा अग्गिमित्ता भारिया[5] ॰धम्मसहाइया धम्मविइज्जिया धम्माणुरागरत्ता° समसुहदुक्खसहाइया[6], त पि य इच्छइ साओ गिहाओ नीणेत्ता मम अग्गओ घाएत्तए । त सेय खलु मम एय पुरिस गिण्हित्तए त्ति कट्टु उद्धाविए[7], ॰से वि य आगासे उप्पइए, तेण च खभे आसाइए, महया-महया सद्देण कोलाहले कए ।।

अग्गिमित्ताए पसिण-पदं

७९ तए ण सा अग्गिमित्ता भारिया त कोलाहलसद्द सोच्चा निसम्म जेणेव सद्दालपुत्ते समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सद्दालपुत्त समणोवासय एव वयासी—किण्ण देवाणुप्पिया ! तुब्भे ण महया-महया सद्देण कोलाहले कए ?

सद्दालपुत्तस्स उत्तर-पदं

८०. तए ण से सद्दालपुत्ते समणोवासए अग्गिमित्त भारिय एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिए ! न याणामि के वि पुरिसे आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चडिक्किए

---

१ स० पा०—समणोवासया त चेव भणइ ।
२ उवा० २।२२ ।
३ स० पा०—समुप्पज्जित्था एव जहा चुलणीपिया तहेव चिंतेइ ।
४. स० पा०—पुत्त जाव आइचइ ।
५. स० पा०—भारिया जाव सम° ।
६ ममसुहदुक्ख° (ख) ।
७ स० पा०—उद्धाविए जहा चुलणीपिया तहेव सव्व भाणियव्व । नवर अग्गिमित्ता भारिया कोलाहलं सुणित्ता भणइ । सेस जहा चुलणीपिया वत्तव्वया सव्वा नवर अरुणच्चए विमाणे उववातो जाव महाविदेहे ।

मिसिमिसीयमाणे एगं महं नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासं खुरधारं असिं गहाय ममं एवं वयासी—हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया ! जाव[1] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि। तए णं अहं तेणं पुरिसेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[2] विहरामि। तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव[3] पासइ, पासित्ता ममं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया ! जाव[4] जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि।

तए णं अहं तेणं पुरिसेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[5] विहरामि।

तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव[6] पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे ममं जेट्ठपुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता ममं अग्गओ घाएइ, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ।

तए णं अहं तं उज्जलं जाव[7] वेयणं सम्मं सहामि खमामि तितिक्खामि अहियासेमि।

एवं मज्झिमं पुत्तं जाव[8] वेयणं सम्मं सहामि खमामि तितिक्खामि अहियासेमि।

एवं कणीयसं पुत्तं जाव[9] वेयणं सम्मं सहामि खमामि तितिक्खामि अहियासेमि।

तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव[10] पासइ, पासित्ता ममं चउत्थं पि एवं वयासी—हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया ! जाव[11] जइ णं तुमं अज्ज

१. उवा० २।२२।
२. उवा० २।२३।
३. उवा० २।२४।
४. उवा० २।२२।
५. उवा० २।२३।
६. उवा० २।२४।
७. उवा० २।२७।
८. उवा० ७।६२-६७।
९. उवा० ७।६८-७३।
१०. उवा० २।२४।
११. उवा० २।२२।

सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो ते अह अज्ज जा इमा अग्गिमित्ता भारिया धम्मसहाइया धम्मविइज्जिया धम्माणुरागरत्ता समसुहदुक्खसहाइया त साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव मससोल्ले करेमि करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मसेण य सोणिएण य आइचामि, जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए ण अह तेण पुरिसेण एव वुत्ते समाणे अभीए जाव विहरामि ।

तए ण से पुरिसे मम अभीय जाव[1] दोच्च पि तच्च पि मम एव वयासी—हभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया ! जाव[2] जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो जाव तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जोवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए ण तेण पुरिसेण दोच्च पि तच्च पि मम एव वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो ण इमे पुरिसे अणारिए अणारियबुद्धी अणारियाइ पावाइ कम्माइ समाचरति, जे ण मम जेट्ठपुत्त, जे ण मम मज्झिमय पुत्त, जे ण मम कणीयस पुत्त साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता नव मससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता मम गाय मसेण य सोणिएण य आइचइ, तुम पि य ण इच्छइ साओ गिहाओ नीणेत्ता मम अग्गओ घाएत्तए, तं सेय खलु मम एय पुरिस गिण्हित्तए त्ति कट्टु उद्धाविए, से वि य आगासे उप्पइए, मए वि य खभे आसाइए, महया-महया सद्देण कोलाहले कए ।।

पायच्छित्त-पदं

८१. तए ण सा अग्गिमित्ता भारिया सद्दालपुत्त समणोवासय एव वयासी—नो खलु केइ पुरिसे तव जेट्ठपुत्त साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, नो खलु केइ पुरिसे तव मज्झिमय पुत्त साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, नो खलु केइ पुरिसे तव कणीयस पुत्त साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, एस ण केइ पुरिसे तव उवसग्ग करेइ, एस ण तुम विदरिसणे दिट्ठे । त ण तुम इयाणि भग्गवए भग्गनियमे भग्गपोसहे विहरसि । तं ण तुम पिया ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि पडिक्कमाहि निंदाहि गरिहाहि विउट्टाहि विसोहेहि अकरणयाए अब्भुट्ठाहि अहारिह पायच्छित्त तवोकम्म पडिवज्जाहि ।।

८२. तए ण से सद्दालपुत्ते समणोवासए अग्गिमित्ताए भारियाए तह त्ति एयमट्ठ

---

१. उवा० २।२४ ।   २ उवा० २।२२ ।

विणएणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तस्स ठाणस्स आलोएइ पडिक्कमइ निंदइ गरिहइ विउट्टइ विसोहेइ अकरणयाए अब्भुट्ठेइ अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्म पडिवज्जइ ॥

सद्दालपुत्तस्स उवासगपडिमा-पदं

८३ तए ण से सद्दालपुत्ते समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसपज्जित्ता ण विहरइ ॥

८४ तए ण से सद्दालपुत्ते समणोवासए पढम उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्ग अहातच्च सम्म काएण फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥

८५ तए ण से सद्दालपुत्ते समणोवासए दोच्च उवासगपडिम, एव तच्च, चउत्थं पचम, छट्ठ, सत्तमं, अट्ठम, नवम, दसमं, एक्कारसम उवासगपडिमं अहासुत्त अहाकप्प अहामग्गं अहातच्चं सम्म काएण फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥

८६ तए ण से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेणं ओरालेणं विउलेण पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेण सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसतए जाए ॥

सद्दालपुत्तस्स अणसण-पदं

८७ तए ण तस्स सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स अण्णदा कदाइ, पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अय अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं एयारूवेण ओरालेणं विउलेणं पयत्तेण पग्गहिएण तवोकम्मेण सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडि-याभूए किसे धमणिसंतए जाए। त अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरि-सक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-सवेगे, त जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-सवेगे,जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगव महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[1] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते अपच्छिम-मारणतियसलेहणा-झूसणा-झूसियस्स भत्तपाणपडियाइक्खियस्स, कालं अणव-कखमाणस्स विहरित्तए—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणतिय-सलेहणा-झूसणा-झूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए कालं अणवकखमाणे विहरइ ॥

सद्दालपुत्तस्स समाहिमरण-पदं

८८ तए ण से सद्दालपुत्ते समणोवासए वहूहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेत्ता वीस वासाइं समणोवासगपरियाग पाउणित्ता,

एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्मं काएणं फासित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताण झूसित्ता, सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कते समाहि-पत्तो कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे अरुणच्चए विमाणे देवत्ताए उववण्णे।

चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। ° महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणमत काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

८९ [1]•एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण उवासगदसाण सत्तमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ° ॥

---

१. स० पा०—निक्खेवो।

अट्ठमं अज्झयणं

महासतए

उक्खेव-पद

१ [1]•जइ ण भंते ! समणेण भगवया महावीरेणं जाव[2] संपत्तेण सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाण सत्तमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, अट्ठमस्स ण भंते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? ०

महासतयगाहावइ-पदं

२. एव खलु जंबू ! तेण कालेण तेण समएणं रायगिहे नयरे । गुणसिलए चेइए । सेणिए राया ।।

३. तत्थ ण रायगिहे नयरे महासतए[3] नाम गाहावई परिवसइ—अड्ढे[4] •जाव[5] बहुजणस्स अपरिभूए ।।

४. तस्स ण महासतयस्स गाहावइस्स अट्ठ हिरण्णकोडीओ सकसाओ निहाणपउत्ताओ, अट्ठ हिरण्णकोडीओ सकसाओ वड्ढिपउत्ताओ, अट्ठ हिरण्णकोडीओ सकसाओ पवित्थरपउत्ताओ, अट्ठ वया दसगोसाहस्सिएण वएण होत्था ।।

५ से ण महासतए गाहावई बहूण जाव[6] आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य ण कुडुंबस्स मेढी जाव[7] सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था ०।।

६. तस्स ण महासतयस्स गाहावइस्स रेवतीपामोक्खाओ[8] तेरस भारियाओ होत्था—

---

१ स० पा०—उक्खेवो ।

२ ना० १।१।७ ।

३ महासतते (क), महासयय (ख) ।

४. स० पा०—अड्ढे जहा आणदो नवर अट्ठ हिरण्णकोडीओ सकसाओ निहाणपउत्ताओ अट्ठ हि वड्ढि अट्ठ हि सकसाओ पवि अट्ठवया दसगोसाहस्सिएण वएण ।

५ उवा० १।११ ।

६,७ उवा० १।१३ ।

८. रेवई० (ख, घ) ।

अहीण[1]-•पडिपुण्ण-पचिंदियसरीराओ जाव[2] माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणीओ विहरति °।।

७ तस्स ण महासतयस्स रेवतीए भारियाए कोलहरियाओ[3] अट्ठ हिरण्णकोडीओ, अट्ठ वया दसगोसाहस्सिएण वएण होत्था। अवसेसाण दुवालसण्हं भारियाण कोलहरिया[4] एगमेगा हिरण्णकोडी, एगमेगे य वए दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था ।।

महावीर-समवसरण-पदं

८ तेणं कालेण तेणं समएण सामी समोसढे ।।

९ परिसा निग्गया ।।

१० •[5] कूणिए राया जहा, तहा सेणिओ निगच्छइ जाव[6] पज्जुवासइ ।।

११. तए ण से महासतए गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे—"एव खलु समणे भगव महावीरे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे इहमागए इह सपत्ते इह समोसढे इहेव रायगिहस्स नयरस्स वहिया गुणसिलए चेइए अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ।" त महप्फल खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहारूवाण अरहताण भगवताण णामगोयस्स वि सवणयाए, किमग पुण अभिगमण-वदण-णमसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? त गच्छामि ण देवाणुप्पिया ! समण भगव महावीर वदामि णमसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाण मगल देवय चेइय पज्जुवासामि—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता ण्हाए कयबलिकम्मे कय-कोउय-मगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइ मगल्लाइ वत्थाइ पवर परिहिए अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सकोरेटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण मणुस्सवग्गुरापरिखित्ते पादविहार-चारेण रायगिह नयरं मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव गुणसिलए चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमसमाणे अभिमुहे विणएण पजलिउडे पज्जुवासइ ।।

---

१ स० पा०—अहीण जाव सुरूवाओ ।
२ उवा० १।१४ ।
३ कोलघरियाओ (ख) ।
४, कोलघरिया (क, ख, ग, घ) ।
५ स० पा०—जहा आणदो तहा निगच्छइ । तहेव सावयधम्म पडिवज्जइ ।
६ ओ० सू० ५३-६९ ।

१२ तए णं समणे भगवं महावीरे महासतयस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए जाव[1] धम्मं परिकहेइ ॥

१३ परिसा पडिगया, राया य गए ॥

महासतयस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं

१४ तए णं महासतए गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण-हियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं। एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! से जहेयं तुब्भे वदह। जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, नो खलु अहं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए। अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जिस्सामि।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि ॥

१५ तए णं से महासतए गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए[2]° सावयधम्मं पडिवज्जइ, नवरं—अट्ठ हिरण्णकोडीओ सकंसाओ[3]। अट्ठ वया। रेवतीपामोक्खाहिं तेरसहिं भारियाहिं अवसेसं मेहुणविहिं पच्चक्खाइ[4]। इमं च णं एयारूवं अभिग्गहं अभिगेण्हति—कल्लाकल्लिं 'च णं'[5] कप्पइ मे बेदोणियाए[6] कंसपाईए हिरण्णभरियाए संववहरित्तए ॥

महासतयस्स समणोवासग-चरिया-पदं

१६ तए णं से महासतए समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे[7] जाव[8] °समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसहभेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणे° विहरइ ॥

---

१. ओ० सू० ७१-७७।
२. पू०—उवा० २४-४५।
३. सकंसाओ उच्चारेति (क, ख, ग)।
४. पच्चक्खाइ सेसं सव्वं तहेव (क, ख, ग, घ)।
५. × (ख)।
६. पेदोणि° (क)।
७. सं० पा०—अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ।
८. उवा० १।५५।

भगवओ जणवयविहार-पदं

१७. तए ण समणे भगव महावीरे बहिया जणवयविहार विहरइ[1] ॥

रेवतीए चिंता-पदं

१८. तए ण तीसे रेवतीए गाहावइणीए अण्णदा कदाइ[2] पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि कुडुब[3] •जागरिय जागरमाणीए° इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु अह इमासि दुवालसण्ह सपत्तीण[4] विघातेण[5] नो सचाएमि[6] महासतएण समणोवासएणं सद्धि ओरालाइ माणुस्सयाइ भोगभोगाइ भुजमाणी विहरित्तए। ते सेय खलु मम एयाओ दुवालस वि सवत्तीओ[7] अग्गिपओगेण वा सत्थप्पओगेण वा विसप्पओगेण वा जीवियाओ ववरोवित्ता एतासि[8] एगमेग हिरण्णकोडिं एगमेग वय सयमेव उवसपज्जित्ता ण महासतएण समणोवासएण सद्धि ओरालाइ[9] •माणुस्सयाइ भोगभोगाइ भुजमाणी° विहरित्तए—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता तासि दुवालसण्ह सवत्तीण अतराणि य छिद्दाणि य 'विरहाणि य'[10] पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरइ ॥

रेवतीए सवत्ती-उद्दवण-पदं

१९ तए ण सा रेवती गाहावइणी अण्णदा कदाइ तासि दुवालसण्ह सवत्तीण अतर जाणित्ता छ सवत्तीओ सत्थप्पओगेण[11] उद्दवेइ, छ सवत्तीओ विसप्पओगेण उद्दवेइ, उद्दवेत्ता तासि दुवालसण्ह सवत्तीण कोलघरिय एगमेग हिरण्णकोडिं, एगमेग वय सयमेव पडिवज्जित्ता महासतएण समणोवासएण सद्धि ओरालाइ माणुस्सयाइ भोगभोगाइ भुजमाणी विहरइ ॥

रेवतीए मंसमज्जासायण-पदं

२० तए ण सा रेवती गाहावइणी मसलोलुया मसमुच्छिया[12] •मसगढिया मसगिद्धा

---

१ प्राक्तनेषु अध्ययनेषु भगवतो विहारसूत्र पूर्वं तदुत्तर च श्रावकभवनसूत्र लभ्यते। इह च पूर्व श्रावकभवनसूत्र तदुत्तर च भगवतो विहारसूत्र वर्तते। असौ क्रम समीचीन. प्रतिभाति।

२ कयाइं (घ)।

३ स० पा०—कुडुब जाव इमेयारूवे।

४ पत्तीण (क), सवत्तीण (ख)।

५ विघाएण (ख, घ)।

६ सवादेमि (ख)।

७ सवत्तीयाओ (ख)।

८ एताण (क), एयासि (ख, घ)।

९ स० पा०—उरालाइ जाव विहरित्तए।

१० विहराणि य विवराणि य (क), विवराणि य (ख)।

११ सत्यप्पतोतेण (क, ग)।

१२ स० पा०—मसमुच्छिया जाव अज्झोववण्णा। मसेसु मुच्छिया (क, ख, घ), मससमुच्छिया (ग)।

मस॰अज्झोववण्णा बहुविहेहि मसेहिं[1] सोल्लेहि य तलिएहि य[2] भज्जिएहि य[3] 'सुर च मह्रु च मेरग च मज्ज च सीधु च पसण्ण च'[4] आसाएमाणी विसाएमाणी परिभाएमाणी परिभुजेमाणी विहरइ ॥

अमाघाय-पद

२१ तए ण रायगिहे नयरे अण्णदा कदाइ अमाघाए घुट्ठे यावि[5] होत्था ॥

२२ तए ण सा रेवती गाहावइणी मसलोलुया मसमुच्छिया मसगढिया मंसगिद्धा मसअज्झोववण्णा कोलघरिए पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी— तुब्भे देवाणुप्पिया ! मम कोलहरिएहिंतो[6] वएहिंतो कल्लाकल्लि दुवे-दुवे गोणपोयए उद्दवेह, उद्दवेत्ता मम उवणेह ॥

२३. तए ण ते कोलघरिया पुरिसा रेवतीए गाहावइणीए तह त्ति एयमट्ठ विणएणं पडिसुणति, पडिसुणित्ता रेवतीए गाहावइणीए कोलहरिएहिंतो[7] वएहिंतो कल्लाकल्लि दुवे-दुवे गोणपोयए[8] वहेति,[9] वहेत्ता रेवतीए गाहावइणीए उवणेति ॥

२४. तए ण सा रेवती गाहावइणी तेहिं गोणमसेहिं[10] सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि सुर च महु च मेरगं च मज्ज च सीधु च पसण्ण च आसाएमाणी विसाएमाणी परिभाएमाणी परिभुजेमाणी विहरइ ॥

महासतगस्स धम्मजागरिया-पदं

२५ तए ण तस्स महासतगस्स समणोवासगस्स बहूहि सील-व्वय[11]-॰गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि अप्पाण॰ भावेमाणस्स चोद्दस सवच्छरा वीइक्कता[12]। ॰पण्णरसमस्स सवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु अह रायगिहे नयरे बहूण जाव[13] आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य ण कुडुबस्स मेढी जाव[14] सव्वकज्जवड्ढावए, त एतेण वक्खेवेण अहं नो सचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मपण्णत्ति उवसपज्जित्ता ण विहरित्तए[15] ॥

---

१ मसेहि य (क, ख, ग, घ)।
२ × (क, ग, घ)।
३ × (घ)।
४. सुर च पसन्नं च (क)।
५ वि (क)।
६ घोलघरिए (क)।
७ कोल्ल॰ (घ)।
८. गोणपोतलए (क)।
९ उवहति (ख), गहिति (ग, घ)।
१०. गोमंसेहिं (क, ग)।
११ स॰ पा॰—सीलव्वय जाव भावेमाणस्स।
१२ स॰ पा॰—वीइक्कता एवं तहेव जेट्ठपुत्त ठवेइ जाव पोसहसालाए धम्मपण्णत्तिं।
१३. उवा॰ १।१३।
१४. उवा॰ १।१३।
१५. पू॰—उवा॰ १।५७-५९।

२६. तए णं से महासतए समणोवासए जेट्ठपुत्त मित्त-नाइ-नियग-सयण-सबधि-परि-जण च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता रायगिह नयर मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसहसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसाल पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चार-पासवणभूमि पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसथारय सथरेइ, सथरेत्ता दब्भसथारय दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए बभयारी उम्मुक्कमणिसुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अबीए दब्भसथारोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय॰ धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता ण विहरइ ॥

महासतगस्स अणुकूल-उवसग्ग-पदं

२७ तए णं सा रेवती गाहावइणी मत्ता लुलिया विइण्णकेसी उत्तरिज्जय 'विकड्ढ-माणी-विकड्ढमाणी'[1] जेणेव पोसहसाला, जेणेव महासतए समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मोहुम्मायजणणाइ सिगारियाइ इत्थिभावाइ उवदंसे-माणी[2]-उवदसेमाणी महासतय समणोवासय एव वयासी—हभो! महासतया! समणोवासया! धम्मकामया! पुण्णकामया! सग्गकामया! मोक्खकामया! धम्मकखिया! पुण्णकखिया! सग्गकखिया! मोक्खकखिया! धम्मपिवा-सिया! पुण्णपिवासिया! सग्गपिवासिया! मोक्खपिवासिया! 'किं ण'[3] तुब्भ देवाणुप्पिया! धम्मेण वा पुण्णेण वा सग्गेण वा मोक्खेण वा, ज ण तुम मए सद्धि ओरालाइ[4] •माणुस्सयाइ भोगभोगाइ॰ भुजमाणे नो विहरसि?

२८ तए ण से महासतए समणोवासए रेवतीए गाहावइणीए एयमट्ठ नो आढाइ नो परियाणाइ, अणाढायमाणे[5] अपरियाणमाणे[6] तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ ॥

२९ तए ण सा रेवती गाहावइणी महासतय समणोवासय दोच्च पि तच्च पि एव वयासी—हभो[7]! •महासतया! समणोवासया[8]! किं णं तुब्भं देवाणुप्पिया! धम्मेण वा पुण्णेण वा सग्गेण वा मोक्खेण वा, ज णं तुम मए सद्धि ओरालाइ माणुस्सयाइ भोगभोगाइ भुजमाणे नो विहरसि?

---

१ कड्ढिज्जमाणी-कड्ढिज्जमाणी (क), विकट्ट-माणी-विकट्टमाणी (ख)।
२ दसेमाणी २ (ख)।
३. किण्ण (घ)।
४ स॰ पा॰—उरालाइ जाव भुजमाणे।
५ अणाढाइज्जमीणे (क), अणाढाइज्जमाणे (ख, ग, घ)।
६ अपरियाणिज्जमीणे (क), अपरियाणिज्जमाणे (ख,ग,घ)।
७ स॰ पा॰—हभो! त चेव भणइ सो वि तहेव जाव अणाढायमाणे।
८ पू॰—उवा॰ ८।२७।

३०. तए णं से महासतए समणोवासए रेवतीए गाहावइणीए दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे एयमट्ठं नो आढाइ नो परियाणाइ°, अणाढायमाणे अपरियाणमाणे विहरइ ॥

३१. तए णं सा रेवती गाहावइणी महासतएणं समणोवासएणं अणाढाइज्जमाणी अपरियाणिज्जमाणी जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ॥

महासतगस्स उवासगपडिमा-पदं

३२. तए णं से महासतए समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ।

३३. [1]•तए णं से महासतए समणोवासए पढमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥

३४. तए णं से महासतए समणोवासए दोच्चं उवासगपडिमं, एवं तच्चं, चउत्थं, पंचमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं, एक्कारसमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ° ॥

३५. तए णं से महासतए समणोवासए तेणं ओरालेणं[2] •विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए° किसे धमणिसंतए जाए ॥

महासतगस्स अणसण-पदं

३६. तए णं तस्स महासतगस्स समणोवासयगस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकाले धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं ओरालेणं[3] •विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए। तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, तं जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[4] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-

१. सं० पा०—पढमं अहासुत्तं जाव एक्कारसमं वि।

२. सं० पा०—उरालेणं जाव किसे।

३. सं० पा०—उरालेणं तवोकम्मेणं जहा आणंदो तहेव अपच्छिम°।

४. उवा० १।५७°।

झूसणा-झूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खियस्स, कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते° 'अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-झूसणा-झूसिए'[1] भत्तपाण-पडियाइक्खिए कालं अणवकंखमाणे विहरइ ॥

महासतगस्स ओहिनाणुप्पत्ति-पदं

३७ तए णं तस्स महासतगस्स समणोवासगस्स सुभेणं अज्झवसाणेणं[2] •सुभेणं परिणामेणं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं, तदावरणिज्जाणं कम्माणं° खओवसमेणं ओहिणाणे समुप्पण्णे पुरत्थिमे णं लवणसमुद्दे जोयणसाहस्सियं खेत्तं जाणइ पासइ, [3]•दक्खिणे णं लवणसमुद्दे जोयणसाहस्सियं खेत्तं जाणइ पासइ, पच्चत्थिमे णं लवणसमुद्दे जोयणसाहस्सियं खेत्तं जाणइ पासइ° उत्तरे णं जाव चुल्लहिमवंतं वासहरपव्वयं जाणइ पासइ, [उड्ढं जाव सोहम्मं कप्पं जाणइ पासइ ?][4] अहे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुयं नरयं चउरासीइवाससहस्सट्ठिइयं जाणइ पासइ ॥

महासतगस्स पुणरवि अणुकूल-उवसग्ग-पदं

३८ तए णं सा रेवती गाहावइणी अण्णदा कदाइ मत्ता[5] •लुलिया विइण्णकेसी° उत्तरिज्जयं विकड्ढमाणी-विकड्ढमाणी 'जेणेव पोसहसाला, जेणेव महासतए समणोवासए'[6], तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता महासतयं[7] •समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! महासतया ! समणोवासया[8] ! किं णं तुब्भं देवाणुप्पिया ! धम्मेण वा पुण्णेण वा सग्गेण वा मोक्खेण वा, जं णं तुमं मए सद्धिं ओरालाइं माणुस्सयाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे नो विहरसि ?

३९ तए णं से महासतए समणोवासए रेवतीए गाहावइणीए एयमट्ठं नो आढाइ नो

---

१. °संलेहणाए झूसियसरीरे (क,ख,ग,घ)।

२ सं० पा०—अज्झवसाणेणं जाव खओवसमेणं।

३ सं० पा०—एवं दक्खिणे णं पच्चत्थिमे णं उत्तरे णं।

४. कोष्ठकान्तर्वर्ती पाठः प्रयुक्तादर्शेषु कस्मिन्नपि नोपलभ्यते। 'अहे इमीसे रयणप्पभाए…जाणइ पासइ' एष पाठः 'क' प्रतौ नास्ति। संभवतः संक्षिप्तलिपिपद्धत्या परिवर्तनमिदं जातम्। अत्र द्वावपि पाठौ युज्येते।

५ सं० पा०—मत्ता जाव उत्तरिज्जयं।

६. जेणेव महासत्तए समणोवासए जेणेव पोसहसाला (क,ख,ग,घ)। अत्र संभवतो लिपिदोषेण क्रमपरिवर्तनं जातम्। किन्तु पूर्वसूत्रस्य (सू २६) अनुसारेण स्वीकृतपाठ एव उपयुज्यते।

७ सं० पा०—महासतयं तहेव भणइ जाव दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—हंभो ! तहेव।

८. पू०—उवा० ८।२७।

परियाणाइ, अणाढायमाणे अपरियाणमाणे तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ ।।

४० तए णं सा रेवती गाहावइणी महासतयं समणोवासयं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—हंभो ! महासतया ! समणोवासया[1] ! किं णं तुब्भं देवाणुप्पिया ! धम्मेण वा पुण्णेण वा सग्गेण वा मोक्खेण वा, जं णं तुमं मए सद्धिं ओरालाइं माणुस्सयाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे नो विहरसि ? ०

महासतगस्स विक्खेव-पदं

४१ तए णं से महासतए समणोवासए रेवतीए गाहावइणीए दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे आसुरत्ते[2] रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे ओहिं पउंजइ, पउंजित्ता ओहिणा आभोएइ, आभोएत्ता रेवतिं गाहावइणिं एवं वयासी—हंभो ! रेवती ! अप्पत्थियपत्थिए ! दुरंत-पंत-लक्खणे ! हीणपुण्ण-चाउद्दसिए ! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिए ! एवं खलु तुमं अंतं सत्तरत्तस्स अलसएणं[3] वाहिणा अभिभूया समाणी अट्ट-दुहट्ट-वसट्टा असमाहि-पत्ता कालमासे कालं किच्चा अहे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुए नरए चउरासीतिवाससहस्सट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिसि ।।

४२ तए णं सा रेवती गाहावइणी महासतएणं समणोवासएणं एवं वुत्ता समाणी[4]—रुट्ठे णं ममं महासतए समणोवासए ! हीणे णं ममं महासतए समणोवासए ! अवज्झाया णं अहं महासतएणं समणोवासएणं, न नज्जइ णं अहं केणावि[5] कु-मारेण मारिज्जिस्सामि—त्ति कट्टु भीया तत्था तसिया उव्विग्गा संजाय-भया सणियं-सणियं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता जेणेव सए गिहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ओहयमणसंकप्पा[7] •चिंतासोगसागरसंपविट्ठा करयल-पल्हत्थमुहा अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठिया° झियाइ ।।

४३ तए णं सा रेवती गाहावइणी अंतो सत्तरत्तस्स अलसएणं[8] वाहिणा अभिभूया अट्ट-दुहट्ट-वसट्टा कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुय-च्चुए नरए चउरासीतिवाससहस्सट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णा ।।

---

१ पू०—उवा० ८।२७।

२ आसुरुत्त (क,ख,ग,घ)।

३. आलस्सएणं (क); आलस्सएण (ख)।

४ समाणी एवं च (क,ग,घ); समाणी एवं वयासी (ख), किन्तु प्रकरणानुसारेण नैव युज्यते।

५ × (ग, घ)।

६. केणति (क); केण वि (ख, घ)।

७. सं० पा०—ओहयमणसंकप्पा जाव झियाइ।

८ आलस्सएण (क); आलसएण (ख); अलस्सएण (ग)।

महावीर-समवसरण-पदं

४४ तेणं कालेणं तेण समएणं समणे भगवं महावीरे समोसरिए ॥

४५. परिसा पडिगया ॥

महासतगस्स अंतिए गोतम-पेसण-पदं

४६ गोयमाइ ! समणे भगवं महावीरे भगव गोयम एव वयासी—एव खलु गोयमा ! इहेव रायगिहे नयरे मम अंतेवासी महासतए नाम समणोवासए पोसहसालाए अपच्छिममारणतियसलेहणाए झूसियसरीरे भत्तपाण-पडियाइक्खिए, काल अणवकंखमाणे विहरइ ॥

तए ण तस्स महासतगस्स समणोवासगस्स रेवती गाहावइणी मत्ता[1] •लुलिया विइण्णकेसी उत्तरिज्जय° विकड्ढमाणी-विकड्ढमाणी जेणेव पोसहसाला, जेणेव महासतए समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मोहुम्माय[2] •जणणाइ सिंगारियाइ इत्थिभावाइ उवदसेमाणी-उवदसेमाणी महासतय समणोवासय एव वयासी—हभो ! महासतया ! समणोवासया[3] ! कि ण तुब्भ देवाणुप्पिया ! धम्मेण वा पुण्णेण वा सग्गेण वा मोक्खेण वा, ज ण तुम मए सद्धि ओरालाइ माणुस्सयाइ भोगभोगाइ भुजमाणे नो विहरसि ?

तए ण से महासतए समणोवासए रेवतीए गाहावइणीए एयमट्ठ नो आढाइ नो परियाणाइ, अणाढायमाणे अपरियाणमाणे तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ।

तए ण सा रेवती गाहावइणी महासतय समणोवासय° दोच्च पि तच्च पि एवं वयासी।

तए ण से महासतए समणोवासए रेवतीए गाहावइणीए दोच्चं पि तच्च पि एव वुत्ते समाणे आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चडिक्किए मिसिमिसीयमाणे ओहिं पउजइ, पउजित्ता ओहिणा आभोएइ, आभोएत्ता रेवतिं गाहावइणिं एव वयासी[4]—•हभो ! रेवती ! अप्पत्थियपत्थिए ! दुरत-पत-लक्खणे ! हीणपुण्ण-चाउद्दसिए ! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिए ! एव खलु तुम अतो सत्त-रत्तस्स अलसएण वाहिणा अभिभूया समाणी अट्ट-दुहट्ट-वसट्टा असमाहिपत्ता कालमासे काल किच्चा अहे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुए नरए चउरासीतिवाससहस्सट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए° उववज्जिहिसि।

नो खलु कप्पइ गोयमा ! समणोवासगस्स अपच्छिम[5] •मारणतियसलेहणा-

---

१. स० पा०—मत्ता जाव विकड्ढमाणी।

२ स० पा०—मोहुम्माय जाव एव वयासी तहेव जाव दोच्चं पि।

३ पू०—उवा० ८।२७।

४ स० पा०—वयासी जाव उववज्जिहिसि।

५. स० पा०—अपच्छिम जाव झूसियस्स।

झूसणा०-झूसियस्स[1] भत्तपाण-पडियाइक्खियस्स[2] परो सतेहि तच्चेहिं तहिएहिं सब्भूएहिं[3] अणिट्ठेहि अकतेहि अप्पिएहि अमणुण्णेहि अमणामेहि वागरणेहिं वागरित्तए। तं गच्छ ण देवाणुप्पिया! तुम महासतय समणोवासय एव वयाहि—नो खलु देवाणुप्पिया! कप्पइ समणोवासगस्स अपच्छिम[4]•मारणतिय-सलेहणा-झूसणा-झूसियस्स० भत्तपाण-पडियाइक्खियस्स परो सतेहिं[5] •तच्चेहिं तहिएहि सब्भूएहि अणिट्ठेहिं अकतेहि अप्पिएहिं अमणुण्णेहि अमणा-मेहि वागरणेहि० वागरित्तए तुमे य ण देवाणुप्पिया! रेवती गाहावइणी सतेहि तच्चेहि तहिएहि सब्भूएहिं अणिट्ठेहिं अकतेहिं अप्पिएहिं अमणुण्णेहि अमणामेहिं वागरणेहि वागरिया। त ण तुम एयस्स ठाणस्स आलोएहि[6]•पडिक्क-माहि निंदाहि गरिहाहि विउट्टाहि विसोहेहि अकरणयाए अब्भुट्ठाहि० अहारिह[7] पायच्छित्त तवोकम्म पडिवज्जाहि ॥

गोतमस्स आगमण-पद

४७ तए ण से भगव गोयमे समणस्स भगवओ महावीरस्स तह त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता रायगिह नयर मज्झमज्झेण अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव महासतगस्स समणोवासगस्स गिहे[8] जेणेव महासतए समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ ॥

महासतगस्स वंदण-पदं

४८ तए ण से महासतए समणोवासए भगव गोयम एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठ[9] •तुट्ठ-चित्तमाणदिए पीइमाणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण० हियए भगव गोयम वदइ नमसइ ॥

महावीरुत्तस्स कहण-पदं

४९ तए ण से भगव गोयमे महासतय समणोवासय एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया! समणे भगव महावीरे एव आइक्खइ भासइ पण्णवेइ परूवेइ—नो खलु कप्पइ देवाणुप्पिया! समणोवासगस्स अपच्छिम[10]•मारणतियसलेहणा-

---

१ झूसियस्स सरीरस्स (ख, ग, घ)।
२ पडियाइक्खितस्स (क)।
३ × (ग)।
४. स० पा०—अपच्छिम जाव भत्तपाण।
५. स० पा०—सतेहिं जाव वागरित्तए।
६. स० पा०—आलोएहि जाव अहारिह।
७. जहारिह (क, ख, ग, घ)।
८. अस्यानन्तर 'जेणेव पोसहसाला' इति पाठः अपेक्ष्यते। किन्तु कस्मिन्नप्यादर्शे नोपलब्धोऽस्ति।
९ स० पा०—हट्ठ जाव हियए।
१०. स० पा०—अपच्छिम जाव वागरित्तए।

झूसणा-झूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खियस्स परो सतेहिं तच्चेहिं तहिएहिं सब्भूएहिं अणिट्ठेहिं अकंतेहिं अप्पिएहिं अमणुण्णेहिं अमणामेहिं वागरणेहिं° वागरित्तए। तुमे णं देवाणुप्पिया! रेवती गाहावइणी संतेहिं[1] °तच्चेहिं तहिएहिं सब्भूएहिं अणिट्ठेहिं अकंतेहिं अप्पिएहिं अमणुण्णेहिं अमणामेहिं वागरणेहिं° वागरिया। तं णं तुमं देवाणुप्पिया! एयस्स ठाणस्स आलोएहि[2] °पडिक्कमाहि निंदाहि गरिहाहि विउट्टाहि विसोहेहि अकरणयाए अब्भुट्ठाहि अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं° पडिवज्जाहि॥

महासतगस्स पायच्छित्त-पदं

५०. तए णं से महासतए समणोवासए भगवओ गोयमस्स तह त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ[3], पडिसुणेत्ता तस्स ठाणस्स आलोएइ[4] °पडिक्कमइ निंदइ गरिहइ विउट्टइ विसोहेइ अकरणयाए अब्भुट्ठेइ° अहारिहं[5] पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जइ॥

गोयमस्स पडिणिक्खमण-पदं

५१. तए णं से भगवं गोयमे महासतगस्स समणोवासगस्स अंतियाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता रायगिहं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

५२. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ रायगिहाओ नयराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ॥

महासतगस्स अणसण-पदं

५३. तए णं से महासतए समणोवासए बहूहिं सील-व्वय[6]-°गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं° भावेत्ता वीसं वासाइं समणोवासगपरियायं पाउणित्ता एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्मं काएणं फासित्ता, मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे अरुणवडेंसए[7] विमाणे

---

१. सं० पा०—संतेहिं जाव वागरिया!
२. सं० पा०—आलोएहि जाव पडिवज्जाहि।
३. पडिच्छति (क)।
४. सं० पा०—आलोएइ जाव अहारिहं।
५. जहारिहं (क, ख, ग, घ)।
६. सं० पा०—सीलव्वयगुणेहिं जाव भावेत्ता।
७. °वडिंसए (ख, ग, घ)।

देवत्ताए उववण्णे। चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

५४ [1]°एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं उवासगदसाणं अट्ठमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते° ॥

---

१. म० पा०—निक्खेवो।

नवमं अज्झयणं

नंदिणीपिया

उक्खेव-पदं

१. •[1]जइ ण भंते ! समणेणं भगवया महावीरेण जाव[2] संपत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं अट्ठमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, नवमस्स ण भंते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? •

नंदिणीपियगाहावइ-पद

२ एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थी नयरी। कोट्ठए चेइए। जियसत्तू राया ॥

३ तत्थ णं सावत्थीए नयरीए नंदिणीपिया नामं गाहावई परिवसइ—अड्ढे[3] •जाव[4] बहुजणस्स अपरिभूए ॥

४. तस्स णं नंदिणीपियस्स गाहावइस्स• चत्तारि हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, चत्तारि हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, चत्तारि हिरण्णकोडीओ पवित्थर-पउत्ताओ, चत्तारि वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था ॥

५. [5]•से णं नंदिणीपिया गाहावई बहूणं जाव[6] आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी जाव[7] सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था ॥

---

१ स० पा०—उक्खेवो ।

२. ना० १।१।७ ।

३. स० पा०—अड्ढे । चत्तारि ।

४ उवा० १।११ ।

५ स० पा०—अस्सिणी भारिया । सामी समोसढे जहा आणंदो तहेव गिहिधम्मं पडिवज्जइ। सामी बहिया विहरइ ।

६ उवा० १।१३ ।

७ उवा० १।१३ ।

नंदिणीपियस्स धम्मजागरिया-पदं

१८. तए ण तस्स नदिणीपियस्स समणोवासगस्स वहूहिं सील-व्वय-गुण[1]-•वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं ° भावेमाणस्स चोद्दस संवच्छराइं वीइक्कताइं[2], •पण्णरसमस्स सवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं सावत्थीए नयरीए वहूण जाव[3] आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य ण कुडुवस्स मेढी जाव[4] सव्वकज्जवड्ढावए, तं एतेण वक्खेवेण अह नो सचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियं धम्मपण्णत्ति उवसपज्जित्ता णं विहरित्तए[5] ॥

१९. तए ण से नदिणीपिया समणोवासए जेट्ठपुत्त मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परिजणं च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सावत्थि नयरिं मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसहसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चार-पासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसंथारय संथरेइ, संथरेत्ता दब्भसथारय दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए बभयारी उम्मुक्कमणिसुवण्णे ववगय-मालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अवीए दब्भसथारोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता ण विहरइ ॥

नंदिणीपियस्स उवासगपडिमा-पदं

२०. तए ण से नदिणीपिया समणोवासए पढमं उवासगपडिम उवसपज्जित्ता ण विहरइ ॥

२१ तए ण से नदिणीपिया समणोवासए पढम उवासगपडिम अहासुत्त अहाकप्प अहामग्ग अहातच्च सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥

२२ तए ण से नदिणीपिया समणोवासए दोच्च उवासगपडिमं, एवं तच्चं, चउत्थं, पचम, छट्ठ, सत्तम, अट्ठमं, नवमं, दसम, एक्कारसम उवासगपडिम अहासुत्त अहाकप्प अहामग्गं अहातच्च सम्म काएण फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ।

२३. तए ण से नदिणीपिया समणोवासए तेणं ओरालेणं विउलेण पयत्तेण पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसतए जाए ।

---

१. म० पा०—गुण जाव भावेमाणस्स ।

२ म० पा०—वीइक्कताइ तहेव जेट्ठपुत्त ठवेइ । धम्मपण्णत्ति । वीसं वासाइ परियाग नाणत्त अरुणगवे विमाणे उववाओ महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ।

३. उवा० १।१३ ।

४. उवा० १।१३ ।

५. पू०—उवा० १।५७-५९ ।

नंदणीपियस्स अणसण-पदं

२४ तए णं तस्स नदिणीपियस्स समणोवासगस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स अय अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु अह इमेण एयारूवेण ओरालेण विउलेण पयत्तेण पग्गहिएण तवोकम्मेण सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकि-डियाभूए किसे धमणिसतए जाए। त अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-सवेगे, त जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-सवेगे, जाव य मे धम्मायरिए धम्मोव-एसए समणे भगव महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेय कल्ल पाउप्प-भायाए रयणीए जाव[1] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते अपच्छिममारणतियसलेहणा-झूसणा-झूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खियस्स, काल अणवकखमाणस्स विहरित्तए—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते अपच्छिम-मारणतियसलेहणा-झूसणा-झूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए काल अणवकखमाणे विहरइ ॥

नंदणीपियस्स समाहिमरण-पदं

२५. तए ण से नदिणीपिया समणोवासए वहूहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि अप्पाण भावेत्ता, वीस वासाइ समणोवासगपरियाय पाउणित्ता, एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्म काएण फासित्ता, मासियाए सलेहणाए अत्ताण झूसित्ता, सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा सोहम्मे कप्पे अरुणगवे विमाणे देवत्ताए उववण्णे। तत्थ ण अत्थेगइयाण देवाण चत्तारि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता। नदिणीपि-यस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

२६. से ण भते ! नदिणीपिया ताओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्ख-एण अणंतर चय चइत्ता कहिं गमिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?
गोयमा ! ° महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ वुज्झिहिइ मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणमतं काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

२७ [2]°एव खलु जंवू ! समणेण भगवया महावीरेण उवासगदसाण नवमस्स अज्झय-णस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ° ॥

---

१. उवा० १।५७। २. स० पा०—निक्खेवो।

६ तस्स ण नदिणीपियस्स गाहावइस्स अस्सिणी नामं भारिया होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पचिदियसरीरा जाव[1] माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी विहरइ ।।

महावीर-समवसरण-पदं

७. तेण कालेण तेण समएण सामी समोसढे ।।

८ परिसा निग्गया ।।

९ कूणिए राया जहा, तहा जियसत्तू निग्गच्छइ जाव[2] पज्जुवासइ ।।

१० तए ण से नदिणीपिया गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे—"एव खलु समणे भगव महावीरे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह सपत्ते इह समोसढे इहेव सावत्थीए नयरीए बहिया कोट्ठए चेइए अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ।"
त महप्फल खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहारूवाण अरहताणं भगवंताण णामगोयस्स वि सवणयाए, किमग पुण अभिगमण-वदण-णमसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? तं गच्छामि ण देवाणुप्पिया ! समण भगव महावीर वदामि णमसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवय चेइय पज्जुवासामि—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता ण्हाए कयवलिकम्मे कय-कोउय-मगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइ मगल्लाइ वत्थाइं पवर परिहिए अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सकोरेंट-मल्लदामेण छत्तेणं धरिज्जमाणेण मणुस्सवग्गुरापरिखित्ते पादविहारचारेणं सावत्थिं नयरिं मज्झंमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव कोट्ठए चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगवं महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वदित्ता णमसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमसमाणे अभिमुहे विणएणं पजलिउडे पज्जुवासइ ।।

११ तए ण समणे भगवं महावीरे नदिणीपियस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए जाव[3] धम्मं परिकहेइ ।।

१२ परिसा पडिगया, राया य गए ।।

नंदिणीपियस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पद

१३ तए ण से नदिणीपिया गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्मं

---

१. उवा० १।१४ ।
२. ओ० सू० ५३-६९ ।
३. ओ० सू० ७१-७७ ।

निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण-हियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—सद्दहामि णं भंते ! निग्गथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं। एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! से जहेयं तुब्भे वदह। जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, नो खलु अहं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए। अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जिस्सामि।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि॥

१४ तए णं से नंदिणीपिया गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए[1] सावय-धम्मं पडिवज्जइ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

१५ तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ सावत्थीए नयरीए कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ॥

नंदिणीपियस्स समणोवासगचरिया-पदं

१६ तए णं से नंदिणीपिया समणोवासए जाए[2]—°अभिगयजीवाजीवे जाव[3] समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणे विहरइ॥

अस्सिणीए समणोवासिय-चरिया-पदं

१७ तए णं सा अस्सिणी भारिया समणोवासिया जाया—अभिगयजीवाजीवा जाव[4] समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणी° विहरइ॥

---

१ पू०—उवा० १।२४-५३।
२. सं० पा०—जाए जाव विहरइ।
३. उवा० १।५५।
४. उवा० १।५६।

नंदिणीपियस्स धम्मजागरिया-पदं

१८. तए णं तस्स नंदिणीपियस्स समणोवासगस्स बहूहिं सील-व्वय-गुण[1]-•वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं॰ भावेमाणस्स चोद्दस संवच्छराइं वीइक्कंताइं[2], •पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं सावत्थीए नयरीए बहूणं जाव[3] आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी जाव[4] सव्वकज्जवड्ढावए, तं एतेणं वक्खेवेणं अहं नो संचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए[5] ॥

१९. तए णं से नंदिणीपिया समणोवासए जेट्ठपुत्तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सावत्थिं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसहसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चार-पासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसंथारयं संथरेइ, संथरेत्ता दब्भसंथारयं दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी उम्मुक्कमणिसुवण्णे ववगय-मालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अबीए दब्भसंथारोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥

नंदिणीपियस्स उवासगपडिमा-पदं

२०. तए णं से नंदिणीपिया समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥

२१. तए णं से नंदिणीपिया समणोवासए पढमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥

२२. तए णं से नंदिणीपिया समणोवासए दोच्चं उवासगपडिमं, एवं तच्चं, चउत्थं, पंचमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं, एक्कारसमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ।

२३. तए णं से नंदिणीपिया समणोवासए तेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए ।

---

१ सं० पा०—गुण जाव भावेमाणस्स ।

२ सं० पा०—वीइक्कंताइं तहेव जेट्ठपुत्तं ठवेइ । धम्मपण्णत्तिं । वीसं वासाइं परियागं नाणत्तं अरुणगवे विमाणे उववाओ महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ।

३. उवा० १।१३ ।

४. उवा० १।१३ ।

५. पू०—उवा० १।५७-५९ ।

नंदणीपियस्स अणसण-पदं

२४ तए णं तस्स नदिणीपियस्स समणोवासगस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु अहं इमेणं एयारूवेण ओरालेण विउलेणं पयत्तेण पग्गहिएण तवोकम्मेण सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसतए जाए। त अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-सवेगे, त जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-सवेगे, जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगव महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेय कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव[1] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते अपच्छिममारणतियसलेहणा-झूसणा-झूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खियस्स, काल अणवकखमाणस्स विहरित्तए—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते अपच्छिम-मारणतियसलेहणा-झूसणा-झूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए काल अणवकखमाणे विहरइ ॥

नंदणीपियस्स समाहिमरण-पदं

२५. तए णं से नदिणीपिया समणोवासए बहूहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाण भावेत्ता, वीस वासाइ समणोवासगपरियाय पाउणित्ता, एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्म काएण फासित्ता, मासियाए सलेहणाए अत्ताण झूसित्ता, सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा सोहम्मे कप्पे अरुणगवे विमाणे देवत्ताए उववण्णे। तत्थ ण अत्थेगइयाण देवाण चत्तारि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता। नदिणीपियस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

२६ से ण भते! नदिणीपिया ताओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण अणतर चय चइत्ता कहिं गमिहिइ? कहिं उववज्जिहिइ?
गोयमा! ° महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणमत काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

२७ [2]•एव खलु जबू! समणेण भगवया महावीरेणं उवासगदसाण नवमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ° ॥

---

१. उवा० १।५७।

२. स० पा०—निक्खेवो।

दसमं अज्झयणं

लेइयापिता

उक्खेव-पदं

१ [1]•जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेण जाव[2] संपत्तेण सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं नवमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दसमस्स णं भंते अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?०

लेइयापितागाहावइ-पदं

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थी नयरी। कोट्ठए चेइए। जियसत्तू राया॥

३. तत्थ णं सावत्थीए नयरीए लेतियापिता[3] नामं गाहावई परिवसइ—अड्ढे[4] •जाव[5] बहुजणस्स अपरिभूए॥

४. तस्स णं लेइयापियस्स गाहावइस्स० चत्तारि हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, चत्तारि हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, चत्तारि हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, चत्तारि वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था॥

५ [6]•से णं लेइयापिता गाहावई बहूणं जाव[7] आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी जाव[8] सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था॥

---

१. स० पा०—उक्खेवो।

२. ना० १।१।७।

३ सालिहीयापिया (ख)।

४ स० पा—अड्ढे। चत्तारि।

५ उवा० १।११।

६ स०पा०–फग्गुणी भारिया। सामी समोसढे। जहा आणंदो तहेव गिहिधम्मं पडिवज्जइ। जहा कामदेवो तहा जेट्ठं पुत्तं ठवेत्ता पोसहसालाए। समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता णं विहरइ। नवरं निरुवसग्गो एक्कारस्स वि उवासगपडिमाओ तहेव भाणियव्वाओ। एवं कामदेवगमेण नेयव्वं जाव सोहम्मे।

७. उवा० १।१३।

८. उवा० १।१३।

६ तस्स ण लेतियापियस्स गाहावइस्स फग्गुणी नाम भारिया होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पचिदियसरीरा जाव[1] माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी विहरइ ॥

महावीर-समवसरण-पद

७. तेण कालेण तेण समएण सामी समोसढे ॥

८ परिसा निग्गया ॥

९ कूणिए राया जहा, तहा जियसत्तू निग्गच्छइ जाव[2] पज्जुवासइ ॥

१०. तए ण से लेतियापिता गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे—"एव खलु समणे भगव महावीरे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह सपत्ते इह समोसढे इहेव सावत्थीए नयरीए वहिया कोट्ठए चेइए अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ।"
त महप्फल खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहारूवाण अरहताण भगवंताण णाम-गोयस्स वि सवणयाए, किमग पुण अभिगमण-वदण-णमसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? त गच्छामि ण देवाणुप्पिया ! समण भगव महावीर वदामि णमसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाण मगल देवय चेइय पज्जुवासामि—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता ण्हाए कयवलिकम्मे कय-कोउय-मगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइ मगल्लाइ वत्थाइ पवर परिहिए अप्पमहग्घा-भरणालकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सकोरेंट-मल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण मणुस्सवग्गुरापरिखित्ते पादविहारचारेण सावत्थि नयरिं मज्झमज्झेण निग्गच्छइ,निग्गच्छित्ता जेणामेव कोट्ठए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगवं महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ णमंसइ, वदित्ता णमसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमसमाणे अभिमुहे विणएण पजलिउडे पज्जुवासइ ॥

११ तए ण समणे भगव महावीरे लेतियापियस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए जाव[3] धम्म परिकहेइ ॥

१२. परिसा पडिगया, राया य गए ॥

लेतियापियस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं

१३ तए ण से लेतियापिया गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-

---

१ उवा० १।१४ ।
२. ओ० सू० ५३-६९ ।
३ ओ० सू० ७१-७७ ।

विसप्पमाणहियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी— सद्दहामि णं भंते! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं भंते! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंते! निग्गंथं पावयणं। एवमेयं भंते! तहमेयं भंते! अवितहमेयं भंते! असंदिद्धमेयं भंते! इच्छियमेयं भंते! पडिच्छियमेयं भंते! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते! से जहेयं तुब्भे वदह। जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, नो खलु अहं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए। अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं— दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जिस्सामि।

अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेहि॥

१४ तए णं से लेतियापिता गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए[1] सावयधम्मं पडिवज्जइ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

१५ तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ सावत्थीए नयरीए कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ॥

लेतियापियस्स समणोवासग-चरिया-पदं

१६ तए णं से लेतियापिता समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे जाव[2] समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणे विहरइ॥

फग्गुणीए समणोवासिय-चरिया-पदं

१७ तए णं सा फग्गुणी भारिया समणोवासिया जाया—अभिगयजीवाजीवा जाव[3] समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणी विहरइ॥

लेतियापियस्स धम्मजागरिया-पदं

१८ तए णं तस्स लेतियापियस्स समणोवासगस्स बहूहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-

---

१. पू०—उवा० १।२४-५३।

२. उवा० १।५५।

३. उवा० १।५६।

पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि अप्पाण-भावेमाणस्स चोद्दस सवच्छराइ वीइक्कताइ पण्णरसमस्स सवच्छरस्स अतरा वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु अह सावत्थीए नयरीए वहूण जाव[1] आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे सयस्स वि य ण कुडुवस्स मेढी जाव[2] सव्वकज्जवड्ढावए, त एतेण वक्खेवेण अह नो सचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मपण्णत्ति उवसपज्जित्ता ण विहरित्तए[3] ॥

१९ तए ण से लेतियापिता समणोवासए जेट्ठपुत्त मित्त-नाइ-नियग-सयण-सबधि-परिजण च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सावत्थि नयरिं मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसहसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसाल पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चार-पासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसथारय सथरेइ, सथरेत्ता दब्भसथारय दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए वभयारी उम्मुक्कमणि-सुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अवीए दब्भसथारोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मपण्णत्ति उवसपज्जित्ता णं विहरइ ॥

लेतियापियस्स उवासगपडिमा-पदं

२० तए ण से लेतियापिता समणोवासए पढम उवासगपडिम उवसंपज्जित्ता ण विहरइ ॥

२१. तए ण से लेतियापिता समणोवासए पढम उवासगपडिम अहासुत्त अहाकप्प अहामग्ग अहातच्च सम्म काएण फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥

२२. तए ण से लेतियापिता समणोवासए दोच्चं उवासगपडिम, एव तच्चं, चउत्थ, पचम, छट्ठ, सत्तम, अट्ठम, नवमं, दसम एक्कारसमं उवासगपडिम अहासुत्त अहाकप्प अहामग्ग अहातच्च सम्म काएण फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥

२३ तए ण से लेतियापिता समणोवासए तेण ओरालेण विउलेण पयत्तेण पग्गहिएण तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसतए जाए ॥

लेतियापियस्स अणसण-पदं

२४ तए ण तस्स लेतियापियस्स समणोवासगस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-

---

१. उवा० १।१३।

२. उवा० १।१३।

३ पू०—उवा० १।५७-५९।

समयसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं एयारूवेण ओरालेण विउलेण पयत्तेण पग्गहिएण तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडि-याभूए किसे धमणिसतए जाए। तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-सवेगे, त जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-सवेगे, जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगव महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेय कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव[1] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते अपच्छिममारणतियसलेहणा-झूसणा-झूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खि-यस्स, काल अणवकंखमाणस्स विहरित्तए—एवं सपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते अपच्छिममारणतियसलेहणा-झूसणा-झूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए कालं अणवकखमाणे विहरइ ॥

लेतियापियस्स समाहिमरण-पदं

२५. तए ण से लेतियापिता समणोवासए बहूहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाण भावेत्ता, वीसं वासाइ समणोवासगपरियायं पाउणित्ता, एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्मं काएण फासित्ता, मासियाए सलेहणाए अत्ताण झूसित्ता, सट्ठि भत्ताइं अणसणाएं छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा० सोहम्मे कप्पे अरुणकीले विमाणे देवत्ताए उववण्णे। तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता। लेतियापियस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

२६. से ण भते! लेतियापिता ताओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएणं ठिइक्खएण अणतर चय चइत्ता कहिं गमिहिइ? कहिं उववज्जिहिइ? गोयमा! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणमतं काहिइ[2] ॥

निक्खेव-पदं

२७. एव खलु जंबू! समणे णं भगवया महावीरेणं उवासगदसाण दसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥

---

१ उवा० १।५७।

२ अध्ययननिगमनानन्तरमादर्शेषु पाठान्तररूपेण स्वीकृत सग्रहवाक्यमुपलभ्यते। वृत्त्यनुसारेण नैतत् सभाव्यते—दसण्ह वि पण्णरसमे सवच्छरे वट्टमाणे ण चिंता। दसण्ह वि वीस वासाइ समणोवासयपरियाओ (क, ख, ग, घ)।

२८. 'एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेणं सत्तमस्स अगस्स उवासगदसाण अयमट्ठे पण्णत्ते'[1] ।।

परिसेसो

उवासगदसाण सत्तमस्स अगस्स एगो सुयखधो । दस अज्झयणा एक्कसरगा दससु चेव दिवसेसु उद्दिस्सति । तओ सुयखधो समुद्दिस्सइ । तओ सुयखधो अणुण्ण-विज्जइ दोसु दिवसेसु अग तहेव ।।

ग्रन्थ-परिमाण

अक्षर परिमाण—८७८१२

अनुष्टुप् श्लोक-परिमाण—२७४४

१. आदर्शेषु एतद् निगमनवाक्य नोपलभ्यते, किन्तु वृत्तौ अस्योल्लेखो विद्यते—'एव खलु जवू' ! इत्यादि उपासकदशानिगमनवाक्यम-ध्येयमिति ।

२ अतोग्रे एता. सग्रहगाथा आदर्शेषु नोप-लभ्यन्ते । वृत्तौ पुस्तकान्तरप्राप्तेरुल्लेखोस्ति, यथा—पुस्तकान्तरे सग्रहगाथा उपलभ्यन्ते ताश्चेमा —

वाणियगामे चपा, दुवे य वाणारसीए नयरीए ।
आलभिया य पुरवरी, कम्पिल्लपुर च वोद्धव्व ।।१।।
पोलास रायगिह, सावत्थीए पुरीए दोन्नि भवे ।
एए उवासगाण, नयरा खलु होति वोद्धव्वा ।।२।।
सिवनन्द-भद्द-सामा, धन्न-वहुला पूस-अग्गिमित्ता य ।
रेवइ-अस्सिणि तह, फग्गुणी य भज्जाण नामाइ ।।३।।
ओहिण्णाण-पिसाए, माया वाहि-धण-उत्तरिज्जे य ।
भज्जा य सुव्वया, दुव्वया निरुवसग्गया दोन्नि ।।४।।
अरुणे अरुणाभे खलु, अरुणप्पह-अरुणकत-सिट्ठे य ।
अरुणज्झए य छट्ठे, भूय-वडिसे गवे कीले ।।५।।

अंतगडदसाओ

पढमो वग्गो

पढमं अज्झयणं

गोयमे

उक्खेव-पदं

१. तेणं कालेणं तेण समएण चंपा नाम[1] नयरी । पुण्णभद्दे चेइए[2]—वण्णओ[3] ।।

२. तेण कालेणं तेण समएणं अज्जसुहम्मे समोसरिए । परिसा निग्गया[4] । °धम्मो कहिओ । परिसा जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं° पडिगया ।।

३ तेणं कालेण तेण समएण अज्जसुहम्मस्स अंतेवासी अज्जजंबू जाव[5] पज्जुवासमाणे[6] एवं वयासी—जइ ण भंते ! समणेण भगवया महावीरेण आदिकरेण जाव[7] संपत्तेण सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाण अयमट्ठे पण्णत्ते, अट्ठमस्स णं भंते ! अंगस्स अंतगडदसाण समणेण भगवया महावीरेण जाव संपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ?

४ एवं खलु जंबू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव[8] संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाण अट्ठ वग्गा पण्णत्ता ।।

५. जइ ण भंते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव[9] संपत्तेण अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाण अट्ठ वग्गा पण्णत्ता, पढमस्स ण भंते ! वग्गस्स अंतगडदसाण समणेण भगवया महावीरेण जाव संपत्तेण कइ अज्झयणा पण्णत्ता ?

---

१ नाम (क, ख) ।

२ चेतिते (क), चेतिए वणसंडे (ख) ।

३ ओ० सू० २-१३ ।

४. स० पा०—निग्गया जाव पडिगया ।

५. ना० १।१।६, ७ ।

६. पज्जुवासइ (क, ख, ग); ना० १।१।७ सूत्रानुसारेण अयं पाठः स्वीकृत ।

७ १।१।७ ।

८,९ ना० १।१।७ ।

६ एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[1] संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

१ गोयम २ समुद्द ३ सागर, ४ गभीरे चेव होइ ५ थिमिए य ।
६ अयले ७ कपिल्ले खलु, ८ अक्खोभ ९ पसेणई १० विण्हू ॥१॥

७ जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[2] संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स अंतगडदसाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

गोयम-पदं

८ एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवई नामं नयरी होत्था—दुवालस-जोयणायामा नवजोयणवित्थिण्णा धणवति-मइ[3]-णिम्मया चामीकर-पागारा नाणामणि-पंचवण्ण-कविसीसगमंडिया सुरम्मा अलकापुरि-सकासा[4] पमुदिय-पक्कीलिया पच्चक्खं देवलोगभूया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडि-रूवा ॥

९ तीसे णं बारवईए[5] णयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ[6] णं रेवयए नामं पव्वए होत्था—वण्णओ[7] ॥

१० तत्थ णं रेवयए पव्वए नंदणवणे नामं उज्जाणे होत्था - वण्णओ[8] ॥

११. [तस्स णं उज्जाणस्स बहुमज्झदेसभाए ?] सुरप्पिए नामं जक्खायतणे होत्था - [चिराइए पुव्वपुरिस-पण्णत्ते ?] पोराणे ॥

१२ से णं एगेणं वणसंडेणं [सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते ?] ॥

१३. [तस्स णं वणसंडस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एगे ?] असोगवरपायवे ॥

१४ तत्थ णं बारवईए णयरीए कण्हे नामं वासुदेवे राया परिवसइ—महयाराय-वण्णओ[9] ।

से णं तत्थ समुद्दविजयपामोक्खाणं दसण्हं दसाराणं बलदेवपामोक्खाणं[10] पंचण्हं महावीराणं[11], पज्जुण्णपामोक्खाणं अद्धुट्ठाणं कुमारकोडीणं, संबपामोक्खाणं

१,२. ना० १।१।७ ।
३. × (क) ।
४ समा (क) ।
५ बारवती (क) ।
६. तत्थ (ख) ।
७. ना० १।५।३ ।
८. ना० १।५।४ ।
९. ओ० सू० १४ ।
१०. °पामुक्खाणं (ख) ।
११. नायाधम्मकहाओ १।५।६ सूत्रात् अस्य क्रमो भिन्नोस्ति ।

सट्ठीए दुद्दंतसाहस्सीण, महासेणपामोक्खाणं[1] छप्पण्णाए[2] बलवगसाहस्सीणं[3], वीरसेणपामोक्खाण एगवीसाए वीरसाहस्सीणं, उग्गसेणपामोक्खाण सोलसण्हं रायसाहस्सीण, रुप्पिणीपामोक्खाण 'सोलसण्हं देवीसाहस्सीण'[4] अणगसेणा-पामोक्खाण अणेगाणं गणियासाहस्सीण[5], अण्णेसि च बहूण, ईसर[6]-•तलवर-माडंबिय-कोडुबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ°-सत्थवाहाण बारवईए नयरीए अद्ध-भरहस्स य समंतस्स[7] आहेवच्चं[8] •पोरेवच्च सामित्त भट्टित्त महत्तरगत्त आणा-ईसर-सेणावच्च कारेमाणे पालेमाणे° विहरइ ॥

१५ तत्थ ण बारवईए नयरीए अधगवण्ही[9] नाम राया परिवसइ—महयाहिमवत-महत-मलय-मदर-महिंदसारे वण्णओ[10] ॥

१६ तस्स ण अधगवण्हिस्स रण्णो धारिणी नाम देवी होत्था—वण्णओ[11] ॥

१७ तए ण सा धारिणी देवी अण्णया कयाइ तसि तारिसगसि सयणिज्जसि जाव[12] नियगवयणमइवयंतं सीहं सुविणे पासित्ता ण पडिबुद्धा। एव जहा[13] महब्बले[14], नवर—गोयमो नामेण। अट्ठण्ह रायवरकण्णाण एगदिवसेण पाणिं गेण्हावेति। अट्ठट्ठओ दाओ ॥

१८. तेण कालेण तेण समएण अरहा अरिट्ठनेमी आदिकरे जाव[15] सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ। चउव्विहा देवा आगया। कण्हे वि निग्गए ॥

१९ तए ण तस्स गोयमस्स कुमारस्स[16] •त महाजणसद्द च जणकलकल च सुणेत्ता य पासेत्ता य इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्प-ज्जित्था°। जहा मेहे[17] तहा णिग्गए। धम्म सोच्चा[18] •निसम्म हट्ठतुट्ठे° ज

---

१ महसेण° (क, ख)।

२. छप्पण्णाय (ग)।

३. वलवय° (क्व)।

४. वत्तीसाए महिलासाहस्सीण (ना० १।५।६)।

५. गणिता० (ख)।

६. स० पा०—ईसर जाव सत्यवाहाणं।

७. समत्थस्स (क्व)।

८ स० पा०—आहेवच्च जाव विहरइ।

९ °विण्हू (घ)।

१०. ओ० सू० १४।

११. ओ० सू० १५।

१२. भ० ११।१३३।

१३. भ० ११।१३३-१६१।

१४ अतोग्रे सग्रहणीगाथा लभ्यते—

सुमिणद्दसण-कहणा,
जम्म बालत्तण कलाओ य।
जोव्वण-पाणिग्गहण, कण्णा पासायभोगा य ॥
(क, ख, ग, घ)।

अस्या सग्रहणी-गाथाया केचिद् विषया मूल-पाठे एव समायाता, तेन पुनरुक्तेर्निवारणाय नासौ मूले गृहीता।

१५. ना० १।५।१०।

१६ स० पा०—कुमारस्स।

१७ ना० १।१।९५-९९।

१८. स० पा०—सोच्चा।

नवर—देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि[1]। •तओ पच्छा देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयामि° ।।

२०. तए णं से गोयमे कुमारे एव जहा मेहे जाव[2] अणगारे जाए—इरियासमिए[3] जाव[4] इणमेव निग्गंथं पावयणं पुरओ काउं विहरइ ।।

२१ तए णं से गोयमे अण्णया कयाइ अरहओ अरिट्ठनेमिस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अगाइं अहिज्जइ[5], अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ[6]-•छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं विविहेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं° भावेमाणे विहरइ ।।

२२. 'तए णं'[7] अरहा[8] अरिट्ठनेमी अण्णया कयाइ बारवईओ नयरीओ नंदणवणाओ पडिणिक्खमइ, बहिया जणवयविहारं विहरइ ।।

२३ तए णं से गोयमे अणगारे अण्णया कयाइ जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहं अरिट्ठनेमिं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए। एवं जहा खंदओ[9] तहा बारस भिक्खुपडिमाओ फासेइ। गुणरयणं पि तवोकम्मं तहेव फासेइ निरवसेसं। जहा[10] खंदओ तहा[11] चिंतेइ। तहा आपुच्छइ। तहा थेरेहिं सद्धिं सेत्तुंजं[12] दुरूहइ ।।

२४ [13]•तए णं से गोयमे अणगारे बारस वासाइं[14] सामण्णपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता जाव[15] केवलवरणाणदंसणं समुप्पाडेत्ता तओ पच्छा° सिद्धे ।।

निक्खेव-पदं

२५ एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[16] संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं पढमस्स वग्गस्स पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।।

---

१ सं० पा०—आपुच्छामि देवाणुप्पियाणं ।
२ ना० १।१।१४९-१५१ ।
३ रियासमिए (क); इरियासमिते (ख), ईरियानमिए (ग) ।
४ ना० १।१।१६४ ।
५ अहिज्जेइ (ख, ग) ।
६ सं० पा०—चउत्थ जाव भावेमाणे ।
७. ता (क), ते (ख) ।
८. अरिहा (ख, ग) ।
९. भग० २।५७-६८ ।
१०. जधा (ख) ।
११ तधा (ख, ग) ।
१२. सेत्तुज्ज (क, ख, ग) ।
१३. सं० पा०—मासियाए संलेहणाए बारसवासाइं परियाए जाव सिद्धे ।
१४. वरिसाइं (ख); वरिसा य (ग) ।
१५. भ० ९।१५१ ।
१६. ना० १।१।७ ।

२-१० अज्झयणाणि

समुद्दादि-पदं

२६ एवं जहा गोयमो[1] तहा सेसा। अंधगवण्ही[2] पिया, धारिणी माया। समुद्दे, सागरे, थिमिए, गभीरे, अयले, कपिल्ले, अक्खोभे, पसेणई, विण्हू एए एगगमा॥

बीओ वग्गो

१-८ अज्झयणाणि

उक्खेव-पदं

१ जइ[3] °णं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं पढमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दोच्चस्स णं भंते! वग्गस्स अंतगडदसाणं समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते?

२ एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं दोच्चस्स वग्गस्स अट्ठ अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा°—

संगहणी-गाहा[4]

१. अक्खोभ २. सागरे खलु, ३ समुद्द ४ हिमवंत ५ अचलनामे य।
६ धरणे य ७ पूरणे य, ८. अभिचंदे चेव अट्ठमए॥ १॥

अक्खोभादि-पदं

३ तेणं कालेणं तेणं समएणं 'बारवई नामं नयरी होत्था'[5]। अंधगवण्ही पिया। धारिणी माया। जहा पढमे वग्गे तहा सव्वे अट्ठ अज्झयणा। गुणरयणं तवोकम्मं। सोलस वासाइं परियाओ। सेत्तुंजे मासियाए संलेहणाए सिद्धा॥

---

१. अ० १।६-२५।

२ वण्हि (क, ख, ग), अंधगविण्हु (घ)।

३ सं० पा०—जइ दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवओ।

४ तृतीयवर्गक्रमतोऽसौ गाथा 'तेणं कालेणं तेणं समएणं' इति सूत्रात् प्राग् गृहीता। आदर्शेषु असौ गाथा 'धारिणी माया' इति पाठानन्तरमुल्लिखितमस्ति।

५. बारवईए नयरीए (क, ख, ग, घ)। अस्य पाठस्य परिवर्तनं १।८ आधारेणकृतम्।

तइओ वग्गो

पढमं अज्झयणं

अणीयसे

उक्खेव-पदं

१. जइ[1] ०ण भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं दोच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते तच्चस्स ण भंते ! वग्गस्स अंतगडदसाणं समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते? ०

२. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं तच्चस्स वग्गस्स तेरस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—१. अणीयसे २ अणंतसेणे ३ अजियसेणे ४. अणिहयरिऊ ५. देवसेणे[2] ६ सत्तुसेणे ७ सारणे ८ गए ९ समुद्दे १० दुम्मुहे ११ कूवए १२ दारुए १३ अणाहिट्ठी[3] ॥

३. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं तच्चस्स वग्गस्स तेरस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स अंतगडदसाणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

अणीयसादि-पदं

४. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं भद्दिलपुरे नामं नगरे होत्था—वण्णओ[4] ॥

५. तस्स णं भद्दिलपुरस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए सिरिवणे नामं उज्जाणे होत्था—वण्णओ[5] । जियसत्तू राया ॥

---

१ सं० पा०—जइ तच्चस्स उक्खेवओ ।

२. देवजसे (क) ।

३ अणाहिट्ठे (क) ।

४ ओ० सू० १ ।

५ ना० १।१।४ ।

६ तत्थ ण भद्दिलपुरे नयरे नागे नाम गाहावई होत्था—अड्ढे जाव[1] अपरिभूए ।।

७ तस्स ण नागस्स गाहावइस्स सुलसा नाम भारिया होत्था—सूमाला जाव[2] सुरूवा ।।

८ तस्स ण नागस्स गाहावइस्स पुत्ते सुलसाए भारियाए अत्तए अणीयसे[3] नामं कुमारे होत्था—सूमाले जाव[4] सुरूवे पचधाइपरिक्खित्ते जहा दढपइण्णे जाव[5] गिरिकदरमल्लीणे विव चपगवरपायवे णिव्वाघायसि सुहसुहेण परिवड्ढइ ।।

९ तए ण त अणीयस कुमार सातिरेगअट्ठवासजाय [जाणित्ता ?] अम्मापियरो कलायरियस्स उवणेति जाव[6] भोगसमत्थे जाए यावि होत्था ।।

१० तए ण त अणीयस कुमारं उम्मुक्कवालभाव जाणित्ता अम्मापियरो सरिसियाण[7] •सरिव्वयाण सरित्तयाण सरिसलावण्ण-रूव-जोवण्ण-गुणोववेयाणं सरिसएहिंतो इब्भकुलेहिंतो आणिल्लियाण° बत्तीसाए इब्भवरकण्णगाण एगदिवसेण पाणिं गेण्हावेति ।।

११ तए ण से नागे गाहावई अणीयसस्स कुमारस्स इम एयारूव पीइदाण दलयइ, त जहा—वत्तीस हिरण्णकोडीओ जहा महब्बलस्स जाव[8] उप्पि पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइगमत्थएहिं भोगभोगाइ भुजमाणे विहरइ ।।

१२ तेण कालेण तेण समएण अरहा अरिट्ठनेमी[9] •जेणेव भद्दिलपुरे नयरे जेणेव सिरिवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे° विहरइ । परिसा निग्गया ।।

१३ तए ण तस्स अणीयसस्स कुमारस्स त महा[10] •जणसद्द च जणकलकल च सुणेत्ता य पासेत्ता य इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था । जहा गोयमे[11] तहा अणगारे जाए°, नवर—सामाइयमाइयाइ चोद्दसपुव्वाइ अहिज्जइ । वीस वासाइ परियाओ । सेसं तहेव जाव[12] सेत्तुजे पव्वए मासियाए सलेहणाए[13] •अत्ताण भूसित्ता सट्ठि भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता जाव केवलवरणाणदसण समुप्पाडेत्ता तओ पच्छा° सिद्धे ।।

---

१ ना० १५७ ।
२ ओ० सू० १५ ।
३ अणीयसेणे (क) ।
४. ओ० सू० १४३ ।
५. राय० सू० ८०४ ।
६ राय० सू० ८०६-८०९ ।
७, स० पा०—सरिसियाण जाव वत्तीसाए ।
८ भ० ११।१५९-१६१ ।
९ स० पा०—समोसढे सिरिवणे उज्जाणे अहा जाव विहरइ । पू०—ना० १।५।१० ।
१० स० पा०—त महा जहा गोयमे तहा ।
११. अ० १।१९, २० ।
१२. अ० १।२१-२४ ।
१३ स० पा०—सलेहणाए जाव सिद्धे ।

१४. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं तच्चस्स वग्गस्स पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥

२-६ अज्झयणाणि

१५ एवं जहा अणीयसे । एवं सेसा वि । अज्झयणा एक्कगमा । बत्तीसओ दाओ । वीसं वासा परियाओ । चोद्दस पुव्वा । सेत्तुंजे सिद्धा ।

सत्तमं अज्झयणं

सारणे

सारण-पदं

१६ तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवईए नयरीए, जहा पढमे, नवरं—वसुदेवे राया । धारिणी देवी । सीहो सुमिणे । सारणे कुमारे । पण्णासओ दाओ । चोद्दस पुव्वा[1] । वीसं वासा परियाओ । सेसं जहा गोयमस्स जाव[2] सेत्तुंजे सिद्धे ।

अट्ठमं अज्झयणं

गए

उक्खेव-पदं

१७ जइ[3] णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्ठमस्स अंगस्स तच्चस्स वग्गस्स सत्तमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते । अट्ठमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स अंतगडदसाणं के अट्ठे पण्णत्ते ? °

१८. एवं खलु जंबू तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवईए नयरीए, जहा पढमे जाव[4] अरहा अरिट्ठनेमी समोसढे ॥

छण्हं अणगाराणं तव-संकप्प-पदं

१९. तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अंतेवासी छ अणगारा भायरो[5] सहोदरा होत्था—सरिसया सरित्तया सरिव्वया नीलुप्पल-गवल-गुलिय-

---

१. पुव्वी (ग) ।
२ अ० १।२१-२४ ।
३ स० पा०—जइ उक्खेवओ अट्ठमस्स ।
४. अं० ३।१२ ।
५ भायरा (क, ख, ग) ।

अयसिकुसुमप्पगासा सिरिवच्छंकिय-वच्छा कुसुम[1]-कुंडलभद्दलया नलकूवर[2]-समाणा ॥

२० तए णं ते छ अणगारा जं चेव दिवसं मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, तं चेव दिवसं अरहं अरिट्ठणेमिं वंदंति णमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामो णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणा जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं[3] तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरित्तए ॥

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह ॥

२१. तए णं ते छ अणगारा अरहया[4] अरिट्ठणेमिणा अब्भणुण्णाया समाणा जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं[5] •अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा° विहरंति ॥

छण्हं पि देवईए गिहे पवेस-पदं

२२ तए णं ते छ अणगारा अण्णया कयाइ छट्ठक्खमणपारणयंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेंति, [6]•बीयाए पोरिसीए झाणं झियायंति, तइयाए पोरिसीए अतुरियमचवलमसंभंता मुहपोत्तियं पडिलेहंति, पडिलेहित्ता भायणवत्थाइं पडिलेहंति, पडिलेहित्ता भायणाइं पमज्जंति, पमज्जित्ता भायणाइं उग्गाहेंति उग्गाहेत्ता जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अरहं अरिट्ठनेमिं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी°—इच्छामो णं भंते ! छट्ठक्खमणस्स पारणए तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणा तिहिं संघाडएहिं बारवईए नयरीए[7] •उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए° अडित्तए ॥

२३. तए णं ते छ अणगारा अरहया अरिट्ठणेमिणा अब्भणुण्णाया समाणा अरहं अरिट्ठनेमिं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतियाओ सहसंबवणाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता तिहिं संघाडएहिं अतुरियम[8] •चवलमसंभंता जुगंतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रियं सोहेमाणा-सोहेमाणा जेणेव बारवई नयरी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता बारवईए नयरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियं° अडंति ।

२४ तत्थ णं एगे संघाडए बारवईए नयरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं

---

१. दब्भकुसुम (वृपा) ।
२ नलकुब्बर (क, ख, ग) ।
३. × (ख, ग) ।
४. अरहा ख, ग) ।
५ सं० पा०—छट्ठंछट्ठेणं जाव विहरंति ।
६. सं० पा०—जहा गोयमो जाव इच्छामो ।
७ सं० पा०—नयरीए जाव अडित्तए ।
८. सं० पा०—अतुरियं जाव अडंति ।

घरसमुदाणस्स[1] भिक्खायरियाए अडमाणे[2] वसुदेवस्स रण्णो देवईए देवीए गेहे[3] अणुप्पविट्ठे ॥

२५ तए ण सा देवई देवी ते अणगारे एज्जमाणे पासइ, पासित्ता हट्ठ[4]•तुट्ठ-चित्तमाणदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण॰हियया आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता सत्तट्ठ पदाइ अणुगच्छइ, तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता जेणेव भत्तघरए तेणेव उवागया सीहकेसराण मोयगाण थाल भरेइ, ते अणगारे पडिलाभेइ, वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता पडिविसज्जेइ ॥

२६ तयाणतर च णं दोच्चे सघाडए वारवईए[5] •नयरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइ कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे वसुदेवस्स रण्णो देवईए देवीए गेहे अणुप्पविट्ठे ॥

२७. तए णं सा देवई देवी ते अणगारे एज्जमाणे पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठा आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता सत्तट्ठ पदाइ अणुगच्छइ, तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता जेणेव भत्तघरए तेणेव उवागया सीहकेसराण मोयगाण थाल भरेइ, ते अणगारे पडिलाभेइ, वदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता॰ पडिविसज्जेइ ॥

२८. तयाणतर च ण तच्चे सघाडए वारवईए नगरीए उच्च[6]-•नीय-मज्झिमाइ कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे वसुदेवस्स रण्णो देवईए देवीए गेहे अणुप्पविट्ठे ॥

देवईए पुणरागमणसंका-पदं

२९. तए ण सा देवई देवी ते अणगारे एज्जमाणे पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठा आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता सत्तट्ठ पदाइ अणुगच्छइ, तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता जेणेव भत्तघरए तेणेव उवागया सीहकेसराण मोयगाण थाल भरेइ, ते अणगारे॰ पडिलाभेइ, पडिलाभेत्ता एव वयासी—किण्ण देवाणुप्पिया ! कण्हस्स वासुदेवस्स इमीसे बारवईए नयरीए नवजोयणवित्थिण्णाए जाव[7] पच्चक्ख देवलोगभूयाए समणा निग्गथा उच्च[8]-•नीय-मज्झिमाइं कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए॰ अडमाणा

१. ॰समुद्दाणस्स (ख, ग, घ)।
२. अडमाणे २ (क)।
३. गिह (ख, ग)।
४. स॰ पा॰—हट्ठ जाव हियया।
५. स॰ पा॰—वारवईए उच्च जाव पडिविसज्जेइ।
६. स॰ पा॰—उच्च जाव पडिलाभेइ।
७. अ॰ १।८।
८. स॰ पा॰—उच्च जाव अडमाणा।

भत्तपाणं नो लभति, जण्ण[1] ताइं चेव कुलाइ भत्तपाणाए भुज्जो-भुज्जो अणुप्पविसति ?

संका-समाधाण-पदं

३० तए ण ते अणगारा देवइ देविं एवं वयासी—नो खलु देवाणुप्पिए ! कण्हस्स वासुदेवस्स इमीसे बारवईए नयरीए जाव[2] देवलोगभूयाए समणा निग्गथा उच्च[3]-•नीय मज्झिमाइं कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए° अडमाणा भत्तपाण णो लभति, णो चेव ण ताइ[4] चेव कुलाइ दोच्च पि तच्च पि भत्तपाणाए अणुपविसति।

एव खलु देवाणुप्पिए ! अम्हे भद्दिलपुरे नगरे नागस्स गाहावइस्स पुत्ता सुलसाए भारियाए अत्तया छ भायरो सहोदरा सरिसया[5] •सरित्तया सरिव्वया नीलुप्पल-गवल-गुलिय-अयसिकुसुमप्पगासा सिरिवच्छकिय-वच्छा कुसुम-कुडलभद्दलया° नलकूवर-समाणा अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अतिए धम्म सोच्चा ससारभउव्विग्गा भीया जम्मणमरणाण मुडा[6] •भवित्ता अगाराओ अणगारिय° पव्वइया।

तए ण अम्हे ज चेव दिवस पव्वइआ त चेव दिवम अरह अरिट्ठनेमिं वदामो नमसामो, इम एयारूव अभिग्गह ओगिण्हामो[7]—इच्छामो ण भते ! तुब्भेहि अब्भणुण्णाया समाणा[8] •जावज्जीवाए छट्ठछट्ठेण अणिक्खत्तेण तवोकम्मेण सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणा विहरित्तए °।

अहासुह।

तए ण अम्हे अरहया अरिट्ठणेमिणा अब्भणुण्णाया समाणा जावज्जीवाए छट्ठछट्ठेण जाव[9] विहरामो। त अम्हे अज्ज छट्ठक्खमणपारणयसि पढमाए पोरिसीए[10] •सज्झाय करेत्ता, वीयाए पोरिसीए झाण झियाइत्ता, तइयाए पोरिसीए[11] अरहया अरिट्ठनेमिणा अब्भणुण्णाया समाणा तिहिं सघाडएहिं वारवईए नयरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइ कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए° अडमाणा तव गेह अणुप्पविट्ठा। त णो खलु देवाणुप्पिए ! ते चेव ण अम्हे। अम्हे ण अण्णे—देवइ देविं एव वदति, वदित्ता जामेव दिस पाउब्भूया तामेव दिस पडिगया॥

---

१ तेण (घ)।
२ अ० १।८।
३ स० पा० —उच्च जाव अडमाणा।
४. ताइ ताइ (क)।
५. स० पा०—सरिसया जाव नलकूवरसमाणा।
६. सं० पा०—मुडा जाव पव्वइया।
७ गिण्हामो (क)।
८. स० पा०—समाणा जाव अहासुह।
९. अ० ३।२०।
१०. स० पा०—पोरिसीए जाव अडमाणा।
११ पू०—अ० ३।२२।

पुत्त-बोह-पदं

३१. तए णं तीसे देवईए देवीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे—एवं खलु अहं पोलासपुरे नयरे अतिमुत्तेणं कुमारसमणेणं बालत्तणे वागरिआ—तुमण्णं देवाणुप्पिए ! अट्ठ पुत्ते पयाइस्ससि[1] सरिसए जाव[2] नलकूवर-समाणे, नो चेव णं भरहे[3] वासे अण्णाओ अम्मयाओ तारिसए पुत्ते पयाइस्सति। तं णं मिच्छा। इमं णं पच्चक्खमेव दिस्सइ—भरहे वासे अण्णाओ वि अम्मयाओ खलु[4] एरिसए[5] पुत्ते पयायाओ। तं गच्छामि णं अरहं अरिट्ठणेमिं वंदामि, वंदित्ता इमं च णं एयारूवं वागरणं पुच्छिस्सामीत्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—[6]•खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! धम्मियं जाणप्पवरं जुत्तामेव उवट्ठवेह। ते वि तहेव° उवट्ठवेंति। जहा देवाणंदा जाव[7] पज्जुवासइ ॥

३२. तए णं अरहा अरिट्ठणेमी देवइं देविं एवं वयासी—से नूणं तव देवई ! इमे छ अणगारे पासित्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे—एवं खलु अहं पोलासपुरे नयरे अइमुत्तेणं कुमारसमणेणं बालत्तणे वागरिआ तं चेव जाव[8] निग्गच्छित्ता ममं[9] अंतियं हव्वमागया। से नूणं देवई ! अट्ठे समट्ठे ?

हंता अत्थि ॥

३३. एवं खलु देवाणुप्पिए ! तेणं कालेणं तेणं समएणं भद्दिलपुरे नयरे नागे नामं गाहावई परिवसइ—अड्ढे ॥

३४. तस्स णं नागस्स गाहावइस्स सुलसा नामं भारिया होत्था ॥

३५. तए णं सा सुलसा गाहावइणी बालत्तणे चेव नेमित्तिएणं वागरिया—एस णं दारिया णिंदू भविस्सइ ॥

३६. तए णं सा सुलसा बालप्पभिइं चेव[10] हरि-णेगमेसिस्स पडिमं करेइ, करेत्ता कल्लाकल्लिं ण्हाया[11] •कयबलिकम्मा कयकोउय-मंगल°-पायच्छित्ता उल्लपडसाडया महरिहं पुप्फच्चणं[12] करेइ, करेत्ता जण्णुपायपडिया पणामं करेइ, करेत्ता तओ पच्छा आहारेइ वा नीहारेइ वा चरइ[13] वा ॥

---

१. पयाइसिसि (घ)।
२. अं० ३।१६।
३. भारहे (ख, ग, घ)।
४. × (क)।
५. एदिसए जाव (क, ख, ग, घ)।
६. सं०पा०—लहुकरणजाणपवरं जाव उवट्ठवेंति।
७. भ० ६।१४४, १४६।
८. अं० ३।३१।
९. जेणेव मम (क, ख, ग, घ)।
१०. चेव हरिणेगमेसी देवभत्ता यावि होत्था (ग, घ)।
११. सं० पा०—ण्हाया जाव पायच्छित्ता।
१२. पुप्फच्चणियं (क)।
१३. वरइ (ख)।

३७. तए णं तीसे सुलसाए गाहावइणीए भत्तिबहुमाणसुस्सूसाए हरि-णेगमेसी देवे आराहिए यावि होत्था ॥

३८ तए णं से हरि-णेगमेसी देवे सुलसाए गाहावइणीए अणुकंपणट्ठयाए सुलसं गाहावइणिं तुमं च[1] दो वि समउउयाओ[2] करेइ ॥

३९ तए णं तुब्भे दो वि समामेव[3] गब्भे गिण्हह, समामेव गब्भे परिवहह, समामेव दारए पयायह[4] ॥

४० तए णं सा सुलसा गाहावइणी विणिहायमावण्णे दारए पयायइ[5] ॥

४१ तए णं से हरि-णेगमेसी देवे सुलसाए गाहावइणीए अणुकंपणट्ठयाए[6] विणिहायमावण्णे[7] दारए करयल-संपुडेणं गेण्हइ, गेण्हित्ता तव अंतियं[8] साहरइ। तं समयं च णं तुमं पि नवण्हं मासाणं सुकुमालदारए पसवसि। जे 'वि य णं'[9] देवाणुप्पिए! तव पुत्ता ते वि य तव अंतिआओ करयल-संपुडेणं गेण्हइ, गेण्हित्ता सुलसाए गाहावइणीए अंतिए साहरइ। तं तव चेव णं देवई! एए पुत्ता। णो सुलसाए गाहावइणीए ॥

देवईए-हरिस-पदं

४२. तए णं सा देवई देवी अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म[10] हट्ठतुट्ठ[11]-°चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाण°-हियया अरहं अरिट्ठणेमिं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव ते छ अणगारा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ते छप्पि अणगारे[12] वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता आगयपण्हया[13] पप्पुयलोयणा[14] कंचुयपरिक्खित्तया[15] दरियवलय-बाहा धाराहय-कलंब[16]-पुप्फगं विव समूससिय[17]-रोमकूवा ते छप्पि अणगारे[18] अणिमिसाए दिट्ठीए पेहमाणी-पेहमाणी सुचिरं निरिक्खइ, निरिक्खित्ता वंदइ नमंसइ,

---

१ च णं (ग, घ)।
२ समुदुयाओ (क); समामेव समगब्भाओ (ख); सगब्भयाओ (ग, घ)।
३. सममेव (ख)।
४. पयाह (क)।
५. पयाति (क, ख)।
६. °कंपणट्ठाए (क, ख, ग)।
७ °मावण्णए (क)।
८ अंतियाओ (क)।
९. वि अण्णे (क, ख, ग)।
१० निसम्मा (क, ख, ग)।
११. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियया।
१२ अणगारा (ख, ग, घ)।
१३ पण्हुया (क, ख), पण्हुयाए (ग); पण्हवा (घ)।
१४. पप्फुल्ल° (घ)।
१५ °पडिक्खित्तिया (क, ख, ग), °पडिणिक्खित्तिया (घ)।
१६ कयंब (वृ)।
१७. समूसविय (क, ख, ग)।
१८. अणगारा (ख, ग, घ)।

वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव अरहा[1] अरिट्ठणेमी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहं अरिट्ठणेमिं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तमेव धम्मियं जाणप्पवरं दुरुहइ[2], दुरुहित्ता जेणेव बारवई नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता बारवइं नयरिं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागया, धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव सए वासघरे[3] जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागया सयंसि सयणिज्जंसि निसीयइ ॥

देवईए पुत्ताभिलासा-पदं

४३ तए णं तीसे देवईए देवीए अयं अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे—एवं खलु अहं सरिसए जाव[4] नलकूवर-समाणे सत्त पुत्ते पयाया, नो चेव णं मए एगस्स वि बालत्तणए[5] समणुब्भूए[6]। एस वि य णं कण्हे वासुदेवे छण्हं-छण्हं मासाणं ममं अंतियं पायवंदए हव्वमागच्छइ। तं धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, पुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयपुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयलक्खणाओ णं ताओ अम्मयाओ, जासिं मण्णे णियग-कुच्छि-संभूयाइं[7] थणदुद्ध-लुद्धयाइं महुर-समुल्लावयाइं मम्मण-पजंपियाइं[8] 'थण-मूला'[9] कक्खदेस-भागं अभिसरमाणाइं[10] मुद्धयाइं[11] पुणो य कोमलकमलोवमेहिं हत्थेहिं गिण्हिऊण उच्छंगे[12] णिवेसियाइं देंति समुल्लावए सुमहुरे पुणो-पुणो मंजुलप्पभणिए। अहं णं अधण्णा अपुण्णा अकयपुण्णा अकयलक्खणा एत्तो एक्कतरमवि ण पत्ता—ओहय[13] °मणसंकप्पा[14] करयलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया ° झियायइ ॥

कण्हस्स चिंताकारणपुच्छा-पदं

४४ इमं च णं कण्हे वासुदेवे ण्हाए[15] °कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते सव्वालंकार° विभूसिए देवईए देवीए पायवंदए हव्वमागच्छइ ॥

४५ तए णं से कण्हे वासुदेवे देवइं देविं पासइ, पासित्ता देवईए देवीए पायग्गहणं करेइ, करेत्ता देवइं देविं एवं वयासी—अण्णया णं अम्मो! तुब्भे ममं पासेत्ता

१. अरिहा (क)।
२. द्रुहति (क)।
३. वासघरए (ख, ग)।
४. अ० ३।१९।
५. बालत्तए (ख)।
६. समुब्भूए (ख, ग, घ)।
७ संभूययाइं (ख, ग)।
८ पजंपिराइं (क)।
९. थणमूल (क, ग, घ)।
१०. अतिसरमाणाइं (क, ख, ग, घ)।
११. भवन्तीति गम्यते (वृ), मुद्धयाइं थणियं पियंति (ना० १।२।१२), पण्हयं पियंति (उ०४।९०)।
१२. उच्छंग (ख, ग)।
१३ सं० पा०—ओहय जाव झियायइ।
१४. °संकप्पा भूमिगयदिट्ठीया (वृ)।
१५. सं० पा०—ण्हाए जाव विभूसिए।

हट्ठतुट्ठा जाव[1] भवह, किण्ण अम्मो! अज्ज तुब्भे ओहयमणसकप्पा जाव[2] झियायह ?

देवईए चिंताकारण-निवेदण-पदं

४६ तए ण सा देवई देवी कण्ह वासुदेव एव वयासी—एव खलु अह पुत्ता! सरिसए जाव[3] नलकूबर-समाणे सत्त पुत्ते पयाया, नो चेव ण मए एगस्स वि बालत्तणे अणुब्भूए। तुमं पि य ण पुत्ता! छण्ह-छण्ह मासाण मम अतिय पायवदए हव्वमागच्छसि। तं धण्णाओ ण ताओ अम्मयाओ जाव[4] झियामि।

कण्हस्स देवाराहण-पदं

४७ तए ण से कण्हे वासुदेवे देवइ देविं एव वयासी—मा ण तुब्भे अम्मो! ओहयमणसकप्पा जाव[5] झियायह। अहण्ण तहा घत्तिस्सामि[6] जहा ण मम सहोदरे कणीयसे भाउए भविस्सति त्ति कट्टु देवइ देवि ताहि इट्ठाहि[7] वग्गूहि समासासेइ। तओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[8] •पोसहसाल पमज्जइ, उच्चारपासवणभूमि पडिलेहेइ, दब्भसथारग दुरुहइ, दुरुहित्ता अट्ठमभत्त पगिण्हइ, पगिण्हित्ता पोसहसालाए पोसहिए बभयारी[9] हरि-णेगमेसिं देव मणसीकरेमाणे-मणसीकरेमाणे चिट्ठइ॥

४८ तए ण तस्स कण्हस्स वासुदेवस्स अट्ठमभत्ते परिणममाणे हरि-णेगमेसिस्स देवस्स आसण चलइ जाव[10] अह इह हव्वमागए। सदिसाहि ण देवाणुप्पिया! कि करेमि? किं दलयामि? कि पयच्छामि? किं वा ते हियइच्छिय?

४९ तए ण से कण्हे वासुदेवे त हरि-णेगमेसिं देव अतलिक्खपडिवण्ण पासित्ता हट्ठतुट्ठे पोसह पारेइ, पारेत्ता करयलपरिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए° अजलिं कट्टु एव वयासी—इच्छामि ण देवाणुप्पिया! सहोदर कणीयस भाउयं विदिण्ण॥

५० तए ण से हरि-णेगमेसी कण्ह वासुदेव एव वयासी—होहिइ ण देवाणुप्पिया! तव देवलोयचुए सहोदरे कणीयसे भाउए। से ण उम्मुक्क[11] •बालभावे विण्णय-

---

१. अ० ३।२५।
२. अ० ३।४३।
३. अ० ३।१९।
४. अ० ३।४३।
५. अ० ३।४३।
६. जत्तिस्सामि (ग), वत्तिस्सामि (घ), घइस्सामि (मुद्रित वृ)।
७ पू०—अ० ३।५१।
८. स० पा०—जहा अभओ। नवर हरिणेगमेसिस्स अट्ठमभत्त पगेण्हइ जाव अजलिं।
९. पू०—ना० १।१।५३।
१०. ना० १।१।५५-५७।
११. स० पा०—उम्मुक्क जाव अणुप्पत्ते।

परिणयमेत्ते जोव्वणग॰मणुप्पत्ते अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अंतियं मुंडे[1] •भवित्ता अगाराओ अणगारियं॰ पव्वइस्सइ—कण्हं वासुदेवं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वदइ, वदित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए।

कण्हेण देवईए आसासण-पदं

५१. तए णं से कण्हे वासुदेवे पोसहसालाओ पडिणिवत्तइ, पडिणिवत्तित्ता जेणेव देवई[2] देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता देवईए देवीए पायग्गहणं करेइ, करेत्ता एवं वयासी—होहिइ णं अम्मो! मम सहोदरे कणीयसे भाउए त्ति कट्टु देवइं देविं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं वग्गूहिं आसासेइ, आसासेत्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए॥

गयसुकुमालस्स जम्म-पदं

५२. तए णं सा देवई देवी अण्णया कयाइ तंसि तारिसगंसि वासघरंसि जाव[3] सीहं सुमिणे पासित्ता पडिबुद्धा जाव[4] गब्भं परिवहइ॥

५३. तए णं सा देवई देवी नवण्हं मासाणं जासुमण-रत्तबंधुजीवय-लक्खारस-सरसपारिजातक-तरुणदिवायर-समप्पभं सव्वणयणकंत-सुकुमालपाणिपायं[5] जाव[6] सुरूवं गयतालुसमाणं दारयं पयाया। जम्मणं जहा मेहकुमारे जाव[7] जम्हा णं अम्हं इमे दारए गयतालुसमाणे[8], तं होउ णं अम्हं एयस्स दारगस्स नामधेज्जे गयसुकुमाले[9]॥

५४. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामं कयं—गयसुकुमालो त्ति। सेसं जहा मेहे जाव[10] अलंभोगसमत्थे जाए यावि होत्था॥

सोमिलधूयाए कण्णतेउर-पक्खेव-पदं

५५. तत्थ णं बारवईए नयरीए सोमिले नामं माहणे परिवसइ—अड्ढे। रिउव्वेय जाव[11] बंभण्णएसु य सत्थेसु सुपरिणिट्ठिए यावि होत्था॥

५६. तस्स सोमिल-माहणस्स सोमसिरी नामं माहणी होत्था—सूमालपाणिपाया॥

५७. तस्स णं सोमिलस्स धूया सोमसिरीए माहणीए अत्तया सोमा नामं दारिया

---

१. स॰ पा॰—मुंडे जाव पव्वइस्सइ।
२. देवती (क, ख)।
३. जावपाढया (क)। भ॰ ११।१३३।
४. भ॰ ११।१३३-१४५।
५. सूमाल (वृ)।
६. ओ॰ सू॰ १४३।
७. ना॰ १।१।७४-८१।
८. गयतालुय॰ (क)।
९. गयसुकुमाले, गयसुकुमाले (क, ख)।
१०. ना॰ १।१।८२-८८।
११. ओ॰ सू॰ ६७।

होत्था—सूमालपाणिपाया जाव[1] सुरूवा, रूवेणं[2] •जोव्वणेण° लावण्णेणं उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा यावि होत्था ॥

५८. तए ण सा सोमा दारिया अण्णया कयाइ ण्हाया जाव[3] विभूसिया, वहूहि खुज्जाहि जाव[4] महत्तरविंद-परिक्खित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रायमग्गसि कणगतिंदूसएण कीलमाणी चिट्ठइ ॥

५९. तेण कालेण तेण समएण अरहा अरिट्ठनेमी समोसढे । परिसा निग्गया ॥

६०. तए णं से कण्हे वासुदेवे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे ण्हाए जाव[5] विभूसिए गयसुकुमालेण कुमारेणं सद्धि हत्थिखधवरगए सकोरेंटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण सेयवरचामराहि उद्धुव्वमाणीहि वारवईए नयरीए मज्झंमज्झेण अरहओ अरिट्ठणेमिस्स पायवदए निग्गच्छमाणे सोम दारिय पासइ, पासित्ता सोमाए दारियाए रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य जायविम्हए[6] कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया! सोमिलं माहण जायित्ता सोम दारिय गेण्हह, गेण्हित्ता कण्णतेउरसि पक्खिवह । तए ण एसा गयसुकुमालस्स कुमारस्स भारिया भविस्सइ । तए ण कोडुविय-पुरिसा तहेव पक्खिवति ॥

६१ तए ण से कण्हे वासुदेवे वारवईए नयरीए मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे[7] •जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणव उवागच्छइ, उवा-गच्छित्ता अरह अरिट्ठनेमिं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता अरहओ अरिट्ठनेमिस्स नच्चासन्ने नाइदूरे सुस्सूसमाणे नमसमाणे पजलिउडे अभिमुहे विणएण° पज्जुवासइ ॥

धम्मदेसणा-पदं

६२ तए ण अरहा अरिट्ठणेमी कण्हस्स वासुदेवस्स गयसुकुमालस्स कुमारस्स तीसे य[8] •महतिमहालियाए महच्चपरिसाए चाउज्जाम धम्म कहेइ, त जहा—
सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमण, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमण,
सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं, सव्वाओ परिग्गहातो वेरमण ।°
कण्हे पडिगए ॥

---

१. ओ० सू० १५ ।
२. स० पा०—रूवेणं जाव लावण्णेण ।
३. अ० ३।४४ ।
४. ओ० सू० ७० ।
५ अ० ३।४४ ।
६ जायविम्हए तएण कण्हे वासुदेवे (घ) ।
७ स० पा०—उज्जाणे जाव पज्जुवासइ ।
पू०—ना० १।१।६६ ।
८, सं० पा०—तीसे य धम्मकहा ।

गयसुकुमालस्स पव्वज्जासंकप्प-पद

तए ण से गयसुकुमाले अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए धम्मं सोच्चा[1] •निसम्म हट्ठतुट्ठे अरहं अरिट्ठनेमिं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं। एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! से जहेयं तुब्भे वयह। नवरि देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि। तओ पच्छा मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं पव्वइस्सामि।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि॥

गयसुकुमालस्स अम्मापिऊणं निवेदण-पदं

६४. तए णं से गयसुकुमाले अरहं अरिट्ठनेमिं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणामेव हत्थिरयणे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिखंधवरगए महयाभड-चडगर-पहकरेणं बारवईए नयरीए मज्झंमज्झेणं जेणामेव सए भवणे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणामेव अम्मापियरो तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अम्मापिऊणं पायवडणं करेइ, करेत्ता एवं वयासी—एवं खलु अम्मयाओ ! मए अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए धम्मे निसंते, से वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए॥

६५. तए णं तस्स गयसुकुमालस्स अम्मापियरो एवं वयासी—धन्नोसि तुमं जाया ! संपुण्णोसि तुमं जाया ! कयत्थोसि तुमं जाया ! कयलक्खणोसि तुमं जाया ! जण्णं तुमे अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए धम्मे निसंते से वि य ते धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए॥

६६. तए णं से गयसुकुमाले अम्मापियरो दोच्चं पि एवं वयासी—एवं खलु अम्मयाओ ! मए अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए धम्मे निसंते, से वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए। तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए॥

---

१. सं० पा०—सोच्चा जं नवरं अम्मापियरो आपुच्छामि जहा मेहो महेलियावज्जं जाव वड्ढियकुले।

देवईए सोगाकुलदसा-पदं

६७. तए ण सा देवई देवी त अणिट्ठ अकतं अप्पिय अमणुण्ण अमणाम असुयपुव्व फरुस गिर सोच्चा निसम्म इमेण एयारूवेण मणोमाणसिएण महया पुत्तदुक्खेण अभिभूया समाणी सेयागयरोमकूवपगलत-चिलिणगाया सोयभर-पवेवियगी नित्तेया दीण-विमण-वयणा करयल-मलिय व्व कमलमाला तक्खणओलुग्ग-दुव्वलसरीरलावण्णसुन्न-निच्छाय-गयसिरीया पसिढिलभूसण-पडतखुम्मिय-सचुण्णियधवलवलय-पब्भट्ठ-उत्तरिज्जा सूमालविकिण्ण-केसहत्था मुच्छावस-नट्ठचेय-गरुई परसुनियत्त व्व चपगलया निव्वत्तमहे व्व इदलट्ठी विमुक्कसधि-वधणा कोट्टिमतलसि सव्वगेहि धसत्ति पडिया ॥

देवईए गयसुकुमालस्स य परिसंवाद-पदं

६८. तए णं सा देवई देवी ससभमोवत्तियाए तुरिय कचणभिगारमुहविणिग्गय-सीयल-जलविमलधाराए परिसिचमाणनिव्वावियगायलट्ठी उक्खेवय-तालविट-वीयणग-जणियवाएण सफुसिएण अतेउर-परिजणेण आसासिया समाणी मुत्तावलि-सन्निगास-पवडत-असुधाराहि सिचमाणी पओहरे, कलुण-विमण-दीणा रोय-माणी कदमाणी तिप्पमाणी सोयमाणी विलवमाणी गयसुकुमाल कुमार एव वयासी —तुम सि ण जाया ! अम्ह एगे[1] पुत्ते इट्ठे कते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए वहुमए अणुमए भंडकरडगसमाणे रयणे रयणभूए जीविय-उस्सासिए हियय-णदि-जणणे उबरपुप्फ व दुल्लहे सवणयाए, किमग पुण पासणयाए ? नो खलु जाया ! अम्हे इच्छामो खणमवि विप्पओग सहित्तए। त भुजाहि ताव जाया ! विपुले माणुस्सए कामभोगे जाव ताव वय जीवामो। तओ पच्छा अम्हेहि कालगएहि परिणयवए वड्ढिय-कुलवसततु-कज्जम्मि निरावयक्खे अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइस्ससि ॥

६९ तए ण से गयसुकुमाले अम्मापिऊहि एव वुत्ते समाणे अम्मापियरो एव वयासी—तहेव ण तं अम्मो ! जहेव ण तुब्भे मम एव वयह—"तुम सि ण जाया ! अम्ह एगे पुत्ते इट्ठे कते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए वहुमए अणुमए भडकरडगसमाणे रयणे रयणभूए जीविय-उस्सासिए हियय-णदि-जणणे उबरपुप्फ व दुल्लहे सवणयाए, किमग पुण पासणयाए ? नो खलु जाया ! अम्हे इच्छामो खणमवि विप्पओग सहित्तए। त भुजाहि ताव जाया ! विपुले माणुस्सए कामभोगे जाव ताव वय जीवामो। तओ पच्छा अम्हेहि

---

१. देवक्या अन्येषा पुत्राणा वालत्व नानुभूतम्। तेन 'एगे' इति विशेपणस्य सगतिर्भविष्यति। केवल गजसुकुमालस्यैव लालन-पालनं कृतम्।

कालगएहिं परिणयवए वड्डिय-कुलवंसतंतु-कज्जम्मि निरावयक्खे अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्ससि ।"

एवं खलु अम्मयाओ ! माणुस्सए भवे अधुवे अणितिए असासए वसणसओव-द्दवाभिभूते विज्जुलयाचचले अणिच्चे जलबुब्बुयसमाणे कुसग्गजलबिंदुसन्निभे सभ्भब्भरागसरिसे सुविणदसणोवमे सडण-पडण-विद्धसण-धम्मे पच्छा पुर च णं अवस्सविप्पजहणिज्जे । से के णं जाणइ अम्मयाओ ! के पुव्विं गमणाए के पच्छा गमणाए ? त इच्छामि ण अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुडे भवित्ता ण अगाराओ अणगारिय पव्व-इत्तए ॥

७० तए ण त गयसुकुमाल कुमार अम्मापियरो एव वयासी—इमे य ते जाया ! अज्जय-पज्जय-पिउपज्जयागए सुबहु हिरण्णे य सुवण्णे य कसे य दूसे य मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संतसार-सावएज्जे य अलाहि जाव आसत्त-माओ कुलवसाओ पगाम दाउं पगाम भोत्तु पगाम परिभाएउ । तं अणुहोही ताव जाया ! विपुलं माणुस्सगं इड्ढिसक्कारसमुदय । तओ पच्छा अणुभूय-कल्लाणे अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्ससि ॥

७१. तए ण से गयसुकुमाले अम्मापियरं एव वयासी—तहेव णं तं अम्मयाओ ! जं ण तुब्भे मम एव वयह—'इमे ते जाया ! अज्जग-पज्जग-पिउपज्जयागए सुबहु हिरण्णे य सुवण्णे य कसे य दूसे य मणि-मोत्तिय-सख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-सतसार-सावएज्जे य अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पगाम दाउ पगाम भोत्तुं पगाम परिभाएउं । त अणुहोही ताव जाया ! विपुल माणुस्सग इड्ढि-सक्कारसमुदय । तओ पच्छा अणुभूयकल्लाणे अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्ससि ।"

एव खलु अम्मयाओ ! हिरण्णे य जाव सावएज्जे य अग्गिसाहिए चोरसाहिए रायसाहिए दाइयसाहिए मच्चुसाहिए, अग्गिसामण्णे चोरसामण्णे रायसामण्णे दाइयसामण्णे मच्चुसामण्णे सडण-पडण-विद्धंसणधम्मे पच्छा पुर च ण अवस्स-विप्पजहणिज्जे । से के ण जाणइ अम्मयाओ ! के पुव्विं गमणाए के पच्छा गमणाए ? त इच्छामि ण अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए ॥

७२. तए ण तस्स गयसुकुमालस्स अम्मापियरो जाहे नो संचाएति गयसुकुमाल कुमारं बहूहिं विसयाणुलोमाहिं आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा सण्णवित्तए वा विण्णवित्तए वा ताहे विसयपडिकूलाहिं संजमभउव्वेयकारियाहिं पण्णवणाहिं पण्णवेमाणा एव

वयासी—एस ण जाया ! निग्गथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे केवलिए पडिपुण्णे नेयाउए संसुद्धे सल्लगत्तणे सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे निज्जाणमग्गे निव्वाणमग्गे सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे, अहीव एगतदिट्ठिए, खुरो इव एगतधाराए, लोहमया इव जवा चावेयव्वा, वालुयाकवले इव निरस्साए, गगा इव महानई पडिसोयगमणाए, महासमुद्दो इव भुयाहि दुत्तरे, तिक्ख कमियव्व, गरुअ लवेयव्व, असिधारव्वय चरियव्व। नो खलु कप्पइ जाया ! समणाण निग्गथाण आहाकम्मिए वा उद्देसिए वा कीयगडे वा ठविए वा रइए वा दुब्भिक्खभत्ते वा कतारभत्ते वा वद्दलियाभत्ते वा गिलाणभत्ते वा मूलभोयणे वा कदभोयणे वा फलभोयणे वा वीयभोयणे वा हरियभोयणे वा भोत्तए वा पायए वा।

तुम च ण जाया ! सुहसमुचिए नो चेव ण दुहसमुचिए, नाल सीय नाल उण्ह नाल खुह नाल पिवासं नाल वाइय-पित्तिय-सिंभिय-सन्निवाइए विविहे रोगायके, उच्चावए गामकटए, बावीसं परीसहोवसग्गे उदिण्णे सम्म अहियासित्तए। भुजाहि ताव जाया ! माणुस्सए कामभोगे। तओ पच्छा भुत्तभोगी अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइस्ससि ॥

७३ तए ण से गयसुकुमाले कुमारे अम्मापिऊहिं एवं वुत्ते समाणे अम्मापियर एव वयासी—तहेव ण त अम्मयाओ ! ज ण तुब्भे मम एवं वयह—"एस ण जाया ! निग्गथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे केवलिए पडिपुण्णे नेयाउए ससुद्धे सल्लगत्तणे सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे निज्जाणमग्गे निव्वाणमग्गे सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे, अहीव एगतदिट्ठिए, खुरो इव एगतधाराए, लोहमया इव जवा चावेयव्वा, वालुयाकवले इव निरस्साए, गगा इव महानई पडिसोयगमणाए, महासमुद्दो इव भुयाहि दुत्तरे, तिक्ख कमियव्व, गरुअ लवेयव्व, असिधारव्वय चरियव्वं। नो खलु कप्पइ जाया ! समणाण निग्गथाण आहाकम्मिए वा उद्देसिए वा कीयगडे वा ठविए वा रइए वा दुब्भिक्खभत्ते वा कतारभत्ते वा वद्दलियाभत्ते वा गिलाणभत्ते वा मूलभोयणे वा कदभोयणे वा फलभोयणे वा बीयभोयणे वा हरियभोयणे वा भोत्तए वा पायए वा।

तुम च ण जाया ! सुहसमुचिए नो चेव ण दुहसमुचिए, नाल सीय नाल उण्हं नाल खुह नाल पिवास नाल वाइय-पित्तिय-सिंभिय-सन्निवाइए विविहे रोगायके, उच्चावए गामकटए बावीस परीसहोवसग्गे उदिण्णे सम्म अहियासित्तए। भुजाहि ताव जाया ! माणुस्सए कामभोगे। तओ पच्छा भुत्तभोगी अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइस्ससि।"

एवं खलु अम्मयाओ ! निग्गथे पावयणे कीवाण कायराण कापुरिसाण इहलोगपडिवद्धाण परलोगनिप्पिवासाणं दुरणुचरे पाययजणस्स, नो चेव ण धीरस्स। निच्छियववसियस्स एत्थ किं दुक्कर करणयाए ? तं इच्छामि ण अम्मयाओ !

तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए° ॥

७४. तए णं से कण्हे वासुदेवे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे जेणेव गयसुकुमाले तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गयसुकुमालं आलिंगइ, आलिंगित्ता उच्छंगे निवेसेइ[1], निवेसेत्ता एवं वयासी—'तुमं णं ममं'[2] सहोदरे कणीयसे भाया। तं मा णं तुमं देवाणुप्पिया! इयाणिं अरहओ[3] °अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वाहि[4]। अहण्णं तुमे वारवईए नयरीए महया-महया रायाभिसेएणं अभिसिंचिस्सामि ॥

७५ तए णं से गयसुकुमाले कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए संचिट्ठइ ॥

७६ तए णं से गयसुकुमाले कण्हं वासुदेवं अम्मापियरो य दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! माणुस्सया काम[5]°भोगा असुई वंतासवा पित्तासवा खेलासवा सुक्कासवा सोणियासवा दुरुय-उस्सास-नीसासा दुरुय-मुत्त-पुरीस-पूय-बहुपडिपुण्णा उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाणग-वंत-पित्त-सुक्क-सोणियसंभवा अधुवा अणितिया असासया सडण-पडण-विद्धंसणधम्मा पच्छा पुरं च णं अवस्स°विप्पजहणिज्जा। से के णं जाणइ देवाणुप्पिया! के पुव्विं गमणाए के पच्छा गमणाए? तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया! तुब्भेहिं अब्भ-णुण्णाए समाणे अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए[6] °मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए ॥

गयसुकुमालस्स एगदिवसरज्ज-पदं

७७ तए णं तं गयसुकुमालं कण्हे वासुदेवे अम्मापियरो य जाहे नो संचाएइ बहु-याहिं[7] °विसयाणुलोमाहि य विसयपडिकूलाहि य आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य° आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा सण्णवित्तए वा विण्णवित्तए वा ताहे अकामाइं चेव गयसुकुमालं कुमारं एवं वयासी—तं इच्छामो णं ते जाया! एगदिवसमवि रज्जसिरिं पासित्तए ॥

७८ [8]°तए णं गयसुकुमाले कुमारे कण्हं वासुदेवं अम्मापियरं च अणुवत्तमाणे तुसि-णीए संचिट्ठइ ॥

---

१. गेण्हति २ (क)।
२. तुमं ममं (क, ख)।
३ स० पा०—अरहओ मुंडे जाव पव्वाहि।
४. पव्वयाहि (क्व)।
५. स० पा०—कामा खेलासवा जाव विप्पजहि-यव्वा।
६ स० पा०—अंतिए जाव पव्वइत्तए।
७. स० पा०—बहुयाहिं अणुलोमाहिं जाव आघ-वित्तए।
८. स० पा०—निक्खमणं जहा महब्बलस्स जाव तमाणाए तहा जाव संजमइ।

७९ तए णं कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! गयसुकुमालस्स महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायाभिसेयं उवट्ठवेह ॥

८० तए णं ते कोडुंबियपुरिसा गयसुकुमालस्स कुमारस्स महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायाभिसेयं उवट्ठवेंति।

८१ तए णं से कण्हे वासुदेवे[1] गयसुकुमालं कुमारं[2] महया-महया रायाभिसेएणं अभिसिंचइ, अभिसिंचित्ता करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—जय-जय नंदा! जय-जय भद्दा! जय-जय नंदा भद्दं ते, अजियं जिणाहि, जियं पालयाहि, जियमज्झे वसाहि, इंदो इव देवाणं चमरो इव असुराणं धरणो इव नागाणं चंदो इव ताराणं भरहो इव मणुयाणं बारवईए नयरीए अण्णेसिं च बहूणं गामागर-नगर-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-पट्टण-आसम-निगम-संवाह-सण्णिवेसाणं आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे महयाहय-नट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुप्पवाइयरवेणं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहराहि त्ति कट्टु जय-जय-सद्दं पउंजंति ॥

८२ तए णं से गयसुकुमाले राया जाए जाव[3] रज्जं पसासेमाणे विहरइ ॥

८३ तए णं तं गयसुकुमालं रायं कण्हे वासुदेवे अम्मापियरो य एवं वयासी—भण जाया! किं दलयामो? किं पयच्छामो? किं वा ते हिय-इच्छिए सामत्थे?

गयसुकुमालस्स पव्वज्जा-पदं

८४ तए णं से गयसुकुमाले राया कण्हं वासुदेवं अम्मापियरो य एवं वयासी—इच्छामि णं देवाणुप्पिया! कुत्तियावणाओ रयहरणं पडिग्गहं च आणियं कासवियं च सद्दावियं। निक्खमणं जहा महब्बलस्स[4] ॥

८५ तए णं से गयसुकुमाले कुमारे अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए इमं एयारूवं धम्मियं उवएसं सम्मं पडिवज्जइ—तमाणाए तह गच्छइ, तह चिट्ठइ, तह निसीयइ, तह तुयट्टइ, तह भुंजइ, तह भासइ, तह उट्ठाए उट्ठाय पाणेहिं भूएहिं जीवेहिं सत्तेहिं संजमेणं संजमइ ॥

८६. तए णं से गयसुकुमाले अणगारे जाए—इरियासमिए जाव[5] गुत्तबंभयारी ॥

८७ तए णं से गयसुकुमाले जं चेव दिवसं पव्वइए तस्सेव दिवसस्स पच्चावरण्ह-कालसमयंसि[6] जेणेव अरहा अरिट्ठणेमी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहं

१,२. पू०—ना० १।१।११८।
३. ना०—१।१।११९।
४. भग० ११।१६८; ना० १।१।१२२-१५०।
५ ना०—१।१।१६४।
६ पुव्वावरण्ह० (ख, ग, घ)।

अरिट्ठणेमिं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे महाकालंसि सुसाणंसि एगराइयं महापडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए। अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि ॥

गयसुकुमालस्स महापडिमा-पदं

८८. तए णं से गयसुकुमाले अणगारे अरहया अरिट्ठणेमिणा अब्भणुण्णाए समाणे अरहं अरिट्ठणेमिं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अंतिए सहसंबवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव महाकाले सुसाणे तेणेव उवागए, उवागच्छित्ता थंडिल्लं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ,पडिलेहेत्ता ईसिं पब्भारगएणं काएणं[1] •वग्घारिय-पाणी अणिमिसनयणे सुक्कपोग्गल[2]-निरुद्धदिट्ठी[3]° दो वि पाए साहट्टु एगराइं महापडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥

सोमिलकय-उवसग्ग-पदं

८९ इमं च णं सोमिले माहणे सामिधेयस्स अट्ठाए बारवईओ नयरीओ बहिया पुव्वणिग्गए। समिहाओ य दब्भे य कुसे य पत्तामोडं[4] य गेण्हइ, गेण्हित्ता तओ पडिणियत्तइ[5], पडिणियत्तित्ता महाकालस्स सुसाणस्स अदूरसामंतेणं वीईवय-माणे-वीईवयमाणे संझाकालसमयंसि पविरलमणुस्संसि[6] गयसुकुमालं अणगारं पासइ, पासित्ता तं वेरं सरइ, सरित्ता आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमि-सेमाणे एवं वयासी—एस णं भो ! से गयसुकुमाले कुमारे अपत्थिय[7]•पत्थिए, दुरंत-पंत-लक्खणे, हीणपुण्णचाउद्दसिए, सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति°-परिवज्जिए, जेणं मम धूयं सोमसिरीए भारियाए अत्तयं सोमं दारियं अदिट्ठदोसपत्तियं कालवत्तिणिं विप्पजहेत्ता मुंडे जाव[8] पव्वइए। तं सेयं खलु मम गयसुकुमालस्स कुमारस्स वेरनिज्जायणं करेत्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता दिसापडिलेहणं करेइ, करेत्ता सरसं मट्टियं[9] गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव गयसुकुमाले अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गयसुकुमालस्स[10] अणगारस्स मत्थए मट्टियाए[11] पालिं

---

१. सं० पा०—काएणं जाव दो वि पाए।
२. एग० (भ० ३।१०५)।
३. निविट्ठ० (भ० ३।१०५)।
४. पत्तामोडय (वृ)।
५. पडिनिक्खमति (क)।
६. °माणूसंसि (क)।
७. सं० पा०—अपत्थिय जाव परिवज्जिए।
८. अ० ३।२०।
९. मत्तिय (ख, ग)।
१०. °सूमालस्स (क, ख)।
११. × (क), मट्टिया (ख)।

वंधइ, वंधित्ता जलतीओ चिययाओ फुल्लियकिंसुयसमाणे खइरिंगाले कहल्लेण[1] गेण्हइ, गेण्हित्ता गयसुकुमालस्स अणगारस्स मत्थए पक्खिवइ, पक्खिवित्ता भीए तत्थे तसिए उव्विग्गे सजायभए तओ खिप्पामेव अवक्कमइ, अवक्कमित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए ।।

गयसुकुमालस्स सिद्धि-पदं

९० तए ण तस्स गयसुकुमालस्स अणगारस्स सरीरयसि वेयणा पाउब्भूया—उज्जला[2] •विउला कक्खडा पगाढा चडा दुक्खा ° दुरहियासा ।।

९१. तए ण से गयसुकुमाले अणगारे सोमिलस्स माहणस्स मणसा वि अप्पदुस्समाणे त उज्जल जाव[3] दुरहियास वेयण अहियासेइ ।।

९२. तए ण तस्स गयसुकुमालस्स अणगारस्स तं उज्जलं जाव[4] दुरहियास वेयणं अहियासेमाणस्स सुभेण परिणामेण पसत्थज्झवसाणेण तदावरणिज्जाण कम्माण खएण कम्मरयविकिरणकर अपुव्वकरण अणुप्पविट्ठस्स अणते अणुत्तरे[5] •निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे ° केवलवरणाणदसणे समुप्पण्णे । तओ पच्छा सिद्धे[6] •वुद्धे मुत्ते अतयडे परिनिव्वुए सव्वदुक्ख °-प्पहीणे ।।

९३ तत्थ ण 'अहासनिहिएहिं देवेहिं सम्म आराहिए' त्ति कट्टु दिव्वे सुरभिगधोदए वुट्ठे, दसद्धवण्णे कुसुमे निवाडिए, चेलुक्खेवे कए, दिव्वे य गीयगधव्वणिणाए कए यावि होत्था ।।

कण्हेण वुड्ढस्स साहिज्जकरण-पदं

९४. तए ण से कण्हे वासुदेवे कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव[7] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते ण्हाए जाव[8] विभूसिए हत्थिखधवरगए सकोरेटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं महयाभड-चडगर-पहकरवद-परिक्खित्ते वारवइ नयरिं मज्झमज्झेण जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।।

९५. तए ण से कण्हे वासुदेवे वारवईए नयरीए मज्झमज्झेण निग्गच्छमाणे एक्क पुरिस[9]—जुण्ण जरा-जज्जरिय-देह[10] •आउर भूसिय पिवासिय दुव्वल ° किलत

---

१. कभल्लेण (ख, ग, घ) ।
२. स० पा०—उज्जला जाव दुरहियासा ।
३ अ० ३।९० ।
४. अ० ३।९० ।
५. स० पा०—अणुत्तरे जाव केवल ° ।
६ स० पा०—सिद्धे जाव प्पहीणे ।
७. ना० १।१।२४ ।
८ अ० ३।४४ ।
९ पुरिस पासइ (क, ख, ग, घ) ।
१० स० पा०—देह जाव किलत ।

महइमहालयाओ इट्टगरासीओ एगमेगं इट्टगं गहाय बहिया रत्थापहाओ अंतोगिहं अणुप्पविसमाणं[1] पासइ ॥

९६. तए णं से कण्हे वासुदेवे तस्स पुरिसस्स अणुकंपणट्ठाए हत्थिखंधवरगए चेव एगं इट्टगं गेण्हइ, गेण्हित्ता बहिया रत्थापहाओ अंतोगिहं अणुप्पवेसेइ ॥

९७. तए णं कण्हेणं वासुदेवेणं एगाए इट्टगाए गहियाए समाणीए अणेगेहिं[2] पुरिससएहिं से महालए इट्टगस्स रासी बहिया रत्थापहाओ अंतोघरंसि अणुप्पवेसिए ॥

कण्हस्स गयसुकुमाल-दंसणाभिलासा-पदं

९८ तए णं से कण्हे वासुदेवे बारवईए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव उवागए, उवागच्छित्ता[3] °अरहं अरिट्ठनेमिं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता° वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता गयसुकुमालं अणगारं अपासमाणे अरहं अरिट्ठणेमिं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—कहि णं भंते ! से मम सहोदरे कणीयसे भाया गयसुकुमाले अणगारे 'जं णं'[4] अहं वंदामि नमंसामि ?

गयसुकुमालस्स सिद्धि-सूयणा-पदं

९९. तए णं अरहा अरिट्ठनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—साहिए णं कण्हा ! गयसुकुमालेणं अणगारेणं अप्पणो अट्ठे ॥

१००. तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठनेमिं एवं वयासी—कहण्णं[5] भंते ! गयसूमालेणं अणगारेणं साहिए अप्पणो अट्ठे ?

१०१. तए णं अरहा अरिट्ठनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—एवं खलु कण्हा ! गयसुकुमालेणं अणगारेणं मम कल्लं पच्चावरण्हकालसमयंसि[6] वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं[7] °भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे महाकालंसि सुसाणंसि एगराइयं महापडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए जाव[8] एगराइं महापडिमं° उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ।

तए णं तं गयसुकुमालं अणगारं एगे पुरिसे पासइ, पासित्ता आसुरुत्ते[9] °गयसुकुमालस्स अणगारस्स मत्थए मट्टियाए पालिं बंधइ, बंधित्ता जलंतीओ

---

१. अणुपविसमाणं (ख, ग)।
२. अण्णेहिं (क)।
३. सं० पा०—उवागच्छित्ता जाव वंदइ।
४ जा णं (क, ख, ग), जेण (ग)।
५. कहं णं (क, ख, ग)।
६. पुव्वावरण्ह° (ग, घ)।
७ सं० पा०—इच्छामि णं जाव उवसंपज्जित्ता।
८. अ० ३।८८।
९. सं० पा०—आसुरुत्ते जाव सिद्धे। पू०—३।८९।

चिययाओ फुल्लियकिसुयसमाणे खइरिगाले कहल्लेण गेण्हइ, गेण्हित्ता गयसुकुमालस्स अणगारस्स मत्थए पक्खिवइ, पक्खिवित्ता भीए तत्थे तसिए उव्विग्गे सजायभए तओ खिप्पामेव अवक्कमइ, अवक्कमित्ता जामेव दिस पाउब्भूए तामेव दिस पडिगए।

तए ण तस्स गयसुकुमालस्स अणगारस्स सरीरयसि वेयणा पाउब्भूआ—उज्जला विउला कक्खडा पगाढा चडा दुक्खा दुरहियासा।

तए ण से गयसुकुमाले अणगारे तस्स पुरिसस्स मणसा वि अप्पदुस्समाणे त उज्जल जाव दुरहियास वेयण अहियासेइ।

तए ण तस्स गयसुकुमालस्स अणगारस्स त उज्जल जाव दुरहियास वेयण अहियासेमाणस्स सुभेण परिणामेण पसत्थज्झवसाणेण तदावरणिज्जाण कम्माण खएण कम्मरयविकिरणकर अपुव्वकरण अणुप्पविट्ठस्स अणते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरणाणदसणे समुप्पण्णे। तओ पच्छा° सिद्धे। त एव खलु कण्हा! गयसुकुमालेण अणगारेण साहिए अप्पणो अट्ठे॥

१०२ तए ण से कण्हे वासुदेवे अरह अरिट्ठणेमि एव वयासी—केस[1] ण भते! से पुरिसे अपत्थियपत्थिए[2], °दुरत-पत-लक्खण, हीणपुण्णचाउद्दसिए, सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति°-परिवज्जिए, जेण मम सहोदर कणीयस भायर गयसुकुमाल अणगार अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेइ ?

१०३ तए ण अरहा अरिट्ठनेमी कण्ह वासुदेव एव वयासी—मा ण कण्हा! तुम तस्स पुरिसस्स पदोसमावज्जाहि। एव खलु कण्हा! तेण पुरिसेण गयसुकुमालस्स अणगारस्स साहिज्जे दिण्णे।

कहण्णं भते! तेण पुरिसेण गयसुकुमालस्स अणगारस्स साहिज्जे दिण्णे ?

१०४ तए ण अरहा अरिट्ठनेमी कण्ह वासुदेव एव वयासी—से नूण कण्हा! तुम मम पायवदए हव्वमागच्छमाणे वारवईए नयरीए एग पुरिस[3]—°जुण्ण जरा-जज्जरिय-देह आउर झूसिय पिवासिय दुव्वल किलत महइमहालयाओ इट्टगरासीओ एगमेग इट्टग गहाय वहिया रत्थापहाओ अतोगिह अणुप्पविसमाण पाससि। तए ण तुम तस्स पुरिसस्स अणुकपणट्ठाए हत्थिखधवरगए चेव एग इट्टग गेण्हसि, गेण्हित्ता वहिया रत्थापहाओ अतोगिह अणुप्पवेससि। तए ण तुमे एगाए इट्टगाए गहियाए समाणीए अणेगेहि पुरिससएहि से महलाए इट्टगस्स रासी वहिया रत्थापहाओ अतोघरसि° अणुपवेसिए। जहा ण

---

१ से के ण (घ)।

२. स०पा०—अपत्थियपत्थिए जाव परिवज्जिए।

३. स० पा०—पुरिस पाससि जाव अणुपवेसिए।

कण्हा ! तुमे तस्स पुरिसस्स साहिज्जे दिण्णे, एवामेव कण्हा ! तेणं पुरिसेण गयसुकुमालस्स अणगारस्स अणेगभव-सयसहस्स-संचिय कम्मं उदीरेमाणेणं वहुकम्मणिज्जरत्थ साहिज्जे दिण्णे ॥

१०५ तए ण से कण्हे वासुदेवे अरह अरिट्ठनेमिं एव वयासी—से णं भते ! पुरिसे मए कहं जाणियव्वे ?

१०६ तए ण अरहा अरिट्ठणेमी कण्ह वासुदेव एव वयासी–जे णं कण्हा ! तुम वारवईए नयरीए अणुप्पविसमाण पासेत्ता ठियए[1] चेव ठिइभेएण कालं करिस्सइ, तण्ण तुम जाणिज्जासि 'एस ण से पुरिसे' ॥

१०७ तए ण से कण्हे वासुदेवे अरह अरिट्ठनेमिं वदइ नमसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव आभिसेय हत्थिरयण तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थि दुरुहइ[2], दुरुहित्ता जेणेव वारवई नयरी जेणेव सए गिहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

सोमिलस्स अकालमच्चु-पदं

१०८ तए ण तस्स सोमिलमाहणस्स कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए[3] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते अयमेयारूवे अज्झत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पण्णे—एव खलु कण्हे वासुदेवे अरह अरिट्ठणेमिं पायवंदए निग्गए। त नायमेय अरहया, विण्णायमेय अरहया, सुयमेय अरहया, सिट्ठमेयं अरहया भविस्सइ कण्हस्स वासुदेवस्स। त न नज्जइ ण कण्हे वासुदेवे मम केणइ[4] कु-मारेणं मारिस्सइ त्ति कट्टु भीए तत्थे तसिए उव्विग्गे सजायभए सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ। कण्हस्स वासुदेवस्स वारवइ नयरि अणुप्पविसमाणस्स पुरओ सपक्खि सपडिदिसि[5] हव्वमागए ॥

१०९ तए ण से सोमिले माहणे कण्ह वासुदेवं सहसा पासेत्ता भीए तत्थे तसिए उव्विग्गे संजायभए ठियए चेव ठिइभेय[6] काल करेइ, धरणितलसि सव्वगेहिं 'धस' त्ति सण्णिवडिए ॥

११० तए ण से कण्हे वासुदेवे सोमिल माहण पासइ, पासित्ता एवं वयासी—एस ण भो ! देवाणुप्पिया ! से सोमिले माहणे अपत्थियपत्थिए जाव[7] सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिए, जेण ममं सहोयरे कणीयसे भायरे गयसुकुमाले अणगारे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविए त्ति कट्टु सोमिल माहणं पाणेहिं कड्ढावेइ,

---

१. ठिवते (क, घ)।
२ द्रुहति (क)।
३ पू०—ना० १।१।२४।
४. केणवि (ख, घ)।
५. ०दिस (क, घ)।
६ ९० सूत्रे 'ठिइभेएण' इति पाठोस्ति। अत्र सम्भवत कालस्य विशेषण कृत स्यात्।
७. अं० ३।८९।

कड्ढावेत्ता तं भूमिं पाणिएणं अब्भोक्खावेइ, अब्भोक्खावेत्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागए। सयं गिहं अणुप्पविट्ठे ॥

निक्खेव-पदं

१११ एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[1] संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं तच्चस्स वग्गस्स अट्ठमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥

९-१३ अज्झयणाणि

उक्खेव-पदं

११२. [2]•जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्ठमस्स अंगस्स तच्चस्स वग्गस्स अट्ठमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते। नवमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स अंतगडदसाणं के अट्ठे पण्णत्ते ?°

सुमुहादि-पदं

११३ एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवईए नयरीए कण्हे नामं वासुदेवे राया जहा पढमए जाव[3] विहरइ ॥

११४ तत्थ णं बारवईए बलदेवे नामं राया होत्था—वण्णओ[4] ॥

११५ तस्स णं बलदेवस्स रण्णो धारिणी नामं देवी होत्था—वण्णओ[5] ॥

११६. तए णं सा धारिणी[6] •देवी अण्णया कयाइ तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि जाव[7] नियगवयणमइवयंतं सीहं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धा°। जहा गोयमे, नवरं—सुमुहे कुमारे। पण्णासं कण्णाओ। पण्णासओ दाओ। चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जइ। वीसं वासाइं परियाओ। सेसं तं चेव जाव[8] सेत्तुंजे सिद्धे ॥

११७ निक्खेवओ ॥

११८ एवं—दुम्मुहे वि। कूवए वि। तिण्णि वि बलदेव-धारिणी-सुया।
दारुए वि एवं चेव, नवरं—वसुदेव-धारिणी-सुए।
एवं—अणाहिट्ठी वि वसुदेव - धारिणी - सुए ॥

---

१ ना० १।१।७।
२ सं० पा०—नवमस्स उक्खेवओ।
३ अ० १।१४।
४ ओ० सू० १४।
५. ओ० सू० १५।
६. सं० पा०—धारिणी। सीहं सुमिणे।
७ भ० ११।१३३।
८. अ० १।१७-२४।

चउत्थो वग्गो

१-१० अज्झयणाणि

उक्खेव-पदं

१. जइ ण भंते ! समणेण भगवया महावीरेणं जाव[1] संपत्तेण तच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, चउत्थस्स वग्गस्स अंतगडदसाणं समणेणं भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ?

२ एव खलु जंवू ! समणेण भगवया महावीरेणं जाव[2] सपत्तेण चउत्थस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा—

संगहणी-गाहा

१. जालि २ मयालि ३ उवयाली, ४. पुरिससेणे ५ वारिसेणे य।
६. पज्जुण्ण ७ संव ८ अणिरुद्ध ९ सच्चणेमि य १० दढणेमी ॥१॥

३ जइ ण भंते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव[3] सपत्तेण चउत्थस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स ण अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

जालिपभिति-पदं

४ एव खलु जंवू ! तेण कालेण तेणं समएणं वारवई नयरी। तीसे ण वारवईए नयरीए जहा पढमे जाव[4] कण्हे वासुदेवे आहेवच्चं जाव[5] कारेमाणे पालेमाणे विहरइ ॥

५. तत्थ ण वारवईए नगरीए वसुदेवे राया। धारिणी देवी—वण्णओ[6] जहा गोयमो[7], नवरं—जालिकुमारे। पण्णासओ दाओ। वारसंगी। सोलस वासा परियाओ। सेसं जहा गोयमस्स जाव[8] सेत्तुंजे सिद्धे ॥

१,२,३. ना० १।१।७।
४. अ० १।६-१४।
५ अ० १।१४।
६. ओ० सू० १५।
७. अ० १।१७।
८ अ० १।१७-२४।

६ एव—मयाली उवयाली पुरिससेणे य वारिसेणे य ।
एव—पज्जुण्णे वि, नवर—कण्हे पिया[1], रुप्पिणी माया[2] ।
एव—सबे वि, नवर—जववई माया ।
एव—अणिरुद्धे वि, नवर—पज्जुण्णे पिया, वेदब्भी माया ।
एव—सच्चणेमी, नवर—समुद्दविजए पिया, सिवा माया ।
एव—दढणेमी वि[3] सव्वे एगगमा ।।

निक्खेव-पद

७. [3]•एवं खलु जंबू ! समणेण भगवया महावीरेण अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाण चउत्थस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते° ।।

---

१. से पिया (ख, ग, घ) ।
२. से माया (ख, ग, घ) ।
३ स० पा०—चउत्थस्स वग्गस्स निक्खेवओ ।

पंचमो वग्गो

पढमं अज्झयणं

पउमावई

उक्खेव-पदं

१ जइ णं भंते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव[1] संपत्तेणं चउत्थस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, पंचमस्स वग्गस्स अंतगडदसाणं समणेणं भगवया महावीरेण जाव[2] संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

२ एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[3] संपत्तेणं पंचमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

१ पउमावई य २. गोरी, ३ गंधारी ४ लक्खणा ५ सुसीमा य ।
६ जंबवइ ७ सच्चभामा, ८. रुप्पिणी ९ मूलसिरि १०. मूलदत्ता वि ॥१॥

३ जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं पंचमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

पउमावई-पदं

४ एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवई नगरी । जहा पढमे जाव[4] कण्हे वासुदेवे आहेवच्चं जाव[5] कारेमाणे पालेमाणे विहरइ ॥

५. तस्स णं कण्हस्स वासुदेवस्स पउमावई नामं देवी होत्था—वण्णओ[6] ॥

१,२,३. ना० १।१।७ ।
४. अं० १।८-१४ ।
५. अं० १।१४ ।
६. ओ० सू० १५ ।

६ तेण कालेण तेण समएण अरहा अरिट्ठणेमी समोसढे जाव[1] सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ। कण्हे वासुदेवे निग्गए जाव[2] पज्जुवासइ ॥

७ तए ण सा पउमावई देवी इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठतुट्ठा जहा देवई देवी जाव[3] पज्जुवासइ ॥

८. तए णं अरहा अरिट्ठणेमी कण्हस्स वासुदेवस्स पउमावईए य[4] •देवीए तीसे महतिमहालियाए महच्चपरिसाए चाउज्जाम धम्मं कहेइ, त जहा—सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमण, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमण, सव्वाओ अदिण्णा-दाणाओ वेरमण, सव्वाओ परिग्गहातो वेरमण° । परिसा पडिगया ॥

९ तए ण कण्हे वासुदेवे अरह अरिट्ठणेमिं वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—इमीसे ण भते! वारवईए नगरीए नवजोयणवित्थिण्णाए जाव[5] देवलोगभूयाए किंमूलाए विणासे भविस्सइ ?

१०. कण्हाइ! अरहा अरिट्ठणेमी कण्ह वासुदेव एव वयासी—एव खलु कण्हा! इमीसे वारवईए नयरीए नवजोयणवित्थिण्णाए जाव[6] देवलोगभूयाए सुरग्गि-दीवायणमूलाए विणासे भविस्सइ ॥

११. कण्हस्स वासुदेवस्स अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अतिए एय सोच्चा निसम्म अय अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—धण्णा ण ते जालि-मयालि-उवयालि-पुरिससेण-वारिसेण-पज्जुण्ण-सव-अणिरुद्ध-'दढणेमि-सच्च-णेमि'[7]-प्पभियओ कुमारा जे ण चइत्ता हिरण्ण जाव[8] दाण दाइयाण परिभाएत्ता अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अतिय मुडा[9] •भवित्ता अगाराओ अणगारिय° पव्व-इया। अहण्ण अधण्णे अकयपुण्णे रज्जे य[10] •रट्ठे य कोसे य कोट्ठागारे य बले य वाहणे य पुरे य° अतेउरे य माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववण्णे नो सचाएमि अरहओ अरिट्ठणेमिस्स[11] •अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय° पव्वइत्तए ॥

१२. कण्हाइ! अरहा अरिट्ठणेमी कण्ह वासुदेव एव वयासी—से नूण कण्हा! तव अयं अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—धण्णा ण ते

---

१. अ० १।१८।
२. अ० ३।६१।
३. अ० ३।३१।
४ स० पा०—पउमावईए य धम्मकहा।
५ अ० १।८।
६. अ० १।८।
७ चतुर्थवर्ग-प्रथमाध्ययनस्य गाथातश्चात्र द्वयो र्नाम्नो र्व्यत्ययोस्ति।
८. ना० १।५।४५।
९ सं० पा०—मुडा जाव पव्वइया।
१०. स० पा०—रज्जे य जाव अतेउरे।
११. स० पा०—अरिट्ठनेमिस्स जाव पव्वइत्तए।

जालिप्पभिइकुमारा जाव[1] पव्वइया। अहण्णं अधण्णे जाव[2] नो संचाएमि अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए। से नूण कण्हा ! अत्थे समत्थे ?

हंता अत्थि। तं नो खलु कण्हा ! एतं भूतं वा भव्वं वा भविस्सइ वा जण्णं वासुदेवा चइत्ता हिरण्णं जाव[3] पव्वइस्संति॥

१३. से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ 'न एतं भूतं वा[4] •भव्वं वा भविस्सइ वा जण्णं वासुदेवा चइत्ता हिरण्णं जाव° पव्वइस्संति ?

१४. कण्हाइ ! अरहा अरिट्ठणेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—एवं खलु कण्हा ! सव्वे वि य णं वासुदेवा पुव्वभवे निदाणकडा। से एतेणट्ठेणं कण्हा ! एवं वुच्चइ 'न एतं भूतं[5] •वा भव्वं वा भविस्सइ वा जण्णं वासुदेवा चइत्ता हिरण्णं जाव° पव्वइस्संति॥

१५. तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठणेमिं एवं वयासी—अहं णं भंते ! इतो कालमासे कालं किच्चा कहिं गमिस्सामि ? कहिं उववज्जिस्सामि ?

१६. तए णं अरहा अरिट्ठणेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—एवं खलु कण्हा ! तुमं बारवईए नयरीए सुरग्गि[6]-दीवायण-कोव-निदड्ढाए[7] अम्मापिइ-नियग-विप्पहूणे रामेण बलदेवेण सद्धिं दाहिणवेयालिं अभिमुहे जुहिट्ठिल्लपामोक्खाणं पंचण्हं पंडवाणं पंडुरायपुत्ताणं पासं पंडुमहुरं संपत्थिए कोसंबवणकाणणे[8] नग्गोहवर-पायवस्स अहे पुढविसिलापट्टए पीयवत्थ-पच्छाइय-सरीरे जराकुमारेणं तिक्खेणं कोदंड-विप्पमुक्केणं[9] उसुणा वामे पादे विद्धे समाणे कालमासे कालं किच्चा तच्चाए वालुयप्पभाए पुढवीए उज्जलिए नरए नेरइयत्ताए उववज्जिहिसि॥

१७. तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म ओहय[10]•मणसंकप्पे करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए° झियाइ॥

१८. कण्हाइ ! अरहा अरिट्ठणेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! ओहयमणसंकप्पे जाव[11] झियाह। एवं खलु तुमं देवाणुप्पिया ! तच्चाओ पुढवीओ उज्जलियाओ नरयाओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे आगमेसाए उस्सप्पिणीए पंडेसु जणवएसु सयदुवारे नगरे

---

१. अ० ५।११।
२. अ० ५।११।
३. ना० १।५।४५।
४. सं० पा०—भूतं वा जाव पव्वइस्संति।
५. सं० पा०—भूतं जाव पव्वइस्संति।
६. सुरदीवायण (क, ख, ग)।
७. निदड्ढाते (ख, ग)।
८. कोसंबकाणणे (क, ख, ग, घ, वृपा)।
९. मुक्केण (क)।
१०. सं० पा०—ओहय जाव झियाइ।
११. अ० ५।१७।

बारसमे अममे नाम अरहा भविस्ससि। तत्थ तुम बहूइ वासाइं केवलि-परियाग पाउणेत्ता सिज्झिहिसि बुज्झिहिसि मुच्चिहिसि परिनिव्वाहिसि सव्व-दुक्खाण अंत काहिसि ॥

१९. तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अंतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे जाव[1] अप्फोडेइ, अप्फोडेत्ता वग्गइ, वग्गित्ता तिवइ छिंदइ, छिंदित्ता सीहणाय करेइ, करेत्ता अरह अरिट्ठणेमि वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता तमेव आभिसेक्क हत्थि दुरुहइ, दुरुहित्ता जेणेव बारवई नयरी जेणेव सए गिहे तेणेव उवागए। आभिसेयहत्थिरयणाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सए सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयति, निसीइत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया! बारवईए नयरीए सिंघाडग[2]•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु हत्थिखंधवरगया महया-महया सद्देण° उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एव वयह—एव खलु देवाणुप्पिया! बारवईए नयरीए नवजोयणविच्छिण्णाए जाव[3] देवलोगभूयाए सुरग्गि-दीवायण-मूलाए विणासे भविस्सइ, त जो ण देवाणुप्पिया! इच्छइ बारवईए नयरीए राया वा जुवराया[4] वा ईसरे वा तलवरे वा माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठी वा देवी[5] वा कुमारो वा कुमारी वा अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अंतिए मुडे[6] •भवित्ता अगाराओ अणगारिय° पव्वइत्तए, त ण कण्हे वासुदेवे विसज्जेइ। पच्छातुरस्स वि य से अहापवित्त वित्तिं अणुजाणइ। महया इड्ढिसक्कारसमुदएण य से निक्ख-मण करेइ। दोच्च पि तच्च पि घोसणय घोसेह, घोसेत्ता मम एय पच्चप्पिणह ॥

२० तए ण ते कोडुंबिया जाव[7] पच्चप्पिणति ॥

२१ तए ण सा पउमावई देवी अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया जाव[8] हरिसवस-विसप्पमाणहियया अरह अरिट्ठणेमि वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—सद्दहामि ण भते! निग्गथ पावयण[9], से जहेय तुब्भे वयह। ज नवर—देवाणुप्पिया! कण्ह वासुदेव आपुच्छामि। तए ण अह देवाणुप्पियाण अंतिए मुडा[10] •भवित्ता अगाराओ अणगारिय° पव्वयामि।

अहासुह देवाणुप्पिया! मा पडिबध करेहि ॥

---

१ अ० ३।२५।
२. स० पा०—सिंघाडग जाव उग्घोसेमाणा।
३. अ० १।८।
४ जुगराया (क, ख)।
५. × (क, ख)।
६ स० पा०—मुडे जाव पव्वइत्तए।
७. अ० ५।१९।
८. अं० ३।२५।
९ पू—ना० १।१।१०१।
१०. स० पा०—मुडा जाव पव्वयामि।

२२ तए ण सा पउमावई देवी धम्मिय जाणप्पवर दुरुहइ, दुरुहित्ता जेणेव वारवई नयरी जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल[1] °परिग्गहिय दसणह सिरसावत्त मत्थए अर्जालि° कट्टु कण्ह वासुदेव एव वयासी—इच्छामि ण देवाणुप्पिया ! तुब्भेहि अब्भणुण्णाया समाणा[2] अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अतिए मुडा[3] °भवित्ता अगाराओ अणगारिय° पव्वइत्तए।

अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिवध करेहि ॥

२३ तए ण से कण्हे वासुदेवे कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! पउमावईए देवीए महत्थ महग्घ महरिह निक्खमणाभिसेय उवट्ठवेह, उवट्ठवेत्ता एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह ॥

२४. तए ण ते कोडुबियपुरिसा जाव[4] तमाणत्तिय पच्चप्पिणति ॥

२५. तए ण से कण्हे वासुदेवे पउमावइ देवि पट्टय[5] दुरुहेइ, अट्ठसएण सोवण्णकलसाण जाव[6] महाणिक्खमणाभिसेएण अभिसिचइ, अभिसिचित्ता सव्वालकारविभूसिय करेइ, करेत्ता पुरिससहस्सवाहिणि सिविय दुरुहावेइ, दुरुहावेत्ता वारवईए नयरीए मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव रेवयए पव्वए जेणेव सहसववणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीय ठवेइ, 'पउमावइ देवि'[7] सीयाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव अरहा अरिट्ठणेमी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरह अरिट्ठणेमि तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—एस ण भते ! मम अग्गमहिसी पउमावई नाम देवी इट्ठा कता पिया मणुण्णा मणाभिरामा जाव[8] उबरपुप्फ पिव दुल्लहा सवणयाए, किमग पुण पासणयाए ? तण्ण अह देवाणुप्पिया ! सिस्सिणिभिक्ख दलयामि। पडिच्छतु ण देवाणुप्पिया ! सिस्सिणिभिक्ख।

अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबध करेह ॥

२६. तए ण सा पउमावई उत्तरपुरत्थिम दिसीभाग अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव

---

१. स० पा०—करयल।
२. समाणी (घ)।
३. स० पा०—मुडा जाव पव्वयामि। अत्र 'पव्वयामि' इति क्रियापद अशुद्ध प्रतिभाति। 'इच्छामि' क्रियापदस्य योगे सर्वत्रापि 'पव्वइत्तए' इति पाठो दृश्यते। अर्थदृष्ट्याप्यसौ युक्त.। अत्र लिपिदोषेण परिवर्त्तन जातमिति प्रतीयते।
४. अ० ५।२३।
५. पट्टयसि (घ)।
६. राय० सू० २८०।
७. पउमावई देवी (क, ख, ग, घ)।
८. ना० १।१।१४५।

आभरणालकार ओमुयइ, ओमुयित्ता सयमेव पचमुट्ठियं लोय करेइ, करेत्ता जेणेव अरहा अरिट्ठणेमी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरह अरिट्ठणेमिं वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—आलित्ते ण भते ! लोए जाव[1] तं इच्छामि ण देवाणुप्पिएहिं[2] धम्ममाइक्खियं ॥

२७ तए ण अरहा अरिट्ठणेमी पउमावइ देविं सयमेव पव्वावेइ, पव्वावेत्ता सयमेव जक्खिणीए अज्जाए सिस्सिणित्ताए दलयइ ॥

२८ तए ण सा जक्खिणी अज्जा पउमावइ देविं सयमेव पव्वावेइ[3] °सयमेव मुडावेइ सयमेव सेहावेति[4] धम्ममाइक्खइ—एव देवाणुप्पिए ! गतव्व जाव[5] सजमेण° सजमियव्व ॥

२९. तए ण सा पउमावई देवी[6] तमाणाए तह चिट्ठइ जाव[7] सजमेण सजमइ ॥

३०. तए ण सा पउमावई अज्जा जाया । इरियासमिया जाव[8] गुत्तबभयारिणी ॥

३१ तए ण सा पउमावई अज्जा जक्खिणीए अज्जाए अतिए सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइ अहिज्जइ, बहूहिं चउत्थ-छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं मासद्ध-मासखमणेहिं विविहेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाण भावेमाणी विहरइ ॥

३२. तए ण सा पउमावई अज्जा बहुपडिपुण्णाइ वीस वासाइ सामण्णपरियाग पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाण झूसेइ, झूसेत्ता सट्ठिं भत्ताइ अणसणाए छेदेइ, छेदेत्ता जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे मुडभावे जाव[9] तमट्ठं आराहेइ, चरिमुस्सासेहिं सिद्धा ॥

२-८ अज्झयणाणि

गोरिपभिति-पदं

३३ तेण कालेण तेण समएण बारवई नयरी । रेवयए पव्वए । उज्जाणे नदणवणे ॥

३४. तत्थ ण बारवईए नयरीए कण्हे वासुदेवे ॥

३५ तस्स ण कण्हस्स वासुदेवस्स गोरी देवी—वण्णओ[10] ॥

३६ अरहा समोसढे । कण्हे णिग्गए । गोरी जहा पउमावई तहा[11] निग्गया । धम्म-कहा । परिसा पडिगया । कण्हे वि ॥

---

१. ना० १।१।१४६ ।
२. पू०—ना० १।१।१४६ ।
३ सं० पा०—पव्वावेइ जाव सजमियव्व ।
४. पू०—ना० १।१।१५० ।
५. ना० १।१।१५० ।
६. पू०—ना० १।१।१५१ ।
७ ना० १।१।१५१ ।
८ ना० १।१४।४० ।
९ ओ० सू० १५४ ।
१०. ओ० सू० १५ ।
११ अ० ५।७ ।

३७ तए णं सा गोरी जहा पउमावई तहा निक्खंता जाव[1] सिद्धा ॥

३८ एवं—गन्धारी, लक्खणा, सुसीमा, जंबवई, सच्चभामा, रुप्पिणी। अट्ठ वि पउमावईसरिसाओ[2] ॥

९, १० अज्झयणाणि

मूलसिरी-मूलदत्ता-पद

३९ तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवईए नयरीए रेवयए पव्वए नंदणवणे उज्जाणे कण्हे वासुदेवे ॥

४० तत्थ णं बारवईए नयरीए कण्हस्स वासुदेवस्स पुत्ते जंबवईए देवीए अत्तए संबे नामं कुमारे होत्था—अहीणपडिपुण्णपंचेंदियसरीरे ॥

४१. तस्स णं संबस्स कुमारस्स मूलसिरी नामं भारिया होत्था—वण्णओ[3] ॥

४२. अरहा समोसढे। कण्हे निग्गए। मूलसिरी वि निग्गया, जहा पउमावई। जं नवरं—देवाणुप्पिया! कण्हं वासुदेवं आपुच्छामि जाव[4] सिद्धा।

४३. एवं[5] मूलदत्ता वि।

छट्ठो वग्गो

१,२ अज्झयणाणि

उक्खेव-पदं

१. जइ[6] णं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं पंचमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते। छट्ठस्स णं भंते! वग्गस्स के अट्ठे पण्णत्ते?

२. एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं छट्ठस्स वग्गस्स॰ सोलस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

१ मकाई २. किंकमे चेव, ३. मोग्गरपाणी य ४ कासवे।
५ खेमए[7] ६. धिइहरे चेव, ७. केलासे ८ हरिचंदणे ॥१॥

---

१. अं० ५।२१-३२।
२. अं० ५।७, २१-३२।
३. ओ० सू० १५।
४. अं० ५।२१-३२।
५. अं० ५।३९-४२।
६. स० पा०—जइ छट्ठस्स उक्खेवओ नवरं सोलस।
७. खेमे (ग)।

९ वारत्त १० सुदसण ११ पुण्णभद्द तह १२ सुमणभद्द १३ सुपइट्ठे ।
१४. मेहे १५ ऽतिमुत्त १६ अलक्के, अज्झयणाण तु सोलसयं ॥२॥

३. जइ ण भते ! समणेणं भगवया महावीरेण अट्ठमस्स अगस्स अतगडदसाण छट्ठस्स वग्गस्स सोलस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स ण भते ! अज्झयणस्स अतगडदसाणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

मकाइ-किकम-पद

४ एव खलु जवू ! तेण कालेण तेण समएणं रायगिहे नयरे । गुणसिलए चेइए । सेणिए राया ॥

५ तत्थ ण मकाई नाम गाहावई परिवसइ—अड्ढे जाव[1] अपरिभूए ॥

६ तेणं कालेण तेणं समएण समणे भगव महावीरे आदिकरे गुणसिलए जाव[2] सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ । परिसा निग्गया ॥

७ तए ण से मकाई गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे जहा पण्णत्तीए गगदत्ते[3] तहेव इमो वि जेट्ठपुत्त कुडुवे ठवेत्ता पुरिससहस्सवाहिणीए सीयाए निक्खते जाव[4] अणगारे जाए—इरियासमिए[5] ॥

८ तए ण से मकाई अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाण थेराण अतिए समाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइ अहिज्जइ । सेस जहा खदगस्स[6] गुणरयण तवोकम्म । सोलसवासाइ परियाओ । तहेव विउले सिद्धे ॥

९. किकमे वि एव चेव जाव[7] विउले सिद्धे ।

तइयं अज्झयणं

मोग्गरपाणी

अज्जुण-मालागार-पदं

१०. तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नयरे । गुणसिलए चेइए । सेणिए राया । चेल्लणा देवी ॥

११. तत्थ ण रायगिहे नयरे अज्जुणए नाम मालागारे परिवसइ—अड्ढे जाव[8] अपरिभूए ॥

१२ तस्स ण अज्जुणयस्स मालायारस्स वधुमई नाम भारिया होत्था—सूमाल-पाणिपाया ॥

१३ तस्स ण अज्जुणयस्स मालायारस्स रायगिहस्स नयरस्स वहिया, एत्थ ण

---

१. ना० १।५।७ ।
२. ना० १।१।९४ ।
३ भ० १६।६८-७१ ।
४. ना० १।५।२९-३५ ।
५. पू०—ना० १।५।३५-३७ ।
६ भ० २।५७-६९ ।
७ अ० ६।४-८ ।
८ ना० १।५।७ ।

महं एगे पुप्फारामे होत्था—किण्हे जाव[1] महामेहनिउरुबभूए दसद्धवण्ण-कुसुमकुसुमिए पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ॥

१४ तस्स णं पुप्फारामस्स अदूरसामंते, एत्थ णं अज्जुणयस्स मालायारस्स अज्जय-पज्जय-पिइपज्जयागए अणेगकुलपुरिस-परंपरागए मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था—पोराणे दिव्वे सच्चे जहा पुण्णभद्दे[2] ॥

१५ तत्थ णं मोग्गरपाणिस्स पडिमा एगं महं पलसहस्सणिप्फण्णं अओमयं मोग्गरं गहाय चिट्ठइ ॥

अज्जुणस्स जक्खपज्जुवासणा-पदं

१६ तए णं से अज्जुणए मालागारे बालप्पभिइं चेव मोग्गरपाणि-जक्खभत्ते[3] यावि होत्था। कल्लाकल्लिं पच्छियपिडगाइं[4] गेण्हइ, गेण्हित्ता रायगिहाओ नयराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव पुप्फारामे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुप्फुच्चयं करेइ, करेत्ता[5] अग्गाइं वराइं पुप्फाइं गहाय, जेणेव मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स महरिहं पुप्फच्चणं[6] करेइ, करेत्ता जण्णुपायपडिए पणामं करेइ, तओ पच्छा रायमग्गंसि वित्तिं कप्पेमाणे विहरइ ॥

गोट्ठीए अणाचार-पदं

१७ तत्थ णं रायगिहे नयरे ललिया नामं गोट्ठी परिवसइ—अड्ढा जाव[7] अपरिभूता जं कयसुकया यावि होत्था ॥

१८ तए णं रायगिहे नगरे अण्णया कयाइ पमोदे घुट्ठे यावि होत्था ॥

१९ तए णं से अज्जुणए मालागारे कल्लं पभूयतराएहिं पुप्फेहिं कज्जं इति कट्टु पच्चूसकालसमयंसि बंधुमईए भारियाए सद्धिं पच्छियपिडयाइं गेण्हइ, गेण्हित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता रायगिहं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पुप्फारामे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता बंधुमईए भारियाए सद्धिं पुप्फुच्चयं करेइ ॥

२०. तए णं तीसे ललियाए गोट्ठीए छ गोट्ठिल्ला पुरिसा जेणेव मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागया अभिरममाणा चिट्ठंति ॥

२१. तए णं से अज्जुणए मालागारे बंधुमईए भारियाए सद्धिं पुप्फुच्चयं करेइ,

---

१. ओ० सू० ४।
२. ओ० सू० २।
३. जक्खस्स भत्ते (घ)।
४. पत्थिय० (क्व)।
५ अतोग्रे १२ सूत्रे 'पत्थिय भरेइ, भरेत्ता' इति पाठो लभ्यते।
६ पुप्फच्चणियं (क)।
७. ना० १।५।७।

'पत्थियं भरेइ, भरेत्ता'[1] अग्गाइ वराइ पुप्फाइ गहाय जेणेव मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ ॥

२२ तए ण ते छ गोट्ठिल्ला पुरिसा अज्जुणयं मालागार बधुमईए भारियाए सद्धि एज्जमाण पासति, पासित्ता अण्णमण्ण एव वयासी—एस ण देवाणुप्पिया ! अज्जुणए मालागारे बधुमईए भारियाए सद्धि इह हव्वमागच्छइ । त सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं अज्जुणय मालागार अवओडय-बधणय करेत्ता बधुमईए भारियाए सद्धि विउलाइ भोगभोगाइ भुजमाणाण विहरित्तए त्ति कट्टु एयमट्ठ अण्णमण्णस्स पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता कवाडतरेसु निलुक्कति, निच्चला निप्फंदा तुसिणीया पच्छण्णा चिट्ठति ॥

२३. तए ण से अज्जुणए मालागारे बधुमईए भारियाए सद्धि जेणेव मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ, आलोए पणाम करेइ, महरिह पुप्फच्चण करेइ, जण्णुपायपडिए पणाम करेइ ॥

२४. तए ण छ गोट्ठिल्ला पुरिसा दवदवस्स कवाडतरेहितो निग्गच्छति निग्गच्छित्ता अज्जुणय मालागार गेण्हति, गेण्हित्ता अवओडय[2]-बधण करेंति । बंधुमईए मालागारीए सद्धि विउलाइ भोगभोगाइं भुजमाणा विहरति ॥

अज्जुणस्स पडिसोध-पदं

२५ तए ण तस्स अज्जुणयस्स मालागारस्स अयमज्झत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु अह बालप्पभिइ चेव मोग्गरपाणिस्स भगवओ कल्लाकल्लि जाव[3] पुप्फच्चण करेमि, जण्णुपायपडिए पणाम करेमि, तओ पच्छा रायमग्गसि वित्ति कप्पेमाणे विहरामि । त जइ ण मोग्गरपाणी जक्खे इह सण्णिहिए होते, से ण किं मम एयारूव आवइ पावेज्जमाण पासते ? त नत्थि ण मोग्गरपाणी जक्खे इह सण्णिहिए । सुव्वत्त[4] ण एस कट्ठे ॥

२६ तए ण से मोग्गरपाणी जक्खे अज्जुणयस्स मालागारस्स अयमेयारूव अज्झत्थियं जाव[5] वियाणेत्ता अज्जुणयस्स मालागारस्स सरीरय अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता तडतडस्स[6] बधाइ छिंदइ, छिंदित्ता त पलसहस्सणिप्फण्ण अओमय मोग्गर गेण्हइ, गेण्हित्ता ते इत्थिसत्तमे छ पुरिसे घाएइ ॥

२७ तए ण से अज्जुणए मालागारे मोग्गरपाणिणा जक्खेण अण्णाइट्ठे समाणे रायगिहस्स नगरस्स परिपेरतेण कल्लाकल्लि इत्थिसत्तमे छ पुरिसे घाएमाणे घाएमाणे विहरइ ॥

---

१ × (घ) ।
२ उवउडग (क, ग), अवउड (ख) ।
३ अ० ६।१६ ।
४ सुव्वत्ते (ख, ग) ।
५ अं० ६।२५ ।
६ तडतडतडस्स (ख) ।

रायगिहे आतंक-पदं

२८ तए णं रायगिहे नयरे सिंघाडग[1]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह°-महापहपहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासेइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया! अज्जुणए मालागारे मोग्गरपाणिणा अण्णाइट्ठे समाणे रायगिहे नयरे बहिया इत्थिसत्तमे छ पुरिसे घाएमाणे-घाएमाणे विहरइ॥

२९ तए णं से सेणिए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! अज्जुणए मालागारे जाव[2] घाएमाणे-घाएमाणे विहरइ। तं मा णं तुब्भे केइ कट्ठस्स वा तणस्स वा पाणियस्स वा पुप्फफलाणं वा अट्ठाए सइरं निग्गच्छइ। मा णं तस्स सरीरयस्स वावत्ती भविस्सइ त्ति कट्टु दोच्चं पि तच्चं पि घोसणयं घोसेह, घोसेत्ता खिप्पामेव ममेयं पच्चप्पिणह॥

३० तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव[3] पच्चप्पिणंति॥

३१ तत्थ णं रायगिहे नगरे सुदंसणे नामं सेट्ठी परिवसइ—अड्ढे॥

३२. तए णं से सुदंसणे समणोवासए यावि होत्था—अभिगयजीवाजीवे जाव[4] विहरइ॥

भगवओ समोसरण-पदं

३३ तेणं कालेणं समएणं समणे भगवं[5] •महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणामेव रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ॥

३४ तए णं रायगिहे नगरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव[6] किमंग पुण विपुलस्स अट्ठस्स गहणयाए?

सुदंसणस्स वंदणट्ठ गमण-पदं

३५ तए णं तस्स सुदंसणस्स बहुजणस्स अंतिए एयं सोच्चा निसम्म अयं अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु समणे भगवं महावीरे

---

१. ग० पा०—सिंघाडग जाव महापहपहेसु।
२ अ० ६।२८।
३. अ० ६।२६।
४ ना० १।५।४७।
५ म० पा०—भगवं जाव समोसढे विहरइ।
६ ओ० सू० ५२।

जाव[1] विहरइ। त गच्छामि ण समण भगव महावीर वदामि[2]—एवं सपेहेइ, सपेहेत्ता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल[3]-•परिग्गहिय दसणह सिरसावत्त मत्थए° अजलि कट्टु एव वयासी—एवं खलु अम्मयाओ! समणे भगव महावीरे जाव[4] विहरइ। त गच्छामि ण समण भगव महावीर वंदामि नमसामि[5] •सक्कारेसि सम्माणेमि कल्लाण मंगल देवय चेइयं° पज्जुवासामि ॥

३६. तए णं सुदसण सेट्ठि अम्मापियरो एव वयासी—एव खलु पुत्ता! अज्जुणए मालागारे[6] •मोग्गरपाणिणा जक्खेण अण्णाइट्ठे समाणे रायगिहस्स नयरस्स परिपेरतेण कल्लाकल्लि वहिया इत्थिसत्तमे छ पुरिसे° घाएमाणे-घाएमाणे विहरइ। त मा ण तुम पुत्ता! समण भगव महावीर वदए निग्गच्छाहि, मा ण तव सरीरयस्स वावत्ती भविस्सइ। तुमण्ण इह गए चेव समण भगव महावीर वदाहि ॥

३७. तए ण से सुदसणे सेट्ठी अम्मापियर एव वयासी—किण्ण अह अम्मयाओ! समणं भगव महावीर इहमागय इह पत्त इह समोसढ इह गए चेव वदिस्सामि? तं गच्छामि णं अह अम्मयाओ! तुब्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे समणं भगव महावीर वदए ॥

३८ तए ण सुदसण सेट्ठि अम्मापियरो जाहे नो सचाएति वहूहि आघवणाहि पण्णवणाहि सण्णवणाहि विण्णवणाहि[7] •परूवणाहि आघवेत्तए पण्णवेत्तए सण्णवेत्तए विण्णवेत्तए° परूवेत्तए ताहे एव वयासी— अहासुह देवाणुप्पिया! मा पडिवंध करेहि ॥

३९. तए ण से सुदसणे अम्मापिईहि अब्भणुण्णाए समाणे ण्हाए सुद्धप्पावेसाइ[8] •मगल्लाइ वत्थाइ पवर परिहिए अप्पमहग्घाभरणालकिय°सरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता पायविहारचारेण रायगिह नगर मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणस्स अदूरसामतेण जेणेव गुणसिलए चेइए जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

सुदंसणस्स अज्जुणकय-उवसग्ग-पद

४०. तए ण से मोग्गरपाणी जक्खे सुदसण समणोवासय अदूरसामतेण वीईवयमाण-

---

१ ना० १।१।९७।
२. द्रष्टव्य. अग्रिम पाठ।
३ स० पा०—करयल°।
४ ना० १।१।९७।
५ स० पा०—नमसामि जाव पज्जुवासामि।
६ स० पा०—मालागारे जाव घाएमाणे।
७ स० पा०—विण्णवणाहि जाव परूवेत्तए।
८ 'सुद्धप्प' त्ति शुद्धात्मा यावत्करणात् वेसियाइ पवर वत्थाइ परिहिए° (वृ), स० पा०—सुद्धप्पावेसाइ जाव सरीरे।

वीईवयमाणं पासइ, पासित्ता आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे तं पलसहस्सणिप्फण्णं अओमयं मोग्गरं उल्लालेमाणे-उल्लालेमाणे जेणेव सुदंसणे समणोवासए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

४१ तए णं से सुदंसणे समणोवासए मोग्गरपाणिं जक्खं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता अभीए अतत्थे अणुव्विग्गे अक्खुभिए अचलिए असंभंते वत्थंतेणं भूमिं पमज्जइ, पमज्जित्ता करयल[1]॰परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु॰ एवं वयासी—नमोत्थु णं अरहंताणं जाव[2] सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपत्ताणं। नमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपाविउकामस्स। पुव्विं पि णं मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए थूलए पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए, थूलए मुसावाए [पच्चक्खाए जावज्जीवाए ?], थूलए अदिण्णादाणे [पच्चक्खाए जावज्जीवाए ?], सदारसंतोसे कए जावज्जीवाए, इच्छापरिमाणे कए जावज्जीवाए। तं इदाणिं पि णं तस्सेव अंतियं सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जावज्जीवाए, मुसावायं अदत्तादाणं मेहुणं परिग्गहं पच्चक्खामि जावज्जीवाए, सव्वं कोहं जाव[3] मिच्छादंसणसल्लं पच्चक्खामि जावज्जीवाए, सव्वं असणं पाणं खाइमं साइमं चउव्विहं पि आहारं पच्चक्खामि जावज्जीवाए। जइ णं एत्तो उवसग्गाओ मुच्चिस्सामि तो मे कप्पइ पारेत्तए। अह णं एत्तो उवसग्गाओ न मुच्चिस्सामि 'तो मे तहा'[4] पच्चक्खाए चेव त्ति कट्टु सागारं पडिमं पडिवज्जइ ॥

४२ तए णं से मोग्गरपाणी जक्खे तं पलसहस्सणिप्फण्णं अओमयं[5] मोग्गरं उल्लालेमाणे-उल्लालेमाणे जेणेव सुदंसणे समणोवासए तेणेव उवागए। नो चेव णं संचाएइ सुदंसणं समणोवासयं तेयसा समभिपडित्तए ॥

उवसग्गनिवारण-पदं

४३ तए णं से मोग्गरपाणी जक्खे सुदंसणं समणोवासयं सव्वओ समंता[6] परिघोलेमाणे-परिघोलेमाणे जाहे नो चेव णं संचाएइ सुदंसणं समणोवासयं तेयसा समभिपडित्तए, ताहे सुदंसणस्स समणोवासयस्स पुरओ सपक्खिं सपडिदिसिं ठिच्चा सुदंसणं समणोवासयं अणिमिसाए दिट्ठीए सुचिरं निरिक्खइ, निरिक्खित्ता अज्जुणयस्स मालागारस्स सरीरं विप्पजहइ, विप्पजहित्ता तं पलसहस्सणिप्फण्णं

---

१. सं० पा०—करयल।
२. ओ० सू० २१।
३. ओ० सू० ११७।
४. तओ मे (क)।
५. अयोमय (ख)।
६. सम्मताओ (क, ख)।

अओमयं मोग्गरं गहाय जामेव दिसं[1] पाउब्भूए तामेव दिस पडिगए ॥

४४ तए ण से अज्जुणए मालागारे मोग्गरपाणिणा जक्खेण विप्पमुक्के समाणे 'धस' त्ति धरणियलंसि सव्वगेहिं निवडिए[2] ॥

४५. तए ण से सुदंसणे समणोवासए 'निरुवसग्ग' मिति कट्टु पडिम पारेइ ॥

सुदंसणस्स अज्जुणस्स य भगवओ पज्जुवासणा-पदं

४६ तए ण से अज्जुणए मालागारे तत्तो मुहुत्ततरेण आसत्थे समाणे उट्ठेइ, उट्ठेत्ता सुदसण समणोवासय एव वयासी—तुब्भे ण देवाणुप्पिया ! के कहिं वा सपत्थिया ?

४७. तए ण से सुदसणे समणोवासए अज्जुणय मालागार एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! अह सुदसणे नाम समणोवासए—अभिगयजीवाजीवे[3] गुणसिलए चेइए समण भगव महावीर वदए सपत्थिए ॥

४८ तए ण से अज्जुणए मालागारे सुदसण समणोवासय एव वयासी – त इच्छामि[4] ण देवाणुप्पिया ! अहमवि तुमए सद्धि समण भगव महावीर वदित्तए जाव[5] पज्जुवासित्तए ।

अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबध करेहि ॥

४९ तए ण सुदसणे समणोवासए अज्जुणएण मालागारेण सद्धि जेणेव गुणसिलए चेइए जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अज्जुणएण मालागारेण सद्धि समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, वदइ नमसइ जाव[6] पज्जुवासइ ॥

५० तए ण समणे भगव महावीरे सुदसणस्स समणोवासगस्स अज्जुणयस्स मालागारस्स तीसे य[7] •महइमहालियाए परिसाए मज्झगए विचित्त धम्ममाइक्खइ॰ । सुदसणे पडिगए ॥

अज्जुणस्स पव्वज्जा-पदं

५१. तए ण से अज्जुणए मालागारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठ[8]•तुट्ठे समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदिता नमसित्ता एव वयासी॰—सद्दहामि ण भते ! निग्गथ पावयण[9], •पत्तियामि ण भते ! निग्गथ पावयण, रोएमि ण

---

१. दिसिं (ख, ग) ।
२. सनिवडिए (क) ।
३. पू०—ना० १।५।४७ ।
४. गच्छामि (क) ।
५. अ० ६।३५ ।
६. अ० ६।३५ ।
७ स० पा०—तीसे य धम्मकहा ।
पू—ओ० सू० ७१-७७ ।
८. स० पा०—हट्ठ० ।
९ स० पा०—पावयण जाव अब्भुट्ठेमि ।

भंते ! निग्गंथं पावयणं°, अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं।
अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि ॥

५२ तए णं से अज्जुणए मालागारे उत्तर[1]•पुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्क-मित्ता° सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करेत्ता जाव[2] अणगारे जाए[3], •से णं वासीचंदणकप्पे समतिणमणि-लेट्ठुकंचणे समसुहदुक्खे इहलोग-परलोग-अप्प-डिबद्धे जीविय-मरण-निरवकंखे संसारपारगामी कम्मनिग्घायणट्ठाए एवं च णं° विहरइ ॥

अज्जुणअणगारस्स तितिक्खा-पदं

५३ तए णं से अज्जुणए अणगारे जं चेव दिवसं मुंडे[4] •भवित्ता अगाराओ अणगा-रियं° पव्वइए तं चेव दिवसं समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता इमं एयारूवं अभिग्गहं ओगेण्हइ—कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं[5] तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणस्स विहरित्तए त्ति कट्टु अयमेया-रूवं अभिग्गहं[6], ओगेण्हइ[7] ओगेण्हित्ता जावज्जीवाए[8] •छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ ॥

५४ तए णं से अज्जुणए अणगारे छट्ठक्खमणपारणयंसि पढमाए पोरिसीए[10] सज्झायं करेइ[11], •बीयाए पोरिसीए झाणं झियाइ, तइयाए पोरिसीए जहा गोयमसामी जाव[12] रायगिहे नगरे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खाय-रियं° अडइ ॥

५५ तए णं तं अज्जुणयं अणगारं रायगिहे नयरे उच्च[13]-•नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए°. अडमाणं बहवे इत्थीओ य पुरिसा य डहरा य महल्ला य जुवाणा य एवं वयासी—इमेण मे पिता मारिए। इमेण मे माता मारिया। इमेण मे भाया भगिणी भज्जा पुत्ते धूया सुण्हा मारिया। इमेण मे अण्णयरे सयण-संबंधि-परियणे मारिए त्ति कट्टु अप्पेगइया अक्कोसंति, अप्पे-गइआ हीलंति निंदंति खिंसंति गरिहंति तज्जंति तालेंति ॥

---

१ सं० पा०—उत्तर° ।
२ ना० १।५।३४, ३५ ।
३ सं० पा०—अणगारे जाए जाव विहरइ । पू०—ना० १।५।३५,३६ ।
४ सं० पा०—मुंडे जाव पव्वइए ।
५ ओग्गहं (क, ख, ग) ।
६ × (क, ख, ग) ।
७. ओग्गहं (क, ख, ग) ।
८ 'अभिग्गहं ओगेण्हेइ' इति द्विरुक्त पाठोस्ति ।
९ सं० पा०—जावज्जीवाए जाव विहरइ ।
१० × (घ) ।
११ सं० पा०—करेइ जहा गोयमसामी जाव अडइ ।
१२ भ० २।१०७ १०८ ।
१३ सं० पा०—उच्च जाव अडमाणं ।

५६ तए णं से अज्जुणए अणगारे तेहिं बहूहिं इत्थीहि य पुरिसेहि य डहरेहि य महल्लेहि य जुवाणएहि य आओसिज्जमाणे[1] जाव[2] तालेज्जमाणे तेसिं मणसा वि अपउस्समाणे सम्मं सहइ सम्मं खमइ सम्मं तितिक्खइ सम्मं अहियासेइ, सम्मं सहमाणे सम्मं खममाणे सम्मं तितिक्खमाणे सम्मं अहियासेमाणे रायगिहे नयरे उच्च-नीय-मज्झिम-कुलाइं अडमाणे जइ भत्तं लभइ तो पाणं न लभइ, अह पाणं लभइ तो भत्तं न लभइ ।।

५७ तए णं से अज्जुणए अणगारे अदीणे अविमणे अकलुसे अणाइले अविसादी अपरितंतजोगी[3] अडइ, अडित्ता रायगिहाओ नगराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव गुणसिलए चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे[4] •तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते गमणागमणाए पडिक्कमेइ, पडिक्कमेत्ता एसणमणेसणं आलोएइ, आलोएत्ता भत्तपाणं° पडिदंसेइ, पडिदंसेत्ता समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए अणज्झोववण्णे बिलमिव पण्णगभूएणं अप्पाणेणं तमाहारं आहारेइ ।

५८ तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णया रायगिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ।।

अज्जुणअणगारस्स सिद्धि-पदं

५९. तए णं से अज्जुणए अणगारे तेणं ओरालेणं विपुलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं महाणुभागेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुण्णे छम्मासे सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसेइ, झूसेत्ता तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेइ, छेदेत्ता जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे जाव[5] सिद्धे ।।

४-१४ अज्झयणाणि

कासवादि-पदं

६०. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नगरे गुणसिलए चेइए। सेणिए राया। कासवे नाम गाहावई परिवसइ। जहा मकाई[6]। सोलस वासा परियाओ। विपुले सिद्धे ।।

---

१ आतोसिज्जमाणे (क, ख, ग,)।

२. अ० ६।५५।

३. °जोती (क, ख, ग,)।

४ सं० पा०—जहा गोयमसामी तहा पडिदंसेइ।

५ ओ० सू० १५४।

६ अ० ६।५-८।

६१ एंव[1]—खेमए वि गाहावई, नवरं—कायंदी नयरी। सोलस वासा परियाओ। विपुले पव्वए सिद्धे ॥

६२ एवं[2]—धिइहरे वि गाहावई कायंदीए नयरीए। सोलस वासा परियाओ। विपुले सिद्धे ॥

६३ एवं[3]—केलासे वि गाहावई, नवर—साएए नयरे। बारस वासाइ परियाओ। विपुले सिद्धे ॥

६४ एवं[4]—हरिचंदणे वि गाहावई साएए नयरे। बारस वासा परियाओ। विपुले सिद्धे ॥

६५. एवं[5]—वारत्तए वि गाहावई, नवर—रायगिहे नगरे। बारस वासा परियाओ। विपुले सिद्धे ॥

६६ एवं[6]—सुदंसणे वि गाहावई, नवर—वाणियग्गामे नयरे। दूइपलासए चेइए। पंच वासा परियाओ। विपुले सिद्धे ॥

६७ एवं[7]—पुण्णभद्दे वि गाहावई वाणियग्गामे नयरे। पंचवासा परियाओ। विपुले सिद्धे ॥

६८ एवं[8]—सुमणभद्दे वि गाहावई सावत्थीए नयरीए। बहुवासाइं परियाओ। विपुले सिद्धे ॥

६९ एवं[9]—सुपइट्ठे वि गाहावई सावत्थीए नयरीए। सत्तावीस वासा परियाओ। विपुले सिद्धे ॥

७० एवं[10]—मेहे वि गाहावई रायगिहे नयरे। बहूइं वासाइं परियाओ। विपुले सिद्धे ॥

———

१-१०. अ० ६।४ ८।

पणरसमं अज्झयणं

अइमुत्ते

अइमुत्तकुमार-पदं

७१. तेण कालेण तेण समएण पोलासपुरे नगरे। सिरिवणे उज्जाणे॥

७२. तत्थ णं पोलासपुरे नयरे विजये नाम राया होत्था॥

७३ तस्स ण विजयस्स रण्णो सिरि नाम देवी होत्था—वण्णओ[1]॥

७४ तस्स ण विजयस्स रण्णो पुत्ते सिरीए देवीए अत्तए अतिमुत्ते नाम कुमारे होत्था—सूमालपाणिपाए[2]॥

गोयमस्स भिक्खायरिया-पदं

७५. तेण कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे जाव[3] सिरिवणे[4] •उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे° विहरइ॥

७६. तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अतेवासी इदभूती अणगारे जहा पण्णत्तीए जाव[5] पोलासपुरे नयरे उच्च[6]-•नीय-मज्झिमाइ कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरिय° अडइ॥

गोयम-अइमुत्तकुमार-संवाद-पदं

७७ इम च ण अइमुत्ते कुमारे ण्हाए जाव[7] सव्वालकारविभूसिए वहूहिं दारएहि य दारियाहि य डिंभएहि य डिंभियाहि य कुमारएहि य कुमारियाहि य सद्धि

---

१ ओ० सू० १५।

२ पू०—ओ० सू० १४३।

३ अं० ६।३३।

४. स० पा०—सिरिवणे विहरइ।

५ भ० २।१०६-१०९।

६ स० पा०—उच्च जाव अडइ।

७ अ० ३।४४।

सपरिवुडे साओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव इंदट्ठाणे[4] तेणेव उवागए। तेहिं बहूहिं दारएहि य सपरिवुडे अभिरममाणे-अभिरममाणे विहरइ ॥

७८ तए णं भगवं गोयमे पोलासपुरे नयरे उच्च[1]-•नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए॰ अडमाणे इंदट्ठाणस्स अदूरसामंतेणं वीईवयइ ॥

७९. तए णं से अइमुत्ते कुमारे भगवं गोयमं अदूरसामंतेणं वीईवयमाणं पासइ, पासित्ता जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागए, भगवं गोयमं एवं वयासी—के णं भंते! तुब्भे? किं वा अडह?

८० तए णं भगवं गोयमे अइमुत्तं कुमारं एवं वयासी—अम्हे णं देवाणुप्पिया! समणा निग्गंथा इरियासमिया जाव[2] गुत्तबंभयारी उच्च[3]-•नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए॰ अडामो ॥

८१ तए णं अइमुत्ते कुमारे भगवं गोयमं एवं वयासी—एह णं भंते! तुब्भे जा णं[4] अहं तुब्भं भिक्खं दवावेमी त्ति कट्टु भगवं गोयमं अंगुलीए गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागए ॥

८२ तए णं सा सिरिदेवी भगवं गोयमं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठा आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागया। भगवं गोयमं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेइ, पडिलाभेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

८३. तए णं से अइमुत्ते कुमारे भगवं गोयमं एवं वयासी—कहिं णं भंते! तुब्भे परिवसह?

८४. तए णं से भगवं गोयमे अइमुत्तं कुमारं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! मम धम्मायरिए धम्मोवएसए[5] समणे भगवं महावीरे आइगरे जाव[6] सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपाविउकामे इहेव पोलासपुरस्स नगरस्स बहिया सिरिवणे उज्जाणे अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं[7] •तवसा अप्पाणं॰ भावेमाणे विहरइ। तत्थ णं अम्हे परिवसामो ॥

अइमुत्तकुमारस्स पव्वज्जा-पदं

८५. तए णं से अइमुत्ते कुमारे भगवं गोयमं एवं वयासी—गच्छामि णं भंते! अहं तुब्भेहिं सद्धिं समणं भगवं महावीरं पायवंदए।
अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेहि ॥

---

१ सं॰ पा॰—उच्च जाव अडमाणे।
२. ना॰ १।१।१६४।
३ सं॰ पा—उच्च जाव अडामो।
४. जेणेवइंद (ख, घ)।
५ धम्मोवएसए धम्मनेयारी (क); ॰धम्मे नेतारी (ख, घ)।
६ ओ॰ सू॰ १६।
७ सं॰ पा॰—संजमेण जाव भावेमाणे।

८६ तए ण से अइमुत्ते कुमारे भगवया गोयमेण सद्धि जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ जाव[1] पज्जुवासइ ॥

८७ तए ण भगव गोयमे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागए[2], •उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामते गमणागमणाए पडिक्कमेइ, पडिक्क-मेत्ता एसणमणेसण आलोएइ, आलोएत्ता भत्तपाण° पडिदसेइ, पडिदसेत्ता संजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥

८८ तए ण समणे भगव महावीरे अइमुत्तस्स कुमारस्स तीसे य[3] •महइमहालियाए परिसाए मज्झगए विचित्तं धम्ममाइक्खइ° ॥

८९ तए ण से अइमुत्ते कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे[4] एव वयासी —सद्दहामि ण भते ! निग्गथ पावयण जाव[5] ज नवरं—देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि तए ण अह देवाणुप्पियाण अतिए जाव[6] पव्वयामि ।

अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिवध करेहि ॥

९० तए णं से अइमुत्ते कुमारे जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागए जाव[7] इच्छामि ण अम्मयाओ ! तुब्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए ॥

९१ तए ण त अइमुत्त कुमार अम्मापियरो एव वयासी—बाले सि ताव तुम पुत्ता ! असबुद्धे, किं ण तुम जाणसि धम्म ?

९२ तए ण से अइमुत्ते कुमारे अम्मापियरो एव वयासी—एव खलु अह[8] अम्मयाओ ! ज चेव जाणामि त चेव न जाणामि, ज चेव न जाणामि त चेव जाणामि ॥

९३ तए णं तं अइमुत्त कुमार अम्मापियरो एव वयासी—कह ण तुम पुत्ता ! ज चेव जाणसि[9] त चेव न जाणसि ? ज चेव न जाणसि त चेव जाणसि ?

९४ तए ण से अइमुत्ते कुमारे अम्मापियरो एव वयासी—जाणामि अह अम्म-याओ ! जहा जाएण अवस्स मरियव्व, न जाणामि अह अम्मयाओ ! काहे वा कहिं वा कह वा कियच्चिरेण[10] वा ? न जाणामि ण अम्मयाओ ! केहिं कम्मायग्रणेहिं[11] जीवा नेरइय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवेसु उववज्जति,

---

१. अं० ६।३५ ।
२ स० पा०—उवागए जाव पडिदसेइ ।
३ स० पा०—तीसे य धम्मकहा ।
४ पू०—अ० ६।५१ ।
५ ना० १।१।१०१ ।
६ अ० ५।२१ ।
७ अ० ३।६४-६६ ।
८ ×(क) ।
९ जाणामि (ख, ग) ।
१० केवचिरेण (क, ख, ग, घ,) ।
११ कम्मायारेहिं (क), कम्मायाणेहिं (ख, ग), कम्मावयणेहिं (वृपा) ।

जाणामि णं[1] अम्मयाओ ! जहा सएहिं कम्मायर्यणेहिं जीवा नेरइय-[2]•तिरिक्ख-जोणिय-मणुस्स-देवेसु° उववज्जति ।

एव खलु अह अम्मयाओ ! ज चेव जाणामि त चेव न जाणामि, ज चेव न जाणामि त चेव जाणामि । त इच्छामि ण अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए जाव[3] पव्वइत्तए ॥

९५ तए ण त अइमुत्त कुमार अम्मापियरो जाहे नो सचाएति बहूहिं आघवणाहिं[4] •य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा सण्णवित्तए वा विण्णवित्तए वा ताहे अकामकाइं चेव अइमुत्त कुमारं एव वयासी°—त इच्छामो ते जाया ! एगदिवसमवि रायसिरि पासेत्तए ॥

९६ तए ण से अइमुत्ते कुमारे अम्मापिउवयणमणुयत्तमाणे तुसिणीए संचिट्ठइ । अभिसेओ जहा महब्बलस्स[5] निक्खमण जाव[6] सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइ[7] अहिज्जइ । बहूइ वासाइं सामण्णपरियाग पाउणइ, गुणरयणं तवोकम्मं जाव[8] विपुले सिद्धे ॥

सोलसमं अज्झयणं

अलक्के

अलक्क-पद

९७ तेण कालेण तेण समएण वाणारसी नयरी, काममहावणे चेइए ॥

९८ तत्थ ण वाणारसीए अलक्के नाम राया होत्था ॥

९९ तेण कालेण तेण समएणं समणे भगव महावीरे जाव[9] विहरइ । परिसा निग्गया ॥

१०० तए ण अलक्के राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे हट्ठतुट्ठे जहा कोणिए जाव[10] पज्जुवासइ । धम्मकहा ॥

---

१. हं (ख) ।
२ स० पा०—नेरइय जाव उववज्जति ।
३. अ० ६।९० ।
४ स० पा०—आघवणाहिं° ।
५ महाबलस्स (क, घ) । भ० ११।१६८ ।
६ भ० ११।१६८,१६९ ।
७ × (क, ख ग,) ।
८ अं० १।२३,२४।
९. अ० ६।३३ ।
१०. ओ० सू० ५४-६९ ।

१०१ तए णं से अलक्के राया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए जहा उद्दायणे[1] तहा निक्खंते, नवरं—जेट्ठपुत्तं रज्जे अभिसिंचइ। एक्कारस अंगाइं। बहू वासा परियाओ जाव[2] विपुले सिद्धे ॥

निक्खेव-पदं

१०२ एवं खलु जंबू ! समणेणं[3] °भगवया महावीरेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं° छट्ठमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥

---

१. भग० १३।१०८-११९।

२. अं० ६।६६।

३ सं० पा०—समणेणं जाव छट्ठस्स।

सत्तमो वग्गो

१-१३ अज्झयणाणि

उक्खेव-पदं

१ जइ णं भंते[1]! °समणेण भगवया महावीरेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं छट्ठस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, सत्तमस्स वग्गस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

२ एवं खलु जंबू! समणेण भगवया महावीरेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं सत्तमस्स वग्गस्स° तेरस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

१ नंदा तह २. नंदवई[2], ३ नंदुत्तर ४ नंदिसेणिया चेव
५ मरुता ६. सुमरुता ७ महमरुत्ता ८. मरुद्देवा य अट्ठमा ॥१॥
९ भद्दा य १०. सुभद्दा य, ११. सुजाया १२. सुमणाइया
१३ भूयदिण्णा य वोधव्वा, सेणियभज्जाण नामाइं ॥२॥

३ जइ णं भंते[3] °समणेण भगवया महावीरेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं सत्तमस्स वग्गस्स° तेरस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते! अज्झयणस्स अंतगडदसाणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

नंदादि-पदं

४ एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे। गुणसिलए चेइए। सेणिए राया—वण्णओ[4]॥

५ तस्स णं सेणियस्स रण्णो नंदा नामं देवी होत्था—वण्णओ[5]। सामी समोसढे। परिसा निग्गया॥

६ तए णं सा नंदा देवी इमीसे कहाए लद्धट्ठा हट्ठतुट्ठा कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता जाणं दुरुहइ, जहा पउमावई जाव[6] एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता वीसं वासाइं परियाओ जाव[7] सिद्धा॥

७ एवं तेरस वि देवीओ नंदागमेणं[8] नेयव्वाओ॥

———

१ म० पा०—जइ णं भंते! सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ जाव तेरस।
२ नंदमती (क), नंदमती (ख)।
३ म० पा०—जइ णं भंते! तेरस।
४ ओ० सू० १४।
५ ओ० सू० १५।
६ अ० ५।२१-३१।
७ अं० ५।३२।
८ अ० ७।३-६।

अट्ठमो वग्गो

पढमं अज्झयणं

काली

उक्खेव-पदं

१ जइ णं भंते[1] ! °समणेणं भगवया महावीरेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं सत्तमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, अट्ठमस्स वग्गस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

२ एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं अट्ठमस्स वग्गस्स° दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

१ काली २ सुकाली ३ महाकाली, ४ कण्हा ५ सुकण्हा ६ महाकण्हा ।
७ वीरकण्हा य बोधव्वा, ८ रामकण्हा तहेव य ।
९ पिउसेणकण्हा नवमी, दसमी १० महासेणकण्हा य ।।१।।

३ जइ[2] °णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं° दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स अंतगडदसाणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

कालीए रयणावलितव-पदं

४ एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था । पुण्णभद्दे चेइए ।।

५ तत्थ णं चंपाए नयरीए कोणिए राया—वण्णओ[3] ।।

६ तत्थ णं चंपाए नयरीए सेणियस्स रण्णो भज्जा, कोणियस्स रण्णो चुल्लमाउया,

---

१ सं० पा०—जइ णं भंते ! अट्ठमस्स वग्गस्स उक्खेवओ जाव दस ।

२ सं० पा०—जइ दस ।

३ ओ० सू० १४ ।

काली नामं देवी होत्था—वण्णओ[1]। जहा नंदा जाव[2] सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ। बहूहिं चउत्थ[3]-•छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं विविहेहिं तवोकम्मेहिं॰ अप्पाणं भावेमाणी[4] विहरइ॥

७ तए णं सा काली अज्जा अण्णया कयाइ जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवागया, उवागच्छित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं अज्जाओ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी रयणावलिं तवं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए।
अहासुहं देवाणुप्पिए! मा पडिबंधं करेहि॥

८ तए णं सा काली अज्जा अज्जचंदणाए अब्भणुण्णाया समाणी रयणावलिं तवं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ, तं जहा—

चउत्थं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ।
छट्ठं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ।
अट्ठमं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ।
अट्ठ छट्ठाइं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ।
चउत्थं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ।
छट्ठं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ।
अट्ठमं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ।
दसमं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ।
दुवालसमं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ।
चोद्दसमं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ।
सोलसमं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ।
अट्ठारसमं[5] करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ।
वीसइमं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ।
बावीसइमं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ।
चउवीसइमं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ।
छव्वीसइमं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ।
अट्ठावीसइमं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ।
तीसइमं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ।
बत्तीसइमं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ।
चोत्तीसइमं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ।
चोत्तीसं छट्ठाइं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ।

---

१. ओ० सू० १५।
२. अ० ७।५,६।
३. सं० पा०—चउत्थ जाव अप्पाणं
४. भावेमाणा (ग)।
५. अट्ठारस (क)।

चोत्तीसइम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
बत्तीसइम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
तीसइम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
अट्ठावीसइम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
छव्वीसइम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
चउवीसइम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
बावीसइम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
वीसइम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
अट्ठारसम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
सोलसम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
चोद्दसम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
बारसम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
दसम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
अट्ठम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
छट्ठ करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
चउत्थ करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
अट्ठ छट्ठाइ करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
अट्ठम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
छट्ठ करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
चउत्थ करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।

एव खलु एसा रयणावलीए तवोकम्मस्स पढमा परिवाडी एगेण सवच्छरेण तिहि मासेहि बावीसाए य अहोरत्तेहि अहासुत्त[1] •अहाअत्थ अहातच्च अहामग्ग अहाकप्प सम्म काएण फासिया पालिया सोहिया तीरिया किट्टिया° आराहिया भवइ॥

६ तयाणतर च ण दोच्चाए परिवाडीए चउत्थ करेइ, करेत्ता विगइवज्ज पारेइ। छट्ठ करेइ, करेत्ता विगइवज्ज पारेइ।
एव जहा पढमाए परिवाडीए तहा बीयाए वि, नवर—सव्वपारणए[2] विगइवज्ज पारेइ[3]। •एव खलु एसा रयणावलीए तवोकम्मस्स बिइया परिवाडी एगेण सवच्छरेण तिहि मासेहिं बावीसाए य अहोरत्तेहिं अहासुत्त जाव[4]° आराहिया भवइ॥

---

१ स० पा०—अहासुत्त जाव आराहिया।
२. सव्वत्थपारणए (ख, ग, घ)।
३ स० पा०—पारेइ जाव आराहिया।
४. अ० ८।८।

१०. तयाणंतरं च णं तच्चाए परिवाडीए चउत्थं करेइ, करेत्ता अलेवाडं पारेइ। सेसं तहेव। नवरं अलेवाडं पारेइ॥

११. एवं चउत्था परिवाडी। नवरं सव्वपारणए आयंबिलं पारेइ। सेसं तं चेव॥

संगहणी-गाहा

'पढमंमि सव्वकामं, पारणयं'[1] बिइयए विगइवज्जं।
तइयंमि अलेवाडं, आयंबिलमो चउत्थम्मि॥१॥

१२. तए णं सा काली अज्जा रयणावली-तवोकम्मं पंचहिं संवच्छरेहिं दोहि य मासेहिं अट्ठावीसाए य दिवसेहिं अहासुत्तं जाव[2] आराहेत्ता जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अज्जचंदणं अज्जं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता बहूहिं चउत्थ जाव[3] अप्पाणं भावेमाणी विहरइ॥

१३. तए णं सा काली अज्जा तेणं ओरालेणं[4] •विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं कल्लाणेणं सिवेणं धण्णेणं मंगल्लेणं सस्सिरीएणं उदग्गेणं उदत्तेणं उत्तमेणं उदारेणं महाणुभागेणं तवोकम्मेणं सुक्का लुक्खा निम्मंसा अट्ठिचम्मावणद्धा किडिकिडियाभूया किसा° धमणिसंतया जाया यावि होत्था 'जीवंजीवेण गच्छइ जाव[5] सुहुयहुयासणे'[6] इव भासरासिपलिच्छण्णा तवेणं, तेएणं, तवतेय-सिरीए अईव-अईव उवसोहेमाणी-उवसोहेमाणी चिट्ठइ॥

१४. तए णं तीसे कालीए अज्जाए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाले अयमज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था, जहा खंदयस्स चिंता जाव[7] अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[8] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अज्जचंदणं अज्जं आपुच्छित्ता अज्जचंदणाए अज्जाए अब्भणुण्णायाए समाणीए संलेहणा-झूसणा-झूसियाए भत्तपाण-पडियाइक्खियाए कालं अणव-कंखमाणीए विहरित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अज्जचंदणं अज्जं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं अज्जो! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी संलेहणा[9]-•झूसणा-झूसियाए भत्तपाण-पडियाइक्खियाए कालं अणवकंख-माणीए° विहरित्तए।

अहासुहं॥

---

१. पढमंसि सव्वकामपारणयंसि (क), पढमंसि सव्वगुणिए पारणकं (वृपा)।
२. अ० ८।८।
३. अ० ८।६।
४. सं० पा०—उरालेणं जाव धम्मणिसंतया।
५. भ० २।६४।
६. से जहा इंगाल जाव सुहुयहुयासणे (क, ख, ग, घ,)।
७. भ० २।६६।
८. ना० १।१।२४।
९. सं० पा०—संलेहणा जाव विहरित्तए।

१५. तए ण सा काली अज्जा अज्जचदणाए अब्भणुण्णाया समाणा सलेहणा-झूसणा-झूसिया जाव[1] विहरइ ॥

१६. तए ण सा काली अज्जा अज्जचदणाए अतिए सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइ अहिज्जित्ता बहुपडिपुण्णाइ अट्ठ सवच्छराइ सामण्णपरियाग पाउणित्ता, मासियाए सलेहणाए अत्ताण झूसित्ता, सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदित्ता, जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे जाव[2] चरिमुस्सासेहिं[3] सिद्धा ॥

१७. निक्खेवओ ॥

बीयं अज्झयणं

सुकाली

सुकालीए कणगावलितव-पद

१८ तेण कालेण तेण समएण चपा नाम नयरी । पुण्णभद्दे चेइए । कोणिए राया ॥

१९ तत्थ ण सेणियस्स रण्णो भज्जा, कोणियस्स रण्णो चुल्लमाउया, सुकाली नाम देवी होत्था । जहा काली तहा सुकाली वि निक्खता जाव[4] बहूहि जाव[5] तवोकम्मेहिं अप्पाण भावेमाणी विहरइ ॥

२० तए ण सा सुकाली अज्जा अण्णया कयाइ जेणेव अज्जचदणा अज्जा[6] °तेणेव उवागया, उवागच्छित्ता एव वयासी°—इच्छामि ण अज्जाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी कणगावली-तवोकम्म उवसपज्जित्ता ण विहरित्तए । एव जहा रयणावली तहा कणगावली वि, नवर—तिसु ठाणेसु अट्ठमाइ करेइ, जहि रयणावलीए छट्ठाइ ।

एक्काए परिवाडीए सवच्छरो पच मासा बारस य अहोरत्ता । चउण्ह पच वरिसा नव मासा अट्ठारस दिवसा । सेस तहेव[7] । नव वासा परियाओ जाव[8] सिद्धा ॥

---

१ अ० ८।१४ ।
२ ओ० सू० १५४ ।
३ चरिमुस्सासनिस्सासेहिं (ख, ग) ।
४,५. अ० ८।६ ।
६ स० पा०—अज्जा जाव इच्छामि ।
७ अ० ८।१२-१६ ।
८ अ० ८।१६ ।

तइयं अज्झयणं

महाकाली

महाकालीए खुड्डागसीहनिक्कीलियतव-पदं

२१. एव[1]—महाकाली वि, नवरं—खुड्डागं सीहनिक्कीलियं तवोकम्म उवसपज्जित्ता ण विहरइ, त जहा—

चउत्थ	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ।
छट्ठं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ।
चउत्थं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ।
अट्ठम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ।
छट्ठ	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ।
दसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ।
अट्ठमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ।
दुवालसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ।
दसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ।
चोद्दसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ।
दुवालस	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ।
सोलसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ।
चोद्दसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ।
अट्ठारसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ।
सोलसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ।
वीसइम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ।
अट्ठारसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ।
वीसइमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ।
सोलसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ।
अट्ठारसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ।
चोद्दसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ।
सोलसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ।
वारसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ।
चोद्दसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ।
दसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ।

---

१. अ० ८।६-८।

वारसम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
अट्ठम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
दसम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
छट्ठं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
अट्ठम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
चउत्थ करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
छट्ठ करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
चउत्थ करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
तहेव चत्तारि परिवाडीओ। एक्काए परिवाडीए छम्मासा सत्त य दिवसा। चउण्ह दो वरिसा अट्ठावीसा य दिवसा जाव[1] सिद्धा॥

चउत्थं अज्झयणं

कण्हा

कण्हाए महालयसीहनिक्कीलियतव-पद

२२ एवं[2]—कण्हा वि, नवर—महालय सीहणिक्कीलिय तवोकम्म जहेव खुड्डाग, नवर—चोत्तीसइम जाव नेयव्व। 'तहेव ओसारेयव्व'[3]। एक्काए वरिस छम्मासा अट्ठारस य दिवसा। चउण्ह छव्वरिसा दो मासा वारस य अहोरत्ता। सेसं जहा कालीए जाव[4] सिद्धा॥

पंचमं अज्झयणं

सुकण्हा

सुकण्हाए भिक्खुपडिमा-पदं

२३ एवं[5]—सुकण्हा वि, नवर—सत्तसत्तमिय भिक्खुपडिम उवसपज्जित्ता ण विहरइ।

---

१ अ० ८।१२-१६।
२. अ० ८।६-८।
३. × (क)।
४ अ० ८।१२-१६।
५ अ० ८।६-८।

पढमे सत्तए एक्केक्क भोयणस्स दत्ति पडिगाहेइ, एक्केक्क पाणयस्स ।
दोच्चे सत्तए दो-दो भोयणस्स दो-दो पाणयस्स पडिगाहेइ ।
तच्चे सत्तए तिण्णि-तिण्णि दत्तीओ भोयणस्स, तिण्णि-तिण्णि दत्तीओ पाणयस्स ।
चउत्थे सत्तए चत्तारि-चत्तारि दत्तीओ भोयणस्स, चत्तारि-चत्तारि दत्तीओ पाणयस्स ।
पचमे सत्तए पच-पच दत्तीओ भोयणस्स, पच-पच दत्तीओ पाणयस्स ।
छट्ठे सत्तए छ-छ दत्तीओ भोयणस्स, छ-छ दत्तीओ पाणयस्स ।
सत्तमे सत्तए सत्त-सत्त दत्तीओ भोयणस्स, सत्त-सत्त दत्तीओ पाणयस्स पडिगाहेइ ।
एवं खलु एय सत्तसत्तमिय भिक्खुपडिम एगूणपण्णाए रातिदिएहिं एगेण य छण्णउएण भिक्खासएण अहासुत्त जाव[1] आराहेत्ता जेणेव अज्जचदणा अज्जा तेणेव उवागया, उवागच्छित्ता अज्जचदण अज्ज वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—इच्छामि ण अज्जाओ ! तुब्भेहि अब्भणुण्णाया समाणी अट्ठट्ठमिय भिक्खुपडिम उवसपज्जित्ता ण विहरेत्तए ।
अहासुह देवाणुप्पिए ! मा पडिवध करेहि ।।

२४ तए ण सा सुकण्हा अज्जा अज्जचदणाए अज्जाए अब्भणुण्णाया समाणी अट्ठट्ठमिय भिक्खुपडिम उवसपज्जित्ता ण विहरइ—
पढमे अट्ठए एक्केक्क भोयणस्स दत्ति पडिगाहेइ, एक्केक्क पाणयस्स जाव अट्ठमे अट्ठए अट्ठट्ठ भोयणस्स पडिगाहेइ, अट्ठट्ठ पाणयस्स ।
एव खलु एय अट्ठट्ठमिय भिक्खुपडिम चउसट्ठीए रातिदिएहि दोहि य अट्ठासीएहि भिक्खासएहि अहासुत्त[2] आराहेत्ता जाव[3] नवनवमिय भिक्खुपडिम उवसपज्जित्ता ण विहरइ—
पढमे नवए एक्केक्क भोयणस्स दत्ति पडिगाहेइ, एक्केक्क पाणयस्स[4] जाव नवमे नवए नव-नव दत्तीओ भोयणस्स पडिगाहेइ, नव-नव पाणयस्स ।
एव खलु एय नवनवमियं भिक्खुपडिम एक्कासीतिए राइदिएहि चउहि य पचुत्तरेहि भिक्खासएहि अहासुत्त[5] आराहेत्ता जाव[6] दसदसमिय भिक्खुपडिम उवसंपज्जित्ता ण विहरइ—
पढमे दसए एक्केक्क भोयणस्स दत्ति पडिगाहेइ, एक्केक्क पाणयस्स जाव

---

१ अं० ८।८ ।
२ पू०—अ० ८।२३ ।
३ अ० ८।२३ ।
४. पाणस्स (क, ख, ग, घ) ।
५. पू०—अ० ८।२३ ।
६. अ० ८।२३ ।

दसमे दसए दस-दस दत्तीओ भोयणस्स पडिगाहेइ, दस-दस पाणयस्स ।

एवं खलु एयं दसदसमिय भिक्खुपडिम एक्केण राइदियसएणं अद्धछट्ठेहि य भिक्खासएहिं अहासुत्त जाव[1] आराहेइ, आराहेत्ता बहूहिं चउत्थ-छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं विविहेहि तवोकम्मेहिं अप्पाण भावेमाणी विहरइ ॥

२५ तए णं सा सुकण्हा अज्जा तेण ओरालेण[2] तवोकम्मेण जाव[3] सिद्धा ॥

२६ निक्खेवओ ॥

छट्ठं अज्झयणं

महाकण्हा

महाकण्हाए खुड्डागसव्वओभद्द-पदं

२७. एवं[4]—महाकण्हा वि, नवर—खुड्डाग सव्वओभद्द पडिम[5] उवसपज्जित्ता ण विहरइ—

चउत्थं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ ।
छट्ठ करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ ।
अट्ठम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ ।
दसम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ ।
दुवालसम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ ।
अट्ठम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ ।
दसम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ ।
दुवालसम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ ।
चउत्थ करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ ।
छट्ठ करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ ।
दुवालसम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ ।
चउत्थ करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ ।
छट्ठ करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ ।

---

१. अं० ८।८ ।
२ पू०—अ० ८।१३ ।
३ अ० ८।१३-१६ ।
४. अ० ८।६-८ ।
५ × (क, ख, ग, घ) ।

अट्ठमं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ।
दसमं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ।
छट्ठं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ।
अट्ठमं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ।
दसमं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ।
दुवालसमं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ।
चउत्थं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ।
दसमं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ।
दुवालसमं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ।
चउत्थं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ।
छट्ठं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ।
अट्ठमं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ।

एवं खलु एयं खुड्डागसव्वओभद्दस्स तवोकम्मस्स पढमं परिवाडिं तिहिं मासेहिं दसहि य दिवसेहिं अहासुत्तं जाव[1] आराहेत्ता दोच्चाए परिवाडीए चउत्थं करेइ, करेत्ता विगइवज्जं पारेइ, पारेत्ता जहा रयणावलीए तहा एत्थ वि चत्तारि परिवाडीओ। पारणा तहेव। चउण्ह कालो संवच्छरो मासो दस य दिवसा। सेसं तहेव जाव[2] सिद्धा॥

२८ निक्खेवओ॥

सत्तमं अज्झयणं

वीरकण्हा

वीरकण्हाए महालयसव्वओभद्दपडिमा-पद

२९ एवं[3]—वीरकण्हा वि, नवरं—महालयं सव्वओभद्दं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ, तं जहा—

चउत्थं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ।
छट्ठं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ।
अट्ठमं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ।
दसमं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ।

१. [illegible]
२. [illegible]
३. [illegible]

दुवालसम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
चोद्दसमं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
सोलसमं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
दसम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
दुवालसमं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
चोद्दसम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
सोलसम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
चउत्थ करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
छट्ठ करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
अट्ठम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
सोलसम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
चउत्थं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
छट्ठ करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
अट्ठम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
दसम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
दुवालसम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
चोद्दसम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
अट्ठमं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
दसम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
दुवालसम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
चोद्दसम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
सोलसम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
चउत्थ करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
छट्ठ करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
चोद्दसम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
सोलसम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
चउत्थ करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
छट्ठ करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
अट्ठम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
दसम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ।
दुवालसम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
छट्ठ करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
अट्ठम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
दसम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।

चउत्थ करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ ।
छट्ठ करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ ।
चउत्थ करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ ।
अट्ठम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ ।
चउत्थ करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ ।
दसम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ ।
चउत्थ करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ ।
दुवालसम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ ।
चउत्थ करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ ।
चोद्दसम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ ।
चउत्थ करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ ।
सोलसम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ ।
चउत्थ करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ ।
अट्ठारसम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ ।
चउत्थ करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ ।
वीसइमं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ ।
चउत्थं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ ।
वावीसइमं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ ।
चउत्थ करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ ।
चउवीसइम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ ।
चउत्थ करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ ।
छव्वीसइम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ ।
चउत्थं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ ।
अट्ठावीसइम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ ।
चउत्थं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ ।
तीसइम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ ।
चउत्थ करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ ।
बत्तीसइमं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ ।
चउत्थ करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ ।
चोत्तीसइम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ ।
चउत्थ करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ ।
वत्तीसइम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ ।

एव तहेव ओसारेइ जाव चउत्थ करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ। एक्काए कालो एक्कारस मासा पण्णरस य दिवसा। चउण्ह तिण्णि वरिसा दस य मासा। सेस जाव[1] सिद्धा ॥

दसमं अज्झयणं

महासेणकण्हा

महासेणकण्हाए आयबिलवड्ढमाणतव-पद

३२. एव[2]—महासेणकण्हा वि, नवर—आयबिलवड्ढमाण तवोकम्म उवसपज्जित्ता ण विहरइ, त जहा—

आयविल	करेइ,	करेत्ता	चउत्थ	करेइ।
वे आयविलाइ	करेइ,	करेत्ता	चउत्थ	करेइ।
तिण्णि आयविलाइ	करेइ,	करेत्ता	चउत्थ	करेइ।
चत्तारि आयविलाइ	करेइ,	करेत्ता	चउत्थ	करेइ।
पच आयविलाइ	करेइ,	करेत्ता	चउत्थ	करेइ।
छ आयविलाइ	करेइ,	करेत्ता	चउत्थ	करेइ।

एव एक्कुत्तरियाए वड्ढीए आयविलाइ वड्ढति चउत्थतरियाइ जाव आयविलसय करेइ, करेत्ता चउत्थ करेइ ॥

३३ तए ण सा महासेणकण्हा अज्जा आयविलवड्ढमाण तवोकम्म चोद्दसहिं वासेहिं तिहि य मासेहिं वीसहि य अहोरत्तेहिं 'अहासुत्त जाव[3] आराहेत्ता'[4] जेणेव अज्जचदणा अज्जा तेणेव उवागया, उवागच्छित्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता बहूहिं चउत्थ[5]-°छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं विविहेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाण° भावेमाणी विहरइ ॥

३४ तए ण सा महासेणकण्हा[6] अज्जा तेण ओरालेण जाव[7] तवेण तेएण तवतेय-सिरीए अईव-अईव उवसोहेमाणी चिट्ठइ ॥

---

१. अ० ८।१२-१६।
२ अ० ८।६-८।
३ अ० ८।८।
४ अहासुत्त जाव सम्म काएण फासेइ जाव आराहेत्ता (क, ख, ग, घ)।
५. म० पा०—चउत्थ जाव भावेमाणी।
६. महमेणकण्हा (क, ख,)।
७ अ० ८।१३।

दुवालसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ।
चोद्दसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ।
सोलसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ।
चउत्थं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ।
दुवालसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ।
चोद्दसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ।
सोलसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ।
चउत्थं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ।
छट्ठं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ।
अट्ठमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ।
दसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ।

एक्काए कालो अट्ठ मासा पंच य दिवसा। चउण्हं दो वासा अट्ठ मासा वीस य दिवसा। सेसं तहेव जाव[1] सिद्धा॥

अट्ठमं अज्झयणं

रामकण्हा

रामकण्हाए भद्दोत्तरपडिमा-पदं

३० एवं[2]—रामकण्हा वि, नवरं—भद्दोत्तरपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ, तं जहा—

दुवालसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ।
चोद्दसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ।
सोलसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ।
अट्ठारसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ।
वीसइमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ।
सोलसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ।
अट्ठारसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ।
वीसइमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ।
दुवालसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ।
चोद्दसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ।

---

१. अ० ८।१२-१६।
२. अ० ८।६-८।

वीसइम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ।
दुवालसमं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
चोद्दसमं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
सोलसम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
अट्ठारसमं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
चोद्दसम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
सोलसम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
अट्ठारसम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ।
वीसइम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
दुवालसम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
अट्ठारसम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
वीसइम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
दुवालसम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
चोद्दसम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।
सोलसम करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ।

एक्काए कालो छम्मासा वीस य दिवसा। चउण्ह कालो दो वरिसा दो मासा वीस य दिवसा[1]। सेस तहेव जहा काली जाव[2] सिद्धा॥

नवमं अज्झयणं

पिउसेणकण्हा

पिउसेणकण्हाए मुत्तावलितव-पद

३१ एवं[3]—पिउसेणकण्हा वि, नवरं—मुत्तावलिं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ, तं जहा—

---

१ 'दिवसा' शब्दस्य पश्चात् वाचनान्तरे प्रतिमा-त्रयस्य लक्षण-गाथा उपलभ्यते, यथा—

आई दोण्ह चउत्थं,
आई भद्दोत्तराए बारसमं।
बारसमं सोलसमं,
वीसइमं चेव चरिमाइ॥१॥
पढमं तइयं तो जाव,
चरिमयं ऊणमाइओ पूरे।
पंचय परिवाडीओ,
खुड्डग-भद्दुत्तराए य॥२॥
पढमं तु चउत्थं,
जाव चरिमयं ऊणमाइओ पूरे।
सत्त य परिवाडीओ,
महालए सव्वओभद्दे॥३॥

२ अ० ८।१२-१६।

३ अ० ८।६-८।

३५ तए णं तीसे महासेणकण्हाए अज्जाए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाले चिंता जहा खंदयस्स जाव[1] अज्जचंदणं अज्जं आपुच्छइ[2] ॥

३६ [3]तए णं सा महासेणकण्हा अज्जा अज्जचंदणाए अज्जाए अब्भणुण्णाया समाणी संलेहणा-झूसणा-झूसिया भत्तपाण-पडियाइक्खिया॰ कालं अणवकंख-माणी विहरइ ॥

३७ तए णं सा महासेणकण्हा अज्जा अज्जचंदणाए अज्जाए अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता, बहुपडिपुण्णाइं सत्तरस वासाइं परियायं पालइत्ता, मासियाए संलेहणाए अप्पाणं[4] झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे जाव[5] तमट्ठं आराहेइ, आराहेत्ता चरिम-उस्सासनिस्सासेहिं[6] सिद्धा ॥

संगहणी-गाहा

अट्ठ य वासा आई, एक्कोत्तरयाए जाव सत्तरस ।
एसो खलु परियाओ, सेणियभज्जाण नायव्वो ॥१॥

निक्खेव-पदं

३८ एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[7] संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं अयमट्ठे पण्णत्ते ॥

परिसेसो

अंतगडदसाणं अंगस्स एगो सुयखंधो । अट्ठ वग्गा । अट्ठसु चेव दिवसेसु उद्दिस्सति[8] । तत्थ पढमबिइयवग्गे दस-दस उद्देसगा । तइयवग्गे तेरस उद्देसगा । चउत्थपंचमवग्गे दस-दस उद्देसगा । छट्ठवग्गे सोलस उद्देसगा । सत्तमवग्गे तेरस उद्देसगा । अट्ठमवग्गे दस उद्देसगा । सेसं जहा नायाधम्मकहाणं ॥

ग्रन्थ परिमाण

कुल अक्षर—४००५१
अनुष्टुप् श्लोक—१२५१ अ० १९

—— - ——

---

१ भ० २।६६ ।
२ पू०—अ० ८।१४ ।
३. सं० पा०—जाव संलेहणा कालं ।
४. अत्ताणं (क) ।
५ ओ० सू० १५४ ।
६. चरिमउस्सासेहिं (ख, ग) ।
७ ना० १।१।७ ।
८. उद्दिस्सिज्जंति (ख) ।

अणुत्तरोववाइयदसाओ

पढमो वग्गो

पढमं अज्झयण

जाली

उक्खेव-पदं

१ तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नयरे। अज्जसुहम्मस्स समोसरण। परिसा निग्गया जाव[1] जंबू पज्जुवासमाणे[2] एवं वयासी—जइ ण भंते! समणेण भगवया महावीरेण जाव[3] संपत्तेण अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाण अयमट्ठे पण्णत्ते, नवमस्स ण भंते! अंगस्स अणुत्तरोववाइयदसाण समणेण भगवया महावीरेण जाव[4] संपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ?

२. तए ण से सुहम्मे[5] अणगारे जंबू-अणगारं एवं वयासी—एवं खलु जंबू! समणेण भगवया महावीरेण जाव[6] संपत्तेण नवमस्स अंगस्स अणुत्तरोववाइयदसाणं तिण्णि वग्गा पण्णत्ता ॥

३ जइ ण भंते! समणेण भगवया महावीरेण जाव[7] संपत्तेण नवमस्स अंगस्स अणुत्तरोववाइयदसाण तओ[8] वग्गा पण्णत्ता, पढमस्स ण भंते! वग्गस्स अणुत्तरोववाइयदसाण समणेण भगवया महावीरेण जाव संपत्तेण कइ अज्झयणा पण्णत्ता ?

४ एवं खलु जंबू! समणेण भगवया महावीरेण जाव[9] संपत्तेण अणुत्तरोववाइय-दसाणं पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

---

१ ना० १।१।६,७।

२. पज्जुवासइ (क, ख, ग, घ), ना० १।१।७ सूत्रानुसारेण अयं पाठः स्वीकृतः।

३,४ अ० ३।७५।

५ सुधम्मे (क, ख, ग)।

६,७ अ० ३।७५।

८ तिण्णि (ख)।

९ अ० ३।७५।

संगहणी-गाहा

१ जालि २. मयालि ३. उवयाली[1], ४. पुरिससेणे य ५. वारिसेणे य।
६ दीहदंते य ७. लट्ठदंते य, ८. 'वेहल्ले ९. वेहायसे'[2] १०. अभए इ य कुमारे ॥१॥

५. जइ णं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[3] संपत्तेणं पढमस्स[4] वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते! अज्झयणस्स अणुत्तरोववाइयदसाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते?

जालि-पदं

६ एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे—रिद्धत्थिमियसमिद्धे[5]। गुणसिलए चेइए। सेणिए राया। धारिणी देवी। सीहो सुमिणे। जाली कुमारो। जहा मेहो। अट्ठट्ठओ दाओ[6]॥

७ °'तए णं से जालीकुमारे उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं जाव[8] माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे° विहरइ॥

८ सामी[9] समोसढे। सेणिओ निग्गओ। जहा मेहो तहा जाली वि निग्गओ। तहेव निक्खंतो जहा मेहो[10]। एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ। गुणरयणं तवोकम्मं 'जहा खंदयस्स'[11]। एवं जा चेव खंदगस्स[12] वत्तव्वया, सा चेव चिंतणा, आपुच्छणा। थेरेहिं सद्धिं विउलं पव्वयं तहेव दुरुहइ, नवरं—सोलस वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता[13], कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिम-सूर-गहगण-नक्खत्त-तारा-रूवाणं[14] सोहम्मीसाण[15]-°सणंकुमार-माहिंद-बंभ-लंतग-महासुक्क-सहस्साराणय-पाणय°-आरणच्चुए कप्पे नवयगेवेज्जविमाणपत्थडे उड्ढं दूरं वीईवइत्ता विजयविमाणे देवत्ताए उववण्णे॥

९. तए णं ते थेरा भगवंतो जालिं अणगारं कालगयं जाणित्ता परिणिव्वाणवत्तियं काउस्सग्गं करेंति, करेत्ता पत्त-चीवराइं गेण्हंति। तहेव उत्तरंति[16] जाव[17] इमे से आयारभंडए॥

---

१ उवमालि (क, ख); ओवयाली (ग)।
२ विहल्ले विहायसे (ग, घ,)।
३. अ० ३।७५।
४. अणुत्तरोववाइयदसाणं पढमस्स (ख, ग, घ)।
५. रिद्धि° (ख, ग, घ,)।
६ पू०—ना० १।१।९१-९२।
७ म० पा०—जाव उप्पिं पासा विहरइ।
८ ना० १।१।९३।
९. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जाव (घ)।
१० ना० १।१।९६-१५१।
११ × (क)। भ० २।६१-६३।
१२. खंदय (क, ख, घ,)। भ० २।६४-६९।
१३ पाउणिय (ख)।
१४ पू०—ना० १।१।२११।
१५ म० पा०—सोहम्मीसाण जाव आरणच्चुए।
१६ ओतरंति (ख)।
१७. भ० २।७०।

१० भंतेति ! भगवं गोयमे[1] ॰समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता॰ एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी जाली नामं अणगारे पगइभद्दए[2]। से णं जाली अणगारे कालगए कहिं गए ? कहिं उववण्णे ?

११ एवं खलु गोयमा ! मम अंतेवासी तहेव जहा खंदयस्स जाव[3] कालगए उड्ढं चंदिम-सूर-गहगण-नक्खत्त-तारारूवाणं जाव[4] विजए विमाणे देवत्ताए उववण्णे ॥

१२ जालिस्स णं भंते ! देवस्स केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?
गोयमा ! बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१३ से णं भंते ! ताओ[5] देवलोयाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ॥

निक्खेव-पदं

१४ एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[6] संपत्तेणं अणुत्तरोववाइय-दसाणं पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥

२-१० अज्झयणाणि

मयालिपभिति-पदं

१५ एवं सेसाण वि नवण्हं[7] भाणियव्वं, नवरं—सत्त[8] धारिणिसुआ, वेहल्लवेहायसा[9] चेल्लणाए, अभए नंदाए। 'सव्वेसिं सेणिओ पिया'[10]। आइल्लाणं पंचण्हं सोलस वासाइं सामण्णपरियाओ। तिण्हं बारस वासाइं। दोण्हं पंच वासाइं[11]। आइल्लाणं पंचण्हं आणुपुव्वीए उववाओ विजए वेजयंते जयंते अपराजिए

---

१. सं० पा०—गोयमे जाव एवं।
२. पू०—ना० १।१।२०६।
३ भ० २।७१।
४. अ० १।८।
५ ततो (ख)।
६ अ० ३।७५।
७. अट्ठण्हं (क, ख,)।
८ छ (ख,ग)।
९ ॰वेहासा (क, ख); विहल्लवेहासे (ग)।
१० × (क, ख)।
११ अतोऽग्रे 'मासियाए संलेहणाए' इति पाठः द्वितीयवर्गस्य ६ सूत्रानुसारेण अध्याहर्तव्य ।

सव्वट्ठसिद्धे । 'दीहदते सव्वट्ठसिद्धे'[1] उक्कमेणं सेसा । अभओ विजए । सेसं जहा पढमे[2] ॥

निक्खेव-पदं

१६. एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव[3] सपत्तेणं अणुत्तरोववाइय-दसाण पढमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥

---

१. × (क)।

२. पढमे । अभयस्स नाणत्त, रायगिहे नयरे सेणिए राया, नदा देवी, सेसं तहेव [क, ख, ग] । असौ पाठो वाचनान्तरस्य प्रतीयते । अस्मिन् नानात्वस्य सकेतोऽस्ति, किन्तु यन्नानात्व प्रदर्शितं तत् सर्वं पूर्वमायातमेव ।

३. अ० ३।७५ ।

दोच्चो वग्गो

१-१३ अज्झयणाणि

उक्खेव-पद

१ जइ ण भंते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव[1] सपत्तेण अणुत्तरोववाइय-दसाण पढमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दोच्चस्स ण भंते ! वग्गस्स अणुत्तरोववाइयदसाण समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ?

२ एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण अणुत्तरोववाइय-दसाण दोच्चस्स वग्गस्स तेरस अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा—

संगहणी-गाहा

१ दीहसेणे २ महासेणे, ३ 'लट्ठदते य ४ गूढदते य'[3] ५ सुद्धदते य ।
६. हल्ले ७ दुमे ८ दुमसेणे, ९ महादुमसेणे य आहिए ॥१॥
१० सीहे य ११ सीहसेणे य, १२. महासीहसेणे य आहिए ।
१३. पुण्णसेणे य बोधव्वे, तेरसमे होइ अज्झयणे ॥२॥

३ जइ ण भंते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव[4] सपत्तेण अणुत्तरोववाइय-दसाण दोच्चस्स वग्गस्स तेरस अज्झयणा पण्णत्ता, दोच्चस्स ण भंते ! वग्गस्स पढमज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ?

दीहसेणादि-पदं

४. एव खलु जबू ! तेण कालेणं तेण समएण रायगिहे नयरे । गुणसिलए चेइए । सेणिए राया । धारिणी देवी । सीहो सुमिणे । जहा जाली तहा जम्म बालत्तण

१,२. अ० ३।७५ ।
३ गूढदते य लट्ठदते य (क), ०गूहदते य (ख) ।
४ अ० ३।७५ ।

कलाओ, नवरं—दीहसेणो कुमारो सच्चेव वत्तव्वया जहा जालिस्स जाव[1] अंतं काहिइ ।।

५. एवं तेरस वि रायगिहे नयरे। सेणिओ पिया। धारिणी माया। तेरसण्ह वि सोलस वासा परियाओ। आणुपुव्वीए विजए दोण्णि, वेजयंते दोण्णि, जयंते दोण्णि, अपराजिए दोण्णि, सेसा महादुमसेणमादी पंच सव्वट्ठसिद्धे ।।

निक्खेव-पदं

६. एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[2] संपत्तेणं अणुत्तरोववाइय-दसाणं दोच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते।
मासियाए संलेहणाए दोसु वि वग्गेसु ।।

१. अ० १।६-१३।
२. अ० ३।७५।

तच्चो वग्गो

पढमं अज्झयणं

धण्णे

उक्खेव-पदं

१ जइ ण भते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव[1] सपत्तेण अणुत्तरोववाइय-दसाण दोच्चस्स ण वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, तच्चस्स ण भते ! वग्गस्स अणुत्तरोववाइयदसाण समणेण भगवया महावीरेण जाव[2] सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ?

२ एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेणं जाव[3] सपत्तेण अणुत्तरोववाइय-दसाण तच्चस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा—

संगहणी-गाहा

१ धण्णे य २. सुणक्खत्ते य, ३ इसिदासे य आहिए ।
४. पेल्लए ५ रामपुत्ते य, ६. चदिमा ७ पिट्ठिमा[4] इ य ॥१॥
८ पेढालपुत्ते अणगारे, 'नवमे पोट्टिले वि य'[5] ।
१० वेहल्ले दसमे वुत्ते, इमे य दस आहिया ॥२॥

३ जइ ण भते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव[6] सपत्तेण अणुत्तरोववाइय-दसाण तच्चस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स ण भते ! अज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ?

धण्णस्स गिहवास-पद

४ एव खलु जंवू ! तेण कालेण तेण समएण काकदी[7] नाम नयरी होत्था—

१,२,३ अ० ३।७५ ।
४. पुट्ठिमा (ग, घ,) ।
५. अणगारे पुट्ठिले इ य (क) ।
६ अ. ३।७५ ।
७ कागदी (क, ख) ।

रिद्धत्थिमियसमिद्धा[1]। सहसववणे उज्जाणे—सव्वोउय-पुप्फ-फल-समिद्धे[2]। जियसत्तू राया ॥

५ तत्थ णं काकदीए नयरीए भद्दा नामं सत्थवाही परिवसइ—अड्ढा जाव[3] अपरिभूया ॥

६ तीसे णं भद्दाए सत्थवाहीए पुत्ते धण्णे नामं दारए होत्था—अहीणपडिपुण्ण-पचेंदियसरीरे जाव[4] सुरूवे। पंचधाईपरिग्गहिए जहा महब्बलो जाव[5] बावत्तरिं कलाओ अहीए जाव[6] अलंभोगसमत्थे जाए यावि होत्था ॥

७ तए णं सा भद्दा सत्थवाही धण्णं दारयं उम्मुक्कबालभावं जाव[7] अलंभोगसमत्थं वा वि जाणित्ता बत्तीसं पासायवडेंसए कारेइ—अब्भुग्गयमूसिए जाव[8] पडिरूवे। तेसिं मज्झे एगं च णं महं भवणं कारेइ—अणेगखंभसयसण्णिविट्ठं जाव[9] पडिरूवं ॥

८ तए णं सा भद्दा सत्थवाही तं धण्णं दारयं बत्तीसाए इब्भवरकण्णगाणं एगदिवसेण पाणिं गेण्हावेइ। बत्तीसओ दाओ[10] ॥

९ तए णं से धण्णे दारए उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं जाव[11] विउले माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरइ ॥

धण्णस्स पव्वज्जा-पदं

१० तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे। परिसा निग्गया। राया जहा कोणिओ 'तहा निग्गओ'[12] ॥

११. तए णं तस्स धण्णस्स दारगस्स तं महया[13]•जणसद्दं वा जाव[14] जणसन्निवायं वा सुणमाणस्स वा पासमाणस्स वा अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणो-

---

१. पू०—ओ० सू० १।
२. पू०—ना० १।५।४।
३ ना० १।५।७।
४. ओ० सू० १४३।
५. भ० ११।१५४-१५६, राय० सू० ८०४-८०७।
६. राय० सू० ८०८,८०९, ओ० सू० १४७,-१४८।
७. राय० सू० ८१०।
८. ना० १।१।८९।
९. ना० १।१।८९।
१०. पू०—ना० १।१।९०-९२।
११. ना० १।१।९३।
१२ × (क)। ओ० सू० ५४-६९।
१३ सं० पा०—जहा जमाली तहा निग्गओ। नवरं पायचारेण। जाव जं नवरं अम्मयं भद्दं सत्थवाहिं आपुच्छामि। तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए पव्वयामि जाव जहा जमाली तहा आपुच्छइ। मुच्छिया। वुत्तपडिवुत्तया जहा महब्बले जाव जाहे नो संचाएइ जहा थावच्चापुत्तस्स जियसत्तु आपुच्छइ। छत्तचामराओ। सयमेव जियसत्तू निक्खमणं करेति जहा थावच्चापुत्तस्स कण्हो जाव पव्वइए। अणगारे जाए—इरियासमिए जाव गुत्तबंभचारी।
१४. ओ० सू० ५२।

गए सकप्पे समुप्पज्जित्था—किण्ण अज्ज काकदीए नयरीए इदमहे इ वा[1] जण्ण एते बहवे उग्गा भोगा जाव[2] निग्गच्छति—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कचुइपुरिस सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—किण्ण देवाणुप्पिया ! अज्ज काकदीए नयरीए इदमहे इ वा जाव निग्गच्छति ?

१२ तए णं से कचुइपुरिसे समणस्स भगवओ महावीरस्स आगमणगहियविणिच्छए धण्ण दारय एव वयासी[3]—एव खलु देवाणुप्पिया ! अज्ज समणे भगव महावीरे काकदीए नयरीए बहिया सहसववणे उज्जाणे अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ, तए ण एते बहवे उग्गा भोगा जाव[4] निग्गच्छति ॥

१३ तए णं से धण्णे दारए कचुइपुरिसस्स अतिय एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे जाव पायचारेण जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीरे तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ ॥

१४ तए ण समणे भगव महावीरे धण्णस्स दारयस्स तीसे य महइमहालियाए इसि-परिसाए जाव[5] धम्म परिकहेइ ॥

१५. तए ण से धण्णे दारए समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—सद्दहामि ण भते ! निग्गथं पावयण जाव[6] अम्मय भद्द सत्थवाहि आपुच्छामि, तए ण अह देवा-णुप्पियाण अतिय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वयामि । अहासुह देवाणुप्पिया ॥

१६ जहा जमाली तहा आपुच्छइ[8] ॥

१७ तए ण सा भद्दा सत्थवाही त अणिट्ठ अकत अप्पिय अमणुण्ण अमणाम असुय-पुव्व फरुस गिर सोच्चा निसम्म[9] धसत्ति सव्वगेहिं सनिवडिया । वुत्तपडिवुत्तया जहा महब्बले[10] ॥

१८ तए ण त धण्ण दारय भद्दा सत्थवाही जाहे नो सचाएइ जाव[11] जियसत्तु

---

१. पू०—भ० ६।१५८ ।
२ भ० ६।१५८ ।
३ पू०—भ० ६।१५६ ।
४ भ० ६।१५६; ओ० सू० ५२ ।
५. भ० ६।१६२ ।
६. भ० ६।१६३ ।
७ भ० ६।१६४ ।
८ पू०—भ० ६।१६५-१६७ ।
६ पू०—भ० ६।१६८ ।
१० भ० ११।१६६, ना० १।१।१०६-११३ ।
११ ना० १।५।१६,२० ।

आपुच्छइ—इच्छामि ण देवाणुप्पिया ! धण्णस्स दारयस्स निक्खममाणस्स छत्त-मउड-चामराओ य विदिन्नाओ ॥

१९ तए ण जियसत्तू राया भद्द सत्थवाहिं एवं वयासी—अच्छाहि ण तुम देवाणुप्पिए ! सुनिव्वुत-वीसत्था, अहण्ण सयमेव धण्णस्स दारयस्स निक्खमण-सक्कार करिस्सामि। सयमेव जियसत्तू निक्खमण करेइ, जहा थावच्चापुत्तस्स कण्हो[1] ॥

२० तए ण से धण्णे दारए सयमेव पचमुट्ठिय लोय करेइ जाव[2] पव्वइए ॥

२१. तए ण से धण्णे दारए अणगारे जाए—इरियासमिए भासासमिए एसणासमिए आयाण-भड-मत्त-णिक्खेवणासमिए उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाण-जल्ल-पारिट्ठावणियासमिए मणसमिए वइसमिए कायसमिए मणगुत्ते वइगुत्ते कायगुत्ते गुत्ते गुत्तिदिए° गुत्तबभयारी ॥

धण्णस्स तवचरिया-पद

२२. तए ण से धण्णे अणगारे ज चेव दिवस मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए, त चेव दिवस समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—इच्छामि[3] ण भते ! तुब्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे जावज्जीवाए छट्ठछट्ठेणं अणिक्खित्तेण आयविलपरिग्गहिएण तवोकम्मेण अप्पाण भावेमाणे[4] विहरित्तए छट्ठस्स वि य ण पारणयसि कप्पइ मे[5] आयविल पडिगाहेत्तए[6], नो चेव ण अणायविल। त पि य संसट्ठ, नो चेव ण असंसट्ठ। त पि य ण उज्झिय-धम्मिय, नो चेव ण अणुज्झिय-धम्मिय। त पि य ज अण्णे वहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगा नावकखति।

अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिवध करेहि ॥

२३ तए ण से धण्णे अणगारे समणेण भगवया महावीरेण अब्भणुण्णाए समाणे हट्ठतुट्ठे जावज्जीवाए छट्ठछट्ठेण अणिक्खित्तेण आयविलपरिग्गहिएण[7] तवो-कम्मेण अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

२४ तए ण से धण्णे अणगारे पढम-छट्ठखमणपारणयसि पढमाए पोरिसीए सज्झाय करेइ, जहा गोयमसामी तहेव आपुच्छइ, जाव[8] जेणेव काकदी नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता काकदीए नयरीए उच्च[9]-°नीय-मज्झिमाइ कुलाइ

---

१. ना० १।५।२२-३३।
२. ना० १।५।३४।
३ एव खलु इच्छामि (ख, ग)।
४. भावेमाणस्स (ख, ग)।
५ × (क, ख)।
६. पडिगहित्तए (क)।
७. × (क, ख, ग)।
८. भ० २।१०७-१०९।
९ स० पा०—उच्च जाव अडमाणे।

घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए° अडमाणे आयविल' •पडिगाहेति, नो चेव ण अणायविल। त पि य ससट्ठ, नो चेव ण अससट्ठ। त पि य उज्झिय-धम्मियं, नो चेव ण अणुज्झिय-धम्मिय त पि य ज अण्णे बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगा° नावकखति।

२५. तए णं से धण्णे अणगारे ताए अब्भुज्जयाए पययाए पयत्ताए[2] पग्गहियाए एसणाए एसमाणे जइ भत्त लभइ तो[3] पाण न लभइ, अह पाण लभइ तो भत्त न लभइ॥

२६ तए ण से धण्णे अणगारे अदीणे अविमणे अकलुसे अविसादी अपरितत-जोगी जयण-घडण-जोगचरित्ते अहापज्जत्त समुदाण पडिगाहेइ, पडिगाहेत्ता काकदीओ नयरीओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जहा गोयमे जाव[4] पडिदसेइ॥

२७ तए ण से धण्णे अणगारे समणेण भगवया महावीरेण अब्भणुण्णाए समाणे अमुच्छिए[5] •अगिद्धे अगढिए° अणज्झोववण्णे विलमिव पण्णगभूएण अप्पाणेण आहार आहारेइ, आहारेत्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ॥

२८ तए ण समणे भगव महावीरे अण्णया कयाइ कायदीओ नयरीओ सहसववणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहार विहरइ॥

२९ तए ण से धण्णे अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाण थेराण अतिए सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइ अहिज्जइ, अहिज्जित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ॥

३० तए ण से धण्णे अणगारे तेण ओरालेण[6] •विउलेण पयत्तेण पग्गहिएण कल्लाणेण सिवेण धन्नेण मगल्लेण सस्सिरीएण उदग्गेण उदत्तेण उत्तमेण उदारेण महाणुभागेण तवोकम्मेण सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसतए जाए यावि होत्था। जीवजीवेण गच्छइ, जीवजीवेण चिट्ठइ, भास भासित्ता वि गिलाइ, भास भासमाणे गिलाइ, भास भासिस्सामीति गिलाइ। से जहानामए कट्ठसगडिया इ वा पत्तसगडिया इ वा पत्त-तिल-भडग-सगडिया इ वा एरडकट्ठसगडिया इ वा, इगालसगडिया इ वा उण्हे दिण्णा सुक्का समाणी ससद्द गच्छइ, ससद्द चिट्ठइ, एवामेव धण्णे अणगारे ससद्द गच्छइ, ससद्द चिट्ठइ, उवचिए तवेण, अवचिए मस-सोणिएण, हुयासणे विव भासरासिपडिच्छण्णे तवेण, तेएण, तव-तेयसिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणे-उवसोभेमाणे° चिट्ठइ॥

---

१. स० पा०—आयविल नो अणायविल जाव नावकखति।
२. × (घ)।
३ अह (क)।
४. तहा (ख, ग)। भ० २।११०।
५. स० पा०—अमुच्छिए जाव अणज्झोववण्णे।
६. सं० पा०—उरालेण जहा खदओ जाव सुहुय चिट्ठइ।

धण्णस्स तवजणिय-सरीरलावण्ण-पद

३१. धण्णस्स णं अणगारस्स पायाणं अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए सुक्कछल्ली इ वा कट्ठपाउया इ वा जरग्गओवाहणा इ वा, एवामेव धण्णस्स अणगारस्स पाया सुक्का लुक्खा[1] निम्मंसा अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायंति, नो चेव णं मंस-सोणियत्ताए ॥

३२. धण्णस्स णं अणगारस्स पायंगुलियाणं अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए कलसंगलिया इ वा मुग्गसंगलिया इ वा माससंगलिया इ वा तरुणिया छिण्णा उण्हे दिण्णा सुक्का समाणी मिलायमाणी[2] चिट्ठति, एवामेव धण्णस्स अणगारस्स पायंगुलियाओ[3] सुक्काओ[4] °लुक्खाओ निम्मंसाओ अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायंति, नो चेव णं मंस°-सोणियत्ताए ॥

३३. धण्णस्स णं अणगारस्स जंघाणं अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए काकजंघा इ वा ढेणियालियाजंघा इ वा[5], °एवामेव धण्णस्स अणगारस्स जंघाओ सुक्काओ लुक्खाओ निम्मंसाओ अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायंति, नो चेव णं मंस°-सोणियत्ताए ॥

३४. धण्णस्स अणगारस्स जाणूणं अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए कालिपोरे[6] इ वा मऊरपोरे इ वा ढेणियालियापोरे इ वा, [7]°एवामेव धण्णस्स अणगारस्स जाणू सुक्का लुक्खा निम्मंसा अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायंति, नो चेव णं मंस°-सोणियत्ताए ॥

३५. धण्णस्स णं अणगारस्स ऊरूणं अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए 'सामकरिल्ले इ वा'[8] बोरीकरिल्ले[9] इ वा सल्लइकरिल्ले[10] इ वा 'सामलिकरिल्ले इ वा'[11] तरुणए[12] छिण्णे उण्हे[13] °दिण्णे सुक्के समाणे मिलायमाणे°

---

१. इदं पदं प्रयुक्तादर्शेषु नोपलभ्यते, ३७ वृत्तौ 'उदरवर्णने' एवामेव उदरं सुक्कं लुक्खं निम्मंसं इत्यादि पूर्ववत्' इत्युल्लेखेन तथा ५१ सूत्रे शीर्षस्य वर्णने सर्वेसु आदर्शेषु वृत्तौ च तथा दर्शनेन अस्माभिः सर्वत्र स्वीकृतमिदम् ।

२. विलायमाणी (क) ।

३. पायंगुलीओ (ख, ग) ।

४. सं० पा०—सुक्काओ जाव सोणियत्ताए ।

५. सं० पा०—इ वा जाव नो सोणियत्ताए ।

६. कालपोरे (क, घ) ।

७. सं० पा०—एवं जाव सोणियत्ताए ।

८. × (वृ) ।

९. पारिकरिल्ले (क) ।

१०. मेल्लत्ति° (ख) ।

११. वृत्तिकारेणात्र पाठान्तरनिर्देशः कृतः—पाठान्तरेण सामकरिल्ले इ वा (वृ) । आदर्शेषु असौ पाठः 'से जहानामए' अस्यानन्तरमेव वर्तते ।

१२. तरुणाए (क), तरुणे (ग), तरुणिए (क्व) ।

१३. सं० पा०—उण्हे जाव चिट्ठइ ।

चिट्ठइ, एवामेव धण्णस्स अणगारस्स ऊरू[1] •सुक्का लुक्खा निम्मसा अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव ण मस°-सोणियत्ताए ॥

३६. धण्णस्स ण अणगारस्स कडिपत्तस्स[2] अयमेयारूवे[3] तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए उट्टपदे[4] इ वा जरग्गपए[5] इ वा महिसपए[6] इ वा[7], •एवामेव धण्णस्स अणगारस्स कडिपत्ते सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव ण मस°-सोणियत्ताए ॥

३७ धण्णस्स ण अणगारस्स उदर-भायणस्स अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए सुक्क-दिए इ वा भज्जणय-कभल्ले इ वा कट्ठ-कोलबए इ वा, एवामेव धणस्स अणगारस्स उदर [उदर-भायण[8] ?] सुक्क[9] •लुक्ख निम्मस चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव ण मस°-सोणियत्ताए ॥

३८ धण्णस्स ण अणगारस्स 'पासुलिय-कडयाण'[10] अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए थासयावली इ वा 'पाणावली इ वा'[11] मुडावली इ वा[12], •एवामेव धण्णस्स अणगारस्स पासुलिय-कडया सुक्का लुक्खा निम्मसा अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव ण मस-सोणियत्ताए° ।

३९. धण्णस्स ण अणगारस्स पिट्ठि[13]-करडयाण अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए कण्णावली इ वा गोलावली[14] इ वा वट्टावली[15] इ वा, एवामेव[16] •धण्णस्स अणगारस्स पिट्ठि-करडया सुक्का लुक्खा निम्मसा अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव ण मस-सोणियत्ताए° ॥

४० धण्णस्स ण अणगारस्स 'उर-कडयस्स'[17] अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—

---

१ स० पा०—ऊरू जाव सोणियत्ताए ।
२ कडिपट्टस्स (ख, ग, घ, वृ पा) ।
३ इमेयारूवे (क, ख, ग, घ) ।
४. °पादे (ग) ।
५ °पादे (ग), लाक्षणिकदृष्ट्यात्र 'जरग्गवपए' इति पाठो युज्यते । वृत्तिकारस्य सम्मुखे 'जरग्गपए' इति पाठ आसीत्, यथा—जरग्गपएत्ति जरद्गवपाद (वृ) । वृत्तिकारेण यथा पाठो लब्ध तथा व्याख्यात इति सम्भाव्यते ।
६ °पादे (ग) ।
७ स० पा०—इ वा जाव सोणियत्ताए ।
८. सूत्रस्य प्रारम्भे 'उदरभायणस्स' इति प्रयुक्तमस्ति । अत्रापि तथैव किं न स्यात् ?
९ स० पा—सुक्क° ।
१० पासुलियकडलाइ (ख) ।
११ × (क), पीणावली° (ख, ग, घ) ।
१२ स पा०—मुडावली इ वा ।
१३ पिट्ठ (ग, वृ) ।
१४ गोणवाली (क) ।
१५ वट्टयावली (वृ) ।
१६ स० पा०—एवामेव° ।
१७ उरकरडयस्स (क, ग), उरकरडस्स (ख) । असौ पाठो वृत्त्याधारेण स्वीकृत ।

से जहानामए चित्तकट्टरे[1] इ वा वीयणपत्ते[2] इ वा तालियंटपत्ते इ वा, एवामेव[3] °धण्णस्स अणगारस्स उर-कडए सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव ण मंस-सोणियत्ताए° ॥

४१. धण्णस्स ण अणगारस्स वाहाण अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए समिसगलिया इ वा वाहायासगलिया[4] इ वा 'अगत्थियसगलिया इ वा,'[5] एवामेव[6] °धण्णस्स अणगारस्स वाहाओ सुक्काओ लुक्खाओ निम्मंसाओ अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव णं मंस-सोणियत्ताए° ॥

४२. धण्णस्स ण अणगारस्स हत्थाण अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए सुक्कछगणिया[7] इ वा वडपत्ते इ वा पलासपत्ते इ वा, एवामेव[8] °धण्णस्स अणगारस्स हत्था सुक्का लुक्खा निम्मसा अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव ण मस-सोणियत्ताए° ॥

४३ धण्णस्स ण अणगारस्स हत्थगुलियाण अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए कलसगलिया इ वा मुग्गसंगलिया इ वा माससगलिया इ वा तरुणिया छिण्णा आयवे दिण्णा सुक्का समाणी 'मिलायमाणी चिट्ठति'[9], एवामेव[10] °धण्णस्स अणगारस्स हत्थगुलियाओ सुक्काओ लुक्खाओ निम्मसाओ अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव णं मस-सोणियत्ताए° ॥

४४. धण्णस्स ण अणगारस्स गीवाए अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए करगगीवा इ वा कुडियागीवा इ वा उच्चत्थवणए[11] इ वा, एवामेव[12] °धण्णस्स अणगारस्स गीवा सुक्का लुक्खा निम्मंसा अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव ण मस-सोणियत्ताए° ॥

४५ धण्णस्स ण अणगारस्स हणुयाए अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए लाउफले इ वा हकुवफले[13] इ वा अवगट्ठिया[14] इ वा[15] °आयवे दिण्णा सुक्का समाणी मिलायमाणी चिट्ठइ, एवामेव धण्णस्स अणगारस्स हणुया

---

१ चित्तपट्टरे (क), चित्तयकट्टरे (ख), चित्तयकट्टरे (ग)।
२. वीइण° (ग); वीयणय° (घ) वियण° (वृ)।
३ स० पा०—एवामेव°।
४. × (ख); पहाया° (ग)।
५ × (क)।
६ स० पा०—एवामेव°।
७. सुक्कछगनिया (क); सुक्कच्छगणिया (ख,ग)।
८ स० पा०—एवामेव°।
९. × (क, ख, ग), मिलायति (घ)।
१०. स० पा०—एवामेव°।
११. उच्चट्ठवणए (क), काढवणए (ख)।
१२. स० पा०—एवामेव°।
१३ हेकुव० हकुव० हेकुच° हकुन० (ख)।
१४. अवगठिया (क, घ)।
१५ सं० पा०—अवगट्ठिया इ वा° एवामेव।

सुक्का लुक्खा निम्मसा अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव ण मस-सोणियत्ताए° ॥

४६ धण्णस्स ण अणगारस्स उट्ठाण अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए सुक्कजलोया इ वा सिलेस-गुलिया इ वा अलत्त[1]-गुलिया इ वा, एवामेव[2] •धण्णस्स अणगारस्स उट्ठा सुक्का लुक्खा निम्मसा चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव ण मस-सोणियत्ताए° ॥

४७ धण्णस्स ण अणगारस्स जिब्भाए अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए वडपत्ते इ वा पलासपत्ते[3] इ वा सागपत्ते इ वा, एवामेव[4] •धण्णस्स अणगारस्स जिब्भा सुक्का लुक्खा निम्मसा चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव णं मस-सोणियत्ताए° ॥

४८ धण्णस्स ण अणगारस्स नासाए अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए अवगपेसिया इ वा अवाडगपेसिया इ वा माउलुगपेसिया इ वा तरुणिया[5] •छिण्णा आयवे दिण्णा सुक्का समाणी मिलायमाणी चिट्ठइ, एवामेव धण्णस्स अणगारस्स नासा सुक्का लुक्खा निम्मसा अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव ण मंस-सोणियत्ताए° ॥

४९ धण्णस्स ण अणगारस्स अच्छीणं अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए वीणाछिड्डे इ वा वद्धीसगछिड्डे[6] इ वा पाभाइयतारिगा[7] इ वा, एवामेव[8] •धण्णस्स अणगारस्स अच्छीओ सुक्काओ लुक्खाओ निम्मसाओ अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव णं मस-सोणियत्ताए° ॥

५० धण्णस्स ण अणगारस्स कण्णाण[9] अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए मूलाछल्लिया इ वा वालुकछल्लिया[10] इ वा कारेल्लयछल्लिया[11] इ वा, एवामेव[12] •धण्णस्स अणगारस्स कण्णा सुक्का लुक्खा निम्मसा चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव ण मस-सोणियत्ताए °॥

५१ धण्णस्स ण अणगारस्स सीसस्स अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए तरुणगलाउए इ वा तरुणगएलालुए इ वा सिण्हालए[13] इ वा तरुणए[14]

---

१. अलत्तग (ग)।
२. स० पा०—एवामेव°।
३ × (क), पलासपत्ते इ वा (ग), उवरपत्ते (घ)।
४ स० पा०—एवामेव°।
५. स० पा०—तरुणिया° एवामेव°।
६ पव्वीस° (क, ख)।
७. पभयातारगा (वृ), पाभाइयतारा (वृपा)।
८ स० पा०—एवामेव°।
९ केसाण (क)।
१०. वालुका (क)।
११ क्वचिच्च नीतिपद दृश्यते न चावगम्यते (वृ)।
१२. स० पा०—एवामेव°।
१३ मिण्हालुए (क्व)।
१४ स० पा०—तरुणए जाव चिट्ठइ।

•छिण्णे आयवे दिण्णे सुक्के समाणे मिलायमाणे° चिट्ठइ, एवामेव धण्णस्स अणगारस्स सीसं सुक्कं[1] लुक्खं निम्मंसं अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायइ, नो चेव णं मंस-सोणियत्ताए[2] ।।

५२ धण्णे णं अणगारे[3] सुक्केणं भुक्खेणं पायजंघोरुणा, विगय-तडि-करालेणं कडि-कडाहेणं, पिट्ठिमस्सिएणं[4] उदरभायणेणं, जोइज्जमाणेहिं पासुलि[5]-कडएहिं, 'अक्खसुत्तमाला तिव'[6] गणेज्जमाणेहिं पिट्ठिकरंडगसंधीहिं, गंगातरंगभूएणं उरकडगदेसभाएणं, सुक्कसप्पसमाणाहिं बाहाहिं[7], सिढिलकडाली[8] 'विवलंबतेहिं'[9] य अग्गहत्थेहिं, कंपणवाइओ विव वेवमाणीए सीसघडीए पम्माणवयणकमले[10] उब्भडघडमुहे उच्छुद्धणयणकोसे[11] जीवंजीवेणं गच्छइ, जीवंजीवेणं चिट्ठइ, भासं भासित्ता गिलाइ, भासं भासमाणे गिलाइ, भासं भासिस्सामि त्ति गिलाइ। से जहानामए इंगालसगडिया इ वा[12] •कट्ठसगडिया इ वा पत्तसगडिया इ वा तिलडासगडिया इ वा एरंडसगडिया इ वा उण्हे दिण्णा सुक्का समाणी ससद्दं गच्छइ, ससद्दं चिट्ठइ, एवामेव धण्णे अणगारे ससद्दं गच्छइ, ससद्दं चिट्ठइ, उवचिए तवेणं, अवचिए मंससोणिएणं°, हुयासणे इव भासरासिपलिच्छण्णे तवेणं तेएणं तवतेयसिरीए अईव-अईव उवसोभेमाणे-उवसोभेमाणे चिट्ठइ ।।

सेणियस्स महादुक्करकारय-पुच्छा-पदं

५३. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए। सेणिए राया ।।

५४ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे। परिसा निग्गया। सेणिए निग्गए। धम्मकहा। परिसा पडिगया ।।

५५ तए णं से सेणिए राया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—

---

१ × (ख, ग)।

२. 'मंस-सोणियत्ताए' अतोग्रे सर्वासु प्रतिसु 'एवं सव्वत्थ। नवरं उयरभायणं कण्णा जीहा उट्ठा एएसिं अट्ठी न भणइ, चम्म-छिरत्ताए पण्णायइ त्ति भणइ इति पाठोस्ति। परं अस्माभिस्तु सर्वत्र पूर्णं पाठं लिखितं, अतोनावश्यकत्वेनासौ पाठान्तररूपेण स्वीकृतं।

३ अणगारे णं (क ख, ग, घ)।

४. पट्ठी° (क), पिट्ठमवस्सिएणं (वृ)।

५ पांसुलि (ग, घ)।

६. अक्खमाला तिवा (क), मालाविव (ग); °माला तिवा (घ)।

७ × (क)।

८. सढिल° (क, ख, ग)।

९ विचलंतेहिं (क), विवचलंतेहिं (ख)।

१०. पव्वात° (क, ग), पम्माय° (ख)।

११ उच्छुड्डु° (क्व)।

१२. सं० पा०—जहा खंधओ तहा जाव हुयासणे; स्कन्दकप्रकरणे(भ० २।६४) प्रारम्भे 'इंगालसगडिया' इति पाठो नास्ति। तेनास्य पूर्ति, नायाधम्मकहाओ सूत्रात् कृता।

इमासि ण भते ! इदभूइपामोक्खाण चोद्दसण्ह समणसाहस्सीण कतरे अणगारे महादुक्करकारए चेव महाणिज्जरतराए चेव ?
एव खलु सेणिया ! इमासि ण इदभूइपामोक्खाण चोद्दसण्ह समणसाहस्सीण धण्णे अणगारे महादुक्करकारए चेव महाणिज्जरतराए चेव ।।

५६ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ, इमासि[1] •ण इदभूइपामोक्खाण चोद्दसण्हं समण°साहस्सीण धण्णे अणगारे महादुक्करकारए चेव महाणिज्जरतराए चेव ?

भगवओ उत्तर-पद

५७ एव खलु सेणिया ! तेण कालेण तेण समएण कायदी नाम नयरी होत्था । धण्णे दारए उप्पि पासायवडेसए[2] विहरइ ।
तए ण अह अण्णया कयाई पुव्वाणुपुव्वीए चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे जेणेव कायदी नयरी जेणेव सहसववणे उज्जाणे तेणेव उवागए । अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण[3] •तवसा अप्पाण भावेमाणे° विहरामि । परिसा निग्गया । तहेव जाव[4] पव्वइए जाव[5] बिलमिव[6] •पण्णगभूएण अप्पाणेण आहार° आहारेइ । धण्णस्स ण अणगारस्स[7] सरीरवण्णओ सव्वो जाव[8] तवतेयसिरीए अईव-अईव उवसोभेमाणे-उवसोभेमाणे चिट्ठइ । से तेणट्ठेण सेणिया ! एव वुच्चइ 'इमासि ण इदभूइपामोक्खाणं चोद्दसण्ह समणसाहस्सीण धण्णे अणगारे महादुक्करकारए चेव महाणिज्जरतराए चेव ।।

सेणिएण धण्णस्स थवणा-पद

५८ तए ण से सेणिए राया समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता जेणेव धण्णे अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धण्ण अणगार तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—धण्णे सि ण तुम देवाणुप्पिया ! सुपुण्णे[9] •सि ण तुमं देवाणुप्पिया ! सुकयत्थे[10]° सि ण तुम देवाणुप्पिया! °कयलक्खणे सि ण तुम देवाणुप्पिया ! सुलद्धे ण देवाणुप्पिया ! तव माणुस्सए जम्मजीवियफले त्ति कट्टु वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता जेणेव समणे भगव महावीरे

---

१. स० पा०—इमासि जाव साहस्सीण ।
२. पू०—अ ३।४-६ ।
३ स० पा०—सजमेण जाव विहरामि ।
४ अ० ३।११-२१ ।
५ अ० ३।२१-२७ ।
६. स० पा०—बिलमिव जाव आहारेइ ।
७. अणगारस्स पादाण (क, ख, ग, घ) ।
८ अ० ३।३१-५२ ।
९ स० पा०—सुपुण्णे सुकयत्थे कयलक्खणे ।
१० सकतत्थे (क); सकयत्थे (ख), कयत्थे (घ) ।

तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए, तामेव दिसं पडिगए ।।

धण्णस्स सव्वट्ठसिद्ध-गमण-पद

५९ तए णं तस्स धण्णस्स अणगारस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाले धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं ओरालेण[1] तवोकम्मेण[2] धमणिसंतए जाए। जहा खंदओ[3] तहेव चिंता । आपुच्छणं । थेरेहिं सद्धिं विउलं पव्वयं दुरुहइ । मासिया संलेहणा । नव मासा परियाओ जाव[4] कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिम[5]-°सूर-गहगण-नक्खत्त-ताराख्वाण जाव[6] नवयगेवेज्जविमाणपत्थडे उड्ढं दूरं वीईवइत्ता सव्वट्ठसिद्धे विमाणे देवत्ताए उववण्णे । थेरा तहेव ओयरंति जाव[7] इमे से आयारभंडए ।।

६० भंतेति ! भगवं गोयमे तहेव आपुच्छति, जहा खंदयस्स भगवं वागरेइ जाव[8] सव्वट्ठसिद्धे विमाणे उववण्णे ।।

६१. धण्णस्स णं भंते ! देवस्स केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?
गोयमा ! तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

६२ से णं भंते ! ताओ देवलोगाओ कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिनिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ ।।

निक्खेव-पदं

६३. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[9] संपत्तेणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।।

१,२. पू०—अ०३।३० ।
३. भ० २।६६-६९ ।
४. अ० १।८ ।
५. सं० पा०—चंदिम जाव नवय° ।
६. अ० १।८ ।
७. भ० २।७० ।
८. भ० २।७१ ।
९. अ० ३।७५ ।

बीयं अज्झयणं

सुणक्खत्ते

सुणक्खत्त-पद

६४. जइ ण भते ! समणेण भगवया महावीरेण तच्चस्स वग्गस्स पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दोच्चस्स ण भते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

६५ एव खलु जबू ! तेण कालेण तेण समएण काकदी नयरी । जियसत्तू राया ॥

६६ तत्थ ण काकदीए नयरीए भद्दा नाम सत्थवाही परिवसइ—अड्ढा ॥

६७ तीसे ण भद्दाए सत्थवाहीए पुत्ते सुणक्खत्ते नाम दारए होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पचेंदियसरीरे जाव[1] सुरूवे पचधाइपरिक्खित्ते जहा धण्णो तहेव । बत्तीसओ दाओ जाव[2] उप्पि पासायवडेसए विहरइ ॥

६८ तेणं कालेण तेण समएण समोसरण । जहा धण्णे तहा सुणक्खत्ते वि निग्गए । जहा थावच्चापुत्तस्स तहा निक्खमणं जाव[3] अणगारे जाए—इरियासमिए जाव[4] गुत्तबभयारी ॥

६९ तए ण से सुणक्खत्ते ज चेव दिवस समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए मुडे[5] •भवित्ता अगाराओ अणगारिय° पव्वइए त चेव दिवस अभिग्गह तहेव जाव[6] विलमिव पण्णगभूएण अप्पाणेण आहार आहारेइ, आहारेत्ता सजमेण[7] •तवसा अप्पाण भावेमाणे° विहरइ ॥

७० सामी बहिया जणवयविहार विहरइ । एक्कारस अगाइ अहिज्जइ, सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥

---

१ ओ० सू० १४३ ।
२ अ० ३।६६ ।
३. ना० १।५।२८-३५ ।
४. अ० ३।२१ ।
५ स० पा०—मुडे जाव पव्वइए ।
६. अ० ३।२२-२७ ।
७. स० पा०—सजमेण जाव विहरइ ।

७१. तए ण से सुणक्खत्ते अणगारे तेण ओरालेणं[1] तवोकम्मेण[2] जहा खदओ[3] अईव-अईव उवसोभेमाणे चिट्ठइ ॥

७२. तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नयरे। गुणसिलए चेइए। सेणिए राया। सामी समोसढे। परिसा निग्गया। राया निग्गओ। धम्मकहा। राया पडिगओ। परिसा पडिगया ॥

७३. तए ण तस्स सुणक्खत्तस्स अणगारस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाले धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था, जहा खदयस्स। बहू वासा परियाओ। गोयमपुच्छा। तहेव कहेइ जाव[4] सव्वट्ठसिद्धे विमाणे देवत्ताए उववण्णे। तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई[5]। महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ॥

३-१० अज्झयणाणि

इसिदासादि-पदं

७४. एव सुणक्खत्तगमेण सेसा वि अट्ठ अज्झयणा भाणियव्वा, नवर—आणुपुव्वीए दोण्णि रायगिहे, दोण्णि साकेते, दोण्णि वाणियग्गामे, नवमो हत्थिणपुरे, दसमो रायगिहे। नवण्ह भद्दाओ जणणीओ। नवण्ह वि वत्तीसओ दाओ। नवण्ह निक्खमण थावच्चापुत्तस्स सरिस[6]। वेहल्लस्स पिया करेइ[7]। छम्मासा वेहल्लए। नव धण्णे। सेसाण बहू वासा। मासं सलेहणा। सव्वट्ठसिद्धे। सव्वे महाविदेहे सिज्झिस्सति ॥

निक्खेव-पदं

७५. एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेण आइगरेण तित्थगरेणं सहसंबुद्धेणं लोगणाहेण लोगप्पदीवेण[8] लोगपज्जोयगरेण अभयदएणं सरणदएण चक्खुदएणं मग्गदएणं धम्मदएण धम्मदेसएण[9] धम्मवरचाउरतचक्कवट्टिणा अप्पडिहय-वरणाणदसणधरेणं जिणेण जाणएण बुद्धेण बोहएण मुत्तेण मोयएण तिण्णेणं तारएण सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावत्तयं सिद्धिगइनामधेय ठाण सपत्तेण अणुत्तरोववाइयदसाण तच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥

१,२. पू० ३।३० ।
३. भ० २।६४ ।
४. भ० २।६६-७१ ।
५. ठिई से ण भते (क, ख, ग, घ) ।
६. पू०—ना० १।५।२२-३३ ;
७. 'निक्खमण' इति शेषः ।
८. × (ख) ।
९. × (क) ।

परिसेसो

अणुत्तरोववाइयदसाण एगो सुयखधो। तिण्णि वग्गा। तिसु चेव दिवसेसु उद्दिसिज्जति। तत्थ पढमे वग्गे दस उद्देसगा। विइए वग्गे तेरस उद्देसगा। तइए वग्गे दस उद्देसगा। सेस जहा नायाधम्मकहाण तहा नेयव्व ॥

ग्रन्थ परिमाण
कुल अक्षर—६६५४
अनुष्टुप् श्लोक—३११ अ० २

———

पराहावागरणाइं

पढमं अज्झयणं

पढमं आसवदारं

उक्खेव-पदं

१. जंबू[1] !

इणमो[2] अण्हय-संवर-विणिच्छयं[3] पवयणस्स निस्संदं ।
वोच्छामि णिच्छयत्थं, सुहासियत्थ महेसीहिं ॥१॥

---

१. वृत्तिकारेण पुस्तकान्तरवर्ती उपोद्घातग्रन्थ उल्लिखितः । तत्र 'जंबू' इति पद युक्तमस्ति । किञ्च तस्मिन् प्रस्तुतसूत्रस्य प्रारम्भ सुधर्म-जम्बू-संवादपूर्वक. कृतोस्ति । किन्तु वृत्तिकृता स्वीकृते पाठे सुधर्मस्वामिनो नास्ति कोपि उल्लेख. । त विना केवल 'जंबू' इति पद कथ युक्त स्यात् ? इति सम्भाव्यते पुस्तकान्तरवर्त्युपोद्घातग्रन्थस्य सम्बन्धि 'जंबू' पद प्रस्तुतवाचनायामपि प्रविष्टम् ।

२ पुस्तकान्तरेषु उपोद्घातग्रन्थ उपलभ्यते, यथा—
तेण कालेण तेण समएण चपा नाम नयरी होत्था । पुण्णभद्दे चेइए । वणसडे । असोगवरपायवे । पुढविसिलापट्टए । तत्थ ण चपाए नयरीए कोणिए नामं राया होत्था । धारिणी देवी । तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतेवासी अज्जसुहम्मे नाम थेरे—जाइसपण्णे कुल-संपण्णे बलसपण्णे रूवसपण्णे विणयसपण्णे नाणसपण्णे दसणसपण्णे चरित्तसपण्णे लज्जासपण्णे लाघवसपण्णे ओयसी तेयसी वच्चसी जससी जियकोहे जियमाणे जियमाए जियलोभे जियनिद्दे जिइदिए जियपरीसहे जीवियास-मरण-भय-विप्पमुक्के तवप्पहाणे गुणप्पहाणे करणप्पहाणे चरणप्पहाणे निच्छयप्पहाणे अज्जवप्पहाणे मद्दवप्पहाणे लाघवप्पहाणे खतिप्पहाणे गुत्तिप्पहाणे मुत्तिप्पहाणे मतप्पहाणे बभप्पहाणे वेयप्पहाणे नयप्पहाणे नियमप्पहाणे सच्चप्पहाणे सोयप्पहाणे नाणप्पहाणे दसणप्पहाणे चरित्तप्पहाणे चोद्दसपुव्वी चउनाणोवगए पचहिं अणगारसएहिं सद्धिं सपरिवुडे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे जेणेव चपा नगरी तेणेव उवागच्छइ जाव

पंचविहो पण्णत्तो, जिणेहि इह अण्हओ अणादीओ ।
हिंसा - मोसमदत्तं[1], अब्बंभ - परिग्गहं चेव ॥२॥
जारिसओ, जंनामा[2], जह य कओ जारिस फलं देंति ।
जेवि य करेंति पावा, पाणवहं[3] तं निसामेह ॥३॥

पाणवहस्स सरूव-पदं

२. पाणवहो नाम एस निच्चं जिणेहि भणिओ—पावो चंडो रुद्दो खुद्दो साहसिओ[4] अणारिओ निग्घिणो निस्संसो महब्भओ पइभओ अतिभओ बीहणओ तासणओ अणज्जो[5] उव्वेयणओ य निरवयक्खो निद्धम्मो निप्पिवासो निक्कलुणो निरय-

---

अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति । परिसा निग्गया । धम्मो कहिओ । जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ।
तेणं कालेणं तेणं समएणं अज्जसुहम्मस्स थेरस्स अंतेवासी अज्जजंबू नामं अणगारे कासव गोत्तेणं सत्तुस्सेहे जाव संखित्त-विपुलतेयलेस्से अज्जसुहम्मस्स थेरस्स अदूरसामंते उड्ढंजाणू जाव संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।
तए णं से अज्जजंबू जायसड्ढे जायसंसए जायकोउहल्ले, उप्पण्णसड्ढे ३, संजायसड्ढे ३, समुप्पण्णसड्ढे ३, उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव अज्जसुहम्मे थेरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अज्जसुहम्मं थेरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमसइ, नमंसित्ता नच्चासन्ने नाइदूरे विणएणं पंजलिपुडे पज्जुवासमाणे एवं वयासी—जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं णवमस्स अंगस्स अणुत्तरोववाइय-दसाणं अयमट्ठे पण्णत्ते, दसमस्स णं अंगस्स पण्हावागरणाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?
जंबू ! दसमस्स अंगस्स समणेणं जाव संपत्तेणं दो सुयक्खंधा पण्णत्ता अण्हयदारा य संवरदारा य । पढमस्स णं भंते ! सुयक्खंधस्स समणेणं जाव संपत्तेणं कइ अज्झयणा पण्णत्ता ?
जंबू ! पढमस्स णं सुयक्खंधस्स समणेणं जाव संपत्तेणं पंच अज्झयणा पण्णत्ता । दोच्चस्स णं भंते ! एवं चेव । एएसिं णं भंते ! अण्हय-संवराणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?
ततेणं अज्जसुहम्मे थेरे जंबूनामेणं अणगारेणं एवं वुत्ते समाणे जंबूअणगारं एवं वयासी—जंबू ! इणमो इत्यादि ॥ (वृ) ।
३. विणिच्छियं (घ) ।
१. मोसादत्तं (क) ।
२. जण्णामा (क) ।
३. पाणिवहं (ग) ।
४. साहस्सिओ (ग) ।
५. व्याकरणदृष्ट्या 'अणज्जो' इति पदं युक्तं स्यात् ।

वास-गमण-निधणो मोह-महब्भय-पवड्ढओ[1] 'मरण वेमणंसो'[2] पढमं अधम्म-दार ॥

पाणवहस्स तीसनाम-पदं

३ तस्स य नामाणि इमाणि[3] गोण्णाणि होंति[4] तीसं, तं जहा—१, २ पाणवहुम्मूलणा[5] सरीराओ ३. अवीसभो ४. हिंसविहिंसा तहा ५ अकिच्च च ६. घायणा ७ मारणा य ८. वहणा ९ उद्दवणा[6] १०. तिवायणा[7] य ११ आरभ-समारभो १२. 'आउयकम्मस्स उवद्दवो'[8] [भेय-णिट्ठवण-गालणा य सवट्टग-सखेवो[9]] १३ मच्चू १४ असजमो १५ कडग-मद्दण १६ वोरमण १७ परभव-सकाम-कारओ १८ दुग्गतिप्पवाओ १९. पावकोवो य २० पावलोभो[10] २१ छविच्छेओ[11] २२ जीवियतकरणो २३. भयकरो २४ अणकरो[12] २५. वज्जो[13] २६. परिताव-अण्हओ २७ विणासो २८ निज्जवणा[14] २९. लुपणा[15] ३०. गुणाण विराहणत्ति ।

अवि य तस्स एवमादीणि[16] नामधेज्जाणि होंति तीस पाणवहस्स कलुसस्स कडुयफल-देसगाइ ॥

पाणवहस्स पगार-पदं

४ त च पुण करेंति केई पावा असजया अविरया अणिहुय-परिणाम-दुप्पयोगी[17]

---

१. पयद्दओ (क, ग), पयट्टओ (ख), प्रकर्षक (वृ), वृत्तिकारेण 'प्रकर्षक प्रवर्त्तक' इत्युल्लेख कृत । उत्तरवर्त्यादर्शेषु 'प्रवर्त्तक' पदस्याधारेण 'पयट्टओ' इति पाठ प्रचलितोभूत् । पवड्ढओ (वृपा) ।

२. मरण वेमणसो (ख, ग), मरणावेमणस्सो (वृ), वृत्तिकारेण असौ पाठ एकपदत्वेन व्याख्यात, किन्तु अस्माभि. 'एस मारे' (१।२४) इति आचाराङ्गसूत्रसन्दर्भेण पृथक्पदत्वेन गृहीत ।

३. × (क) ।

४. × (क) ।

५. पाणवह उम्मूलणा (घ) ।

६. उद्दवण (क) ।

७. णिवायणा (क) ।

८ °कम्मस्सुवद्दवो (क, ख) ।

९. अत्र कोष्ठकवर्त्तीनि भेदादिपदानि 'उवद्दव' पदस्य पर्यायवाचित्वेन निर्दिष्टानि सन्ति, यथा—आउयकम्मस्स भेओ
" णिट्ठवण
" गालणा
" सवट्टगो
" सखेवो ।
वृत्तिकारेणापि लिखितमिदम्—एतेषा च उपद्रवादीनामेकतरस्यैव गणनया नाम्ना त्रिंशत् पूरणीया ।

१० पावलो (वृ) ।

११ छविच्छेयकरो (वृ) ।

१२ अणकरो य (ग) ।

१३. सावज्जो (वृपा) ।

१४ निज्जवणो (ग) ।

१५. लुपणो (घ) ।

१६. एवमातीणि (ग) ।

१७ दुप्पओया (क) ।

पाणवह भयंकर[1] बहुविह[2] परदुक्खुप्पायणप्पसत्ता इमेहिं तसथावरेहिं जीवेहिं पडिणिविट्ठा, 'किं ते'[3] ?—

५. पाठीण[4]-तिमि[5]-तिमिगिल-अणेगझस-विविहजातिमंडुक्क-दुविहकच्छभ-णक्क-मगर-दुविहगाह-दिलिवेढय-मडुय[6]-सीमागार[7]-पुलुय-सुंसुमार-बहुप्पगारा[8] जलयरविहाणाकते[9] य एवमादी ॥

६. कुरंग-रुरु-सरभ-चमर-संबर-हुरब्भ[10]-ससय-पसय-गोण-रोहिय[11]-हय-गय-खर-करभ-खग्ग-वानर-गवय-विग-सियाल-कोल[12]-मज्जार-कोलसुणक[13]-'सिरियंदलय-आवत्त'[14]-कोकंतिय-गोकण्ण-मिय-महिस-वियग्घ-छगल-दीविय-साण-तरच्छ-अच्छ-भल्ल-सद्दूल-सीह-चिल्लला[15] चउप्पयविहाणाकए य एवमादी ॥

७. अयगर[16]-गोणस-वराहि-मउलि[17]-काओदर-दब्भपुप्फ-आसालिय[18]-'महोरगा उरगविहाणाकए'[19] य एवमादी ॥

८ छीरल-सरंब[20]-सेह-सल्लग[21]-'गोधा-उंदुर'[22]-णउल-सरड-जाहग-मुगुंस-खाडहिल-वाउप्पइय[23]-घरोलिया[24] सिरीसिवगणे य एवमादी ॥

९ कादंबक[25]-बक-बलाका-सारस-आडासेतीय-कुलल-वंजुल-पारिप्पव-कीव[26]-सउण-दीविय[27]-हंस-धत्तरट्ठ[28]-भास-कुलीकोस[29]-कोंच[30]-दगतुंड-ढेणियालगसूईमुह-कविल

---

१ बहुविहभयंकरं (वृ); भयंकरं (वृपा)।

२ बहुविहबहुप्पयारं (क, ख,); बहुविह बहुप्पगार (ग, घ)।

३ कथं तं प्राणवधं कुर्वन्तीत्यर्थः (वृ); तद्यथेति वा (वृपा)।

४. पाढीण (क)।

५ तिमि (क)।

६ मदुय (क), मदुक (ख), मडुय (ग, घ)।

७. सीमागर (क)।

८ बहुप्रकारश्चेति कर्मधारयोऽतस्तान् घ्नन्तीति वक्ष्यमाणेन योगः। इह च द्वितीयाबहुवचने-प्येकाराभाव छान्दसत्वात् (वृ)।

९ जलचरविधानकक्रृताश्च, इह च कशब्द-लोपेन विधानशब्दस्यान्तदीर्घत्वम् (वृ)।

१०. उरब्भ (ख)।

११. रोहिम (वृपा)।

१२. कोक (वृपा)।

१३. °सुणका (क, ख, ग, घ)।

१४. सिरिकंदलगावत्त (ख); श्रीकन्दलका आवर्त्ताश्च (वृ)।

१५ चिल्लल (क, ख, ग, घ,); चित्तला (वृपा)।

१६. अयकर (क, ख, ग, घ)।

१७ माउलि (ख, ग, च)।

१८. यासालिय (ख, घ, च);

१९. महोरगारगविहाणगकए (ख, ग, घ, च)।

२०. सरग (ख, च)।

२१. सेल्लग (ख, ग, घ, च)।

२२. गोवुदर (क, ख, ग)।

२३. वाउप्पिय (ख, घ)।

२४. घरोलिय (क, ख, ग), घोरोलिय (घ)।

२५ कादबकीवक (क)।

२६. कीर (ग)।

२७. पिपिय (क); दीपिय (ग); पीपिय (वृ)।

२८. धात्तरिट्ठ (ख)।

२९. कुडीकोस (ग)।

३०. कुंच (ख, घ)।

पिंगलक्खग[1] - कारडग[2] - चक्कवाग-उक्कोस- गरुल-पिंगुल[3]-सुय-बरहिण[4]- मयण-साल-नदीमुह-नदमाणग-कोरग-भिगारग-कोणालग - जीवजीवक[5]-तित्तिर-वट्टक-लावक- कपिंजलक[6] - कवोतग - पारेवग[7] - चिडिग- ढिंक - कुक्कुड-वेसर[8]-मयूरग-चउरग-हरपोडरीय[9]-सालग[10] - वीरल्ल-सेण- वायस- विहगभेणासि-चास-वगुलि-चम्मट्ठिल-विततपक्खी खहयरविहाणाकते य एवमादी ॥

१० जल-थल-खग-चारिणो उ[11] पचिंदिए पसुगणे विय-तिय-चउरिंदिए य[12] विविहे जीवे, पियजीविए, मरणदुक्खपडिकूले वराए हणति बहुसकिलिट्ठकम्मा[13] ॥

पाणवहस्स कारण-पद

११. इमेहिं विविहेहिं कारणेहिं, 'किं ते'[14] ?—
चम्म-वसा-मंस - मेय-सोणिय- जग- फिप्फिस - मत्थुलिंग[15] - हियय[16]-अत - पित्त-पोप्फस-दतट्ठा, अट्ठि-मिंज-नह-नयण-कण्ण-ण्हारुणि-नक्क-धमणि-सिंग-दाढि - पिच्छ-विस-विसाण-वालहेउ[17] ॥

१२. हिंसति य भमर-मधुकरिगणे रसेसु गिद्धा, तहेव तेइदिए सरीरोवकरणट्ठयाए, किवणे बेइदिए[18] बहवे वत्थोहरपरिमडणट्ठा, अण्णेहि य एवमाइएहिं बहूहिं कारणसतेहिं अबुहा इह हिंसति तसे पाणे ॥

१३. इमे य एगिंदिए[19] वराए तसे य अण्णे तदस्सिए चेव तणुसरीरे समारभति—अत्ताणे असरणे अणाहे अबंधवे कम्मनिगल[20]-बद्धे अकुसलपरिणाम-मदबुद्धिजण-दुव्वि-जाणए, पुढविमए पुढविसस्सिए, जलमए जलगए, अणलाणिल-तणवणस्सतिगण-निस्सिए य 'तम्मय-तज्जिए'[21] चेव तदाहारे तप्परिणत-वण्ण-गध-रस-फास-बोदिरूवे अचक्खुसे चक्खुसे य तसकाइए असखे ॥

---

१. पिंगलक्ख (क) ।
२. कारड (घ, च) ।
३. पगुल (ख, ग, घ, च) ।
४. वरिहिण (ख, ग, घ, च) ।
५. जीवक (क), जीवजीवक (क्व) ।
६. कापिंजलक (क) ।
७. परिवयग (ख, घ, च) ।
८ मसर (क), विसर (च), मेसर (ग, घ) ।
९ हयपोडरीय (ख, ग, घ, च) ,
१०. करकरल्लग (क); करकरग(ख, ग, घ, च), करग (वृपा) ।
११ य (ग, च) ।
१२. × (क, ख, घ) ।
१३. सत्त्वा इति गम्यते (वृ) ।
१४ किं तत् प्रयोजनम् ? तद्यथेति वा (वृ) ।
१५ मत्थुलुग (क, घ) ।
१६. हितय (क, घ, च) ।
१७. °हेउ (क, च) । 'हणति बहुसकिलिट्ठकम्मा' इति अध्याहर्तव्यमत्र ।
१८. विंदिए (ख) ।
१९ एगिंदिए बहवे (घ, च) ।
२० °नियल (क) ।
२१ तन्मयजीवाश्चेति (वृपा) ।

१४ थावरकाए य सुहुम-वायर-पत्तेयसरीर-नाम-साधारणे अणते हणति अविजाणओ य परिजाणओ य जीवे इमेहिं विविहेहिं कारणेहिं, 'किं ते'[1] ?—
करिसण-पोक्खरणी[2]-वावि-वप्पिण-कूव-सर-तलाग-चिति-वेदि[3]-खातिय-आराम-विहार-थूभ-पागार-दार-गोउर[4]-अट्टालग-चरिय-सेतु-सकम[5]-पासायविकप्प-भवण-घर-सरण-लेण-आवण-चेतिय-देवकुल-चित्तसभ-पव-आयतण-आवसह-भूमिघर-मडवाण य कए, भायण-भडोवगरणस्स विविहस्स य अट्ठाए पुढविं हिंसंति मदबुद्धिया ॥

१५ जल च मज्जणय-पाण-भोयण-वत्थधोवण-सोयमादिएहिं[6] ॥

१६ पयण-पयावण-जलावण[7]-विदसणेहिं अगणिं ॥

१७ सुप्प-वियण-तालयट[8]-पेहुण-मुह-करयल-सागपत्त वत्थमादिएहिं अणिल ॥

१८. अगार-परियार-भक्ख-भोयण-सयण-आसण-फलग-मुसल-उक्खल-तत-वितत-आतोज्ज-वहण-वाहण-मडव-विविहभवण-तोरण-विडग[9]-देवकुल-जालय-अद्ध-चंद-निज्जूह[10]-चंदसालिय-वेतिय[11]-णिस्सेणि-दोणि-चगेरि-खील-मेढक-सभ-प्पव-आवसह-गध-मल्ल-अणुलेवण-अबर-जुय-नगल-मइय[12]-कुलिय-सदण-सीया-रह-सगड-जाण-जोग्ग-अट्टालग-चरिअ[13]-दार-गोपुर-फलिह-जत-मूलिय[14]-लउड-मुसुढि[15]-सतग्घि-बहुपहरण-आवरण-उवक्खराण कते[16]। अण्णेहि य एवमादिएहिं बहूहिं कारणसतेहिं हिसति ते[17] तरुगणे, भणियाभणिए य एवमादी सत्ते सत्तपरिवज्जिया उवहणति दढमूढा दारुणमती ॥

१९. कोहा माणा माया लोभा 'हस्स रती अरती सोय[18] वेदत्थ-'जीव-धम्म-अत्थ-कामहेउ',[19]
सवसा अवसा अट्ठा अणट्ठाए य तसपाणे थावरे य हिंसति मंदबुद्धी ।
सवसा हणति, अवसा हणति, सवसा अवसा दुहओ हणति ।

---

१. किं तत् तद्यथेति वा (वृ) ।
२. पोक्खरिणी (क, ग) ।
३ वेति (क, ख) ।
४ गोपुर (क, ग) ।
५. सकमण (ख) ।
६ एतदादिभि कारणैरिति प्रक्रम (वृ) ।
७. जलण जलावण (ख, च) ।
८. तालएट (क, घ); तालवट (ख), तालविंट (च) ।
९. विटग (ख) ।
१० निज्जूहग (घ) ।
११ वेदिय (ख) ।
१२ मलिय (क) ।
१३ चरित (क, ग) ।
१४. सूलय (क, ख, घ, वृपा), मूसलय (ग) ।
१५ मुसढि (क, घ) ।
१६ कए (क, ग, घ) ।
१७. × (क, ग) ।
१८. इह पंचमीलोपो दृश्य. ।
१९. जीयकामत्थधम्महेउ (क, ख, घ, च) ।

अट्ठा हणति, अणट्ठा हणति, अट्ठा अणट्ठा दुहओ हणति।
हस्सा हणति, वेरा हणति, रतीए[1] हणंति 'हस्सा वेरा रतीए'[2] हणति।
कुद्धा हणति, लुद्धा हणति, मुद्धा हणति, कुद्धा लुद्धा मुद्धा हणति।
अत्था हणति, धम्मा हणति, कामा हणति, अत्था धम्मा कामा हणति॥

पाणवहस्स कत्तार-पदं

२० कयरे[3] ? जे ते सोयरिया मच्छबधा साउणिया वाहा कूरकम्मा[4] 'दीवित[5]-वधप्पओग-तप्प-गल-जाल-वीरल्लग-आयसीदब्भवग्गुरा-कूडछेलिहत्था[6] हरिएसा ऊणिया[7] य वीदसग-पासहत्था वणचरगा लुद्धगा य महुघात-पोतघाया एणीयारा पएणीयारा सर-दह-दीहिअ-तलाग-पल्लल-परिगालण-मलण-सोत्तवधण-सलिलासयसोसगा 'विस-गरलस्स य दायगा'[8] उत्तण-वल्लर-दवग्गि-णिद्दय-पलीवका॥

२१ कूरकम्मकारी इमे य बहवे मिलक्खुया[9], के[10] ते ? —
सक जवण सवर वब्बर काय[11] 'मुरुड उड्ड'[12] भडग निण्णग[13] पक्काणिय कुलक्ख गोड[14] सीहल पारस कोच अध दविल चिल्लल[15] पुलिंद आरोस डोव पोक्कण[16] गधहारग वहलीय जल्ल रोम[17] मास[18] बउस मलया य चुचुया य चूलिय कोकणगा[19] मेद[20] पल्हव[21] मालव मग्गर[22] आभासिया अणक्क चीण ल्हासिय खस

---

१ रती य (क, ख, ग, घ, च)।
२ हस्सवेरा रती य (क, ख, ग, घ, च), अत्र एकारपरिवर्तनेन यकारो जात। अस्यालापकस्यानुसारेण 'हस्सा वेरा रतीए' एष पाठ उपयुक्तोस्ति, किन्तु लिपिकरणे परिवर्तन जातम्, तेन 'हस्सा' स्थाने 'हस्स' तथा 'रतीए' स्थाने 'रतीय' इति जातम्।
३ कयरे ते (क); घ्नन्तीति प्रश्न. (वृ)।
४. कूरकम्मा वाउरिया (ग, च, वृपा)।
५ दीविय (क), देविय (वृपा)।
६ अयमालापकः क्वचित् कथचिद् दृश्यते (वृ); °छेलियाहत्था (ग)।
७. कुणिका (क्व); साउणिया (वृपा)।
८. विसगरदायगा (क), विसगरलदायगा (ख), विसगरस्स° (घ)।
९. मिलक्खुजाती (क, ख, ग, घ, च)।
१० किं (क, ख, ग, घ, च)।
११ गाय (ख)।
१२ मुरडोद (ख, ग, घ, च), मुरुड-उद (वृ)।
१३ भित्तिय (ख, ग), तित्तिय (वृ)।
१४. गोड (ख, ग, घ, च)।
१५ °विल्लल (ख, ग, घ, च, वृ)।
१६ पोक्काण (क, ख, ग, घ)।
१७ राम (क, ख)।
१८ मोस (क्व)।
१९. कोकणग (क)।
२० मेत (क, ख, ग, घ, च)।
२१ पल्लव (क, घ). पण्हव (ख, वृ)।
२२ महुर (च, वृ)।

खासिय नेद्दूर[1] मरहट्ठ[2] मुट्ठिय आरव डोंबिलग कुहण केकय हूण रोमग रुरु मरुगा[3] चिलायविसयवासी य पावमतिणो,
जलयर-थलयर-'सणहपय-उरग'[4]-खहचर-सडासतोड-जीवोवघायजीवी, सण्णी य असण्णिणो य पज्जत्ता असुभलेस्सपरिणामा[5] ॥

२२ एते अण्णे य एवमादी करेंति पाणातिवाय-करण, पावा पावाभिगमा पावरुई[6] पाणवहकयरती पाणवहरूवाणुट्ठाणा पाणवहकहासु अभिरमता तुट्ठा पाव करेत्तु होति य बहुप्पगार ॥

पाणवहस्स फलविवाग-पदं

२३ 'तस्स य पावस्स फलविवागं अयाणमाणा वड्ढेति—महब्भय अविस्साम-वेयण दीहकालबहुदुक्खसंकड[7] नरय-तिरिक्ख-जोणि । इओ आउक्खए चुया'[8] असुभकम्मबहुला उववज्जति नरएसु हुलित—महालएसु, वयरामय-कुड्ड-रुंद-निस्सधि - दारविरहिय[9] - निम्मद्दव[10] - भूमितल-खरामस्स[11]-विसम-णिरयघर-चारएसु[12], महोसिण-सयावतत्त[13]-दुग्गंध-विस्स-उव्वेयणगेसु[14] बीभच्छ[15]-दरिसणिज्जेसु, निच्चं हिमपडलसीयलेसु[16], कालोभासेसु[17] य, भीम-गभीर-लोमहरिसणेसु, णिरभिरामेसु, निप्पडियार-वाहि-रोग-जरा-पीलिएसु[18], अतीवनिच्चंधकार-तिमिसेसु,[19] पतिभएसु, ववगय-गह-चद-सूर-णक्खत्त-जोइसेसु, मेयवसामंसपडल-पुच्चड-पूयरुहिरुक्किण्ण-विलीण-चिक्कण-रसियावावण्ण-कुहियचिक्खल्लकद्दमेसु, कुकूलानल[20]-पलित्त- जाल - मुम्मुर- असिक्खुरकरवत्तधार-सुनिसितविच्छुयडक-

---

१. मेद्दर (ख, ग, च) ।
२. मढा (वृपा) ।
३ एतानि च प्रायोलुप्तप्रथमाबहुवचनानि ।
४ सणहप्फतोरग (क, ख, ग), सणफतोरग (घ, च) ।
५ °परिणामे (क, ख, घ) ।
६. पावरुती (ख, घ, च) ।
७. °दुक्खवेयण (क) ।
८. 'तस्स' इति पदादारभ्य 'चुया' इति पदान्त. पाठ वृत्तिकारेण सर्वेषु आदर्शेषु नोपलब्ध , यथा—तस्सेत्यादि सूत्र च क्वचिदेव दृश्यते (वृ) ।
९. पार° (क, घ); यार° (ग), वार° (च) ।
१०. निमद्दव (ख, ग, घ, च) ।
११. खरामस (क, घ); खरामस (ग, च), खरामरिस (ख) ।
१२ °नारएसु (ख) ।
१३ सइयतत्त (क) ।
१४ उव्वेयजणगेसु (ख) ।
१५. विभत्थ (ख, ग) ।
१६. °सीयलेसु य (क, ग, घ, च) ।
१७. काला° (क) ।
१८ जलपीलिएसु (क); जरपोलिएसु (ग, घ) ।
१९. तिमिएसु (क) ।
२०. कुक्कुला° (क) ।

निवातोवम्म[1]-फरिस-अतिदुस्सहेसु, अत्ताणसरण-कडुयदुक्खपरितावणेसु, अणुवद्ध-निरंतरवेयणेसु, जमपुरिससंकुलेसु ।।

२४ तत्थ य अंतोमुहुत्तलद्धि-भवपच्चएण निव्वत्तेंति य[2] ते सरीरं, हुंडं बीभच्छ-दरिसणिज्जं[3] बीहणगं अट्ठि-ण्हारु-णह-रोमवज्जियं 'असुभगंध-दुक्खविसहं'[4] ।।

२५ ततो य पज्जत्तिमुवगया इंदिएहिं पंचहिं वेदेंति असुभाए वेयणाए उज्जल-बल-विउल[5]-उक्कड-खर-फरुस-पयंड-घोर-बीहणग-दारुणाए, किं ते ?—
कंदुमहाकुंभियपयणपउलण-तवगतलणभट्ठभज्जणाणि य, लोहकडाहकढणाणि य, कोट्ट[6]-बलिकरण-कोट्टणाणि य, सामलितिक्खग्ग-लोहकंटक-अभिसरणाप-सरणाणि[7] फालण-विदालणाणि[8] य, अवकोडकबंधणाणि[9] य[10], लट्ठिसय-तालणाणि य, गलगंबलुल्लंबणाणि य, सूलग्गभेयणाणि य, आएसपवंचणाणि, खिंसणविमाणणाणि य, विघुट्ठपणिज्जणाणि, वज्झसयमातिकाणि य ।।

२६ एवं ते पुव्वकम्मकयसंचयोवतत्ता निरयग्गि-महग्गिसंपलित्ता गाढदुक्खं महब्भयं कक्कसं असायं सारीरं माणसं च तिव्वं दुविहं वेदेंति वेयणं, पावकम्मकारी बहूणि पलिओवम-सागरोवमाणि कलुणं पालेंति ते अहाउं[11] जमकाइय[12] तासिता य सद्दं करेंति भीया, किं ते ?—
अविभाव[13]-सामि-भाय-बप्प-ताय 'जियवं[14] मुय मे'[15] मरामि दुब्बलो वाहि-पीलिओहं, किं दाणिऽसि ?

एवं दारुणो णिद्दओ य मा देहि मे पहारे, उस्सासेतं[16] मुहुत्तयं मे देहि, पसायं करेहि[17], मा रूस, वीसमामि, गेविज्जं मच[18] मे मरामि, गाढं तण्हाइओ[19] अहं देहि पाणीयं,

---

१. °डडक° (क, ख, ग, घ, च) ।
२. उ (ग, घ) ।
३ दुद्दरिसणिज्ज (ख, वृ) ।
४. असुभदुक्खविसह (क, ख, ग, घ, च, वृपा) ।
५ तिउल (वृपा) ।
६. कोट्टकिरिया (वृपा) ।
७ अहिसरणोसारणाणि (क), °सारणाणि (ख, ग, घ, च) ।
८. विदारणाणि (क, ग) ।
९ अवकोडग° (ग) ।
१०. × (ख, घ, च) ।
११. अहाउय (वृ) ।
१२ जमकातिय (क, ख, ग, घ, च) ।
१३ अविहाव (वृ) ।
१४. जितव (ग) ।
१५ जियवम्मुय (ख, च) ।
१६ °न (ख) ।
१७ करेह (ख, ग, घ, च, वृ) ।
१८ मुयह (क, ख, ग, घ, च) ।
१९ तण्हातिओ (ख, घ) ।

ता हूत[1] ! पिय इम जलं विमल सीयलं ति घेत्तूण य नरयपाला[2] तवियं तउयं से देति कलसेण अजलीसु, दट्ठूण य त पवेवियगमगा असुपगलतपप्पुयच्छा छिण्णा तण्हा[3] इयम्ह कलुणाणि[4] जपमाणा, विप्पेक्खता दिसोदिस[5], अत्ताणा असरणा अणाहा अबधवा बधुविप्पहूणा विपलायति य मिगा व वेगेण भयुव्विग्गा[6], घेत्तूण बला पलायमाणाण निरणुकपा मुह विहाडेत्तु लोहडडेहिं कलकल[7] ण्ह वयणसि छुभति केइ जमकाइया हसंता ।।

२७ तेण य दड्ढा सता रसति य भीमाइ विस्सराइं, रुदति[8] य कलुणगाइं पारेवतगा[9] व, एव पलवित-विलाव-कलुणो कदिय-बहुरुन्न-रुदियसद्दो परिदेविय[10]-रुद्ध-बद्धकारव-सकुलो णीसट्ठो "रसिय-भणिय-कुविय-उक्कूइय-निरयपालतज्जिय-गेण्ह, क्कम, पहर, छिंद, भिंद, उप्पाडेहि, उक्खणाहि[11], कत्ताहि, विकत्ताहि य, भज[12], हण, विहण, विच्छुभोच्छुभ[13], 'आकड्ढ, विकड्ढ'[14], कि ण जपसि[15]? सराहि पावकम्माइ दुक्कयाइ"—एव वयणमहप्पगब्भो पडिसुयासद्द-सकुलो तासओ[16] सया निरयगोयराण महाणगर-डज्झमाण-सरिसो निग्घोसो सुच्चए[17] अणिट्ठो तहिय नेरइयाण जाइज्जताण जायणाहि, किं ते ?—

असिवणदब्भवणजतपत्थरसूइतलखारवाविकलकलेतवेयरणिकलबवालुयाजलिय-गुहनिरुभण-उसिणोसिणकटइल्लदुग्गमरहजोयणतत्तलोहपहगमणवाहणाणि ।।

२८. इमेहिं विविहेहिं आयुहेहिं[18], किं ते ?—

मोग्गर मुसुढि[19] करकच सत्ति हल गय मुसल चक्क कोत तोमर सूल लउल भिंडिमाल सव्वल[20] पट्टिस चम्मेट्ठ[21] दुहण मुट्ठिय असिखेडग खग्ग चाव नाराय

---

१. हता (क्व) ।
२. निरयवाला (क्व) ।
३. तण्ह (क, ख, घ, च) ।
४. वचनानीति गम्यते (वृ) ।
५. °दिसिं (क, घ) ।
६ भउव्विग्गा (क) -
७. कलकल (ग, घ, च), त्रपुकमिति गम्यते ।
८ रुयति (क, ग), रुवति (घ), रोवंति (च) ।
९ °वयगा (क, ग) ।
१०. परिवेदिय (क, ख, घ); परिवेविय (वृपा) ।
११. उग्घाडेहुक्खणाहि (क), उप्पाडेहुक्खणाहि (ख, ग, घ, च) ।
१२. भुज्जो, भुज्जो (क); भुज्जो (ख, ग, घ, च, वृ), अत्र वृत्ते. पाठान्तर मूलपाठत्वेन स्वीकृतम् । 'भुज्जो' इति पदापेक्षया 'भज' इति पद क्रियापदप्रयोगे प्रासङ्गिकमस्ति ।
१३ विच्छुब्भोच्छुब्भ (क), विछुभउछुभ (वृ); निछुभ° (वृपा) ।
१४. आकट्ठ विकट्ठ (ख ग, घ, च) ।
१५. जानासि (वृपा) ।
१६. विहणओ तासणओ पइब्भओ अइब्भओ (वृपा) ।
१७. सुव्वए (ख, ग, घ) ।
१८. आउहेहिं° (क, ग) ।
१९ मुसढि (क) ।
२०. सद्दल (वृ) ।
२१ चम्मेढ (क, घ) ।

कणक कप्पणि वासि परसु टकतिक्ख निम्मल[1], अण्णेहि य एवमादिएहिं असुभेहिं वेउव्विएहिं पहरणसतेहिं अणुवद्धतिव्ववेरा परोप्पर वेयण उदीरेंति अभिहणता ॥

२९ तत्थ य मोग्गरपहारचुण्णिय-मुसुढिसभग्गमहितदेहा जतोपीलण[2]-फुरत-कप्पिया केइत्थ सचम्मका विगत्ता णिम्मूलुल्लूण[3]-कण्णोट्ठणासिका छिण्णहत्थपादा असि-करकय-तिक्खकोत-परसु-प्पहारफालिया[4] वासीसतच्छितगमगा कलकलखार-परिसित्त-गाढडज्झतगत्ता कुतग्गभिण्ण-जज्जरिय-सव्वदेहा विलोलति महीतले विसूणियंगमगा[5]।

तत्थ य विग-सुणग-सियाल-काक-मज्जार - सरभ-दीविय-वियग्घ-सद्दूल-सीह-दप्पिय-खुहाभिभूतेहि णिच्चकालमणसिएहिं घोरारसमाणभीमरूवेहिं अक्कमित्ता दढदाढागाढडक्ककड्ढिय[6] - सुतिक्खनहफालियउद्धदेहा विच्छिप्पते समतओ विमुक्कसधिवधणा वियगिमगा ।

कक-कुरर-गिद्ध-घोरकट्ठवायसगणेहि य पुणो खरथिरदढणक्ख-लोहतुडेहिं ओवतित्ता पक्खाहय-'तिक्खणक्खविक्खित्तजिब्भ-अछियनयण'[7]-निद्दयोलुग्ग-विगतवयणा[8], उक्कोसता य, उप्पयता निपतता भमता पुव्वकम्मोदयोवगता पच्छाणुसएण[9] डज्झमाणा, णिदता पुरेकडाइ कम्माइ पावगाइ, तहिं-तहि तारि-साणि[10] ओसण्णचिक्कणाइ दुक्खाइ अणुभवित्ता, ततो य आउक्खएण उव्वट्टिया समाणा वहवे गच्छति तिरियवसहिं—दुक्खुत्तार[11] सुदारुण जम्मण-मरण-जरा-वाहि-परियट्टणारहट्ट जलथलखहचर-परोप्पर-विहिंसणपवच ॥

३०. इम च जगपागड[12] वराका दुक्ख पावेति[13] दीहकाल, किं ते ?—

सीउण्हतण्हखुहवेयण-अप्पडीकारअडविजम्मण-णिच्चभउव्विग्गवास- जग्गणवध-वधण-तालणकण[14]-निवायण-अट्ठिभंजण-नासाभेय[15]-प्पहार -दूमण-छविच्छेयण-अभिओगपावण - कसकुसार[16]-निवाय - दमणाणि वाहणाणि य, मायापिति-

---

१. ततस्तैरिति व्याख्येयम्, तृतीया वहुवचन-लोपदर्शनात् (वृ) ।
२ °पिलुण (ख, च) ।
३ °ल्लूय (क) ।
४ °फालिय (वृ), वृत्तिकारेण विभक्तिरहित पद लब्धम् । तेन अग्रिमपदेन सह समास सूचित ।
५ निग्गयग्गजीहा (वृपा) ।
६. दिढ (क) ।
७ °जिब्भछिय° (क, ख, ग, घ, च) ।
८ ओलुत्तविगयगत्ता (वृपा) ।
९ पच्छणुसएण (ख, ग, घ) ।
१०. तारिसाहिं (क) ।
११ दुक्खुत्तर (ख) ।
१२ °पगड (ख, ग, च) ।
१३ पावति (क, ख, घ, च) ।
१४ ताडणकण (च) ।
१५ नासाभेद (ख, घ, च) ।
१६ कस+अकुश+आर ।

विप्पयोग - सोयपरिपीलणाणि य, सत्थग्गिविसाभिघाय[1] - गलगवलावलण-मारणाणि य, गलजालुच्छिपणाणि[2] पउलण-विकप्पणाणि य, जावज्जीविग-बधणाणि पजर-निरोहणाणि य, सज्जूह[3]-निद्धाडणाणि धमणाणि दोहणाणि य, कुडड[4]-गलवधणाणि वाड[5]-परिवारणाणि[6] य, पकजलनिमज्जणाणि वारिप्प-वेसणाणि य, ओवायणिभग-विसमणिवडण[7]-दवग्गिजाल-दहणाइयाइ ।।

३१ एव ते दुक्खसय-सपलित्ता नरगाओ आगया इह सावसेसकम्मा तिरिक्ख-पचेदिएसु पावति पावकारी कम्माणि पमाद-राग-दोस-वहुसचियाइं अतीव-अस्साय[8]-कक्कसाइ ।।

३२ भमर-मसग-मच्छियाइएसु[9] य जाई[10]-कुलकोडिसयसहस्सेहि नवहि चउरिंदियाण तहि-तहि चेव जम्मण[11]-मरणाणि अणुभवता काल सखेज्जक भमति नेरइय-समाणतिव्वदुक्खा फरिस-रसण-घाण-चक्खुसहिया ।।

३३. तहेव तेइदिएसु—कुथु[12]-पिपीलिका-अवधिकादिकेसु[13] य जाती-कुलकोडिसय-सहस्सेहि अट्ठहि अणूणएहि तेइदियाण तहि-तहि चेव जम्मण-मरणाणि अणुहवता काल सखेज्जक भमति नेरइयसमाणतिव्वदुक्खा फरिस-रसण[14]-घाण-संपउत्ता ।।

३४ 'तहेव बेइदिएसु'[15]–गडूलय[16]-जलुय[17]-किमिय-चदणगमादिएसु य जाती-कुलकोडि-सयसहस्सेहि सत्तहि अणूणएहि बेइदियाण तहि-तहि चेव जम्मण-मरणाणि अणुहवता काल सखेज्जक भमति नेरइयसमाणतिव्वदुक्खा फरिस-रसण-सपउत्ता ।।

३५. पत्ता एगिंदियत्तण पि य—पुढवि-जल-जलण-मारुय-वणप्फति-सुहुम-बायर च पज्जत्तमपज्जत्त पत्तेयसरीरणामसाहारणं च । पत्तेयसरीरजीविएसु य, तत्थवि कालमसखेज्जगं भमति, अणतकाल च अणतकाए फासिदियभाव-सपउत्ता दुक्खसमुदय इम अणिट्ठ पावेति[18] पुणो-पुणो तहि-तहि चेव परभव-तरुगणगहणे[19]

---

१. °विसघाय (क) ।
२. °लुछिपणाणि (क); °छुंपणाणि (ग); °छिपणाणि (च) ।
३. सयूह (ग) ।
४ कुदड (ख, ग, च) ।
५. वाडग (ग, घ, च) ।
६. परियालणाणि (क) ।
७. विसमपडण (क) ।
८ असाय (ग, च) ।
९. मच्छिमाइएसु (ख, घ); मच्छिगाइ° (ग,च) ।
१०. जाइ (ग, च) ।
११. जणण (क) ।
१२. जतु (क) ।
१३. अवहिकाइकेसु (ख, घ, च) ।
१४. रस (क) ।
१५. × (क, ख, घ) ।
१६. गद्दूयल (क, ग, घ, च) ।
१७. जलूय (ग) ।
१८. पाविति (ग); पावति (च) ।
१९. तरुगणगणे (वृ), तरुगणगहणे (वृपा) ।

कोद्दालकुलियदालण-सलिलमलण-खुभण-रुभण-अणलाणिल-विविहसत्थघट्टण-परोप्पराभिहणण-मारणविराहणाणि य अकामकाइ परप्पओगोदीरणाहिं[1] य कज्जप्पओयणेहिं[2] य पेस्सपसु-निमित्त ओसहाहारमाइएहि उक्खणण-उक्कत्थण-पयण-कोट्टण-पीसण-पिट्टण-भज्जण-गालण-आमोडण-सडण-फुडण-भजण-छेयण-तच्छण-विलुचण-पत्तज्झोडण-अग्गिदहणाइयाति ।।

३६. एव ते भवपरपरादुक्खसमणुवद्धा अडति ससार-वीहणकरे जीवा पाणाइवाय-निरया अणतकाल ।।

३७ जेवि य इह माणुसत्तण आगया कहचि नरगाओ[3] उव्वट्टिया अधण्णा, ते वि य दीसति पायसो विकय-विगल-रूवा खुज्जा वडभा य वामणा य बहिरा काणा कुटा य पगुला 'विअला य मूका य'[4] मम्मणा य अधिल्लग[5]-एगचक्खुविणिहय-सचिल्लया[6] वाहिरोगपीलिय-अप्पाउय-सत्थवज्झ-वाला कुलक्खणुक्किण्णदेह-दुव्वल-कुसंघयण-कुप्पमाण-कुसठिया कुरूवा किविणा य हीणा हीणसत्ता[7] निच्च सोक्खपरिवज्जिया असुह-दुक्खभागी णरगाओ उव्वट्टिया इह सावसेस-कम्मा ।।

३८ एव णरग-तिरिक्खजोणिं कुमाणुसत्त च हिंडमाणा पावति अणतकाइ दुक्खाइ पावकारी ।।

३९ एसो सो पाणवहस्स फलविवागो इहलोइओ पारलोइओ अप्पसुहो बहुदुक्खो महब्भओ वहुरयप्पगाढो दारुणो कक्कसो असाओ वाससहस्सेहिं मुच्चती[8], न य अवेदयित्ता[9] अत्थि हु मोक्खोत्ति[10]—एवमाहसु नायकुलनदणो महप्पा जिणो उ वीरवरनामधेज्जो, कहेसी य पाणवहस्स फलविवाग ।।

निगमण-पदं

४० एसो सो पाणवहो[11] चडो रुद्दो खुद्दो अणारिओ निग्घिणो निस्ससो महब्भओ वीहणओ[12] तासणओ[13] अणज्जो[14] उव्वेयणओ[15] य निरवयक्खो[16] निद्धम्मो

---

१. ०पयोगो० (ख, ग, च) ।
२. ०यणाहि (क) ।
३. नरगा (ख, ग, घ, च) ।
४. अवि य जलमूया (वृपा) ।
५. अवेल्लग (क) ।
६. सपिसल्लया (वृपा) ।
७. दीणा निस्सत्ता (क) ।
८. तत प्राणीति शेष. (वृ) ।
९. तमिति शेप (वृ) ।
१०. अस्मादिति शेष (वृ) ।
११. पाणिवधो (ख, ग, घ, च) ।
१२. वीभणओ (क, ग); बीभाणओ (ख, घ) ।
१३ तासओ (क, ख, ग, घ) ।
१४ द्रष्टव्यम्—प० १।२ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।
१५ उव्वेवणओ (क, ख, ग, घ, च) ।
१६. णिरावकखो (ख) ।

निप्पिवासो निक्कलुणो निरयवास-गमण-निधणो[1] मोह-महब्भय-पवड्ढओ[2] मरण वेमणंसो[3]। पढमं अहम्मदारं समत्तं।

—त्ति बेमि ॥

---

१. निवंधणो (क)।

२ पयट्टओ (क, ख), पयट्ठओ (ग, घ)।

३. वेमणस्सो (ख, ग, घ, च), द्वितीयसूत्रवर्तीनि एतानि विशेषणानि अत्र न सन्ति, वृत्तिकारेणापि न व्याख्यातानि—साहसिओ पइभओ अतिभओ।

बीग्रं अज्झयणं

बीग्रं आसवदारं

उक्खेव-पदं

१ जवू ! वितिय च[1] ग्रलियवयण—लहुसगलहु-चवल-भणिय भयकर-दुहकर-ग्रयसकर-वेरकरग ग्ररतिरति-रागदोस-मणसकिलेस-वियरण ग्रलिय-नियडि-साति-जोयवहुल नीयजण-निसेविय निसस[2] ग्रप्पच्चयकारक परमसाहु-गरह-णिज्ज परपीलाकारक परमकण्हलेस्ससहिय[3] दुग्गइविणिवायवड्ढण[4] भव-पुणब्भवकर चिरपरिचियमणुगत दुरत[5]। वितिय ग्रधम्मदार ।।

ग्रलियवयणस्स तीसनाम-पदं

२ तस्स य नग्माणि गोण्णाणि होंति तीस, त जहा—१ अलिय २ सढ ३ ग्रणज्ज ४ मायामोसो[6] ५. ग्रसतक ६ कूडकवडमवत्थु ७ निरत्थयमवत्थग च ८ विद्देसगरहणिज्ज ९ ग्रणुज्जग[7] १० कक्कणा य ११. वचणा य १२ मिच्छापच्छाकड च १३ साती १४. ग्रोच्छन्न[8] १५ उक्कूल[9] च १६ ग्रट्ट[10] १७ ग्रब्भक्खाण च १८ किब्बिस १९. वलय २० गहण च २१ मम्मण च २२ नूम २३ नियती[11] २४ ग्रप्पच्चग्रो २५ असमग्रो २६ ग्रसच्चसधत्तण २७ विवक्खो २८ ग्रवहीय[12] २९ उवहि-ग्रसुद्ध ३० ग्रवलोवो त्ति ।

---

१ × (ख, ग) ।
२ निस्सस (ग) ।
३. °लेससहिय (क) ।
४. °पवड्ढण (क) ।
५. दुरत कीत्तित (ख, ग, घ, च) ।
६. मायामोह (क) ।
७. अणज्जुग (च) ।
८ ओत्थत्तं (क, वृपा) ।
९. उक्कल (वृपा) ।
१० आट्टं (ख) ।
११. नियडी (ग, च) ।
१२. आणाइयं (वृपा) ।

अवि य तस्स एयाणि एवमादीणि नामधेज्जाणि होंति तीस सावज्जस्स अलियस्स वइजोगस्स अणेगाइ ॥

अलियवयणस्स पगार-पद

३ त च पुण वदति केई अलिय पावा अस्सजया अविरया कवडकुडिल-कडुय-चडुलभावा[1] कुद्धा लुद्धा 'भया य'[2] हस्सट्ठिया[3] य सक्खी चोरा चारभडा खडरक्खा जियजूईकरा[4] य गहिय-गहणा कक्कगुरुग-कारगा[5] कुलिगी उवहिया वाणियगा य कूडतुला[6] कूडमाणी कूडकाहावणोवजीवी पडकार-कलाय-कारुइज्जा। वचणपरा चारिय-चडुयार[7]- नगरगुत्तिय[8]-परिचारग-दुट्ठवायि-सूयक-अणवलभणिया य पुव्वकालियवयण-दच्छा साहसिका लहुस्सगा असच्चा गारविया असच्चट्ठावणाहिचित्ता उच्चच्छदा अणिग्गहा अणियता छदेण मुक्क-वायी भवंति अलियाहि जे अविरया ॥

४ अवरे नत्थिकवादिणो वामलोकवादी भणति—सुण्णति[9] । नत्थि जीवो । न जाइ इह 'परे वा'[10] लोए । न य किंचिवि फुसति पुण्णपाव । नत्थि फल सुकय-दुक्क-याण । पचमहाभूतिय सरीर भासति ह[11] वातजोगजुत्त । पच य खधे भणति केई । मण च मणजीविका वदति । वाउजीवोत्ति एवमाहसु । सरीर सादिय सनिधणं इह भवे 'एगे भवे'[12], तस्स विप्पणासम्मि[13] सव्वनासोत्ति—एव जपति मुसावादी ॥

५ तम्हा दाणव्वय[14]-पोसहाण तव-सजम-बभचेर-कल्लाणमाइयाण नत्थि फल, नवि[15] य पाणवह-अलियवयण, न चेव चोरिक्ककरण-परदारसेवण[16] वा सपरिग्गह-पावकम्मकरण पि नत्थि किंचि[17], न नेरइय-तिरिय-मणुयाण जोणी, न देवलोगो वत्थि, न य अत्थि सिद्धिगमण, अम्मापियरो वि नत्थि, नवि अत्थि पुरिसकारो,

---

१ चटुल० (ख, ग, घ, च) ।
२. अस्मिन्कर्तृपदप्रकरणे वृत्तिकृता चतुर्थ्यन्त पञ्चम्यन्त वा व्याख्यात 'भया य' इति पद नैव सगच्छते । सम्भवत. 'भयट्ठा' अथवा 'भयट्टा य' इति पद आसीत्, किन्तु लिपि-करणक्रमे परिवर्तितमिवाभाति ।
३. हस्सट्ठि (क), हस्सट्ठाय (वृपा) ।
४. °जुयकरा (ख) ।
५. °कुरुग (क), °कुरग (ख, ग, च); °कुरुग (घ) ।
६. कूडतुल (ग) ।
७. चाटुयार (ख), चटुयार (ग, च) ।
८. नगरगोत्तिय (ग) ।
९ जगदिति गम्यते (वृ) ।
१०. परेच्च (क, च); परिच्च (घ) ।
११. हे (वृ) ।
१२. × (ख, ग, च) ।
१३. विप्पणासे (क), विप्पणासंसि (च) ।
१४ दाणवत (क, च) ।
१५. नेवि (ख, च) ।
१६. परदारा° (क) ।
१७. किंपि (क, च) ।

पच्चक्खाणमवि नत्थि, नवि ग्रत्थि कालमच्चू, ग्ररहंता चक्कवट्टी बलदेव-वासुदेवा नत्थि, नेवत्थि केइ रिसग्रो, धम्माधम्मफल च नवि ग्रत्थि किंचि वहुय च थोव[1] वा ।

तम्हा एव विजाणिऊण[2] जहा सुबहु-इदियाणुकूलेसु सव्वविसएसु वट्टह । नत्थि काइ किरिया वा अकिरिया वा – एव भणति नत्थिकवादिणो वामलोगवादी ।।

६ इम पि विइय कुदसण ग्रसब्भाववाइणो पण्णवेति मूढा—सभूतो ग्रडकाग्रो लोको । सयभुणा सय च निम्मिग्रो । एव एत ग्रलिय, पयावइणा इस्सरेण य कय ति केई[3] । एव विण्हुमय कसिणमेव य जग ति केई ।।

७ एवमेके वदति मोस—एको ग्राया ग्रकारको वेदको य सुकयस्स दुक्कयस्स य करणाणि कारणाणि सव्वहा सव्वहिं च निच्चो य निक्किग्रो निग्गुणो य ग्रणु-वलेवग्रोत्ति[4] वि य ।।

८ एवमाहसु असब्भाव—जपि इह किंचि जीवलोके दीसइ सुकय वा दुक्कय वा एय जदिच्छाए वा, सहावेण वावि दइवतप्पभावग्रो वावि भवति, 'नत्थेत्थ किंचि कयक तत्तं'[5] ।

लक्खण-विहाण नियती य कारिया—एव केइ जपति इड्ढिरससातगारवपरा, वहवे करणालसा परूवेति धम्मवीमसएण मोस ।।

९ ग्रवरे ग्रहम्माग्रो रायदुट्ठ ग्रब्भक्खाणं भणंति ग्रलिय—चोरोत्ति[6] ग्रचोरिय करेत, डामरिग्रोत्ति वि य एमेव उदासीण, दुस्सीलोत्ति य परदार गच्छतित्ति मइलिति सीलकलियं, अयंपि गुरुतप्पग्रोत्ति, ग्रण्णे एवमेव भणति उवहणता[7], मित्तकलत्ताइ सेवति ग्रयपि लुत्तधम्मो, इमो वि वीसभघायग्रो पावकम्मकारी ग्रकम्मकारी ग्रगम्मगामी, ग्रय दुरप्पा वहुएसु य पातगेसु[8] जुत्तोत्ति—एव जपति[9] मच्छरी[10] भद्दके व[11] गुण-कित्ति-नेह-परलोग-निप्पिवासा ।।

१० एव ते ग्रलियवयणदच्छा परदोसुप्पायणप्पसत्ता वेढेति ग्रक्खइय-वीएण ग्रप्पाण कम्मवधणेण मुहरी ग्रसमिक्खियप्पलावी, निक्खेवे ग्रवहरति परस्स ग्रत्थमि गढियगिद्धा, ग्रभिजुजति य परं ग्रसतएहिं[12], लुद्धा य करेति कूडसक्खित्तणं, ग्रसच्चा ग्रत्थालिय च कन्नालिय च भोमालिय च तहा गवालिय च गरुय भणति ग्रहरगतिगमण ।।

---

१. थोवक (क) ।
२ जाणिऊण (ख, ग, घ, च) ।
३. केयि (ख, घ, च); केति (ग) ।
४. अण्णो अलेवओत्ति (वृपा) ।
५. नत्थि किंचि कय नत्त (वृपा) ।
६. चोरित्ति (क) ।
७ तद्घृतिकीर्त्यादिकमिति गम्यते (वृ) ।
८ पावगेसु (ग, च) ।
९ भणति (क) ।
१०. मच्छरीया (ग) ।
११ वा (ग, च) ।
१२ दूषणै- इति गम्यम् (वृ) ।

अलियवयणस्स फलविवागपदं

१५ तस्स य अलियस्स फलविवाग अयाणमाणा वड्ढेंति महब्भय अविस्सामवेयणं दीहकाल वहुदुक्खसकड नरय-तिरिय-जोणि। तेण य अलिएण समणुवद्धा आइद्धा पुणब्भवधकारे भमति भीमे दुग्गतिवसहिमुवगया ॥

१६ तेय दीसतिह दुग्गगा दुरता परव्वसा अत्थभोगपरिवज्जिया असुहिता 'फुडियच्छवी बीभच्छा विवन्ना'[1] खरफरुस-विरत्त-ज्झाम-ज्झुसिरा निच्छाया लल्ल-विफल-वाया असक्कतमसक्कया अगधा अचेयणा दुभगा अकता काकस्सरा हीणभिण्णघोसा विहिंसा जडवहिरंधया[2] य मम्मणा अकत-विकय[3]-करणा णीया णीयजण-निसेविणो लोग-गरहणिज्जा भिच्चा असरिसजणस्स पेस्सा दुम्मेहा लोक-वेद-अज्झप्प-समयसुतिवज्जिया नरा धम्मवुद्धि-वियला ॥

१७ अलिएण य 'ते डज्झमाणा'[4] असतएणं अवमाणण-पट्ठिमंस-अहिक्खेव-पिसुणभेयण-गुरु-वधव-सयण-मित्तवक्खारणादियाइ अब्भक्खाणाइ वहुविहाइं पावेति अमणोरमाइ[5] हियय-मण-दूमकाइ जावज्जीव दुरुद्धराइ[6] अणिट्ठखरफरुसवयण-तज्जण-निब्भच्छण-दीणवदणविमणा कुभोयणा कुवाससा कुवसहीसु किलिस्सता नेव सुहं नेव निव्वुइ उवलभति अच्चत-विपुल-दुक्खसय-सपलित्ता[7] ॥

१८. एसो सो अलियवयणस्स फलविवाओ इहलोइओ पारलोइओ अप्पसुहो वहुदुक्खो महब्भओ वहुरयप्पगाढो दारुणो कक्कसो असाओ वाससहस्सेहिं मुच्चइ, न य अवेदयित्ता अत्थि हु मोक्खोत्ति—एवमाहसु नायकुलनंदणो महप्पा जिणो उ वीरवरनामधेज्जो, कहेसी य अलिय-वयणस्स फलविवाग ॥

निगमण-पद

१९ एय त वितियपि अलियवयण लहुसगलहु-चवल-भणिय भयंकर-दुहकर-अयसकर-वेरकरग अरतिरति-रागदोस-मणसकिलेस-वियरण अलिय-नियडि-सादि-जोगवहुल नीयजण-निसेविय निस्संस अप्पच्चयकारक परमसाहु-गरहणिज्ज परपीलाकारक परमकण्हलेससहिय दुग्गतिविनिवायवड्ढण भव-पुणब्भवकर चिरपरिचियमणुगय दुरत । वितिय अधम्मदार समत्त ।

—त्ति बेमि ॥

---

१ फुडियच्छविवीभच्छविवन्ना (ख,ग,घ,च,वृ)।

२. जडवहिरमूका (क, ख, ग, घ, च, वृपा)।

३ °विकत (ख, ग, च), अकृतानि विकृतानि च विरूपतयाकृतानि (वृपा)।

४ तेण य डज्झमाणा (ग)।

५. अणुवमाणि (वृ), अमणोरमाइ (वृपा)।

६ दुद्धराइ (क)।

७. सपउत्ता (ग)।

तइयं अज्झयणं

तइयं आसवदारं

उक्खेव-पदं

१ जंबू ! तइयं च अदिण्णादाणं[1]—हर-दह-मरण-भय-कलुस-तासण-परसंतिगऽ-भेज्जलोभमूलं कालविसम-संसियं अहोऽच्छिण्णतण्ह-पत्थाण-पत्थोइमइयं अकित्तिकरणं अणज्जं छिद्दमंतर[2]-विधुर-वसण-मग्गण-उस्सव-मत्त-प्पमत्त-पसुत्त-वंचणाखिवण[3]-घायणपर-अणिहुयपरिणामतक्करजणबहुमयं अकलुणं रायपुरिसरक्खियं सया साहुगरहणिज्जं पियजण-मित्तजण-भेदविप्पीतिकारकं रागदोसबहुलं पुणो य उप्पूर-समर-संगाम-डमर-कलि-कलह-वेहकरणं दुग्गति-विणिवायवड्ढणं भव-पुणब्भवकरं चिरपरिचितमणुगयं दुरंतं । तइयं अधम्मदारं ।।

अदिण्णादाणस्स तीसनाम-पदं

२ तस्स य णामाणि गोण्णाणि होंति तीसं, तंजहा—१ चोरिक्कं २ परहडं ३ अदत्तं ४ कूरिकडं[4] ५. परलाभो[5] ६ असंजमो ७ परधणम्मि गेही ८ लोलिक्का[6] ९ तक्करत्तणं ति य १०. अवहारो ११. हत्थलहुत्तणं[7] १२ पावकम्मकरणं १३ तेणिक्का[8] १४ हरण-विप्पणासो १५. आदियणा १६ लुंपणा धणाणं १७ अप्पच्चओ १८ ओवीलो १९ अक्खेवो २०. खेवो

---

१ अदिन्नदाण (क, ख, घ) ।

२. वाचनान्तरे त्विदमेव पठ्यते—छिद्रविषम-पापकं च (वृ) ।

३ वचणक्खिवण (ग, च) ।

४. कूरिकर (क) कूरिकय (ख), क्वचित्तु 'कुरुटुकक्रुत' दृश्यते (वृ) ।

५ परलोभो (क, ख, ग, घ, च) ।

६. लोलिक्क (ग) ।

७ हत्थलत्तण (वृ), हत्थलहुत्तण (वृपा) ।

८. तेणक्क (ग) ।

२१ विक्खेवो २२ कूडया २३. कुलमसी य २४ कखा २५ लालप्पण-पत्थणा य २६ 'आससणाय वसणं'[1] २७. इच्छा मुच्छा य २८. तण्हा गेही २९. नियडिकम्म ३० अपरच्छ त्ति।
अवि य तस्स एयाणि एवमादीणि नामधेज्जाणि होंति तीस अदिण्णादाणस्स[2] पाव-कलिकलुस-कम्मवहुलस्स अणेगाइं ॥

चोरिय-चोरपगार-पदं

३. त च पुण करेति चोरिय तक्करा परदव्वहरा छेया कयकरण-लद्धलक्खा साहसिया लहुस्सगा अतिमहिच्छ-लोभगत्था[3], दद्दर-ओवीलका य गेहिया अहिमरा अणभजका[4] भग्गसधिया रायदुट्ठकारी य विसयनिच्छूढा[5] लोकवज्झा, उद्दहक[6]-गामघाय-पुरघाय-पथघायग-आलीवग[7]-तित्थभेया लहुहत्थ-सपउत्ता जूईकरा[8] खडरक्ख-त्थीचोर-पुरिसचोर-सधिच्छेया य गथिभेदग-'परधणहरण-लोमावहार-अक्खेवी हडकारक'[9]-निम्मद्दग-गूढचोर-गोचोर-अस्सचोरग-दासिचोरा य एकचोरा ओकड्डक-संपदायक-उच्छिपक-सत्थघायक-बिलकोली-कारका य निग्गाह-विप्पलुपगा[10] वहुविहतेणिक्कहरणवुद्धी,[11] एते अण्णेय एवमादी परस्स दव्वाहि जे अविरया ॥

रण्णो परधणहरण-पदं

४. विपुलवल-परिग्गहा य बहवे रायाणो परधणम्मि गिद्धा[12] चउरग-समत्त[13] वलसमग्गा निच्छिय-वरजोह-जुद्धसद्धिय-'अहमहमिति' दप्पिएहिं सेन्नेहिं[14] सपरिवुडा पउम-सगड-सूइ-चक्क-सागर-गरुलवूहाइएहिं[15] अणिएहि उत्थरंता अभिभूय हरति परधणाइ ॥

धणत्थं जुद्ध-पदं

५. अवरे रणसीसलद्धलक्खा सगामम्मि अतिवयति सण्णद्धवद्धपरियर-उप्पीलिय-

---

१. आसासणाय वसण (क, च), वसण (वृ); आससणाय वसण (वृपा)।
२. अदिण्णदाणस्स (क, ग)।
३. °घत्था (क)।
४. अणभजक (ख ग, घ, वृ)।
५. °निच्छूढ (क, ग, घ)।
६ उद्दोहक (वृ), उद्दहक (वृपा)।
७ आदीवक (ख)।
८ जूइकरा (क, घ), जूयिकरा (ग, च)।
९ परघणलोमावहारअक्खेवहडकारगा (वृपा)।
१० विलुपका (ख, घ, च)।
११ वहुविहतहवहरणवुद्धी (वृपा)।
१२. गिद्धा सए दव्वे असतुट्ठा परविसए अभिहणति लुद्धा परधणस्स कज्जे (क,ख,ग,घ,च, वृपा)।
१३. विभत्त (वृ), समत्त (वृपा)।
१४. भिच्चेहिं (वृ), सेन्नेहिं (वृपा)।
१५. °वूहतिएहि (क, ग, घ, च), °वूहाहिएहिं (ख), वूहाचितेहिं (वृ)।

चिधपट्ट-गहियाउहपहरणा माढि-गुड-वम्मगुडिया[1] आविद्धजालिका कवय[2]-ककडइया[3] उरसिरमुह-वद्धकठतोण-माइयवरफलगरचित-पहकर-सरभस-खरचावकर-करछिय-सुनिसितसरवरिसचडकरक-मुयतघणचडवेग-धारानिवाय-मग्गे,[4] अणेगधणुमडलग्ग-सधित-उच्छलियसत्तिकणग-वामकरगहियखेडग-निम्मलनिक्किट्ठखग्ग - पहरतकोत - तोमर - चक्क-गया-परसु-मुसल-लगल-सूल-लउल[5] - भिडिमाल - सव्वल - पट्टिस - चम्मेट्ठ - दुघण-मोट्ठिय[6]-मोग्गर-वरफलिह-जतपत्थर - दुहण-तोण - कुवेणी- पीढकलिए, ईली - पहरण-मिलिमिलिमिलत-खिप्पत-विज्जुज्जलविरचितसमप्पहणतले, फुडपहरणे, महारण-सख-भेरि-वरतूर-पउरपडुपडहाहय-णिणाय-गंभीरणदित-पक्खुभियविपुलघोसे, हय-गय-रह-जोह-तुरिय-पसरित-रउद्धत-तमधकारबहुले, कातरनर-णयणहियय-वाउलकरे, विलुलिय - उक्कडवर - मउड - तिरीड - कुडलोडुदामाडोविय-पागडपडाग-उसियज्झय[7]-वेजयति-चामरचलत-छत्तधकारगभीरे, हयहेसिय-हत्थिगुलुगुलाइय-रहघणघणाइय - पाइक्कहरहराइय-अप्फोडियसीहनाय-छेलिय-विघुट्ठुक्कुट्ठ-कठकयसद्द-भीमगज्जिए, सयराहहसत-रुसत-कलकलरवे, आसूणियवयण-रुद्दभीम-दसणाधरोट्ठ-गाढदट्ठ-सप्पहारणुज्जयकरे, अमरिसवस-तिव्वरत्त-निद्दारितच्छे, वेरदिट्ठि-कुद्धचेट्ठिय-तिवलीकुडिलभिउडि-कयनिलाडे, वधपरिणय-नरसहस्स-विक्कम-वियभियवले, वग्गततुरग-रहपहाविय-समरभडा-वडिय-छेय-लाघव-पहारसाधित - समूसवियवाहुजुयल-मुक्कट्टहास-पुक्कत[8]-वोल-वहुले, फुरफलगावरणगहिय[9]-गयवरपत्थेत-दरियभडखल-परोप्परवलग्ग-जुद्धगव्विय - विउसितवरासिरोसतुरियअभिमुहपहरेत - छिन्नकरिकर-वियगित-करे[10], अवइद्ध-निसुद्धभिन्न-फालिय-पगलिय-रुहिरकय-भूमिकद्दम-चिलिच्चिल-पहे, कुच्छिदालिय - गलत-निभेलितत-फुरुफुरत[11]-विगल-मम्माहय-विकय[12]-गाढदिन्नपहारमुच्छित - रुलत - विब्भल[13] - विलावकलुणे हयजोह - भमततुरग-उद्दाममत्तकुजर-परिसकितजण - निवुक्कच्छिन्नधय - भग्गरहवर - नट्ठसिरकरि-

---

१. माढिवरवम्मगुडिया(वृ), माढिगुडवम्मगुडिया (वृपा)।
२. कवया (ख, च)।
३ कक्कडइया (क)।
४. °निवायमते (वृपा)।
५. लउड° (ख)।
६. मुट्ठि (क); मोट्ठि (ख)।
७. °धय (ख, च)।
८. फुक्कत (ख, घ, च)।
९ फनफलगा° (क, ग, घ), फडफलगा° (च)।
१० विभगितकरे (क, ख, ग, घ, च)।
११. फुरफरेंत (क, घ)।
१२. विहिय (ख, च)।
१३ वेब्भल (ख, ग, घ, च)।

कलेवराकिण्ण - पडिय - पहरणविकिण्णाभरणभूमिभागे[1], नच्चंतकवंधपउर-भयकरवायस-परिलेंतगिद्धमंडल-भमंतच्छायंधकारगंभीरे ।
वसु-वसुह-विकंपितव्व पच्चक्खपिउवणं परमरुद्द-बीहणगं दुप्पवेसतरगं अभिवडंति[2] संगामसंकडं परधण महंता ।।

लुटाक-पदं

६ अवरे पाइक्कचोरसंघा सेणावई चोरवंदपागड्ढिका[3] य अडवीदेसदुग्गवासी काल-हरित-रत्त-पीत-सुक्किल-अणेगसयचिंधपट्ट-बद्धा परविसए अभिहणंति लुद्धा धणस्स कज्जे ।।

सामुद्दियचोर-पदं

७. रयणागरसागरं उम्मीसहस्समालाकुलाकुलविओयपोतकलकलेंतकलियं, पायालसहस्स-वायवसवेगसलिलउद्धम्ममाण-दगरयरयंधकारं, वरफेणपउरधवल-पुलंपुलसमुट्ठियट्टहासं, मारुयविच्छुब्भमाणपाणिय-जलमालुप्पील-'हुलिय, अवि य'[4] समंतओ खुभिय-लुलिय-खोखुब्भमाण-पक्खलिय-चलियविपुलजलचक्कवाल-महानईवेगतुरियआपूरमाण - गंभीरविपुलआवत्तचवल-भममाणगुप्पमाणुच्छलंत-पच्चोणियत्तपाणिय - पधावियखरफरुसपयंडवाउलियसलिलफुट्टंतवीचिकल्लोल-संकुलं, महामगर-मच्छ-कच्छभ-ओहार गाह-तिमि-सुसुमार-सावय-समाहय-समुद्धायमाणक-पूरघोरपउरं, कायरजण-हिययकंपणं, घोरमारसंतं महब्भयं भयंकरं पतिभयं उत्तासणगं अणोरपारं आगासं चेव निरवलंबं, उप्पाइयपवण-धणियनोल्लिय-उवरुवरितरंगदरिय-अतिवेगवेग[5] चक्खुपहमुत्थरंतं, कत्थइ गंभीरविपुलगज्जिय-गुंजिय-निग्घाय-गरुयनिवतित-सुदीहनीहारि-दूरसुव्वतगंभीर-धुगुधुगेंतसद्दं, पडिपहरुंभत-जक्खरक्खसकुहंडपिसायरुसियतज्जायउवसग्ग-सहस्ससंकुलं[6], बहुप्पाइयभूयं[7], विरचितवलिहोमधूवउवचार-दिन्नरुधिरच्चणा-करणपयत - जोगपयय-चरियं, परियंतजुगंतकालकप्पोवमं, दुरंतं, महानई-नईवइ - महाभीमदरिसणिज्जं, दुरणुचरं[8] विसमप्पवेसं दुक्खुत्तारं दुरासयं लवणसलिलपुण्णं असिय-सिय-समूसियगेहिं दच्छतरेहिं[9] वाहणेहिं अइवइत्ता समुद्दमज्झे हणंति गंतूण जणस्स पोते ।।

---

१. °विणिकिण्णा° (क) ।
२. अभिवदंति (क), अभिवयंति (ग), अति-पतंति (वृ) ।
३ °पागट्टिका (ख, च) ।
४. हुलियक पि य (क,ग), हुलिक त पि य (ख, घ); हुलिय त पि य (च) ।
५ लुप्ततृतीयैकवचनदर्शनात् (वृ) ।
६ °पिसायपडिगज्जिय° (वृ), °पिसायरुसि-यतज्जाय° (वृपा) ।
७ उवद्दवाभिभूय (वृपा) ।
८ दुरणुच्चर (ग) ।
९ हत्थतरकेहिं (क, ख, ग, घ, च) ।

दारुणचोर-पदं

८ परदव्वहरणनिरणुकंपा[1] निरवयक्खा गामागर-नगर-खेड-कब्बड-मडंब-दोणमुह-पट्टणासम-णिगम-जणवते य धणसमिद्धे हणंति, थिरहियय-छिण्णलज्जा वंदिग्गह-गोग्गहे य गेण्हंति, दारुणमतो णिक्किवा णियं हणंति, छिदंति गेहसंधिं, निक्खित्ताणि य हरंति धणधन्नदव्वजायाणि जणवयकुलाणं णिग्घिणमती परस्स दव्वाहिं जे अविरया ॥

अदिण्णादाणस्स फलविवाग-पदं

९ तहेव केई अदिण्णादाणं[2] गवेसमाणा कालाकालेसु संचरंता चियका-पज्जलिय-सरस-दरदड्ढ-कड्ढिय-कलेवरे, रुहिरलित्तवयण-अक्खत[3]-खातियपीत[4]-डाइणि-भमंतभयकर-जंबुयखिखियंते[5], घूयकय-घोरसद्दे, वेयालुट्ठिय-निसुद्ध-कहकहंत-पहसित-वीहणक-निरभिरामे, अतिदुब्भिगंध[6]-वीभच्छदरिसणिज्जे, सुसाणे वण-सुन्नघर - लेण - अंतरावण - गिरिकंदर - विसमसावय - समाकुलासु वसहीसु किलिस्संता, सीतातव-सोसिय-सरीरा दड्ढच्छवी निरय-तिरिय-भवसंकड-दुक्खसंभार-वेयणिज्जाणि पावकम्माणि संचिणंता, दुल्लहभक्खन्नपाणभोयणा पिवासिया झुंझिया किलंता मंस-कुणिम-कंद-मूल-जंकिंचिकयाहारा उव्विग्गा उप्पुया[7] असरणा अडवीवासं उवेंति वालसत-संकणिज्जं ।

अयसकरा तक्करा भयंकरा 'कास हरामो' त्ति अज्ज दव्वं इति सामत्थं करेंति गुज्झं । बहुयस्स जणस्स कज्जकरणेसु विग्घकरा मत्त-पमत्त-पसुत्त[8]-वीसत्थ-छिद्दघाती वसणब्भुदएसु हरणबुद्धी विगव्व[9] रुहिरमहिया परिंति नरवतिमज्जाय-मतिक्कंता[10] सज्जणजणदुगुंछिया[11] सकम्मेहिं पावकम्मकारी असुभपरिणया य दुक्खभागी निच्चाविल[12]-दुहमनिव्वुइमणा इहलोके चेव किलिस्संता परदव्वहरा नरा वसणसयसमावण्णा ॥

१० तहेव केइ[13] परस्स दव्वं गवेसमाणा गहिता य हया य बद्धरुद्धा य तरितं[14] अति-

---

१ परदव्वहरा नरा निरणुकंपा (क, ख, ग, घ, च, वृपा) ।
२. अदिण्णदाणं (क, ग, घं, च) ।
३. अदर (वृपा) ।
४ खतिय° (क, ख, घ) ।
५ °खिक्खियंते (क, ख, ग, घ, च) ।
६. दुरभिगंध (वृ) ।
७ अफुया (ख) ।
८ पासुत्त (क, च) ।
९. वगव्व (क) ।
१० °मतिक्कमंता (क) ।
११. °दुगंछिया (ख, घ); °दुगछिया (ग) ।
१२. निच्चाइल (क, ग, घ), निच्चाउल (ख, वृपा) ।
१३ केयि (क, ख, घ) ।
१४. तुरियं (ग), तुरितं (च) ।

घाडिया पुरवरं समप्पिया चोरग्गाह-चारभड-चाडुकराण तेहि[1] य कप्पडप्पहार-निद्दय-आरक्खिय-खर-फरुस-वयण-तज्जण-गलत्थल्ल-उत्थल्लणाहिं विमणा चारगवसहिं पवेसिया निरयवसहिसरिस ॥

११. तत्थवि गोम्मिकप्पहार-दूमण-निब्भच्छण-कडुयवयण-'भेसणग-भयाभिभूया'[2] अक्खित्त-नियसणा मलिणदंडिखंडवसणा उक्कोडा-लंच-पास-मग्गण-परायणेहिं गोम्मिकभडेहिं विविहेहिं बंधणेहिं, किं ते ? - हडि-नियड[3]-बालरज्जुय-कुदंडग-वरत्त[4]-लोहसंकल-हत्थंदुय-वज्झपट्ट-दामक-णिक्कोडणेहिं, अण्णेहि य एवमादिएहिं गोम्मिक[5]-भंडोवकरणेहिं दुक्खसमुदीरणेहिं संकोडण-मोडणाहि[6] वज्झंति मंदपुण्णा ॥

१२ सपुड-कवाड-लोहपंजर-भूमिघर-निरोह-कूव-चारग-खीलग[7] - जुय[8]-चक्क-वितत-बंधण-खंभालण-उद्धचलणबंधण-विहम्मणाहि य विहेडयंता, अवकोडकगाढ-उरसिरबद्ध-उद्धपूरित[9]-फुरंतउरकडग[10] मोडणामेडणाहिं[11] बद्धा य नीससंता, सीसावेढ - ऊरुयाल[12]-चप्पडगसंधिबंधण[13] - तत्तसलागसूइयाकोडणाणि तच्छण-विमाणणाणि य खार-कडुय-तित्त-नावण-जायण-कारणसयाणि बहुयाणि पाविया, उरखोडीदिन्नगाढपेल्लण-अट्ठिकसभग्ग-सपंसुलिगा[14], गल-कालकलोहदंड-उर-उदर-वत्थि-पट्ठि-परिपीलिता, मच्छंत[15]-हियय-संचुण्णियंगमंगा ॥

१३. आणत्तीकिंकरेहिं केति अविराहिय-वेरिएहिं जमपुरिस-सन्निहेहिं पहया ते तत्थ मंदपुण्णा, चडवेला-वज्झपट्ट-पाराइ-छिव-कस-लत-वरत्त-वेत्त-प्पहारसयतालियंगमंगा, किवणा[16] लंबतचम्म-वण-वेयण-विमुहियमणा, घणकोट्टिम-नियल[17]-जुयलसंकोडिय-मोडिया य कीरंति निरुच्चारा, एया अण्णा य एवमादीओ वेयणाओ पावा 'पावेंति अदंतिदिया'[18] वसट्टा बहुमोहमोहिया परधणम्मि लुद्धा

---

१. तेहिं (क) ।
२. भेमणगाभिभूया (वृ); भेसणगभयाभिभूता (वृपा) ।
३. नियल (ख, घ, च) ।
४. वरत्ता (ख) ।
५. गोमिक (क) ।
६. मोडणेहिं (ख, घ, च) ।
७. कीलग (च) ।
८. जूय (ग) ।
९. उद्धपुरीय (क, वृपा) ।
१०. इह प्रथमाबहुवचनलोपो दृश्यस्ततश्च मोटनाम्रेडनाभ्यामित्येतदुत्तरत्र योज्यते (वृ) ।
११. मोडणाहिं (ख, ग, घ, च) ।
१२. गुरुयाल (क); ऊरुयावल (वृपा) ।
१३. चप्पडसंधि० (ख, घ, च) ।
१४. सपंसुलिग्गा (क) ।
१५. इह थकारस्य छकारादेशो छान्दसत्वात् (वृ) ।
१६. किविणा (क) ।
१७ नियड (ख) ।
१८ पावंतदंतिदिया (ख, घ) ।

फासिंदियविसय-तिव्वगिद्धा, इत्थिगय-रूव-सद्द-रस-गध-इट्ठ-रति-महितभोग-तण्हाइया य धणतोसगा गहिया य जे नरगणा ॥

१४ पुणरवि ते कम्मदुव्वियड्ढा उवणीया रायकिंकराण तेंसि वधसत्थगपाढयाण विलउलीकारकाण लचसयगेण्हगाण कूड-कवड-माया-नियडि-आयरण-पणिहि-वचण-विसारयाण वहुविहअलियसयजपकाण परलोकपरम्मुहाण निरयगति-गामियाण ॥

१५ तेहि य आणत्त-जीयदडा तुरिय[1] उग्घाडिया पुरवरे सिघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु वेत्त-दड-लउड-कट्ठ-लेट्ठु-पत्थर-पणालि-पणोल्लि-मुट्ठि-लया-पाद-पण्हि-जाणु-कोप्पर-पहारसभग्ग-महियगत्ता[2] अट्ठारस-कम्मकारणा[3] जाइयगमगा कलुणा सुक्कोट्ठकठगलकतालुजिब्भा जायता पाणीय विगयजीवियासा तण्हादिता[4] वरागा तपि य ण लभति वज्झपुरिसेहि घाडियता ॥

१६ तत्थ य खरफरुसपडहघट्टित-कूडग्गह-गाढरुट्ठनिसट्ठपरामट्ठा वज्झकरकुडिजुय-नियत्था, सुरत्तकणवीर-गहिय-विमुकुल[5]-कठेगुणवज्झदूत-आविद्ध-मल्लदामा मरणभयुप्पण्णसेयमायतणेहुत्तुपियकिलिन्नगत्ता चुण्णगुडियसरीरा रयरेणुभरिय-केसा कुसुभगोक्खिण्णमुद्धया[6] छिण्णजीवियासा घुण्णता वज्झपाणपीता[7] तिल-तिल चेव छिज्जमाणा सरीरविक्कित्त[8]-लोहिओलित्त-कागणिमसाणि खावियता पावा खरकरसएहि तालिज्जमाणदेहा वातिकनरनारिसपरिवुडा पेच्छिज्जता य नागरजणेण, वज्झनेवत्थिया पणेज्जति नयरमज्झेण, किवणकलुणा अत्ताणा असरणा अणाहा अवधवा वधुविप्पहीणा विपेक्खता दिसोदिसिं, मरणभयुव्विग्गा आघायण-पडिदुवार-सपाविया अधण्णा सूलग्ग-विलग्ग-भिण्णदेहा ॥

---

१. तरिय (क, ग, घ)।

२ मथित ०(क, ख)।

३. चोर. चोरापको मन्त्री,
भेदज्ञ काणकक्रयी।
अन्नद स्थानदश्चैव,
चोर सप्तविध स्मृत ॥१॥
भलन कुशल तर्जा,
राजभागोऽवलोकनम्।
अमार्गदर्शन शय्या,
पदभङ्गस्तथैव च ॥२॥
विश्राम पादपतनं,
आसन गोपन तथा।
खण्डस्य खादन चैव,
तथाऽन्यन्माहराजिकम् ॥३॥
पद्याऽग्न्युदकरज्जूना,
प्रदान ज्ञानपूर्वकम्।
एता प्रसूतयो ज्ञेया,
अष्टादश मनीषिभि ॥४॥ (वृ)

४. तण्हातिता (क, च)।

५, विमुक्कल (ख, च)।

६ कुसुभगोखिन्न ० (क), कुसुमगोखण्ण-मुद्धया (ख), कुसुभगोविकन्न ० (ख)।

७. वज्झयाणभीया (क, वृपा)।

८. सरीरविक्किंत (ख, ग), मरीरविक्कत (घ, च)।

१७ ते य तत्थ कीरंति परिकप्पियंगमंगा, उल्लंबिज्जंति रुक्खसालेहिं केई कलुणाइं विलवमाणा, अवरे चउरंग-धणियबद्धा पव्वयकडगा पमुच्चते[1] दूरपात-बहुविसम-पत्थरसहा, अण्णे य गयचलण-मलण-निमद्दिया कीरंति पावकारी, अट्ठारस-खंडिया य कीरंति मुंडपरसूहिं, केई उक्कत्तकण्णोट्ठनासा[2] उप्पाडियनयणदसण-वसणा जिब्भछिय-छिण्णकण्णसिरा पणिज्जते[3], छिज्जते य असिणा, निव्विसया छिण्णहत्थपाया य पमुच्चते, जावज्जीवबंधणा[4] य कीरंति केइ परदव्वहरणलुद्धा कारग्गलनियलजुयलरुद्धा चारगाए—हतसारा सयणविप्पमुक्का मित्तजण-निरक्कया[5] निरासा बहुजणधिक्कारसद्दलज्जाविता अलज्जा[6] अणुबद्धखुहा-परद्धा[7] सीउण्हतण्हवेयणदुहट्टघट्टिय[8]-विवण्णमुह-विच्छवीया विहलमइलदुब्बला किलंता कासंता वाहिया य आमाभिभूयगत्ता परूढनहकेसमसुरोमा छगमुत्तम्मि-णियगम्मि खुत्ता तत्थेव मया अकामका बंधिऊण पादेसु कड्ढिया खाइयाए छूढा ॥

१८ तत्थ य वग-सुणग-सियाल-कोल-मज्जारवंद-संदसगतुंड[9]-पक्खिगणविविहमुहसय-विलुत्तगत्ता कय-विहंगा ॥

१९ केइ किमिणा य कुथितदेहा अणिट्ठवयणेहिं सप्पमाणा—सुट्ठुकयं जं मउत्ति पावो, तुट्ठेण जणेण हम्ममाणा[10] लज्जावणका य होंति सयणस्सवि दीहकालं मया संता ॥

२०. पुणो परलोगसमावण्णा नरगे गच्छंति निरभिरामे अंगारपलित्तककप्प-अच्चत्थ-सीतवेदण-अस्साओदिण्ण-सततदुक्खसयसमभिद्दुते ॥

२१. ततोवि उव्वट्टिया समाणा पुणोवि पवज्जंति तिरियजोणिं । तहिंपि निरयोवमं[11] अणुभवंति[12] वेयणं ते ॥

२२. अणंतकालेण जति नाम कहिंचि मणुयभावं लभंति[13] णेगेहिं णिरयगतिगमण-तिरियभव-सयसहस्स-परियट्टएहिं[14]। तत्थवि य भवंतऽणारिया नीचकुलसमुप्पण्णा आरियजणेवि लोगवज्झा तिरिक्खभूता य अकुसला कामभोगतिसिया जहिं

---

१. पमुच्चंति (ख, घ) ।
२. उक्खित्त° (ख), उक्कित्त° (घ, च) ।
३. प्रणीयन्ते आघातस्थानमिति गम्यते (वृ) ।
४. जावज्जीय° (क) ।
५. °निरिक्कया (क, ग) ।
६. अणज्जा (क) ।
७. °पारद्ध (ख, ग, वृ); °परद्ध (घ, वृपा) ।
८. °तण्हा° (क) ।
९. सडासतुंड (क, घ, च) ।
१०. भण्णमाणा (क) ।
११. निरओवमं (ख) ।
१२. अणुहवंति (क, घ) ।
१३. लहंति (ख, घ, च) ।
१४. परियट्टेहिं (ग) ।

निवंधति निरयवत्तिणि[1], भवप्पवचकरण-पणोल्लि[2], पुणोवि 'ससार-णेमे'[3] धम्मसुति-विवज्जिया अणज्जा कूरा मिच्छत्तसुति-पवण्णा य होंति एगतदडरुइणो, वेढेता कोसिकारकीडो व्व अप्पग अट्ठकम्मततु-घणवधणेण ॥

२३. एव नरग-तिरिय-नर-अमर-गमणपेरतचक्कवाल जम्मणजरमरणकरण[4]-गभीरदुक्ख-पखुभियपउरसलिल सजोगवियोगवीची[5]-चितापसगपसरिय-वहबध-महल्लविपुलकल्लोल-कलुणविलवित-लोभकलकलितबोलबहुल अवमाणणफेण-तिव्वखिसण-पुलपुलप्पभूयरोगवेयण-पराभवविणिवात-फरुसधरिसणसमावडिय-कढिणकम्मपत्थर - तरगरगत - निच्चमच्चुभय - तोयपट्ठ कसायपायाल-सकुल भवसयसहस्सजलसचय अणत उव्वेयणय अणोरपार महब्भय भयकर पइभय अपरिमियमहिच्छ-कलुसमतिवाउवेगउद्धम्ममाण-आसापिवासपायाल-कामरति-रागदोसवधण-वहुविहसकप्पविपुलदगरयरयधकार, मोहमहावत्तभोगभममाण-गुप्पमाणुच्छलतबहुगब्भवास - पच्चोणियत्तपाणिय - पधावितवसणसमावण्ण[6]-रुण्णचडमारुयसमाहयाऽमणुण्णवीचीवाकुलित - भगफुट्टतऽनिट्ठकल्लोलसकुलजल, पमायवहुचडदुट्ठसावयसमाहय[7]-उट्ठायमाणगपूरघोरविद्धसणत्थवहुल, अण्णाण-भमतमच्छपरिहत्थ - अनिहुतिंदियमहामगरतुरियचरियखोखुब्भमाण - सताव-निच्चय - चलतचवलचचल-अत्ताणाऽसरणपुव्वकयकम्मसचयोदिण्णवज्जवेइज्ज-माण[8]-दुहसयविपाकघुण्णतजलसमूह, इड्ढिरससायगारवोहारगहियकम्मपडिवद्ध-सत्त[9] - कड्ढिज्जमाणनिरयतलहुत्तसण्णविसण्णवहुल, अरइरइभयविसायसोग-मिच्छत्तसेलसकड, अणातिसताणकम्मवंधणकिलेसचिक्खल्लसुदुत्तार, अमरनर-तिरियनिरयगतिगमणकुडिलपरियत्तविपुलवेल, हिसालय - अदत्तादाण[10]- मेहुण-परिग्गहारभ-करणकारावणाणुमोदण-अट्ठविहअणिट्ठकम्मपिडित-गुरुभारोवक्कत-दुग्गजलोघदूरणिवोलिज्जमाण[11]-उम्मग्गनिमग्गदुल्लभतल, सारीरमणोमयाणि

---

१ °वत्तणि (ख, ग, घ, च) ।

२. पणोल्लि—प्रणोदीनि, अत्र द्वितीयावहुवचन-लोपो दृश्य. (वृ) ।

३. ससारणेममूले (क, ख, घ); ससारावत्त-णेममूले (ग, च). वृत्तिकृता 'नेम त्ति मूल' इति व्याख्यातम् । अनेन ज्ञायते मूलमिति पद व्याख्याङ्गमस्ति, न तु मूलपाठाङ्गम् । उत्तरकालीनादर्शेषु अस्य पदस्य मूलपाठे समावेशो जातः । 'इह च मूलाइति वाच्ये मूल इत्युक्त प्राकृतत्वेन लिङ्गव्यत्ययादिति'—वृत्तिकृता विवरणमिद व्याख्यागतमूलपदमाश्रित्य कृतम् ।

४. जम्मजरा° (ग, च) ।

५ वीई (क), वीति (ख, घ) ।

६ पवाहिय° (वृपा) ।

७. पव्वात° (क), पम्मात° (ख, ग, घ) ।

८. °वेज्जमाण (ख, वृ) ।

९. °गारवापहार° (ख) ।

१०. अदत्तदाण (क, ख, ग, घ) ।

११. °पोलिज्जमाण (क, ग) ।

दुक्खाणि उप्पियता, सातस्सायपरितावणमय उव्वुड्डुनिवुड्डुय करेता, चउरत-महतमणवयग्ग रुद्द ससारसागरं अट्ठियअणालवणपतिठाणमप्पमेय, चुलसीति-जोणिसयसहस्सगुविल, अणालोकमधकार, अणतकाल निच्चं उत्तत्थ-सुण्ण-भय-सण्णसपउत्ता वसति उव्विग्गवासवसहिं ।।

२४ जहिं-जहि आउय[1] निबधति पावकारी वधवजण-सयण-मित्तपरिवज्जिया अणिट्ठा भवतऽणादेज्ज - दुव्विणीया कुट्ठाणासण - कुसेज्ज-कुभोयणा असुइणो कुसघयण-कुप्पमाण-कुसठिया कुरूवा बहुकोह-माण-माया-लोभा बहुमोहा धम्मसण्ण - सम्मत्त - परिब्भट्ठा[2] दारिद्दोवद्दवाभिभूया, निच्च परकम्मकारिणो जीवणत्थरहिया किविणा[3] परपिंडतक्कका दुक्खलद्धाहारा अरस-विरस-तुच्छ-कयकुच्छिपूरा, परस्स पेच्छता रिद्धिसक्कार-भोयणविसेस-समुदयविहि निंदंता अप्पक कयत च, परिवयता इह य[4] पुरेकडाइ कम्माइ पावगाइं, विमणा सोएण डज्झमाणा परिभूया होति सत्तपरिवज्जिया य, छोभा सिप्प-कला-समयसत्थ-परिवज्जिया जहाजायपसुभूया अचियत्ता णिच्चनीयकम्मोवजीविणो लोयकुच्छणिज्जा मोहमणोरह-निरासबहुला आसापासपडिबद्धपाणा अत्थो-पायाण-कामसोक्खे य लोयसारे होति अपच्चतगा य सुट्ठुवि य उज्जमता, तद्दिवसुज्जुत्त-कम्मकयदुक्ख-सठविय-सित्थपिंड-संचयपरा खीणदव्वसारा, निच्च अधुवधण-धण्ण-कोस-परिभोग-विवज्जिया, रहिय-काम-भोग-परिभोग-सव्व-सोक्खा परसिरिभोगोवभोगनिस्साण[5]-मग्गणपरायणा वरागा अकामिकाए विणेति दुक्ख, णेव सुह णेव निव्वुतिं उवलभति, अच्चतविपुलदुक्खसय-सपलित्ता परस्स दव्वेहिं जे अविरया ।।

२५ एसो सो अदिण्णादाणस्स फलविवागो इहलोइओ पारलोइओ अप्पसुहो बहुदुक्खो महब्भओ[7] बहुरयप्पगाढो दारुणो कक्कसो असाओ वाससहस्सेहिं मुच्चति न य अवेयइत्ता अत्थि हु मोक्खोत्ति—एवमाहसु णायकुलणदणो महप्पा जिणो उ वीरवरनामधेज्जो[8], कहेसी य अदिण्णादाणस्स[9] फलविवागं ।।

निगमण-पद

२६. एय त ततियपि अदिण्णादाण[10] हर-दह-मरण-भय-कलुस-तासण-परसतिकऽभेज्ज-

---

१. आउग (क, ख, ग) ।
२. पमट्ठा (ख, ग, घ) ।
३. किवणा (ख, ग, घ) ।
४ × (ख, घ, च) ।
५. पावकारिण· (वृपा)
६. °निसण्ण (ख, ग) ।
७ महब्भयो (ख, च) ।
८. वरवीर° (ख, घ, च) ।
९. अदिण्णदाणस्स (क, ख, ग, घ) ।
१०. अदिण्णदाणं (क, ख, ग, घ, च) ।

लोभमूल[1] °[2]काल - विसम - ससिय अहोऽच्छिण्णतण्ह - पत्थाण-पत्थोइमइयं अकित्तिकरण अणज्ज छिद्दमतर-विधुर-वसण-मग्गण-उस्सव-मत्त-प्पमत्त-पसुत्त-वचणाखिवण - घायणपर - अणिहुयपरिणाम - तक्करजणबहुमय अकलुण रायपुरिसरक्खिय सया साहुगरहणिज्ज पियजण-मित्तजण-भेदविप्पीतिकारक रागदोसबहुल पुणो य उप्पूर-समर-सगाम-डमर-कलि-कलह-वेहकरण दुग्गति-विणिवायवड्ढण भव-पुण०भवकर° चिरपरिगतमणुगत दुरत। ततिय अहम्मदार समत्त।

—त्ति बेमि ॥

---

१ °भिज्जणा° (क, ग), °ऽभिज्ज° (ख, घ, च)। २. स० पा०—एव जाव चिरपरिगत°।

चउत्थं अज्झयणं

चउत्थं आसवदारं

उक्खेव-पद

१ जंबू ! अबंभं च चउत्थं—सदेवमणुयासुरस्स लोयस्स पत्थणिज्जं, पंक-पणग[1]-पासजालभूयं, थी-पुरिस-नपुंसगवेदचिंधं तव-संजम-बंभचेर-विग्घं भेदायतण[2]-बहुपमादमूलं कायरकापुरिससेवियं सुयणजणवज्जणिज्जं उड्ढं नरग-तिरिय-तिलोक्कपइट्ठाणं, जरा-मरण-रोग-सोगबहुलं वध-बंध-विघाय-दुव्विघायं दंसण-चरित्तमोहस्स हेउभूयं चिरपरिचियमणुगयं[3] दुरंतं। चउत्थं अधम्मदारं ॥

अबंभस्स तीसनाम-पदं

२ तस्स य णामाणि गोण्णाणि इमाणि होंति तीसं, तं जहा—१ अबंभं २ मेहुणं ३. चरंतं[4] ४ संसग्गि ५. सेवणाधिकारो ६. संकप्पो ७ बाहणा[5] पदाणं ८ दप्पो ९ मोहो १० मणसंखोभो ११ अणिग्गहो १२ वुग्गहो[6] १३. विघाओ १४ विभंगो १५. विब्भमो १६. अधम्मो १७ असीलया १८ गामधम्मतत्ती १९. रती २० रागो[7] २१ कामभोग-मारो २२ वेरं २३ रहस्सं २४ गुज्झं २५. बहुमाणो २६ बंभचेर-विग्घो २७. वावत्ति २८. विराहणा २९. पसंगो ३० कामगुणो त्ति।

अवि य तस्स एयाणि एवमादीणि नामधेज्जाणि होंति तीसं ॥

---

१. पणय (ग)।

२. भेदायण (ख, ग, घ, च)।

३. चिरपरिगय० (क, ख, ग, घ, च, वृपा)।

४ चउत्थ (वृ), चरंत (वृपा)।

५. पाहणा (क)।

६. विग्गहो (ख, च)।

७ रागचिंता (क, ख, ग, घ, च वृपा)।

सुरगणस्स अबंभ-पदं

३ तं च पुण निसेवति सुरगणा सअच्छरा मोह-मोहिय-मती, असुर-भुयग[1]-गरुल-विज्जु-जलण-दीव-उदहि-दिस[2]-पवण-थणिया । अणवण्णिय-पणवण्णिय-इसि-वादिय-भूयवादियकंदिय-महाकंदिय-कूहंड-पतगदेवा[3], पिसाय-भूय-जक्ख-रक्खस-किन्नर-किंपुरिस - महोरग - गंधव्व - तिरिय- जोइस-विमाणवासि-मणुयगणा, जलयर-थलयर-खहयरा य मोहपडिबद्धचित्ता अवितण्हा कामभोगतिसिया, तण्हाए वलवईए महईए समभिभूया गढिया य अतिमुच्छिया य, अबंभे ओसण्णा, तामसेण भावेण अणुम्मुक्का[4], दंसण-चरित्तमोहस्स पंजरं पिव करेंति 'अण्णोण्णं सेवमाणा ।'[5] ।।

चक्कवट्टिस्स अबंभ-पद

४ भुज्जो असुर-सुर-तिरिय-मणुय-भोगरति-विहार-संपउत्ता य चक्कवट्टी सुरनरवतिसक्कया सुरवरव्व देवलोए भरह[6]-णग-णगर-णियम-जणवय-पुरवर-दोणमुह-खेड-कव्वड-मडंव-संवाह-पट्टण-सहस्समंडियं थिमिय-मेयणियं एगच्छत्तं ससागरं भुंजिऊण वसुहं नरसीहा नरवई नरिंदा नरवसभा मरुय-वसभकप्पा, अब्भहियं रायतेय-लच्छीए दिप्पमाणा सोमा रायवंस-तिलगा ।

रवि-ससि-संख-वरचक्क - सोत्थिय - पडाग-जव-मच्छ-कुम्म-रहवर-भग-भवण-विमाण-तुरय[7]-तोरण-गोपुर-मणि-रयण-नंदियावत्त-मुसल-णंगल-सुरइयवरकप्प-रुक्ख-मिगवति-भद्दासण-सुरुचि[8] - थूभ-वरमउड-सरिय - कुंडल-कुंजर-वरवसभ-दीव-मंदिर-गरुल-द्धय-इंदकेउ - दप्पण - अट्ठावय - चाव-बाण-नक्खत्त-मेह-मेहल-वीणा-जुग-छत्त-दाम-दामिणि-कमंडलु-कमल-घंटा-वरपोत-सुइ-सागर-कुमुदागार-मगर-हार-गागर-नेउर-णग-णगर-वइर- किन्नर - मयूर - वररायहंस - सारस-चकोर-चक्कवागमिहुण-चामर - खेडग -पव्वीसग-विपंचि-वरतालियंट-सिरिया-भिसेय-मेइणि-'खग्ग-अंकुस'[9]-विमलकलस - भिंगार-वद्धमाणग-पसत्थ-उत्तमविभ-त्तवर-पुरिसलक्खणधरा ।

वत्तीसं रायवरसहस्साणुजायमग्गा[10] चउसट्ठिसहस्सपवरजुवतीण णयणकंता

---

१. भुयग (क) ।
२ दिसि (ख, च) ।
३ पतग० (क, ख, ग, घ, च) ।
४. अणुमुक्का (क, ख, ग, घ, च); आदर्शेषु एतत् पदं लभ्यते, किन्तु नैतत् शुद्धमस्ति । उन्मुक्तपदस्य प्राकृतरूपं 'उम्मुक्क' इति जायते । न उम्मुक्का=अणुम्मुक्का ।
५. अण्णमण्ण० (च), अण्णोण्णस्स सेवणया (वृ), अण्णोण्णं सेवमाणा (वृपा) ।
६ भरध (क, ग) ।
७ तुरत (क), तुरग (ख, घ, च) ।
८. सुरुवि (क, घ, च)
९. खग्गंकुस (क, ख, ग, घ, च) ।
१०. वरराय० (क, ग) ।

रत्ताभा पउमपम्ह - कोरंटगदाम - चंपक-सुतवितवरकणकनिहसवण्णा सुजाय-सव्वंगसुंदरंगा महग्घ-वरपट्टणुग्गय - विचित्तराग-एणि - पेणि[1]-णिम्मिय[2]-दुगुल्ल-वरचीणपट्ट - कोसेज्ज-सोणीसुत्तक - विभूसियंगा वरसुरभिगंध - वरचुण्णवास-वरकुसुमभरिय-सिरया[3] कप्पिय-छेयायरियसुकय-रइतमाल-कडगंगय[4]-तुडिय-पवरभूसण-पिणद्धदेहा एकावलिकंठसुरइयवच्छा पालंबपलंबमाणसुकयपड-उत्तरिज्जमुद्दियापिंगलंगुलिया उज्जल-नेवत्थ-रइय-चिल्लग-विरायमाणा तेएण दिवाकरोव्व दित्ता सारय[5]-नवथणिय-महुर-गभीर-निद्धघोसा उप्पण्णसमत्तरयण-चक्करयणप्पहाणा नवनिहिवइणो समिद्धकोसा चाउरंता चाउराहि सेणाहिं समणुजाइज्जमाणमग्गा तुरगवती गयवती रहवती नरवती विपुलकुलविस्सु-यजसा सारयससिसकल-सोमवयणा सूरा तेलोक्क-निग्गय-पभावलद्धसद्दा समत्तभरहाहिवा नरिंदा, ससेलवण-काणणं च हिमवंत-सागरंतं धीरा भुत्तूण भरहवासं, जियसत्तू पवररायसीहा पुव्वकडतवप्पभावा निविट्ठ-संचियसुहा[6] अणेगवाससयमायुवंतो भज्जाहि य जणवयप्पहाणाहिं लालियंता अतुल-सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधे य अणुभवित्ता तेवि उवणमंति मरणधम्मं, 'अवितित्ता कामाणं'[7] ।।

बलदेव-वासुदेवस्स अबंभ-पदं

५ भुज्जो[8] बलदेव-वासुदेवा य पवरपुरिसा महाबलपरक्कमा महाधणुवियड्ढका महासत्तसागरा दुद्धरा धणुद्धरा नरवसभा रामकेसवा भायरो सपरिसा वसुदेव-समुद्दविजयमादियदसाराणं, पज्जुण्ण - पयिव[9] - संब-अनिरुद्ध - निसह - उम्मुय-सारण-गय-सुमुह-दुम्मुहादीणं जायवाणं अद्धुट्ठाणावि कुमारकोडीणं हिययदयिया, देवीए रोहिणीए देवीए देवकीए य आणंदहिययभावनंदणकरा सोलस रायवरसहस्साणुजातमग्गा सोलसदेवीसहस्स-वरणयण-हिययदयिया णाणामणि-कणग-रयण-मोत्तिय-पवाल-धण-धन्नसंचय - रिद्धि - समिद्धकोसा, हय-गय-रह-सहस्ससामी गामागर - णगर-खेड - कव्वड - मडंब - दोणमुह-पट्टणासम-संवाह-सहस्सथिमियनिव्वुयपमुदितजण - विविहसस्सनिप्फज्जमाणमेइणि[10] - सर-सरिय-तलाग-सेल-काणण-आरामुज्जाण-मणाभिरामपरिमंडियस्स दाहिणड्ढवेयड्ढगिरि-विभत्तस्स लवणजलहिपरिगयस्स छव्विहकालगुणकमजुत्तस्स[11] अद्धभरहस्स

---

१. पएणि (क, ख, घ, च) ।
२. खोमिय (वृपा)
३ सिरिया (क), सिरसा (च) ।
४ कुंडलकडगंगय (क), कुंडलंगय (वृपा) ।
५ सागर (वृपा) ।
६. संचय° (क, ख, घ) ।
७. अतित्ता कामभोगाणं (क) ।
८ भुज्जो भुज्जो (ग) ।
९ पयव (ख, घ); पइव (ग) ।
१० °सास° (क, ग, घ) ।
११ °कामजुत्तस्स (ख, ग, घ, च) ।

सामिका, धीरकित्तिपुरिसा ओहबला अइबला अनिहया अपराजियसत्तुमद्दणा रिपुसहस्स-माणमहणा साणुक्कोसा अमच्छरी अचवला अचडा मितमजुलपलावा 'हसिय-गभीर-महुरभणिया'[1] अब्भुवगयवच्छला सरण्णा लक्खण-वजण-गुणोववेया माणुम्माण-पमाण-पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वगसुदरगा ससि-सोमागार-कतपियदसणा अमरिसणा[2] पयडडडप्पयार-गभीर-दरिसणिज्जा तालद्धय-उव्विद्धगरुलकेऊ वलवग-गज्जत-दरित - दप्पित - मुट्ठियचाणूरमूरगा रिट्ठवसभघाती-केसरिमुह-विप्फाडगा[3] दरितनागदप्पमहणा जमलज्जुणभजगा महासउणि-पूतणरिऊ कसमउडमोडगा जरासध-माणमहणा।

तेहि य 'अविरल-सम-सहिय-चदमडलसमप्पभेहिं सूरमिरीयिकवय[4] विणिम्मुयतेहिं'[5] सपतिदडेहिं आयवत्तेहिं धरिज्जतेहिं विरायता।

ताहि य पवरगिरिगुहरविहरणसमुद्धियाहि[6] निरुवहयचमर-पच्छिमसरीर-सजाताहि अमइल[7] - सियकमल - विमुकुलुज्जलित-रयतगिरिसिहर-विमलससि-किरणसरिस-कलहोय-निम्मलाहि पवणाहयचवलचलिय-'सललिय-पणच्चिय'[8]-वीइपसरिय[9]-खीरोदगपवरसागरुप्पूरचचलाहि माणससरपसर-परिचियावास-विसदवेसाहि कणगगिरिसिहर-ससिताहि ओवायुप्पाय चवलजयिणसिग्घवेगाहि हसवधूयाहि चेव कलिया[10], नाणामणिकणग-महरिहतवणिज्जुज्जलविचित्त-डडाहि सललियाहि नरवतिसिरिसमुदयप्पकासणकरीहिं[11] वरपट्टणुग्गयाहि समिद्धरायकुल-सेवियाहि कालागुरुपवर - कुदुरुक्क - तुरुक्क - धूववसवास-

---

१ महुरपरिपुण्णसच्चवयणा (वृपा)।

२. अमसणा (क, ग, च)।

३. केसिमुह° (वृपा)।

४ °मरीयि° (ख), सुचिमरीयि (वृपा)।

५. वाचनान्तरे पुनरातपत्रवर्णक एव दृश्यते—अब्भपडलपिंगलुज्जलेहिं अविरल-सम-सहिय-चदमडलसमप्पभेहिं मगन्नसयभत्ति-च्छेय-चित्तियखिखिणि - मणि - हेमजाल - विरइय-परिगय-पेरत-कणय-घटिय-पयलिय-खिणिखि-णित-सुमहुर-सुइसुह-सद्दालसोहिएहिं सपयरग-मुत्तदाम-लवतभूसणेहिं नरिंद-वामप्पमाण-रुदपरिमडलेहिं सीयायव-वायवरिस-विस-दोसणासएहिं तमरय-मलबहुल-पडल-धाडण-पहाकरेहिं मुद्धसुहसिवच्छायसमणुबद्धेहिं वेरु-लियदडसज्जिएहिं वयरामय-वत्थि णिउण-जोइय - अट्ठसहस्सवरकचणसलागनिम्मिएहिं सुविमलरयय सुट्ठुच्छइएहिं णिउणोविय-मिसिमिसिंत-मणि-रयण-सूर-मडल-वितिमिर-कर-निग्गय-पडिहय-पुणरवि पच्चोवयतचचल-मरीइकवय विणिम्मुयतेहिं (वृ)।

६ °कुहर° (ख, ग, घ, च)। विहरण विचरण गवामिति गम्यते (वृ)।

७ आमलित (वृपा)।

८ सललिय-पवत्त (वृ)।

९ वीयि° (क)।

१०. वासुदेव-बलदेवा इति प्रक्रम (वृ)।

११. °प्पगासण° (ग)।

निगुरुव-निचिय-कुंचिय-पयाहिणावत्त-मुद्धसिरया सुजात-सुविभत्त-संगयंगा लक्खणवंजणगुणोववेया पसत्थवत्तीसलक्खणधरा हंसस्सरा कुंचस्सरा दुंदुभिस्सरा सीहस्सरा 'ओघस्सरा' मेघस्सरा'[1][2] सुस्सरा सुस्सरनिग्घोसा[3] वज्जरिसहनाराय-संघयणा समचउरंससंठाणसंठिया छायाउज्जोवियंगमंगा छवी[4] निरातंका कंकग्गहणी कवोतपरिणामा सउणिपोस[5]-पिट्ठंतरोरुपरिणया पउमुप्पलसरिस-गंधसास-सुरभिवयणा अणुलोमवाउवेगा अवदाय-निद्ध-काला 'विग्गहिय-उण्णय-कुच्छी'[6] अमयरसफलाहारा तिगाउय-समूसिया तिपलिओवमट्ठितीका तिण्णि य पलिओवमाइं परमाउं पालयित्ता ते वि उवणमंति मरणधम्मं, अवितित्ता कामाणं ।।

जुगलिणीणं लावण्णनिरूवणपुरस्सरं अबंभ-पदं

८. पमया वि य तेसिं होंति—सोम्मा सुजाय-सव्वंग-सुंदरीओ पहाणमहिलागुणेहिं जुत्ता[7] अतिकंत-विसप्पमाण-मउय-सुकुमाल-कुम्मसंठिय-सिलिट्ठचरणा उज्जु-मउय-पीवरसुसंहतंगुलीओ[8] अब्भुण्णत-रतिद-तलिण-तंब-सुइ-णिद्धनक्खा रोम-रहिय-वट्टसंठिअ-अजहण्ण-पसत्थ-लक्खण-अकोप्प-जंघजुयला सुणिम्मित-सुनिगूढ-जण्णू मंसल-पसत्थ-सुबद्ध-संधी कयलीखंभातिरेकसंठिय-निव्वणसुकुमाल-मउय-कोमल-अविरल-सम-सहित-वट्ट-पीवर-निरंतरोरू अट्ठावयवीचिपट्ठसंठिय[9]-पसत्थविच्छिण्णपिहुलसोणी वयणायामप्पमाणदुगुणिय-विसालमंसलसुबद्धजहण-वरधारिणीओ[10] वज्जविराइय-पसत्थलक्खणनिरोदरीओ तिवलिवलित-तणु-नमियमज्झियाओ उज्जुय-सम-सहिय-जच्च-तणु-कसिण-निद्ध-आदेज्ज-लडह-सुकुमाल-मउय सुविभत्तरोमराई[11] गंगावत्तग-पदाहिणावत्त-तरंगभंग-रविकिरण-तरुण-बोधितअकोसायंतपउम-गंभीरविगडनाभी अणुब्भडपसत्थजातपीणकुच्छी सन्नतपासा संगतपासा सुंदरपासा[12] सुजातपासा मियमायिय-पीणरइतपासा अकरंडुय[13]-कणगरुयगनिम्मल[14]-सुजाय-निरुवहयगायलट्ठी कंचणकलसपमाण-सम-

---

१. उज्जम्सरा (ग) ।
२. मेघस्सरा ओघस्सरा (घ) ।
३. वाचनान्तरे सिंहघोसादिकानि विशेषणानि पठ्यन्ते (वृ) ।
४. मुद्रितवृत्तौ—पसत्थच्छवि, हस्तलिखितवृत्तौ—छविंत्ति प्रशस्तत्वच ।
५. संगुणि° (क) ।
६. विग्गहितुण्णय° (ख, ग) ।
७ मंजुत्ता (क) ।
८. सुसाहतंगुलीओ (क, ग, घ, च) ।
९ °पट्ठिमठिय (क), °पडिसठिय (ख, घ) ।
१०. °वरजहण° (क) ।
११ रोमराती (क), °रोमरातीओ (ग) ।
१२ × (क, ख, ग, घ, च), सन्नतपार्श्वादि-विशेषणानि पूर्ववत् (वृ), वृत्तिसङ्केतानु-सारेणासौ पाठ स्वीकृत ।
१३ अकरंडुय (क, ख) ।
१४ °रुयि° (ख) °रुय° (घ) ।

सहिय-लट्ठचूचुयआमेलग-जमल-जुयल-वट्टियपओहराओ भुयंगअणुपुव्वतणुय-गोपुच्छवट्ट-सम-सहिय-नमिय-आदेज्ज-लडहबाहा तबनहा मसलग्गहत्था कोमल-पीवरवरंगुलीया निद्धपाणिलेहा ससि-सूर-सख-चक्क-वरसोत्थिय-विभत्त-सुवि-रइय-पाणिलेहा पीणुण्णयकक्खवत्थिप्पदेस-पडिपुण्णगलकवोला चउरंगुल-सुप्पमाण-कबुवरसरिसगीवा मसलसठियपसत्थहणुया दालिमपुप्फप्पगास-पीवर-पलवकुचितवराधरा सुदरोत्तरोट्ठा दधि-दगरय-'कुद-चद'[1]-वासतिमउल-अच्छिद्द-विमलदसणा रत्तुप्पल-रत्तपउमपत्त-सुकुमालतालुजीहा कणवीरमउलऽकुडि-लऽब्भुण्णय-उज्जुतुगनासा सारदनवकमल-कुमुत-कुवलयदलनिगरसरिसलक्खण-पसत्थ-अजिम्हकतनयणा[2] आनामियचावरुइल-किण्हब्भराइसगय-सुजाय-तणु-कसिण-निद्धभुमगा अल्लीणपमाणजुत्तसवणा सुस्सवणा पीणमट्ठ[3]-गडलेहा चउरंगुलविसाल - समनिडाला कोमुदिरयणिकरविमलपडिपुण्णसोमवदणा[4] छत्तुन्नय-उत्तिमंगा[5] अकविल-सुसिणिद्ध-दीहसिरया छत्त-ज्झय-जूव-थूभ-दामिणि-कमडलु-कलस-वावि-सोत्थिय-पडाग-जव-मच्छ- कुम्म-रहवर - मकरज्झय-अक-थाल-अकुस-अट्ठावय-सुपइट्ठ-अमर-सिरियाभिसेय-तोरण- मेइणि-उदधिवर-पवर-भवण-गिरिवर-वरायस-सुललियगय[6]-उसभ-सीह-चामर- पसत्थबत्तीसलक्खणध-रीओ हंससरिच्छगतीओ[7] कोइल-महुयरि-गिराओ कता सव्वस्स अणुमयाओ[8] ववगयवलिपलितवग-दुव्वन्न-वाधि[9]-दोहग्ग[10]-सोयमुक्काओ[11], उच्चत्तेण य नराण थोवूणमूसियाओ, सिंगारागारचारुवेसा सुदर-थण-जहण-वयण-कर-चरण[12]-णयणा लावण्णरूवजोव्वणगुणोववेया नदणवणविवरचारिणीओ व्व अच्छराओ उत्तरकुरुमाणुसच्छराओ अच्छेरगपेच्छणिज्जियाओ तिण्णि य पलिओवमाइं परमाउ पालयित्ता ताऽवि[13] उवणमति मरणधम्मं, अवितित्ता कामाण ।।

अबंभस्स फलविवाग-पदं

९ मेहुणसण्णासपगिद्धा य मोहभरिया सत्थेहिं हणति एक्कमेक्कं विसयविसउदीर-एसु । अवरे परदारेहिं[14] हम्मति विसुणिया धणनास सयणविप्पणासं च पाउ-

---

१. चद-कुद (च) ।
२. अजिम्ह ° (क, घ, च) ।
३ पीणमट्ठसुद्ध (ख) ।
४. °वयणा (ख, घ, च) ।
५. °उत्तमगा (ग, च) ।
६ सललिय० (क, ग, वृ) ।
७. सरिसगतीओ (च) ।
८. अणुगयाओ (ख) ।
९. वाहि (घ) ।
१० दोभग्ग (घ, च) ।
११ °मुक्का (क, ख, घ) ।
१२ चलण (ख, च) ।
१३ ताओ (च) ।
१४. प्रवृत्ता इति गम्यते (वृ) ।

णंति[1]। परस्स दाराओ जे अविरया मेहुणसण्णसंपगिद्धा य मोहभरिया अस्सा हत्थी गवा य महिसा मिगा य मारेंति एक्कमेक्कं, मणुयगणा वानरा य पक्खी य विरुज्झति, मित्ताणि[2] खिप्प भवंति सत्तू, समये धम्मे गणे य भिंदति पारदारी। धम्मगुणरया य बंभयारी खणेण उल्लोट्टए[3] चरित्तओ[4], जसमंतो सुव्वया य पावंति अयसकित्ति[5], रोगत्ता वाहिया य वड्ढेंति रोयवाही, दुवे य लोया दुआराहगा भवंति—इहलोए चेव परलोए—परस्स दाराओ जे अविरया॥

१० तहेव केइ परस्स दारं गवेसमाणा गहिया हया य बद्धरुद्धा य एवं जाव[6] नरगं गच्छंति निरभिरामे विपुलमोहाभिभूयसण्णा॥

११ मेहुणमूलं च सुव्वए तत्थ-तत्थ वत्तपुव्वा[7] संगामा बहुजणक्खयकरा[8] सीयाए दोवतीए कए, रुप्पिणीए, पउमावईए, ताराए, कंचणाए, रत्तसुभद्दाए, अहिल्लियाए[9], सुवण्णगुलियाए, किण्णरीए, सुरूवविज्जुमतीए, रोहिणीए य॥

१२ अण्णेसु य एवमादिएसु बहवो[10] महिलाकएसु सुव्वंति अइक्कंता संगामा गामधम्ममूला॥

१३ 'इहलोए ताव नट्ठा'[11] 'परलोए वि'[12] य नट्ठा महयामोहतिमिसंधकारे घोरे, तसथावर-सुहुमबादरेसु पज्जत्तमपज्जत्तक-साहारणसरीर-पत्तेयसरीरेसु य, अंडज-पोतज-जराउय-रसज-संसेइम-संमुच्छिम-उब्भिय-उववाइएसु य, नरग-तिरिय-देव-माणुसेसु, जरा-मरण-रोग-सोग[13]-बहुले, पलिओवम-सागरोवमाइं अणादीयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टंति जीवा मोहवस-सण्णिविट्ठा॥

१४ एसो सो अबंभस्स फलविवागो इहलोइओ पारलोइओ य अप्पसुहो बहुदुक्खो-महब्भओ बहुरयप्पगाढो दारुणो कक्कसो असाओ वाससहस्सेहिं मुच्चती, न य अवेदयित्ता अत्थि हु मोक्खोत्ति—एवमाहंसु नायकुलनंदणो महप्पा जिणो उ वीरवरनामधेज्जो, कहेसी य अबंभस्स फलविवागं॥

निगमण-पद

१५ एयं तं अबंभंति चउत्थं सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स पत्थणिज्जं,[14] •पंक-पणग-

---

१. राज्ञ. सकामादिति गम्यते (वृ)।
२. मित्ता (क, ग, घ)।
३. उल्लट्टए (क); उल्लोट्टए (ग)।
४. चरित्ताओ (ग, च)।
५. अकित्ति (वृ), अयसकित्ति (वृपा)।
६. पण्हा० ३।१०-२०।
७. वुत्तपुव्वा (ख)।
८. जणक्खयकरा (क, ख, ग, घ, च)।
९. अहित्तियाए (क, ख, ग, घ); अहित्रिका अप्रतीता (वृ)।
१०. बहुओ (क, ख)।
११. × (क, ग, घ)।
१२. परलोयम्मि (ख, घ)।
१३. × (क, ख, घ)।
१४. सं० पा०—पत्थणिज्जं एवं चिरपरि०।

पासजालभूय थी-पुरिस-नपुसगवेदचिंध तव-सजम-बभचेरविग्घ भेदाययण-वहुपमादमूल कायरकापुरिससेविय सुयणजणवज्जणिज्ज उड्ढ नरग-तिरिय-तिलोक्कपइट्ठाण जरा-मरण-रोग-सोगवहुल वध-वध-विघाय-दुव्विघाय दसण-चरित्तमोहस्स हेउभूय॰ चिरपरिचियमणुगय[1] दुरत। चउत्थ अधम्मदार समत्त।

—त्ति बेमि॥

१. चिरपरिजिय॰ (ग, घ), चिरपरिगय॰ (वृपा)

पंचमं अज्झयणं

पंचम आसवदारं

उक्खेव-पद

१ जंबू ! एत्तो[1] परिग्गहो पंचमो उ नियमा—णाणामणि-कणग-रयण-महरिह-परिमल-सपुत्तदार-परिजण - दासी-दास - भयग-पेस-हय-गय-गो-महिस-उट्ट-खर-अय-गवेलग-सीया-सगड-रह-जाण-जुग्ग - संदण - सयणासण-वाहण-कुविय-धण-धण्ण-पाण-भोयण - अच्छायण - गंध-मल्ल-भायण-भवणविहिं चेव बहुविहीयं, भरहं णग-णगर-णियम[2] -जणवय-पुरवर-दोणमुह-खेड-कब्बड-मडंब-संबाह-पट्टण-सहस्समंडियं थिमियमेइणीयं, एगच्छत्तं ससागरं भुंजिऊण वसुहं अपरिमिय-मणंततण्हमणुगय-महिच्छसार-निरयमूलो, लोभकलिकसाय-महक्खंधो[3], चिंता-सयनिचिय[4]-विपुलसालो, 'गारव-पविरल्लियग्गविडवो'[5], नियडि-तयापत्तपल्लव-धरो, पुप्फफलं जस्स कामभोगा, आयासविसूरणाकलह-पकंपियग्गसिहरो, नरवतिसंपूजितो, बहुजणस्स हिययदइओ इमस्स मोक्खवर-मोत्तिमग्गस्स पलिहभूओ[6] । चरिमं अहम्मदारं ॥

परिग्गहस्स तीसनाम-पद

२. तस्स य नामाणि[7] गोण्णाणि होंति तीसं, तं जहा—१ परिग्गहो २ संचयो ३ 'चयो ४ उवचयो'[8] ५. ।नहाणं ६. संभारो ७. संकरो ८ आयरो[9] ९. पिंडो

---

१. इत्तो (ग) ।
२. निगम (च) ।
३. महाखंधो (ख, च) ।
४. चिंतायास° (वृ), चिंतासय° (वृपा) ।
५. गोरव-पविरेल्लि° (घ, वृपा) ।
६. फलिह° (ग, च) ।
७. नामाणि इमाणि (ख, घ) ।
८. चओ उवचओ (क, ग) ।
९. आयारो (क, ख, घ, च) ।

१० दव्वसारो ११ तहा[1] महिच्छा १२ पडिबंधो १३ लोहप्पा १४ महद्दी[2] १५ उवकरण १६. संरक्खणा य १७ भारो १८ संपायुप्पायको १९ कलिकरंडो २० पवित्थरो २१ अणत्थो २२ संथवो २३ अगुत्ती २४ आयासो २५ अविओगो २६ अमुत्ती २७ तण्हा २८ अणत्थको २९ आसत्ती ३० असंतोसो त्ति ।

अवि य तस्स एयाणि एवमादीणि नामधेज्जाणि होंति तीसं ।।

देवाणं परिग्गह-पदं

३ तं च पुण परिग्गहं ममायंति लोभघत्था भवनवरविमाणवासिणो परिग्गहरुयी[3] परिग्गहे विविहकरणबुद्धी,

देवनिकाया य—असुर-भुयग-गरुल-विज्जु-जलण-दीव-उदहि-दिसि[4]-पवण-थणिय-अणवण्णिय-पणवण्णिय-इसिवाइय-भूतवाइय-कंदिय-महाकंदिय-कुहंड-पतंगदेवा,[5] पिसाय-भूय-जक्ख-रक्खस-किन्नर-किंपुरिस-महोरग-गंधव्वा य तिरियवासी ।

पंचविहा जोइसिया य देवा,—बहस्सती-चंद-सूर-सुक्क-सनिच्छरा, राहु-धूमकेउ-बुधा य अंगारका य तत्ततवणिज्जकणगवण्णा, जे य गहा जोइसम्मि[6] चारं चरंति, केऊ य गतिरतीया, अट्ठावीसतिविहा य नक्खत्तदेवगणा,[7] नाणासंठाण-संठियाओ य तारगाओ, ठियलेस्सा चारिणो य अविस्साम-मंडलगती उवरि-चरा ।

उड्ढलोगवासी दुविहा वेमाणिया य देवा—सोहम्मीसाण-सणंकुमार-माहिंद-बंभलोग-लंतक-महासुक्क-सहस्सार-आणय-पाणय-आरणच्चुय-कप्पवरविमाण-वासिणो सुरगणा गेवेज्जा अणुत्तरा य दुविहा कप्पातीया विमाणवासी महि-ड्ढिका उत्तमा सुरवरा ।

एवं च ते चउव्विहा सपरिसा वि देवा ममायंति भवण-वाहण-जाण-विमाण-सयणासणाणि य नाणाविहवत्थभूसणाणि य पवरपहरणाणि य नाणामणिपंच-वण्णदिव्वं च भायणविहिं नाणाविह-कामरूव-वेउव्विय-अच्छरगणसंघाते दीवसमुद्दे दिसाओ[8] चेतियाणि वणसंडे पव्वते गामनगराणि य आरामुज्जाण-काणणाणि य कूव-सर-तलाग-वावि-दीहिय-देवकुल-सभ-प्पव-वसहिमाइयाइं

---

१ तह (क, च) ।
२. महंती (वृ०), महद्दी (वृपा) ।
३. ०रुती (क, ग) ।
४. दिस (क, ग, घ) ।
५ पतंत० (क), पतंग० (च) ।
६ जोइसियम्मि (ख, घ) ।
७. देवतगणा (ख, घ, च) ।
८ दिसाओ विदिसाओ (ग, च) ।

वहुकाइ कित्तणाणि य परिगेण्हित्ता परिग्गह विपुलदव्वसार देवावि सइंदगा न तित्ति न तुट्ठि उवलभति अच्चत-विपुल-लोभाभिभूतसन्ना[1]।
वासहर-इसुगार[2]-वट्टपव्वय-कुडल-रुयगवर-माणुसुत्तर-कालोदधि-'लवण-सलिल'[3] दहपति-रतिकर-अजणकसेल-दहिमुहओवातुप्पाय[4]-कंचणक-चित्त[5]-विचित्त-जमक-वरसिहरि-कूडवासी ॥

मणुस्साण परिग्गह-पदं

४ वक्खार-अकम्मयभूमीसु, सुविभत्तभागदेसासु कम्मभूमिसु जेऽवि य नरा चाउरतचक्कवट्टी वासुदेवा वलदेवा मंडलीया इस्सरा तलवरा सेणावती इब्भा सेट्ठी रट्ठिया पुरोहिया कुमारा दंडणायगा माडविया सत्थवाहा कोडुविया अमच्चा एए अण्णे य एवमादी परिग्गह सचिणति अणतं असरण दुरंत अधुव-मणिच्चं असासय पावकम्मनेम्मं अवकिरियव्वं[6] विणासमूल वहवधपरिकिलेस-वहुल[7] अणतसकिलेसकरण[8] ते त धण-कणग-रयण-निचय पिंडिता[9] चेव लोभ-घत्था ससार अतिवयति[10] सव्वदुक्ख-सनिलयण ॥

परिग्गहत्थं सिक्खा-पदं

५. परिग्गहस्सेव य अट्ठाए सिप्पसयं सिक्खए वहुजणो कलाओ य वावत्तरिं सुनि-पुणाओ लेहाइयाओ सउणरुयावसाणाओ गणियप्पहाणाओ, चउसट्ठिं च महिला-गुणे रतिजणणे, सिप्पसेव, असि-मसि-किसी-वाणिज्ज, ववहार, अत्थसत्थ-ईसत्थ-च्छरुप्पगय, विविहाओ य जोगजुजणाओ[11] य, अण्णेसु एवमादिएसु वहूसु कारणसएसु जावज्जीवं नडिज्जए[12], सचिणति मदवुद्धी ॥

परिग्गहीणं पवित्ति-पदं

६. परिग्गहस्सेव य अट्ठाए करति पाणाण वहकरण अलिय-नियडि-साइ-सपओगे परदव्व-अभिज्जा सपरदारगमणसेवणाए[13] आयास-विसूरण कलह-भडण-वेराणि य अवमाण-विमाणणाओ इच्छ-महिच्छ-प्पिवास-सततितिसिया तण्ह-गेहि-लोभ-घत्था अत्ताण-अणिग्गहिया करेंति कोहमाणमायालोभे अकित्तणिज्जे ॥

---

१. °भूतसत्ता (च)।
२. इक्खुगार (ख, घ, च)।
३. लवणसमुद्द (क)।
४. दहिमुहवातुप्पाय (क), °उवातुप्पाय (च)।
५. × (क, ख, ग, घ)।
६. अकिरियव्वं (क), अविकिरियव्व (घ)।
७. मनत परि° (क)।
८. मनसकिलेस° (क)।
९. पिंडता (ख)।
१०. अविचयति (ख, घ)।
११. परिग्रहाय शिक्षत इति प्रतीतम् (वृ)।
१२. वहुवचनार्थत्वादेकवचनस्य (वृ)।
१३. × (ख, घ); °अभिगमण° (ग)।

७ परिग्गहे चेव होंति नियमा सल्ला दडा य गारवा य कसाय-सण्णा य कामगुण-अण्हगा य इंदियलेसाओ ।
सयण-सपओगा सचित्ताचित्तमीसगाइ दव्वाइ अणतकाइ इच्छति परिघेत्तु ।
सदेवमणुयासुरम्मि लोए लोभपरिग्गहो जिणवरेहि भणिओ, नत्थि एरिसो पासो पडिबधो[1] सव्वजीवाण सव्वलोए ।।

परिग्गहस्स फलविवाग-पद

८. परलोगम्मि य नट्ठा[2] तम पविट्ठा, महया मोहमोहियमती, तिमिसधकारे, तसथावर-सुहुमवादरेसु, पज्जत्तमपज्जत्तग-[3]•साहारणसरीर-पत्तेयसरीरेसु य, अडज-पोतज - जराउय-रसज-ससेइम-समुच्छिम-उब्भिय-उववाइएसु य, नरग-तिरिय-देव-माणुसेसु, जरा - मरण-रोग-सोग-वहुले, पलिओवम-सागरोवमाइ अणादीय अणवदग्ग दीहमद्ध चाउरंत ससारकतार अणु°परियट्टति जीवा मोहवससण्णिविट्ठा ।।

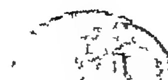
९ एसो सो परिग्गहस्स फलविवाओ इहलोइओ पारलोइओ[4] अप्पसुहो बहुदुक्खो महब्भओ वहुरयप्पगाढो दारुणो कक्कसो असाओ वाससहस्सेहि मुच्चई, न य अवेदयित्ता[5] अत्थि हु मोक्खोत्ति—एवमाहसु नायकुलनदणो महप्पा जिणो उ वीरवरनामधेज्जो, कहेसी य परिग्गहस्स फलविवाग ।।

निगमण-पदं

१० एसो सो परिग्गहो पचमो उ नियमा—नाणामणि-कणग-रयण-महरिह[6]•परि-मल-सपुत्तदार-परिजण-दासी - दास-भयग-पेस-हय-गय-गो-महिस-उट्ट-खर-अय-गवेलग - सीया-सगड-रह-जाण-जुग्ग-सदण-सयणासण-वाहण-कुविय-धण-धण्ण-पाण-भोयण-अच्छायण-गध-मल्ल-भायण-भवणविहि चेव बहुविहीय, भरह णग-णगर-णियम-जणवय- पुरवर-दोणमुह-खेड-कव्वड-मडब-सवाह-पट्टणसहस्स-मडिय थिमियमेइणीय, एगच्छत्त ससागर भुजिऊण वसुह अपरिमियमणततण्ह-मणुगय-महिच्छसार-निरयमूलो, लोभकलिकसाय-महक्खधो, चिंतासयनिचिय-विपुलसालो, गारव-पविरल्लियग्गविडवो, नियडि-तयापत्तपल्लवधरो, पुप्फफल जस्स कामभोगा, आयासविसूरणाकलह-पकपियग्गसिहरो, नरवतिसपूजितो, वहुजणस्स हिययदइओ° इमस्स मोक्खवर-मोत्तिमग्गस्स फलिहभूयो । चरिम अधम्मदार समत्त ।

---

१. पडिवधो अत्थि (ख, ग, घ, च) ।
२. ४।१३ सूत्रे अतः प्राग् 'इहलोए ताव नट्ठा' पाठो विद्यते, अत्र तु स न दृश्यते ।
३. सं० पा०—एव जाव परियट्टति ।
४. परलोइओ (ख, ग, घ, च) ।
५ अवेतित्ता (ग) ।
६. स० पा०—एव जाव इमस्स ।



एएहिं पंचहिं असवरेहिं रयमादिणित्तु[1] अणुसमयं।
चउव्विहगतिपेरंत, अणुपरियट्टंति संसारं ॥१॥
सव्वगई - पक्खंदे, काहेंति अणंतए अकयपुण्णा।
जे य ण सुणंति धम्मं, सोऊण य जे पमायंति ॥२॥
अणुसिट्ठंपि[2] बहुविहं, मिच्छदिट्ठी णरा अबुद्धीया।
बद्धनिकाइयकम्मा, सुणेंति धम्मं न य करेंति ॥३॥
किं सक्का काउं जे, जं णेच्छह ओसहं मुहा पाउं।
जिणवयणं गुणमहुरं, विरेयणं सव्वदुक्खाणं ॥४॥
पंचेव[3] उज्झिऊण, पंचेव य रक्खिऊण भावेणं।
कम्मरय - विप्पमुक्का, सिद्धिवरमणुत्तरं जंति ॥५॥

———

१. °अचिणित्तु (वृ)।
२. अणुसट्ठं (क, ग, घ); अणुसिट्ठा (वृ)।
३. पंचेव य (च)।

छट्ठं अज्झयणं

पढमं संवरदारं

उक्खेव-पदं

१. जंबू !

एत्तो संवरदाराइं, पंच वोच्छामि आणुपुव्वीए।
जह भणियाणि भगवया, सव्वदुहविमोक्खणट्ठाए ॥१॥
पढमं होइ अहिंसा, बितियं सच्चवयणंति पण्णत्तं।
दत्तमणुण्णायसंवरो, य बंभचेरमपरिग्गहत्तं च ॥२॥
तत्थ पढमं अहिंसा, तसथावरसव्वभूयखेमकरी।
तीसे सभावणाए, किंचि वोच्छं गुणुद्देसं ॥३॥

२. ताणि उ इमाणि सुव्वय-महव्वयाइं 'लोकहिय-सव्वयाइं'[1] सुयसागर-देसियाइं तव-संजम-महव्वयाइं सीलगुणवरव्वयाइं सच्चज्जवव्वयाइं नरग-तिरिय-मणुय-देवगति-विवज्जकाइं[2] सव्वजिणसासणगाइं कम्मरयविदारगाइं भवसयविणासणकाइं दुहसयविमोयणकाइं सुहसयपवत्तणकाइं कापुरिसदुरुत्तराइं सप्पुरिस-निसेवियाइं[3] निव्वाणगमणमग्ग-सग्गपणायगाइं[4] संवरदाराइं पंच कहियाणि उ भगवया ॥

अहिंसा-पज्जवनाम-पदं

३. तत्थ पढमं अहिंसा, जा सा सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स भवति—

---

१ लोए धिइअव्वयाइं (वृ); लोयहियसव्वयाइं (वृपा)।
२. विवज्जियकाइं (क); विवज्जयकाइं (ख, ग, च)।
३ सप्पुरिसतीरियाइं (वृपा)।
४ पयाणगाइं (वृपा)।

दीवो ताण सरण गती पइट्ठा
निव्वाण[1] निव्वुई[2] समाही
सत्ती कित्ती कती
रती य विरती य सुयग तित्ती
दया विमुत्ती खती समत्ताराहणा
महती वोही बुद्धी धिती
समिद्धी रिद्धी विद्धी
ठिती पुट्ठी नदा भद्दा
विसुद्धी लद्धी विसिट्ठदिट्ठी
कल्लाण मगल पमोग्रो विभूती रक्खा
सिद्धावासो ग्रणासवो
केवलीण ठाणं
सिव-समिई-सील-सजमो त्ति य
सीलपरिघरो[3] संवरो य गुत्ती ववसाग्रो
उस्सग्रो[4] य जणो, ग्रायतण जयणमप्पमाग्रो ।
ग्रासासो वीसासो, ग्रभग्रो सव्वस्स वि ग्रमाघाग्रो ।
चोक्खपवित्ता[5] सुती पूया विमल-पभासा य निम्मलतर त्ति ।
एवमादीणि नियगगुण-निम्मियाइ पज्जवणामाणि होंति ग्रहिंसाए भगवतीए ॥

ग्रहिंसा-थुइ-पद

४ एसा सा भगवती ग्रहिंसा, जा सा—

भीयाण पिव सरणं, पक्खीण पिव गयण[6] ।
तिसियाण पिव सलिल, खुहियाण पिव ग्रसण ।
समुद्दमज्झे व पोतवहण, चउप्पयाण व ग्रासमपयं ।
दुहट्टियाणं[7] व ग्रोसहिवल, ग्रडवीमज्झे व सत्थगमण ॥

५ एत्तो विसिट्ठतरिका ग्रहिंसा, जा सा—
पुढवि-जल-ग्रगणि - मारुय - वणप्फइ-वीज-हरित-जलचर-थलचर-खहचर-तस-थावर-सव्वभूय-खेमकरी ॥

---

१ नेव्वाण (क) ।
२. नेव्वुई (क, ख) ।
३. सीलायारो (क), सीलघरो (ख, घ, च) ।
४ उस्सतो (क) ।
५ चोक्खा पवित्ती (क) ।
६ गमण (क, ग, वृ) ।
७ दुहट्ठियाण (च, ग) ।

अहिंसा-माहप्प-पदं

६ एसा भगवती अहिंसा, जा सा—
अपरिमियनाणदंसणधरेहिं सीलगुण-विणय-तव-संजमनायकेहिं तित्थकरेहिं सव्वजगवच्छलेहिं[1] तिलोगमहिएहिं जिणचंदेहिं सुट्ठुदिट्ठा, ओहिजिणेहिं विण्णाया, उज्जुमतीहिं विदिट्ठा, विपुलमतीहिं विदिता[2], पुव्वधरेहिं अधीता, वेउव्वीहिं पतिण्णा।
आभिणिबोहियनाणीहिं सुयनाणीहिं मणपज्जवनाणीहिं केवलनाणीहिं आमोसहिपत्तेहिं खेलोसहिपत्तेहिं जल्लोसहिपत्तेहिं विप्पोसहिपत्तेहिं सव्वोसहिपत्तेहिं बीजबुद्धीहिं कोट्ठबुद्धीहिं पदाणुसारीहिं संभिण्णसोतेहिं सुयधरेहिं मणबलिएहिं वयिबलिएहिं कायबलिएहिं नाणबलिएहिं दंसणबलिएहिं चरित्तबलिएहिं खीरासवेहिं महुआसवेहिं सप्पिआसवेहिं[3] अक्खीणमहाणसिएहिं चारणेहिं विज्जाहरेहिं चउत्थभत्तिएहिं 'छट्ठभत्तिएहिं अट्ठमभत्तिएहिं एवं-दसम-दुवालस-चोद्दस-सोलस - अद्धमास - मास - दोमास-चउमास-पंचमास'[4]-छम्मासभत्तिएहिं उक्खित्तचरएहिं निक्खित्तचरएहिं अंतचरएहिं पंतचरएहिं लूहचरएहिं समुदाणचरएहिं अण्णइलाएहिं मोणचरएहिं संसट्ठकप्पिएहिं तज्जायसंसट्ठकप्पिएहिं उवनिहिएहिं सुद्धेसणिएहिं संखादत्तिएहिं दिट्ठलाभिएहिं अदिट्ठलाभिएहिं पुट्ठलाभिएहिं आयंबिलिएहिं पुरिमड्ढिएहिं एक्कासणिएहिं निव्वितिएहिं भिण्णपिंडवाइएहिं परिमियपिंडवाइएहिं अंताहारेहिं पंताहारेहिं अरसाहारेहिं विरसाहारेहिं लूहाहारेहिं तुच्छाहारेहिं अंतजीवीहिं पंतजीवीहिं लूहजीवीहिं तुच्छजीवीहिं उवसंतजीवीहिं पसंतजीविहिं विवित्तजीवीहिं अक्खीरमहुसप्पिएहिं[5] अमज्जमंसासिएहिं ठाणाइएहिं पडिमट्ठाईहिं[6] ठाणुक्कडिएहिं[7] वीरासणिएहिं णेसज्जिएहिं डंडाइएहिं लगंडसाईहिं एगपासगेहिं आयावएहिं अप्पाउएहिं अणिट्ठुभएहिं अकंडूयएहिं धुतकेसमंसु-लोमनखेहिं सव्वगायपडिकम्मविप्पमुक्केहिं समणुचिण्णा।
सुयधरविदितत्थकायबुद्धीहिं[8]। धीरमतिबुद्धिणो य जे ते आसीविस-उग्गतेयकप्पा निच्छय-ववसाय-पज्जत्तकयमतीया[9] णिच्चं सज्झायज्झाण-अणुबद्धधम्मज्झाणा पंचमहव्वयचरित्तजुत्ता समिता समितीसु समितपावा छव्विहजगवच्छला[10] निच्चमप्पमत्ता, एएहिं[11] अण्णेहि य जा सा अणुपालिया भगवती॥

---

१ सव्वजगजीव° (क)।
२ विविदिता (घ)।
३ सप्पियासवेहिं (ख, ग, घ, च)।
४ एवं जाव (क, ख, ग, घ)।
५ अक्खित्त° (क)।
६ पडिमट्ठाइएहिं (ग, घ, च)।
७ ठाणुक्कुडुएहिं (क)।
८ समनुपालितेति सम्बन्ध (वृ)।
९ मिच्छत्तकयमतीया (ख, घ); विणीयपज्जत्तकयमतीया (वृपा)।
१०. छव्विहजगजीववच्छला (क)।
११. एएहि य (घ, च)।

उछगवेसणा-पद

७ इम च पुढवि-दग-अगणि-मारुय-तरुगण-तस-थावर-सव्वभूय-संजमदयट्ठयाए सुद्धं उछ गवेसियव्व अकतमकारितमणाहूयमणुद्दिट्ठ, अकीयकड, नवहि य कोडीहिं सुपरिसुद्ध, दसहि य दोसेहिं विप्पमुक्क, उग्गमउप्पायणेसणासुद्ध, ववगय-चुय-चइय[1]-चत्तदेह च, फासुय च ।

न निसज्जकहापओयणक्खासुओवणीय, न तिगिच्छा-मंत-मूल-भेसज्जहेउ[2], न लक्खणुप्पाय-सुमिण-जोइस-निमित्त-कह-कुहकप्पउत्तं ॥

८ नवि डंभणाए, नवि रक्खणाते, नवि सासणाते, नवि डभण-रक्खण-सासणाते भिक्ख गवेसियव्व ॥

९ नवि वदणाते, नवि माणणाते, नवि पूयणाते, नवि वंदण-माणण-पूयणाते भिक्ख गवेसियव्वं ॥

१० नवि हीलणाते, नवि निंदणाते, नवि गरहणाते, नवि हीलण-निंदण-गरहणाते भिक्ख गवेसियव्वं ॥

११. नवि भेसणाते, नवि तज्जणाते, नवि तालणाते, नवि भेसण-तज्जण-तालणाते भिक्ख गवेसियव्व ॥

१२ नवि गारवेण, नवि कुहणयाते, नवि वणीमयाते, नवि गारव-कुहण-वणीमयाते भिक्ख गवेसियव्वं ॥

१३ नवि मित्तयाए, नवि पत्थणाए, नवि सेवणाए, नवि मित्तत-पत्थण-सेवणाते भिक्ख गवेसियव्व ॥

१४ अण्णाए अगढिए अदुट्ठे अदीणे[3] अविमणे अकलुणे अविसाती अपरिततजोगी जयण-घडण-करण-चरिय-विणय-गुण-जोगसंपउत्ते भिक्खू भिक्खेसणाते निरते ॥

१५. इम च सव्वजगजीव-रक्खणदयट्ठाए पावयण भगवया सुकहिय अत्तहियं पेच्चाभाविय आगमेसिभद्द सुद्ध नेयाउय अकुडिल अणुत्तर सव्वदुक्खपावाण विओसमण ॥

अहिंसाए पंचभावणा-पदं

१६ तस्स इमा पच भावणाओ पढमस्स वयस्स होंति पाणातिवायवेरमण-परिरक्खणट्ठयाए ॥

१७. पढम—ठाणगमणगुणजोगजुजण-जुगतरनिवातियाए दिट्ठीए इरियव्वं कीड-

---

१. चयिय (क); चाविय (ख) ।
२. भेसज्जकज्जहेउ (क, ख, ग, घ, च) ।
३. अहीणे (वृ) ।

पयग-तस-थावर-दयावरेण, निच्च पुप्फ-फल-तय-पवाल-कद-मूल-दगमट्टिय-वीज-हरिय-परिवज्जएण[1] सम्म[2] ।

एव खु[3] सव्वपाणा न हीलियव्वा, न निंदियव्वा, न गरहियव्वा, न हिसियव्वा, न छिंदियव्वा, न भिदियव्वा, न वहेयव्वा, न भय दुक्ख च किचि लब्भा पावेउ जे ।

एव इरियासमितिजोगेण भावितो भवति अतरप्पा, असवलमसकिलिट्ठ-निव्वण-चरित्तभावणाए अहिंसए सजए सुसाहू ॥

१८ वितिय च—मणेण पावएण पावग अहम्मिय दारुण निस्सस[4] वह-बध-परिकिलेसवहुल भय-मरण-परिकिलेससकिलिट्ठ न कयावि मणेण पावएण[5] पावगं किंचि वि भायव्व ।

एव मणसमितिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा, असबलमसकिलिट्ठ-निव्वण-चरित्तभावणाए अहिंसए सजए सुसाहू ॥

१९ ततिय च—वतीते पावियाते पावग न किंचि वि भासियव्व ।

एव वतिसमितिजोगेण भावितो भवति अतरप्पा, असवलमसकिलिट्ठ-निव्वण-चरित्तभावणाए अहिंसओ सजओ सुसाहू ॥

२० चउत्थ—आहारएसणाए[6] सुद्ध उछ गवेसियव्व अण्णाए 'अगढिए अदुट्ठे'[7] अदीणे[8] अविमणे[9] अकलुणे अविसादी[10], अपरिततजोगी जयण-घडण-करण-चरिय-विणय-गुण-जोगसपउत्ते[11] भिक्खू भिक्खेसणाए जुत्ते समुदाणेऊण भिक्खचरिय उछ घेत्तूण आगते गुरुजणस्स पास, गमणागमणातिचार-पडिक्कमण-पडिक्कते, आलोयण-दायण च दाऊण गुरुजणस्स जहोवएस निरइयार च अप्पमत्तो पुणरवि अणेसणाए पयतो[12] पडिक्कमित्ता पसतआसीण-सुहनिसण्णे[13], मुहुत्तमेत्त च भाण-सुहजोग-नाण-सज्भाय-गोवियमणे धम्ममणे अविमणे सुहमणे अविग्गहमणे समाहिमणे सद्धासवेगनिज्जरमणे पवयणवच्छल्लभावियमणे उट्ठेऊण य पहट्ठतुट्ठे जहराइणिय[14] निमतइत्ता य साहवे भावओ य, विइण्णे[15] य

---

१ परिवज्जिएण (क) ।
२ सम (ग, घ) ।
३ खलु (क, ग) ।
४ निससं (ख, घ) ।
५ पावतेण (ख) ।
६. आहार एसणाए (क, ग, घ, च) ।
७. अकहिए असिट्ठे (क, ख, ग, घ, च, वृ), एते पदे वृत्तेर्वाचनान्तरस्य तथा अस्यैवाध्ययनस्य चतुर्दशसूत्रस्याधारेण स्वीकृते ।
८. 'अहीणे' त्यादि तु पूर्ववत् (वृ) ।
९. × (क, ख, ग, घ, च) ।
१०. अविमाती (ख, घ, च) ।
११ °सपओगजुत्ते (क, ख, ग, घ, च) ।
१२. पयत्तो (क, ख, घ, च) ।
१३. मुनिसण्णा (घ) ।
१४. जहारायणिय (क, ग) ।
१५ विदिण्णे (क, ख, घ, च) ।

गुरुजणेणं, उपविट्ठे सपमज्जिऊण ससीसं काय तहा करतलं, अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए अगरहिए अणज्झोववण्णे अणाइले अलुद्धे अणत्तट्ठिते असुरसुरं अचवचव अद्दुयमविलविय[1] अपरिसाडि आलोयभायणे जय पयत्तेण ववगय-सजोगमणिगाल च विगयधूम अक्खोवजण-वणाणुलेवणभूय सजमजायामाया-निमित्त[2] सजयभारवहणट्ठयाए भुजेज्जा पाणधारणट्ठयाए[3] सजए ण समिय।

एव आहारसमितिजोगेण भाविओ भवति अतरप्पा, असवलमसकिलिट्ठ-निव्वण-चरित्तभावणाए अहिंसए सजए सुसाहू ॥

२१. पचमग —पीढ-फलग-सिज्जा-संथारग-वत्थ-पत्त-कवल-दडग-रयहरण-चोलपट्टग-मुहपोत्तिग-पायपुछणादी। एयपि संजमस्स उवबूहणट्ठयाए[4] वातातव-दसमसग-सोय-परिरक्खणट्ठयाए उवगरण रागदोसरहिय परिहरितव्व संजतेण[5] णिच्च पडिलेहण-पप्फोडण-पमज्जणाए अहो य राओ य अप्पमत्तेण होइ समय निक्खिवियव्व च गिण्हियव्व च भायण-भडोवहि-उवगरण।

एव आयाणभडनिक्खेवणासमितिजोगेण भाविओ भवति अतरप्पा, असवलमस-किलिट्ठ-निव्वण-चरित्तभावणाए अहिंसए सजते सुसाहू ॥

निगमण-पद

२२. एवमिण सवरस्स दार सम्म सवरिय होति सुप्पणिहिय इमेहिं पचहि वि कारणेहि मण-वयण-काय-परिरक्खएहिं ॥

२३ णिच्च आमरणत च एस जोगो णेयव्वो धितिमया मतिमया अणासवो अकलुसो अच्छिद्दो अपरिसावी असकिलिट्ठो सुद्धो सव्वजिणमणुण्णातो ॥

२४. एव पढम सवरदार फासिय पालिय सोहिय तीरिय किट्टिय आराहिय आणाते अणुपालिय भवति ॥

२५ एव नायमुणिणा भगवया पण्णविय परूविय पसिद्ध सिद्ध सिद्धवरसासणमिण आघवित सुदेसित पसत्थ। पढम संवरदार समत्तं।

—त्ति वेमि ॥

———

१ अदुय° (च)।
२. मायनिमित्तं (क, ख, ग, घ)।
३ °रक्खणट्ठयाए (क)।
४. उवगहणट्ठयाए (क, ख, च)।
५ सजमेण (ग)।

सत्तमं अज्झयणं

बीयं संवरदारं

उक्खेव-पदं

१ जंबू ! बितियं च सच्चवयणं—सुद्धं सुइयं सिवं सुजायं सुभासियं सुव्वयं सुकहियं सुदिट्ठं सुपतिट्ठियं सुपतिट्ठियजसं सुसंजमियवयणबुइयं सुरवर-नरवसभ-पवर-बलवग-सुविहियजण-बहुमयं परमसाहुधम्मचरणं तव-नियम-परिग्गहियं सुगति-पहदेसगं च लोगुत्तमं वयमिणं विज्जाहरगगणगमणविज्जाण साहकं सग्गमग्ग-सिद्धिपहदेसकं अवितहं, तं सच्चं उज्जुयं अकुडिलं भूयत्थं, अत्थतो विसुद्धं उज्जोयकरं पभासकं भवति सव्वभावाण जीवलोगे अविसंवादि जहत्थमधुरं पच्चक्खं दइवयं[1] व जं तं अच्छेरकारकं अवत्थतरेसु बहुएसु माणुसाणं ॥

सच्चस्स माहप्प-पदं

२ सच्चेण महासमुद्दमज्झे चिट्ठति, न निमज्जति मूढाणिया वि पोया ॥

३ सच्चेण य उदगसंभमंमि वि[2] न वुज्झइ[3], न य मरति, थाहं च ते लभंति ॥

४ सच्चेण य अगणिसंभमंमि वि[4] न डज्झति उज्जुगा[5] मणूसा ॥

५. सच्चेण य तत्ततेल्ल-तउय-लोह-सीसकाइं छिवति धरेंति[6], न य डज्झति मणूसा ॥

६ पव्वयकडकाहिं मुच्चते, न य मरति सच्चेण य परिग्गहिया ॥

७ असिपंजरगया[7] समराओ वि णिइति अणहा य सच्चवादी ॥

---

१. दरियव (ख, ग); देवयं (च) ।
२ × (क, ख, ग, घ, च) ।
३. वचनपरिणामान्नोह्यन्ते (वृ) ।
४ × (क) ।
५. उज्जगा (क, ख, घ) ।
६ अंजलिभिरिति गम्यते (वृ) ।
७ असिपंजरसत्तिपंजरगया (क, च) ।

८ वहवधभियोगवेरघोरेहि पमुच्चति य, अमित्तमज्झाहि निइति[1] अणहा य सच्चवादी ।।

९ सादेव्वाणि य देवयाओ करेति सच्चवयणे रताण ।।

सच्चस्स थुइ-पदं

१० त सच्च[2] भगव तित्थगरसुभासिय दसविह चोद्दसपुव्वीहि पाहुडत्थविदित 'महरिसीण य समयप्पदिण्ण'[3] देविद-नरिद-भासियत्थ वेमाणियसाहिय महत्थ मतोसहिविज्जसाहणट्ठ चारणगण-समण-सिद्धविज्ज मणुयगणाण च वंदणिज्ज 'अमरगणाण च अच्चणिज्ज असुरगणाण च पूयणिज्जं,'[4]

अणेगपासड-परिग्गहियं, ज त लोकम्मि सारभूय ।
गभीरतर महासमुद्दाओ, थिरतरग मेरुपव्वयाओ ।
सोमतर चदमडलाओ, दित्ततर सूरमंडलाओ ।
विमलतर सरयनहयलाओ, सुरभितर गधमादणाओ ।।

११ जे वि य लोगम्मि अपरिसेसा मता जोगा जवा य विज्जा य जभका य अत्थाणि य सत्थाणि य सिक्खाओ य आगमा य सव्वाणि[5] वि ताइ सच्चे पइट्ठियाइ ।।

सावज्जसच्च-पदं

१२. सच्चपि य सजमस्स उवरोहकारक[6] किंचि न वत्तव्व—हिंसा-सावज्जसपउत्त भेय-विकहकारक अणत्थवाय-कलहकारक अणज्ज अववाय-विवायसपउत्त वेलव ओजधेज्जबहुल निल्लज्ज लोयगरहणिज्ज दुद्दिट्ठ दुस्सुय दुम्मुणिय[7] ।।

१३ अप्पणो थवणा, परेसु निंदा—

नसि[8] मेहावी, न तसि धण्णो ।
नसि पियधम्मो, न त कुलीणो ।
नसि दाणपती, न तंसि सूरो ।
नसि पडिरूवो, न तसि लट्ठो ।
न पडिओ, न वहुस्सुओ, न वि य त तवस्सी ।

---

१. नइति (क) ।
२ भगवत (क, ख, ग, घ, च) ।
३. °प्पइण्ण (वृ), महरिमिसमयपइण्णचिण्ण (वृपा) ।
४ × (क) ।
५ सव्वाइ (ख, च) ।
६ अवरोहकारक (ख) ।
७ अमुणियं (ख, ग, घ, च) ।
८. त्वमिति गम्यते (वृ) ।

न यावि परलोगणिच्छियमतीऽसि सव्वकाल, जाति-कुल-रूव-वाहि-रोगेण वा वि जं होइ वज्जणिज्ज दुहिल[1] उवयारमतिकतं—एवविह सच्चपि न वत्तव्व ।।

अणवज्जसच्च-पद

१४ अह केरिसक पुणाइ सच्च तु भासियव्व ? ज त दव्वेहिं पज्जवेहि य गुणेहिं कम्मेहिं सिप्पेहि आगमेहि य नामक्खाय-निवाओवसग्ग-तद्धिय-समास-सधि-पद-हेउ-जोगिय-उणादि-किरियाविहाण-धातु-सर[2]-विभत्ति-वण्णजुत्त तिकल्ल दसविह पि सच्च जह भणिय तह य कम्मुणा होइ ।

दुवालसविहा होइ भासा, वयणपि य होइ सोलसविह ।
एव अरहतमणुण्णाय समिक्खिय सजएण कालम्मि य वत्तव्व ।।

१५ इम च अलिय-पिसुण-फरुस-कडुय-चवल-वयण-परिरक्खणट्ठयाए[3] पावयण भगवया सुकहिय अत्तहिय पेच्चाभाविक आगमेसिभद्द सुद्ध नेयाउय अकुडिल अणुत्तर सव्वदुक्खपावाण विओसमण ।।

सच्चस्स पचभावणा-पद

१६ तस्स इमा पच भावणाओ वितियस्स वयस्स अलियवयणवेरमण[4]-परिरक्खणट्ठयाए ।।

१७ पढम—सोऊण संवरट्ठ परमट्ठ, सुट्ठु जाणिऊण न वेगिय[5] न तुरिय न चवल न कडुय न फरुस न साहस न य परस्स पीलाकर सावज्ज, सच्च च हिय च मिय च 'गाहक च'[6] सुद्ध सगयमकाहल च समिक्खित सजतेण कालम्मि य वत्तव्व ।

एवं अणुवीइसमितिजोगेण[7] भाविओ भवति अतरप्पा, सजय-कर-चरण-नयण-वयणो सूरो सच्चज्जवसपण्णो ।।

१८ वितिय—कोहो[8] ण सेवियव्वो । कुद्धो चडिक्किओ मणूसो अलिय भणेज्ज, पिसुण भणेज्ज, फरुसं भणेज्ज, अलिय पिसुण फरुस भणेज्ज ।
कलह करेज्ज, वेर करेज्ज, विकह करेज्ज, कलह वेर विकह करेज्ज ।
सच्च हणेज्ज, सील हणेज्ज, विणय हणेज्ज, सच्च सील विणय हणेज्ज ।
वेसो भवेज्ज, वत्थु भवेज्ज, गम्मो भवेज्ज, वेसो वत्थु गम्मो भवेज्ज ।

---

१ दुहओ (क, ख, ग, घ, च, वृपा) ।
२ रम (वृपा) ।
३ परिरक्खणट्ठाए (क) ।
४ अलियवयणस्स ० (क, ख, ग, घ, च), एतद् विहाय सर्वेष्वपि संवरद्वारेषु समस्त पदमुपलभ्यते । अत्रापि तथैव युज्यते । असमस्तपदस्यार्थो भ्रान्ति जनयति ।
५. वेतित (क), वेइय (ख, ग, च) ।
६ गाहग (क) ।
७ अणुवीति ० (क), अणुवीयि ० (ख, घ); अणुवीय ० (च) ।
८ कोधो (ख, घ) ।

एय अण्ण च एवमादियं भणेज्ज कोहग्गि-सपलित्तो, तम्हा कोहो न सेवियव्वो ।
एव खतीए[1] भाविओ भवति अंतरप्पा, सजय-कर-चरण-नयण-वयणो सूरो सच्चज्जवसपण्णो ॥

१९ ततिय—लोभो न सेवियव्वो ।
लुद्धो लोलो भणेज्ज अलिय खेत्तस्स व वत्थुस्स व कतेण ।
लुद्धो लोलो भणेज्ज अलिय कित्तीए व लोभस्स व कएण ।
लुद्धो लोलो भणेज्ज अलिय इड्ढीए व सोक्खस्स व कएण ।
लुद्धो लोलो भणेज्ज अलिय भत्तस्स व पाणस्स व कएण ।
लुद्धो लोलो भणेज्ज अलिय पीढस्स व फलगस्स व कएण ।
लुद्धो लोलो भणेज्ज अलिय सेज्जाए व सथारकस्स[2] व कएण ।
लुद्धो लोलो भणेज्ज अलिय वत्थस्स व पत्तस्स व कएण ।
लुद्धो लोलो भणेज्ज अलिय कवलस्स व पायपुछणस्स व कएण ।
लुद्धो लोलो भणेज्ज अलिय सीसस्स व सिस्सिणीए व कएण ।
अण्णेसु[3] य एवमादिएसु वहुसु कारणसतेसु लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं, तम्हा लोभो न सेवियव्वो ।
एव मुत्तीए[4] भाविओ भवति अतरप्पा, सजय-कर-चरण-नयण-वयणो सूरो सच्चज्जवसपण्णो ॥

२० चउत्थ—न भाइयव्व । भीतं खु भया अइति लहुय, भीतो अवितिज्जओ मणूसो, भातो भूतेहि व घेपेज्जा, भीतो अण्ण पि हु भेसेज्जा, भीतो तव-सजम पि हु मुएज्जा, भीतो य भर न नित्थरेज्जा, सप्पुरिसनिसेविय च मग्ग भीतो न समत्थो अणुचरिउ । तम्हा न भाइयव्व[5] भयस्स वा वाहिस्स वा रोगस्स वा जराए वा मच्चुस्स वा अण्णस्स व एवमादियस्स[6] ।
एव धेज्जेण भाविओ भवति अतरप्पा, सजय-कर-चरण-नयण-वयणो सूरो सच्चज्जवसपण्णो ॥

२१. पचमक—हास न सेवियव्व । अलियाइ असंतकाइ जपति हासइत्ता । परपरिभवकारण च हास, परपरिवायप्पिय च हास, परपीलाकारग च हास, भेदविमुत्तिकारक च हास, अण्णोण्णजणिय च होज्ज हास, अण्णोण्णगमण च होज्ज मम्म, अण्णोण्णगमण च होज्ज कम्मं, कदप्पाभिओगगमण च होज्ज हास, आसुरिय किव्विसत्तं च जणेज्ज हास, तम्हा हास न सेवियव्व ।

---

१ खतीय (ख), खतीय (ग, घ, च) ।
२. सथारम्म (क) ।
३ लुद्धो लोलो भणेज्ज अलिय अण्णेसु (क, ख, ग, घ, च) ।
४. मुत्तीय (ख, घ) ।
५. भावितव्व (क); भातियव्व (ग) ।
६ एगस्स (वृ); एवमादियस्स (वृपा) ।

एव मोणेण भाविओ भवइ अतरप्पा, सजय-कर-चरण-नयण-वयणो सूरो सच्चज्जवसंपण्णो ॥

निगमण-पदं

२२ एवमिणं सवरस्स दारं सम्म सवरिय होइ सुप्पणिहिय इमेहिं पचहि वि कारणेहिं मण-वयण-काय-परिरक्खिएहिं ॥

२३ निच्च आमरणत च एस जोगो णेयव्वो धितिमया मतिमया अणासवो अकलुसो अच्छिद्दो अपरिस्सावी असकिलिट्ठो सुद्धो[1] सव्वजिणमणुण्णाओ ॥

२४ एव वितिय सवरदार फासिय पालिय सोहिय तीरिय किट्टिय 'आराहिय आणाए अणुपालिय'[2] भवति ॥

२५ एव नायमुणिणा भगवया पण्णविय परूविय पसिद्ध सिद्धवरसासणमिण आघवित सुदेसित पसत्थ । वितिय सवरदार समत्त ।

—त्ति बेमि ॥

---

१. × (क, ख, ग, घ) ।

२. अणुपालिय आणाए आराहिय (क, ख, ग, घ, च) ।

अट्ठमं अज्झयणं
तइयं संवरदारं

उक्खेव-पदं

१ जंबू ! [1]दत्ताणुण्णायसंवरो' नाम होति ततियं—सुव्वतं[2] महव्वतं गुणव्वतं परदव्व-हरणपडिविरइकरणजुत्तं अपरिमियमणंततण्हामणुगय-महिच्छ-मणवयणकलुस-आयाणसुनिग्गहियं सुसंजमियमण-हत्थ-पायनिहुयं निग्गंथं णेट्ठिकं निरुत्तं निरासवं निब्भयं विमुत्तं उत्तमनरवसभ-पवरबलवग-सुविहियजणसंमतं परम-साहुधम्मचरणं ॥

अदत्तस्स अग्गहण-पदं

२ जत्थ य गामागर-नगर-निगम-खेड-कब्बड[3]-मडंब-दोणमुह-संवाह-पट्टणासमगयं च किंचि दव्वं मणि-मुत्त-सिल-प्पवाल-कंस-दूस-रयय-वरकणग-रयणमादि पडियं पम्हुट्ठं विप्पणट्ठं न कप्पति कस्सति[4] कहेउं वा गेण्हिउं वा। अहिरण्ण-सुवण्णिकेण समलेट्ठुकंचणेण अपरिग्गहसंवुडेण लोगंमि विहरियव्वं ॥

३ जं पि य होज्जा हि दव्वजातं 'खलगतं खेत्तगतं रण्णमंतरगतं व'[5] किंचि पुप्फ-फल-तय-प्पवाल-कंद-मूल-तण-कट्ठ-सक्कराइ अप्पं व बहुं व अणुं व थूलगं वा न कप्पति ओग्गहे अदिण्णंमि गिण्हिउं जे ॥

---

१. दत्तमणुण्णाय° (क), दत्तमणुण्णाय° (ख, ग, घ, च)।

२ सुव्वत (क, ख, ग, घ, च); वृत्तिकारेण 'सुव्वय' इति पाठो लब्धः, तेन 'हे सुव्रत' इति सम्बोधनत्वेन व्याख्यातः। वस्तुतोऽत्र 'सुव्वय महव्वय गुणव्वय' एतानि त्रीण्यपि पदानि एकरूपाणि सन्ति। एकस्मिन् क्वचित्प्रयुक्तादर्शे 'सुव्वय' इति पाठोपि लब्धः। तेनासौ पाठ स्वीकृतः।

३. खव्वड (क)

४ कासती (क, घ)।

५. वाचनान्तरे—जलथलगय खेत्तमंतरगय(वृ)।

४ हणिहणि ओग्गह अणुण्णविय गेण्हियव्वं। वज्जेयव्वो य सव्वकाल अचियत्त-घरप्पवेसो, अचियत्तभत्तपाण अचियत्तपीढ-फलग-सेज्जा-सथारग-वत्थ-पत्त-कवल-दडग-रयहरण-निसेज्ज-चोलपट्टग-मुहपोत्तिय-पायपुछणाइ-भायण-भडोवहि-उवकरण परपरिवाओ परस्स दोसो परववएसेण ज च गेण्हइ, परस्स नासेइ ज च सुकय, दाणस्स य अतरातिय, दाणविप्पणासो, पेसुण्ण चेव मच्छरित्त च ॥

अदत्तादाणवेरमणस्स अजोग्गता-पदं

५ जे वि य पीढ-फलग-सेज्जा-सथारग-वत्थ-पाय[1]-कवल-रओहरण[2]-निसेज्ज-चोलपट्टग-मुहपोत्तिय-पायपुछणादि-भायण-भडोवहि-उवकरण[3] असविभागी, असगहरुई,
'तव-वइतेणे'[4] य रूवतेणे य, आयारे चेव भावतेणे य,
सद्दकरे झझकरे कलहकरे वेरकरे विकहकरे असमाहिकारके, सया अप्पमाण-भोई[5] सततं अणुवद्धवेरे य निच्चरोसी, से तारिसए नाराहए वयमिण ॥

अदत्तादाणवेरमणस्स जोग्गता-पदं

६. अह केरिसए पुणाइ आराहए वयमिण ?
जे से उवहि-भत्तपाण-'दाण-संगहण'[6]-कुसले अच्चतवाल-दुव्वल-गिलाण-वुड्ढ-खमके पवत्ति-आयरिय-उवज्झाए सेहे साहम्मिए तवस्सी-कुल-गण-सघ-चेइयट्ठे य निज्जरट्ठी वेयावच्च अणिस्सिय दसविह वहुविह करेति, न य अचियत्तस्स घर[7] पविसइ, न य अचियत्तस्स 'गेण्हइ भत्तपाण'[8], न य अचियत्तस्स सेवइ पीढ-फलग-सेज्जा सथारग-वत्थ-पाय-कवल-दडग-रओहरण- निसेज्ज-चोलपट्टय-मुहपोत्तिय-पायपुछणाइ-भायण-भडोवहि-उवगरण, न य परिवाय परस्स जपति, ण यावि दोसे परस्स गेण्हति, परववएसेणवि न किंचि गेण्हति, न य विपरि-णामेति कचि[9] जण, न यावि णासेति दिण्ण-सुकय, दाऊण य काऊण य न होइ पच्छाताविए, सविभागसीले सगहोवग्गहकुसले, से तारिसए आराहए वयमिण ॥

७. इम च परदव्वहरणवेरमण-परिरक्खणट्ठयाए पावयण भगवया सुकहिय अत्तहिय पेच्चाभाविक आगमेसिभद्द सुद्ध नेयाउय अकुडिल अणुत्तर सव्वदुक्खपावाण विओसमण[10] ॥

---

१ पत्त (च)।
२. रयोहरण (ख, ग, घ,)।
३ प्रतीत्येति गम्यते (वृ)।
४. तव तेणे य वइ० (क, ख, ग, घ)।
५. ०भोती (क, ग)।
६. सगहणदाण (क, ग, च)।
७ गिह (क, ग)।
८. भत्तपाणं गेण्हइ (ख, घ, च)।
९ किंचि (क)।
१०. विओवसमण (क, ख, ग, घ, च)।

अदत्तादाणवेरमणस्स पंचभावणा-पदं

८ तस्स इमा पंच भावणा ततियस्स वतस्स होंति परदव्वहरणवेरमण-परिरक्खणट्ठयाए ॥

९. पढमं—देवकुल-सभ-प्पवा-आवसह[1]-रुक्खमूल-आराम-कंदरा - आगर-गिरिगुह[2]-'कम्मंत-उज्जाण'[3]-जाणसाल-कुवितसाल-मंडव - सुण्णघर - सुसाण-लेण[4]-आवणे, अण्णंमि य एवमादियंमि दगमट्टिय[5]-बीज-हरित-तसपाण-असंसत्ते अहाकडे फासुए विवित्ते पसत्थे उवस्सए होइ विहरियव्वं ।
आहाकम्म-बहुले य जे से आसित्त-समज्जिओसित्त-सोहिय-छायण-दूमण-लिंपण-अणुलिंपण-जलण-भंडचालणं[6], अंतो बहिं च असंजमो जत्थ वट्टती[7], संजयाण अट्ठा 'वज्जेयव्वे हु उवस्सए'[8] से तारिसए सुत्तपडिकुट्ठे ।
एवं विवित्तवासवसहिसमितिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा, निच्चं अहिकरण-करण-कारावण-पावकम्मविरते दत्ताणुण्णाय[9]-ओग्गहरुई[10] ॥

१०. बितियं—आरामुज्जाण-काणण-वणप्पदेसभागे जं किंचि इक्कडं व कढिणगं व जतुगं व 'परा-मेरा'[11] - कुच्च - कुस - डब्भ - पलाल - मूयग - वल्लय[12]-पुप्फ- फल-तय-प्पवाल-कंद-मूल-तण-कट्ठ-सक्कराइ गेण्हइ सेज्जोवहिस्स अट्ठा, न कप्पए ओग्गहे अदिण्णंमि गेण्हिउं जे । हणिहणि ओग्गहं अणुण्णविय गेण्हियव्वं ।
एवं ओग्गहसमितिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा, निच्चं अहिकरण-करण-कारावण-पावकम्मविरते दत्ताणुण्णाय-ओग्गहरुई ॥

११. ततियं—पीढ-फलग-सेज्जा-संथारगट्ठयाए रुक्खा न छिंदियव्वा, न य छेदणेण[13] भेयणेण य सेज्जा कारेयव्वा ।
जस्सेव उवस्सए वसेज्ज सेज्जं तत्थेव गवेसेज्जा, न य विसमं समं करेज्जा, न निवाय[14]—पवाय-उस्सुकत्तं, न डंसमसगेसु खुभियव्वं, अग्गी धूमो य न कायव्वो ।
एवं संजमबहुले संवरबहुले संवुडबहुले समाहिबहुले धीरे काएण फासयंते सययं अज्झप्पज्झाणजुत्ते समिए एगे चरेज्ज धम्मं ।

---

१. वसहि (क, ख, घ) ।
२ गिरिगुहा (च) ।
३. कम्मंतुज्जाण (क, ग, घ), कम्म उज्जाण (ख, च) ।
४. लयण (ख) ।
५. °मट्टिया (ख, घ) ।
६. एतेषां समाहारद्वन्द्वः विभक्तिलोपश्च दृश्यः (वृ) ।
७. वट्टति (च) ।
८. वज्जेयव्वो हु उवस्सओ (ग) ।
९. दत्तमणुण्णाय (क, ख, ग, घ, च), सर्वत्र ।
१०. °रुती (क, ग) ।
११. परमेर (क), परमेरा (ख), परमेरा (घ) ।
१२. पव्वय (ख, घ), वल्वजः तृणविशेषः (वृ) ।
१३. छेदण (ख, ग, घ, च) ।
१४. निव्वाय (ख) ।

एव सेज्जासमितिजोगेण भावितो भवति अतरप्पा, निच्च अहिकरण-करण-कारावण-पावकम्मविरते दत्ताणुण्णाय-ओग्गहरुई ॥

१२ चउत्थ—साहारणपिडपातलाभे भोत्तव्व सजएण समिय, न सायसूयाहिक, न खद्ध, न वेइय[1], न तुरिय, न चवल, न साहस, न य परस्स पीलाकर सावज्ज, तह भोत्तव्व जह से ततियवय न सीदति ।

साहारणपिडवायलाभे सुहुम 'अदिण्णादाणवय-नियम-वेरमण'[2] ।

एव साहारणपिडवायलाभ समितिजोगेण भावितो भवति अतरप्पा, निच्च अहिकरण-करण-कारावण-पावकम्मविरते दत्ताणुण्णाय-ओग्गहरुती ॥

१३ पचमग—साहम्मिएसु विणओ पउजियव्वो, उवकारण-पारणासु विणओ पउजियव्वो, वायण-परियट्टणासु विणओ पउजियव्वो, दाण-गहण-पुच्छणासु विणओ पउजियव्वो, निक्खमण-पवेसणासु विणओ पउजियव्वो, अण्णेसु य एवमाइएसु वहुसु कारणसएसु विणओ पउजियव्वो । विणओ वि तवो तवो वि धम्मो, तम्हा विणओ पउजियव्वो गुरूसु साहूसु तवस्सीसु य ।

एव विणएण भाविओ भवति अतरप्पा, णिच्च अहिकरण-करण-कारावण-पावकम्मविरते दत्ताणुण्णाय-ओग्गहरुई ॥

निगमण-पदं

१४. एवमिण सवरस्स दार सम्म सवरिय होइ सुपणिहिय 'इमेहि पचहि वि कारणेहि मण-वयण-काय-परिरक्खिएहि ॥

१५ निच्च आमरणत च एस जोगो णेयव्वो धितिमया मतिमया अणासवो अकलुसो अच्छिद्दो अपरिस्सावी असकिलिट्ठो सुद्धो सव्वजिणमणुण्णाओ ॥

१६ 'एव ततिय सवरदार फासिय पालिय सोहिय तीरिय किट्टिय 'आराहिय आणाए अणुपालिय'[3] भवति ।

१७. एव नायमुणिणा भगवया पण्णविय परूविय पसिद्ध सिद्धवरसासणमिणं आघविय'[4] सुदेसिय पसत्थ । ततिय सवरदार समत्त ।

—त्ति वेमि ॥

---

१. वेतित (क) ।

२. अदिण्णादाणविरमणवयनियमण (वृ), अदिण्णादाणवयनियमवेरमण (वृपा) ।

३ अणुपालिय आणाए आराहिय (च) ।

४ एव जाव आघविय (क, ख, ग, घ) ।

नवमं अज्झयणं

चउत्थं संवरदारं

उक्खेव-पद

१ जंबू ! एत्तो य बंभचेरं—उत्तम-तव-नियम-णाण-दंसण-चरित्त-सम्मत्त-विणयमूलं जम[1]-नियम-गुणप्पहाणजुत्तं हिमवंत-महंत-तेयमंतं पसत्थ-गंभीर-थिमित-मज्झं अज्जवसाहुजणाचरितं मोक्खमग्गं विसुद्ध-सिद्धिगति-निलयं 'सासयमव्वाबाहम-पुणब्भवं पसत्थं सोमं सुभं सिवमचलमक्खयकरं'[2] जतिवर-सारक्खियं[3] सुचरियं सुसाहियं[4] नवरि मुणिवरेहिं महापुरिस-धीर[5]-सूर-धम्मिय-धितिमंताण य सया विसुद्धं भव्वं भव्वजणाणुचिण्णं[6] निस्संकियं[7] निब्भयं नित्तुसं निरायासं निरुवलेवं निव्वुतिघरं नियम-निप्पकंपं तवसंजममूलदलिय-णेम्मं पंचमहव्वयसुरक्खियं समितिगुत्तिगुत्तं झाणवरकवाडसुकयं[8] अज्झप्पदिण्णफलिहं संणद्धोत्थइय-दुग्गइपहं[9] सुगतिपहदेसगं[10] लोगुत्तमं च वयमिणं पउमसरतलागपालिभूयं महासगडअरगतुंबभूयं महाविडिमरुक्खक्खंधभूयं महानगरपागारकवाडफलिहभूयं रज्जुपिणद्धो व इंदकेतू विसुद्धणेगगुणसंपिणद्धं ॥

बंभचेरमाहप्प-पदं

२ जंमि य भग्गंमि होइ सहसा सव्वं संभग्ग-मथिय-चुण्णिय-कुसल्लिय-पल्लट्ट-

---

१. यम (ग, घ)।

२ सासयमपुणब्भवं पसत्थं सोमं सुहं सिवमक्खयकरं (वृ), सासयमव्वाबाहमपुणब्भवं पसत्थं सोमं सुहं सिवमचलमक्खयकरं (वृपा)।

३ सरक्खियं (ख)।

४. सुभासियं (ग)।

५. वीर (क, ख, घ)।

६. भव्वजणसमुच्चिण्णं (क, ख)।

७. नीसंकं (ख)।

८ °सुक्कयरक्खणं (च)।

९ सण्णद्धबद्धोच्छइय° (च)।

१० °देसगं च (क, ख, ग, घ, च)।

पडिय-खडिय-परिसडिय-विणासिय विणयसीलतवनियमगुणसमूहं, त वभं भगवत—
गहगण-नक्खत्त-तारगाणं वा जहा उडुपती[1],
मणि-मुत्त-सिल-प्पवाल-रत्तरयणागराण च जहा समुद्दो,
वेरुलिओ चेव जह मणीण,
जह[2] मउडो चेव भूसणाण,
वत्थाण चेव खोमजुयल,
अरविद चेव पुप्फजेट्ठ,
गोसीस चेव चदणाण,
हिमवतो चेव ओसहीण,
सीतोदा चेव निन्नगाण,
उदहीसु जहा सयभुरमणो,
रुयगवरे चेव मडलिकपव्वयाण पवरे,
एरावण इव कुजराण,
सीहो व्व जहा मिगाण पवरो,
पवकाण चेव वेणुदेवे,
धरणो जह पण्णगइदराया[3],
कप्पाण चेव वभलोए,
सभासु य जहा भवे सुहम्मा,
ठितिसु लवसत्तम व्व पवरा,
दाणाण चेव अभयदाण,
किमिराओ चेव कवलाण,
संघयणे चेव वज्जरिसभे,
सठाणे चेव समचउरसे,
झाणेसु य परमसुक्कज्झाणं,
णाणेसु य परमकेवल तु सिद्धं,
लेसासु य परमसुक्कलेस्सा,
तित्थकरो चेव जह मुणीण,
वासेसु जहा महाविदेहे,
गिरिराया चेव मदरवरे,

---

१. उलूपती (क), उडूपती (ग, घ)।
२ जहा (ख, ग)।
३. पण्णइदराया (क, घ, च)।

वणेसु जह नदणवण पवर,
दुमेसु जह जवू सुदसणा वीसुयजसा—जीसे नामेण य अय दीवो,
तुरगवती गयवती रहवती नरवती जह वीसुए चेव राया,
रहिए चेव जहा महारहगते ।
एवमणेगा गुणा अहीणा भवति एक्कमि वभचेरे ।।

३ जमि य आराहियमि आराहिय वयमिण सव्व ।
सील तवो य विणओ य, सजमो य खती गुत्ती मुत्ती ।
तहेव इहलोइय-पारलोइय-जसो य कित्ती य पच्चओ य ।
तम्हा निहुएण वभचेर चरियव्व सव्वओ विसुद्ध जावज्जीवाए जाव सेयट्ठि-सजओत्ति—एव भणिय वय भगवया ।
त च इम—

पचमहव्वय-सुव्वयमूल, समणमणाइलसाहुसुचिण्ण ।
वेरविरामण-पज्जवसाण, सव्वसमुद्द-महोदधितित्थ ।।१।।
तित्थकरेहि सुदेसियमग्ग, नरयतिरिच्छविवज्जियमग्ग ।
सव्वपवित्त-सुनिम्मियसार, सिद्धिविमाण-अवंगुयदार ।।२।।
देवर्नारदनमसियपूय, सव्वजगुत्तममगलमग्ग ।
दुद्धरिस गुणनायगमेक्क, मोक्खपहस्स वडिसकभूयं ।।३।।

जेण सुद्धचरिएण भवइ सुवभणो सुसमणो सुसाहू । स इसी स मुणी स सजए स एव भिक्खू, जो सुद्धं चरति वभचेर ।।

वभचेरथिरीकरण-पदं

४. इम च रति-राग-दोस-मोह[१]-पवड्ढणकर किमज्झ-पमायदोस-पासत्थसीलकरण अब्भगणाणि य तेल्लमज्जणाणि य अभिक्खण कक्खसीसकरचरणवदणधोवण-सवाहण-गायकम्म-परिमद्दण-अणुलेवण-चुण्णवास-धूवण - सरीरपरिमडण-वाउसिक-हसिय-भणिय-नट्टगीयवाइयनडनट्टकजल्लमल्लपेच्छण-वेलवक[२] जाणि य सिंगारागाराणि य अण्णाणि य एवमादियाणि तव-सजम-वंभचेर-घातोवघातियाइ अणुचरमाणेण वभचेरं वज्जेयव्वाइ सव्वकाल । भावेयव्वो भवइ य अतरप्पा इमेहि तव-नियम-सील-जोगेहि निच्चकाल, किं ते ?—
अण्हाणक-ऽदतधोवण[३] - सेयमलजल्लधारण - मूणवय-केसलोय-खम-दम-अचेलग-खुप्पिवास - लाघव - सितोसिण-कट्ठसेज्ज-भूमिनिसेज्ज-परघरपवेस-लद्धावलद्ध-

१ नमोह् (क, च) ।
२. छान्दसत्वाच्च प्रथमाबहुवचनलोपो द्रष्टव्य, वर्जयितव्या इति योगः (वृ) ।
३. अदतधोवण (च) ।

माणावमाण-निंदण-दंसमसगफास-नियम-तवगुणविणयमादिएहिं जहा से थिरतरग होइ वभचेर ॥

५ इम च अवंभचेरविरमण[1]-परिरक्खणट्ठयाए पावयण भगवया सुकहिय अत्तहित पेच्चाभाविक आगमेसिभद्द सुद्ध नेयाउय अकुडिलं अणुत्तर सव्वदुक्खपावाण विओसवण ॥

वभचेरस्स पंचभावणा-पदं

६ तस्स इमा पच भावणाओ चउत्थवयस्स होंति अवभचेरवेरमण-परिरक्खणट्ठयाए ॥

७ पढम—सयणासण - घरदुवारअगण - आगास - गवक्ख - साल - अभिलोयण-पच्छवत्थुक-पसाहणकण्हाणिकावकासा, अवकासा जे य वेसियाणं, अच्छति य जत्थ इत्थिकाओ अभिक्खण मोह-दोस-रति-रागवड्ढणीओ, कहिंति य कहाओ वहुविहाओ, ते हु वज्जणिज्जा। इत्थिसंसत्त-सकिलिट्ठा, अण्णे वि य एवमादी अवकासा ते हु वज्जणिज्जा जत्थ मणोविब्भमो 'वा भगो वा'[2] भसणा वा अट्ट रुद्द च होज्ज झाण त त वज्जेज्ज वज्जभीरू अणायतण अतपतवासी।
एवमसरात्तवासवसहीसमितिजोगेण भावितो भवति अतरप्पा, आरतमण-विरयगामधम्मे जितेदिए वभचेरगुत्ते ॥

८ वितिय—नारीजणस्स मज्झे न कहेयव्वा कहा—विचित्ता विव्वोय-विलास-सपउत्ता हास-सिंगार-लोइयकह व्व मोहजणणी, न आवाह-विवाह-वरकहा,[3] इत्थीण वा सुभग-दुब्भग[4]-कहा, चउसट्ठिं[5] च महिला गुणा, न वण्ण-देस-जाति-कुल-रूव-नाम-नेवत्थ-परिजणकहव्व इत्थियाणं, अण्णा वि य एवमादियाओ कहाओ सिंगार-कलुणाओ तव-सजम-वभचेर-घातोवघातियाओ अणुचरमाणेण वभचेर न कहेयव्वा, न सुणेयव्वा, न चिंतेयव्वा।
एव इत्थीकहविरतिसमितिजोगेण भावितो भवति अतरप्पा, आरतमण-विरयगामधम्मे जितेदिए वभचेरगुत्ते ॥

९ ततिय—नारीण हसिय - भणिय - चेट्ठिय - विप्पेक्खिय-गइ - विलास-कीलिय, विव्वोइय-नट्ट-गीत-वाइय-सरीरसठाण- वण्ण - कर - चरण - नयण - लावण्ण-रूव-जोवण्ण-पयोहर-अधर-वत्थ-अलकार-भूसणाणि य, गुज्झोकासियाइ[6], अण्णाणि य एवमादियाइ तव-सजम-वभचेर-घातोवघातियाइ अणुचरमाणेण वंभचेर न चक्खुसा न मणसा न वयसा पत्थेयव्वाइ पावकम्माइ।

---

१. वभचेर० (क, ग, घ), वभविरमण (ख)।
२ व्व भंगो व्व (क)।
३. ०कहाविव (क, ख, ग, घ, च)।
४ दुभग (ख, ग, घ)।
५. चोयट्ठि (ख, ग, घ)।
६. गुज्झोवकासियाइ (क, ख, ग, घ, च)।

एव इत्थीरूवविरतिसमितिजोगेण भावितो भवति अतरप्पा, आरतमण-विरयगामधम्मे जितेदिए वंभचेरगुत्ते ॥

१०. चउत्थ—पुव्वरय-पुव्वकीलिय-पुव्वसग्गथ[1]-गथ-सथुया जे ते आवाह-विवाह-चोल्लकेसु य तिथिमु जण्णेसु उस्सवेसु य सिगारागार-चारुवेसाहिं इत्थीहिं[2] हाव-भाव-पललिय - विक्खेव[3] - विलास-सालिणीहि अणुकूलपेम्मिकाहिं[4] सद्धि अणुभूया सयण-सपओगा, उदुसुह-वरकुमुम-मुरभिचदण-सुगधिवर[5]-वास-धूव-सुहफरिस-वत्थ-भूसणगुणोववेया, रमणिज्जाओज्ज-गेज्ज[6]-पउरनड-नट्टक-जल्ल-मल्ल-मुट्ठिक-वेलवग - कहग - पवग - लासग - आइक्खग - लख - मंख- तूणइल्ल-तुववीणिय-तालायर-पकरणाणि य वहूणि महुरसर-गीत-सुस्सराइ, अण्णाणि य एवमाइयाइ तव-सजम-वभचेर-घातोवघातियाइ अणुचरमाणेण वंभचेर न ताइ समणेण लब्भा दट्ठु न कहेउं नवि सुमरिउ जे ।

एव पुव्वरयपुव्वकीलियविरतिसमितिजोगेण भावितो भवति अतरप्पा, आरयमण-विरतगामधम्मे जिइदिए वंभचेरगुत्ते ॥

११. पचमग—आहारपणीय-निद्धभोयण-विवज्जए सजते सुसाहू ववगयखीर-दहि-सप्पि-नवनीय-तेल्ल-गुल खड-मच्छडिक-महु-मज्ज-मस-खज्जक-विगति-परिचत्त-कयाहारे न दप्पण[7] न वहुसो न नितिक न सायसूपाहिक न खद्ध, तहा भोत्तव्व जह से जायामाता य भवति, न य भवति विब्भमो भसणा य धम्मस्स ।

एव पणीयाहारविरतिसमितिजोगेण भावितो भवति अतरप्पा, आरयमण-विरतगामधम्मे जिइदिए वंभचेरगुत्ते ॥

निगमण-पदं

१२. एवमिण सवरस्स दार सम्म सवरिय होइ सुप्पणिहित इमेहिं पचहि वि कारणेहि मण-वयण-काय-परिरक्खिएहि ॥

१३ णिच्चं आमरणत च एस[8] जोगो णेयव्वो[9] धितिमता मतिमता अणासवो अकलुसो अच्छिद्दो अपरिस्सावी[10] असकिलिट्ठो सुद्धो सव्वजिणमणुण्णाओ ॥

---

१ °सगथ (ख, ग, घ, च) ।
२. × (ख,ग,घ च), स्त्रीभिरिति गम्यते (वृ) ।
३ विच्छेव (क, ख, घ, च) ।
४. °पेम्मकाहि (क) ।
५. मुगध° (क, ख, ग, घ, च) ।
६ गेय (ग) ।
७ आहार भुजीतेतिशेष (वृ) ।
८. एसो (क, ख, ग, घ) ।
९. णायव्वो (ख, घ) ।
१०. अपरिस्सादी (क); अपरिस्साती (ख,घ,च) ।

१४ एवं[1] चउत्थं सवरदारं फासित पालित सोहित तीरित किट्टित आराहित आणाए अणुपालित भवति ॥

१५ एव नायमुणिणा भगवया पण्णवियं परूविय पसिद्ध सिद्धवरसासणमिण आघविय सुदेसित पसत्थ । चउत्थ सवरदार समत्त ।

—त्ति बेमि ॥

———

१. एय (क, ख, घ) ।

दसमं अज्झयणं

पंचमं संवरदारं

उक्खेव-पद

१ जंबू ! अपरिग्गहो[1] संवुडे य समणे आरंभ-परिग्गहातो विरते, विरते कोहमाणमायालोभा।

एगे असंजमे। दो चेव राग-दोसा। तिण्णि य दंडा, गारवा य, गुत्तीओ, तिण्णि[2] य विराहणाओ। चत्तारि कसाया, झाणा, सण्णा, विकहा तहा य हुंति चउरो। पंच य किरियाओ,समिति-इंदिय-महव्वयाइं च। छज्जीवनिकाया,छच्च लेसाओ। सत्त भया। अट्ठ य मया। नव चेव य बंभचेरगुत्ती। दसप्पकारे य-समणधम्मे। एक्कारस य उवासगाणं[3]। बारस य भिक्खुपडिमा। किरियठाणा य। भूयगामा। परमाधम्मिया। गाहासोलसया। असंजम-अबंभ-णाय-असमाहिठाणा। सबला। परिसहा। सूयगडज्झयण-देव-भावण-उद्देस-गुण-पकप्प-पावसुत-मोहणिज्जे। सिद्धातिगुणा य। जोगसंगहे, 'सुरिंदा। तेत्तीसा आसातणा'[4]। [आदिं[5] एक्काइयं करेत्ता एक्कुत्तरियाए[6] वड्ढिएसु तीसातो जाव उ भवे तिकाहिका[7]]

---

१ अपरिग्गह (क, ग, घ, च)।

२ तिन्नि तिन्नि (क, ग, घ, च)।

३. प्रतिमा भवन्तीति गम्यम् (वृ)।

४ तेत्तीसा आसातणा सुरिंदा (क, ख, ग, घ, च); आदर्शेषु यद्यपि 'तेत्तीसा आसातणा सुरिंदा' एवं पाठो दृश्यते, किन्तु अर्थमीमांसया नैव सङ्गच्छते। 'जोगसंगहे सुरिंदा' एष क्रमः स्यात् तदार्थसङ्गतिर्जायते। यथा—'तिण्णि य दंडा गारवा य गुत्तीओ, तिण्णि य विराहणाओ' एवं एकस्यां सङ्ख्यायामनेकेषां विषयाणामुल्लेखोस्ति तथा द्वात्रिंशत्सङ्ख्यायामपि द्वयोर्विषयोरुल्लेखोस्ति, द्रष्टव्यमिह 'समवाओ' (३२।१,२) यथा—'बत्तीसं जोगसंगहा पण्णत्ता' तथा 'बत्तीसं देविंदा पण्णत्ता'। अत्र 'देविंदा' इति पदस्य स्थाने 'सुरिंदा' इति पदं प्रयुक्तमस्ति।

५ एएसु त्ति वाक्यशेषः (वृ)।

६ वृद्धया इति गम्यते (वृ)।

७ असौ पाठो व्याख्यांशः प्रतीयते।

विरती-पणिहोसु अविरतीसु य, एवमादिसु बहूसु ठाणेसु जिणपसत्थेसु अवितहेसु सासयभावेसु अवट्ठिएसु संक कंखं निराकरेत्ता सद्दहते सासणं भगवतो अणियाणे अगारवे अलुद्धे अमूढमण-वयण-कायगुत्ते ॥

२. जो सो वीरवरवयणविरतिपवित्थर-बहुविहप्पकारो सम्मत्तविसुद्धमूलो धितिकदो विणयवेइओ निग्गततिलोक्कविपुलजसनिचियपीणपीवरसुजातखधो पचमहव्वयविसालसालो भावणतयंत[1]-ज्झाण-सुभजोग-नाण-पल्लववरकुरधरो बहुगुणकुसुमसमिद्धो सीलसुगंधो अणण्हयफलो[2] पुणो य मोक्खवरबीजसारो मंदरगिरि-सिहरचूलिका इव इमस्स मोक्खवर-मोत्तिमग्गस्स सिहरभूओ सवरवरपायवो। चरिम सवरदार ॥

अकप्पदव्वजाय-पदं

३ जत्थ न कप्पइ गामागर-नगर-खेड-कव्वड-मडब-दोणमुह-पट्टणासमगय च किंचि अप्प व बहु व अणु व थूल व तस-थावरकाय-दव्वजाय मणसा वि परिघेत्तु।[3] न हिरण्ण-सुवण्ण-खेत्त-वत्थु, न दासी-दास-भयक-पेस-हय-गय-गवेलग व, न जाण-जुग्ग-सयणासणाइं, न छत्तक न कुडिया[4] 'न पाणहा[5] न पेहुण-वीयण-तालियटका[6] ॥

४ न यावि अय-तउय-तव-सीसक-कंस-रयत-जातरूव-मणि-मुत्ताधारपुडक-[7] संख-दतमणि-सिंग-सेल[8]-काय-वइर[9]-चेल-चम्म-पत्ताइ महारिहाइं परस्स अज्झोववायलोभजणणाइ परियड्ढिउ गुणवओ[10] ॥

५ न यावि पुप्फ-फल-कद-मूलादियाइ, सणसत्तरसाइं सव्वधण्णाइ तिहिं वि जोगेहिं परिघेत्तु ओसहभेसज्जभोयणट्ठयाए सजएण। कि कारण ?— अपरिमितणाणदसणधरेहिं सील-गुण-विणय-तव-सजमनायकेहिं तित्थयरेहिं

---

१ भावणतय (घ, वृ), °तयत (वृपा)।
२. अणण्हव° (वृ)।
३. परिघेत्तू (क, ख, ग, घ)।
४ कोडिका (ख, घ)।
५. नोवाहणा (ख), न वाहणा (ग, च), नोपाणहा (क्व)।
६ न कल्पते परिग्रहीतुमिति शेष.।
७. °हारपुलक (क)।
८. लेस (वृपा)।
९. वर (क, ख, ग, घ, च, वृ), एतत् पद वृत्तिरचनात् पूर्वमेव विपर्यस्त जातम्। वृत्तिकृत्ता 'वर' इति पद लब्धम्, तेन 'काचवरः प्रधानकाच' इति व्याख्यातम्। वस्तुतोत्र 'वइर' इति पदमासीत्। लिपिदोषेण तद् विपर्ययो जात.। निसीहज्झयणस्स एकादशोद्देशे प्रथमे सूत्रे 'कायपायाणि वा' 'वइरपायाणि वा' इति पदद्वयं सुस्पष्टमस्ति। अत्रापि पात्रप्रकरणे तथैव युज्यते। आचारचूलाया पात्रैषणाध्ययने 'वइर' पदस्य उल्लेखो नास्ति।
१०. गुणवयाइ (क)।

सव्वजग-जीव-वच्छलेहिं तिलोयमहिएहिं जिणवरिंदेहिं एस जोणी जगाणं दिट्ठा न कप्पते[1] जोणिसमुच्छेदोत्ति, तेण वज्जंति समणसीहा ॥

असण्णिहि-पदं

६. जंपि य ओदण-कुम्मास गंज-तप्पण-मंथु-भुज्जिय-पलल-सूप-सक्कुलि-वेढिम-वर-सरक[2]-चुण्णकोसग-पिंड-सिहरिणि-वट्ट-मोयग-खीर-दहि-सप्पि-नवनीत-तेल्ल-गुड[3]-खंड-मच्छंडिय-मधु-मज्ज-मंस-खज्जक वंजणविधिमादिकं पणीयं उवस्सए परघरे व रण्णे न कप्पति तंपि सण्णिहिं काऊण[4] सुविहियाणं ॥

अकप्पभोयण-पदं

७ जंपि य उद्दिट्ठ-ठविय-रचितग-पज्जवजात-पकिण्ण-पाउकरण-पामिच्चं, मीसक-कीयकड-पाहुडं वा, दाणट्ठ-पुण्णपगडं, समण-वणीमगट्ठयाए व कयं, पच्छाकम्मं पुरेकम्मं नितिकं मक्खियं अतिरित्तं मोहरं चेव सयगाहमाहडं[5] मट्टिओवलित्तं, अच्छेज्जं चेव अणीसट्ठं, जं तं तिहीसु[6] जण्णेसु ऊसवेसु य अंतो व्व बहिं व होज्ज समणट्ठयाए ठवियं, हिंसा-सावज्ज-संपउत्तं न कप्पति तंपि य परिघेत्तुं ॥

कप्पभोयण-पदं

८ अह केरिसयं पुणाइ कप्पति ?
जं तं एक्कारसपिंडवायसुद्धं किणण-हणण-पयण-कयकारियाणुमोयण-नव-कोडीहिं सुपरिसुद्धं, दसहि य दोसेहिं विप्पमुक्कं, उग्गम-उप्पायणेसणासुद्धं, ववगय-चुय-चइय[7]-चत्तदेहं च फासुयं च ववगयसंजोगमणिंगालं, विगयधूमं, छट्ठाण-निमित्तं, छक्कायपरिरक्खणट्ठा हणिंहणिं[8] फासुकेण भिक्खेण वट्टियव्वं ॥

रोगायंकेवि असण्णिहि-पद

९ जंपि य समणस्स सुविहियस्स उ रोगायंके बहुप्पकारंमि समुप्पण्णे, वाताहिक-पित्तसिंभाइरित्तकुविय-तहसण्णिवायजाते[9], उदयपत्ते उज्जल-बल-विउल-तिउल-कक्खड-पगाढ-दुक्खे, असुभ कडुय-फरुस-चंडफलविवागे महब्भये जीवियंतकरणे सव्वसरीर-परितावणकरे न कप्पति[10] तारिसे वि तह अप्पणो परस्स वा ओसह-भेसज्जं भत्त-पाणं च तंपि सण्णिहिकयं ॥

---

१ कप्पती (क, ग, घ, च)।
२. विसारक (क)।
३ गुल (ग, घ, च)।
४ काउं (ग)।
५ सयगाह° (घ, च)।
६ तिहिसु (क, च)।
७. चयिय (क); चविय (घ)।
८ हणिं-हणिं (क, ग, घ)।
९ °जाते व्व (क, ग, घ, च)।
१० कप्पती (क)।

उवगरणधारणविहि-पदं

१० जपि य समणस्स सुविहियस्स तु पडिग्गहधारिस्स भवति भायण-भडोवहि-उवगरणं पडिग्गहो पायबधण पायकेसरिया पायठवण च पडलाइ तिण्णेव, रयत्ताण च गोच्छओ, तिण्णेव य पच्छाका, रओहरण-चोलपट्टक-मुहणंतकमादीय। एय पि य सजमस्स उववूहणट्ठयाए वायायव-दस-मसग-सीय-परिरक्खणट्ठयाए उवगरण रागदोसरहिय परिहरियव्वं सजएण णिच्च, पडिलेहण-पप्फोडण-पमज्जणाए अहो य राओ य अप्पमत्तेण होइ सतत निक्खिवियव्व च गिण्हियव्व च भायण-भडोवहि-उवगरण ॥

समणस्स सरूवनिरूवण-पदं

११. एव से सजते विमुत्ते निस्सगे निप्परिग्गहरुई निम्ममे निन्नेह-बधणे सव्वपावविरते वासीचदण-समाणकप्पे सम-तिण[1]-मणि-मुत्त[2]-लेट्ठु-कचण-समे समे य माणावमाणणाए समियरए समित-रागदोसे, समिए समितीसु, सम्मदिट्ठी, समे य जे सव्वपाणभूतेसु, से हु समणे, सुयधारते उज्जुए[3] सजते सुसाहू, सरण सव्वभूयाण, सव्वजगवच्छले सच्चभासके य, ससारते ठिते य, ससारसमुच्छिण्णे सतत मरणाणुपारए, पारगे[4] य सव्वेसि ससयाणं, पवयणमायाहिं अट्ठहिं अट्ठकम्मगठीविमोयके, अट्ठमयमहणे ससमयकुसले य भवति सुह-दुक्ख-निव्विसेसे, अब्भितर-वाहिरमि सया तवोवहाणमि य सुट्ठुज्जुत्ते, खते दते य हियनिरते[5], ईरियासमिते भासासमिते एसणासमिते आयाण-भड-मत्त-निक्खेवणासमिते उच्चार-पासवण-खेल-सिघाणजल्ल-परिट्ठावणियासमिते मणगुत्ते वइगुत्ते कायगुत्ते गुत्तिदिए गुत्तबभयारि चाई[6] लज्जू धन्ने तवस्सी खतिखमे जितिदिए सोधिए[7] अणियाणे अवहिल्लेस्से अममे अकिंचणे छिण्णगथे[8] निरुवलेवे,

सुविमल-वरकंसभायणं व[9] मुक्कतोए,
सखे विव निरगणे विगय-राग-दोस-मोहे,
कुम्मो व[10] इदिएसु गुत्ते,
जच्चकंचण[11] व जायरूवे,
पुक्खरपत्त व निरुवलेवे,

---

१. तण (क)।
२. मुत्ते (ख)।
३ उज्जते (क्व); उद्यतो वा (वृ)।
४. पारके (क, ख, घ, च)।
५. घिइनिरते (वृपा)।
६ चागी (ख, घ, च)।
७ सोधिके (क, ख, घ, च)।
८ छिण्णसोए (वृपा)।
९ चेव (क, ख, ग, घ, च)।
१० इव (क, ग)।
११. °कचणग (क, ग, घ)।

चदो इव सोमभावयाए[1],
सूरो व्व दित्ततेए,
अचले जह मदरे गिरिवरे,
अक्खोभे सागरो व्व थिमिए,
पुढवीव[2] सव्वफाससहे,
तवसावि[3] य भासरासिछन्ने व्व जाततेए,
जलियहुयासणो विव तेयसा जलते,
गोसीसचदण पिव सीयले सुगधे य,
हरयो[4] विव समियभावे,
उग्घसिय सुनिम्मल व आयसमडलतल पागडभावेण सुद्धभावे,
सोडीरे कुजरे[5] व्व,
वसभे व्व जायथामे,
'सीहे वा'[6] जहा मिगाहिवे होति दुप्पधरिसे,
सारयसलिल व सुद्धहियए,
भारडे चेव अप्पमत्ते,
खग्गिविसाण व एगजाते,
खाणु चेव उड्ढकाए,
सुन्नागारे व्व अप्पडिकम्मे,
सुन्नागारावणस्सतो निवायसरणप्पदीवज्भाणमिव निप्पकपे,
जहा खुरो चेव एगधारे,
जहा अही चेव एगदिट्ठी,
आगास चेव निरालवे,
विहगे[7] विव सव्वओ विप्पमुक्के,
कय-परनिलये जहा चेव उरए,
अपडिवद्धे अनिलो व्व,
जीवो व्व अप्पडिहयगती,

---

१. सोमताए (वृ), सोमभावयाए (वृपा), ओवाइयसुत्ते (सू० २७) 'चदो इव सोमलेसा' तथा कप्पसुत्ते 'चदो इव सोमलेसे' आयारो तह आयारचूला परिशिष्ट ३, पृ० १६ तथा जवुद्दीवपण्णत्तीए 'चदो इव सोमदसणे' इति पाठो विद्यते, आयारो तह आयारचूला परिशिष्ट ३, पृ० १७ ।

२. पुढवी विव (घ, च) ।

३ ०इ (ख, ग, घ, च) ।

४ हरतो (ख, घ, च) ।

५ कुजरो (ग, च) ।

६ सीहे व्व (क), सीहो वा (ख, घ) सीहो व्व (च) ।

७. विहगे (ख, च) ।

गामे-गामे एगराय, नगरे-नगरे य पचराय दूइज्जते य, जितिदिए जितपरीसहे निब्भए[1] विऊ[2] सच्चित्ताचित्तमीसकेहिं दव्वेहिं विराय गते, सचयतो विरए, मुत्ते लहुके निरवकंखे जीवियमरणासविप्पमुक्के, निस्सधि निव्वण चरित्त धीरे काएण फासयते, सतत अज्झप्पझाणजुत्ते निहुए[3] एगे चरेज्ज धम्मं ॥

१२. इम च परिग्गहवेरमण-परिरक्खणट्ठयाए पावयण भगवया सुकहिय अत्तहिय पेच्चाभाविकं आगमेसिभद्द सुद्ध नेयाउय अकुडिल अणुत्तर सव्वदुक्खपावाण विओसमण ॥

अपरिग्गहस्स पंचभावणा-पदं

१३ तस्स इमा पचभावणाओ चरिमस्स वयस्स होंति परिग्गहवेरमण-रक्खणट्ठयाए ॥

१४ पढम—सोइदिएण सोच्चा सद्दाइ मणुण्ण-भद्दगाइ, कि ते ?—

वरमुरय-मुइग-पणव-दद्दुर-कच्छभि- वीणा-विपची - वल्लयि-वद्धीसक-सुघोस-नदि-सूसरपरिवादिणी-वस- तूणक - पव्वक-तती - तल-ताल-तुडियनिग्घोस-गीय-वाइयाइ, नडनट्टक-जल्ल-मल्ल-मुट्ठिक-वेलवक-कहक-पवक-लासग-आइक्खक-लख-मख-तूणइल्ल-तुबवीणिय-तालायर-पकरणाणि य, बहूणि महुरसर-गीत-सुस्सराइं, कची-मेहला[4]- कलाव - पतरक- पहेरक-पायजालग-घटिय-खिखिणि-रयणोरुजालय-छुद्दिय - नेउर-चलणमालिय - कणगनियल- जालग-भूसणसद्दाणि, लीलचकम्ममाणाणुदीरियाइ, तरुणीजणहसिय भणिय-कलरिभित-मजुलाइ, गुणवयणाणि य बहूणि महुरजणभासियाइ, अण्णेसु य एवमादिएसु सद्देसु मणुण्ण-भद्दएसु न तेसु समणेण सज्जियव्व न रज्जियव्व न गिज्झियव्व न मुज्झियव्व न विणिग्घाय आवज्जियव्व न लुभियव्व न तुसियव्व न हसियव्व न सइ च मइ च तत्थ कुज्जा ।

पुणरवि सोइदिएण सोच्चा सद्दाइ अमणुण्ण-पावकाइ, किं ते ?—

अक्कोस-फरुस - खिसण- अवमाणण - तज्जण - निब्भछण - दित्तवयण-तासण-उक्कूजिय-रुण्ण-रडिय - कदिय - निग्घुट्ठरसिय-कलुणविलवियाइ[5], अण्णेसु य एवमादिएसु सद्देसु अमणुण्ण-पावएसु न तेसु समणेण रूसियव्व न हीलियव्व न निंदियव्व न खिसियव्व न छिंदियव्व न भिंदियव्व न वहेयव्व न दुगुछावत्तिया व लब्भा उप्पाएउ ।

एव सोतिंदियभावणाभावितो भवति अतरप्पा, मणुण्णाऽमणुण्ण-सुब्भि-दुब्भि-रागदोस-पणिहियप्पा साहू मण-वयण-कायगुत्ते संवुडे पणिहितिंदिए चरेज्ज धम्म ॥

---

१ निब्भओ (ग) ।

२ विउसे (च), विसुद्ध (वृपा) ।

३ निहुते (क), निहुके (ख, घ, च) ।

४ मेहल (क, ग, घ, च) ।

५ करुण° (क) ।

१५. वितियं—चक्खुइंदिएण पासिय रूवाणि मणुण्णाइ भद्दकाइं, सचित्ताऽचित्त-मीसकाइं—कट्ठे पोत्थे य चित्तकम्मे लेप्पकम्मे सेले य दतकम्मे य, पचहिं वण्णेहि अणेगसंठाण-सठियाइं, गंथिम-वेढिम-पूरिम-संघातिमाणि य मल्लाइ बहुविहाणि य अहिय नयण-मणसुहकराइ, वणसडे पव्वते य गामागरनगराणि य खुद्दिय-पुक्खरणि-वावी-दीहिय-गुंजालिय-सरसरपंतिय-सागर-विलपतिय-खातिय[1]-नदि-सर-तलाग-वप्पिणी-फुल्लुप्पल-पउम[2]-परिमंडियाभिरामे, अणेग-सउणगण-मिहुणविचरिए, वरमडव-विविहभवण-तोरण-चेतिय-देवकुल-सभ-प्पवावसह-सुकयसयणासण-सीय-रह-सगड-जाण-जुग्ग-संदण-नरनारिगणे य-सोमपडिरूवदरिसणिज्जे, अलकियविभूसिए, पुव्वकयतवप्पभावसोहग्गसंपउत्ते, नड-नट्टग-जल्ल-मल्ल-मुट्ठिय-वेलबग-कहक-पवग-लासग-आइक्खग-लख-मख-तूणइल्ल-तुववीणिय-तालायर-पकरणाणि य वहूणि सुकरणाणि, अण्णेसु य एवमादिएसु रूवेसु मणुण्ण-भद्दएसु न तेसु समणेण सज्जियव्व न 'रज्जियव्व न गिज्झियव्व न मुज्झियव्व न विणिग्घायं आवज्जियव्वं न लुभियव्वं न तुसियव्वं न हसियव्वं न सइं'[3] च मइं च तत्थ कुज्जा ।

पुणरवि चक्खिदिएण पासिय रूवाइं अमणुण्ण-पावकाइ, किं ते ?—

गंडि-कोढिक-कुणि-उदरि-कच्छुल्ल-पइल्ल-कुज्ज-पगुल-वामण-अंधिल्लग-एग-चक्खुविणिहय-सप्पिसल्लग-वाहिरोगपीलियं, विगयाणि य मयककलेवराणि[4], सकिमिणकुहिय च दव्वरासिं, अण्णेसु य एवमादिएसु अमणुण्ण-पावतेसु न तेसु समणेण रूसियव्व[5] •न हीलियव्वं न निंदियव्वं न खिसियव्वं न छिंदियव्व न भिंदियव्व न वहेयव्वं° न दुगुंछावत्तिया व लब्भा उप्पातेउ ।

एव चक्खिदियभावणाभावितो भवति अतरप्पा[6], •मणुण्णाऽमणुण्ण-सुब्भि-दुब्भि-रागदोस-पणिहियप्पा साहू मण-वयण-कायगुत्ते सवुडे पणिहितिंदिए° चरेज्ज धम्मं ।।

१६. ततिय—घाणिंदिएण अग्घाइय गधाति मणुण्ण-भद्दगाइं, किं ते ?—

जलय-थलय-सरसपुप्फफलपाणभोयण-कोट्ठ[7]-तगर-पत्त-चोय-दमणक-मरुय-एला-रस-पिक्कमसि[8]-गोसीस-सरसचदण-कप्पूर-लवग-अगरु-कुकुम-कक्कोल-उसीर-सेयचदण-सुगधसारगजुत्तिवरधूववासे उउय[9]-पिंडिम-णिहारिम-गधिएसु, अण्णेसु

---

१. खादिय (क, ग) ।
२. पउमसड (ख, घ) ।
३. रज्जियव्व जाव न सइ (क, ख, ग, घ) ।
४. मतक° (ख, घ, च) ।
५. स० पा०—रूसियव्व जाव न ।
६. स० पा०—अतरप्पा जाव चरेज्ज ।
७. कुट्ठ (क, ग) ।
८. पक्कमंसि (ख) त्रिक्कमंसि (च) ।
९. उदुय (क, घ) ।

य एवमादिएसु गंधेसु मणुण्ण-भद्दएसु न तेसु समणेण सज्जियव्वं[1] •न रज्जियव्वं न गिज्झियव्वं न मुज्झियव्वं न विणिग्घायं आवज्जियव्वं न लुभियव्वं न तुसियव्वं न हसियव्वं° न सतिं च मइं च तत्थ कुज्जा ।

पुणरवि घाणिंदिएण अग्घाइय गंधाणि अमणुण्ण-पावकाइं, किं ते ?—

अहिमड-अस्समड-हत्थिमडगोमड-विग-सुणग-सियाल-मणुय-मज्जार-सीह-दीविय-मयकुहियविणट्ठकिविण-बहुदुरभिगंधेसु, अण्णेसु य एवमादिएसु गंधेसु अमणुण्ण-पावएसु न तेसु समणेण रूसियव्वं न हीलियव्वं[2] •न निंदियव्वं न खिंसियव्वं न छिंदियव्वं न भिंदियव्वं न वहेयव्वं न दुगुंछावत्तिया व लब्भा उप्पाएउं ।

एवं घाणिंदियभावणाभावितो भवति अंतरप्पा, मणुण्णाऽमणुण्ण-सुब्भि-दुब्भि-रागदोस-पणिहियप्पा साहू मण-वयण-कायगुत्ते संवुडे° पणिहिएदिए[3] चरेज्ज धम्मं ॥

१७ चउत्थं—जिब्भिदिएण साइय रसाणि उ मणुण्ण-भद्दकाइं, किं ते ?—

उग्गाहिम-विविहपाण-भोयण-गुलकय-खंडकय-तेल्लघयकय-भक्खेसु बहुविहेसु लवणरससंजुत्तेसु महु-मंस-बहुप्पगारमज्जिय-निट्ठाणग-दालियंब-सेहंब-दुद्ध-दहि-सरय-मज्ज-वरवारुणी-सीहु-काविसायणक-साकट्ठारस-बहुप्पगारेसु भोयणेसु य मणुण्णवण्ण-गंध-रस-फास-बहुदव्वसंभितेसु, अण्णेसु य एवमादिएसु रसेसु मणुण्ण-भद्दएसु न तेसु समणेण सज्जियव्वं[4] •न रज्जियव्वं न गिज्झियव्वं न मुज्झियव्वं न विणिग्घायं आवज्जियव्वं न लुभियव्वं न तुसियव्वं न हसियव्वं° न सइं च मइं च तत्थ कुज्जा ।

पुणरवि जिब्भिदिएण सायिय रसातिं अमणुण्ण-पावगाइं, किं ते ?—

अरस-विरस-सीय-लुक्ख-णिज्जप्प[5]-पाण-भोयणाइं दोसीण-वावण्ण-कुहिय-पूइय-अमणुण्ण-विणट्ठ-पसूय-बहुदुब्भिगंधियाइं तित्त-कडुय-कसाय-अंबिल-रस-लिंडनीर-साइं, अण्णेसु य एवमाइएसु रसेसु अमणुण्ण-पावएसु न तेसु समणेण रूसियव्वं[6] •न हीलियव्वं न निंदियव्वं न खिंसियव्वं न छिंदियव्वं न भिंदियव्वं न वहेयव्वं न दुगुंछावत्तिया व लब्भा उप्पाएउं ।

एवं जिब्भिदियभावणाभावितो भवति अंतरप्पा, मणुण्णाऽमणुण्ण-सुब्भि-दुब्भि-रागदोस-पणिहियप्पा साहू मण-वयण-कायगुत्ते संवुडे पणिहितिंदिए° चरेज्ज धम्मं ॥

१८. पंचमगं—फासिंदिएण फासिय फासाइं मणुण्ण-भद्दकाइं, किं ते ? —

---

१. सं० पा०—सज्जियव्वं जाव न सतिं ।
२. सं० पा०—हीलियव्वं जाव पणिहिएदिए ।
३. पिंहियपचेंदिए (ख) ।
४. सं० पा०—सज्जियव्वं जाव न सइं ।
५. णिज्जंप (क, ख, ग) ।
६. सं० पा०— रूसियव्वं जाव चरेज्ज ।

दगमडव-हार-सेयचदण- सीयलविमलजल - विविहकुसुमसत्थर-ओसीर - मुत्तिय-मुणाल-दोसिणा पेहुणउक्खेवग-तालियंट-वीयणग-जणियसुहसीयले य पवणे गिम्हकाले, सुहफासाणि य बहूणि सयणाणि आसणाणि य, पाउरणगुणे य सिसिरकाले अंगार-पतावणा य आयव-निद्ध-मउय-सीय-उसिण-लहुया य जे उदुसुहफासा अंगसुह-निव्वुइकरा ते[1], अण्णेसु य एवमादिएसु फासेसु मणुण्ण-भद्दएसु न तेसु समणेण सज्जियव्व न रज्जियव्व न गिज्झियव्वं न मुज्झियव्वं न विणिग्घाय आवज्जियव्व न लुभियव्वं न अज्झोववज्जियव्वं[2] न तुसियव्वं न हसियव्वं न सतिं च मतिं च तत्थ कुज्जा ।

पुणरवि फासिदिएण फासिय फासाति अमणुण्ण-पावकाइ, किं ते ?—

अणेगवध-वह-तालणकण-अतिभारारोहणए, अगभजण-सूईनखप्पवेस-गाय-पच्छणण[3]-लक्खारस-खारतेल्ल-कलकलतउ-सीसक[4]-काललोहसिचण - हडिबंधण-रज्जु-निगल-सकल- हत्थडुय[5] - कुभिपाक-दहण - सीहपुच्छण - उब्बंधण - सूलभेय-गयचलणमलण -करचरणकण्णनासोट्ठसीसछेयण[6]-जिब्भछण - वसणनयणहियय-दतभंजण[7]-जोत्तलयकसप्पहार - पादपण्हिजाणुपत्थरनिवाय - पीलण - कविकच्छु-अगणि-विच्छुयडक्क-वायातवदंसमसकनिवाते, 'दुट्ठणिसेज्जा दुनिसीहिया'[8] कक्खड[9]-गुरु-सीय-उसिण-लुक्खेसु बहुविहेसु, अण्णेसु य एवमाइएसु फासेसु अमणुण्ण-पावकेसु न तेसु समणेण रूसियव्व न हीलियव्वं न निंदियव्वं न गरहियव्व न खिसियव्वं न छिदियव्व न भिदियव्व न वहेयव्वं न दुगुंछावत्तियं च लब्भा उप्पाएउं ।

एव फासिदियभावणाभावितो भवति अंतरप्पा, मणुण्णामणुण्ण-सुब्भि-दुब्भि-रागदोस-पणिहियप्पा साहू मण-वयण-कायगुत्ते सवुडे पणिहितिंदिए चरेज्ज धम्मं ॥

निगमण-पदं

१९. एवमिणं सवरस्स दार सम्मं सवरियं होइ सुप्पणिहिय इमेहिं पचहिवि कारणेहिं मण-वयण-काय-परिरक्खिएहिं ॥

२०. निच्चं आमरणतं च एस जोगो णेयव्वो धितिमया मतिमया अणावसो अकलुसो

---

१. तान् स्पृष्ट्वा इति प्रकृतम् (वृ) ।
२. पूर्ववर्तिषु १४-१७ सूत्रेषु एतत् पद नास्ति । तत्र लिपिकाले त्रुटितमथवात्र अतिरिक्त-मस्ति ।
३. °पच्छण (क, घ) ।
४. सिसक (क, ख, ग, घ, च) ।
५. हत्थदुय (ख, ग) ।
६. कण्णनासोट्ठ° (क, ग, घ) ।
७. °हिययदत° (क, ग); °हियएदत° (घ) ।
८. दुट्ठणिसेज्जदुनिसीहिय (क, ख, ग, घ, च) ।
९. कक्कड (क) ।

अच्छिद्दो अपरिस्सावी असकिलिट्ठो सुद्धो सव्वजिणमणुण्णातो ॥

२१. एव पचम सवरदार फासिय पालिय सोहिय तीरिय किट्टियं आराहिय 'आणाए अणुपालिय'[1] भवति ॥

२२. एव नायमुणिणा भगवया पण्णविय परूविय पसिद्ध सिद्ध सिद्धवरसासणमिण आघविय सुदेसिय पसत्थ—पचम सवरदार समत्त ।

—त्ति बेमि ॥

२३ 'एयाइ वयार्ति[2] पचवि सुव्वय-महव्वयाइ हेउसय-विवित्त-पुक्कलाइ कहिया अरहंतसासणे पंच समासेण सवरा, वित्थरेण उ पणवीसर्ति । समिय-सहिय-संवुडे सया जयण-घडण-सुविसुद्ध-दसणे एए अणुचरिय सजते चरमसरीरधरे भविस्सतीति'[3] ।

परिसेसो

पण्हावागरणाणं एगो सुयक्खधो, दस अज्झयणगा एक्कसरगा, दससु चेव दिवसेसु उद्दिसिज्जति, एगतरेसु आयबिलेसु निरुद्धेसु आउत्तभत्तपाणएण । अग जहा आयारस्स ॥

पण्हावागरण दसम अंग सुत्तओ समत्त ।

ग्रन्थ परिमाण

कुल अक्षर—४१३३८
अनुष्टुप् श्लोक—१२६१ अ० १६

---

१ अणुपालिय आणाए आराहियं (क, ख, ग, घ, च) ।

२ वताइ (ख) ।

३ वाचनान्तरे पुनर्निगमनमन्यथाऽभिधीयते यदुत एतानि पचापि सुव्रत ! महाव्रतानि लोकधृतिदव्रतानि श्रुतसागरदर्शितानि तप. संयमव्रतानि शीलगुणधरव्रतानि सत्यार्जवव्रतानि नरकतिर्यङ्‌मनुजदेवगतिविवर्जकानि सर्वजिनशासनकानि कर्मरजोविदारकाणि भवशतविमोचकानि दु खशतविनाशकानि सुखशतप्रवर्त्तकानि कापुरुषदुरुत्तराणि सत्पुरुषतीरितानि निर्वाणगमनस्वर्गप्रयाणकानि पचापि सवरद्वाराणि समाप्तानीति ब्रवीमि (वृ) ।

विवागसुयं

पढमो सुयक्खंधो

पढमं अज्झयणं

मियापुत्ते

उक्खेव-पदं

१. तेण कालेणं तेण समएण चंपा नाम[1] नयरी होत्था—वण्णओ[2]। पुण्णभद्दे चेइए[3] ॥

२ तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अज्जसुहम्मे नाम अणगारे जाइसपण्णे वण्णओ[4], चउद्दसपुव्वी चउनाणोवगए पंचहिं अणगार-सएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं[5] •चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे सुहंसुहेण विहरमाणे जेणेव चंपा नयरी॰ जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं[6] •ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे॰ विहरइ। परिसा निग्गया। धम्मं सोच्चा निसम्म जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ॥

३ तेण कालेण तेण समएण अज्जसुहम्मस्स अंतेवासी अज्जजंबू नाम अणगारे सत्तुस्सेहे जहा गोयमसामी तहा जाव[7] झाणकोट्ठोवगए संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

---

१. नाम (क, ख)।

२ ओ० सू० १।

३. चेतिते (क), चेईए (ग), चेइए तहा वण्णओ (घ)।

४. ना० १।१।४।

५. °पुव्वी (क, ख), स० पा०—पुव्वाणुपुव्विं जाव जेणेव।

६. स० पा०—अहापडिरूवं जाव विहरइ।

७. ओ० सू० ८२।

४ तए ण अज्जजवू नामे[1] अणगारे जायसड्ढे जाव[2] जेणेव अज्जसुहम्मे अणगारे तेणेव उवागए तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता जाव[3] पज्जुवासमाणे[4] एवं वयासी—जइ णं भते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव[5] सपत्तेण दसमस्स अगस्स पण्हावागरणाणं अयमट्ठे पण्णत्ते, एक्कारसमस्स ण भते ! अंगस्स विवागसुयस्स समणेण भगवया महावीरेण जाव संपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ?

५ तए ण अज्जसुहम्मे अणगारे जवू-अणगार एव वयासी—एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव[6] सपत्तेणं एक्कारसमस्स अगस्स विवाग-सुयस्स दो सुयक्खधा पण्णत्ता, तं जहा—दुहविवागा य सुहविवागा य ।।

६. जइ ण भते ! समणेण भगवया महावीरेणं जाव[7] संपत्तेण एक्कारसमस्स अगस्स विवागसुयस्स दो सुयक्खधा पण्णत्ता, त जहा—दुहविवागा य सुहविवागा य । पढमस्स ण भते ! सुयक्खधस्स दुहविवागाण समणेणं भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ?

७ तए णं अज्जसुहम्मे[8] अणगारे जंबू-अणगार एव वयासी—एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव[9] सपत्तेण दुहविवागाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा—

संगहणी-गाहा

१ 'मियउत्ते[10] य २ उज्झियए, ३ अभग्ग[11] ४.सगडे[12] ५. वहस्सई ६. नदी ।
७. उबर ८ सोरियदत्ते य, ९. देवदत्ता य १० अजू य'[13] ।।१।।

८. जइ ण भते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव[14] सपत्तेण दुहविवागाण दस

---

१. नाम (ग)
२. ओ० सू० ८३ ।
३ ओ० सू० ८३ ।
४. पज्जुवासइ (क, ख, ग, घ) । एतादृशे प्रसगे प्रायेण 'पज्जुवासमाणे' इति पाठो लभ्यते, लिपिदोषात् 'पज्जुवासइ' इति जात' सभाव्यते ।
५,६. ना० १।१।७ ।
७. ना० १।१।७
८. °सुधम्मे (क) ।
९. ना० १।१।७ ।
१०. मियापुत्ते (ख, घ) ।
११. अभग्गे (ख) ।
१२. सगते (ग) ।
१३. ठाण (१०।१११) सूत्रे विपाकाध्ययननामसु विपर्ययो दृश्यते, तद्यथा—
मियापुत्ते य गोत्तासे, अडे सगडेति यावरे ।
माहणे णदिसेणे, सोरिए य उदुवरे ।।
सहसुद्दाहे आमलए, कुमारे लेच्छई इति ।
१४. ना० १।१।७ ।

अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा—मियउत्ते जाव[1] अजू य। पढमस्स ण भते ! अज्झयणस्स दुहविवागाण समणेण भगवया महावीरेण जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

मियापुत्त-वण्णग-पदं

९ तए ण से सुहम्मे अणगारे जंबू-अणगारं एव वयासी—एव खलु जबू ! तेण कालेण तेणं समएण मियग्गामे नाम नयरे होत्था—वण्णओ[2] ।।

१०. तस्स णं मियग्गामस्स नयरस्स वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए चदणपायवे नाम उज्जाणे होत्था—सव्वोउय-पुप्फ-फल-समिद्धे—वण्णओ[3] ।।

११ तत्थ ण सुहम्मस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था—चिराइए जहा पुण्णभद्दे[4] ।।

१२. तत्थ ण मियग्गामे नयरे विजए नामं खत्तिए राया परिवसइ— वण्णओ[5] ।।

१३ तस्स ण विजयस्स खत्तियस्स मिया नामं देवी होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पचिंदियसरीरा—वण्णओ[6] ।।

१४. तस्स ण विजयस्स खत्तियस्स पुत्ते मियाए देवीए अत्तए मियापुत्ते[7] नाम दारए होत्था—जातिअंधे जातिमूए जातिवहिरे जातिपगुले हुडे य वायव्वे[8]। नत्थि ण तस्स दारगस्स हत्था वा पाया वा कण्णा वा अच्छी वा नासा वा। केवल से तेसिं अंगोवगाण आगिती आगितिमेत्ते ।।

१५ तए ण सा मियादेवी त मियापुत्त दारग रहस्सियसि भूमिघरसि रहस्सिएण भत्तपाणेण पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरइ ।।

गोयमस्स जाइअंधपुरिसविसए पुच्छा-पदं

१६ तत्थ ण मियग्गामे नयरे एगे जाइअधे पुरिसे परिवसइ। से णं एगेण सचक्खुएणं पुरिसेण पुरओ दंडएण[9] 'पकड्ढिज्जमाणे-पकड्ढिज्जमाणे'[10] फुट्ट-हडाहड-सीसे मच्छिया-चडगर-पहकरेण अण्णिज्जमाणमग्गे मियग्गामे नयरे गेहे-गेहे कोलुण-वडियाए विर्त्ति कप्पेमाणे विहरइ ।।

१७. तेण कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे[11] •पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे

---

१. वि० १।१।७।
२ ओ० सू० १।
३ ना० १।३।३।
४ ओ० सू० २।
५. ओ० सू० १४।
६. ओ० सू० १५।
७. मियपुत्ते (क)।
८. वायवे (क, घ)।
९ डंडएण (क, ग)।
१०. पगड्ढिज्जमाणे २ (ख); पगडिज्जमाणे २ (घ)।
११ स० पा०—महावीरे जाव समोसरिए।

गामाणुगाम दूइज्जमाणे सुहसुहेण विहरमाणे मियग्गामे नयरे चदणपायवे उज्जाणे° समोसरिए। परिसा निग्गया ॥

१८. तए ण से विजए खत्तिए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे जहा कूणिए तहा निग्गए जाव[1] पज्जुवासइ ॥

१९ तए ण से जाइअधे पुरिसे त महयाजणसद्द च[2] •जणवूह ए जणवोल च जणकलकल च° सुणेत्ता त पुरिसं एव वयासी—किण्ण देवाणुप्पिया ! अज्ज मियग्गामे नयरे इदमहे इ वा[3] •खदमहे इ वा[4] उज्जाण-गिरिजत्ता इ वा, जओ ण वहवे उग्गा भोगा[5] एगदिसि एगाभिमुहा° निग्गच्छति ?

२० तए ण से पुरिसे त जाइअध पुरिसं एवं वयासी—नो खलु देवाणुप्पिया ! अज्ज मियग्गामे नयरे इदमहे इ वा[6] •खदमहे इ वा[7] उज्जाण-गिरिजत्ता इ वा, जओ ण वहवे उग्गा भोगा[8] एगदिसि एगाभिमुहा° निग्गच्छति। एव खलु देवाणुप्पिया ! समणे[9] •भगव महावीरे आइगरे तित्थगरे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इह चेव मियग्गामे नयरे चदणपायवे उज्जाणे अहापडिरूवं ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे° विहरइ। तए ण एए जाव[10] निग्गच्छति ॥

२१ तए ण से अधे पुरिसे तं पुरिसं एवं वयासी—गच्छामो ण देवाणुप्पिया ! अम्हे वि समण भगव[11] •महावीर वदामो णमंसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मगल देवयं चेइय° पज्जुवासामो ॥

२२ तए ण से जाइअधे पुरिसे तेण पुरओ दंडएणं पुरिसेण पकड्ढिज्जमाणे-पकड्ढिज्जमाणे जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव 'उवागच्छइ, उवागच्छित्ता'[12] तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, वदइ नमसइ जाव[13] पज्जुवासइ ॥

२३. तए ण समणे भगव महावीरे विजयस्स रण्णो तीसे य[14] •महइमहालियाए परिसाए मज्झगए विचित्त° धम्ममाइक्खइ[15]। परिसा[16] पडिगया विजए वि गए ॥

---

१ ओ० सू० ५४-६९।
२. स० पा०—जणसद्द च जाव सुणेत्ता।
३. स० पा०—इदमहे इ वा जाव निग्गच्छति।
४. पू०—ना० १।१।९६।
५. पू०—ना० १।१।९६।
६. सं० पा०—इदमहे इ वा जाव निग्गच्छति।
७. ८. पू०—ना० १।१।९६।
९. स० पा०—समणे जाव विहरइ।
१०. वि० १।१।१९।
११. सं० पा०—भगव जाव पज्जुवासामो।
१२. उवागए २ (ख, ग)।
१३. ना० १।१।९९।
१४. सं० पा०—तीसे य°।
१५ धम्म परिकहेइ (ख)।
१६. परिसा जाव (क, घ)।

२४ तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इदभूई नाम अणगारे जाव[1] सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ।।

२५ तए ण से भगव गोयमे त जाइअध पुरिस पासइ, पासित्ता जायसड्ढे[2] °जाय-संसए जायकोउहल्ले, उप्पण्णसड्ढे उप्पण्णससए उप्पण्णकोउहल्ले, संजायसड्ढे संजायससए सजायकोऊहल्ले, समुप्पण्णसड्ढे समुप्पण्णससए समुप्पण्णकोऊहल्ले उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ णमंसइ, वदित्ता णमसित्ता नच्चासण्णे नाइदूरे सुस्सूसमाणे णमसमाणे अभिमुहे विणएण पजलिउडे पज्जुवासमाणे° एव वयासी—अत्थि ण भते ! केइ पुरिसे जाइअवे जायअधारूवे[3] ?

हता अत्थि ।।

भगवया मियापुत्तरूव-निरूवण-पदं

२६ कह ण भते ! से पुरिसे जाइअधे जायअधारूवे ?

एव खलु गोयमा ! इहेव मियग्गामे नयरे विजयस्स खत्तियस्स पुत्ते मियादेवीए अत्तए मियापुत्ते नाम दारए जाइअवे जायअधारूवे । नत्थि ण तस्स दारगस्स[4] °हत्था वा पाया वा कण्णा वा अच्छी वा नासा वा केवल से तेसिं अगोवगाण आगिती° आगितिमेत्ते ।

तए ण सा मियादेवी[5] °त मियापुत्त दारग रहस्सियसि भूमिघरसि रहस्सिएण भत्तपाणेण° पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरइ ।।

गोयमस्स मियापुत्तदंसण-पद

२७ तए ण से भगव गोयमे समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—इच्छामि ण भते ! अह तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे मियापुत्त दारग पासित्तए ।

अहासुह देवाणुप्पिया !

२८ तए ण से भगवं गोयमे समणेण भगवया महावीरेण अब्भणुण्णाए[6] समाण हट्ठतुट्ठे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता अतुरिय[7]°मचवलमसभते जुगतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रिय° सोहेमाणे-

---

१. ओ० सू० ८२ ।
२. सं० पा०—जायसड्ढे जाव एव ।
३. जाइअवारूवे (घ) ।
४. सं० पा०—दारगस्स जाव आगितिमेत्ते ।
५. स० पा०—मियादेवी जाव पडिजागरमाणी ।
६. अणुण्णाते (क) ।
७. स० पा०—अतुरिय जाव सोहेमाणे ।

सोहेमाणे जेणेव मियग्गामे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मियग्गाम नयर मज्झंमज्झेण जेणेव मियादेवीए गिहे तेणेव उवागच्छइ ॥

२९. तए ण सा मियादेवी भगव गोयमं एज्जमाण पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठ[1]•चित्त-माणदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण° हियया आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता सत्तट्ठपयाइ अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, वदइ नमसइ, वंदित्ता नमसित्ता एव वयासी—सदिसतु णं देवाणुप्पिया ! किमागमणप्पओयण ?

३०. तए ण से भगव गोयमे मियं देविं एव वयासी—अहं ण देवाणुप्पिए ! तव पुत्तं पासिउ हव्वमागए ॥

३१. तए ण सा मियादेवी मियापुत्तस्स दारगस्स अणुमग्गजायए चत्तारि पुत्ते सव्वालकारविभूसिए करेइ, करेत्ता भगवओ गोयमस्स पाएसु पाडेइ, पाडेत्ता एव वयासी— एए ण भते ! मम पुत्ते पासह ॥

३२. तए ण से भगव गोयमे मिय देविं एवं वयासी—नो खलु देवाणुप्पिए ! अह एए तव पुत्ते पासिउ हव्वमागए। तत्थ ण जे से तव जेट्ठे पुत्ते मियापुत्ते दारए जाइ-अधे जायअंधारूवे, ज ण तुमं रहस्सियसि भूमिघरसि रहस्सिएणं भत्तपाणेण पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरसि, तं णं अहं पासिउं हव्वमागए ॥

३३. तए णं सा मियादेवी भगव गोयम एव वयासी—से के ण गोयमा ! से तहारूवे नाणी वा तवस्सी वा, जेण[2] एसमट्ठे मम ताव रहस्सीकए[3] तुब्भं हव्वमक्खाए, जओ ण तुब्भे जाणह ?

३४. तए ण भगव गोयमे मिय देविं एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिए ! मम धम्माय-रिए समणे भगव[4] •महावीरे तहारूवे नाणी वा तवस्सी वा, जेण एसमट्ठे तव ताव रहस्सीकए मम हव्वमक्खाते°, जओ णं अहं जाणामि। जावं च णं मियादेवी भगवया गोयमेण सद्धि एयमट्ठं सलवइ, ताव च णं मियापुत्तस्स दारगस्स भत्तवेला जाया यावि होत्था ॥

३५. तए ण सा मियादेवी भगव गोयम एव वयासी—तुब्भे ण भते ! 'इह चेव'[5] चिट्ठह, जा ण अह तुब्भ मियापुत्त दारग उवदसेमि त्ति कट्टु जेणेव भत्तघरए[6] तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वत्थपरियट्टय[7] करेइ, करेत्ता कट्ठसगडियं[8]

---

१. म० पा०—हट्ठतुट्ठहियया।

२. जेण तव (क, ख, ग, घ), प्रतिषु एतत् पद लिपिदोषात् समुल्लिखित प्रतिभाति। अग्रे तुब्भ इति पाठदर्शनात्।

३ रहस्सकडे (क)।

४. म० पा०—भगवं जाव जओ ण [ख, ग]; भगव जओ ण (क); महावीरे जाव ततेण (घ)।

५ इहच्चेव (क)।

६. भत्तपाणघरए (व)।

७. °परियट्ट (वृ)।

८. कट्ठसगडि (ग)।

गिण्हइ, गिण्हित्ता विउलस्स असण-पाण-खाइम-साइमस्स भरेइ, भरेत्ता तं कट्ठसगडियं अणुकड्ढमाणी-अणुकड्ढमाणी जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भगवं गोयमं एवं वयासी—एह णं 'भंते ! तुब्भे मए सद्धिं'[1] अणुगच्छह, जा णं अहं तुब्भं मियापुत्तं दारगं उवदंसेमि ।।

३६ तए णं से भगवं गोयमे मियं देविं पिट्ठओ समणुगच्छइ ।।

३७ तए णं सा मियादेवी तं कट्ठसगडियं अणुकड्ढमाणी-अणुकड्ढमाणी जेणेव भूमिघरए[2] तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चउप्पुडेणं[3] वत्थेणं मुहं बंधमाणी भगवं गोयमं एवं वयासी—तुब्भे वि णं भंते ! मुहपोत्तियाए मुहं बंधह ।।

३८ तए णं से भगवं गोयमे मियादेवीए एवं वुत्ते समाणे मुहपोत्तियाए मुहं बंधेइ ।।

३९ तए णं सा मियादेवी परंमुही भूमिघरस्स दुवारं विहाडेइ । तए णं गंधे निग्गच्छइ, से जहानामए—'अहिमडे इ वा[4] °गोमडे इ वा सुणहमडे इ वा मज्जारमडे इ वा मणुस्समडे इ वा महिसमडे इ वा मूसगमडे इ वा आसमडे इ वा हत्थिमडे इ वा सीहमडे इ वा वग्घमडे इ वा विगमडे इ वा दीविगमडे इ वा मय-कुहिय-विणट्ठ-दुरभिवावण्ण-दुब्भिगंधे किमिजालाउलसंसत्ते असुइ-विलीण-विगय-बीभत्सदरिसणिज्जे भवेयारूवे सिया ?

नो इणट्ठे समट्ठे । एत्तो अणिट्ठतराए चेव अकंततराए चेव अप्पियतराए चेव अमणुण्णतराए चेव अमणामतराए चेव° गंधे पण्णत्ते ।।

४० तए णं से मियापुत्ते दारए तस्स विउलस्स असण-पाण-खाइम-साइमस्स गंधेणं अभिभूए समाणे तंसि विउलंसि असण-पाण-खाइम-साइमंसि मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववण्णे तं विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं आसएणं आहारेइ, आहारेत्ता खिप्पामेव विद्धंसेइ, विद्धंसेत्ता तओ पच्छा पूयत्ताए य सोणियत्ताए य परिणामेइ, तं पि य णं पूयं च सोणियं च आहारेइ ।।

गोयमेण मियापुत्तस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं

४१ तए णं भगवओ गोयमस्स तं मियापुत्तं दारगं पासित्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए कप्पिए[5] पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो णं इमे दारए पुरा पोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं 'पावगं फलवित्तिविसेसं'[6] पच्चणुभवमाणे विहरइ । न मे दिट्ठा नरगा वा नेरइया

---

१ तुब्भे भंते मम (ख, ग, घ) ।
२ भूमिघरे (ख, घ) ।
३ चउप्पालेण (ग) ।
४ अहिमडे इ वा सप्पकडेवरे इ वा (वृ), सं० पा०—अहिमडे इ वा जाव ततो वि अणिट्ठतराए चेव जाव गंधे ।
५. × (क, ख, ग) ।
६. पावफलविवागं (ग) ।

वा। पचक्ख खलु अय पुरिसे निरयपडिरूविय वेयण वेदिति[1] त्ति कट्टु मिय देविं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता मियाए देवीए गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्ख-मित्ता मियग्गाम नयर मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमंसित्ता एव वयासी—एवं खलु अह तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे मियग्गामं नयरं मज्झं-मज्झेण अणुप्पविसामि, जेणेव मियाए देवीए गिहे तेणेव उवागए। तए ण सा मियादेवी मम एज्जमाण पासइ, पासित्ता हट्ठा, त चेव सव्व जाव[2] पूयं च सोणिय च आहारेइ। तए ण मम इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए कप्पिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो ण इमे दारए पुरा[3] •पोराणाण दुच्चि-ण्णाण दुप्पडिक्कताण असुभाण पावाण कडाण कम्माण पावग फलवित्तिविसेस पच्चणुभवमाणे° विहरइ॥

४२ से ण भते! पुरिसे पुव्वभवे के आसि? किं नामए वा किं गोत्ते[4] वा? 'कयरसि गामसि वा नयरसि वा'[5]? किं वा दच्चा किं वा भोच्चा किं वा समायरित्ता, केसिं वा पुरा[6] •पोराणाण दुच्चिण्णाण दुप्पडिक्कताण असुभाणं पावाण कडाण कम्माण पावग फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे° विहरइ?

मियापुत्तस्स एक्काइभव-वण्णग-पदं

४३ गोयमाइ! समणे भगव महावीरे भगव गोयम एव वयासी—एव खलु गोयमा! तेण कालेण तेण समएण इहेव जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे सयदुवारे नाम नयरे होत्था - रिद्धत्थिमियसमिद्धे वण्णओ[7]॥

४४. तत्थ ण सयदुवारे नयरे धणवई नाम राया होत्था—वण्णओ[8]॥

४५. तस्स ण सयदुवारस्स नयरस्स अदूरसामते दाहिणपुरत्थिमे दिसीभाए विजय-वद्धमाणे नाम खेडे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे॥

४६ तस्स ण विजयवद्धमाणस्स[9] खेडस्स पच गामसयाइ आभोए यावि होत्था॥

४७ तत्थ ण विजयवद्धमाणे खेडे एक्काई[10] नाम रट्ठकूडे होत्था—अहम्मिए[11] •अधम्मा-

---

१. वेत्ति (ख), वेयह (घ)।
२. वि० १।१।२६-४०।
३. स० पा०—पुरा जाव विहरइ।
४ गोए (घ)।
५. कयर गाम (क); कयर गाम किं कए (ख)।
६. स० पा०—पुरा जाव विहरइ।
७ ओ० सू० १।
८. ओ० सू० १४।
९. °वड्ढमाणस्स (क, ख, ग) सर्वत्र।
१०. एकायि (क, ग)।
११. स० पा०--अहम्मिए जाव दुप्पडियाणदे।

णुए अधम्मिट्ठे अधम्मक्खाई अधम्मपलोई अधम्मपलज्जणे अधम्मसमुदाचारे अधम्मेण चेव वित्ति कप्पेमाणे दुस्सीले दुव्वए° दुप्पडियाणदे ॥

४८. से णं एक्काई रट्ठकूडे विजयवद्धमाणस्स खेडस्स पचण्ह गामसयाण 'आहेवच्च पोरेवच्च सामित्त भट्टित्त महत्तरगत्त आणा-ईसर-सेणावच्च कारेमाणे पालेमाणे'[1] विहरइ ॥

४९. तए ण से एक्काई रट्ठकूडे विजयवद्धमाणस्स खेडस्स पच गामसयाइ वहूहि करेहि य भरेहि य विद्धीहि[2] य उक्कोडाहि य पराभवेहि[3] य देज्जेहि[4] य भेज्जेहि य कुतेहि[5] य लछपोसेहि य आलीवणेहि य पथकोट्टेहि य ओवीलेमाणे-ओवीलेमाणे विहम्मेमाणे-विहम्मेमाणे तज्जेमाणे-तज्जेमाणे तालेमाणे-तालेमाणे निद्धणे करेमाणे-करेमाणे विहरइ ॥

५०. तए णं से एक्काई रट्ठकूडे विजयवद्धमाणस्स खेडस्स वहूण राईसर[6]-°तलवर-माडविय-कोडुविय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ°-सत्थवाहाण, अण्णेसि च वहूण गामेल्लग-पुरिसाण वहूसु 'कज्जेसु य कारणेसु य मतेसु य गुज्झएसु य निच्छएसु य'[7] ववहारेसु य सुणमाणे भणइ 'न सुणेमि,' असुणमाणे भणइ 'सुणेमि,' '[8]°पस्समाणे भणइ 'न पासेमि,' अपस्समाणे भणइ 'पासेमि,' भासमाणे भणइ 'न भासेमि।' अभासमाणे भणइ 'भासेमि,' गिण्हमाणे भणइ 'न गिण्हेमि,' अगिण्हमाणे भणइ 'गिण्हेमि,' जाणमाणे भणइ 'न जाणेमि,' अजाणमाणे भणइ 'जाणेमि'° ॥

५१. तए ण से एक्काई रट्ठकूडे एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुवहु 'पाव कम्म'[9] कलिकलुसं समज्जिणमाणे विहरइ ॥

५२ तए ण तस्स एक्काइस्स[10] रट्ठकूडस्स अण्णया कयाइ सरीरगसि जमगसमगमेव सोलस रोगायका[11] पाउब्भूया, [त जहा—

सासे कासे जरे दाहे, कुच्छिसूले[12] भगदले[13]।
अरिसा[14] अजीरए दिट्ठी-मुद्धसूले[15] अकारए।
अच्छिवेयणा कण्णवेयणा कडू[16] उदरे[17] कोढे ॥१॥][18]

---

१ आहेवच्च जाव पालेमाणे (क, ख, ग)।
२. वित्तिहि (वृपा)।
३. पराभएहि (क, ग)।
४ देज्जए (क)।
५ कुत्तेहि (क, घ)।
६. स० पा०—राईसर जाव सत्थवाहाण।
७ कज्जेसु कारणेसु मतेसु गुज्झएसु निच्छएसु (क), °गुज्झेसु° (घ)।
८. सं० पा०—एव पस्समाणे भासमाणे गिण्हमाणे जाणमाणे।
९. पावकम्म (ग)।
१० एगाइयस्स (क, ख, ग, घ)
११ रोयायका (क), रोयातका (ख)।
१२ जोणिसूले (ग), 'जोणिसूले' त्ति अपपाठ. 'कुच्छिसूले' इत्यस्यान्यत्र दर्शनात् (वृ)।
१३ भगदरे (ख, ग, घ)।
१४. अरसा (ख)।
१५ मुहसूले (क, ग)।
१६ कदू (ख)।
१७. दओदरे (क)।
१८ असौ कोष्ठकवर्ती पाठ व्याख्याश प्रतीयते।

५३ तए णं से एक्काई रट्ठकूडे सोलसहिं रोगायकेहिं अभिभूए समाणे कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! विजयवद्धमाणे खेडे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एवं वयह—इह खलु देवाणुप्पिया ! एक्काइस्स[1] रट्ठकूडस्स सरीरगंसि सोलस रोगायंका पाउब्भूया, [तं जहा—सासे जाव कोढे][2], तं जो णं इच्छइ देवाणुप्पिया ! वेज्जो वा वेज्जपुत्तो वा 'जाणुओ वा जाणुयपुत्तो'[3] वा तेगिच्छिओ वा तेगिच्छियपुत्तो वा एक्काइस्स रट्ठकूडस्स तेसिं सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं उवसामित्तए[4], तस्स णं एक्काई रट्ठकूडे विउलं अत्थसंपयाणं दलयइ। दोच्चं पि तच्चं पि उग्घोसेह, उग्घोसेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥

५४. तए णं ते कोडुबियपुरिसा जाव[5] तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ॥

५५ तए णं विजयवद्धमाणे खेडे इमं एयारूवं उग्घोसणं सोच्चा निसम्म बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य तेगिच्छिया य तेगिच्छियपुत्ता य सत्थकोसहत्थगया 'सएहिं-सएहिं'[6] गिहेहिंतो[7] पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता विजयवद्धमाणस्स खेडस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव एक्काई-रट्ठकूडस्स गिहे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता एक्काई[8]-रट्ठकूडस्स सरीरगं परामुसंति, परामुसित्ता तेसिं रोगायंकाणं[9] निदाणं पुच्छंति, पुच्छित्ता एक्काई-रट्ठकूडस्स बहूहिं अब्भंगेहि य उव्वट्टणाहि[10] य सिणेहपाणेहि य वमणेहि य विरेयणेहि य सेयणेहि[11] य अवद्दहणाहि[12] य अवण्हाणेहि य अणुवासणाहि य वत्थिकम्मेहि य निरूहेहि[13] य सिरावेहेहि य तच्छणेहि य पच्छणेहि य सिरवत्थीहि[14] य तप्पणाहि य पुडपागेहि य छल्लीहि य वल्लीहि य[15] मूलेहि य कंदेहि य पत्तेहि य पुप्फेहि य फलेहि य बीएहि य सिलियाहि य गुलियाहि य ओसहेहि य भेसज्जेहि य इच्छंति तेसिं सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं उवसामित्तए, नो चेव णं संचाएंति उवसामित्तए ॥

---

१. एक्काइयस्स (घ)।
२. असौ कोष्ठकवर्ती पाठः व्याख्यांशः प्रतीयते।
३. जाणओ वा जाणुपुत्तो (ख, ग, घ)।
४. उवसमित्तए (क)।
५. वि० १।१।५३।
६. सएहिंतो (क्व)।
७. गेहेहिंतो (क)।
८. एगाती (क)।
९. रोगाणं (ख, ग, घ)।
१०. उवट्टणेहि (ख)।
११. सेयणाहि (क), सेवणेहि (ख)।
१२. अवद्दणाहि (क, ख, ग); अवद्दणेहि (घ)।
१३. निरुभेहि (ग), निरुहेहि (वृ)।
१४. सिरोवत्थीहि (वृ)।
१५ × (ख, ग, घ)।

५६ तए ण ते वहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य तेगिच्छिया य तेगिच्छियपुत्ता य जाहे नो सचाएंति तेसिं सोलसण्ह रोगायंकाण एगमवि रोगायंकं उवसामित्तए, ताहे संता तंता परितंता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ।।

५७ तए ण एक्काई रट्ठकूडे वेज्ज-पडियाइक्खिए परियारगपरिच्चत्ते निव्विण्णोसह-भेसज्जे[1] सोलसरोगायंकेहिं अभिभूए समाणे रज्जे य रट्ठे य[2] •कोसे य कोट्ठागारे य बले य वाहणे य, पुरे य° अंतउरे य मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववण्णे रज्जं च रट्ठं च[3] •कोसं च कोट्ठागारं च बलं च वाहणं च पुरं च अंतेउरं च° आसा-एमाणे[4] पत्थेमाणे पीहेमाणे[5] अभिलसमाणे अट्टदुहट्टवसट्टे अड्ढाइज्जाइं वाससयाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्को-सेणं सागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु[6] नेरइयत्ताए उववण्णे ।।

मियापुत्तस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पदं

५८. से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव मियग्गामे नयरे विजयस्स खत्तियस्स मियाए देवीए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववण्णे ।।

५९ तए ण तीसे मियाए देवीए सरीरे वेयणा पाउब्भूया उज्जला[7] •विउला कक्कसा पगाढा चंडा दुक्खा तिव्वा° दुरहियासा[8] जप्पभिइं च णं मियापुत्ते दारए मियाए देवीए कुच्छिंसि गब्भत्ताए[9] उववण्णे, तप्पभिइं च णं मियादेवी विजयस्स खत्तियस्स अणिट्ठा अकंता अप्पिया अमणुण्णा अमणामा जाया यावि होत्था ।।

६०. तए ण तीसे मियाए देवीए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंवजागरियाए[10] जागरमाणीए इमे एयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे[11]—एवं खलु अहं विजयस्स खत्तियस्स पुव्विं इट्ठा कंता पिया मणुण्णा मणामा धेज्जा वेसासिया अणुमया आसि । जप्पभिइं च णं मम इमे गब्भे कुच्छिंसि गब्भत्ताए उववण्णे, तप्पभिइं च णं अहं विजयस्स खत्तियस्स अणिट्ठा अकंता अप्पिया अमणुण्णा अमणामा जाया यावि होत्था । नेच्छइ णं विजए खत्तिए मम नाम वा गोयं वा गिण्हित्तए[12], किमंग पुण दंसणं वा परिभोगं वा ? तं सेयं खलु मम एयं गब्भं वहूहिं गब्भसाडणाहि य

---

१. निवट्टोसह°(क्व) ।
२. स० पा०—रट्ठे य जाव अंतेउरे ।
३ स० पा०—रट्ठं च ।
४. आसयमाणे (क), आसायमाणे (ख, घ) ।
५ वीहेमाणे (घ) ।
६ नरएसु (ग) ।
७. स० पा०—उज्जला जाव दुरहियासा ।
८. जलता (क, ग, घ) ।
९ पुत्तत्ताए (क) ।
१०. कुडुंवजागरियं (क) ।
११ समुप्पज्जित्था (घ) ।
१२ गिण्हित्तए वा (क) ।

पाडणाहि य गालणाहि य मारणाहि य साडित्तए वा पाडित्तए वा गालित्तए वा मारित्तए वा—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता वहूणि खाराणि य कडुयाणि य तूवराणि य गब्भसाडणाणि य पाडणाणि य गालणाणि य मारणाणि य खायमाणी य पियमाणी[1] य इच्छइ त गब्भ साडित्तए वा पाडित्तए वा गालित्तए वा मारित्तए वा, नो चेव ण से गब्भे सडइ वा पडइ वा गलइ वा मरइ वा ॥

६१ तए ण सा मियादेवी जाहे नो सचाएइ त गब्भं साडित्तए वा पाडित्तए वा गालित्तए वा मारित्तए वा ताहे सता तता परितता अकामिया असयंवसा तं गब्भ दुहदुहेण परिवहइ ॥

६२ तस्स ण दारगस्स गब्भगयस्स चेव अट्ठ नालीओ अब्भितरप्पवहाओ,[2] अट्ठ नालीओ वाहिरप्पवहाओ, अट्ठ पूयप्पवहाओ, अट्ठ सोणियप्पवहाओ, दुवे दुवे कण्णतरेसु, दुवे दुवे अच्छिअतरेसु, दुवे दुवे नक्कतरेसु, दुवे दुवे धमणिअतरेसु अभिक्खण-अभिक्खण पूय च सोणिय च 'परिसवमाणीओ-परिसवमाणीओ'[3] चेव[4] चिट्ठति ॥

६३. तस्स ण दारगस्स गब्भगयस्स चेव अग्गिए नाम वाही पाउब्भूए। जे[5] ण से दारए आहारेइ, से ण खिप्पामेव विद्धसमागच्छइ[6], पूयत्ताए य सोणियत्ताए य परिणमइ, त पि य से पूय च सोणिय च आहारेइ ॥

६४. तए णं सा मियादेवी अण्णया कयाइ नवण्ह मासाण बहुपडिपुण्णाणं दारगं पयाया—जातिअधे[7] °जातिमूए जातिवहिरे जातिपगुले हुडे य वायव्वे। नत्थि ण तस्स दारगस्स हत्था वा पाया वा कण्णा वा अच्छी वा नासा वा। केवल से तेंसि अगोवंगाण आगिती° आगितिमेत्ते ॥

६५ तए ण सा मियादेवी त दारग हुंड अधारूव पासइ, पासित्ता भीया तत्था तसिया उव्विग्गा सजायभया अम्मधाइ सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—गच्छह ण देवाणुप्पिया! तुम एय दारग एगते उक्कुरुडियाए उज्झाहि ॥

६६ तए ण सा अम्मधाई मियादेवीए तहत्ति एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता जेणेव विजए खत्तिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु एव वयासी—एव खलु सामी! मियादेवी नवण्ह मासाण[8] °वहुपडिपुण्णाण दारग पयाया—जातिअधे जातिमूए जातिवहिरे जातिपगुले

---

१. पीयमाणी (ख, ग, घ)।
२ गब्भतर° (क, ग), अब्भतर° (ख)।
३. परिस्सवमाणीओ (क)।
४. × (क, घ)।
५ ज (क)।
६. विद्धसेति (घ)।
७. स० पा०—जातिअधे जाव आगितिमेत्ते।
८. स० पा०—मासाण जाव आगितिमेत्ते।

हुडे य वायव्वे। नत्थि ण तस्स दारगस्स हत्था वा पाया वा कण्णा वा अच्छी वा नासा वा। केवलं से तेसि अंगोवगाण आगिती ° आगितिमेत्ते।

तए णं सा मियादेवी त दारगं हुड अंधारूव पासइ, पासित्ता भीया तत्था तसिया उव्विगा सजायभया ममं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया! एय दारग एगते उक्कुरुडियाए[1] उज्झाहि। त सदिसह ण सामी! त दारग अह एगते उज्झामि उदाहु मा॥

६७. तए णं से विजए खत्तिए तीसे अम्मधाईए अतिए एयमट्ठ सोच्चा तहेव सभते उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव मियादेवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मिय देविं एव वयासी—देवाणुप्पिए! तुब्भ 'पढमे गब्भे'[2]। त जइ ण तुम एयं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झसि, तो ण तुब्भ पया नो थिरा भविस्सइ, तो ण तुम एय दारग रहस्सियगंसि भूमिघरसि रहस्सिएण भत्तपाणेण पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहराहि, तो णं तुब्भ पया 'थिरा भविस्सइ'[3]॥

६८ तए णं सा मियादेवी विजयस्स खत्तियस्स तह त्ति एयमट्ठ विणएण पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता त दारग रहस्सियसि भूमिघरंसि रहस्सिएण भत्तपाणेण पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरइ॥

६९ एव खलु गोयमा! मियापुत्ते दारए पुरा पोराणाण[4] •दुच्चिण्णाण दुप्पडिक्कताण असुभाण पावाण कडाण कम्माण पावग फलवित्तिविसेस ° पच्चणुभवमाणे विहरइ॥

मियापुत्तस्स आगामिभव-वण्णग-पदं

७०. मियापुत्ते ण भते! दारए इओ कालमासे काल किच्चा कहिं गमिहिइ? कहिं उववज्जिहिइ?

गोयमा! मियापुत्ते दारए छव्वीस वासाइ परमाउं पालइत्ता कालमासे काल किच्चा इहेव[5] जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे वेयड्ढगिरिपायमूले सीहकुलंसि सीहत्ताए पच्चायाहिइ[6]।

से ण तत्थ सीहे भविस्सइ—अहम्मिए[7] •बहुनगरनिग्गयजसे सूरे दढप्पहारी ° साहसिए सुबहु पाव[8] •कम्म कलिकलुस ° समज्जिणइ, समज्जिणित्ता कालमासे

---

१. उक्करुडियाए (घ)।
२. पढमगब्भे (क, ख, ग), पढम गब्भे (क्व)।
३. नो अथिरा भविस्सति (क, ख)।
४. स० पा०—पोराणाणं जाव पच्चणुभवमाणे।
५. इह (क)।
६. पयाहिति (क)।
७. स० पा०—अहम्मिए। जाव साहसिए। सिंहवर्णनत्वात् 'अहम्मिट्ठे अहम्मक्खाई' इत्यादिनि विशेषणानि अन्यत्रोक्तान्यपि इह न घटन्ते।
८. स० पा—पाव जाव समज्जिणइ।

काल किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोससागरोवमट्ठिइएसु[1] •नेरइएसु नेरइयत्ताए° उववज्जिहिइ।

से ण तओ अणतरं उव्वट्टित्ता सिरीसवेसु उववज्जिहिइ। तत्थ णं काल किच्चा दोच्चाए पुढवीए उक्कोसेण तिण्णि सागरोवम[2]•ट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइत्ताए उववज्जिहिइ°।

से ण तओ अणतर उव्वट्टित्ता पक्खीसु उववज्जिहिइ। तत्थ वि काल किच्चा तच्चाए पुढवीए सत्त सागरोवम[3]•ट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ°।

से ण तओ सीहेसु, तयाणतर चोत्थीए, उरगो, पंचमीए, इत्थीओ, छट्ठीए, मणुओ, अहेसत्तमाए। तओ अणतर उव्वट्टित्ता से जाइं इमाइ जलयरपचिंदियतिरिक्खजोणियाण मच्छ-कच्छभ-गाह-मगर-सुंसुमाराईणं अड्ढतेरस जाइकुलकोडिजोणिपमुहसयसहस्साइ, तत्थ णं एगमेगसि जोणिविहाणसि अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाइस्सइ।

से ण तओ अणंतर उव्वट्टित्ता चउपएसु उरपरिसप्पेसु भुयपरिसप्पेसु खहयरेसु चउरिंदिएसु तेइंदिएसु वेइंदिएसु वणप्फइ-कडुयरुक्खेसु कडुयदुद्धिएसु वाउ-तेउ-आउ-पुढवीसु[4] अणेगसयसहस्सखुत्तो[5] •उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाइस्सइ°।

से णं तओ अणतर उव्वट्टित्ता सुपइट्ठपुरे नयरे गोणत्ताए पच्चायाहिइ।

से णं तत्थ उम्मुक्कवालभावे अण्णया कयाइ पढमपाउसंसि गगाए महानईए खलीणमट्टिय खंणमाणे तडीए[6] पेल्लिए समाणे कालगए तत्थेव सुपइट्ठपुरे नयरे सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए[7] पच्चायाइस्सइ॥

से णं तत्थ उम्मुक्क[8]•वालभावे विण्णय-परिणयमेत्ते° जोव्वणगमणुप्पत्ते तहारूवाण थेराण अतिए धम्मं सोच्चा निसम्म मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्सइ।

से ण तत्थ अणगारे भविस्सइ—इरियासमिए[9] •भासासमिए एसणासमिए आयाण-भड-मत्त-निक्खेवणासमिए उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाण-जल्ल-पारिट्ठावणियासमिए मणगुत्ते वयगुत्ते कायगुत्ते गुत्ते गुत्तिंदिए गुत्त°वभयारी।

---

१. म० पा०—°ट्ठिइएसु जाव उववज्जिहिइ।
२ स० पा०—सागरोवम°।
३ स० पा० सागरोवम°।
४. पुढवी (क, ख, ग, घ)।
५. सं० पा०—°खुत्तो°।
६ तडीए पडीए (घ)।
७ पुमत्ताए (ख)।
८. स० पा—उम्मुक्क जाव जोव्वणग°।
९. रियासमिते (क); स० पा०—इरियासमिए जाव वभयारी।

से ण तत्थ बहूइ वासाइ सामण्णपरियाग पाउणित्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उव्ववज्जिहिइ ।
से णं तओ अणतर चय चइत्ता महाविदेहे वासे जाइं कुलाइ भवंति—अड्ढाइ[1] अपरिभूयाइ तहप्पगारेसु कुलेसु पुमत्ताए पच्चायाहिति । जहा दढपइण्णे[2] जाव[3] सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिणिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणमत काहिइ ।।

निक्खेव-पदं

७१. एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव[4] सपत्तेण दुहविवागाण पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति बेमि ।।

---

१. पू०—ओ० सू० १४१ ।
२. दढपइन्ने सच्चेव वत्तव्वया कलाओ जाव (क, ख, ग, घ)
३. ओ० सू० १४२-१५४ ।
४ ना० १।१।७ ।

बीयं अज्झयणं

उज्झियए

उक्खेव-पदं

१. जइ ण भते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव[1] सपत्तेण दुहविवागाण पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दोच्चस्स ण भते ! अज्झयणस्स[2] समणेण भगवया महावीरेण के अट्ठे पण्णत्ते ?

२ तए ण से सुहम्मे अणगारे जबू-अणगार एव वयासी—एव खलु जबू ! तेण कालेण तेणं समएण वाणियगामे[3] नाम नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे[4] ।।

३ तस्स ण वाणियगामस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए दूइपलासे नाम उज्जाणे होत्था ।।

४. तत्थ ण दूइपलासे सुहम्मस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था ।।

५. तत्थ ण वाणियगामे नयरे[5] मित्ते नाम राया होत्था—वण्णओ[6] ।।

६ तस्स ण मित्तस्स रण्णो सिरी नाम देवी होत्था—वण्णओ[7] ।।

७ तत्थ णं वाणियगामे कामज्झया नाम गणिया होत्था—अहीण[8]-°पडिपुण्ण-पचिंदियसरीरा लक्खण-वजण-गुणोववेया माणुम्माण-प्पमाण-पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वंगसुदरगी ससिसोमाकार-कत-पिय-दसणा° सुरूवा बावत्तरिकलापडिया[9]

---

१. ना० १।१।७ ।

२ अज्झयणस्स दुहविवागाणं (ख, ग, घ) ।

३. वाणियग्गामे (ख, ग. घ) ।

४. पू०—ओ० सू० १ ।

५. × (ख, घ) ।

६ ओ० सू० १४ ।

७. ओ० सू० १५ ।

८ स० पा०—अहीण जाव सुरूवा ।

९. चउसट्ठीकलापंडिया , (ना० १।३।८), 'बावत्तरीकलापडिय'त्ति लेखाद्या शकुनिरुत-पर्यन्ता गणितप्रधाना: कला.प्राय पुरुपाणा-मेव अभ्यासयोग्या· । स्त्रीणा तु विज्ञेया एव प्राय: (वृ) ।

चउसट्ठिगणियागुणोववेया एगूणतीसविसेसे रममाणी एक्कवीसरइगुणप्पहाणा वत्तीसपुरिसोवयारकुसला नवगसुत्तपडिवोहिया अट्ठारसदेसीभासाविसारया सिंगारागारचारुवेसा गीयरइगधव्वणट्टकुसला सगय-गय[1]-•भणिय हसिय-विहिय-विलास-सललिय-सलाव-निउणजुत्तोवयारकुसला° सुदरथण[2]-•जहण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण्ण-विलासकलिया° ऊसियज्झया सहस्सलंभा विदिण्णछत्त-चामर-वालवीयणीया कण्णीरहप्पयाया यावि होत्था। वहूण गणियासहस्साण आहेवच्च[3] •पोरेवच्च सामित्त भट्टित्त महत्तरगत आणा-ईसर-सेणावच्च कारेमाणी पालेमाणी° विहरइ ॥

८. तत्थ ण वाणियगामे विजयमित्ते नाम सत्थवाहे परिवसइ—अड्ढे[4] ॥

९ तस्स ण विजयमित्तस्स सुभद्दा नाम भारिया होत्था[5] ॥

१० तस्स ण विजयमित्तस्स पुत्ते सुभद्दाए भारियाए अत्तए उज्झियए नाम दारए होत्था—अहीण[6]-•पडिपुण्ण-पचिंदिय-सरीरे लक्खण-वजण-गुणोववेए माणुम्माण-प्पमाण-पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वगसुदरंगे ससिसोमाकारे कते पियदसणे° सुरूवे ॥

११ तेण कालेणं तेणं समएण समणे भगव महावीरे समोसढे[7] परिसा निग्गया। राया निग्गओ, जहा कूणिओ[8] निग्गओ। धम्मो कहिओ। परिसा पडिगया राया य गओ ॥

गोयमेण उज्झिययस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं

१२. तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अतेवासी इदभूई नाम अणगारे गोयमगोत्तेण जाव[9] सखित्तविउलतेयलेसे छट्ठछट्ठेण[10] •अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥

१३ तए ण भगव गोयमे छट्ठक्खमणपारणगसि पढमाए पोरिसीए सज्झाय करेइ, वीयाए पोरिसीए झाण झियाइ, तइयाए पोरिसीए अतुरियमचवलमसंभते मुहपोत्तिय पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता भायणवत्थाइ पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता भायणाइ पमज्जइ, पमज्जित्ता भायणाइं उग्गाहेइ, उग्गाहेत्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता

---

१. सं० पा०—सगयगय, पू० —ना० १।३।८ पादटिप्पणमपि ।
२. सं० पा०—सुदरथण° ।
३. स० पा०—आहेवच्च जाव विहरइ ।
४ पू०—ओ० सू० १४१ ।
५ होत्था। अहीण (घ) ।
६. स० पा०—अहीण जाव सुरूवे ।
७ समोसरिए (क), समोसरण (ग) ।
८. ओ० सू० ५८-६९ ।
९ ओ० सू० ८२ ।
१०. स० पा०—छट्ठछट्ठेण जहा पण्णत्तीए पढम जाव जेणेव ।

नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे छट्ठक्खमणपारणगंसि वाणियगामे नयरे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घर-समुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्तए ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं ॥

१४ तए णं भगवं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ दूइपलासाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता अतुरियमचवलमसंभंते जुगंतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रियं सोहेमाणे-सोहेमाणे° जेणेव वाणियगामे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वाणियगामे नयरे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे जेणेव रायमग्गे तेणेव ओगाढे ।

तत्थ णं बहवे हत्थी पासइ—सण्णद्ध-बद्धवम्मिय-गुडिए उप्पीलियकच्छे उद्दामिय-घंटे नाणामणिरयण-विविह-गेवेज्जउत्तरकंचुइज्जे पडिकप्पिए झयपडागवर-पंचामेल-आरूढहत्थारोहे गहियाउहप्पहरणे ।

अण्णे य तत्थ बहवे आसे पासइ—सण्णद्ध-बद्धवम्मिय-गुडिए आविद्धगुडे ओसारियपक्खरे उत्तरकंचुइय-ओचूलामुहचंडाधर[1]-चामर-थासग-परिमंडिय-कडीए आरूढअस्सारोहे गहियाउहप्पहरणे ।

अण्णे य तत्थ बहवे पुरिसे पासइ-सण्णद्ध-बद्धवम्मियकवए उप्पीलियसरासणपट्टीए पिणद्धगेवेज्जे[2] विमलवरबद्ध-चिंधपट्टे गहियाउहप्पहरणे ।

तेसिं च णं पुरिसाणं मज्झगयं एगं पुरिसं पासइ अवओडयबंधणं उक्खित्त[3]-कण्णनासं नेहतुप्पियगत्तं वज्झ[4]-करकडि-जुयनियच्छं कंठेगुणरत्त-मल्लदामं चुण्णगुंडियगातं चुण्णयं वज्झपाणपीयं तिल-तिलं चेव छिज्जमाणं कागणिमंसाइं खावियंतं पावं खक्खरसएहिं[5] हम्ममाणं अणेगनर-नारी-संपरिवुडं चच्चरे-चच्चरे खंडपडहएणं उग्घोसिज्जमाणं इमं च णं एयारूवं उग्घोसणं सुणेइ[6]—नो खलु देवाणुप्पिया ! उज्झियगस्स दारगस्स केइ[7] राया वा रायपुत्तो वा अवरज्झइ, अप्पणो से सयाइं कम्माइं अवरज्झंति ॥

१५ तए णं भगवओ गोयमस्स तं पुरिसं पासित्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था अहो णं इमे पुरिसे[8] •पुरा पोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं

१ चूला° (ख) ।
२ पिणिद्ध° (क, ख, ग) ।
३. उक्खत्त (क, ख, ग), उक्कत्त (घ) ।
४ वद्ध (क, ख) ।
५. कक्खरग° (क, ग), कक्कर° (ख, घ) ।
६. पडिसुणेइ (ख) ।
७. केयी (क, घ) ।
८. सं० पा०—पुरिसे जाव निरयपडिरूवियं ।

पावग फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे विहरड। न मे दिट्ठा नरगा वा नेरइया वा। पच्चक्ख खलु अय पुरिसे° निरयपडिरूविय वेयण वेएइ त्ति कट्टु वाणियगामे नयरे उच्च-नीय-मज्झिम-कुलाइ अडमाणे अहापज्जत्त समुदाण गिण्हइ, गिण्हित्ता वाणियगामे नयरे मज्झंमज्झेण[1] •पडिनिक्खमइ, अतुरियमचवलमसभंते जुगतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रिय सोहेमाणे-सोहेमाणे जेणेव दूइपलासए उज्जाणे जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छड, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामते गमणागमणाए पडिक्कमड,पडिक्कमित्ता एसणमणेसण आलोएइ,आलोएत्ता भत्तपाण° पडिदसेइ,पडिदसेत्ता समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी —एव खलु अह भते! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे वाणियगामे नयरे जाव[2] तहेव सव्व निवेएइ[3]॥

१६. से णं भते! पुरिसे पुव्वभवे के आसि[4]? •किं नामए वा किं गोत्ते वा? कयरंसि गामंसि वा नयरंसि वा? किं वा दच्चा किं वा भोच्चा किं वा समायरित्ता,-केसिं वा पुरा पोराणाण दुच्चिण्णाण दुप्पडिक्कताण असुभाण पावाण कडाण कम्माण पावग फलवित्तिविसेस° पच्चणुभवमाणे विहरइ?

उज्झिययस्स गोत्तासभव-वण्णग-पदं

१७ एवं[5] खलु गोयमा! तेण कालेणं तेण समएण इहेव जबुद्दीवे दीवे भारहे[6] वासे हत्थिणाउरे नाम नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे[7]॥

१८ तत्थ ण हत्थिणाउरे नयरे सुनदे नाम राया होत्था—महयाहिमवत-महत-मलय-मदर-महिंदसारे[8]॥

१९. तत्थ ण हत्थिणाउरे नयरे बहुमज्झदेसभाए, एत्थ ण मह एगे गोमडवे होत्था—अणेगखभसयसनिविट्ठे पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे॥

२० तत्थ ण बहवे नगरगोरूवा सणाहा य अणाहा य 'नगरगावीओ य नगरवलीवद्दा य नगरपड्डियाओ य नगरवसभा य'[9] पउरतण-पाणिया निब्भया निरुव्विग्गा सुहसुहेण परिवसति॥

२१ तत्थ ण हत्थिणाउरे नयरे भीमे नाम कूडग्गाहे होत्था—अहम्मिए जाव[10] दुप्पडियाणदे॥

---

१. स० पा०—मज्झमज्झेणं जाव पडिदसेइ।
२ वि० १।२।१३-१५।
३ वेएइ (क, ख, ग)।
४ सं० पा०—आसि जाव पच्चणुभवमाणे।
५ पू०—वि० १।१।४३।
६. भरहे (क)।
७ पू०—ओ० सू० १।
८ पू०—ओ० सू० १४।
९. नगरवलद्दा य नगरपडियाओ य महिसिओ य य वसभाण (ग)।
१०. वि० १।१।४७।

२२ तस्स ण भीमस्स कूडग्गाहस्स उप्पला नाम भारिया होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पचिदियसरीरा[1] ॥

२३ तए ण सा उप्पला कूडग्गाहिणी अण्णदा कयाइ आवण्णसत्ता जाया यावि होत्था ॥

२४ तए ण तीसे उप्पलाए कूडग्गाहिणीए तिण्ह मासाण बहुपडिपुण्णाणं अयमेयारूवे दोहले पाउब्भूए – धण्णाओ ण ताओ अम्मयाओ[2], •संपुण्णाओ ण ताओ अम्मयाओ, कयत्थाओ ण ताओ अम्मयाओ, कयपुण्णाओ ण ताओ अम्मयाओ, कयलक्खणाओ ण ताओ अम्मयाओ, कयविहवाओ णं ताओ अम्मयाओ, सुलद्धे ण तासिं माणुस्सए जम्मजीवियफले°, जाओ ण बहूणं नगरगोरूवाण सणाहाण य[3] °अणाहाण य नगरगावियाण य नगरवलीवद्दाण य नगरपड्डियाण य नगर°-वसभाण य ऊहेहि य थणेहि य वसणेहि य छेप्पाहि य ककुहेहि[4] य वहेहि य कण्णेहि य अच्छीहि य नासाहि य जिब्भाहि य ओट्ठेहि य कवलेहि य सोल्लेहि[5] य तलिएहि य भज्जिएहि[6] य परिसुक्केहि य लावणेहि[7] य सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधु[8] च पसण्ण च आसाएमाणीओ वीसाएमाणीओ परिभाएमाणीओ परिभुजेमाणीओ दोहल विणेंति । त जइ णं अहमवि बहूणं नगर[9] •गोरूवाण सणाहाण य अणाहाण य नगरगावियाण य नगरवलीवद्दाण य नगरपड्डियाण य नगरवसभाण य ऊहेहि य थणेहि य वसणेहि य छेप्पाहि य ककुहेहि य वहेहि य कण्णेहि य अच्छीहि य नासाहि य जिब्भाहि य ओट्ठेहि य कवलेहि य सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य परिसुक्केहि य लावणेहि य सुर च महुं च मेरगं च जाइ च सीधु च पसण्णं च आसाएमाणी वीसाएमाणी परिभाएमाणी परिभुजेमाणी दोहल° विणिज्जामि त्ति कट्टु तसि दोहलसि अविणिज्जमाणंसि सुक्का भुक्खा निम्मसा ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा नित्तेया दीणविमणवयणा[10] पडुल्लइयमुही[11] ओमंथिय-नयणवदणकमला जहोइय पुप्फ-वत्थ-गध-मल्लालका-राहार अपरिभुजमाणी करयलमलियव्व कमलमाला ओहय[12]•मणसकप्पा करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठीया° झियाइ ॥

---

१. पू०—वि० १।२।७ ।

२. स० पा०—अम्मयाओ जाव सुलद्धे जाओ ।

३. स० पा०—सणाहाण य जाव वसभाण ।

४ कक्कुहेहि (क) ।

५. सोल्लिएहि (वृ) ।

६ भज्जेहि (ग) ।

७ लावणिएहि (क, ग) ।

८ सिधु (ख) ।

९ सं० पा०—नगर जाव विणिज्जामि ।

१०. दीणविमणहीणा (वृ), दीपविमणवयणा (वृपा) ।

११ °मुहा (घ) ।

१२ स० पा०—ओहय जाव झियाइ ।

२५. इमं च णं भीमे कूडग्गाहे जेणेव उप्पला कूडग्गाहिणी[1] तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता [उप्पल कूडग्गाहिणिं ?] ओहय[2]•मणसकप्प करतलपल्हत्थमुहि अट्टज्झाणोवगय भूमिगयदिट्ठीय झियायमाणिं° पासइ, पासित्ता एव वयासी—किं णं तुमं देवाणुप्पिए ! ओहय[3]•मणसकप्पा करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठीया° झियासि ?

२६ तए णं सा उप्पला भारिया भीम कूडग्गाह एवं वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! मम तिण्ह मासाण बहुपडिपुण्णाण दोहले पाउब्भूए—धण्णाओ ण ताओ अम्मयाओ, सपुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयत्थाओ ण ताओ अम्मयाओ, कयपुण्णाओ ण ताओ अम्मयाओ, कयलक्खणाओ ण ताओ अम्मयाओ, कयविहवाओ णं ताओ अम्मयाओ, सुलद्धे ण तासि माणुस्सए जम्मजीवियफले, जाओ ण बहूण[4] •नगरगोरूवाण सणाहाण य अणाहाण य नगरगावियाण य नगरबलीवद्दाण य नगरपड्डियाण य नगरवसभाण य ऊहेहि य थणेहि य वसणेहि य छेप्पाहि य ककुहेहि य वहेहि य कण्णेहि य अच्छीहि य नासाहि य जिब्भाहि य ओट्ठेहि य कवलेहि य सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य परिसुक्केहि य° लावणेहि य सुर च महु च मेरग च जाइ च सीधु च पसण्ण च आसाएमाणीओ वीसाएमाणीओ परिभाएमाणीओ परिभुजेमाणीओ दोहल विणेंति ।

तए ण अहं देवाणुप्पिया ! तसि दोहलसि अविणिज्जमाणसि[5] •सुक्का भुक्खा निम्मसा ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा नित्तेया दीणविमणवयणा पडुल्लइयमुही ओमथिय-नयणवदणकमला जहोइय पुप्फ-वत्थ-गध-मल्लालकाराहार अपरिभुजमाणी करयलमलियव्व कमलमाला ओहयमणसकप्पा करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठीया° झियामि ॥

२७ तए णं से भीमे कूडग्गाहे उप्पल भारिय एव वयासी—मा ण तुम देवाणुप्पिया! ओहय[6]•मणसंकप्पा करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठीया° झियाहि । अह ण तहा करिस्सामि[7] जहा णं तव दोहलस्स सपत्ती भविस्सइ—ताहिं इट्ठाहिं कताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहि वग्गूहिं समासासेइ ॥

२८ तए णं से भीमे कूडग्गाहे अद्धरत्तकालसमयसि[8] एगे अबीए[9] सण्णद्ध[10]-•बद्धवम्मियकवए उप्पीलियसरासणपट्टीए पिणद्धगेवेज्जे विमलवरबद्ध-चिंधपट्टे गहिया-

---

१. कूडग्गाही (क, ख) ।
२ स० पा०—ओहय जाव पासइ ।
३ स० पा०—ओहय जाव झियासि ।
४. सं० पा०—बहूण गोरूवाण ऊहे जाव लावणेहि ।
५ स०पा०—अविणिज्जमाणसि जाव झियामि ।
६ स० पा०—ओहय° ।
७ करीहामि (क) ।
८. अड्ढ° (क, ग) ।
९ अब्वितीए (ग) ।
१०. स० पा०—सण्णद्ध जाव पहरणे ।

उद्द॰प्पहरणे साओ गिहाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता 'हत्थिणाउरं नयरं'[1] मज्झमज्झेणं जेणेव गोमंडवे तेणेव उवागए बहूणं नगरगोरूवाणं[2] •सणाहाण य अणाहाण य नगरगावियाण य नगरवलीवद्दाण य नगरपड्डियाण य नगर॰-वसभाण य —अप्पेगइयाणं ऊहे छिंदइ[3], •अप्पेगइयाणं थणे छिंदइ, अप्पेगइयाणं वसणे छिंदइ, अप्पेगइयाणं छेप्पा छिंदइ, अप्पेगइयाणं ककुहे छिंदइ, अप्पेगइयाणं वहे छिंदइ, अप्पेगइयाणं कण्णे छिंदइ, अप्पेगइयाणं नासा छिंदइ, अप्पेगइयाणं जिब्भा छिंदइ, अप्पेगइयाणं ओट्ठे छिंदइ॰, अप्पेगइयाणं कंवलए छिंदइ, अप्पे-गइयाणं अण्णमण्णाइं अंगोवंगाइं वियंगेइ[4], वियंगेत्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उप्पलाए कूडग्गाहिणीए उवणेइ ।।

२९ तए णं सा उप्पला भारिया तेहिं बहूहिं गोमसेहिं सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य परिसुक्केहि य लावणेहि य सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणी वीसाएमाणी परिभाएमाणी परिभुंजेमाणी तं दोहलं विणेइ ।।

३० तए णं सा उप्पला कूडग्गाहिणी संपुण्णदोहला संमाणियदोहला विणीयदोहला विच्छिण्णदोहला[5] संपण्णदोहला तं गब्भं सुहंसुहेणं परिवहइ ।।

३१ तए णं सा उप्पला कूडग्गाहिणी अण्णया कयाइ नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं दारगं पयाया ।।

३२. तए णं तेणं दारएणं जायमेत्तेणं चेव महया-महया [चिच्ची ?] सद्देणं[6] विघुट्ठे[7] विस्सरे[8] आरसिए ।।

३३. तए णं तस्स दारगस्स आरसियसद्दं सोच्चा निसम्म हत्थिणाउरे नयरे बहवे नगरगोरूवा[9] •सणाहा य अणाहा य नगरगावीओ य नगरवलीवद्दा य नगरपड्डि-याओ य नगर॰वसभा य भीया तत्था तसिया उव्विग्गा संजायभया सव्वओ समंता विपलाइत्था[10] ।।

३४. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो अयमेयारूवं नामधेज्जं करेंति—जम्हा णं अम्हं इमेणं दारएणं जायमेत्तेणं चेव महया-महया चिच्चीसद्देणं विघुट्ठे विस्सरे आरसिए, तए णं एयस्स[11] दारगस्स आरसियसद्दं सोच्चा निसम्म हत्थिणाउरे

---

१ हत्थिणाउरे नयरे (ख)।
२. स॰ पा॰—नगरगोरूवाणं जाव वसभाणं।
३ सं॰ पा—छिंदइ जाव अप्पेगइयाणं।
४. विगत्तेति (क)।
५. वोच्छिन्न॰ (ख, घ)।
६. ३४ सूत्रे पुनरावर्तने 'चिच्चीसद्देण' इति पदमस्ति। तदत्र कथं न स्यात् ?
७ वुट्ठे (ख), विट्ठुट्ठे (ग)।
८. वीसरेणं (ख); चिच्चीसरे (ग), विसरे (घ)।
९ स॰ पा॰—नगरगोरूवा जाव वसभा।
१०. विप्पलाइत्था (क, घ)।
११ तस्स (क)।

नयरे बहवे नगरगोरूवा[1] •सणाहा य अणाहा य नगरगावीओ य नगरबलीवद्दा य नगरपड्डियाओ य नगरवसभा य° भीया तत्था तसिया उव्विग्गा सजायभया सव्वओ समंता विपलाइत्था, तम्हा णं होउ अम्हं दारए गोत्तासे नामेणं ॥

३५. तए णं से गोत्तासे दारए उम्मुक्कबालभावे जाए यावि होत्था ॥

३६. तए णं से भीमे कूडग्गाहे अण्णया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते ॥

३७. तए णं से गोत्तासे दारए बहूणं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं सद्धिं संपरिवुडे रोयमाणे कंदमाणे विलवमाणे भीमस्स कूडग्गाहस्स नीहरणं करेइ, करेत्ता बहूइं लोइयमयकिच्चाइं करेइ ॥

३८. तए णं से सुनंदे राया गोत्तासं दारयं अण्णया कयाइ सयमेव कूडग्गाहत्ताए ठवेइ ॥

३९. तए णं से गोत्तासे दारए कूडग्गाहे जाए यावि होत्था—अहम्मिए जाव[2] दुप्पडियाणंदे ॥

४०. तए णं से गोत्तासे[3] कूडग्गाहे[4] कल्लाकल्लिं अद्धरत्तकालसमयंसि एगे अबीए सण्णद्ध-बद्धवम्मियकवए जाव[5] गहियाउहप्पहरणे साओ गिहाओ 'निज्जाइ, निज्जाइत्ता'[6] जेणेव गोमंडवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता बहूणं नगरगोरूवाणं सणाहाण य अणाहाण य जाव[7] वियंगेइ, वियंगेत्ता जेणेव सए गेहे तेणेव उवागए ॥

४१. तए णं से गोत्तासे कूडग्गाहे तेहिं बहूहिं गोमंसेहिं सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य परिसुक्केहि य लावणेहि य सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणे वीसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ ॥

४२. तए णं से गोत्तासे कूडग्गाहे एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं पावकम्मं समज्जिणित्ता पंचवाससयाइं परमाउं पालइत्ता अट्टदुहट्टोवगए[8] कालमासे कालं किच्चा दोच्चाए पुढवीए उक्कोसं तिसागरोवमठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णे ॥

उज्झिययस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पदं

४३. तए णं सा विजयमित्तस्स सत्थवाहस्स सुभद्दा नामं भारिया जायनिंदुया[9] यावि होत्था—जाया-जाया दारगा विणिहायमावज्जंति[10] ॥

---

१. सं० पा०—नगरगोरूवा भीया ।
२. वि० १।१।४७ ।
३. गोत्तासे दारए (क, ख, ग, घ) ।
४. × (क) ।
५. वि० १।२।१४ ।
६. निग्गच्छइ २ (घ) ।
७. वि० १।२।२८ ।
८. अट्टदुहट्टवसट्टे (घ) ।
९. °निंदुया (क, घ), निंड्डुया (ग), नश्यत्प्रसूतिका निंदु (अभिधान चिन्तामणि ३।१९३) ।
१०. तस्या इति गम्यम् (वृ) ।

४४. तए णं से गोत्तासे कूडग्गाहे दोच्चाए पुढवीए अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव वाणिय-गामे नयरे विजयमित्तस्स सत्थवाहस्स सुभद्दाए भारियाए कुच्छिसि पुत्तत्ताए उववण्णे ॥

४५. तए णं सा सुभद्दा सत्थवाही अण्णया कयाइ नवण्ह मासाण बहुपडिपुण्णाण दारग पयाया ॥

४६ तए ण सा सुभद्दा सत्थवाही त दारगं जायमेत्तयं चेव एगते उक्कुरुडियाए[1] उज्झावेइ, उज्झावेत्ता दोच्च पि गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता अणुपुव्वेण सारक्खमाणी सगोवेमाणी सवड्ढेइ[2] ॥

४७. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो ठिइवडिय[3] च चदसूरदंसण[4] च जागरियं च महया इड्ढीसक्कारसमुदएण करेति ॥

४८. तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे निव्वत्ते संपत्ते बारसाहे अयमेयारूव[5] गोण्ण गुणनिप्फण्णं नामधेज्ज करेति—जम्हा ण अम्ह इमे दारए जायमेत्तए चेव एगते उक्कुरुडियाए उज्झिए, तम्हा ण होउ अम्ह दारए उज्झियए नामेण ॥

४९. तए ण से उज्झियए दारए पंचधाईपरिग्गहिए, [त जहा—खीरधाईए मज्जण-धाईए मडणधाईए कीलावणधाईए अकधाईए][6] जहा दढपइण्णे जाव[7] निव्वाय-निव्वाघाय-गिरिकदरमल्लीणे व्व चपगपायवे सुहसुहेणं विहरइ ॥

५०. तए ण से विजयमित्ते सत्थवाहे अण्णया कयाइ गणिम च धरिम च मेज्ज च पारिच्छेज्ज च—चउव्विह भड[8] गहाय लवणसमुद्द पोयवहणेण उवागए ॥

५१. तए णं से विजयमित्ते तत्थ लवणसमुद्दे पोयविवत्तीए निव्बुड्डभंडसारे अत्ताणे असरणे कालधम्मुणा संजुत्ते ॥

५२. तए णं त विजयमित्त सत्थवाहं जे जहा बहवे ईसर-तलवर-माडबिय-कोडुबिय-इब्भ-सेट्ठि-सत्थवाहा लवणसमुद्दपोयविवत्तिय[9] निव्बुड्डभडसार कालधम्मुणा सजुत्त सुणेति, ते तहा हत्थनिक्खेव च बाहिरभडसार च गहाय एगंतं अवक्कमति ॥

५३ तए ण सा सुभद्दा सत्थवाही विजयमित्त सत्थवाह लवणसमुद्दपोयविवत्तिय निव्बुड्डभडसार कालधम्मुणा सजुत्त सुणेइ, सुणेत्ता महया पइसोएण अप्फुण्णा

---

१. उक्करुडियाए (ग) ।
२. सवड्ढेमाणीति (क) ।
३. ठियपडिय (क); ठियपडिकम्मं (घ) ।
४. चदसूरपासणियं (वृ) ।
५ इमेयारूव (घ) ।
६. असौ कोष्ठकवर्ती पाठ व्याख्यांश प्रतीयते ।
७. ओ० सू० १४४, वाचनान्तर पृ० १५१, १५२ ।
८. भडग (घ) ।
९. लवणसमुद्दे पोय० (क, ख, ग, घ) ।

समाणो परसुनियत्ता इव[1] चंपगलया धस त्ति धरणीयलसि सव्वगेहिं सन्निवडिया ।।

५४. तए ण सा सुभद्दा सत्थवाही मुहुत्ततरेण आसत्था समाणी वहूहिं मित्त[2]-•नाइ-नियग-सयण-सबधि-परियणेहिं सद्धि° परिवुडा रोयमाणी कदमाणी विलव-माणी विजयमित्तस्स सत्थवाहस्स लोइयाइ मयकिच्चाइ करेइ ।।

५५. तए णं सा सुभद्दा सत्थवाही अण्णया कयाइ लवणसमुद्दोत्तरण च सत्थविणास च पोयविणासं च पइमरण च अणुचिंतेमाणी-अणुचिंतेमाणी कालधम्मुणा संजुत्ता ।।

५६. तए णं ते नगरगुत्तिया सुभद्दं सत्थवाहि कालगय जाणित्ता उज्झियग दारग साओ गिहाओ निच्छुभेंति, निच्छुभेत्ता त गिह अण्णस्स दलयति ।।

५७ तए ण से उज्झियए दारए साओ गिहाओ निच्छूढे समाणे वाणियगामे नगरे सिघाडग[3] - •तिग - चउक्क - चच्चर - चउम्मुह-महापह°पहेसु जूयखलएसु[4] वेसघरएसु[5] पाणागारेसु य सुहसुहेण परिवड्ढइ ।।

५८. तए ण से उज्झियए दारए अणोहट्टए[6] अणिवारिए सच्छदमई सइरप्पयारे मज्जप्पसंगी 'चोर-जूय'[7]-वेस-दारप्पसगी जाए यावि होत्था ।।

५९ तए ण से उज्झियए अण्णया कयाइ कामज्झयाए गणियाए सद्धि सपलग्गे जाए यावि होत्था, कामज्झयाए गणियाए सद्धि उरालाइ माणुस्सगाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरइ ।।

६० तए ण तस्स मित्तस्स रण्णो अण्णया कयाइ सिरीए देवीए जोणिसूले पाउब्भूए यावि होत्था, नो सचाएइ मित्ते राया सिरीए देवीए सद्धि उरालाइ माणुस्सगाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरित्तए ।।

६१ तए ण से मित्ते राया अण्णया कयाइ 'उज्झियए दारए'[8] कामज्झयाए गणियाए गिहाओ निच्छुभावेइ, निच्छुभावेत्ता कामज्झय गणिय अब्भिंतरिय[9] ठवेइ ठवेत्ता कामज्झयाए गणियाए सद्धि उरालाइ माणुस्सगाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरइ ।।

६२. तए ण से उज्झियए दारए कामज्झयाए गणियाए गिहाओ निच्छुभेमाणे[10]

---

१. विव (क्व) ।

२ स० पा०—मित्त जाव परिवुडा ।

३. स० पा०—सिघाडग जाव पहेसु ।

४ जूयखंधएसु (क) ।

५. वेसियाघरएसु (घ) ।

६ अणोहट्टिए (क, ख) ।

७. वृत्तौ 'चोर-जूय' इति पदे व्याख्याते नस्त. ।

८ उज्झियदारए (क, घ), अत्र विभक्ति-व्यत्ययो दृश्यते, अन्यथा व्याकरणदृष्ट्या 'उज्झियय दारय' इति पाठो युक्त स्यात् ।

९ अब्भितरय (ख, घ) ।

१०. निच्छुभमाणे समाणे (क), निच्छुभे समाणे (घ) ।

कामज्झयाए गणियाए मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे अण्णत्थ-कत्थइ सुइं च रइं च धिइं च अविंदमाणे तच्चित्ते तम्मणे तल्लेस्से तदज्झवसाणे तदट्ठोवउत्ते तयप्पियकरणे तब्भावणाभाविए कामज्झयाए गणियाए बहूणि अंतराणि य छिद्दाणि य विवराणि य पडिजागरमाणे-पडिजागरमाणे विहरइ ॥

६३. तए णं से उज्झियए दारए अण्णया कयाइ 'कामज्झयाए गणियाए'[1] अंतरं[2] लभेइ, लभेत्ता कामज्झयाए गणियाए गिहं रहसियं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता कामज्झयाए गणियाए सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ ॥

६४. इमं च णं मित्ते राया ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए मणुस्सवग्गुरापरिखित्ते जेणेव कामज्झयाए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तत्थ णं 'उज्झियगं दारगं'[3] कामज्झयाए गणियाए सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणं[4] पासइ, पासित्ता आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे तिवलिं भिउडिं निडाले साहट्टु उज्झियगं दारगं पुरिसेहिं गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता अट्ठि-मुट्ठि-जाणु-कोप्परपहार-संभग्ग[5]-महियगत्तं करेइ, करेत्ता अवओडग-बंधणं करेइ, करेत्ता एएणं विहाणेणं वज्झं आणवेइ ॥

६५. एवं खलु गोयमा ! उज्झियए दारए पुरा[6] •पोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे° विहरइ ॥

उज्झिययस्स आगामिभव-वण्णग-पदं

६६. उज्झियए णं भंते ! दारए इओ कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?
गोयमा ! उज्झियए दारए पणुवीसं[7] वासाइं परमाउं पालइत्ता अज्जेव तिभागावसेसे दिवसे सूलभिण्णे कए समाणे कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ ॥

६७. से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे वेयड्ढगिरिपायमूले वाणरकुलंसि वाणरत्ताए उववज्जिहिइ ॥

६८. से णं तत्थ उम्मुक्कबालभावे तिरियभोगेसु मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे

---

१. कामज्झियागणिय (घ)।
२ अंतराणि (ख)।
३. उज्झियए दारए (क, ख, ग, घ)।
४. विहरमाणं (क, ख, ग)।
५ भग्ग (क)।
६ सं० पा०—पुरा जाव विहरइ।
७. पणवीसं (ग)।

जाए-जाए वाणरपेल्लए वहेइ । तं एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे[1] कालमासे काल किच्चा इहेव जवुद्दीवे दीवे भारहे वासे इदपुरे नयरे गणिया-कुलसि पुत्तत्ताए[2] पच्चायाहिइ ॥

६९. तए ण त दारय अम्मापियरो जायमेत्तक वद्धेहिति[3], नपुसगकम्म सिक्खावेहिंति ॥

७०. तए ण तस्स दारयस्स अम्मापियरो निव्वत्तवारसाहस्स इम एयारूव नामधेज्ज करेहिंति—होउ ण अम्ह इमे दारए पियसेणे नाम नपुसए ॥

७१ तए ण से पियसेणे नपुसए उम्मुक्कवालभावे विण्णयपरिणमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठे उक्किट्ठसरीरे भविस्सइ ॥

७२ तए ण से पियसेणे नपुसए इदपुरे नयरे बहवे राईसर[4]-°तलवर-माडविय-कोडुविय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह°पभियओ वहूहि य विज्जापओगेहि य मतपओगेहि य चुण्णपओगेहि य हियउड्डावणेहि य निण्हवणेहि य पण्हवणेहि य वसीकरणेहि य आभिओगिएहि आभिओगित्ता उरालाइ माणुस्सगाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरिस्सइ ॥

७३. तए ण से पियसेणे नपुसए एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुवहु पावकम्म समज्जिणित्ता एक्कवीस वाससय परमाउ पालइत्ता कालमासे काल किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ । ततो सिरीसिवेसु, ससारो तहेव जहा पढमे जाव[5] °वाउ-तेउ-आउ-पुढवीसु अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाइस्सइ ।°
से ण तओ अणतर उव्वट्टित्ता इहेव जवुद्दीवे दीवे भारहे वासे चपाए नयरीए महिसत्ताए पच्चायाहिइ ।
से ण तत्थ अण्णया कयाइ गोट्ठिल्लएहि जीवियाओ ववरोविए समाणे तत्थेव चपाए नयरीए सेट्ठिकुलसि पुत्तत्ताए[6] पच्चायाहिइ ।
से ण तत्थ उम्मुक्कवालभावे तहारूवाण थेराण अतिए केवल वोहि वुज्झिहिइ, अणगारे भविस्सइ, सोहम्मे कप्पे, जहा पढमे जाव[7] अत काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

७४ [8]°एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव[9] सपत्तेण दुहविवागाण विइयस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते । —त्ति बेमि ° ॥

---

१ एयसमुदाचारे (वृ) ।
२ पुमत्ताए (क, ग) ।
३ वड्ढेहिति (क) ।
४. स० पा०—राईसर जाव पभियओ ।
५. वि० १।१।७०, स० पा०—जाव पुढवी ।
६ पुमत्ताए (क, ग) ।
७ वि० १।१।७० ।
८ स० पा०—निक्खेवो ।
९ ना० १।१।७ ।

तइयं अज्झयणं

अभग्गसेणे

उक्खेव-पदं

१. [1]•जइ ण भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[2] संपत्तेणं दुहविवागाणं दोच्चस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, तच्चस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

२. तए णं से सुहम्मे अणगारे जंबू-अणगारं एवं वयासी°—एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेण समएणं पुरिमताले नामं नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे[3] ।।

३. तस्स ण पुरिमतालस्स नयरस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ णं अमोहदंसी उज्जाणे ।।

४. तत्थ णं अमोहदसिस्स जक्खस्स आययणे होत्था ।।

५. तत्थ णं पुरिमताले नयरे महव्वले नाम राया होत्था ।।

६. तस्स ण पुरिमतालस्स नयरस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए देसप्पंते अडवि-संसिया, एत्थ ण सालाडवी नामं चोरपल्ली होत्था—विसमगिरिकंदर-कोलंव-संनिविट्ठा वंसीकलंक-पागारपरिक्खित्ता छिण्णसेल-विसमप्पवाय-फरिहोवगूढा अब्भिंतर-पाणीया सुदुल्लभजलपेरंता अणेगखंडी विदियजणदिन्न-निग्गमप्पवेसा सुवहुस्स[4] वि कुवियजणस्स दुप्पहंसा यावि होत्था ।।

७ तत्थ ण सालाडवीए चोरपल्लीए विजए नामं चोरसेणावई परिवसइ—अहम्मिए[5] •अहम्मिट्ठे अहम्मक्खाई अधम्माणुए अधम्मपलोइ अधम्मपलज्जणे अधम्मसील-समुदायारे अधम्मेण चेव वित्तिं कप्पेमाणे विहरइ—हण-छिंद-भिंद-वियत्तए°

---

१. स० पा०—तच्चस्स उक्खेवो ।

२. ना० १।१।७ ।

३. पू०—ओ० सू० १ ।

४. सुवहुयस्स (क) ।

५. सं० पा०—अहम्मिए जाव लोहियपाणी ।

लोहियपाणी वहुनयरनिग्गयजसे सूरे दढप्पहारे साहसिए सद्दवेही असि-लट्ठि-पढममल्ले । से ण तत्थ सालाडवीए चोरपल्लीए पचण्ह चोरसयाणं आहेवच्च[1] •पोरेवच्च सामित्त भट्टित्त महत्तरगत्त आणा-ईसर-सेणावच्च कारेमाणे पाले-माणे° विहरइ ॥

८. तए ण से विजए चोरसेणावई वहूण चोराण य पारदारियाण य गठिभेयगाण[2] य संधिच्छेयगाण[3] य खडपट्टाण[4] य, अण्णेसि च वहूण छिण्ण-भिण्ण-बाहिराहि-याण कुडंगे यावि होत्था ॥

९. तए ण से विजए चोरसेणावई पुरिमतालस्स नयरस्स उत्तरपुरत्थिमिल्ल जणवय वहूहि गामघाएहि य नगरघाएहि य गोग्गहणेहि य वदिग्गहणेहि य पथकोट्टेहि य खत्तखणणेहि य 'ओवीलेमाणे-ओवीलेमाणे'[5] 'विहम्मेमाणे-विहम्मेमाणे'[6] तज्जेमाणे-तज्जेमाणे तालेमाणे-तालेमाणे नित्थाणे निद्धणे निक्कणे[7] करेमाणे विहरइ, महव्वलस्स रण्णो अभिक्खण-अभिक्खण कप्पाय गेण्हइ ॥

१०. तस्स ण विजयस्स चोरसेणावइस्स खदसिरी नाम भारिया होत्था—अहीणपडि-पुण्ण-पचिंदियसरीरा[8] ॥

११. तस्स णं विजयस्स चोरसेणावइस्स पुत्ते खदसिरीए भारियाए अत्तए अभग्गसेणे नाम दारए होत्था—अहीणपडिपुण्ण-पचिंदियसरीरे[9] ॥

१२ तेण कालेणं तेण समएण समणे भगव महावीरे पुरिमताले नयरे समोसढे । परिसा निग्गया । राया निग्गओ । धम्मो कहिओ । परिसा राया य गओ ॥

गोयमेण अभग्गसेणस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं

१३ तेण कालेण तेणं समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अतेवासी गोयमे जाव[10] 'रायमग्गसि ओगाढे'[11], तत्थ ण वहवे हत्थी पासइ[12], अण्णे य तत्थ वहवे आसे पासइ[13], अण्णे य तत्थ वहवे पुरिसे पासइ—सण्णद्ध-बद्धवम्मियकवए[14] । तेसिं च[15] ण पुरिसाणं मज्झगय एग पुरिस पासइ—अवओडय[16]•बधण उक्खित्त-कण्ण-नास नेहतुप्पियगत्त वज्झकरकडि-जुयनियच्छ कठेगुणरत्त-मल्लदाम चुण्णगुडिय-

---

१. स० पा०—आहेवच्च जाव विहरइ ।
२. गठिभेयाण (क, ख, ग, घ) ।
३ सधिच्छेयाण (क, ख, ग, घ) ।
४. खडपाडियाण (वृपा) ।
५ उवीलेमाणे २ (घ, वृ) ।
६. विद्धसेमाणे २ अत्थापहारेहिं (ख), अत्था-पहारेहि य विद्धसेमाणे २ (घ) ।
७. × (क, वृ) ।
८ पू०—ओ० सू० १५ ।
९ पू०—वि० १।२।१० ।
१०. वि० १।२।१२-१४ ।
११. रायमग्ग समवगाढे (ख, घ); रायमग्ग समोसढे (ग) ।
१२,१३,१४, पू०—वि० १।२।१४ ।
१५ × (क, ख, ग, घ) ।
१६. सं०पा०—अवओडय जाव उग्घोसिज्जमाण ।

गातं चुण्णय वज्झपाणपीय तिलं-तिल चेव छिज्जमाण कागणिमंसाइं खावियतं पावं खक्खरसएहिं हम्ममाण अणेगनर-नारी-सपरिवुड चच्चरे-चच्चरे खडपड-हएणं° उग्घोसिज्जमाण [इम च ण एयारूवं उग्घोसण सुणेइ—नो खलु देवाणुप्पिया! अभग्गसेणस्स चोरसेणावइस्स केइ राया वा रायपुत्तो वा अवरज्झइ, अप्पणो से सयाइं कम्माइं अवरज्झंति' ?] ॥

१४ तए ण त पुरिस रायपुरिसा पढमसि चच्चरंसि निसियावेति, निसियावेत्ता अट्ठ चुलप्पिउए अग्गओ घाएति, घाएत्ता कसप्पहारेहिं 'तासेमाणा-तासेमाणा'[2] कलुणं काकणिमसाइ खावेति, रुहिरपाणं च पाएति।

तयाणतर च ण दोच्चसि चच्चरसि अट्ठ चुल्लमाउयाओ अग्गओ घाएति,[3] °घाएत्ता कसप्पहारेहिं तासेमाणा-तासेमाणा कलुणं काकणिमसाइ खावेंति, रुहिरपाण च पाएति° ।

एव तच्चे चच्चरे अट्ठ महापिउए, चउत्थे अट्ठ महामाउयाओ, पचमे पुत्ते, छट्ठे सुण्हाओ, सत्तमे जामाउया, अट्ठमे धूयाओ, नवमे नत्तुया, दसमे नत्तुईओ, एक्कारसमे नत्तुयावई, वारसमे नत्तुइणीओ, तेरसमे पिउस्सियपइया, चोद्दसमे पिउस्सियाओ, पण्णरसमे माउस्सियापइया, सोलसमे माउस्सियाओ, सत्तरसमे मामियाओ, अट्ठारसमे अवसेस[स्स ?][4] मित्त-नाइ-नियग-सयणसवंधि-परियण [स्स ?] अग्गओ घाएति, घाएत्ता कसप्पहारेहिं तासेमाणा-तासेमाणा कलुणं काकणिमंसाइं खावेति, रुहिरपाणं च पाएंति ॥

१५ तए ण 'भगवओ गोयमस्स तं पुरिस पासित्ता'[5] अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे[6]—°अहो णं इमे पुरिसे पुरा पोराणाणं दुच्चिण्णाण दुप्पडिक्कताण असुभाणं पावाण कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्ति-विसेसं पच्चणुभवमाणे विहरइ। न मे दिट्ठा नरगा वा नेरइया वा। पच्चक्खं खलु अयं पुरिसे निरयपडिरूविय वेयण वेएइ त्ति कट्टु पुरिमताले नयरे उच्च-नीय-मज्झिम-कुलाइ अडमाणे अहापज्जत्तं समुदाण गिण्हइ, गिण्हित्ता पुरिम-ताले नयरे मज्झमज्झेण पडिनिक्खमइ जाव[7] समणं भगव महावीरं वंदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता° एव वयासी—एवं खलु अह भते! '°तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे पुरिमताले नयरे जाव[9] तहेव सव्व निवेएइ° ॥

---

१. द्रष्टव्यम्—वि० १।२।१४ सूत्रम् ।
२. तालेमाणा २ (घ)।
३. स० पा०—घाएति २ ।
४. पूर्वक्रमेण अत्रापि षष्ठी विभक्तिर्युज्यते।
५. से भगव गोयमे त पुरिस पासइ। (क, ख, ग, घ)। १।१।४१ तथा १।२।१५ सूत्रानुसारेण अय पाठो लिखित.।
६. सं० पा०—समुप्पण्णे जाव तहेव निग्गए ।
७. वि० १।२।१५ ।
८. सं० पा०—त चेव जाव से ण ।
९. वि० १।३।१३-१५ ।

१६. से णं भंते! पुरिसे पुव्वभवे के आसी[1]? •किं नामए वा किं गोत्ते वा? कयरंसि गामंसि वा नयरंसि वा? किं वा दच्चा किं वा भोच्चा किं वा समायरित्ता, केसिं वा पुरा पोराणाण दुच्चिण्णाण दुप्पडिकंताण असुभाण पावाण कडाण कम्माण पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे° विहरइ?

अभग्गसेणस्स-निन्नयभव-वण्णग-पदं

१७. एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे पुरिमताले नामं नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे॥

१८. तत्थ णं पुरिमताले नयरे उदिओदिए नामं राया होत्था—महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे॥

१९. तत्थ णं पुरिमताले निन्नए नामं अंडय[2]-वाणियए होत्था—अड्ढे जाव[3] अपरि-भूए, अहम्मिए[4] •अधम्माणुए अधम्मिट्ठे अधम्मक्खाई अधम्मपलोई अधम्मपल-ज्जणे अधम्मसमुदाचारे अधम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणे दुस्सीले दुव्वए° दुप्पडियाणंदे॥

२०. तस्स णं निन्नयस्स अंडय-वाणियस्स बहवे पुरिसा दिण्णभइ-भत्त-वेयणा कल्ला-कल्लिं कुद्दालियाओ य पत्थियपिडए[5] य गिण्हंति, गिण्हित्ता पुरिमतालस्स नयरस्स परिपेरंतेसु बहवे काइअंडए य घूइअंडए य पारेवइअंडए य टिट्टिभि-अंडए य बगिअंडए य मयूरिअंडए य कुक्कुडिअंडए य, अण्णेसिं च बहूणं जलयर-थलयर-खहयरमाईणं अंडाइं[6] गेण्हंति, गेण्हित्ता पत्थियपिडगाइं भरेंति, भरेत्ता जेणेव निन्नए अंडवाणियए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता निन्नयस्स अंडवाणियस्स उवणेंति॥

२१. तए णं तस्स निन्नयस्स अंडवाणियगस्स बहवे पुरिसा दिण्णभइ-भत्त-वेयणा बहवे काइअंडए य जाव[7] कुक्कुडिअंडए य, अण्णेसिं च बहूणं जलयर-थलयर-खहयरमाईणं अंडए[8] तवएसु य कवल्लीसु य कंडुसु[9] य भज्जणएसु य इंगालेसु य तलेंति भज्जेंति सोल्लेंति, तलेत्ता भज्जेत्ता सोल्लेत्ता य रायमग्गे अंतरावणंसि अंडयपणिएणं वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति।

अप्पणा वि णं से निन्नए अंडवाणियए तेहिं बहूहिं काइअंडएहि य जाव कुक्कुडिअंडएहि य सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य सुरं च महुं च मेरगं

---

१. सं० पा०—आसी जाव विहरइ।
२. अंड (क, ग)।
३. ओ० सू० १४१।
४. सं० पा०—अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे।
५. पत्थियापडिए (क, ख, ग, घ)।
६. अंडयाइं (क)।
७. वि० १।३।२०।
८. अंडयाइं (क)।
९. कंदुसु (क); कंदूएसु (ग)।

च जाइं च सीधु च पसण्णं च आसाएमाणे वीसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुंजे-माणे विहरइ ॥

२२. तए ण से निन्नए अंडवाणियए एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुवहुं पावकम्म समज्जिणित्ता एगं वाससहस्सं परमाउं पालइत्ता कालमासे काल किच्चा तच्चाए पुढवीए उक्कोसेण[1] सत्तसागरोवमठिइएसु नरएसु नेरइयत्ताए उववण्णे ॥

अभग्गसेणस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पदं

२३ से ण तओ अणतरं उव्वट्टित्ता इहेव सालाडवीए चोरपल्लीए विजयस्स चोर-सेणावइस्स खंदसिरीए भारियाए कुच्छिसि पुत्तत्ताए उववण्णे ॥

२४ तए ण तीसे खदसिरीए भारियाए अण्णया कयाइ तिण्ह मासाणं वहुपडिपुण्णाण इमे एयारूवे दोहले पाउब्भूए— धण्णाओ ण ताओ अम्मयाओ[2] 'जाओ णं'[3] बहूहिं मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवंधि-परियणमहिलाहिं, अण्णाहि य चोरमहिलाहिं सद्धिं सपरिवुडा ण्हाया[4] •कयवलिकम्मा कयकोउय-मंगल°-पायच्छित्ता सव्वालंकारविभूसिया विउल असणं पाण खाइमं साइमं सुरं च महु च मेरगं च जाइं च सीधु च पसण्ण च आसाएमाणी वीसाएमाणी परिभाएमाणी परिभुंजे-माणी विहरति। जिमियभुत्तुत्तरागया[5] पुरिसनेवत्था[6] सण्णद्ध-वद्ध[7]•वम्मियकवइया उप्पीलियसरासणपट्टीया पिणद्धगेवेज्जा विमलवरवद्ध-चिंधपट्टा गहियाउह°प्प-हरणावरणा भरिएहिं, फलएहिं निक्कट्ठाहिं[8] असीहिं, अंसागएहिं तोणेहिं, सज्जीवेहिं असागएहिं धणूहिं, समुक्खित्तेहिं सरेहिं, समुल्लालियाहिं[9] दामाहिं[10], ओसारि-याहिं[11] ऊरुघंटाहिं, छिप्पतूरेणं वज्जमाणेण[12] महया उक्किट्ठि[13]-•सीहणाय-वोल-कलकल-रवेण पक्खुभियमहा°समुद्दरवभूय पिव करेमाणीओ सालाडवीए चोरपल्लीए सव्वओ समंता ओलोएमाणीओ-ओलोएमाणीओ आहिंडमाणीओ-आहिंडमाणीओ दोहलं विणेंति। तं जइ अहं पि जाव दोहलं विणिएज्जामि[14]

---

१. उक्कोस (क); उक्कोसे (ख, ग, घ)।
२. पू०—वि० १।२।२४।
३. जाण (क, ख, ग, घ)।
४. सं० पा०—ण्हाया जाव पायच्छित्ता।
५. °गयाओ (ख, ग, घ)।
६. °नेवत्थिया (क, ख, ग, घ)।
७. सं० पा०—सण्णद्धवद्ध जाव प्पहरणा°।
८. निक्किट्ठाहिं (ख)।
९. समुल्लासियाहिं (वृ)।
१०. दामाहिं दाहाहिं (ख); दाहाहिं (वृपा)।
११. लवियाहिं (क, ग)।
१२. वज्जमाणेणं २ (ख, ग, घ)।
१३. सं० पा०—उक्किट्ठि जाव समुद्द°, उक्किट्ठ (ग)।
१४. विणेज्जामि (क), विणीज्जामि (ख, ग, घ)।

त्ति कट्टु तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि सुक्का भुक्खा जाव[1] अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठीया झियाइ ॥

२५. तए णं से विजए चोरसेणावई खदसिरिभारियं ओहयमणसकप्प जाव[2] झियायमाणिं पासइ, पासित्ता एव वयासी—किं ण तुम देवाणुप्पिए ! ओहयमणसकप्पा जाव भूमिगयदिट्ठीया झियासि ?

२६. तए ण सा खदसिरी विजय चोरसेणावइ एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! मम तिण्हं मासाण वहुपडिपुण्णाण दोहले पाउब्भूए जाव[3] भूमिगयदिट्ठीया झियामि ॥

२७ तए ण से विजए चोरसेणावई खदसिरीए भारियाए अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म खदसिरिभारियं एव वयासी—अहासुह देवाणुप्पिए ! त्ति एयमट्ठ पडिसुणेइ ॥

२८ तए णं सा खदसिरिभारिया विजएण चोरसेणावइणा अब्भणुण्णाया समाणी हट्ठतुट्ठा वहूहिं मित्त[4]-●नाइ-नियग-सयण-सवधि-परियणमहिलाहिं°, अण्णाहि य वहूहिं चोरमहिलाहिं सद्धिं सपरिवुडा ण्हाया जाव[5] विभूसिया विउल असण पाण खाइम साइम सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधु च पसण्ण च आसाएमाणी वीसाएमाणी परिभाएमाणी परिभुजेमाणी विहरइ। जिमियभुत्तुत्तरागया पुरिसनेवत्था सण्णद्ध-वद्धवम्मियकवइया जाव[6] आहिडमाणी दोहल विणेइ ॥

२९. तए ण सा खदसिरिभारिया संपुण्णदोहला समाणियदोहला विणीयदोहला विच्छिण्णदोहला[7] सपण्णदोहला त गब्भ सुहसुहेण परिवहइ ॥

३० तए ण खंदसिरी चोरसेणावइणी नवण्ह मासाण वहुपडिपुण्णाण दारग पयाया ॥

३१ तए ण से विजए चोरसेणावई तस्स दारगस्स महया इड्ढीसक्कारसमुदएण दसरत्त ठिइवडियं[8] करेइ ॥

३२. तए ण से विजए चोरसेणावई तस्स दारगस्स एक्कारसमे दिवसे विउल असण पाण खाइम साइम उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-सबधि परियण आमतेइ, आमतेत्ता जाव[9] तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-सबधिपरियणस्स पुरओ एव वयासी—जम्हा ण अम्ह इमसि दारगसि गब्भगयसि समाणसि इमे एयारूवे दोहले पाउब्भूए, तम्हा ण होउ अम्ह दारए अभग्गसेणे नामेण ।

---

१ वि० १।२।२४ ।
२. वि० १।२।२५ ।
३. वि० १।३।२४ ।
४ स० पा०—मित्त जाव अण्णाहि ।
५. वि० १।३।२४ ।
६. वि० १।३।२४ ।
७. वोच्छिण्ण ° (क, ख, घ) ।
८. ठितिपडित (क, वृ) ।
९. ना० १।७।६ ।

३३ तए णं से अभग्गसेणे कुमारे पंचधाईपरिग्गहिए जाव[1] परिवड्ढइ ॥

३४. तए णं से अभग्गसेणे कुमारे उम्मुक्कबालभावे यावि होत्था। 'अट्ठ दारियाओ जाव अट्ठओ दाओ। उप्पिं भुंजइ'[2] ॥

३५ तए णं से विजए चोरसेणावई अण्णया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते ॥

३६ तए णं से अभग्गसेणे कुमारे पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं संपरिवुडे रोयमाणे कंदमाणे विलवमाणे विजयस्स चोरसेणावइस्स महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं नीहरणं करेइ, करेत्ता बहूइं लोइयाइं मयकिच्चाइं करेइ, करेत्ता केणइ[3] कालेणं अप्पसोए जाए यावि होत्था ॥

३७. तए णं ताइं पंच चोरसयाइं अण्णया कयाइ अभग्गसेणं कुमारं सालाडवीए चोरपल्लीए महया-महया चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचंति ॥

३८ तए णं से अभग्गसेणे कुमारे चोरसेणावई जाए अहम्मिए जाव[4] महब्बलस्स रण्णो अभिक्खणं-अभिक्खणं कप्पायं गिण्हइ ॥

३९. तए णं ते जाणवया पुरिसा अभग्गसेणेणं चोरसेणावइणा बहुगामघायणाहिं[5] ताविया[6] समाणा अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! अभग्गसेणे चोरसेणावई पुरिमतालस्स नयरस्स उत्तरिल्लं जणवयं बहूहिं गामघाएहिं जाव[7] निद्धणं करेमाणे विहरइ। तं सेयं खलु देवाणुप्पिया! पुरिमताले नयरे महब्बलस्स रण्णो एयमट्ठं विण्णवित्तए[8] ॥

४० तए णं ते जाणवया पुरिसा एयमट्ठं अण्णमण्णेणं[9] पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता महत्थं महग्घं महरिहं रायारिहं पाहुडं गिण्हंति, गिण्हित्ता जेणेव पुरिमताले नयरे तेणेव उवागया[10] महब्बलस्स रण्णो तं महत्थं जाव पाहुडं उवणेंति,

---

१. वि० १।२।४९।

२ 'अट्ठदारियाओ' त्ति, अस्यायमर्थः—'तए णं तस्स अभग्गसेणस्स कुमारस्स अम्मापियरो अभग्गसेणं कुमारं सोहणंसि तिहिकरणनक्खत्तमुहुत्तंसि अट्ठहिं दारयाहिं सद्धिं एगदिवसेणं पाणिं गिण्हाविंसु' त्ति, यावत्करणादिदं दृश्यं—'तए णं तस्स अभग्गसेणस्स कुमारस्स अम्मापियरो इमं एयारूवं पीईदाणं दलयंति' त्ति 'अट्ठओ दाओ' त्ति अष्टपरिमाणमस्येति अष्टको दायो—दानं वाच्य इति शेषः, स चैवम्—'अट्ठ हिरण्णकोडीओ अट्ठ सुवण्णकोडीओ' इत्यादि यावत् 'अट्ठ पेसणकारियाओ अण्णं च विपुलधणकणगरयणमणिमोत्तियसंखसिलप्पवालरत्तरयणमाइयं संतसारसावएज्ज'मिति, 'उप्पिं भुंजइ' त्ति अस्यायमर्थः—'तए णं से अभग्गसेणे कुमारे उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुयंगमत्थएहिं वरतरुणिसंपउत्तेहिं बत्तीसइबद्धेहिं नाडएहिं उवगिज्जमाणे विउले माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणे विहरइ' त्ति (वृ)।

३. × (क)।

४. वि० १।३।७-९।

५ °घायावणाहिं (ख, ग, घ)।

६ तासिता (क)।

७. वि० १।३।९।

८. निवेयित्तए (क); निवेएत्तए (ग)।

९ अण्णोण्णं (ग)।

१०. उवागया जेणेव महब्बले राया तेणेव उवागया (ख, ग, घ)।

उवणेत्ता करयल[1]•परिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए• अंजलिं कट्टु महब्बलं राय एवं वयासी—एव खलु सामी ! सालाडवीए चोरपल्लीए अभग्गसेणे चोरसेणावई अम्हे बहूहिं गामघाएहि य जाव[2] निद्धणे करेमाणे विहरइ। त इच्छामि ण सामी ! तुज्झ बाहुच्छायापरिग्गहिया निब्भया निरुव्विग्गा सुहंसुहेणं परिवसित्तए त्ति कट्टु पायवडिया पंजलिउडा[3] महब्बलं रायं एयमट्ठं विण्णवेंति ।।

४१ तए णं से महब्बले राया तेसिं जाणवयाणं[4] पुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते[5] •रुट्ठे कुविए चंडिक्किए• मिसिमिसेमाणे[6] तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु दड सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया ! सालाडविं चोरपल्लिं विलुपाहि, विलुपित्ता अभग्गसेणं चोरसेणावइं जीवग्गाहं गेण्हाहि, गेण्हित्ता ममं उवणेहि[7] ।।

४२ तए णं से दडे तह त्ति एयमट्ठं पडिसुणेइ ।।

४३ तए णं से दंडे बहूहिं पुरिसेहिं[8] सण्णद्ध-बद्धवम्मियकवएहिं जाव[9] गहियाउहपहरणेहिं सद्धिं संपरिवुडे मगइएहिं[10] फलएहिं[11], •निक्कट्ठाहिं असीहिं, असागएहिं तोणेहिं, सज्जीवेहिं असागएहिं धणूहिं, समुक्खित्तेहिं सरेहिं, समुल्लालियाहिं दामाहिं, ओसारियाहिं ऊरुघटाहिं•, छिप्पतूरेण वज्जमाणेण महया उक्किट्ठि[12]- •सीहणाय-बोल-कलकल-रवेण पक्खुभियमहासमुद्दरवभूय पिव• करेमाणे पुरिमताल नयरं मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सालाडवी चोरपल्ली तेणेव पहारेत्थ[13] गमणाए ।।

४४. तए ण तस्स अभग्गसेणस्स चोरसेणावइस्स चारपुरिसा इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा जेणेव सालाडवी चोरपल्ली, जेणेव अभग्गसेणे चोरसेणावई तेणेव उवागया करयल[14]•परिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलिं कट्टु अभग्गसेण चोरसेणावइं• एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! पुरिमताले नयरे महब्बलेण रण्णा महयाभडचडगरेण दडे आणत्ते—गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया !

---

१ स० पा०—करयल० ।
२. वि० १।३।६ ।
३. पजलियडा (क)।
४. जाणवदाण (क)।
५. स० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे, आसुरत्ते (ग, घ)।
६. मिसेमिसेमाणे (ख)।
७. उवणेहिंति (क), उवणेहिं (ख, ग, घ)।
८. पुरिसेहिं सद्धिं (क, ग घ)।
९ वि० १।२।१४।
१०. वि० १।३।२४ अस्य स्थाने 'भरिएहिं' इति पाठ। शब्दभेदेपि अनयो वृत्तिकारेण एक एव अर्थः कृतः—'भरिएहिं' इति हस्तपाशितै, 'मगइएहिं' ति हस्तपाशितै ।
११. स० पा०—फलएहिं जाव छिप्पतूरेण।
१२ उक्किट्ठ (ख, ग, घ), स० पा०—उक्किट्ठि जाव करेमाणे।
१३ पाहारेत्थ (क)।
१४ स० पा०—करयल जाव एव ।

सालाडविं चोरपल्लिं विलुपाहि, अभग्गसेण चोरसेणावइं जीवग्गाहं गेण्हाहि, गेण्हित्ता मम उवणेहि। तए णं से दडे महयाभडचडगरेण जेणेव सालाडवी चोरपल्ली तेणेव पहारेत्थ गमणाए॥

४५ तए ण से अभग्गसेणे चोरसेणावई तेसि चारपुरिसाण अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म पच चोरसयाइ सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया! पुरिमताले नयरे महब्बलेण रण्णा महयाभडचडगरेणं दडे आणत्ते जाव[1] तेणेव पहारेत्थ गमणाए[2]। त सेय खलु देवाणुप्पिया! अम्हं त दड सालाडविं चोरपल्लिं असपत्त अतरा चेव पडिसेहित्तए॥

४६ तए ण ताइ पच चोरसयाइ अभग्गसेणस्स चोरसेणावइस्स तहत्ति[3] •एयमट्ठ° पडिसुणेति॥

४७ तए ण से अभग्गसेणे चोरसेणावई विउल असण पाण खाइम साइम उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता पचहि चोरसएहिं सद्धि ण्हाए[4] •कयबलिकम्मे कयकोउय-मगल°-पायच्छित्ते भोयणमडवसि तं विउल असणं पाणं खाइम साइम सुर च महु च मेरग च जाइ च सीधु च पसण्ण च आसाएमाणे वीसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुजेमाणे विहरइ। जिमियभुत्तुत्तरागए वि य ण समाणे आयते चोक्खे परमसुइभूए पचहि चोरसएहिं सद्धि अल्ल चम्म दुरुहइ, दुरुहित्ता सण्णद्ध-बद्ध[5]•वम्मियकवएहिं उप्पीलियसरासणपट्टीएहिं पिणद्धगेवेज्जेहिं विमलवरबद्ध-चिंधपट्टेहिं गहियाउह°पहरणेहिं[6] मगइएहिं जाव[7] उक्किट्ठि-सीहनाय-बोल-कलकलरवेण[8] पच्चावरण्हकालसमयसि सालाडवीओ चोरपल्लीओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता विसमदुग्गगहणं ठिए गहियभत्तपाणिए त दडं पडिवालेमाणे-पडिवालेमाणे चिट्ठइ॥

४८ तए ण से दडे जेणेव अभग्गसेणे चोरसेणावई तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अभग्गसेणेण चोरसेणावइणा सद्धि संपलग्गे यावि होत्था॥

४९ तए ण से अभग्गसेणे चोरसेणावई त दडं खिप्पामेव हय-महिय[9]-•पवरवीर-घाइय-विवडियचिंधधयपडागं दिसोदिसिं° पडिसेहेति[10]॥

५०. तए ण से दडे अभग्गसेणेणं चोरसेणावइणा हय-[11]•महिय-पवरवीर-घाइय-विवडियचिंधधयपडागे दिसोदिसिं° पडिसेहिए समाणे अथामे अबले अवीरिए

---

१. वि० १।३।४४।

२. आगते ततेण अभग्गसेणे ताइ पचचोरसयाइं एव वयासी (क,ख,ग), गमणाए आगते ततेण से अभग्गसेणे ताइ पचचोरसयाइ एव वयासी (घ)।

३. स० पा०—तहत्ति जाव पडिसुणेंति।

४ स० पा०—ण्हाए जाव पायच्छित्ते।

५ स० पा०—सण्णद्धबद्ध जाव पहरणेहिं।

६. पहरणे (क, घ)।

७. वि० १।३।४३।

८ पू०—१।३।४३।

९ स० पा०—महिय जाव पडिसेहेति।

१०. विप्पडिसेहेइ (वृ)।

११. स० पा०—हय जाव पडिसेहिए।

अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्जमिति कट्टु जेणेव पुरिमताले नयरे, जेणेव महब्बले राया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल[1]•परिग्गहिय सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु महब्बलं रायं° एवं वयासी—एवं खलु सामी ! अभग्गसेणे चोरसेणावई विसमदुग्गगहणं ठिए गहियभत्तपाणिए, नो खलु से सक्का केणवि[2] सुबहुएणवि आसबलेण वा हत्थिबलेण वा जोहबलेण वा 'रहबलेण वा चाउरंगेण पि'[3] [सेण्णबलेण ?] उरंउरेण गिण्हित्तए। ताहे सामेण य[4] भेएण य[5] उवप्पयाणेण य[6] विस्सम्भमाणेउं पवत्ते[7] यावि होत्था। जे वि य से अब्भिंतरगा सीसगभमा[8], मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं च विउलेण-धण-कणग-रयण-संतसार-सावएज्जेणं[9] भिंदइ, अभग्गसेणस्स य[10] चोरसेणावइस्स अभिक्खणं-अभिक्खणं महत्थाइं महग्घाइं महरिहाइं रायारिहाइं पाहुडाइं पेसेइ, अभग्गसेणं चोरसेणावइं वीसम्भमाणेइ ॥

५१ तए णं से महब्बले राया अण्णया कयाइ पुरिमताले नयरे एगं महं महइमहालियं कूडागारसालं कारेइ[11]—अणेगखंभसयसन्निविट्ठं पासाईयं दरिसणिज्जं अभिरूवं पडिरूवं ॥

५२. तए णं से महब्बले राया अण्णया कयाइ पुरिमताले नयरे उस्सुक्कं[12] •उक्करं अभडप्पवेसं अदंडिमकुदंडिमं अधरिमं अधारणिज्जं अणुद्धयमुइंगं अमिलाय-मल्लदामं गणियावरनाडइज्जकलियं अणेगतालाचराणुचरियं पमुइयपक्कीलियाभिरामं जहारिहं° दसरत्तं पमोयं उग्घोसावेइ, उग्घोसावेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सालाडवीए चोरपल्लीए। तत्थ णं तुब्भे अभग्गसेणं चोरसेणावइं करयल[13]•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° एवं वयह[14]—एवं खलु देवाणुप्पिया ! पुरिमताले नयरे महब्बलस्स रण्णो उस्सुक्के जाव दसरत्ते पमोए उग्घोसिए। तं किं णं देवाणुप्पिया ! विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारे य इहं हव्वमाणिज्जउ उदाहु सयमेव गच्छित्था[15] ?

---

१ सं० पा०—करयल° ।
२. केणइ (ख, ग, घ) ।
३. × (क) ।
४,५,६. वा (ग) ।
७. पयत्ते (क) ।
८. सीसगसमा (घ), तान् इति शेषः (वृ) ।
९. सावएजेण (क, ग) ।
१०. × (क, ग) ।
११. करेइ (क, ख, घ) ।
१२. सं० पा०—उस्सुक्कं जाव दसरत्तं, उस्सुकं (क) सर्वत्र ।
१३ सं० पा०—करयल जाव एवं ।
१४. वदाह (क) ।
१५ गच्छित्ता (क, ख, ग, घ); मुद्रितवृत्तौ

५३ तए णं ते कोडुंबियपुरिसा महब्बलस्स रण्णो करयल[1]•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामि ! त्ति आणाए विणएण वयणं° पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता पुरिमतालाओ नयराओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता नाइविकिट्ठेहिं[2] अद्धाणेहिं सुहेहिं वसहिपायरासेहिं जेणेव सालाडवी चोरपल्ली तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अभग्गसेणं चोरसेणावइं करयल[3]•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! पुरिमताले नयरे महब्बलस्स रण्णो उस्सुक्के जाव[4] दसरत्ते पमोए उग्घोसिए। तं किं णं देवाणुप्पिया ! विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारे य इहं हव्वमाणिज्जउ उदाहु सयमेव गच्छित्था ?

५४ तए णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई ते कोडुंबियपुरिसे एवं वयासी—अहं णं देवाणुप्पिया ! पुरिमतालं नयरं सयमेव गच्छामि। ते कोडुंबियपुरिसे सक्कारेइ सम्माणेइ पडिविसज्जेइ ॥

५५ तए णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई बहूहिं मित्त[5]-•नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेहिं सद्धिं° परिवुडे ण्हाए[6] •कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल°-पायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए सालाडवीओ चोरपल्लीओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव पुरिमताले नयरे, जेणेव महब्बले राया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल[7]•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° महब्बलं रायं जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता महत्थं[8] •महग्घं महरिहं रायारिहं° पाहुडं उवणेइ ॥

५६. तए णं से महब्बले राया अभग्गसेणस्स चोरसेणावइस्स तं महत्थं[9] •महग्घं महरिहं रायारिहं पाहुडं° पडिच्छइ, अभग्गसेणं चोरसेणावइं सक्कारेइ सम्माणेइ विसज्जेइ, कूडागारसालं च से आवसहिं[10] दलयइ ॥

५७ तए णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई महब्बलेणं रण्णा विसज्जिए समाणे जेणेव कूडागारसाला तेणेव उवागच्छइ ॥

५८ तए णं से महब्बले राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—

'उदाहु सयमेव गच्छित्ता उताहो स्वयमेव गमिष्यसि'। हस्तलिखितवृत्तौ—'गच्छित्था स्वयमेव गमिष्यथ' इत्यस्ति।

१. सं० पा०—करयल जाव पडिसुणेंति।
२. नातिविक° (ख), नाइविग° (वृ)।
३ सं० पा०—करयल जाव एवं।
४ वि० १।३।५२।
५ सं० पा०—मित्त जाव परिवुडे।
६ सं० पा०—ण्हाए जाव पायच्छित्ते।
७ सं० पा०—करयल°।
८ सं० पा०—महत्थं जाव पाहुडं।
९. सं० पा०—महत्थं जाव पडिच्छइ।
१०. वसहिं (क)।

गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेह, उवक्खडावेत्ता तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च सुबहुं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारं च अभग्गसेणस्स चोरसेणावइस्स कूडागारसालाए उवणेह ।।

५९ तए णं ते कोडुंबियपुरिसा करयल[1]•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° जाव[2] उवणेंति ।।

६० तए णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई बहूहिं मित्त[3]-•नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेहिं° सद्धिं संपरिवुडे ण्हाए जाव[4] सव्वालंकारविभूसिए तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च आसाए-माणे वीसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे पमत्ते विहरइ ।।

६१ तए णं से महब्बले राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे[5] देवाणुप्पिया! पुरिमतालस्स नयरस्स दुवाराइं पिहेह, पिहेत्ता अभग्गसेणं चोरसेणावइं जीवग्गाहं गिण्हह, गिण्हित्ता ममं उवणेह ।।

६२ तए णं ते कोडुंबियपुरिसा करयल[6]•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामि! त्ति आणाए विणएणं वयणं° पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता पुरिमतालस्स नयरस्स दुवाराइं पिहेंति, अभग्गसेणं चोरसेणावइं जीवग्गाहं गिण्हंति, गिण्हित्ता महब्बलस्स रण्णो उवणेंति ।।

६३ तए णं से महब्बले राया अभग्गसेणं चोरसेणावइं एएणं विहाणेणं वज्झं आणवेइ ।।

६४ एवं खलु गोयमा! अभग्गसेणे चोरसेणावई पुरा पोराणाणं[7] •दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे° विहरइ ।।

अभग्गसेणस्स आगामिभव-वण्णग-पदं

६५. अभग्गसेणे णं भंते! चोरसेणावई कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिइ? कहिं उववज्जिहिइ?

गोयमा! अभग्गसेणे चोरसेणावई सत्ततीसं वासाइं परमाउं पालइत्ता अज्जेव तिभागावसेसे दिवसे सूलभिण्णे कए समाणे कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोस[8]•सागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए° उववज्जिहिइ।

---

१. सं० पा०—करयल°।
२. वि० १।३।५८।
३. सं० पा०—मित्त°।
४. वि० १।३।५५।
५. तुमं (ग)।
६. सं० पा०—करयल जाव पडिसुणेंति।
७. सं० पा०—पोराणाणं जाव विहरइ।
८. सं० पा०—उक्कोस नेरइएसु।

से ण तओ अणतर उव्वट्टित्ता, एव ससारो जहा पढमे जाव[1] •वाउ-तेउ-आउ-पुढवीसु अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाइस्सइ।°

तओ उव्वट्टित्ता वाणारसीए नयरीए सूयरत्ताए पच्चायाहिइ। से ण तत्थ सोयरिएहिं जीवियाओ ववरोविए समाणे तत्थेव वाणारसीए नयरीए सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाहिइ। से णं तत्थ उम्मुक्कबालभावो, एव जहा पढमे जाव[2] अंत काहिइ॥

निक्खेव-पदं

६६ [3]•एव खलु जंबू! समणेण भगवया महावीरेण जाव[4] संपत्तेण दुहविवागाण तइयस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते।

—त्ति बेमि॥°

---

१. वि० १।१।७०, स० पा०—जाव पुढवी।
२ वि० १।१।७०।
३. स० पा०—निक्खेवओ।
४. ना० १।१।७।

चउत्थं अज्झयणं

सगडे

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते![1] •समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[2] संपत्तेणं दुहविवागाणं तच्चस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, चउत्थस्स णं भंते! अज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते?

२. तए णं से सुहम्मे अणगारे जंबू-अणगारं एवं वयासी°—एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं साहंजणी नामं नयरी होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धा॥

३. तीसे णं साहंजणीए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए देवरमणे नामं उज्जाणे होत्था॥

४. तत्थ णं अमोहस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था—पोराणे॥

५. तत्थ णं साहंजणीए नयरीए महचंदे नामं राया होत्था—महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे॥

६. तस्स णं महचंदस्स रण्णो सुसेणे नामं अमच्चे होत्था—साम-भेय-दंड-उवप्पयाण-नीति-सुप्पउत्त-नयविहण्णू[3]॥

७. तत्थ णं साहंजणीए नयरीए सुदरिसणा नामं गणिया होत्था—वण्णओ[4]॥

८. तत्थ णं साहंजणीए नयरीए सुभद्दे नामं सत्थवाहे होत्था—अड्ढे॥

९. तस्स णं सुभद्दस्स सत्थवाहस्स भद्दा नामं भारिया होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरा॥

१०. तस्स णं सुभद्दस्स सत्थवाहस्स पुत्ते भद्दाए भारियाए अत्तए सगडे नामं दारए होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरे॥

---

१. सं० पा०—चउत्थस्स उक्खेवओ।
२. ना० १।१।७।
३. पू०—ना० १।१।१६।
४. वि० १।२।७।

११. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसरिए[1]। परिसा राया य निग्गए। धम्मो कहिओ। परिसा गया॥

सगडस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं

१२. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी जाव[2] रायमग्गं[3] ओगाढे। तत्थ णं हत्थी, आसे, अण्णे य बहवे पुरिसे पासइ[4]। तेसिं च ण पुरिसाणं मज्झगय पासइ एग सइत्थियं पुरिस अवओडयबंधणं उक्खित्त[5]-कण्णनास जाव[6] खडपडहेण उग्घोसिज्जमाण[7] •इम च णं एयारूवं उग्घोसणं सुणेइ—नो खलु देवाणुप्पिया! सगडस्स दारगस्स केइ राया वा रायपुत्तो वा अवरज्झइ, अप्पणो से सयाइं कम्माइं अवरज्झंति॥

सगडस्स छन्नियभव-वण्णग-पदं

१३. तए णं भगवओ गोयमस्स° चिंता तहेव जाव[8] भगवं वागरेइ—एवं खलु गोयमा! तेणं कालेण तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे छगलपुरे नाम नयरे होत्था॥

१४. तत्थ ण सीहगिरी नाम राया होत्था—महयाहिमवत-महंत-मलय-मदर-महिंदसारे॥

१५. तत्थ णं छगलपुरे नयरे छन्निए नामं छागलिए परिवसइ—अड्ढे जाव[9] अपरिभूए, अहम्मिए जाव[10] दुप्पडियाणदे॥

१६ तस्स ण छन्नियस्स छागलियस्स बहवे [बहूणि?] अयाण य एलयाण[11] य रोज्झाण य 'वसभाण य'[12] ससयाण य सूयराण य 'पसयाण य सिहाण य'[13] हरिणाण य मयूराण य महिसाण य सयबद्धाणि सहस्सबद्धाणि य जूहाणि वाडगसि सनिरुद्धाइ[14] चिट्ठति।

---

१. समोसरणं (क, ख, घ)।
२. वि० १।२।१२-१४।
३. रायमग्गे (ख, घ)।
४ पू०—वि० १।२।१४।
५. उक्खत्त (ख), उक्कड (ग); उवक्खित्त (घ)।
६. वि० १।२।१४।
७. स० पा०—उग्घोसिज्जमाणं जाव चिंता।
८ वि० १।२।१५,१६।
९. ओ० सू० १४१।
१०. वि० १।१।४७।
११. एलाण (क, ख, ग, घ)।
१२ पसयाण य (क), × (ख, ग)।
१३ सिहाण य (क); × (ख, ग); पसुयाण° (घ)।
१४. निरुद्धाइ (क), निरुद्धा (ख, ग)।

अण्णे य तत्थ बहवे पुरिसा दिण्णभइ-भत्त-वेयणा बहवे अए य जाव महिसे य सारक्खमाणा संगोवेमाणा[1] चिट्ठंति[2] ।

अण्णे य से बहवे पुरिसा दिण्णभइ-भत्त-वेयणा बहवे अए य जाव महिसे य जीवियाओ ववरोवेंति, ववरोवेत्ता मसाइं कप्पणीकप्पियाइं[3] करेंति, करेत्ता छन्नियस्स छागलियस्स उवणेंति ।

अण्णे य से बहवे पुरिसा ताइं बहुयाइं अयमसाइं जाव महिसमसाइं य तवएसु य कवल्लीसु य कंदुसु[4] य भज्जणेसु य इंगालेसु य तलेंति य भज्जेंति य सोल्लेंति य, तलेत्ता य भज्जेत्ता य सोल्लेत्ता य तओ रायमग्गंसि वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति ।

अप्पणा वि य[5] णं से छन्निए छागलिए तेहिं बहूहिं अयमसेहिं य जाव महिस-मसेहिं य सोल्लेहिं य तलिएहिं य भज्जिएहिं य सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणे वीसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ ।।

१७. तए णं से छन्निए छागलिए एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं पावकम्मं कलिकलुसं समज्जिणित्ता सत्त वाससयाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा चोत्थीए पुढवीए उक्कोसेणं दससागरोवमठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णे ।।

सगडस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पदं

१८. तए णं सा सुभद्दस्स सत्थवाहस्स भद्दा भारिया जायनिंदुया यावि होत्था—जाया-जाया दारगा विणिहायमावज्जंति ।।

१९. तए णं से छन्निए छागलिए चोत्थीए पुढवीए अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव साहंजणीए नयरीए सुभद्दस्स सत्थवाहस्स भद्दाए भारियाए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववण्णे ।।

२०. तए णं सा भद्दा सत्थवाही अण्णया कयाइ नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं दारगं पयाया ।।

२१. तए णं तं दारगं अम्मापियरो जायमेत्तं चेव सगडस्स हेट्ठओ ठवेंति, दोच्चं पि गिण्हावेंति, अणुपुव्वेणं सारक्खंति संगोवेंति संवड्ढेंति, जहा उज्झियए जाव[6]

---

१ संगोयमाणा (क) ।

२ चिट्ठंति । अण्णे य से बहवे पुरिसा अयाणं य जाव गिहंसि संनिरुद्धा चिट्ठंति (क, ग, घ), असौ पाठः नावश्यकः प्रतिभाति । अस्यार्थः पूर्वपाठे समागतोस्ति ।

३ कप्पिणी° (ख) ।

४. कडुसु (ख, ग) ।

५ × (क) ।

६. वि० १।२।४७,४८ ।

जम्हा णं अम्हं इमे दारए जायमेत्तए चेव सगडस्स हेट्ठओ ठविए, तम्हा ण होउ अम्ह दारए सगडे नामेण। सेस जहा[1] उज्झियए। सुभद्दे लवणसमुद्दे कालगए, माया वि कालगया। से वि साओ गिहाओ निच्छूढे ॥

२२. तए ण से सगडे दारए साओ गिहाओ निच्छूढे समाणे[2] •साहंजणीए नयरीए सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु जूयखलएसु वेसघरएसु पाणागारेसु य सुहसुहेणं परिवड्ढइ ॥

२३. तए णं से सगडे दारए अणोहट्टए अणिवारिए सच्छदमई सइरप्पयारे मज्जप्पसंगी चोर-जूय-वेस-दारप्पसगी जाए यावि होत्था ॥

२४. तए णं से सगडे अण्णया कयाइ॰ सुदरिसणाए गणियाए सद्धिं संपलग्गे यावि होत्था ॥

२५. तए ण से सुसेणे अमच्चे तं सगडं दारगं अण्णया कयाइ सुदरिसणाए गणियाए गिहाओ निच्छुभावेइ, निच्छुभावेत्ता सुदरिसणं गणिय अब्भितरिय ठवेइ,[3] ठवेत्ता सुदरिसणाए गणियाए सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइ भोगभोगाइं भुजमाणे विहरइ ॥

२६. तए ण से सगडे दारए सुदरिसणाए गणियाए गिहाओ निच्छुभेमाणे[4] •सुदरिसणाए गणियाए मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे अण्णत्थ कत्थइ सुइं च रइ च धिइ च अलभमाणे तच्चित्ते तम्मणे तल्लेस्से तदज्झवसाणे तदट्ठोवउत्ते तयप्पियकरणे तब्भावणाभाविए सुदरिसणाए गणियाए वहूणि अतराणि य छिद्दाणि य विवराणि य पडिजागरमाणे-पडिजागरमाणे विहरइ ॥

२७. तए ण से सगडे दारए अण्णया कयाइ सुदरिसणाए गणियाए अतर लभेइ, लभेत्ता सुदरिसणाए गणियाए गिहं रहसियं॰ अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता सुदरिसणाए सद्धिं उरालाइ माणुस्सगाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरइ ॥

२८. इमं च ण सुसेणे अमच्चे ण्हाए जाव[5] विभूसिए मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते[6] जेणेव सुदरिसणाए गणियाए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सगडं दारयं सुदरिसणाए गणियाए सद्धिं उरालाइ भोगभोगाइं भुजमाण पासइ, पासित्ता आसुरुत्ते जाव[7] मिसिमिसेमाणे तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु सगडं दारय पुरिसेहिं गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता अट्ठि[8]•-मुट्ठि-जाणु-कोप्पर-पहारसभग्गं॰

१. वि॰ १।२।४९-५६।
२. सं॰ पा॰—समाणे सिंघाडग तहेव जाव सुदरिसणाए।
३. ठावेइ (क)।
४. सं॰ पा॰—निच्छुभेमाणे अण्णत्थ कत्थइ सुइं वा अलभ अण्णया कयाइ रहस्सियं सुदरिसणाए गिहं।
५. वि॰ १।२।६४।
६. मणुस्सवग्गुराए (ख, ग, घ)।
७. वि॰ १।२।६४।
८. सं॰ पा॰—अट्ठि जाव महियगत्तं।

महियगत्तं करेइ, करेत्ता अवओडयबधण करेइ, करेत्ता जेणेव महचदे राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल[1]•परिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु महचद रायं° एव वयासी—एव खलु सामी ! सगडे दारए मम अतेउरसि[2] अवरद्धे ।।

२९ तए ण से महचदे राया सुसेणं अमच्च एवं वयासी—तुम चेव ण देवाणुप्पिया ! सगडस्स दारगस्स दड वत्तेहि[3] ।।

३०. तए ण से सुसेणे अमच्चे महचदेण रण्णा अब्भणुण्णाए समाणे सगड दारय सुदरिसण च गणिय एएण विहाणेण वज्झ आणवेइ ।।

३१ त एव खलु गोयमा ! सगडे दारए पुरा पोराणाण[4] •दुच्चिण्णाण दुप्पडिक्कताण असुभाण पावाणं कडाण कम्माण पावग फलवित्तिविसेस पच्चणुभवमाणे° विहरइ ।।

सगडस्स आगामिभव-वण्णग-पद

३२ सगडे ण भते ! दारए कालगए कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?
गोयमा ! सगडे ण दारए सत्तावण्ण वासाइ परमाउ पालइत्ता अज्जेव तिभागावसेसे दिवसे एगं मह अयोमय तत्त समजोइभूय इत्थिपडिम अवतासाविए समाणे कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ ।।

३३. से णं तओ अणंतर उव्वट्टित्ता रायगिहे नयरे मातगकुलसि जमलत्ताए[5] पच्चायाहिइ[6] ।।

३४. तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो निव्वत्तबारसाहस्स[7] इमं एयारूव नामधेज्ज करिस्सति—तं होउ णं दारए सगडे नामेण, होउ णं दारिया सुदरिसणा नामेण ।।

३५. तए ण से सगडे दारए उम्मुक्कबालभावे विण्णय-परिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते[8] भविस्सइ ।।

३६. तए ण सा सुदरिसणावि दारिया उम्मुक्कबालभावा विण्णय-परिणयमेत्ता जोव्वणगमणुप्पत्ता रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठ-सरीरा भविस्सइ ।।

---

१. स० पा०—करयल जाव एवं ।
२. अतेपुरियंसि (क, घ) ।
३. वत्तेहि (क, घ) ।
४. स० पा०—पोराणाण जाव विहरइ ।
५. जुगलत्ताए (घ) ।
६. पयायाहिति (ग) ।
७. निव्वत्तबारसगस्स (क, ख, ग, घ) ।
८. °प्पत्ते अल भोगसमत्थे यावि (वृ) ।

३७ तए णं से सगडे दारए सुदरिसणाए रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे सुदरिसणाए भइणीए[1] सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरिस्सइ ।।

३८. तए णं से सगडे दारए अण्णया कयाइ सयमेव कूडग्गाहत्तं उवसंपज्जित्ता णं विहरिस्सइ ।।

३९ तए णं से सगडे दारए कूडग्गाहे भविस्सइ—अहम्मिए जाव[2] दुप्पडियाणंदे, एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं पावकम्मं समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ[3], संसारो तहेव जाव[4] •वाउ-तेउ-आउ-पुढवीसु अणेगसयसहस्स-खुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाइस्सइ° ।

से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता वाणारसीए नयरीए मच्छत्ताए उववज्जिहिइ ।

से णं तत्थ मच्छवधिएहिं वहिए तत्थेव वाणारसीए नयरीए सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाहिइ । बोहिं, पव्वज्जा, सोहम्मे कप्पे, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ।।

निक्खेव-पदं

४० [5]•एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[6] संपत्तेणं दुहविवागाणं चउत्थस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति बेमि° ।।

---

१. भारियाए (क, ख); × (ग) ।
२. वि० १।१।४७ ।
३. उववन्ने (क, ख, ग, घ); अशुद्ध प्रतिभाति ।
४. वि० १।१।७०, सं० पा०—जाव पुढवी ।
५ सं० पा०—निक्खेवो ।
६. ना० १।१।७ ।

पंचमं अज्झयणं

बहस्सइदत्ते

उक्खेव-पदं

१ [1]•जइ ण भंते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव[2] संपत्तेण दुहविवागाण चउत्थस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, पचमस्स ण भंते ! अज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरेण के अट्ठे पण्णत्ते ?

२. तए ण से सुहम्मे अणगारे जंबू-अणगारं एव वयासी°—एवं खलु जंबू ! तेण कालेण तेण समएण कोसंबी नामं नयरी होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धा। बाहिं चंदोतरणे उज्जाणे। सेयभद्दे जक्खे ॥

३. तत्थ ण कोसंबीए नयरीए सयाणिए नामं राया होत्था—महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे[3]। मियावई देवी ॥

४. तस्स णं सयाणियस्स पुत्ते मियादेवीए अत्तए उदयणे नाम कुमारे होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरे[4] जुवराया ॥

५ तस्स ण उदयणस्स कुमारस्स पउमावई नामं देवी होत्था ॥

६. तस्स ण सयाणियस्स सोमदत्ते नामं पुरोहिए होत्था—रिउव्वेय-यज्जुव्वेय-सामवेय-अथव्वणवेयकुसले ॥

७. तस्स णं सोमदत्तस्स पुरोहियस्स वसुदत्ता नामं भारिया होत्था ॥

८ तस्स ण सोमदत्तस्स पुत्ते वसुदत्ताए अत्तए बहस्सइदत्ते नाम दारए होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरे[5] ॥

९ तेण कालेण तेण समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे[6] ॥

---

१. स० पा०—पंचमस्स अज्झयणस्स उक्खेवओ।
२. ना० १।१।७।
३ पू०—ओ० सू० १४।
४. पू०—वि० १।२।१०।
५. पू०—वि० १।२।१०।
६. समवसरण (क, ख, ग, घ), वि० १।२।११ सूत्राधारेण असौ पाठ स्वीकृत।

गोयमेण बहस्सइदत्तस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं

१० तेणं कालेणं तेणं समएणं भगवं गोयमे तहेव जाव[1] रायमग्गमोगाढे तहेव पासइ हत्थी, आसे, पुरिसमज्झे[2] पुरिस। चित्ता। तहेव[3] पुच्छइ पुव्वभवं। भगवं वागरेइ—

बहस्सइदत्तस्स महेसरदत्तभव-वण्णग-पदं

११ एवं खलु गोयमा! तेण कालेणं तेण समएण इहेव जबुद्दीवे दीवे भारहेवासे सव्वओभद्दे नामं नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे[4]॥

१२ तत्थ ण सव्वओभद्दे नयरे जियसत्तू नाम राया होत्था॥

१३ तस्स ण जियसत्तुस्स रण्णो महेसरदत्ते[5] नामं पुरोहिए होत्था—रिउव्वेय[6]-यज्जुव्वेय-सामवेय-अथव्वणवेयकुसले यावि होत्था॥

१४. तए ण से महेसरदत्ते पुरोहिए जियसत्तुस्स रण्णो रज्जबलविवद्धणट्ठयाए कल्ला-कल्लिं[7] एगमेग माहणदारय, एगमेग खत्तियदारय, एगमेग वइस्सदारय, एगमेगं सुद्दारयं गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता तेसिं जीवतगाण चेव हिययउंडए गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता जियसत्तुस्स रण्णो सतिहोम करेइ॥

१५. तए ण से महेसरदत्ते पुरोहिए अट्ठमीचाउद्दसीसु दुवे-दुवे माहण-खत्तिय-वइस्स-सुद्दे, चउण्ह मासाणं चत्तारि-चत्तारि, छण्ह मासाण अट्ठ-अट्ठ, सवच्छरस्स सोलस-सोलस।

जाहे-जाहे वि य ण जियसत्तू राया परबलेणं अभिजुज्जइ[8], ताहे-ताहे वि य ण से महेसरदत्ते पुरोहिए अट्ठसय माहणदारगाण, अट्ठसय खत्तियदारगाण, अट्ठसयं वइस्सदारगाण, अट्ठसय सुद्दारगाण पुरिसेहिं गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता तेसिं जीवंतगाण[9] चेव हिययउडियाओ गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता जियसत्तुस्स रण्णो सतिहोम करेइ। तए ण से परबले खिप्पामेव विद्धसेइ[10] वा पडिसेहिज्जइ वा॥

१६. तए ण से महेसरदत्ते पुरोहिए एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं पावकम्म समज्जिणित्ता तीस वाससयाइ परमाउ पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा पचमाए[11] पुढवीए उक्कोसेण सत्तरससागरोवमट्ठिइए नरगे उववण्णे॥

---

१. वि० १।२।१२-१४।
२. × (घ)।
३. पू०—वि० १।२।१४-१६।
४. पू०—ओ० सू० १।
५. महिस्सर० (क)।
६. रिव्वेद (क)।
७. कल्लंकल्लं (क); कल्लाकल्लं (ग)।
८. अभिजुजइ (ख, ग)।
९. जीवंतकाण (क); जीवंताण (ख)।
१०. विद्धसइ (ख, ग), विद्धसिज्जइ (क्व)।
११. पचमीए (ग)।

बहस्सइदत्तस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पदं

१७ से णं तओ अणंतरं उवट्टित्ता इहेव कोसंबीए नयरीए सोमदत्तस्स पुरोहियस्स वसुदत्ताए भारियाए पुत्तत्ताए उववण्णे ॥

१८ तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो निव्वत्तबारसाहस्स 'इमं एयारूवं'[1] नाम-धेज्जं करेंति—जम्हा णं अम्हं इमे दारए सोमदत्तस्स पुरोहियस्स पुत्ते वसुदत्ताए अत्तए, तम्हा णं होउ अम्हं दारए बहस्सइदत्ते नामेणं ॥

१९ तए णं से बहस्सइदत्ते दारए पंचधाईपरिग्गहिए जाव[2] परिवड्ढइ ॥

२० तए णं से बहस्सइदत्ते दारए उम्मुक्कबालभावे विण्णय-परिणयमेत्ते जोव्वणगमणु-प्पत्ते होत्था। से णं उदयणस्स कुमारस्स पियबालवयस्सए यावि होत्था सहजायए सहवड्ढियए सहपंसुकीलियए ॥

२१. तए णं से सयाणिए राया अण्णया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते ॥

२२. तए णं से उदयणे कुमारे बहूहिं राईसर[3]-•तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ°-सत्थवाहप्पभिईहिं सद्धिं संपरिवुडे रोयमाणे कंदमाणे विलवमाणे सयाणियस्स रण्णो महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं नीहरणं करेइ, करेत्ता बहूइं लोइयाइं मयकिच्चाइं करेइ ॥

२३. तए णं ते बहवे राईसर[4]-•तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ°-सत्थवाहप्पभितओ उदयणं कुमारं महया-महया रायाभिसेएणं अभिसिंचंति ॥

२४ तए णं से उदयणे कुमारे राया जाए—महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे[5] ॥

२५. तए णं से बहस्सइदत्ते दारए उदयणस्स रण्णो पुरोहियकम्मं करेमाणे सव्वट्ठाणेसु सव्वभूमियासु अंतेउरे य दिण्णवियारे जाए यावि होत्था ॥

२६. तए णं से बहस्सइदत्ते पुरोहिए उदयणस्स रण्णो अंतेउरंसि वेलासु य अवेलासु य कालेसु य अकालेसु य राओ य वियाले य पविसमाणे अण्णया कयाइ पउमा-वईए देवीए सद्धिं संपलग्गे यावि होत्था। पउमावईए देवीए सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ ॥

२७ इमं च णं उदयणे राया ण्हाए जाव[6] विभूसिए जेणेव पउमावई देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता बहस्सइदत्तं पुरोहियं पउमावईए देवीए सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणं पासइ, पासित्ता आसुरुत्ते तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु बहस्सइदत्तं पुरोहियं पुरिसेहिं गिण्हावेइ[7], •गिण्हावेत्ता

---

१. एमेयारूवं (घ)।
२. वि० १।२।४९।
३ सं० पा०—राईसर जाव सत्थवाह°।
४ सं० पा०—राईसर जाव सत्थवाह°।
५ पू०—ओ० सू० १४।
६ वि० १।२।६४।
७ सं० पा०—गिण्हावेइ जाव एएणं।

अट्ठि-मुट्ठि-जाणु-कोप्परपहार-संभग्ग-महियगत्तं करेइ, करेत्ता अवओडगवधणं करेइ, करेत्ता ° एएणं विहाणेण वज्झं आणवेइ ॥

२८ एव खलु गोयमा ! वहस्सइदत्ते पुरोहिए पुरा पोराणाणं[1] •दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कताणं असुभाणं पावाणं कडाण कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे° विहरइ ॥

वहस्सइदत्तस्स आगामिभव-वण्णग-पद

२९ वहस्सइदत्ते ण भते ! पुरोहिए[2] इओ कालगए समाणे कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?

गोयमा ! वहस्सइदत्ते णं पुरोहिए चोसट्ठिं वासाइं परमाउ पालइत्ता अज्जेव तिभागावसेसे दिवसे सूलभिण्णे[3] कए समाणे कालमासे काल किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए[4] •उक्कोससागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ ।

से णं तओ अणतरं उव्वट्टित्ता, एव संसारो जहा पढमे जाव[5] वाउ-तेउ-आउ-पुढवीसु अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाइस्सइ° ।

तओ हत्थिणाउरे नयरे मियत्ताए पच्चायाइस्सइ । से णं तत्थ वाउरिएहिं वहिए समाणे तत्थेव हत्थिणाउरे नयरे सेट्ठिकुलसि पुत्तत्ताए[6] पच्चायाहिइ । वोहिं, सोहम्मे, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ॥

निक्खेव-पदं

३०. •[7]एवं खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेणं जाव[8] संपत्तणं दुहविवागाणं पचमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति वेमि ° ॥

———

१. सं० पा०—पोराणाण जाव विहरइ ।
२. दारए (क, ख, ग, घ) ।
३. नूलिभिण्णे (घ) ।
४. स० पा०—पुढवीए ससारो तहेव पुढवी ।
५. वि० १।१।७० ।
६. पुमत्ताए (क) ।
७ सं० पा०—निक्खेवो ।
८. ना० १।१।७ ।

छट्ठं अज्झयणं

नंदिवद्धणे

उक्खेव-पदं

१ जइ ण भंते ! [1]•समणेण भगवया महावीरेण जाव[2] संपत्तेण दुहविवागाण पंचमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, छट्ठस्स ण भंते ! अज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरेण के अट्ठे पण्णत्ते ?

२ तए ण से सुहम्मे अणगारे जंबू-अणगारं एवं वयासी°—एवं खलु जंबू तेण कालेण तेणं समएणं महुरा नामं नयरी। भंडीरे उज्जाणे। सुदरिसणे[3] जक्खे। सिरिदामे राया। बंधुसिरी भारिया। पुत्ते नंदिवद्धणे कुमारे—अहीण[4]-•पडि-पुण्ण-पंचिंदियसरीरे° जुवराया[5] ॥

३ तस्स सिरिदामस्स सुबंधू नामं अमच्चे होत्था—'साम-दंड-भेय-उवप्पयाणनीति-सुप्पउत्त-नयविहण्णू'[6] ॥

४. तस्स ण सुबंधुस्स अमच्चस्स बहुमित्तपुत्ते नामं दारए होत्था—अहीण-पडिपुण्ण पंचिंदियसरीरे[7] ॥

५. तस्स णं सिरिदामस्स रण्णो चित्ते नामं अलंकारिए[8] होत्था—सिरिदामस्स रण्णो चित्तं बहुविहं[9] अलंकारियकम्मं[10] करेमाणे सव्वट्ठाणेसु य सव्वभूमियासु य अंतेउरे य दिण्णवियारे यावि होत्था ॥

---

१. सं० पा०—छट्ठस्स उक्खेवओ।
२ ना० १।१।७।
३ सुदरमणे (ख, ग), सुदसणे (क्व)।
४. सं० पा०—अहीण जाव जुवराया।
५. जुगराया (क)।
६. सामदंड (क,ख,ग,घ), पू०—ना० १।१।१६।
७ पू०—वि० १।२।१०।
८. अलकारए (क, ख, ग)।
९. × (क)।
१०. अलकारिय कम्म (क)।

६ तेण कालेण तेण समएणं सामी समोसढे । परिसा निग्गया, राया निग्गओ जाव[1] परिसा पडिगया ।।

गोयमेण नंदिवद्धणस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं

७. तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी जाव[2] रायमग्गमोगाढे । तहेव हत्थी, आसे, पुरिसे पासइ । तेसिं च ण पुरिसाण मज्झगय एग पुरिस पासइ जाव[3] नर-नारीसपरिवुड ।।

८ तए ण त पुरिस रायपुरिसा चच्चरसि तत्तसि अयोमयसि समजोइभूयसि सीहासणसि निवेसावेंति ।

तयाणतर च ण पुरिसाण मज्झगयं वहूहिं अयकलसेहिं तत्तेहिं समजोइभूएहिं, अप्पेगइया तवभरिएहिं, अप्पेगइया तउयभरिएहिं, अप्पेगइया सीसगभरिएहिं, अप्पेगइया कलकलभरिएहिं, अप्पेगइया खारतेल्लभरिएहि महया-महया रायाभिसेएण अभिसिचति ।

तयाणंतर च तत्त अयोमय समजोइभूय अयोमय सडासग गहाय हारं पिणद्धति । तयाणतर च ण अद्धहार[4] •पिणद्धति तिसरियं पिणद्धति पालवं पिणद्धति कडिसुत्तय पिणद्धंति पट्ट पिणद्धति मउड पिणद्धति° । चित्ता तहेव जाव[5] वागरेइ—

नंदिवद्धणस्स दुज्जोहणभव-वण्णग-पद

९ एव खलु गोयमा ! तेणं कालेण तेणं समएण इहेव जवुद्दीवे दीवे भारहे वासे सीहपुरे नाम नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे[6] ।।

१० तत्थ ण सीहपुरे नयरे सीहरहे नाम राया होत्था ।।

११. तस्स ण सीहरहस्स रण्णो दुज्जोहणे नाम चारगपाले[7] होत्था—अहम्मिए जाव[8] दुप्पडियाणंदे ।।

१२. तस्स ण दुज्जोहणस्स चारगपालस्स इमेयारूवे चारगभंडे होत्था—

१३. तस्स ण दुज्जोहणस्स चारगपालस्स वहवे अयकुडीओ—अप्पेगइयाओ तब-भरियाओ, अप्पेगइयाओ तउयभरियाओ, अप्पेगइयाओ सीसगभरियाओ, अप्पे-गइयाओ कलकलभरियाओ, अप्पेगइयाओ खारतेल्लभरियाओ—अगणिकायसि अद्दहियाओ चिट्ठति ।।

---

१ वि० १।२।११ ।
२. वि० १।२।१२-१४ ।
३. वि० १।२।१४ ।
४. सं० पा०—अद्धहारं जाव पट्ट मउड ।
५ वि० १।२।१५,१६ ।
६. पू०—ओ० सू० १ ।
७. चारगपालए (घ) ।
८. वि० १।१।४७ ।

१४ तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स वहवे उट्टियाओ—अप्पेगइयाओ आसमुत्त-भरियाओ, अप्पेगइयाओ हत्थिमुत्तभरियाओ, अप्पेगइयाओ उट्टमुत्तभरियाओ, अप्पेगइयाओ गोमुत्तभरियाओ, अप्पेगइयाओ महिसमुत्तभरियाओ, अप्पेगइयाओ अयमुत्तभरियाओ, अप्पेगइयाओ एलमुत्तभरियाओ—बहुपडिपुण्णाओ चिट्ठति ।।

१५. तस्स ण दुज्जोहणस्स चारगपालस्स वहवे हत्थडुयाण य पायडुयाण य हडीण[1] य नियलाण य सकलाण य पुजा य निगरा य सनिक्खित्ता[2] चिट्ठति ।।

१६ तस्स ण दुज्जोहणस्स चारगपालस्स वहवे वेणुलयाण[3] य वेत्तलयाण[4] य चिंचाल-याण य छियाण य कसाण य वायरासीण[5] य पुजा य निगरा य सनिक्खित्ता चिट्ठति ।।

१७ तस्स ण दुज्जोहणस्स चारगपालस्स वहवे सिलाण य लउडाण[6] य मोग्गराण य कणगराण[7] य पुजा य निगरा य सनिक्खित्ता चिट्ठति ।।

१८ तस्स ण दुज्जोहणस्स चारगपालस्स वहवे ततीण[8] य वरत्ताण य वागरज्जूण य वालयसुत्तरज्जूण य पुजा य निगरा य सनिक्खित्ता चिट्ठति ।।

१९ तस्स ण दुज्जोहणस्स चारगपालस्स वहवे असिपत्ताण य करपत्ताण य खुरपत्ताण य कलवचीरपत्ताण य पुजा य निगरा य सनिक्खित्ता चिट्ठति ।।

२०. तस्स ण दुज्जोहणस्स चारगपालस्स वहवे लोहखीलाण य कडसक्कराण य चम्मपट्टाण य अलीपट्टाण[9] य पुजा य निगरा य सनिक्खित्ता चिट्ठति ।।

२१ तस्स ण दुज्जोहणस्स चारगपालस्स वहवे सूईण य डभणाण य कोट्टिल्लाण[10] य पुजा य निगरा य सनिक्खित्ता चिट्ठति ।।

२२ तस्स ण दुज्जोहणस्स चारगपालस्स वहवे सत्थाण[11] य पिप्पलाण य कुहाडाण[12] य नहच्छेयणाण य दब्भाण[13] य पुजा य निगरा य सनिक्खित्ता चिट्ठति ।।

२३. तए ण से दुज्जोहणे चारगपाले सीहरहस्स रण्णो वहवे चोरे य पारदारिए य गठिभेए य रायावकारी य अणहारए[14] य वालघायए य विस्सभघायए य जूइगरे[15]

---

१. हढीण (क) ।

२ सनिकिट्ठा (क) ।

३. वेलुलयाओ (ग) ।

४. वेत्तलयाओ (ग) ।

५ पादरासीण (क) ।

६ लउलाण (वृ) ।

७. कणगराण (ख, ग, घ), काणगराण (वृपा) ।

८. तताण (ख) ।

९. अलाण (क), अलपडाण (ग), अल्लपल्लाण (मुद्रित वृ), अलीण (हस्त० वृ), अली-घटाण (हस्त० वृ) ।

१०. कोडिल्लाण (ख) ।

११ एकस्या हस्तलिखितवृत्तौ 'पच्छाण' इति विद्यते ।

१२. कुठाराण (ग) ।

१३ दब्भणाण (ख); डब्भणाण (ग); दब्भ-तिणाण (घ) ।

१४. अणधारए (क, घ) ।

१५. जूयिकरे (क), जूयगरे (ख, ग) ।

य संडपट्टे[1] य पुरिसेहिं गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता उत्ताणए पाडेइ, लोहदंडेण मुहं विहाडेइ, विहाडेत्ता अप्पेगइए तत्ततंबं पज्जेइ, अप्पेगइए तउयं पज्जेइ, अप्पेगइए सीसगं पज्जेइ, अप्पेगइए कलकलं पज्जेइ, अप्पेगइए खारतेल्लं पज्जेइ, अप्पेगइयाणं तेणं चेव अभिसेगं करेइ।

अप्पेगइए उत्ताणए पाडेइ, पाडेत्ता आसमुत्तं पज्जेइ, अप्पेगइए हत्थिमुत्तं पज्जेइ[2], •अप्पेगइए उट्टमुत्तं पज्जेइ, अप्पेगइए गोमुत्तं पज्जेइ, अप्पेगइए महिसमुत्तं पज्जेइ, अप्पेगइए अयमुत्तं पज्जेइ, अप्पेगइए° एलमुत्तं पज्जेइ।

अप्पेगइए हेट्ठामुहए पाडेइ छडछडस्स[3] वम्मावेइ, वम्मावेत्ता अप्पेगइए तेणं चेव ओवील दलयइ। अप्पेगइए हत्थंडुयाइं[4] बंधावेइ, अप्पेगइए पायंडुए बंधावेइ, अप्पेगइए हडिबंधणं करेइ, अप्पेगइए नियलबंधणं करेइ, अप्पेगइए संकोडिय-मोडियए[5] करेइ, अप्पेगइए सकलबंधणं करेइ, अप्पेगइए हत्थच्छिण्णए करेइ[6], •अप्पेगइए पायच्छिण्णए करेइ, अप्पेगइए नक्कछिण्णए करेइ, अप्पेगइए उट्ठछिण्णए करेइ, अप्पेगइए जिब्भछिण्णए करेइ, अप्पेगइए सीसछिण्णए करेइ, अप्पेगइए° सत्थोवाडियए करेइ।

अप्पेगइए वेणुलयाहि य[7], •अप्पेगइए वेत्तलयाहि य, अप्पेगइए चिंचालयाहि य, अप्पेगइए छियाहि य, अप्पेगइए कसाहि य, अप्पेगइए° वायरासीहि य हणावेइ।

अप्पेगइए उत्ताणए कारवेइ, कारवेत्ता उरे सिलं[8] दलावेइ, दलावेत्ता तओ लउडं[9] छुहावेइ, छुहावेत्ता पुरिसेहिं उक्कंपावेइ[10]।

अप्पेगइए तंतीहि य[11], •अप्पेगइए वरत्ताहि य, अप्पेगइए वागरज्जूहि य, अप्पेगइए वालय°सुत्तरज्जूहि य हत्थेसु य पाएसु य बंधावेइ, अगडंसि 'ओचूलं बोलगं'[12] पज्जेइ[13]।

अप्पेगइए असिपत्तेहि य[14], •अप्पेगइए करपत्तेहि य, अप्पेगइए खुरपत्तेहि य अप्पेगइए° कलंबचीरपत्तेहि य पच्छावेइ, पच्छावेत्ता खारतेल्लेण अब्भंगावेइ।

---

१. खडपट्टे (क, ख, ग, घ)।
२. सं० पा०—पज्जेइ जाव एलमुत्तं।
३. थलयलस्स (क, घ)।
४. हत्थुडु° (ख), हत्थंड° (ख), हत्थिय (घ)।
५. मोडिए (वृ)।
६. सं० पा०—करेइ जाव सत्थोवाडियए।
७. सं० पा०—वेणुलयाहि य जाव वायरासीहि।
८. सिरं (क)।
९. लउलं (क, घ), नउलं (ख)।
१०. ओकंपावेइ (क)।
११. सं० पा०—तंतीहि य जाव सुत्तरज्जूहि।
१२. ओलवालग (क), उचूलपालग (ख); उचूलवालग (ग) उचूलपाणग (घ), ओचूल-वालग (ह० वृ)।
१३. पाययति खादयतीत्यादि लौकिकीभाषा कारयतीति तु भावार्थ. (वृ)।
१४. सं० पा०—असिपत्तेहि य जाव कलंबचीर-पत्तेहि।

अप्पेगइयाणं निलाडेसु य अवद्सु य कोप्परेसु य जाणूसु य खलुएसु य लोहकीलए य कडसक्कराओ य दवावेइ[1] अलिए[2] भजावेइ ।
अप्पेगइए सूईओ य डंभणाणि[3] य हत्थंगुलियासु य पायंगुलियासु य कोट्टिल्लएहिं आउडावेइ, आउडावेत्ता भूमिं कंडुयावेइ[4] ।
अप्पेगइए सत्थेहि य[5] ●अप्पेगइए पिप्पलेहि य अप्पेगइए कुहाडेहि य अप्पेगइए○ नहच्छेयणेहि य अंग पच्छावेइ, दब्भेहि य कुसेहि य उल्लवद्धेहिं[6] य वेढावेइ, आयवंसि दलयइ, दलइत्ता सुक्के समाणे चडचडस्स उप्पाडेइ ॥

२४. तए णं से दुज्जोहणे चारगपाले एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहु पावकम्मं[7] समज्जिणित्ता एगतीसं वाससयाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं बावीससागरोवमठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णे ॥

नंदिवद्धणस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पदं

२५. से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव महुराए नयरीए सिरिदामस्स रण्णो बंधु-सिरीए देवीए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए[8] उववण्णे ॥

२६ तए णं बंधुसिरी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं जाव[9] दारगं पयाया ॥

२७ तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो निव्वत्तबारसाहे इमं एयारूवं नामधेज्जं करेंति—होउ णं अम्हं दारगे नंदिवद्धणे[10] नामेणं ॥

---

१. दलावेइ (क) ।
२ अलं (क), अलए (घ) ।
३ दभणाणि (क, घ) ।
४ कडूयावेइ (ख, ग) ।
५ सं० पा०—सत्थेहि य जाव नहच्छेयणेहि ।
६ उल्लवज्झेहि (क), उल्लदब्भेहि (ख); उलदज्झेहि (घ), ओल्लवद्धेहि (क्व) ।
७ पाव (क) ।
८ पुमत्ताए (क) ।
९ ओ० सू० १४३ ।
१०. नंदिसेणे (क, ख, ग, घ), प्रस्तुतागमस्य प्रथमाध्ययनस्य सप्तमे सूत्रे 'नंदी' इति पदमस्ति । वृत्तिकृतात्र 'नंदिवर्द्धन' इति नाम सूचितम्—'नंदी' त्ति सूत्रत्वादेव नंदिवर्द्धनो राजकुमार. (वृ) । प्रस्तुताध्ययनस्य द्वितीये सूत्रे 'पुत्ते नंदिवद्धणे कुमारे' इति पाठोस्ति । अध्ययनपरिसमाप्तौ च वृत्तिकृता पुनरस्यैव नाम्न उल्लेखः कृतोस्ति—षष्ठाध्ययनविवरणं नंदिवर्द्धनस्याधिकारो हि समाप्त (वृ) । किंतु अस्याध्ययनस्य सप्तविंशतितमसूत्रादारभ्य मूलपाठे सर्वत्र 'नंदिसेण' नाम्न उल्लेखोस्ति । स्थानाङ्गसूत्रे (१०।१।१) 'नंदिसेण' नाम्न. उल्लेखोस्ति । द्वयोरप्यागमयोर्वृत्तिकार अभयदेवसूरिरस्ति । वृत्तिकारस्याभिमतेन प्रस्तुतसूत्रे 'नंदिवर्द्धन' इति नामैवास्ति—'नंदिसेणे य' त्ति मथुरया श्रीदामराजसुतो नंदिसेणो युवराजो विपाकश्रुते च नंदिवर्द्धन श्रूयते (स्थानाङ्गवृत्ति) स्थानाङ्गप्रसिद्धस्य 'नंदिसेण' नाम्न प्रस्तुतसूत्रे समावेशो जात । अतएव नाम्नोर्मिश्रणमत्र परिलक्ष्यते ।

२८. तए ण से नदिवद्धणे[1] कुमारे पचधाईपरिवुडे जाव[2] परिवड्ढइ ।।

२९. तए ण से नदिवद्धणे[3] कुमारे उम्मुक्कवालभावे[4] •विण्णय-परिणयमेत्ते जोव्वण-गमणुप्पत्ते° विहरइ जाव जुवराया जाए यावि होत्था ।।

३० तए णं से नदिवद्धणे[5] कुमारे रज्जे य जाव[6] अतेउरे य मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे इच्छइ सिरिदाम राय जीवियाओ ववरोवेत्ता सयमेव रज्जसिरिं कारेमाणे पालेमाणे विहरित्तए ।।

३१ तए ण से नदिवद्धणे[7] कुमारे सिरिदामस्स रण्णो वहूणि अतराणि य छिद्दाणि य विरहाणि य पडिजागरमाणे विहरइ ।।

३२ तए ण से नदिवद्धणे[8] कुमारे सिरिदामस्स रण्णो अतरं अलभमाणे अण्णया कयाइ चित्त अलकारिय सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी —तुम ण देवाणुप्पिया ! सिरिदामस्स रण्णो सव्वट्ठाणेसु य सव्वभूमियासु य अतेउरे य दिण्णवियारे सिरिदामस्स रण्णो अभिक्खण-अभिक्खणं अलकारिय कम्म करेमाणे विहरसि, त ण तुमं देवाणुप्पिया ! सिरिदामस्स रण्णो अलकारिय कम्म करेमाणे गीवाए खुर निवेसेहि । तो[9] ण अह तुम अद्धरज्जिय करिस्सामि । तुम अम्हेहिं सद्धि उरालाइ भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरिस्ससि ।।

३३. तए ण से चित्ते अलंकारिए नदिवद्धणस्स[10] कुमारस्स वयण एयमट्ठ पडिसुणेइ ।।

३४. तए णं तस्स चित्तस्स अलकारियस्स इमेयारूवे[11] •अज्झत्थिए चिंतिए कप्पिए पत्थिए मणोगए सकप्पे° समुप्पज्जित्था जइ णं मम सिरिदामे राया एयमट्ठ आगमेइ, तए ण मम न नज्जइ केणइ असुभेणं कु-मारेण मारिस्सइ त्ति कट्टु भीए तत्थे तसिए उव्विगे सजायभए जेणेव सिरिदामे राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सिरिदाम राय रहस्सियगं करयल[12]•परिग्गहिय सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° एव वयासी—एवं खलु सामी ! नदिवद्धणे[13] कुमारे रज्जे य जाव[14] अतेउरे मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे इच्छइ तुब्भे जीवियाओ ववरोवित्ता सयमेव रज्जसिरिं कारेमाणे पालेमाणे विहरित्तए ।।

३५. तए ण से सिरिदामे राया चित्तस्स अलंकारियस्स अंतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म

---

१. नदिसेणे (क, ख, ग, घ) ।
२. वि० १।२।४९ ।
३. नदिसेणे (क, ख, ग, घ) ।
४. स० पा०—उम्मुकवालभावे जाव विहरइ ।
५ नदिसेणे (क, ख, ग, घ) ।
६. वि० १।१।५७ ।
७,८. नदिसेणे (क, ख, ग, घ) ।
९. ता (ख, घ); त (ग) ।
१० नदिसेणस्स (क, ख, ग घ) ।
११. स० पा०—इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था ।
१२. स० पा०—करयल जाव एव ।
१३. नदिसेणे (क, ख, ग, घ) ।
१४. वि० १।१।५७ ।

आसुरुत्ते[1] •रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे तिवलिं भिउडिं निडाले° साहट्टु नंदिवद्धणं[2] कुमारं पुरिसेहिं गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता एएणं विहाणेणं वज्झं आणवेइ ॥

३६ तं एवं खलु गोयमा ! नंदिवद्धणे[3] कुमारे[4] •पुरा पोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे° विहरइ ॥

नंदिवद्धणस्स आगामिभव-वण्णग-पदं

३७ नंदिवद्धणे[5] कुमारे इओ चुए कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?

गोयमा ! नंदिवद्धणे[6] कुमारे सट्ठिं वासाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोससागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ। संसारो तहेव[7]। तओ हत्थिणाउरे नयरे मच्छत्ताए उववज्जिहिइ।

से णं तत्थ मच्छिएहिं वहिए समाणे तत्थेव सेट्ठिकुले पुत्तत्ताए पच्चायाहिइ। बोहिं, सोहम्मे कप्पे, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिनिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणं अंतं करेहिइ ॥

निक्खेव-पदं

३८ [8]•एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[9] संपत्तेणं दुहविवागाणं छट्ठस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते।

—त्ति बेमि° ॥

---

१ सं० पा०—आसुरुत्ते जाव साहट्टु।
२. नंदिसेणं (क, ख, ग, घ)।
३. नंदिसेणे (क, ख, ग, घ)।
४ पुत्ते (क); सं० पा०—कुमारे जाव विहरइ।
५,६. नंदिसेणे (क, ख, ग, घ)।
७ पू०—वि० १।१।६६।
८ सं० पा०—निक्खेवो।
९. ना० १।१।७।

सत्तमं अज्झयणं

उंबरदत्तो

उक्खेव-पदं

१ जइ णं भंते[1] ! °समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[2] संपत्तेणं दुहविवागाणं छट्ठस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, सत्तमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

२ तए णं से सुहम्मे अणगारे जंबू-अणगारं एवं वयासी°—एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं पाडलिसंडे नयरे । 'वणसंडे उज्जाणे'[3] । 'उंबरदत्ते जक्खे'[4] ॥

३ तत्थ णं पाडलिसंडे नयरे सिद्धत्थे राया ॥

४. तत्थ णं पाडलिसंडे नयरे सागरदत्ते सत्थवाहे होत्था—अड्ढे । गंगदत्ता भारिया ॥

५. तस्स णं सागरदत्तस्स पुत्ते गंगदत्ताए भारियाए अत्तए उंबरदत्ते नामं दारए होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरे[5] ॥

६. तेणं कालेणं तेणं समएणं समोसरणं जाव[6] परिसा पडिगया ॥

गोयमेण उंबरदत्तस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं

७ तेणं कालेणं तेणं समएणं भगवं गोयमे तहेव[7] जेणेव पाडलिसंडे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पाडलिसंडं नयरं पुरत्थिमिल्लेणं दुवारेणं अणुप्प-

---

१. सं० पा०—सत्तमस्स उक्खेवओ ।
२. ना० १।१।७ ।
३. वणसडं उज्जाण (क, ख, ग) ।
४. उंबरदत्तो जक्खो (क) ।
५. पू०—ओ० सू० १४३ ।
६ वि०—१।२।११ ।
७. पू०—वि० १।२।१२-१४ ।

विसइ, अणुप्पविसित्ता तत्थ ण पासइ एगं पुरिसं—कच्छुल्ल कोढियं दाओयरिय[1] भगदलिय[2] अरिसिल्ल कासिल्ल सासिल्ल सोगिल 'सूयमुह सूयहत्थ'[3] सूयपायं सडियहत्थगुलिय सडियपायगुलिय सडियकण्णनासिय[4] रसियाए य पूएण य थिविथिवित[5] वणमुहकिमिउत्तुयत-पगलंतपूयरुहिर लालापगलतकण्णनासं अभिक्खण-अभिक्खण पूयकवले य रुहिरकवले य किमियकवले य वममाण कट्ठाइ कलुणाइ वीसराइ कूवमाणं[6] मच्छियाचडगरपहकरेण अण्णिज्जमाणमग्ग फुट्टहडाहडसीस[7] दडिखडवसण खडमल्लखडघडहत्थगय गेहे-गेहे देहवलियाए वित्ति कप्पेमाण पासइ। तया भगव गोयमे! उच्च-नीय[8]-•मज्झिम-कुलाइ अडमाणे° अहापज्जत्त समुदाण गिण्हइ पाडलिसडाओ नयराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भत्तपाण आलोएइ, भत्तपाण पडिदसेइ, समणेण भगवया महावीरेण अब्भणुण्णाए[9] •समाणे अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए अणज्झोववण्णे° विलमिव पण्णगभूते[10] अप्पाणेण आहारमाहारइ, सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ॥

८. तए ण से भगव गोयमे दोच्चं पि छट्ठक्खमणपारणगसि पढमाए पोरिसीए सज्झाय करेइ जाव[11] पाडलिसड नयर दाहिणिल्लेण दुवारेण अणुप्पविसइ, तं चेव पुरिसं पासइ—कच्छुल्ल तहेव जाव[12] सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ॥

९. तए णं से भगव गोयमे तच्चं पि छट्ठक्खमणपारणगसि तहेव जाव[13] पाडलिसंड नयर पच्चत्थिमिल्लेण दुवारेणं 'अणुपविसमाणे तं चेव पुरिसं पासइ—कच्छुल्ल[14]॥

१० [15]•तए ण से भगवं गोयमे चउत्थं पि छट्ठक्खमणपारणगंसि तहेव जाव[16]पाडलिसडं नयर उत्तरेण दुवारेण अणुपविसमाणे त चेव पुरिस पासइ – कच्छुल्ल[17]॥

---

१ उदरिय (वृ), मुद्रितवृत्तौ दोउयरिय, दोउरिय (क्व)।
२ भगंदरिय (ग, घ)।
३ सुयमुह सुयहत्थं (घ)।
४. °नासेय (क)।
५. थिविथिवेंत (क)।
६. कूयमाण (ह० वृ)।
७. फुड० (क)।
८ स० पा०—नीय जाव अडइ।
९. स० पा०—अब्भणुण्णाए जाव विलमिव।
१० °भूतेण (क्व)।
११. वि० १।२।१३,१४।
१२ वि० १।७।७।
१३. वि० १।७।८।
१४ पू०—वि० १।७।७।
१५. स० पा०—चउत्थ छट्ठ उत्तरेण इमेयारूवे।
१६ वि० १।७।८।
१७. पू०—वि० १।७।७।

११ तए णं भगवओ गोयमस्स तं पुरिसं पासित्ता° इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे—अहो णं इमे पुरिसे पुरा पोराणाणं[1] •दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे विहरइ। न मे दिट्ठा नरगा वा नेरइया वा। पच्चक्खं खलु अयं पुरिसे निरयपडिरूवियं वेयणं वेएइ त्ति कट्टु जाव[2] समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता° एवं वयासी—एवं खलु अहं भंते! छट्ठक्खमणपारणगंसि जाव[3] रियंते जेणेव पाडलिसंडे नयरे तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता पाडलिसंडं नयरं पुरत्थिमिल्लेणं दुवारेणं अणुपविट्ठे। तत्थ णं एगं पुरिसं पासामि कच्छुल्लं जाव[4] देहंबलियाए वित्तिं कप्पेमाणं।

'तए णं'[5] अहं दोच्चछट्ठक्खमणपारणगंसि दाहिणिल्लेणं दुवारेणं तहेव। तच्चछट्ठक्खमणपारणगंसि पच्चत्थिमिल्लेणं दुवारेणं तहेव। तए णं अहं चोत्थछट्ठक्खमणपारणगंसि उत्तरदुवारेणं अणुप्पविसामि, तं चेव पुरिसं पासामि कच्छुल्लं जाव देहंबलियाए वित्तिं कप्पेमाणं[6]। चिंता ममं॥

१२ [7]•से णं भंते! पुरिसे पुव्वभवे के आसि? किं नामए वा किं गोत्ते वा? कयरंसि गामंसि वा नयरंसि वा? किं वा दच्चा किं वा भोच्चा किं वा समायरित्ता, केसिं वा पुरा पोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे विहरइ?

उंबरदत्तस्स धण्णंतरिभव-वण्णग-पदं

१३. गोयमाइ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी°—एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे विजयपुरे नामं नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे॥

१४ तत्थ णं विजयपुरे नयरे कणगरहे नामं राया होत्था॥

१५. तस्स णं कणगरहस्स रण्णो धण्णंतरी नामं वेज्जे होत्था—अट्ठंगाउव्वेयपाढए [तं जहा—१. कुमारभिच्चं २ सालागे ३. सल्लहत्ते ४. कायतिगिच्छा ५ जंगोले ६ भूयविज्जे ७. रसायणे ८ वाजीकरणे][8] सिवहत्थे सुहहत्थे लहुहत्थे॥

१६ तए णं से धण्णंतरी वेज्जे विजयपुरे नयरे कणगरहस्स रण्णो अंतउरे य, अण्णेसिं च बहूणं राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहाणं, अण्णेसिं च बहूणं दुब्बलाण य गिलाणाण य वाहियाण य रोगियाण य सणाहाण

---

१. सं० पा०—पोराणाणं जाव एवं।
२ वि० १।२।१५।
३ वि० १।२।१३,१४।
४ वि० १।७।७।
५. तं (क, घ)।
६. कप्पेमाणे विहरइ (क, ख, ग, घ)।
७ सं० पा०—पुव्वभवपुच्छा वागरेइ।
८. कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यांश: प्रतीयते।

य अणाहाण य समणाण य माहणाण य भिक्खगाण[1] य करोडियाण य कप्पडि-याण य आउराण य—अप्पेगइयाण मच्छमसाइ उवदिसइ[2], अप्पेगइयाण कच्छभ-मसाइं, अप्पेगइयाणं गाहमसाइं, अप्पेगइयाणं मगरमसाइ, अप्पेगइयाण सुसुमारमंसाइ, अप्पेगइयाण अयमसाइ, एव—एलय[3]-रोज्झ-सूयर-मिग-ससय-गो-महिसमंसाइं उवदिसइ, अप्पेगइयाणं तित्तिरमसाइ उवदिसइ, अप्पेगइयाण वट्टक-लावक-कवोय-कुक्कुड-मयूरमंसाइं उवदिसइ, अण्णेसि च बहूण जलयर-थल-यर-खहयरमाईण मसाइ उवदिसइ। अप्पणा वि ण से धण्णतरी वेज्जे तेहिं बहूहि मच्छमंसेहि य जाव मयूरमसेहि य, अण्णेहि य बहूहिं जलयर-थलयर-खहयर-मंसेहि य, मच्छरसएहि य जाव मयूररसएहि य सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य सुर च महु च मेरग च जाइ च सीधु च पसण्ण च आसाएमाणे वीसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुजेमाणे विहरइ ।।

१७. तए ण से धण्णतरी वेज्जे एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहु पाव कम्म समज्जिणित्ता बत्तीसं वाससयाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे काल किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं बावीससागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णे ।।

उंबरदत्तस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पदं

१८ तए णं सा गगदत्ता भारिया जायनिंदुया यावि होत्था—जाया-जाया दारगा विणिघायमावज्जति ।।

१९. तए ण तीसे गगदत्ताए सत्थवाहीए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि कुडुवजागरिय जागरमाणीए अयं अज्झत्थिए चिंतिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे—एवं खलु अहं सागरदत्तेण सत्थवाहेण सद्धि बहूइ वासाइ उरा-लाइं माणुस्सगाइ भोगभोगाइ भुजमाणी विहरामि, नो चेव णं अह दारग वा दारिय वा पयामि । त धण्णाओ ण ताओ अम्मयाओ, संपुण्णाओ ण ताओ अम्म-याओ, कयत्थाओ ण ताओ अम्मयाओ, कयपुण्णाओ ण ताओ अम्मयाओ, कयल-क्खणाओ ण ताओ अम्मयाओ, कयविहवाओ ण ताओ अम्मयाओ, सुलद्धे ण तासि अम्मयाण माणुस्सए जम्मजीवियफले, जासि मण्णे नियगकुच्छिसंभूयगाइं थणदुद्धलुद्धयाइ महुरसमुल्लावगाइ मम्मणपजंपियाइ थणमूला[4] कक्खदेसभागं अभिसरमाणयाइं[5] मुद्धयाइ पुणो य कोमलकमलोवमेहिं हत्थेहिं गिण्हिऊण उच्छंगे निवेसियाइं देति समुल्लावए सुमहुरे पुणो-पुणो मजुलप्पभणिए ।

---

१ भिक्खुयाण (क, ख), भिक्खुणाण (ग); भिक्खाचरे (घ) ।

२. उवदसेइ (घ) ।

३. एला (क, घ), वि० १।४।१६ सूत्रे कतिचन पदानि अधिकानि दृश्यन्ते ।

४. थणमूल (क, ख, घ) ।

५. अतिसर० (क, ख, ग, घ) ।

अहं ण अधण्णा अपुण्णा अकयपुण्णा एत्तो एगतरमवि न पत्ता । त सेय खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[1] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते सागरदत्त सत्थवाह आपुच्छित्ता सुबहु पुप्फ-वत्थ-गध-मल्लालकार गहाय वहूहिं मित्त-नाइ-नियग-सयण-सबधि-परियणमहिलाहिं सद्धि पाडलिसडाओ नयराओ पडिनिक्खमित्ता वहिया जेणेव उबरदत्तस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छित्ता, तत्थ ण उंबरदत्तस्स जक्खस्स महरिह पुप्फच्चण करेत्ता जाणुपायपडियाए ओयाइत्तए[2]—जइ णं अहं देवाणुप्पिया ! दारग वा दारियं वा पयामि, तो ण अह तुब्भ जाय च दाय च भाय च अक्खयनिहिं च अणुवड्ढि-स्सामि त्ति कट्टु ओवाइय ओवाइणित्तए—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते जेणेव सागरदत्ते सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरदत्तं सत्थवाह एव वयासी—एव खलु अह देवाणुप्पिया ! तुब्भेहि सद्धि वहूइ वासाइं उरालाइ माणुस्सगाइ भोगभोगाइ भुजमाणी जाव एत्तो एगमवि न पत्ता । त इच्छामि ण देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया जाव ओवाइणित्तए ।।

२० तए ण से सागरदत्ते सत्थवाहे गगदत्त भारिय एव वयासी—मम पि णं देवाणुप्पिए ! एस चेव मणोरहे कह ण तुमं दारग वा दारिय वा पयाएज्जासि ? गगदत्ताए भारियाए एयमट्ठ अणुजाणइ ।।

२१ तए णं सा गगदत्ता भारिया सागरदत्तसत्थवाहेण एयमट्ठ अब्भणुण्णाया समाणी सुबहु पुप्फ-वत्थ-गध-मल्लालकार गहाय वहूहिं मित्त-नाइ-नियग-सयण-सबधि-परियणमहिलाहिं सद्धि सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पाडलिसंड नयर मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पुक्खरिणी[3] तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुक्खरिणीए तीरे सुबहु पुप्फ-वत्थ-गध-मल्लालकारं ठवेइ, ठवेत्ता पुक्खरिणिं ओगाहेइ, ओगाहेत्ता जलमज्जण करेइ, करेत्ता जलकिड्ड करेइ, करेत्ता ण्हाया कयवलिकम्मा कयकोउय-मगल-पायच्छित्ता उल्लपडसाडिया पुक्खरिणीओ[4] पच्चुत्तरइ, पच्चुत्तरित्ता त पुप्फ-वत्थ-गध-मल्लालकार गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव उबरदत्तस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उबरदत्तस्स जक्खस्स आलोए पणाम करेइ, करेत्ता लोमहत्थय परामुसइ, परामुसित्ता उवरदत्त जक्ख लोमहत्थएण पमज्जइ, पमज्जित्ता दगधाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुखेत्ता पम्हल[5]-°सुकुमाल-गंधकासाइयाए °

---

१ ना० १।१।२४ ।

२. उव्वाएत्तए (ग), ओवायइत्तए (क्व) ।

३. पोक्खरिणी (क), पुक्खरणी (ग) ।

४. पुक्खरिणिं (क, ग), पुक्खरणीए (ख) ।

५. स० पा०—पम्हल° ।

गायलट्ठी ओलूहइ, ओलूहित्ता सेयाइं वत्थाइ परिहेइ, परिहेत्ता महरिह पुप्फारुहण मल्लारुहण गधारुहण चुण्णारुहणं करेइ, करेत्ता धूव डहइ, डहित्ता जण्णुपायवडिया एव वयइ—जइ ण अह देवाणुप्पिया ! दारग वा दारिय वा पयामि, तो ण[1] •अहं तुब्भ जाय च दाय च भाय च अक्खयनिहि च अणुवड्ढिस्सामि त्ति कट्टु ओवाइय° ओवाइणइ, ओवाइणित्ता जामेव दिस पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ॥

२२ तए ण से धण्णतरी वेज्जे तओ नरयाओ अणंतर उव्वट्टित्ता इहेव जबुद्दीवे दीवे पाडलिसंडे नयरे गगदत्ताए भारियाए कुच्छिसि पुत्तत्ताए उववण्णे ॥

२३ तए णं तीसे गगदत्ताए भारियाए तिण्ह मासाण बहुपडिपुण्णाण अयमेयारूवे दोहले पाउब्भूए—धण्णाओ ण ताओ[2] •अम्मयाओ, सपुण्णाओ ण ताओ अम्मयाओ, कयत्थाओ ण ताओ अम्मयाओ, कयपुण्णाओ ण ताओ अम्मयाओ, कयलक्खणाओ ण ताओ अम्मयाओ, कयविहवाओ ण ताओ अम्मयाओ, सुलद्धे ण तासि अम्मयाण माणुस्सए जम्मजीविय°फले, जाओ णं विउल असण पाण खाइम साइम उवक्खडावेति, उवक्खडावेत्ता बहूहिं मित्त[3]-•नाइ-नियग-सयण-सबधि-परियणमहिलाहिं सद्धि° परिवुडाओ त विउल असण पाण खाइम साइम सुर च महु च मेरग च जाइ च सीधु च पसण्ण च पुप्फ[4]-•वत्थ गध-मल्लालकार° गहाय पाडलिसड नयर मज्झमज्झेण पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पुक्खरिणी ओगाहेति, ओगाहेत्ता ण्हायाओ[5] •कयबलिकम्माओ कयकोउय-मगल°-पायच्छित्ताओ त विउल असण पाण खाइम साइमं बहूहिं मित्त[6]-•नाइ-नियग-सयण-सबधि-परियणमहिलाहिं° सद्धि आसाएति वीसाएति परिभाएति परिभुजेति, दोहल विणेति—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव[7] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते जेणेव सागरदत्ते सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरदत्त सत्थवाह एव वयासी—धण्णाओ ण ताओ अम्मयाओ जाव दोहल विणेति, त इच्छामि ण देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया जाव दोहल विणित्तए ॥

२४ तए ण से सागरदत्ते सत्थवाहे गंगदत्ताए भारियाए एयमट्ठ अणुजाणइ ॥

२५. तए ण सा गगदत्ता सागरदत्तेण सत्थवाहेण अब्भणुण्णाया समाणी विउलं

---

१. स० पा०—तो ण जाव ओयाइणइ ।
२. स० पा०—ताओ जाव फले ।
३. स० पा०—मित्त जाव परिवुडाओ ।
४. स० पा०—पुप्फ जाव गहाय ।
५. स० पा०—ण्हायाओ जाव पायच्छित्ताओ ।
६. स० पा०—मित्त जाव सद्धि ।
७ ना० १।१।२४ ।

असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च सुबहुं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारं परिगेण्हावेइ, परिगेण्हावेत्ता बहूहिं[1] •मित्त-नाइ-नियग-संयण-संबंधि-परियणमहिलाहिं सद्धिं°[2] ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता[3] जेणेव उंबरदत्तस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ जाव[4] धूवं डहेइ, डहेत्ता जेणेव पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ ।।

२६ तए णं ताओ मित्त[5]-•नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियण°महिलाओ गंगदत्तं सत्थवाहिं सव्वालंकारविभूसियं करेंति ।।

२७ तए णं सा गंगदत्ता भारिया ताहिं मित्त[6]-•नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियण-महिलाहिं,° अण्णाहि य बहूहि नगरमहिलाहिं सद्धिं तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणी वीसाएमाणी परिभाएमाणी परिभुंजेमाणी दोहलं विणेइ, विणेत्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ।।

२८ तए णं सा गंगदत्ता सत्थवाही संपुण्णदोहला[7] तं गब्भं सुहंसुहेणं परिवहइ ।।

२९ तए णं सा गंगदत्ता भारिया नवण्हं मासाणं[8] •बहुपडिपुण्णाणं दारगं° पयाया । ठिइवडिया जाव[9] जम्हा णं अम्हं इमे दारए उंबरदत्तस्स जक्खस्स ओवाइयलद्धए तं होउ णं दारए उंबरदत्ते नामेणं ।।

३० तए णं से उंबरदत्ते पंचधाईपरिग्गहिए परिवड्ढए ।।

३१ तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे[10] •अण्णया कयाइ गणिमं च धरिमं च मेज्जं च पारिच्छेज्जं च—चउव्विहं भंडं गहाय लवणसमुद्दं पोयवहणेणं उवागए ।।

३२ तए णं से सागरदत्ते तत्थ लवणसमुद्दे पोयविवत्तीए निब्बुड्डभंडसारे अत्ताणे असरणे कालधम्मुणा संजुत्ते[11]° ।।

३३ [12]•तए णं सा गंगदत्ता सत्थवाही अण्णया कयाइ लवणसमुद्दोत्तरणं च सत्थविणासं च पोयविणासं च पइमरणं च अणुचिंतेमाणी-अणुचिंतेमाणी कालधम्मुणा संजुत्ता ।।°

---

१. सं० पा०—बहूहिं जाव ण्हाया ।
२,३. पू०—वि० १।७।२१ ।
४ वि० १।७।२१।
५ सं० पा०—मित्त जाव महिलाओ ।
६. सं० पा०—मित्त° ।
७. पू०—वि० १।२।३०, पसत्थदोहला ५ (क, ख, ग, घ) ।
८. सं० पा०—मासाणं जाव पयाया ।
९. वि० १।३।३१,३२ ।
१०. सं० पा०—जहा विजयमित्ते जाव कालमासे कालं किच्चा ।
११ पू०—वि० १।२।५३,५४ ।
१२ सं० पा०—गंगदत्ता वि ।

३४ [1]•तए णं ते नगरगुत्तिया गंगदत्तं सत्थवाहिं कालगयं जाणित्ता उंबरदत्तं दारगं साम्रो गिहाम्रो निच्छुभेंति, निच्छुभेत्ता तं गिहं अण्णस्स दलयंति ।।

३५. तए णं तस्स उंबरदत्तस्स दारगस्स अण्णया कयाइ सरीरगंसि जमगसमगमेव सोलस रोगायंका पाउब्भूया, [तं जहा—सासे कासे जाव[2] कोढे][3] ।।

३६. तए णं से उंबरदत्ते दारए सोलसहिं रोगायंकेहिं अभिभूए समाणे 'कच्छुल्ले जाव[4] देहवलियाए वित्तिं कप्पेमाणे विहरइ'[5] ।।

३७ एवं खलु गोयमा ! उंबरदत्ते दारए पुरा पोराणाणं[6] •दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे० विहरइ ।।

उंबरदत्तस्स आगामिभव-वण्णग-पदं

३८ 'उंबरदत्ते णं भंते ! दारए'[7] कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?

गोयमा ! उंबरदत्ते दारए बावत्तरिं वासाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ[8]। संसारो तहेव[9] ।

तम्रो हत्थिणाउरे नयरे कुक्कुडत्ताए पच्चायाहिइ । 'से णं गोट्ठिल्लएहिं वहिए'[10] तत्थेव हत्थिणाउरे नयरे सेट्ठिकुलंसि उववज्जिहिइ । बोही । सोहम्मे कप्पे । महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ।।

निक्खेव-पदं

३९. [11]•एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[12] संपत्तेणं दुहविवागाणं सत्तमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति बेमि० ।।

---

१. सं० पा०—उंबरदत्ते निच्छूढे जहा उज्झियए ।

२. वि० १।१।५२ ।

३ कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यांश प्रतीयते ।

४. वि० १।७।७ ।

५ सडियहत्थ जाव विहरइ (क, ख, ग, घ) ।

६ सं० पा०—पोराणाणं जाव विहरइ ।

७ तए णं उंबरदत्ते दारए (क, ख); से णं उंबरदत्ते दारए (ग); तए णं से उंबरदत्ते दारए (घ), प्राक्तनाध्ययनक्रमेणायं पाठो गृहीत ।

८ उववण्णे (क, ख, ग, घ) । भाविप्रश्नप्रसङ्गत्वेन असौ पाठ असङ्गत प्रतिभाति ।

९ तहेव जाव पुढवी (ख, ग, घ), पू०—वि० १।१।७० ।

१०. जायमत्ते चेव गोट्ठिवहिए (घ) ।

११ सं० पा०—निक्खेवो ।

१२ ना० १।१।७ ।

अट्ठमं अज्झयणं

सोरियदत्ते

उक्खेव-पदं

१. जइ ण भंते ! [1]°समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[2] संपत्तेण दुहविवागाणं सत्तमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, अट्ठमस्स ण भंते ! अज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

२. तए ण से सुहम्मे अणगारे जंवू-अणगार एव वयासी°—एव खलु जवू ! तेणं कालेण तेण समएण सोरियपुरं नयरं। सोरियवडेसगं उज्जाणं। सोरिओ जक्खो। सोरियदत्ते राया॥

३. तस्स ण सोरियपुरस्स नयरस्स वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ ण एगे मच्छधपाडए[3] होत्था॥

४. तत्थ णं समुद्दत्ते नाम मच्छधे परिवसइ—अहम्मिए जाव[4] दुप्पडियाणदे॥

५ तस्स णं समुद्ददत्तस्स समुद्ददत्ता नामं भारिया होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पंचिदियसरीरा[5]॥

६ तस्स णं समुद्ददत्तस्स मच्छधस्स पुत्ते समुद्ददत्ताए भारियाए अत्तए सोरियदत्ते नाम दारए होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पंचिदियसरीरे[6]॥

७ तेण कालेणं तेण समएण सामी समोसढे जाव[7] परिसा पडिगया॥

---

१. स० पा०—अट्ठमस्स उक्खेवओ।
२. ना० १।१।७।
३ मच्छधे पाडए (ख); मच्छववपाडए (घ)।
४. वि० १।१।४७।
५. पू०—ओ० सू० १५।
६. पू०—वि० १।२।१०।
७. वि० १।४।११।

सोरियदत्तस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं

८ तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे सीसे जाव[1] सोरिय-पुरे नयरे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं [अडमाणे ?] अहापज्जत्तं समुदाण गहाय सोरियपुराओ नयराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता तस्स मच्छध-पाडगस्स अदूरसामतेण वीईवयमाणे महइमहालियाए मणुस्सपरिसाए मज्झगय पासइ एग पुरिस—सुक्क भुक्ख निम्मस अट्ठिचम्मावणद्ध किडिकिडियाभूय नीलसाडगनियत्थ मच्छकटएण गलए अणुलग्गेणं कट्ठाइ कलुणाइ वीसराइ उक्कूवमाणं[2] अभिक्खण-अभिक्खण पूयकवले य रुहिरकवले य किमियकवले[3] य वममाणं पासइ, पासित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए कप्पिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो ण इमे पुरिसे पुरा पोराणाण[4] °दुच्चिण्णाण दुप्पडिक्कताण असुभाणं पावाण कडाण कम्माण पावग फलवित्तिविसेस पच्चणुभवमाणे° विहरइ—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ। पुव्वभवपुच्छा जाव[5] वागरण ॥

सोरियदत्तस्स सिरीयभव-वण्णग-पदं

९ एव खलु गोयमा! तेण कालेण तेण समएण इहेव जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे नदिपुरे नाम नयरे होत्था। मित्ते राया ॥

१०. तस्स ण मित्तस्स रण्णो सिरीए नाम महाणसिए होत्था—अहम्मिए जाव[6] दुप्पडियाणदे ॥

११ तस्स ण सिरीयस्स महाणसियस्स वहवे मच्छिया य वागुरिया य साउणिया[7] य दिण्णभइ-भत्त-वेयणा कल्लाकल्लिं[8] वहवे सण्हमच्छा य जाव[9] पडागाइपडागे य, अए य जाव[10] महिसे य, तित्तिरे य जाव[11] मयूरे य जीवियाओ ववरोवेति, ववरोवेत्ता सिरीयस्स महाणसियस्स उवणेति, अण्णे य से वहवे तित्तिरा य जाव मयूरा य पजरसि सनिरुद्धा चिट्ठति, अण्णे य बहवे पुरिसा दिण्णभइ-भत्त-वेयणा ते वहवे तित्तिरे य जाव मयूरे य जीवतए[12] चेव 'निप्पक्खेति, निप्प-क्खेत्ता'[13] सिरीयस्स महाणसियस्स उवणेति ॥

---

१ वि० १।२।१२-१४।
२ कूवमाण (घ)।
३ किमिकवले (ख)।
४ स० पा०—पोराणाण जाव विहरइ।
५ वि० १।२।१५,१६।
६. वि० १।१।४७।
७. सोउरिया (ख)।
८. कल्लकल्ल (क, ग)।
९ पण्ण० पद १।
१०. वि० १।७।१६।
११. वि० १।७।१६।
१२ जीविए (ख)।
१३ निप्पेखति २ (क), निप्पखेइ २ (घ)।

१२ तए णं से सिरीए महाणसिए बहूणं जलयर-थलयर-खहयराणं मंसाइं कप्पणी-कप्पियाइं करेइ, तं जहा—सण्हखंडियाणि य वट्टखंडियाणि य दीहखंडियाणि[1] य रहस्सखंडियाणि य, हिमपक्काणि य जम्मपक्काणि य घम्मपक्काणि[2] य मारुयपक्काणि य कालाणि य हेरंगाणि[3] य महिट्ठाणि य आमलरसियाणि य मुद्दियारसियाणि य कविट्ठरसियाणि य दालिमरसियाणि य मच्छरसियाणि य तलियाणि य भज्जियाणि य सोल्लियाणि य उवक्खडावेति, उवक्खडावेत्ता[4] अण्णे य बहवे मच्छरसए य एणेज्जरसए य तित्तिररसए य जाव[5] मयूररसए य, अण्णं च विउलं हरियसागं उवक्खडावेति, उवक्खडावेत्ता मित्तस्स रण्णो भोयणमंडवंसि भोयणवेलाए उवणेति। अप्पणा वि णं से सिरीए महाणसिए तेसिं च बहूहिं जलयर-थलयर-खहयरमंसेहिं च रसिएहि य हरियसागेहि य सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहिं य सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणे वीसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ॥

१३ तए णं से सिरीए महाणसिए एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं[6] •पावं कम्मं कलिकलुसं॰ समज्जिणित्ता तेत्तीसं वाससयाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा छट्ठीए पुढवीए उववण्णे॥

सोरियदत्तस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पदं

१४. तए णं सा समुद्ददत्ता भारिया निंदू यावि होत्था—जाया-जाया दारगा विणिघायमावज्जंति। जहा गंगदत्ताए चिंता, आपुच्छणा, ओवाइयं[7], दोहलो जाव[8] दारगं पयाया जाव[9] जम्हा णं अम्हं इमे दारए सोरियस्स जक्खस्स ओवाइय-लद्धए, तम्हा णं होउ अम्हं दारए सोरियदत्ते नामेणं॥

१५ तए णं से सोरियदत्ते दारए पंचधाईपरिग्गहिए जाव[10] उम्मुक्कबालभावे विण्णय-परिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते यावि होत्था॥

१६ तए णं से समुद्ददत्ते अण्णया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते॥

१७ तए णं से सोरियदत्ते दारए बहूहिं मित्त[11]-•नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेहिं सद्धिं संपरिवुडे॰ रोयमाणे कंदमाणे विलवमाणे समुद्ददत्तस्स नीहरणं करेइ, करेत्ता बहूइं लोइयाइं मयकिच्चाइं करेइ, अण्णया कयाइ सयमेव मच्छंधमहत्तरगत्तं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ॥

---

१. दीहभंडियाण वट्टखंडियाण (क)।
२ थेमपक्काणि(क,ख,ह०वृ),थेवपक्काणि (ग), घमपक्काणी(घ,ह०वृ),वेगपक्काणि (मु०वृ)।
३ हराणि (घ)।
४ उवक्खडावेत्ता (क, घ)।
५. वि० १।७।१६।
६. सं० पा०—सुबहुं जाव समज्जिणित्ता।
७ ओवालियं (क)।
८. वि० १।७।१९-२६।
९. वि० १।७।२९।
१०. वि० १।३।३३,३४।
११ सं० पा०—मित्त॰।

१८. तए ण से सोरियदत्ते दारए मच्छधे जाए अहम्मिए जाव[1] दुप्पडियाणदे।

१९ तए ण तस्स सोरियदत्तस्स मच्छंधस्स वहवे पुरिसा दिण्णभइ-भत्त-वेयणा कल्लाकल्लि[2] एगट्ठियाहिं जउण महाणइ ओगाहेति, ओगाहेत्ता वहूहिं दहगलणेहि य दहमलणेहि य दहमद्दणेहि य दहमहणेहि य दहवहणेहि य दहपवहणेहि य मच्छंधुलेहि य[3] 'पयंचुलेहि य'[4] 'पचपुलेहि य जभाहि य'[5] 'तिसराहि य भिसराहि य'[6] घिसराहि य विसराहि य हिल्लिरीहि य 'भिल्लिरीहि य गिल्लिरीहि य'[7] झिल्लिरीहि य जालेहि य गलेहि य कूडपासेहि य 'वक्कवधेहि य सुत्तवधेहि य'[8] वालवधेहि य वहवे सण्हमच्छे जाव[9] पडागाइपडागे य गेण्हति एगट्ठियाओ[10] भरेति, भरेत्ता कूलं गाहेति, गाहेत्ता मच्छखलए[11] करेति, करेत्ता आयवसि दलयति। अण्णे य से वहवे पुरिसा दिण्णभइ-भत्त-वेयणा आयव-तत्तएहिं मच्छेहिं सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य रायमग्गसि वित्ति कप्पेमाणा विहरति। अप्पणा वि ण से सोरियदत्ते वहूहिं सण्हमच्छेहि य जाव पडागाइपडागेहि य सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य सुर च महु च मेरग च जाइ च सीधु च पसण्ण च आसाएमाणे वीसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुजेमाणे विहरइ॥

२० तए णं तस्स सोरियदत्तस्स मच्छधस्स[12] अण्णया कयाइ ते मच्छे सोल्ले य तलिए य भज्जिए य आहारेमाणस्स मच्छकटए गलए लग्गे यावि होत्था॥

२१ तए ण से सोरियदत्ते मच्छधे महयाए वेयणाए अभिभूए समाणे कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया! सोरियपुरे नयरे सिंघाडग[13]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°पहेसु य महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा एव वयह—एव खलु देवाणुप्पिया! सोरियदत्तस्स मच्छकटए गले लग्गे। त जो ण इच्छइ वेज्जो वा वेज्जपुत्तो वा जाणुओ वा जाणुयपुत्तो वा तेगिच्छिओ वा तेगिच्छियपुत्तो वा सोरियदत्तस्स मच्छियस्स

---

१. वि० १।१।४७।
२. कल्लकल्ल (घ)।
३ × (क, ख, ग)।
४. पयघुलेहि य (ख), × (ग)।
५ पचपुलेहिं य वम्भारिएहिं य (क), पचपुलेहि य जम्भाहि य (ख), पचन्नलेहि य वम्भाहि य (ग), प्रपचपुलादय मत्स्यवधनविशेषा (मु० वृ); प्रपचुलादय.° (ह० वृ); वघुलादय ° (ह० वृ)।
६. तिसिराहि य भिसिराहि य (ग)।
७ × (क, ख, घ)।
८. णक्खवधेहि य (ग), णक्खवधेहि य वक्कवधेहि य वालवधेहि य (घ)।
९. पण्ण° पद° १।
१० एगट्ठिय (क, ख, ग)।
११ मच्छक्खलए (क, ख)।
१२. मच्छधियस्स (क, ख, ग, घ)।
१३. स० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु।

मच्छकटय गलाओ नीहरित्तए, तस्स णं सोरियदत्ते विउलं अत्थसंपयाणं दलयइ ॥

२२. तए ण ते कोडुंबियपुरिसा जाव[1] उग्घोसति ॥

२३ तए णं ते वहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य तेगिच्छिया य तेगिच्छियपुत्ता य इमं एयारूव उग्घोसणं[2] निसामेति, निसामेत्ता जेणेव सोरियदत्तस्स गेहे जेणेव सोरियदत्ते मच्छधे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता वहूहिं उप्पत्तियाहि य वेणइयाहि य कम्मियाहि य पारिणामियाहि य वुद्धीहिं परिणामेमाणा-परिणामेमाणा वमणेहि य छड्डणेहि य ओवीलणेहि य कवलग्गाहेहि य सल्लुद्धरणेहि य विसल्लकरणेहि य इच्छंति सोरियदत्तस्स मच्छधस्स मच्छकंटयं गलाओ नीहरित्तए, नो संचाएंति नीहरित्तए वा विसोहित्तए वा ॥

२४ तए ण ते वहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य तेगिच्छिया य तेगिच्छियपुत्ता य जाहे नो सचाएति सोरियदत्तस्स मच्छंधस्स[3] मच्छकंटग गलाओ नीहरित्तए, ताहे सता तता परितंता जामेव दिस पाउब्भूया तामेव दिस पडिगया[4]।

२५. तए णं से सोरियदत्ते मच्छंधे वेज्जपडियाइक्खिए परियारगपरिचत्ते निव्विण्णोसहभेसज्जे तेणं दुक्खेण अभिभूए समाणे सुक्के भुक्खे जाव[5] किमियकवले य वममाणे विहरइ ॥

२६. एव खलु गोयमा ! सोरियदत्ते पुरा पोराणाण[6] °दुच्चिण्णाण दुप्पडिक्कताणं असुभाण पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेस पच्चणुभवमाणे° विहरइ ॥

सोरियदत्तस्स आगामिभव-वण्णग-पदं

२७. सोरियदत्ते णं भते ! मच्छंधे इओ कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?

गोयमा ! सत्तरिं वासाइ परमाउं पालइत्ता कालमासे काल किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ। ससारो तहेव[7]। हत्थिणाउरे नयरे मच्छत्ताए उववज्जिहिइ[8]। से णं तओ मच्छिएहिं जीवियाओ

---

१ वि० १।८।२१।

२. उग्घोसण उग्घोमेज्जतं (ख, घ)।

३. मच्छवे (क, ख, ग, घ)।

४. परिगया (क)।

५. वि० १।८।८।

६ स० पा०—पोराणाण जाव विहरइ।

७ वि० १।१।७०। तहेव जाव पुढवी (क)।

८. उववण्णे (क, ख, ग, घ)। भाविप्रश्न-प्रसगत्वेन असौ पाठ असंगप्रति; प्रतिभाति।

ववरोविए तत्थेव सेट्ठिकुलंसि उववज्जिहिइ। बोही। सोहम्मे कप्पे। महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ॥

निक्खेव-पदं

२८ [1]°एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेण जाव[2] संपत्तेणं दुहविवागाणं अट्ठमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते।

—त्ति बेमि°॥

---

१ सं० पा०—निक्खेवो।

२. ना० १।१।७।

नवमं अज्झयणं

देवदत्ता

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते । [1]°समणेणं भगवया महावीरेण जाव[2] सपत्तेणं दुहविवागाणं अट्ठमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, नवमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेण के अट्ठे पण्णत्ते ?

२. तए णं से सुहम्मे अणगारे जंबू-अणगारं एवं वयासी°—एवं खलु जंबू ! तेणं कालेण तेणं समएण रोहीडए[3] नाम नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे। पुढवीवडेसए उज्जाणे। धरणो जक्खो। वेसमणदत्ते[4] राया। सिरी देवी। पूसनंदी कुमारे जुवराया ॥

३. तत्थ णं रोहीडए नयरे दत्ते नामं गाहावई परिवसइ—अड्ढे। कण्हसिरी भारिया ॥

४. तस्स णं दत्तस्स धूया कण्हसिरीए अत्तया देवदत्ता नामं दारिया होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरा[5] ॥

५. तेणं कालेण तेण समएणं सामी समोसढे जाव[6] परिसा पडिगया ॥

देवदत्ताए पुव्वभवपुच्छा-पदं

६ तेण कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी छट्ठ-क्खमणपारणगंसि तहेव जाव[7] रायमग्गमोगाढे हत्थी आसे पुरिसे पासइ। तेसिं

---

१. सं० पा०—उक्खेवओ नवमस्स ।
२. ना० १।१।७ ।
३ रोहीतके (क, ग) सर्वत्र ।
४. वेसमणदत्तो (ख, घ) ।
५. सर्वासु प्रतिषु 'अहीण जाव उक्किट्ठसरीरा' इति पाठोस्ति। वि० १।४।१० तथा १।४।३६ सूत्रानुसारेण पाठद्वयोर्मिश्रण सभाव्यते। अस्माभिरत्र एको गृहीतः ।
६. वि० १।४।११ ।
७. वि० १।२।१३,१४ ।

पुरिसाण मज्झगय पासइ एग इत्थियं—अवओडयबधण उक्खित्त[1]-•कण्णनासं नेहतुप्पियगत्त वज्झ-करकडि-जुयनियच्छं कठेगुणरत्त-मल्लदामं चुण्णगुडियगात चुण्णय वज्झपाणपीय॰ सूले भिज्जमाण पासइ, पासित्ता भगवओ गोयमस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए कप्पिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था, तहेव निग्गए जाव[2] एव वयासी—एस ण भते ! इत्थिया पुव्वभवे का आसि[3] ?

देवदत्ताए सीहसेणभव-वण्णग-पदं

७ एव खलु गोयमा ! तेण कालेण तेण समएण इहेव जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे सुपइट्ठे नाम नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे । महासेणे[4] राया ।।

८. तस्स ण महासेणस्स रण्णो धारिणीपामोक्ख देवीसहस्स ओरोहे[5] यावि होत्था ।।

९. तस्स ण महासेणस्स रण्णो पुत्ते धारिणीए देवीए अत्तए सीहसेणे नामं कुमारे होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पचिंदियसरीरे जुवराया ।।

१०. तए ण तस्स सीहसेणस्स कुमारस्स अम्मापियरो अण्णया कयाइ पच पासायवडे-सयसयाइं करेंति—अब्भुग्गयमूसियाइ[6] ।।

११. तए ण तस्स सीहसेणस्स कुमारस्स अम्मापियरो अण्णया कयाइ सामापामो-क्खाण[7] पचण्हं रायवरकन्नगसयाण एग दिवसे पाणिं गिण्हावेसु । पचसओ[8] दाओ ।।

१२ तए ण से सीहसेणे कुमारे सामापामोक्खेहिं पचहिं देवीसएहिं सद्धिं उप्पिं पासायवरगए जाव[9] विहरइ ।।

१३. तए ण से महासेणे राया अण्णया कयाइ कालधम्मुणा सजुत्ते । नीहरण । राया जाए[10] ।।

१४ तए ण से सीहसेणे राया सामाए देवीए मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे अवसेसाओ देवीओ नो आढाइ नो परिजाणइ, अणाढायमाणे अपरिजाणमाणे विहरइ ।।

१५ तए ण तासि एगूणगाण पचण्ह देवीसयाण एगूणाइ पचमाइसयाइ इमीसे कहाए लद्धट्ठाइ सवणयाए[11]—एव खलु सीहसेणे राया सामाए देवीए मुच्छिए गिद्धे

---

१. सं० पा०—उक्खित्त जाव सूले ।
२ वि० १।२।१५ ।
३. पू०—वि० १।२।१६ ।
४. महसेणे (क) ।
५. ओरोवे (क) ।
६ पू०—ना० १।१।८९ ।
७. सम्मा॰ (क) सर्वत्र ।
८. पचसयओ (वृ) ।
९. ना० १।१।९३ ।
१०. जाए महया (घ) ।
११. समणयाए (ख), समाणाइ (घ) ।

गढिए अज्झोववण्णे अम्हं धूयाओ नो आढाइ नो परिजाणइ, अणाढायमाणे अपरिजाणमाणे विहरइ। तं सेयं खलु अम्हं सामं देविं अग्गियओगेण वा विसप्पओगेण वा सत्थप्पओगेण वा जीवियाओ ववरोवित्तए—एव संपेहेति, सपेहेत्ता सामाए देवीए अतराणि य छिद्दाणि य विवराणि[1] य पडिजागरमाणीओ-पडिजागरमाणीओ विहरति ॥

१६ तए ण सा सामा देवी इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी सवणयाए[2]—"एव खलु मम [एगूणगाणं ?] पचण्ह सवत्तीसयाण [एगूणाइं ?] पचमाइसयाइं इमीसे कहाए लद्धट्ठाइं सवणयाए अण्णमण्ण एवं वयासी—एव खलु सीहसेणे राया सामाए देवीए मुच्छिए जाव[3] पडिजागरमाणीओ विहरति" त न नज्जइ णं मम केणइ कु-मारेण मारिस्संती ति कट्टु भीया तत्था तसिया उव्विग्गा सजायभया जेणेव कोवघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ओहय[4]°मणसंकप्पा करतलपल्हत्थ-मुही अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठीया° झियाइ ॥

१७. तए ण से सीहसेणे राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे जेणेव कोवघरए, जेणेव सामा देवी, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सामं देविं ओहय[5]°मणसंकप्पं करतलपल्हत्थमुहिं अट्टज्झाणोवगयं भूमिगयदिट्ठीय झियायमाणिं° पासइ, पासित्ता एव वयासी – किं णं तुमं देवाणुप्पिए! ओहय[6]°मणसंकप्पा करतल-पल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठीया° झियासि ?

१८ तए ण सा सामा देवी सीहसेणेणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा उप्फेणउप्फेणिय[7] सीहसेण राय एव वयासी—एव खलु सामी! ममं एगूणगाण पच सवत्तीसयाण एगूणाइ पंच माइसयाइ इमीसे कहाए लद्धट्ठाइ सवणयाए[8] अण्णमण्ण सद्दावेत्ता[9] एव वयासी—"एव खलु सीहसेणे राया सामाए देवीए मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे अम्ह धूयाओ नो आढाइ नो परिजाणइ जाव[10] अतराणि य छिद्दाणि य विवराणि य पडिजागरमाणीओ-पडिजागरमाणीओ विहरंति।" त न नज्जइ णं सामी! ममं केणइ कु-मारेणं मारिस्सती ति कट्टु भीया जाव[11] झियामि ॥

---

१. विरहाणि (क, ग, घ)।
२. सवणयाए एवं वयासी (क, ग, घ); समाणी एव वयासी (ख); अत्र श्रवणप्रसङ्गोऽस्ति, न तु कथनस्य। तेन 'एव वयासी' इति पाठ प्रकृतो नास्ति, सम्भवतो लिपिदोषेण जात।
३. वि० १।९।१५।
४. स० पा०—ओहय जाव झियाइ।
५. सं० पा०—ओहय जाव पासइ।
६. स० पा०—ओहय जाव झियासि।
७ उप्फेणाउप्फेणिय (क)।
८. समाणाइ (ख, ग), समाणाइ सवणयाए (घ)।
९ सद्दावेंति २ (क, ख, ग, घ)।
१०. वि० १।९।१५।
११. वि० १।९।१६।

१६ तए ण से सीहसेणे राया साम देविं एव वयासी—मा णं तुम देवाणुप्पिया ! ओहयमणसकप्पा जाव[1] झियाहि । अह ण 'तह घत्तिहामि'[2] जहा ण तव नत्थि कत्तो वि[3] सरीरस्स आवाहे वा पवाहे वा भविस्सइ त्ति कट्टु ताहिं इट्ठाहिं कताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं वग्गूहिं समासासेइ, समासासेत्ता तओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी— गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सुपइट्ठस्स नयरस्स वहिया एग मह कूडागारसाल[4]—अणेगक्खभसयसनिविट्ठ पासादीय दरिसणिज्ज अभिरूव पडिरूवं करेह 'मम एयमाणत्तिय'[5] पच्चप्पिणह ।।

२०. तए ण से कोडुवियपुरिसा करयल[6]•परिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलिं कट्टु एव सामि ! त्ति आणाए विणएण वयण ° पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता सुपइट्ठनयरस्स[7] वहिया पच्चत्थिमे दिसीभाए एग महं कूडागारसाल[8]—अणेगक्खभसयस-निविट्ठ पासादीय दरिसणिज्ज अभिरूव पडिरूव करेति, जेणेव सीहसेणे राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तमाणत्तिय पच्चप्पिणति ।।

२१ तए ण से सीहसेणे राया अण्णया कयाइ एगूणगाण पचण्ह देवीसयाण एगूणाइ पच माइसयाइ आमतेइ ।।

२२ तए ण तासिं एगूणगाण पच देवीसयाण एगूणाइ पच माइसयाइ सीहसेणेण रण्णा आमतियाइ समाणाइ सव्वालकारविभूसियाइ जहाविभवेण जेणेव सुपइट्ठे नयरे, जेणेव सीहसेणे राया तेणेव उवेति[9] ।।

२३ तए ण से सीहसेणे राया एगूणपचण्ह देवीसयाण एगूणगाण पचण्ह माइसयाण कूडागारसाल आवास[10] दलयइ ।।

२४ तए ण से सीहसेणे राया कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी— गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! विउल असण पाण खाइम साइम उवणेह, सुवहु पुप्फ-वत्थ-गध-मल्लालकार च कूडागारसालं साहरह ।।

२५. तए ण ते कोडुवियपुरिसा तहेव जाव[11] साहरति ।।

---

१ वि० १।६।१६ ।
२ तह घत्तीहामि (क), तहा पत्तिहामि (ग), तहा वत्तीहामि (घ), तहा जत्तिहामि (क्व), °जत्तीहामि (हृ० वृ) °यती-हामि (हृ० वृ) ।
३ इ (,ख ग) ।
४ °साल करेह (क, ख, ग, घ) ।
५ एयमट्ठ (क, ख, ग) ।
६. स० पा०—करयल जाव पडिसुणेंति ।
७ सुपइट्ठिय° (क, ख, ग, घ) ।
८ °साल जाव करेंति (क, ख, ग, घ) ।
९. उवणेंति (क), उवागच्छति (घ) ।
१० आवसह (क, ख), आवह (ग) ।
११. वि० १।६।२४ ।

२६. तए ण तासिं एगूणगाणं पचण्हं देवीसयाणं 'एगूणाइ पच माइसयाइं'[1] सव्वालंकारविभूसियाइं त विउल असणं पाण खाइम साइम सुरं च महु च मेरग च जाइं च सीधु च पसण्ण च आसाएमाणाइ वीसाएमाणाइ परिभाएमाणाइं परिभुंजेमाणाइं गधव्वेहि य नाडएहि य उवगीयमाणाइ - उवगीयमाणाइं विहरंति ॥

२७ तए ण से सीहसेणे राया अद्धरत्तकालसमयंसि बहूहिं पुरिसेहिं सद्धिं सपरिवुडे जेणेव कूडागारसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कूडागारसालाए दुवाराइ पिहेइ, पिहेत्ता कूडागारसालाए सव्वओ समंता अगणिकायं दलयइ ॥

२८ तए ण तासिं एगूणगाणं पंचण्ह देवीसयाणं एगूणगाइ पंच माइसयाइ सीहसेणेण रण्णा आलीवियाइं समाणाइ रोयमाणाइं कंदमाणाइ विलवमाणाइ अत्ताणाइं असरणाइ कालधम्मुणा संजुत्ताइ ॥

२९ तए ण से सीहसेणे राया एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहु[2] °पाव कम्म कलिकलुसं ° समज्जिणित्ता चोत्तीस वाससयाइ परमाउं पालइत्ता कालमासे काल किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेण बावीससागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णे ॥

देवत्ताए वत्तमाणभव-वण्णग-पदं

३० से ण तओ अणतरं उव्वट्टित्ता इहेव रोहीडए[3] नयरे दत्तस्स सत्थवाहस्स कण्हसिरीए भारियाए कुच्छिंसि दारियत्ताए उववण्णे ॥

३१. तए ण सा कण्हसिरी नवण्ह मासाणं[4] °बहुपडिपुण्णाण ° दारियं पयाया—सूमाल सुरूव ॥

३२ तए ण तीसे दारियाए अम्मापियरो निव्वत्तबारसाहियाए विउल असणं पाण खाइम साइम उवक्खडावेंति, उवक्खडावेत्ता जाव[5] मित्त-नाइ-नियग-सयण-सबंधि-परियणस्स पुरओ नामधेज्जं करेंति—होउ णं दारिया देवदत्ता नामेण ॥

३३ तए ण सा देवदत्ता दारिया पचधाईपरिग्गहिया जाव[6] परिवड्ढइ ॥

३४. तए ण सा देवदत्ता दारिया उम्मुक्कबालभावा[7] °विण्णय-परिणयमेत्ता जोव्वण-गमणुप्पत्ता रूवेण जोव्वणेण लावण्णेण य ° अईव-अईव उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था ॥

---

१ पच माइसयाइं जाव (क, ख, ग, घ)।
२. स० पा०—सुबहु जाव समज्जिणित्ता।
३. रोहीतए (क, ख, ग)।
४. स० पा०—मासाण जाव दारियं।
५ वि० १।३।३२।
६. वि० १।२।४९।
७. स० पा०—उम्मुक्कबालभावा जोव्वणेण रूवेण लावण्णेण य जाव अईव।

३५. तए ण सा देवदत्ता दारिया अण्णया कयाइ ण्हाया जाव[1] विभूसिया बहूहिं खुज्जाहिं जाव[2] परिक्खित्ता उप्पि आगासतलगसि[3] कणगतिंदूसएण कीलमाणी विहरइ ॥

३६ इम च ण वेसमणदत्ते राया ण्हाए जाव[4] विभूसिए आस 'दुरुहति, दुरुहित्ता'[5] बहूहिं पुरिसेहिं सद्धि सपरिवुडे आसवाहणियाए[6] निज्जायमाणे दत्तस्स गाहावइस्स गिहस्स अदूरसामतेण वीईवयइ ॥

३७ तए ण से वेसमणे राया[7] •दत्तस्स गाहावइस्स गिहस्स अदूरसामतेणं° वीईवयमाणे देवदत्तं दारिय उप्पि आगासतलगसि कणगतिंदूसएण कीलमाणि पासइ, पासित्ता देवदत्ताए दारियाए 'रूवे य जोव्वणे य लावण्णे य'[8] जायविम्हए कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—कस्स ण देवाणुप्पिया ! एसा दारिया ? किं च[9] नामधेज्जेण ?

३८. तए ण ते कोडुबियपुरिसा वेसमणराय करयल[10] •परिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु° एव वयासी—एस ण सामी ! दत्तस्स सत्थवाहस्स धूया कण्हसिरीए भारियाए अत्तया देवदत्ता नाम[11] दारिया रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा ॥

३९ तए णं से वेसमणे राया आसवाहणियाओ पडिनियत्ते समाणे अब्भितरठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! दत्तस्स धूय कण्हसिरीए भारियाए अत्तयं देवदत्त दारिय पूसनदिस्स जुवरण्णो भारियत्ताए वरेह, जइ वि य सा सयरज्जसुका[12] ॥

४० तए ण ते अब्भितरठाणिज्जा पुरिसा वेसमणेण रण्णा एव वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा करयल[13] •परिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु एव सामि ! त्ति आणाए विणएण वयण° पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता ण्हाया जाव[14] सुद्धप्पावेसाइ मगल्लाइ वत्थाइं पवर परिहिया सपरिवुडा जेणेव दत्तस्स गिहे तेणेव उवागया ॥

४१. तए ण से दत्ते सत्थवाहे ते अब्भितरठाणिज्जे पुरिसे एज्जमाणे पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता सत्तट्ठ पयाइ पच्चुग्गए[15] आसणेण

---

१. वि० १।२।६४ ।
२. ओ० सू० ७० ।
३. °तलसि (क) ।
४. वि० १।२।६४ ।
५ द्रुहति (क) ।
६ आसवाहिणियाए (ग) ।
७. स० पा०—राया जाव वीईवयमाणे ।
८. रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य (ग, घ) ।
९. वा (घ) ।
१०. स० पा०—करयल° ।
११. नामेण (क) ।
१२. सयं० (ख, घ) ।
१३. स० पा०—करयल जाव पडिसुणेंति ।
१४ ओ० सू० २०, पू०—ना० १।१६।१३४ ।
१५. अब्भुग्गए (ख, ग) ।

उवनिमंतेइ, उवनिमंतेत्ता ते पुरिसे आसत्थे वीसत्थे सुहासणवरगए एवं वयासी—संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! किं आगमणप्पओयणं ?

४२ तए णं ते रायपुरिसा दत्तं सत्थवाहं एवं वयासी—अम्हे णं देवाणुप्पिया ! तव धूयं कण्हसिरीए अत्तयं देवदत्तं दारियं पूसनंदिस्स जुवरण्णो भारियत्ताए वरेमो। तं जइ णं जाणसि देवाणुप्पिया ! जुत्तं वा पत्तं वा सलाहणिज्जं वा, सरिसो वा संजोगो, दिज्जउ णं देवदत्ता दारिया पूसनंदिस्स जुवरण्णो। भण देवाणुप्पिया ! किं दलयामो सुकं[1] ?

४३ तए णं से दत्ते ते अब्भितरठाणिज्जे पुरिसे एवं वयासी—एवं चेव णं देवाणुप्पिया ! मम सुकं जं णं वेसमणे राया मम दारियानिमित्तेणं अणुगिण्हइ। ते अब्भितरठाणिज्जे पुरिसे विउलेणं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारेणं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

४४ तए णं ते अब्भितरठाणिज्जा पुरिसा जेणेव वेसमणे राया तेणेव उवागच्छंति, वेसमणस्स रण्णो एयमट्ठं निवेदेंति ॥

४५ तए णं से दत्ते गाहावई अण्णया कयाइ सोभणंसि तिहि-करण-दिवस-नक्खत्त-मुहुत्तंसि विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं आमंतेइ, ण्हाए[2] °कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल°-पायच्छित्ते सुहासणवरगए मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं सद्धिं संपरिवुडे तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणे वीसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे एवं च णं विहरइ। जिमियभुत्तुत्तरागए वि य णं आयंते चोक्खे परमसुइभूए तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं 'विउलेणं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारेणं'[3] सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता देवदत्तं दारियं ण्हायं जाव[4] सव्वालंकारविभूसियसरीरं पुरिससहस्सवाहिणिं[5] सीयं दुरुहेइ, दुरुहेत्ता सुबहुमित्त[6]-°नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं° सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव[7] दुंदुहिनिग्घोस-नाइयरवेणं रोहीडयं नयरं मज्झं-मज्झेणं जेणेव वेसमणरण्णो गिहे, जेणेव वेसमणे राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल[8]°परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु वेसमणं रायं जएणं विजएणं° वद्धावेइ, वद्धावेत्ता वेसमणस्स रण्णो देवदत्तं दारियं उवणेइ ॥

---

१ सुक्क (ख, ग, घ)।
२. स० पा०—ण्हाए जाव पायच्छित्ते।
३. विउलगंधपुप्फ जाव अलंकारेणं (क,ख,ग,घ)।
४. वि० १।२।६४।
५ °वाहिणी (ख, ग)।
६. स० पा०—मित्त जाव सद्धिं।
७ ओ० सू० ६७।
८. स० पा०—करयल जाव वद्धावेइ।

४६ तए ण से वेसमणे राया देवदत्त दारिय उवणीय पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे विउल असण पाण खाइम साइम उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-सबधि-परियण आमतेइ जाव[1] सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पूसनदि कुमार देवदत्तं च[2] दारिय पट्टय दुरुहेइ[3], दुरुहेत्ता सेयापीएहिं[4] कलसेहि मज्जावेइ, मज्जावेत्ता वरनेवत्थाइ करेइ, करेत्ता अग्गिहोम करेइ[5], करेत्ता पूसनदि कुमार देवदत्ताए दारियाए पाणि गिण्हावेइ ॥

४७ तए ण से वेसमणदत्ते राया पूसनदिकुमारस्स देवदत्त दारिय सव्विड्ढीए जाव[6] दुदुहिनिग्घोस-नाइयरवेण महया इड्ढीसक्कारसमुदएण पाणिग्गहण कारेइ[7], कारेत्ता देवदत्ताए दारियाए अम्मापियरो मित्त[8]-•नाइ-नियग-सयण-सबधि°-परियण च विउलेण[9] असण-पाण-खाइम-साइमेण पुप्फ-वत्थ-गध-मल्लालकारेण य सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

४८. तए ण से पूसनदी कुमारे देवदत्ताए भारियाए[10] सद्धि उप्पि पासायवरगए फुट्ट-माणेहि मुइगमत्थएहिं वत्तीसइवद्धनाडएहिं उवगिज्जमाणे[11]-•उवगिज्जमाणे उवलालिज्जमाणे-उवलालिज्जमाणे इट्ठे सद्द-फरिस-रस-रूव-गधे विउले माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे° विहरइ ॥

४९. तए ण से वेसमणे राया अण्णया कयाइ कालधम्मुणा सजुत्ते । नीहरण जाव[12] राया जाए पूसनदी ॥

५० तए ण से पूसनदी राया सिरीए देवीए माइभत्ते यावि होत्था । कल्लाकल्लि जेणेव सिरी देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सिरीए देवीए पायवडण करेइ, करेत्ता सयपाग-सहस्सपागेहि तेल्लेहि अब्भगावेइ, अट्ठिसुहाए मंससुहाए तयासुहाए[13] रोमसुहाए—चउव्विहाए संवाहणाए सवाहावेइ, सवाहावेत्ता सुरभिणा गधट्टएण[14] उव्वट्टावेइ[15], उव्वट्टावेत्ता तिहि उदएहि मज्जावेइ,

---

१ वि० १।६।४५ ।
२. × (क, घ) ।
३. द्रूहेति (क), द्रुहति (ख); दुरहेति (ग), दुरूहेत्ति (घ) ।
४ सेयापीतएहिं (क) ।
५. कारेइ (क) ।
६ ओ० सू० ६७ ।
७. करेइ (क, ख, ग, घ) ।
८. स० पा०—मित्त जाव परियण ।
९ विउल (क, ख, ग, घ) ।
१०. दारियाए (क, ख) ।
११. स० पा०—उवगिज्जमाणे जाव विहरइ ।
१२. वि० १।५।२२-२४ ।
१३. चम्मसुहाए (ख) ।
१४. गधदूएण (क); गधवट्टएण (ख, ग, वृ); ठाणेपि ३।८७ सूत्रे 'गधट्टएण' इति पाठोस्ति ।
१५. उव्वट्टेइ (ग) ।

[तं जहा—उसिणोदएणं 'सीओदएणं गंधोदएणं'[1]] विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं भोयावेइ, भोयावेत्ता सिरीए देवीए ण्हायाए[2] •कयबलिकम्माए कयकोउय-मंगल°-पायच्छित्ताए जिमियभुत्तुत्तरागयाए तओ पच्छा ण्हाइ वा भुंजइ वा, उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ ॥

५१. तए णं तीसे देवदत्ताए देवीए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणीए इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे—एवं खलु पूसनंदी राया सिरीए देवीए माइभत्ते जाव[3] विहरइ। तं एएणं वक्खेवेणं नो संचाएमि अहं पूसनंदिणा रण्णा सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरित्तए। तं सेयं खलु ममं सिरिदेविं[4] अग्गिपओगेण वा सत्थप्पओगेण वा विसप्पओगेण वा[5] जीवियाओ ववरोवेत्ता पूसनंदिणा रण्णा सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणीए विहरित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता सिरीए देवीए अंतराणि य छिद्दाणि य विवराणि य पडिजागरमाणी[6] विहरइ ॥

५२. तए णं सा सिरी देवी अण्णया कयाइ मज्जाइया[7] विरहियसयणिज्जंसि सुहपसुत्ता जाया यावि होत्था ॥

५३. इमं च णं देवदत्ता देवी जेणेव सिरी देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सिरिं देविं मज्जाइयं विरहियसयणिज्जंसि सुहपसुत्तं पासइ, पासित्ता दिसालोयं करेइ, करेत्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोहदंडं परामुसइ, परामुसित्ता लोहदंडं तावेइ, तत्तं[8] समजोइभूयं फुल्लकिंसुयसमाणं[9] संडासएणं गहाय जेणेव सिरी देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सिरीए देवीए अवाणंसि पक्खिवइ[10] ॥

५४. तए णं सा सिरी देवी महया-महया सद्देणं आरसित्ता कालधम्मुणा संजुत्ता ॥

५५. तए णं तीसे सिरीए देवीए दासचेडीओ आरसियसद्दं सोच्चा निसम्म जेणेव सिरी देवी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता देवदत्तं देविं तओ अवक्कममाणिं पासंति, पासित्ता जेणेव सिरी देवी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सिरिं देविं निप्पाणं निच्चेट्ठं जीवियविप्पजढं पासंति, पासित्ता हा हा ! अहो ! अकज्ज-

---

१. गंधोदएण सीओदएण (क, ग); कोष्ठकवर्त्ती पाठः व्याख्यांशः प्रतीयते।
२. सं० पा०—ण्हायाए जाव पायच्छित्ताए।
३. वि० १।६।५०।
४. सिरिदेवी (क, ख, ग, घ)।
५. वा मंतपओगेण वा (घ)।
६. पडिजागरमाणा (क, ग)।
७. मज्जातीता (क); मज्जावीता (घ)।
८. तए णं तं (क, ख)।
९. पुप्फकिंसुय० (ग)।
१०. पक्खिवेइ (ख, ग)।

मिति कट्टु रोयमाणीओ कदमाणीओ विलवमाणीओ जेणेव पूसनदी राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पूसनदि राय एव वयासी—एव खलु सामी ! सिरी देवी देवदत्ताए देवीए अकाले चेव जीवियाओ ववरोविया ।।

५६ तए ण से पूसनदी राया तासि दासचेडीण अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म महया माइसोएण अप्फुण्णे[1] समाणे परसुनियत्ते विव चपगवरपायवे धस त्ति धरणीय-लसि सव्वगेहि सनिवडिए ।।

५७ तए णं से पूसनदी राया मुहुत्ततरेण आसत्थे समाणे बहूहिं राईसर[2]-°तलवर-माडविय-कोडुविय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ°-सत्थवाहेहिं मित्त[3]-°नाइ-नियग-सयण-सबधि°-परियणेण य सद्धि रोयमाणे कदमाणे विलवमाणे सिरीए देवीए महया इड्ढीए नीहरण करेइ, करेत्ता आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चडिक्किए मिसिमिसेमाणे देवदत्त देविं पुरिसेहि गिण्हावेइ, एएण[4] विहाणेण वज्झ आणवेइ ।।

५८ त एव खलु गोयमा ! देवदत्ता देवी पुरा पोराणाण[5] °दुच्चिण्णाण दुप्पडिक्क-ताणं असुभाण पावाण कडाण कम्माण पावग फलवित्तिविसेस पच्चणुभवमाणी° विहरइ ।।

देवदत्ताए आगामिभव-वण्णग-पदं

५९ देवदत्ता ण भते ! देवी इओ कालमासे काल किच्चा कहिं गमिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?

गोयमा ! असीइ वासाइं परमाउ पालइत्ता कालमासे काल किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ[6]। ससारो [तहेव जाव[7] ?] वणस्सई ।

तओ अणतर उव्वट्टित्ता गगपुरे नयरे हसत्ताए पच्चायाहिइ ।

से ण तत्थ साउणिएहि वहिए समाणे तत्थेव गगपुरे नयरे सेट्ठिकुलसि उववज्जि, हिइ । बोही । सोहम्मे । महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ।।

निक्खेव-पदं

६०. [8]°एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव[9] सपत्तेण दुहविवागाण नवमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति बेमि ।।°

---

१ अप्पुण्णे ण (क) ।
२. स० पा०—राईसर जाव सत्थवाहेहिं ।
३ स० पा०—मित्त जाव परियणेण ।
४. ततेणं (ख, घ), तेण (क्व) ।
५ सं० पा०—पोराणाण जाव विहरइ ।
६ उववण्णे (क, ख, ग, घ) ।
७. वि० १।१।७० ।
८ स० पा०—निक्खेवो ।
९. ना० १।१।७ ।

दसमं अज्झयणं

अंजू

उक्खेव-पदं

१ जइ ण भंते[1] ! •समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[2] संपत्तेणं दुहविवागाणं नवमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दसमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेण के अट्ठे पण्णत्ते ?

२ तए ण से सुहम्मे अणगारे जंबू-अणगारं एव वयासी°—एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वड्ढमाणपुरे नामं नयरे होत्था। विजयवड्ढमाणे उज्जाणे। माणिभद्दे जक्खे। विजयमित्ते राया ॥

३. तत्थ ण धणदेवे नाम सत्थवाहे होत्था—अड्ढे। पियंगू नामं भारिया। अंज दारिया जाव[3] उक्किट्ठसरीरा। समोसरण परिसा जाव[4] गया ॥

अंजूए पुव्वभवपुच्छा-पदं

४. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी जाव[5] अडमाणे विजयमित्तस्स रण्णो गिहस्स असोगवणियाए अदूरसामंतेणं वीईवयमाणे पासइ एगं इत्थियं—सुक्कं भुक्खं निम्मंसं किडिकिडियाभूयं अट्ठिचम्मावणद्धं नीलसाडगनियत्थं[6] कट्ठाइं कलुणाइं वीसराइं[7] कूवमाणि पासइ, पासित्ता चिंता तहेव जाव[8] एव वयासी—सा ण भंते ! इत्थिया पुव्वभवे का आसि[9] ? वागरणं ॥

---

१. सं० पा०—दसमस्स उक्खेवओ।

२. ना० १।१।७।

३ वि० १।४।३६।

४. वि० १।४।११।

५. वि० १।२।१२-१४।

६. °नियच्छ (ख)।

७. विस्सराइ (ख, घ); विसराइ (ग);

८. वि० १।२।१५।

९. पू०—वि० १।२।१६।

अंजूए पुढविसिरीभव-वण्णग-पदं

५ एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इंदपुरे नामं नयरे होत्था ॥

६ तत्थ णं इंददत्ते राया । पुढविसिरी[1] नामं गणिया होत्था—वण्णओ[2] ॥

७ तए णं सा पुढविसिरी गणिया इंदपुरे नयरे बहवे राईसर[3]-•तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावई-सत्थवाह°प्पभियओ बहूहिं[4] •य विज्जापओगेहि य मंतपओगेहि य चुण्णप्पओगेहि य हियउड्डावणेहि य निण्हवणेहि य पण्हवणेहि य वसीकरणेहि य आभिओगिएहिं° आभिओगित्ता[5] उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरइ ॥

८ तए णं सा पुढविसिरी गणिया एयकम्मा एयप्पहाणा एयविज्जा एयसमायारा सुबहुं[6] •पाव कम्मं कलिकलुसं° समज्जिणित्ता पणतीसं वाससयाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं बावीस सागरोवम-ट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णा ॥

अंजूए वत्तमाणभव-वण्णग-पदं

९. सा णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव वद्धमाणपुरे नयरे धणदेवस्स सत्थवाहस्स पियंगुभारियाए कुच्छिंसि दारियत्ताए उववण्णा ॥

१० तए णं सा पियंगुभारिया नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं दारियं पयाया । नामं अंजू[7] । सेसं जहा देवदत्ताए[8] ॥

११ तए णं से विजए राया आसवाहणियाए निज्जायमाणे जहा वेसमणदत्ते[9] तहा अंजुं पासइ, नवरं—अप्पणो अट्ठाए वरेइ जहा तेयली जाव[10] अंजूए भारियाए सद्धिं उप्पिं पासायवरगए जाव[11] विउले माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरइ ॥

१२ तए णं तीसे अंजूए देवीए अण्णया कयाइ जोणिसूले पाउब्भूए यावि होत्था ॥

१३ तए णं से विजए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह

---

१. पुहवि° (क, ग) ।
२ वि० १।२।७ ।
३ सं० पा०—राईसर जाव प्पभियओ ।
४ सं० पा०—बहूहिं चुण्णप्पओगेहिं जाव आभिओगित्ता । द्रष्टव्यम्—वि० १।२।७२ ।
५ अहिओगेत्ता (ग) ।
६. सं० पा०—सुबहु जाव समज्जिणित्ता ।
७ अंजूसिरी (घ) ।
८ वि० १।९।३२-३५ ।
९ वि० १।९।३६-४६ ।
१०. ना० १।१४।१९, २० ।
११. वि० १।९।४८ ।

णं तुम देवाणुप्पिया ! वद्धमाणपुरे नयरे सिंघाडग[1]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु महया-महया सद्देण उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा° एव वयह—एव खलु देवाणुप्पिया ! विजयस्स रण्णो अजूए देवीए जोणिसूले पाउब्भूए। त जो ण इच्छइ वेज्जो वा वेज्जपुत्तो वा जाणुओवा जाणुयपुत्तो वा तेगिच्छिओ वा तेगिच्छियपुत्तो वा[2] •अजूए देवीए जोणीसूले उवसामित्तए तस्स ण वेसमणदत्ते राया विउल अत्थसंपयाण दलयइ ॥

१४ तए ण ते कोडुबियपुरिसा° जाव[3] उग्घोसेति ॥

१५ तए ण ते वहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य तेगिच्छिया य तेगिच्छियपुत्ता य इम एयारूव उग्घोसणं सोच्चा निसम्म जेणेव विजए राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता उप्पत्तियाहिं[4] वेणइयाहिं कम्मियाहिं पारिणामियाहिं वुद्धीहिं परिणामेमाणा इच्छति अंजूए देवीए जोणिसूल उवसामित्तए, नो सचाएति उवसामित्तए ॥

१६. तए ण ते वहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य तेगिच्छिया य तेगिच्छियपुत्ता य जाहे नो सचाएति अजूए देवीए जोणिसूल उवसामित्तए, ताहे सता तता परितता जामेव दिस पाउब्भूया तामेव दिस पडिगया ॥

१७. तए ण सा अजू देवी ताए वेयणाए अभिभूया समाणी सुक्का भुक्खा निम्मसा कट्ठाइ कलुणाइं वीसराइं विलवइ ॥

१८. एव खलु गोयमा ! अजू देवी पुरा पोराणाण[5] •दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कताण असुभाण पावाण कडाण कम्माण पावग फलवित्तिविसेस पच्चणुभवमाणी° विहरइ ॥

अंजूए आगामिभव-वण्णग-पदं

१९. अजू ण भते ! देवी इओ कालमासे काल किच्चा कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?
गोयमा ! अजू ण देवी नउइ वासाइ परमाउ पालइत्ता कालमासे काल किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ[6]। एव ससारो जहा पढमे तहा नेयव्व जाव[7] वणस्सई।
सा ण तओ अणतर उव्वट्टित्ता सव्वओभद्दे नयरे मयूरत्ताए पच्चायाहिइ।

---

१. स० पा०—सिंघाडग जाव एव ।
२. स० पा०—तेगिच्छियपुत्तो वा जाव उग्घोसेंति ।
३. वि० १।१०।१३ ।
४ अजुए देवीए वहवे उप्पत्तियाहि (क,ख,ग,घ) ।
५ स० पा०—पोराणाण जाव विहरइ ।
६. उववण्णा (क, ख, ग, घ) ।
७. वि० १।१।७० ।

से ण तत्थ साउणिएहिं वहिए समाणे तत्थेव सव्वग्रोभद्दे नयरे सेट्ठिकुलसि पुत्तत्ताए[1] पच्चायाहिइ ।

से ण तत्थ उम्मुक्कबालभावे तहारूवाण थेराण अतिए पव्वइस्सइ । केवल वोहिं बुज्झिहिइ । पव्वज्जा । सोहम्मे ।

से ण तग्रो देवलोगाग्रो ग्राउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?

गोयमा ! महाविदेहे वासे जहा पढमे जाव[2] सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिणिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणमत काहिइ ।।

निक्खेव-पदं

२० एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव[3] सपत्तेण दुहविवागाण दसमस्स ग्रज्झयणस्स ग्रयमट्ठे पण्णत्ते । 'सेव भते ! सेव भते'[4] !

—त्ति वेमि ।।

---

१ पुमत्ताए (क) ।

२. वि० १।१।७० ।

३. ना० १।१।७ ।

४ मेण भते (ख), सेय भते (ग) ।

बीओ सुयक्खंधो

पढमं अज्झयणं

सुबाहू

उक्खेव-पदं

१ तेणं कालेण तेणं समएणं रायगिहे नयरे, गुणसिलए चेइए। सुहम्मे समोसढे। जंबू जाव[1] पज्जुवासमाणे[2] एव वयासी—जइ णं भंते! समणेण भगवया महावीरेण जाव[3] सपत्तेण दुहविवागाण अयमट्ठे पण्णत्ते, सुहविवागाणं भंते! समणेण भगवया महावीरेणं जाव सपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते?

२ तए णं से सुहम्मे अणगारे जंबू-अणगारं एवं वयासी—एव खलु जंबू! समणेण भगवया महावीरेणं जाव[4] सपत्तेण सुहविवागाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा—

सुबाहू भद्दनंदी य, सुजाए य सुवासवे।
तहेव जिणदासे य, धणवई य महब्बले॥
भद्दनंदी महच्चदे, वरदत्ते 'तहेव य'[5]॥ १॥

३ जइ णं भंते! समणेणं भगवया महावीरेण जाव[6] संपत्तेणं सुहविवागाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स ण भंते! अज्झयणस्स सुहविवागाण समणेण भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते?

---

१. वि० १।१।२,४।
२. पज्जुवासइ (क, ख, ग, घ)।
३ ना० १।१।७।
४. ना० १।१।७।
५. × (क, ख, ग, घ), मुद्रितप्रत्यनुसार गृहीतोयं पाठ।
६ ना० १।१।७।

सुबाहुकुमार-पदं

४. तए णं से सुहम्मे जंबू-अणगारं एवं वयासी—एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिसीसे नामं नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे ॥

५. तस्स[1] णं हत्थिसीसस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ णं पुप्फकरंडए नामं उज्जाणे होत्था—सव्वोउय-पुप्फ-फल-समिद्धे ॥

६ तत्थ णं कयवणमालपियस्स जक्खस्स[2] जक्खाययणे होत्था—दिव्वे ॥

७ तत्थ णं हत्थिसीसे[3] नयरे अदीणसत्तू नामं राया होत्था—महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे ॥

८ तस्स णं अदीणसत्तुस्स रण्णो धारिणीपामोक्खं देवीसहस्सं ओरोहे यावि होत्था ॥

९. तए णं सा धारिणी देवी अण्णया कयाइ तंसि तारिसगंसि वासभवणंसि[4] सीहं सुमिणे पासइ, जहा मेहस्स जम्मणं तहा[5] भाणियव्वं ॥

१० •[6]तए णं से सुबाहुकुमारे बावत्तरिकलापंडिए जाव[7] अलंभोगसमत्थे जाए यावि होत्था ॥

११ तए णं तं सुबाहुकुमारं अम्मापियरो बावत्तरिकलापंडियं जाव[8]° अलंभोग-समत्थं वा[9] जाणंति, जाणित्ता अम्मापियरो पंच पासायवडेंसगसयाइं कारेंति[10]—अब्भुग्गयमूसियपहसियाइं[11]। एगं च णं महं भवणं कारेंति एवं जहा महब्बलस्स रण्णो, नवरं—पुप्फचूलापामोक्खाणं पंचण्हं रायवरकन्नगसयाणं[12] एगदिवसेणं पाणिं गिण्हावेंति[13]। तहेव पंचसइओ दाओ जाव[14] उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं[15] •मुइंगमत्थएहिं वरतरुणिसंपउत्तेहिं बत्तीसइबद्धएहिं नाडएहिं उवगिज्जमाणे-उवगिज्जमाणे उवलालिज्जमाणे-उवलालिज्जमाणे इट्ठे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधे विउले माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे° विहरइ ॥

---

१. तत्थ (क)।
२ जहस्स (क)।
३. °सीसए (क, घ)।
४ वासघरंसि (ख)।
५ ना० १।१।१८-३२, ७२-८७, नवरं अकाल-मेघदोहदवक्तव्यता नास्ति (वृ)।
६ स० पा०—सुबाहुकुमारे जाव अलंभोगस-मत्थं।
७ ओ० सू० १४८।
८ ओ० सू० १४९।
९ वा वि (क, ख, ग)।
१० करेंति (क, ख), करेति (ग), करावेंति (घ)।
११ पू०—ना० १।१।८९।
१२ °कन्नासयाणं (घ)।
१३. गिण्हावेसु (क, ग)।
१४ भ० ११।१५८-१६१।
१५ स० पा०—फुट्टमाणेहिं जाव विहरइ।

१२. तेणं कालेण तेण समएणं समणे भगव महावीरे समोसढे[1]। परिसा निग्गया। अदीणसत्तू जहा कूणिए[2] तहा निग्गए। सुवाहू वि जहा जमाली तहा रहेणं निग्गए जाव[3] धम्मो कहिओ। राया परिसा गया॥

१३. तए ण से सुवाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ जाव[4] एवं वयासी—सद्दहामि ण भते! निग्गथं पावयण। जहा ण देवाणुप्पियाणं अंतिए वहवे राईसर[5]-°तलवर-माडविय-कोडुंविय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभियओ मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयति° नो खलु अहं तहा सचाएमि पव्वइत्तए, अह ण देवाणुप्पियाण अंतिए पंचाणुव्वइय सत्तसिक्खावइय—दुवालसविह गिहिधम्म पडिवज्जामि। अहासुह देवाणुप्पिया! मा पडिवंधं करेह॥

१४. तए ण से सुवाहू समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइय—दुवालसविह गिहिधम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता तमेव चाउग्घट आसरहं दुरुहइ, दुरुहित्ता जामेव दिस पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए॥

सुवाहुस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं

१५ तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई जाव[7] एव वयासी—अहो ण भंते! सुवाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे कते कतरूवे पिए पियरूवे मणुण्णे मणुण्णरूवे मणामे मणामरूवे सोमे सोमरूवे सुभगे सुभगरूवे पियदसणे सुरूवे।

वहुजणस्स वि य णं भते! सुवाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे कते कतरूवे पिए पियरूवे मणुण्णे मणुण्णरूवे मणामे मणामरूवे सोमे सोमरूवे सुभगे सुभगरूवे पियदसणे सुरूवे।

साहुजणस्स वि य ण भते! सुवाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे[8] °कते कंतरूवे पिए पियरूवे मणुण्णे मणुण्णरूवे मणामे मणामरूवे सोमे सोमरूवे सुभगे सुभगरूवे पियदसणे° सुरूवे।

सुवाहुणा भते! कुमारेण इमा[9] एयारूवा उराला माणुसिड्ढी[10] किण्णा लद्धा? किण्णा पत्ता? किण्णा अभिसमण्णागया? के वा एस आसि पुव्वभवे[11]? °किं

---

१. समोसरण (क, ख, ग, घ)।
२. ओ० सू० ५५-६९।
३ भ० ९।१५८-१६३।
४ ना० १।१।१०१।
५. पू०—राय० सू० ६९५।
६ स० पा०—राईसर जाव नो खलु अह।
७ वि० १।१।२४,२५।
८ स० पा०—इट्ठरूवे जाव सुरूवे।
९. इमे (क, ख)।
१०. माणुस्सिड्ढी (ख), माणुस्सरिद्धी (घ)।
११. स० पा०—पुव्वभवे जाव अभिसमण्णागया।

नामए वा किं वा गोएण ? कयरंसि वा गामंसि वा सण्णिवेसंसि वा ? किं वा दच्चा किं वा भोच्चा किं वा समायरित्ता, कस्स वा तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए एगमवि आयरियं सुवयणं सोच्चा निसम्म सुबाहुणा कुमारेणं इमा एयारूवा उराला माणुस्सिड्ढी लद्धा पत्ता° अभिसमण्णागया ?

सुबाहुस्स सुमुहभव-वण्णग-पदं

१६ 'गोयमाइ ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं आमंतेत्ता एवं वयासी'[1]—

१७ एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे नामं नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे ॥

१८. तत्थ णं हत्थिणाउरे नयरे सुमुहे नामं गाहावई परिवसइ—अड्ढे ॥

१९ तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसा नामं थेरा जाइसंपण्णा जाव[2] पंचहिं समणसएहिं सद्धिं संपरिवुडा पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा गामाणुगामं दूइज्जमाणा जेणेव हत्थिणाउरे नयरे जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छंति[3], उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ॥

२० तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसाणं थेराणं अंतेवासी सुदत्ते नामं अणगारे ओराले[4] •घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्त-विउल°-तेयलेस्से मासंमासेणं खममाणे[5] विहरइ ॥

२१ तए णं से सुदत्ते अणगारे मासखमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ, जहा गोयमसामी तहेव 'धम्मघोसे थेरे'[6] आपुच्छइ जाव[7] अडमाणे सुमुहस्स गाहावइस्स गिहे अणुप्पविट्ठे ॥

२२ तए णं से सुमुहे गाहावई सुदत्तं अणगारं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता पायवीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ, करेत्ता सुदत्तं अणगारं सत्तट्ठ पयाइं पच्चुग्गच्छइ[8], पच्चुग्गच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता 'जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयहत्थेणं'[9] विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेस्सामीति तुट्ठे पडिलाभेमाणे वि तुट्ठे पडिलाभिए वि तुट्ठे ॥

---

१. × (क, ख, ग)।
२ ना० १।१।४।
३ उवागया (ग)।
४ सं० पा०—उराले जाव लेस्से।
५. खवमाणे (क)।
६ सुहम्मे थेरे (क), सुदत्ते थेरे धम्मघोसे (ख), 'सुहम्मे थेरे' त्ति धर्मघोषस्थविरानित्यर्थः, धर्मशब्दसाम्याच्छब्दद्वयस्याप्येकार्थत्वात् (वृ)।
७ वि० १।२।१३,१४।
८ अणुगच्छइ (घ)।
९. × (क, ख, ग)।

२३ तए णं तस्स सुमुहस्स[1] गाहावइस्स तेण दव्वसुद्धेणं 'गाहगसुद्धेण दायगसुद्धेणं'[2] तिविहेण तिकरणसुद्धेण सुदत्ते अणगारे पडिलाभिए समाणे संसारे परित्तीकए[3], मणुस्साउए निबद्धे, गेहंसि य से इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं, [तं जहा—वसुहारा वुट्ठा, दसद्धवण्णे कुसुमे निवातिते[4], चेलुक्खेवे कए, आहयाओ देवदुंदुभीओ, अंतरा वि य णं आगासंसि 'अहो दाणे अहो दाणे'[5] घुट्ठे य[6]।] हत्थिणाउरे सिंघाडग[7]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह॰पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवं आइक्खइ एवं भासेइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ—धण्णे णं देवाणुप्पिया! सुमुहे गाहावई[8] •पुण्णे णं देवाणुप्पिया! सुमुहे गाहावई एवं—कयत्थे णं कयलक्खणे णं सुलद्धे णं सुमुहस्स गाहावइस्स जम्मजीवियफले, जस्स णं इमा एयारूवा उराला माणुस्सिड्ढी लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया॰ ॥

तं धण्णे णं देवाणुप्पिया! सुमुहे गाहावई पुण्णे णं देवाणुप्पिया! सुमुहे गाहावई एवं—कयत्थे णं कयलक्खणे णं सुलद्धे णं सुमुहस्स गाहावइस्स जम्मजीवियफले, जस्स णं इमा एयारूवा उराला माणुस्सिड्ढी लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया ॥

२४ तए णं से सुमुहे गाहावई बहूइं वाससयाइं आउयं पालेइ, पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इहेव हत्थिसीसे नयरे अदीणसत्तुस्स रण्णो धारिणीए देवीए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववण्णे ॥

२५. तए णं सा धारिणी देवी सयणिज्जंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी-ओहीरमाणी तहेव सीहं पासइ, सेसं तं चेव जाव[9] उप्पिं पासाए विहरइ। तं एवं खलु गोयमा! सुबाहुणा इमा एयारूवा माणुसिड्ढी लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया ॥

२६ पभू णं भंते! सुबाहुकुमारे देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए?

हंता पभू ॥

२७ तए णं से भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

२८ तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइ हत्थिसीसाओ नयराओ पुप्फकरंडयउज्जाणाओ कयवणमालपियजक्खाययणाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

---

१ 'तस्स सुमुहस्स' त्ति विभक्तिपरिणामात् 'तेन सुमुहेने' ति द्रष्टव्यम् (वृ)।
२ दायगसुद्धेण पडिगासुद्धेण (घ)।
३. परित्तकए (घ)।
४. निवाडिए (क्व)।
५. अहोदाण २ (घ)।
६. कोष्ठकवर्त्ती पाठ व्याख्याश. प्रतीयते।
७ सं॰ पा॰—सिंघाडग जाव पहेसु।
८ सं॰ पा॰—गाहावई जाव तं धण्णे।
९. वि॰ २।१।९-११।

२९. तए ण से सुबाहुकुमारे समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे जाव[1] पडिलाभेमाणे विहरइ ॥

३०. तए ण से सुबाहुकुमारे अण्णया कयाइ चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसाल पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चारपासवणभूमि पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसथार सथरइ, सथरित्ता दब्भसथार दुरूहइ, दुरूहित्ता अट्ठमभत्त पगिण्हइ[2], पगिण्हित्ता पोसहसालाए पोसहिए अट्ठमभत्तिए पोसह पडिजागरमाणे विहरइ ॥

सुबाहुकुमारस्स पव्वज्जा-पदं

३१. तए ण तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि[3] धम्मजागरिय जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए कप्पिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—धण्णा ण ते गामागर[4]-•णयर-णिगम-रायहाणि-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडब-पट्टणासम-सवाह°-सण्णिवेसा, जत्थ ण समणे भगव महावीरे विहरइ।

धण्णा ण ते राईसर-तलवर-माडविय-कोडुविय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-प्पभियओ, जे ण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए मुडा[5] •भवित्ता अगाराओ अणगारिय° पव्वयति।

धण्णा ण ते राईसर-तलवर-माडविय-कोडुविय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभियओ, जे ण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए पचाणुव्वइय[6] •सत्तसिक्खावइय—दुवालसविह° गिहिधम्म पडिवज्जति।

धण्णा ण ते राईसर-तलवर-माडविय-कोडुविय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-प्पभियओ, जे ण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्म सुणेंति।

त जइ ण समणे भगव महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे इहमागच्छेज्जा[7] •इह समोसरेज्जा इहेव हत्थीसीसस्स नयरस्स वहिया पुप्फकरडयउज्जाणे कयवणमालपियस्स जक्खस्स जक्खाययणे अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे° विहरेज्जा, तए ण अह समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए मुडे भवित्ता[8] •अगाराओ अणगारिय° पव्वएज्जा ॥

३२. तए ण समणे भगव महावीरे सुबाहुस्स कुमारस्स इम एयारूव

---

१ ओ० सू० १६२।
२. पडिगिण्हइ (क)।
३. °वरत्तकाले (क, ख)।
४. स० पा०—गामागर जाव सण्णिवेसा।
५ स० पा०—मुडा जाव पव्वयति।
६ स० पा०—पचाणुव्वइय जाव गिहिधम्म।
७ स० पा० – इहमागच्छेज्जा जाव विहरेज्जा।
८ स० पा०—भवित्ता जाव पव्वएज्जा।

अज्झत्थियं जाव[1] वियाणित्ता पुव्वाणुपुव्विं[2] •चरमाणे गामाणुगामं° दूइज्जमाणे जेणेव हत्थिसीसे नयरे जेणेव पुप्फकरंडयउज्जाणे जेणेव कयवण-मालपियस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ग्रहापडिरूवं ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ। परिसा राया निग्गए ।।

३३ तए ण तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स त महया[3]•जणसद्द वा जाव[4] जणसण्णिवाय वा सुणमाणस्स वा पासमाणस्स वा अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए कप्पिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव जहा जमाली तहा° निग्गओ। धम्मो कहिओ। परिसा राया पडिगया ।।

३४. तए ण से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे जहा मेहो तहा अम्मापियरो आपुच्छइ। निक्खमणाभिसेओ तहेव जाव[5] अणगारे जाए इरियासमिए[6] जाव[7] गुत्तबभयारी ।।

सुबाहुकुमारस्स आगामिभव-वण्णग-पदं

३५. तए ण से सुबाहू अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाण थेराण अतिए सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइ अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ-छट्ठट्ठमतवोवहाणेहिं अप्पाण[8] भावेत्ता, बहूइ वासाइ सामण्णपरियाग पाउणित्ता, मासियाए सलेहणाए अप्पाण झूसित्ता, सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेएत्ता आलोइयपडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववण्णे ।।

३६. से ण तओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण अणतर चय चइत्ता माणुस्स विग्गह लभिहिइ, केवलं बोहि बुज्झिहिइ, तहारूवाणं थेराण अंतिए मुडे भवित्ता[9] •अगाराओ अणगारिय° पव्वइस्सइ।

से ण तत्थ बहूइ वासाइ सामण्ण पाउणिहिइ। आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालगए सणकुमारे कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिइ[10]।

से णं ताओ माणुस्स, पव्वज्जा, बभलोए। माणुस्स, महासुक्के। माणुस्स, आणए। माणुस्स, आरणे। माणुस्स सव्वट्ठसिद्धे।

से ण तओ अणतर उव्वट्टित्ता महाविदेहे वासे जाइ कुलाइं भवति अड्ढाइ

---

१. वि० २।१।३१।
२. स० पा०—पुव्वाणुपुव्विं जाव दूइज्जमाणे।
३. स० पा०—त महया जहा पढम तहा।
४. भ० ९।१५८।
५. ना० १।१।१०१-१५१।
६. रियासमिए (क)।
७. वि० १।१।७०।
८. अत्ताण (ख)।
९ स० पा०—भवित्ता जाव पव्वइस्सइ।
१०. उववण्णे (क, ख, ग, घ)।

जहा दढपइण्णे[1] सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिणिव्वाहिइ सव्वदुक्खा-णमंतं काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

३७. एवं खलु जंबू ! समणेण भगवया महावीरेणं जाव[2] संपत्तेण सुहविवागाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति बेमि ॥

---

१. पू०—ओ० सू० १४१-१५४ । २. ना० १।१।७ ।

बीयं अज्झयणं

भद्दनंदी

१ वितियस्स उक्खेवओ ।

एव खलु जवू ! तेण कालेण तेण समएण उसभपुरे नयरे । थूभकरंडग उज्जाण । धण्णो जक्खो । घणावहो राया । सरस्सई देवी ।

सुमिणदसण कहणा, जम्म वालत्तण कलाओ य ।
जोव्वण पाणिग्गहण, दाओ पासाय भोगा य ॥१॥

जहा सुवाहुस्स, नवर—भद्दनदी कुमारे । सिरिदेवीपामोक्खा ण पचसया । सामीसमोसरण । सावगधम्म । पुव्वभवपुच्छा । महाविदेहे वासे पुडरीगिणी[1] नयरी । विजए कुमारे । जुगवाहू तित्थयरे[2] पडिलाभिए । मणुस्साउए निवद्धे । इह उप्पण्णे । सेस जहा सुवाहुस्स जाव[3] महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ वुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिणिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणमत काहिइ ।

निक्खेवओ ॥

तच्चं अज्झयणं

सुजाए

१. तच्चस्स उक्खेवओ ।

वीरपुरं नयरं । मणोरमं उज्जाण । वीरकण्हमित्ते[4] राया । सिरी देवी । सुजाए कुमारे । वलसिरीपामोक्खा पंचसया । सामीसमोसरणं । पुव्वभवपुच्छा । उसुयारे नयरे । उसभदत्ते गाहावई । पुप्फदते अणगारे पडिलाभिए । मणुस्साउए निवद्धे । इह उप्पण्णे जाव[5] महाविदेहे-वासे सिज्झिहिइ वुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिणिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणमत काहिइ ।

निक्खेवओ ॥

---

१. पुडरिगिणी (क), पुडरगिणी (घ) ।
२ तित्थकरे (ख) ।
३. वि० २।१।६-३६ ।
४. वीरकिण्ह० (क) ।
५. वि० २।१।६-३६ ।

चउत्थं अज्झयणं

सुवासवे

१ चउत्थस्स उक्खेवओ।

विजयपुरं नयरं। नंदणवणं उज्जाणं। असोगो जक्खो। वासवदत्ते राया। कण्हा देवी। सुवासवे कुमारे। भद्दापामोक्खाणं पंचसया जाव पुव्वभवे। कोसंबी नयरी। धणपाले राया। वेसमणभद्दे अणगारे पडिलाभिए। इह जाव[1] सिद्धे॥

पंचमं अज्झयणं

जिणदासे

१ पंचमस्स उक्खेवओ।

सोगंधिया नयरी। नीलासोगं उज्जाणं। सुकालो[2] जक्खो। अप्पडिहओ राया। सुकण्णा देवी। महचंदे कुमारे। तस्स अरहदत्ता भारिया। जिणदासो पुत्तो। तित्थयरागमणं। जिणदासो पुव्वभवो। मज्झमिया नयरी। मेहरहे राया। सुधम्मे अणगारे पडिलाभिए जाव[3] सिद्धे॥

छट्ठं अज्झयणं

धणवई

१. छट्ठस्स उक्खेवओ।

कणगपुरं नयरं। सेयासोयं उज्जाणं। वीरभद्दो जक्खो। पियचंदो राया। सुभद्दा देवी। वेसमणे कुमारे जुवराया। सिरिदेवीपामोक्खा पंचसया। तित्थयरागमणं। धणवई जुवरायपुत्ते जाव पुव्वभवो। मणिवइया[4] नयरी। मित्तो राया। संभूतिविजए अणगारे पडिलाभिए जाव[5] सिद्धे॥

---

१. वि० २।१।६-३६।
२. सुकोसलो (ग)।
३ वि० २।१।६-३६।
४ मणिवया (घ)।
५. वि० २।१।६-३६।

सत्तमं अज्झयणं

महब्बले

१ सत्तमस्स उक्खेवओ।

महापुर नयर। रत्तासोग उज्जाणं। रत्तपाओ जक्खो। बले राया। सुभद्दा देवी। महब्बले कुमारे। रत्तवईपामोक्खा पंचसया। तित्थयरागमणं जाव पुव्वभवो। मणिपुर नयर। नागदत्ते गाहावई। इंदपुत्ते अणगारे पडिलाभिए जाव[1] सिद्धे॥

अट्ठमं अज्झयणं

भद्दनंदी

१ अट्ठमस्स उक्खेवओ।

सुघोस नयर। देवरमण उज्जाणं। वीरसेणो[2] जक्खो। अज्जुणो राया। तत्तवई देवी। भद्दनदी कुमारे। सिरिदेवीपामोक्खा पचसया जाव पुव्वभवे। महाघोसे नयरे। धम्मघोसे गाहावई। धम्मसीहे अणगारे पडिलाभिए जाव[3] सिद्धे॥

नवमं अज्झयणं

महच्चंदे

१. नवमस्स उक्खेवओ।

चपा नयरी। पुण्णभद्दे उज्जाणे। पुण्णभद्दे जक्खे। दत्ते राया। रत्तवती देवी। महचदे कुमारे जुवराया। सिरिकंतापामोक्खा णं पचसया जाव पुव्वभवो। तिगिंछी नयरी। जियसत्तू राया। धम्मवीरिए अणगारे पडिलाभिए जाव[4] सिद्धे॥

---

१. वि० २।१।६-३३।
२. वेरसेणो (क)।
३. वि० २।१।६-३६।
४. वि० २।१।६-३६।

दसमं अज्झयणं

वरदत्ते

१. दसमस्स उक्खेवओ।

तेण कालेण तेण समएण साएय नामं नयरं होत्था। उत्तरकुरुउज्जाणे। पासामिओ जक्खो। मित्तनदी राया। सिरिकता देवी। वरदत्ते कुमारे। वरसेणापामोक्खा पच देवीसया। तित्थयरागमण। सावगधम्म। पुव्वभवपुच्छा। सयदुवारे नयरे। विमलवाहणे राया। धम्मरुई अणगारे पडिलाभिए। मणुस्साउए निवद्धे। इह उप्पण्णे। सेस जहा सुवाहुस्स कुमारस्स। चिंता जाव पव्वज्जा। कप्पतरिते जाव[१] सव्वट्ठसिद्धे। तओ महाविदेहे जहा दढपइण्णे जाव[२] सिज्झिहिइ वुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिणिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणमत काहिइ॥

२ एव खलु जवू! समणेण भगवया महावीरेण जाव[३] सपत्तेण सुहविवागाण दसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते।

सेव भते! सेव भते!

परिसेसो

विवागसुयस्स दो सुयक्खधा दुहविवागो सुहविवागो य। तत्थ दुहविवागे दस अज्झयणा एक्कसरगा दससु चेव दिवसेसु उद्दिसिज्जति। एव सुहविवागे वि। सेस जहा आयारस्स॥

ग्रन्थ-परिमाण

कुल अक्षर ५६७१८,

अनुष्टुप्-श्लोक १७७२ अक्षर १४,

---

१ वि० २।१।६-३६।

२. ओ० सू० १४१-१५४।

३. ना० १।१।७।

परिशिष्ट

परिशिष्ट—१

संक्षिप्त-पाठ, पूर्त-स्थल और पूर्ति आधार-स्थल

नायाधम्मकहाओ

संक्षिप्त-पाठ	पूर्त-स्थल	पूर्ति आधार-स्थल
अंतिए जाव पव्वयामि	२।१।२५	१।१।१०१
अंतेउरे य जाव अज्झोववण्णे	'१।१६।४१	१।१६।२८
अगडे वा जाव सागरे	१।८।१५४	१।८।१५४
अग्गिसामण्णे जाव मच्चुसामण्णे	१।१।१११	१।१।१११
अग्घेण जाव आसणेण	१।१६।१६७	१।१६।१८६
अच्चणिज्जे जाव पज्जुवासणिज्जे	१।२।७६	ओ० सू० २
अज्जग जाव परिभाएत्तए	१।६।५	१।१।११०
अज्जाओ तहेव भणंति तहेव साविया जाया तहेव चिंता तहेव सागरदत्तं आपुच्छति	१।१६।९८-१०४	१।१४।४४-५०
अज्झत्थिए०	१।८।७९	१।१।४८
अज्झत्थिए किमण्णे जाव वियब्भइ	१।१६।२७२	१।१६।२७२
अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था	१।१।५३,५६,१५४,१५५,१६६,२०४,२०५, १।२।१२,७१,१।५।११८,१२४,१।७।२५, १।१६।११८,२८५;२।१।३८	१।१।४८
अज्झत्थिय जाव जाणित्ता	१।१६।२८६	१।१।४८
अट्टदुहट्टवसट्टमाणसगए जाव रयणिं	१।१।१५५	१।१।१५४
अट्ठमस्स उक्खेवओ एव खलु जबू जाव चत्तारि	२।८।१,२	२।२।१,२
अट्ठाइ जाव नो वागरेइ	१।५।६९	१।५।६९
अट्ठाईं जाव वागरेइ	१।५।६९	१।५।६९
अट्टाहिय महानदीसर जामेव दिस पाउ जाव पडिगए	१।८।२२६	१।८।२२४
अड्ढा जाव अपरिभूया	१।५।७	ओ० सू० १४१
अड्ढा जाव भत्तपाणा	१।३।८	ओ० सू० १४१

उम्मुक्कवालभावे जाव जोव्वणग०	१।१४।२२	१।१।२०
उरालस्स क सि व म जाव सुमिणस्स	१।१।१६	१।१।१६
उरालाइ जाव भुजमाणा	१।१२।४०	१।१६।११३
उरालाइ जाव विहरइ	१।१४।२०	१।१२।४०
उरालाइ जाव विहरिज्जामि	१।१६।११३	१।१६।११३
उरालाइ जाव विहरिस्सइ	१।१६।२०४	१।१६।११३
उराले जाव तेयलेस्से	१।१६।१२	१।१।६
उरालेण तहेव जाव भास	१।१।२०४	१।१।२०२
उववेए जाव फामेण	१।१२।४	१।१२।३
उव्वत्तिज्जमाणे जाव टिट्टियावेज्जमाणे	१।३।२२	१।३।२१
उव्वत्तेइ जाव टिट्टियावेइ	१।३।२६	१।३।२१
उव्वेत्तेति जाव दतेहि निवखुडेति जाव करेत्तए	१।४।१६	१।४।११
उव्वत्तेति जाव नो चेव ण सचाएति करेत्तए	१।४।१२	१।४।११
एगदिसि जाव वाणियगा	१।८।६७	१।८।६२
एगयओ जहा अरहन्नए जाव लवणसमुद्द	१।१७।५	१।८।६६
एज्जमाणि जाव निवेसेह	१।८।१७१	१।१।४८,१।१६।१३१
एव अत्थेण दारेण दासेहि पेमेहि परियणेण	१।१४।७७	१।१४।७७
एव कुलत्था वि भाणियव्वा । नवर इम नाणत्त—इत्थिकुलत्था य धन्नकुलत्था य । इत्थिकुलत्था तिविहा पण्णत्ता, त जहा— कुलवहुयाइ य कुलमाउयाइ य कुलधूयाइ य। धन्नकुलत्था तहेव	१।५।७४	१।५।७३
एव जहा मल्लिणाए	१।१६।२००	१।८।१५४
एव जहा विजओ तहेव सव्व जाव रायगिहस्स	१।१८।३१,३२	१।१८।२०,२२
एव जहा सूरियाभस्स जाव एव	२।१।१५	राय० सू० ६६८
एव जहेव तेयलिणाए सुव्वयाओ तहेव समोसढाओ तहेव सघाडओ जाव अणुपविट्ठे तहेव जाव सूमालिया	१।१६।९४-९७	१।१४।४०-४३
एव जहेव राई तहेव रयणी वि	२।१।५७-६०	२।१।४७-५०
एवं जाव घोसस्स	२।३।११	ठाण २।३५६-३६२
एव जाव सागरदत्तस्स	१।१६।८८-९१	१।१६।६३-६६
एव पत्तियामि ण रोएमि णं	१।१।१०१	१।१।१०१
एव पाएहि सीसे पोट्टे कायसि	१।१।१५३	१।१।१५३
एव पायगुलियाओ पायगुट्ठए वि कण्णसक्कुलीओ वि नासापुडाइं	१।१४।२१	१।१४।२१

एव पासत्थे कुसीले पमत्ते	१।५।११७	१।५।११७
एव मासा वि । नवर इम नाणत्त—मासा तिविहा पण्णत्ता, त जहा—कालमासा य अत्यमासा य धन्नमासा य । तत्थ ण जे ते कालमासा ते ण दुवालस त जहा—सावणे जाव आसाढे । तेणं अभक्खेया । अत्थमासा दुविहा हिरण्णमासा य सुवण्णमासा य तेण अभक्खेया । धन्नमासा तहेव	१।५।७५	१।५।७३, भ० १८।२१५-२१६
एवं वट्टए आडोलियाओ तिंदूसए पोत्तुल्लए साडोल्लए	१।१८।८	१।१८।८
एव सेसाओ वि	२।७।६	२।७।२
एवं सेसाओ वि	२।८।६	२।८।२
ओरोह जाव विहरइ	१।१६।२२५	१।१६।१९५
ओसन्ने जाव सथारए	१।५।१२५	१।५।११७
ओहय जाव झियायह	१।८।१७१	१।१।३४
ओहयमण जाव झियायइ	१।३।२३	१।१।३४
ओहयमणसकप्प जाव झियायमाणि	१।१४।३८,१।१६।२०८	१।१।३४
ओहयमणसकप्पा०	१।१४।३८	१।१।३४
ओहयमणसकप्पा जाव झियाइ	१।१।३४	वृत्ति
ओहयमणसकप्पा जाव झियायइ	१।१४।३७,१।१६।६२,८७,२०७	१।१।३४
ओहयमणसकप्पा जाव झियायति	१।९।१५	१।१।३४
ओहयमणसकप्पा जाव झियायह	१।८।१७३	१।१।३४
ओहयमणसकप्पा जाव झियायामि	१।१६।६५	१।१।३४
ओहयमणसकप्पा जाव झियाहि	१।१६।६४,९२,२०८	१।१।३४
ओहयमणसकप्पे जाव झियामि	१।१७।१०	१।१।३४
ओहयमणसंकप्पे जाव झियायइ	१।८।१६८,१।१४।७७,१।१७।८	१।१।३४
ओहयमणसकप्पे जाव झियायमाणे	१।१९।३२	१।१।३४
ओहयमणसकप्पे जाव झियायसि	१।१७।९	१।१।३४
कडरीए उट्ठाए उट्ठेइ उठेत्ता जाव से जहेय	१।१९।१२	१।१।१०१
कत्ता जाव भवेज्जामि	१।१६।९७	१।१४।४३
कते जाव जीवियऊसासए	१।१।१४५	१।१।१०६
कक्खडा जाव दुरहियासा	१।१।१६२	वृत्ति
कज्जेसु य जाव रहस्सेसु	१।७।४२	१।५।९०
कट्टु जाव पडिसहेइ	१।१६।२५५	१।१६।२५१,२५२
कट्ठस्स य जाव भरेंति	१।१७।२८	१।१७।२२

देवी जाव पउमनाम०	१।१६।२३६	१।१६।२३३
देवी जाव माहिया	१।१६।२४०	१।१६।२०८
देवेण वा जाव निग्गयाओ	१।८।७५	उवा० २।४५
देवेण वा जाव मन्नीए	१।८।१३५	१।८।७५
दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवओ	२।२।१	२।१।६
धण कणग जाव परिभाएउ	१।१।९२	१।१।९१
धण जाव सावएज्जस्स	१।७।३४	१।१।९१
धण जाव सावएज्जे	१।१६।६	१।१।९१
धण्णा णं ते जाव ईसरपभियओ	१।१३।१५	१।१।३३
धम्म सोच्चा ज नवर	१।५।८७	१।१।१०१
धम्मं सोच्चा जहा ण देवाणुप्पियाण, अंतिए बहवे उग्गा भोगा जाव चउत्ता हिरण्ण जाव पव्वइया तहा ण अह णो सचाएमि पव्वइए	१।५।४५	राय० सू० ६९५
धम्मकहा भाणियव्वा	१।५।७८	१।५।६३
धम्मोत्ति वा जाव विजयस्स	१।२।७५	१।२।६४
धोवसि जाव आनयसि	२।१।३५	२।१।३४
धोवेइ जाव आनयइ	२।१।३८	२।१।३४
धोवेइ जाव चेएइ	१।१६।११९	१।१६।११४
धोवेसि जाव चेएसि	१।१६।११५	१।१६।११४
नदीसरे अट्ठाहिय करेंति जाव पडिगया	१।८।२२४	जबू० वक्ष० ५
नगरगिहाणि	१।८।९७	१।८।५८
नगर जाव सण्णिवेसाण आहेवच्च जाव विहराहि	१।१।११८	ओ० सू० ६८
नच्चासन्ने जाव पज्जुवासइ	१।१४।८५	१।१।९९
नट्टा य जाव दिन्न०	१।१३।२०	ओ० सू० १
नट्ठमईए जाव अवहिए	१।१७।१०	१।१७।८
नयरि अणुपविसइ	१।१६।२१६	१।१६।२१८
नवमस्स उक्खेवओ एव खलु जवू जाव अट्ठ	२।९।१,२	२।२।१,२
नवर तस्स	१।७।२८,२९	१।७।८,२५,२६
नाइ०	१।५।२६,१।७।६,९,२२,२६,४२,१।१५।११,१।१६।५०,५४,१।१८,५१,५६	१।१।८१
नाइ०	१।१४।१८,१।१५।१९	१।५।२०

निस्संचार जाव चिट्ठति	१।८।१७२	१।८।१६७
नीलुप्पल०	१।१८।४६	१।९।१६
नीलुप्पल जाव असि	१।१४।७३	१।९।१६
नीलुप्पल जाव खधसि	१।१४।७७	१।१४।७३
पउमनाहे जाव नो पडिसेहिए	१।१६।२८७	१।१६।२८५
पचअणगारसया बहूणि वासाणि सामण्ण-परियाग पाउणित्ता जेणेव पुंडरीए पव्वए तेणेव उवागच्छति जहेव थावच्चापुत्ते तहेव सिद्धा०	१।५।१२७,१२८	१।५।८३,८४
पचमवग्गस्स उक्खेवओ एव खलु जबू जाव वत्तीस	२।५।१,२	२।२।१,२
पचमे जाव भवियव्व	१।७।३३	१।७।२५,९
पचयण्ण जाव पुरिय	१।१६।२७६	१।१६।२७५
पचाणुव्वइय जाव सगणोवासए जाए अहिगयजीवाजीवे जाव अप्पाण	१।५।४५-४७	वृत्ति, ओ० सू० १२०,१६२
पडवा०	१।१६।३१३	१।१।११६
पअएण जाव विहरइ	१।५।१२६	१।५।१२४
पगइभद्दए जाव विणीए	१।१।२०९,१।१६।२४	ओ०सू०११९
पच्चक्खाए जाव आलोइय०	१।१६।४६	१।१।२०६
पच्चक्खाए जाव थूलए	१।१३।४२	१।१।२०६
पज्जग जाव तओ पच्छा अणुभूयकल्लाणे पव्वइस्ससि	१।१।१११	१।१।११०
पच्चप्पिणह जाव पच्चप्पिणति	१।१।७७	१।१।२३
पट्टिया जाव गहियाउहपहरणा	१।२।३२	राय०सू० ६६४
पडागे जाव दिसोदिसि	१।१६।२५२	वृत्ति
पडिवुद्धा जाव विहाडिय	१।१६।६५	१।१६।६२
पडिवुद्धि जाव जियसत्तु	१।८।३९	१।८।२७
पडिवुद्धी० करयल०	१।८।४७	१।१।३९
पडिलाभेमाणे जाव विहरइ	१।५।५६	१।५।५२
पडिसुणेति जाव उवसपज्जित्ता	१।१९।२३	१।५।११३
पढमज्झयणस्स उक्खेवओ	२।७।३,२।८।३,२।९।३	२।२।३
पढमस्स उक्खेवओ	२।१०।३	२।२।३
पणामेत्ता जाव कूव	१।१६।२४४	१।१६।२४३
पण्णत्ते जाव सग्ग	१।५।६०	१।५।५५

उवासगदसाओ

विहरइ । नवर निरुवसग्गो एक्कारस्स वि उवासगपडिमाओ तहेव भाणियव्वाओ एव कामदेवगमेण नेयव्व जाव सोहम्मे	१०।५-२५	२।५-१६,५०-५५
फलग जाव ओगिण्हित्ता	७।५१	१।४५
फलग जाव सथारय	७।१६	१।४५
वभयारी जाव दब्भसथारोवगए	२।४०	१।६०
वभयारी समणस्स	३।१६	१।६०
वहूहि जाव भावेत्ता	२।५५	१।८४
वहूण राईसर जहा चिंतिय जाव विहरित्तए	१।५७	१।५७
वहूहि जाव भावेमाणस्स	६।३३	२।१८
भवित्ता जाव अह	७।३७	१।२३
भारिया जाव सम०	७।७८	७।७५
भोगा जाव पव्वइया	७।३७	ओ० सू० ५२
मसमुच्छिया जाव अज्झोववण्णा	८।२०	वृत्ति
मत्ता जाव उत्तरिज्जय	८।३८	८।२७
मत्ता जाव विकड्ढमाणी	८।४६	८।२७
महइ जाव धम्मकहा समत्ता	७।१६	२।११
महावीरे जाव विहरइ	२।४२	१।१७
महावीरे जाव विहरइ	२।४३,७।१५	१।२०
महावीरे जाव समोसरिए	१।१७,७।१२	ओ० सू० १६-२२
महासतय तहेव भणइ जाव दोच्च पि तच्च पि एव वयासी—हंभो तहेव	८।३८-४०	८।२७-२६
मारणतिय जाव काल	१।६५	१।६५
मित्त जाव जेट्ठपुत्त	१।५७	१।५७
मित्त जाव पुरओ	१।५६	१।५७
मुडे जाव पव्वइत्तए	१।२३,५३	ओ० सू० ५२
मोहुम्माय जाव एव वयासी तहेव जाव दोच्च पि	८।४६	८।२७-२६
राईसर जाव सत्थवाहाण	१।१३	१।२३
राईसर जाव सयस्स	१।५७	१।१३
लद्धट्ठे जहा कामदेवो तहा निग्गच्छइ जाव पज्जुवासइ । धम्मकहा ।	६।२६,२७	२।४३,४४
वदणिज्जे जाव पज्जुवासणिज्जे	७।१०	ओ० सू० २
वदामि जाव पज्जुवासामि	७।१५	ओ० सू० ५२

वदाहि जाव पज्जुवासाहि	१।४५;७।३१	ओ० सू० ५२
वदिस्सामि जाव पज्जुवासिस्सामि	७।११	ओ० सू० ५२
वदेज्जाहि जाव पज्जुवासेज्जाहि	७।१०	ओ० सू० ५२
वयासी जाव उववज्जिहिसि	८।४६	८।४१
वाताहत वा जाव परिट्ठवेइ	७।२६	७।२५
विणस्समाणे जाव विलुप्पमाणे	७।४७,४९	७।४६
विहरइ। तए ण	२।५१-५४	१।६२-६५
वीइक्कताइं तहेव जेट्ठपुत्त ठवेइ। धम्मपण्णत्ति। वीस वासाइ परियाग नाणत्त अरुणगवे विमाणे उववाओ महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ	९।१८-२६	२।१८,१९,५०-५६
वीइक्कता एव तहेव जेट्ठपुत्त ठवेइ जाव पोसहसालाए धम्मपण्णत्ति	८।२५,२६	२।१८,१९
सचाएइ जाव सणिय	२।३४	२।२८
सताण जाव भावाण	१।७८	१।७८
संतेहिं जाव वागरित्तए	८।४६	८।४६
सतेहिं जाव वागरिया	८।४९	८।४९
सखिखिणियाड जाव परिहिए	७।१०	२।४०
सद्दहामि ण जाव से जहेय	१।२३	रा० सू० ६९५
सद्दालपुत्ता त चेव सव्व जाव पज्जुवासिस्सामि	७।१७	७।१०,११
समएण अज्जसुहम्मे समोसरिए जाव जबू पज्जुवासमाणे	१।३-५	रा० सू० ६८६, ओ० सू० ८२,८३
समणे जाव विहरइ त महाफल गच्छामि ण जाव पज्जुवासामि	१।२०	ओ० सू० ५२
समणोवासए जाव अहियासेइ	५।३८	२।२७
समणोवासए जाव विहरइ	४।४०,५।३८	३।२२
समणोवासया! अप्पत्थियपत्थिया जाव न भजेसि	३।४४,७।७५	२।२२
समणोवासया! जहा कामदेवो जाव न भजेसि	३।२१	२।२२
समणोवासया! जाव न भजेसि	२।३४,५।२१,३९	२।२२
समणोवासया! त चेव भणइ	७।७७	७।७४
समणोवासया! त चेव भणइ सो जाव विहरइ	३।२३,२४	३।२१,२२
समणोवासया! तहेव जाव गाय आइचइ	३।४४	३।२३-२५

अंतगडदसाओ

अणुत्तरे जाव केवल०	३।९२	वृत्ति
अतुरिय जाव अडति	३।२३	भ० २।१०८
अपत्थिय जाव परिवज्जिए	३।८९	उवा० २।२२
अपत्थियपत्थिए जाव परिवज्जिए	३।१०२	३।८९
अरहओ मुडे जाव पव्वाहि	३।७४	३।७०
अरिट्ठनेमिस्स जाव पव्वइत्तए	५।११	३।७६
अहासुत्त जाव आराहिया	८।८	ठा० ७।१३
आघवणाहि०	६।९५	नाम १।१।११४
आपुच्छामि देवाणुप्पियाण	१।१९	ना० १।५।८७
आसुरुत्ते जाव सिद्धे	३।१०१	३।८९-९२
आहेवच्च जाव विहरइ	१।१४	ना० १।५।६
इच्छामि ण जाव उवसपज्जित्ता	३।१०१	३।८७,८८
ईसर जाव सत्यवाहाण	१।१४	ना० १।५।६
उच्च जाव अडइ	६।७६	भ० २।१०८
उच्च जाव अडमाणं	६।५५	भ० २।१०९
उच्च जाव अडमाणा	३।२९,३०	३।२४
उच्च जाव अडमाणे	६।७८	३।२४
उच्च जाव अडामो	६।८०	३।२३
उच्च जाव पडिलाभेइ	३।२८,२९	३।२४,२५
उज्जाणे जाव पज्जुवासइ	३।९१	ना० १।१।९९
उज्जला जाव दुरहियासा	३।९०	ना० १।१।१६२
उत्तर०	६।५२	५।२६
उम्मुक्क जाव अणुप्पत्ते	३।५०	ना० १।१।२०
उरालेण जाव घमणिसंतया	८।१३	भ० २।६४
उवागए जाव पडिदसेइ	६।८७	६।५७
उवागच्छित्ता जाव वदइ	३।९८	३।९१
ओहय जाव झियाइ	५।१७	३।४३
ओहय जाव झियायइ	३।४३	ना० १।१।३४
करयल०	५।२२,६।३५,४१	ना० १।१।२६
करेइ जहा गोयमसामी जाव अडइ	६।५४	भ० २।१०७,१०८
काएणं जाव दो वि पाए	३।८८	वृत्ति
कामा खेलासवा जाव विप्पजहियव्वा	३।७६	ना० १।१।१०९
कुमारस्स	१।१९	राय० सू० ६८८
चउत्य जाव अप्पाण	८।६	५।३१

चउत्थ जाव भावेमाणी	८।३३	५।३१
चउत्थ जाव भावेमाणे	१।२१	५।३१
चउत्थस्स वग्गस्स निक्खेवओ	४।७	१।२५
छट्ठछट्ठेण जाव विहरति	३।२१	३।२०
जइ उक्खेवओ अट्ठमस्स	३।१७	३।३
जइ छट्ठस्स उक्खेवओ नवर सोलस	६।१,२	१।५,६
जइ ण भते अट्ठमस्स वग्गस्स उक्खेवओ जाव दस	८।१७,१८	१।५,६
जइ ण भते तेरस	७।३	१।७
जइ ण भते सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ जाव तेरस	७।१,२	१।५,६
जइ तच्चस्स उक्खेवओ	३।१	१।५
जइ दस	८।१६	१।७
जइ दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवओ	२।१,२	१।५,६
जहा अभओ नवर हरिणेगमेसिस्स अट्ठमभत्त पगेण्हइ जाव अंजलि	३।४७-४६	ना० १।१।५३-५८
जहा गोयम सामी तहा पडिदसेइ	६।५७	भ० २।११०
जहा गोयमो जाव इच्छामो	३।२२	भ० २।१०७
जावज्जीवाए जाव विहरइ	६।५३	६।५३
जाव सलेहणाकाल	८।३६	८।१५
ण्हाए जाव विभूसिए	३।४४	ओ० सू० ७०
ण्हाया जाव पायच्छित्ता	३।३६	ओ० सू० २०
त महा जहा गोयमे तहा	३।१३	१।१६,२०
तीसे य धम्मकहा	३।६२	राय० सू० ६६३
तीसे य धम्मकहा	६।५०,८८	ना० १।१।१००
देह जाव किलत	३।६५	वृत्ति
धारिणी सीह सुमिणे	३।११६	१।१७
नमसामि जाव पज्जुवासामि	६।३५	ओ० सू० ५२
नयरीए जाव अडित्तए	३।२२	भ० २।१०७
नवमस्स उक्खेवओ	३।११२	३।३
निग्गया जाव पडिगया	१।२	ना० १।१।५
निक्खमणं जहा महव्वलस्स जाव तमाणाए तहा जाव सजमइ	३।७८-८५	भ०११।१६८,ना०१।१।११५-१५१

अणुत्तरोववाइयदसाओ

जाव जहा जमाली तहा आपुच्छइ । मुच्छिया । वुत्तपडिवुत्तया जहा महब्बले जाव जाहे नो सचाएइ जहा थावच्चापुत्तम्म जियसत्तु आपुच्छइ । छत्तचामराओ । सयमेव जियसत्तू निक्खमण करेंति जहा थावच्चापुत्तस्स कण्हो जाव पव्वइए अणगारे जाए—इरियासमिए जाव गुत्तबभयारी	३।११-२१	भ० ९।३३,११,११; ना० १।१,१।५
जाव उप्पि पासा विहरइ	१।७	ना० १।१।९३
तरुणए जाव चिट्ठइ	३।५१	३।४३
तरुणिया एवामेव	३।४८	३।४३
विलमिव जाव आहारेइ	३।५७	३।२७
मुडावली इ वा	३।३८	३।३१
मुडे जाव पव्वइए	३।६९	३।२२
सजमेण जाव विहरइ	३।६९	३।२७
सजमेण जाव विहरामि	३।५७	३।२७
सुक्क०	३।३७	३।३१
सुक्काओ जाव सोणियत्ताए	३।३२	३।३१
सुपुण्णे सुकयत्थे कयलक्खणे	३।५८	३।५८
सोहम्मीसाण जाव आरणच्चुए	१।८	ना० १।१।२११

पण्हावागरणाइं

अतरप्पा जाव चरेज्ज	१०।१५	१०।१४
एव जाव इमस्स	५।१०	५।१
एव जाव चिरपरिगत०	३।२६	३।१
एव जाव परियट्ट ति	५।८	४।१३
पत्थणिज्ज एव चिरपरि०	४।१५	४।१
रूसियव्व जाव चरेज्ज	१०।१७	१०।१४
रूसियव्व जाव न	१०।१५	१०।१४
सज्जियव्व जाव न सइ	१०।१७	१०।१४
सज्जियव्व जाव न सर्ति	१०।१६	१०।१४
हीलियव्व जाव पणिहिदिए	१०।१६	१०।१४

विवागसुयं

छट्ठंछट्ठेण जहा पण्णत्तीए पढम जाव जेणेव	१।२।१२-१४	भ० २।१०६-१०८
छट्ठस्स उक्खेवओ	१।६।१,२	१।२।१,२
छिंदइ जाव अप्पेगइयाण	१।२।२८	१।२।२४
जणसद्द च जाव सुणेत्ता	१।१।१९	ओ० सू० ५२
जहा विजयमित्ते जाव कालमासे काल किच्चा	१।७।३१,३२	१।२।५०,५१
जातिअंधे जाव आगितिमेत्ते	१।१।६४	१।१।१४
जायसड्ढे जाव एवं	१।१।२५	ओ० सू० ८३
जाव पुढवी	१।३।६५,१।४।३९	१।१।७०
०ट्ठिइएसु जाव उववज्जिहिइ	१।१।७०	१।१।५७
ण्हाए जाव पायच्छित्ते	१।३।४७,५५,१।६।४५	१।२।६४
ण्हायाए जाव पायच्छित्ताए	१।६।५०	१।२।६४
ण्हायाओ जाव पायच्छित्ताओ	१।७।२०	१।२।६४
ण्हाया जाव पायच्छित्ता	१।३।२४	१।२।६४
त चेव जाव से णं	१।३।१५	१।२।१५
ततीहि य जाव सुत्तरज्जुहि	१।६।२३	१।६।१८
त महया जहा पढम तहा	२।१।३२	२।१।१२, भ० ६।१५८
तच्चस्स उक्खेवो	१।३।१,२	१।२।१,२
तह त्ति जाव पडिसुणेंति	१।३।४६	१।१।६६
ताओ जाव फले	१।७।२३	१।८।१९
तीमे य०	१।१।२३	ना० १।१।१००
तेगिच्छियपुत्तो वा जाव उग्घोसेंति	१।१०।१३,१४	१।८।२१,२२
तो ण जाव ओवाइणइ	१।७।२१	१।७।१९
दसमस्स उक्खेवओ	१।१०।१,२	१।२।१,२
दारगस्स जाव आगितिमित्ते	१।१।२६	१।१।१४
नगरगोरूवा जाव भीया	१।२।३४	१।२।३३
नगरगोरूवा जाव वसभा	१।२।३३	[illegible]
नगरगोरूवाण जाव वसभाण	१।२।२८	[illegible]
नगर जाव विणिज्जामि	१।२।२४	[illegible]
निक्खेवओ	१।३।६६	१।१।७१
निक्खेवो	१।२।७४,१।४।४०, १।५।३०;१।६।३८,१।७।३९,१।८।२८,१।९।६०	१।१।७१
निच्छुभेमाणे अन्नत्थ कत्थइ सुइं वा अलभ		
अणगया कयाइ रहस्सिय सुदन्निणाए सिद्ध	१।४।२६,२७	१।२।६२,६३
नीय जाव अउड	१।७।३	१।२।१४
पढमस्स अज्झयणस्स उक्खेवओ	१।५।१,२	१।२।१,२
पंचाणुव्वइयं जाव गिहिधम्मं	२।१।३१	२।१।१२
पच्चेइ जाव पच्चमूल	१।६।२३	१।६।१८

शुद्धि-पत्र

मूलपाठ

पृ०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८	२०	०मणप्पत्ते	०मणुप्पत्ते
५७	१२	जहेमु	जूहेसु
६०	२२	हीत्य	हत्थी
१७७	३	कट्ट	कट्टु
२०६	१०	विप्पडर-माण	विप्पइरमाण
३०६	१६	संकाणि	संकामणि
४२६	१६	वेरमणाइ	वेरमणाइं
४५५	१५	पज्जुवासणयाए	पज्जुवासणाए
४६१	७	देवदेसंस	देवसंदेस
५१६	१६	तुम	तुमं
५५१	७	ताइ	ताइं
५७५	१६	०समुदएण	०समुदएण
५६८	१२	सम्सिरीएण	सस्सिरीएणं
६१६	६	दस	दस
७३०	२०	खणंमाणे	खणमाणे
७३८	७	अप्पेगइयाण	अप्पेगइयाण
७३६	१२	दुप्पडियाणदे	दुप्पडियाणदे

पाठान्तर

पृ०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१६	पा० ६	पटटसि	पट्टसि
४८	पा० ४	पिणद्धति	पिणद्धेंति
५२२	पा० २	आसुरुत्त	आसुरुत्ते

परिशिष्ट

पृ०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२८	२४	अभिगयजीवेजी णं	अभिगयजीवाजीवेणं